सरोज सर्वेक्षण

डॉ॰ किशोरीलाल गुप्त

सरोज-सर्वेक्षण

(आगरा विश्वविद्यालय की पी-एच० डी० उपाधि के लिए स्वीकृत, हिन्दी साहित्य के इतिहास के प्रमुखतम सूत्र शिवसिंह 'सरोज' के कवियों विषयक तथ्यों एवं तिथियों का विवेचनात्मक और गवेषणात्मक परीक्षण)

डॉ० किशोरीलाल गुप्त
प्राचार्य, हिन्दू डिग्री कालेज,
जमानिया, गाजीपुर

हिन्दुस्तानी एकेडेमी
इलाहाबाद

प्रकाशक
हिन्दुस्तानी एकेडेमी,
इलाहाबाद

प्रथम संस्करण : मार्च १९६७

मूल्य : ६०.०० रुपये
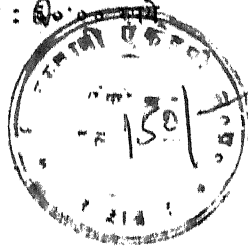
मुद्रक—
आर० सी० राही
वीनस आर्ट प्रेस,
३६५, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद

समर्पण

सेंगर जी,

आपने आज से ८८ वर्ष पहले 'शिवसिंह सरोज' का प्रणयन उस समय किया था, जब कि साहित्यकारों के पीछे न तो संस्थाओं का बल था, न सरकार की अनुदानमयी कृपादृष्टि थी, न अहं-तुष्टि के लिए प्रचार के साधन थे और न सामग्री की प्रचुरता ही थी। तब से आज तक आपका उक्त ग्रन्थ हिन्दी के अनुसन्धित्सुओं के लिए प्रकाश-स्तम्भ रहा है। आपने उस युग में स्वकीय स्वतन्त्र-चेतना से जिस महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ की रचना की, उसमें अनेक त्रुटियों का रह जाना असम्भव नहीं था। कुछ त्रुटियाँ आपसे हुईं, कुछ आपके प्रकाशकों ने सरोज के तृतीय संस्करण की रूपरेखा बदलकर उत्पन्न कीं, और कुछ यारों की समझ की बलिहारी ने पैदा की। मैंने 'सरोज-सर्वेक्षण' में यथाशक्ति उन त्रुटियों के निरसन का प्रयास किया है। यह कार्य छिद्रान्वेषण की दृष्टि से नहीं हुआ है, बल्कि इसका उद्देश्य आपकी स्वर्गीय आत्मा को सन्तोष प्रदान करना है। जिस लक्ष्य से आपने 'सरोज' का प्रणयन किया था, 'सर्वेक्षण' उसी लक्ष्य पर अग्रसर हुआ है। अपनी सम्पूर्ण श्रद्धा से मैं यह 'सर्वेक्षण' आपके चरणों में अर्पित कर रहा हूँ, क्योंकि एक तो इसके द्वारा मैं एक प्रकार से ऋषि-ऋण से उऋण होने का प्रयास कर रहा हूँ, दूसरे मेरे मन के किसी कोने में यह आशा भी कहीं छिपी हुई है कि आज से ८८ वर्ष बाद, जब सामग्रियों का अनन्त भण्डार हिन्दी वालों के सम्मुख प्रस्तुत हो गया रहेगा, हमारी राष्ट्र-भारती हिन्दी जब पूर्ण प्रफुल्ल हो उठेगी, तब कोई शोधी-सुधी मेरे 'सर्वेक्षण' की भी भ्रान्तियों का सम्यक् निरसन करेगा और मेरी ही परम्परा पर चलकर वह ग्रन्थ मुझे ही समर्पित करेगा।

पितृपक्ष सं० २०२३

किशोरीलाल गुप्त

आत्म-परचय

औध देसवासी, पुरी कांथा को निवासी, जो है--

एक सुखरासी, दूजी कासी गति जाल के।

संभु कला'ति प्रकासी, दास शिव अविनासी,

पाप पुञ्ज पग नासी, भुक्ति दासी जनपाल के।

भृङ्गी बंस जाए, छत्री सेंगर कहाए,

रनजीत सुत गाए, नीति विपुल बिसाल के।

चाकर महारानी[1] के, किंकर शिवदानी के,

नाम शिवसिंह, हम कवि चन्दभाल[2] के।

—शिवसिंह सेंगर

---

[1] महारानी विक्टोरिया।

[2] चंदभाल--गोला गोकर्णनाथ में शिवसिंह द्वारा बनवाए गए शिवालय में स्थापित शिव-मूर्ति का नाम।

प्रकाशकीय

हिन्दी साहित्य का इतिहास प्रस्तुत करने वाले ग्रन्थों में शिवसिंह सरोज का स्थान अन्यतम है। १६वीं सदी के उत्तरार्द्ध में हिन्दी साहित्य के इतिहास को कई विद्वानों ने लिपिबद्ध करने की चेष्टा की थी, जिनमें सरोज के पूर्ववर्ती फ्रेंच विद्वान गर्सां द तासी (इस्त्वार द ल लितरेत्यूर ऐंदुई ए ऐंदुस्तानी), महेशदत्त (भाषा काव्य संग्रह) तथा मातादीन मिश्र (कवित्त रत्नाकर) का नाम उल्लेखनीय है। किन्तु जिस विशाल पैमाने पर श्री शिवसिंह सेंगर ने अट्ठासी वर्ष पूर्व शिवसिंह सरोज नामक इतिहास-ग्रन्थ की रचना की थी, वह आगे चलकर साहित्य के इतिहास के लिए अमूल्य निधि सिद्ध हुई। पुस्तकालयों, खोज रिपोर्टों और अभिभावकों के अभाव में श्री शिवसिंह सेंगर ने एक हजार के लगभग रचयिताओं के कृतित्व और उनकी जीवनी का वर्णन सरोज में किया था। वास्तव में यह एक अद्‌भुत कार्य था, जो सेंगर जी जैसे मनीषी व्यक्ति द्वारा सम्पन्न हुआ। कालान्तर में शिवसिंह सरोज के परवर्ती संस्करणों में अनेक क्षुप्त अंश सम्मिलित हो गये और कवियों की तिथियों में भी उलट-फेर हो गया। इससे हिन्दी साहित्य के इतिहास में कई भ्रांतियाँ उत्पन्न हुई। ग्रियर्सन और पण्डित रामचन्द्र शुक्ल ने 'शिवसिंह सरोज' से सहायता ली है, किन्तु इसकी भ्रान्तियों का निराकरण ये विद्वान् भी नहीं कर सके। वस्तुतः शिवसिंह सरोज के कवियों और उनकी तिथियों पर एक अलग कार्य की अपेक्षा थी, और यह हर्ष का विषय है कि डॉ० किशोरीलाल गुप्त ने 'सरोज" को अपना शोध का विषय बनाकर उसका तुलनात्मक सर्वेक्षण प्रस्तुत किया। डॉ० किशोरीलाल गुप्त का अध्यवसाय और उनकी वैज्ञानिक कार्य-पद्धति स्तुत्य है और वे साधुवाद के पात्र हैं। आगरा विश्वविद्यालय से इस सर्वेक्षण पर डॉ० गुप्त को पी-एच० डी० की उपाधि मिली है।

डॉ० गुप्त के इस ग्रन्थ "सरोज सर्वेक्षण" में शिवसिंह सरोज में वर्णित प्रत्येक कवि की कृति और उसकी जीवनी का नये सिरे से सर्वेक्षण किया गया है और सरोज को लेकर जो भ्रान्तियाँ उत्पन्न हो गयी थीं, उन्हें दूर करने की चेष्टा की गयी है।

हमारा विश्वास है, यह ग्रन्थ हिन्दी साहित्य के सुधी पाठकों, शोध छात्रों और प्राध्यापकों के लिए समान रूप से उपयोगी सिद्ध होगा।

उमाशंकर शुक्ल
सचिव तथा कोषाध्यक्ष

इलाहाबाद :
फरवरी १९६७।

वक्तव्य

सम्पूर्ण हिन्दी काव्य की पूर्णता एवं विविधता के निदर्शन करने वाले वृहद्काव्यसंग्रहों का अभाव मुझे चिरकाल से खटकता रहा है। इस ओर ६ खण्डों में प्रथम सर्वग्राही प्रयास लाला सीताराम जीने कलकत्ता विश्वविद्यालय के लिए सन् १९२१-२६ ई०में किया था। किन्तु वे संग्रह न तो अब सुलभ ही हैं और न तो सर्वथा पूर्ण ही। इनमें कवियों की संख्या भी बहुत नहीं है। इस ओर दूसरा खण्ड-प्रयास हिन्दुस्तानी एकेडेमी के लिये गणेशप्रसाद द्विवेदी ने वीरकाव्य, सन्तकाव्य सूफीकाव्य सम्बन्धित तीन संग्रहों के द्वारा किया। अतः दस वर्ष पहले मैंने हिन्दी के सम्पूर्ण काव्य-साहित्य को समाहित करने वाले काव्य संग्रह प्रस्तुत करने की एक योजना बनाई। यह संग्रह, योजना भाषानुसारी थी। सबसे पहले मैंने स्वरुचि की अनुकूलता एवं ब्रजभाषा काव्य की प्रधानता के कारण ब्रजभाषा में लिखित काव्य को ही सङ्कलित एवं संरक्षित करने का विचार किया और ब्रजकाव्यधारा नाम से निम्नाङ्कित छह भागों में यह संग्रह प्रस्तुत करना प्रारम्भ किया, जो अब समाप्तप्राय है—

१. पूर्व भक्तिकाल — संवत् १५५० से १६४० तक
२. उत्तर भक्तिकाल—संवत् १६४० से १७०६ तक
३. पूर्व रीतिकाल — संवत् १७०६ से १८०० तक
४. उत्तर रीतिकाल—संवत् १८०० से १९०० तक
५. संक्रमणकाल —संवत् १९०० से १९५७ तक
६. आधुनिककाल —संवत् १९५७ से २०१० तक

इस संग्रह के प्रस्तुत करने में मुझे 'शिव सिंह सरोज' को बार-बार उलटना पड़ा। ऐसा करते समय मुझे सरोज में दिये कवियों के परिचय में अनेक त्रुटियाँ दिखाई पड़ीं। एक ही कवि तीन-तीन, चार-चार कवि के रूपों में उल्लिखित मिला, अनेक कल्पित कवियों से भेंट हुई, स्त्री

पुरुष के रूप में दिखाई पड़ी और सन्-संवत् की भूलें भी अनेक स्थलों पर खटकीं। सरोज, हिन्दी साहित्य के इतिहास का प्रमुखतम सूत्र है। इसी के आधार पर ग्रियर्सन ने अपना 'द मॉडर्न वर्नाक्यूलर लिटरेचर ऑफ़ हिन्दुस्तान' लिखा, जिसका सहारा खोज-रिपोर्टों एवं विनोद में लिया गया। ऐसी स्थिति में मेरे मन में यह विचार उठा कि सरोज में कवियों के सम्बन्ध में दिये तथ्यों एवं तिथियों की यथासम्भव जाँच हो जाय, तो हिन्दी साहित्य का इतिहास निर्भ्रान्त हो जाय। मेरे इसी विचार की परिणति यह 'सरोज-सर्वेक्षण' है।

मेरा यह ग्रन्थ तीन भागों में बँटा है। प्रथम भाग में १२६ पृष्ठों की भूमिका है, जिसमें सरोज सम्बन्धी सभी आवश्यक सामग्रियाँ एवं सूचनाएँ निम्नाङ्कित ६ अध्यायों में दी गई हैं—

१. परिचय—इसमें सरोज, सरोजकार तथा सरोजकार के पुस्तकालय का परिचय दिया गया है। सरोज के रचना एवं प्रकाशन-काल पर भी विचार किया गया है।

२. सरोज का महत्व—इसमें सरोज के पूर्ववर्ती तासी एवं महेशदत्त तथा मातादीन मिश्र के ग्रन्थों से तथा परवर्ती ग्रियर्सन के ग्रन्थ 'द मार्डन वर्नाक्यूलर लिटरेचर ऑफ़ हिन्दुस्तान से सरोज की तुलना की गई है। तथा इसकी उपयोगिता एवं श्रेष्ठता प्रतिपादित की गई है' हिन्दी-साहित्य का ग्रियर्सन रचित प्रथम इतिहास, सरोज का कितना ऋणी है, यहाँ अनेक। तुलनात्मक तालिकाओं के सहारे पर्याप्त विस्तार से इस पर भी विचार किया गया है।

३. सरोज के आधार ग्रन्थ—इसमें सरोज के आधार ग्रन्थों का परिचय है। जिन ग्रन्थों को मैंने स्वयं देखा है, उनका परिचय पर्याप्त विस्तार से दे दिया है।

४. सरोज की भूलें एवं इसके एक सुसम्पादित संस्करण की आवश्यकता—इस प्रकरण में सरोज के प्रमाद एवं अज्ञान वश हुई सब प्रकार की भूलों का विवेचन किया गया है और सरोज के एक सुसम्पादित संस्करण की आवश्यकता पर बल दिया गया है।

५. सरोज के सन्-संवत्—यह अध्याय भूमिका के सभी अध्यायों से बड़ा और महत्वपूर्ण है। इसमें सरोज के उ० का रहस्य भेद किया गया है और सिद्ध किया गया है कि सरोजकार का उ० से अभिप्राय उपस्थित है, न कि उत्पन्न, जैसा कि ग्रियर्सन एवं उनके अनुयायी खोजरिपोर्टों के निरीक्षक गणों, मिश्र बन्धुओं एवं हिन्दी साहित्य के अन्य इतिहास लेखकों ने समझ रखा है।

६. सरोज के अध्ययन की आवश्यकता, सीमा विस्तार और प्रमुख सहायक सूत्र

दूसरे खण्ड में सर्वेक्षण है। यही इस ग्रन्थ का मुख्य अंश है। सरोज में वर्णानुक्रम से १००३ कवियों के जीवन चरित्र दिये गये हैं। इस ग्रन्थ का उद्देश्य प्रत्येक कवि के सम्बन्ध में

सरोज-दत्त तथ्य एवं तिथियों की जाँच करना है, साथ ही यदि खोज में इन कवियों के सम्बन्ध में कोई अन्य सूचनाएँ सुलभ हुई हैं तो उनको भी पूर्णता की दृष्टि से एकत्र कर देना है। इस खण्ड में कवियों के सर्वेक्षण की निम्नाङ्कित पद्धति अपनाई गई है—

१. सबसे पहले प्रत्येक कवि की अपनी ओर से एक क्रमसंख्या दी गई है, क्योंकि सरोज में प्रत्येक वर्ण के कवियों का संख्याक्रम अलग-अलग है। क्रम संख्या के आगे तिर्यक् रेखा के उपरान्त एक अन्य संख्या और दी गई है। इस दूसरी संख्या पर कवि की रचनाएँ सरोज के संग्रह-खण्ड में उदाहृत हैं। सरोज में उदाहृत कवियों की क्रमसंख्या अटूट रूप से दी गई है। जिस कवि की क्रम-संख्या के पश्चात् इस ग्रन्थ में उदाहरण संख्या नहीं दी गई है, उसकी कविता सरोज में उदाहृत नहीं है।

२. इसके पश्चात् प्रत्येक कवि के सम्बन्ध में सरोज में जो कुछ लिखा गया है उसे ज्यों का त्यों अविकल रूप से यहाँ उद्धृत कर लिया गया है। यदि ऐसा न कर प्रत्येक कवि के सम्बन्ध में यह लिखा जाता कि इस कवि के सम्बन्ध में अमुक-अमुक बातें लिखी गई हैं, तो अधिकांश स्थलों पर अनावश्यक विस्तार हो जाता, क्योंकि अधिकांश कवियों के सम्बन्ध में सरोजकार ने एक-एक, आध-आध पंक्ति से अधिक नहीं लिखा है। और कतिपय स्थलों पर बिना मूल देखे हुए सन्तोष भी नहीं हो सकता। लेखक की बात की प्रामाणिकता जाँचने के लिए प्रत्येक कवि के सम्बन्ध में मूल ग्रन्थ भी उलटने की आवश्यकता पाठक को पड़ सकती है, अतः कवियों का परिचय मूल रूप में ही दे देना समीचीन समझा गया। इस मूल उद्धरण में भी प्रत्येक कवि का कोई न कोई संख्या-क्रम है। वह संख्या-क्रम प्रत्येक वर्ण के साथ बदलता गया है और स्वयं सरोजकार का दिया हुआ है। कवि-परिचय के पश्चात् सरोजकार ने प्रसङ्गप्राप्त कवि के उदाहरण का पृष्ठ-निर्देश भी किया है किन्तु अनावश्यक समझकर यह पृष्ठनिदेश यहाँ छोड़ दिया गया है।

३. इसके पश्चात् कवि के सम्बन्ध में सर्वेक्षण प्रारम्भ होता है। यदि उस कवि के ग्रन्थ खोज में उपलब्ध हुए हैं, तो उनका उल्लेख किया गया है और प्राप्त ग्रन्थों के आगे उन रिपोर्टों का भी निर्देश कर दिया गया है, जिनमें उनके विवरण हैं। पहली संख्या रिपोर्ट के सन् की है तथा दूसरी संख्या उस ग्रन्थ अथवा कवि की है, जिस पर उसके उद्धरण एवं परिचय उक्त रिपोर्ट में दिए गए हैं।

सर्वेक्षण करते समय जो उद्धरण सरोज से दिए-गए हैं, उनका पृष्ठ-निर्देश अनावश्यक समझा गया है। अन्य स्थलों से जब भी कोई उद्धरण दिया गया है, उद्धरण के ठीक नीचे दाईं ओर निर्देश कर दिया गया है। यदि उद्धरण न देकर किसी आधार पर कोई कथन किया गया है, तो उस आधार का निर्देश पाद-टिप्पणी में कर दिया गया है। विनोद और ग्रियर्सन के आधार

पर जब कोई बात कही गई है, तब विनोद और ग्रियर्सन शब्दों के आगे तुरन्त कोष्टक में उन ग्रन्थों की सम्बद्ध कविसंख्या दे दी गई है। सुविधा की दृष्टि से यत्र-तत्र खोज रिपोर्टों का भी निर्देश सर्वेक्षण के अन्तर्गत ही कोष्टक में कर दिया गया है।

ग्रन्थ के तृतीय खण्ड में उपसंहार है। इसमें सरोज के तथ्यों एवं तिथियों पर भिन्न-भिन्न कवियों के प्रसङ्ग में सर्वेक्षण के अन्तर्गत जो अलग-अलग विचार प्रकट किये गए हैं, उन पर सामूहिक रूप से विचार किया गया है और जो भी निर्णय पहले किए गए है, उन पर निष्कर्ष निकाला गया है।

उपसंहार के पश्चात् ग्रन्थान्त में तीन परिशिष्ट हैं। पहले परिशिष्ट में सरोज के आधार पर हिन्दी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास प्रस्तुत किया गया है। दूसरे में सहायक-ग्रन्थ-सूची दी गई है। और तीसरे में अनुक्रमणिका तथा सरोज, ग्रियर्सन एवं विनोद के कवियों की कालतुलनात्मक तालिका प्रस्तुत की गई है। इस तालिका से अन्य अनेक काम भी लिए गए हैं, जिनका उल्लेख तालिका के ठीक पहले कर दिया गया है।

लेखन सुविधा की दृष्टि से इस ग्रन्थ में कतिपय स्थलों पर संक्षेपण का भी सहारा लिया गया है। प्रमुख संक्षेपों की सूची नीचे दी जा रही है।

	संक्षिप्त रूप	मूल रूप
१.	सरोज	शिवसिंह सरोज
२.	विनोद	मिश्रबन्धु विनोद
३.	ग्रियर्सन	द मॉडर्न वर्नाक्यूलर लिटरेचर ऑफ़ हिन्दुस्तान
४.	तासी	इस्त्वार द ल लितरेत्यूर ऍंदूई ए ऍंदुस्तानी
५.	सभा	नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
६.	शुक्ल	आचार्य पण्डित रामचन्द्र शुक्ल
७.	खोज-रिपोर्ट	खोज में उपलब्ध हस्तलिखित हिन्दी ग्रन्थों के विवरण, सभा के लिये उत्तरप्रदेशीय सरकार द्वारा अंग्रेजी में राजकीय मुद्रणालय, इलाहाबाद से प्रकाशित १६००-२५ ई०, और सभा द्वारा हिन्दी में प्रकाशित १६२६-४० ई०।
८.	पञ्जाब-रिपोर्ट	रिपोर्ट आन दी सर्वे फ़ार हिन्दी मैनुस्क्रिप्ट्स इन द पञ्जाब, सभा के लिये उत्तरप्रदेशीय सरकार द्वारा प्रकाशित।

९. दिल्ली रिपोर्ट — रिपोर्ट ऑन द सर्वे फ़ार हिन्दी मैनुस्क्रिप्ट्स इन द डेलही प्राविंस, सभा के लिए उत्तरप्रदेशीय सरकार द्वारा प्रकाशित।

१०. राजस्थान रिपोर्ट — राजस्थान में हिन्दी के हस्तलिखित ग्रन्थों की खोज, प्रकाशक, प्राचीन साहित्य शोध संस्थान, उदयपुर विद्यापीठ, उदयपुर।

११. विहार रिपोर्ट — प्राचीन हस्तलिखित पोथियों का विवरण, प्रकाशक, विहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना।

ग्रन्थ पर्याप्त बड़ा हो गया है। इसके दो प्रमुख कारण हैं—एक तो इसमें सरोज, वर्णित १००३ कवियों का सर्वेक्षण किया गया है। यदि एक-एक कवि का सर्वेक्षण एक-एक पृष्ठ भी ले लें तो केवल सर्वेक्षण में १००० पृष्ठ लग जायँगे। यह पृष्ठ संख्या तभी कम हो सकती थी, जब सर्वेक्षित कवियों की संख्या कम कर दी जाती, परन्तु ऐसा करने से जिस अभीष्ट से ग्रन्थ-रचना में हाथ लगाया गया था, उसकी पूर्ति सम्भव न थी। ग्रन्थ विस्तार का दूसरा कारण इसमें कवियों के सरोज लिखित परिचय का ज्यों का त्यों उद्धृत कर देना है। इस उद्धरण से ही लगभग १०० पृष्ठ बढ़ गये हैं। यह परिचय मूलग्रन्थ के १२५ बड़े पृष्ठों में आया है। प्रयत्नपूर्वक इस ग्रन्थ की पृष्ठसंख्या परिसीमित की गई है। अनावश्यक विस्तार से बचने का निरन्तर सायास प्रयास किया गया है। फिर भी ग्रन्थ इतना बड़ा हो गया तो विषय के साथ न्याय करने की दृष्टि से ही।

इस ग्रन्थ के द्वारा मैंने हिन्दी साहित्य के इतिहास को निर्भ्रान्त बनाने में अपना यथाशक्य योग दिया है। अभी तक सरोज में दिये संवत् उत्पत्तिकालसूचक समझे जाते रहे हैं, किन्तु मैंने पूर्ण प्रमाणित कर दिया है कि सरोजकार ने अपनी समझ से उपस्थितिकाल दिया है। अभी तक सामान्य धारणा यह भी रही है कि सरोज के सभी सन्-संम्वत् विक्रम संवत् हैं, पर मैंने यह भी प्रमाणित कर दिया है कि इनमें से कुछ संवत विशेषकरत् अकबरी दरबार से सम्बन्धित कवियों के संवत्, ईस्वी-सन् हैं। सरोजकार ने यद्यपि अपनी समझ से उपस्थितिकाल दिया है, पर उनके सभी संवत् शुद्ध नहीं हैं। इनमें कुछ तो पूर्णतया अशुद्ध हैं और कुछ निकटतम जन्मकाल सिद्ध होते हैं।

सन्-संम्वत् सम्बन्धी इन खोजों के अतिरिक्त विभिन्न कवियों के सम्बन्ध में तथ्य सम्बन्धी सैकड़ों छोटी-बड़ी नयी बातें मैंने इस ग्रन्थ में प्रस्तुत की है। मैंने प्रमाणित किया है कि सरोज में वर्णित एक ही नाम के अनेक कवि वस्तुतः एक ही हैं, यथा—अनन्य नाम के चारो कवि और सुखदेव नाम के तीनों कवि; जिसे सरोज में पुरुष समझा गया है वह स्त्री हैं यथा, ताज और सुजान। सरोज

में जो एक कवि है, वस्तुतः वह दो है यथा, नाभादास और नारायणदास अभी तक एक ही कवि के दो नाम समझे जाते रहे हैं, पर वे वस्तुतः दो भिन्न-भिन्न कवि हैं। इसी प्रकार सरोज में वर्णित मतिराम एक नहीं दो हैं। एक प्रसिद्ध भूषण के भाई हैं, दूसरे छन्दसार के रचयिता हैं। जिन्हें सरोज में कवि समझ लिया गया है, वे वस्तुतः कवि ही नहीं हैं, यथा—तीखी, तेही, लक्ष्मण-शरणदास आदि। सरोजकार ने जो भूलें की हैं, उनमें से अनेक का मूल उत्स मैंने खोज निकाला है, यथा अनन्यदास चकदेवा वाले को अक्षर अनन्य से भिन्न एवं उनसे लगभग पाँच सौ वर्ष पूर्ववर्ती समझने की भूल सरोजकार की कोई मौलिक भूल नहीं है। 'प्रेम रतन' की रचयित्री, राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द की पितामही, रतन कुँवरि से भिन्न, काशीवासी एक अन्य रतन ब्राह्मण कवि की उद्भावना की भूल भी इनकी अपनी नहीं है। दोनों भूलों का मूल-स्रोत महेशदत्त जी का 'भाषाकाव्य संग्रह' है। भूषण के सम्बन्ध में जो वितण्डावाद श्रीभगीरथ दीक्षित की कृपा से उठ खड़ा हुआ था, उसका भी निराकरण इस ग्रन्थ में पूर्णरूप से कर दिया गया है।

तथ्य एवं तिथियों सम्बन्धी सभी नवीन शोधें विस्तृत रूप से तो अलग-अलग कवियों के सर्वेक्षण में ही देखी जा सकती हैं। किन्तु फिर भी सामूहिक रूप से इन पर एकत्र विचार उपसंहार में देखा जा सकता है।

इस ग्रन्थ के प्रणयन में जिन-जिन लोगों की सहायता मुझे मिली है, उनके प्रति आभार प्रकट करना मेरा परम पुनीत कर्त्तव्य है। सर्वप्रथम मैं डॉ० छैलविहारी लाल गुप्त, 'राकेश', डी० फ़िल्, डी० लिट्०, अध्यक्ष हिन्दी विभाग काशी नरेश राजकीय महाविद्यालय ज्ञानपुर के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन करता हूँ, जिन्होंने मेरे इस शोधनिबन्ध का निर्देशक होना स्वीकार कर मेरा पन्थ प्रशस्त किया। तदुपरान्त मैं प्रो० पण्डित विश्वनाथप्रसाद मिश्र, हिन्दी विभाग, हिन्दू विश्वविद्यालय, काशी के प्रति अत्यन्त श्रद्धापूर्वक नतमस्तक हूँ, जिन्होंने समय-समय पर मेरी बातें ध्यानपूर्वक सुनीं, उपयुक्त सुझाव दिये, यही नहीं, समय-समय पर यथासम्भव उपयुक्त सामग्री भी प्रदान की और निरन्तर मेरे प्रेरक बने रहे। नागरी प्रचारिणी सभा काशी के खोजविभाग के अन्वेषक दौलतराम जुयाल के प्रति भी मैं कृतज्ञ हूँ, जिन्होंने सभा की खोजरिपोर्टों के अप्रकाशित संक्षिप्त विवरण को सुलभ करने में सदैव सप्रीति तत्परता दिखलाई। इस अवसर पर यदि मैं स्वर्गीय डॉ० श्यामसुन्दर दास की उस सूझ-बूझ का, जिसके कारण उन्होंने सभा द्वारा हस्तलिखित हिन्दी-ग्रन्थों की खोज का कार्य प्रारम्भ कराया, सादर साभार स्मरण न करूँ तो घोर कृतघ्नता होगी, क्योंकि खोज रिपोर्टों के अभाव में मेरा यह कार्य कदापि अग्रसर नहीं हो सकता था। अन्य सुधी साहित्यकारों के प्रति भी मैं कृतज्ञ हूँ जिनके ग्रन्थों एवं लेखों से मुझे सामग्री सुलभ हुई है।

शिबली कालेज आजमगढ़
जुलाई १९५७

किशोरीलाल गुप्त
अध्यक्ष हिन्दी विभाग

विषय-सूची

शिवसिंहसरोज

شیو سنگھ سروج

जिस्को श्रीसेंगर वंशावतंस श्रीमन्महारानकुमार ठाकुर
रनजीत सिंह सेंगर तअल्लुक़ेदार
कांथा ज़िले
उनाव के पुत्र
शिवसिंह इन्सपेक्टर पुलिसने
बनाया

इस ग्रंथ में एक हज़ार भाषा कवि लोगों
के नाम और जीवन चरित्र सन् संवत्
कविता समेत लिखे गये हैं और संस्कृत
कवि गणों का स्वल्प वर्णन हुवा है

स्थान लखनऊ

श्रीयुत मुन्शी नवल किशोर जी के यन्त्रालय में
छापी गई
अप्रैल सन् १८७८ ईसवी

संख्या	कविका नाम	संवत	जीवनचरित्र	पत्रोंमें जिनकी कविताहै
५०	गणेशकवि बंदीजनबनारसी॥	विद्यमानहै	यह कवीश्वर महाराजे ईश्वरी नारायण सिंह काशी नरेश के इहां महा निपुण कविताई में हैं॥	[illegible]
५१	गीधकवि॥	+	फुटकर छप्पय दोहा आदि नाहैं॥	[illegible]
५२	गड्डु कविरा-जपूतानेवा-ले॥	१७००	कूट गूढ़ सोलैक छप्पय इनकी बहुत वि-ख्यात हैं॥	
५३	गिरधारीभा-टमऊरानी पुरबुंदेलख-ण्डी॥	विद्यमानहैं		
५४	गुलाबसिंह पंजाबी॥	१८५६	कुरुक्षेत्रमें क्षेत्र सन्यास लै रामायण १ चंद्र प्रबोध नाटक २ मोक्ष पंथ ३ भावर सावर ४ इत्यादि नाना वेदांत के ग्रंथभा-षा किये हैं॥	
५५	गोवर्द्धन कवि॥	१६८०		
५६	गोकुकवि	१७५५		
५७	गणेशजी मिश्र	१६१५		
५८	गुलालसिंह	१७८०		
५९	गजसिंह।	+	गजसिंह विलास बनाया॥	+
६०	ज्ञानचंदय-तीराजपुता-नेवाले॥	१८७०	ये कवि टाड साहब एजंट राजपुताने के गुरू हैं औ इन्हीं की सहायता से बड़े बड़े ग्रंथ बंशावली औ प्रबंध राजपुताने के साहेब ने उल्था किये॥	+
६१	गोविंदराम बंदीजनराज पूताने वाले	+	हाड़ा लोगों की वंशावली और सब रा-जों के जीवन चरित्र में एक ग्रंथ हाड़ा-वती इतिहास लिखा है जिसे राव रतन	+

५. नागरी प्रचारिणी, सभा काशी में सुरक्षित शिवसिंह सेंगर के हिन्दी एवं उर्दू हस्तलेख का नमूना, शिवसिंह सरोज के प्रारूप का प्रथम पृष्ठ

अध्याय १

भूमिका

परिचय

क. शिवसिंह सरोज

शिवसिंह सरोज के नाम से हिन्दी के प्रायः सभी साहित्य सेवी परिचत हैं, क्योंकि जब भी किसी प्राचीन कवि के सम्बन्ध में कोई जानकारी किसी शोधी विद्वान् द्वारा प्रस्तुत की जाती है, तब कवि के सम्बन्ध में सरोज ने क्या लिखा है, यह उल्लेख सर्वप्रथम किया जाता है, पर इसके स्वरूप से सभी का परिचय नहीं है। कुछ लोगों को यह भी भ्रम हो सकता है कि यह सम्भवतः हिन्दी साहित्य का प्रथम इतिहास है। बात ऐसी नहीं है। सरोज एक काव्य-संग्रह है। ग्रन्थ के आरम्भ में बारह पृष्ठों की भूमिका है। इसमें ग्रन्थ लिखने का कारण, आधार ग्रन्थों की सूची, संस्कृत साहित्य-शास्त्र का निर्णय और भाषा काव्य का निर्णय दिया गया है। तदनन्तर ३७६ पृष्ठों में काव्य-संग्रह है। कुल ८३९ कवियों की कवितायें कवि-वर्णानुक्रम से संकलित हैं। काव्य-संग्रह में पहले कवि का नाम दिया गया है,फिर उसका उदाहरण। यहां कवि संख्या अटूट रूप से १ से लेकर ८३९ तक दी गई है। ८०७ एवं ८१६ संख्यायें प्रमाद से छूट गई हैं, पर ८११ और ८१८ संख्यायें दुहरा भी उठी हैं, अतः उदाहृत कवियों की संख्या में कोई अन्तर नहीं पड़ता। काव्य-संग्रह के अनन्तर १२५ पृष्ठों में कुल १००३ कवियों के जीवन-चरित्र दिये गए हैं। जीवन चरित्र भी कवि-वर्णानुक्रम से ही हैं। यहां एक-एक वर्ण के कवियों की क्रम संख्या अलग-अलग दी गई है। संग्रह खंड में कवियों का जो क्रम है, वही क्रम जीवन-चरित्र-खण्ड में नहीं है। जीवन-चरित्र-खण्ड में ८३९ में से ८३३ कवियों के जीवन-चरित्र आ गए हैं। सुजान की कविता ७३० और ७६७ संख्याओं पर दो बार उदाहृत हो गई है। निम्नांकित ५ कवियों की रचनायें उदाहृत हैं, पर इनके जीवन चरित्र नहीं दिए गए हैं :—

(१) औसेरी बन्दीजन अवधेश (? अवध) वासी, उदाहरण २० संख्या पर, एक कवित्त भँड़ौआ सम्बन्धी।

(२) बलराम, उदाहरण ४७० संख्या पर, एक शृंगारी कवित्त।

(३) राम जी कवि (२), उदाहरण ६३६ संख्या पर, दो शृंगारी कवित्त।

(४) लाल साहब महाराज त्रिलोकीनाथ सिंह, द्विजदेव महाराज मानसिंह बहादुर के भतीजे और जा-नशीन, भुवनेश कवि, उदाहरण संख्या ६९४ पर, उदाहरण भुवनेश भूषण नामक ग्रन्थ से दिए गए हैं, दो शृंगारी सवैए एवम् एक कवित्त उद्धृत हैं।

(५) सीताराम त्रिपाठी पटनावाले, संख्या ७९८ पर उदाहृत, गंगास्तुति-सम्बन्धी एक कवित्त उद्धृत है।

ख. शिवसिंह सेंगर

डलमऊ निवासी महानन्द वाजपेयी[1] ने शिव पुराण[2] का विशद अनुवाद किया था। बाजपेयी

---

१ देखिए इसी ग्रन्थ में महानन्द बाजपेयी, संख्या ६६६

२ खोज रिपोर्ट १९२३, २५२ ए

जी की मृत्यु सम्बत् १६१६ में हुई। १६२६ विक्रमी में यह ग्रन्थ शिवसिंह सेंगर के हाथ लगा। उन्होंने इस ग्रन्थ का उर्दू अनुवाद करके प्रकाशित कराया एवम् बाजपेयी जी वाले भाषा अनुवाद में भी यत्र-तत्र संशोधन किया। इस ग्रन्थ की पद्य-बद्ध भूमिका भी लिखी। इसमें इन्होंने यह सारी सूचना दी है, साथ ही अपना एवम् अपने पिता का परिचय भी दिया है। इस परिचय के अनुसार यह काँथा के रहने वाले थे। काँथा लखनऊ से १० कोस दक्षिण एक गांव है। शिवसिंह के पिता रणजीत सिंह यहीं के राजा (ताल्लुकेदार) थे :—

लखनऊ ते कोस दस दच्छिन बसे एक ग्राम
महाबीर विराजहीं जहँ कहत काँथा नाम
वंश शृंगी शान्ता जहँ उर्वीपति साज
धर्म धर पत्री विराजैं विधा से द्विजराज
करत रच्छा जनन की जहँ शूल पाणि महेश
मम पिता हैं तहँ भूमिपति रणजीत सिंह नरेश

शिवसिंह जी अपने पिता के सम्बन्ध में पर्याप्त जानकारी निम्नांकित पंक्तियों में देते हैं :—

धर्म कर्ता शत्रु हरता शास्त्रवेत्ता दानि
प्रजा भर्ता दया धर्ता विजय जस की खानि
रिपु भये बनचारी, सुखारी मित्र जाके सर्व
संग्राम में जिन शत्रु को सब दूरि डार्यो गर्व
मारतंड द्वितीय लौं है प्रगट तेज अखण्ड
अनल से प्रज्वलित हैं भुजदंड चंड प्रचंड
यदपि सेवक भृत्य गन बहु रहत निसि दिन पास
तदपि शिव पर पुष्प शैलुप दूरि अरचत खास
श्रवन वेद पुरान कौ अस्मरन गौरीकन्त
रन त्यागि सर्व्याहि धरत निसिदिन मनहुँ योगी संत

रणजीत सिंह के यहां वन्दीजन गुणानुवाद किया करते थे :—

भक्ति भूसुर वृन्द को गोविन्दपद रति ओज
गाय गाय सुनावहीं जस गाथ वंदी रोज

इन्हीं वन्दीजनों में से एक विश्वनाथ हुये हैं, जिनका उल्लेख सरोज में हुआ है।[१] उन्होंने निम्नांकित कवित्त रणजीत सिंह की प्रशस्ति में लिखा है।

मनसब दिलीते लखनऊ ते खैरख्वाही
　　लन्दन ते खुलत खिलाति बिना सक से
भार भुज दंडन सँभारे भुव मंडल कौ
　　जाको धाक धाम धराधीश धकाधक से
हाँक सुने हालत हरीफ नाक दम होत
　　कहै 'विश्वनाथ' अरि गिरै जाको मक्से

१ देखिए यही ग्रन्थ—विश्वनाथ वन्दीजन, संख्या ४४७

कहाँ लौ सराही तेरे उर की उमाही
भूप रणजीत सिंह तेरे पातसाही नक्से

सरोज में भी विश्वनाथ के उदाहरण में यही छन्द उद्धृत है।

शिवसिंह ने इस प्रसंग का एक और कवित्त उद्धृत किया है, जिसमें कवि छाप नहीं है :—

देवन अदेव भूत भैरवादि बचिजात,
बचिजात जच्छ कूष्माण्ड कीं कटक ते
बचि जात हूलहू, त्रिशूलहू से बचिजात,
बचिजात साप शूल सूल की सपट ते
बचिजात आधि व्याधि, घातहू से बचिजात,
बचिजात वर व्याल व्याघ्र की डपट ते
बच्चिजात यम सों जमाति जोरि जमन की,
बचत न अरि रनजीत की झपट ते

रणजीत सिंह के बादशाही नक्शे थे। इनके यहां दरबार में सदैव गुणीजन रहा करते थे। इनमें से प्रमुख व्यक्ति ये हैं :—

(१) बेनी शुक्ल शास्त्री, राजगुरु, (२) श्री सीताराम मिश्र, राजवैद्य (३) मोहन लाल त्रिपाठी, राज ज्योतिषी (४) ईश्वरी शुक्ल, पौराणिक (५) भोलानाथ और (६) गंगा अवस्थी, संस्कृत, फारसी, अरबी और अंग्रेजी के पंडित, इन सबका उल्लेख शिवसिंह जी ने उक्त ग्रन्थ में इस प्रकार किया है :—

(१) विराजैं जहाँ शास्त्री शुक्ल बेनी
गुरुदेव मम स्वर्ग की हैं निसेनी
(२) अभय जीव हैं, हैं न रोगादि भीता
सुधा से लसैं मिश्र श्रीराम सीता
(३) बड़े जोतिषी राजमंत्री बली हैं
मनो भाष्यकर गर्ग से मंगली हैं
महाराज श्रीमान् से मान पायो
रह्यो मान वाके न जो मान लायो
त्रिपाठी गणिक लाल मोहन विराजै
जकी देखि जेहि ज्योतिषी की समाजै
गणित जासु की ब्रह्म लिपि लौं सही है
मनो देह मानुष्य धातै गही है
(४) ज्वलित जाल जनु शेष दूजो विराजै
पुराणज्ञ श्री ईश्वरी शुक्ल आजै
पढ़े सर्व इतिहास अरु आयुर्वेदै,
लहे युक्ति सो काव्य कोषादि भेदै

(५) दिली मित्र सबके अमी सौं कलामै
मिथा नाथ भोला गहे युग्म बामै
(६) पढ़े संस्कृत आरबी फारसी हैं
सबै इल्म अंग्रेज की आरसी हैं
रह्यो शेष जाणों न विद्यांश अंगा
अवस्थी हैं अभिधान विख्यात गंगा

शिवसिंह के दो भाई थे, गुरुवक्श सिंह और महीपति :—

सर्व मन रंजन, विभंजन दुःख, सज्जन मित्र
दुष्ट दल गंजन, गुणालय, सर्व गुनको चित्र
गर्व हर, हरभक्त, श्री गुरु वक्श मेरे भ्रात
मूर्तिमान त्रिदेव लौं हैं धरे मानुज गात
ज्येष्ठ श्रेष्ठ दयाल मम भ्राता सहोदर तात
महीपति है नाम मानो मही रवि दरसात

अपने सम्बन्ध में भी कवि ने एक छन्द लिखा है :—

नाम मम शिवसिंह है, शिव चरण रज की खोज
भद्रायु लौं सुख लहत निशि दिन पाय दिल की मौज

सरोज के अन्तर्गत शिवसिंह ने अपने सम्बन्ध में निम्नांकित विवरण दिया है :—

"२१. शिवसिंह सेंगर (२) कांथा, जिले उन्नाव के निवासी संवत् १८७८ में उ०"

अपना नाम इस ग्रन्थ में लिखना बड़े सांकोच की बात है। कारण यह कि हमको कविता का कुछ भी ज्ञान नहीं। इस हमारी ढिठाई को विद्वज्जन क्षमा करें। हमने बृहच्छिवपुराण की भाषा और उर्दू दोनों बोलियों में उलथा करके छपा दिया है और ब्रह्मोत्तर खण्ड की भी भाषा की है। काव्य करने की हममें शक्ति नहीं है। काव्य इत्यादि सब प्रकार के ग्रन्थों के इकट्ठा करने का बड़ा शौक है। हमने अरबी, फ़ारसी, संस्कृत आदि के सैकड़ो अद्भुत ग्रन्थ जमा किये हैं और करते जा रहे हैं। इन विद्याओं का थोड़ा अभ्यास भी है।"

जिस बृहच्छिवपुराण का उल्लेख शिवसिंह ने किया है, वह वस्तुतः ऊपर वर्णित महानन्द बाजपेयी कृत ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ की भूमिका में शिवसिंह जी लिखते हैं :—

श्री बाजपेयि गुन गण निधान
विख्यात महानँद सब जहान
तिन्ह भाषा कीन्हीं शिव-स्मृत्ति
दोहा चौपाई छंद वृत्त
वास भो कैलाश में, नहिं ग्रंथ कीन्ह प्रकाश
विस्तार छत्तिस सहस भाषा ग्रन्थ है मति रास
यदपि चौबिस सहस हैं शिव कौ पुराण अनूप
तदपि भाषा ह्वै गयो छत्तीस सहस सरूप

उन्नीस सौ छब्बीस संवत में लह्यो हम ग्रन्थ
हित सर्व जन कौ ठानि कैं करि दीन सलिल सुपन्थ
अर्थात् उर्दू प्रथम उल्था छापि दीन्हौ याहि
जो चहै लेवै ग्रन्थ कौं तिनकाहिं दुर्लभ नाहिं
पुनः भाषा ग्रन्थ में लखि छिद्र छुद्र अनेक
सुद्ध कीन्हौ तिन्हहिं जिय में धारिं भूरि विवेक

शिवसिंह ने सरोज की भूमिका में अपने एक अन्य ग्रन्थ 'कविमाला' का उल्लेख किया है। इस ग्रन्थ से चौंतीस दोहे भी पृष्ठ ५-८ पर उद्धृत किये गये हैं।

शिवसिंह का महत्व न तो शिव पुराण के कारण है और न ब्रह्मोत्तर खंड भाषा एवम् कविमाला के कारण ही हिन्दी साहित्य में वे एक मात्र 'शिवसिंह सरोज' के कारण अविस्मरणीय बने रहेंगे।

विनोद[1] के अनुसार शिवसिंह सेंगर, कांथा, जिला उन्नाव के रहने वाले थे। इनके पिता का नाम रणजीत सिंह एवम् पितामह का बख्तावर सिंह था। शिवसिंह का जन्म सम्बत् १८९० वि० में और देहावसान ४५ वर्ष की वय में सम्बत् १९३५ में हुआ। खोज रिपोर्ट[2] में भी, सम्भवतः विनोद का ही अनुसरणकर, शिवसिंह का जन्मकाल सन् १८३३ ई० दिया गया है।

सरोज में शिवसिंह ने अपने को "सं० १८७८ में उ०" लिखा है। 'उ०' का अर्थ 'उत्पन्न' करके एवम् इसे विक्रम सम्बत् समझ कर प्रो० रामकुमार वर्मा[3] ने लिखा है कि "शिवसिंह सेंगर का जन्म संबत् १८२१ में हुआ था।" प्रो० विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने भी इसे जन्म-काल समझ लिया है, यद्यपि अन्यत्र सर्वत्र ही वे 'उ०' का अर्थ उपस्थित मानते हैं।[4] वास्तविकता तो यह है कि १८७८ ई० सन् है। यह सरोज का प्रकाशन काल है। इस समय कवि 'उ०' अर्थात् उपस्थित था।

ग. शिवसिंह का पुस्तकालय

शिवसिंह पुलिस इन्स्पेक्टर थे, फिर भी यह काव्यप्रेमी एवम् कवि थे। अरबी, फ़ारसी, संस्कृत की भी इनकी कुछ जानकारी थी, हिन्दी, उर्दू तो यह जानते ही थे। इन्हें ग्रन्थों के इकट्ठा करने का बड़ा शौक था। अतः इनके पास एक बहुत अच्छा पुस्तकालय हो गया था, जिसमें हस्त-लिखित ग्रन्थ ही अधिकांश में थे। सम्बत् १९२४ में जब पं० ठाकुर प्रसाद त्रिपाठी, किसुनदासपुर, जिला रायबरेली वाले का देहान्त हुआ, तब इनके चारों महामूर्ख पुत्रों ने पिता द्वारा संगृहीत पुस्तकों के अठारह-अठारह बस्ते बांट लिये और कौड़ियों के मोल बेंच डाले। शिवसिंह ने भी प्रायः २०० ग्रन्थ इनसे मोल लिये थे। यह उल्लेख इन्होंने पं० ठाकुर प्रसाद त्रिपाठी के विवरण में किया है[5]।

शिवसिंह के पुस्तकालय में अनेक बहुमूल्य ग्रन्थ थे। उनके मरने के पश्चात् उनका पुस्तकालय उनके भतीजे नौनिहाल सिंह के अधिकार में आया, क्योंकि विनोद के अनुसार शिवसिंह अपुत्र मरे थे। मिश्रबन्धुओं ने काँथा जाकर इस पुस्तकालय को देखने का उल्लेख किया है। 'भूषण-विमर्श' के

[1] विनोद कवि संख्या २१९९
[2] खोज रिपोर्ट १९२३।२५२
[3] हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, पृष्ठ ३, पाद टिप्पणी २
[4] 'शिवसिंह सरोज के संबत्', हिंदुस्तानी, अप्रैल-जून १९४३.
[5] देखिए, यही ग्रंथ, कवि संख्या ३१२

लेखक भगीरथ प्रसाद दीक्षित ने भी उक्त पुस्तकालय के देखने का उल्लेख उक्त ग्रन्थ में किया है।[१] नौनिहाल सिंह के अधिकार में रक्षित अनेक ग्रन्थों के विवरण विभिन्न खोज-रिपोर्टों में उपलब्ध हैं। निश्चय ही ये सभी ग्रन्थ शिवसिंह के पुस्तकालय में हैं। शिवसिंह के पुस्तकालय की पूर्ण छानबीन कभी नहीं हुई, यदा-कदा कुछ पुस्तकों के विवरण ले लिये गये हैं। सभा को इस पुस्तकालय का सभी पुस्तकों का विवरण एक साथ लेकर अलग रिपोर्ट में प्रकाशित करना चाहिये था।

शिवसिंह के पुस्तकालय के ग्रन्थों की एक अपूर्ण अनुमित सूची नीचे दी जा रही है।

(अ) वे १५ संग्रह ग्रन्थ जिनसे सरोज के प्रणयन में सहायता ली गई है :—

(१) कालिदास का हजारा
(२) लाल-गोकुल प्रसाद ब्रज का दिग्विजय भूषण
(३) तुलसी कवि कृत कविमाला
(४) श्रीधरकृत विद्वन्मोद तरंगिणी
(५) बलदेवकृत सत्कवि गिरा विलास
(६) भारतेन्दु कृत सुन्दरी तिलक
(७) ठाकुरप्रसाद त्रिपाठी कृत रसचन्द्रोदय
(८) मातादीन कृत कवित्त रत्नाकर
(९) महेश दत्त कृत काव्य-संग्रह
(१०) कृष्णानन्द व्यासदेव कृत राग कल्पद्रुम
(११) दलसिंह कृत संग्रह
(१२) किशोरकृत संग्रह
(१३) ग्वाल कृत संग्रह
(१४) निपट निरंजन कृत संग्रह
(१५) कमच कृत संग्रह

इनके अतिरिक्त २८ नामहीन संग्रहों से सरोजकार ने सहायता ली, ऐसा उल्लेख उसने भूमिका में किया है।

(ब) पांच अन्य सहायक ग्रन्थः—

(१) टाड कृत आनल्स आफ राजस्थान (अंग्रेजी)
(२) कल्हण कृत काश्मीर राज तरंगिणी (संस्कृत)
(३) रघुनाथ मिश्र कृत दिल्ली राजतरंगिणी (संस्कृत)
(४) विद्याधर कृत राजावली (संस्कृत)
(५) तुलसी राम अग्रवाल कृत भक्तमाल का उर्दू अनुवाद

(स) सरोज के संग्रह खंड में उद्धरण देते समय प्रायः यह उल्लेख है कि किस ग्रन्थ से उद्धरण दिया जा रहा है। सम्भवतः ये सभी ग्रन्थ सरोजकार के पुस्तकालय में थे। ऐसे २५९ ग्रन्थों की सूची निम्नांकित है :—

---

[१] भूषण विमर्श, प्राक्कथन २२२

ग्रन्थ	लेखक
१. साहित्य सुधा सागर	अयोध्या प्रसाद बाजपेयी
२. यमक शतक	अब्दुल रहिमान
३. दुर्गा भाषा	अनन्य (२), (अक्षरा अनन्य)
४. स्कन्द विनोद	स्कन्द गिरि
५. अनन्य योग	अनन्य दास चकदेवा (अक्षरा अनन्य ही)
६. रामविलास	ईश्वरी प्रसाद त्रिपाठी
७. ब्रह्म विलास	इच्छा राम अवस्थी
८. कवि प्रिया	
९. रसिक प्रिया	
१०. रामचन्द्रिका	केशव दास मिश्र
११. विज्ञान गीता	
१२. राम अलंकृत मंजरी पिंगल	
१३. भ्रमरगीत	केशव राम
१४. रसिक रसाल	कुमार मणि भट्ट
१५. रस कल्लोल	करण भट्ट } दोनों एक ही कवि हैं।
१६. साहित्य चन्द्रिका	करण ब्राह्मण
१७. किशोर संग्रह	किशोर
१८. वधूविनोद	कालिदास त्रिवेदी
१९. विनोद चन्द्रोदय	कवीन्द्र उदयनाथ
२०. कवीन्द्र कल्पलता	कवीन्द्राचार्य सरस्वती
२१. चित्र चन्द्रिका	काशिराज कवि, बलवान सिंह
२२. दोहावली रतनावली	कोविद कवि पं० उमापति
२३. नखशिख	कलानिधि (२), श्रीकृष्ण भट्ट
२४. भागवत भाषा	कृपाराम ब्राह्मण, नरैनापुरवाले
२५. समय बोध	कृपाराम, जयपुरवाले
२६. मदनाष्टक	खानखाना अब्दुल रहीम
२७. बरवै	
२८. लक्ष्मण शतक	खुमान
२९. नायिका भेद	
३०. भूषण दाम	खंडन
३१. कुँडलिया	गिरिधर कविराज
३२. भारती भूषण	गिरिधर बनारसी
३३. काव्य कला निधि	गुमान मिश्र, सांड़ीवाले
३४. कर्णाभरण	गोविन्द कवि
३५. कृष्ण चन्द्रिका	गुमान कवि, बुन्देलखंडी

३६. उपसतसैया	गंगाधर (२)
३७. गोपाल पचीसी	गोपाल कायस्थ, रीवांवाले
३८. यमुना लहरी	ग्वाल
३९. चेत चन्द्रिका	गोकुल नाथ, बनारसी
४०. ग्रन्थ साहब नाम ग्रन्थ	गुरु गोबिन्द सिंह
४१. वृत्तहार पिंगल	गजराज उपाध्याय बनारसी
४२. वाग् मनोहर पिंगल	गुरुदीन पांडे
४३. पृथ्वीराज रायसा पद्मावती खंड	चंद बरदायी
४४. ,, ,, आल्ह खंड	
४५. ,, ,, दिल्ली खंड	
४६. भारत दीपिका	चैन सिंह खत्री, उपनाम हरचरण
४७. शृंगार सारावली	
४८. छंद विचार पिंगल	चिन्तामणि
४९. काव्य विवेक	
५०. रामायण	
५१. कवि कुल कल्पतरु	
५२. पथिक बोध	चन्दन राय
५३ काव्यभरण	
५४. चन्दन सतसई	
५५. केशरी प्रकाश	
५६. कल्लोल तरंगिणी	
५७. शृंगार सार	
५८. भारत भाषा	चिरंजीव गोसाईं
५९. अश्व विनोदी	चेतन चन्द
६०. ज्ञान स्वरोदय	चरण दास
६१. मनोज लतिका	क्षितिपाल, राजा माधोसिंह, अमेठी
६२. देवी चरित्र सरोज	
६३. त्रिदीप	
६४. कवि नेह पिंगल	छेदी राम
६५. पिंगल	जगत सिंह बिसेन, देउतवाले
६६. साहित्य सुधा निधि	
६७. अलंकार निधि	राजा युगुल किशोर भट्ट, दिल्ली
६८. नीति विलास	जानकी प्रसाद पँवार
६९. राम चन्द्रिका तिलक	जानकी प्रसाद बनारसी
७०. छंदसार पिंगल	जयकृष्ण कवि

१०७. काव्य रसायन १०८. अष्टयाम १०९. षटऋतु	देव
११०. आनन्द रस नायिका भेद	दयानाथ दुबे
१११. योगतत्व	देवदत्त (२)
११२. रमल प्रश्न	धौकल सिंह वैश
११३. शालिहोत्र	निधान (२)
११४. शान्ति सरसी वेदान्त	निपट निरंजन
११५. अलंकार दर्पण	नाथ (५) हरिनाथ गुजराती ब्राह्मण
११६. सुदामा चरित्र	नरोत्तमदास
११७. रामकृष्ण गुणमाल	नंदकिशोर कवि
११८. ज्ञान सरोवर	नवलदास क्षत्रिय, गूढ़गांववाले
११९. भक्तमाल	नाभादास
१२०. छंदसार पिंगल	नारायणदास वैष्णव
१२१. जगद्विनोद	पद्माकर भट्ट
१२२. काव्य विलास	प्रताप साहि
१२३. मधुप्रिया	पजनेश
१२४. अनेकार्थमाला	प्रेमी यमन। यह अब्दुर्रहमान दिल्लीवाले हैं।
१२५. चक्राव्यूह इतिहास	प्राणनाथ बैसवारे के
१२६. नाभा के भक्तमाल का तिलक	प्रियादास
१२७. शालिहोत्र	प्रधान केशवराय
१२८. सतसई	बिहारी लाल चौबे
१२९. रस चन्द्रिका पिंगल	बालकृष्ण त्रिपाठी
१३०. विक्रम विरुदावली १३१. विक्रम सतसई	विक्रम, राजा विजय बहादुर चरखारी
१३२. मानस शंकावली	बंदनपाठक बनारसी
१३३. सत्कवि गिराविलास	बलदेव बघेल खंडी
१३४. प्रेम दीपिका	बीरकवि, दाऊदादा बाजपेयी, मंडलावाले
१३५. कृष्ण चन्द्रिका	बीर कायस्थ, दिल्ली वाले
१३६. रागमाला	ब्रजनाथ
१३७. नखशिख	बलभद्र मिश्र
१३८. दिग्विजय भूषण १३९. अष्टयाम १४०. चित्रकलाधर	ब्रज, गोकुल प्रसाद
१४१. रसिक विलास	वारन कवि, राउतगढ़वाले।

१४२. प्रबोध चन्द्रोदय नाटक	ब्रजवासी दास	दोनों एक ही कवि हैं।
१४३. ब्रज विलास	ब्रजवासी दास	
१४४. शृंगार सुधाकर	बलदेव अवस्थी	
१४५. भाषा कृष्ण खंड	बलदेव दास जौहरी	
१४६. रमल सार	बालन दास	
१४७. नासिकेतोपाख्यान	भगवती दास ब्राह्मण	
१४८. भर्तृहरि शतक भाषा	भगवान दास निरंजनी	
१४९. मिश्र शृंगार	भोजमिश्र	
१५०. भोजभूषण	भोजकवि, विहारी लाल भाँट चरखारी	
१५१. काव्य शिरोमणि	भावन कवि, भवानी प्रसाद पाठक	
१५२. शृंगार रत्नाकर	भौन कवि, मेंतीवाले	
१५३. रामायण सुन्दर काण्ड	भगवन्त राय	
१५४. शिवराज भूषण	भूषण त्रिपाठी	
१५५. कृष्ण कल्लोल, कृष्णखंड भाषा	मानकवि, बैसवारे के	
१५६. माधवी शंकर दिग्विजय	माधवानन्द भारती काशीस्थ	
१५७. रामाश्वमेध	मधुसूदनदास, माथुर ब्राह्मण, इष्टकापुरवासी	
१५८. ललित ललाम	मतिराम। छंदसार पिंगल	
१५९. छंदसार पिंगल	वत्सगोत्री मति राम की रचना है।	
१६०. रसराज	भूषण के भाई मतिराम की नहीं।	
१६१. रसरत्नावली	मंडन	
१६२. नयन पचासा		
१६३. अर्जुन विलास	मदन गोपाल सुकुल फतूहाबादी	
१६४. वैद्य रत्न		
१६५. चित्र भूषण	मेधा	
१६६. छंद छप्पनी पिंगल	मनीराम मिश्र कन्नौजवासी	
१६७. भाषा बृहच्छिवपुराण	महानन्द बाजपेयी	
१६८. हास्य रस ग्रन्थ	मकरन्द राय भांट, पुवांवा	
१६९. मनोहर शतक	मनोहर काशी राम, भारतपुरवाले	
१७०. मानिक बोध	मानिक दास, मथुरावासी	
१७१. भाषा गणेश पुराण	मोती लाल	
१७२. काव्य संग्रह	महेश दत्त	
१७३. शृंगार रत्नावली	मनभावन	
१७४. हनुमत छब्बीसी	मनियार सिंह बनारसी	
१७५. भाषा सौन्दर्य लहरी		
१७६. रस सागर	राम कवि (१)	
१७७. बरवै नायिका भेद	राम रत्न, गुजराती ब्राह्मण, फर्रुखाबाद	

१७८. बृहत् तरंगिणी	राम सहाय, कायस्थ, बनारसी
१७९. राम कलेवा	रामनाथ प्रधान
१८०. यमुना शतक	रघुराइ
१८१. नखशिख	रसराज
१८२. विनय पचीसी	राम कृष्ण चौबे, कालिञ्जरवासी
१८३. भाषा महिम्न	रघुनाथ पंडित, शिवदीन, रसूलाबादी
१८४. नृत्य राघव मिलन	राम सखे
१८५. वंशी कल्पलता	ऋषि राम मिश्र, पट्टीवाले
१८६. प्रेम रत्न	रतन कुँवरि। इसी ग्रन्थ से रतन कवि,ब्राह्मण,बनारसी के नाम से भी उद्धरण दिया गया है,जो अशुद्ध है
१८७. हनुमत चरित्र सुन्दर शतक	रघुराज सिंह, रीवां नरेश
१८८. बरवै अलंकार	रसाल कवि, अंगने लाल भांट, बिलग्रामी
१८९. निर्णय मंजरी	रघुनाथ उपाध्याय, जौनपुरवासी
१९०. फतेहशाह भूषण १९१. फतेह प्रकाश	रतन कवि, श्रीनगर, बुन्देलखंडी। वस्तुतः यह कवि गढ़वाली है।
१९२. रस मंजरी भाषा	रतन कवि (२) पन्ना वाले
१९३. रूप विलास	रूप साहि कायस्थ
१९४. रसिक मोहन १९५. जगत मोहन १९६. काव्य कलाधर १९७. इश्कमहोत्सव	रघुनाथ बनारसी
१९८. गीत गोविन्दादर्श	राय चन्द्र नागर, गुजराती
१९९. रागमाला	राम दया
२००. भूषण कौमुदी २०१. काव्य रत्नाकर	राजा रणधीर सिंह, सिरमौर, सिंगरामऊ
२०२. प्रस्तार प्रभाकर पिंगल	रसपुञ्जदास
२०३. रस प्रबोध	रसलीन गुलाम नबी बिलग्रामी
२०४. कायस्थ धर्म दर्पण	राम चरण, ब्राह्मण, गणेशपुरवाले
२०५. विष्णुविलास नायिका भेद	लाल प्राचीन
२०६. भाषा राजनीति	लाल कवि (४)
२०७. भागवत भाषा	लोने सिंह, मितौलीवाले
२०८. शिव सरोज	लछिराम, होलपुर वाले
२०९. रस रत्नाकर २१०. लघुभूषण २११. गंगा भूषण	लेखराज, नन्दकिशोर मिश्र, गँधौली वाले
२१२. सभा विलास	लाल (५) लल्लू जी लाल

२१३. शालिहोत्र	लाला पाठक
२१४. भुवनेश भूषण	लाल साहब, त्रिलोकीनाथ सिंह, भुवनेश, द्विवेदी के भतीजे ।
२१५. काव्य सरोज	श्रीपति
२१६. साहित्य सरसी २१७. रसिक प्रिया तिलक	सरदार बनारसी
२१८. सूर सागर २१९. सूर विनय	सूरदास
२२०. विद्वन्मोद तरंगिणी	श्रीधर, सुब्बासिंह ओयलवाले
२२१. कवि विनोद पिंगल	श्रीधर मुरलीधर
२२२. काव्य कल्पद्रुम	सेनापति
२२३. अलंकार माला	सूरति मिश्र
२२४. भवानी छंद	श्रीधर (४) राजपूताना वाले — दोनों एक ही कवि हैं
२२५. रसार्णव	सुखदेव मिश्र, दौलतपुर वाले — दोनों एक ही कवि हैं
२२६. वृत्त विचार २२७. फाजिल अली प्रकाश	सुखदेव मिश्र, कंपिला वाले
२२८. रसिक विलास २२९. अलंकार भूषण २३०. पिंगल	शिव कवि अरसेला बन्दीजन देवनहवाले ।
२३१. रसनिधि	शिव कवि भांट, बिलग्रामी
२३२. भूगोल हस्तामलक २३३. इतिहास तिमिर नाशक	शिव प्रसाद, सितारे हिन्द,
२३४. रस रंजन	शिवनाथ कवि
२३५. राम विलास रामायण	शम्भुनाथ (२)
२३६. अलंकार दीपिका	शम्भुनाथ ब्राह्मण (३) असोथरनिवासी
२३७. वैताल पचीसी २३८. मुहूर्त मंजरी	शम्भुनाथ त्रिपाठी (४), डौंड़ियाखेरे वाले ।
२३९. बैश वंशावली	शम्भुनाथ मिश्र (५), सातनपुरवावाले
२४०. सुन्दर श्रृंगार	सुन्दर, ग्वालियरवाले
२४१. रामायण कवित्त	शंकर त्रिपाठी, बिसवांवाले
२४२. बामा मनरंजन	सागर कवि
२४३. कुण्डलिया (सतसई का तिलक)	सुल्तान पठान
२४४. रामायण	सहज राम बनियाज पेतेंपुरवाले
२४५. राम तत्व बोधिनी	शिव प्रकाश सिंह, डुमरांव
२४६. षटऋतु बरवै (भाषा ऋतुसंहार)	सबल सिंह
२४७. कृष्ण दत्त भूषण	शिवदीन कवि, भिनगावाले

२४८. प्रह्लाद चरित्र	सहज राम सनाढ्य बंधुवावाले। यह भी सहज राम बनिया ही हैं।
२४९. स्वरोदय भाषा	श्याम शरण
२५०. भारत भाषा	सबल सिंह चौहान। ऋतु संहार का भाषा अनुवाद करने वाले सबल सिंह भी यही हैं।
२५१. रस कौमुदी	हरिदास कायस्थ, पन्ना निवासी
२५२. छंद पयोनिधि	हरिदेव बनिया, वृन्दाबनी
२५३. पिंगल	हरीराम कवि
२५४. शृंगार नवरस	हिरदेश कवि, झांसीवाले
२५५. राधा शतक	हठी
२५६. नरेन्द्र भूषण	हरिभान
२५७. सुन्दरी तिलक	हरिश्चन्द्र, भारतेन्दु
२५८. भाषा बृहत्कवि वल्लभ	हरिचरण दास
२५९. छंद स्वरूपिणी पिंगल	हरिश्चन्द्र बरसानेवाले

(द) सरोज में कवि परिचय देते समय अनेक कवियों के प्रसंग में उनके कुछ ग्रन्थों के शिव सिंह के पुस्तकालय में होने का उल्लेख हुआ है। ऐसे कुल ग्रन्थ संख्या में २३ हैं। इनमें से निम्नांकित ७ ग्रन्थ ऊपर वाली सूची में नहीं आ सके हैं।

१. भाषा भूषण का तिलक	उनियारे के राजा। वस्तुतः
२. बलभद्र के नखशिख का तिलक	ये ग्रन्थ इनके आश्रित मतीराम के है।
३. जंजीरा बंद	कालिदास
४. हनुमन्नखशिख	खुमान
५. काव्य प्रकाश	चिन्तामणि
६. निरंजन संग्रह	निपट निरंजन
७. राम रावण युद्ध	मून

इस प्रकार कुल २८६ ग्रन्थों के नाम ज्ञात होते हैं। इनमें से ६ संग्रह ग्रन्थ दोहरा उठे हैं। अतः शिव सिंह के पुस्तकालय के, २८० ज्ञात नाम के एवम् २८ अज्ञात नाम के, कुल ३०८ हिन्दी ग्रन्थ हो जाते हैं। शिवसिंह के पुस्तकालय में कुल इतने ही ग्रन्थ थे, ऐसा न समझना चाहिये। हिन्दी के ग्रन्थों के अतिरिक्त उनके यहां संस्कृत, फारसी, अरबी एवम् उर्दू के भी ग्रन्थ थे। इनका कोई लेखा-जोखा यहां नहीं किया जा सका है। इनके अतिरिक्त शिवसिंह ने आनन्दघन, ग्वाल, ठाकुर, तोष, देवकी नन्दन, नारायण राय बनारसी, ब्रह्म (बीरबल) मुबारक एवम् शिवलाल दुबे आदि कवियों के सैकड़ों फुटकर कवित्तों के अपने पुस्तकालय में होने का उल्लेख किया है।

घ. सरोज की प्रेरणा का स्रोत

सरोज क्यों लिखा गया, इसका उत्तर स्वयं शिव सिंह ने सरोज की भूमिका के प्रारम्भ में इस प्रकार दे दिया है।

'मैंने सम्बत् १९३३ में भाषा कवियों के जीवन चरित्र विषयक एक दो ग्रन्थ ऐसे देखे, जिनमें

ग्रन्थ-कर्ता ने मतिराम इत्यादि ब्राह्मणों को लिखा था कि वे असनी के महापात्र भाट हैं। इसी तरह की बहुत सी बातें देखकर मुझसे चुप न रहा गया। मैंने सोचा अब कोई ग्रन्थ ऐसा बनाना चाहिये जिसमें प्राचीन और अर्वाचीन कवियों के जीवन चरित्र, सन्, सम्बत्, जाति, निवास स्थान आदि कविता के ग्रन्थों समेत विस्तार पूर्वक लिखे हों।'

एक ग्रन्थ की एक भूल ने शिवसिंह को प्रेरित किया कि वे एक ऐसा ग्रन्थ लिखें जो ऐसी भद्दी भूलों से न भरा हो। हमारी कुतूहल वृत्ति उस ग्रन्थ का नाम जानना चाहे, उस ग्रन्थ में मतिराम के सम्बन्ध में क्या लिखा गया है उसे देखना चाहे, यह स्वाभाविक है। वह ग्रन्थ जिसकी भूल ने सरोज ऐसे ग्रन्थ की उद्भावना को प्रेरित किया 'भाषा काव्य संग्रह' है। इसके सम्पादक हैं महेश दत्त पंडित। उन्होंने यह ग्रन्थ सम्बत् १९३० में संकलित किया। यह सम्बत् १९३२ में प्रकाशित हुआ। इसी को सम्बत् १९३३ में शिवसिंह ने देखा। इस ग्रन्थ में मतिराम का निम्नांकित विवरण दिया गया है :—

मतिराम कवि—"ये कवि फतेपुर के जिले में असनी ग्राम के निवासी महापात्र भाट औरंगजेब बादशाह के समय में थे। इनके भाई का भूषण नाम था। मतिराम जी ने रसराजादि ग्रन्थ बनाये और बादशाही दरबार में जन्म पर्यन्त रहे।" भाषा काव्य संग्रह, पृष्ठ १३६

ङ. सरोज का रचना काल

सरोज की भूमिका की तिथि ज्येष्ठ शुक्ल १२ सम्बत् १९३४ है। सामान्यतया इसी को सरोज का समाप्ति काल समझा जा सकता है। भूमिका में शिवसिंह ने लिखा है कि उन्होंने १९३३ में एक संग्रह ग्रन्थ (भाषा काव्य संग्रह) में मतिराम भूषण को असनी का भाट होना लिखा पाया। इससे उन्हें अत्यन्त कष्ट हुआ। उन्होंने अपने पुस्तकालय को ठीक से सजाया और अध्ययन करते रहे। इस काम में उन्हें छह महीने लगे। इसके अनन्तर उन्होंने कवियों का एक सूचीपत्र बनाकर उनके विद्यमान होने के सन् संवत् और उनके जीवन चरित्र, जहां तक प्रकट हुये, सब लिखे और ग्रन्थ पूर्ण किया। भूमिका के अनुसार शिवसिंह ने सरोज को अधिक से अधिक साढ़े आठ महीने में पूर्ण किया। सम्बत् १९३३ के अधिक से अधिक छह महीने और १९३४ के ढाई महीने। अतः यह ग्रन्थ सम्बत् १९३३-३४ में लिखा गया।

खोज रिपोर्ट में सरोज की एक हस्तलिखित प्रति की नोटिस है।[१] उक्त हस्तलिखित ग्रन्थ की पुष्पिका यह है :—

"इति श्री शिवसिंह संगरकृत शिवसिंह सरोज समाप्त सम्बत् १९३१ लिषतं गौरीशंकर"

उक्त पुष्पिका के अनुसार सरोज की रचना सम्बत् १९३१ या उसके पहले कभी हुई। पर ऊपर सिद्ध किया जा चुका है कि इसकी रचना सम्बत् १९३३-३४ में हुई। दो तीन वर्ष का अन्तर पड़ रहा है। खोज रिपोर्ट में सरोज के आदि और अन्त के कुछ अंश अवतरित हैं। आदि वाले अंश में अकबर की कविता है। अंत वाले अंश में हकार के अंतिम १३ कवियों का इतिवृत्त दिया गया है। स्पष्ट है कि ग्रन्थ में प्रतिलिपि करते समय तक भूमिका नहीं लगी थी, अन्यथा आदि वाले अंश के उदाहरण में भूमिका वाला भाग ही उद्धृत हुआ होता। यह भूमिका या तो सम्पूर्ण ग्रन्थ के

---

[१] खोज रिपोर्ट १९२३।३९८

मुद्रित हो जाने के उपरान्त लिखी गई और मुद्रित हुई अथवा छपने के ठीक पहले लिखी गई और मुद्रित हुई। उक्त प्रतिलिपि ग्रन्थ के प्रकाशन के पूर्व ही की गई होगी, क्योंकि यदि पुस्तक पहले ही प्रकाशित हो गई होती, तो उसकी प्रतिलिपि कराने की कोई आवश्यकता न पड़ती। स्पष्ट है कि ग्रन्थ सम्बत् १९३४ ज्येष्ठ शुक्ल १२ के पहले पूर्ण हो चुका था और इस तिथि के पहले ही कभी उसकी प्रतिलिपि की गई। पर यह प्रतिलिपि १९३१ में की गई, भूमिका इस बात को स्वीकार नहीं करती। भूमिका के अनुसार इस ग्रन्थ की प्रतिलिपि १९३३ से पहले नहीं की जा सकी। अब या तो शिवसिंह झूठे हैं या उक्त पुष्पिका में दिया हुआ प्रतिलिपि काल दोनों बातें एक साथ सत्य नहीं हो सकतीं।

सरोज के अंतः साक्ष्य से यह स्पष्ट होता है कि उक्त ग्रन्थ १९३३ से पहले संकलित एवम् विरचित नहीं हुआ। इसके प्रमाण में निम्नांकित बातें कही जा सकती हैं सरोज की रचना में जिन संग्रह ग्रन्थों से सहायता ली गई है उनमें से तीन का रचनाकाल १९३१-३४ है। ये तीनों ग्रन्थ ये हैं :—

(अ) सुन्दरी तिलक—इसका पहला संस्करण सम्बत् १९२५ एवं दूसरा सम्बत् १९२६ में हुआ। शिव सिंह ने जिस संस्करण का प्रयोग किया, वह सम्बत् १९३१ में प्रकाशित हुआ था।

(ब) कवित्त रत्नाकर—यह संग्रह १९३३ में छपा।

(स) भाषा काव्य संग्रह—यह सम्बत् १९३२ में प्रकाशित हुआ। जीवन खंड में इन तीनों ग्रन्थों का हवाला दिया गया है। सुन्दरी तिलक से ११ कवि लिये गये हैं, जिनमें से अलीमन का समय सम्बत् १९३३ दिया गया है, जो स्पष्ट सूचित करता है कि ग्रन्थ १९३३ के पहले नहीं बना। महेश दत्त के काव्य संग्रह से यों तो अनेक कवियों के विवरण लिये गये हैं, पर केवल दो कवियों के सम्बन्ध में स्पष्ट स्वीकार किया गया है कि इनके सम्बन्ध की जानकारी उक्त संग्रह से प्राप्त की गई है।

यह ग्रन्थ सम्बत् १९३१ के बाद बना इसके भी स्पष्ट प्रमाण हैं। इसमें कोविद कवि, श्री पंडित उमापति त्रिपाठी, अयोध्या निवासी, का देहावसान काल सम्बत् १९३१ दिया गया है। यदि यह संग्रह १९३१ या उसके पहले प्रस्तुत किया गया होता और सत्य ही १९३१ में इसकी प्रतिलिपि की गई होती, तो जीवन खंड में इन तीनों ग्रन्थों का न तो नाम आया होता, न अलीमन का समय सम्बत् १९३३ दिया गया होता और न कोविद कवि की १९३१ में मृत्यु होने का उल्लेख हुआ होता।

च. सरोज का प्रकाशन काल

सरोज कब प्रकाशित हुआ यह भी एक समस्या है। सरोज की भूमिका का लेखन काल सम्बत् १९३४ ज्येष्ठ सुदी १२ है। यह भूमिका या तो मूल ग्रन्थ के मुद्रित हो जाने के बाद लिखी गई, इस दशा में प्रकाशन काल भी १९३४ ही होना चाहिये, या फिर प्रकाशन के लिये देने के ठीक पहले लिखी गई। पहले भूमिका प्रकाशित हुई, फिर मूल ग्रन्थ। इस दशा में प्रकाशन काल १९३४ के बाद भी हो सकता है। यदि १९३५ हो जाय, तो शिवसिंह का अपने सम्बन्ध में दिया हुआ "सम्बत् १८७८ में उ०" की समस्या भी सरल हो जाय। ग्रन्थ के प्रकाशन में कुछ समय तो लग ही गया होगा। इस ग्रन्थ का सातवां संस्करण (सन् १९२६ ई०) उपलब्ध है। इस संस्करणों का प्रकाशन काल

नहीं लिखा गया है। इस ग्रन्थ के तीसरे संस्करण की एक-एक प्रति सभा के आर्य भाषा पुस्तकालय एवम् प्रो० विश्वनाथ प्रसाद मिश्र के पास है। इस संस्करण का प्रकाशन काल सन् १८९३ ई० है। ग्रन्थ के प्रथम संस्करण की कोई भी प्रति मेरे देखने में नहीं आई, जिससे उसके प्रकाशन काल की तिथि जानी जा सके। प्रो० रामकुमार वर्मा इसका रचना काल सम्बत् १९४० देते हैं, जो अत्यन्त आश्चर्य जनक है।[1] शुक्ल जी ने भी अपने प्रसिद्ध इतिहास के प्रथम संस्करण में जो वक्तव्य दिया है, और जो अन्य संस्करणों में भी समान रूप से संलग्न है, उसका पहला वाक्य यह है :—

"हिन्दी कवियों का एक वृत्त संग्रह ठाकुर शिवसिंह सेंगर ने सन् १८८३ ई० में प्रस्तुत किया था।"

आचार्य शुक्ल एवं श्री रामकुमार वर्मा ने यह सम्बत् ग्रियर्सन से लिया है। ग्रियर्सन ने स्पष्ट स्वीकार किया है कि मैंने सरोज का द्वितीय संस्करण जो सन् १८८३ ई० में प्रकाशित हुआ, प्रयुक्त किया है, पर श्री शुक्ल एवं श्री वर्मा ने प्रमाद से इसे सरोज का रचनाकाल ही समझ लिया है। तो, इस १८८३ ई० या १९४० विक्रमी में सरोज का द्वितीय संस्करण हुआ और १८७८ ई० (जिसे सरोजकार ने अपना 'उ०' सम्बत् माना है) या १९३५ विक्रमी में (जो विनोद के अनुसार शिवसिंह का मृत्यु सम्बत् है) इसका पहला संस्करण हुआ। सम्भवतः ग्रन्थ प्रकाशन के पश्चात् ही शिवसिंह की मृत्यु हुई।

---

१ हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास पृष्ठ ४ और २७

अध्याय २

सरोज का महत्व

सरोज का महत्व

सरोज हिन्दी साहित्य के इतिहासों की आधार शिला है। यह ग्रन्थ आज से प्रायः ८० वर्ष पहले प्रस्तुत किया गया था, जब आज के समान सुविधायें सुलभ नहीं थीं, न तो विशाल पुस्तकालय थे न प्रकाशित ग्रन्थों की प्रचुर संख्या थी। हस्तलिखित ग्रन्थ दुर्लभ थे, इतिहास सम्बन्धी ग्रन्थ भी बहुत नहीं थे। ऐसी दशा में जो काम शिव सिंह ने अकेले किया, वह आज बड़ी-बड़ी संस्थायें मिलकर कर पा रहीं हैं। फिर भी यह नहीं कहा जा सकता कि उक्त कार्य पूर्ण रूप से संतोषजनक ही होगा और उसमें तथ्य तथा तिथियों की एक भी भ्रान्ति नहीं होगी। ऐसी दशा में सरोज में यदि बहुत सी भ्रान्तियां हों और हैं, तो यह दोष मार्जनीय है, और सरोज को प्रस्तुत करने के लिए शिव सिंह सदैव हमारे धन्यवाद के पात्र रहेंगे।

शिवसिंह ने सरोज के द्वारा जो महत्वपूर्ण कार्य किया, वे उससे अवगत थे। भूमिका के प्रथम पृष्ठ पर ही वे लिखते हैं :—

मुझको इस बात के प्रकट करने में कुछ संदेह नहीं कि ऐसा संग्रह कोई आज तक नहीं रचा गया परन्तु इस बात को प्रगट करना अपने मुँह मियां मिट्ठू बनना है।"

सरोज के इस कथन की प्रामाणिकता इसके इसी प्रकार के पूर्ववर्ती ग्रन्थों से तुलना करने पर ही जानी जा सकती है।

सरोज और पूर्ववर्ती ग्रन्थ

क. सरोज और तासी

इतिहास नाम से अभिहित सबसे पहला ग्रन्थ फ्रान्सीसी लेखक गार्सा द तासी कृत 'इस्त्वार द ल लितरेत्यूर ऍंदूइ ए ऍंदूस्तानी'[१] है। इसका पहला संस्करण दो भागों में प्रकाशित हुआ था। पहला भाग १८३९ ई० में एवं दूसरा १८४७ ई० में। दोनों भाग भारतेन्दु के जन्म (१८५० ई०) के पहले प्रकाशित हो चुके थे, जब कि हिन्दी साहित्य में पुरातनता का ही अधिवास था। यह पुस्तक हिन्दुई और हिन्दुस्तानी का इतिहास कही गई है, तासी पेरिस विश्वविद्यालय में उर्दू के प्रोफेसर थे। हिन्दुई से उनका अभिप्रायः हिन्दुओं में बोली जाने वाली हिन्दी से है, जिसका आधार संस्कृत है तथा हिन्दुस्तानी से उनका अभिप्राय मुसलमानों में बोली जाने वाली हिन्दी से है, जिसका आधार फ़ारसी-अरबी है। हिन्दुस्तानी के दो रूप हैं, उत्तरी भारत के मुसलमानों द्वारा व्यवहृत हिन्दुस्तानी, जो उर्दू कहलाती है तथा दक्खिनी भारत में मुसलमानों द्वारा बोली जाने वाली हिन्दुस्तानी, जिसको दक्खिनी कहते हैं। उर्दू के प्रोफेसर होने के कारण उक्त ग्रन्थ में तासी ने उर्दू के कवियों को अत्यधिक स्थान दिया है, हिन्दी के कवियों को कम। उक्त ग्रन्थ के प्रथम भाग में कुल ७३८ कवि और लेखक हैं। इस बड़ी संख्या में हिन्दी से सम्बन्धित कवि और लेखक केवल ७२ हैं। द्वितीय भाग में प्रथम भाग में आये प्रमुख कवियों के उद्धरण एवं उनके विश्लेषण हैं।

---

[१] इसका अंग्रेजी रूप यह है 'The History of Literature Hindui and Hindustani'

उक्त ग्रन्थ का द्वितीय संस्करण तीन भागों में हुआ। प्रथम एवं द्वितीय भाग सन् १८७० ई० में एवं तृतीय भाग १८७१ ई० में पेरिस से प्रकाशित हुए। प्रथम भाग में अत्यन्त विस्तृत भूमिका एवं १२२३ कवियों और लेखकों का उल्लेख है। द्वितीय में भूमिका नहीं है। १२०० कवि और लेखक हैं। तीसरी जिल्द में एक छोटी सी विज्ञप्ति है, तदनन्तर ८०१ कवियों और लेखकों का विवरण, फिर ग्रन्थों एवं लेखकों सम्बन्धी दो परिशिष्ट और दो ही अनुक्रमणिकायें हैं। कुल मिलाकर तीनों भागों में १६१८ बड़े पृष्ठ और ३२२४ कवि और लेखक हैं। पहले संस्करण के द्वितीय भाग में जो सामग्री थी, दूसरे संस्करण में सम्बन्धित कवियों के साथ संलग्न कर दी गई है।

प्रयाग विश्वविद्यालय के डा० लक्ष्मी सागर वार्ष्णेय ने उक्त ग्रन्थ में आये हुए हिन्दी के कवियों एवं लेखकों सम्बन्धी विवरणों का हिन्दी अनुवाद 'हिन्दुई साहित्य का इतिहास' नाम से किया है, जो सन् १९५३ ई० में हिन्दुस्तानी एकेडेमी, इलाहाबाद से प्रकाशित हुआ है। इस ग्रन्थ में कुल ३५८ कवि और लेखक आये हैं, जिनमें से अनेक उर्दू, संस्कृत और मराठी के हैं। इस सम्बन्ध में स्वयं तासी का यह कहना है :—

"मेरे द्वारा उल्लिखित ३००० भारतीय लेखकों में से २२०० से अधिक मुसलमान लेखक हैं, तो हिन्दू लेखक ८०० हैं और इन पिछलों में से भी केवल २५० के लगभग हैं जिन्होंने हिन्दी में लिखा है। वास्तव में, इस वर्ग के सभी लेखकों को जान लेना कठिन है क्योंकि हिन्दी कवियों के तज़किरों का अभाव है और इस प्रकार एक बहुत बड़ी संख्या हमें अज्ञात है, जब कि उर्दू लेखकों के बारे में यह बात नहीं है, जिनकी मूल जीवनियों में, कम से कम नाम देने का ध्यान तो रखा गया है।"—हिन्दुई साहित्य का इतिहास भूमिका, पृष्ठ ११३

तासी ने २५० (३५८) हिन्दी कवियों और लेखकों का विवरण दिया है, इनमें से वस्तुतः आधे से अधिक ऐसे हैं जो या तो पाठशालाओं के लिए पाठ्य ग्रन्थ लिखनेवाले हैं या जिन्होंने ऐसे विषयों पर ग्रन्थ रचना की है जो विशुद्ध साहित्य के भीतर नहीं आते। इनमें १२५ से अधिक नाम न होंगे, जिन्हें हिन्दी साहित्यकारों के इतिवृत्त संग्रह में स्थान दिया जा सके।

शिवसिंह को इस ग्रन्थ की जानकारी नहीं थी। इसका उपयोग केवल सर जार्ज ए. ग्रियर्सन ने अपने 'द माडर्न वर्नाक्यूलर लिट्रेचर आफ़ नदर्न हिन्दुस्तान' में किया है। फ्रेंच में होने के कारण कोई हिन्दुस्तानी लेखक इसका सदुपयोग नहीं कर सका है। इस ग्रन्थ का अनुवाद अँग्रेजी में भी नहीं हुआ है, जिसका लाभ उठाया जा सकता। १९३८ ई० में डाक्टर राम कुमार वर्मा ने 'हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास' लिखा। उन्होंने पृष्ठ २।३ पर इस गन्थ का उल्लेख किया है। इसमें प्रायः सभी आंकड़े अशुद्ध दिये गये हैं। प्रथम संस्करण के द्वितीय भाग को १८४६ ई० में प्रकाशित होना कहा गया है, जब कि यह १८४७ ई० में प्रकाशित हुआ। इसी प्रकार द्वितीय संस्करण के तीनों भागों को १८७१ ई० में प्रकाशित होना कहा गया है, जब कि उक्त सन् में तीसरा भाग ही प्रकाशित हुआ, प्रथम एवं द्वितीय भाग तो १८७० ई० ही में प्रकाशित हो गये थे। तीनों भागों की सम्मिलित पृष्ठ संख्या १८३४ दी गई है, जो १६१८ है। भूमिका के पृष्ठों को छोड़ देने पर इसमें कुल १८३५ पृष्ठ हैं। वर्मा जी ने भूमिका की पृष्ठ संख्या १४ बताई है। वस्तुतः प्रथम भाग के प्रारम्भ में संलग्न भूमिका में ७१ पृष्ठ हैं। साथ ही, पृष्ठ ४ पर शिवसिंह सरोज प्रकरण में तासी द्वारा उल्लिखित "हिन्दी कवियों की संख्या ७० से कुछ ऊपर है" ऐसा लेख है, जो पूर्णतः भ्रान्त है।

जब २० वीं शताब्दी में डाक्टर वर्मा को तासी के ग्रन्थ के सम्बन्ध में ऐसी अपूर्ण सूचनायें प्राप्त हों, तब आज से ८० वर्ष पहले शिवसिंह को यदि इसकी जानकारी भी न रही हो, तो कोई आश्चर्य नहीं। ऐसी स्थिति में उनका यह कहना कि उनके द्वारा संग्रहीत शिवसिंह सरोज अपने ढंग का अनूठा संग्रह है और ऐसा संग्रह पहले नहीं बना, ठीक ही है। इन दोनों ग्रन्थों में हिन्दी कवियों और लेखकों के इतिवृत्त दिये गये हैं, यहां तक इनमें समानता है, पर सरोज एक काव्य संग्रह भी है जो तासी की रचना नहीं है। सरोजकार ने संग्रह की ही प्रशंसा की है, यद्यपि उसका कारण संलग्न इतिवृत्त ही है।

सरोज और तासी में एक और महान् अन्तर है। यह अन्तर दृष्टिकोण और निष्ठा का है। शिवसिंह की निष्ठा एक मात्र हिन्दी में है। तासी की निष्ठा बँटी हुई है। यह भी कहा जा सकता है कि उसकी निष्ठा हिन्दी के प्रति कम और उर्दू के प्रति अधिक है।

तासी द्वारा दी गई सूचनायें अधिकांश में छपे हुये ग्रन्थों के सम्बन्ध में हैं। कहां से छपे, किसके द्वारा सम्पादित हुये, कब प्रकाशित हुये, ग्रन्थ का आकार क्या है, उसमें कितने पृष्ठ हैं, प्रत्येक पृष्ठ में कितनी पंक्तियां हैं, आदि आदि बातें बताई गई हैं। ये सूचनायें तो ठीक हैं, पर इतिवृत्त सम्बन्धी बहुत-सी सूचनायें अशुद्ध हैं। कवि संख्या भी सरोज की तुलना में बहुत कम है। बहुत कम सूचनायें ऐसी हैं, जो तासी में अधिक हों और अन्यत्र दुर्लभ हों, और साथ ही जिनकी जानकारी से हिन्दी साहित्य का किसी भी अंश में विशेष उपकार होने की सम्भावना हो। सन् सम्बत् बहुत ही कम दिये गये हैं। तासी का महत्व इतना ही है कि उसने सुदूर विदेश में रहते हुये एक विदेशी भाषा के प्रति इतनी अभिरुचि दिखलाई और उसके कवियों के सम्बन्ध में इतनी जानकारी प्राप्त की तथा उन्हें पुस्तक रूप में संकलित किया, साथ ही उस पुस्तक का नाम भी साहित्य का इतिहास रखा जो ऐसे ग्रन्थ के लिये अत्यन्त महत्वाकांक्षापूर्ण है। शिवसिंह ने अपने ग्रन्थ को कहीं भी साहित्य का इतिहास नहीं उद्घोषित किया है। इन दोनों ग्रन्थों में वर्णानुक्रम से कविवृत्त दिया गया है, काल क्रम से नहीं। ऐसी दशा में प्रवृत्तियों के अनुसार युग विभाजन और युगों के अनुसार सामान्य प्रवृत्तियों का विश्लेषण तो सम्भव ही नहीं। इन सबके अभाव में कोई भी ग्रन्थ इतिहास नाम प्राप्त करने का अधिकारी नहीं हो सकता।

जैसा कि डा० वार्ष्णेय ने तासी के ग्रन्थ के हिन्दुई वाले अंश के हिन्दी अनुवाद के प्रारम्भ में 'अनुवादक की ओर' से, के अन्तर्गत लिखा है कि तासी ऐतिहासिक पद्धति से अवगत थे, पर कुछ व्यावहारिक कठिनाइयों के कारण ऐसा न कर सके, ठीक है। इस सम्बन्ध में तासी ने प्रथम एवं द्वितीय, दोनों संस्करणों की भूमिकाओं में लिखा है। यहां द्वितीय संस्करण की भूमिका से सम्बन्धित अंश उद्धृत किया जा रहा है :—

"मौलिक जीवनियां जो मेरे ग्रन्थ का मूलाधार हैं सब तखल्लुसों या काव्योपनामों के अकारादि क्रम से रखी गई हैं। मैंने यही पद्धति ग्रहण की है, यद्यपि शुरू में मेरा विचार कालक्रम ग्रहण करने का था और मैं यह बात छिपाना नहीं चाहता कि यह क्रम अधिक अच्छा रहता या कम से कम जो शीर्षक मैंने अपने ग्रन्थ को दिया है उसके अधिक उपयुक्त होता, किन्तु मेरे पास अपूर्ण सूचनायें होने के कारण उसे ग्रहण करना कठिन ही था। वास्तव में, जब मैं उसके सम्बन्ध में कहना चाहता हूँ, मौलिक जीवनियां हमें यह नहीं बतातीं कि उल्लिखित कवियों ने किस काल में लिखा, ... जहां तक हिन्दुई लेखकों से सम्बन्ध है, उनकी भी अधिकांश रचनाओं की निर्माण

तिथियां निश्चित नहीं हैं। यदि मैंने कालक्रम वाली पद्धति ग्रहण की होती, तो अनेक विभाग स्थापित करने पड़ते, पहले मैं उन लेखकों को रखता जिनका काल अच्छी तरह ज्ञात है। दूसरे में उनको जिनका काल संदेहात्मक है, अन्त में, तीसरे में, उन्हें जिनका काल अज्ञात है। ... ...अपना कार्य सरल बनाने और पाठक की सहूलियत दोनों ही दृष्टियों से मुझे, यह पद्धति, यद्यपि वह अधिक बुद्धि संगत थी, स्वेच्छा से छोड़ने के लिये बाध्य होना पड़ा।" हिन्दुई साहित्य का इतिहास, भूमिका, पृष्ठ १०६-१०७।

शिवसिंह भी इस पद्धति से अनभिज्ञ नहीं थे। भूमिका के अन्तर्गत पृष्ठ ८ पर उन्होंने 'भाषा काव्य निर्णय' शीर्षक दिया है। इस प्रकरण के अन्तर्गत ४ पृष्ठों में उन्होंने हिन्दी भाषा का मूल खोजने का प्रयास किया है। साथ ही एक-एक शताब्दी में होने वाले प्रमुख कवियों का नामोल्लेख किया है। उन्होंने इस प्रकार का विवरण सम्वत् ७७० से लेकर १६३४ तक दिया है। उनका काल विभाग शताब्दियों के अनुसार है, साहित्य प्रवृत्तियों के अनुसार नहीं। सम्भवतः उसका विशेष पता भी उन्हें नहीं था। इस दृष्टि से भी तासी को विशेष महत्व नहीं दिया जा सकता।

अब थोड़ा व्यावहारिक दृष्टिकोण से भी तासी और सरोज के तुलनात्मक महत्व पर विचार कर लेना चाहिये। तासी का ग्रन्थ विदेशी भाषा में है, जिससे हिन्दी साहित्य के प्रायः सभी इतिहास लेखक अनभिज्ञ रहे हैं। फलतः उन्होंने इसका उपयोग नहीं किया है। केवल ग्रियर्सन फ्रेंच से अभिज्ञ थे और उन्होंने उक्त ग्रन्थ का उपयोग अपने "द वर्नाक्युलर लिटरेचर आफ नर्दन हिन्दुस्तान" में किया है, परन्तु हिन्दी साहित्य का कोई भी इतिहास, स्वयं ग्रियर्सन का भी नहीं, ऐसा नहीं जिसने सरोज का उपयोग न किया हो। तासी के ग्रन्थ को यह गौरव कभी भी नहीं मिला है और न आगे मिलने की सम्भावना ही है।

ख. भाषा-काव्य संग्रह तथा कवित्त रत्नाकर और सरोज

प्रो० रामकुमार वर्मा ने हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास के विषय-प्रवेश प्रकरण में हिन्दी साहित्य के इतिहास सम्बन्धी ग्रन्थों का कालक्रमानुसार वर्णन किया है। उन्होंने पहला स्थान तासी को दिया है, दूसरा स्थान महेशदत्त कृत भाषा काव्य-संग्रह को। इस संग्रह को अन्य किसी इतिहासकार ने कोई महत्त्व नहीं दिया है। राधाकृष्ण दास ने इस ग्रन्थ के आधार पर एक स्वतंत्र लेख "कुछ प्राचीन भाषा कवियों का वर्णन" शीर्षक लिखा था और इस ग्रन्थ को पर्याप्त महत्त्व दिया था।[१] पर इस ग्रन्थ का न तो काव्य संग्रह की दृष्टि से कोई महत्त्व है और न कवि वृत्त की ही दृष्टि से। संकलित रचनायें अत्यन्त साधारण कोटि की हैं, विशेष ध्यान प्रबन्ध रचनाओं की ओर है, मुक्तक बहुत कम हैं। इस संग्रह में कवियों की संख्या भी बहुत कम है। कवियों को न तो कालक्रम से प्रस्तुत किया गया है, न वर्णानुक्रम से, न विषय क्रम से, मनमाना ढंग है। कवियों के विवरण भी भ्रान्त हैं। इस ग्रन्थ का महत्त्व दो दृष्टिकोणों से है। एक तो इसी ग्रन्थ में मतिराम को अपनी का भाँट लिखा गया है, अतः यह सरोज का प्रेरक ग्रन्थ है। दूसरे सरोज में दिये हुए सम्बत् जन्म-काल समझे जाते रहे हैं, इस ग्रन्थ की सहायता से उनमें से अनेक उपस्थिति काल, रचना-काल एवं मृत्युकाल सिद्ध होते हैं। इस प्रकार सरोज के सन् सम्बतों की समस्या को हल

[१] नागरी प्रचारिणी पत्रिका, भाग ५, १९०१ ई० अथवा राधाकृष्णदास ग्रन्थावली, प्रथम भाग, पृष्ठ ९७-१०२

करने की दृष्टि से इसका महत्त्व है। इसके ये दोनों महत्त्व सापेक्ष्य हैं। स्वतः अपने में यह कोई महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ नहीं है।

मातादीन मिश्र द्वारा संकलित कवित्त रत्नाकर भी भाषा काव्य-संग्रह की ही कोटि का ग्रन्थ है। यह दो भागों में है। प्रत्येक भाग में संकलित कवि का परिचय भी अंत में दे दिया गया है। दोनों भागों में मिलाकर कुल ४२ कवि हैं। इस ग्रन्थ का भी न तो काव्यसंग्रह महत्त्वपूर्ण है और न कवि वृत्त ही। इसका भी महत्व इतना ही है कि यह भी सरोज के आधार ग्रन्थों में से एक है।

भाषा-काव्यसंग्रह और कवित्त रत्नाकर दोनों में एक ही पद्धति का अनुसरण है। पहले काव्य-संग्रह फिर कवि वृत्त। ठीक इसी पद्धति का अनुसरण सरोज में भी किया गया है। पर सरोज में इन दोनों से बढ़कर अनेक ऐसी विशेषतायें हैं जो इन्हें अपनी छाया के अंधकार में पड़ी रहने के लिए बाध्य करती रही हैं और करती रहेंगी। यथा :—

(१) सरोज में संकलन एवं कवि परिचय वर्णानुक्रम से दिया गया है, जिससे कवि शीघ्रता-पूर्वक ढूँढ़ निकाला जा सकता है। उक्त दोनों ग्रन्थों में इस पद्धति का अनुसरण नहीं है, पर वे ग्रन्थ इतने छोटे हैं कि एक निगाह में ही कवियों को ढूँढ़ लेना कोई कठिन नहीं।

(२) पूर्ववर्त्ती दोनों ग्रन्थ हिन्दी मिडिल के विद्यार्थियों के उपयोग के लिये शिक्षा विभाग की ओर से बनवाये गये हैं, सम्पादकों की निजी प्रेरणा के परिणाम नहीं हैं। सरोज साहित्य-सेवा की दृष्टि से भ्रान्तियों का निराकरण करने के लिये, अधिक से अधिक कवियों का सन् सम्बत् और वृत्त देने के लिए, प्रस्तुत किया गया है। यह हिन्दी साहित्य का प्रथम शोध-ग्रन्थ है। पूर्ववर्ती दोनों ग्रन्थों को यह गौरव कदापि नहीं प्राप्त हो सकता।

(३) पूर्ववर्ती दोनों प्रयास बामन के सदृश हैं, अतः लघु ही नहीं हैं, छलपूर्ण भी हैं, विशेषकर प्रथम। सरोज विराट सदृश है, जो अपने तीन डगों के भीतर पुण्ड (७७० वि०) से लेकर हरिश्चन्द्र (१९३४ वि०) तक के हिन्दी साहित्य के भूत और वर्तमान को समेट कर भविष्य को भी पूर्ण प्रभाव-क्षेत्र में समाहित कर लेता है। हिन्दी साहित्य का ऐसा कौन-सा इतिहास ग्रन्थ है, जो सरोज का ऋणी न हो?

सरोज और परवर्ती ग्रन्थ

यह तो रही सरोज और इसी पद्धति पर लिखित पूर्ववर्ती ग्रन्थों की बात। अब इसी प्रकार के उन परवर्ती ग्रन्थों पर विचार करना चाहिये जो इसके प्रभाव क्षेत्र में आकर लिखे गये हैं। इसी प्रभाव-दर्शन से सरोज का महत्व ठीक-ठीक आँका जा सकेगा।

क. द माडर्न वर्नाक्यूलर लिट्रेचर आफ नदर्न हिन्दुस्तान

सर जार्ज ए. ग्रियर्सन रचित 'द माडर्न वर्नाक्यूलर लिट्रेचर आफ नदर्न हिन्दुस्तान' हिन्दी साहित्य का प्रथम इतिहास है। आश्चर्य है कि हमारे साहित्य के इतिहास का प्रणयन एक विदेशी विद्वान् ने, एक विदेशी भाषा में, और वह भी विदेशियों के ही उपयोग के लिए किया। उक्त ग्रियर्सन साहब मिथिला में कलक्टर थे। १८८६ ई० में उन्होंने प्राच्य विद्या-विशारदों की अन्तर्राष्टीय सभा के वियना अधिवेशन में, हिन्दुस्तान (हिन्दी भाषा-भाषी-प्रदेश) के मध्यकालीन भाषा साहित्य और तुलसी पर एक लेख पढ़ा था। इसकी तैयारी के लिए इन्होंने कई वर्षों में समस्त हिन्दी साहित्य पर टिप्पणियाँ प्रस्तुत की थीं, जिनके एक अंश का ही उपयोग उक्त लेख में हो सका था। यह लेख

विशेष ध्यानपूर्वक सुना गया था। अतः लेखक को जो प्रोत्साहन मिला, उससे प्रेरित होकर उसने अपनी सारी टिप्पणियों को सुव्यवस्थित कर यह ग्रन्थ प्रस्तुत किया, जो सर्वप्रथम १८८८ ई० के "रायल एशियाटिक सोसाइटी आफ बंगाल" के जर्नल प्रथम भाग में प्रकाशित हुआ, तदुपरान्त १८८९ ई० में उसी सोसाइटी की ओर से स्वतंत्र ग्रन्थ के रूप में प्रकाशित हुआ। इस ग्रन्थ का पुनर्मुद्रण नहीं हुआ और अब यह दुष्प्राप्य हो गया है। पुस्तकालयों में यत्र-तत्र इसकी प्रतियाँ हैं जो पढ़ने के लिए भी नहीं दी जातीं।

"प्रस्तावना" में लेखक ने अत्यन्त विनम्रता पूर्वक स्वीकार किया है कि उनका ग्रन्थ "भाषा साहित्य के उन सम्मत लेखकों की सूची मात्र से अधिक और कुछ नहीं है, जिनका नाम मैं एकत्र कर सका हूँ और जो संख्या में ९५२ हैं।" इस ग्रन्थ में मारवाड़ी, हिन्दी, बिहारी लिखित साहित्य का उल्लेख हुआ है। ग्राम साहित्य की चर्चा नहीं हुई है। अधिकांश लेखकों का केवल नाम दिया गया है। कोई विशेष विवरण नहीं है। प्रत्येक लेखक की रचना के नमूने ग्रियर्सन ने पढ़े हैं, ऐसा उनका कहना है। पर सबको समझा भी है, ऐसा उनका दावा नहीं है।

ग्रन्थ का आकार सामान्य पुस्तकों के आकार से कुछ बड़ा है। यह ग्रन्थ तीन खंडों में विभक्त कहा जा सकता है :— (१) प्रस्तावना आदि, (२) मूल ग्रन्थ, (३) अनुक्रमणिका।

प्रथम खंड में में तीन विभाग हैं :—

(अ) प्रस्तावना (Preface) इसमें कुल ५ पृष्ठ (७ से ११ तक) हैं। इसमें ग्रन्थ लिखने का अवसर और आवश्यकता आदि पर विचार हैं।

(ब) भूमिका (Introduction) इसमें कुल ११ पृष्ठ (१३ से २३ तक) हैं। बारहवाँ पृष्ठ सादा है। भूमिका के चार उप-विभाग हैं :— (१) सूचना के सूत्र, (२) विषयन्यास का सिद्धान्त,
(३) हिन्दुस्तान (हिन्दी-भाषा-भाषी-प्रदेश) के भाषा साहित्य का संक्षिप्त विवरण,
(४) चित्र-परिचय,

(स) शुद्धिपत्र और परिशिष्ट (addenda)

इसमें दस-बारह पृष्ठ हैं। अशुद्धियाँ प्रायः हिन्दी नामों के वर्णविन्यास से सम्बन्ध रखती हैं। ग्रन्थ के छपते-छपते लेखक को जो नई सूचनायें प्राप्त हुई, उन्हें उसने परिशिष्ट में दे दिया है। इसी के अन्तर्गत तुलसीदास लिखित प्रसिद्ध पंचनामें का रोमन लिपि में प्रत्यक्षीकरण और उसका अंग्रेजी अनुवाद भी दिया गया है। द्वितीय खंड में, जो कि मूल ग्रन्थ है, कुल १६८ पृष्ठ हैं। ग्रन्थ बारह अध्यायों में विभक्त है। प्रत्येक अध्याय में तीन अंश हैं, जिनमें सामान्य परिचय, प्रधान कवि-परिचय और अप्रधान कवि नाम सूची क्रम से हैं।

तीसरे खंड में तीन अनुक्रमणिकायें हैं। पहली में व्यक्ति-नाम सूची, दूसरी में ग्रन्थ-नाम सूची और तीसरी में स्थान नाम सूची वर्णानुक्रम से है। इन नामों के आगे जो संख्यायें दी गई हैं, वे पृष्ठों की न होकर कवियों की हैं।

भूमिका में ग्रियर्सन ने निम्नलिखित १८ ग्रन्थों से सहायता लेने का उल्लेख किया है :—

ग्रन्थ	लेखक	रचनाकाल
१. भक्तमाल	नाभादास	१५५० ई० के लगभग (?)
२. गोसाईं चरित्र	बेनीमाधवदास	१६०० ई० के लगभग (?)

३. कविमाला	तुलसी	१६५५ ई०
४. हजारा	कालिदास त्रिवेदी	१७१८ ई०
५. काव्य निर्णय	भिखारी दास	१७२५ ई० के लगभग
६. सत्कवि गिरा विलास	बलदेव	१७४६ ई०
७. सूदन द्वारा प्रशंसित कवि सूची	सूदन	१७५० ई० के लगभग
८. विद्वन्मोद तरंगिणी	सुब्बासिंह	१८१७ ई०
९. राग सागरोद्भव राग कल्पद्रुम	कृष्णानन्द, व्यासदेव	१८४३ ई०
१०. श्रृंगार संग्रह	सरदार	१८४८ ई०
११. भक्तमाल का उर्दू अनुवाद	तुलसीराम	१८५४ ई०
१२. रसचन्द्रोदय	ठाकुर प्रसाद त्रिपाठी	१८६३ ई०
१३. दिग्विजय भूषण	गोकुल प्रसाद	१८६८ ई०
१४. सुन्दरी तिलक	हरिश्चन्द्र	१८६९ ई०
१५. काव्य संग्रह	महेश दत्त	१८७८ ई०
१६. कवित्त रत्नाकर	मातादीन मिश्र	१८७६ ई०
१७. शिवसिंह सरोज	शिवसिंह सेंगर	१८८३ ई०
१८. विचित्रोपदेश	नकछेदी तिवारी	१८८७ ई०

इन १८ ग्रन्थों में से १७ वां सरोज है, १८ वां इसका परवर्ती ग्रन्थ है। प्रथम १६, सरोज की पूर्ववर्ती रचनायें हैं। इनमें से केवल 'श्रृंगार संग्रह' ऐसा है, जिसका उल्लेख शिवसिंह ने नहीं किया है। शेष १५ की सहायता उन्होंने ली है। ग्रियर्सन इन सभी ग्रन्थों से सहायता लेने का उल्लेख करते हैं, पर यह ठीक नहीं प्रतीत होता। उन्होंने केवल निम्नांकित ५ ग्रन्थों की सहायता ली है :—

१. राग कल्पद्रुम २. श्रृङ्गार संग्रह ३. सुन्दरी तिलक ४. शिवसिंह सरोज ५. विचित्रोपदेश।

राग कल्पद्रुम को बड़े परिश्रम पूर्वक और बड़ी कठिनाई से प्राप्तकर ग्रियर्सन ने देखा था। ऐसा उल्लेख राग कल्पद्रुम द्वितीय संस्करण के सम्पादक श्री नगेन्द्र नाथ बसु ने उक्त ग्रन्थ में किया है। ग्रियर्सन ने उक्त ग्रन्थ के प्रथम संस्करण की भूमिका से हिन्दी कवियों और ग्रन्थों की सूचियां दी हैं, जिससे यह तथ्य स्पष्ट है। श्रृंगार संग्रह का उल्लेख सरोज में नहीं है। पर ग्रियर्सन ने न केवल इसका उल्लेख किया है, बल्कि इसमें आये कवियों की सूची भी दे दी है। अतः इसका भी सदुपयोग उन्होंने अवश्य किया है। इसी प्रकार सुन्दरी तिलक में आये कवियों की भी सूची ग्रियर्सन ने दी है। अतः उन्होंने इसका भी उपयोग किया है, इसमें संदेह नहीं। सरोज तो इस ग्रन्थ का मूल आधार कहा जा सकता है। भूमिका में इस सम्बन्ध में ग्रियर्सन स्वयं लिखते हैं :—

"एक देशी ग्रन्थ जिस पर मैं अधिकांश में निर्भर रहा हूँ, और प्रायः सभी छोटे कवियों और अनेक अधिक प्रसिद्ध कवियों के भी सम्बन्ध में प्राप्त सूचनाओं के लिए जिसका मैं ऋणी हूँ, शिवसिंह द्वारा विरचित और मुंशी नवल किशोर द्वारा प्रकाशित अत्यन्त लाभदायक 'शिवसिंह सरोज' (द्वितीय संस्करण १८८३ ई०) है।"—भूमिका पृष्ठ १३

विचित्रोपदेश एक परवर्ती रचना है। शिवसिंह इसका उल्लेख कर भी नहीं सकते थे। ग्रियर्सन ने इसे देखा था, इसमें संदेह नहीं।

इन पांचों के अतिरिक्त शेष १३ ग्रन्थों को ग्रियर्सन ने देखा था, यह पूर्ण संदेहात्मक है। इनकी सहायता उन्होंने प्रत्यक्ष रूप से नहीं, सरोज द्वारा अप्रत्यक्ष रूप से ली है। सरोज में कवियों के जीवन-चरित्र वाले प्रकरण में बराबर इनका उल्लेख होता गया है। सरोज में स्पष्ट लिखा है कि प्रसंग प्राप्त कवि की रचना किस संग्रह में संकलित है। इन्हीं का उल्लेख ग्रियर्सन ने भी अपने ग्रन्थ में कर दिया है। गोसाईं चरित्र तो उन्हें मिला नहीं, ऐसा उल्लेख तुलसीदास के प्रकरण में उन्होंने किया है, फिर उससे सहायता ली ही कैसे जा सकती है? हां, शिवसिंह ने इस ग्रन्थ से एक उदाहरण सरोज में अवश्य दिया है, जिससे स्पष्ट है कि उन्होंने उक्त ग्रन्थ अवश्य देखा था। काव्य निर्णय में दास जी ने एक कवित्त में कुछ कवियों का नाम लिया है, जिनकी ब्रज भाषा को उन्होंने प्रमाण माना है। इस कवित्त को शिवसिंह ने उद्धृत किया है और जिस भ्रान्त ढंग से इसका उपयोग उन्होंने किया है, उसी ढंग से ग्रियर्सन ने भी किया है। इन्होंने भी अब्दुर्रहीम खानखाना और रहीम को दो कवि माना है, नीलकंठ को मिश्र मान लिया है। अतः स्पष्ट है कि ग्रियर्सन ने काव्य निर्णय को शिवसिंह की आंखों देखा है, स्वयं अपनी आंखों नहीं। ग्रियर्सन न तो सूदन रचित सुजान चरित्र को जानते थे और न इसके आदि में दिये छन्दों से परिचित थे। पांच से लेकर दस संख्यक छह छंदों में सूदन रचित कवि-सूची है। शिवसिंह ने प्रमाद से इसे दस छंद समझ लिया है। अंतिम छंद उनके पास था। इसमें आये कवियों का नाम उन्होंने सरोज में दिया है। इसी का उल्लेख शिवसिंह का निर्देश करते हुए ग्रियर्सन ने भी कर दिया है। अतः स्पष्ट है कि उन्होंने इस ग्रन्थ का भी उपयोग अप्रत्यक्ष रूप से ही किया है। सत्कवि गिराविलास में १७ कवियों की रचनायें संकलित हैं। इसकी सूची सरोज में दी गई है। ग्रियर्सन ने यहीं से उक्त सूची अपने ग्रन्थ में उतार ली है। ऐसा कोई प्रमाण नहीं मिलता, जिससे सिद्ध हो कि इन्होंने उक्त ग्रन्थ देखा भी था। कविमाला, हजारा, विद्वन्मोद तरंगिणी, रसचन्द्रोदय, दिग्विजय भूषण, काव्य संग्रह और कवित्त रत्नाकर को यदि उन्होंने देखा होता तो निश्चय ही इनमें संकलित कवियों की भी सूची उन्होंने दे दी होती। काव्य संग्रह को तो वे कभी भी भूल नहीं सकते थे, क्योंकि इस ग्रन्थ के अन्त में सरोज के ही समान, इसमें संकलित सभी ५१ कवियों का जीवन-चरित्र दे दिया गया है, जिनमें तिथियां भी हैं जो एक साहित्य शोधी के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं और जिनके सहारे सरोज की तिथियों की जांच भली-भांति की जा सकती है कि वे जन्म-काल सूचक हैं अथवा रचना-काल सूचक। 'कवि रत्नाकर' यह अशुद्ध नाम सरोज की भूमिका में प्रमाद से छप गया है। ग्रियर्सन ने भी कवि रत्नाकर ही लिखा है। ग्रन्थ का असल नाम 'कवित्त रत्नाकर' है। सरोजकार ने जीवन-चरित्र खंड में यह नाम दिया भी है। ग्रियर्सन ने मक्षिका स्थाने मक्षिका लिखा है। यह स्पष्ट सिद्ध करता है कि यह ग्रन्थ भी उनकी आंखों के सामने से नहीं गुजरा। यह सम्भव है कि भक्तमाल और उसका उर्दू अनुवाद तथा एकाध और ग्रन्थ उन्होंने देखे भी रहे हों, पर निश्चयपूर्वक कुछ कहा नहीं जा सकता।

ग्रियर्सन ने कुछ और भी ग्रन्थों तथा सूत्रों का उपयोग किया है। इनकी गणना यद्यपि उन्होंने भूमिका की उक्त सूची में नहीं की है, पर उल्लेख कर दिया है तथा मूल ग्रन्थ में इनका हवाला बार-बार दिया है। इनमें प्रथम ग्रन्थ है प्रसिद्ध फ्रांसीसी लेखक गार्सां द तासी कृत "हिस्त्वायर द ला लितरेत्योर हिन्दुई एं हिन्दुस्तानी"। इसका उपयोग ग्रियर्सन ने स्व-संकलित टिप्पणियों की जांच के लिए किया है। प्रतीत होता है कि ग्रन्थ के इस प्रथम संस्करण का ही उपयोग उन्होंने किया है, क्योंकि उन्होंने जहां भी हवाला दिया है, प्रथम खंड का। पहले संस्करण में प्रथम भाग में जीवनवृत्त

था, दूसरे भाग में संकलन था। द्वितीय संस्करण में तीन भाग हैं। तीनों में वृत्त और संकलन साथ-साथ हैं, साथ ही तासी में हिन्दी के लगभग ७० ही कवियों के होने का उल्लेख ग्रियर्सन ने किया है। यह भी प्रथम संस्करण की ही ओर संकेत करता है। तासी का द्वितीय संस्करण ग्रियर्सन के ग्रन्थ के पंद्रह-सोलह साल पहले प्रकाशित हो गया था, फिर न जाने क्यों वे इसका उपयोग नहीं कर सके। इसमें हिन्दी के २५० से अधिक कवि और लेखक हैं।

दूसरा ग्रन्थ, जिसकी सहायता ग्रियर्सन ने ली है, विलसनकृत 'रेलिजस सेक्ट्स आफ हिन्दूज़' है। प्रायः सभी भक्त कवियों के सम्बन्ध में इस ग्रन्थ से सहायता ली गई है।

तीसरा ग्रन्थ है टाड का प्रसिद्ध 'राजस्थान का इतिहास'। राजपूताने के चारण कवियों एवं उनके आश्रयदाता राजाओं या राज कवियों के विवरण एवं तिथियों के सम्बन्ध में इस ग्रन्थ की सहायता पद-पद पर ली गई है।

इनका सहायक चौथा सूत्र है "जर्नल आफ रायल एशियाटिक सोसाइटी आफ़ बंगाल।" विशेषकर भाग ५३ का एक अंक, जिसमें मैथिल कवियों का इतिहास दिया हुआ है। प्रायः सभी मैथिल कवियों का विवरण इसी लेख के आधार पर इस ग्रन्थ में संकलित हुआ है।

ग्रियर्सन ने कवियों का इतिवृत्तदेते समय निम्नलिखित पद्धति का अनुसरण किया है :—

(१) सर्वप्रथम वे कवि की क्रम संख्या देते हैं। ये संख्यायें कुल ९५२ हैं। ७०६ संख्या पर किसी विशेष कवि का उल्लेख न होकर हिन्दी और बिहारी नाटकों पर एक संक्षिप्त टिप्पणी है। इस प्रकार इस ग्रन्थ में कुल ९५१ कवियों का विवरण है। आगे चलकर विनोद में भी यही पद्धति अपनाई गई।

(२) क्रमसंख्या देने के अनन्तर कवि नाम देव नागरी अक्षरों में दिया गया है। इस सम्बन्ध में नियमों का पालन किया गया है। पहले तो नामों को उस ढंग से लिखा गया है, जिस ढंग से सर्व-साधारण उनका उच्चारण करते हैं। पढ़े-लिखे शिष्ट जनों के उच्चारण को महत्व नहीं दिया गया है, यद्यपि साहित्यकारों के सम्बन्ध में यही पद्धति अपनाई जानी चाहिये थी। इस प्रकार बल्लभाचार्य न लिखकर बल्लभाचारज लिखा गया है। इस पद्धति का परित्याग कतिपय जीवित भारतीय साहियत्यकारों के ही सम्बन्ध में इस सिद्धांत पर किया गया है कि प्रत्येक व्यक्ति को स्वेच्छानुसार अपना नाम लिखने की स्वतंत्रा प्राप्त है। इन लोगों का नाम हिन्दी लिपि में उसी प्रकार लिखा गया है, जिस प्रकार वे अंग्रेजी में लिखते हैं।

विदेशी लोग, जिनके लिये यह ग्रन्थ लिखा गया है, हिन्दी नामों का ठीक-ठीक उच्चारण कर सकें, इसलिए नामों के पद-विभाजन की दूसरी पद्धति स्वीकार की गई है। जहाँ प्रत्येक पद के अनन्तर रुका जा सके, दो पदों के बीच विन्दु दे दिया गया है; जो अंग्रेजी के पूर्ण विराम से पर्याप्त बड़ा है। यथा—देओकी नन्दन सुकुल। प्रस्तावना में इन दोनों बातों पर लेखक ने विचार किया है।

(३) हिन्दी में नाम देने के अनन्तर उसको रोमन लिपि में दिया गया है और यदि नाम के साथ कोई अतिरिक्त अंश भी जुड़ा हुआ है, तो उसका अनुवाद कर दिया गया है, जैसे पुष्य कवि को 'द पोयट पुष्य' लिखा गया है। गोसाईं तुलसीदास के गोसाईं का अनुवाद 'होली मास्टर' किया गया है। इस ग्रन्थ के हिन्दी अनुवाद में न तो दो बार नाम देने की आवश्यकता है (एक बार नागरी लिपि में, दूसरी बार रोमन लिपि में, और न तो नामों के बीच अंग्रेजी का वृहत् पूर्ण

विराम देने की, क्योंकि इन दोनों में से किसी की कोई उपयोगिता हम भारतीयों के लिए नहीं है। विदेशियों के लिए तो ये दोनों बातें आवश्यक थीं।

(४) नाम के साथ पिता का नाम स्थान का नाम, और समय एक साथ दे दिये गये हैं, जैसे वे नाम के ही अंग हो, यह सब बिना किसी क्रिया का सहारा लिए हुये किया गया है। ग्रियर्सन ने यह पद्धति सरोज से अपनाई है।

(५) इसके पश्चात् उन संग्रहों का संक्षित नाम दे दिया गया है, जिनमें उस कवि की रचनायें संकलित हैं।

(६) इस प्रकार नाम दे देने के अनन्तर दूसरे अनुच्छेद में उपलब्ध इतिवृत्त दिया गया है। यही क्रम सरोज का भी है।

(७) किसी कवि के इतिवृत्त में यदि किसी अन्य कवि का उल्लेख आ गया है तो उसकी भी क्रम संख्या सुविधा के लिये नाम के आगे कोष्टक में दे दी गई है।

ग्रियर्सन के ग्रन्थ को ठीक-ठीक समझने के लिये उनके द्वारा प्रयुक्त कुछ अंग्रेजी शब्दों का ठीक-ठीक हिन्दी अर्थ जान लेना आवश्यक है, नहीं तो भयानक भ्रान्ति हो सकती है। Style का प्रयोग उन्होंने रस के अर्थ में किया है। उनके द्वारा नवरसों के लिये प्रयुक्त पदावली नीचे दी जा रही है :—

(१) श्रृंगार रस The erotic style
(२) हास्य रस The comic style
(३) करुण रस The elegiac style
(४) वीर रस The heroic style
(५) रौद्र रस The tragic style
(६) भयानक रस The terrible style
(७) बीभत्स रस The satiric style
(८) शान्त रस The quietistic style
(९) अद्‌भुत रस The sensational style

कुछ अन्य शब्द जिनका हिन्दी रूप जानना आवश्यक है, ये हैं—
Occasional poem—सामयिक कविता
Didactic poem—चेतावनी सम्बन्धी कविता
Emblematic poem—दृष्टिकूट
A work on lovers—नायिका भेद

सरोज सर्वेक्षण के समय मैंने ग्रियर्सन के इस ग्रन्थ का हिन्दी अनुवाद प्रस्तुत किया है। अनुवाद करते समय मुझे ज्ञात हुआ कि उन्होंने स्थान-स्थान पर सरोज का अंग्रेजी अनुवाद किया है और यह अनुवाद कभी-कभी ऐसा हो गया है, जैसे कोई विद्यार्थी "मेरा, सर चक्कर खा रहा है" का अंग्रेजी अनुवाद "माइ हेड इज़ ईटिंग सरकिल" कर दे, अथवा जैसा कि एक अन्य अंग्रेज संस्कृतज्ञ ने कुशासन का अनुवाद "सीट आफ़ रामाज़ सन" किया था। बिचारे को राम के पुत्र कुश का पता था, सन्धि विग्रह भी वह जानता था, पर उसे कुश नामक घास विशेष का पता नहीं था।

गुमान मिश्र ने प्रसिद्ध नैषध चरित्र का हिन्दी पद्यानुवाद 'काव्य कला निधि, नाम से प्रस्तुत किया था। इस अनुवाद की प्रशंसा करते हुये सरोजकार लिखता है :—

"पंचनली, जो नैषध में एक कठिन स्थान है, उसको भी सलिल कर दिया"

इसका जो अनुवाद ग्रियर्सन ने किया है उसका हिन्दी रूपान्तर यह है :—

"इन्होंने पंचनलीय पर, जो नैषध का एक अत्यन्त कठिन अंश है, सलिल नाम एक विशेष टीका लिखी।"

ग्रियर्सन को इस सम्बन्ध में संदेह था और उन्होंने इस सलिल पर यह पाद टिप्पणी दे दी है :—

"अथवा शिवसिंह का, जिनसे मैंने यह लिया है, यह अभिप्राय है कि उन्होंने पंचनलीय को बिलकुल पानी की तरह स्पष्ट कर दिया है।"

चतुर सिंह राना के सम्बन्ध में शिवसिंह ने लिखा है :—

"सीधी बोली में कवित्त हैं।"

उदाहरण से स्पष्ट है कि शिवसिंह का अभिप्राय खड़ीबोली से है। ग्रियर्सन ने सीधी बोली का अनुवाद" सिम्पुल स्टाइल" किया है।

इसी प्रकार शिवसिंह ने नृप शंभु[1] के सम्बन्ध में लिखा है "इनकी काव्य निराली है।" सरोज में काव्य सर्वत्र स्त्रीलिंग में प्रयुक्त हुआ है। ग्रियर्सन ने निराली को ग्रन्थ समझ लिया है। ग्रियर्सन को आधार मान कर यदि कोई अन्वेषक सिर मारता' फिरे, तो असम्भव नहीं इतिहास लेखक तो इस कवि के इस निराले ग्रन्थ निराली का उल्लेख सहज ही कर सकते हैं।

ग्रियर्सन में कुल ६५१ कवि हैं। इनमें से निम्नांकित ६५ कवि अन्य सूत्रों से लिए गये हैं, जिनमें विलसनकृत रेलिजस सेक्ट्स आफ़ हिन्दुज़ और जर्नल आफ़ एशियाटिक सोसाइटी आफ़ बंगाल (विशेषकर अंक ५३) प्रमुख हैं। मैथिल कवि इसी अंक से लिये गये हैं।

१।६ जोधराज	२।१० रामानन्द
३।११ भवानन्द	४।१४ भगोदास
५।१५ श्रुतगोपाल	६।१७ विद्यापति, मैथिल
७।१८ उमापति, मैथिल	८।१९ जयदेव मैथिल
९।४९ हठी नारायण	१०।५८ ध्रुवदास
११।१२२ जगन्नाथ, अकबरी दरबारवाले	१२।१६३ दादू
१३।१६७ प्राणनाथ, पन्नावाले	१४।१६८ बीरभान
१५।१७१ नजीर अकबराबादी	१६।१७४ वेदांग राय
१७।१८४ जगतसिंह, चित्तौर के राना	१८।१९४ सूजा
१९।२०६ गम्भीर राय	२०।३२० गंगापति
२१।३२१ शिवनारायण	२२।३२२ लाल जी
२३।३२४ दूल्हाराम	२४।३६० मनबोध झा, मैथिल
२५।३६१ केशव, मैथिल	२६।३६२ मोद नारायण, मैथिल

[1] यही ग्रंथ। कवि संख्या ८३७

२७।३६३ लाल झा, मैथिल
२८।४३४ ठाकुर द्वितीय
२९।४३७ मीर अहमद
३०।४८७ देवी दास, जगजीवन दास के शिष्य
३१।५१८ बलदेव, विक्रमशाहि चरखारी के आश्रित
३२।५६२ हरिप्रसाद, बनारसी
३३।६२८ जयचन्द, जयपुरी
३४।६३४ बखतावर, हाथरसवाले
३५।६४० तुलसी राम अग्रवाला, मीरापुरवाले
३६।६४२ भानुनाथ झा, मैथिल
३७।६४२ हरखनाथ झा, मैथिल
३८।७०० लछमीनाथ ठाकुर, मैथिल
३९।७०१ फतूरी लाल, मैथिल
४०।७०२ चन्द्र झा, मैथिल
४१।७०३ जानक्रिश्चियन
४२।७०४ पं० अम्बिकादत्त व्यास
४३।७०५ पं० छोटू राम तिवारी
४४।७३८ अम्बिका प्रसाद
४५।७३९ काली प्रसाद तिवारी
४६।७४० बिहारी लाल चौबे
४७।७६७ नामदेव
४८।८०६ क्रिसनदास, भक्तमाल के एक टीकाकार
४९।८१४ गुमानी, कवि पटना के
५०।८२२ चक्रपानि, मैथिल
५१।८२३ चतुरभुज, मैथिल
५२।८२८ जयानन्द, मैथिल
५३।८३४ डाक
५४।८४५ नजामी
५५।८४७ नन्दी पति
५६।८५५ परमल्ल
५७।८५९ प्रेमकेश्वर दास
५८।८६५ बरगराम
५९।८७३ बुलाकी दास
६०।८८१ भंजन, मैथिल
६१।८८२ भड्डरि
६२।८९० महिपति, मैथिल
६३।९०० रमापति, मैथिल
६४।९११ रमाकान्त
६५।९३० सरसराम, मैथिल

इस प्रकार ग्रियर्सन ने ९५१—६५-८८६ कवियों का उल्लेख एक मात्र सरोज के सहारे किया है, जो कुल का ९४ प्रतिशत है।

सरोज के कवियों की संख्या १००३ है। इनमें से ४६ कवियों को ग्रियर्सन ने गृहीत नहीं किया है। सरोज के कुल ९५७ कवि ग्रियर्सन में उल्लिखित हैं, जिनमें से ८८६ को तो एक-एक स्वतंत्र अंक दिया गया है, शेष ७१ कवि अन्य कवियों में मिला दिये गये हैं।

इन ४६ अस्वीकृत कवियों में से १२ का तो सरोज में सन्-सम्बत् दिया हुआ है और ४ को "वि०" (विद्यमान) कहा गया है। शेष ३० तिथिहीन हैं।

इनकी सूची यथास्थान आगे दी गई है।

सरोज के १००३ कवियों में ६८७ कवि तिथियुक्त हैं, ५३ कवि वि० हैं और २६३ कवि तिथिहीन हैं। ६८७ स-तिथि कवियों में से ६७५ ग्रियर्सन में स्वीकृत हैं, इनमें से ४३८ सम्बत् भी ग्रियर्सन ने स्वीकार कर लिये हैं। इन ४३८ सम्बतों में से ३८५ जन्म सम्बत् माने गये हैं और ३७ उपस्थिति सम्बत्। १५ सम्बतों के सम्बन्ध में ग्रियर्सन यह नहीं निश्चय कर पाये हैं कि इन्हें जन्म सम्बत् माना जाय अथवा उपस्थिति सम्बत्। आगे दी हुई सारिणी से स्पष्ट हो जायगा कि किन-किन संख्या वाले कवियों के सम्बत् सीधे सरोज से स्वीकार कर लिये गये हैं। सारिणी में संदिग्धावस्था वाले सम्बतों की संख्या १७ है। इसका कारण यह है कि ४४३ और ४४७ संख्यक कवि

सरोज के एक ही कवि सोमनाथ हैं जिन्हें सोमनाथ और ब्राह्मणनाथ नाम से दो कवि मान लिया गया है। इसी प्रकार ६३५ और ६३६ संख्यक दलपतिराय एवं बंशीधर वस्तुतः दो कवि हैं। ग्रियर्सन में इन्हें दो अंक दिये गये हैं, सरोज में एक ही। इसीलिये इन संख्याओं को कोष्टक में रख दिया गया है। २७८ संख्यक कमन्च कवि के सम्बन्ध में भी सरोज में दिया सम्बत् स्वीकार किया गया है। पर इन्हें उक्त सम्बत् (१६५३ ई०) के पूर्व उपस्थित कहा गया है।

ग्रियर्सन के उन कवियों की सारणी जिनके सम्बत् सरोज से लिये गये हैं

अध्याय	जन्म सम्बत्	योग	उपस्थिति सम्बत्	योग	संदिग्ध जन्म या उपस्थिति	योग	पूर्ण योग
१. चारणकाल			१	१			१
२. पंद्रहवींशती का धार्मिक पुनरुत्थान	२२	१					१
परिशिष्ट	२३-३०	८					८
३. मलिक मुहम्मद का प्रेम काव्य परिशिष्ट	३२	१					१
४. ब्रज का कृष्ण सम्प्रदाय	५३, ५५, ६४-६९	८					८
परिशिष्ट	७०-७२,७५,७७-८३ ८५-१०२	२८	७३,७४	२			३०
५. मुगल दरबार	१०५, १०६, १०९, ११५-२१, १२५, १२७	१२	११४,१२६	२			१४
६. तुलसीदास	१२९,	१					१
७. रीति शास्त्र	१४०, १४१, १४४, १५०, १५४, १५५, १५८	७	१४२,१५३, १५७,	३	१५६	१	११
८. तुलसीदास के अन्य परवर्ती (क) धार्मिक कवि	१६५, १६६, १७०	३					३
(ख) अन्य कवि	१७२, १७५-८०, १८२, २०८, २१०, २१३-१७	१५	१७३	१	२११	१	१७
परिशिष्ट	२१८-३४, २३६-४५, २४७-५४, २५६-६०, २६२-६६, २६८, २७०-७१, २७३-७७, २७९-८४, २८६-८८, २९१-३०४,३०६, ३०७, ३०९-१८	८८	२३५,२७२, २८५, २८९-९०, ३०८	६			९४

अध्याय	जन्म सम्बत्	योग	उपस्थिति सम्बत्	योग	संदिग्ध जन्म या उपस्थिति	योग	पूर्ण योग
९. अठारहवीं शताब्दी							
(क) धार्मिक कवि							
(ख) अन्य कवि	३४४-४६,३५५,३६४, ३६५,३६७	७	३५०,३५८, ३३६,३६६, ३७०,३७२ ३७४	७			१४
परिशिष्ट	३८२-८५,२८७-९१,३९३-९४,३९७-४०२,४०४-३०, ४३२-३३,४३६-३८,४४०-४२, ४४५-४६,४४८-६०, ४६२-८२,४८५,४८६,४८९, ४९१-९६ ५००-०१	९९	४०३,४८८, ४९७	३	(४४३,४४७) ४४४,४८३ ४८४	५	१०७
१०. कम्पनी के अन्दर हिन्दुस्तान							
(क) बुन्देलखंड और बघेलखंड	५१०-१२	३	५०४	१	५२७	१	५
परिशिष्ट	५३३-४३,५४५-५८	२५					२५
(ख) बनारस	५७०,५७४,५७८	३	५५९,५८२	२	५६०	१	६
परिशिष्ट	५८४-८८	५					५
(ग) अवध	५८९,५९१-९२,५९४-९७, ६०३,६०५-०६	१०	५९०,५९८	२	५९३	१	१३
परिशिष्ट	६०७-१७,६१९-२७	२०					२०
(घ) अन्य	६३०-३२,६४३-४४	५			(६३५,६३६) ६३७,६३९	४	९
परिशिष्ट	६४६-४८,६५०-५९, ६६१;६६३-६७,६६९; ६७१,६७३-७६;६७८, ६७९,६८१-८९	३६	६४९,६६७ ६६८-६७२ ६७७,६९०	६			४२
११. विक्टोरिया की छत्रछाया में हिन्दुस्तान			६९१ (मृत्यु)	१			१
परिशिष्ट					७०७-०९	३	३
सरोज दत्त सम्बत् से पूर्व उपस्थित २७८		३८५		३७		१७	४३९ १

कुल ४४०

ग्रियर्सन के प्रथम ११ अध्यायों में स-तिथि कवियों का विवरण है। १२ वे अध्याय में उन

कवियों का उल्लेख हुआ है, जिनका सन्-सम्बत् ग्रियर्सन नहीं कर पाये हैं। प्रथम ११ अध्यायों में कुल ७३९ कवि हैं। इनमें से ४४० के सम्बत् (कुल ४३८ सम्बत् ज्यों के त्यों सरोज से लिये गये हैं। अतः ग्रियर्सन में कुल २९९ सम्बत् नये हैं।

इन २९९ नये सम्बतों में से ४६ कवि तो पूर्णरूपेण नये हैं। ये ग्रियर्सन में नये आये ६५ कवियों में से प्रथम ४६ कवि हैं। यह सूची पीछे दी जा चुकी है। अतः इन २९९ कवियों में से केवल २५३ कवि सरोज से उद्धृत हैं। इनमें से निम्नांकित ११ कवियों की तिथियाँ पूर्णरूपेण नई हैं। सरोज में इनकी कोई तिथि नहीं दी गई है।

क्रम सं०	कवि नाम	ग्रियर्सन संख्या	सरोज संख्या
१	गदाधर दास	४६	१५६
२	जगामग	१२३	१०२
३	नीलाधर	१३३	४४१
४	सुन्दर दास (संत)	१६४	८७७
५	हरिचन्द, चरखारीवाले	१७४	१०७२
६	राव रतन राठौर	२०७	७९६
७	प्रह्लाद, चरखारीवाले	५१३	४८५
८	मान कवि, बुन्देलखंडी	५१७	७०२
९	देव, काष्ठ-जिह्वा स्वामी	५६९	३६१
१०	दिनेश	६३३	३५५
११	रघुनाथ दास, महन्थ, अयोध्या	६९२	७४२

रघुनाथ सिंह, रीवाँ नरेश एवं राजा शिव प्रसाद सितारे हिन्द को सरोज में वि० लिखा गया है। ग्रियर्सन ने इनका जन्म एवं सिंहासनारोहण सम्बत् दिया गया है, साथ ही इन्हें १८८३ ई० (सरोज के द्वितीय संस्करण का समय) में उपस्थित कहा गया है। ये सम्बत् भी नये हैं। अब ग्रियर्सन के २५३-११-२ = २४० कवियों के सम्बतों पर विचार करना शेष रहा जाता है।

सरोज में कुल ५३ कवि वि० कहे गये हैं इनमें से ४४ का उल्लेख ग्रियर्सन के प्रथम ७४० स-तिथि कवियों के भीतर हुआ है। रघुराज सिंह एवं शिव प्रसाद सितारे हिन्द को छोड़कर शेष ४२ कवियों को सन् १८४३ ई० में जीवित कहा गया है। यह समय सरोज के द्वितीय संस्करण के प्रकाशन का है। इसी संस्करण का उपयोग ग्रियर्सन ने किया था। सरोजकार ने जिसे १८७८ ई० में विद्यमान कहा था, ग्रियर्सन ने उसे १८८३ में भी विद्यमान मान लिया है। इन ४२ कवियों की सूची निम्नांकित है :--

अध्याय १०

१।५७१ सरदार
२।५७२ नारायण राय
३।५७३ गणेश, बनारसी
४।५७६ बंदन पाठक, बनारसी
५।५७९ सेवक, बनारसी
६।५८१ हरिश्चन्द्र, बनारसी
७।५८३ मन्नालाल द्विज, बनारसी
८।६०१ जगन्नाथ अवस्थी
९।६०४ माधव सिंह, राजा अमेठी (छितिपाल)

अध्याय ११

१०।६९३ अयोध्या प्रसाद बाजपेयी
११।६९४ गोकुल प्रसाद 'ब्रज'
१२।६९५ जानकी प्रसाद पँवार
१३।६९६ महेशदत्त मिश्र
१४।६९७ नन्दकिशोर मिश्र, लेखराज
१५।६९८ मातादीन मिश्र
१६।७११ आनन्द सिंह उपनाम दुर्गासिंह
१७।७१२ ईश्वरी प्रसाद त्रिपाठी
१८।७१३ उमराव सिंह पँवार
१९।७१४ गुरुदीन राय बंदीजन
२०।७१५ बलदेव अवस्थी
२१।७१६ रणजीत सिंह राजा
२२।७१७ ठाकुर प्रसाद त्रिवेदी
२३।७१८ हजारी लाल त्रिवेदी
२४।७१९ गंगा दयाल दुबे
२५।७२० दयाल कवि, बेंतीवाले।
२६।७२१ विश्वनाथ, टिकईवाले
२७।७२२ वृन्दावन, सेमरौता
२८।७२३ लछिराम, होलपुरवाले
२९।७२४ संत वकस
३०।७२५ समर सिंह
३१।७२६ शिव प्रसन्न
३२।७२७ सीताराम दास, बनिया
३३।७२८ गुणाकर त्रिपाठी
३४।७२९ सुखराम
३५।७३० देवीदीन, विलग्रामी
३६।७३१ मातादीन शुक्ल, अजगरावाले
३७।७३२ कन्हैया बक्स, बैसवाड़ा के
३८।७३३ गिरिधारी भाँट, मऊरानीपुर के
३९।७३४ जबरेश
४०।७३५ रणधीर सिंह, राजा सिंगरामऊ उपनाम रघुनाथ रसूलाबादी,
४१।७३६ शिवदीन
४२।७३८ राम नारायण, कायस्थ

इन ४२ कवियों को भी बाद दे देने पर केवल १९८ कवि ऐसे बचते हैं, जो सरोज एवं ग्रियर्सन में एक ही हैं। पर ग्रियर्सन में जिनकी तिथियाँ सरोज की तिथियों से भिन्न हैं। इन १९८ कवियों की संख्या निम्नांकित है :—

अध्याय	संख्या	योग
१	२,३,४,५,६,७,८,	७
२	१२,१३,१६,२०,२१	५
३	३१,३३,	२
४	३४-४५,४७,४८,५०,५१,५२,५४,५६,५७, ५९–६३,७१,७६,८४	२८
५	१०३,१०४,१०७,१०८,११०-१३,१२४	९
६	१२८,१३०,१३१,१३२	४
७	१३४–१३९,१४३,१४५–१४९,१५१,१५२,१५९–६२	१८
८	१६९,१८१,१८३,१८५ ९३,१९५-२०३,२०५, २०९,२१२,२४६,२५५,२६१,२६७,२६९,३०५	३०
९	३१९,३२३,३२५-४३,३४७,३४८,३४९,३५१ ३५२,३५३,३५४,३५६,३५७,३५९,३६८,३७१ ३७३,३७५-८०,३८१,३८६,३९२,३९५,३९६ ४३१,४३९,४६१,४९०,४९८,४९९,	५१

१०	५०२,५०३,५०५-०६,५१४-१६,५१६-२६, ५२८-३१,५४४,५६१,५६३-६८,५७५,५७७, ५८०,५६६,६००,६२२,६१८,६२६,६३८,६४५, ६६२,६७०,६८०	४२
११	७१०	१
		कुल १६८

ये १६८ सम्बत् ऐसे हैं जिनमें से लगभग १५० को ग्रियर्सन ने अन्य सूत्रों से जांच कर लिखा है शेष ऐसे हैं जिनका मूल आधार वस्तुतः सरोज ही है। जोड़ने घटाने में साधारण अशुद्धि हो गई है और ग्रियर्सन में दिया हुआ सन् सरोज के सम्बत् से भिन्न हो गया है।

इस प्रकार ग्रियर्सन के ७३६ सम्बतों में से ४४० + ४२ वि०—४८२ सीधे सरोज के आधार पर हैं। यह कुल का ६४.४% है। सरोज के सम्बतों के ग्रियर्सन कितने आभारी हैं इससे स्पष्ट हो जाता है। इस सम्बन्ध में स्वयं ग्रियर्सन भूमिका में लिखते हैं:-

"(तिथियों की जाँच के) जब सभी उपाय असफल सिद्ध हुये, अनेक बार सरोज ही मेरा पथ प्रदर्शक रहा है। शिवसिंह बराबर तिथियाँ देते गये हैं और मैंने सामान्यतया उनको पर्याप्त ठीक पाया है। हाँ, वे प्रसंग प्राप्त कवि की जन्म-तिथि ही सर्वत्र देते हैं। जब कि वस्तुतः अनेक बार ये तिथियाँ उक्त कवियों के प्रमुख ग्रन्थों का रचनाकाल है। फिर भी सरोज की तिथियों का कम से कम इतना मूल्य तो है ही कि किसी अन्य प्रमाण के अभाव में हम पर्याप्त निश्चिन्त रहें कि प्रसंग प्राप्त कवि उस तिथि को जिसे शिवसिंह ने जन्म काल के रूप में दिया है, जीवित था।"—ग्रियर्सन, भूमिका, पृष्ठ १४

ग्रियर्सन ने सर्वत्र ई० सन् का प्रयोग किया है। ये सन् प्रायः सरोज के सम्बतों में से ५७ घटाकर प्राप्त किये गये हैं। ग्रियर्सन ने सरोज के जिन सम्बतों को स्वीकार किया है, उन्हें उन्होंने तिर्यक अंकों में मुद्रित कराया है। विभिन्न अध्यायों के परिशिष्टों में जो अप्रधान कवि परिगणित हुये है, वे और उनकी तिथियाँ प्रायः सरोज के ही आधार पर हैं।

सरोज में कुल ६८७ स-तिथि कवि हैं। इनमें से निम्नांकित १३ को ग्रियर्सन में अ-तिथि बना दिया गया है।

कवि	सम्बत्	सरोज संख्या	ग्रियर्सन संख्या
१ जसबंत	१७६२	२६६	७४७
२ लोधे	१७७०	८१६	७५२
३ लोकनाथ	१७८०	८२०	७५३
४ गुलाम नबी, रसलीन	१७६८	७५५	७५४
५ अलीमन	१६३३	२६	७८४
६ नवलदास	१३१६	४४०	७६८
७ गोसाईं	१८८२	१६६	८१७
८ बंशीधर मिश्र, संडीले वाले	१६७२	५२५	८६४
६ मून	१८६०	७४१	८६५

१० लक्षमण सिंह	१८१०	८१४	६१५
११ लोने, बुन्देलखंडी	१८७६	८१०	६२२
१२ सोमनाथ	१८८०	६१६	६३७
१३ हेम गोपाल	१७८०	६८१	६५१

निम्नांकित ११ कवियों को ग्रियर्सन में स्वीकार ही नहीं किया गया है।

१।१७ अनूप १७६८ २।७७ किशोर, दिल्ली १८०१
३।१८० गोविन्द कवि १७६१ ४।२४७ छेम (१), १७५५
५।४०८ नारायण दास कवि (३), १६१५ ६।५६३ बरवै सीता कवि १२४६
७।६२४ भीष्म १७०८ ८।७०७ मीरा मदनायक १८००
९।७६५ रतन ब्राह्मण बनारसी १६०५ १०।८६६ श्रीधर प्राचीन १७८६
११।६१० सुखलाल १८५५

४४० की तिथियाँ सरोज से ही ली गई हैं, जिनका विवरण पीछे सारिणी में दिया जा चुका है। १६८ कवियों की तिथियाँ सरोज की तिथियों से भिन्न हैं, इनकी भी सूची पीछे दी जा चुकी है। सरोज के स-तिथि कवियों में से गणना के अनुसार ६८७-(१३+११+४४०+१६८)= २५ कवि अन्य कवियों में विलीन कर दिये गये हैं। इनकी सूची निम्नांकित है।

नाम	सरोज संख्या	ग्रियर्सन के जिस कवि में विलीन हुये हैं, उसकी संख्या।
१. अगर	३४	४४
२. आनन्द	३६	३४७
३. कविराम	६२	७८५
४. कामता प्रसाद ब्राह्मण	१३३	६४४
५. गुमान (२)	१८६	३४६
६. घन आनन्द	२१२	३४७
७. छीत कवि	२५०	४१
८. जमाल	२८०	८५
९. तालिब शाह	३२६	४३६
१०. देवदत्त कवि	३६२	२६१
११. देवदत्त कवि (२)	३६५	
१२. नाथ (४)	४३३	१६२
१३. नाथ (५), हरिनाथ	४३४	३५५
१४. प्रधान	४६२	८५४
१५. बल्लभ	५१७	२३६
१६. विजय, राजा विजय बहादुर बुन्देला	५०५	५१४
१७. विश्वनाथ कवि (१)	५४६	७२१
१८. महेश	६८४	६६६

१९. मक्खन	६३७	६७०
२०. रघुराय (२)	७३५	४२०
२१. रतन (२)	७६६	१५५
२२. श्यामलाल	८९४	२६९
२३. सबितादत्त	९०३	३०४
२४. सुखराम	८७९	७२९
२५. हरिराम	९६४	१५१

सरोज के सतिथि कवियों को ग्रियर्सन के कवियों की तुलना में संक्षेप में इस प्रकार व्यक्त किया जा सकता है :

सरोज	ग्रियर्सन
६८७ स-तिथि कवि	१३ अतिथि बना दिये गये
	११ स्वीकार नहीं किये गये
	४४० तिथि सहित स्वीकार किये गये
	१९८ भिन्न तिथि के साथ स्वीकार किये गये
	२५ अन्य कवियों में विलीन कर लिये गये
	योग ६८७

सरोज के ५३ विद्यमान कवियों में से ग्रियर्सन में ४२ सन् १८८३ ई० में जीवित मान लिये गये हैं। रघुराज सिंह एवं शिव प्रसाद सितारेहिन्द इन दो कवियों को नये सन्-सम्बत् दे दिये गये हैं। निम्नांकित ४ कवियों को न जाने क्यों ग्रियर्सन ने ग्रहण भी नहीं किया है।

१. चोवा

२. मखजात, जालपा प्रसाद बाजपेयी।

३. मनोहर, काशीराम, रिसालदार भरतपुर

४. शंकर सिंह, चंड़रा, सीतापुर

शेष ५ को बारहवें अध्याय में अनिश्चित कालीन कवियों में स्थान दे दिया गया है।

१. कविराम, रामनाथ कायस्थ ७८५

२. रसिया नजीब खां ७८८

३. हनुमान बनारसी ७९६

सुन्दरी तिलक में इन तीनों की रचना है। अतः इन्हें १८६९ ई० से पूर्व उपस्थित माना गया है।

४. कालिका बन्दीजन काशी, ७८० इन्हें १८६३ ई० से पूर्व उपस्थित कहा गया है, क्योंकि इनकी रचना ठाकुर प्रसाद त्रिपाठी के रस चन्द्रोदय में है।

५. कालीचरण बाजपेयी ८०१

सरोज के वि० कवियों को ग्रियर्सन की तुलना में संक्षेप में इस प्रकार व्यक्त किया जा सकता है।

सरोज	ग्रियर्सन
५३	२ को नई तिथियाँ दी गई हैं
	४२ को १८८३ ई० में जीवित कहा गया है
	४ को स्वीकार नहीं किया गया है
	५ को अज्ञातकालीन बना दिया गया है
	योग ५३

सरोज में कुल २६३ अ-तिथि कवि हैं। इनमें से ११ को ग्रियर्सन में तिथियाँ दे दी गई हैं। इनकी सूची पीछे दी जा चुकी है। निम्नांकित ३० कवियों को ग्रियर्सन में ग्रहण नहीं किया गया है :—

१।१३४ कृष्ण कवि प्राचीन
२।६४ केशव दास (२)
३।१५० गंगाधर, बुन्देलखंडी
४।२१० गदाधर कवि
५।१५७ गदाधर राम
६।१६० गिरिधारी (२)
७।२१९ चंद कवि (३)
८।२२० चन्द कवि (४)
९।२३४ चैन राय
१०।३०१ जगन्नाथ
११।३१९ तुलसी (४)
१२।३५३ द्विज राम
१३।४३५ नाथ (६)
१४।४०९ नारायण दास वैष्णव (४)
१५।४६४ पंचम (२) डलमऊवाले
१६।४७३ परशुराम (१)
१७।४९३ फूलचन्द
१८।५५६ बाल कृष्ण (२)
१९।५६२ बृन्दावन कवि
२०।६७७ मदन गोपाल (२)
२१।६८५ मदन गोपाल (३) चरखारी
२२।६५४ मुरली
२३।६६६ मुरलीधर (२)
२४।६५३ मोती लाल
२५।८१७ लछिराम (२) बृजबासी
२६।८२३ लोकनाथ उपनाम बनारसीनाथ
२७।८६० शंकर (२)
२८।८५२ शिवदीन
२९।८७३ सन्त (१)
३०।९६० सुमेर

इनमें ४७ अ-तिथि कवि अन्य कवियों में विलीन कर दिये गये हैं, जिनकी सूची यह है :—

कवि	सरोज संख्या	ग्रियर्सन सं० जिनमें विलीन
१. अनन्य (२)	३१	४१८
२. कृपाराम	१२६	७९७
३. कृपाराम	१२७	
४. खुमान	१३६	१७०
५. खेम, बुन्देलखंडी	१४५	१०३
६. चतुर	२२८	६५
७. चतुर बिहारी	२२९	
८. चतुर्भुज	२३०	४०
९. चिन्तामणि	२२२	१४३

कवि	सरोज संख्या	ग्रियर्सन सं० जिनमें बिलीन
१०. चैन	२३२	६२७
११. छत्रपति	२५३	७५
१२. छेम करण	२४४	३११
१३. जगन्नाथ दास	२८६	७६४
१४. जानकी दास (३)	२९२	६६५
१५. जुगल दास	३०३	३१३
१६. जुगल किशोर कवि (१)	२५७	३४८
१७. जैत राम	२७२	१२०
१८. तारा	३२२	४१९
१९. दयानिधि (२)	३३६	७८७
२०. दयाराम (१)	३३४	३८७
२१. दामोदर कवि	३४७	८४
२२. दास बृजवासी	३७५	३६९
२३. नन्द	४२४ }	६९७
२४. नन्द किशोर	४२९ }	
२५. नवल	४३८	८४९
२६. प्रेम	४८०	३५१
२७. वंश गोपाल, बन्दीजन	५४२	५४९
२८. बंशीधर	५२४ }	५७४
२९. बंशीधर (३)	५२८ }	
३०. विष्णुदास (१)	५२६	७६९
३१. बीठल	५२१	३५
३२. ब्रह्म, राजा बीरबल	५८९	१०६
३३. बृजवासी	५३४	३६९
३४. भगवंत	६०० }	
३५. भगवान कवि	६०१ }	३३३
३६. भीषमदास	६१३	२४०
३७. मनसा	६३९	८८५
३८. मनीराम (१)	६७४	६७६
३९. मान कवि (१)	६२९	५१७
४०. राम कृष्ण (२)	७२९	५३८
४१. राय जू	७७९	९१३
४२. रूप	७७१	२६८
४३. शंकर (१)	८५९	६१३
४४. शिव दत्त	८४९	५८८
४५. सबल सिंह	९१२	२१०

४६. हरिलाल (१)	९७३	९४६
४७. हुलास राम	१००३	९४९

सरोज के निम्नांकित १७५ अ-तिथि कवि ग्रियर्सन में गृहीत हुए हैं।

(क) केवल सरोज में उल्लिखित—

७९९,८००,८०२-५,८०७-१३,८१५-१६,८१८-२१,८२४-२७,८२९-३३,८३५-४४, ८४६,८४८-५४ ८५६-५८,८६०-६३,८६६-७२,८७४-८०,८८३-८६,८९१-९४,८९६-९९,९०१-१०,९१२-१४,९१६-२१,९२३-२९,९३१-३६,९३८-५०,९५२कुल १२८ कवि

(ख) अन्य सूत्रों से भी उपलब्ध—

(१) तुलसी के कवि माला में उल्लिखित, अतः १६५५ ई० से पूर्व स्थित—७४१,७४२, ७४३, ७४४,७४५,७४६ योग ६ कवि

(२) कालिदास के हजारा में उल्लिखित, अतः १७१८ ई० से पूर्व स्थित ७४८–५१ योग ४ कवि

(३) भिखारी दास के काव्य निर्णय में उल्लिखित, अतः १७२३ ई० से पूर्व स्थित ७५५–५६ योग २ कवि

(४) सूदन द्वारा उल्लिखित, अतः १७५३ ई० से पूर्व स्थित ७५७ – ६२ योग ६ कवि

(५) कृष्णानन्द व्यासदेव के राग कलपद्रुम में उल्लिखित, अतः १८४३ ई० से पूर्व स्थित ७६३-६६,७६८-७९ योग १६ कवि

(६) गोकुल प्रसाद, 'ब्रज' के दिग्विजय भूषण में उल्लिखित, अतः १८६८ ई० के पूर्व स्थित ७८१-८३ योग ३ कवि

(७) हरिश्चन्द्र के सुन्दरी तिलक में उल्लिखित, अतः १८६९ ई० से पूर्व स्थित ७८६-८७, ७८९-९५ योग ९ कवि

(८) महेश दत्त के काव्य-संग्रह में उल्लिखित, अतः १८७५ ई० से पूर्व स्थित, ७९७ योग १ कवि

कुल योग ४७ कवि

संक्षेप में अ-तिथि कवियों का तुलनात्मक विवरण यह है :—

सरोज	ग्रियर्सन
२६३	११ को नई तिथियाँ दी गई
	३० को ग्रहण नहीं किया गया
	१७५ को ग्रहण किया गया और कोई तिथि नहीं दी गई
	४७ को अन्य कवियों में विलीन कर दिया गया
	कुल योग २६३

किन्तु इसका यह अर्थ कदापि नहीं कि ग्रियर्सन का यह ग्रन्थ पूर्णतया सरोज का अनुवाद है। इतना विस्तार यह दिखलाने के लिये किया गया कि हिन्दी साहित्य के इतिहास के सहायक सूत्रों में सरोज का महत्व सर्वाधिक है। ग्रियर्सन की अनेक ऐसी विशेषतायें हैं जिन्होंने बाद में लिखे जाने वाले हिन्दी साहित्य के इतिहासों को पर्याप्त प्रभावित किया है।

(१) यह ग्रन्थ हिन्दी साहित्य का प्रथम इतिहास है। इसमें पहली बार कवियों का विवरण कालक्रमानुसार दिया गया है। इसके पूर्व लिखित सरोज एवं तासी में कवियों का विवरण वर्णानुक्रम से है।

(२) इस ग्रन्थ में हिन्दी साहित्य के इतिहास के विभिन्न काल विभाग भी किये गये हैं। विनोद में बहुत कुछ इन्हीं कालों को स्वीकार कर लिया गया है।

(३) प्रत्येक काल की तो नहीं, कुछ कालों की सामान्य प्रवृत्तियाँ भी दी गई हैं, यद्यपि यह विवरण अत्यन्त संक्षिप्त है।

(४) प्रत्येक कवि को एक-एक अंक दिया गया है, बड़ी आसानी से किसी भी कवि को उसके नियत अंक पर देखा जा सकता है। इसी पद्धति का अनुकरण बाद में विनोद में भी किया गया है। सरोज में भी किसी अंश तक यह पद्धति है, यहाँ एक वर्ण के कवियों की क्रम-संख्या अलग-अलग दी गई है।

(५) सरोज में कवियों के विवरण अत्यन्त संक्षिप्त हैं। इस ग्रन्थ में भी यही बात है। पर निम्नांकित १८ कवियों का विवरण पर्याप्त विस्तार से दिया गया है :—

(१) चन्दबरदाई (२) जगनिक (३) सारंगधर (४) कबीरदास (५) विद्यापति ठाकुर (६) मलिक मुहम्मद जायसी (७) बल्लभाचार्य (८) बिठ्ठलनाथ (९) सूरदास (१०) नाभादास (११) बीरबल (१२) तुलसी दास (१३) बिहारी लाल (१४) सरदार (१५) हरिश्चन्द्र (१६) लल्लू जी लाल (१७) कृष्णानन्द व्यास देव (१८) राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द।

इनमें से जायसी और तुलसी पर तो अलग-अलग अध्याय ही हैं। सम्भवतः इन्हीं अध्यायों ने आचार्य शुक्ल का विशेष ध्यान इन कवियों की ओर आकृष्ट किया। अब हिन्दी में अनेक अच्छे इतिहास प्रस्तुत हो गये हैं। और ग्रियर्सन को आधार मानकर हिन्दी साहित्य के इतिहास की जानकारी प्राप्त करना न तो वांछनीय है और न श्रेयस्कर ही। इसी को आधार मानकर चलने वाले को अनेक भ्रान्तियाँ हो सकती हैं। सरोज की अधिकांश भ्रान्तियाँ यहाँ भी सुरक्षित हैं, जो यहाँ से खोज रिपोर्टों में और अन्यत्र पहुँचीं। यहीं सरोज के सन् सम्बतों के उ० का भ्रान्त अर्थ सर्वप्रथम हुआ, जो इसी के आधार पर आज तक चलता जा रहा है। इतना सब होते हुए भी शोध के विद्यार्थी के लिए इस ग्रन्थ का महत्व है। हिन्दी साहित्य के पहले इतिहास की रूप रेखा क्या थी, बाद में लिखे गये इतिहासों को इसने कहाँ तक प्रभावित किया, यह सब जानने के लिए इस ग्रन्थ के हिन्दी अनुवाद की नितान्त आवश्यकता है।

ख. सभा की खोज रिपोर्ट एवं विनोद

सभा हिन्दी के हस्तलिखित ग्रन्थों की खोज का कार्य १९०० ई० में प्रारम्भ किया। प्रारम्भिक खोज रिपोर्टों में कवियों का विवरण एवं सन्-सम्बत् ग्रियर्सन के आधार पर दिया गया है। ग्रियर्सन का ही यह प्रभाव है कि रिपोटों में ई० सन् का प्रयोग होता रहा। यहाँ तक कि जिन कवियों के ग्रन्थों में रचनाकाल विक्रम सम्बत् में दिये गये हैं, उनके भी समय कभी-कभी ई० सन् में परिवर्तित कर दिये गये हैं। खोज रिपोर्टों को प्रस्तुत करने वालों ने ग्रियर्सन का पल्ला पकड़ा है। स्वयं ग्रियर्सन ने जिन शिवसिंह सेंगर का सहारा लिया था उन्हें भुला दिया गया है। एक अंग्रेज सिविलियन का काम एक पूर्ववर्ती देशी पुलिस इंस्पेक्टर के काम से अच्छा और प्रामाणिक माना गया। परिणाम यह हुआ

कि ग्रियर्सन ने 'उ०' का अर्थ करने में जो भ्रान्ति की थी वह खोज रिपोर्टों में भी ज्यों की त्यों उतर आई जो रिपोर्टों पर सरोज का प्रत्यक्ष नहीं, अप्रत्यक्ष प्रभाव है।

विनोद का हिन्दी में लिखित हिन्दी साहित्य का प्रथम इतिहास है। इसका प्रथम संस्करण १९१३-१४ में प्रस्तुत किया गया था। इसके पश्चात् कालीन संस्करणों में परिवर्धन होता रहा है। विनोद की रचना के दो मुख्य आधार हैं, ग्रियर्सन एवं सभा की खोज रिपोर्टें। सरोज का भी यत्र-तत्र सीधा सहारा लिया गया है। ग्रियर्सन एवं खोज रिपोर्टों द्वारा इसका सहारा अप्रत्यक्ष रूप से तो लिया ही गया है सरोज के सम्बतों को प्रायः जन्म सम्बत् स्वीकार किया गया है। इनमें से अधिकांश को विनोद में भी जन्म-सम्बत् ही माना गया है। पर अनेक स्थलों पर विनोद में सरोज अथवा ग्रियर्सन में दिये गये सम्बतों को रचनाकाल भी माना गया है। उदाहरण के लिये अनीस, अवध बक्स, आकूब, आसिफ खां, उधो राम, कविराज बन्दीजन का नाम लिया जा सकता है। यह अन्तर अन्य स्थलों पर मिलेगा, जो परिशिष्ट में दी हुई तुलनात्मक तालिका में स्पष्ट देखा जा सकता है। पर इसका अर्थ यह कदापि नहीं कि मिश्रबन्धु सरोज में दिए हुये सम्बत् को उपस्थित काल अथवा रचनाकाल समझते हैं। वास्तविकता यह है कि वे भी ग्रियर्सन की ही आँखों देखते हैं और उ० का अर्थ उत्पन्न ही करते हैं। यह बात उन कवियों के प्रसंग में स्पष्ट हो जाती है, जहाँ विनोद में सरोज के सम्बत् को जन्म सम्बत् मान कर नवोपलब्ध प्रमाणों के आधार पर अशुद्ध सिद्ध किया गया है। यदि सरोज के उक्त सम्बत् को उपस्थिति सम्बत् मान लिया जाय, तो अशुद्ध सिद्ध सम्बत् शुद्ध सिद्ध हो जाता है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि सरोज की सहायता बिना ग्रियर्सन अपने 'द माडर्न वर्नाक्यूलर लिटरेचर आफ़ नदर्न हिन्दुस्तान' की रचना नहीं कर सकते थे। परन्तु यदि ग्रियर्सन का ग्रन्थ न लिखा गया होता, तो भी सभा की खोज प्रारम्भ की जाती, उसकी खोज रिपोर्टें प्रस्तुत की जाती एवं उनके आधार पर विनोद का प्रणयन होता। निःसंदेह तब इनमें सीधे सरोज की सहायता ली जाती और कौन जाने तब उ० का अर्थ उपस्थित ही किया जाता।

अध्याय ३

सरोज के आधार ग्रन्थ

सरोज के प्रणयन में तीन प्रकार के ग्रन्थों से सहायता ली गई है :—

१. कवियों के मूल ग्रन्थ, २. प्राचीन संग्रह ग्रन्थ, ३. इतिहास ग्रन्थ।

इनके अतिरिक्त कुछ अन्य सहायक सूत्र भी हैं जैसे, भिखारी दास और सूदन के ग्रन्थ।

क. कवियों के मूल ग्रन्थ

शिवसिंह के पास अनेक कवियों के हस्तलिखित ग्रन्थ थे। इनमें से अनेक ग्रन्थों में से उन्होंने उनकी कविताओं के उदाहरण दिये हैं। उदाहरण देते समय इन ग्रन्थों का निर्देश कर दिया गया है। इन ग्रन्थों की सूची शिवसिंह के पुस्तकालय प्रकरण में पीछे दी जा चुकी है। जीवनचरित्र खंड में अनेक ग्रन्थों के अपने पुस्तकालय में होने का उल्लेख उन्होंने किया है। किन्हीं-किन्हीं ग्रन्थों का उन्होंने कुछ विस्तृत विवरण भी दिया है, जिससे लगता है कि उन्होंने इन ग्रन्थों को अवश्य देखा था।

ख. प्राचीन संग्रह ग्रन्थ

शिवसिंह के यहाँ अनेक काव्य संग्रह थे। दस नाम वाले और २८ बिना नाम वाले संग्रह-ग्रन्थों से सहायता लेने का उल्लेख शिवसिंह ने भूमिका में किया है। यहाँ एक-एक करके नाम वाले संग्रह ग्रन्थों का यथाशक्य परिचय एवं उनसे ली गई सहायता का उल्लेख किया जा रहा है।

१. कवि माला

यह संग्रह कवि यदुराय के पुत्र तुलसी ने सम्बत् १७१२ में प्रस्तुत किया था। इसमें सम्बत् १५०० से लेकर सम्बत् १७०० तक के ७५ कवियों के कवित्त थे। यह ग्रन्थ अब उपलब्ध नहीं है। जीवन खंड में शिवसिंह ने निम्नांकित ८ कवियों के विवरण में उनकी रचनाओं के कवि माला में होने का उल्लेख किया है :—

(१) जदुनाथ, (२) तोष, (३) शंख, (४) साहब, (५) सुबुद्धि, (६) श्रीकर, (७) श्रीहठ, (८) सिद्ध।

२. कालिदास हजारा

कालिदास त्रिवेदी बनपुरा अन्तरवेद के निवासी थे। औरंगजेब की सेना के साथ ये गोलकुंडा की लड़ाई में गये थे। हजारा में इन्होंने सम्बत् १४८० से लेकर सम्बत् १७७५ तक के २१२ कवियों के १००० हजार छंद संकलित किए थे। सरोज के प्रणयन में इस ग्रन्थ से बहुत सहायता ली गई थी। भूमिका के अनुसार यह ग्रन्थ सम्बत् १७५५ के लगभग बनाया गया। जीवन खंड के अनुसार इसमें सम्बत् १७७५ तक के कवियों की रचनायें थीं। अभी तक यह ग्रन्थ खोज में उपलब्ध नहीं हो सका है।

निम्नांकित ८५ कवियों के विवरण में यह उल्लेख किया गया है कि इनकी रचनायें अथवा इनके नाम हजारा में थे :—

(१) अमरेश, (२) कोलीराम, (३) अभयराम, वृन्दाबनी, (४) ऊधोराम, (५) कुन्दन कवि, बुन्देलखंडी, (६) कबीर, (७) कल्याण कवि, (८) कमाल, (९) कलानिधि कवि (१) प्राचीन, (१०) कुलपति मिश्र, (११) कारबेग फकीर, (१२) गोविन्द अटल, (१३) गोविन्द जी कवि, (१४) ग्वाल

प्राचीन, (१५) घनश्याम शुक्ल, (१६) घासी राम, (१७) चन्द्र कवि (४), (१८) छैल, (१९) छीत, (२०) जसवंत कवि (२), (२१) जलालउद्दीन कवि, (२२) जगनन्द, वृन्दावनवासी, (२३) जोइसी, (२४) जीवन, (२५) जगजीवन, (२६) ठाकुर, (२७) तत्ववेत्ता, २८) तेगपाणि,(२९) ताज, (३०) तोष, (३१) दिलदार, (३२) नागरी दास, (३३) निधान (१) प्राचीन, (३४) नन्दन, (३५) नन्दलाल (१), (३६) परमेश प्राचीन, (३७) पहलाद, (३८) पतिराम, (३९) पृथ्वीराज, (४०) परबत, (४१) बलदेव प्राचीन (४), (४२) व्यास जी कवि, (४३) बल्लभ रसिक, (४४) ब्रजदास कवि प्राचीन, (४५) ब्रज लाल, (४६) विहारी कवि प्राचीन (२), (४७) बाजीदा, (४८) बुधिराम, (४९) बलि जू, (५०) भूषण, (५१) भीषम कवि, (५२) भूधर काशीवाले, (५३) भृंग, (५४) भरमी, (५५) मुकुन्द प्राचीन, (५६) मोती राम, (५७) मनसुख, (५८) मिश्र कवि, (५९) मुरलीधर, (६०) मीर रुस्तम, (६१) मुहम्मद, (६२) मीरामाधव (६३) मधुसूदन, (६४) राम जी कवि (१), (६५) रघुनाथ प्राचीन, (६६) रसिक शिरोमणि, (६७) रूपनारायण, (६८) राजाराम कवि (१), (६९) लालन दास, ब्राह्मण, डलमऊवाले, (७०) लोधे, (७१) सेख, (७२) श्याम कवि, (७३) शिरोमणि, (७४) शशिशेखर, (७५) सहीराम, (७६) सदानन्द, (७७) सकल, (७८) सामन्त, (७९) सेन, (८०) सेनापति, (८१) शिव प्राचीन, (८२) हुसेन, (८३) हरिजन कवि, (८४) हरजू, (८५) हीरामणि।

३. सत्कवि गिराविलास

इस संग्रह के संकलयिता बलदेव, बघेलखंडी हैं। यह संग्रह सम्बत् १८०३ में प्रस्तुत किया गया। इसमें बलदेव के अतिरिक्त निम्नांकित १७ कवियों की रचनायें हैं :—

(१) शम्भुनाथ मिश्र, (२) शम्भुराज, सोलंकी, (३) चिन्तामणि, (४) मतिराम, (५) नीलकंठ, (६) सुखदेव पिंगली, (७) कविन्द त्रिवेदी, (८) कालिदास, (९) केशव दास, (१०) विहारी, (११) रविदत्त, (१२) मुकुन्द लाल, (१३) विश्वनाथ अताई, (१४) बाबू केशव राय, (१५) राजा गुरुदत्त सिंह अमेठी, (१६) नवाब हिम्मत बहादुर, (१७) दूलह।—शिवसिंह सरोज, पृष्ठ ४५२

निम्नांकित कवियों का विवरण देते समय इनकी रचनाओं के सत्कवि गिराविलास में होने का उल्लेख हुआ है—

(१) केशव राय बाबू बघेलखंडी
(२) विश्वनाथ अताई बघेलखंडी
(३) रविदत्त
(४) सविता दत्त बाबू } दोनों एकही कवि हैं। सविता रवि का पर्याय है।
(५) हिम्मत बहादुर नबाब

यह ग्रन्थ अभी तक उपलब्ध नहीं हो सका है।

४. विद्वन्मोद तरंगिणी

यह संग्रह ओयल के राजा सुब्बा सिंह उपनाम 'श्रीधर' द्वारा सम्बत् १८७४ (विनोद के अनुसार सम्बत् १८८४) में इनके काव्य गुरु सुवंश शुक्ल की सम्मति से रचा गया। इस ग्रन्थ में नायिका-नायक भेद, चारों दर्शन, सखी, दूती, षट्ऋतु, रस निर्णय, विभाव, अनुभाव, भाव, भाव शबलता, भाव उदय इत्यादि विषय विस्तारपूर्वक कहे गये हैं। अन्य कवियों की रचनायें उदाहरणस्वरूप दी गई हैं। सरोज में किसी कवि के विवरण में नहीं कहा गया है कि इनकी रचनायें विद्वन्मोद तरंगिणी

में है। विनोद के अनुसार इसमें श्रीधर के २५, ३० से अधिक छंद नहीं हैं। सुवंश के छंद अधिक हैं। श्रीधर के अतिरिक्त इसमें निम्नांकित ४४ कवियों के छंद हैं :—

(१) सुवंश, (२) कविन्द, (३) रघुनाथ, (४) तोष, (५) ब्रह्म, (६) शम्भु, (७) शम्भुराज, (८) देव, (९) श्रीपति, (१०) बेनी, (११) कालिदास, (१२) केशव, (१३) चिन्तामणि, (१४) ठाकुर, (१५) देवकीनन्दन, (१६) पद्माकर, (१७) दूलह, (१८) बलदेव, (१९) सुन्दर, (२०) संगम, (२१) जवाहिर, (२२) शिवदास, (२३) मतिराम, (२४) सुलतान, (२५) सखी सुख, (२६) हठी, (२७) शिव, (२८) दास, (२९) परसाद, (३०) मोहन, (३१) निहाल, (३२) कविराज, (३३) सुमेर, (३४) जुगराज, (३५) नन्दन, (३६) नेवाज, (३७) राम, (३८) परमेश, (३९) काशीराम, (४०) रसखानि (४१) मनसा, (४२) हरिकेश, (४३) गोपाल, (४४) लीलाधर।—मिश्रबन्धु विनोद, कवि संख्या १२४२

यह ग्रन्थ खोज में मिल चुका है।[1]

५. राग कल्पद्रुम

राग कल्पद्रुम संगीत शास्त्र का विशाल ग्रन्थ है। प्रारम्भ में संस्कृत के संगीत ग्रन्थों से शास्त्रीय उद्धरण दिये गये हैं। बाद में विभिन्न राग-रागिनियों में गाई जाने योग्य रचनाओं का संकलन है। ये रचनायें अधिकांश में हिन्दी की हैं, यों तो इनमें प्रत्येक भारतीय भाषा के गीतों का कुछ-न कुछ संकलन हुआ है। शिवसिंह ने इस ग्रन्थ का रचनाकाल सम्बत् १८०० दिया है, जो ठीक नहीं। यह ग्रन्थ सम्बत् १९०० में पहली बार प्रकाशित हुआ। कृष्णानन्द व्यास देव इसके संकलयिता हैं। ये जयपुर दरबार के विख्यात गायक थे। वृन्दावन के गोसाइयों ने इन्हें राग सागर की उपाधि दी थी। सरोज में राग कल्पद्रुम को प्रायः राग सागरोद्भव कहा गया है, ठीक उसी प्रकार जैसे हम रामचरित्र मानस को केवल तुलसीकृत कह कर काम चला लें। गीतों का संकलन राग सागर ने ३२ वर्ष तक सम्पूर्ण भारत में घूम-घूम कर किया था। अतः पाठ की दृष्टि से इसका बहुत महत्व नहीं। पहली बार यह ग्रन्थ चार खंडों में छपा था और इसका मूल्य १००) था। इसका दूसरा संस्करण १९७१ में ३ भागों में हुआ। प्रकाशित करते समय सम्पादकों को प्रथम संस्करण के चारों खंड नहीं मिल सके। प्रथम दो खंड हिन्दी में एवं तृतीय बंगाक्षरों में है। प्रथम संस्करण का भी तृतीय खंड बंगला ही में छपा था। सरोजाकर ने द्वितीय भाग में संकलित कीर्तन पदों से अपने ग्रन्थों में उद्धरण दिये हैं। यह विशाल ग्रन्थ साढ़े दस इंच लम्बा और आठ इंच चौड़ा है। प्रत्येक पृष्ठ दो कालमों में विभक्त है। प्रत्येक पृष्ठ में ३५ पंक्तियां हैं। अक्षर उतने ही बड़े हैं जितने बड़े सामन्यतया व्यवहृत होते हैं। द्वितीय संस्करण के तीनों खंड प्रो० पं० विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, काशी के पास है। मेरे पास भी प्रथम खंड है। यह सारी सूचना इन्हीं ग्रन्थों की सहायता से दी जा सकी है।

निम्नांकित ६१ कवियों की रचनाओं के राग कल्पद्रुम में होने का उल्लेख सरोज में कवियों के विवरण के अन्तर्गत हुआ है :—

(१) अग्रदास, (२) आसकरणदास, कछवाहा, (३) कुम्भन दास, (४) कृष्णदास, (५) कल्याण दास, कृष्णदास पयहारी के शिष्य, (६) केशव दास, ब्रजवासी, कशमीर के रहने वाले, (७) केवल,

---

1. खोज नं० १९१२।१७७ बी, १९२३।४०१ बी

ब्रजवासी, (८) कान्हर दास ब्रजवासी, (९) खेम कवि (२), (१०) गदाधर मिश्र, ब्रजवासी, (११) गोपाल दास, ब्रजवासी, (१२) गोविन्द दास, ब्रजवासी, (१३) चतुर विहारी, ब्रजवासी, (१४) चतुर्भुज दास, (१५) चन्दसखी, ब्रजवासी, (१६) छबीले कवि, ब्रजवासी, (१७) छीत स्वामी, (१८) जगन्नाथ दास, (१९) तुलसीदास, (२०) तानसेन, (२१) दामोदर दास, ब्रजवासी, (२२) धोंधे दास, ब्रजवासी, (२३) नरसी, (२४) नारायण भट्ट गोसाईं, गोकुलस्थ, (२५) नाथ (७) ब्रजवासी, (२६) परमानन्द दास, (२७) परशुराम, ब्रजवासी (२), (२८) पद्मनाभ, ब्रजवासी, (२९) व्यास (हरिराम शुक्ल), (३०) बल्लभाचार्य, (३१) विठ्ठल नाथ, (३२) विपुल विठ्ठल, (३३) बलराम दास, ब्रजवासी, (३४) बंशीधर, (३५) विष्णुदास, (३६) ब्रजपति, (३७) विहारी दास कवि, (४) ब्रजवासी, (३८) वृन्दावन दास, (२) ब्रजवासी, (३९) विद्यादास, ब्रजवासी, (४०) भगवान हितराम राय, (४१) भगवान दास, मथुरानिवासी, (४२) भीषम दास, (४३) मानदास, ब्रजवासी, (४४) मुरारि दास ब्रजवासी, (४५) मदनमोहन, (४६) माधवदास, (४७) मानिक चन्द कवि, (४८) मीराबाई, (४९) राम राइ राठौर, राजा खेम पाल के पुत्र, (५०) रामदास बाबा, सूर के पिता, (५१) रसिक दास, ब्रजवासी, (५२) लछिराम कवि (२) ब्रजवासी (५३) लक्ष्मणसरण दास, (५४) श्री भट्ट, (५५) संतदास, ब्रजवासी, (५६) श्याम दास, (५७) श्याम मनोहर, (५८) सगुण दास, (५९) सूरदास, (६०) हरिदास स्वामी, वृन्दावनी, (६१) हित हरिवंश ।

इन ६१ कवियों में से तुलसी, तानसेन, मीरा, सूरदास और हित हरिवंश के जीवन विवरण में यह उल्लेख नहीं है कि इनकी रचनायें राग कल्पद्रुम में हैं । यह उल्लेख कृष्णानन्द व्यासदेव के वर्णन में हुआ है । सरोज की भूमिका के अनुसार इस ग्रन्थ में लगभग २०७ महात्माओं के पद हैं । सरोज में संकलित प्रायः सभी पद रचयिता कवि इसी ग्रन्थ से लिये गए हैं ।

६. रस चन्द्रोदय

यह ग्रन्थ सम्बत् १९२० में ठाकुरप्रसाद त्रिपाठी कवि, किशुनदासपुर, जिला रायबरेली द्वारा रचा गया । इसमें २४२ कवियों के नव रस के कवित्त हैं । इन्हीं ठाकुरप्रसाद के मूर्ख पुत्रों से शिवसिंह ने २०० हस्तलिखित ग्रन्थ खरीदे थे । कामता प्रसाद और कालिका कवि बन्दीजन काशी के विवरण में यह उल्लेख किया गया है कि इनकी रचनायें रस चन्द्रोदय में थीं । यह ग्रन्थ भी अभी तक नहीं मिला है ।

७. दिग्विजय भूषण

लाला गोकुल प्रसाद बलरामपुरी उपनाम 'ब्रज' ने सम्बत् १९१९ में बलरामपुर, जिला गोंडा के राजा दिग्विजय सिंह के नाम पर यह ग्रन्थ बनाया । नाम से तो यह अलंकार ग्रन्थ है, पर इसमें नायिक भेद, नख शिख और ऋतु-वर्णन तथा विविध प्रौढोक्तियाँ भी संकलित है ।

निम्नलिखित ७ कवियों के सम्बन्ध में सरोज में कवि विवरण के अन्तर्गत उल्लेख हुआ है कि इनकी रचनायें दिग्विजय भूषण में हैं :—

(१) अनीस, (२) कवि दत्त, (३) खान कवि, (४) धुरन्धर, (५) नायक, (६) परशुराम, (७) सदानन्द ।

वस्तुतः यह सूची इतनी छोटी नहीं है । निम्नांकित ४७ कवि ऐसे हैं जिनको शिवसिंह ने दिग्विजय भूषण से ही जाना और वहीं से इनके उदाहरण लिये । इन कवियों के जितने छंद उक्त

ग्रन्थ में हैं या तो सब के सब सरोज में उद्धृत कर लिये गए हैं, या इनमें भी कुछ को चुन लिया गया है। इन ४७ कवियों के उदाहरणों में कोई भी ऐसा छंद नहीं है, जो दिग्विजय भूषण में न हों :—

(१) अकबर बादशाह, (२) अनीस, (३) अनुनैन, (४) अभिमन्य, (५) इन्दु, (६) उदयनाथ, (७) कवि दत्त, (८) कृष्ण सिंह, (९) केहरी, (१०) खान, (११) गंगापति, (१२) चतुर, (१३) चतुर विहारी, (१४) चतुर्भुज, (१५) चैन राय, (१६) जैन मुहम्मद, (१७) तारा, (१८) तारा पति, (१९) दया देव, (२०) दयानिधि, (२१) दिनेश, (२२) धुरन्धर, (२३) नबी, (२४) नरोत्तम, (२५) नायक, (२६) परशुराम, (२७) पुरान, (२८) पहलाद, (२९) वीठल, (३०) मदन गोपाल, (३१) मन निधि, (३२) मन्य, (३३) मनि कंठ, (३४) महाकवि, (३५) मुकुन्द, (३६) मुरली, (३७) मोती लाल, (३८) रघुराय, (३९) राम किशुन (कृष्ण), (४०) रूप, (४१) रूप नारायण, (४२) सदानन्द, (४३) सबल श्याम, (४४) शशिनाथ, (४५) सोमनाथ, (४६) हरिजीवन, (४७) हरिजन।

इन ४७ कवियों में ४६ अप्रसिद्ध कवि हैं। केवल सोमनाथ प्रसिद्ध हैं। किन्तु प्रतीत होता है कि सोमनाथ ऐसे प्रसिद्ध आचार्य का पता शिवसिंह को नहीं था। इसी से उन्होंने उक्त कवि की कविता दिग्विजय भूषण से उद्धृत की और शशिनाथ और सोमनाथ को ब्रज जी की भूल के कारण दो अलग कवि समझ लिया।

और भी बहुत से कवि हैं जिनके काव्य संग्रह में दिग्विजय भूषण से निश्चित सहायता ली गई है, साथ ही अन्य सूत्रों से भी।

दिग्विजय भूषण में निम्नांकित १९२ कवियों की रचनायें संकलित हैं। इनकी सूची ग्रन्थारम्भ में दे दी गई है।

(१) गोसाईं तुलसीदास, (२) सूरदास, (३) चंद कवि, (४) गंग कवि, (५) अमर कवि, (६) नरोत्तम, (७) केहरी, (८) काशीराम, (९) मुकुन्द, (१०) शिरोमणि, (११) बीरबल, ब्रह्म, (१२) प्रताप कवि, (१३) प्रसाद कवि, (१४) जसवंत सिंह, (१५) श्रीपति, (१६) ठाकुर, (१७) मन्य, (१८) महाकवि, (१९) रसखानि, (२०) बंशीधर, (२१) नन्दन, (२२) तोष, (२३) दास, (२४) मंडन, (२५) शम्भु, (२६) कविन्द, (२७) पुषी, (२८) नेवाज, (२९) मनसा, (३०) चतुर, (३१) उदयनाथ, (३२) अमरेश, (३३) जैन मुहम्मद, (३४) दूलह, (३५) घनश्याम, (३६) सुन्दर, (३७) शिवलाल, (३८) बोधा, (३९) मतिराम, (४०) चिन्तामणि, (४१) किशोर, (४२) नीलकंठ, (४३) गंगापति, (४४) चन्दन, (४५) हित हरिवंश, (४६) पद्माकर, (४७) देव कवि, (४८) जगत सिंह, (४९) शिव कवि, (५०) भगवन्त सिंह, (५१) मीरन, (५२) सूरति, (५३) राम कृष्ण, (५४) कविराज, (५५) सेनापति, (५६) सुमेर, (५७) देवीदास, (५८) कालिदास, (५९) महराज, (६०) हेम कवि, (६१) अन्य कवि, (६२) संगम, (६३) रघुनाथ, (६४) केशवदास, (६५) गुरुदत्त, (६६) नारायण, (६७) रघुराय, (६८) शोभ कवि, (६९) मोतीराम, (७०) कान्ह कवि, (७१) प्रहलाद, (७२) राम कवि (७३) दयानिधि, (७४) प्रवीन राय, (७५) कुलपति, (७६) अन्य कवि, (७७) नाथ कवि, (७८) लाल कवि, (७९) गोविन्द, (८०) पुरान, (८१) माखन, (८२) नागर, (८३) निपट, (८४) जगजीवन, (८५) बेनी, (८६) रतन, (८७) धुरन्धर, (८८) आनन्दघन, (८९) प्रेम सखी, (९०) राम सखी, (९१) तोष निधि, (९२) सुखदेव, (९३) कृष्ण सिंह, (९४) हरि, (९५) आलम, (९६) घासीराम, (९७) दयाराम, (९८) गोकुल नाथ, (९९) तारा पति, (१००) मननिधि, (१०१) भूपति, नाम गुरुदत्त, (१०२) अनीस, (१०३) सबल श्याम, (१०४) दीनदयाल गिरि, (१०५) देवकी नन्दन, (१०६) नायक, (१०७) खान,

(१०८) पजनेस, (१०९) गिरधारी, (११०) पुनः सुखदेव, (१११) लीलाधर, (११२) कवि दत्त, (११३) हरि जीवन, (११४) सदानन्द, (११५) भूधर, (११६) कृष्ण कवि, (११७) नृप शम्भू, (११८) ममारख (मुबारक), (११९) हरदेव, (१२०) निधि मल्ल, (१२१) नबी, (१२२) भूषण, (१२३) पुहकर, (१२४) सोमनाथ, (१२५) अनुनैन, (१२६) बलभद्र, (१२७) अन्य तीसर, (१२८) द्विज देव, (१२९) ग्वाल, (१३०) अयोध्या प्रसाद बाजपेयी औध, (१३१) सरदार, (१३२) अन्य कवि चतुर्थ, (१३३) रसलीन, (१३४) राम सहाय, (१३५) अब्दुर्रहीम खानखाना, (१३६) बिहारी लाल चौबे, (१३७) पखाने कवि, (१३८) चतुर बिहारी, (१३९) नरहरि, (१४०) पं० उमापति कोविद, (१४१) अन्य कवि पंचम, (१४२) लाल, (१४३) इन्दु, (१४४) अन्य कवि छठवाँ, (१४५) मुरली, (१४६) भरमी, (१४७) मनिराम, (१४८) दिनेश, (१४९) मदन गोपाल, (१५०) हरिकेश, (१५१) मनिकंठ, (१५२) तारा, (१५३) जीवन, (१५४) भंजन, (१५५) हरिलाल, (१५६) परशु-राम, (१५७) रूप, (१५८), बलदेव, (१५९) अन्य कवि सातवां, (१६०) शेख, (१६१) निधि, (१६२) नवल कवि, (१६३) भगवन्त, (१६४) दत्त कवि, (१६५) संतन, (१६६) कृष्ण लाल, (१६७) अन्य कवि आठवां, (१६८) गोपाल, (१६९) हरिजन, (१७०) गुलाल, (१७१) मधुसूदन, (१७२) सिंह कवि, (१७३) शिवनाथ, (१७४) बृजचंद, (१७५) मुरारि, (१७६) बीठल, (१७७) हृदेश, (१७८) चतुर्भुज, (१७९) ऋषिनाथ, (१८०) मकरन्द, (१८१) रूपनारायण, (१८२) अन्य कवि नवम, (१८३) मोतीलाल, (१८४) दयादेव, (१८५) अकबर बादशाह, (१८६) अहमद, (१८७) अभिमन्य, (१८८) चैनराय, (१८९) शशिनाथ, (१९०) मुकुन्द लाल, (१९१) परधान, (१९२) रामदास।

यह न समझना चाहिये कि दिग्विजय भूषण की उक्त सूची दोष रहित है। नव-बार तो इसमें अन्य कवि आये हैं जो छाप रहित हैं। अनेक कवियों को दोहरा दिया गया है। जैसे गुरुदत्त उप नाम 'भूपति' और सुखदेव मिश्र। बहुत से कवि सूची में आने से छूट गये हैं। जैसे घनश्याम, राम सखी, चन्द्र बरदाई, धनसिंह, भाषा भूषण वाले राजा जसवंत सिंह, मनसाराम, आदि आदि।

डी० ए० बी० कालेज बलरामपुर के प्रिंसिपल डा० भगवती प्रसाद सिंह ने दिग्विजय भूषण का सम्पादन कर लिया है। आशा है, शीघ्र ही ग्रन्थ प्रकाशित होगा।

८. सुन्दरी तिलक

भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र द्वारा संकलित इस संग्रह में केवल सवैये हैं। ये नायिका भेद के क्रम से हैं। अन्त में ऋतु-वर्णन भी तासी ने तमन्ना लाल पं० का उल्लेख किया है जो वस्तुतः पं० मन्नालाल द्विज हैं। तासी ने इन्हीं को सुन्दरी तिलक का रचयिता माना है। तासी के अनुसार इसमें ४५ विभिन्न प्राचीन तथा अर्वाचीन कवियों के चुने हुए छन्द हैं। यह ग्रन्थ बाबू हरिश्चन्द्र के आश्रय में तथा उन्हीं के व्यय से बनारस से सम्बत् १९२५ में प्रकाशित हुआ। इसमें कुल ५८ अठ पेजी पृष्ठ हैं। प्रत्येक पृष्ठ में २२।२२ पंक्तियाँ हैं। इस ग्रंथ के मुख पृष्ठ पर संग्रह में संकलित कवियों की यह सूची दी गई है :—

(१) बेनी, (२) देव, (३) सुखदेव मिश्र, (४) रघुनाथ, (५) नृप शम्भु, (६) द्विज देव, महाराजा मानसिंह, (७) तोष, (८) मतिराम, (९) प्रेम, (१०) नेवाज, (११) रसवान (रसखानि), (१२) कवि शम्भु (१३) दास (भिखारीदास), (१४) सुन्दर, (१५) आलम, (१६) मणिदेव (१७) हनुमान, (१८) श्रीपति, (१९) गंग, (२०) ब्रह्म, (२१) बेनी प्रवीन, (२२) केशवदास, (२३) सूरदास,

(सरदार), (२४) ठाकुर, (२५) बोधा, (२६) बाबू हरीचन्द्र, (२७) नवनिधि, (२८) कालिका, (२९) सेवक, (३०) मबूरक (मुबारक), (३१) अलीमन, (३२) धनानन्द (घनानन्द), (३३) नरेन्द्र सिंह महाराजै पटियाला, (३४) अजबेस, (३५) हरिकेश, (३६) परमेस, (३७) छितिपाल, महाराजा अमेठी; (३८) रघुराज सिंह, महाराजै रीवाँ, (३९) मंडन, (४०) देवकी नन्दन, (४१) महाकवि (कालिदास); (४२) गोकुल नाथ, (४३) गिरिधरदास (बाबू गोपालचन्द); (४४) धनुषपाम (घनश्याम), (४५) किशोर ।—हिन्दूई साहित्य का इतिहास पृष्ठ ८६

डाक्टर रामकुमार वर्मा ने अपने आलोचनात्मक इतिहास में सुन्दरी तिलक को भारतेन्दु की रचना माना है और इसका रचना काल सम्बत् १९२६ दिया है। कवि संख्या ६९ दी है।[1] हो सकता है यह उक्त सुन्दरी तिलक का द्वितीय परिवर्धित संस्करण हो। इसी का तृतीय या और कोई संस्करण शिवसिंह के हाथ लगा जो सम्बत् १९३१ में प्रकाशित हुआ था। मेरे पास जो लघु संस्करण है वह नवल किशोर प्रेस का है, बारहवां संस्करण है, १९३३ ई० का छपा हुआ है। सरसरी तौर पर देखने पर मुझे इसमें ६३ कवि मिले। कुछ कविताओं में कवियों की छाप नहीं। कुछ पर दृष्टि न पड़ी होगी। सम्भवतः यह उसी ग्रन्थ का नवीन संस्करण है, जिसका हवाला डा० वर्मा एवं शिवसिंह ने दिया है। मेरी पुस्तक में ८६ पृष्ठ हैं तासी वाली में ५८। मेरी पुस्तक के प्रति पृष्ठ पर २० पंक्तियाँ है, तासी वाली में २२। पुस्तक पहले से ड्योढी हो गई है। इसमें पद्माकर, तुलसी, नायक, ऋषिनाथ, श्रीधर, चन्द्र, व्रजनाथ, भगवन्त, गुनदेव, कविराम, बलदेव, द्विज, दूहल, ग्वाल, कवि दत्त, पारस, शेखर, नाथ, शिव, कान्हर, नरेश और लाल आदि की कवितायें बढ़ गई हैं।

बाद में इस संग्रह का और भी परिवर्द्धन हुआ है। पहले संस्करण में $\frac{५८ \times २२}{४} = ३१९$ सवैये थे, दूसरे परिवर्द्धित संस्करण में ४२७ छंद हैं जब कि तीसरे परिवर्धित रूप में कुल १४५५ सवैये हैं। ग्रन्थ पहले संस्करण का पांच गुना हो गया है। इसमें पहले संस्करणों में आये कवियों की कवितायें बढ़ा दी गई हैं। साथ ही और अनेक नये कवि प्रस्तुत कर लिये गये हैं। जैसे कंकन सिंह, चतुर्भुज, जगदीश, ताहिर, दिवाकर, नन्दन, नरोत्तम, प्रेम सखी, बान, विजयानन्द, माधव, माथुर, मुकुन्द, रसिकेश, राम गोपाल, लालमुकुन्द, लछिराम, साहब राम, सेवक श्याम और हरिऔध आदि। इस बड़े संग्रह में देव के ५३, पद्माकर के ६९, घनानन्द के ३९, मतिराम के ३१ ठाकुर के ५१ और रसखानि के १९ छन्द हैं। यह परिवर्धन बहुत बाद में हुआ होगा, क्योंकि इसमें हरिऔध जी की भी रचनायें हैं। यह संग्रह भारतेन्दु (मृत्यु सम्बत् १९४२) के पर्याप्त पश्चात् परिवर्धित हुआ होगा और इसमें हरिश्चन्द्र का कोई हाथ न रहा होगा।

निम्नांकित ११ कवियों के विवरण में उल्लेख किया गया है कि इनकी रचनाएँ सुन्दरी तिलक में हैं :—

(१) अलीमन, (२) कविराम, (३) रामनाथ कायस्थ, (४) कालिका कवि वन्दीजन काशी-वासी, (५) तुलसी श्री ओझा जी जोधपुरवाले, (६) द्विज कवि, मन्नालाल बनारसी, (७) नरिन्द (२) महाराजा नरेन्द्र सिंह पटियाला, (८) महराज कवि, (९) मुरलीधर कवि (२), रसिया कवि नजीब खाँ, सभासद पटियाला, (१०) सुमेर सिंह साहबजादे, (११) हनुमान।

---

१. हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, पृष्ठ २६

९. भाषा काव्य संग्रह

पं० महेशदत्त ने यह संग्रह सम्बत् १९३० में बनाया और नवल किशोर प्रेस, लखनऊ से सम्बत् १९३२ में प्रकाशित कराया। सरोज के ही समान इसके भी प्रारम्भ में काव्य संग्रह है और अंत में निम्नांकित ५१ संग्रहीत कवियों का जीवन-चरित्र है :—

(१) महेशदत्त, (२) तुलसीदास, (३) मदन गोपाल, (४) नारायणदास, (५) हुलास राम, (६) सहजराम, (७) भगवतीदास, (८) रत्न कवि, (९) ब्रजवासी दास, (१०) सबलसिंह, (११) नरोत्तम दास, (१२) नवलदास, (१३) लल्लू जी लाल, (१४) गिरिधर राय, (१५) बिहारी लाल, (१६) अनन्य दास, (१७) रघुनाथदास, (१८) मलूकदास, (१९) मोती लाल, (२०) कृपा राम, (२१) क्षेम करण, (२२) सीताराम दास, (२३) चरणदास, (२४) भिखारीदास, (२५) राम नाथ प्रधान, (२६) महाराज मानसिंह, (२७) अयोध्याप्रसाद बाजपेयी औध, (२८) शिव प्रसन्न, (२९) श्रीपति, (३०) पद्माकर, (३१) केशवदास, (३२) हिमाचल राम, (३३) रंगाचार, (३४) प्रियादास, (३५) मीरा, (३६) देवदत्त, (३७) नाभादास, (३८) बेणीमाधव दास, (३९) बंशीधर मिश्र, (४०) जानकी दास, (४१) मतिराम, (४२) राम सिंह, (४३) सूरदास, (४४) गिरिजा दत्त, (४५) सुन्दर दास, (४६) नरहरि, (४७) हरिनाथ, (४८) रसखानि, (४९) गदाधर, (५०) चन्दबरदाई, (५१) शिव प्रसाद।

इन ५१ कवियों में से रंगाचार, गिरिजादत्त और शिव प्रसाद केवल ये तीन कवि सरोज में नहीं ग्रहीत हुए हैं। इसी ग्रन्थ ने सरोज के प्रणयन को प्रेरणा दी। इस ग्रन्थ की एक अशुद्धि सुधारने के लिये शिवसिंह ने सरोज रचा, पर इसकी अनेक अशुद्धियों को अपना कर उन्होंने भ्रम भी बहुत पैदा किया। इस ग्रन्थ से अनेक कवियों के विवरण सरोज में संक्षिप्त रूप में लिये गये हैं, पर उल्लेख केवल निम्नांकित २ कवियों के सम्बन्ध में किया गया है :—

(१) कृपा राम ब्राह्मण नरैनापुर जिले गोंडा

(२) नवलदास क्षत्रिय गूढ़ गाँव जिले बाराबंकी

१०. कवित्त रत्नाकर

इस संग्रह के संकलयिता हैं मातादीन मिश्र। यह दो भागों में सम्बत् १९३३ में नवल किशोर प्रेस, लखनऊ में छपा। यह ग्रन्थ काशी की कारमाइकेल लाइब्रेरी में उपलब्ध है। इसके दोनों भागों में मिलाकर निम्नांकित ४२ कवि हैं :—

(१) कादिर, (२) कुन्ज गोपी, (३) कृष्ण, (४) केशवदास, (५) खगनिया, (६) गिरिधर कविराय, (७) गुरुदत्त, (८) घनश्याम, (९) घाघ, (१०) चन्दबरदाई, (११) छत्रसाल, (१२) जलील, बिलग्रामी, (१३) तुलसीदास, (१४) तोष, (१५) देव, (१६) नरहरि, (१७) नरोत्तम, (१८) नारायण, (१९) पमार, जानकीप्रसाद सिंह, (२०) प्रबीण राय, (२१) बंशीधर, (२२) बिहारी, (२३) ब्रह्म, (२४) भीष्म, (२५) भूपनारायण भांट, (२६) भूषण (२७) भोलानाथ, (२८) मतिराम, (२९) मलिक मुहम्मद जायसी, (३०) महेश, (३१) मातादीन मिश्र, (३२) यशबंत सिंह, (३३) रहीम, (३४) राम, (३५) राम प्रसाद, (३६) रामरत्न भट्ट, (३७) शिवप्रसाद सितारे हिन्द, (३८) सुखदेव मिश्र, (३९) श्यामलाल, (४०) श्रीलाल, (४१) सबल सिंह चौहान, (४२) सूर।

ग. इतिहास ग्रन्थ

(१) टॉड का राजस्थान—[इस ग्रंथ के समर्पण की तिथि २० जून १८२९ ई० (सं० १८८६) है।

टाड का जीवन काल १७८२-१८३५ ई० (सं० १८३६-१८९२) है।[1] राजपूताना के रेजीडेन्ट टाड साहब ने सम्बत् १८८० में राजस्थान का प्रसिद्ध इतिहास प्रस्तुत किया। इस ग्रन्थ में राजाओं के साथ-साथ चन्दबरदाई आदि अनेक कवियों का भी वर्णन हो गया है। सरोजकार ने निम्नांकित ४ कवियों के सम्बन्ध में इस ग्रन्थ से सहायता लेने का उल्लेख जीवन खंड में यथास्थान किया है :—

(१) अमर जी, कवि, राजपूतानावाले (२) करण, कवि, वन्दीजन, जोधपुरवाले (३) कुम्भ-करण, रानाकुम्भा, चित्तौर (४) खुमानसिंह, राणा चित्तौर।

(२) काश्मीर राज तरंगिणी } इन ग्रन्थों से सरोजकार ने क्या सहायता ली, इसका उल्लेख
(३) दिल्ली राज तरंगिणी } उन्होंने कहीं नहीं किया है।

(४) भक्तमाल—शिवसिंह ने मीरापुरवाले तुलसी राम अग्रवाल कृत भक्तमाल के उर्दू अनुवाद का उपयोग किया था। यह ग्रन्थ सम्बत् १९११ में अनूदित हुआ। निम्नांकित ४ कवियों के सम्बन्ध में कहा गया है कि इनका वर्णन भक्तमाल में है।

[१] केवल राम, कवि, ब्रजवासी, [२] नाभा दास, [३] नरबाहन, [४] रसखान।

वस्तुतः भक्तमाल से सरोज में अनेक कवियों का विवरण लिया गया है। इनका उल्लेख मुख्य ग्रन्थ में यथास्थान आगे किया गया है।

घ. अन्य सहायक सूत्र

१ भिखारीदास

भिखारीदास ने काव्य निर्णय के निम्नांकित कवित्त में कुछ कवियों की ब्रजभाषा को प्रमाण माना है :—

> **सूर केसौ, मंडन, बिहारी, कालिदास, ब्रह्म**
> **चिंतामनि, मतिराम, भूषन सो जानिये**
> **लीलाधर, सेनापति, निपट, नेवाज, निधि,**
> **नीलकंठ, मिश्र सुखदेव, देव मानिये**
> **आलम, रहीम खानखाना, रसलीन वली,**
> **सुन्दर अनेक गन गनती बखानिये**
> **ब्रजभाषा हेत ब्रज सब कीन अनुमान,**
> **एते एते कविन की बानिहु ते जानिये**

काव्य निर्णय की रचना सम्बत् १८०३ में हुई। अतः ये सभी कवि या तो १७८० के पहले के हैं अथवा इस समय वर्तमान थे। शिवसिंह ने इस कवित्त की सहायता ली है, पर अशुद्ध ढंग से। उन्होंने रहीम खानखाना को दो कवि मान लिया है और दूसरे चरण का अशुद्ध पाठ ग्रहण कर लिया है तथा मिश्र सुखदेव मिश्र को नीलकंठ के आगे जोड़कर नीलकंठ त्रिपाठी के अतिरिक्त एक अन्य नीलकंठ मिश्र की कल्पना कर ली है। अशुद्ध पाठ के कारण लीलाधर नीलाधर हो गये हैं।

२. सूदन

सूदन ने सम्बत् १८१० के आस पास सुजान चरित्र की रचना की। इस ऐतिहासिक काव्य में सम्बत् १८०२ से लेकर १८१० तक की घटनाओं का उल्लेख हुआ है।[2] ग्रन्थारम्भ में सूदन ने अपने

---

[1] टाड अनल्स आफ राथस्थान, द्वितीय संस्करण की प्रकाशकीयटिप्पणी।

[2] विनोद, कवि संख्या ८५५—सूदन

पूर्ववर्ती १७५ भाषा-कवियों की ६ कवित्तों [छंद ४ से लेकर ६ तक] में प्रणाम दिया है। शिवसिंह ने प्रमाद से इन्हें १० कवित्त समझ लिया है। शिवसिंह के पास ये कवित्त थे, पर सरोज की रचना करते समय सब खो गये। केवल अंतिम बच रहा था। इसे उन्होंने सरोज से उद्धृत भी किया है। कवि नामावली वाले छहो कवित्त नीचे उद्धृत किये जा रहे हैं :—

(१)

केशव किशोर कासी कुलपति कालिदास
केहरि कल्यान कर्न कुन्दन कविन्द से
कंचन कमच कृष्ण केसौ राय कनकसेन
केवल करीम कविराइ कोकबन्द से
कुँवर किदार खानिखाना खगपति खेम
गंगापति गंग गिरिधरन गयन्द से
गोप गद्द गदाधर गोपीनाथ गदाधर
गोरधन गोकुल गुलाब जो गुविन्द से ॥४॥

(२)

घन घनश्याम घासीराम नरहर नैन
नाइक नवल नन्द निपट निहारे हैं
नित्यानन्द नन्दन नरोतम निहाल नेही
नाहर निवाज नन्द नाम अजवारे हैं
चन्द बरदाई चन्द चिन्तामनि चेतन हैं
चतुर चतुर चिरजीव चतुरारे हैं,
छीत रु छबीले जदुनाथ जगनाथ जीव
जयकृष्ण जसुवन्त जगन विचारे हैं ॥५॥

(३)

टीकाराम टोडर तुरत तारापति तेज
तुलसी तिलोक देव दुलह दयाल से
दयादेव देवीदास दूनाराइ दामोदर
धीरधर धीर औ धुरन्धर विसाल से
पंडित प्रसिद्ध पुखी पीत पहलाद पाती
प्रेम परमानँद परम प्रतपाल से
परवत प्रेमी परसोतम विहारी बान
बीरबर बीर विजैन बालकृष्ण बाल से ॥६॥

(४)

बलिभद्र बल्लभरसिक बृन्द वृन्दाबन
बंशीधर ब्रह्म औ बसंत बुद्धराव रे
भूषन से भूधर मुकुन्द मनिकंठ माधौ
मतिराम मोहन मलूक मत बावरे

मंडन मुमारख मुनीस मकरन्द मान
मुरली मदन मित्र मरजाद गाव रे
अच्छर अनन्त अग्र आलम अमर आदि
अहमद आज़मखान अभिमान आव रे ॥७॥

(५)

इच्छाराम ईसुर उमापति उदय ऊधौ
उद्धत उदयनाथ आनँद अमाने हैं
राधाकृष्ण रघुराइ रमापति रामकृष्ण
राम से रहीम रनछोर राइराने हैं
लीलाधर लीलकंठ लोकनाथ लीलापति
लोकमनि लाल लच्छलछी लोक जाने हैं
सूरदास सूर से सिरोमनि सदानंद से
सुन्दर सभा से सुखदेव संत माने हैं ॥८॥

(६)

सोमनाथ, सूरज, सनेह, सेख, स्यामलाल,
साहेब, सुमेर, सिवदास, सिवराम हैं
सेनापति, सूरति, सरब सुख, सुखलाल,
श्रीधर, सबल सिंह, श्रीपति सुनाम हैं
हरिपरसाद, हरिदास, हरिबंश, हरि
हरीहर, हीरा से, हुसेन, हितराम हैं
जस के जहाज, जगदीश के परम मीत,
सूदन कविन्दन को मेरा परनाम है ॥१०॥

—सुजान चरित्र, पृष्ठ १-३

विनोद में इन कवियों की सूची इस प्रकार दी गई है—
केशव, किशोर, काशी, कुलपति, कालिदास, केहरि, कल्यान, करन, कुन्दन, कविन्द, कंचन, कमन्च, कृष्ण, कनक सेन, केवल, करीम, कविराज, कुँवर, केदार।
खानखाना, खगपति, खेम।
गंगापति, गंग, गिरिधरन, गयन्द, गोप, गदाधर, गोपीनाथ, गोवर्धन, गोकुल, गुलाब, गोविन्द।
घनश्याम, घासीराम।
नरहरि, नैन, नायक, नवल, नन्द, निपट, नित्यानन्द, नन्दन, नरोत्तम, निहाल, नेही; नाहर, नेवाज।
चन्दबरदाई, चन्द, चिन्तामनि, चेतन, चतुर, चिरंजीवि।
छीत, छबीले।
जदुनाथ, जगनाथ, जीव, जयकृष्ण, जसवंत, जगन।
टीकाराम, टोडर।

तुरत, तारापति, तेज, तुलसी, तिलोक, देव, दूलह, दयादेव, देवीदास, दूनाराय, दामोदर ।
धीरधर, धीर, धुरन्धर ।
पुखी, पीत, पहलाद, पाली, प्रेम, परमानन्द, परम, पर्वत, प्रेमी, परसोतम ।
बिहारी, बान, बीरबल, बीर, बिजय, बालकृष्ण, बलभद्र, बल्लभ, वृन्द, वृन्दावन ।
बंशीधर, ब्रह्म, बसंत, (राव) बुद्ध ।
भूषन, भूधर ।
मुकुन्द, मनिकंठ, माधव, मतिराम, मलूकदास, मोहन, मंडन, मुबारक, मुनीस, मकरन्द, मान, मुरली, मदन, मित्र ।
अक्षर अनन्य, अग्र, आलम, अमर, अहमद, आजम खाँ ।
इच्छाराम, ईसुर ।
उमापति, उदय, ऊधो, उधृत, उदयनाथ ।
राधाकृष्ण, रघुराय, रमापति, रामकृष्ण, राम, रहीम, रणछोरराय ।
लीलाधर, लीलकंठ, लोकनाथ, लीलापति, लोकपति, लोकमनि, लाल, लच्छ, लच्छी ।
सूरदास, सिरोमनि, सदानन्द, सुन्दर, सुखदेव, सोमनाथ, सूरज, सनेही, सेख, श्यामलाल, साहेब, सुमेर, शिवदास, शिवराम, सेनापति, सूरति, सबसुख, सुखलाल, श्रीधर, सबल सिंह, श्रीपति ।
हरिप्रसाद, हरिदास, हरिबंश, हरिहर, हरी, हीरा, हुसेन और हितराम ।

निम्नांकित ६ कवियों के सम्बन्ध में सरोज में लिखा है कि सूदन ने इनकी प्रशंसा की है :—

(१) लोकमणि (२) शिवराम (३) सनेही (४) सूरज (५) सर्वसुखलाल (६) हितराम ।

अध्याय ४

सरोज की भूलें और इसके एक सुसम्पादित संस्करण की आवश्यकता

सरोज में अनेक प्रकार की भूलें हैं। कुछ भूलें तो अनवधानता के कारण हो गई हैं और कुछ अज्ञान के कारण।

(क) अनवधानता के कारण हुई अशुद्धियाँ

१. वर्णानुक्रम की गड़बड़ी

यों तो सरोज में कवियों को वर्णानुक्रम से स्थान दिया गया है, पर यह बहुत ठीक नहीं है। अ के अन्तर्गत अ, आ, ओ, औ, अं, आदि सभी संकलित कर दिये गये हैं। उनका कोई क्रम नहीं है कि पहले अ हो, फिर आ और फिर इसी प्रकार और भी आगे। इसी प्रकार श एवं स को एक ही में मिला दिया गया है। ऋ को र के अन्तर्गत स्थान दे दिया गया है। व को अधिकांश में ब में विलीन कर दिया गया है। य तो है ही नहीं, सब ज हो गया है। गड़बड़ी यहीं तक नहीं, जहाँ यह मिश्रण नहीं हुआ है, वहाँ भी वर्णानुक्रम का पूर्ण अनुसरण नहीं हुआ है, केवल प्रथमाक्षर का विचार किया गया है। अतः किसी कवि को तुरन्त ढूँढ़ लेना असंभव है। साथ ही सरोज के काव्य-खंड में जिस क्रम से कविगण प्रस्तुत किये गये हैं, वही क्रम जीवन खंड में नहीं रखा गया है, और संग्रह खंड में कवि संख्या १ से लेकर ८३९ तक दी गई है, जब कि जीवन खंड में प्रत्येक वर्ण के कवियों की क्रम-संख्या अलग-अलग है। दोनों खंडों में कवियों का क्रम एक ही होना चाहिये था। अनुदाहृत कवियों की सूची प्रत्येक वर्ण की कवि सूची के अंत में दे देना चाहिये था अथवा सारे अनुदाहृत कवियों की सूची एकदम अंत में एक साथ होनी चाहिये थी।

२. पृष्ठ निर्देश सम्बन्धी भूलें

जीवन खंड में जहाँ एक ही नाम के कई कवि हैं, वहाँ उन्हें एक-दूसरे से अलग करने के लिए १,२,३,४, आदि संख्याओं से युक्त कर दिया गया है, जो कहीं-कहीं अशुद्ध हो गया है और कवि विवरण तथा उदाहरण का मेल नहीं मिलता। इस खंड में प्रत्येक कवि के विवरण के पश्चात् उसके काव्य-संग्रह का पृष्ठ निर्देश किया गया है। जहाँ एक ही नाम के अनेक कवि हैं, वहाँ प्रायः यह पृष्ठ-निर्देश उलट-पलट कर अशुद्ध हो गया है। ऐसी अशुद्धियाँ संख्या में ३६ हैं, जिनकी सूची यह है :—

कवि	निर्दिष्ट पृष्ठ	वास्तविक पृष्ठ
१. अग्रदास	१८	८
२. कृष्ण कवि (१)	—	४३
३. कृष्ण कवि (२)	३३	३४
४. कृष्ण कवि (३)	३४	३३
५. कृपाराम कवि, जयपुरवासी	—	४४
६. खेम कवि (१) बुन्देलखंडी	५३	५४
७. खेम कवि (२) ब्रजवासी	५४	५३

८. गदाधर कवि	—	६०
९. गदाधर दास मिश्र, ब्रजवासी	—	८०
१०. गोकुल बिहारी	७९	७८
११. गोविन्द कवि	७३	६३
१२. गुलामी कवि	८२	७४
१३. चन्द कवि (२)	८५	८६
१४. चन्द (४)	८६	८५
१५. चरणदास	९४	९६
१६. चेतन चन्द्र	९६	९४
१७. जयकवि भाट, लखनऊवाले	११४	१११
१८. तुलसी यदुराय के पुत्र (३)	१२३	१२४
१९. तुलसी (४)	१२४	१२३
२०. देवीदास, बुन्देलखंडी	१३५	१३४
२१. द्विजदेव	१३४	१२९
२२. द्विज कवि मन्नालाल बनारसी	१३५	१३०
२३. परमेश बन्दीजन (२)	१७९	१७८
२४. परशुराम कवि (१)	१७९	१८५
२५. परशुराम (२)	१७५	१७९
२६. पद्मेश	१८६	१८३
२७. पंचम कवि डलमऊवाले	१८६	१९०
२८. मदन कवि	१९९	२००
२९. भोलासिंह बुन्देलखंडी	२६६	२३६
३०. रसरूप कवि	—	२९०
३१. शंकरसिंह कवि (४)	३४५	३४७
३३. सेवक कवि (२) चरखारीवाले	३५३	३४२
३३. सेवक कवि (१) बनारसी	३४२	३५३
३४. सुकवि कवि	३५७	३५८
३५. सगुणदास	३५८	३५९
३६. हेम कवि	३७२	३७१

कान्ह कवि प्राचीन (१) नायिका भेद के रचयिता कहे गये हैं, और कान्ह कवि, कन्हई लाल (२) नखशिख के रचयिता हैं। दोनों की कविता के उदाहरण पृष्ठ ३६ पर हैं; पर नखशिखवाले दूसरे कान्ह को उदाहरण देते समय पहला कान्ह कहा गया है और नायिका भेद वाले को दूसरा। यह उलट-पलट की गड़बड़ी है।

ये सभी भूलें जीवन खंड एवं संग्रह खंड के अलग-अलग होने के कारण हुई हैं। यदि कवि का विवरण दे कर ठीक वहीं उसकी कविता का उदाहरण दे दिया गया होता, तो न तो कवियों में यह उलट-पलट होता और न पृष्ठ निर्देश की आवश्यकता पड़ती।

(३) ऐज़न की भूलें

सरोज में संक्षेप करने की दृष्टि से कवि विवरण में 'ऐज़न' का प्रयोग हुआ है। ऐज़न का चिह्न ["] न देकर अक्षरों में ऐज़न लिखा गया है। इसका अर्थ है जो कुछ ऊपर लिखा गया है वही, पूर्वक्त, यथापूर्व। सरोज में १३ ऐसे भी स्थल हैं जहाँ ऐज़न का यह प्रयोग अत्यन्त भ्रामक हो गया है। जिससे यदि उसका ठीक अर्थ लिया जाय तो अनर्थ हो सकता है। उदाहरण के लिये केवल राम ब्रजवासी का विवरण यह है।

"ऐज़न—इनकी कथा भक्तमाल में है।"—सरोज, पृष्ठ ३९६

केवल राम के पहले केशव दास, ब्रजवासी का निम्नांकित विवरण दिया गया है—

"इनके पद रागसागरोद्भव में बहुत हैं। इन्होंने दिग्विजय की और ब्रज में आकर श्रीकृष्ण चैतन्य से शास्त्रार्थ में पराजित हुए।"—सरोज, पृष्ठ ३९६

यदि ऐज़न का ठीक अर्थ लिया जाय तो इसका अभिप्राय यह हुआ कि केवल राम के पद रागसागरोद्भव में हैं और केवल राम ने केशव कशमीरी की ही भाँति दिग्विजय किया और ब्रज में आकर श्रीकृष्ण चैतन्य से पराजित हुए, जो कदापि ठीक नहीं हो सकता। इस ऐज़न का अधिक से अधिक इतना ही अर्थ ठीक हो सकता है कि केवल राम ब्रजवासी के भी पद रागसागरोद्भव में बहुत हैं।

केवल राम जी के ठीक बाद कान्हर दास कवि ब्रजवासी का यह विवरण है—

"ऐज़न इनके यहाँ जब सभा हुई थी तब उसी में नाभा जी को गोसाई की पदवी मिली थी।" —सरोज, पृष्ठ ३९६

इस ऐज़न का अर्थ होगा :—

(१) कान्हर दास के बहुत से पद रागसागरोद्भव में हैं।

(२) कान्हर दास ने भी केशव दास कशमीरी और केवल राम, ब्रजवासी की भाँति दिग्विजय किया और ब्रज में आकर श्रीकृष्ण चैतन्य से पराजित हुए।

(३) इनकी कथा भक्तमाल में है।

जिस प्रकार केवल राम जी के सम्बन्ध में दूसरा तथ्य ठीक नहीं है, उसी प्रकार कान्हर दास जी के भी सम्बन्ध में उक्त तथ्य ठीक नहीं हो सकता। उक्त ऐज़न का इतना ही अर्थ हो सकता है कि कान्हर दास के भी पद रागसागरोद्भव में एवं उनकी कथा भक्तमाल में है।

परबत कवि के विवरण में केवल ऐज़न है। इनके पहले पृथ्वीराज कवि का निम्नांकित विवरण दिया गया है :—

"ऐज़न—यह कवि बीकानेर के राजा और संस्कृत भाषा के बड़े कवि थे।"—सरोज, पृष्ठ ४४८

निश्चय ही परबत कवि न तो बीकानेर के राजा थे और न संस्कृत के बड़े कवि ही। अब रहा पृथ्वीराज का ऐज़न। इनके पहले मतिराम कवि हैं जिनका विवरण है "हजारे में इनके कवित्त हैं।" अतः पृथ्वीराज वाले ऐज़न का अर्थ हुआ कि पृथ्वीराज के भी कवित्त हजारे में हैं। अब परबत वाले ऐज़न का भी यही अर्थ हो सकता है कि इनके भी कवित्त हजारे में हैं।

केवल राम, ब्रजवासी, कान्हरदास, ब्रजवासी और परबत कवि के विवरण में जो ऐज़न हैं उनका कुछ अर्थ है, जो ऊपर विवेचित है। इनके अतिरिक्त निम्नांकित ९ कवियों के विवरण में

जो ऐज़न दिया गया है वह निरर्थक है। सम्भवतः यह प्रमाद से हो गया है। तृतीय संस्करण में भी ये ऐज़न हैं। द्वितीय संस्करण में भी ये रहे होंगे, क्योंकि ग्रियर्सन ने इन कवियों के सम्बन्ध में ऐसा ही उल्लेख किया है।

(१) कुंज गोपी, गौड़ ब्राह्मण जयपुर राज्य के वासी, (२) कृपाल कवि, (३) कनक कवि, (४) कल्याण सिंह भट्ट, (५) कृष्णकवि प्राचीन, (६) खेतल कवि, (७) खुसाल पाठक, राय बरेली वाले, (८) खेम कवि (१) बुन्देलखंडी, (६) तीखी कवि, (१०) तेही कवि।

सरोज के नये संस्करण में ऐज़नों को या तो पूर्ण रूपेण हटा देना चाहिये और उनके स्थान पर पूर्ण विवरण दे देना चाहिये अथवा कम से कम इन १३ दोषपूर्ण ऐज़नों को हटा देना चाहिये। इनमें से अन्तिम १० तो निरर्थक ही हैं और प्रथम ३ ही कुछ सार्थक हैं। इस सर्वेक्षण में ऐज़न के आगे कोष्टक में उचित अंश जोड़ दिये गये हैं।

सरोज के प्रथम एवं द्वितीय संस्करणों में कवर्ग का अंतिम कवि, ऊपर के ७२ कृष्ण कवि प्राचीन हैं ही नहीं; और ऊपर वर्णित दसो निरर्थक ऐज़न भी नहीं हैं। अतः सरोज के नवीन संस्करण में तो इन १० को हटा ही देना चाहिए।

४. छापे की भूलें

सरोज में यों तो छापे की अनेक भूलें हैं; पर दो भूलें यहाँ विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं :—

(१) भूमिका पृष्ठ ३ पर नवां सहायक ग्रन्थ है 'कवित्त रतनाकर' पर छपा है, कवि रतनाकर। एक अक्षर के छूट जाने से ग्रन्थ का नाम ही बदल गया है। मातादीन के विवरण में ग्रन्थ का ठीक नाम दिया गया है। ग्रियर्सन ने इसी भूल के कारण अपने ग्रन्थ में इसका नाम 'कवि रतनाकर' ही दिया है।

(२) पृष्ठ १३४ पर सत्रहवीं पंक्ति के बाद भिखारी दास के उदाहरण समाप्त हो जाते हैं। अठारहवीं पंक्ति है 'प्रेम रतनाकर ग्रन्थे'— यह प्रेम रतनाकर ग्रन्थ देवीदास कवि बुन्देलखंडी की रचना है। इनकी कविता का उदाहरण पृष्ठ १३५ के प्रारम्भ में दिया गया है। होना यह चाहिये था कि ऊपर वाले 'प्रेम रतनाकर ग्रन्थे' के ठीक ऊपर देवीदास का नाम होता। ऐसा न होने के कारण अनभिज्ञों के लिये प्रेम रतनाकर भिखारी दास का ग्रन्थ हो गया है। [ग्रियर्सन (३४४) ने भी इसे भिखारी दास का ग्रंथ मान लिया है। छापे की यह भूल सरोज के प्रथम संस्करण से ही प्रारम्भ हो गई है।]

५. अशुद्ध पाठ

सरोज में एक दूसरी गड़बड़ी कविताओं के अशुद्ध पाठ की है। इन अशुद्ध पाठों के कारण अर्थ ग्रहण में बाधा पड़ती है। इन अशुद्ध पाठों का उत्तरदायित्व बहुत कुछ उन प्राचीन संग्रह ग्रन्थों पर है, जिनका उपयोग शिवसिंह ने किया। ऐसे कुछ उदाहरण उदाहरण के लिए नीचे उद्धृत किये जा रहे हैं।

(१) जैनदीन अहमद पिठी है तिहारी तो पै
राखो वहि उर जो चलै न कछु जोर है—सरोज, पृष्ठ १०६

'उर' के स्थान पर 'ओर' पाठ समीचीन प्रतीत होता है।

(२) तृषाबंत भइ कामिनी, गई सरोवर बाल।
सर सूख्यो आनँद भयो कारन कौन जमाल—सरोज, पृष्ठ १०६

बाल शब्द से पुनरुक्ति दोष होता है, क्योंकि पहले कामिनी शब्द आ चुका है। बाल के स्थान पर पाल (भीटा) पाठ होना चाहिये।

(९) अहि रस नाथन धेनु रस, गनपति द्विज गुरुवार —सरोज, पृष्ठ १२२

दोहे के इस दल में रचनाकाल दिया हुआ है। इसका शुद्ध पाठ यह है :—

अहि रसना, थन धेनु, रस, गनपति द्विज, गुरुवार

इसके अनुसार रचनाकाल सम्बत् १६४२ है। अहि रसना = २, थन धेनु = ४, रस = ६, गनपति द्विज = १।

६. उदाहरण की भूलें

सरोज में अनेक ऐसे स्थल हैं जहाँ एक कवि की रचना दूसरे के नाम पर चढ़ी हुई है। कहीं पर यह अत्यन्त अनर्थकारिणी सिद्ध हुई है। ऐसे कुछ उदाहरण नीचे दिये जा रहे हैं :—

(१) अहमद कवि के नाम पर निम्नांकित दोहा उद्धृत है :—

अहमद् या मन सदन में, हरि आवैं केहि बाट
विकट जुरे जौ लौं निपट, खुले न कपट कपाट ॥४॥—सरोज, पृष्ठ ६

यह बिहारी का दोहा है और विहारी रतनाकर में ३६१ संख्या पर है।

(२) अहमद के ही नाम पर निम्नांकित सोरठा भी चढ़ा हुआ है :—

बुँद समुद्र समान, यह अचरज कासो कहौं
हेरनहार हेरान, अहमद आपै आप मैं ॥७॥—सरोज, पृष्ठ ६

यह सोरठा रहीम का है और रहिमन विलास में २६५ संख्या पर है।

(३) निम्नांकित सवैया मुअज्जम के आश्रित कवि लाला जैतसिंह महापात्र रचित 'माजम प्रभाव' नामक अलंकार ग्रन्थ का है।[१] पर यह आलम के नाम चढ़ा हुआ है, क्योंकि द्वितीय चरण में आलम शब्द आया हुआ है, जो वस्तुतः संसार का सूचक है। सरोजकार ने प्रमाद से इसे कवि छाप समझ लिया है।

जानत औलि किताबन को जे निसाफ के माने कहे हैं ते चीन्हें
पालत हौ इत आलम को उत नीके रहीम के नाम की लीन्हें
मोजमशाह तुम्हें करता करिबे को दिलीपति हैं बर दीन्हें
काबिल हैं ते रहैं कितहूँ, कहूँ काबिल होत हैं काबिल कीन्हें
—सरोज, पृष्ठ १०

(४) निम्नांकित सवैया घनानन्द के नाम चढ़ा है, पर है यह केशव पुत्र बधू का[२]

जैहै सबै सुधि भूलि तुम्हें, फिरि भूलि न मो तन भूलि चितैहैं
एक को आँक बनावत मेटत, पोथिय काँख लिए दिन जैहैं
सांची हौं भाखति मोहि कका कि सौं पीतम की गति तेरिहु ह्वैहैं
मोसौं कहा अठिलात अजासुत, कैहौं कका जी सौं तोहूँ सिखैहैं
—सरोज, पृष्ठ १२

(५) निम्नांकित सवैया प्रसिद्ध कवि ठाकुर बुन्देलखंडी की रचना है;[३] पर यह ईश्वर के नाम उद्धृत है और इसमें ईश्वर की छाप भी है :—

---

[१] ना० प्र० पत्रिका, वर्ष ४० अंक १।२। [२] घन आनंद ग्रन्थावली, पृष्ठ ४३,४४ और विनोद कवि संख्या ३३५। [३] ठाकुर ठसक, छन्द १५५

चारिहुँ ओर उदै मुख चंद की चांदनी चारु निहारि ले री
यह प्रानहि प्यारी अधीन भयो मन माहि विचार विचारि ले री
कवि ईश्वर भूलि गयो जुग पारिबो या बिगरी को सुधारि ले री
यह तौ समयो बहुर्यो न मिलै बहती नदी पाँय पखारि ले री
—सरोज, पृष्ठ १५

(६) ऊंचे धौल मंदिर के अंदर रहन वाली
ऊंचे धौल मंदिर के अंदर रहाती हैं
कंद पान भोगवारी कंद पान करें भोग
तीन बेर खान वाली बीनि बेर खाती हैं
मैन नारि सी प्रमान मैन नारि सी प्रमान
बीजन डुलातो ते वै बीजन डुलाती हैं
कहै कवि इन्दु महाराज आज बैरी नारि
नगन जड़ाति ते वै नगन जड़ाती हैं
—सरोज, पृष्ठ १५

यह छन्द प्रसिद्ध कवि भूषण[1] का है।

(७) चहचही चटकीली चुनिचुनि चातुरी सौं
चोखी चारु चांदनी की रंगी रंग गहरे
कंचन किनारी तापै लागी छोर लौं हैं, खुली
दामिनी सी गोरे गात प्यारी सारी पहरे
इन्द्रजीत प्रभुष सो कही न परत छबि
आनन झलक चहुँ ओर ऐसी छहरे
गहगही पचरंग महमही सौंधें सनी
लहलही लसैं यें लहरिया की लहरें
—सरोज, पृष्ठ १६,१७

सरोज में यह कवित्त औरंगजेब के किसी नौकर इन्द्रजीत के नाम से उद्धृत है। बुन्देल वैभव में यही छंद महाकवि केशव के आश्रय दाता इन्द्रजीत सिंह के नाम पर दिया गया है।[2]

(८) कीधौं मोर सोर तजि गए री अनेक भाँति
कीधौं उत दादुर न बोलत नए दई
कीधौं पिक चातक चकोर कोऊ मारि डाले
कीधौं बकपांति कहूँ अंतगत ह्वै गई
झींगुर झिगारें नाहिं कोकिला उचारै नाहिं
बैन कहै जयसिंह दसो दिशा ह्वै गई
जारि डारे मदन मरोरि डारे मोर सब
जूझि गये मेघ कीधौं दामिनी सती भई
—सरोज, पृष्ठ १९७

[1] भूषण, छन्द ४२१। [2] बुन्देल वैभव, प्रथम भाग, पृष्ठ २०४

सरोज में यह कवित्त जयसिंह के नाम उद्धृत है, पर यह प्रसिद्ध सिंगारी कवि आलम की रचना है।[1]

(९) बसि वर्ष हजार पयोनिधि में, बहु भांतिन सीत की भीति सही
कवि देव जू त्यों चित चाह घनी, सत संगति मुक्तनहूँ की लही
इन भांतिन कीनौ सबै तपजाल, सु रीति कछूक न बाकी रही
अजहूँ लौं इते पर सीप सबै, उन कानन की समता न लही

—सरोज, पृष्ठ १४६

यह महाकवि देव की रचना नहीं है, द्विज देव की रचना है।[2]

(१०) देश विदेश के देखे नरेश, न रीझि कै कोऊ जु बूझि करैगो
ताते तिन्हें तजि जाति गिने गुन औगुन सौगुनी गाँठि परैगो
बांसुरी वारो बड़ो रिझवार है देव जु नेक सुढार ढरैगो
छोहरा छैल वही जो अहीर को पीर हमारे हिये की हरैगो

—सरोज, पृष्ठ १४६,१४७

यह सवैया भी महाकवि देव का नहीं है, यह रसखानि की रचना है।[3]

(११) कुक्कुट कुटुंबिनी की कोठरी में डारि राखो
चिक दै चिरैयन की रोकि राखीं गलियो
सारँगी में सारँग सुनाइ कै प्रवीन बीना
सारँग दै सारँग की ज्योति करी मलियो
बैठी परजंक में निसंक ह्वै कै अंक भरौं
करौंगी अधरपान मैन मद मिलियो
मोहि मिले प्रान प्यारे धीरज नरिन्द आजु
ये हो बलि चन्द नेकु मन्द गति चलियो

—सरोज, पृष्ठ १५१

यह कवित्त सरोज में धीरज नरिन्द, श्री राजा इन्द्रजीत सिंह, गहरवार, उड़छा बुन्देलखंडी के नाम से उद्धृत है। बुन्देल वैभव में यह प्रवीण राय के नाम से दिया गया है।[4] यह छंद स्त्रीत्व-भावना से युक्त है भी।

(१२) रँग भरि भरि भिजवंत मोरि अंगिया
दुइ कर लिहिसि कनक पिचकरवा
हम सब ठनगन करत डरत नहिं
मुख सन लगवत अँतर अगरवा
अस कस बसियत सुनि ननदी हो
फगुन के दिन इहि गोकुल नगरवा

---

[1]हिन्दी के मुसलमान कवि, पृष्ठ १०८। [2]श्रृङ्गार लतिका, छंद २१३। [3]रसखानि, छंद, ७। [4]बुन्देल वैभव, पृष्ठ २९०

मुहि तन तकत बकत पुनि मुसिक्त
रसिक गोविन्द अभिराम लँगरवा
—सरोज, पृष्ठ ७६

इस पद में स्पष्ट ही 'रसिक गोविन्द' की छाप है; पर यह गोविन्द जी कवि के नाम से उद्धृत किया गया है।

(१३) आस पास पुहुमि प्रकास के पगार सूझै
बनन अगार डीठि ह्वै रही निबरते
पारावार पारद अपार दसौ दिसी बूड़ी
चन्द ब्रह्मंड उतरात विधु वर ते
सरद जुन्हाई जह्नु धार सहसा सुधाई
सोभा सिन्धु नव सुभ्र नव गिरिवर ते
उमड़ी परत जोति मंडल अखंड
सुधा मंडल मही ते विधु मंडल विवर ते
—सरोज पृष्ठ ८५

यह छंद चन्द (२) के नाम पर सरोज में उद्धृत है। वस्तुतः यह महाकवि देव की रचना है।[1]

(१४) दाढ़ी के रखैयन की दाढ़ी सी रहित छाती
बाढ़ी मरजाद अब हद्द हिन्दुआने की
मिटि गई रैयति के मन की कसक अरु
कढ़ि गई खसक तमाम तुरकाने की
भनत नेवाज दिल्ली पति दल धक धक
हांक सुनि राजा छत्रशाल मरदाने की
मोटी भई चन्डी बिन चोटी के सिरन खाय
खोटी भई सम्पत्ति चकत्ता के घराने की
—सरोज, पृष्ठ १५६,१५७

सरोज में यह छंद नेवाज कवि ब्राह्मण प्राचीन (२) के नाम पर उद्धृत है। यही छंद 'रस कुसुमाकर' में भूषण के नाम पर पृष्ठ १८७ पर, छत्रशाल की प्रसंशा में दिया गया है। भूषण ग्रन्थावलियों में भी यह छंद शिवा जी की प्रशस्ति में मिलता है। नेवाज के स्थान पर भूषण हो गया है और छत्रशाल के स्थान पर शिवराज।[2]

(१५) कीबे को समान ढूँढ़ि देखे प्रभु आन
ये निदान दान जूझ में न कोऊ ठहरात हैं
पंचम प्रचंड भुजदंड के बखान सुनि
भागिबे को पच्छी लौं पठान थहरात हैं
संका मानि काँपत अमीर दिल्ली वाले, जब
चम्पति के नन्द के नगारे घहरात हैं
चहूँ ओर कत्ता के चकत्ता दल ऊपर
सु छत्ता के प्रताप के पताके फहरात हैं
—सरोज, पृष्ठ १६०

---

[1] देव-सुधा, छंद ५६। [2] भूषण, छंद ५०४

लीलि जाते बरही बिलोकि बेनी बनिता के
गुही जो न होती यों कुसुम सर कम्पा के
राम जी सुकवि ढिग भौहैं ना धनुष होती
कीर कैसे छोड़ते अधर बिम्ब भम्पा के
दाख के से भौंरा झलकत जोति जोबन की
भौंर चाटि जाते जो न होती रंग चम्पा के
—सरोज, पृष्ठ २८८

यह कवित्त राम जी कवि (२) के नाम उद्धृत है। यह पुखी के नाम से भी मिलता है। प्रभुदयाल प्रणीत ब्रजभाषा साहित्य के नायिका भेद में इसे पुखी के नाम रूपगर्विता के उदाहरण में दिया गया है। 'राम जी सुकवि के' के स्थान पर 'पुखी कहे जो पै' पाठ है।

(२०) साध सराहै सो सती, जती जोषिता जान
रज्जब सांचे सूर की बैरी करत बखान
—सरोज, पृष्ठ २९२

रज्जब के नाम पर उद्धृत यह दोहा रहीम के नाम से प्रसिद्ध है।[१]

(२१) सुनिये बिटप प्रभु पुहुप तिहारे हम
राखिये हमैं तो सोभा रावरी बढ़ाइ हैं
तजिहौ हरस तो बिरस ते न चारो कछू
जहाँ जहाँ जैहैं तहाँ दूनी छबि पाइ हैं
सुरन चढ़ैंगे सुर नरन चढ़ैंगे सीस
सुकवि रहीम हाथ हाथ ही बिकाइ हैं
देस में रहैंगे, परदेस में रहैंगे, काहू
भेस में रहैंगे, तऊ रावरे कहाइ हैं
—सरोज, पृष्ठ ३०२।१३

यह कवित्त सरोज में अनीस और रहीम नामक दो-दो कवियों के नाम पर चढ़ा हुआ है। यह वस्तुतः अनीस की रचना है।

(२२) दारा और औरंग लरे हैं दोउ दिल्ली बीच
एकै भाजि गए एकै मारे गये चालि में
बाजी दगा बाजी करि जीवन न राखत हैं
जीवन बचाए ऐसे महा प्रलै काल में
हाथी ते उतरि हाड़ा लर्‌यो हथियार लै कै
कहै लाल बीरता बिराजै छत्रसाल में
तन तरवारिन में, मन परमेस्वर में,
पन स्वामि कारज में, माथो हर माल में
—सरोज, पृष्ठ ३०२

यह कवित्त लाल कवि (१) प्राचीन के नाम पर संकलित है। यह छंद भूषण के नाम से भी प्रसिद्ध है।२

[१] रहिमन विलास, छंद २४८। [२] भूषण छंद ४२३

(२३) बसै बुराई जासु उर, ताही को सनमान
भलो भलो कहि त्यागिये, खोटे ग्रह जप दान
—सरोज, पृष्ठ ३०५

यह दोहा लाल कवि (४) के भाषा राजनीति से उद्धृत है। यह उनकी रचना नहीं है। यह उद्धरण का उद्धरण है और विहारी का है।[1]

(२४) नीको पै फीको लगै बिन अवसर की बात
जैसे बरनत जुद्ध में रस सिँगार न सुहात
फीको पै नीको लगै कहिये समय विचारि
सबके मन हरषित करै ज्यों विवाह में गारि
—सरोज, पृष्ठ ३१२

यह दोहे लल्लू जी लाल कृत सभा विलास से उद्धृत हैं। सभा विलास पुराने कवियों की कविताओं का संग्रह-ग्रन्थ है। ऊपर उद्धृत छंद लल्लू जी लाल के नहीं हैं, बृन्द के हैं।[2]

(२५) उपमा कालिदासस्य, भारवेरर्थगौरवं
नैषधे पदलालित्यं, माघे संति त्रयो गुणाः

संस्कृत के इस प्रसिद्ध श्लोक से प्रेरणा ग्रहण कर न जाने किसने निम्नांकित दोहा लिखा—

सुन्दर पद कवि गंग के, उपमा के बर बीर
केसव अर्थ गंभीर के, सूर तीनि गुन तीर
—सरोज, पृष्ठ ३२०

सरोज में यह सूरदास के नाम पर चढ़ा हुआ है। इसमें मुख्यतया सूर की ही प्रशस्ति है। भला स्वयं सूर अपने मुँह मिया मिठ्ठू कैसे बने होंगे ?

(२६) चाह सिंगार सँवारन की नव वेस बनी रतिवारन की है
सोभ कुमार सिवारन की सिर सोहति जोहति बारन की है
हंसन के परिवारन की पग जीत लई गति बारन को है
याहि लखै सरवारन को छनकी रति के परिवारन की है
—सरोज, पृष्ठ ३३८

यह सवैया सोभ कवि के नाम से चढ़ा हुआ है। द्वितीय चरण के प्रारम्भ में सोभ शब्द आया है जिसे शिवसिंह ने प्रमाद से कविछाप समझ लिया है। यह शब्द 'शोभा' के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। शोभ के आगे कुमार शब्द आया है, यही कवि की छाप है। यह रचना कुमारमणि शास्त्री 'कुमार' के 'रसिक रसाल' नामक रीति ग्रन्थ में है।[3]

(२७) हूल हियरा में धाम धामनि परी है रोर
भेंटत सुदामै स्यामै बनै ना अघात ही

---

[1] विहारी रत्नाकर छंद ३८१। [2] बृन्द सतसई, छंद ४,५। [3] रसिक रसाल, सप्तम उल्लास, छंद १४

सिरोमनि रिद्धिन में सिद्धिन में सोर पर्यो
काहि बक्सी धौं काँपै ठाढ़ी कमला तहीं
नर लोक नाग लोक नभ लोक नाक लोक
थोक थोक काँपै हरि देखे मुसक्याति हीं
हालो पर्यो हालिन में, लालो लोक पालिन में
चालो पर्यो चालिन में चिउरा चबात ही
—सरोज, पृष्ठ ३३८,३९

यह कवित्त शिरोमणि के नाम से दिया हुआ है, पर है नरोत्तम कवि का।[१]

(२८) दिसि विदिसान ते उमड़ि मढ़ि लीनो नभ
छोरि दिए धुरवा जवासे जूह जरिंगे
डहडहे भए द्रुम रंचक हवा के गुन
कुहू कुहू मोरवा पुकारि मोद भरिंगे
रहि गये चातक जहाँ के तहाँ देखत ही
सोभ नाथ कहूँ कहूँ बूंदहू न करिंगे
सोर भयो घोर चहूँ ओर नभ मंडल में
आए घन आए घन, आय कै उघरिंगे
—सरोज, पृष्ठ ३५६,५७

यह कवित्त सोभनाथ कवि के नाम से दिया गया है। वस्तुतः यह है सोमनाथ। भ और म की प्रतिलिपि सम्बन्धी असावधानी के कारण सरोजकार को एक और कवि सोभनाथ की कल्पना करनी पड़ी हैं।[२]

(२९) काल कमाल कराल करालन साल विसालन चाल चली है
हाल विहालन ताल तमाल प्रवाल के बालक लाल लली है
लोल विलोल कलोल अमोल कलाल कपोल कलोल कली है
बोलन बोल कपोलन डोल गलो लग लोल रलोल गली है
—सरोज, पृष्ठ ३७६

यह छंद हरिचन्द्र कविबरसाने वाले के नाम पर उद्धृत है। यही किंचित्पाठान्तर के साथ महाकवि केशवदास की कवि-प्रिया के दोष प्रकरण में अर्थहीन मृतक दोष के उदाहरण में दिया गया है।[३]

ख. अज्ञान के कारण हुई अशुद्धियाँ

१. एक ही कवि को कई कवि समझने की भूलें

सरोज में एक ही कवि कभी-कभी प्रमाद से दो-दो बार चढ़ गया है, जैसे ब्रह्म, बलिजू,

---

[१] सुदामाचरित्र छंद ४२। [२] सोमनाथ रत्नावली, पृष्ठ ९४। [३] केशव ग्रन्थावली खंड, १, पृष्ठ १०२, १०३, छंद १३

भीषम आदि। कभी-कभी सरोजकार ने एक ही कवि को निश्चित रूप से कई कवि भ्रम के कारण समझ लिया है, जैसे अक्षर, अनन्य। यह एक कवि चार कवियों के रूप में उल्लिखित हुआ है। एक ही कवि कई स्थानों पर रहा है, और शिवसिंह यदि एक ही व्यक्ति से उन स्थानों का सामञ्जस्य नहीं कर पाये तो उन्हें अलग मान लिया, जैसे सुखदेव मिश्र। एक सुखदेव तीन हो गये हैं—एक बार कम्पिला वाले, दूसरी बार असोथर वाले और तीसरी बार दौलतपुर वाले। कभी-कभी सरोजकार ने जिस सूत्र को पकड़ा, वह सूत्र ही अशुद्ध था और कई कवियों की बृद्धि हो गई, जैसे अनन्यदास चकदेवा जिला गोंडावासी ब्राह्मण। अशुद्ध सूत्र के कारण ही एक ही कवि कभी स्त्री के रूप में और कभी पुरुष के रूप में उल्लिखित हुआ है, जैसे रत्नकुँवरि बीबी, शिवप्रसाद सितारे हिन्द की प्रपितामही। इनका उल्लेख एकबार रत्नकवि ब्राह्मण काशी वासी के नाम से भी हुआ है। सरोज में उदयनाथ, काशीनाथ, शिवनाथ, शम्भुनाथ, सोमनाथ, हरिनाथ आदि कवियों का अलग-अलग उल्लेख तो हुआ ही है, नाथ नाम के ७ कवि अलग से भी दिये गये है। ये नाथ कोई स्वतंत्र कवि नहीं हैं। ऊपर वाले ही कवि कभी-कभी अपनी कविताओं में नाथ छाप भी रखते थे। छाप भेद से भी अनेक कवियों की वृद्धि हो गई है। सोमनाथ कवित्तों में सोमनाथ और सवैयों में शशि नाथ छाप रखते थे। सरोज में सोमनाथ से भिन्न एक अन्य शशिनाथ की कल्पना कर ली गई है। कुल मिलाकर सरोज में ७० से अधिक कवि ऐसे हैं जो या तो दोहरा-तेहरा उठे हैं अथवा कवि ही नहीं हैं।

(२) सन सम्बत् की भूलें

सरोज में बहुत से कवियों के सन्-सम्बत् भी दिये गये हैं। जिन कवियों का समय अनुमान से ही दिया गया है, वह प्रायः अशुद्ध हो गया है। ऐसे अशुद्ध सम्बतों की संख्या भी १०० से अधिक होगी। इन पर विस्तृत विचार आगे उपसंहार में किया गया है।

ग. सरोज के सम्पादन की आवश्यकता

सरोज हिन्दी-साहित्य के इतिहास का मूल आधार है। इसमें बहुत-सी त्रुटियाँ हैं, जिनका उल्लेख ऊपर किया गया है। इस ग्रन्थ की उपयोगिता को देखते हुए, इसके एक सु-सम्पादित संस्करण की आवश्यकता है। यह सम्पादन सरोज के सबसे पुराने उपलब्ध तृतीय संस्करण के आधार पर होना चाहिये, क्योंकि इसका जो सातवाँ अंतिम संस्करण उपलब्ध है, उसमें बहुत से परिवर्त्तन कर दिये गये हैं।

अध्याय ५

सरोज के सन् सम्बत्

क. 'उ०' का स्वीकृत अर्थ

सरोज के सन्-सम्बतों के आगे में "उ०" लगा हुआ है। उ० उत्पन्न अथवा उपस्थित का संक्षिप्त रूप हो सकता है। सर्वप्रथम ग्रियर्सन ने इस उ० का अर्थ उत्पन्न किया और उन्होंने सरोज के सम्बतों को उत्पत्ति काल माना। तभी से सरोज के सम्बत् उत्पत्ति अथवा जन्म-काल समझे जाते रहे हैं। ग्रियर्सन के बाद सभा की खोज रिपोर्टों में, फिर विनोद में एवं अन्यत्र सर्वत्र, ये उत्पत्ति काल के रूप में स्वीकृत हुए हैं। जहाँ नवीन उपलब्ध सूत्रों की सहायता से ये सम्बत्, जन्म-सम्बत् सिद्ध नहीं हुए हैं, वहाँ आलोचकों ने सरोज के सम्बतों को अशुद्ध मान लिया है अन्यथा आँख मूंदकर जन्म-सम्बत् स्वीकार किया है। विचारणीय है कि क्या यह सम्बत् वस्तुतः जन्म-सम्बत् है और उ० का अर्थ उत्पन्न ही है।

ख. परस्पर सम्बन्धित लोगों के सम्बतों पर विचार

गुरु शिष्य से, पिता पुत्र से, बड़ा भाई छोटे भाई से और पति पत्नी से जेठा होता है। इस प्रकार सम्बन्धित कुछ लोगों के सम्बतों का तुलनात्मक अध्ययन मनोरंजक होगा। सबसे पहले हम गुरु-शिष्य सम्बन्ध को लेंगे।

(१) गुरु—बल्लभाचार्य, सम्बत् १६०१ में उ०
शिष्य—(१) कुम्भन दास, सम्बत् १६०१ में उ०
(२) कृष्ण दास, सम्बत् १६०१ में उ०
(३) परमानन्द दास, सम्बत् १६०१ में उ०

तीनों शिष्यों और इनके गुरु का सम्बत् एक ही दिया गया है। क्या ये चारों एक ही सम्बत् में उत्पन्न हुए थे ?

(२) गुरु—विट्ठल नाथ, १६२४ में उ०
शिष्य—(१) चतुर्भुज दास, १६०१ में उ०
(२) छीत स्वामी, १६०१ में उ०
(३) नन्ददास, १५८५ में उ०
(४) गोविन्द दास, १६१५ में उ०

यदि उक्त सम्बत् जन्म-सम्बत् ही हैं तो विट्ठलनाथ जी के ये चारों शिष्य उम्र में उनसे बहुत बड़े हैं। वल्लभाचार्य के पुत्र-शिष्य चतुर्भुज दास और छीत स्वामी उनके समवयस्क हो जाते हैं और नन्ददास उनसे भी १६ वर्ष बड़े। क्या यह आश्चर्यजनक नहीं है ?

(३) गुरु—हरिदास स्वामी, सम्बत् १६४० में उ०
शिष्य (१) विट्ठल विपुल, सम्बत् १५८० में उ०
(२) भगवत रसिक, सम्बत् १६०१ में उ०

यहाँ एक शिष्य गुरु से ६० वर्ष पहले पैदा हो जाता है और दूसरा ३६ वर्ष पहले। उ० को यदि उत्पत्ति काल मान लिया जाता है, तो यह सब अनर्थ होते हैं।

अब हम कुछ पिता पुत्रों से सम्बन्धित सम्बत् तुलना के लिए निांत कर रहे हैं।

(१) पिता—रामदास बाबा, सम्बत् १७८८ में उ०
पुत्र—सूरदास सम्बत् १६४० में उ०

पुत्र का जन्म पिता के जन्म से १४८ वर्ष पहले हो जाता है जो नितांत असंभव है।

(२) पिता—रतनेश बुन्देलखंडी, सम्बत् १७८८ में उ०
पुत्र—परताप साहि, सम्बत् १७६० में उ०

यहाँ भी पुत्र पिता से २८ वर्ष पहले उत्पन्न हो गया है।

(३) पिता—कवीन्द्र उदयनाथ त्रिवेदी, सम्बत् १८०४ में उ०
पुत्र—दूलह त्रिवेदी, सम्बत् १८०३ में उ०

यहाँ पुत्र पिता से एक वर्ष पहले उत्पन्न हुआ है।

(४) पिता—शीतल त्रिपाठी टिकमापुर वाले, सम्बत् १८९१ में उ०
पुत्र—लाल कवि विहारी लाल त्रिपाठी, सम्बत् १८८५ में उ०

बेटा बाप से ६ वर्ष पहले हो गया है। पुत्र का जन्म पिता से पहले हो जाय, यह सब अनर्थ उ० को उत्पन्न मानने के कारण होते हैं। अतः यह अर्थ समीचीन नहीं प्रतीत होता।

अब बड़े भाई और छोटे भाई से सम्बन्धित कुछ सम्बत् भी देख लिये जायं।

(१) अग्रज—फैजी, सम्बत् १५८० में उ०
अनुज—फहीम, सम्बत् १५८० में उ०

दोनों सहोदर हैं और एक ही सम्बत् में पैदा हुए हैं। क्या दोनों जुड़वा हैं? यदि नहीं तो दोनों का एक ही सम्बत् में पैदा होना असंभव है।

(२) अग्रज—भूषण त्रिपाठी, सम्बत् १७३८ में उ०
अनुज—मतिराम त्रिपाठी, सम्बत् १७३८ में उ०

क्या भूषण और मतिराम भी जुड़वां भाई थे अथवा चचेरे? परम्परा से तो सगे भाई माने जाते हैं।

(३) अग्रज—बलभद्र मिश्र, सम्बत् १६४२ में उ०
अनुज—केशवदास मिश्र, सम्बत् १६२४ में उ०

यहाँ बड़ा भाई छोटे भाई से १८ वर्ष बाद उत्पन्न हुआ है। यह सब अनर्थ उ० का अर्थ उत्पन्न करने के कारण है।

अंत में पति-पत्नी सम्बन्धी कुछ सम्बत् भी लगे हाथों देख लिये जायँ।

(१) पति—आलम, सम्बत् १७१२ में उ०
पत्नी—शेख, सम्बत् १६८० में उ०

क्या आलम अपने से ३२ वर्ष बड़ी बुढ़िया पर आशिक हो कर उसके लिए मुसलमान हुए थे!

(२) पति—कुम्भ कर्ण, राना चित्तौर, सम्बत् १४७५ के लगभग उ०
पत्नी—मीरा बाई, सम्बत् १४७५ में उ०

परमात्मा को धन्यवाद है कि यहाँ पति-पत्नी समवयस्क हैं। पत्नी पति से बड़ी नहीं है।

ग. उ० का वास्तविक अर्थ

विभिन्न सम्बन्धियों के जो सम्बत् ऊपर उद्धृत किये गये हैं, वे स्पष्ट संकेत करते है कि सरोज के सम्बत् जन्म-सम्बत् नहीं हैं। शिवसिंह के पास हर एक कवि की जन्म कुण्डली नहीं थी, जिसे देखकर वे जन्म सम्बत् देते जाते। 'उ०' वस्तुतः उपस्थिति काल का सूचक है। यदि ऊपर के उदाहरणों में उ० को उपस्थित मान लें, तो ऊपर उठाई हुई बाधायें अधिकांश में समाप्त हो जातीं हैं। गुरु-शिष्य, भाई-भाई, पिता-पुत्र और पति-पत्नी सब साथ-साथ किसी एक विशेष सम्बत् में उपस्थित रह सकते हैं। यह उपस्थिति सम्बत् मुख्यतया कवियों का रचनाकाल सूचित करता है।

सरोज के सन्-सम्बतों के सम्बन्ध में स्वयं शिवसिंह की यह उक्ति ध्यान देने योग्य है :—

"जिन कवियों के ग्रन्थ मैंने पाये, उनके सन्-सम्बत् बहुत ठीक-ठीक लिखे हैं, और जिनके ग्रन्थ नहीं मिले उनके सन्-सम्बत् हमने अटकल से लिख दिये हैं ....। कवि लोग इस ग्रन्थ में प्रशंसा के बहुत कवित्त देखकर कहेंगे कि इतने कवित्त वीररस के क्यों लिखे ? मैंने सन्-सम्बत् और उस कवि के समय-निर्माण करने को ऐसा किया है, क्योंकि इस संग्रह के बनाने का कारण केवल कवियों के समय, देश, सन्-सम्बत् बताना है।" —शिवसिंह सरोज, भूमिका, पृष्ठ २

घ. ग्रन्थ-रचनाकाल और 'उ०' की एकता

शिवसिंह ने बहुत से कवियों की कविता उद्धृत करते समय उनके ग्रन्थ-रचनाकाल सूचक छंद भी उद्धृत किये हैं। इन छंदों के द्वारा जो रचनाकाल निकलता है, वही सम्बत् उन कवियों के जीवन-चरित्र में भी दिया गया है, जो निश्चय ही उनका उत्पत्ति-काल नहीं हो सकता। नीचे ऐसे कवियों की तालिका प्रस्तुत की जा रही है।

(१) इच्छा राम अवस्थी सम्बत् १८५५ में उ०, ब्रह्म विलास का रचनाकाल-सूचक छंद :—

सम्बत् सत दस आठ गत ऊपर पांच पचास
सावन सित दुति सोम कंह कथा अरम्भ प्रकाश

(२) करण भट्ट, सम्बत् १७९४ में उ०, साहित्य चन्द्रिका का रचनाकाल-सूचक छंद :—

वेद[४] खंड[९] गिरि[७] चंद्र[१] गनि भाद्र पंचमी कृष्ण
गुरु वासर टीका करन पूर्यो ग्रंथ कृतष्ण

(३) कालिदास त्रिवेदी, सम्बत् १७४९ में उ०, कधू विनोद का रचनाकाल सूचक छंद :—

सम्बत् सत्रह सै उनचास
कालिदास किय ग्रंथ विलास

(४) कवीन्द्र, उदयनाथ त्रिवेदी, सम्बत् १८०४ में उ०, रस चन्द्रोदय का रचनाकाल सूचक छंद :—

सम्बत् सतक अठारह चारि
नाइकादि नामक निरधारि
लहि कविन्द लच्छित रस पंथ
किय विनोद चंद्रोदय ग्रंथ

सरोज में 'सतक' के स्थान पर 'सकत' छप गया है।

(५) गुमान मिश्र, सांड़ी वाले, सम्बत् १८०५ में उ०, नैषधचरित के हिन्दी अनुवाद, 'काव्य-कला निधि' का रचनाकाल सूचक छंद :—

संयुत प्रकृति पुरान सै, संवत्सर निरदंभ
सुर गुरु सह सितसप्तमी कर्‌यो ग्रंथ आरम्भ
प्रकृति=५, पुरान सै=१८००

(६) गोविन्द कवि, सम्बत् १७६१ में उ०, कर्णाभरण का रचनाकाल सूचक छंद :—
नग[७] निधि[९] ऋषि[७] विधु[१] बरस मैं, सावन सित तिथि संभु
कीन्ह्यो सुकवि गोविन्द जू कर्नाभरन अरम्भ

जीवन खंड में सम्बत् १७६१ दिया हुआ है। इस सम्बन्ध में पं० विश्वनाथ प्रसाद मिश्र का यह अनुमान है :—

"उत्तरार्ध में सं० १७६१ दिया गया है और ग्रन्थ का निर्माण-काल "नग निधि ऋषि विधु" दिया है, जिससे १७९७ होता है। मैं समझता हूँ कि नग के स्थान पर नभ है जिसका अर्थ शून्य होता है; पर सेंगर ने नभ का कहीं-कहीं एक भी अर्थ ले लिया है। अथवा उत्तरार्ध में १७९७ ही रहा होगा, पर वह पढ़ा गया १७९१, या १७९७ के स्थान पर १७९१ छापे की भूल से हो गया।
—हिन्दुस्तानी, अप्रैल-जून १९४३

यह ग्रन्थ भारत जीवन प्रेस से प्रकाशित हो चुका है। इसमें उक्त दोहे का ऊपर वाला ही पाठ है और पाद टिप्पणी में "सम्बत् १७९७" भी दिया गया है। अतः ग्रन्थ का रचनाकाल सम्बत् १७९७ ही है। सरोज में प्रमाद से १७९१ छप गया है। जो हो सरोज में इस दोहे के आधार पर ही सम्बत् दिया गया है। इसमें संदेह के लिये रंच मात्र भी अवकाश नहीं। प्रथम संस्करण में इसका समय १७९८ दिया गया है।

(७) ग्वाल कवि, सम्बत् १८७९ में उ०, यमुना लहरी का रचनाकाल सूचक छंद :—
सम्वत् [९]निधि रिसि[७] सिद्धि[८] ससि[१] कार्तिक मास सुजान
पूरनमासी परम प्रिय राधा हरि को ध्यान

(८) गुरुदीन पांड़े, सम्बत् १८९१ में उ०, वाक् मनोहर पिंगल का रचनाकाल सूचक छंद :—
सिसिर सुखद ऋतु मानिये, माह महीना जन्म
सम्बत् नभ[०] रस[६] बसु[८] ससी[१] वाक मनोहर जन्म

रचनाकाल हुआ सं० १८६० पर शिवसिंह ने अनेक स्थलों पर नभ का अर्थ शून्य न लेकर एक लिया है।[१] यहाँ रस का अर्थ ९ किया है। अतः उन्होंने रचनाकाल १८९१ में दिया है।

(९) चेतन चन्द्र कवि, सम्बत् १६१६ में उ०, शालिहोत्र का रचनाकाल सूचक छंद :—
सम्बत् सोलह सौ अधिक चार चौगुने जान
ग्रन्थ कह्यो कुसलेश हित रच्छक श्री भगवान
(१६००)+(चार चौगुने=४×४=१६)=१६१६

(१०) छेदीराम कवि, सम्बत् १८९४ में उ०, कविनेह पिंगल का रचनाकाल सूचक छंदः —
मकर महीना पच्छ सित सम्वत् सर हरकेह
जुग[४] ग्रह[९] बसु[८] जिव[१] कुज सहित जन्म लियो कविनेह

---

(१) देखिये; आगे उद्धृत १६ संख्यक प्राणनाथ कवि।

(११) जशोदा नन्द कवि, सम्बत् १८२८ में उ०, बरवै नायिका भेद का निर्माणकाल सूचक छंद :—

मैं लिखि लीनों चैतहि तेरसि पाइ
सम्बत हय[७] बिबि[२] करि[८] कै ब्रह्म[१] मिलाइ

प्रमाद से शिवसिंह ने १८२७ के बदले १८२८ सम्बत् दे दिया है।

(१२) तुलसी (३) यदुराय के पुत्र, सम्बत् १७१२ में उ०, संग्रह माला का रचनाकाल सूचक दोहा :—

सत्रह सौ बारह बरस सुदि असाढ़ बुधवार
तिथि अनंग को सिद्ध यह भई जु सुख को सार

(१३) दीनदयाल गिरि, सम्बत् १९१२ में उ०, अन्योक्ति कल्पद्रुम का रचनाकाल सूचक दोहा :—

कर[२] छिति[१] निधि[९] ससि[१] साल में माघ मास सितपच्छ
तिथि बसंत जुत पंचमी रबिवासर सुभ स्वच्छ
सोभित तेहि अवसर विषे बसि कासी सुखधाम
विरच्यो दीनदयाल गिरि कलपद्रुम अभिराम

(१४) दयानाथ दुबे, सम्बत् १८८९ में उ०, आनन्द रस नायिका भेद का रचनाकाल सूचक दोहा :—

सम्बत् ग्रह[९] बसु[८] गज[८] मही[१] कह्यो यहै निरधार
सावन सुदि पूनो सनी भयो ग्रन्थ परचार

(१५) नाथ (५), हरिनाथ गुजराती, सम्बत् १८२६ में उ०, अलंकार दर्पण का रचनाकाल सूचक दोहा :—

रस[६] भुज[२] बसु[८] अरु रस[१] दे सम्बत् कियो प्रकास
चन्दवार सुभ सत्तमी माधव पच्छ उजास

(१६) प्राणनाथ कवि, ब्राह्मण, बैसवारे के सम्बत् १८५१ में उ०, 'चक्राव्यूह का इतिहास' का रचनाकाल सूचक दोहा :—

सम्बत व्योम[०] नराच[५] बसु[८] मही[१] महिज उर्ज मास
शुक्ल पच्छ तिथि नवमि लिखि चक्राव्यूह इतिहास

शिवसिंह ने व्योम का अर्थ शून्य नहीं किया है, एक किया है। इस सम्बन्ध में पंडित विश्वनाथ प्रसाद मिश्र अपने हिन्दुस्तानी वाले लेख में निम्नांकित टिप्पणी देते हैं :—

"यहां कदाचित व्योम के स्थान पर सोम होगा अथवा व्योम का अर्थ शून्य न ग्रहण करके एक मान लिया गया होगा।"

(१७) बीर (२) बीरबर, कायस्थ, दिल्ली निवासी, सम्बत् १७७७ में उ०, कृष्ण चन्द्रिका का रचनाकाल सूचक दोहा :—

चन्द्र[१] वार[७] ऋषि[७] निधि[७] सहित लिखि सम्बत्सर जानि
चन्द्रवार एकादसी माघ बदी उर आनि
करयो जथा मति आपनी कृष्ण चन्द्रिका ग्रन्थ
जैसे कछू बताइ गे रब पंडित पंथ

यहां 'अंकानाम् वामतो गतिः' का अनुसरण नहीं हुआ है और निधि समुद्र के अर्थ में स्वीकार किया गया है।

(१८) बालनदास कवि, सम्बत् १८५० में उ०, रमल सार का रचनाकाल सूचक दोहा :—

इन्दु[१] नाग[८] अरु बान[५] नभ[०] अंक शब्द श्रुति मास
कृष्ण पच्छ तिथि पंचमी बरनेउ बालन दास

यहाँ भी 'अंकानाम वामतो गतिः' का अनुसरण नहीं हुआ है।

(१९) मान कवि, ब्राह्मण (३) बैसवारे के, सम्बत् १८१८ में उ०, कृष्ण कल्लोल का रचनाकाल सूचक दोहा :—

अष्टादस सै बरस सो सरस अष्ट दस साल
सुन सैनी बर वार को प्रगट्यो ग्रन्थ विशाल

(२०) मेधा कवि, सम्बत् १८६७ में उ०, चित्रभूषण का रचनाकाल सूचक दोहा :—

सम्बत् मुनि[७] रस[६] बसु[८] ससी[१] जेठ प्रथम सनिवार
प्रगट चित्र भूषन भयो कवि मेधा सिंगार

(२१) रस साहि, कायस्थ, सम्बत् १८१३ में उ०, रस बिलास का रचनाकाल सूचक दोहा :—

गुन[३] ससि[१] बसु[८] ससि[१] जानिये सम्बत् अंक प्रकास
भादौं सुदि दसमी सनी जनम्यो रूप विलास

(२२) रघुनाथ, बनारसी, सम्बत् १८०२ में उ०, काव्य कलाधर का रचनाकाल सूचक दोहा :—

ठारह सत पै द्वै अधिक सम्बत्सर सुखसार
काव्य कलाधर को भयो कातिक में अवतार

(२३) रसलीन, सय्यद गुलाम नबी, विलग्रामी, सम्बत् में १७९८ उ०, रस प्रबोध का रचना काल सूचक दोहा—

सत्रह सै अट्ठानबे मधु सुधि छठि बुधवार
बिलग्राम में आई के भयो ग्रन्थ अवतार

(२४) सूरति मिश्र, सम्बत् १७६६ में उ०, अलंकार माला का रचनाकाल सूचक दोहा :—

सम्बत् सत्रह सै बरस छासठि सावन मास
सुरगुरु सुदि एकादसी कीन्हों ग्रन्थ प्रकास

(२५) शम्भुनाथ कवि (२) बन्दी जन, सम्बत् १७९८ में उ०, राम विलास रामायण का रचमाकाल सूचक दोहा :—

बसु[८] ग्रह[९] मुनि[७] ससधर[१] बरस सित फागुन कर मास
शंभुनाथ कवि ता दिनै कीन्हों राम विलास

(२६) शंभुनाथ कवि (४) त्रिपाठी, डौंड़ियाखेरे वाले, सं० १८०९ में उ०, बैताल पचीसी के अनुवाद का रचनाकाल सूचक दोहा :—

नंद[९] व्योम[०] धृति[१८] जानि कै सम्बत् सर कवि शम्भु
माघ अँध्यारो द्वैज को कीन्हो तत आरम्भु

(२७) सुन्दर कवि, ग्वालियर निवासी, सं० १६८८ में उ०, सुन्दर श्रृंगार का रचनाकाल सूचक दोहा :—

सम्वत् सोरह सौ बरस बीते अट्ठासीति
कातिक सुदी षष्ठी गुरुहि रच्यो ग्रन्थ करि प्रीति

इन २७ कवियों के उ० सम्बत् और उनके ग्रन्थों के सरोज में उद्धृत रचनाकाल सूचक छंदों से निकलने वाले सम्बत् में पूरी एकता है। इनके अतिरिक्त सरोज में हठी का सम्बत १८८७ दिया गया है और इनके राधा सतक का रचनाकाल सम्बन्धी निम्नांकित दोहा भी उदाहरण में उद्धृत किया गया है।

ऋषि[७] सु वेद[४] बसु[८] ससि[१] सहित निर्मल मधु को पाइ
माधो तृतीया भृगु निरखि रच्यो ग्रन्थ सुखदाइ

इसका रचनाकाल सम्बत् १८४७ हुआ। भारत जीवन प्रेस से प्रकाशित प्रति में "वेद" के स्थान पर 'देव' पाठ है जिसका अर्थ है त्रिदेव (ब्रह्मा, विष्णु, महेश)। ऐसी स्थिति में रचनाकाल सम्बत् १८३७ हुआ। पं० विश्वनाथ प्रसाद मिश्र इस सम्बन्ध में अपने हिन्दुस्तानी वाले लेख में लिखते हैं :—

"हठी जी के नाम के साथ उत्तरार्ध में १८८७ सम्बत छपा है। मुझे यह छापे की अशुद्धि जान पड़ती है। यह वस्तुतः १८४७ ही है। १८८७ में हठी जी का जन्म माना जाय तो क्या होगा, इसे समझदार ही समझे।" प्रथम संस्करण में १८४७ है भी।

इन उद्धरणों से स्पष्ट है कि सरोज के सम्बत् उपस्थिति सूचक हैं न कि उत्पत्ति सूचक।

ङ. भाषाकाव्य संग्रह और सरोज के सन्-सम्वत्

सरोज के संकलन-संपादन में महेशदत्त के काव्यसंग्रह से भी सहायता ली गई है। इस ग्रन्थ के अन्त में सभी ५१ संकलित कवियों का संक्षिप्त जीवन चरित्र भी दे दिया गया है। शिवसिंह ने अनेक कवियों के जीवन की सामग्री एवं सन्-सम्बत् इसी ग्रन्थ से लिये हैं। काव्य संग्रह में जो सम्बत् ग्रन्थ का रचनाकाल है या मृत्यु सम्बत् है, सरोज में वही सम्बत् देकर "में उ०" लिख दिया गया है और स्पष्ट बात को भी अस्पष्ट कर दिया गया है। इससे भी स्पष्ट है कि सरोज में दिये गये सम्बत् जन्मकाल न होकर उपस्थिति काल या रचनाकाल है। आगे दोनों ग्रन्थों के तथ्य प्रमाण रूप उद्धृत किये जा रहे हैं।

सरोज	भाषाकाव्य संग्रह
(१) नवल दास, सम्बत् १३१६ में उ० हमको सन् सम्बत् के ठीक होने में संदेह है।	(१) नवलदास ग्राम गूढ़ के रहने वाले थे और सम्बत् १९१३ में वहीं मृत्युवश हुये। (सरोजकार को १९१३ का १३१६ मिला, सम्भवतः प्रथम संस्करण में छापे की उलट-पुलट के कारण ऐसा हो गया था।)

(२) चरण दास, सम्बत् १५३० में उ०	(२) ये सम्बत् १५३७ में मरे थे।
(३) रामनाथ प्रधान, सम्बत् १६०२ में उ०	(३) ये सम्बत् १८५६ में उत्पन्न हुये थे और सम्बत् १९२५ में वहीं (अयोध्या में) मृतक हुये। (शिव सिंह ने बीच का सम्बत् उठाकर रख दिया है।)
(४) श्रीपति कवि, सम्बत् १७०० में उ०	(४) ये बड़े प्राचीन कवि हैं अर्थात् सम्बत् १७०५ में थे।
(५) हिमाचल राम, सम्बत् १६०४ में उ०	(५) और संम्बत् १६०५ में वहीं मृतक हुये।
(६) दास (२) बेनीमाधव दास, सम्बत् १६५५ में उ०, सम्बत् १६६६ में देहान्त हुआ।	(६) ये सम्बत् १६६६ में हरिपुर वासी हुये।
(७) बंशीधर मिश्र, सम्बत् १६७२ में उ०	(७) यह बात (मृत्यु) सम्बत् १६७२ की है।
(८) नरहरि कवि, सम्बत् १६०० के बाद उ०	(८) सम्बत् १६६६ में ये स्वर्ग्गी (य) हुये।
(९) हरिनाथ, सम्बत् १६४४ में उ०	(९) अपने बाप (नरहर) के मरने के समय (१६६६) २२ वर्ष के थे। और १७०३ सम्बत् में मरे। (इस ग्रन्थ के अनुसार हरिनाथ जी १६४४ में उत्पन्न हुये। अतः सरोज के '१६४४ में उ०' का अर्थ हुआ १६४४ में उत्पन्न।)
(१०) मदनगोपाल शुक्ल, सम्बत् १८७६ में उ०	(१०) इन्होंने सम्बत् १८७६ में बलराम पुर के महाराजा दिग्विजय सिंह जी के पिता अर्जुनसिंह के नाम से अर्जुन विलास नामक ग्रन्थ बनाया।
(११) सहज राम (२) सनाढ्य बँधुआ वाले, सम्बत् १६०५ में उ०	(११) सम्बत् १६०५ में इस असार संसार से निराश हो स्वर्गवास किया।
(१२) भगवतीदास, ब्राह्मण सम्बत् १६८८ में उ०	(१२) इन्होंने सम्बत् १६८८ में नासिकेतोपाख्यान निर्माण किया। और ये सम्बत् १७१५ में स्वर्ग्गी (य) हुये।
(१३) रतन कवि (१) ब्राह्मण बनारसी, सम्बत् १६०५ में उ०	(१३) इन्होंने 'प्रेम रत्न' नामक ग्रन्थ सम्बत् १८०५ में बनाया। (प्रमाद से शिवसिंह ने १८०५ को १६०५ लिख दिया है। इस कवि का विवरण इसी ग्रन्थ से लिया गया है जो स्वयम् अत्यन्त भ्रमपूर्ण है।)

भाषाकाव्य संग्रह इस बात को पूर्ण रूप से प्रमाणित कर देता है कि सरोज के सन् सम्बत् उपस्थिति-काल ही हैं।

च. उ० को उपस्थित प्रमाणित करने वाले कुछ अन्य अन्तः साक्ष्य

जीवन खंड में कवियों के जो इतिवृत्त दिये गये हैं और भूमिका में जो सूचनाएँ हैं उन पर यदि विचार किया जाय तो कतिपय तथ्य एवम् तिथियाँ ऐसी मिलती हैं, जो स्पष्ट सिद्ध करती हैं कि सरोज में कवियों के नामों के साथ संलग्न सम्बत् जन्म सम्बत् नहीं हैं, उपस्थिति-सम्बत् हैं। प्रमाण के लिए आगे ऐसे कुछ विवरण प्रस्तुत किये जा रहे हैं :—

(१) अजीत सिंह राठौर, उदयपुर के राजा सम्बत् १७८७ में उ०। इन्होंने अपने वंश के सम्बन्ध में 'राजरूप का ख्यात' नामक ग्रन्थ बनवाया। इसके तीसरे खंड में सूर्य वंश जहाँ से प्रारम्भ हुआ वहाँ से यशवंत सिंह के पुत्र अजीत सिंह के बालेपन अर्थात् १७८७ तक का वर्णन है। स्पष्ट है कि १७८७ अजीत सिंह की बाल्यावस्था का सम्बत् है, न कि जन्म का।

(२) कोविद कवि, श्री पं० उमापति त्रिपाठी, अयोध्या निवासी, सम्बत् १९३० में उ०। इनके विवरण में आगे लिखा है, "सम्बत् १९३१ में कैलाश को पधारे।" यदि यह उल्लेख न होता तो भी १९३० इनका जन्म काल नहीं हो सकता था, क्योंकि चार ही वर्ष बाद सरोज का प्रणयन हुआ और उस समय यह षट् शास्त्र के वक्ता, शास्त्रार्थ में दिग्विजयी और कवि के रूप में प्रसिद्ध थे।

(३) कमन्च कवि राजपूताने वाले, सम्बत् १७१० में उ०। इनकी कविता हमको एक संग्रह पुस्तक में मिली है जो सम्बत् १७१० की लिखी हुई है। स्पष्ट है १७१० कमंच का जन्म काल नहीं है। अधिक से अधिक यह उनका रचना काल हो सकता है। यह भी संभावना है कि कवि १७१० के बहुत पहले हो गया हो। वह १७१० के पहले हुआ इतना निश्चित है। कब हुआ, ठीक नहीं कहा जा सकता।

(४) खानखाना, नवाब अब्दुल रहीम, सम्बत् १५८० में उ०। विवरण में लिखा गया है— "यह ७२ वर्ष की अवस्था में सन् १०३६ हिजरी में सुरलोक को सिधारे।" १०३६ हिजरी बराबर १६८६ विक्रमी या १६२९ ई०। अतः इनका जन्मकाल हुआ सं० १६१४ विक्रमी या १५५७ ई०। अतः १५८० इनका जन्म काल नहीं हो सकता।

(५) ज्ञान चन्द्र यती, राजपूताने वाले सं० १८७० में उ०। इन्हीं की सहायता से टाड ने राजपूताने का इतिहास लिखा था। टाड राजस्थान की रचना सम्बत् १८८० में हुई, सरोज की भूमिका में यह उल्लेख हुआ है। ऐसी स्थिति में क्या १० वर्ष के बालक की सहायता से टाड का राजस्थान लिखा गया ?

(६) छेम करण, ब्राह्मण धनौलीवाले, सम्बत् १८७५ में उ०। विवरण में लिखा गया है— "प्रायः ९० वर्ष की अवस्था में, सं० १९१८ में देहान्त हुआ।" अतः इनका जन्म १८२८ के आस-पास होना चाहिये था और १८७५ इनका रचना काल है।

(७) जुगल किशोर भट्ट (२) कैथलवासी, सं० १७९५ में उ०। इन्होंने सं० १८०३ में अलंकार निधि नामक एक ग्रन्थ अलंकार का अद्वितीय बनाया है यदि १७९५ जन्म सं० है तो क्या कवि ने ८ वर्ष की अल्प आयु में यह अलंकार ग्रन्थ बना डाला ?

(८) जानकी प्रसाद बनारसी, सं० १८६० में उ०। सरोज में लिखा गया है कि उन्होंने "सं० १८७१ में केशव कृत रामचन्द्रिका ग्रन्थ की टीका बनाई है।" क्या ११ वर्ष के बालक ने रामचन्द्रिका ऐसे गूढ़ ग्रन्थ की टीका तैयार कर ली ?

(६) जशवंत सिंह बघेले राजा तिरवा, सं० १८५५ में उ० । इनके सम्बन्ध में लिखा गया है—"यह महाराज संस्कृत भाषा, फारसी आदि में बड़े पंडित थे ।[२]......सं० १८७१ में स्वर्गवास हुआ ।" यदि १८५५ इनका जन्म सं० है तो १६ वर्ष की ही अवस्था में संस्कृत, हिन्दी और फारसी के पंडित कैसे हो गये और कैसे नायिका भेद ग्रन्थ लिखा ?

(१०) गोस्वामी तुलसीदास, सम्बत् १६०१ में उ० । इनके विवरण में लिखा गया है—"सं० १५८३ के लगभग उत्पन्न हुये थे ।" जब १५८३ जन्म सं० दिया हुआ है तो १६०१ में ये कैसे उत्पन्न हो सकते हैं ?

(११) तीर्थराज ब्राह्मण बैसवारे के, सं० १८०० में उ० । विवरण में लिखा गया है कि इन्होंने "सं० १८०७ में समरसार भाषा किया" । ऐसी स्थिति में सं० १८०० इनका जन्म काल नहीं हो सकता ।

(१२) तोषकवि, सं० १७०५ में उ० । इनके सम्बन्ध में लिखा गया है—"कालिदास तथा तुलसीजी ने भी इनकी कविता अपने ग्रन्थों में बहुत सी लिखी है ।" भूमिका के अनुसार तुलसी की कवि-माला का संकलन सं० १७१२ में हुआ । यदि १७०५ तोष जी का जन्म काल है तो १७१२ तक तो तोष जी ने अक्षराभ्यास भी न किया रहा होगा । अतः १७०५ उनका जन्म काल नहीं हो सकता ।

(१३) द्विज देव, सं० १६३० में उ० । विवरण में लिखा गया है कि "सं० १६३० में देहान्त हुआ ।" जब १६३० मृत्यु काल है तो यही उनका जन्म काल कैसे हो सकता है ? आगे इसी विवरण में यह भी उल्लेख है—"प्रथम सं० १६०७ के करीब इनको भाषा काव्य करने की बहुत रुचि थी ।"

(१४) पुण्ड कवि, सं० ७७० में उ० । इतिवृत्त में इनके आश्रयदाता राजा मान को सं० ७७० में उपस्थित बताया गया है । अतः ७७० पुण्ड का जन्म सं० नहीं हो सकता ।

(१५) बेनी कवि (२) वंदीजन बेंदी, वाले सम्बत् १८४४ में उ० । इनके सम्बन्ध में लिखा गया है कि यह "बहुत वृद्ध होकर सम्बत् १८६२ के करीब मर गये ।" यदि १८४४ को जन्म काल माना जाता है तो बेनी की मृत्यु ४८ वर्ष की वय में हुई, जिसे बहुत वृद्ध होना नहीं कहा जा सकता ।

(१६) व्यास स्वामी, हरीराम शुक्ल उड़छेवाले सम्बत् १५६० में उ० । इनके विवरण में लिखा है "इन महाराज ने सम्बत् १६१२ में ४५ वर्ष की अवस्था में उड़छे से वृन्दावन में आकर भागवत धर्म को फैलाया ।" उक्त कथन के अनुसार व्यास जी का जन्म सम्बत् १५६७ है न कि १५६० ।

(१७) ब्रजवासी दास, सम्बत् १८१० में उ० । सरोज के अनुसार "सम्बत् १८२७ में ब्रजविलास नामक ग्रन्थ बनाया ।" तो क्या १७ वर्ष की अल्प वय में ब्रजविलास ऐसा विशाल ग्रन्थ बनाया था ?

(१८) बेनी दास कवि, बन्दी जन मेवाड़ देश के निवासी सम्बत् १८९२ में उ० । यह कविराज सम्बत् १८७० के करीब मारवाड़ देश के प्रबन्ध-लेखक अर्थात् तारीखनवीसों में थे ।" यदि १८९२ जन्म काल है तो क्या जन्म लेने से २ वर्ष पहले ही यह प्रबन्ध लेखक हो गये थे ?

(१९) मीराबाई सम्बत् १४७५ में उ० । "........मीराबाई का विवाह सम्बत् १४७० के करीब राना मोकल देव के पुत्र राना कुम्भ करणसी, चित्तौर नरेश के साथ हुआ ।" यदि १४७५ जन्म काल है तो क्या जन्म लेने के ५ वर्ष पहले ही मीरा का विवाह हो गया था, जब कि वह माँ के गर्भ में भी नहीं आई थी ?

(२०) लाल कवि (२) बिहारी लाल त्रिपाठी, टिकमापुरवाले, सम्बत् १८८५ में उ०। चिन्तामणि के विवरण में इनके सम्बन्ध में लिखा गया है कि यह सम्बत् १९०१ तक विद्यमान थे। यदि १८८५ जन्म काल है तो क्या बिहारी लाल त्रिपाठी १६ वर्ष तक ही जीवित रहे और इसी अल्प आयु में सुकवि भी हो गये ?

(२१) श्रीधर कवि (२) राजा सुब्बा सिंह चौहान, कोयलवाले, सम्बत् १८७४ में उ०। विद्वन्मोद तरंगिणी इनकी रचना है। सरोज की भूमिका के अनुसार यह ग्रन्थ १८७४ में बना। यदि १८७४ जन्म काल भी है तो क्या जिस साल यह उत्पन्न हुये, उसी साल इन्होंने ग्रन्थ रचना भी कर ली ?

(२२) बलदेव बघेल खंडी, सम्बत् १८०९ में उ०। भूमिका के अनुसार इन्होंने सम्बत् १८०३ में "सत्कवि गिराविलास" की रचना की। यदि १८०९ जन्म काल है, तो क्या जन्म से ६ वर्ष पहले ही ग्रन्थ रचना हो गई ?

(२३-५०) जो भी कवि १९१० या इसके बाद उ० कहे गये हैं, यदि उ० उत्पन्न का ही अर्थ देता है तो २० या इससे कम ही वर्ष की वय में वे इतने समर्थ नहीं हो सकते कि उन्हें सरोज में सम्मिलित किया जा सकता। ऐसे कवियों की सूची पर्याप्त लम्बी है जो नीचे दी जा रही है।

कवि	सम्बत् में उ०
(१) असकन्द गिरि	१९१६
(२) अलीमन	१९३३
(३) अनीस	१९११
(४) अम्बर भाट	१९१०
(५) कुन्ज लाल	१९१२
(६) कान्ह कवि, कन्हई लाल	१९१५
(७) कामता प्रसाद	१९११
(८) कामता प्रसाद ब्राह्मण	१९११
(९) चैन सिंह खत्री	१९१०
(१०) जनकेश भाट	१९१२
(११) जवाहिर भाट, बुन्देलखंडी	१९१४
(१२) दीनदयाल गिरि	१९१२
(१३) दीनानाथ, बुन्देल खंडी	१९११
(१४) नरेन्द (२) महाराज नरेन्द्र सिंह, पटियाला	१९१४
(१५) पंचम कवि नवीन (३)	१९११
(१६) पंडित प्रवीण, ठाकुर प्रसाद मिश्र	१९२४
(१७) पंचम कवि, डलमऊ वाले	१९२४
(१८) फूलचन्द, ब्राह्मण, बैसवारे वाले	१९२८
(१९) बलदेव, क्षत्रिय, द्विजदेव के गुरु	१९११
(२०) भूमि देव	१९११
(२१) भूसुर	१९११

(२२) माखन लखेरा (२) पन्ना वाले	१६११
(२३) मानिकचन्द, कायस्थ	१६३०
(२४) रघुनाथ उपाध्याय, जौनपुर	१६२१
(२५) राधेलाल कायस्थ, बुन्देलखंडी	१६११
(२६) शिवदीन, भिनगा वाले	१६१५
(२७) सुदर्शन सिंह, राजा चन्दापुर के राजकुमार	१६३०
(२८) हरिजन, ललितपुर निवासी	१६११

यदि इन सब कवियों का दिया हुआ सम्बत् जन्मकाल है, तो ये सब सरोज के प्रणयन काल में विद्यमान रहे होंगे। ऐसी स्थिति में शिवसिंह ने सब को "वि०" लिखा होता। इससे भी स्पष्ट है कि ये सम्वत् उपस्थिति काल हैं।

(५१-५७) कालिदास हजारा का संग्रहकाल सरोज की भूमिका के अनुसार सम्बत् १७५५ है। हजारा में आये निम्नांकित १७ कवियों को १७३५ या इसके बाद उ० कहा गया है। निश्चय ही यह इन कवियों का जन्मकाल नहीं हो सकता।

कवि	सम्बत् उ०
(१) कुन्दन	१७५२
(२) कारबेग	१७५६
(३) गोविन्द	१७५७
(४) छैल	१७५५
(५) जसवंत (२)	१७६२
(६) ब्रजदास	१७५५
(७) बिहारी (२)	१७३८
(८) भूषण	१७३८
(९) मोती राम	१७४०
(१०) मन सुख	१७४०
(११) मिश्र	१७४०
(१२) मुरलीधर	१७४०
(१३) मीर रुस्तम	१७३५
(१४) मुहम्मद	१७३५
(१५) मीरी माधव	१७३५
(१६) लोधे	१७७०
(१७) सामन्त	१७३८

(६८-६९) तुलसी कवि के संग्रह माला का रचनाकाल १७१२ है। इस ग्रन्थ में आये दो कवियों, श्री हठ एवम् सिद्ध का काल क्रमशः १७६० और १७८५ दिया गया है। निश्चय ही यह इनका जन्म काल नहीं हो सकता।

छ. उ० को उपस्थित प्रमाणित करने वाले कुछ वाह्य साक्ष्य

यहाँ तक तो अन्तःसाक्ष्य की बात रही। अब बहिःसाक्ष्य के आधार पर भी सरोज के सम्बतों की कुछ जाँच कर ली जाय। सभा की खोज रिपोर्टों से प्राचीन काल के अनेक कवियों के

ग्रन्थों का रचनाकाल ज्ञात होता है। ऐसे कुछ कवियों के ग्रन्थों का सरोज में दिया हुआ सम्बत् और खोज-विवरणों से प्राप्त सम्बत् तुलनात्मक अध्ययन के लिये प्रस्तुत किये जा रहे हैं, जिससे स्पष्ट हो जायगा कि सरोज के 'उ०' का अर्थ उत्पन्न नहीं है, बल्कि उपस्थित है।

कवि	सरोज का सम्बत्	ग्रन्थ	रचनाकाल	खोज रिपोर्ट-सन्
(१) अजबेस	१८९२	बघेल वंश वर्णन	१८९२	१९०१ ई०
(२) अहमद	१६७०	सामुद्रिक	१६७८	१९१७ ई०
		गुण सागर	१६४८	१९०६ ई०
(३) असकन्दगिरि	१९१६	रस मोदक	१९०५	१९०५ ई०
(४) अनाथ दास	१७१६	प्रबोध चन्द्रोदय नाटक या	१७२६	१९२६ ई०
		सर्वसार उपदेशविचारमाला	१७२६	१९२० ई०
(५) अनवर खाँ	१७८०	अनवर चन्द्रिका	१७७७	१९०६ ई०
(६) कुमार मणि भट्ट	१८०३	रसिक रसाल	१७७६	१९२० ई०
(७) कुलपति मिश्र	१७१४	रस रहस्य	१७२७	१९२० ई०
(८) काशिराज	१८८९	चित्रचन्द्रिका	१८८९	१९०९ ई०
(९) गोकुल नाथ	१८३४	चेतचन्द्रिका	१८२८	१९२० ई०
(१०) गुलाबसिंह	१८४६	मोक्ष पंथ	१८३५	१९२० ई०
(११) दूलह	१८०३	कविकुल कंठाभरण	१८०७	१९२० ई०
(१२) प्रियादास	१८१६	भक्ति रसबोधिनी	१७६९	१९२० ई०
(१३) बेनी प्रवीण	१८७६	नवरस तरंग	१८७४	१९२० ई०
(१४) बंशीधर	१९०१	साहित्य तरंगिणी	१९०७	१९२० ई०
(१५) सुखदेव मिश्र	१७२८	वृत्त विचार	१७२८	१९२० ई०

ऊपर जो तालिका दी गई है वह बहुत बढ़ाई जा सकती है, पर लक्ष्य तक पहुँचने के लिये इतना ही पर्याप्त है।

इन सब प्रमाणों से स्पष्ट है कि सरोज में उत्पत्ति काल देने की प्रणाली नहीं ग्रहण की गई है। शिवसिंह ने उपस्थिति काल ही दिया है। सरोज में ५३ कवियों को वि० कहा गया है। यदि जन्मकाल देने की प्रणाली ग्रहण की गई होती, तो इन समकालीन कवियों का जन्म काल अधिक आसानी से दिया जा सकता था और इनको वि० लिखने की कोई आवश्यकता न पड़ती।

ज. उ० का रहस्य

अब एक बार इस उ० पर पुनः विचार कर लेना चाहिये। यदि शिवसिंह का उ० से तात्पर्य उत्पन्न नहीं था, उपस्थित था, जैसा कि ऊपर सिद्ध किया गया है, तो उन्होंने परिचय देते समय अकबर के सम्बन्ध में "सम्बत् १५८४ में उत्पन्न हुये" क्यों लिखा? न उन्होंने ऐसा लिखा होता और न यह भ्रान्ति उत्पन्न हुई होती।

१६२३ की खोज रिपोर्ट में सरोज की एक हस्तलिखित पोथी का विवरण संख्या ३६८ पर है। यह पोथी गाँव दिकौली, पोष्ट बिसवाँ, जिला सीतापुर के तालुकेदार ठा० दिग्विजय सिंह के पास थी। इस पोथी के आदि और अंत के अंश नमूने के लिये उद्धृत किये गये हैं। अंत के उदाहरण में अन्तिम १३ कवियों का विवरण दिया है। इन १३ कवियों में ५ कवियों का सन्-सम्बत् भी दिया हुआ है, पर सन् सम्बत् के साथ "में उ०" नहीं लगा है, यह आश्चर्यजनक है। उक्त रिपोर्ट से इन १३ कवियों के विवरण प्रमाण के लिये उद्धृत किये जा रहे हैं :—

"(१) हरीराम प्राचीन, सम्बत् १६८०। इनका नखशिख अति सुन्दर है।

(२) हिमाचलराव कवि ब्राह्मण भटौली जिला फैजाबाद सम्बत् १६०४ सीधी-सादी कविता है।

(३) हीरालाल कवि, शृंगार में बहुत उत्तम कवित्त है।

(४) हुलास कवि, ऐज़न।

(५) हरचरण दास कवि, इन्होंने एक ग्रन्थ भाषा-साहित्य में महासुन्दर अद्भुत अपूर्व "बृहत कवि वल्लभ" नामक बनाया है। इस ग्रन्थ में अपने ग्राम, सन्-सम्बत् आदि का पता नहीं दिया है।

(६) हरिचन्द बरसाने वाले, ग्रन्थ बहुत सुन्दर बनाया है लेकिन सन्-सम्बत नहीं है।

(७) हजारी लाल त्रिवेदी विद्यमान हैं। नीति-शान्ति सम्बन्धी इनका काव्य सुन्दर है।

(८) हरिनाथ ब्राह्मण, काशी निवासी १८२६ सम्बत्। इन्होंने अलंकार-दर्पण नामक ग्रन्थ बनाया।

(९) हिम्मत बहादुर नवाब। बलदेव कवि ने सत्गिराविलास में इनके कवित्त लिखे हैं। सम्बत् १७६५ वि०।

(१०) हिम्मत राम कवि, सूदन कवि ने इनकी प्रसंशा की है।

(११) हरिजन कवि, ललित पुर निवासी, सम्बत् १६११। राजा ईश्वरी नारायन सिंह, काशी राज के यहाँ रसिक प्रिया की टीका की।

(१२) हरिचन्द कवि, बन्दीजन चरखारी वाले। राजा छत्रसाल चरखारी के यहाँ थे।

(१३) हुलास राय कवि सालिहोत्र भाषा में बनाया।

इति श्री शिवसिंह सेंगर कृत शिवसिंह सरोज समाप्तम् सम्बत् १६३१ लिषंतम् गौरी शंकर।"

इस लम्बे उद्धरण से स्पष्ट है कि मूलग्रन्थ में कहीं भी कवि नाम के साथ लगे हुये सम्बतों में "में उ०" नहीं लगा हुआ है। यदि यह "में उ०" न लगा रहता तो सरोज को आधार मानकर चलने वाले लोगों ने ऐसी भ्रान्ति न की होती। अस्तु, यह "में उ०" आया कहाँ से? यह प्रश्न विचारणीय है। इसके लिये दो सम्भावनायें हो सकती हैं। एक सम्भावना तो यह है कि प्रकाशन के समय छापने वालों ने यह कारस्तानी की हो, दूसरी सम्भावना यह है कि स्वयं शिवसिंह ने प्रकाशन के लिये देने के पूर्व अपनी प्रति में सम्बतों के साथ "में उ०" लगा दिया हो और छापने वालों ने इसका अर्थ "में उत्पन्न हुये" समझकर अपनी समझ से पाठकों की सुविधा के लिये पहले कवि अकबर के सम्बत् के साथ इस "में उ०" को पूर्ण रूप में दिया और शेष कवियों के संक्षिप्त रूप "में उ०" ही बना रहने दिया।

सरोज का प्रथम संस्करण सरोजकार के जीवनकाल में निकल गया था। यह लीथो में छपा था। इस संस्करण की एक प्रति मुझे सुलभ हो गई है। इसमें कवियों का विवरण ५ विभिन्न स्तंभों

में दिया गया है और "में उ०" नामक वस्तु के यहाँ दर्शन नहीं होते। उदाहरण के लिए जीवन-चरित्र वाले पहले पृष्ठ का कुछ अंश यहाँ उद्धृत किया जा रहा है—

कवियों का जीवन चरित्र

संख्या	कवि का नाम	संबत्	जीवन चरित्र	पत्र जिसमें उसकी कविताई है
१	अकबर बादशाह दिल्ली	१५८४	इनके हालात में अकबर नामा...	१

पहले संस्करण की पूर्ण प्रति सुलभ है। इसमें भूमिका के १०, संग्रह ग्रन्थ। संग्रह खंड में ३३७ और जीवन चरित्र खंड में १३८ पृष्ठ हैं। प्रत्येक खंड की पृष्ठ संख्या अलग-अलग दी गई है। एक और प्रति मिली है, जो खंडित है। इसमें प्रारम्भ के ७८ पृष्ठ नहीं हैं। संग्रह खंड पृष्ठ ३४४ पर समाप्त हुआ है ? जीवन खंड की पृष्ठ संख्या अलग से न देकर इसी में आगे दी गई है। ग्रन्थ अंत मे भी खंडित है। इस खंडित प्रति में कुल ४८२ पृष्ठ हैं। अंत के केवल तीन-चार पन्ने खंडित हैं। इसमें भी कवियों का जीवन चरित्र उक्त ५ विभिन्न स्तम्भों में विभाजित करके दिया गया है। यह सरोज का द्वितीय संस्करण होना चाहिये, क्योंकि तृतीय संस्करण में यह स्तंभ-विभाजन समाप्त हो गया है और उसमें "में उ०" आ गया है। ग्रियर्सन ने द्वितीय संस्करण का उपयोग किया था और उनके अनुसार द्वितीय संस्करण १८८३ ही में हुआ था परन्तु १८८३ ई० तो तृतीय संस्करण का प्रकाशन काल है, अतः सरोज का द्वितीय संस्करण १८७२ और १८७८ के बीच किसी समय हुआ और ग्रियर्सन ने तृतीय संस्करण का उपयोग किया। द्वितीय संस्करण भी लिथो में है। प्रथम दोनों संस्करणों के उदाहरण खंड में कवियों की कोई क्रमसंख्या नहीं दी गई है; यह क्रम संख्या तृतीय संस्करण में भी नहीं है। सप्तम संस्करण में यह है। ऐसा प्रतीत होता है कि कागज की बचत करने के लिए जीवन चरित के स्तंभ शैली तृतीय संस्करण में समाप्त कर दी गई और इन संबतों को उत्पत्ति काल मान लिया गया। पहले कवि अकबर के लिए लिखा गया—"सं १५८४ में उत्पन्न हुए"; शेष कवियों के संबतों के साथ 'में उ०' जोड़ दिया गया। तो इस 'उ०' का भी उत्तरदायित्व नवल किशोर प्रेस पर है; न कि सरोजकार पर।

झ. सरोज के सम्बत् और ई० सन्

सरोज के अनुसार अकबर संबत् १५८४ में उत्पन्न हुआ। उत्पन्न हुआ को यदि हम उपस्थित काल मान लें तो वह सम्बत् १५८४ में उपस्थित था। इतिहास-ग्रन्थों से स्पष्ट है कि अकबर का जन्म १५४२ ई० में हुआ और उसने सन् १५५६ ई० से १६०५ ई० तक राज्य किया। विक्रम सम्बत् के अनुसार अकबर १५९९ विक्रमी में उत्पन्न और १६६२ विक्रमी में दिवंगत हुआ। विक्रम सम्बत् की दृष्टि से देखें तो अकबर १५८४ में पैदा भी नहीं हुआ था, फिर यह उसका रचना काल या उपस्थिति काल कैसे हो सकता है ? हां, यदि १५८४ को हम ई० सन् मान लें, तो उस समय उसकी वय ४२ वर्ष होती है और उक्त सन् उसका रचनाकाल सिद्ध होता है। अतः स्पष्ट है कि अकबर के सम्बन्ध में विक्रमी सम्बत् नहीं प्रयुक्त हुआ है, ई० सन् व्यवहृत हुआ है।

प्रश्न उठता है, एक ही ग्रन्थ में कहीं हम ई० सन् मान लें, कहीं विक्रम-संबत, क्या यह अपनी सुविधा के अनुसार सरोज के संवतों का मनमाना अर्थ करना नहीं हुआ, विशेषकर जब

सर्वत्र संबत् का संक्षिप्त "सं०" ही प्रयुक्त हुआ है। इस प्रश्न का उत्तर देने के लिये हमें एक बार पुन: सरोज की भूमिका के इस वाक्य पर ध्यान देना होगा।

"जिन कवियों के ग्रन्थ मैंने पाये उनके **सन् सम्बत्** बहुत ठीक-ठीक लिखे हैं, और जिनके ग्रन्थ नहीं मिले उनके **सन् सम्बत्** हमने अटकल से लिख दिये हैं।.........मैंने **सन् सम्बत्** और उस कवि के समय निर्माण करने को ऐसा किया है।"

शिवसिंह ने सन्-संबत् दोनों शब्दों का प्रयोग किया है। इससे स्पष्ट है जहाँ उन्हें ई०-सन् मिला उन्होंने ई० सन् का प्रयोग किया और जहाँ विक्रम-संबत मिला वहाँ विक्रम-संबत् का; परन्तु जीवन खंड में प्रमाद वश उन्होंने प्रत्येक स्थल पर "सं०" का ही प्रयोग किया है, जो संबत् का सूचक है। जहाँ-जहाँ उन्होंने ई० सन् का व्यवहार किया है, वहाँ-वहाँ उन्हें "सं०" के स्थान पर सन् देना चाहिये था। ऐसा न करके उन्होंने घपला ही किया है। सभी इतिहासकारों ने सरोज के सन्-संबत् को विक्रम-संबत् माना है, यह एक बहुत बड़ी भूल है जिसका निराकरण होना चाहिये। या तो ई०-सनों को विक्रम-संबत् मानकर उन्हें अशुद्ध सिद्ध करने की भूल की गई है अथवा उन्हें ज्यों का त्यों विक्रम-संबत् स्वीकार करके और भी बड़ी भूल की गई है।

किन-किन कवियों के सम्बन्ध में शिवसिंह ने ई० सन् का प्रयोग किया है? उनके सम्बन्ध में उन्होंने ई० सन् का ही प्रयोग क्यों किया? ऐसा करने से उन्हें क्या सुख या सुविधा मिल गई? ये सभी प्रश्न विचारणीय हैं।

विश्लेषण करने से पता चलता है कि सन्-संबत् का निर्णय करने के लिये शिवसिंह ने निम्नांकित साधन स्वीकार किये थे :—

(१) लेखक की मूल पुस्तक प्राप्त करना और उसमें दिये हुये रचनाकाल को लेखक का रचनाकाल मानना। पीछे इसके कई उदाहरण दिये जा चुके हैं।

(२) संग्रह-ग्रन्थों का सहारा लेना। जिस सन् या संबत् में संग्रह तैयार हुआ उस संग्रह के सारे कवि उस सन्-संबत् के समय या तो जीवित थे या उस युग से पूर्ववर्ती थे। इसी दृष्टिकोण से शिवसिंह बराबर उल्लेख करते गये हैं कि इस कवि की कविता कालिदास के हजारे में है, तुलसी के संग्रह में है, सूदन ने इसकी प्रशंसा की है या दास ने इनकी ब्रजभाषा को प्रमाण माना है। निश्चित रचनाकाल वाले ये संग्रह-ग्रन्थ कवियों के जीवन काल की एक निश्चित अधोरेखा स्थापित करने में निश्चित ही सहायक होते हैं। ऊर्ध्व रेखा की स्थापना अनुमान के सहारे ही हुई है और ऐसी स्थिति में भूल के लिये निरन्तर सम्भावना बनी हुई है।

(३) कवियों की ऐसी उक्तियाँ उद्धृत करना जिनमें उन्होंने अपने आश्रयदाताओं की या तो प्रशंसा की है या उनका उनमें किसी प्रकार उल्लेख हो गया है। यदि ये व्यक्ति प्रसिद्ध ऐतिहासिक पुरुष हैं, तो इतिहास ग्रन्थों से इनकी तिथियाँ निर्धारित कर ली गई हैं। इतिहास ग्रन्थों में ई० सन् का ही व्यवहार हुआ है। अतः शिवसिंह ने ऐसे कवियों के सम्बन्ध में, जिनका सम्बन्ध राज दरबारों विशेषकर मुगल दरबार से था, इतिहास ग्रन्थों से उठाकर इ० सन् दे दिया है और उस ई० सन् को विक्रम संबत् में बदलने का कष्ट नहीं उठाया है। यदि उठाया भी है, तो बहुत कम।

यदि इस तीसरे सिद्धान्त के अनुसार अकबरी दरबार के कवियों के सन् सम्बतों की जाँच कर ली जाय तो बात अत्यन्त स्पष्ट हो जाती है और उक्त सिद्धान्त की स्थापना भी दृढ़तापूर्वक हो जाती है।

(१) नरहरि	१६००
(२) गंग	१५६५
(३) रहीम	१५८०
(४) ब्रह्म	१५८५
(५) तानसेन	१५८८
(६) राममनोहर दास कछवाहा	१५६२
(७) शेख अबुलफैज फैजी	१५८०
(८) शेख अबुलफजल फहीम	१५८०
(९) अमृत	१६०२
(१०) जैत	१६०१
(११) जगदीश	१५८८
(१२) जोध	१५६०

ऊपर के सारे कवियों का कविता काल १५८० और १६०२ के बीच दिया गया है। यह अकबर के शासन-काल (१५५६-१६०५ ई०) का उत्तरार्ध है। इससे स्पष्ट है कि ये सभी सम्बत् ई० सन् हैं।

ञ. निष्कर्ष

सरोज के सम्बतों पर इतना विचार कर लेने के पश्चात् हम निम्नांकित निर्णयों पर पहुँचते हैं :—

(१) सरोज के अधिकांश सम्बत विक्रम संबत् हैं, कुछ ई० सन् भी हैं।

(२) सरोज में दिये हुये अधिकाँश संबत् कवियों की उपस्थिति के सूचक हैं। इनमें से कुछ जन्मकाल-सूचक भी हो सकते हैं।

(३) सरोज के कुछ संबत उपस्थित काल मान लेने पर भी शुद्ध सिद्ध नहीं होते। इनमें से कुछ अशुद्ध भी हैं।

(४) सरोजकार ने अपनी समझ से इन्हें उपस्थिति काल ही के रूप में प्रस्तुत किया है। 'उ०' प्रथम एवं द्वितीय संस्करणों में नहीं था। यह तृतीय संस्करण से आ गया।

अध्याय ६

सरोज के अध्ययन की आवश्यकता, सीमा विस्तार और प्रमुख सहायक सूत्र

सरोज के अध्ययन की आवश्यकता, सीमा-विस्तार और प्रमुख सहायक सूत्र

क. अध्ययन की आवश्यकता

जिस प्रकार सरोज में सन्-सम्बत् की गड़बड़ियाँ हैं—कुछ तो उनमें स्वयं हैं और कुछ को लोगों ने जन्म काल एवम् विक्रम सम्बत् समझकर गड़बड़ कर रखा है—इसी प्रकार इस ग्रन्थ में तथ्यों की भी अनेक भूले हैं। उदाहरण के लिये एक अजबेस 'प्राचीन की कल्पना की गई है जिन्हें जोधपुर के राजा बीरभान सिंह के यहाँ होना बताया गया है। वास्तविकता यह है कि इस नाम का कोई भी राजा जोधपुर की गद्दी पर कभी भी नहीं बैठा। हाँ, सोलहवीं शताब्दी में इस नाम का राजा रीवाँ में अवश्य हुआ; पर इस राजा के दरबार में अजबेस नाम का कोई कवि नहीं हुआ है। वस्तुतः अजबेस नाम का एक ही कवि रीवाँ नरेश विश्वनाथ सिंह जू देव के दरबार में हुआ है। उसी ने उनके पूर्वज बीरभान सिंह देव की भी प्रशस्ति में कुछ छंद लिख दिये हैं जिसके आधार पर शिवसिंह ने एक अजबेस प्राचीन की भी कल्पना कर ली है। इसी प्रकार सरोज में चार-चार अक्षर अनन्य हो गये है, जिनमें से एक को पृथ्वीचन्द दिल्ली देशाधीश के यहाँ सम्बत् १२२५ में होना बताया गया है। यह पृथ्वीचन्द वस्तुतः दतिया के राजा के लड़के थे और सेनुहड़ा के जागीरदार थे। यह रसनिधि नाम से बहुत सुन्दर कविता भी लिखते थे। अक्षर अनन्य इन्हीं के दरबार में थे। इनका समय सम्बत् १७१०-१७६० है। यह जानकारी न होने से एक अक्षर अनन्य की कल्पना उनके वास्तविक समय से ५०० वर्ष पूर्व कर ली गई है। इस प्रकार की अनेक अशुद्धियाँ सरोज में हैं। सब का उल्लेख यहाँ नहीं किया जा सकता।

तथ्यों एवम् तिथियों में जो गड़बड़ियाँ हैं, या तो स्वयं मौलिक रूप से अथवा भ्रान्त व्याख्या के कारण, वे हिन्दी साहित्य के इतिहास को विकृत बना रही हैं। सम्बत् १७३८ को भूषण का जन्म-काल मानकर एक बावेला-सा मचा दिया गया है और भूषण को शिवा जी की मृत्यु के बाद उत्पन्न हुआ कह कर उनके शिवा जी के दरबार में कभी भी न जाने पर बल दिया जा रहा है। दो-दो आलमों की कल्पना कर ली गई है। एक शृंगारी कविता करनेवाले शेख के प्रेमी पति प्रसिद्ध स्वच्छन्दतावादी कवि और दूसरे माधवानलकामकन्दला नामक प्रसिद्ध प्रेमाख्यान काव्य के रचयिता। इन सब एवम् ऐसी ही अन्य सभी भ्रान्तियों का निराकरण करने के लिये आवश्यक है कि सरोज का ठीक-ठिकाने से अध्ययन किया जाय। यह अध्ययन तभी पूर्ण होगा, जब एक-एक कवि के सम्बन्ध में जितने तथ्य एवम् तिथियाँ दी गई हैं उनकी भलीभाँति जाँच हो जाय।

ख. सरोज के अध्ययन का सीमा-विस्तार

सरोज का अध्ययन तीन दृष्टियों से किया जा सकता है—काव्य संग्रह की दृष्टि से, आलोचना ग्रन्थ की दृष्टि से और हिन्दी साहित्य के इतिहास के प्रमुख सूत्र की दृष्टि से।

१. सरोज : काव्य संग्रह

पृष्ठ संख्या की दृष्टि से सरोज एक काव्य संग्रह ही है जिसके अन्त में एक हजार तीन कवियों का संक्षिप्त इतिवृत्त दिया हुआ है। इस संग्रह में अनेक ऐसे कवियों की रचनायें हैं जिनकी कविता के उदाहरण अन्य किसी सूत्र से उपलब्ध नहीं होते जैसे, जोइसी। सभा की खोज रिपोर्टों में यद्यपि न जाने कितने अज्ञात कवियों की रचनायें उद्धृत हैं और उनके यथासंभव जीवन-वृत्त दिये गये हैं; फिर भी सरोज के प्रायः आधे कवि ऐसे हैं, जिनकी चर्चा उक्त विवरणों में नहीं हो पाई है, क्योंकि इनके ग्रन्थों की हस्तलिखित प्रतियाँ अभी तक उपलब्ध नहीं हो सकी हैं। इनमें से बहुतेरों ने ग्रन्थ न भी लिखे होंगे, केवल फुटकर रचनायें की होंगी, फिर सैकड़ों कवि ऐसे रह जाते हैं जिनका नाम और जिनकी रचनाओं के उदाहरण हमें एकमात्र सरोज में मिलते हैं।

इस संग्रह में दो प्रकार की रचनायें मिलेंगी, एक तो वे जो अत्यन्त सरस हैं और दूसरी वे जिनका काव्य की दृष्टि से कोई महत्त्व नहीं। दूसरी कोटि की रचनायें काव्य की दृष्टि से नहीं संकलित की गई हैं। वे इस संग्रह में इस दृष्टि से संगृहीत हुई हैं, क्योंकि इनसे कवियों के सम्बन्ध में प्रामाणिक सूचनायें प्राप्त होती हैं। किसी में कवि और उसकी कृति का नाम है, किसी में ग्रन्थ का विषय बताया गया है, किसी में कवि का निवास-स्थान दिया गया है, किसी में ग्रन्थ का रचनाकाल दिया गया है और किसी में कवि के आश्रयदाता का उल्लेख हुआ है, जिसकी सहायता से कवि के काल-निरूपण में सुविधा होती है। इस प्रकार ये नीरस रचनायें उस उद्देश्य की पूर्ति करती हैं, जिसके लिये सरोज की सृष्टि हुई।

उस युग में अथवा उसके पूर्व भी जितने काव्य-संग्रह हिन्दी में प्रस्तुत किये गये, उनमें से किसी का भी उद्देश्य कवियों के समय की छानबीन करना अथवा अन्य विवरण जानना नहीं था। तुलसी कवि द्वारा संगृहीत कवि माला एवम् कालिदास हजारा न तो उपलब्ध हैं और न इनके नाम से ही इनके विशिष्ट उद्देश्य का निश्चित पता चलता है। दिग्विजय भूषण अलंकार का ग्रन्थ है, सुन्दरी-तिलक में विभिन्न प्रकार की सुन्दरियों (नायिकाओं) पर लिखित सर्वश्रेष्ठ सवैयों का संकलन हुआ है। राग कल्पद्रुम का संकलन संगीत की दृष्टि से हुआ है। ठाकुरप्रसाद कृत रामचन्द्रोदय स्पष्ट ही रस-ग्रन्थ है। मातादीन मिश्र द्वारा संकलित कवित्त-रत्नाकर एवम् महेशदत्त शुक्ल द्वारा संगृहीत भाषा-काव्य-संग्रह तत्कालीन शिक्षा निर्देशक की आज्ञा से प्रस्तुत किये गये थे। इनका दृष्टिकोण बहुत कुछ शैक्षणिक है, अतः ये लघुकाय हैं और इनमें सरस शृंगारी छंदों के लिये स्थान नहीं है तथा वर्णनात्मक काव्यों के अंश इनमें विशेष रूप से संकलित हुये है। अतः स्पष्ट है कि सरोज के संकलन का उद्देश्य सभी पूर्ववर्ती एवम् समकालीन संग्रहों से सर्वथा भिन्न है और इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिये इसमें बहुत से नीरस छंद भी सादर स्वीकृत हैं।

नीरस छंदों को छोड़ देने के पश्चात् काव्य की संज्ञा से अभिहित किये जाने योग्य छंदों पर विचार किया जाय तो भी यह संग्रह ऊपर उल्लिखित सभी संग्रहों में अपनी विशिष्टता प्रतिष्ठित कर लेगा। इसमें प्रायः सभी विषयों की, सभी रसों की, सभी प्रकार के छंदों में मुक्तक एवम् प्रबन्ध रचनायें संकलित हुई हैं, हिन्दी या ब्रजभाषा काव्य में जो भी वैविध्य है, यहाँ सब एक साथ देखा जा सकता है। निश्चय ही अधिकतर रचनायें शृंगारी हैं। नखशिख, संयोग, वियोग, नायिका भेद,नायक भेद, दर्शन, सखी, दूती, हाव, अनुभाव, ऋतु, आदि सभी शृंगारी विषयों के छंद यहाँ सुलभ हैं। कुछ

ऐसी शृंगारी रचनाएँ हैं जिन्हें सुरुचि पूर्ण नहीं कहा जा सकता; पर संकलयिता को प्रसंग प्राप्त कवियों की सम्भवतः अन्य सुरुचि पूर्ण रचनायें नहीं मिली और उसने विवश हो इन्हें स्थान दे दिया। भक्ति और शान्त रस के अत्यन्त सुन्दर छंद इस संग्रह में हैं। कृष्ण, राधा, सीता, राम, दुर्गा, शिव, हनुमान, गंगा, यमुना, आदि की स्तुतियां एवम् विरक्ति तथा ज्ञान की रचनाओं का यहाँ प्राचुर्य है। वीर रस की भी पर्याप्त रचनायें हैं। अन्य रसों की रचनायें बहुत कम हैं। छंदों की दृष्टि से अधिकतर रचनायें कवित्त-सवैयों में है। इस संग्रह में पाये जाने वाले अन्य प्रमुख छंद, कुण्डलिया, छप्पय, बरवै, दोहा, चौपाई आदि हैं। वर्णवृत्त भी खोजने पर मिल जायँगे। विषय की दृष्टि से विचार किया जाय तो पर्याप्त विविधता मिलेगी। धार्मिक, ऐतिहासिक पौराणिक, आलोचनात्मक, नैतिक, दार्शनिक, सभी विषयों के प्रचुर छंद इस संग्रह में उपलब्ध हैं।

२. सरोज : हिन्दी का प्रथम आलोचना-ग्रन्थ

सरोज के जीवन-खंड में कवियों का इतिवृत्त ही नहीं दिया गया है, कभी-कभी उनकी कविता पर सरोजकार ने अपना अभिमत भी दिया है। कवियों की कविताओं पर जो टीका-टिप्पणी की गई है, वह निश्चय ही आलोचना का अंग है। अतः सरोज का अध्ययन आलोचना ग्रन्थ के रूप में भी किया जा सकता है।

शिवसिंह ने कवियों के सम्बन्ध में बहुत कम लिखा है, ऐसी दशा में उनसे विस्तृत आलोचना की अपेक्षा नहीं की जा सकती। कभी-कभी तो उन्होंने अपना अभिमत केवल एक वाक्य में दिया है। सभी कवियों के सम्बन्ध में उन्होंने अपना अभिमत दिया भी नहीं है। ये अभिमत प्रायः प्रशंसात्मक हैं, जैसे—"इनकी कविता बड़ी उत्तम है, इनके दोहा सोरठा बहुत ही चुटीले-रसीले हैं"। कुछ ऐसे कवियों की शिवसिंह ने अत्यन्त प्रशंसा की है जिनके सम्बन्ध में प्रसिद्ध इतिहास ग्रन्थों में कुछ भी नहीं लिखा गया है, यहाँ तक कि नाम भी नहीं है। सम्भवतः ऐसा इसीलिये हुआ है कि इनकी रचनायें उपलब्ध नहीं हो सकी हैं। बीर कवि दाऊ, दादा वाजपेयी, इच्छा राम अवस्थी, ईश कवि, कमलेश, काशीराज कवि, काशीनाथ, केहरी, गंगाधर, मंडन, आदि कुछ ऐसे ही कवि हैं। आलम, घनानन्द, केशव, चन्दबरदाई, चिन्तामणि, ठाकुर, गोस्वामी तुलसीदास, तोष, भिखारी दास, देव, नरोत्तमदास, नन्ददास, पजनेश, बिहारी, भूषण, मतिराम, रघुनाथ, रसखानि, लल्लू जी लाल, सुखदेव मिश्र, श्रीपति एवम् सेनापति आदि प्रमुख कवियों के सम्बन्ध में सरोजकार के आलोचनात्मक अभिमत उल्लेखनीय हैं।

सरोज में कबीर, जायसी, सूर, मीरा, पद्माकर, द्विज देव और भारतेन्दु आदि महाकवियों के भी विवरण हैं, पर इनके सम्बन्ध में कोई आलोचनात्मक उल्लेख नहीं है।

सरोज में कुछ ऐसे भी कवि हैं, जिनकी प्रशंसा शिवसिंह ने नहीं की है। उन्हें स्पष्ट शब्दों में साधारण कवि कहा है। आनन्द सिंह, इन्दु, ऊधो आदि को सामान्य कवि कहा है। अयोध्या प्रसाद शुक्ल के सम्बन्ध में लिखा है—"यह कुछ विशेष उत्तम कवि तो नहीं थे, हाँ, कविता करते थे।" गोकुल बिहारी के लिये लिखा है—"इनकी कविता मध्यम है,"। सीताराम दास बनिया के लिये लिखा है, "जोड़ गाँठ लेते हैं।"

सरोज के आलोचनात्मक अंशों को प्रभाववादी समीक्षा के अन्तर्गत रखा जा सकता है जहाँ आलोचक अपना निर्णय भी देता चलता है।

जब भी आलोचना के उद्भव और विकास पर चर्चा हुई है, लेख लिखे गये हैं अथवा ग्रन्थों

की रचना हुई है, शिवसिंह को आलोचक के रूप में किसी ने भी स्मरण नहीं किया। शिवसिंह के पहले कवियों के सम्बन्ध में किसी भी ज्ञात आलोचक ने इस प्रकार गद्य में अपना लिखित अभिमत नहीं दिया था। अतः हिन्दी के प्रारम्भिक आलोचकों में शिवसिंह का नाम आदर से लिया जाना चाहिये और उन्हें आधुनिक अर्थ में हिन्दी का प्रथम ज्ञात आलोचक कहना चाहिये। अधिकांश आलोचकों ने सरोज का नाम ही नाम सुना है, इसी से यह प्रमाद हुआ है। इस ग्रन्थ के सम्बन्ध में एक शोध-ग्रन्थ के निम्नांकित वाक्य इसके प्रमाण हैं :—

"शिवसिंह सरोज में कवियों को काल-क्रम से रखने का प्रयास माना जाता है; पर इसके पूर्व भी हिन्दी साहित्य का इतिहास प्रस्तुत करने का प्रयत्न हुआ है। स्वयं शिवसिंह ने ऐसी कुछ सामग्री का उल्लेख किया है[1]।"

सरोज में कवियों को काल-क्रम से नहीं रखा गया है, वर्णानुक्रम से रखा गया है। लेखक ने ग्रन्थ स्वयं नहीं लिखा है, इसलिये वह प्रमाद से ऐसा लिख गया है। शिवसिंह से पूर्व अवश्य फ्रान्सीसी भाषा में हिन्दुस्तानी (उर्दू) का इतिहास लिखा गया था, जिसमें हिन्दुई का भी समावेश किंचित् मात्रा में हो गया है। यह ग्रन्थ भी इतिहास नहीं है, क्योंकि इसमें भी कालक्रम का अनुसरण नहीं किया गया है। इस ग्रन्थ से सरोजकार की अभिज्ञता नहीं थी, अतः उसने इसका उल्लेख तो किया नहीं है। हो सकता है विद्वान् लेखक का अज्ञात संकेत महेश दत्त के काव्य संग्रह की ओर हो, पर यह भी हिन्दी साहित्य का इतिहास प्रस्तुत करने का प्रयत्न नहीं है। एक छोटा-सा काव्य संग्रह मात्र है, जिसके अन्त में सभी ५१ संकलित कवियों का प्रायः भ्रम पूर्ण संक्षिप्त विवरण भी दिया गया है।

शिवसिंह पर गद्य लेखक की दृष्टि से भी विचार किया जा सकता है। इनका गद्य यद्यपि भारतेन्दुकालीन गद्य है, पर भारतेन्दु के गद्य के सामने अत्यन्त लचर है। इसमें उर्दू, फारसी के शब्दों का प्रचुर प्रयोग हुआ है। शिवसिंह पुलिस के आदमी थे, अतः वे उसी युग में शुद्धतावादी हो भी नहीं सकते थे। साथ ही सरोज का सप्तम संस्करण (१६२६ ई०) रूपनारायण पांडेय द्वारा संशोधित है और मूल भाषा में भी कुछ परिवर्तन कर दिया गया है, जो तृतीय संस्करण (१८८३ ई०) से मिलान करने पर स्पष्ट हो जाता है। तृतीय संस्करण में प्रायः कुतुबखाना शब्द का प्रयोग हुआ है। सप्तम संस्करण में यह पुस्तकालय के रूप में बदल गया है। तृतीय संस्करण में 'करना' क्रिया का भूतकाल रूप 'करी' है, जिसे बदल कर 'की' कर दिया गया है। सरोजकार के गद्य का श्रेष्ठतम उदाहरण टोडरमल का विवरण है। सरोज के गद्य में व्याकरण की भूलें भी हैं। काव्य शब्द को सर्वत्र स्त्रीलिंग माना गया है। अरबी-फारसी शब्दों का प्रयोग तो हुआ ही है, वह कभी-कभी फारसी व्याकरण से भी अनुशासित और उर्दू वाक्य विन्यास पद्धति पर संगठित भी है। शब्दों का वाक्य में ठीक स्थान पर प्रयोग न करना तो शिवसिंह के लिये कोई बहुत बड़ा दोष नहीं है। सप्तम संस्करण में विराम चिन्हों का जो प्रयोग मिलता है, वह अधिकांश में संशोधक की कृपा है।

३. सरोज : हिन्दी साहित्य के इतिहास का प्रमुखतम सूत्र

सरोज के जीवन-खंड में १००३ कवियों के सन्-सम्बत् और जीवन विवरण हैं। वे कवि उपस्थित हैं, उनके कौन-कौन से ग्रन्थ हैं, उनकी रचनायें यदि फुटकर ही हैं तो किन प्राचीन संग्रहों में मिलती हैं, वे किसके आश्रय में थे आदि बातें इन विवरणों में दी गई हैं। इन विवरणों एवम् सन् सम्बतों का उपयोग सभी परवर्ती इतिहासकारों, विशेषकर ग्रियर्सन एवम् मिश्रबन्धुओं ने किया है।

---

१. हिन्दी आलोचना : उद्भव और विकास, पृष्ठ २३६

ग्रियर्सन ने इन सम्बतों को जन्म काल समझने की भूल की, जिसको मानने की बाद में परम्परा-सी चल गई। प्रायः प्रत्येक पुराने कवि पर लिखते समय सरोज का उल्लेख सर्वप्रथम किया जाता है। सरोज का सर्वाधिक महत्त्व हिन्दी साहित्य के इतिहास-ग्रन्थ प्रथम एवम् प्रमुखतम सूत्र के रूप में ही है। इसका महत्त्व काव्य संग्रह और आलोचना ग्रन्थ के रूप में उतना नहीं है। नये पुराने काव्य संग्रह अनेक हैं और आलोचना इसमें अपने अंकुर रूप में ही है, परन्तु सरोज को छोड़कर हिन्दी साहित्य के इतिहास के कोई और दूसरे इससे पुराने और इतने विशाल सूत्र उपलब्ध नहीं।

ग. सर्वेक्षण का सीमा विस्तार

प्रस्तुत ग्रन्थ में सरोज का अध्ययन हिन्दी साहित्य के इतिहास के प्रमुखतम सूत्र के रूप में ही किया गया है। सरोज में कवियों के सम्बन्ध में जितने तथ्य एवम् तिथियाँ दी गई हैं उन सब की जाँच बिना किसी पूर्वाग्रह के निश्पक्ष रूप से की गई है। ग्रन्थ को पूर्ण बनाने की दृष्टि से कवियों के के सम्बन्ध में जो भी नई सूचनायें मिली हैं, उनका भी समावेश कर दिया गया है। यद्यपि यह विस्तार ग्रन्थ के शीर्षक के अनुसार अध्ययन की सीमा के भीतर नहीं आता और ऐसा करने से स्वयं मेरा कार्य भी बढ़ जाता है।

घ. सर्वेक्षण के प्रमुख सहायक सूत्र

क. प्राचीन काव्य-संग्रह

सरोज के प्रणयन में शिवसिंह ने अनेक संग्रह ग्रन्थों से सहायता ली थी। इनमें से १० प्रमुख संग्रहों का नाम भी उन्होंने भूमिका में दिया है, जिनकी विस्तृत चर्चा पहले की जा चुकी है। इनमें से निम्नांकित ५ मुझे कहीं भी नहीं मिले :—

(१) तुलसी कवि कृत माला, सम्बत् १७१२
(२) कालिदास कविकृत हजारा, सम्बत् १७५५
(३) बलदेव कवि बघेलखंडी कृत सत्कवि गिराविलास, सम्बत् १८०३
(४) श्रीधर कृत विद्वन्मोदतरंगिणी, सम्बत् १८७४
(५) ठाकुर प्रसाद कविकृत रस चन्द्रोदय, सम्बत् १९२०

शेष ५ मुझे मिले हैं और उनसे पर्याप्त सहायता भी मिली है। इनकी सूची यह है :—

(१) कृष्णानन्द व्यास देव कृत राग कल्पद्रुम, सम्बत् १९००
(२) गोकुल प्रसाद ब्रज कृत दिग्विजय भूषण, सम्बत् १९१९
(३) भारतेन्दु कृत सुन्दरी तिलक, सम्बत् १९२५
(४) महेश दत्त कृत भाषा काव्य संग्रह, सम्बत् १९३२
(५) मातादीन मिश्र कृत कवित्त रत्नाकर, सम्बत् १९३३

इन पाँच ग्रन्थों का विस्तृत विवरण पीछे दिया जा चुका है। इन संग्रहों के अतिरिक्त मैंने दो अन्य प्राचीन संग्रहों का भी सदुपयोग किया है :—

(१) सरदार कृत श्रृंगार संग्रह, सम्बत् १९०५
(२) नवीन कृत सुधासर, सम्बत् १८९५

सुधासर के अन्त में नाम राशी कवियों एवम् दो-दो छाप वाले एक ही कवियों की सूची भी दी गई है, जो शोध-विद्यार्थी के लिये परमोपयोगी है। इस ग्रन्थ का प्रारम्भिक अंश भारत जीवन प्रेस, काशी से पहले प्रकाशित हुआ था। सभा के आर्य भाषा पुस्तकालय में इसकी कई हस्तलिखित प्रति-

लिपियाँ सूची में उल्लिखित हैं, पर सभी अनुपलब्ध हैं। उक्त नाम राशी कवि सूची एवम् दुत छापी कवि नाम सूची की प्रतिलिपि प्रो० विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने अपने लिये कराई थी। उनकी कृपा से उस प्रतिलिपि का सदुपयोग मैंने किया है। सूचियों की उपयोगिता को ध्यान में रखते हुये उन्हें यहाँ अविकल रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है।

(१) नाम राशी कवि की सूची

अथ जे जे नामरासी कवि है सो लिख्याते।

ईस ॥ २ ॥
- प्राचीन ईस ॥ १ ॥
- जैपुर वारे ईस नवीन के श्रीगुर ॥ १ ॥

ग्वाल ॥ २ ॥
- ग्वाल प्राचीन ॥ १ ॥
- ग्वाल राइ मथुरा वारे ॥ १ ॥

परमेस ॥ २ ॥
- प्राचीन ॥ १ ॥
- वृन्दावन वासी ॥ १ ॥

बिहारी ॥ ४ ॥
- चौबे सतसया वारे ॥ १ ॥
- मतिराम के नाती ॥ १ ॥
- फरकावादी ॥ १ ॥
- बिहारी ढोली नरवर वारो ॥ १ ॥

मान ॥ २ ॥
- प्राचीन ॥ १ ॥
- जोधपुर वारे राव ॥ १ ॥

गुपाल ॥ २ ॥
- राम गुपाल ॥ १ ॥
- गुपाल ॥ १ ॥

मंडन ॥ २ ॥
- प्राचीन ॥ १ ॥
- जैपुर वारे लाल कवि के नाती ॥ १ ॥

प्रिया ॥ २ ॥
- प्राचीन ॥ १ ॥
- प्रियादास भक्तमाली वृन्दावन वासी ॥ १ ॥

शिवनाथ ॥२॥
- प्राचीन ॥ १ ॥
- जोधपुर वारे ॥ १ ॥

घासी राम ॥ २ ॥

प्राचीन ॥ १ ॥
कोटा वारे राव ॥ १ ॥
हरि ॥ २ ॥
प्राचीन हरि चरन दास कृष्णगढ़ वारे ॥ १ ॥
हरिनाथ जुल करन सुत ॥ १ ॥
कल्यान ॥ २ ॥
प्राचीन ॥ १ ॥
कल्यान जी राव ॥ १ ॥
प्रवीन ॥ २ ॥
प्राचीन ॥ १ ॥
बेनी प्रवीण वाजपेयी ॥ १ ॥
कृष्ण ॥ ३ ॥
प्राचीन सतसैया के टीकाकार ॥ १ ॥
कृष्ण राय जुल करन सुत ॥ १ ॥
कृष्ण लाल ॥ १ ॥
बंसी ॥ २ ॥
प्राचीन ॥ १ ॥
दलपति बंशीधर हजारा ग्रन्थ के कर्त्ता ॥ १ ॥
मुरली ॥ २ ॥
प्राचीन ॥ १ ॥
आगरे वारे ब्राह्मन ॥ १ ॥
ठाकुर ॥ ३ ॥
प्राचीन मसल बन्द ॥ १ ॥
झांसी वारे ठाकुर दास ब्राह्मन ॥ १ ॥
लाला वृन्दावन वासी ॥ १ ॥
लाल ॥ २ ॥
जैपुर वारे ॥ १ ॥
गोरे लाल पद्माकर के नाना आतंकी ॥ १ ॥
उदै ॥ २ ॥
प्राचीन ॥ १ ॥
उदैनाथ कवीन्द्र ॥ १ ॥
जगन ॥ २ ॥
प्राचीन ॥ १ ॥
जगन्नाथ जी भट्ट जैपुर वारे ॥ १ ॥
राम ॥ २ ॥
राम कवि ॥ १ ॥

राम जी फरुखाबादी ॥ १ ॥

चन्द ॥ २ ॥

चौधरी आनन्द चंद नरवर वारे ॥ १ ॥

गुलाई चन्द लाल जी राधा बल्लभी ॥ १ ॥

बरेधा ॥ २ ॥

प्राचीन ॥ १ ॥

बोधा राइ ॥ १ ॥

जीवन ॥ २ ॥

प्राचीन ॥ १ ॥

ब्रज जीवन वृन्दावन वासी ॥ १ ॥

तोष ॥ २ ॥

प्राचीन लखनऊ वारे ॥ १ ॥

तोष निधि कम्पिला वारे ॥ १ ॥

इति श्री नाम रासी कवि सम्पूर्णम्

(२) अथ दुत छाप वारे कवि निरूपनं ।

एक कवि की दो छाप है सोहू बोधहित ऐसे जानिबी ।

उदैनाथ ॥ कविन्द ॥ १ ॥

नागर ॥ पंडित ॥ १ ॥

ससिनाथ ॥ सोमनाथ ॥ १ ॥

नृप संभु ॥ संभुराज ॥ १ ॥

आनन्द ॥ चन्द ॥ १ ॥

दंत (? दत्त) ॥ गुरुदत्त ॥ १ ॥

कालिदास ॥ महाकवि ॥

इति दूत छापी कवि नाम रासी कवि सम्पूर्णम् ॥

ख. कवियों का मूल-ग्रन्थ

संग्रह ग्रन्थों के अतिरिक्त, कवियों के मूलग्रन्थों से मुझे इस सर्वेक्षण में प्रचुर सहायता मिली है। भारत जीवन प्रेस, काशी और उसके अध्यक्ष बाबू रामकृष्ण वर्मा की सेवायें इस क्षेत्र में विशेष उल्लेखनीय हैं। वर्मा जी ने सैकड़ों प्राचीन काव्य ग्रन्थों को सुलभ मूल्य में प्रकाशित कर प्राचीन सुकवियों की कीर्ति रक्षा का सुन्दर प्रयास किया था। कवियों के मूलग्रन्थ सरोज के तथ्यों एवम् तिथियों की जाँच के लिए सर्वाधिक प्रामाणिक सामग्री हैं। यदि मेरे पास नवल किशोर प्रेस, लखनऊ से प्रकाशित प्रेम रत्न की प्रति न होती तो मैं रतन ब्राह्मण, बनारसी के अनस्तित्व को नहीं ही सिद्ध कर सकता था। इसी प्रकार भक्तमाल ने नारायणदास एवम् नाभादास की विभिन्नता स्थापित करने में तो सहायता दी ही है, साथ ही तत्कालीन अधिकांश भक्त कवियों के सम्बन्ध में दिये तथ्यों की जाँच में भी अत्यन्त लाभकर सिद्ध हुआ है।

ग. हस्तलिखित ग्रन्थों की खोज रिपोर्टें

सर्वेक्षण करने में सबसे अधिक सहायता हस्तलिखित ग्रन्थों की खोज रिपोर्टों से मिली है। हस्तलिखित ग्रन्थों की खोज का काम बाबू श्यामसुन्दर दास जी की प्रेरणा से सभा ने सन् १९०० ई० में प्रारम्भ किया था। १९०० ई० से लेकर १९०६ ई० तक सभा की वार्षिक खोज रिपोर्ट छपती रही, फिर वे त्रैवार्षिक रूप में छपने लगीं। १९०० ई० से लेकर १९२५ ई० तक की रिपोर्ट अंग्रेजी में गवर्नमेन्ट प्रेस, इलाहाबाद से छपी हैं। १९०० से १९०८ तक की रिपोर्टें अब वहां से सुलभ नहीं हैं। शेष सुलभ हैं। १९२६ से १९४० तक की खोज रिपोर्टें हिन्दी में अनूदित होकर उत्तर प्रदेशीय सरकार की आर्थिक सहायता से नागरी प्रचारिणी सभा के नागरी मुद्रण में प्रकाशित हुई हैं। शेष के प्रकाशन की व्यवस्था हो रही है। एक ही कवि के भिन्न-भिन्न ग्रन्थ अथवा एक ही ग्रन्थ, भिन्न-भिन्न समयों पर, भिन्न-भिन्न स्थानों में, प्राप्त हुये हैं, जिनका उल्लेख भिन्न-भिन्न रिपोर्टों में हुआ है। सभा ने हस्तलिखित ग्रन्थों का एक संक्षिप्त विवरण भी प्रस्तुत कराया है। इस विवरण में पहले कवि का परिचय दिया गया है, तदनन्तर अकारादिक्रम से उसके ग्रन्थों की सूची दी गई है। प्रत्येक ग्रन्थ के आगे जिस या जिन-जिन रिपोर्टों में और जिन-जिन संख्याओं पर उस ग्रन्थ की नोटिसें प्रकाशित हुई हैं, उनका उल्लेख हुआ है। त्रैवार्षिक रिपोर्टों का उल्लेख प्रथम वर्ष के नाम से हुआ है, यथा १९०६-०८ वाली रिपोर्ट को १९०६ की रिपोर्ट कहा गया है। रिपोर्ट के सन् के आगे नोटिस की संख्या दे दी गई है। उदाहरण के लिये दामोदरदास ब्रजवासी के नाम पर इस संक्षिप्त विवरण में पहला ग्रन्थ इस प्रकार चढ़ा है :—

(१) गुरु प्रताप लीला—१९१२।४६ बी, १९४१।५०३ ख

इसका अभिप्राय यह हुआ कि दामोदरदास जी के गुरु प्रतापलीला की अभी तक दो हस्त-लिखित प्रतियाँ उपलब्ध हुई हैं। पहली का विवरण १९१२-१५ वाली रिपोर्ट में ४६ संख्या के बी भाग में तथा दूसरी का १९४१-४३ वाली रिपोर्ट में ५०३ संख्या पर ख भाग में प्रस्तुत किया गया है।

यह संक्षिप्त रिपोर्ट अनुसंधित्सुओं के बड़े काम की है। सभा ने इसे तैयार कराकर उनका बहुत-सा बोझ हलका कर दिया है। इसका प्रकाशन यथाशीघ्र होना चाहिये।

मैंने सभा की सभी प्रकाशित-अप्रकाशित खोज रिपोर्टों एवम् अप्रकाशित संक्षिप्त विवरण का सदुपयोग किया है। १९२२-२४ ई० में पंजाब में एवम् १९३१ में दिल्ली में सभा ने हस्तलिखित ग्रन्थों की खोज कराई थी। इनकी रिपोर्टें अलग-अलग और अलग से प्रकाशित हुई हैं। संक्षिप्त विवरण में इनका उल्लेख पं और द के संक्षिप्त रूपों द्वारा संकेतित है।

सभा की खोज रिपोर्टों के अतिरिक्त राजपूताना में भी उदयपुर विद्यापीठ के प्राचीन साहित्य शोध-संस्थान की ओर से खोज का कार्य हुआ है। इस खोज की चार रिपोर्टें "राजस्थान में हिन्दी के हस्तलिखित ग्रन्थों की खोज" नाम से अभी तक प्रकाशित हुई हैं। सभा की रिपोर्टों में असावधानी से यत्र-तत्र अनेक अशुद्धियाँ हो गई हैं। राजस्थान रिपोर्ट अत्यन्त शुद्ध है। मैंने इन चारों रिपोर्टों का सदुपयोग किया है और इनकी सहायता से अनेक कवियों के सन्-सम्बतों की जाँच में अच्छी सहायता मिली है।

बिहार राष्ट्रभाषा-परिषद् ने भी बिहार में हस्तलिखित ग्रन्थों की खोज का कार्य प्रारम्भ किया है। इसकी भी दो रिपोर्टें निकल चुकी हैं। आर्डर देकर मँगाने पर भी इसका केवल दूसरा

खंड मुझे मिल सका। प्रथम-खंड का उपयोग इसीलिये मैं नहीं कर सका हूँ। बिहार-रिपोर्ट अशुद्धियों से परिपूर्ण है।

घ. हिन्दी साहित्य के इतिहास-ग्रन्थ

तासी सरोज की पूर्ववर्ती रचना है। श्री लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय द्वारा अनूदित "हिन्दुई साहित्य का इतिहास' का उपयोग मैंने किया है, पर सरोज के अध्ययन में इससे अधिक सहायता नहीं मिलती। हिन्दी साहित्य का प्रथम इतिहास ग्रियर्सन कृत 'द माडर्न वर्नाक्यूलर लिटरेचर आफ नदर्न हिन्दुस्तान' है जिसका उपयोग मैंने किया है और हिन्दी साहित्य के इतिहासों पर उसके प्रभाव को देखते हुये तथा उस पर सरोज के पूर्ण प्रभाव को ध्यान में रखते हुये मैंने उसका हिन्दी अनुवाद भी प्रस्तुत कर लिया है। विनोद हिन्दी में लिखा हुआ हिन्दी साहित्य का प्रथम इतिहास है। कवियों का बृहत् इतिवृत्त होने के कारण यह अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हुआ है। आचार्य शुक्ल के सुप्रसिद्ध इतिहास का भी उपयोग किया है। इन ग्रन्थों के अतिरिक्त बुन्देल वैभव और राजस्थानी भाषा और साहित्य नामक दो अन्य क्षेत्रीय इतिहास ग्रन्थों का भी उपयोग मैंने किया है। इनमें क्रमशः बुन्देलखंड एवम् राजस्थान में उद्भूत हिन्दी साहित्य का इतिहास कवि वृत्त रूप में लिखा गया है।

ङ. इतिहास-ग्रन्थ

मुगल बादशाहों की वंशावली एवम् अवध के नवाबों और उनके वजीरों की सूची मैंने प्रसिद्ध इतिहास ग्रन्थों से ली है। सरोजकार ने टॉड के राजस्थान का उपयोग किया था। ग्रियर्सन ने टाड की पूरी छान-बीन कर ली है, अतः मैं टाड के पीछे नहीं पड़ा हूँ। एक मात्र इतिहास ग्रन्थ जिसने मेरी अत्यधिक सहायता की है, पंडित गोरेलाल तिवारी रचित बुन्देलखंड का संक्षिप्त इतिहास है, जो पहले नागरी प्रचारणी पत्रिका के कई अंकों में क्रमशः प्रकाशित हुआ था।

च. पत्र-पत्रिकायें

माधुरी के प्रारम्भिक ७-८ वर्षों के अंकों में प्राचीन कवियों के सम्बन्ध में अत्यन्त बहुमूल्य सामग्री प्रकाशित होती रही थी। प्रत्येक अंक में कवि चर्चा शीर्षक एक स्तम्भ ही रहा करता था जिनमें प्राचीन कवियों के विवादास्पद प्रसंगों पर सूचनायें, वादविवाद, आलोचना-प्रत्यालोचना और खंडन-मंडन बराबर रहा करता था। माधुरी की इस सारी सामग्री का मैंने पूरा उपयोग किया है। नागरी प्रचारणी पत्रिका एवम् ब्रज भारती आदि शोध पत्रिकाओं में भी कवियों के सम्बन्ध में बड़े अच्छे शोध-लेख प्रकाशित होते रहे हैं। मैंने इनका भी उपयोग किया है।

मैं तीन लेखों का विशेष रूप से उल्लेख करना चाहता हूँ। प्रथम लेख है पं० दयाशंकर याज्ञिक द्वारा लिखा हुआ माधुरी में प्रकाशित 'भरतपुर राज्य और हिन्दी', दूसरा लेख है कुँवर-कन्हैया जू द्वारा लिखित एवम् नागरी प्रचारिणी पत्रिका में प्रकाशित 'चरखारी राज्य के हिन्दी कवि'—इन दोनों लेखों से बहुत से कवियों के सम्बन्ध में प्रामाणिक सूचनायें मिली हैं। तीसरा महत्वपूर्ण लेख है, प्रो० पं० विश्वनाथ प्रसाद जी मिश्र लिखित हिन्दुस्तानी में प्रकाशित 'सरोज के सन्-सम्बत्'। इस लेख ने मेरा पर्याप्त पथ-निर्देश किया है।

सारी सहायक सामग्री का उल्लेख करना यहाँ अभीष्ट नहीं है, केवल प्रमुख सूत्रों की चर्चा कर दी गई है। सारी सहायक सामग्री की परिगणना ग्रन्थान्त में सहायक-सूची में की गई है।

अध्याय ७

सर्वेक्षण

सर्वेक्षण

अ (अं, अ, आ, ओ, औ)

१ । १

१. अकबर बादशाह, दिल्ली, सम्बत् १५८४ में उत्पन्न हुये ।

इनके हालात में अकबर नामा, आईन अकबरी, तबकात अकबरी, अब्दुल कादिर बदायूनी की तारीख इत्यादि बड़ी-बड़ी लिखी गई हैं जिनसे इस महाप्रतापी बादशाह का जीवन-चरित्र साफ-साफ मालूम हो जाता है । यहाँ केवल हमको उनकी कविता का वर्णन करना आवश्यक है । हमको इनका कोई ग्रन्थ नहीं मिला । दो-चार कवित्त जो मिले, सो हमने लिख दिये हैं । जहाँगीर बादशाह ने अपने जीवन-चरित्र की किताब तुजुक जहाँगीरी में लिखा है कि अकबर बादशाह कुछ पढ़े-लिखे न थे, परन्तु मौलाना अब्दुल कादिर की किताब से प्रकट है कि अकबर बादशाह एक रात को आप ही संस्कृत महाभारत का उल्था कराने बैठे थे । सुलतान मुहम्मद थानेसरी और खुद मौलाना बदायूनी और शेख फैजी ने जहाँ-जहाँ कुछ आशय छोड़ दिया था, उसका फिर तरजुमा करने का हुक्म दिया । इनके समय में नरहरि, करन, होल, खानखाना, बीरबल, गंग इत्यादि बड़े-बड़े कवि हुये हैं । पाँच खास कवि जो नौकर थे, उनके नाम इस सवैया में हैं :—

पूखी प्रसिद्ध पुरन्दर ब्रह्म सुधारस अमृत अमृत बानी
गोकुल गोप गोपाल गनेश गुनी गुनसागर गंग सु ज्ञानी
जोध जगन्न जमे जगदीश जगामग जैत जगत्त है जानी
को र अकब्बर से न कथ इतने मिल कै कविता जु बखानी

श्री गोसाईं तुलसीदास इनके दरबार में हाजिर नहीं हुये । सूरदास जी और उनके पिता बाबा रामदास गाने वालों में नौकर थे जैसा कि आईन अकबरी में लिखा है । केशवदास जी उस समय में इनके मंत्री श्री राजा बीरबल के दरबार में हाजिर हुये थे, जब इन्द्रजीत राजा उड़छा बुन्देलखंडी पर प्रवीनराय पातुर के लिये बादशाही कोप था ।

जाको जस है जगत में, जगत सराहै जाहि
ताको जीवन सफल है, कहत अकब्बर साहि

सर्वेक्षण

अकबर का जन्म २३ नवम्बर १५४२ ई० (सम्बत् १५९९ वि०) में हुआ था । वह १३ वर्ष की वय में १५५५ ई० (सम्बत् १६१३ वि०) में सिंहासन पर बैठा और ४९ वर्ष राज्य करने के अनन्तर सन् १६०५ ई० (सम्बत् १६६२ वि०) में उसकी मृत्यु हुई । सरोज का यह कथन है कि वह सम्बत् १५८४ में उत्पन्न हुआ, अशुद्ध है । वह इसके १५ वर्ष बाद पैदा हुआ । वस्तुतः यह ई० सन् है और यह उसके रचनाकाल का सूचक है । उस समय उसकी अवस्था ४२ वर्ष की थी और वह बीरबल के प्रभाव से कुछ छंद भी रच लेने लगा था ।

अकबर की निरक्षरता के सम्बन्ध में जहाँगीर ने तुजुक जहाँगीरी में जो कुछ लिखा है, उसका हिन्दी अनुवाद यह है :—

"मेरे पिता सदैव प्रत्येक धर्म और विश्वास के विद्वानों, विशेषकर भारत के प्रसिद्ध पंडितों का साथ करते थे । वह निरक्षर थे किन्तु विद्वानों के सम्पर्क में आने पर उनकी उस निरक्षरता

का बोध नहीं हो पाता था और वे कविता के प्रधान गुणों से इतने परिचित हो गये थे कि कोई व्यक्ति उनकी निरक्षरता का अनुमान भी नहीं कर सकता था[१] ।"

निश्चय ही आईने अकबरी में, जो सम्बत् १६५३-५४ में बनी, एक सूरदास एवम् उनके पिता रामदास जी दरबार के गायकों की श्रेणी में लिखे गये हैं । यह कोई दूसरे सूरदास हैं[२] । सूर ने तो राधा-कृष्ण की गुलामी छोड़ किसी दूसरे की गुलामी नहीं की । चौरासी वैष्णवन की वार्ता के अनुसार सूर और देशाधिपति (अकबर) की भेंट एक बार अवश्य हुई थी । उस समय सूर ने दो पद सुनाये थे :—

(१) मना रे तू करि माधौं सों प्रीत (२) नाहिन रह्यो मन में ठौर

ऐसे सूर अकबरी दरबार के गायक कभी नहीं हो सकते । इसी मुलाकात के आधार पर उन्हें दरबारी गायक कहा गया हो, तो इसे अबुलफजल का दुराग्रह ही कहा जायगा ।

श्री मायाशंकर याज्ञिक ने अकबर की समस्त प्राप्त रचनाओं का संकलन 'अकबर संग्रह' नाम से किया था[३] । इसमें अधिकाँश रचनायें ऐतिहासिक घटनाओं विषयक हैं ।

सरोज में उद्धृत तीनों छंद दिग्विजय भूषण में एक ही स्थान पर है और वहीं से लिये गये हैं[४] ।

---

२ । ३

(२) अजवेस प्राचीन (१) सम्बत् १५७० में उ० ।

यह कवि श्री राजा बीरभान सिंह जोधपुर के यहाँ थे और उसी देश के रहने वाले बंदीजन मालूम होते हैं ।

सर्वेक्षण

सरोजकार ने इस कवि का यह छंद उद्धृत किया है :—

बढ़ी बादशाही ज्योंही सलिल प्रलै के बढ़ै
राना राव उमराव सबको निपात भो
बेगम बिचारी बही, कतहूँ न थाह लही
बांधौगढ़ गाढ़ो गूढ़ ताको पच्छपात भो
शेरशाह सलिल प्रलै को बढ्यो अजवेस
बूड़त हुमायूँ के बड़ोई उतपात भो
बलहीन बालक अकबर बचाइबे को
बीरभान भूपति अछैबट को पात भो

बीरभान जोधपुर के राजा नहीं थे । यह बाँधवगढ़ (रीवाँ) के राजा थे । ऊपर वाले छंद से ही यह स्पष्ट है । जोधपुर राज्य की वंशावली में इस नाम का कोई राजा नहीं हुआ[५] । ऊपर लिखित छंद में जिस घटना का उल्लेख हुआ है उसके सम्बन्ध में श्री गोरेलाल तिवारी लिखते है :—

"बघेल राजा बीरभानदेव हुमायूँ का समाकालीन है ।......जब शेरशाह ने "हुमायूँ को

---

[१] अकबरी दरबार के हिन्दी कवि, पृष्ठ ११

[२] इस सम्बन्ध में ७३३ संख्या पर सूर के तथाकथित पिता बाबा रामदास देखिये

[३] खोज रिपोर्ट १९३२।३ [४] दिग्विजय भूषण, पृष्ठ ६४०-४१

[५] खोज रिपोर्ट १९०२ के अंत में दी हुई जोधपुर नरेशों की बंशावली देखिये ।

भगाया तब बघेल राजा बीरभान देव ने हुमायूँ की स्त्री आदि को अपने यहाँ रखा था, पर किसी भी मुसलमान इतिहासकार ने यह बात नहीं लिखी है।......बघेल राजा रामचन्द्र बीरभान का पुत्र है। यह वि० सम्बत् १६१२ में गद्दी पर बैठा था[१]।"

इस उद्धरण से स्पष्ट है कि बीरभान ने १६१२ विक्रमी तक राज्य किया। ग्रियर्सन ने इनका शासन काल सन् १५४० ई० से १५५४ ई० तक माना है[२]। इनके पुत्र रामचन्द्र के दरबार में पहले नरहरि और तानसेन थे। यहीं से वे अकबरी दरबार में आये थे।

बीरभान के दरबार में अजबेस नाम के कोई कवि नहीं हुये। ऊपर उद्धृत छंद के आधार पर शिवसिंह ने एक अजबेस प्राचीन की कल्पना कर ली है। अजबेस बहुत बाद में रीवाँ नरेश जयसिंह के आश्रय में हुये हैं। यह कवित्त उन्हीं का है। रीवाँ दरबार के इस आश्रित कवि ने अपने आश्रयदाता के पूर्वजों की भी प्रशस्ति लिखी है और उनकी वंशावली भी प्रस्तुत की है। बीरभान की प्रशस्ति लिखने के कारण यह कवि उनका समकालीन और दरबारी नहीं हो सकता, ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार हल्दी घाटी का रचयिता राणाप्रताप का समकालीन नहीं है। वास्तविक अजबेस का वर्णन आगे संख्या ३ पर है।

३।४

(३) अजबेस नवीन भाट (२) सम्बत् १८९२ में उ०। यह कवि श्री महाराजा विश्वनाथ सिंह बान्धव नरेश के यहाँ थे।

सर्वेक्षण

रीवाँ नरेश विश्वनाथ सिंह का राज्यकाल सम्बत् १८९२ से लेकर सम्बत १९११ विक्रमी तक है। अजबेस विश्वनाथ सिंह जू के दरबारी कवि थे। यह इनके पिता महाराजा जयसिंह के भी दरबार में रह चुके थे। अजबेस के लिखे हुये निम्नांकित तीन ग्रंथ खोज में मिले हैं :—

(१) विहारी सतसई की टीका—१९२०।३, १८२। यह टीका गद्य में है। यह टीका संक्षिप्त है और सुप्रसिद्ध नहीं है। अम्बिकादत्त व्यास ने 'विहारी-विहार' में और रतनाकर जी ने 'विहारी सतसई संबंधी साहित्य' में इसका उल्लेख नहीं किया है। इस टीका का पाठ और क्रम अनवर चन्द्रिका के अनुसार है। इसकी रचना सम्बत् १८६८ में हुई।

महापात्र अजबेस यह पुस्तक लिखी बनाइ
संबत दस अरु आठ सै अरसठि दिए गनाइ

(२) बघेल वंश वर्णन—१९०१।१५। इस ग्रन्थ में रीवाँ नरेशों के पूर्वज व्याघ्रदेव के पूर्वजों का वर्णन है। व्याघ्रदेव के बाद का विवरण नहीं है। व्याघ्रदेव बघेलखंड के प्रथम विजेता थे। यह ग्रन्थ केवल ३२ पन्ने का है। ग्रन्थ का प्रतिलिपिकाल संबत् १८९२ है :—

"इति श्री अजबेस कृत बंसउली संपूरन शुभमस्तू माघ बदि ११ गुरौवार संबत १८९२ के साल।"

---

[१] बुन्देलखंड का संक्षिप्त इतिहास, नागरी प्रचारिणी पत्रिका, खंड १२, अंक ३ (कार्तिक १९८८), पृष्ठ ४१३-१४ [२] ग्रियर्सन, कवि संख्या २४

जब अजबेस का रचनाकाल १८६८ सिद्ध है, ऐसी स्थिति में सम्बत् १८९२ इनका उत्पत्ति काल कदापि नहीं हो सकता।

(३) सरूप विलास[१]—यह चरित काव्य है। इसमें रीवाँ एवं दिल्ली के राजाओं की साहित्यिक उदारता का वर्णन है।

अजबेस असनी के निवासी थे, प्रसिद्ध नरहरि महापात्र के वंशज थे। इनके वंशज अभी तक असनी (फतेहपुर) में हैं। इनके पुत्र शिवनाथ भी सुकवि थे और महाराज विश्वनाथ सिंह जू देव के आश्रय में रह कर इन्होंने रासा[२] तथा वंशावली[३] नामक ग्रन्थ लिखे हैं।

४। ५

(४) अयोध्या प्रसाद बाजपेयी, सातन पुरवा, जिला रायबरेली, 'औध छाप' विद्यमान हैं। यह कवि संस्कृत और भाषा के महान् पंडित आज तक विद्यमान हैं। इनकी कविता बहुत सरस और अनोखी है। छंदानन्द, साहित्य सुधासागर, राम कवित्तावली इत्यादि ग्रन्थ बनाये हैं और बहुधा श्री अयोध्या जी में बाबा रघुनाथ दास के यहाँ और चन्दापुर के राजा जगमोहन सिंह के यहाँ रहा करते हैं।

सर्वेक्षण

अयोध्या प्रसाद बाजपेयी, 'औध' का जन्म सम्बत् १८६० वि० में सन्तन पुरवा, तहसील महाराजगंज, जिला रायबरेली में हुआ था। उनका देहावसान सम्बत् १९४२ वि० में कार्तिक शुक्ल २ को ८२ वर्ष की वय में अयोध्या में हुआ। इनके पिता पंडित नन्दकिशोर बाजपेयी संस्कृत के साधारण पंडित थे और लेन-देन का काम करते थे। अयोध्या प्रसाद जी चार भाई थे। अन्य तीन भाइयों के नाम लक्ष्मण प्रसाद, चतुर्भुज और भारत थे। इन्होंने निकटस्थ ग्राम हसनपुरवा के पण्डित और कवि गजाधर प्रसाद जी से व्याकरण, ज्योतिष और काव्य पढ़ा तथा इन्हीं से काव्य रचना भी सीखी। औध जी की ससुराल कन्नौज में थी। एक बार यह कन्नौज गये थे। उस समय सोरों में जाकर यह पद्माकर से मिले थे। पद्माकर जी इनकी प्रतिभा से तुष्ट हुये थे और इन्हें नर काव्य न करने का आदेश दिया था। अयोध्या के बाबा रघुनाथ दास महन्त इन्हें बहुत मानते थे। औध जी को निम्नांकित राजाओं ने धन-भूमि आदि देकर सम्मानित किया था :—

(१) महाराज हरिदत्त सिंह, रियासत बौंड़ी, जिला बहराइच। इन्होंने औध जी को पंडित पुरवा नामक ग्राम में कुछ जमीन दी थी।

(२) राजा सुदर्शन सिंह, रियासत चंदापुर, जिला बहराइच। इन्होंने औध जी को एक गाँव दिया था, जिसका नाम बाजपेयी का पुरवा हुआ।

(३) महाराज दिग्विजय सिंह, बलरामपुर, जिला गोंडा।

(४) पांडेय कृष्ण दत्त, गोंडा।

(५) राव मुनीश्वर बख्श सिंह, रियासत मल्लांपुर।

---

[१] आज, रविवार विशेषांक, ३१-३-४७ [२] खोज रिपोर्ट १९२०।१८२ [३] खोज रिपोर्ट १९०१।१०६

औध जी के दो पुत्र हुये,वैद्यनाथ और शिवनाथ ।शिवनाथ की सन्तान चंदापुर,जिला बहराइच में है और वैद्यनाथ जी के पुत्र श्री रमाशंकर और शिवनारायण जी १९२३ ई० में बाजपेयी पुरवा, चंदापुर, जिला बहराइच में उपस्थित थे। इन्हीं से यह सारा विवरण सभा के अन्वेषक को मिला था[१] । औध जी के निम्नलिखित ग्रन्थ खोज में मिले हैं :—

(१) अवध शिकार—१९२३।२४ ए १९४७।६ । इस ग्रन्थ में त्रिभंगी छंदों में राम के आखेट का वर्णन है। कवि ने हाथी, घोड़ों और रंगों की अच्छी जानकारी का परिचय इस ग्रन्थ में दिया है। इसका रचनाकाल रिपोर्ट में सम्बत् १९०० है।

रघुनाथ शिकार—१९२३।२४ बी। शिकारगाह, अवध शिकार, राम आखेट, रघुनाथ आखेट आदि एक ही ग्रन्थ के भिन्न-भिन्न नाम हैं[२] । सम्भवतः इसी ग्रन्थ का एक अन्य नाम रघुनाथ सवारी १९२६।२१ भी है।

(२) राग रत्नावली—१९२३।२४ सी। परमात्मा, शंकर, राम, कृष्ण आदि की महिमा का पदों में वर्णन। रचनाकाल सम्बत् १९०७ है।

(३) साहित्य सुधा सागर—१९२३।२४ बी। गणपति, महादेव, ब्रह्मा, विष्णु आदि देवताओं पर नाना प्रकार की कविता। रचनाकाल सम्बत् १८९७ है।

औध जी के अन्य ग्रन्थों के नाम ये हैं :—

(१) छंदानन्द, (२) शंकर शतक, (३) ब्रज ब्रज्या, (४) चित्रकाव्य। आग लग जाने से इनके अनेक ग्रन्थ नष्ट हो गये[३] । विनोद (२०८६) में इनके एक ग्रन्थ रास सर्वस्व का और उल्लेख हुआ है। छंदानंद का रचनाकाल सं० १९०० है[४] ।

५।६

(५) अवधेश ब्राह्मण बुन्देलखंडी, चरखारी, सम्बत् १९०१ में उ०। यह कवि राजा रतनसिंह बुन्देला चरखारी अधिपति के कदीम कवि हैं। इनकी कविता सरस है परन्तु मैंने कोई ग्रन्थ इनका नहीं पाया।

सर्वेक्षण

विक्रम सतसई के रचयिता चरखारी नरेश महाराज विजय विक्रमादित्य का देहान्त सम्बत् १८८६ वि० में हुआ था। तदनन्तर उनके पौत्र रतनसिंह जी चरखारी की गद्दी पर बैठे, क्योंकि उनके चारों पुत्र उनके जीवनकाल ही में दिवगंत हो गये थे। रतनसिंह जी ने सम्बत् १८८६ वि० से सम्बत् १९१७ वि० तक राज्य किया। इनके दरबारी कवि अवधेश को सम्बत् १९०१ में उ० कहा गया है। यह संबत् रतनसिंह के शासनकाल के मध्य में पड़ता है। यह अवधेश का जन्मकाल कदापि नहीं हो सकता, क्योंकि यदि इसे जन्मकाल माना जायगा, तो रतनसिंह के मृत्यु के समय इनकी अवस्था केवल १६ वर्ष की रही होगी और वे रतनसिंह के कदीमी कवि नहीं कहे जा सकेंगे।

---

१ खोज रिपोर्ट १९२३।२४ डी २ माधुरी वर्ष २, खंड १ अंक ३, आश्विन सं० १९८०
३ वही ४ हिन्दी साहित्य का बृहत् इतिहास, भाग ६, पृष्ठ ४९२

इन रतनसिंह जी के दरबार के अन्य कवि हैं गोपाल और व्यंगार्थ कौमुदी के प्रसिद्ध रचयिता प्रताप साहि। स्वयं रतनसिंह जी भी साहित्य सेवी थे। इन्होंने रतन चन्द्रिका नाम से बिहारी सतसई की टीका की थी। विनय पत्रिका का भी तिलक किया था। मिताक्षरा भाषा वर्तमान कानून की रीति पर बना था तथा हिन्दी की सुन्दर कविताओं का एक संग्रह रतनहजारा नाम से किया था, जो भारत जीवन प्रेस, काशी से कई बार छप चुका है[१]।

पाँच एवम् छह संख्यक दोनों अवधेश वस्तुतः एक ही हैं। यद्यपि ग्रियर्सन में दोनों को अलग-अलग स्वीकार किया गया है, पर विनोद में दोनों की अभेदता स्वीकृत है। सरोज के संशोधक रूपनारायण पांडेय ने भी इनकी अभेदता मानी है। दोनों अवधेश ब्राह्मण हैं, बुन्देलखंडी हैं। पहले अवधेश का ग्राम नहीं दिया गया है, केवल बुन्देलखंडी कहा गया है, दूसरे को भी बुन्देलखंडी कहा गया है, साथ ही गाँव का नाम सूपा भी दिया हुआ है। समय भी दोनों का एक ही है, केवल ६ वर्ष का अन्तर है। साथ ही दोनों की कविता भी एक ही-सी सरस है। इससे स्पष्ट होता है कि दोनों कवि सम्भवतः एक ही हैं।

खोज १९४७।८ में किसी 'अवधेश के कवित्त' का उल्लेख है और कोई सूचना नहीं दी गई है।

६।७

(६) अवधेश ब्राह्मण सूपा के (२) बुन्देलखंडी, सम्बत १८९५ में उ०। यह कवि बहुत सुन्दर कविता करने में चतुर थे, परन्तु कोई ग्रन्थ मैंने इनका नहीं पाया।

सर्वेक्षण

तृतीय संस्करण में सूपा के स्थान पर भूपा पाठ है, पर शुद्ध सूपा ही है। जैतपुरी कवि मंडन के रस रतनावली की एक प्रति के लेखक गुमानसिंह, ब्राह्मण, झुझोलिया स्थान सूपा, के कहे गये हैं[२]। विशेष विवरण संख्या ५ पर देखिये।

७।८

(७) अवध बकस सम्बत् १९०४ में उ०। कविता सरस है, गाँव-ठाँव मालूम नहीं।

सर्वेक्षण

सरोज में इस कवि का एक ही कवित्त उद्धृत है, जिसका तीसरा चरण यह है :—

अवध बकस भूप कीरति है छंद ऐसो
छाजत गिरा के मुख सुषमा अपार सी

इस चरण में आये अवध बकस शब्द से कवि का बोध हो सकता है, साथ ही यह उस राजा का भी नाम हो सकता है जिसकी प्रशस्ति में उक्त छंद लिखा गया है। ऐसी स्थिति में कवि का अस्तित्व संदिग्ध है, यद्यपि ग्रियर्सन (६८५) और विनोद (२००२) में यह कवि स्वीकृत है। ग्रियर्सन

---

१. चरखारी राज्य के कवि, ना० प० पत्रिका भाग ६ अंक ४, माघ १९८९ २ खोज रिपोर्ट १९२६।२९३ ए (पुष्पिका)

में १६०४ जन्मकाल एवम् विनोद में रचना काल माना गया है। खोज, इस कवि के सम्बन्ध में मौन है।

८।१४

(८) औध कवि, सम्बत् १८६६ में उ०। इनके हालात से हम नावाकिफ हैं और भ्रम होता है कि शायद जो कवित्त हमने इनके नाम से लिखा है, वह बाजपेयी अयोध्या प्रसाद का न हो।

सर्वेक्षण

शैली की दृष्टि से सानुप्रास होने के कारण सरोज में उद्धृत छंद अयोध्या प्रसाद बाजपेयी 'औध' के छन्दों के पूर्ण मेल में है और सरोजकार का भ्रम ठीक प्रतीत होता है। सम्बत् १८६६ उक्त बाजपेयी जी का रचनाकाल भी है, जैसा कि हम पीछे चार संख्या पर देख चुके हैं। विनोद में (२५३०) विजावर के रहने वाले अयोध्या प्रसाद 'औध' कायस्थ कवि का भी उल्लेख है जो सम्बत् १६४५ में उपस्थित थे। यह कायस्थ और उक्त बाजपेयी 'औध' से भिन्न हैं।

६।१५

(६) अयोध्या प्रसाद शुक्ल, गोला गोकरन नाथ, जिला खीरी, सम्बत् १६०६ में उ०। यह कुछ विशेष उत्तम कवि तो नहीं थे, हां कविता करते थे और बहुतेरे ग्रन्थ इनके बनाये मैंने देखे हैं। राजा भूड़ के यहां इनका बड़ा मान था।

सर्वेक्षण

अयोध्या प्रसाद शुक्ल के सम्बन्ध में विशेष कोई जानकारी उपलब्ध नहीं हो सकी है। सरोज में उद्धृत सवैये में इनकी छाप जोधी है।

१०।१८

(१०) आनन्दसिंह, नाम दुर्गासिंह, अहबन दिकोलिया, जिला सीतापुर विद्यमान हैं। सामान्य कवि हैं। अभी कोई ग्रन्थ नहीं बनाया।

सर्वेक्षण

कवि का मूल नाम दुर्गासिंह है। इनका एक ग्रन्थ पहलाद चरित्र मिला है[1]। यह ग्रन्थ सम्बत् १६१७ में लिखा गया था पर सरोजकार को इसका पता न था। खोज रिपोर्ट के अनुसार दुर्गासिंह जी ग्रन्थ प्राप्ति के समय (१६२३ ई० में) जीवित थे। वे उस समय लगभग १०० वर्ष के थे। उक्त ग्रन्थ उन्हीं के पुस्तकालय से प्राप्त हुआ था। उस समय उनके बड़े पुत्र ७५ वर्ष के हो चुके थे। विनोद के अनुसार (संख्या २०६२) दुर्गासिंह की मृत्यु ७० वर्ष की वय में हुई। रिपोर्ट के अनुसार विनोद का यह कथन ठीक नहीं है। मिश्र बन्धुओं की भेंट दुर्गासिंह जी से हुई थी और उन्होंने इनके बहुत से छन्द सुने थे। दुर्गासिंह जी जमींदार थे। इनकी समस्या पूर्तियाँ 'काव्य सुधाकर' में छपा करती थीं।

---

[1] खोज रिपोर्ट १६२३।१०६

११।१६

(११) अमरेस कवि, सम्बत् १६३५ में उ० । इनकी कविता बहुत उत्तम है । कालिदास जू ने अपने हजारे में इनकी कविता बहुत सी लिखी है ।

सर्वेक्षण

कालिदास के हजारे में इनकी कविता थी, अतः इनके सम्बन्ध में अधिक से अधिक यही कहा जा सकता है कि यह सम्बत् १७५० के पूर्व उपस्थित थे । इनकी कवितायें दिग्विजय भूषण में भी हैं और बहुत उत्कृष्ट हैं । खोज से इनके सम्बन्ध में कोई सूचना नहीं मिलती ।

१२।१०

(१२) अम्बुज कवि सम्बत् १८७५ में उ० । इनके नीति सम्बन्धी कवित्त और नखशिख बहुत सरस हैं ।

सर्वेक्षण

अम्बुज महाकवि पद्माकर के पुत्र थे । इनके दूसरे भाई का नाम मिही लाल था । पद्माकर का जीवनकाल सम्बत् १८१०-६० वि० है । अतः सम्बत् १८७५ अम्बुज का रचनाकाल ही है । अम्बुज की वंश-परम्परा यह है[१] :—

अम्बुज का असल नाम अम्बा प्रसाद है[२] ।
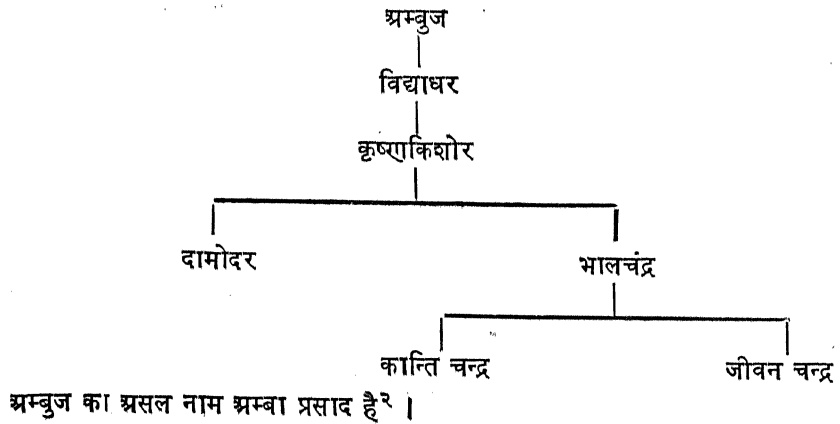
१३।११

(१३) आज़म कवि, सम्बत् १८६६ में उ० । यह मुसलमान कवि कविता के चाहक थे और कवियों के सत्संग में सुन्दर काव्य करते थे । इनका बनाया हुआ नखशिख और षट्ऋतु अच्छा है ।

सर्वेक्षण

दिल्ली के मुगल बादशाह मुहम्मद शाह रँगीले की आज्ञा से आजम खाँ ने नवरस सम्बन्धी

[१] माधुरी, माघ १६६०, 'महाकवि पद्माकर' शीर्षक लेख, लेखक पद्माकर के वंशज भालचन्द्र
[२] यही ग्रंथ, संख्या १५५

श्रृंगार दर्पण[१] नामक ग्रन्थ लिखा। आश्रयदाता एवम् कवि दोनों हिन्दी प्रेमी मुसलमान हैं। इस ग्रन्थ में कुल ३१७ छन्द हैं और पृष्ठ संख्या ५४ है। रिपोर्ट में आदि के १, २, ३, ४, ५, २० और अंत के ३१६, ३१७ संख्यक छन्द उद्धृत हैं। ये सभी दोहे हैं। प्रतीत होता है ग्रन्थ दोहों में ही लिखा गया है। सरोज में इनका एक श्रृंगारी कवित्त दिया हुआ है। श्रृंगार दर्पण की रचना सम्बत् १७८६ वि०, जेठ सुदी २, रबिवार को हुई :—

सत्रह सै पुनि छियासिह सम्बत् जेठ सु मास
द्वैज सुदी रबिवार को कीन्हों ग्रन्थ प्रकास ॥२०॥

अतः सरोज में दिया हुआ सम्बत् १८६६ पूर्णतया अशुद्ध है। विनोद (१८२३), ग्रियर्सन (६४८) और हिन्दी के मुसलमान कवि में १८६६ को जन्म काल माना गया है जो और भी भ्रष्ट है।

१४।१२

(१४) अहमद कवि सम्बत् १६७० में उ०। इनका मत सूफी अर्थात् वेदान्तियों से मिलता-जुलता था। इनके दोहा-सोरठा बहुत ही चुटीले रसीले हैं।

सर्वेक्षण

अहमद आगरे के रहने वाले थे। इनका उपनाम ताहिर था। यह सम्बत् १६१८-७८ वि० के लगभग वर्तमान थे। सभा की खोज में इनके निम्नलिखित ५ ग्रन्थ मिले हैं :—

(१) अहमद बारहमासी—१६३२।२। इस ग्रन्थ में साल के प्रत्येक महीने में विरहिणी की दशा और अन्त में मिलन का हृदयग्राही वर्णन है।

(२) कोकसार—१६०६।३१६, १६२०।२ बी०। इसी ग्रन्थ का दूसरा नाम गुणसागर (१६०६।३३५, १६२०।२ ए, बी) भी है।

(३) रति विनोद भाषा—१६४१।४७३

(४) रस विनोद १६२३।५ यह भी औषधियों और कामशास्त्र सम्बन्धी ग्रन्थ है।

(५) सामुद्रिक १६१७।२

कोकसार का रचनाकाल सम्बत् १६७८ आषाढ़ बदी ५ है :—

सम्बत् सोरह सै बरस अठहत्तरि अधिकाय
बदि अषाढ़ तिथि पंचमी कहि कीन्हीं समुझाय—१६०६।३१६

उस समय जहाँगीर राज्य कर रहा था :—

चारि चक्र सब विधि रचे जैसे समुद गभीर
छत्र धरै अविचल सदा राज्य साहि जहँगीर ॥१२॥—१३२०।२ बी

सामुद्रिक ग्रन्थ का रचनाकाल सम्बन्धी दोहा भी ऊपर वाला ही है। जहांगीर सम्बन्धी दोहे भी इस ग्रन्थ में ज्यों के त्यों हैं।

कोकसार और सामुद्रिक के रचनाकाल (सम्बत् १६७८ वि०) से स्पष्ट है कि सरोज में दिया हुआ सम्बत् १६७० अहमद का रचनाकाल ही है।

अहमद सूफी थे पर इनका झुकाव विषमता की ओर भी था। इनकी अधिकतर रचनायें

---

[१] खोज रि० १६०६।११

वासना सिक्त हैं। अधिक खोज करने पर बहुत सम्भव है कि रति विनोद भाषा और रस विनोद ये दोनों भी कोकसार के ही अन्य नाम सिद्ध हों।

१५।१३

(१५) अनन्य कवि (१) सम्बत् १७१० में उ०। वेदान्त संबंधी तथा नीति चेतावनी सामयिक वार्ता में इनकी बहुत कविता है।

सर्वेक्षण

१५, ३०, ३१, ३६ संख्यक चारों अनन्य वस्तुतः एक ही हैं। इनका पूर्ण विवरण संख्या ३० पर देखिये।

सरोज में अनन्य (१) के तीन छन्द (दो कवित्त और एक सवैया) उद्धृत हैं। उक्त सवैया सभा द्वारा प्रकाशित अनन्य ग्रन्थावली के अन्तर्गत संकलित ज्ञान योग (ज्ञान पचासा) का प्रथम छन्द है और ज्ञान योग अक्षर अनन्य का सर्व स्वीकृत ग्रन्थ है।

१६।२१

(१६) आलम कवि (१) सम्बत् १७१२ में उ०। पहले सनाढ्य ब्राह्मण थे। पीछे किसी रँगरेजिन के इश्क में मुसलमान होकर मुअज्जमशाह (शाहजादे शाहजहां बादशाह) की खिदमत में बहुत दिनों तक रहे। कविता बहुत सुन्दर है।

सर्वेक्षण

सरोज में आलम के निम्नांकित दो छन्द उद्धृत हैं :—

(१) आलम ऐसी प्रीति पर सरबस दीजे वारि
गुप्त प्रकट कैसी रहै दीजै कपट पिटारि

(२) जानत औलि किताबनि को जो निसाफ के माने कहे हैं ते चीन्हें
पालत हौं इत आलम को, उत नीके रहीम के नाम को लीन्हें
मोजम शाह तुम्हें करता करिबे को दिलीपति हैं बर दीन्हें
काबिल हैं ते रहैं कितहूँ कहूँ काबिल होत हैं काबिल कीन्हें

द्वितीय छन्द में आलम शब्द संसार के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। शिवसिंह ने प्रमाद से इसे कवि की छाप समझ लिया है और चूँकि इसमें मोजम शाह की प्रशस्ति है, इसलिये आलम को मोजम शाह का दरबारी कवि मान लिया है। मोज्जमशाह औरंगजेब का बेटा था, उसी की प्रतिकृति था। इसका एक नाम शाह आलम भी था। यह औरङ्गजेब की मृत्यु के अनन्तर बहादुरशाह के नाम से दिल्ली की गद्दी पर बैठा। इसने १७०७ ई० से १७१२ ई० तक राज्य किया। शिवसिंह ने आलम का रचनाकाल १७१२ माना है। यह १७१२ वस्तुतः इसी बहादुरशाह के शासन का अंतिम वर्ष है। यह विक्रम-सम्बत् नहीं है, ई० सन् है, और आलम के समय का अनुमान शिवसिंह ने बहादुरशाह की मृत्युकाल से लगाया है परन्तु मूल आधार ही भ्रान्त है, अतः भूल स्वाभाविक है। उक्त छन्द आलम का न होकर उक्त मुअज्जमशाह के दरबारी कवि लाला जैतसिंह महापात्र का है। जैतसिंह सम्बत् १७०३ वि० में उत्पन्न हुये थे। उन्होंने सम्बत् १७२७ वि० में माजम प्रभाव नामक अलंकार ग्रन्थ उक्त मुअज्जमशाह के नाम पर लिखा था और सम्बत् १७६२ में प्रबोध चन्द्रोदय का अनुवाद किया था। उक्त सवैया भी १७६२ के आसपास कभी बना रहा होगा। शिवसिंह की इस भ्रान्ति

ने हिन्दी साहित्य के इतिहास में बड़ी गड़बड़ी उत्पन्न कर दी है। लोगों ने दो आलमों की कल्पना कर ली है। एक अकबरकालीन और दूसरे १७१२ में उपस्थित। वस्तुतः आलम एक ही हुए। इनका रचनाकाल सम्बत् १६४० ई० से लेकर सम्बत् १६८० तक है।

आलम के लिखे हुये चार ग्रन्थ हैं—(१) माधवानल कामकन्दला, (२) श्याम सनेही, (३) सुदामा चरित्र, (४) आलम केलि।

ऊपर उद्धृत दोहा माधवानल कामकन्दला का है। इसकी रचना ६६१ हिजरी (१५८३ ई०, १६४० वि०) में हुई। इसके ग्रन्थारम्भ में अकबर और टोडरमल का भी समसामयिक के रूप में उल्लेख हुआ है।

सरोज में शेख की भी कविता है। पर शिवसिंह नहीं जानते थे कि शेख स्त्री थी और यह वही रँगरेजिन थी, जिसके इश्क में आलम आलम हुये। डा० भवानी शंकर याज्ञिक का अभिमत है कि 'शेख' किसी स्त्री का नाम होना असंगत है। वस्तुतः आलम 'शेख' जाति के थे। इनका पूरा नाम 'शेख आलम' था। यह अपनी छाप कभी-कभी 'आलम' और कभी-कभी 'शेख' रखा करते थे। आलम के प्राचीन हस्त लेखों में "इति शेख आलम के कवित्त सम्पूर्ण" जैसी पुस्तिकाएँ भी मिलती हैं[१]।

प्रो० पं० विश्वनाथ प्रसाद जी मिश्र ने 'आलम और उनका समय[२]' शीर्षक निबन्ध में एक आलम की स्थापना की है और शिवसिंह के भ्रम से उत्पन्न हिन्दी साहित्य के इतिहासों में आलम सम्बन्धी भ्रान्तियों का पूर्णरूपेण मूलोच्छेद कर दिया है। पहले एक ही आलम माने जाते थे। सन् १६०४ ई० की खोज में माधवानल कामकन्दला की पहलो हस्तलिखित प्रतिलिपि मिली और रचनाकाल सम्बत् १६४० के आधार पर दो आलमों की संदेहात्मक धारणा प्रारम्भ हुई।

१७।२३

(१७) असकन्दगिरि, बांदा, बुन्देलखण्डी सं० १६१६ में उ०। यह कवि गोसाईं हिम्मत बहादुर के वंश में थे, और कविता के बड़े चाहक गुण-ग्राहक थे। नायिका भेद का एक ग्रन्थ 'अस्कन्द विनोद' नाम बहुत अद्भुत रचा है।

सर्वेक्षण

स्कन्दगिरि का 'रस मोदक' नाम, ग्रन्थ खोज में मिला है[३]। यह कोई रस-ग्रन्थ प्रतीत होता है। इसका रचनाकाल सम्बत् १६०५ वि० है। रचनाकाल सम्बन्धी दोहा हस्तलिखित प्रति में आधा फट गया है। उसका उपलब्ध अंश इस प्रकार है :—

............(द) स नौ सै औ पाँच को, सम्बत्
(भादव मास).........(।) शुक्ल पच्छ द्वादसि रचौ
(रस मोदक पर) कास ॥२॥

प्रतिलिपि काल भी सम्बत् १६०५ ही है। अतः स्पष्ट है कि सम्बत् १६१६ उपस्थिति काल है, न कि उत्पत्ति काल।

१८२४

(१८) अनूपदास कवि, सम्बत् १८०१ में उ०। शान्त-रस में बहुधा इनके कवित्त, दोहा, गीत आदि देखे गये।

---

[१] पोद्दार अभिनन्दन ग्रंथ, पृष्ठ ३००-३०१ [२] नागरी प्रचारिणी पत्रिका, वर्ष, ५०, अंक १, संबत् २००२ [३] खोज रिपोर्ट १६०५।३२

सर्वेक्षण

विनोद में १८ संख्यक अनूपदास और ४३ संख्यक अनूप के एक ही व्यक्ति होने की सम्भावना की गई है, क्योंकि दोनों के समय में केवल तीन वर्ष का अन्तर है। विनोद की यह सम्भावना ठीक हो सकती है। खोज में इनका कोई पता नहीं।

१९।२५

(१९) ओली राम कवि, सम्बत् १६२१ में उ०। कालिदास जी ने इनका काव्य अपने हजारे में लिखा है।

सर्वेक्षण

कालिदास के हजारे में इनकी कविता थी, अतः इनका १७५० के पूर्व होना निश्चित है। इनका ठीक-ठीक समय नहीं बताया जा सकता। खोज में इनका कोई ग्रन्थ नहीं मिला है।

२०।२६

(२०) अभयराम कवि वृन्दाबनी, सम्बत् १६०२ में उ०। ऐज़न। (कालिदास जी ने इनका काव्य अपने हजारे में लिखा है।)

सर्वेक्षण

अभयराम की कविता हजारे में थी, अतः यह सम्बत् १७५० के पूर्व उपस्थित थे। विनोद में इनका जन्म काल सम्बत् १५६१ और रचनाकाल सम्बत् १६२५ माना गया है। राजस्थान रिपोर्ट[1] में एक अभयराम सनाढ्य हैं जो भारद्वाज कुल, सनाढ्य जाति, करैया गोत्रीय केशवदास के पुत्र एवम् रणथम्भौर के समीपवर्ती बैहरन गाँव के रहने वाले थे। यह सब उल्लेख इन्होंने बीकानेर नरेश अनूपसिंह के नाम पर लिखित अपने 'अनूप शृंगार' नामक ग्रन्थ में किया है। अनूपसिंह ने प्रसन्न होकर इन्हें कविराज की उपाधि दी थी। इस ग्रन्थ की रचना अगहन सुदी २ रबिवार, सम्बत् १७५४ को हुई थी। यह अभयराम भी कालिदास के समकालीन हैं। हो सकता है इन्हीं की कविता हजारे में संकलित हुई रही हो। ऐसी स्थिति में सरोज का सम्बत् अशुद्ध है। अभमराम जी राधा-वल्लभ संप्रदाय के थे। यह जाति के ठाकुर थे। इनकी एक रचना 'श्री वृन्दावन रहस्य विनोद' वृन्दावन से सम्बत् २००९ में प्रकाशित हुई है।

२१।२७

(२१) अमृत कवि, सम्बत् १६०२ में उ०। अकबर बादशाह के यहां थे।

सर्वेक्षण

सरोजकार को अमृत का नाम सम्भवतः अकबरी दरबार के कवियों के नामोल्लेख करने वाले सवैये से मिला :—

पूरवी, प्रसिद्ध, पुरन्दर, ब्रह्म, सुधारस अमृत, अमृत बानी १६०२ ई० हैं, न कि विक्रमी सम्बत्, और यह कवि का उपस्थिति काल है, क्योंकि १६०५ ई० में तो अकबर की मृत्यु हो गई थी। १६०२ में उत्पन्न होने वाला कवि उसका दरबारी नहीं हो सकता।

---

[1] राजस्थान रिपोर्ट, भाग २, पृष्ठ १६

विनोद में अमृत को महाभारत का रचयिता माना गया गया है जो पूर्णरूपेण भ्रामक है। महाभारत की रचना करने वाले अमृत पटियाला नरेश महाराज नरेन्द्र सिंह के यहां थे[1]।

२२।२८

(२२) आनन्द घन कवि दिल्ली वाले, सम्बत् १७१५ में उ०। इस कवि की कविता सूर्य के समान भासमान है। मैंने कोई ग्रन्थ इनका नहीं देखा। इनके फुटकर कवित्त प्रायः पांच-सौ तक मेरे पुस्तकालय में होंगे।

सर्वेक्षण

२२ संख्यक आनन्दघन और २१२ संख्यक घन आनन्द एक ही कवि हैं। हिन्दी साहित्य में तीन आनन्द घन हैं :—

(१) नन्दगाँव वासी आनन्द घन—यह सोलहवीं शती के उत्तरार्द्ध में हुये। इनके रचे दो ही चार पद हैं।

(२) जैन आनन्द घन—यह सत्रहवीं शती के उत्तरार्द्ध में हुये। इन्होंने जैन तीर्थंकरों के स्तवन में 'आनन्द घन बहत्तरी स्तवावली' लिखा है।

(३) वृन्दावन वासी आनन्द घन—यह अट्ठारहवीं सदी के उत्तरार्द्ध में हुये। यह कृष्णगढ़ के राजा सावन्तसिंह, सम्बन्ध नाम नागरी दास के समकालीन थे। यही हिन्दी साहित्य में प्रसिद्ध हैं। इन्हीं का उल्लेख सरोज में हुआ है और प्रमाद से दो बार हुआ है। पर सरोज के इन दोनों कवियों के काल में सौ वर्ष का अन्तर आ गया है।

सरोज में आनन्द घन के नाम पर निम्नांकित दो सवैये हैं :—

(१)

आपुही ते तन हेरि हँसे तिरछे करि नैनन नेह के चाउ मैं
हाय दई सु बिसारि दई सुधि, कैसी करौं सु कहौ कित जाउँ मैं
मीत सुजान, अनीति कहा यह, ऐसी न चाहिये प्रीत के भाउ मैं
मोहनी मूरति देखिबे को तरसावत हौ बसि एकहि गांउ मैं

(२)

जैहैं सबै सुधि भूलि तुम्हैं फिरि भूलि न मोतन भूलि चितैहैं
एक को आँक बनाबत मेटत, पोथिय काँख लिये दिन जैहैं
साँची हौं भाखति मोहि कका की सौं पीतम की गति तोरिहु ह्वैहैं
मोसों कहा अठिलात अजासुत, कैहौं कका जी सों तोहू सिखैहैं

और घन आनन्द के नाम पर निम्नांकित सवैया उद्धृत है :—

गाइहौं देवी गनेश महेश दिनेसहिं पूजत ही फल पाइहौं
पाइहौं पावन तीरथ नीर सुनेकु जहीं हरि को चित लाइहौं
लाइहौं आछे द्विजातिन को अरु गोधन दान करौं चरचाइहौं
चाइ अनेकन सों सजनी घन आनन्द मीतहिं कंठ लगाइहौं।

श्री विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने उक्त तीनों छन्दों की छान-बीन की है। उनके अनुसार प्रथम सवैया घनानन्द का ही है, यद्यपि यह सुधासर नामक संग्रह में सुजान के नाम से चढ़ा हुआ है। दूसरा

---

१ विनोद २१०६।१

सवैया घनानन्द का नहीं है, यह केशव-पुत्र-बधू की रचना है। सभा के हस्तलेख संग्रह संख्या ८५६ के १२५वें पृष्ठ पर यही एक सवैया केशव-पुत्र-बधू के नाम पर दिया हुआ है। तीसरा सवैया घनानन्द के किसी संग्रह में नहीं मिलता। मिश्र जी के अनुसार यह रीतिकालीन किसी कविन्द का छन्द है और घन आनन्द मीतहिं का विशेषण है। उक्त ८५६ संख्यक हस्तलेख वस्तुतः कालिदास हजारा का अंशपूर्ण रूप है। उक्त हस्तलेख में आनन्द घन के ७ छन्द संकलित करने के अनन्तर केशव-पुत्र-बधू का एक छन्द दिया गया है। शिवसिंह ने आनन्दघन के ७ छन्दों में से १ छन्द सरोज में ले लिया, पर अनवधानता के कारण वे केशव-पुत्र-बधू वाले छन्द को भी आनन्दघन के नाम पर चढ़ा गये।

घनानन्द मुगल सम्राट् मुहम्मद शाह रँगीले (१७१९-४८ ई०, १७७६-१८०५ वि०) के मुन्शी थे। दरबार की एक मुसलमान वेश्या पर, जिसका हिन्दू नाम सुजान राइ था, जो सुन्दरी, गायिका, नर्तकी एवम् कवियित्री थी, यह अनुरक्त थे। बादशाह के आग्रह पर न गाकर, सुजान राय के अनुरोध मात्र पर, उसकी ओर मुँह और बादशाह की ओर पीठ कर इन्होंने दरबार में गाया था। बादशाह इनके संगीत पर मुग्ध हुआ, पर गुस्ताखी पर रुष्ट भी। अतः इनको प्राणदण्ड न देकर दरबार से निर्वासित कर दिया। सुजान साथ न आई, केवल उसका नाम साथ आया। यह वृन्दावन में आकर रहने लगे पर सुजान को न भूले। इन्होंने सुजान को राधाकृष्ण का पर्याय बना दिया। सम्बत् १८१७ में यह अहमद शाह अब्दाली के आक्रमण में वृन्दावन में मारे गये। यह निम्बार्क सम्प्रदाय में दीक्षित हुये थे। 'वृन्दावन देव' इनके गुरु थे। सम्प्रदाय के अन्तर्गत इनका नाम 'बहुगुनी' था।

श्री विश्वनाथ प्रसाद मिश्र जी ने सम्पूर्ण घन आनन्द ग्रंथावली का बड़े श्रम से सम्पादन और प्रकाशन किया है। इसमें कुल छत्तीस ग्रंथ हैं एवम् ग्रंथान्त में प्रकीर्णक के अन्तर्गत फुटकर रचनायें हैं। ग्रन्थ के आदि में अत्यन्त शोध पूर्ण भूमिका भी लगी हुई है। इसी भूमिका के आधार पर ऊपर का सब विवरण दिया गया है।

आनन्द घन के सम्बन्ध में दिया हुआ १७१५, ई० सन् है और उनका रचनाकाल है। शुक्ल जी इनका जन्मकाल सम्बत् १७४६ के लगभग मानते हैं।

२३।२६

(२३) अभिमन्यु कवि, सम्बत् १६८० में उ०। इनकी कविता शृंगार-रस में चोखी है।

सर्वेक्षण

विनोद के अनुसार (कवि संख्या ३४४) अभिमन्यु के बनाये हुये कुछ छंद खानखाना की प्रशंसा के भी मिले हैं। और यदि खानखाना वही प्रसिद्ध पुरुष हों तो अभिमन्यु के कविता काल के और भी पहले होने की सम्भावना की गई है। खानखाना नाम से और कोई व्यक्ति ऐसा नहीं हुआ है, जिसके लिये हिन्दी के कवियों ने प्रशस्तियाँ लिखी हों। निःसंदेह अभिमन्यु के कवित्तों में सु-प्रसिद्ध अब्दुर्रहीम खानखाना की ही प्रशंसा है। खानखाना की मृत्यु, सम्बत् १६८३ के फाल्गुन मास में हुई। दोनों की सम-सामयिकता को ध्यान में रखते हुये सम्बत् १६८० को उपस्थिति-काल ही मानना चाहिये।

२४।३०

(२४) अनन्त कवि, सम्वत् १६९२ में उ०। नायिका-भेद का इनका एक ग्रन्थ अनन्तानन्द है।

सर्वेक्षण

खोज में किसी अनन्त कवि के ७० शृंगारी कवित्त-सवैयों का एक ग्रन्थ 'कवित्त संग्रह' मिला है[१]। रिपोर्ट में उसके तीन छंद भी उद्धृत हैं। ग्रन्थ में न तो रचनाकाल दिया है, न प्रतिलिपि काल ही। यह फुटकर छन्दों का संग्रह है। सम्भवतः यह कवित्त संग्रह सरोज में उल्लिखित अनन्तानन्द के रचयिता इन्हीं अनन्त कवि का है। सरोज में इस कवि के दो सवैये उद्धृत हैं।दोनों उपजाति हैं, शुद्ध नहीं। एक छंद में कवि ने अपना नाम तृतीय चरण के प्रारम्भ में ही रख दिया है, जो सारे छन्द के प्रवाह के मेल में नहीं बैठता और भद्दा लगता है।

मन मोहन हैं जिन वे सुख दीने, इतै चितयो चित भूलि न जैये
और सुनो सखी मीत (? रीत) मिताई की, मंत जो बेचै तौ बेचे बिकैये
अनन्त हँसे ते हँसै विचचक्खन, रूपै हँसें ते गँवारि कहैये
मान करौ तै करौ घरी आध लौं, प्यारी बलाय ल्यों, सौंह न खैये

ऐसा ही त्रुटिपूर्ण उक्त रिपोर्ट का पहला छन्द भी है :—

एक सहो इत को सतराहतु औ मुहिं दोस लगावतु ओऊ
अनन्त कहा इतै मान हमारो, कहा करिहै दुख मानिकै कोऊ
इतैं तो स्याम उतै हैं वे भामिनि, आपुहि आपु महारस होऊ
तिहारेंब बीच परे सोइ बावरी, हौं तुम एक पटा पढ़े दोऊ

ध्यान देने की बात है कि दोनों सवैये एक ही प्रसंग (मान) वाले भी हैं।

२५।३१

(२५) आदिल कवि, सम्बत १७६२ में उ०। फुटकर काव्य है। कोई ग्रन्थ देखा सुना नहीं।

सर्वेक्षण

इनके सम्बन्ध में खोज रिपोर्टें मौन हैं।

२६।३२

(२६) अलीमन कवि, सम्बत १९३२ में उ०। सुन्दरी तिलक में इनके कवित्त हैं।

सर्वेक्षण

अलीमन के सम्बन्ध में दिया हुआ सम्बत् १९३३ इस बात के प्रबल प्रमाणों में से एक है कि उ० का अर्थ उत्पन्न नहीं, उपस्थित है। सुन्दरी तिलक में कवित्त है ही नहीं, सभी सवैये हैं। अलीमन के भी सवैये इसमें हैं।

---

[१] खोज रिपोर्ट १९२३।१७

२७।३३

(२७) अनीश कवि, सम्बत् १९११ में उ०। दिग्विजय भूषण में इनके कवित्त हैं।

सर्वेक्षण

अनीश का एक ही छन्द दिग्विजय भूषण में है, वही सरोज में भी उद्धृत है। विनोद के अनुसार (कवि संख्या ७१६-१७) दलपत राय बंशीधर के 'अलंकार रत्नाकर' में भी अनीस की रचना है। कहा नहीं जा सकता कि वहाँ भी यही प्रसिद्ध कवित्त है अथवा इसके अतिरिक्त और भी कुछ छन्द हैं। अलंकार रत्नाकर का रचनाकाल सम्बत् १७९८ विक्रमी है। अतः १९११ न तो जन्म काल हो सकता है और न रचनाकाल ही। निश्चय पूर्वक इतना ही कहा जा सकता है कि यह कवि १७९८ के आस-पास या कुछ पूर्व उपस्थित था।

———

२८।३४

(२८) अनुनैन कवि, सम्बत् १८९६ में उ०। इनका नखशिख अच्छा है।

सर्वेक्षण

सर्वेक्षण के लिये कोई सूत्र सुलभ नहीं। विनोद में (२१३२) इनका जन्मकाल १८८६ दिया गया है, पर यह १८९६ के स्थान पर प्रमाद से हो गया है और विनोद में ग्रियर्सन (६७३) का अनुसरण कर सरोज-दत्त सम्बत् को जन्मकाल ही माना गया है।

———

२९।३६

(२९) अनाथदास कवि, सम्बत् १७१६ में उ०। इन्होंने शान्त रस सम्बन्धी काव्य लिखा है और विचारमाला ग्रन्थ बनाया है।

सर्वेक्षण

अनाथ दास के तीन ग्रन्थ खोज में मिल चुके हैं :—

(१) विचारमाला १९०६।१२९ बी, २६५ ; १९०९।७ ; १९२०।८ बी, पं० १९२२।७ ए, बी, १९२३।१९, ४१; १९२६।१५ ए, बी; १९२९।१५, ए, बी, सी, डी, ई, एफ, जी; १९४१।३ क, ख, विचारमाला की रचना सम्बत् १७२६ में हुई।

> **सत्रह सै छब्बीस, संबत माधव मास शुभ**
> **मो मति जितक हुतीस, तेतिक बरनी प्रकट कर** —२।१९२६।१५ ए

इस ग्रन्थ की रचना कवि ने अपने मित्र नरोत्तमपुरी की आज्ञा से की है :—

> **पुरी नरोत्तम मित्रवर, खरो अतिथि भगवान्**
> **बरनी माल विचार मैं, तेहि आज्ञा परमान** —४२।१९२३।४१

अनाथ दास के अन्य नाम जन अनाथ और अनाथ पुरी भी हैं। पुरी शब्द सूचित करता है कि यह संन्यासी हो गये थे। विचार माला की एक प्रति की पुष्पि में इन्हें स्पष्ट रूप से संन्यासी कहा गया है।

"इति श्री विचारमाला अनाथ पुरी सन्यासी कृत.........।"—१९२६।१५ ए।

(२) राम रतनावली १९०६।१२९ ए।

(३) प्रबोध चन्द्रोदय नाटक १६०६।१३१, १६१२।७, १६२०।८ ए, १६२६।१५, १६४१।३ क, ख । यह वस्तुतः नाटक नहीं है, एक वर्णनात्मक काव्य है ।

कीर्ति वर्मन चंदेल (१०५२-१११५ ई०) के सभाकवि कृष्ण मिश्र रचित इसी नाम के संस्कृत नाटक के अनुसार यह ग्रन्थ लिखा गया है । मूल संस्कृत नाटक में कर्णदेव (१०४२ ई०) के दोषों और वेदान्त-दर्शन का विवेचन है । इस हिन्दी ग्रन्थ में केवल वेदान्त-दर्शन है[१] । इसी का एक अन्य नाम सर्वसार उपदेश भी है ।

प्रबोध चन्दोदय का रचनाकाल क्वार बदी ११ बुधवार, सम्बत् १७२० है :—

सम्बत सत्रा सै गये, वर्ष विन्स निरधार
अस्विन मास रचना रची, सारासार निरधार —१६२०।८ ए

१६१२ वाली रिपोर्ट में षष्टविंश पाठ है । इसके अनुसार इसकी रचना सम्बत् १७२६ में हुई । यह ग्रंथ १२ दिनों में रचा गया और दो दिनों में शोधा गया :—

द्वादस दिन में ग्रन्थ यह, सर्वसार उपदेश
जन अनाथ बरनन कियो, कृपा सो अवध नरेश
सोधत लागो दिवस द्वै, सिद्ध भयो रुचि ग्रन्थ
बाँह पकरि जो लै चलै, अगम मुक्ति को पंथ —१६२०।८ ए

ग्रन्थ-रचना के पश्चात् ही अनाथ दास जी ने दीक्षा ली :—

सोधत मास उभय (गये), भये कछुक दिन और
जन अनाथ श्रीनाथ की, सरनहिं पायो ठौर —१६१२।७

अनाथ दास के गुरुदेव का नाम हरिदेव थ :—

श्री गुरु सुख मंगल करन, आनँद तहाँ बसन्त
कीरति श्री हरिदेव की, मुद भरि सदा कहन्त —१६२०।८ ए

यह हरिदेव जी मौनी बाबा के नाम से भी प्रख्यात थे :—

पद बन्दन आनन्द युत, कर श्रीदेव मुरारि
विचार माल बरनन करूँ, मौनी जी उरधारि १८२०।८ बी

खोज रिपोर्ट के अनुसार जन अनाथ ने सर्वसार उपदेश की रचना किसी राजा मकरन्द के कहने पर की[२] । पर इसका कोई प्रमाण नहीं दिया गया है । इस जन अनाथ को इस रिपोर्ट में अनाथदास से भिन्न माना गया है, जो ठीक नहीं । विनोद में (५२०) इन्हें १६०६ की रिपोर्ट के आधार पर दादू पंथी कहा गया है, यह भी ठीक नहीं है । यह रामानुज सम्प्रदाय के वैष्णव थे । विनोद में सर्वसार, उपदेश और प्रबोध चन्द्रोदय तीन ग्रन्थ माने गये हैं । सर्वसार और उपदेश दो अलग नाम नहीं हैं, ग्रन्थ का पूरा नाम है सर्वसार उपदेश । यह प्रबोध चन्द्रोदय का ही दूसरा नाम है । विनोद में जन अनाथ (४५२) को अनाथ दास से भिन्न माना गया है, यह भी भ्रम ही है ।

३०।३७

(३०) अक्षर अनन्य कवि, सम्बत् १७१० में उ० । शान्त रस का काव्य लिखा है ।

सर्वेक्षण

अक्षर अनन्य कायस्थ संन्यासी थे । यह पृथ्वी सिंह के आश्रित थे । अपने ग्रन्थों में कवि ने

---

[१] खोज रिपोर्ट १६२०।८ ए [२] खोज रिपोर्ट १६०६।१३१

पृथ्वी सिंह को पृथि चन्द नाम से स्मरण किया है। पृथ्वी सिंह दतिया के राजा दलपत राव (शासन काल सम्बत् १७४०–६४ वि०) के पुत्र थे। यह दलपत राव की तीसरी रानी, वरछा पमार की पुत्री गुमान कुंवरि के गर्भ से उत्पन्न हुये थे। दतिया की गद्दी दूसरी रानी, नोनेर की चांद कुंवरि के पुत्र रामचन्द्र को मिली। पृथ्वी सिंह को सेनुहड़ा की जागीर से संतोष करना पड़ा। इनको सम्बत् १७६६ वि० में आज़मशाह के आक्रमण के समय जहाँदार शाह के सेनापति के रूप में ख्याति मिली थी। अक्षर अनन्य ने पृथ्वी सिंह को नरेश कहा है। पर यह केवल आदि सूचक है। पृथ्वी सिंह स्वयं सुकवि थे और हिन्दी साहित्य में 'रसनिधि' के नाम से प्रख्यात हैं। अक्षर अनन्य बुन्देल खंड में अत्यन्त लोक प्रिय थे। उनके ग्रन्थों के हस्तलेख दतिया, चरखारी, विजावर आदि दरबारों के पुस्तकालयों में मिलते हैं।[1] अक्षर अनन्य सम्बत् १७६४ और उसके बाद अवश्य उपस्थित थे। अनुमानतः सम्बत् १७१० और १७९० उनके जन्म और मरण काल की सीमायें हैं। अक्षर अनन्य के निम्नांकित १६ ग्रन्थ खोज में मिले हैं :—

(१) अनन्य प्रकाश १९०९।८ ए। कुल १०३ छंद।

(२) अनुभव तरंग १९२६। २ ए। नीति और अध्यात्म सम्बन्धी विभिन्न प्रकार के १०१ छंद।

(३) उत्तम चरित्र १९०४।१४ ए, १९०६।२ एच, १९२३।७ डी० एफ० जी० अथवा
दुर्गापाठ भाषा १९२६।१४ ए
अथवा,
सुन्दरी चरित्र १९२३।७ ई, १९२६।१४ जी, १९४७।१ ग। तीन नामों वाला यह ग्रन्थ प्रसिद्ध दुर्गा सप्तशती का ३१५ छंदों में अनुवाद है।

(४) ज्ञान पचासा (अनन्य पंचासिका या ज्ञान योग) १९०६।२ ई। इसमें अध्यात्म संबन्धी ५० सवैये हैं।

(५) ज्ञान बोध या ज्ञान योग, या सर्वं उपदेश १९०६।२ डी, १९२३।७ ए
अथवा,
शिक्षा १९२०।४ सी,
अथवा,
बीग्रान बोध (? ज्ञानबोध) १९४७।१ क। इस ग्रन्थ में अध्यात्म शिक्षा सम्बन्धी कुल १४ छंद हैं।

(६) देव शक्ति पचीसी १९०६।२ जी, १९०६।८ सी। इस ग्रन्थ में दुर्गा की प्रशस्ति २८ छंदों में है। इसको शक्ति पचीसी भी कहते हैं।

(७) प्रेम दीपिका १९०५।१, १९०६।२ सी, १९२०।४ ए, १९२६।१४ बी, सी, ई। यह बड़ा ग्रन्थ है। इसमें भ्रमरगीत और कुरुक्षेत्र में पुनर्मिलन वर्णित है।

(८) ब्रह्म ज्ञान १९०९।८ डी।

(९) भवानी स्तोत्र १९०६।२ आई। इस ग्रन्थ में केवल ८ छंद हैं।

(१०) योग शास्त्र १९०६।२ के इस ग्रन्थ में २८ छंद हैं।

(११) राज योग १९०५।२, १९२६ क २ बी, १९२०।४ बी, १९२३।७ बी, सी, १९४७।१ ख। इस ग्रन्थ में कुल ३१ छंद हैं। १९२० वाली प्रति में ८० छंद हैं।

[1] खोज रि० १९२०।४

(१२) विज्ञान योग १६२३।७ एच।

(१३) विवेक दीपिका १६०६।८ वी। इसमें ७० छंद हैं।

(१४) वैराग तरंग १६०६।२ जे। इस ग्रन्थ में कुल १७ छंद हैं।

(१५) सिद्धान्त बोध १६२६।१४ ई, एफ। इसमें कुल १६७ छंद हैं।

(१६) कविता १६०६।२ एफ।

विनोद में (४३६) अक्षर अनन्य के १५ ग्रन्थों की सूची दी गई है, जिनमें से निम्नांकित ४ का खोज में पता नहीं चला है :—

(१) ज्ञान बोध, (२) हर संवाद भाषा, (३) योगशास्त्र स्वरोदय, (४) श्री सरस मंजावली। सम्भवतः खोज में प्राप्त ऊपर उल्लिखित दसवां ग्रन्थ ही योगशास्त्र स्वरोदय है।

अक्षर अनन्य के कुछ ग्रन्थ प्रकाशित भी हो चुके हैं। १६१३ ई० में ठाकुर सूर्यकुमार वर्मा ने अनन्य ग्रन्थावली का सम्पादन करके सभा से प्रकाशित कराया था। इस ग्रन्थावली में निम्नांकित लघु ग्रन्थ हैं :—

(१) राज योग, (२) ज्ञान योग या ज्ञान पचीसी, (३) विज्ञान योग या ज्ञान बोध, (४) विज्ञान बोध।

इनमें से विज्ञान बोध को छोड़ सभी सभा की खोज में मिल चुके हैं। लाला सीताराम जी ने भी प्रेम दीपिका को सम्पादित कर हिन्दुस्तानी एकेडेमी, प्रयाग से प्रकाशित कराया था।

३१।२२

(३१) अनन्य कवि (२) दुर्गा जी का भाषा अनुवाद किया है।

सर्वेक्षण

१५,३०,३१,३६ संख्यक कवि एक ही हैं। उक्त दुर्गा जी के भाषा अनुवाद की कई प्रतियाँ उत्तम चरित्र, दुर्गा पाठ भाषा, सुन्दरी चरित्र आदि नामों से खोज में मिल चुकी हैं। इनका विवरण संख्या ३० पर पीछे दिया जा चुका है।

३२।६

(३२) अब्दुल रहिमान दिल्ली वाले, सम्बत् १७३८ में उ०। यह कवि मुअज्जम शाह के यहाँ थे और यमक शतक नामक ग्रन्थ अति विचित्र बनाया है।

सर्वेक्षण

सरोज में यमक शतक के ५ दोहे उद्धृत हैं। इनमें से निम्नांकित दो, कवि-जीवन पर भी प्रकाश डालते हैं :—

साजत छत्रपती सुपति दिल्लीपति जु प्रवीन
चकता आलमशाह सुत कुतुबदीन पद लीन २
काको मनसजदा जगत कवि अब्दुल रहिमान
कवि ईश्वर ईश्वर कियो, कियो ग्रन्थ अभिराम ३

इन दोहों से स्पष्ट है कि कवीश्वर अब्दुल रहिमान दिल्लीश्वर मुअज्जमशाह (कुतुबद्दीन शाह आलम बहादुरशाह) के मनसबदार थे। बहादुरशाह का राज्य काल सम्बत् १७६३–६८ वि० है।

यही इस ग्रन्थ का रचना काल होना चाहिये। यमक शतक में १०७ दोहे हैं, जिनमें श्लेष, यमक और एकाक्षर छंदों के उदाहरण हैं।

खोज रिपोर्ट के अनुसार वह मुगल बादशाह फर्रुखसीयर (शासनकाल सम्बत् १७७०-७६ वि०) के आश्रित मनसबदार थे। और इन्होंने नखशिख नामक ग्रन्थ रचा था।[1]

फरके फरकसेर सुलतान वर सुन्दर सुभट सुजान
ताको मनसबदार सुभ कवि अबदुर रहमान २

इनका उपनाम प्रेमी था। नखशिख के कवित्तों में 'रहमान प्रेमी' छाप है। आगे इन्हीं का वर्णन प्रेमी यमन मुसलमान दिल्ली वाले के नाम से भिन्न कवि समझ कर किया गया है। इन्हें अनेकार्थ नाम मालाकोष का रचयिता एवम् सम्बत् १७९८ में उ० कहा गया है। यमन यवन का विकृत रूप है और मुसलमान अर्थ देता है। सरोज में दिया हुआ ऊपर वाला सम्बत् १७३८ ई० सन् प्रतीत होता है और कवि की पूर्ण प्रौढ़ावस्था का द्योतक है।

३३।२

(३३) अमर दास कवि, सम्बत् १७१२ में उ०। सामान्य काव्य है। कोई ग्रन्थ इनका देखा सुना नहीं।

सर्वेक्षण

अमरदास का नाम अम्मर दास और अम्बर दास भी है। खोज में इनके एक ग्रन्थ भक्त विसदावली की अनेक प्रतियां मिली हैं।[2] रिपोर्टों में भक्त विसदावली के कर्त्ता की, सरोज में उल्लिखित इन्हीं अमरदास से अभिन्नता स्थापित की गई है, जो ठीक प्रतीत होती है। इस ग्रन्थ का रचनाकाल चैत्र शुक्ल ७, सम्बत् १७५२ है।

जो नैन[2] सर[5] रिषि[7] चंद[1] है
सो जानु संवत छंद है
मधुमास उजरो मास है
तिथि सत्तमी को साख है—१९२६।९ बी

कवि के गुरु का नाम परसराम प्रतीत होता है:—

गुरु परम परमानन्दनम्
श्री परसराम मन रंजनं १९२६।९ बी।

सरोज में दिया हुआ सम्बत् १७१२ कवि के जीवन का प्रारम्भिक काल प्रतीत होता है। इसी के आस-पास इनका जन्म हुआ रहा होगा।

विनोद में (९०) इन्हें नानक का शिष्य कहा गया है, जो पूर्णतया भ्रमपूर्ण है।[3] सिक्ख गुरुओं में एक अमरदास अवश्य हुये हैं, पर सरोज वाले अमरदास उनसे भिन्न है।

---

(१) खोज रिपोर्ट १९०३।५० (२) खोज रिपोर्ट १९०६।१३६, १९२०।५, १९२६।८ ए, बी, १९२९।६ ए, बी (३) खोज रिपोर्ट १९२०।५

३४।१७

(३३) अगर कवि, सम्बत् १६२६ में उ० । नीति सम्बन्धी कुण्डलिया, छप्पय, दोहा इत्यादि बहुत बनाये हैं ।

सर्वेक्षण

मेरा अनुमान है अगर प्रसिद्ध स्वामी अग्रदास हैं। इस नाम का कोई दूसरा कवि नहीं हुआ। ग्रियर्सन में भी (४४) यही सम्भावना की गई है। अग्र का मुख सुख के अनुसार अगर हो जाना अत्यंत स्वाभाविक है। फिर अगर का हस्तलेखों में आ जाना भी असंभव नहीं। अग्रदास स्वामी का एक प्रसिद्ध ग्रन्थ 'कुण्डलिया हितोपदेश उपखांण बावनी' है। इसकी एक प्रति का विवरण बिहार राष्ट्र भाषा परिषद् द्वारा प्रकाशित 'प्राचीन हस्तलिखित पोथियों का विवरण,' दूसरा खंड, संख्या १०४ पर है। इस ग्रंथ की प्रत्येक कुण्डलिया में 'अगर' ही छाप है।

३५।१६

(३५) अग्रदास, गलता, जयपुर राज्य के निवासी सम्बत् १५९५ में उ० । इनके बहुत पद राग सागरोद्भव राग कल्पद्रुम में हैं। ये महाराजा कृष्णदास पय अहारी के शिष्य थे। और इन महाराज के नाभादास भक्तमाल ग्रन्थ कर्ता शिष्य थे।

सर्वेक्षण

प्रसिद्ध रामानन्द के शिष्य अनन्तानन्द थे। अनन्तानन्द के शिष्य कृष्णदास पय अहारी हुये। यह अष्टछाप वाले कृष्णदास अधिकारी से भिन्न हैं। इनकी गद्दी जयपुर के निकट गलता (गालवाश्रम) में थी। कृष्णदास पय अहारी के शिष्य अग्रदास जी थे। यह बाल्यावस्था में शरणागत हुए थे। पय अहारी जी की मृत्यु के अनन्तर अग्रदास ने जयपुर के निकट रैवासा में अपनी गद्दी स्थापित की। इन्हीं अग्रदास जी के शिष्य नाभादास जी थे। शुक्ल जी ने अग्रदास को सम्बत् १६३२ में उपस्थित माना है।[१] सरोज में दिया हुआ सम्बत् १५९५ अग्रदास जी का प्रारम्भिक जीवन काल है।

अग्रदास जी के दो ग्रन्थ हैं—कुण्डलिया और ध्यान मंजरी। इन ग्रन्थों की अनेक प्रतियाँ खोज में मिल चुकी हैं। कुण्डलिया का मूल नाम 'हितोपदेश उपखांणां बावनी' था। स्पष्ट है कि इस ग्रन्थ में ५२ कुण्डलियाँ हैं और प्रत्येक में कोई न कोई उपखान (उपाख्यान लोकोक्ति) प्रयुक्त हुआ है। बाद में कुण्डलियों की संख्या बढ़ती गई। किसी प्रति में ५२, किसी में ५४ (१९०३।५), किसी में ६८, किसी में ७१ (१९२०।१ ए) और किसी में ७६ (१९१७।१) तक छंद मिलते हैं। इसी को हितोपदेश उपाख्यान भी कहते हैं। १९२०।१ वाली प्रति में इसी ग्रन्थ को कुण्डलिया रामायण कहा गया है, जो ठीक नहीं, क्योंकि इस ग्रन्थ में रामचरित्र है ही नहीं।

ध्यान मंजरी में अयोध्या, सरयू, राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न, आदि का ध्यान वर्णित है। इस ग्रन्थ में रोला छंद के १५८ चरण है। इसी को राम ध्यान मंजरी भी कहते हैं।[२] खोज रिपोर्ट १९०६।२१ ए, १९२०।१ बी १९२३।४, १९२६।४ ए, बी, सी, १९२९।३ ए, बी, सी, और १९३१।३ में इसका उल्लेख ध्यान मंजरी नाम से हुआ है।

शुक्ल जी ने अपने सुप्रसिद्ध इतिहास में अग्रदास जी के चार ग्रन्थ माने हैं जिनमें से

(१) हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ १४६ (२) खोज रिपोर्ट १९००।७७, पं० १९२२।१

हितोपदेश उपखाणां बावनी और कुण्डलिया एक ही ग्रन्थ हैं। इसी प्रकार ध्यान मञ्जरी और राम ध्यानमञ्जरी भी एक ही ग्रन्थ है। खोज में अग्रदास जी का अन्य ग्रन्थ राम जेवनार भी मिला है। ग्रन्थ में कवि छाप है[१]—

"अगरदास धन धन्य सुनैना बार बार सीतावर की"

इनका एक अन्य ग्रन्थ गुरु अष्टक भी खोज में मिला है।[२] इसमें ८ छंदों में रामानन्द की स्तुति है और नवें छंद में पाठफल। अंतिम छंद में कवि छाप भी है।

श्री गुरु रामानन्द दयाला आतुर ध्याय सून समाधिनं
अंक रूप तिहुँ लोक गमता श्री गुरु, चरन प्रणामिहं ८
श्री गुरु अष्टक पढ़त निसिदिन प्राप्यते फलदायकं
अग्र स्वामी चरण बंदित श्री गुरु, चरन प्रणामिहं ९

'श्री गुरु चरन प्रणामिहं' प्रत्येक छंद के अंत में प्रयुक्त हुआ है।

रूप कला जी ने भक्तमाल की टीका में अग्रदास के चार ग्रन्थों का उल्लेख किया है—(१) अष्टयाम, (२) ध्यान मञ्जरी, (३) कुण्डलिया, (४) पदावली।

खोज में अष्टयाम और पदावली भी मिल चुके हैं। रिपोर्ट में एक अष्टयाम अग्रअली के नाम से चढ़ा हुआ है[३] जिसके प्रारम्भ में लिखा हुआ है :—

"अथ श्री सीताराम चन्द जी की अष्टजाम श्री अग्रअली कृत लिख्यते।"

पुष्पिका में कवि का नाम नहीं है। यह अष्टयाम दोहा चौपाइयों में है। खोज रिपोर्ट में एक अष्टयाम नाभा जी के नाम से दिया गया है, जिसमें केवल पुष्पिका में नाभा नाम आया है।[४] इन दोनों अष्टयामों का अन्तिम अंश एक ही है। प्रतीत होता है यह अष्टयाम अग्रदास जी का ही है। नाभादास का भी एक अष्टयाम है, जो इनसे एकदम भिन्न है।[५] अग्रदास वाला ही अष्टयाम रामचरित्र शीर्षक से नारायणदास के नाम पर खोज रिपोर्ट में चढ़ा हुआ है[६]। शुक्ल जी ने इसी का एक अंश नाभा की कविता के उदाहरण में उद्धृत किया है। अग्रदास का संस्कृत भाषा में लिखित एक अष्टयाम[७] इधर प्रकाशित हुआ है।

खोज में अग्रदास जी का एक ग्रन्थ 'राम चरित्र के पद' नाम से मिला है।[८] यही सम्भवतः रूप कला जी द्वारा उल्लिखित अग्रदास पदावली है। ग्रन्थ में ८७ पन्ने हैं। पदों में अगरदास की छाप है पर पुष्पिका में लिखा है :—

"इति श्री राम चरित्र के पद स्वामी नारायण दास कृत सम्पूर्ण।"

यह लेखक के प्रमाद का स्पष्ट प्रमाण है। सरोज में अग्रदास जी के नाम पर एक पद उद्धृत है जिसमें अग्रअली छाप है :—

"अग्र अली भजु जनक नन्दनी पाप भँडार ताप सीता की"

यह पद अग्रदास पदावली का होना चाहिये।

राम भक्ति में रसिक सम्प्रदाय की स्थापना अग्रदास जी ने ही की। इसीलिये उन्होंने अपना नाम अग्रअली रखा। नाभादास ने अपने अष्टयाम में स्पष्ट लिखा है :—

(१) खोज रि० १६४७।२ (२) खोज रि० १६४४।३ (३) खोज रि० १६०६।२ (४) खोज रि० १६२०।११ (५) खोज रि० १६२३।२८६ ए (६) खोज रि० १६२३।२८६ सी (७) राम भक्ति में रसिक संप्रदाय, पृष्ठ ३८१ (८) खोज रि० १६०६।२०२

अग्र सुमति को बंस उदारा
अली भाव रति जुगल किशोरा—१९२३।२८९ ए

युगल प्रिया जी ने इन्हें सीता की प्रिय सखी चन्द्रकला का अवतार माना है। रसिक अली जी ने भी इसका समर्थन किया है। अग्रदास इनका शरणागति सूचक नाम है और अग्रअली इनके महती परिकर स्वरूप का। अग्र, अग्रदास, अग्रअली और अग्र स्वामी इनकी ये चार छापे हैं। नाभादास ने इन्हें बाग-प्रेमी कहा है। इनकी भेंट वाटिका में जयपुर नरेश मानसिंह से हुई थी।[1]

३६।३५

(३६) अनन्य दास चकदेवा, जिले गोंडा वासी, ब्राह्मण, सम्बत् १२२५ में उ०। महाराजा पृथ्वीचन्द्र दिल्ली देशाधीश के यहाँ अनन्ययोग नामक ग्रन्थ बनाया है।

सर्वेक्षण

१५, ३०, ३३ और ३६ संख्यक चारों अनन्य एक ही हैं। महेश दत्त ने अपने भाषा-काव्य संग्रह में अनन्यदास का विवरण इन शब्दों में दिया है :—

"अनन्यदास—ये कान्य कुब्ज ब्राह्मण जिले गोंडा ग्राम चक्यंदवा के रहने वाले राजा पृथ्वीराज के समय में थे। इन्होंने अनन्ययोग नाम के ग्रन्थ बनाया। उसके देखने से विदित होता है कि अच्छे कवि थे। सम्बत् १२७५ में बैकुण्ठ यात्रा की।"

—भाषा काव्य संग्रह, पृष्ठ १२८-२९

शिव सिंह ने अनन्यदास का विवरण इसी ग्रन्थ से लिया है। अनन्य ग्रन्थावली में प्रथम ग्रन्थ राजयोग है। इसमें प्रारम्भ में एक सवैया, मध्य में २८ पद्धटिका छंद और अन्त में २ दोहे हैं। उक्त भाषा-काव्य संग्रह में अनन्यदास की रचना 'गृहस्थ और राजाओं का योग' शीर्षक से उद्धृत है। यह उद्धरण अनन्य ग्रन्थावली में संकलित राजयोग का उत्तरार्द्ध (१९ से लेकर २८ तक पद्धटिका छंद और अंतिम दोनों दोहे) है। अट्ठाईसवें छंद में अक्षर अनन्य नाम भी आया है।

यह ज्ञान भेद अरु, बेद साखि
अच्छर अनन्य सिद्धान्त भाषि २८

भाषा काव्य संग्रह में जो अंश उद्धृत है, उसमें दो बार पृथिचन्द नरेश को सम्बोधित किया गया है।

(१) सुख मारग यह पृथि चन्द राज
यहि सम न आन तम है इलाज ४ (१९)
(२) राज योग सिद्धान्त मत जानि राज पृथि चन्द
यहि सम मत नहिं दूसरो खोजि शास्त्र बहु छंद १४ (१)

महेश दत्त जी ने पृथि चन्द को पृथ्वीराज चौहान समझने की भूल की और इसीलिये अनन्य दास को ५०० वर्ष पूर्व तेरहवीं शताब्दि में खींच ले गये। अक्षर अनन्य जी महेश दत्त के हाथों किस प्रकार चक्यंदवा जिले गोंडा वासी कान्य कुब्ज ब्राह्मण हो गये, यह रहस्मय है। सम्भवतः कोई

---

(१) राम भक्ति में रसिक संप्रदाय—पृष्ठ ३७९-३८१

प्रतिलिपिकार चक्यदेवा जिला गोंडा निवासी कान्यकुब्ज ब्राह्मण था और गणेश दत्त ने प्रमादवश ये सभी विशेषण अनन्यदास के समझ लिये।

शिवसिंह ने विवरण देते समय थोड़ा-सा संशोधन किया। उन्होंने स्पष्ट रूप से लिख दिया कि यह पृथ्वी चन्द दिल्ली देशाधीश थे। साथ ही सरोजकार ने समय में भी ५० वर्ष का संशोधन किया। ऐसा उन्होंने पृथ्वीराज चौहान के समय (मृत्यु सम्बत् १२५० वि०) को ध्यान में रखकर किया। शिवसिंह ने इस कवि की कविता का उदाहरण भी भाषा-काव्य संग्रह से ही दिया है, और उन्होंने ध्यान रखा है कि वही अंश उद्धृत किया जाय, जिसमें पृथि चन्द नाम आया है।

ग्रियर्सन ने (५) संदेह किया है कि अनन्यदास बीकानेर के पृथ्वीराज के समकालीन थे, जो सोलहवीं शताब्दि में हुये थे। ग्रियर्सन के ही आधार पर खोज रिपोर्ट १९०४ में प्रेम दीपिका का विवरण देते समय अनन्य को बीकानेर वाले, अकबर के दरबारी पृथ्वीराज का सम-सामयिक माना गया है। यह सब पूर्णतया भ्रम है। विनोद में (१९४) भी संदेह प्रकट किया गया है :—

"भाषा बिल्कुल आधुनिक है और उस समय (सम्बत् १२२५) की नहीं हो सकती। जान पड़ता है पृथ्वी चन्द नाम से सरोजकार को पृथ्वीराज का भ्रम हो गया, अतः उन्होंने इतना प्राचीन सम्बत् लिख दिया। यह कवि जी वास्तव में अक्षर अनन्य हैं।"

सन्देह रहते हुए भी ग्रियर्सन और मिश्र बन्धुओं ने इस कवि को १२२५ के आस-पास अपने इतिहासों में स्थान दिया, यह आश्चर्य-जनक है।

ऊपर वाले पृथ्वी चन्द वस्तुतः सेनुहुड़ा के जागीरदार पृथ्वी चन्द थे, जो रसनिधि नाम से कविता भी लिखते थे।

३७।३८.

(३७) आस करनदास कछवाह, राजा भीम सिंह नरवर गढ़ वाले के पुत्र, सम्बत् १६१५ में उ०। पद बहुत बनाये हैं, जो कृष्णानन्द व्यासदेव के संगृहीत ग्रन्थ में मौजूद है।

सर्वेक्षण

आसकरन दास जी का विवरण नाभादास जी ने भक्तमाल के इस छप्पय में दिया है :—

> धर्म शील गुन सींब, महा भागौत राज रिषि
> पृथ्वीराज कुलदीप, भीम सुत बिदित कील्ह सिषि
> सदाचार अति चतुर, विमल वानी रचना पद
> सूर धीर उद्दार, विनय भलपन भक्तनि हद
> सीतापति राधा सु वर, भजन नेम कूरम धर्यौ
> (श्री) मोहन मिश्रित पद कमल, आस करन जस विस्तर्यौ १७४

इस छप्पय के अध्ययन से आसकरन जी के सम्बन्ध में निम्नांकित सूचनायें मिलती हैं। यह परम वैष्णव राजा थे। प्रियादास जी ने इन्हें नरवर पुर का राजा कहा है :—

> नरवर पुर ताको राजा नरवर जानौ
> मोहन जू धरि हिये सेवा नीके करी है

यह कूर्मवंशी (कछवाहे) थे। जयपुर नरेश भक्त पृथ्वीराज कछवाहा के वंशज थे। भीम के सुत और कील्ह के शिष्य थे। कील्ह दास अग्रदास के गुरुभाई थे। आसकरन जी मधुर पदों की रचना

करने वाले सुकवि थे तथा राम एवम् कृष्ण दोनों की आशा करने वाले थे। इनके पदों में कवि नाम के साथ भगवान का नाम 'मोहन' भी निरन्तर प्रयुक्त हुआ है :—

"आस करन प्रभु मोहन तुम पर वारौं तन मन प्रान अकोर सरोज"

मैंने आसकरन जी के १६ पद संकलित किये हैं जिनमें से १४ पदों में 'आसकरन प्रभु मोहन नागर' छाप है। आसकरन दास का उल्लेख 'आईन अकबरी' में अबुलफजल द्वारा दी हुई प्रभावशाली सामन्तों तथा राजाओं की सूची में हुआ है। इनकी कथा २५२ वैष्णवों की वार्ता में भी है। गुसाईं विट्ठलदास जी से इन्होंने सेवा विधि सीखी थी।[1]

भक्तमाल की रचना सम्बत् १६४६ में हुई। यदि सम्बत् १६१५ को आसकरन दास जी का जन्म सम्बत् माना जाता है, तो उस समय तक इनकी अवस्था २४ वर्ष की ही होती है, जो प्रसिद्धि-प्राप्त भक्त होने के लिये बहुत कम है। अतः सम्बत् १६१५ इनका जन्म काल नहीं हो सकता। कवि का जन्म १६०० वि० से पहले ही किसी समय होना चाहिये। अकबर की मृत्यु १६०५ ई० में हुई थी। १६१५ ई० सन् भी हो सकता है जो कवि का उपस्थिति-काल सूचित करता है।

३८।X

(३८) अमर सिंह हाड़ा जोधपुर के राजा सम्बत् १६२१ में उ०। यह महाराज अमर सिंह श्री हाड़ा बंशावसतं सूर सिंह के पौत्र हैं, जिन सूर सिंह ने छः लाख रुपये एक दिन में छह कवियों को इनाम में दिये थे, और जिनके पिता गजसिंह ने राजपूताने के कवियों को धनाधीश कर दिया था। राजा अमर सिंह की तारीफ में जो बनवारी कवि ने यह कवित्त कहा है कि "हाथ की बड़ाई की बड़ाई जमधर की"—इसकी बाबत टाड साहब की किताब 'टाड राजस्थान' से हम कुछ लिखते हैं :—

"प्रकट हो कि राजा अमर सिंह हाड़ा महागुण ग्राहक और साहित्य शास्त्र के बड़े कदरदान और खुद भी महाकवि थे। इन्हीं महाराज ने पृथ्वीराज रायसा चन्द कवि कृत को सारे राजपूताने में तलाश कराकर उनहत्तर खंड तक जमा किया, जो अब सारे राजपूताने में बड़े-बड़े पुस्तकालयों में मौजूद है। शाहजहाँ बादशाह के यहाँ अमर सिंह का मनसब तीन हजारी था। अमर सिंह बहुधा सैर-शिकार में रहा करते थे। इसलिये एकदफे शाहजहाँ ने नाराज होकर कुछ जुर्माना किया और सलावत खां बखशी उलमुल्क को जुर्माना वसूल करने को नियत किया। अमर सिंह महाक्रोधाग्नि से प्रज्वलित हो दरबार में आये। पहले एक खंजर से सलावत खाँ का काम तमाम किया, पीछे शाहजहाँ पर भी तलवार आबदार झाड़ी। तलवार खम्भे में लगी। बादशाह तो भाग बचे। अमर सिंह ने पाँच और बड़े सरदार मुगलों को मारा। आप भी उसी जगह अपने साले अर्जुन गौर के हाथ से मारे गये।" विस्तार के भय से मैंने संक्षेप लिखा है।

सर्वेक्षण

अमर सिंह हाड़ा नहीं थे, यह राठौर थे। यह कवि के रूप में ख्यात नहीं हैं। सरोज में दी हुई घटना परम प्रख्यात है। अमर सिंह शाहजहाँ के दरबार में थे। यह घोड़े पर चढ़ किले के बाहर

---

(१) अकबरी दरबार के हिन्दी कवि—पृष्ठ ३६

कूद आए थे और बच गए थे, मारे नहीं गए थे। शाहजहाँ ने सन् १६२८ ई० से १६५८ ई० तक राज्य किया। अमर सिंह जोधपुर के राजा नहीं थे। यह अपनी उद्दंडता के कारण जोधपुर से सन् १६२४ ई० में अपने पिता द्वारा निकाल दिये गये थे। इसी समय यह शाहजहाँ के दरबार में आये।[1] अतः १६३४ और १६५८ ई० के बीच कभी यह घटना हुई थी। सरोज में दिया हुआ १६२१ वि० सम्बत् नहीं हो सकता। यदि यह विक्रम सम्बत् है तो इस सन् १५६४ ई० में अमर सिंह की उपस्थिति असंभव है। अमर सिंह की मृत्यु शाहजहाँ के दरबार में आने के प्रथम वर्ष में भी मान ली जाय और सम्बत् १६२१ को जन्म काल तो ७० वर्ष की वय में यह दुःसाहस पूर्ण घटना संभव नहीं। ऐसी स्थिति में १६२१ वि० संवत् न होकर ई० सन् है और यह अमर सिंह का जन्म-काल न होकर उनका उपस्थिति काल है। विनोद के अनुसार (४७५) अमर सिंह का जन्म सम्बत् १६६० में हुआ। यह जोधपुर नरेश गज सिंह के बड़े पुत्र और भाषाभूषण के रचयिता जसवंतसिंह के बड़े भाई थे। इनका जन्म सम्बत् १६७० में हुआ था। रासो का संकलन चित्तौर नरेश अमर सिंह (महाराणा प्रताप के पुत्र) ने कराया था।

३९।

(३९) आनन्द कवि सम्बत् १७११ में उ०। कोकसार और सामुद्रिक दो ग्रन्थ इनके बनाये हैं।

सर्वेक्षण

आनन्द के निम्नलिखित चार ग्रन्थ खोज में मिले हैं :—

(१) कोक मंजरी—१९२६।१० बी। इस ग्रन्थ से ज्ञात होता है कि यह हिसार (पंजाब) के रहने वाले कायस्थ थे और इन्होंने कोक मंजरी नामक ग्रन्थ की रचना सम्बत् १६६० में की। ऐसी स्थिति में सरोज में दिया हुआ सम्बत् १७११ अशुद्ध है।

> कायथ कुल, आनन्द कवि, वासी कोट हिसार
> कोक कला इति रुचि करन जिन यह कियो विचार
> ऋतु बसंत सम्बत सरस सोरह सै अरु साठ
> कोक मंजरी यह करी धर्म कर्म करि पाठ

१९२६ वाली रिपोर्ट में इस ग्रन्थ की ११ प्रतियों के विवरण हैं, जिनसे ज्ञात होता है कि कोकसार, कोक मंजरी और कोक विलास ये तीन नाम उक्त ग्रन्थ के हैं।

(२) इन्द्रजाल १९२३ १३ ए।

(३) आसन मंजरी १९२९।११ एच।

(४) वचन विनोद—राजस्थान रिपोर्ट द्वितीय भाग। इस ग्रन्थ की पुष्पिका से ज्ञात होता है कि यह भटनागर कायस्थ थे और इनका पूरा नाम आनन्द राय था :—

"इति आनन्द राय कायस्थ भटनागर हिंसारि कृत वचन विनोद समाप्त।"

इस ग्रन्थ से ज्ञात होता है कि यह सुप्रसिद्ध कवि एवम् राम-भक्त कासी वासी गोस्वामी तुलसीदास जी के शिष्य थे।

---

(१) ग्रियर्सन कवि संख्या १६१ (२) जोधपुर राज्य का इतिहास, पृष्ठ ४०३

नमो कमल दल जमल पग श्री तुलसी गुरु नाम
प्रगट जगत जानत सकल जहँ तुलसी तहँ राम २
कासी वासी जगत गुरु अबिनासी रस लीन
हरि दरसन दरसत सदा जल समीप ज्यों मीन ३

वचन-विनोद का प्रतिलिपिकाल सम्बत् १६७६ वि० है। अतः यह ग्रन्थ उस समय के पहले किसी समय रचा गया होगा। यह भूषण सम्बन्धी ग्रन्थ है और इसमें कुल १२५ छंद हैं।

ये भूषन दूषन समुझि, रचै जू कवि जन छंद
ताहि पढ़त अति सुख बढ़त, श्रवन सुनत आनन्द १२४

४०।

(४०) अम्बर भांट, चौजीतपुर, बुन्देल खंडी, सम्बत् १६१० में उ०।

सर्वेक्षण

सर्वेक्षण के लिए कोई सूत्र सुलभ नहीं। १६१० उपस्थिति-काल है, क्योंकि इसके २५ वर्ष बाद ही सरोज की रचना हुई।

४१।

(४१) अनूप कवि, सम्बत १७६८ में उ०।

सर्वेक्षण

विनोद में (६५५) इनके १८ संख्यक अनूपदास होने की संभावना की गई है। देखिये, संख्या १८।

४२।

(४२) आकूब खाँ कवि, सम्बत् १७७५ में उ०। रसिक प्रिया का तिलक बनाया है।

सर्वेक्षण

याकूब खां का एक ग्रन्थ रस-भूषण सभा की खोज में मिला है।[१] इसमें रचनाकाल आदि कुछ भी नहीं दिया गया है। विनोद के अनुसार (६७३) सरोज में दिया हुआ सम्बत् १७७५ ही इस ग्रन्थ का रचनाकाल है। इसमें ५०० के लगभग छंद हैं। नाम से यह रस ग्रन्थ प्रतीत होता है। विनोद के अनुसार यह अलंकार ग्रन्थ है। वस्तुतः यह रस और अलंकार दोनों का सम्मिलित ग्रन्थ है :—

"अलंकार संयुक्त, कहौं नायिका भेद पुनि"

इस ग्रन्थ में एक ही छंद में साथ-साथ नायिका भेद और अलंकार के उदाहरण तथा लक्षण दिये गये हैं। यथा—

लक्षण—पूरन उपमा जानि, चारि पदारथ होइ जिहिं
ताहि नायिका मानि, रूपवंत सुन्दर सुछवि

उदाहरण—है कर कोमल कंज से, ससि दुति से मुख ऐन
कुन्दन रंग पिक वचन से, मधुरे जाके बैन

---

(१) खोज रिपोर्ट १९०२।७१

कवि के अनुसार बिना अलंकार के नायिका सोहती ही नहीं। इसीलिये वह दोनों का सम्मिलित वर्णन कर रहा है :—

अलंकार बिनु नायिका सोभित होइ न आन
अलंकार जुत नायिका याते कहौं बखानि

४३।

(४३) अनवर खान कवि, सम्बत् १७८० में उ०। अनवरचन्द्रिका नाम ग्रन्थ सतसई का टीका बनाया है।

सर्वेक्षण

अनवरचन्द्रिका नाम से विहारी सतसई की जो टीका मिलती है, वह अनवर खां की बनाई हुई नहीं है। नवाब अनवर खां की आज्ञा से यह टीका शुभकरण तथा कमलनयन नामक दो कवियों ने मिलकर की थी। मङ्गलाचरण वाले छप्पय में शुभकरण का नाम आया है।

प्रभु लम्बोदर चारन वदन, विद्या मय बुधि वेद मय
सुभ करन दास इच्छित करन, जय जय जय शंकर तनय

अनवर खां की प्रशस्ति की एक कवित्त में कौल नैन की भी छाप है :—

सीखत सिपाही त्यों सिपाहगिरी कौल नैन
काम तरु, दान सीखै तजि अहमेव जू
करै को जवाब अनवर खाँ नवाब जू सौं
और सब शिष्य एक आप गुरुदेव जू

प्रथम प्रकाश में इन कवियों ने मंगलाचरण, अनवर खां की वंशावली और ग्रन्थ रचना का कारण तथा काल आदि दिया है।

अनवर खां जू कविन सौं आयसु कियो सनेहु
कवित रीति सब सतसया मध्य प्रगट करि देहु १०

ग्रन्थ की रचना सम्बत् १७७१ वि० में हुई :—

ससि[१] ऋषि[७] ऋषि[७] ससि[१] लिखि लखौ सम्बत्सर सविलास
जामै अनवरचन्द्रिका कीन्हीं विमल विकास ११

टीकाकारों ने अनवर खां की विस्तृत वंशावली दी है, पर न तो उनका निवास-स्थान दिया है और न अपना कुछ परिचय।[१] खोज के अनुसार यह राजगढ़ (भोपाल) के पठान सुलतान नवाब मुहम्मद खां के कनिष्ठ भ्राता थे[२], और यह टीका कुण्डलियों में है।

अनवरचन्द्रिका की रचना सम्बत् १७७१ में हुई, अतः सरोज में दिया हुआ सम्बत् १७८० उपस्थिति-काल ही है।

४४।

(४४) आसिफ खाँ कवि, सम्बत् १७३८ में उ०।

---

(१) बिहारी सतसई सम्बन्धी साहित्य—जगन्नाथदास रतनाकर, नागरी प्रचारिणी पत्रिका, वैशाख १६८५। (२) खोज रिपोर्ट १६०६।३०

सर्वेक्षण

सर्वेक्षण का कोई सूत्र सुलभ नहीं ।

४५।

(४५) आछेलाल भाट, कनौज वासी, सम्बत् १८८६ में उ० ।

सर्वेक्षण

सर्वेक्षण का कोई सूत्र सुलभ नहीं ।

४६।

(४६) अमर जी कवि, राजपूताने वाले, राजपूताने में ये कवीश्वर महानामी हो गुजरे हैं। टाड साहब ने राजस्थान में इनका जिक्र किया है ।

सर्वेक्षण

टाड में इस कवि का उल्लेख है, अतः यह सम्बत् १८८० के पूर्व किसी समय उपस्थित था। ग्रियर्सन ने (७९९) इस कवि को खोजने पर भी टाड में नहीं पाया।

४७।

(४७) अजीतसिंह राठौर उदयपुर के राजा, सम्बत् १७८७ में उ० । इन महाराज ने राजरूप का ख्यात नामक एक ग्रन्थ बहुत बड़ा वंशावली का बनवाया है। इस ग्रन्थ में वंशावली जयचंद राठौर महाराज कन्नौज की तब से प्रारम्भ की है, जब नयनपाल ने सम्बत् ५२६ में कन्नौज को फते करके अजयपाल राजा कन्नौज का बध किया था। तब से लेकर जयचन्द तक सब हालात लिख, फिर दूसरे खंड में राजा यशवंतसिंह के मरण अर्थात् सम्बत् १७३५ तक के सब हाल लिखे हैं। तीसरे खंड में सूर्य वंश जहां से प्रारम्भ हुआ, वहाँ से यशवंतसिंह के पुत्र अजीतसिंह के बालेपन अर्थात् १७८७ तक का वर्णन किया है ।

सर्वेक्षण

अजीतसिंह राठौर उदयपुर के राजा नहीं थे, जोधपुर के राजा थे। यह भाषाभूषण के प्रसिद्ध रचयिता जोधपुर नरेश महाराज यशवंत सिंह के पुत्र थे, जिनकी मृत्यु काबुल में सम्बत् १७३५ में हुई थी। पिता की मृत्यु के तीन मास पश्चात् अजीतसिंह का जन्म हुआ था। यह पैदा होते ही राजा हुये। राठौरों ने तीस वर्ष तक युद्ध करके इनको औरंगजेब के चंगुल से बचाया था। इन्होंने सम्बत् १७८१ वि० तक राज्य किया। इनका बल बढ़ता देख दिल्ली के मुगल बादशाह मुहम्मदशाह ने इनके बड़े कुमार अभयसिंह को मिलाया और अभयसिंह ने अपने छोटे भाई बखतसिंह से सम्बत् १७८१ वि० में अजीतसिंह की हत्या करा दी। इस हत्या के सम्बन्ध में यह दोहा प्रसिद्ध है :—

बखता बखत जवाहिरा, क्यों मारयो अजमाल ।
हिंदवाणों को सेहरी, तुरकाणो री साल[१] ॥

खोज में अजीत सिंह के लिखे हुये निम्नलिखित ग्रन्थ मिले हैं :—

(१) अजीत सिंह (महाराज) जी रा कथ्या दुहा—१९०२।८५। इस ग्रन्थ में आप ने दोहों

---

(१) खोज रिपोर्ट १९०२।४०

में अपने जन्म की कथा कही है और राक्षसों को मारने के लिये अपने को हिन्गुलाज देवी का अवतार कहा है।

(२) गुण सागर—१६०२।८३, १६३। रचनाकाल सम्बत् १७५० वि०। इसमें राजा सुमति और रानी सतरूपा की गद्य-पद्यमय उत्पाद्य कथा है। ये राजा-रानी धर्म पर आरूढ़ रहे और अन्त में स्वर्ग गये।

(३) दुर्गा पाठ भाषा—१६०२।४०। दुर्गापाठ का यह अनुवाद मार्गशीर्ष सुदी १३, रोहिणी, रविवार, शक-सम्बत् १६४१ और वि० सम्बत् १७७६ में प्रस्तुत किया गया :—

योधन सम्बत् रिषि अलख बर पर रस मुनि भाष
साक सिंगार दबै ओस इक इक सकू गुण दाष
सुदि मिगनर तेरस दिवस रोहिणि सुध रविवार
पाठ दुर्गें पूरण भयो श्री अजीत आधार

(४) दुहा श्री ठाकुरा रा—१६०२।८६। इस ग्रन्थ में ब्रजभाषा में कृष्ण-स्तुति सम्बन्धी १७१ दोहे हैं।

(५) निर्वाण दुहा—१६०२।८४-८५। इसका प्रतिपाद्य विषय भक्ति है जो निर्वाण की साधिका है।

(६) भवानी सहस्र नाम—१६०२।८७। संस्कृत के देवी सहस्र नाम का सम्बत् १७६८ में किया हुआ भाषा में अनुवाद।

(७) गज उधार (उद्धार)— राजस्थान रिपोर्ट भाग ४।

विनोद में (५५६) राजरूपकाख्यात की भी गणना अजीत सिंह के ग्रन्थों में की गई है, जो ठीक नहीं।

अजीत सिंह की मृत्यु सम्बत् १७८१ में हो गई थी। अतः सरोज में दिया हुआ सम्बत् १७८७ या तो अशुद्ध है अथवा प्रेस के भूतों की वदौलत अंतिम १ का ७ हो गया है। ऐसी दशा में यह इनके बालेपन का ही सम्बत् कैसे हो सकता है।

इ (इ, ई)

४८।४२

(१) इच्छा राम अवस्थी, पचरुआ, इलाके हैदरगढ़ के, सम्बत् १८५५ में उ०। ब्रह्म विलास नामक ग्रन्थ वेदान्त से बहुत बड़ा बनाया है। यह बड़े सत् कवि थे।

सर्वेक्षण

इच्छाराम कृत ब्रह्म विलास से ६ दोहे सरोज में उद्धृत हैं। इनसे से ४ कवि और उसके ग्रन्थ के सम्बन्ध में भी प्रकाश डालते हैं :—

गनपति दिनपति पद सुमिरि, करिय कथा हिय हेरि
ब्रह्म विलास प्रयास बिनु, बनत न लागै देरि २
बिप्र सदा महि देवता, सुचि बानी तेहि केरि
श्रवन ने दूषन नहीं, भूषन हरि हिय हेरि ४

तीसरे दोहे में कवि ने अपने नाम और जाति का उल्लेख किया है :—

बानी इच्छा रामकृत बिप्र बरन तन जानि
पढ़िहैं सज्जन समुझि हिय देवगिरा परमानि ३

पहले दोहे में ग्रन्थ का रचनाकाल श्रावण सुदी २, सोमवार, सम्बत् १८५५ दिया गया है।

सम्बत् सत दस आठ गत ऊपर पांच पचास
सावन सित दुति सोम कहँ कथा अरम्भ प्रकास १

यही सम्बत् सरोजकार ने जीवन परिचय में दिया है, जो स्पष्ट सिद्ध करता है कि उक्त सम्बत् १८५५ कवि का रचनाकाल है।

इच्छाराम जी के निम्नांकित ग्रन्थ खोज में मिले हैं :—

(१) गोविन्द चन्द्रिका—१९०६।२६३ ए। यह ग्रन्थ सम्बत् १८४७ वि० में रचा गया। यह भागवत दशम स्कन्ध का भावानुवाद है। इसमें एकादशी कथा भी है।

(२) प्रपन्न प्रेमावली—१९०९।१२१ ए। इस ग्रन्थ से स्पष्ट होता है कि इच्छाराम जी रामानुज सम्प्रदाय के वैष्णव थे। ग्रन्थारम्भ में "श्रीमते रामानुजाय नमः" है और रामानुज के चरण कमलों की बन्दना भी है।

श्रीमद्रामानुज चरन करन मंगलाचर्न
असरन सरन समर्थ अति बंदौं भव भय हर्न २
सानुज रवि ससि कुल तिलक सम्प्रदाय सविवेक
रामानुज यह नाम ते एक प्रनाम अनेक ३

इस ग्रन्थ की रचना सम्बत् १८२२ वि० में हुई :—

दस बसु सै द्विवि बीस पर बिक्रम वर्ष उदार
क्रदम अष्टमी सिन्ध रवि प्रेमावलि अवतार ११

(३) शालिहोत्र—१९०९।१२१ बी। इस ग्रन्थ की रचना सम्बत् १८४८ में हुई :—

एक सहस सन अष्ट पर अरतालिस अधिकाय
ऋतु बसंत पुनि जानिये इच्छादेव बताय
फागुन सित तिथि पंचमी भयो ग्रन्थ अवतार
गुन अबगुन सब अश्व के शालिहोत्र मत सार

अंतिम छंद में कवि की छाप इच्छागिरि है :—

शालिहोत्र मत देखि के, भाषा क्रियो बिचार
इच्छागिरि कवि विनय कर, बुधिजन लेहु सुधारि ३

साथ ही पुष्पिका में भी "इच्छा गिरि गोसाई विरचित" लिखा हुआ है। लगता है कि कवि वृद्धावस्था में संन्यासी हो गया था। पचरुआ, बाराबंकी जिले की हैदरगढ़ तहसील में हैं। विनोद में इसी एक कवि का उल्लेख ५९५, ९३० और १०४७ संख्याओं पर तीन बार हुआ है, जो ठीक नहीं। तीनों कवि एक ही हैं।

(४) हनुमत पचीसी—१९०६।२६३ बी।

४६।३६

(२) ईश्वर कवि, सम्बत् १७३० में उ० । यह कवि औरङ्गजेब के यहाँ थे । कविता सरस है ।

सर्वेक्षण

औरङ्गजेब के दरबार में किसी ईश्वर कवि का पता खोज रिपोर्टों से नहीं चलता । औरङ्गजेब का शासनकाल सन् १६५८ ई० से सन् १७०७ ई० तक है । अतः ऊपर दिया हुआ सम्बत् १७३० विक्रम सम्बत् है और कवि का रचनाकाल है । इस कवि के दो सरस सवैये सरोज में संकलित हैं । इनमें से दूसरा प्रसिद्ध बुन्देलखंडी कवि ठाकुर का है ।

औरङ्गजेब के समकालीन दो ईश्वरदास खोज में मिले हैं । परन्तु कोई ऐसा सूत्र सुलभ नहीं, जिसके द्वारा सरोज में उल्लिखित इन ईश्वर कवि से इन दोनों में से किसी का भी तादात्म्य स्थापित किया जा सके । इनमें से पहले हैं अलंकार चन्द्रोदय नामक ग्रन्थ के रचयिता रसिक सुमति के पिता, जो सम्बत् १७८५ के पूर्व उपस्थित थे और जिन्होंने दोहा-चौपाइयों में भरत मिलाप[१] नामक ग्रन्थ लिखा है । दूसरे ईश्वर दास, आगरा निवासी, खरे सक्सेना कायस्थ और लोकमणि दास के पुत्र हैं । इन्होंने सम्बत् १७५६ में गोपाचल (ग्वालियर) में ग्रहफल बिचार नामक ग्रन्थ लिखा[२] ।

५०।४०

(३) इन्दु कवि, सम्बत् १७६६ में उ० । यह कवि सामान्य हैं ।

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध में कोई भी सूचना सुलभ नहीं हो सकी । इस कवि के नाम पर सरोज में जो छन्द उद्धृत है, वह वस्तुतः महाकवि भूषण का है ।[३]

५१।४१

(४) ईश्वरी प्रसाद त्रिपाठी, पीर नगर, जिले सीतापुर, विद्यमान हैं । राम विलास ग्रन्थ, वाल्मीकि रामायण का उल्था, नाना छन्दों में काव्य रीति से किया है ।

सर्वेक्षण

ईश्वरी प्रसाद त्रिपाठी का रामविलास नामक ग्रन्थ खोज में मिल चुका है ।[४] इस ग्रन्थ के आदि का गणेश वंदना वाला जो छन्द रिपोर्ट में उदधृत है, वही सरोज में भी उदाहृत है । ग्रन्थ के अंत से रिपोर्ट में निम्नांकित अंश उद्धृत हैं, जिससे सरोज के विवरण की प्रामाणिकता प्रकट होती है :—

> यह कथा श्री रघुनाथ की ऋषि बालमीकि जो गायऊ
> व्यासादि मुनि बहु भाँति कहि शिव शिवा सों समुझायऊ
> तेहि बरनि भाषा छन्द मैं कश्यप कुलोद्भव द्विज बरे
> इसुरी त्रिपाठी बसत सारावती सरि तट सुख भरे
> लछिमन पुर तें पंचजोजन पीर नगर निवास है
> तहँ बरनि रामायन कलुषहर नाम राम विलास है

(१) खोज रिपोर्ट १६२३।१७३ (२) खोज रिपोर्ट १६२६।१५६ (३)वही ग्रंथ, भूमिका, पृष्ठ ८१ (४) खोज रिपोर्ट १६२६।१८६

रस[6] चन्द[1] नव[9] शशि[1] शब्द मधु सुदि रामनवमी मानिकै
हरि प्रेरना ते प्रकट करि अति जक्त हित निज आनि कै
रामायन भाषा बरनि इसुरी मति अनुरूप
रीझि देउ मोहि राम सिय निज पद भक्ति अनूप

स्पष्ट है कि कश्यप कुलोद्भव ईश्वरी त्रिपाठी ने चैत सुदी ६ सम्बत् १६१६ वि० को बाल्मीकि रामायण का भाषानुवाद रामविलास नाम से प्रस्तुत किया। लछिमन पुर से अभिप्राय लखनऊ से हैं। पीरनगर, सीतापुर जिले की सिधौली तहसील में है। रिपोर्ट के अनुसार रामविलास में रामचरित मानस से भिन्न छंद प्रयुक्त हुये हैं।

५२।४३

(५) ईश कवि, सम्बत् १७६६ में उ०। श्रृंगार और शान्त रस की इनकी कविता बहुत ही ललित है।

सर्वेक्षण

सुधासर के अन्त में जो नाम राशि कवि सूची है उसके अनुसार दो ईश हुये हैं। एक प्रचीन ईश, दूसरे सुधासर के संकलयिता नवीन के गुरु, जो जयपुर के निवासी थे। इस साक्षी पर एक पुराने ईश का अस्तित्व सिद्ध है, पर कोई अन्य विवरण उपलब्ध नहीं।

५३।४४

(६) इन्द्रजीत त्रिपाठी, बनपुरा, अंतरवेद वाले, सम्बत् १७३६ में उ०। औरङ्गजेब के नौकर थे।

सर्वेक्षण

औरंगजेब के नौकर इन्द्रजीत त्रिपाठी के सम्बन्ध में कोई सूचना सुलभ नहीं है। औरंगजेब के शासनकाल को ध्यान में रखते हुए ऊपर दिया हुआ सम्बत् १७३६ कवि का रचनाकाल है। सरोज में इस कवि का जो छन्द उद्धृत है, वही बुन्देल वैभव में महाकवि केशवदास के आश्रय दाता इन्द्रजीत सिंह के नाम से दिया गया है।[1]

५४।

(७) ईसुफ खाँ कवि, सम्बत् १७६१ में उ०। सतसई और रसिक प्रिया की टीका की है।

सर्वेक्षण

खोज से ईसुफ खाँ और उनकी टीकाओं का कोई पता नहीं चलता। रत्नाकर जी की धारणा है कि सतसई की रसचन्द्रिका टीका के रचयिता ईसवी खाँ को ही सरोजकार ने भ्रमवश ईसुफ खाँ लिख दिया है।[2] सरोज के ही आधार पर इस कवि का उल्लेख ग्रियर्सन (४२१), विनोद, बिहारी-बिहार आदि ग्रन्थों में हुआ है। किसी ने ईसुफ खाँ के ग्रन्थ को देखा नहीं है। ईसवी खाँ की रस-चन्द्रिका टीका चैत पूर्णिमा, गुरुवार, सम्बत् १८०६ को पूर्ण हुई :—

नंद[9] गगन[0] बसु[8] भूमि[1] गुनि कीजे बरस विचार
रस चन्द्रिका प्रकाश किय मधु पून्यो गुरुवार[3]

---

(१) बुंदेल वैभव, भाग १, पृ० २०४ (२) नागरी प्रचारिणी पत्रिका, भाग ६, अंक २, श्रावण १६८२ (३) खोज रिपोर्ट १६४१।१४ ख

उ (उ, ऊ)

५५।

(१) उदयसिंह महाराज माड़वार, सम्बत् १५१२ में उ० । ख्यात नामक ग्रन्थ बनाया, जिसमें अपने पुत्र गजसिंह और अपने पोते यशवंत सिंह के जीवन चरित्र लिखे हैं ।

सर्वेक्षण

सरोज में दिया हुआ सम्बत् ठीक नहीं है । ग्रियर्सन ने (७६) टाड के अनुसार इनको १५८४ ई० (१६४१ वि०) में उपस्थित बताया है । साथ ही गजसिंह, उदयसिंह के पुत्र नहीं, पौत्र हैं एवम् यशवंत सिंह प्रपौत्र हैं । ख्यात नामक ग्रन्थ स्वयं उदयसिंह ने नहीं बनाया, किसी अज्ञात कवि ने बनाया । इसकी रचना उदयसिंह के जीवनकाल में हुई हो, यह भी सम्भव नहीं ।

५६।४५

(२) उदयनाथ बन्दीजन काशी वासी, सम्बत् १७११ में उ० । उदयनाथ नाम कविन्द का भी है, जो कालिदास कवि के पुत्र और दूलह कवि बनपुरा निवासी के पिता थे ।

सर्वेक्षण

सुधासर की नाम राशि कवि सूची में दो उदय हैं । एक प्राचीन उदय हैं, दूसरे उदयनाथ कवीन्द्र । इससे सिद्ध है कि एक उदयनाथ प्रसिद्ध कविन्द से पहले हुये हैं । अन्य कोई सूत्र सुलभ नहीं हो सका है ।

५७।४६

(३) उदेश भाट, बुन्देलखंडी, सम्बत् १८१५ में उ० । सामयिक कवित्त बहुधा कहे हैं ।

सर्वेक्षण

इनके भी सम्बन्ध में कोई जानकारी नहीं प्राप्त हो सकी है ।

५८।४७

(४) ऊधो राम कवि, सम्बत् १६१० में उ० । इनकी कविता कालिदास जू ने अपने हजारे में लिखी है ।

सर्वेक्षण

इनके सम्बन्ध में निश्चय पूर्वक इतना ही कहा जा सकता है कि यह सम्बत् १७५० के पूर्व उपस्थित थे, क्योंकि इनकी कविता हजारे में थी । सूचना के अन्य कोई सूत्र सुलभ नहीं ।

५९।४८

(५) ऊधो कवि, सम्बत् १८५३ में उ० । सामान्य कवि थे ।

सर्वेक्षण

इस कवि के नाम पर सरोज में एक कवित्त दिया गया है, जिसके तीसरे चरण में ऊधो जू आया है ।

ऊधो जू कहत हमें करने कहा री वाम
हम तो करत काम श्याम की रटन के

यह ऊधो जू कृष्ण सखा ऊधौ के लिये प्रयुक्त हुआ है। हो सकता है यह कवि का भी नाम हो, परन्तु इसी एक कवित्त के सहारे इस कवि का अस्तित्व संदिग्ध ही बना रहेगा।

६०।४६

(६) उमेद कवि, सम्बत् १८५३ में उ०। इनका नखशिख सुन्दर है। मालूम होता है यह कवि अन्तरवेद अथवा शाहजहांपुर के निकट किसी गाँव के रहने वाले थे।

सर्वेक्षण

खोज रिपोर्ट १६१७।५६ में कवि गंगाप्रसाद कृत विनय पत्रिका के तिलक का विवरण है। पुष्पिका में गंगाप्रसाद को उमेद सिंह का पुत्र कहा गया है :—

इति श्री मिश्रवंशावतंस उमेदसिंहात्मज श्रीमत्पंडित गंगाप्रसाद विरचितं विनयपत्रिका तिलकं सम्पूर्णम्। शुभमस्तु।। चैत वदी १० भौमे। १६१६।।

खोज रिपोर्ट में इन उमेद मिश्र को सरोज वाले उमेद कवि से अभिन्न कहा गया है। रिपोर्ट में १८५३ को जन्मकाल समझकर इनके पुत्र गंगाप्रसाद का रचनाकाल १८५० ई० (१६०७ वि०) स्थिर किया गया है, जो ठीक नहीं। १८५३ कवि का उपस्थिति-काल ही होना चाहिये।

६१।५०

(७) उमराव सिंह, पवार सैद गांव, जिला सीतापुर, विद्यमान हैं। कुछ कविता करते और कवि लोगों का सत्संग रखते हैं।

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध में कोई सूचना सुलभ नहीं। ग्रियर्सन ने (७१३) सैद गाँव को सैदपुर कर दिया है और इनको 'बार्ड' कहा है। यदि बार्ड का अर्थ भाँट है तो ठीक नहीं, क्योंकि उमराव सिंह पँवार क्षत्रिय थे। यदि बार्ड का अर्थ कवि है तो ठीक है।

६२।

(८) उनियारे के राजा कछवाहे, सम्बत् १८८० में उ०। भाषा भूषण और बलभद्र के नखशिख का तिलक बहुत विचित्र बनाया है। नाम हमारी किताब से जाता रहा। उनियारा एक रियासत का नाम है, जो जयपुर में है।

सर्वेक्षण

उनियारे के राजा का नाम राव महासिंह था। महासिंह के आश्रय में मनिराम कवि थे जिन्होंने उनकी आज्ञा से बलभद्र के नखशिख की टीका की[1] :—

महासिंह जू को हुकुम मनीराम द्विज पाय
सिखनख की टीका कियो भूल्यो लेहु बनाय

---

[1] खोज रिपोर्ट १६१२।१०८

यह टीका गद्य में है। साथ में मूल भी दिया गया है। इसकी रचना अगहन बदी ५, सोमवार सम्बत् १८४२ को हुई :—

अष्टादस व्यालीस है, सम्बत् मगसिर मास
कृष्ण पक्ष पाँचै सुतिथि, सोमवार परकास

मनिराम बत्तीसी देश में तोमर कुल की वृत्ति पाकर रहते थे :—

बसत बतीसी देश में, तूँवर कुल की वृत्ति
जुकछु विचारो चित्त में कहों सु ताकी कृत्ति

उक्त उनियारा नागर चाल में है :—

देश सु नागर चाल मे गढ़ उनियारो थान
धर्म नीति राजत तहाँ कृत जुग कैसी आनि

स्पष्ट है उनियारे के राजा राव महासिंह स्वयं कवि नहीं थे, आश्रयदाता थे। सरोज में दिया हुआ सम्बत् १८८० ठीक नहीं। ग्रन्थ की रचना १८४२ वि० में हुई। बतीसी और नागर चाल स्थानों की पहचान कठिन है। सम्भवतः चाल का अर्थ है, चकला, जिला। सरोज के अनुसार उनियारा जयपुर के अन्तर्गत है। सरोज का यह कथन ठीक हो सकता है। राव महासिंह तोमर क्षत्रिय हैं। सरोजकार ने जयपुर की संयोग से उनियारा के राजा को भी कछवाहा मान लिया, जो ठीक नहीं है। हो सकता है मनीराम ने भाषाभूषण का भी तिलक रचा रहा हो।

क

६३।५१

(१) केशवदास सनाढ्य मिश्र (१) बुन्देलखंडी, सम्बत् १६२४ में उ०। इनका प्राचीन निवास टेहरी था। राजा मधुकर शाह उड़छा वाले के यहाँ आये और वहाँ इनका बड़ा सम्मान हुआ। राजा इन्द्रजीत सिंह ने २१ गाँव संकल्प कर दिये। तब कुटुम्ब सहित उड़छे में रहने लगे। भाषाकाव्य का तो इनको भाम, मम्मट और भरत के समान प्रथम आचार्य समझना चाहिये क्योंकि काव्य के दसों अंग पहले पहल इन्हीं ने कविप्रिया गन्थ में वर्णन किये। पीछे अनेक आचार्यों ने नाना ग्रन्थ भाषा में रचे। प्रथम मधुकर शाह के नाम से विज्ञानगीता ग्रन्थ बनाया और कविप्रिया ग्रन्थ प्रवीण राय, पातुर के लिये रचा। रामचन्द्रिका राजा मधुकर शाह के पुत्र इन्द्रजीत के नाम से बनाई और रसिकप्रिया साहित्य और रामअलंकृतमंजरी पिंगल, ये दोनों ग्रन्थ विद्वज्जनों के उपकारार्थ रचे। जब अकबर बादशाह ने प्रवीण राय पातुर के हाजिर न होने, उदूल हुकुमी और लड़ाई के कारण राजा इन्द्रजीत पर एक करोड़ रुपये का जुर्माना किया, तब केशवदास जी ने छिपकर राजा बीरबल मन्त्री से मुलाकात की और बीरबल की प्रशंसा में "दियो करतार दुहूँ कर तारी" यह कवित्त पढ़ा। तब राजा वीरबल ने महा प्रसन्न हो जुर्माना माफ़ कराया। परन्तु प्रवीण राय को दरबार में आना पड़ा।

सर्वेक्षण

केशवदास का प्राचीन निवास टेहरी था। सरोज का अनुकरण कर केवल ग्रियर्सन ने (१३४) ऐसा उल्लेख किया है। यह टेहरी उरछा और टीकमगढ़ के पास ही स्थित कोई गाँव है। अक्षर अनन्य के एक ग्रन्थ ज्ञानपचासा के लाला परमानन्द, पुरानी टेहरी स्टेट, टीकमगढ़ के पास होने का उल्लेख खोज विवरण में है।[१]

---

[१] खोज रिपोर्ट १९०६।२ ई०

केशवदास का जन्म सम्बत् १६१२ और मृत्यु सम्बत् १६७४ के आस-पास हुई।[१] लाला भगवान दीन इनका जन्म सम्बत् १६१८ मानते हैं।[२]

केशवदास के पिता का नाम काशीनाथ, पितामह का कृष्णदत्त था। केशव ने यह सूचना स्वयं रामचन्द्रिका के प्रथम प्रकाश में देदी है। इनके प्रपितामह का नाम ब्रह्मदत्त था।[३] इनके बड़े भाई नागेन्द्र मिश्र थे जिनका नखशिख परम प्रसिद्ध है, और छोटे भाई कल्याण मिश्र थे। कल्याण मिश्र भी कवि थे।

केशवदास जी उड़छा नरेश मधुकर शाह (शासनकाल सम्बत् १६११ से १६४९ वि० तक) के आश्रय में पहले थे। केशव का प्रथम प्रसिद्ध ग्रन्थ रसिक प्रिया इन्हीं के शासनकाल में रचा गया था। मधुकर शाह के ८ पुत्र थे। इनमें सबसे बड़े रामसिंह या राम शाह थे, जिन्होंने ओरछा में १६४९ से १६६९ वि० तक शासन किया। इनके छोटे भाई इन्द्रजीत सिंह थे। इन्हें कछौआ की जागीर मिली थी। यह ओरछा के राजा नहीं थे जैसा कि सरोजकार को भ्रम है। इन्द्रजीत सिंह का केशव से विशेष स्नेह था। इन्होंने इन्हें गुरु माना और ३१ गाँव दिये, २१ नहीं, जैसा कि सरोज में लिखा गया है :—

गुरु करि मान्यो इन्द्रजित तन मन कृपा विचारि
ग्राम दये इकतीस तज ताके पाँय पखारि
—कवि प्रिया, द्वितीय प्रभाव, २०

मधुकर शाह की मृत्यु के बाद ओरछा राज्य इनके आठों पुत्रों—(१) रामसिंह (२) होरिल देव (मृत्यु १६३४ वि०), (३) इन्द्रजीत (४) वीरसिंह देव (५) हरिसिंह देव (६) प्रताप राव (७) रतन सिंह (८) रणसिंह देव में बँट गया। रामसिंह राजा हुये, शेष सभी जागीरदार, कहने को अधीन, वस्तुतः स्वतंत्र। केशव ने बीरसिंह देव का गुणानुवाद बीरसिंह देव चरित्र में किया है और रतनसिंह का रतन बावनी में।

केशवदास को भाषा काव्य का भाम कहा गया है। यह भाम नहीं है, भामह है। शिवसिंह पहले व्यक्ति हैं, जिन्होंने केशव को भाषा काव्य का प्रथम आचार्य लिखा है। उनका कथन आज तक मान्य है। केशवदास के निम्नांकित ग्रंथ हैं —

(१) रतन बावनी—इस ग्रन्थ में कुल ५२ छंद हैं। इसमें रतनसिंह के शौर्य का वर्णन है। रतनसिंह १६ वर्ष की ही वय में अकबरी सेना से वीरतापूर्वक युद्ध करते हुये मारे गये थे। मधुकरशाह के समय में अकबर की दो चढ़ाइयाँ ओड़छा पर हुई थीं। पहली १६३४ में जिसमें होरिल देव मारे गये थे और रामसिंह घायल हुये थे। दूसरी सम्बत् १६४५ में। सम्भवतः इसी में रतनसिंह मारे गये। रतन बावनी १६४५ के आसपास की ही रचना होनी चाहिये। यही केशव की प्रथम ज्ञात कृति है।

(२) रसिक प्रिया—यह रस ग्रंथ है। इसकी रचना कार्तिक सुदी ७, सोमवार, सम्बत् १६४८ को हुई :—

---

[१] शुक्ल जी का इतिहास, पृष्ठ २०१ [२] केशवपंच रत्न, आकाशिका, पृष्ठ ३ [३] भाषा काव्य-संग्रह, पृष्ठ १३३

सम्बत् सोरह सै बरस बीते अड़तालिस
कातिक सुदि तिथि सप्तमी बार बरनि रजनीस

यह ग्रंथ इन्द्रजीत के लिये बना :—

इन्द्रजीत ताको अनुज,सकल धर्म को धाम ८
तिन कवि केशवदास सों कीन्हों धर्म सनेह
सब सुख दै करि यों कह्यो रसिक प्रिया करि देहु १०

—रसिक प्रिया, प्रथम प्रकाश

(३) कवि प्रिया—यह कवि शिक्षा का ग्रंथ है। इसमें मुख्यतया अलंकार वर्णित हैं, यो काव्य के और अंग भी आ गए हैं। इसकी रचना सम्बत् १६५८ वि०, फागुन ५, बुधवार को हुई :—

प्रगट पंचमी को भयो कवि प्रिया अवतार
सोरह सै अट्ठावनों फागुन सुदि बुधवार

इसकी रचना इन्द्रजीत की प्रवीण पातुर प्रवीण राय के लिये हुई थी :—

नाचत गावत पढ़त सब, सबै बजाबत बीन
तिनमें करत कवित्त इक, राय प्रवीण प्रवीण ६०
सविता जू कविता दई, जा कहँ परम प्रकाश
ताके कारज कवि प्रिया, कीन्हो केशव दास ६१

—कवि प्रिया, प्रथम प्रकाश

(४) राम चन्द्रिका—इस ग्रंथ की भी रचना सम्बत् १६५८ ही में हुई :—

सोरह सै अट्ठावनै कार्तिक सुदि बुधवार
रामचन्द्र की चन्द्रिका तव लीन्हों अबतार ६

—रामचन्द्रिका, प्रथम प्रकाश

सरोज के अनुसार रामचन्द्रिका की रचना इन्द्रजीत के नाम पर हुई, पर इसका कोई उल्लेख स्वयं रामचन्द्रिका में नहीं है।

(५) बीरसिंह देव चरित्र—यह एक अत्यंत श्रेष्ठ चरित काव्य है। इसकी रचना सम्बत् १६५४ वि० के प्रारम्भ में हुई :—

सम्बत् सोरह सै त्रेसठा, बीत गये प्रगटे चौसठा।
अनल नाम संबत्सर लग्यो, भाग्यो दुख, सब सुख जगमग्यो॥
रितु बसंत है स्वच्छ विचार, सिद्ध जोग सातैं बुधवार।
शुक्ल पक्ष कवि केशोदास, कीनो बीर चरित्र प्रकाश॥

—खोज रिपोर्ट १९०६।५८

बीरसिंह देव ने सम्बत् १६५९ में अबुलफजल को मारकर अकबर को रुष्ट और सलीम (बाद में जहांगीर) को तुष्ट किया था। सम्बत् १६६२ में अकबर की मृत्यु के बाद सलीम जहाँगीर के नाम से सिंहासनासीन हुआ। उसने बीरसिंह देव को उड़छा का राजा बनाया। केशव पर कुछ दिन विपत्ति के रहे। फिर उन्होंने इस ग्रंथ की रचना कर बीरसिंह देव को तुष्ट किया और इनके दुख भगे और सब सुख जगमगा गये।

(६) विज्ञान गीता—यह ग्रन्थ सम्बत् १६६७ में बना। मधुकर शाह की मृत्यु सम्बत् १६४९ में ही हो गई थी। अतः इनके मधुकर शाह के नाम पर बनने का जो उल्लेख सरोज में हुआ है, वह भ्रान्त है। यह ग्रन्थ किसी के भी नाम पर नहीं बना है।

(७) जहांगीर जस चन्द्रिका—यह ग्रन्थ सम्बत् १६६९ में बना :—

सोरह सै उनहत्तरा माहा मास विचारु
जहाँगीर सक साहि की करी चन्द्रिका चारु

यह ग्रन्थ सम्भवतः बीरसिंह देव की प्रेरणा से रचा गया।

(८) नखशिख—यह भी इनका एक स्वतंत्र ग्रन्थ कहा जाता है। कवि प्रिया में भी चतुर्दश प्रभाव की समाप्ति पर नखशिख वर्णन है जिसमें ६६ छंद हैं। यह स्वयं अपने में एक छोटा-मोटा ग्रन्थ है।

सम्पूर्ण केशव ग्रन्थावली का प्रामाणिक सम्पादन पं० विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने किया है। इसका प्रकाशन हिन्दुस्तानी एकेडेमी, प्रयाग से तीन भागों में हो रहा है जिसके प्रथम दो भाग प्रकाशित भी हो चुके हैं।

६४।५२

(२) केशवदास (२) सामान्य कविता है।

सर्वेक्षण

खोज रिपोर्टों में महाकवि केशव के अतिरिक्त अन्य अनेक केशव हैं। केवल नाम और सरोज में उद्धृत एक छंद के सहारे इस कवि को अन्य केशवों से अलग ढूँढ़ निकालना असम्भव है।

६५।५३

(३) केशवराय बाबू बघेलखंडी, सम्बत् १७३९ में उ०। इन्होंने नायिका भेद का एक ग्रन्थ बहुत सुन्दर बनाया है और इनके कवित्त बलदेव कवि ने अपने संगृहीत ग्रंथ सत्कवि गिरा-विलास में रखे हैं।

सर्वेक्षण

विनोद में (५९३) केशवराय के दो ग्रन्थ कहे गये हैं—नायिका भेद और रस लतिका (द्वि० त्रै० रि०)। नायिका भेद का कोई ग्रन्थ इन्होंने लिखा था, सरोजकार का ऐसा कथन है। सरोजकार ने विषय निर्देश किया है और मिश्र-बन्धुओं ने उसे ही ग्रंथ का नाम मान लिया है। सरोज निर्दिष्ट नायिका भेद वाले ग्रंथ का नाम 'रस ललित[१]' है, 'रस लतिका' नहीं। खोज रिपोर्ट में इस ग्रन्थ का रचनाकाल नहीं दिया गया है; सम्भावना की गई है कि यह बघेलखंडी केशवराय की ही रचना है।

६६।५४

(४) केशवराय कवि। इन्होंने भ्रमर गीत नामक ग्रन्थ रचा है।

---

[१] खोज रिपोर्ट १९०९।१४६

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध में कोई भी सूचना-सूत्र सुलभ नहीं।

६७।५५

(५) कुमारमणि भट्ट गोकुल निवासी, सम्बत् १८०३ में उ०। यह कवि कविता करने में महा चतुर थे। इन्होंने साहित्य में एक ग्रन्थ रसिक-रसाल नाम का बनाया है जिसकी खूबी उसके अवलोकन से विदित हो सकती है।

सर्वेक्षण

रसिक-रसाल की अनेक प्रतियाँ खोज में मिल चुकी हैं।[१] यही नहीं इसका एक संस्करण विद्याविभाग कांकरोली की ओर से सम्बत् १९९४ में कुमारमणि के वंशज कण्ठमणि शास्त्री द्वारा सु-सम्पादित और गंगा पुस्तक माला, लखनऊ से मुद्रित और प्रकाशित हुआ है। इस ग्रन्थ की भूमिका से कुमार मणि के सम्बन्ध में निम्नांकित बातें ज्ञात होती हैं।

कुमारमणि भट्ट का जन्म सम्बत् १७२० और १७२५ के भीतर कभी हुआ। यह आंध्रदेशीय तैलंग ब्राह्मण थे। इनके पिता का नाम शास्त्री हरि बल्लभ भट्ट था। इनका स्थायी निवास सागर जिले का गढ़ पटरा नामक गाँव था। यहाँ से यह बुन्देलखंड के विभिन्न रजवाड़ों में जाया करते थे। दतिया के राजा रामसिंह के यहां इनका विशेष सम्मान था। काव्य-प्रकाश के आधार पर इन्होंने सम्बत् १७७६ में रसिक-रसाल की रचना की :—

रस[६] सागर[७] रवि-तुरग[७] विधु[१] संबत् मधुर बसंत
विलस्यो रसिक रसाल लखि हुलसत सुहृद बसंत

यह संस्कृत के भी कवि थे। कुमार सप्तसती इनकी आर्यायों का संकलन है। इन्होंने संस्कृत कवियों की ७०० आर्याओं का भी रसिक रंजन नाम से एक संकलन सम्बत् १७६५ में प्रस्तुत किया था। इसमें इनकी भी अनेक आर्यायें हैं। सम्बत् १७७९ वि० की इनके हाथ की लिखी एक पुस्तक उपलब्ध है।

सरोज में कुमारमणि को गोकुल निवासी कहा गया है। हो सकता है यह अपने अंतिम दिनों में गोकुल में आ रहे हों। सरोज में इनको सम्बत् १८०३ में उ० कहा गया है। सम्बत् १७७९ वि० तक इनके जीवित रहने का प्रमाण सुलभ है। यह सम्बत् १८०३ तक भी जीवित रहे हों, ऐसा असम्भव नहीं। सरोज वर्णित सम्बत् जन्मकाल कदापि नहीं है।

६८।६७

(६) करनेश कवि बन्दीजन असनी वाले, सम्बत् १६११ में उ०। यह कवि नरहरि कवि के साथ दिल्ली में अकबर शाह की सभा में जाते थे। इन्होंने कर्णाभरण, श्रुतिभूषण, और भूपभूषण, ये तीन ग्रन्थ बनाए हैं।

सर्वेक्षण

नरहरि का जन्म सम्बत् १५६२ में हुआ और ये सम्बत् १६६७ तक जीवित रहे। करनेश कवि नरहरि महापात्र के साथी थे। एक वय वालों का ही साथ होना, सुना और देखा गया है।

---

[१] खोज रि० १९०५।५, १९०६।१८६, १९२०।९०, १९२३।२२९

ऐसी दशा में सम्बत् १६११ करनेश का जन्मकाल नहीं हो सकता। यह १६११ वस्तुतः ई० सन् है और कवि का रचनाकाल है, जो अकबर के शासनकाल (१६१३-६२ वि०) और नरहरि के समय को ध्यान में रखते हुये उचित ही प्रतीत होता है, भले ही यह कवि का अंतिम रचनाकाल हो।

करनेश के तीन ग्रन्थों—कर्णाभरण, श्रुतिभूषण और भूपभूषण का उल्लेख सरोज, एवं सरोज के आधार पर ग्रियर्सन (११५), विनोद (१४३) तथा अन्य इतिहास-ग्रन्थों में हुआ है, पर खोज में आज तक इनमें से किसी का भी पता नहीं चला है। जैसा कि नाम से प्रकट हो रहा है, ये अलंकार ग्रन्थ हैं। मेरी धारणा है कि ये तीन ग्रन्थ न होकर एक ही ग्रन्थ के विभिन्न नाम हैं। कर्णाभरण का ही पर्याय श्रुतिभूषण है। (श्रुति = कान = कर्ण)। किसी भूप, सम्भवतः अकबर से सम्बन्धित होने के कारण इसका नाम भूपभूषण भी रहा होगा। इतिहास ग्रन्थों में इसे केशव के रीति ग्रन्थों—रसिक प्रिया (१६४८ वि०) एवं कवि प्रिया (१६५८ वि०) का पूर्ववर्ती कहा गया है। पर इसका कोई पुष्ट प्रमाण नहीं है। अकबर का उपस्थिति-काल १६६२ वि० तक है। मेरा अनुमान है कि करनेश ने केशव की देखा देखी इस अलंकार ग्रन्थ की रचना सम्बत् १६६० वि० के आस-पास किसी समय की। इसे तब तक कवि-प्रिया से पूर्ववर्त्ती न माना जाना चाहिये, जब तक वैसा मानने के पुष्ट प्रमाण न उपलब्ध हो जायँ।

कहा जाता है एक बार इनकी कविता पर प्रसन्न होकर अकबर ने कोषाध्यक्ष से कुछ पुरस्कार देने को कहा, पर वह टाल-मटोल करता रहा। इस पर खीझकर इन्होंने इस कवित्त द्वारा उसे फटकारा :—

खात है हराम दाम, करत हराम काम
घट-घट तिनहीं के अपयश छावेंगे
दोजख हू जैहैं तब काटि-काटि कीड़े खैहैं
खोपरी के गुदा काग टोंटनि उड़ावेंगे
कहै 'करनेस' अब घूस खात लाज नाहीं
रोजा औ निमाज अंत काम नहिं आवेंगे
कविन के मामिले में करै जोन खामी
तौन निमक हरामी मरे कफन न पावेंगे[1]

६६।५७

(७) करन भट्ट, पन्ना निवासी, सम्बत् १७९४ में उ०। इन्होंने साहित्य-चन्द्रिका नामक ग्रन्थ बिहारी सतसई की टीका, श्री बुन्देलवंशा वतंस राजा सभासिंह हृदयशाहि पन्नानरेश की आज्ञानुसार बनाया है। पहले यह कवि काव्य पढ़कर एक दिन पन्ना नरेश राजा सभासिंह की सभा में गये। राजा ने यह समस्या दी, "वदन कँपायो दाबि रहना दसन सों"। इसी के ऊपर करन जी ने "बड़े-बड़े मोतिन की लसत नथुनी नाक" यह कवित्त पढ़ा। राजा ने बहुत प्रसन्न होकर बहुत दान-सम्मान किया।

सर्वेक्षण

सरोज में उल्लिखित यह करन भट्ट और ७२ संख्या पर वर्णित आगे आने वाले कर्ण ब्राह्मण

---

[1] अकबरी दरबार के हिन्दी कवि, पृष्ठ, ३२-३३

दोनों एक ही हैं। पहले को पन्ना निवासी एवं दूसरे को बुन्देलखंडी कहा गया है। पन्ना बुन्देलखंड ही में है, अतः पन्नावासी भी बुन्देलखंडी है। दोनों कवि पन्ना दरबार से सम्बन्धित कहे गये हैं। करणभट्ट को हृदयशाहि (सभासिंह के पिता, १७८८-१७९६ वि०) और राजा सभासिंह (१७९६-१८०९ वि०) का दरबारी एवं करण ब्राह्मण को हिन्दू पति (सभासिंह के पुत्र, १८१३-३४ वि०) का दरबारी कवि माना गया है। दोनों कवियों के समय में भी बहुत अन्तर नहीं है। एक का समय १७९४ एवं दूसरे का समय १८५७ दिया गया है। एक प्रारम्भिक कविता काल है और दूसरा अंतिम। सम्भवतः कवि १८५७ वि० के आस-पास दिवंगत हो गया रहा होगा। आश्रयदाताओं के शासनकाल को ध्यान में रखते हुये सरोज में दिये हुये सम्बत् रचनाकाल ही सिद्ध होते हैं। ये जन्मकाल कदापि नहीं हो सकते। सरोज में करण भट्ट को बिहारी सतसई की साहित्यचन्द्रिका-टीका का कर्त्ता कहा गया है, किन्तु उदाहरण देते समय करण ब्राह्मण पन्नावाले के नाम पर साहित्यचन्द्रिका के उद्धरण दिये गये हैं। इसी प्रकार कर्ण ब्राह्मण को साहित्य-रस और रस-कल्लोल नामक दो ग्रन्थों का कर्त्ता कहा गया है। रस कल्लोल के उद्धरण करन भट्ट के नाम पर दिये गये हैं। शुक्ल जी के इतिहास में करन कवि (ब्राह्मण) हैं करन भट्ट नहीं। इनकी कविता के उदाहरण में "कंत कित होत गात विपिन समाज देखि" से प्रारम्भ होने वाला कवित्त दिया गया है।[1] सरोज में यही कवित्त करन भट्ट के नाम से उद्धृत है। इन सब बातों को ध्यान में रखते हुये मानना पड़ता है कि करन भट्ट और करन ब्राह्मण एक ही कवि हैं।

करन कवि भट्ट भी थे और ब्राह्मण भी। यह या तो पद्माकर भट्ट और कुमार मणि भट्ट के समान दाक्षिणात्य ब्राह्मण रहे हों या प्रसिद्ध निबंध लेखक बालकृष्ण भट्ट के समान उत्तर भारतीय ब्राह्मण अथवा ब्रह्म भट्ट। यह भाट नहीं थे। आचार्य शुक्ल इनको कान्यकुब्ज ब्राह्मण मानते हैं। इसका आधार रस कल्लोल का यह दोहा प्रतीत होता है :—

> **षट कुल पांड़े पहिदिया भारद्वाजी बंस**
> **गुन निधि पांइ निहाल के बन्दौं जगत प्रसंस**

इस दोहे में गुणनिधि एवं जगत् प्रशंसनीय निहाल के पैरों की बन्दना की गई है। दोहे के प्रथम दल में इन्हीं निहाल को "षट कुल पांड़े पहितिया भारद्वाजी बंश" का कहा गया है। यह निहाल, कवि के गुरु हैं। उदाहरण देते समय करन भट्ट को श्रीमद्बंशीधरात्मज कहा गया है, जिससे स्पष्ट है कि इनके पिता का नाम बंशीधर भट्ट था। सरोज में एक निहाल ब्राह्मण भी हैं[2] जो निगोहा जिले लखनऊ के रहने वाले थे और सम्बत् १८२० में उपस्थित थे। करन और यह निहाल दोनों सम-सामयिक हैं। अतः यही निहाल, करन भट्ट के काव्य-गुरु प्रतीत होते हैं। खोज में इनके निम्नलिखित दो ग्रन्थ मिले हैं : —

(१) साहित्य चन्द्रिका—१९०६।५७। इस ग्रन्थ के प्रारम्भ में कवि ने अपना नाम टीकाकार के रूप में दिया है :—

> **सुमिरत नहि कवि करन कर सह साहित्य सहेत**
> **सुकबि बिहारी सतसई विरचित तिलक समेत २**

सरोज में इस ग्रन्थ का रचनाकाल सूचक दोहा दिया गया है :—

---

[1] हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ ३०६ [2] देखिये, यही ग्रंथ, कवि संख्या ३९०

वेद[४] खंड[९] गिरि[७] चन्द्र[१] गनि भाद्र पंचमी कृष्ण
गुरु वासर टीका करन पूर् यो ग्रन्थ कृतष्ण

इस दोहे के अनुसार इस ग्रन्थ की रचना सम्बत् १७६४, भादों बदी ५, गुरुवार को हुई।

(२) रस कल्लोल—१६०४।१५, १६१७।६५, १६२३।२०४ ए, बी। इस ग्रन्थ की जितनी प्रतियाँ मिली हैं, सभी के अंत में पुष्पिका में करन कवि को बंशीधरात्मज कहा गया है। १६२३।२०४ ए वाली प्रति शिवसिंह की है। इस गन्थ में रस, ध्वनि, गुण, लक्षणा एवं काव्य-भेद आदि सभी वर्णित हैं।

रस धुनि गुन अरु लच्छना कवित भेद मति लोल
बाल बोध हितकर सदा कीन्हों रस कल्लोल ४

इस ग्रन्थ में कुल २५० छंद हैं। रचनाकाल इसमें नहीं दिया है। १६१७ वाली रिपोर्ट में रस कल्लोल एवं साहित्य चन्द्रिका, दोनों के कविता अभिन्न माने गये हैं।

७०।५६

(८) कर्ण ब्राह्मण बुन्देलखंडी, सम्बत् १८५७ में उ०। यह कवि राजा हिन्दू पति पन्ना नरेश के यहाँ थे और साहित्य रस, रस कल्लोल, ये दो ग्रन्थ रचे हैं।

सर्वेक्षण

६६ और ७० संख्यक दोनों कवि एक ही हैं।

७१।

(६) करन कवि बन्दीजन जौधपुर वाले, सम्बत् १७८७ में उ०। यह राठौर महाराजों के प्राचीन कवि हैं। इन्होंने सूर्य प्रकाश नामक ग्रन्थ राजा अभयसिंह राठौर की आज्ञानुसार बनाया है। इस ग्रन्थ की श्लोक संख्या ७५० है। श्री महाराजा यशवंत सिंह से लेकर महाराज अभयसिंह तक अर्थात् सम्बत् १७८७ से सरबलंद खाँ की लड़ाई तक सब समाचार इस ग्रन्थ में वर्णन किये हैं। एक दिन राजा अभयसिंह और महाराजा जयसिंह आमेर वाले पुष्कर तीर्थ पर पूजन-तर्पण इत्यादि करते थे। उसी समय करन कवि गये। दोनों महाराज बोले, कवि जी कुछ शीघ्र ही कहो। करन कवि ने यह दोहा कहा :—

जोधपूर आमेर ये दोनों थाप अथाप
कूरम मारा बैकरा कामध्वज मारा बाप

अर्थात् राजा जोधपुर और आमेर गद्दी-नशीनों को गद्दी से उठा सकते हैं। कूरम अर्थात् कछवाह राजा ने अपने पुत्र शिवसिंह का और कामध्वज अर्थात् राठौर ने अपने पिता बखतसिंह का बध किया। टाड साहब राजस्थान में लिखते हैं कि कर्ण कवि राज सम्बंधी कार्यों में, युद्ध में और कविता में, इन तीनों बातों में महा निपुण थे।

सर्वेक्षण

करन कवि का असल नाम करणींदान है। यह कवि जाति के चारण और मेवाड़ राज्य के शूलवाड़ा गाँव के निवासी थे। यह जोधपुर नरेश महाराज अभयसिंह (शासनकाल सम्बत् १७८१-१८०५ वि०) के आश्रित थे। इन्होंने उक्त महाराजा के आदेश से सूरज प्रकाश की रचना की। इस ग्रन्थ में कुल ७५०० छंद हैं। सरोज में प्रमाद से छंद-संख्या ७५० ही दी गई है। इसकी रचना

से प्रसन्न होकर उक्त महाराज ने इन्हें लाख पसाव दिया और इनका इतना मान बढ़ाया कि इन्हें हाथी पर सवार कराया और स्वयं घोड़े पर चढ़कर इनकी जलेब (हाजिरी) में चले और इनको घर पहुँचाया। इस विषय का यह दोहा प्रसिद्ध है :—

अस चढ़ियो राजा अभौ, कवि चढ़ै गजराज
पहर एक जलेब में, मौहर चले महराज

यह ग्रंथ डिंगल भाषा में है। इसमें अभयसिंह की गुजरात विजय तक (सम्बत् १७८७) का राठौर राजाओं का इतिहास वर्णित है। इस ग्रन्थ का संक्षिप्त रूप 'बिड़द सिणगार' नाम से कवि ने राजा को सुनाने के लिये प्रस्तुत किया था। इसमें १२६ पद्धरी छंद हैं। यह भी डिंगल भाषा में है।[1]

सूरज प्रकाश की रचना सम्बत् १७८७ में हुई :—

सत्रह सै सम्बत् सतासियै विजय दसमि सनि जीत
बदि कातिक गुरु बरणिये दसमी बार अदीत

—खोज रिपोर्ट १९४१।२४

७२।

(१०) कुमारपाल महाराजा अनहल वाले, सम्बत् १२२० में उ०। यह महाराज अनहल वाले के राजा थे और कवीश्वरों का बड़ा मान करते थे। जैसे चन्द कवि ने पृथ्वीराज के हालात में पृथ्वीराज रायसा लिखा है, वैसे ही इन महाराज की बंशावली ब्रह्मा से लेकर इन तक एक कवीश्वर ने बनाकर उसका नाम कुमारपाल चरित्र रखा।

सर्वेक्षण

कुमारपाल गुजरात के नाथ प्रसिद्ध सिद्धराज जयसिंह के उत्तराधिकारी थे। इन्होंने सम्बत् ११९९ से लेकर सम्बत् १२३० वि० तक शासन किया। अतः १२२० में उ० का यह स्पष्ट अर्थ है कि कुमारपाल उक्त सम्बत् में उपस्थित थे। यह स्वयं कवि नहीं थे, कवियों के समादर कर्त्ता थे। सम्बत् १२४१ आषाढ़ शुक्ल अष्टमी रबिवार को अनहिल पट्टन में सोमप्रभु सूर्य ने जिन धर्म प्रतिबोध अर्थात् कुमारपाल प्रतिबोध की रचना समाप्त की, यह ग्रन्थ संस्कृत में है। बीच-बीच में प्राकृत और अपभ्रंश के भी अंश हैं। जैसा कि नाम से प्रकट है, यह ग्रन्थ कुमारपाल के ही नाम पर लिखा गया था। सरोज में उल्लिखित 'कुमारपाल चरित्र' नामक ग्रन्थ की रचना प्रसिद्ध जैनाचार्य हेमचन्द्र ने की थी। यह द्वाश्रय काव्य कहलाता है। इस ग्रन्थ में जयसिंह एवम् कुमारपाल का इतिहास है। साथ ही 'सिद्ध हैम शब्दानुशासन' नामक हेमचन्द्र के प्रसिद्ध व्याकरण के उदाहरण भी हैं। कुमारपाल चरित्र के प्रथम ७ अध्याय शब्दानुशासन के समान संस्कृत में हैं। आठवाँ उसी के समान प्राकृत, शौरसेनी, मागधी, पैशाची, चूलिका पैशाची और अपभ्रंश में है। जिस भाषा का व्याकरण कहा गया है, उसी में कुमारपाल चरित्र के उस अंश की रचना की गई है। शब्दानुशासन की रचना सिद्धराज की मृत्यु (सम्बत् ११९९) के पूर्व हुई। द्वाश्रय काव्य की, उसके बाद सम्बत् १२१८ और १२२९ वि० के बीच किसी समय।[2]

---

[1] राजस्थानी भाषा और साहित्य, पृष्ठ १७८ [2] चन्द्रधर शर्मा गुलेरी लिखित पुरानी हिन्दी (नागरी प्रचारिणी पत्रिका, सम्बत् १९७८, पृष्ठ ९९, ३८६, ३८९) के आधार पर।

७३।६०

(११) कालिदास त्रिवेदी, बनपुरा अंतरवेद के निवासी, सम्बत् १७४९ में उ०। यह कवि अंतरवेद में बड़े नामी-गरामी हुये हैं। प्रथम औरङ्गजेब बादशाह के साथ गोलकुण्डा इत्यादि दक्षिण के देशों में बहुत दिन तक रहे। पीछे राजा जोगाजीत सिंह रघुबंशी महाराजा जम्बू के यहाँ रहे और उन्हीं के नाम से बधू विनोद नाम का ग्रन्थ महा अद्‌भुत बनाया। एक कालिदासहजारा नामक संग्रह ग्रन्थ बनाया, जिसमें सम्बत् १४८० से लेकर अपने समय तक अर्थात् सम्बत् १७७५ तक के कवियों के एक हजार कवित्त, २१२ कवियों के, लिखे हैं। मुझको इस ग्रन्थ के बनाने में कालिदास के हजारे से बड़ी सहायता मिली है। एक ग्रन्थ और 'जंजीराबंद' नाम का महा विचित्र इन्हीं महाराज का मेरे पुस्तकालय में है। इनके पुत्र उदयनाथ कवीन्द्र और पौत्र कवि दूलह बड़े भारी कवि हुये हैं।

सर्वेक्षण

सरोज में जो सम्बत् १७४९ दिया गया है, वह बधू बिनोद का रचनाकाल है। रचनाकाल-सूचक छंद स्वयं सरोज में उद्‌धृत है :—

संबत् सत्रह सै उनचास
कालिदास किय ग्रंथ विलास

यह ग्रन्थ वृत्तिसिंह के पुत्र जोगाजीत के लिये रचा गया है :—

वृत्तिसिंह नन्दन उद्दाम
जोगाजीत नृपति के नाम

जोगाजीत किसी त्रिपदा नदी तट स्थिति जम्बू नगर के राजा थे :—

नगर सु जम्बू दीप में जम्बू एक अनूप
तरे बहै त्रिपदा नदी त्रिपथगामनी रूप

जोगाजीत का वंश-वर्णन भी इस ग्रन्थ में है। इसके अनुसार मालदेव, रामसिंह, जैतसिंह, माधवसिंह, रामसिंह, गोपालसिंह, हरीसिंह, गोकुलदास, लक्ष्मीसिंह, वृत्तिसिंह और जोगाजीत यह वंश-क्रम है। यह रघुवंशी क्षत्रिय थे। जोगाजीत सिंह के सम्बन्ध में तीन दोहे दिये गये हैं :—

तिलक जानि जा देस को दुवन होत भयभीत
जाहिर भयो जहान में जालिम जोगा जीत
वृत्तिसिंह जिमि धरनि ध्रुव जाते अरि भयभीत
जाहिर भयो जहान में ताको जोगागीत
जोगाजीत गुनीन को दीन्हें बहुबिधि दान
कालिदास ताते कियो ग्रन्थ पन्थ अनुमान

ऊपर उद्‌धृत सभी छंद सरोज में उदाहृत हैं। जम्बू सम्भवतः बैसवाड़े में स्थित कोई स्थान है। कालिदास त्रिपाठी के निम्नांकित ग्रन्थ खोज में मिले हैं :—

(१) बधू विनोद या बार बधू विनोद—१९०६।१७८ बी, १९२०।७५, १९२३।२०० ए, बी, सी, १९४१।४७९, पं० १९२२।५२। इस ग्रन्थ का विवरण पीछे दिया जा चुका है।

राधामाधवमिलन बुधविनोद नामक इनका एक ग्रंथ और मिलता है (१९०१।९८)। मेरी ऐसी धारणा है कि बधू विनोद और बुध विनोद सम्भवतः एक ही ग्रंथ हैं। मात्रा के हेर-फेर से नाम बदल गया है। वस्तुतः दोनों ग्रंथ एक ही हैं, दोनों का पाठ एक ही हैं।

(२) जंजीरा बंद—१९०४।५, १९०६।१७८ ए, १९२३।२०० डी। इस ग्रंथ में कुल ३२ कवित्त हैं। यह लघु ग्रंथ बहुत पहले श्री बेंकटेश्वर प्रेस, बम्बई से प्रकाशित हुआ था।

हिन्दी साहित्य में कालिदास अपने हजारे के लिये प्रसिद्ध हैं, पर यह ग्रंथ अभी तक खोज में नहीं मिला है। कालिदास का सम्बंध औरंगजेब से था। कहा जाता है कि यह औरंगजेब के साथ दक्षिण गये थे और गोलकुण्डा की लड़ाई के समय (सम्बत् १७४५ वि०) वहाँ उपस्थित थे। इस लड़ाई का वर्णन कालिदास ने इस कवित्त में किया है, जो सरोज में भी उदाहृत है :—

गढ़न गढ़ी से गढ़ि, महल मही से मढ़ि
बीजापुर ओप्यो दलमलि उजराई में
कालिदास कोप्यो बीर औलिया आलमगीर
तीर तरवारि गह्यो पुहुमी पराई में
बूँद ते निकसि महि मंडल घमंड मची
लोहू की लहरि हिमगिरि की तराई में
गाढ़ि के सु झंडा आड़ कीन्हीं पादशाह ताते
डकरी चमुण्डा गोलकुण्डा की लड़ाई में।

कालिदास अपनी रचनाओं में कभी-कभी 'महाकवि' भी छाप रखते थे। १९०९।१४४ वाली रिपोर्ट में कालिदास के नाम पर एक 'भँवरगीत' चढ़ा हुआ है, यह भँवरगीत वस्तुतः नंददास का है। अंतिम चरण के अशुद्ध लेख के कारण यह भ्रम उत्पन्न हुआ है।

७४।६१

(१२) कवीन्द्र (१) उदयनाथ त्रिवेदी, बनपुरा निवासी कवि कालिदास जू के पुत्र सम्बत् १८०४ में उ०। यह कवि अपने पिता के समान महाकवीश्वर हो गुजरे हैं। प्रथम राजा हिम्मतसिंह बंधल गोत्री अमेठी महाराज के यहां बहुत दिन तक रहे और कविता में अपना नाम उदयनाथ रखते रहे। जब राजा के नाम से रसचंद्रोदय नाम का ग्रंथ बनाया तब राजा ने कवीन्द्र पदवी दी। तब से अपना नाम कवीन्द्र रखते रहे। इस ग्रंथ के चार नाम हैं—१ रति विनोद चंद्रिका, २ रति विनोद चंद्रोदय, ३ रस चंद्रिका, ४ रस चंद्रोदय। यह ग्रंथ भाषा साहित्य में महा अद्भुत है। पीछे कवीन्द्र जी थोड़े दिन राजा गुरुदत्त सिंह अमेठी के यहाँ रहकर फिर भगवंत राय खींची और गजसिंह महाराजा आमेर और राव बुद्ध हाड़ा बूँदी वाले के यहाँ महा मान-सम्मान के साथ काल व्यतीत करते रहे। एक कवीन्द्र त्रिवेदी बेंती गाँव, जिले रायबरेली में भी महान् कवि हो गये हैं।

सर्वेक्षण

कवीन्द्र जी का सरोज वर्णित ग्रंथ खोज में मिल चुका है।[1] इस ग्रंथ के चार ही नाम नहीं हैं, सात नाम हैं :—(१) रस चंद्रोदय, (२) रति विनोद चंद्रोदय, (३) रस चंद्रिका, (४) रति विनोद चंद्रिका, (५) विनोद चंद्रिका, (६) विनोद चंद्रोदय, (७) रति विनोद रस चन्द्रिका। इस ग्रंथ की रचना सम्बत् १८०४ में हुई :—

सम्बत् सतक अठारह चारि
नायिकादि नायक निरधारि

---

(१) खोज रिपोर्ट १९०३।४२, ११८, १९०४।१८, १९०५।३, १९०६।२४६, १९१२।१९२ १९२३।४३५ ए

लहि कविन्द लच्छित रस पंथ
किय विनोद चंद्रोदय ग्रन्थ

इस ग्रंथ के एक छंद में कवीन्द्र ने अपने पिता के नाम, अपने असली नाम और कवीन्द्र उपाधि देने वाले अपने आश्रय दाता का उल्लेख किया है :—

कालिदास कवि के सुवन उदयनाथ सरनाम
भूप अमेठी के दियो रीझि कविन्द्र सु नाम

कवि ने अपने पुत्र दूलह के पढ़ने के लिये इस ग्रंथ की रचना की :—

तासु तनय दूलह भयो ताके पढ़िबे हेतु
रस चंद्रोदय तब कियो कवि कविन्द करि चेतु

शुक्ल जी ने कवीन्द्र का जन्मकाल सम्बत् १७३६ के लगभग माना है और रस चंद्रोदय के अतिरिक्त विनोद चंद्रिका और जोगलीला नामक इनके दो और ग्रंथों का भी उल्लेख किया है। इनमें से विनोद चंद्रिका तो रस चंद्रोदय का ही दूसरा नाम है। परंतु न जाने किस आधार पर शुक्ल जी ने इसका रचनाकाल सम्बत् १७७७ दिया है।

कवीन्द्र का सम्बंध अमेठी (सुलतानपुर) नरेश राजा गुरुदत्त सिंह, असोथर (फतेहपुर) नरेश भगवंत राय खींची, आमेर (जयपुर) नरेश गजसिंह, बूँदी नरेश राव बुद्ध सिंह हाड़ा के दरबार से था। सरोज में इन सभी राजाओं की प्रशस्ति में लिखे हुये कवीन्द्र के कवित्त उद्धृत हैं।

सभा की अप्रकाशित संक्षिप्त खोज रिपोर्ट में छंद पचीसी (१९१७।१९८) नामक एक ग्रंथ का उल्लेख हुआ है। पर यह इन उदयनाथ कवीन्द्र की रचना नहीं है। यह ग्रंथ भरतपुर के राज्य-पुस्तकालय में है। नाम से तो प्रतीत होता है कि यह २५ छंदों का कोई छोटा-सा ग्रंथ होगा, पर यह १९३ पन्नों का बड़ा ग्रंथ है और इसमें १०७८ कवित्त सवैये आदि छंद हैं। मुझे तो यह विभिन्न कवियों की रचनाओं का संग्रह ग्रंथ प्रतीत होता है। इस ग्रंथ के चार छंद रिपोर्ट में उद्धृत हैं। इनमें से केवल प्रथम छंद में उदैनाथ छाप है। शेष तीन छाप हीन हैं। यह ग्रंथ सम्बत् १८५३ में बना है :—

सावन सुदि की तीज को करी पचीसी सार
संबत् अट्ठारह सतहिं त्रेपन थिर शनिवार १०७८

इस समय तक तो उदयनाथ जीवित भी न रहे होंगे। यह रचना भरतपुर नरेश महाराज रणजीत सिंह (शासनकाल सम्बत् १८३४-६२ वि०) के दरबारी कवि उदयराम की है। उदयराम ने अनेक छोटे-छोटे ग्रंथ रचे थे, जिनमें श्रीमद्भागवत दशमस्कंध के पूर्वार्द्ध में कथित राधा-कृष्ण की लीला में वर्णित हैं। इनका 'सुजान सम्बत्' नामक ग्रन्थ अपूर्व है। इसमें महाराज सूरजमल का चरित्र कवि जन्य कल्पना के आधार पर वर्णित है।[1]

खोज में उदयनाथ के नाम पर 'सगुन विलास' नाम का ग्रन्थ चढ़ा है।[2] इसकी रचना संबत् १८४१ में हुई थी :—

---

(२) भरतपुर और हिन्दी, 'माधुरी', फरवरी १९२७, पृष्ठ ८१ (३) खोज रिपोर्ट १९१२।१९१

बैसाख मास पच्छ सित होइ
तिथि सप्तमी सगुन भा सोइ
तन[१] औ वेद[४] वसु[८] इन्दु[१] बखानौं
ये सम्बत् बीते बुध जानो

ग्रन्थ में कवि का नाम आया है :—

"उदयनाथ हरि भक्ति बिन, सुख नहिं पावे कोइ"

काशीवाले उदयनाथ का समय १७११ है। उदयनाथ कवीन्द्र सम्बत् १८४१ तक जीवित नहीं रह सकते। इस समय भरतपुर वाले उदयनाथ या उदयराम विद्यमान थे। सम्भवतः सगुन विलास भी इन्हीं की रचना है।

७५।

(१३) कवीन्द्र (२) सखी सुत ब्राह्मण, नरवर, बुन्देलखंड निवासी के पुत्र सम्बत् १८५४ में उ०। इन्होंने रस दीपक नाम ग्रन्थ बनाया है।

सर्वेक्षण

रस दीपक नामक ग्रंथ खोज में मिल चुका है। इसकी रचना सम्बत् १७९९ वि० कार्तिक सुदी ३, बुधवार को हुई।

सत्रह सतक निन्नायबें, कातिक सुदि बुधवार
ललित तृतीया में भयो, रस दीपक अवतार

—खोज रि० १९०४।२८

सरोज में इस कवि का कोई उदाहरण नहीं दिया गया है। बुन्देल वैभव में इनके ५ शृंगारी कवित्त सवैये उद्धृत हैं। इसमें इनका जन्मकाल सम्बत् १७६० और कविताकाल सम्बत् १७९० दिया गया है, जो ठीक है।[१] सरोज में दिया हुआ सम्बत् १८५४ अशुद्ध है। इस समय तक तो कवि जीवित भी न रहा होगा। फिर यह उसका जन्मकाल कैसे हो सकता है?

७६।६२

(१४) कवीन्द्र (३) सारस्वत ब्राह्मण, काशी निवासी, सम्बत् १६२२ में उ०। यह कवीन्द्राचार्य महाराज संस्कृत साहित्य शास्त्र में अपने समय के भानु थे। शाहजहाँ बादशाह के हुकम से भाषा-काव्य बनाना प्रारम्भ किया और बादशाही आज्ञा के अनुसार 'कवीन्द्र कल्पलता' नामक ग्रंथ भाषा में रचा, जिसमें बादशाह के पुत्र दाराशिकोह और बेगम साहबा की तारीफ में बहुत कवित्त हैं।

सर्वेक्षण

कवीन्द्राचार्य सरस्वती गोदावरी तट स्थित पण्य भूमि के निवासी आश्वलायन शाखा के दक्षिणी ब्राह्मण थे :—

गोदातीरनिवासी पश्चाद्येनाश्रिता काशी।
ऋग्वेदीयाभ्यस्तासांगा शाखाश्वलायनी शस्ता॥—कवीन्द्र चन्द्रोदय

---

(१) बुंदेल वैभव, भाग २, पृष्ठ ४३०

बचपन में ही विरक्त हो यह काशी आ रहे। काशी में यह वरुणा तट पर रहते थे। उनका निवास स्थान अब भी वेदान्ती का बाग नाम से प्रसिद्ध है। इनके नेतृत्व में काशी के पंडितों का एक प्रतिनिधि मंडल तीर्थयात्रा कर से मुक्ति पाने के लिये आगरा गया था, जिसमें उसे कवीन्द्राचार्य सरस्वती के परम पांडित्य के कारण सफलता मिली थी। शाहजहाँ ने प्रसन्न होकर इन्हें 'सर्व विद्या निधान' की पदवी दी थी। इनके मूल नाम के सम्बन्ध में विवाद है। कवीन्द्र और आचार्य इनकी उपाधियाँ हैं। इनका नाम संभवतः 'विद्यानिधि' था। इसी विद्यानिधि को शाहजहाँ ने सर्व विद्या-निधान में बदला। शाहजहाँ ने तीर्थयात्रा कर से मुक्ति दी, इन्हें उक्त उपाधि दी, दारा के पंडित-समाज का प्रधान बनाया और २००० रुपये वार्षिक की वृत्ति भी दी। इस विजय पर ही प्रसन्न होकर काशी के लोगों ने इन्हें कवीन्द्र और आचार्य कहा था। बर्नियर नामक यात्री के साथ यह आगरे में तीन वर्ष रहे। इनका गुणानुवाद तत्कालीन संस्कृत कवियों ने 'कवीन्द्र चन्द्रोदय' में एवं हिन्दी कवियों ने 'कवीन्द्र चान्द्रिका' में किया है।

कवीन्द्राचार्य जी संस्कृत और हिन्दी दोनों के विद्वान् थे और काशी के विद्वन्मन्डली के शिरमौर थे। इनके संस्कृत ग्रन्थ है—(१) कवीन्द्र कल्पद्रुम, (२) पदचन्द्रिका दशकुमार टीका, (३) योग भाषाकर योग, (४) शतपथब्राह्मण भाष्य, (५) हंसदूत काव्य। इनके हिन्दी ग्रन्थ तीन हैं—(१) कवीन्द्र कल्पलता, (२) योग वाशिष्ठसार या ज्ञानसार, (३) समर सार। कवीन्द्र कल्पलता में विनोद (२८६) के अनुसार १५० छंद हैं। योग वाशिष्ठसार सम्बत् १७१४ में लिखा गया। समर सार का रचनाकाल विनोद के ही अनुसार सम्बत् १६८७ है।

कवीन्द्राचार्य सरस्वती का समय सम्बत् १६५७ से १७३२ वि० तक श्री पी. के. गोडे ने माना है। सरोज में दिया हुआ सम्बत् ई० सन् है। इस समय (सम्बत् १६७ वि०) कवीन्द्र जी उपस्थित थे। कवीन्द्राचार्य का पुस्तकालय अद्भुत था। उसमें संस्कृत की चुनी हुई पुस्तकें थीं[१]। योग वाशिष्ठसार भी खोज में मिल चुका है[२]। हिन्दी कवियों ने 'कवीन्द्र चन्द्रिका' में इनकी संस्तुति की है। यह ग्रन्थ भी खोज में मिल चुका है।[३] इसमें हिन्दी के निम्नांकित कवियों की रचनायें थीं :—

(१) सुखदेव	४ छंद	(१०) रघुनाथ	१ छंद
(२) नन्दलाल	१ ,,	(११) विश्वम्भर मैथिल	१ ,,
(३) भीख	२ ,,	पुनः धर्मेश्वर	१ ,,
(४) पंडित राज	१ ,,	(१२) शंकरोपाध्याय	१ ,,
(५) रामचन्द्र	१ ,,	(१३) रघुनाथ की स्त्री	३ ,,
(६) कविराज	४ ,,	(१४) भैरव	२ ,,
(७) धर्मेश्वर	२ ,,	(१५) सीतापति त्रिपाठी	
(८) कस्यापि	१ ,,	पुत्र मणिकंठ	२ ,,
(९) हीराराम	२ ,,	(१६) मंगराय	१ ,,

(१) नागरी प्रचारिणी पत्रिका, ५२।२, श्रावण-आश्विन २००४ में प्रकाशित श्रीबटे कृष्ण लिखित कवीन्द्राचार्य सरस्वती लेख के आधार पर। (२) १९२०। ७६ ए० बी०, १९२६।१६१, १९४१। २७७ (३) राजस्थान रिपोर्ट, भाग २, पृष्ठ ६२,६३

(१७) कल्यापि रचित	१२ छंद	(२४) त्वरित कविराज	२ छंद
(१८) गोपाल त्रिपाठी, पुत्र मणिकंठ	१ ,,	(२५) गोविन्द भट्ट	२ ,,
(१९) विश्वनाथ जीवन (विश्वनाथ छाय)	१ ,,	(२६) जयराम	५ ,,
(२०) नाना (विभिन्न) कवि	१० ,,	(२७) गोविन्द	२ ,,
(२१) चिन्तामणि	१७ ,,	(२८) बंशीधर	१ ,,
(२२) देवराम	२ ,,	(२९) गोपीनाथ	१ ,,
(२३) कुलमणि	१ ,,	(३०) यादव राय	१ ,,
		(३१) जगतराय	१ ,,
		(३२) रायकवि की स्त्री	३ ,,

विनोद में सुखदेव मिश्र पिंगली के सम्बन्ध में लिखा है कि इन्होंने काशी में एक संन्यासी से तंत्र एवं साहित्य पढ़ा था। संभवतः वे संन्यासी कवीन्द्राचार्य ही थे। और कवीन्द्र चन्द्रिका में जिन सुखदेव के ४ छंद प्रारम्भ ही में हैं, वे संभवतः प्रसिद्ध सुखदेव मिश्र ही के हैं।

इस ग्रन्थ के प्रारम्भिक २ छंद निम्न हैं। इनसे कवि के वास्तविक जीवन पर प्रकाश पड़ता है :—

पहिले गोदातीर निवासी
पाछे आइ बसे श्रीकासी
ऋगवेदी असुलायन साखा
तिनको ग्रन्थ भयो है भा ा ५
सब विषयनि सों भयो उदास
बालापन में लयो संन्यास
उनि सब विद्या पढ़ी पढ़ाई
विद्यानिधि सु कवीन्द्र गोसाई ६

इसी ग्रन्थ में करमुक्त सूचक निम्नांकित छंद है :—

कासी और प्रयाग की कर की पकर मिटाइ
सबहिन को सब सुख दियो श्री कवीन्द्र जग आइ २

—राजस्थान रिपोर्ट, भाग २ पृष्ठ ९२-९३

७७।५९

(१५) किशोर युगुल किशोर, बन्दीजन दिल्लीवाले, सम्बत् १८०१ में उ०। यह कविता में महानिपुण और मुहम्मदशाह के यहां थे। इनका ग्रन्थ मैंने कोई नहीं पाया। केवल किशोर संग्रह नाम का एक इनका संग्रहीत ग्रन्थ मेरे पुस्तकालय में है, जिसमें सिवा सत् कवियों के इनका भी काव्य बहुत है।

सर्वेक्षण

७७ संख्यक किशोर और २५६ संख्यक जुगल किशोर भट्ट दोनों कवि वस्तुतः एक ही हैं। ग्रियर्सन ने भी इनकी अभिन्नता स्वीकार की है। सरोज में प्रमाद से यह कवि दो बार उल्लिखित हो गया है। विशेष विवरण संख्या २५६ पर देखिये।

७८।५८

(१६) कादिर, कादिर बख्श मुसलमान पिहानी वाले, सम्बत् १६३५ में उ०। कविता में निपुण थे और सैय्यद इब्राहीम पिहानी वाले रसखानि के शिष्य थे।

सर्वेक्षण

रसखानि का रचनाकाल सम्बत् १७४० है। यदि कादिर रसखानि के शिष्य हैं तो सं० १६३५ इनका उपस्थिति काल ही हो सकता है, यह जन्मकाल नहीं हो सकता। सरोज में इनके दो नीतिपरक-कवित्त उद्धृत हैं जिनमें पहला बहुत प्रसिद्ध है—

"गुन ना हिरानो गुन गाहक हिरानो है"

७९।६३

(१७) कृष्ण कवि (१) सम्बत् १७४० में उ०। यह कवि औरंगजेब बादशाह के यहाँ थे।

सर्वेक्षण

रत्नाकर जी का अनुमान है कि यह कृष्ण कवि बिहारी के तथाकथित पुत्र हैं, जिन्होंने सम्बत् १७१९ में बिहारी सतसई की पहली टीका लिखी :—

संबत ग्रह[९] ससि[१] जलधि[७] छिति[१] छठ तिथि वासर चन्द
चैत मास पख कृष्ण मैं पूरन आनँद कंद

रत्नाकर जी इस दोहे को इसी टीका का रचनाकाल मानते हैं, बिहारी सतसई का नहीं। उनके अनुसार बिहारी सतसई सम्बत् १७०४-०५ के आस-पास पूर्ण हो गई थी। औरंगजेब सम्बत् १७१५ में गद्दी पर बैठा; कृष्ण ने सम्बत् १७१९ में टीका लिखी। सरोज में उद्धृत प्रशस्ति सम्बन्धी कवित्त में घोड़े पर चढ़े औरंगजेब का आतंक वर्णित है। अतः उस समय वह युवा ही रहा होगा।[1]

कृष्ण कवि की कविता का पृष्ठ-निर्देश नहीं किया गया है। पर कृष्ण प्राचीन संख्या १३४ की कविता का जो उदाहरण दिया गया है, उसमें औरंगजेब की प्रशस्ति है। अतः दोनों कवि एक ही हैं। प्रमाद से दो संख्याओं पर इनका उल्लेख हो गया है। प्रथम एवं द्वितीय संस्करण में १३४ संख्या कृष्ण प्राचीन है ही नहीं। इनकी वृद्धि तृतीय संस्करण में हुई है। ग्रियर्सन में (१८०) सम्बत् १७४० को कृष्ण कवि का जन्मकाल माना गया है और औरंगजेब का शासन-काल भी दिया गया है। कल्पना की गई है कि जयपुरी कृष्ण कवि भी संभवतः यही हैं। यह सब मान्यतायें निराधार एवं आश्चर्यजनक हैं।

८०।६३

(१८) कृष्णलाल कवि, सम्बत् १८१४ में उ०। इनकी कविता शृंगार-रस में उत्तम है।

सर्वेक्षण

विनोद में (१२०९) कृष्णलाल जी गोस्वामी बूँदी वाले का उल्लेख है, केवल कृष्णलाल का नहीं। इनका रचनाकाल सम्बत् १८७४ दिया गया है। इन्हें प्रसिद्ध गोस्वामी गदाधर लाल का

---

(१) बिहारी सतसई सम्बन्धी साहित्य, ना० प्र० पत्रिका ९।१, वैशाख १९८५, पृष्ठ १६

वंशज और कृष्ण विनोद (१८७२), रस भूषण (१८७४) तथा भक्तमाल की टीका नामक तीन ग्रन्थों का रचयिता कहा गया है। यदि विनोद के यह कृष्णलाल गोस्वामी ही सरोज के उक्त कृष्णलाल कवि हैं, तो सरोज में दिया हुआ सम्बत् १८१४ अशुद्ध है।

८१।६६

(१६) कृष्ण कवि (२) जयपुर वाले, सम्बत् १६७५ में उ०। विहारी लाल कवि के शिष्य और महाराजा जय सिंह सवाई के यहाँ नौकर थे। बिहारी सतसई का तिलक कवित्तों में विस्तार पूर्वक वार्तिक सहित बनाया है।

सर्वेक्षण

जयपुरी कृष्ण कवि के निम्नांकित दो ग्रन्थ खोज में उपलब्ध हुये हैं :—

(१) बिहारी सतसई की कवित्त वद्ध टीका—१६०४।१२६, १६०६।५२, १६२३।२२२ ए १६२६।२४८ ए, बी, १६२६।२०५ ए। ग्रंथ के अन्त में कवि ने ३५ दोहे लिखे हैं जिनसे इनके संबंध में पर्याप्त जानकारी होती है। महाकवि बिहारी जिन मिर्जा राजा जयसिंह (शासनकाल सम्बत् १६७८-१७२४ वि०) के यहाँ थे, उनके पुत्र रामसिंह, पौत्र कृष्ण सिंह, प्रपौत्र विष्णु सिंह और प्रप्रपौत्र सवाई जयसिंह (शासन काल सम्बत् १७५६-१८०० वि०) थे। इन्हीं सवाई जयसिंह के मंत्री आया मल्ल जी थे। इनको राजा की उपाधि मिली हुई थी। इन्हें कृष्ण काव्य से परम प्रेम था। इन्हीं की आज्ञा से कृष्ण कवि ने विहारो सतसई की कवित्त वद्ध टीका लिखी :—

रघुवंशी राजा प्रगट पुहुमि धर्म अवतार
विक्रम निधि जयसाहि रिपु तुंड विहंडन हार ११
सुकवि बिहारीदास सौं तिन कीनों अति प्यार
बहुत भाँति सम्मान करि दौलत दई अपार १२
राजा श्री जयसिंह के प्रगट्यो तेज समाज
राम सिंह गुन राम सम नृपति गरीब नेवाज १३
कृष्ण सिंह तिनके भये केहरि राजकुमार
विस्नु सिंह तिनके भये सूरज के अवतार १४
महाराज विसुनेस के धरम धुरन्धर धीर
प्रगट भये जैसाहिं नृप सुमति सवाई बीर १५
प्रगट सवाई भूप कौ मन्त्री मनि सुख सार
सागर गुन सतशील कौ नागर परम उदार १६
आया मल्ल अखंड तप जग सोहत जस ताहि
राजा कीनों करि कृपा महाराज जयसाहि १७
लीला जुगल किसोर की रस कौ होई निकेतु
राजा आया मल्लकौं ता कविता सौं हेतु १८
आया मल कवि कृष्ण पर ढर्यो कृपा कैं ढार
भांति भांति विपदा हरी दीनी लच्छि अधार २६
एक दिना कवि सौं नृपति कही कहीं कौ जात
दोहा दोहा प्रति करौ कवित बुद्धि अवदात २७

पहिलैं हूँ मेरे यहै हिय मैं हुतौ विचार
करौं नायिका भेद को ग्रंथ सुबुधि अनुसार २८
जो कीने पूरब कबिनु सरस ग्रंथ सुखदाइ
तिनहि छाड़ि मेरे कबित को पढ़िहै मनलाइ २९
जानि यहै अपने हियैं कियो न ग्रंथ प्रकाश
नृप को आयसु पाय कै हिय मैं भयो हुलास ३०
उक्ति जुक्ति दोहानि की अच्छर जोरि नबीन
करे सात सै कवित मैं पढ़ैं सुकवि परवीन ३३

यह टीका अगहन सुदी ५, रविवार, सम्बत् १७८२ को पूर्ण हुई :—

सतरह सै द्वै आगरे असी बरस रबिवार
अगहन सुदि पाचैं भये कवित बुद्धि अनुसार[1] ३५

इस कवि के सम्बंध में सरोजकार ने १०० वर्षों की भूल कर दी है। कृष्ण कवि का रचना-काल सम्बत् १७८२ है, न कि १६७५। अतः यह विहारी के शिष्य भी नहीं हो सकते। एक दोहे में कवि ने अपना वंश परिचय भी दिया है :—

माथुर विप्र ककोर कुल लह्यो कृष्न कवि नाव
सेवक हौं सब कविन कौं बसत मधुपुरी गांव[2] २५

इस दोहे के अनुसार कृष्ण कवि मथुरा के रहने वाले ककोर कुल के माथुर ब्राह्मण थे। इस टीका में गद्य का भी उपयोग हुआ है। पहले मूल दोहा, फिर गद्य में प्रसंग एवं नायिका आदि कथन, तदनंतर कवित्त या सवैया में भावपल्लवन है।

(२) विदुर प्रजागर—१९०५।७, १९०६,६३ बी, पं० १९२२,५६, १९२६,२०६ बी, सी, डी। यह ग्रंथ भी उक्त राजा आयामल्ल की ही आज्ञा से बना :—

राजा आयामल्ल की आज्ञा अति हितु पाय
विदुर प्रजागर कृष्ण कवि भाषा करी बखान ३९
मैं साहस अति ही कर्यो कवि कुल जाति सुभाइ
भूलि चूकि जो होइ कछु लीजौ समुझि बनाइ ४०

ग्रंथ की रचना कार्तिक शुक्ल ५, गुरुवार, संवत् १७९२ को हुई :—

सतरह सै अरु बानवे सम्बत् कातिक मास
सुकुल पच्छ पाँचै गुरौ कीन्यो ग्रन्थ प्रकास ४२

यह ग्रंथ महाभारत के उद्योग पर्व के अंतर्गत आये धृतराष्ट्र-विदुर संवाद का अनुवाद है।

इसी युग में कृष्ण नाम के एक और कवि हुए हैं। इन्होंने धर्म-संवाद नामक ग्रंथ लिखा है।[3] इसमें महाभारत के अनुसार युधिष्ठिर एवं धर्म का संवाद है। इसकी रचना सम्बत् १७७५ में हुई :—

सम्बत सतरह सै पचहत्तर समये कीलक नाम
सावन सुदि परिवा तिथी सुरगुर पहिले जाम ५

---

(१) बिहारी सतसई संबंधी साहित्य, ना० प्र० पत्रिका, ६।१, बैशाख १९८५, पृष्ठ १११–१३,
(२) वही (३) खोज रिपोर्ट १९०२।८, १९०६।६३ ए, १९२०।८६

ताही दिन या ग्रंथ को कीन्हो कृष्ण विचारु
कवित सवैया दोहरा वेद भेद व्यवहारु ६

कवि का निवास-स्थान बुंदेलखंड के अंतर्गत बेतवा तटस्थित ओरछा के पास रतनगंज के निकटस्थ भांडर ग्राम था :—

कविवासी भांडेर को रतनगंज सो ठाउ
निकट चत्रभुज वेतवै नम्र ओड़छौ गांव ७

यह कवि सनाढ्य ब्राह्मण थे :—

सनाउढ सा बरन कुल रावत करै बखान
सेवक सबही दुजन के कविता कृष्णनिदान ८

खोज-रिपोर्टों एवं अप्रकाशित संक्षिप्त विवरण में माथुर कृष्ण और इन सनाढ्य कृष्ण को एक कर दिया गया है। विनोद में दोनों कवियों का अलग-अलग वर्णन है। पंजाब रिपोर्ट १९२२-५६ में सांभर युद्ध के रचयिता कृष्ण (भट्टलाल कवि कलानिधि) से भी इन दोनों कवियों के घोल-मेल की आशंका व्यक्त की गई है। बुंदेल-वैभव में भी विदुर प्रजागर और धर्म संवाद के कर्ता एक माने गये हैं।[१]

८२।६५

(२०) कृष्ण कवि (३), सम्बत् १८८८ में उ०। नीति सम्बन्धी फुटकर काव्य किया है।

सर्वेक्षण

'वैद को वैद, गुनी को गुनी, ठग को ठग, टूमक को मन भावे' से प्रारम्भ होने वाला नीति सम्बन्धी सवैया इस कवि के नाम से सरोज में उद्धृत है। इस कवि के सम्बन्ध में और कोई सूचना नहीं उपलब्ध है।

८३।६८

(२१) कुंज लाल कवि बंदीजन, मऊरानी पुरा, सम्बत् १९१२ में उ०। ग्रंथ कोई नहीं देखने में आया। फुटकर कवित्त देखे सुने हैं।

सर्वेक्षण

सरोज में कुंज लाल का एक कवित्त उद्धृत है, जिसमें शब्दों की कुछ ऐसी कलाबाजी है, जो अर्थ तक नहीं पहुँचने देती। इस कवि के सम्बंध में भी कोई सूचना सुलभ नहीं। सम्बत् १९१२ को रचनाकाल ही होना चाहिये। विनोद में इन्हें सम्बत् १९४० में उपस्थित कवियों की सूची में स्थान दिया गया है।

८४।६९

(२२) कुन्दन कवि बुंदेलखंडी, सम्बत् १७५२ में उ०। नायिका भेद का इनका ग्रंथ सुन्दर है। कालिदास जी ने इनका नाम हजारे में लिखा है।

सर्वेक्षण

कुन्दन की कविता कालिदास के हजारे में थी। अतः वह सम्बत् १७५० के पूर्व अथवा आस-पास अवश्य उपस्थित थे। सरोज में दिये सं० १७५२ को किसी भी प्रकार जन्मकाल नहीं स्वीकार

---

(१) बुन्देल-वैभव, भाग २, पृष्ठ ३१६

किया जा सकता है। यह इनका रचनाकाल है, जैसा कि विनोद में भी (५५८) स्वीकार किया है। 'कवित्त कवि जय कृष्ण कृत'[1] नामक संग्रह में इन कुन्दन की भी रचनायें हैं। प्रथम संस्करण में इन्हें बुन्देलखंडी नहीं कहा गया है।

८५।७०

(२३) कमलेश कवि, सम्बत् १८७० में उ०। यह कवि महा निपुण कवि हो गये हैं। नायिका भेद का इनका ग्रन्थ महासुन्दर है।

सर्वेक्षण

अभी तक न तो इनका भेद का ग्रंथ मिला है और न कोई अन्य सूचना ही।

८६।७२

(२१) कान्ह कवि प्राचीन (१) सम्बत् १८५२ में उ०। नायिका भेद में इनका ग्रन्थ है।

सर्वेक्षण

इस कवि के निम्नांकित ग्रंथ खोज में मिले हैं :—

रस-रंग—१९२६।१८३, १९३२।१०७ ए, १९४७।२८। यह वही नायिका भेद का ग्रन्थ है, जिसका संकेत सरोज में किया गया है। इस ग्रन्थ की रचना क्वार सुदी १३, सोमवार, सम्बत् १८०४ विक्रमी को हुई :—

संवत धृति सात जुग बरन कान्हा सुकवि प्रसंग
क्वार सुदी तेरसि ससी रच्यो ग्रंथ रस रंग

धृति से सर्वत्र १८ का अर्थ पुराने कवियों ने लिया है। जुग २ का अर्थ देता है और ४ का भी। १९२६ वाली रिपोर्ट में जुग का अर्थ ४ माना गया है और लिखा गया है कि "जांच करने पर चन्द्रवार ५ अक्टूबर, सन् १७४७ ई० (सम्बत् १८०४) को ठहरता है।" रिपोर्ट में अनुमान किया गया है कि यह कान्ह प्राचीन वृन्दावन के रहने वाले थे। एक जैन कान्ह के निम्नांकित दो ग्रन्थ मिले हैं :—

(१) ज्ञान छतीसी—(राजस्थान रिपोर्ट, भाग ४, पृष्ठ १०३) इस ग्रन्थ में ज्ञान सम्बन्धी छत्तीस कवित्त सवैये हैं। यह कवि जैन है, क्योंकि इसके एक छंद में कवि लिखता है :—

"कान्ह जी ज्ञान छतीसी कहै, सुभ सम्मत है शिव जैनानि कूं" १

ग्रन्थ में न तो रचनाकाल दिया गया है, न प्रतिलिपिकाल।

(२) कौतुक पच्चीसी—(राजस्थान रिपोर्ट, भाग ४, पृष्ठ १११) इस ग्रन्थ का रचनाकाल सम्बत् १७६१ है :—

सतरै सै इक्सठि समै उत्तम माह असाढ़
दूरसा दोहरे दोहरे गुप्त अर्थं करि गाढ़ २६

कवि के सद्गुरु का नाम ध्रम सिंह जू था :—

सद्गुरु, श्री ध्रम सिंह जू, पाठक गुणे प्रधान
कौतुक पच्चीसी कह्यो, कवि वणारसा कान्ह २७

---

(१) खोज-रिपोर्ट १९०२।६८

ज्ञान छत्तीसी एवं कौतुक पच्चीसी के कर्त्ता एक ही कान्ह हैं। यह कान्ह वृन्दाबनी से भिन्न हैं और उनसे प्रायः ५० वर्ष पुराने हैं। यह सम्भवतः कोई राजस्थानी जैन कवि हैं। ये दोनों ग्रंथ राजपूताने में ही मिले हैं। कौतुक पच्चीसी के रचनाकाल के अनुसार यह सम्बत् १७६१ के आसपास विद्यमान थे।

खोज में एक और पुराने कान्ह मिले हैं। इनका पूरा नाम कन्हैयालाल भट्ट उपनाम 'कान्ह' था। यह जयपुर निवासी थे और मथुरा में भी रहा करते थे। यह किसी सरदार नरेश के आश्रित थे। इनके ग्रन्थ का नाम है 'श्लेषार्थ विंशति'।[१]

८७।७१

(२५) कान्ह कवि, कन्हई लाल (२) कायस्थ, राजनगर, बुन्देलखंडी, सं० १९१४ में उ०। इन्होंने बहुत सुन्दर कविता की है। इनका नखशिख देखने योग्य है।

सर्वेक्षण

सरोज में दिया हुआ सम्बत् १९१४ उपस्थितिकाल ही है, जन्मकाल नहीं, क्योंकि यदि यह जन्म काल है तो सम्बत् १९३४ तक प्रसिद्धि पाने के लिये २० वर्ष की वय बहुत कम है। इस वय तक तो लोग पढ़ते-लिखते रहते हैं। कान्ह के नाम पर 'नखशिख' नामक ग्रन्थ खोज में मिला है।[२] १९०३ वाली रिपोर्ट में इसे कान्ह बुन्देलखंडी की रचना माना गया है और १९३२ वाली रिपोर्ट में कान्ह प्राचीन की, क्योंकि रस-रंग और नखशिख ये दोनों ग्रन्थ एक जिल्द में मिले हैं। रस-रंग का प्रतिलिपिकाल सम्बत् १८९८ है। नखशिख में कोई भी सूचना नहीं दी गई है। हो सकता है, इसकी भी उसी समय प्रतिलिपि की गई रही हो। इससे कोई बाधा नहीं आती। सम्बत् १९१४ में कवि उपस्थित था, उसने १८९८ या उसके आस-पास नखशिख की रचना की। इस नखशिख में चौपाई-छंद भी प्रयुक्त हुआ है। दोनों रिपोर्टों में ग्रन्थ का अन्तिम छंद छपा है :—

करन फूल कलिकावलि कान्ह
सीस फूल मांग मुकतान
पाटी बेनी बार बिराजै
अंग सुवास बसन छबि छाजै ७१

८८।७५

(२६) कान्ह कन्हैया वख्स बैस, बैसवारे के विद्यमान। शान्त रस का इनका काव्य सुन्दर है। यह कवियों का बहुत आदर करते हैं।

सर्वेक्षण

विनोद में (२३३६) इन्हें सम्बत् १९३० में उपस्थित कवियों की सूची में रखा गया है। इनका जन्म काल सम्बत् १९०० माना गया है। इन्हें 'देवी विनय'[१] का कर्त्ता कहा गया है। स्वयं ग्रन्थ में ऐसा कोई सूत्र नहीं है जिससे यह निश्चयपूर्वक कहा जा सके कि यह किस कान्ह की रचना है।

---

(१) खोज रिपोर्ट १९४४।३१ (२) खोज रिपोर्ट १९०३।९० १९३२।१७ बी

८६।७३

(२७) कमल नयन कवि बुन्देलखंडी, सम्बत् १७८४ में उ०। इनके श्रृंगार रस के बहुत कवित्त देखे गये हैं। ग्रन्थ कोई नहीं मिला। कविता सरस है।

सर्वेक्षण

विहारी सतसई की अनवर चन्द्रिका टीका के कर्ता हैं कमलनयन और शुभकरन। यह टीका सम्बत् १७७१ में लिखी गई। सरोज के कमलनयन का समय सम्बत् १७८४ है। दोनों के समय में केवल १३ वर्ष का अन्तर है। दोनों की समसामयिकता दोनों की अभिन्नता सिद्ध करती है। इस नाम के और भी कवि हुये हैं, पर वे प्रायः एक शतक पश्चात् हुये हैं।

कमलनयन बुन्देलखंडी थे, यह पन्ना के प्रसिद्ध कवि रूपसाहि के पिता थे। रूपसाहि ने संबत् १८१३ में 'रूप विलास'[२] नामक पिंगल ग्रन्थ की रचना की थी। इस ग्रन्थ में उन्होंने अपना वंश-परिचय दिया है :—

> कायथ गुनिये बारहै श्रीबास न राम
> शुभ परमा अस्थान है बाग महल अभिराम ३
> कायथवंश कुलीन अति प्रगट नरायन दास
> शिवाराम तिनके सुवन कमल नयन सुत तास ४
> फौजदार तिनके तनय रूप शाहि यह नाम
> कीन्हो रूप बिलास यह ग्रन्थ अधिक अभिराम ५

इस परिचय के अनुसार कमलनयन जी बागमहल पन्ना के रहने वाले श्रीवास्तव कायस्थ थे। इनके पिता का नाम शिवाराम और पितामह का नारायणदास था। इनके पुत्र का नाम फौजदार था जो रूपशाहि नाम से कविता करते थे। इन कमलनयन को छोड़ हिन्दी में तीन और कमलनयन नाम के कवि बाद में हुये हैं :—

(१) कमलनयन, काशीराम के पुत्र, संक्सेना कायस्थ, करौली के राजा रणधीर सिंह के राज्य-काल में उपस्थित थे। इन्होंने अपने पुरोहित शम्भूलाल के लिये १७३५ में 'कमल प्रकाश'[३] नामक वैद्यक ग्रन्थ की रचना की।

(२) कमलनयन उपनाम 'रस सिंधु', गोकुल-मथुरा निवासी, पिता का नाम गोकुल कृष्ण, विष्णु सिंह के पुत्र बूंदी नरेश महाराज रामसिंह (शासनकाल सम्बत् १८८८–१९४६ वि०) के आश्रित। इन्हीं के लिये रस सिंधु ने 'राम सिंह मुखारबिन्द मकरन्द'[४] नामक नायिका-भेद के ग्रन्थ की रचना की।

विनोद में (८४२) इन कमलनयनों को मिला दिया गया है और इन दोनों से भिन्न इनके पूर्ववर्त्ती सरोज के कमलनयन के उ० को इनका उत्पत्ति काल मानकर उनको भी इन्हीं में सान लिया गया है।

(३) कमलनयन—इटावा परगने के अन्तर्गत भीम गांव क्षेत्र में, मैनपुरी के निवासी, पिता का नाम हरचन्द राय, भाई का छत्रपत, चाचा का नन्दराय और चचेरे भाई का श्यामलाल। यह जैन थे। इन्होंने सम्बत् १८७० में 'जिन दत्त चरित्र भाषा[५]' नामक ग्रन्थ लिखा।

९०।७६

(२८) कविराज कवि बन्दीजन, सम्बत् १८८१ में उ०। सामान्य प्रशसक इधर-उधर घूमने

---

(१) खोज रिपोर्ट १९०६।३७७ (२) खोज रिपोर्ट १९२०।६७, १९०५।८३ (३) खोज रिपोर्ट १९१७।९४, (४) खोज रिपोर्ट १९१२।९० (५) खोज रिपोर्ट १९४७।२५

वाले कवि मालूम होते हैं। सुखदेव मिश्र कम्पिलावासी ने भी अपना नाम बहुत जगह कविराज लिखा है, पर यह वह कविराज नहीं हैं।

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध में कोई सूचना सुलभ नहीं। यह कायस्थों की कलम-रोशन रहे, ऐसा आशीर्वाद देने वाले अत्यन्त सामान्य कोटि के कवि हैं :—

मेरु सक्सेना श्रीवास्तव भटनागर हैं
रोशन कलम रहे सब की सावार की

९१।७१

(२९) कविराय कवि सम्बत् १८७५ में उ०। नीति सम्बन्धी चोखी कविता की है।

सर्वेक्षण

इस कवि का एक कवित्त सरोज में उद्धृत है जिसमें सूमों की निन्दा की गई है। कवित्त में कविराज संतन की छाप है। फिर भी न जाने कैसे कविराइ कवि की कल्पना शिवसिंह ने कर ली है :—

कविराइ संतन सुभाइ सुने सूमन के
धरम बिहूने धन धरा धरि धरिंगे

सरोज में दो संतन हैं। एक बिन्दकी वाले संतन दुबे (संख्या ८७०), जो धनी थे, भिखारियों को दान दिया करते थे, दूसरे जाजमऊ के एकाक्ष संतन पाड़े (संख्या ८७१) जो निर्धन थे और गोदान के लेने वाले थे। संतन पांड़े ने यह विभिन्नता अपने एक छंद में स्वयं व्यक्त की है जो सरोज में उद्धृत है :—

"वै वरु देत लुटाई भिखारिन, ये विधि पूरुब दान गऊ के"

सरोज में कविराइ के नाम से जो छंद उद्धृत है वह इन्हीं एकाक्ष संतन पांड़े का प्रतीत होता है। सरोज के दोनों संतन सम्बत् १८३४ में उपस्थित थे और यह कविराइ सम्बत् १८७५ में उ० थे। यह १८७५ संतन पांड़े का अंतिम रचनाकाल हो सकता है।

९२।७९

(३०) कविराम कवि (१) सम्बत् १८९८ में उ०। कोई ग्रन्थ नहीं देखा, स्फुट कवित्त हैं।

सर्वेक्षण

कविराम नाम नहीं है, सरोजकार ने व्यर्थ के लिये अंत में भी एक और कवि जोड़कर कविराम कवि बना दिया है। आजतक किसी का भी नाम कविराम नहीं सुना गया। कवि का नाम (उपनाम) राम है, कविराम नहीं। कविराम संख्या ९२ और कविराम (२) रामनाथ कायस्थ वस्तुतः एक ही कवि हैं। इन दोनों कवियों के दो-दो सवैये सरोज में उद्धृत हैं, जो समान रूप से सरस हैं और एक ही कवि के प्रतीत होते हैं। शिवसिंह ने एक ही कवि की रचना दो स्थानों से ली है और उन्हें भिन्न-भिन्न स्थानों से लेने के कारण भिन्न-भिन्न कवियों की समझ ली है। ग्रियर्सन (७८५) और विनोद (२२७७) में भी इन कवियों की एकता सम्भावित मानी गई है। विनोद में तो ९३ संख्यक कविराम (२) का जन्म काल ही सम्बत् १८९८ दिया गया है जो कि ९२ संख्यक कविराम (१) का उ० काल है।

६३।६०

(३१) कविराम (२) रामनाथ कायस्थ वि० । इनके कवित्त सुन्दरी-तिलक में हैं, जो बाबू हरिश्चन्द्र जी ने संग्रह बनाया है ।

सर्वेक्षण

सुन्दरी तिलक में कविराम के दो सवैये उद्धृत हैं । (छंद संख्या १२५, १८६) । १८६ संख्यक सवैया सरोज में उद्धृत है । यह कवि ६२ संख्यक कविराम कवि (१) से अभिन्न है । प्रथम संस्करण में इन्हें ' कायस्थ' नहीं कहा गया है, 'काश्यस्थ' कहा गया है ।

६४।८८

(३२) कविदत्त कवि, सम्बत् १८३६ में उ० । इनके कवित्त दिग्विजय भूषण में कविदत्त के नाम से जुदे लिखे हैं । मुझे भ्रम है, शायद दत्त कवि और कविदत्त एक ही न हों ।

सर्वेक्षण

दिग्विजय भूषण में कविदत्त के नाम में निम्नांकित दो छंद हैं :—

अथ कविदत्त के, प्रतीप सामान्य शंकर, सवैया—

(१) हीरन के मुकतान के भूषन अंगन लै घनसार लगाये
सारी सफेद लसै जरतारी की सारद रूप सो रूप सुहाये
प्रीतम पैं चली यों 'कवि दत्त' सहाय ह्वै चाँदनी याही छपाये
चाँदनी को यहि चन्द्रमुखी मुख चाँद की चाँदनी सो सरमाये—अष्टम प्रकाश,छंद २६

दत्त कवि के, लुप्तोपमा उल्लेख तुल्ययोगिता, दंडक—

(२) चोप करि विरचो विरंचि रूप रासि कैसो
कोक की कला सी चारु, चातुरी की साला सी
चंद्रमा सी, चाँदनी सी, लोचन चकोर ही को,
सुधा सखीजन ही को, सौतिन को हाला सी
कहाँ मंजु घोषा उरबसी व सुकेसी दत्त
जाकी छबि आगे वारियत मैंने बाला सी
चम्पक की माला सी लगै है हिये बसि काला
सिसिर दुसाला होत ग्रीषम में पाला सी—नवमप्रकाश, छंद ५६

दत्त कवि के नाम से दिग्विजय भूषण में केवल एक छंद है ।

दत्त कवि

मृगनैनी के पोठ पै बेनी बिराजै सुगन्ध समूह समोय रही
अति चींकन चारु चुभी चित मैं रबिजा समता सम जोय रही
कवि दत्त कहा कहिये उपमा जनु दीप सिखा सम जोय रही
मनो कंचन के कदली दल ऊपर साँवरी साँपिन सोय रही—पंचदश प्रकाश, छंद १६८

दिग्विजय भूषण की कवि-सूची में कविदत्त का उल्लेख संख्या ११२ पर और दत्त कवि का उल्लेख संख्या १६४ पर हुआ है । कवि दत्त के नाम दो छंद दिये गये हैं, जिनमें से पहले में तो कविदत्त छाप है, दूसरे में केवल दत्त । पहला छंद सरोज में उद्धृत है । दत्त कवि के नाम से जो छंद उद्धृत है, उसमें भी छाप कविदत्त ही है । साथ ही नवम प्रकाश में कविदत्त का जो छंद उद्धृत है,

और जिसमें केवल दत्त छाप है, कवित्त उद्धृत करने के पहले वहाँ भी कविदत्त नहीं कहा गया है, 'दत्त कवि के' कहा गया है। अतः स्पष्ट है कि तीनों छंद एक ही कवि के हैं जिसका कवि नाम, उपनाम दत्त है, जो सम्भवतः देव दत्त नाम का उत्तरार्ध है। दो छंदों में दत्त के साथ कवि शब्द केवल पाद-पूर्ति के निमित्त आया है। शिवसिंह का भ्रम ठीक है। दिग्विजय भूषण की कवि-सूची निर्भ्रांत नहीं है। एक ही कवि कई बार उल्लिखित हुआ है और हरबार उसे नवीन संख्या दी गई है। उदाहरण के लिये, सुखदेव मिश्र का उल्लेख एक बार ९२ संख्या पर हुआ है, दूसरी बार इनका उल्लेख ११० संख्या पर 'पुनः सुखदेव' नाम से हुआ है।

सरोज के यह दत्त कानपुर वाले देवदत्त हैं, जिनका उल्लेख इस ग्रन्थ में ३४२ संख्या पर हुआ है। इनको भी सरोज में १८३६ में उ० कहा गया है। इन देवदत्त के ७ छंद सरोज में उद्धृत हैं। दो और ५ में दत्तकवि, १, ४, ६ में दत्त और छंद संख्या ३ में कविदत्त छाप है। अब इस आधार पर इस एक दत्त के कोई तीन दत्त करले तो क्या इलाज? ग्रियर्सन में भी कबिदत्त (४७५) और देव दत्त (५०८) की अभिन्नता की सम्भावना की गई है। इस कवि का विशेष विवरण संख्या ३४२ पर देखिये।

९५।७४

(३३) काशीनाथ कवि, सम्बत् १७५२ में उ०। इन्होंने महाललित काव्य किया है।

सर्वेक्षण

ग्रियर्सन में (१३९) काशीनाथ को सन् १६०० ई० में उपस्थित कहा गया है। इन्हें बलभद्र का पुत्र, केशवदास का भतीजा और बालकृष्ण त्रिपाठी का भाई कहा गया है। ग्रियर्सन के इस कथन का आधार सरोज में वर्णित बालकृष्ण कवि का यह विवरण है :—

"५९, बालकृष्ण त्रिपाठी (१) बलभद्र जी के पुत्र और काशीनाथ कवि के भाई सम्बत् १७८८ में में उ०। इन्होंने रस चंद्रिका नाम पिंगल बहुत सुन्दर बनाया है।"

ग्रियर्सन ने त्रिपाठी पर ध्यान नहीं दिया बलभद्र पर ध्यान दिया और इन्हें प्रसिद्ध नखशिख प्रणेता बलभद्र मिश्र का पुत्र मान लिया। ऐसा होने पर यह स्वयमेव प्रसिद्ध कवि केशव दास के भतीजे हो गये। फलतः इनका रचनाकाल भी सम्बत् १७५२ से खिसकाकर सन् १६०० ई० ले जाना पड़ा। सरोज में कहीं नहीं लिखा है कि बालकृष्ण त्रिपाठी महाकवि केशवदास के भतीजे थे। यहाँ एक ऊट-पटाँग बात ग्रियर्सन की समझ में नहीं आई। उन्होंने मान लिया कि बलभद्र के दो पुत्र थे बालकृष्ण और काशीनाथ। काशीनाथ तो बलभद्र मिश्र के पिता का भी नाम था, फिर यही नाम उनके पुत्र का भी कैसे हो सकता है? अंगरेजी में यह प्रणाली भले ही हो, हिन्दुओं में तो है नहीं। इस सम्बन्ध में विनोद में (२०५) काशीनाथ के प्रसंग में मिश्रबन्धुओं ने लिखा है :—

"खोज में लिखा है कि ये महाशय बलभद्र के पुत्र और केशवदास के भतीजे थे। पर केशवदास के पिता का नाम भी कशीनाथ था, इससे हमें यह सम्बन्ध अशुद्ध जँचता है।"

खोज में यह विवरण ग्रियर्सन के अंधानुसरण के कारण दिया गया है।

बुन्देल वैभव में सबको बुन्देलखंडी बनाने की प्रवृत्ति है। अतः बालकृष्ण (मिश्र) के सम्बंध में कल्पना की गई है कि "सरोज में भूल से मिश्र के स्थान पर त्रिपाठी छप गया होगा या लिख

गया होगा।" सरोजकार पर एक और भी अचिन्त्य भूल का आरोप किया गया है जिसका सम्बंध प्रसंग प्राप्त काशीनाथ से है।

"सरोजकारों (?) ने आपके भाई को भी कवि होना लिखा है, किन्तु नाम लिखने में यहाँ फिर भूल कर दी गई है। आपके भाई का नाम काशीनाथ लिखा है जो ठीक नहीं जान पड़ता, क्योंकि महाकवि बलभद्र जी मिश्र के पिता का नाम स्वयं काशीनाथ मिश्र था। प्रतीत होता है काशीराम या और कुछ नाम के स्थान में काशीनाथ भूल से लिख दिया गया है।"—बुन्देल वैभव भाग १, पृष्ठ २०७।०८

यहाँ मुझे यह निवेदन करना है कि यदि बाबा का नाम काशीनाथ है तो पोते का नाम काशी शब्द से नहीं प्रारम्भ हो सकता क्योंकि चाहे वह काशीराम, काशी प्रसाद, काशीगति, काशीलाल या और भी कोई कल्पित अकल्पित नाम हो, पुकारते समय उसे केवल काशी कहा जायगा और रेरी मारकर उसे कशिया कहा जायगा, कोई भी बाप अपने बेटे का ऐसा नाम नहीं रखेगा, जिसमें स्वयं उसके बाप को रेरी पड़े।

विनोद में (२०५) काशीनाथ को बलभद्र का पुत्र, केशवदास का भतीजा कहा गया है और रचनाकाल भी सम्बत् १६५७ दिया गया है। यह सब ग्रियर्सन की आँखों देखने का फल है।

काशीनाथ त्रिपाठी, कवि बालकृष्ण त्रिपाठी के भाई थे। यह बलभद्र त्रिपाठी के पुत्र थे, नखशिख-प्रणेता प्रसिद्ध बलभद्र मिश्र के नहीं। अतः इनका सम्बंध महाकवि केशव से नहीं होता। काशीनाथ मिश्र बलभद्र मिश्र के बाप का नाम था, कोई बलभद्र त्रिपाठी के बाप का नहीं। अतः यह बाधा भी स्वतः दूर हो जाती है और असमंजस प्रकट करने के लिये कोई स्थान नहीं रह जाता। सरोजकार ने बालकृष्ण त्रिपाठी की रसचंद्रिका रचना से दो छप्पय उद्धृत भी किये हैं। अतः स्पष्ट है कि यह ग्रन्थ उसके पुस्तकालय में था। रसचंद्रिका खोज में मिल चुकी है।[१] पर इस ग्रन्थ से कवि के सम्बन्ध में और कोई जानकारी नहीं होती। ऐसा प्रतीत होता है कि काशीनाथ बालकृष्ण के अग्रज हैं। अतः इनका सम्बत् १७९२ दिया गया है और अनुज का समय १७८८। खोज में इस काशीनाथ के अतिरिक्त ४ और काशीनाथ मिले हैं।

(१) काशीनाथ मिश्र—सुप्रसिद्ध केशवदास एवं बलभद्र मिश्र के पिता, सम्बत् १६००के आसपास उपस्थित।

(२) काशीनाथ भट्टाचार्य—इन्होंने शीघ्रबोध नामक ज्योतिष ग्रन्थ का भाषानुवाद किया। (१९२६।२२८)।

(३) काशीनाथ वैद्य—अमृतमंजरी नामक वैद्यक ग्रन्थ के रचयिता (१९२०।७८)

(४) काशीनाथ—लोकभाषा भरथरी चरित्र की रचना करने वाले (१९२६।२२९ ए, बी, सी, १९२९।१८६, १९३२।१०९)।

९६।१०१

(३४) काशीराम कवि, सम्बत् १७१५ में उ०। यह कवि निजामत खाँ सूबेदार आलमगीर के साथ थे। इनकी कविता ललित है।

---

(१) खोज रि० १९४१।१५७

सर्वेक्षण

सरोज में एक कवित्त ऐसा है जिससे सिद्ध होता है कि काशीराम का सम्बन्ध निजामत खाँ से था :—

"करा चोली कसि झुकि निकस निजामत खाँ
आवत रकाब जब बर जोरी पाइ के"

सरोज के अनुसार यह निजामत खां आलमगीर औरंगजेब का सूबेदार था। औरंगजेब का शासनकाल सम्बत् १७१५ से लेकर सम्बत् १७६४ वि० तक है। काशीराम का समय सम्बत् १७१५ दिया गया है जो औरंगजेब के सिंहासनासीन होने के सम्बत् से मेल खाता है। अतः सरोज में दिया हुआ सम्बत् कवि का उपस्थिति काल है, न कि उत्पत्ति काल।

खोज विवरण के अनुसार काशीराम सक्सेना कायस्थ थे, कमल नयन के पिता थे और औरंगजेब के सूबेदार निजामत खां के आश्रित थे। इनके निम्नांकित ३ ग्रन्थ माने गये हैं :—

(१) कनक मंजरी—१९०३।७। यह पद्मावत प्रणाली पर लिखित एक प्रेमाख्यान-काव्य है। काशीराम ने इसकी रचना राजकुमार लक्ष्मीचन्द के लिये की थी और पुरस्कृत हुये थे। इस ग्रन्थ में प्रतिलिपि-काल सम्बत् १८३४ दिया गया है, रचनाकाल नहीं, परन्तु एक दोहे में तुलसी का नाम आया है, अतः कवि सम्बत् १६६० के बाद कभी हुआ :—

पीपा गये न द्वारिका, बदरी गये न कबीर
भजन भावना से मिले, तुलसी से रघुबीर

(२) परशुराम सम्बाद—१९२३।२०६। कवित्तों में लिखित यह ग्रन्थ रचनाकाल और प्रतिलिपिकाल से रहित है। कवित्तों में काशीराम नाम है, परन्तु बिना किसी अन्य आधार के यह रचना इन्हीं काशीराम की स्वीकृत की गई है।

(३) कवित्त काशीराम—१९४१।२५। इस ग्रन्थ के भी इन्हीं काशीराम के होने की सम्भावना व्यक्त की गई है। इसका लिपिकाल सम्बत् १७८७ है। 'कवि जय कृष्ण के कवित्त[१]' नामक संग्रह में एक काशीराम के कुछ छंद हैं। वे भी इन्हीं काशीराम के प्रतीत होते हैं।

इन कशीनाथ से भिन्न एक काशीराम पाठक बनारसी हैं, जो मंगलसेन पाठक के पुत्र है और जिन्होंने ज्योतिष सम्बन्धी दो ग्रन्थ 'लगन सुन्दरी[२]' और 'जैमिनीय सूत्र भाषा टीका[३]' लिखे हैं। दूसरा ग्रन्थ गद्य में है, पहले की रचना सम्बत् १६७० में हुई थी।

९७।१०२

(३५) कामताप्रसाद, सम्बत् १९११ में उ०। इनके कवित्त ठाकुर प्रसाद त्रिपाठी ने अपने संग्रह में लिखे हैं। किन्तु मुझे भ्रम है, शायद यह बाबू कामता प्रसाद असोथर वाले न हों, जो खींची भगवंत राय जू के वंशमुख विद्या में निपुण हैं। इनका नखशिख बहुत अच्छा है।

---

(१) खोज रि० १९०४।६८ (२) खोज रि० १९३२।११० ए (३) खोज रि० १९३२।११० बी

सर्वेक्षण

विनोद में इस समय के दो कामताप्रसाद हैं :—

(१) कामताप्रसाद (२२३७), यह सम्बत् १९३० में उपस्थित थे। जाति के सेवक कायस्थ थे। तारापुर जिले फतेहपुर के रहने वाले थे। इन्होंने 'राघों बत्तीसी' तथा 'हरिनाम पच्चीसो' नामक ग्रन्थ लिखे। इनका जन्मकाल सम्वत् १९०४ दिया गया है।

(२) कामता प्रसाद असोथर वाले (१३५९) नखशिख के रचयिता। इन्हें अज्ञात कालिक प्रकरण में स्थान दिया गया है।

ग्रियर्सन (६४४) में असोथर वाले कामताप्रसाद खींची का लखपुरा वाले कान्यकुब्ज ब्राह्मण कामता से अभेद स्थापित किया गया है, जो जाति भेद के कारण ठीक नहीं।

सरोज के यह कामताप्रसाद यदि कामताप्रसाद खींची से भिन्न हैं, तो इन्हें ऊपर वर्णित कायस्थ कामता प्रसाद होना चाहिये।

९८।१०४

(३६) कबीर कवि, कबीरदास जोलाहा काशीवासी, सम्बत् १६१० में उ०। इनके दो ग्रन्थ अर्थात् बीजक और रमैनी मेरे पास हैं। इनके चरित्र तो सब मनुष्यों को विदित हैं। कालिदास जू ने हजारे में इनका भी नाम लिखा है, इसलिये मैंने भी लिख दिया।

सर्वेक्षण

कबीर काशी निवासी जोलाहे थे। यह निर्गुण ज्ञानाश्रयी शाखा के श्रेष्ठतम कवि और कबीरपंथ के प्रवर्त्तक महात्मा थे। यह रामानंद के शिष्य एवं धर्मदास तथा भग्गोदास के गुरु थे। इनके पिता का नाम नीरू और माता का नाम नीमा था, पत्नी का नाम लोई और पुत्र का कमाल था। शुक्ल जी के अनुसार इनका जन्म काशी में जेठ सुदी पूर्णिमा,सोमवार, सम्बत् १४५६ वि० को और मृत्यु सं० १५७५ वि० में १२० वर्ष की वय में हुई।[१] रूपकला जी ने भक्तमाल की टीका (छप्पय १५२) में कबीर का जन्म सम्बत् १४५१, मगहर गमन सम्बत् १५४९ एवं मृत्यु सम्बत् १५५२ माना है। जो हो, सरोज में दिया हुआ सम्बत् १६१० अशुद्ध है। इस सम्बत् के बहुत पहले कबीर की मृत्यु हो चुकी थी।

कबीर की रचना बीजक के नाम से प्रसिद्ध है—बीजक, साखी, सबदी और रमैनी इन तीन भागों में विभक्त है। यों कबीर के नाम पर बहुत साहित्य मिलता है, जिसमें से अधिकांश औरों की रचना है।

९९।१०५

(३७) किंकर गोविन्द बुन्देलखंडी, सम्बत् १८१० में उ०। शान्तरस की इनकी कविता विचित्र है।

सर्वेक्षण

किंकर गोविंद का 'रामचरण चिह्न प्रकाश' नामक ग्रन्थ खोज में मिला है।[२] इसमें रामसीता के चरण चिह्नों का वर्णन है। ग्रन्थारंभ में गणेश, भारती और गुरु की बंदना है। भारती की बंदना में कवि ने अपना नाम भी दे दिया है।

---

(१) हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ ७१।७६ (२) विहार रि०, भाग २, संख्या १५

पुनि भारती पदारविन्द ए कामधेनुवर
वन्दित ई किंकर गोविन्द की बुद्धि विमल पर

पुष्पिका में भी ग्रन्थ-कर्त्ता का नाम आया है :—

"·····इति श्री किंकर गोविंद विरचिते श्री रामचरण चिन्ह सम्पूर्णम् । श्री सम्बत् १८६७ जेठ सुदी ।"

इतने पर भी उक्त विवरण के सम्पादक को न जाने कहां से प्रतीत हुआ कि यह ग्रन्थ रामचरण या रामचरण दास का है। पुष्पिका में जो सम्बत् १८६७ दिया गया है, उसे सम्पादक ने रचनाकाल माना है। इसके प्रतिलिपिकाल होने की अधिक संभावना है। इस ग्रन्थ में केवल चरण चिह्नों क वर्णन है पर सम्पादक को भ्रम है कि "इस रचना में रस और अलंकार सम्बंधी पद्य भी हैं।" यहा ठीक नहीं। उक्त हस्तलेख में वस्तुतः किसी दूसरे बड़े रस ग्रन्थ का एक पन्ना जुड़ गया है। यह तथ्य विवरण के पृष्ठ १२८ पर स्वीकार भी किया गया है, फिर भी न जाने यह प्रमाद क्यों ? यह रस-ग्रन्थ किंकर गोविंद का नहीं है, किसी महा कविराय का है :—

देवि पूजि सरस्वती पूजे हरि के पाय
नमस्कार करि जोरि के कहै महाकविराय

इस रस-ग्रंथ में कुल ७०६ छंद हैं।

सभा की खोज-रिपोर्ट में किसी किंकर प्रभु की 'गोपी बलदाऊ की बारामासी'[1] का उल्लेख है। इसका प्रतिलिपि-काल सम्बत् १६१४ है। पुष्पिका में कवि का नाम है और बारामासी के अंतिम चरण में भी।

"बारबार मनहर्ष भयो अति किंकर प्रभु गुण करत बड़ाई"

सभा की खोज-रिपोर्ट में एक किंकर कवि की 'महेश्वर महिमा[2]' का विवरण है। इसमें न तो प्रतिलिपि-काल है और न पुष्पिका ही। ग्रन्थ के अंतिम छंदों में कवि का नाम अवश्य आया है :—

"सब अपराध छिमा कर शङ्कर किंकर की बिनती सुनयो"

सरोजकार के अनुसार किंकर गोबिंद ने शान्त रस की रचनायें की हैं। ऊपर उल्लिखित तीनों ग्रन्थ भक्ति सम्बंधी हैं। सरोजकार की बात का ध्यान रखते हुये ये, सभी किंकर गोविन्द की ही रचनायें हैं। किंकर गोविंद के काल और स्थान-निर्णय का कोई दूसरा सूत्र सुलभ नहीं है।

१००।१०६

(३८) कालीराम कवि बुन्देलखंडी, सम्बत् १८२६ में उ०। सुन्दर कविता की है।

सर्वेक्षण

परिचय देते समय कवि का नाम कालीराम दिया गया है पर उदाहरण देते समय कलीराम लिखा गया है। यह विभेद तृतीय संस्करण में भी ऐसा ही है। सरोज में इनके दो कवित्त उद्धृत हैं। दोनों में छाप कलीराम ही है। खोज से भी इनका नाम कलीराम ही सिद्ध होता है। प्रथम संस्करण में भी कवि नाम 'कलीराम' ही है।

(१) खोज रि० १६२६।२४१ (२) खोज रि०१६३८।८२

कलीराम जी का एक ग्रन्थ 'सुदामा चरित्र' खोज में मिला है।[1] रचना, काव्य की दृष्टि से उत्तम है। सरोज में उद्धृत दो छंदों में से एक सुदामा चरित्र सम्बंधी है। वह सम्भवतः इसी ग्रन्थ का एक अंश है। ग्रन्थ का अंतिम अंश इस प्रकार है :—

"इति श्री सूदामा चरित लिख्यो छै मिति मगसिर सुदि १३ सम्बत् १७३१ वि०।"

दोहा

चतुर्वेद माथुर विदित मधुर मधुपुरी धाम
सुकविन को सेवक सदा कलीराम कविनाम
चरित सुदामा को रच्यो हौं निज मति अनुसार
भूल चूक होवे कछू लीज्यो सुकवि सुधार

इस दोहे के अनुसार कलीराम जी मथुरानिवासी माथुर चतुर्वेदी थे, बुन्देलखंडी नहीं। समय देने के पश्चात् कवि ने परिचय दिया है। इससे सूचित होता है कि सम्बत् १७३१ प्रतिलिपिकाल न होकर रचनाकाल है। रिपोर्ट के अनुसार यह सम्भवतः कवि द्वारा प्रस्तुत मूल प्रति है। इस दृष्टि से प्राप्त प्रति का महत्व है। सरोज में दिया हुआ सम्बत् १८२६ भी अशुद्ध सिद्ध होता है। सरोज में उदाहृत दूसरे-दूसरे छंद से सिद्ध होता है कि कलीराम जी का सम्बंध किसी अवधूत सिंह से था। सम्भवतः यह रींवा नरेश अवधूत सिंह है, जिनकी प्रशस्ति भूषण ने भी की है।

१०१।८१

(३६) कल्याण कवि सम्बत् १७२६ में उ०। इनकी कविता कालिदास ने हजारे में लिखी है।

सर्वेक्षण

महाकवि केशव दास तीन भाई थे, बड़े बलभद्र मिश्र, मझले स्वयं केशव और छोटे कल्याण। कवि प्रिया के प्रथम प्रकाश में केशव दास लिखते हैं :—

जिनको मधुकर शाह नृप बहुत कियो सनमान
तिनके सुत बलभद्र बुध प्रकटे बुद्धि निधान
बालहिं ते मधुशाह नृप तिनसो सुन्यो पुरान
तिनके सोदर द्वै भये केशवदास, कल्यान

सरोज में कल्याण के नाम पर जो कविता उदाहृत है, बुन्देल वैभव में वह केशवदास के अनुज इन्हीं कल्याण मिश्र की मानी गई है।[2] कल्याण मिश्र के प्रपौत्र हरिसेवक मिश्र ने भी अपने कामरूप कथा महाकाव्य में अपनी वंशावली देते हुये केशव और कल्याण को भाई कहा है।[3]

कृष्णदत्त सुत गुन जलधि काशिनाथ परमान
तिनके सुत जू प्रसिद्ध हैं केशवदास कल्यान
कवि कल्यान के तनय हुव परमेश्वर इहि नाम
तिनके पुत्र प्रसिद्ध हुव प्राणदास अभिराम
तिन सुत हरि सेवक कियो यह प्रबन्ध सुखदाय
कबि जन भूल सुधारबी अपनी चातुरताय

---

(१) खोज रि० १६३८।७८ (२) बुंदेल वैभव २०४-०६ (३) वही

बुन्देल वैभव के अनुसार कल्याण मिश्र का जन्म सम्बत् १६३५ के लगभग उरछे में हुआ था।[1] इनका कविता काल सम्बत् १६६० के आसपास माना जा सकता है। सरोज में दिया हुआ सम्बत् ठीक नहीं है।

१०२।८२

(४०) कमाल कवि, कबीर जू के पुत्र काशीस्थ, सम्बत् १६३२ में उ०। ऐजन। (इनकी कविता कालिदास ने हजारे में लिखी है।)

सर्वेक्षण

कमाल कबीर के पुत्र थे, काशी निवासी थे। इनकी माता का नाम लोई था। काशी में हरिश्चन्द्र घाट के पास कमाल की इमली अब भी प्रसिद्ध है। यहाँ ये उपदेश दिया करते थे। इनका कबीर से मतभेद था। इसी से कहा गया है :—

"बूड़ा वंश कबीर का उपजे पूत कमाल"

कमाल की वाणी खोज में मिल चुकी है।[2]

कबीर का जीवन काल सम्बत् १४५६ से लेकर १५७५ तक माना जाता है। कमाल की भी उत्पत्ति सम्बत् १४८० के आसपास हुई रही होगी। सरोज में दिये हुये कबीर एवं कमाल दोनों के सम्बत् अशुद्ध हैं।

१०३।८३

(४१) कलानिधि कवि (१) प्राचीन, सम्बत् १६७२ में उ०। ऐजन। (इनकी कविता कालिदास ने हजारे में लिखी है)।

सर्वेक्षण

हजारे में कलानिधि की कविता है। अतः सम्बत् १७५० के पूर्व इनकी उपस्थिति निर्विवाद है। परन्तु इनकी कोई रचना अभी तक खोज में नहीं मिली है, जिससे इनके सम्बन्ध में कुछ और जानकारी हो सके।

१०४।६५

(४२) कलानिधि कवि (२) सम्बत् १८०७ में उ०। इनका नखसिख बहुत सुन्दर है।

सर्वेक्षण

'कवि कलानिधि' उपाधि है, जिसे सरोजकार ने कलानिधि नाम कवि समझ लिया है। कवि का मूल नाम है श्रीकृष्ण भट्ट, उपनाम है 'लाल'। यह लाल कलानिधि भी कहे गये हैं। श्रीकृष्ण भट्ट का जन्म सम्बत् १७२९ वि० में भट्ट तैलंग ब्राह्मण लक्ष्मण भट्ट के यहां मद्रास के निकट हुआ। वहां से किसी कारण छोड़कर यह इलाहाबाद जिले के देवरिष्या नामक गाँव में आकर बसे। तभी से इनके वंशज देवर्षि कहलाये। देवरिष्या से श्रीकृष्ण भट्ट बूँदी गये, जहाँ रावराजा बुद्धसिंह (शासनकाल संबत् १७६७-९७ वि०) के राजकवि हुये। वहां इनको कवि कलानिधि की उपाधि एवं जागीर मिली जिसका उपभोग चार पीढ़ी तक इनके वंशज करते रहे। इनकी काव्यगुणगरिमा पर मोहित होकर सवाई जयसिंह (शासनकाल १७५६-१८०० वि०) इन्हें अपने बहनोई रावराजा बुद्धसिंह से माँगकर

---

(१) वही (२) खोज रि० १९३२।१०५

जयपुर ले गये। इस प्रसंग का उल्लेख कलानिधि के प्रपौत्र देवर्षि बासुदेव भट्ट ने अपने 'श्रीराधा-रूपचरित्र चंद्रिका' नामक ग्रन्थ के आदि में यों किया है :—

छप्पय

दच्छिन दिसि तैलंग देस इक राजत नीकौ
तहँ के परम कुलीन बिप्र कविराज सही कौ
कृष्णभट्ट इमि नाम वेद सास्त्रन में पारग
लौकिक वैदिक रीति कृष्ण को जान्यो मारग
जिन कियउ ग्रन्थ सब सास्त्र के रामायन तप तेह भौ
तिनसो जयशाह नरीन्द्र कै गुन गरिमा भल नेह भौ

दोहा

बूँदीपति बुधसिंह सौं लाए मुख सौं जाँचि
रहे आइ आमेर में प्रीति रीति बहु बाँचि

संबत् १७७४ में जयसिंह ने श्रीकृष्ण भट्ट को एक ग्राम जागीर में दिया और राजकवि बनाया। जागीर का उपभोग अभी तक इनके वंशज करते आ रहे हैं। ये सभी कवि भी होते आए हैं।

श्रीकृष्ण भट्ट का देहावसान अस्सी वर्ष की पूर्ण वय में संबत् १८०९ में हुआ। सरोज में दिया हुआ सम्बत् १८०७ इनका उपस्थिति काल है और ठीक है।

श्रीकृष्ण भट्ट लाल कलानिधि के बनाये हुये निम्नांकित ग्रंथ हैं :—

(१) रामरासा (रामायण) —जयपुर नरेश के आश्रय में दो महीने में यह ग्रन्थ बना। इस ग्रन्थ की समाप्ति पर इन्हें रामरासाचार्य की उपाधि दी गई थी। इस ग्रन्थ का बहुत थोड़ा अंश उपलब्ध है। घर में आग लग जाने से यह जल गया।

(२) अलंकार कलानिधि—१९१२।१७९ ए। यह इनका सबसे बड़ा ग्रन्थ है। इसमें १६ कलायें हैं और प्रत्येक कला में प्रायः २०० छंद हैं। ध्वनि, काव्य निरूपण, भाव, रस, व्यंग, षट्ऋतु-वर्णन, अलंकार, नायक-नयिकाभेद आदि सभी साहित्यांगों का इसमें समावेश है। कविता सरस शृंगार ही की अधिक है, जो सानुप्रास एवं यमक युक्त है। यह ग्रन्थ भोगीलाल जी के लिये लिखा गया था, जैसा कि खोज में प्राप्त प्रति की पुष्पिका से प्रकट है :—

"इति श्रीमन्महाराज श्री भोगीलालभूपालवचनाज्ञाप्त कविकोविद चूड़ामनि श्रीकृष्ण भट्ट कवि लाल कलानिधि विरचिते अलंकार कलानिधौ नायिकानायकहावभाव निरूपनम् षोडशमो कला ग्रन्थ समाप्तम्।"

यह भोगीलाल वही प्रतीत होते हैं, जिनके लिये देव ने लिखा है :—

"लाखन खरचि जिन आखर खरीदे हैं"

(३) शृंगार रस माधुरी—१९१२। १७९ सी, १९१७।९३ ए। बूंदी नरेश रावराजा बुद्धसिंह के लिये सम्बत् १७६९ में यह ग्रन्थ रचा गया :—

बलाबन्ध पति शाह को हुकुम पाइ बहु भाइ
करौं ग्रंथ रस माधुरी कवी कलानिधि राइ १५
सम्बत् सत्रह सै बरष उनहत्तर के साल
सावन सुदि पून्यो सुदिन रच्यो ग्रंथ कवि लाल १६

छत्र महल बूँदी तखत कौटि सूर ससि नूर
बुद्ध बलापति साह के कीनौ ग्रंथ हजूर १७

(४) साँभर युद्ध—१६०६।३०१। इस ग्रन्थ में जयपुर नरेश सवाई जयसिंह तथा सैयद हुसेन-अली तथा सैयद अबदुल्ला (दिल्ली बादशाहत के सेनापति) के साँभर में हुये युद्ध का वर्णन है।

(५) जयसिंह गुण सरिता।

(६) श्रीमद्भागवत की अनन्यानन्दिनी नाम टीका। यह टीका अपूर्ण है।

(७) विहारी सतसई की विश्वप्रकाश नामक टीका। यह टीका भी अपूर्ण है।

(८) नखशिख—१६००।११२, १६०५।५, १६१२।१७६ बी, १६२३।१६६। इस ग्रन्थ में कुल ६३ छँद है। इसके अधिकांश छँद नवीन कवि के सुधासर में लाल कवि के नाम से संकलित हैं।

(९) वृत्त चंद्रिका—१६००।८३, १६१७।६३ जी। यह ग्रन्थ अनिरुद्ध सिंह के पुत्र बूँदी नरेश राय बुद्धसिंह के लिये लिखा गया था।

"युद्ध को त्रिशुद्ध मन उद्दत प्रवुद्ध अनिरुद्ध सुत बुद्ध राव राजा गुन गानियै"

(१०) राधागोविन्द संगीत सार—१६१२।१११। गानविद्या, बाजों और स्वरों का गद्य-पद्यमय वर्णन। यह ग्रन्थ भरतपुर नरेश बदनसिंह के कनिष्ठ पुत्र प्रताप सिंह की आज्ञा से मथुरा, श्रीकृष्ण भट्ट, चुन्नीलाल और रामराय इन चार विद्वानों के सम्मिलित प्रयास से रचा गया :—

मथुरा सहित तैलंग भट सिरी किसन सुखदाय
लियो भट चुन्नीलाल है कवि कुल सम्परदाय १०७
गौड़ मिश्र इन्दिरमा राम राय कवि जान
इन जुत कीजै ग्रंथ कौ बृज भाषा परवान १०८

(११) रामायण सूचनिका—१६१७।६३ इ। यह रामायण की प्रसिद्ध-प्रसिद्ध घटनाओं की चार पन्नों में पद्यात्मक सूची है।

(१२) राम चंद्रोदय—यह बाल्मीकि रामायण का अनुवाद है। कवि ने केवल निम्नांकित तोन काण्डों का अनुवाद किया था :—

(क) बालकाण्ड १६१७।६३ बी
(ख) युद्ध काण्ड १६१७।६३ सी, १६३८।१४६
(ग) उत्तर काण्ड १६१७।६३ डी

यह अनुवाद भरतपुर नरेश बदनसिंह के कनिष्ठ पुत्र राजकुमार प्रतापसिंह के लिये किया गया था :—

(क) जब श्री कुँवर प्रताप ने करी ग्रंथ की आन
रामायण भाषा कियो सुकबि कलानिधि जान १०
(ख) बालकांड अरु युद्ध अरु उत्तरकांड उदार
रच्यो भट्ट श्रीकृष्ण ने संजुत प्रेम अपार ११
(ग) ब्रज चक्रवर्ति कुमार गुन गन गहिर सागर गाजही
श्री रामचरन सरोज कलि परताप सिंह विराजही
तिहि हेत रामायन मनोहर कबि कलानिधि ने रच्यो

पुष्पिका में स्पष्ट ही इन्हें भरतपुर नरेश बदनसिंह का पुत्र कहा गया है।

"इति श्री ब्रजमंडलमंगलीक महाराज श्री बदनसिंघ जी सुत श्री परतापसिंघ प्रेम समुद्भव श्रीरामायणे उत्तरकांडे भाषायां कविकलानिधि कृतायां विंशत्यधिक शततमः सर्गः"

बदनसिंह का राज्यकाल सम्बत् १७७९ से १८१२ वि० तक है। मयाशंकर जी याज्ञिक के अनुसार कलानिधि बदनसिंह के समय में भरतपुर आये।[1]

(१३) दुर्गाभक्ति तरंगिणी—इस ग्रन्थ का उल्लेख विनोद में हुआ है। मयाशंकर जी के अनुसार श्रीकृष्णभट्ट ने इनकी रचना प्रसिद्ध कवि सोमनाथ चतुर्वेदी के आग्रह से भरतपुर में की।[2]

(१४) नवसई—१९१७।९३ एच। यह दोहों का संग्रह है। प्राप्त प्रति में, खंडित होने के कारण, केवल ४८० दोहे हैं।

(१५) फुटकर कवित्त।

(१६) समस्या पूर्ति—१९१७।९३ एफ।

प्राप्त ग्रन्थों के आधार पर यह स्पष्ट है कि कलानिधि का सम्बन्ध बूँदी नरेश बुद्धसिंह, जयपुर नरेश सवाई जयसिंह, भरतपुर नरेश बदनसिंह के कनिष्ट पुत्र राजकुमार प्रतापसिंह एवं महाराज भोगीलाल के दरबार से था।

विनोद में इस एक कवि का विवरण ५ कवियों के रूप में दिया गया है—देखिये, विनोद कवि संख्या ७४६, ८२०, ९१२, ९६६, और १०१७।

इस कवि के सम्बंध में जो विस्तृत विवेचन किया गया, है वह इन्हीं के वंशज देवर्षि भट्ट मनमोहन शर्मा लिखित 'कवि कलानिधि श्रीकृष्णभट्ट (लाल)' शीर्षक निबंध के आधार पर है।[3]

१०५।८४

(४३) कुलपति मिश्र, सम्बत् १७१४ में उ०। इनकी कविता हजारे में है।

सर्वेक्षण

कुलपति मिश्र आगरे के रहने वाले चतुर्वेदी ब्राह्मण थे। इनके पिता का नाम परशुराम मिश्र था। यह प्रसिद्ध कवि विहारी के भानजे थे और उनके आश्रयदाता जयपुर नरेश जयसिंह के सुपुत्र रामसिंह के दरबारी कवि थे। इन्हीं के आश्रय में रहकर इन्होंने अपना सर्वश्रेष्ठ ग्रन्थ 'रस रहस्य'[4] सम्बत् १७२७, कार्तिक कृष्ण ११ को पूर्ण किया :—

सम्बत् सत्रह सै बरस बीते सत्ताईस
कातिक बदी एकादसी बार बरनि बानीस २३२

इस ग्रन्थ में कवि ने अपने वंश का परिचय दिया है :—

बसत आगरे नगर में गुन तप सील बिलास
विप्र मथुरिया मिश्र है हरि चरनन को दास २६

---

(१) माधुरी, फरवरी १९२७, पृष्ठ ७९ (२) माधुरी फरवरी, १९२७, पृष्ठ ८१ (३) माधुरी, अक्टूबर १९२५, 'कवि चर्चा' शीर्षक स्थायी स्तम्भ के अंतर्गत। (४) खोज रिपोर्ट १९०३।५१, १९२०।९९ ए, बी, १९२३।२२८ ए, बी, सी, १९२६।२५० ए, बी, सी, पं० १९२२।५७

अभू मिश्र तिन वंश में परसराम जिमि राम
तिनके सुत कुलपति कियो रस रहस्य सुख धाम ३०

यह ग्रन्थ मम्मट के अनुसार हैं :—

जिते साज हैं कवित के मम्मट कहे बखानि
ते सब भाषा में कहे रस रहस्य में आनि ३१

इस रीति ग्रन्थ में पद्य के साथ-साथ यत्र-तत्र ब्रजभाषा गद्य का भी प्रयोग हुआ है, फिर भी अस्पष्टता बनी है। इस ग्रन्थ में रामसिंह की प्रशस्ति के छंद अधिक हैं। यह ग्रन्थ पहले इंडियन प्रेस, प्रयाग से प्रकाशित हो चुका है। रस रहस्य के अतिरिक्त इनके निम्नांकित ग्रन्थ और भी मिले हैं :—

(१) दुर्गाभक्ति चंद्रिका—१९१२।१००, १९४१।४८० । निम्नांकित छंद में कवि ने ग्रन्थ और ग्रन्थकर्त्ता का नाम दिया है :—

दुर्गा भक्ति चन्द्रिका नाम। पोथी अष्ट सिद्ध को धाम
माथुर कुलपति मिश्र बनाई। दुर्गा भक्तन को सुखदाई ७४

इस ग्रन्थ की रचना सम्बत् १७४९ में हुई : —

नन्द[९] वेद[४] रिषि[७] चंद[१] है संबत अगहन मास
सुकुल पच्छ की पंचमी कियो ग्रंथ परकास ७५

यह ग्रन्थ विष्णुसिंह की आज्ञा से रचा गया था। आश्रयदाता का नाम पुष्पिका से ज्ञात होता है :—

"इति श्री विष्णुसिंघ देवाज्ञायां मिश्रकुलपति विरचितायां दुर्गाभक्तिचंद्रिका सम्पूर्ण समाप्त"

(२) (अ) द्रोण पर्व १९००।७२, १९३२।१२७ बी

(ब) संग्राम सार १९०९।१६०; १९३२।१३७ ए

इस ग्रन्थ की रचना सम्बत् १७३३ में जयपुर नरेश रामसिंह की आज्ञा से हुई :—

"इति श्रीमन् महाराजाधिराज श्री रामसिंह देव आज्ञा कुलपति मिश्रेण विरचिते द्रोणपर्व भाषा संग्रामसार नाम षोड़सो परिच्छेदः"

रचनाकाल सूचक छंद किसी भी रिपोर्ट में नहीं उद्धृत है। इस ग्रन्थ से कवि का वंश-परिचय और भी विस्तार से ज्ञात होता है। माथुर वंश में प्रसिद्ध अभयराज मिश्र हुये। उनके पुत्र तारा पति थे, तारा पति के पुत्र मयलाल, मयलाल के पुत्र हरिकृष्ण, हरिकृष्ण के पुत्र परशुराम और परशुराम के पुत्र कुलपति हुये :—

माथुर वंश प्रवीन मिश्र कुल अभयराज भय
सब विद्या परबीन वेद अध्ययन तपोमय
तारा पति जिहि पुत्र विप्र कुल जिमि तारापति
तासु तनय मयलाल, ब्रह्म विद्या बिचित्र गति
हरिकृष्ण कृष्ण भजि कृष्ण मय तासु तनय भगबत मगा
भय परसुराम जाको तनय गुरु सम भजि राम पगा

(३) नखशिख-१९०६।१८५ बी।

(४) युक्ति तरंगिणी—१६०६।१८५ ए, १६४१।२६ । यह नवरस सम्बन्धी ग्रन्थ है । इसकी रचना सम्बत् १७४३ वि० में हुई थी :—

गुण[३] रु वेद[४] रिषि[७] ससि[१] बरस सावन सुदि की तीज
कीनो जुगति तरंगिनो तन मन हरि रस भीज

शुक्ल जी ने अपने इतिहास में कुलपति मिश्र के एक अन्य ग्रन्थ 'रस रहस्य' का उल्लेख किया है और इसका रचना काल सम्बत् १७२४ दिया है[१] । यह उल्लेख संभवतः प्रमाद से हो गया है।

सरोज में दिया हुआ सम्बत् १७१४ कवि का उपस्थिति काल है, जन्म काल नहीं, क्योंकि इसके तेरह बरस बाद ही कवि ने अपना सर्वश्रेष्ठ ग्रन्थ 'रस रहस्य' सम्बत् १७२७ में बनाया ।

१०६।८५

(४४) कारबेग फकीर, सम्बत् १७५६ में उ० । ऐजन (इनकी कविता हजारे में है ।) ।

सर्वेक्षण

कारबेग मुसलमान थे, कारे नाम से कविता करते थे । ये जमुना के किनारे स्थित परासौली गांव के निवासी थे । यह वही परासौली है, जहां सूरदास ने सदा के लिये आँखें बन्द कीं । कारे जाति के रँगरेज थे । इनकी पत्नी का नाम भूरो था । यह बुन्देलखंड में अधिक रहे थे, इसीलिये लोगों ने इन्हें बुन्देलखंडी कह दिया है । इनका रचना काल सम्बत् १७१७ है । इनके गुरु कोई रामदेव थे, जो बुन्देलखंडी प्रतीत होते हैं :—

जमुना के तीर परसौली कौ बसइया हौं
भारत के सखा प्रीति रीति कछु जानी नहीं
संतन को संगो, हरि गीत कौ गवइया हौं
चूक रँगरेज की सौं अरज कहू मानी नहीं
सतरह सौ सतरह कवि कारे कवित्त कीन्हें
नैनन ते नेकहु हरि दरसन ठानी नहीं
येहो बुन्देलखंड बार बार झाड़ डारो
हरी पीर रामदेव ऐसो गुरु ज्ञानी नहीं[२] ।

'हिन्दी के मुसलमान कवि' में कारे को सागर जिले के रतली नामक कस्बे का निवासी कहा गया है । वस्तुतः उक्त कस्बे में कवि रहता था । यह उसका जन्म-स्थान नहीं है । उक्त ग्रन्थ के अनुसार, यहां इनकी एक ब्राह्मण से मित्रता हो गई । एक बार यह कहीं बाहर गये थे, इसी बीच वह मर गया । जब उसका शव चिता पर रख दिया गया, तब यह वहां पहुँचे । इन्होंने लोगों को आग लगाने से रोका और कहा कि उक्त व्यक्ति अभी जीवित है । इसके अनन्तर इन्होंने कृष्ण-स्तवन के १०८ कवित्त कहे, जिनमें से प्रत्येक के अन्त में था :—

"क्यों हमारो बार बार की"

कहते हैं, ब्राह्मण जी गया । इन्हीं १०८ कवित्तों में से एक सरोज में एवं दो हिन्दी के मुसलमान कवि में उद्धृत हैं ।[३]

---

(१) हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ २४८ (२) ब्रज भारती, वर्ष १३ अंक १, जेठ २०१२, ब्रजभाषा का उपेक्षित कवि कारबेग (३) हिन्दी के मुसलमान कवि, पृष्ठ २१८-२०

सरोज में दिया हुआ सम्बत् अधिक से अधिक कवि का अन्तिम जीवन काल हो सकता है, यह उसका जन्म-काल कदापि नहीं है।

१०७।८६

(४५) केहरी कवि, सम्बत् १६१० में उ०। महाराजा रतन सिंह के यहाँ थे। कविता में महा चतुर थे।

सर्वेक्षण

सरोज में केहरी कवि का एक कवित्त उद्धृत है, जो दिग्विजय-भूषण से लिया गया है। इस कवित्त के चतुर्थ चरण में रतन नाम आया है :—

रतन संहारे भट भेदै रवि मंडल कौं,
मंडल घरीक नट कुन्डल सो ह्वै रह्यो

सरोजकार ने अपने उद्धरण में न जाने क्यों 'रतन' के स्थान पर 'समर' पाठ कर दिया है। सरोज का यह उल्लेख उक्त छंद में आये रतन के आधार पर ही है, इसमें संदेह नहीं। बुन्देल-वैभव में केहरी कवि को ओरछा निवासी कहा गया है, इन्हें तत्कालीन ओरछा नरेश रामशाह का आश्रित एवं दरबारी कवि कहा गया है। इनका जन्मकाल सम्बत् १६२० एवं कविता काल सम्बत् १६६० वि० दिया गया है।[१] इनकी कविता के उदाहरण में सरोज में उदाहृत कवित्त ही उद्धृत किया गया है। संभवतः इस कवित्त में राम शाह के भाई उन रतन सिंह की प्रशंसा है, जिनका गुणगान महाकवि केशव ने रतनबावनी में किया है। ग्रियर्सन (७०) और विनोद (१६१) के अनुसार उक्त कवित्त में प्रशंसित रतन सिंह सम्भवतः बुरहानपुर जिला नीमार के राव रतन हैं जो १५७९ ई० में हुये।

केहरी नामक एक कवि ने पटियाला नरेश पृथ्वीपाल सिंह के आश्रय में सम्बत् १८९० वि० में भूप-भूषण नामक ग्रन्थ की रचना की।[२]

१०८।८७

(४६) कृष्ण सिंह बिसेन राजा-भिनगा जिले बहिरायच, सं० १९०९ में उ०। यह राजा, काव्य में बहुत निपुण थे और इस रियासत में सदैव कवि-कोविद लोगों का मान होता था। भैया जगत सिंह इसी वंश में बड़े नामी कवि हो गये हैं और शिव कवि इत्यादि इन्हीं के यहां रहे। अब भी भैया लोग खुद कवि हैं और काव्य की चर्चा बहुत है, जैसा बुन्देलखंड और बघेल खंड के रईस अपना काल काव्यविनोद में व्यतीत करते हैं, वैसे ही इस रियासत के भाई बन्धु हैं।

सर्वेक्षण

संबत् १९०९ कवि का उपस्थिति काल ही है, जन्म काल नहीं। विनोद में (२३१७) इनके एक ग्रन्थ गंगाष्टक का उल्लेख है। इनका पूरा नाम कृष्णदत्त सिंह था। इनके पितामह का नाम शिवसिह (रचनाकाल सं० १८५०-७५) और पिता का नाम सर्वजीत सिंह था।[३] शिवदीन कवि विलग्रामी ने इनके नाम पर कृष्णदत्त रासा नामक ग्रंथ रचा था। इसमें इनके और अवध के नवाब के नाजिम महमूद अली खाँ के बीच सं० १९०१ में हुए युद्ध का वर्णन है।[४]

---

(१) बुन्देल वैभव भाग २, पृष्ठ २८३ (२) खोज रिपोर्ट १९०३।११७ (३) यही ग्रंथ, कवि संख्या ८४३; खोज रि० १९२३।३९० (४) यही ग्रंथ, कवि संख्या ८४७

१०६।८६

(४७) कालिका कवि बन्दीजन, कासी वासी, वि० । सुन्दरी तिलक और ठाकुरप्रसाद के संग्रह में इनके कवित्त हैं ।

सर्वेक्षण

सुन्दरी तिलक में कालिका के दो सवैये हैं । छंद संख्या २८१,३११ । इनमें से दूसरा सवैया सरोज में उद्धृत है । खोज में किसी कालिका प्रसाद का नखशिख नामक ग्रन्थ मिला है[1] । इसमें राम का नखशिख है । हो सकता है यह काशिकेय कालिका की ही रचना हो ।

११०।६२

(४८) काशीराज कवि, श्रीमान् कुमार बलवान सिंह जू, काशी नरेश चेत सिंह महाराज के पुत्र, सम्बत् १८८६ में उ० । इन्होंने चित्र चन्द्रिका नामक भाषा साहित्य का अद्भुत ग्रन्थ रचा है, जो देखने योग्य है ।

सर्वेक्षण

काशिराज के निम्नांकित दो ग्रन्थ खोज में मिले हैं :—

(१) चित्र चन्द्रिका—१६०६।१४५, १६२३।२०५,१६२६।१८६ ए ।

(२) मुष्टिका प्रश्न—१६२६।१८६ बी ।

चित्र चन्द्रिका में कवि ने अपना परिचय दिया है । गौतमवंशीय भूमिहार-ब्राह्मण वरिबंड सिंह (बलवन्त सिंह) ने वर्तमान काशी राज्य की स्थापना की । बरिबंड सिंह के पुत्र प्रसिद्ध चेतसिंह हुए, जिनके नाम पर काशी का मुहल्ला चेतगंज बसा हुआ है और जिन्होंने वारेनहेस्टिंग्स से संघर्ष किया था । इन्हीं चेतसिंह के पुत्र बलवान सिंह हुये, जो काशिराज नाम से कविता करते थे :—

गौतम ऋषि के वंश में भये नृपति बरिबंड
काशी में शिव कृपा ते कीनो राज अखंड
तासु तनै जग विदित हैं चेत सिंह महराज
आगम निगम प्रवीन अति दानिन में सिरताज
हौं सुत तिनके जानिये विदित नाम बलवान
काशी राज सु ग्रंथ में कियो नाम परधान

ग्रंथ की रचना सम्बत १८८६ में प्रारंभ हुई—

देव गुरुवार सोहै लसैप्रिय धृति योग
श्रवण सुखद गुण आगम बखानिये
आशा तिथि पूरी जहाँ इषु शुक्ल पच्छ युत
हरन विघन खल जग में प्रमानिये
निधि सिधि[८] नाग[८] चन्द्र[१] विक्रम सु अंक अलि
राशि है ललित तहां राजै पहिचानिये
कवि काशीराज मन आनँद करन हार
ग्रंथ को जनम दिन किधौं शिव जानिये

यह संबत् १६३१ में पूर्ण हुआ—

---

(१) खोज रिपोर्ट १६२३।२०१

इंदु[१] राम[३] ग्रह[९] ससि[१] बरस मार्ग शुक्ल रविवार
चित्र चंद्रिका पूर्ण भो पंचमि तिथि सविचार

—हिन्दी साहित्य का बृहत इतिहास, भाग ६, पृष्ठ ४७६

इस प्रकार स्पष्ट है कि सरोज में कवि के सम्बंध में जो भी तथ्य और तिथि दी गई है, वह अक्षर-प्रति-अक्षर ठीक है। सरोज में दिया हुआ सम्बत् १८८९ चित्रचंद्रिका का रचना काल है, कवि का जन्मकाल नहीं।

अप्रकाशित संक्षिप्त खोज विवरण में इन्हें किसी लक्ष्मीनारायण का पुत्र कहा गया है, जो अशुद्ध है, और १९०९ में प्राप्त प्रति की अशुद्ध पुष्पिका के कारण है।

"इति श्रीमत् श्रीलक्ष्मीनारायणचरणकमलप्रसादात्मज श्री कवि काशीराज विरचित चित्रचन्द्रिका ग्रन्थ सम्पूर्ण।"

अन्य प्रतियों में प्रसादात्मज के स्थान पर प्रसादात् पाठ है। इस प्रसादात्मज ने ही यह भ्रान्ति उत्पन्न की है। लक्ष्मीनारायण महाराज काशिराज चेतसिंह के इष्ट देव थे। उन्होंने सम्बत् १८४० में लक्ष्मीनारायण विनोद[१] नामक ग्रन्थ लिखा था :—

गगन[०] वेद[४] वसु[८] चन्द्रमा[१] माघ पुण्यमय मास
कृष्ण पक्ष तिथि अष्टमी गुरु वासर सुख रास २८

ग्रन्थ के आरम्भ में चेतसिंह ने स्पष्ट लिखा है :—

श्री लक्ष्मीनारायण श्रीपति परम पुरुष अभिराम
आनँद करत गुरु इष्ट सम सुमिरैं अष्टौ जाम १
नमस्कार तुमकौं करौं जग व्यापक जगदीश
परब्रह्म लक्ष्मीनारायण इष्ट हमारे ईस २
परमात्मा लक्ष्मीनारायण सुगुन तिहारौ लेखि
पावत है आनन्द चित चरन चारु तव देखि ३
चरण सरण है रावरी मोको अति सुखदानि
परब्रह्म लक्ष्मीनारायण प्रतिपालक तव बानि ४

यही लक्ष्मीनारायण चेतसिंह के पुत्र बलवान सिंह के भी इष्ट देव हैं। इन्हीं के चरण कमल के प्रसाद से कवि ने ग्रन्थ की समाप्ति की।

चित्रचन्द्रिका[१] में चित्र काव्य वर्णित हैं। मुष्टिक-प्रश्न ज्योतिष सम्बन्धी ग्रन्थ है। इसमें मुष्टिक प्रश्न द्वारा शुभाशुभ वर्णन है। इसकी पुष्पिका में ग्रन्थकर्त्ता का नाम काशिराज दिया गया है।

१११।९४

(४९) कोविद कवि, श्री पंडित उमापति त्रिपाठी, अयोध्या निवासी, सम्बत् १९३० में उ०। यह महाराज षट्शास्त्र के वक्ता थे। प्रथम काशी में पढ़कर बहुत दिनों तक दिग्विजय करते रहे, अन्त में श्री अवधपुरी में आये। क्षेत्र सन्यास लेकर विद्यार्थी लोगों के पढ़ाने, उपदेश देने और काव्य करने में काल व्यतीत करते-करते सम्बत् १९३१ में कैलाश को पधारे। इनके ग्रन्थ संस्कृत में

(१) खोज रिपोर्ट १९०९।४७

बहुत है। भाषा में हमने केवल दोहावली, रत्नावली इत्यादि दो-चार ग्रन्थ छोटे-छोटे देखे हैं। इस महाराज का बनाया हुआ एक श्लोक हम लिखते हैं, जिससे इनकी विद्वता का हाल मालूम होगा—

भिल्लीपल्ली वश पादद्रुरगृहिपुरी चंचरीकस्य चंपावल्ली-
वाभाति कम्पाकलित दलवती फुल्ल मल्लीमतल्ली।
झिल्लीगीष्केवयेषां सुरवरवनिता तल्लजस्फीतगीति
विन्मल्लावल्लभाश्शं विदधतु शिशवो भारतीभल्लकस्ते॥

सर्वेक्षण

त्रिपाठी जी का एक हिन्दी गद्यग्रन्थ 'अयोध्या माहात्म्य' खोज में मिला है।[1] इसकी रचना संवत् १९२४ में भाद्रकृष्ण ११, रविवार को रघुवरपुरी अयोध्या में हुई। इनके सम्बन्ध में दिया हुआ संवत् इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि सरोजकार ने कवियों का उपस्थितिकाल दिया है, न कि उत्पत्तिकाल।

———

११२।९७

(५०) कृपाराम कवि, जयपुर निवासी, संवत् १७७२ में उ०। यह महाराज जयसिंह सवाई के यहाँ ज्योतिषियों में थे और इन्होंने भाषा में 'समयबोध' नामक एक ग्रन्थ ज्योतिष का बनाया है।

सर्वेक्षण

कृपाराम कवि नागर ब्राह्मण थे। यह जयपुर नरेश सवाई जयसिंह (शासनकाल संवत् १७५६-१८०० वि०) के आश्रय में थे। इनके ज्योतिष ग्रन्थ समयबोध की प्रतियाँ खोज में मिल चुकी हैं।[2] सरोज में दिया हुआ संवत् १७७२ इसी ग्रन्थ का रचनाकाल है।

संवत दस अरु सात सै बरस बहत्तर लेखि
मालव देश उजैनमधि उपजो ग्रन्थ विशेष ६

इस ग्रन्थ में कवि की छाप कृपाराम, किरपाल और कृपाल मिलती है—

(१) सिधि बुधि रिधि को देत हैं एक दंत विधुभाल
प्रथम गनाधिप को सुकवि करि बन्दन किरपाल

(२) तिन कृपाल ते हेत करि, राख्यौ ढिग दै मान
राम कृपा कवि नाम है, नागर विप्र निदान

पुष्पिका में कवि का नाम कृपाराम दिया हुआ है। ऊपर के उद्धृत दोहे से स्पष्ट है कि कविनागर विप्र था। यह ग्रन्थ सवाई जयसिंह के लिए लिखा गया था।

श्री सवाई जयसिंह नांव जौ हितपुरकिन्नो
दान कृपान विधान साधि सबविधि जस लिन्नो

---

(१) खोज रिपोर्ट १९०१।३१ (२) खोज रिपोर्ट १९०६।१५६, १९२६।

इस ग्रन्थ में नायिका के मुख से नायक के प्रति बादल और वायु तथा बिजली की चमक आदि में बारहों महीने, पक्ष और तिथि तथा समय को लेकर वर्षा और उससे होने वाले समय का भला बुरा परिणाम आदि वर्णित है ।

मेरा अनुमान है कि हिततरङ्गिणी इन्हीं कृपाराम की रचना है, जो संवत् १७९८ में रची गई है ।[1] कृपाराम के नाम से शिखनख नामक तीस कवित्तों का पर्याप्त सुन्दर ग्रन्थ मिला है । इसका प्रतिलिपिकाल संवत् १८५७ है ।[2] मेरा अनुमान है कि यह शिखनख भी इन्हीं कृपाराम की रचना है । खोज में एक कृपाराम और मिले हैं जो वैद्य थे, जिनके ग्रन्थ का नाम नयनदीप है ।[3] इन्होंने यह ग्रन्थ उदयपुर नरेश महाराणा संग्राम सिंह द्वितीय (शासनकाल संवत् १७६७-९० वि०) के आदेश से संवत् १७८५ में रचा । इनके पूर्वज ऋषीकेश प्रसिद्ध पृथ्वीराज चौहान के पुरोहित थे, जिन्हें रावल समर सिंह अपने यहाँ लाये थे । यह सारी सूचानएँ इस ग्रन्थ से मिलती हैं । कवि की छाप कृपाल और कृपाराम दोनों है ।

(१) **सुमति सदन गज बदन को करि कृपाल परनाम**
विघन हरन बुधि करन कवि एक रदन निधि धाम १

(२) **विनती करी कृपाल तब जब प्रभु आज्ञा कीन**

(३) **सो कृपाराम द्विज नाम है जामे केऊ गुन बसै**
संग्राम सिंघ महराज ढिग नगर उदैपुर में बसै

यह कृपाराम कई गुणों से युक्त थे । यह ज्योतिषी थे, कवि थे, वैद्य भी थे । हो सकता है, समयबोध, हित-तरङ्गिणी एवं शिखनख के रचयिता कृपाराम ही नयन दीप के भी रचयिता हों । समयबोध जयपुर नरेश के लिए रचा गया, पर रचा गया उज्जैन में । कवि ने सवाई जय सिंह के अनुरोध से कुछ काल तक जयपुर में भी निवास किया था । इसी प्रकार वह कुछ दिनों तक उदयपुर में भी रहा होगा । कवि लोग प्रायः एक दरबार से दूसरे दरबार में आया-जाया करते ही थे ।

११३।९६

(५१) कृपाराम, ब्राह्मण, नरैनापुर, जिले गोंडा । इन्होंने श्रीमद्भागवत के द्वादस स्कन्ध का उल्था भाषा में किया है, दोहा-चौपाई सीधी बोली में । महेशदत्त ने इनका नाम काव्य-संग्रह में लिखा हे । हमको अधिक मालूम नहीं ।

सर्वेक्षण

महेशदत्त ने कृपाराम को सरवरिया ब्राह्मण · नरैनापुर जिला गोंडा का रहने वाला और

---

(१) देखिये, इसी ग्रन्थ में कवि संख्या १२७ (२) राजस्थान रिपोर्ट, भाग १, संख्या १४९ (३) वही भाग ३, पृष्ठ १७४, संख्या २७

भागवत एकादश स्कन्ध का रचयिता कहा है।[१] यह रामानुज सम्प्रदाय के साधु थे। खोज के अनुसार नरैनापुर का अन्य नाम नारायनपुर और नरयनिया भी हैं। अन्त में यह चित्रकूट में रहने लगे थे। इनके निम्नाङ्कित ग्रन्थ खोज में मिले है :—

(१) अ—भागवत दशमस्कन्ध भाषा—(१९०९।१५५) इसका प्रतिलिपिकाल संवत् १८१६ है। इस ग्रन्थ के प्रथम छन्द से हमें इनका रामानुजाचार्य का अनुयायी होना सूचित होता है :—

बंदौं प्रभु पद कंज, श्री रामानुज ज्ञान निधि
त्रिविध ताप अघपुञ्ज, जासु नाम सुनि नसत सब

(ब) भागवत एकादश स्कन्ध भाषा—(१९२६।२४५ ए)। इस ग्रन्थ से इनके गुरु का नाम बालकृष्ण ज्ञात होता है।

ऐसे कृष्ण कृपालु प्रभु सब घट पूरण काम
सोइ मम श्री गुरु भे प्रगट बालकृष्ण अस नाम

(स) श्रीमद्भागवत भाषा—(१९०५।६, १९४४।४६) इस ग्रन्थ का रचनाकाल श्रावण सुदी १२, संवत् १८१५ है—

५ १ ८ १
बान निसाकर बहुरि बसु धरै फेरि ससि अंक
तेहि संवत यह प्रगट किय भाषा मनुह मयंक
सुभग मास नभ पक्ष सित तिथि अति परम पवित्र
विष्णु महाव्रत द्वादसी अघहर सुखद विचित्र

(२) अष्टादश रहस्य—(१९२३।२२६)। इस ग्रन्थ की रचना संवत् १९०६ में हुई। इसमें १८ प्रकार के साधुओं का वर्णन है।

सहस एक सत आठ, बरस अधिकषट जानि
यह कीन्हेउ भाषा पाठ, माधव शुक्ला पंचमी

(३) चित्रकूट माहात्म्य—१९०६।१८३

(४) चित्रकूट विलास—१९४७।४०

(५) भाष्य प्रकाश—(१९०४।४६)। श्रीमद्रामानुजाचार्यकृत श्रीमद्भगवदगीता के भाष्य का अनुवाद। रचनाकाल चैत शुक्ल ७, संवत् १८०८।

---

(१) भाषाकाव्य संग्रह, पृष्ठ १३०

सत अष्ट दस आठ पुनिसंवत बरससुभमास

माधव शुक्ला सप्तमी प्रगट्यो भाष्य प्रकाश

१९२६ वाली खोज रिपोर्ट में भागवत एकादशस्कन्ध भाषा को जयपुर वाले कृपाराम की रचना कहा गया है, जो ठीक नहीं ।

बुन्देल वैभव में एक कृपाराम गूदड़ का उल्लेख है, इनका जन्मस्थान चित्रकूट, जन्म-संवत् १७८० वि०, कविताकाल संवत् १८०५ वि० और ग्रन्थ का नाम भागवत दशमस्कन्ध कहा गया है एवं विवरण में इन्हें चित्रकूट का महन्त बताया गया है ।[1]

सम्भवतः यह कृपा राम गूदड़ ऊपरवाले कृपाराम ही हैं । ऐसी स्थिति में इनका चित्रकूट में जन्म लेना असङ्गत है ।

११४।९८

(५२) कमञ्च कवि, राजपूतानेवाले, संवत् १७१० में उ० । इनकी कविता हमको एक संग्रहपुस्तक में मिली है जो संवत् १७१० की लिखी हुई माड़वार देश की है ।

सर्वेक्षण

सरोज में इनका एक छन्द उद्धृत है जिसकी भाषा सधुक्कड़ी है । इसमें कवि की छाप कमच है,कमञ्च नहीं । छन्द की दृष्टि से भी कमच ही उपयुक्त है—"**महि मंडल मंडली कमच कहि जिहि नवखंड विस्वधर बण्टी ।**"

जिस संग्रह में कमच की कविता सरोजकार को मिली, वह संवत् १७१० का है । अतः १७१० कमच का जन्म-संवत् नहीं हो सकता । कमच अधिक से अधिक १७१० में जीवित रह सकते हैं । उस समय उनकी अवस्था ५० वर्ष से कम क्या रही होगी । यह १७१० के पूर्ववर्ती कवि भी हो सकते हैं । सरोजकार ने कमच द्वारा सङ्कलित एक अन्य काव्य-संग्रह का भी उपयोग सरोज के प्रणयन में किया था, उसने ऐसा उल्लेख भूमिका में किया है ।

११५।९९

(५३) किशोर सूर कवि, संवत् १७६१ में उ० । इनके बहुत से कवित्व और छप्पय हैं ।

सर्वेक्षण

सरोज में इनका एक कवित्त और एक सवैया उद्धृत है । दोनों राम कथा सम्बन्धी हैं ।

---

(१) बुन्देल वैभव, भाग २, पृष्ठ ५०४

लगता है, इन्होंने रामकथा सम्बन्धी कोई ग्रन्थ लिखा था । खोज में एक ग्रन्थ अङ्गद-रावण संवाद मिला है ।[1] इसे किसी परधान की रचना माना गया है, क्योंकि निम्माङ्कित चरण में परधान शब्द आया है—

"कहत परधान महाराज रावण बली आभ सौं नाथ मारे"—६

यहाँ परधान सम्भवतः मन्त्री के लिए प्रयुक्त हुआ है, यह कवि का नाम नहीं है । इस ग्रन्थ के रचयिता वस्तुतः किशोर सूर हैं । एक चरण में इनका नाम आया भी है ।

"सूर किशोर जब बालि नन्दन कह्यो कौन अब सीस तोसो पचावै ।"

सूर किशोर रामोपासक भक्त थे । इनकी उपासना वात्सल्यभाव की थी । यह सीता जी को अपनी बेटी मानते थे । विदेहराज की ही भाँति इन्होंने भी सीताराम का विवाह किया था । यह जबलपुर में बहुत दिनों तक रहे । यह कामदगिरि (चित्रकूट) और अवध में भी रहे, पर अवध में उसे अपनी बेटी की ससुराल समझ बहुत कम दिन रहे । सूर किशोर ने अनेक सुन्दर पदों की रचना की है जो 'मिथिला-विलास' तथा 'सूर किशोर जी के ग्रन्थ' नामक ग्रन्थों में संगृहीत है ।

सूर किशोर रामानन्द सम्प्रदाय के प्रसिद्ध भक्त कील्हदास के पौत्रशिष्य थे ।[2] कील्हदास और अग्रदास गुरुभाई एवं कृष्णदास पय-अहारी के शिष्य थे । अग्रदास का समय सं० १६३२ माना जाता है, [3] अतः कील्हदास का भी यही समय हुआ । अग्रदास के शिष्य नाभादास सं० १७१६ तक जीवित रहे । यही समय कील्हदास के भी किसी पुत्र-शिष्य का हो सकता है । अतः सरोज में दिया हुआ सूर किशोर का संवत् १७६१, कील्हदास के पौत्र-शिष्य का अन्तिम जीवनकाल होना असम्भव नहीं और शुद्ध है ।

११६।६४

(५४) कुम्भनदास ब्रजवासी, बल्लभाचार्य के शिष्य, संवत् १६०१ में उ० । इनके पद कृष्णानन्द व्यास देव जी ने अपने संगृहीत ग्रन्थ रागसागरोद्भव रागकल्पद्रुम में लिखे हैं । इनकी गिनती अष्टछाप में हैं ।

सर्वेक्षण

कुम्भनदास का जन्म कार्तिक वदी ११, संवत् १५२५ वि० को गोवर्धन के निकट जमुनावती नामक गाँव में हुआ था । परासौली गाँव के पास अपनी थोड़ी सी पैतृक-भूमि में खेती कर यह अपने कुटुम्ब का पालन करते थे । यह गौरवा क्षत्रिय थे । इनकी प्रारम्भ से ही काव्यरचना और सङ्गीत की ओर अभिरुचि थी । संवत् १५५६ के लगभग यह महाप्रभु बल्लभाचार्य के शिष्य हुए । यह इनके प्रारम्भिक शिष्यों में थे । संवत् १५३५ में गोवर्धन में श्रीनाथ जी के रूप का प्राकट्य हुआ था जिसमें बल्लभाचार्य जी ने एक लघु मन्दिर बनवाकर मूर्ति प्रतिष्ठित कर दी थी । कुम्भनदास इस मन्दिर में सेवा का कार्य करते थे । सूरदास के आगमन के पूर्व यहीं कीर्तन सेवा-करते थे ।

---

(१) खोज रिपोर्ट १६४४।२१३ (२) हिन्दी अनुशीलन, सन १६५६ का संयुक्तांक, रामानन्द सम्प्रदाय के हिन्दी कवि,लेखक डॉ० बदरी, (३) हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ १४६

यह सन्तोषी और निर्लोभ प्रकृति के पुरुष थे। संवत् १६३८ के लगभग फतेहपुर सीकरी में इन्होंने अन्य मनस्क भाव से अकबर से भेंट की थी और गाया था—**भक्तन कौं कहाँ सीकरी काम।**

इनके सात पुत्र थे जिनमें सबसे छोटे चतुर्भुजदास थे। यह भी सुकवि थे और कुम्भनदास के समान इनकी भी गणना अष्टछाप में है। कुम्भनदास ने ११५ वर्ष की वय में संवत् १६४० के लगभग शरीर-त्याग किया।[1]

कुम्भनदास ने फुटकर पद रचना की है। इनकी पदावली अभी हाल ही में विद्याविभाग, काँकरोली, द्वारा प्रकाशित हुई है। इसमें कुल ४०१ पद हैं। इन्होंने युगल लीला के पदों का गायन किया है। भक्तमाल में ९८ संख्यक छप्पय में उल्लिखित १८ भक्तों में एक यह भी हैं। इनका अलग छप्पय में वर्णन नहीं हुआ है।

११७।

(५५) कृष्णानन्द व्यास देव ब्रजवासी, संवत् १८०६ में उ०। यह महात्मा महाकवीश्वर थे। इन्होंने सूरसागर तथा बड़े-बड़े महात्मा कवीश्वर कृष्ण भक्तों के काव्य इकट्ठे कर एक ग्रन्थ संगृहीत 'रागसागरोद्‌भव राग कल्पद्रुम के नाम से बनाया है। इसमें सूर तुलसीदास, कृष्णदास, हरीदास, अग्रदास, तानसेन, मीराबाई, हित हरवंश, विठ्ठल स्वामी इत्यादि महात्माओं के सैकड़ों पद लिखे हैं। यह ग्रन्थ किसी समय कलकत्ते में छापा गया था और १००) को मोल आता था पर, अब नहीं मिलता।

सर्वेक्षण

कृष्णानन्द व्यास देव जी की कविता का उदारहण पृष्ठ ४९ पर निर्दिष्ट किया गया है, पर उक्त पृष्ठ पर कृष्णदास अष्टछापी की कविता है, कृष्णानन्द व्यास देव की नहीं। यह अपनी कविता में कृष्णानन्द या ब्रज के गोस्वामियों से मिली उपाधि रागसागर की छाप रखते थे, कृष्णदास की नहीं।

रागसागर उपाधि है, कृष्णनन्द व्यास देव नाम है। रागकल्पद्रुम ग्रन्थ का नाम है। अनेक स्थलों पर प्रमाद से शिवसिंह ने इस ग्रन्थ का नाम रागसागरोद्‌भव भी लिखा है, यह तो ऐसा ही है जैसे कोई रामचरितमानस न कहकर केवल तुलसीकृत कहे। इस ग्रन्थ का विस्तृत परिचय भूमिका में दिया जा चुका है।

रागसागर जी उदय राज्यान्तर्गत जोहैनी नामक स्थान के रहने वाले गौड़ ब्राह्मण थे। इनके पिता का नाम हीरानन्द व्यास देव और पितामह का प्रमदानन्द व्यास देव था। इनका जन्म-संवत् १८५१ वि० के आस-पास हुआ था, क्योंकि श्री नगेन्द्रनाथ वसु ने इन्हें जब संवत् १९४१ वि० में राजा राधाकान्त देव बहादुर के यहाँ कलकत्ता में देखा था, उस समय इनकी वय ९० वर्ष की थी। प्रायः १५ वर्ष की ही वय में इन्हें रागसागर की उपाधि मिल चुकी थी। इसके ही बाद यह ३२ वर्ष तक भारत भ्रमण कर गीत सङ्कलन करते रहे और १८९९ में उसका प्रकाशन प्रारम्भ किया जो संवत् १९०६ वि० में जाकर समाप्त हुआ, यद्यपि ग्रन्थ रागसागर की इच्छा के अनुकूल

---

(१) **अष्टछाप परिचय, पृष्ठ ९९-१०४**

७ भागों में न पूर्ण हो सका इसके केवल ४ भाग निकले। इनका देहावसान संवत् १९४५ के लगभग ९४-९५ वर्ष की वय में हुआ।[1]

सरोज में रागकल्पद्रुम का प्रकाशनकाल संवत् १८०० और कृष्णानन्द जी का उपस्थिति-काल संवत् १८०६ दिया गया है। सरोजकार ने पूरे १०० वर्ष की भूल प्रमाद से कर दी है।

११८।७८

(५६) कल्याणदास, कृष्णदास पय अहारी के शिष्य, संवत् १६०७ में उ०। इनके पद रागसागरोद्भव में हैं।

सर्वेक्षण

सरोज में इनका निम्नाङ्कित पद दिया गया है :—

सुमिरौं श्री बिठलेस कुमार
अति अगाध अपार भवनिधि भयो चाहो पार
गोकुलेस हृदै बसौ मम भाल भाल निहाल
नव किसोर कल्याण के प्रभु गाऊँ बारम्बार

उदाहरण से स्पष्ट है कि सरोज के अभीष्ट कल्याणदास कृष्णदास पय-अहारी के शिष्य कल्याणदास से भिन्न हैं। कृष्णदास पय-अहारी के २४ शिष्यों का नामोल्लेख भक्तमाल के ३९ संख्यक छप्पय में हुआ है। इस सूची में कल्याणदास का भी नाम है। कल्याणदास का समय १६०७ ठीक है। सरोजकार ने जीवन परिचय तो पय-अहारी जी के शिष्य का दिया है परन्तु उदाहरण गोस्वामी बिठ्ठलनाथ के पुत्र गोकुलनाथ के शिष्य कल्याणदास का दिया है। बिठ्ठलनाथ जी का देहावसान संवत् १६४२ में हुआ था। इसी के पश्चात् कल्याणदास ने गोकुलनाथ से बल्लभ सम्प्रदाय की दीक्षा ली होगी। अतः इन कल्याणदास का समय संवत् १६५० के आस-पास होना चाहिये।

११९।८०

(५७) कालीदीन कवि। इन्होंने दुर्गा को, भाषा के कवित्तों में महा कविता में उल्था किया है।

सर्वेक्षण

सरोज में दुर्गा सप्तशती के भाषानुवाद से एक ओजपूर्ण कवित्त उद्धृत है। इस कवि के सम्बन्ध में अन्य कोई सूचना सुलभ नहीं।

१२०।

(५८) कालीचरण बाजपेयी, विगहपुर जिले, उन्नाव, वि०। यह कविता में निपुण हैं। हमने इनका कोई ग्रन्थ नहीं देखा।

---

(१) रागकल्पद्रुम, द्वितीय संस्करण में संलग्न सूचनाओं के आधार पर।

सर्वेक्षण

कालीचरण बाजपेयी का 'वृन्दावन प्रकरण' नामक ग्रन्थ खोज में मिला है।[1] इस ग्रन्थ में १९०२ वि० में की हुई भोजपुर के राजकुमार रामेश्वर सिंह की ब्रज यात्रा का वर्णन है।

१२१।१०७

(५९) कृष्णदास गोकुलस्थ, बल्लभाचार्य के शिष्य, संवत् १६०१ में उ०। इनके बहुत से पद रागसागरोद्भव में लिखे हैं और इनकी कविता अत्यन्त ललित और मधुर है। यह कवि सूरदास, परमानन्द और कुम्भनदास ये चारों बल्लभाचार्य के शिष्य थे। कृष्णदास जी की कविता सूरदास की कविता से मिलती थी। एक दिन सूर जी बोले, आप अपना कोई पद सुनाओ जैसा हमारे काव्य में न मिले। कृष्णदास जी ने ४ पद सुनाये। उन सब पदों में सूर जी ने अपने पदों की चोरी साबित की, तब कृष्णदास जी ने कहा, कल हम अनूठे पद सुनावेंगे। ऐसा कह सारी रात इसी सोच में नहीं सोये। प्रातःकाल अपने सिरहाने यह पद लिखा हुआ देख सूर जी के आगे पढ़ा **"आवत बने कान्हगोप बालक सँग छुरित अलकावली"**

सूर जी जान गये कि यह करतूत किसी और ही कौतुकी की है। बोले, अपने बाबा की सहायता की है। इनकी गिनती अष्टछाप में है। अर्थात् ब्रज में ८ बड़े कवि हुए हैं। तुलसी शब्दार्थ प्रकाश ग्रन्थ में गोपाल सिंह ने अष्टछाप का व्योरा इस भाँति लिखा है कि सूरदास, कृष्णदास, परमानन्द, कुम्भनदास ये चारों बल्लभाचार्य के शिष्य और चतुर्भुज, छीत स्वामी, नन्ददास, गोविन्ददास ये चारों विठ्ठलनाथ, वल्लभाचार्य के पुत्र, के शिष्य अष्टछाप के नाम से विख्यात हैं। कृष्णदास का बनाया हुआ 'प्रेम रस रासि' ग्रन्थ बहुत सुन्दर है।

सर्वेक्षण

कृष्णदास का जन्म-संवत् १५५३ में गुजरात के चिलोतरा नामक गाँव में एक धनी कुनबी पटेल के घर में हुआ था। घर से रुष्ट होकर यह ब्रज आये और १३ वर्ष की वय में संवत् १५६७ के लगभग बल्लभाचार्य जो, से इन्होंने गोवर्धन में दीक्षा ली। इन्हें श्रीनाथ जी की भेंट एकत्र करने का कार्य प्रारम्भ में दिया गया था। बाद में यह उक्त मन्दिर के अधिकारी हुए। संवत् १६०० एवं १६०५ के बीच किसी समय इन्होंने मन्दिर के बङ्गाली पुजारियों को बलपूर्वक हटाया और श्रीनाथ जी का राजसी श्रृङ्गार प्रारम्भ हुआ। गृहकलह में इन्होंने पुरुषोत्तम जी का पक्ष लिया था और बिठ्ठलनाथ जी का श्रीनाथ जी के मन्दिर की ड्योढ़ी में प्रवेश तक बन्द कर दिया था। इनका देहावसान संवत् १६३८ से पूर्व सम्भवतः १६३६ वि० में हुआ। इनके सम्पूर्ण पदों का कोई संग्रह अभी तक नहीं निकला है। इनके पद अधिकांश में प्रियाप्रिय के विहार विषयक हैं। खण्डिता के पद भी पर्याप्त हैं। जुगलमान चरित्र, भ्रमर गीत, प्रेम तत्व निरुपण इनके ग्रन्थ है।[१]

सरोज में दिया हुआ संवत् १६०१ उपस्थितिकाल है। भक्तमाल में कृष्णदास अधिकारी का विवरण छप्पय संख्या ८१ में है। सरोज में सूर एवं कृष्णदास जी की जिस प्रतिद्वन्द्विता का

---

(१) खोज रिपोर्ट १९०४।८१

भक्तमाल की प्रिया दास की टीका के आधार पर है। इसी आधार पर इनके एक ग्रन्थ 'प्रेमरस राशि' का भी उल्लेख किया गया है :—

प्रेमरस रास कृष्णदास जू प्रकास कियो
लियो नाथ मान सो प्रमान जग गाइये ३४४

कृष्णदास अधिकारी और कृष्णदास पयहारी को ग्रियर्सन में (३६) एक ही समझ लिया गया है। यह भूल अनेक इतिहासकारों ने की है।

कृष्णदास जी कभी भी गोकुल में नहीं थे। यह गोवर्द्धन के पास ही बिलछू कुंड पर रहा करते थे। सरोजकार ने अष्टछाप से ब्रज के आठ कवि समझा है, यह भी ठीक नहीं। ये बल्लभ संप्रदाय के उस समय तक हुए आठ बड़े कवि हैं।

१२२।१०८

(६०) केशवदास ब्रजवासी, कश्मीर के रहने वाले, सम्बत् १६०८ में उ०। इनके पद रागसागरोद्भव में बहुत हैं। इन्होंने दिग्विजय की और ब्रज में आकर श्रीकृष्ण चैतन्य से शास्त्रार्थ में पराजित हुये।

सर्वेक्षण

चैतन्य का आविर्भाव काल सम्बत् १५४२ और तिरोधान काल सम्बत् १५८४ है।[१] केशव कश्मीरी चैतन्य महाप्रभु से शास्त्रार्थ में पराजित हुये थे। यह घटना १५८४ के पूर्व किसी समय घटी होगी, इस तथ्य को ध्यान में रखते हुये इनका जन्म सम्बत् १५४० के आस पास हुआ, मानना होगा। सम्बत् १६०८ में यह पर्याप्त वृद्ध हो गये होंगे। सरोज में दिया हुआ समय इनका उपस्थिति-काल है।

शिवसिंह ने केशव कश्मीरी का वर्णन भक्तमाल एवं उसकी प्रियादास कृत टीका के आधार पर किया है :—

कस्मीरी की छाप पाप तापनि जग मंडन
दृढ़ हरि भक्ति कुठार आन धर्म विटप विहंडन
मथुरा मध्य मलेच्छ वाद करि बरबट जीते
काजी अजित अनेक देखि परचै भै भीते
बिदित बात संसार सब, संत साखि नाहिन दुरी
केशो भट नर मुकुट मणि, जिनकी प्रभुता बिस्तरी ७५

प्रियादास जी ने चैतन्य महाप्रभु एवं केशव कश्मीरी के शास्त्रार्थ का अत्यन्त सरस वर्णन कवित्त संख्या ३३३-३५ में किया है। प्रियादास जी के अनुसार यह शास्त्रार्थ शान्तिपुर नदिया (नव द्वीप) में गंगा के तीर पर हुआ था, ब्रज-मंडल में नहीं। आप का नाम केशवदास नहीं, केशवभट्ट था। प्रसिद्ध श्री भट्ट आप के शिष्य थे। विनोद के अनुसार (६५) इनका एक ग्रन्थ 'भ्रमर-बत्तीसी' है। सर्वेश्वर में केशव कश्मीरी भट्टाचार्य का विस्तार से विवरण दिया गया है, पर वह अलौकिकता से भरा हुआ है। इससे लाभ की इतनी ही बातें मिलती है :—

---

(१) हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ १८२

(१) इनका जन्म-स्थान तैलंग देशस्थ वैदूर्य पट्टन (मंगी पट्टन या पैठण) है। इनका आविर्भाव श्री निंबार्काचार्य के वंश ही में हुआ था।

(२) इन्होंने श्रीरंग वैंकटाचल, तोताद्रि, कांची, उज्जैन, द्वारिका, काश्मीर, हरिद्वार, काशी, गंगासागर, जगन्नाथपुरी आदि सभी तीर्थों की यात्रा की थी। इनके १४ हजार शिष्य थे। इन्होंने यवनों को परास्त किया था।

(३) आपने वृन्दावन में ही निबार्क संप्रदायाचार्य श्री गंगल भट्ट से दीक्षा ली थी। वृन्दावन ही आपका प्रारम्भिक एवं अंतिम केंद्र था।[१]

चैतन्य से पराजित होने का उल्लेख इसमें नहीं है।

१२३।६१

(६१) केवल राम कवि ब्रजवासी, सम्बत् १७६७ में उ०। ऐजन। (इनके पद रागसागरोद्भव में बहुत हैं।) इनकी कथा भक्तमाल में है।

सर्वेक्षण

भक्तमाल में एक केवल जी कृष्णदास पय अहारी के २४ शिष्यों में परिगणित हैं। (छप्पय ३६)। छप्पय १७३ में एक केवलराम का विवरण है, जिससे कवि के जीवन के सम्बन्ध में कोई जानकारी नहीं उपलब्ध होती। प्रियादास की टीका से भी कोई तत्त्व हाथ नहीं लगता। केवलराम की कथा भक्तमाल में है, अतः सरोज में दिया हुआ सम्बत् १७६७ निश्चित रूप से भ्रान्त है, क्योंकि भक्तमाल की रचना सम्बत् १६४६ वि० में हुई थी। ग्रियर्सन में (४५) इन्हें कृष्णदास पय अहारी का शिष्य कहा गया है और रचनाकाल सम्बत् १६३२ दिया गया है। केवलराम का एक पद सरोज में उद्धृत है, जिससे इनकी छाप "केवल राम बृन्दावन जीवन" ज्ञात होती है :—

केवल राम बृन्दावन जीवन

छकी सब सखी, दगनि सों रूप जोहै

इनके पदों का एक संग्रह 'पदावली'[२] खोज में मिला है। रिपोर्ट में कवि का नाम 'केवलराम-बृन्दावन जीवन' दिया गया है और अनुमान किया गया है कि यह सम्भवतः पंजाब के निवासी थे। सम्भवतः यह अनुमान पदावली की भाषा के सहारे किया गया है। केवलराम के नाम से भी एक ग्रन्थ 'रासमान के पद'[३] खोज में मिला है। ग्रन्थ का वास्तविक नाम 'मान के पद' है। इसमें केवल मान के पद हैं, रास के नहीं, रिपोर्ट में यह सूचना दी गई है। प्रतिलिपि में प्रारम्भिक अंश यह है:—

"अथ श्रीराम मान के पद श्री केवलराम गोसाईं जी कृत लिखते"

विराम लगा देने से इसका रूप यह होगा :—

"अथ श्रीराम ॥ मान के पद ॥ श्री केवलराम गोसाईं जी कृत लिखते ॥"

राम को रास पढ़कर ग्रन्थ का नाम अशुद्ध दे दिया गया है।

सरोज के केवलराम, कृष्णदास पय अहारी के शिष्य कदापि नहीं हैं। यह कृष्णदास हैं। वृन्दावनी है, 'केवल राम वृन्दावन जीवन' इनकी छाप है। इनका समय अनिश्चित है। कृष्णदास

---

(१) सर्वेश्वर, वर्ष ४, अंक १-४, चैत्र २०१३, पृष्ठ २१४-१६ (२) खोज रि० १६४१।३३
(३) खोज रि० १६३२।११४

पय अहारी के शिष्य कवि थे, इसका कोई निश्चित प्रमाण नहीं। वह रामावत संप्रदाय के थे और संभवतः कोई राजस्थानी थे।

१२४।१००

(६२) कान्हरदास कवि ब्रजवासी, विट्ठलदास चौबे मथुरावासी के पुत्र, सम्बत् १६०८ में उ०। ऐजन। (इनके पद रागसागरोद्भव में बहुत हैं। इनकी कथा भक्तमाल में है।) इनके यहां जब सभा हुई थी तब उसी सभा में नाभा जी को गोसाईं की पदवी मिली थी।

सर्वेक्षण

भक्तमाल में ४ कान्हर हैं :—

(१) छप्पय १०० में उल्लिखित भक्तों के प्रतिपालन करने वाले २६ भक्तों में से एक।
(२) छप्पय ११७ में उल्लिखित १२ भक्त राजाओं में से एक।
(३) छप्पय १७१ में वर्णित कान्हर दास।
(४) छप्पय १६१ में वर्णित कन्हर जी।

कृष्णभक्ति को थम्भ ब्रह्म कुल परम उजागर
छमाशील गम्भीर सर्वलच्छन कौ आगर
सर्वसु हरिजन जानि हृदै अनुराग प्रकासै
असन बसन सनमान करत अति उज्ज्वल आसै
सोभीराम प्रसाद तें कृपा दृष्टि सब पर बसी
बूड़ियै विदित कन्हर कृपाल आत्माराम आगम दरसी १६१

इनमें से प्रथम एवं चतुर्थ कान्हर एक ही हैं। यही भक्तों के प्रतिपालक हुये हैं। यह ब्रह्म-कुल के थे। किन्हीं सोभूराम की इन पर कृपा थी। सोभूराम का उल्लेख भक्तमाल, छप्पय १६० में हुआ है। इन्हीं कान्हरदास ने नाभा जी का सम्मान किया था। रूपकला जी के अनुसार सम्बत् १६५२ में कान्हरदास जी के भंडारे में बहुत महानुभाव इकट्ठे थे, वहीं सबों ने मिलकर नाभा जी को गोस्वामी की पदवी दी।[१] ऐसी स्थिति में सरोज में दिया सम्बत् १६०८ कान्हरदास जी का प्रारम्भिक यौवन काल प्रतीत होता है। यह न तो उनका जन्म काल है और न अंतिम जीवन काल।

सरोज के अनुसार कान्हरदास विट्ठलदास चौबे के पुत्र थे। भक्तमाल में विट्ठलदास माथुर का विवरण छप्पय ८४ में है। प्रियादास ने इसकी टीका ७ कवित्तों में की है। प्रियादास के अनुसार विट्ठलदास माथुर के एक पुत्र रंगी राय थे। कान्हरदास का उल्लेख न तो उक्त छप्पय में है, न प्रियादास की टीका में।

सरोज में कान्हरदास जी का एक पद उद्धृत है, जिसके अनुसार यह वल्लभ सम्प्रदाय के वैष्णव थे और इन्होंने महाप्रभु वल्लभाचार्य के पुत्र गोस्वामी विट्ठलनाथ जी की शरण गही थी। विट्ठलनाथ जी का देहावसान सम्बत् १६४२ में हुआ था। कान्हरदास जी ने सम्बत् १६४२ के पूर्व ही कभी वल्लभसम्प्रदाय की दीक्षा ली रही होगी :—

---

(१) भक्तमाल, पृष्ठ ६९३

श्री विट्ठलनाथ जू के चरन सरनं
श्री वल्लभनंदनं कलि कलुस खंडनं परमं पुरुषं त्रयताप हरनं
सकल दुख दारनं भवसिंधु तारनं जनहित लीला देह धरनं
कान्हरदास प्रभु सब सुखसागरं भूतले दृढ़ भक्तिभाव करनं

१२५।

(६३) केदार कवि बन्दीजन, सम्बत् १२८० में उ० । यह महान् कवीश्वर अलाउद्दीन गोरी के यहां थे और यद्यपि इनकी कविता हमारी नजर से नहीं गुजरी, परन्तु हमने किसी तारीख में भी इनका जिक्र पढ़ा है ।

सर्वेक्षण

गंग के विवरण में सरोज में एक कवित्त उद्धृत है, जिसका तृतीय चरण यह है :—

चंद चउहान के केदार गोरी साहि जू के,
गंग अकबर के बखाने गुनगात है।

इसके अनुसार केदार किसी गोरी के यहाँ थे । इस गोरी का नाम अलाउद्दीन नहीं था, शहाबुद्दीन था । शुक्ल जी इसको भट्ट भणन्त मानते हैं । शुक्ल जी के अनुसार भट्ट केदार और भट्ट मधुकर (सम्बत् १२२४-४३) नामक कवि कन्नौज के राजा जयचंद के यहाँ थे । भट्ट केदार ने, जयचंद प्रकाश, नामक महाकाव्य लिखा था, जो आज उपलब्ध नहीं । इसका उल्लेख बीकानेर के राज-पुस्तक भंडार में सुरक्षित सिघायचदयाल दास कृत 'राठौड़ां री ख्यात' में है ।[१]

१२६।

(६४) कृपाराम कवि (३) । माधवसुलोचना चम्पू भाषा में बनाया ।

सर्वेक्षण

माधवसुलोचनाचम्पू की कोई प्रति अभी तक खोज में नहीं मिली है, जिससे इस कवि के सम्बन्ध में कुछ निश्चित रूप से कहा जा सके । ग्रियर्सन (७६७) और विनोद (८१५) में माधव सुलोचना के कर्त्ता कृपाराम को नरैनापुर वाले कृपाराम से अभिन्न माना गया है ।

खोज में सरोज में वर्णित कृपारामों से भिन्न निम्नांकित ४ कृपाराम और मिले हैं । हो सकता है, इन्हीं में से कोई माधवसुलोचनाचम्पू के भी रचयिता हों :—

(१) कृपाराम शाहजहांपुर निवासी कायस्थ, सम्बत् १७९२ के लगभग वर्तमान । ज्योतिषसार भाषा के रचयिता (१९०६।१८८) ।

(२) कृपाराम ब्राह्मण—धीरजराम के पिता, सम्बत् १८१० के पूर्व वर्तमान, १९०९।७२, १९१७।४९, पं० १९२२।२७ ।

(३) कृपाराम—सेवापन्थी भाई अड़न जी के शिष्य । 'कीमियाय सआदत' नामक मुसलमानों के सबसे प्रसिद्ध वेदान्त ग्रन्थ का गद्य में "मुहम्मद गजाली किताब अमर भाषा पारस भाग"

---

(१) शुक्ल जी का इतिहास, पृष्ठ ५०, पाद-टिप्पणी ।

(१९०६।११) नाम से अनुवाद करने वाले। विनोद में(८१५)इस पुस्तक को भी नरैनापुर वाले कृपाराम की रचना कहा गया है, जो ठीक नहीं।

(४) कृपाराम—कंठमाल या विसुनपद के रचयिता १९४१।३८।

१२७।

(६५) कृपाराम कवि (४)। हित तरंगिणी श्रृंगार दोहा छंद में एक ग्रन्थ महाविचित्र काव्य बनाया।

सर्वेक्षण

हित तरंगिणी का एक सु-सम्पादित संस्करण स्वर्गीय रत्नाकर जी ने भारतजीवन प्रेस, काशी से प्रकाशित कराया था। यह नयिका-भेद का ग्रन्थ है। इसमें कुल ३९९ छंद हैं। इनमें से अधिकांश दोहे हैं। दो-चार बरवै,सोरठे और एक-आध अन्य छंद भी हैं। इस ग्रन्थ का रचनाकाल सम्बत् १५९८ माना जाता है, जिसका आधार हित तरंगिणी का अंतिम दोहा है :—

सिधि[८] निधि[९] शिव मुख[५] चंद्र[१] लखि माघ शुद्ध तृतियासु
हित तरंगिनी हौं रची कवि हित परम प्रकासु

हित तरंगिणी का एक दोहा है :—

बरनत कबि सिंगाररस छंद बड़े बिस्तारि
मैं बरन्यो दोहानि बिच याते सुघर बिचारि—प्रथम तरंग ४

रस-वर्णन की पद्धति विशेष रूप से सम्बत् १७५० के पश्चात् प्रबल होती है, जब छोटे छंद दोहा में, लक्षण और कवित्त-सवैया आदि बड़े छंदों में उदाहरण देने की प्रथा प्रगाढ़ हुई। ऊपर वाले दोहे में इसी तथ्य की ओर संकेत किया गया है। ऐसी स्थिति में हित तरंगिणी का रचनाकाल सम्बत् १५९८ ठीक नहीं प्रतीत होता। विनोद में (६१) भी इसके विहारी सतसई की परवर्ती रचना होने का संदेह प्रगट किया गया है :—

"इस कवि के पद कहीं-कहीं विहारी लाल से मिल जाते हैं, जिससे यह संदेह किया जा सकता है कि यह कवि बिहारी से पीछे हुआ, परंतु अन्य प्रमाणों के अभाव में इस ग्रंथ का ठीक सम्बत् अप्रामाणिक नहीं माना जा सकता। और यही कहना पड़ेगा कि या तो बिहारी ने इनकी चोरी की या पद दैवात् मिल गये।"

इधर पंडित चंद्रबली पांडेय ने हित तरंगिणी के रचनाकाल पर अपने ग्रंथ केशवदास के अंत में विचार किया है।[१] उन्होंने लिखा है कि हित तरंगिणी की रचना सम्बत् १५९८ में न होकर सम्बत् १७९८ में हुई। उनका कहना है कि 'शिव मुख' के स्थान पर मूल पाठ 'सबसुख' रहा होगा जो किसी लिपिकर्त्ता के अज्ञान के कारण 'शिव मुख' हो गया। 'सुख' का 'मुख' और 'मुख' का 'सुख' हो जाना हस्तलेख में कोई कठिन बात नहीं। 'सब' का 'सव' और 'सव' का 'सिव' अर्थ लगाने के लिये कर लिया गया। सब सुख का अर्थ सातों सुख होता है। ये सातों सुख ये हैं :—

तन तिय तनय धाम धन धरनी
मित्र सहित सुख सातौं बरनी

महाकवि केशव ने भी कवि प्रिया में 'सप्त वर्णन' सात सुखों का उल्लेख किया है :—

---

(१) केशवदास पृ० ४०८-१०

सात छंद, सातों पुरी, सात तुचा, सुख सात
चिरंजीव मुनि सात नर, सप्तमात्रिका तात
—एकादश प्रभाव, छंद १८

प्रसिद्ध नीति कवि वृंद ने 'काव्यालंकर सतसैया' या 'वृंद विनोद' की रचना सम्बत् १७६३ में की थी। निम्नांकित दोहे में उन्होंने रचना काल दिया है। यहाँ उन्होंने सात के लिए सुख का प्रयोग किया है :—

गुन[३] रस[६] सुख[७] अमृत[१] बास, बरस सुकुल नभ मास
दूज सुकवि कवि वृंद ए दोहा-किए प्रकास १४
—खोज रि० १६४४।३६६

इसी प्रकार मातादीन मिश्र ने कवित रत्नाकर के प्रकाशन काल (१८७५ ई०) की सूचना वाले छंद में ७ के लिए सुख का प्रयोग किया है :—

सर[५] सुक्ख[७] अष्ट[८] अरु लेहु चंद[१]
ईसा संवत अति अनंद

इस ग्रन्थ की दो प्रतियाँ खोज में मिली हैं।[१] यद्यपि दोनों में शिव मुख ही पाठ है, पर पांडेय जो की बात स्वीकार कर लेने पर, बड़े छंदों में शृंगार रस वर्णन करने की प्रचलित रीति और बिहारी के दोहों से मेल की बात ठीक सध जाती है। सम्बत् १७६८ के आस-पास कृपाराम नाम से एक कवि जयपुर दरबार में थे। मेरा अनुमान है कि हित तरंगिणी इन्हीं की रचना है। जयपुर दरबार से सम्बन्धित होने के कारण उनका बिहारी सतसई से प्रभावित होना और भी समीचीन प्रतीत होता है।[२] बुन्देल वैभव में न जाने किस आधार पर इन कृपाराम को बुन्देलखंडी मान लिया गया है।[३]

१२८।

(६६) कुन्ज गोपी, गौड़ ब्राह्मण, जयपुर राज्य के वासी। ऐजन। (निरर्थक) प्रथम एवं द्वितीय संस्करणों में यह 'ऐजन' नहीं है।

सर्वेक्षण

कुन्ज गोपी का विवरण मातादीन मिश्र कृत कवित्त रतनाकर से लिया गया है।[४] उक्त ग्रन्थ में कुन्ज गोपी का एक कवित्त उद्धृत है जिसकी भाषा राजस्थानी मिश्रित है :—

कहै कुन्ज गोपी यमुना तीर ही में
मुड़ि मुड़ि कान्हरा बंशी बजावै छे जी

कुन्ज मणि नामक एक कवि खोज में मिले हैं, जिनकी रचनाओं में कुन्ज, कुन्जमणि, कुन्ज जन, कुन्ज दास आदि छाप है। मेरा अनुमान है, इन्हीं कुन्जमणि की एक अन्य छाप कुन्ज गोपी भी है। कुन्जमणि के दो ग्रन्थ मिले हैं :—

(१) उषा चरित्र (बारहखड़ी) १६०६।२८२, १६२०।६१, १६२६।२५२ बी, पं० १६२२।५८।

१—खोज रि० १६०६।२८०,१६०६।१५७ २—देखिये, यही ग्रंथ, कृपाराम, संख्या ११२
३—बुन्देल वैभव, भाग २, पृष्ठ २७४ ४—कवित्त रत्नाकर, भाग १, कवि संख्या २१

(२) पत्तल १९२६।२५२ ए। ऊषा चरित्र की रचना सम्बत् १८३१ में हुई :—

एक सहस पर आठ सै सम्बत सुभ एकतीस
कातिक सुदि सुभ द्वादसी कृपा करी जगदीस

और पत्तल की रचना सम्बत् १८३३ में :—

एक सहस पर आठ सै सम्बत सुभ तेंतीस
दुतिया सुदि बैसाख में कृपा करी जगदीस

ऊषा चरित्र में ऊषा-अनिरुद्ध का विवाह एवं पत्तल में सीता-राम का विवाह वर्णित है। कवि रामोपासक प्रतीत होता है, क्योंकि ऊषा चरित्र के भी अंत में वह सीता-राम से ही मनो वांछित फल पाने की बात करता है :—

दास कुन्ज पावन भयो कृष्ण चरित यह गाइ
सीताराम प्रताप तें मन वांछित फल पाइ

मिश्रबन्धुओं ने ऊषाचरित्र के रचयिता कुन्जमणि को ओरछावासी कुन्ज कुंवर माना है।[1]

१२९।

(६७) कृपा कवि। ऐजन (निरर्थक, प्रथम एवं द्वितीय संस्करणों में 'ऐजन' नहीं है।)

सर्वेक्षण

सरोज में कवि का केवल नाम है, न सन्-सम्वत् है, न उदाहरण है और न कोई अन्य सूचना ही। केवल नाम के सहारे कोई निश्चित पकड़ सम्भव नहीं।

१३०।

(६८) कनक कवि, सम्बत् १७४० में उ०। ऐजन। (निरर्थक, प्रथम एवं द्वितीय संस्करण में 'ऐजन' नहीं है।)

सर्वेक्षण

खोज में किसी कनक सिंह के दो ग्रन्थ मिले हैं :—

(१) भागवत दशमस्कंध भाषा—१९२६।१८२। ग्रन्थारम्भ में लिखा गया है :—

"अथ पोथी दशमस्कंध भाषा कनक सिंह कायस्थकृत लिख्यते"

पुष्पिका से भी कवि की जाति का उल्लेख हुआ है। प्राप्त प्रति का लिपिकाल सम्बत् १८८५ है। अतः रचना इसकी पूर्ववर्ती है। रिपोर्ट के उद्धृत अंश में कवि का नाम आया है :—

कनक सिंह बिनवै बहु भाई
टूटत अच्छर देहु बनाई

---

(१) विनोद, कवि संख्या ९८९

(२) बभ्रुबाहन कथा—१९२६।२२१, १९४१।४७३। ग्रन्थ के उद्धृत अंश में कवि का नाम आया है :—

बभ्रुबाहना कथा यह पंडव कुल के भूप
कनक सिंह कवि भाषा कथा कीन्ह अनुरूप

संभवतः यही कनक सिंह सरोज के कनक कवि हैं, जिनका उपस्थित काल सम्बत् १७४० है। खोज में किसी कनक सोम की रचना 'आषाढ़ भूत चौपाई'[1] मिली है।

१३१।

(६९) कुम्भ कर्ण,, राना चित्तौड़, मीराबाई के पति, सम्बत् १४७५ के लगभग उ०। यह महाराना चित्तौड़ में सम्बत् १५०० के लगभग राजगद्दी पर बैठे और सम्बत् १५२५ में उदाना के पुत्र ने इनको मार डाला। टॉड साहब चित्तौड़ की हिन्दी तारीख से इनका जीवन-चरित्र विस्तार पूर्वक लिखकर कहते हैं कि, राना कुम्भा महान् कवि थे। नायिका भेद के ज्ञान में प्रवीण थे और गीत गोविन्द का तिलक बहुत विस्तार पूर्वक बनाया है। प्रकट नहीं होता कि राना के कवि होने के कारण उनकी स्त्री मीराबाई ने काव्य-शास्त्र को सीखा अथवा मीराबाई के कवि होने से राना साहब कवि हो गये।

सर्वेक्षण

ग्रियर्सन (२१) के अनुसार कुम्भकरण जी १४०० ई० के आस-पास सिंहासनासीन हुये और १४६९ ई० में अपने पुत्र ऊदाजी द्वारा मारे गये। टाड के अनुसार यह कुशल कवि थे और इन्होंने गीत गोविन्द की टीका की थी। विनोद के अनुसार (२३) इन्होंने सम्बत् १४१९ से १४६९ पर्यन्त राज्य किया। ऐसी स्थिति में सरोज-दत्त सम्बत् अशुद्ध है।

राना कुम्भा मीरा के पति नहीं थे। यह दोनों समकालीन तक नहीं थे।[2]

१३२।

(७०) कल्याण सिंह भट्ट। ऐजन। (निरर्थक, प्रथम एवं द्वितीय संस्करणों में ऐजन नहीं लिखा गया है।

सर्वेक्षण

खोज में एक कल्याण भट्ट मिले हैं, जो प्राणनाथ भट्ट के पिता थे और सम्बत् १८७६ के पूर्व वर्तमान थे। प्राणनाथ भट्ट ने सम्बत् १८७७ में 'वैद्य दर्पण' नामक ग्रन्थ लिखा था। इस ग्रन्थ की पुष्पिका से इनके पिता का नाम कल्याण भट्ट ज्ञात होता है।

"इति श्री कल्याणभट्टात्मज श्री प्राणनाथ भट्ट विरचिते वैद्य दर्पण प्रथम खंडः समाप्तः।"

खोज रि० १९१७।१३५

हो सकता है ये कल्याण भट्ट काव्य भी करते रहे हों।

---

(१) खोज रिपोर्ट १९४१।२०५ (२) देखिये, यही ग्रन्थ, मीरा, संख्या ७००

एक कल्याण का खंडित 'सुदामा चरित्र'[1] मिला है। इसमें १८ सवैये एवं दो कवित्त अवशिष्ट हैं। अन्य कोई सूचना उपलब्ध नहीं है। खोज में एक और कल्याण सिंह का पता चलता है। यह भट्ट नहीं थे, छत्र कवि के आश्रयदाता थे और सम्बत् १७५७ के लगभग वर्तमान थे।[2]

१३३।१०३

(७१) कामता प्रसाद, ब्राह्मण, लखपुरा, जिला फतेहपुर, सम्बत् १९११ में उ०। यह महाराज साहित्य में अद्वितीय हो गये हैं। संस्कृत, प्राकृत, भाषा, फारसी इन सब में कविता करते थे। इनके विद्यार्थी सैकड़ों काव्यकला के महान् कवि इस समय तक विद्यमान हैं।

सर्वेक्षण

ग्रियर्सन में (६४४) इन्हें असोथर के भगवन्त राय खीची का वंशज कहा गया है और इस ग्रन्थ के ९७ और १३३ संख्यक कामता प्रसादों को मिला दिया गया है, पर यह ठीक नहीं। ब्राह्मण और क्षत्रिय को एक ही समझना ग्रियर्सन की भूल है। इस कवि के सम्बन्ध में अन्य कोई सूचना सुलभ नहीं है।

१३४।

(७२) कृष्ण कवि प्राचीन। ऐजन। (निरर्थक)

सर्वेक्षण

इनकी कविता का उदाहरण पृष्ठ ४३ पर कहा गया है। उक्त पृष्ठ पर कृष्ण कवि का जो कवित्त है, वह औरंगजेब की प्रशस्ति में है।

चढ़े ते तुरंग नवरंगसाह बादसाह
जिमी आसमान थरथर थहरात है

७९ संख्या पर भी एक कृष्ण कवि हैं, जिनका रचना काल सम्बत् १७४० दिया गया है। इन्हें औरंगजेब बादशाह का आश्रित कहा गया है। अतः यह उदाहरण ७९ संख्यक कृष्ण कवि का भी है। इसलिये १३४ संख्यक कृष्ण कवि प्राचीन और ७९ संख्यक कृष्ण कवि (१) अभिन्न हैं। इस कवि की वृद्धि तृतीय संस्करण से हुई है। प्रथम एवं द्वितीय संस्करणों में यह कवि है ही नहीं।

ख

१३५।११०

(१) खुमान बन्दीजन, चरखारी, बुन्देलखंडी, सम्बत् १८४० में उ०। बुन्देलखंड में आज तक यह बात विदित है कि खुमान जन्म से अन्धे थे। इसी कारण कुछ लिखा-पढ़ा नहीं। दैवयोग से इनके घर में एक महापुरुष संन्यासी आये और ४ महीने तक वास कर चलने लगे। बहुतेरे चरखारी के सज्जन, कवि, कोविद, महात्मा, थोड़ी दूर जाकर संन्यासी महाराज की आज्ञा से अपने घरों को लौट आये। खुमान साथ ही चले गये। संन्यासी ने बहुत समझाया पर जब खुमान जी ने कहा कि हम घर

---

(१) खोज रिपोर्ट १९३२।८० (२) खोज रिपोर्ट १९०६।२३, १९३१।२१, १९३२।४४

में किस लियेजायँ, हम अन्धे, अपढ़, निकम्मे, घर के काम के नहीं, ' धोबी के ऐसे गदहा न घर के न घाट के", हम आप ही के संग रहेंगे। तब संन्यासी यह बात श्रवण कर बहुत प्रसन्न हो खुमान जी की जीभ में सरस्वती का मन्त्र लिख बोले, प्रथम हमारे कमंडल की प्रशंसा में कवित्त कहो। खुमान ने शीघ्र ही २५ कवित्त कमंडल के बनाये और संन्यासी के चरणारविन्दों को दंड प्रणाम कर घर आकर संस्कृत और भाषा की सुन्दर कविता करने लगे। एक बार सेंधिया महाराज ग्वालियर के दरबार में गये। सेंधिया ने आज्ञा दी कि संस्कृत में रात भर में एक ग्रन्थ बनाओ। खुमान जी ने प्रतिज्ञा करके एक ही रात्रि में ७०० श्लोक दिये। कविता देखने से इनकी कविता में दैवी-शक्ति पाई जाती है। लक्ष्मणशतक और हनुमन्नखशिख, ये दो ग्रन्थ इनके बनाये हुये हमारे पुस्तकालय में मौजूद हैं।

सर्वेक्षण

खुमान चरखारी के राजा विजय विक्रमाजीत सिंह (विक्रमसाहि) के यहाँ रहते थे। कविता में यह अपना नाम मान भी रखते थे। इनका जन्म छतरपुर के निकट खर गांव में हुआ था। यह चरखारी के अन्तर्गत काकिनी गाँव के हनुमान जी के भक्त थे और इन्होंने उन पर कई काव्य-ग्रन्थ लिखे हैं।[1]

अंतिम दिनों में यह महाराज विजय विक्रमाजीत से रूठकर ग्वालियर चले गये थे। यह घटना सम्बत् १८८६ के पहले घटी होगी; क्योंकि उक्त महाराज का देहावसान इसी साल हुआ था। फल यह हुआ कि इन्हें माफी में मिला गाँव खालसा (जब्त) हो गया, जो इनके पौत्र बलदेव को ग्वालियर से वापस आने पर तत्कालीन चरखारी नरेश जयसिंह (राज्यारोहणकाल १९१७ वि०) द्वारा पुनः मिला।[2]

विजय विक्रमाजीत के पिता खुमान सिंह के दरबार में उदयभान नामक कवि थे। उन्हीं के पौत्र खुमान बन्दीजन थे। अपने ग्रन्थ लक्ष्मण शतक में कवि ने स्ववंश वर्णन भी किया है।

हठे सिंघ बसहरिय प्रगट बन्दीजन बंसहि
हरिचन्दन सुत तासु इन्द्रगढ़ जासु प्रसंसहि
तासु तनय प्रहलाद दास इमि लौहट छाइब
ता सुत दानीराम अखय खडगाम बसाइब
कवि वैद्भान ता सुत उदित विश्व विदित बिद्वनि वलित ३
ता सुत कनिष्ट कवि मान यह लखन चरित किन्हिय ललित १३१

—खोज रिपोर्ट १९०६।७० डी

स्पष्ट है कि इनके पूर्व पुरुष हठे सिंह थे जो बसहरिय स्थान पर रहते थे। हठे सिंह के पुत्र हरिचन्दन हुये, जो इन्द्रगढ़ में रहते थे। हरिचन्दन के पुत्र प्रहलाद हुये, जो लोहट में थे। प्रहलाद दास के पुत्र दानीराम हुये, जिन्होंने खडगाँव (खरगाँव) बसाया। दानीराम के पुत्र कवि वैदभान (उदयभान) हुये। उदयभान के पुत्र उदित और उदित के कनिष्ट पुत्र कवि मान हुये। मान के पुत्र का नाम ब्रजलाल था। नीति निधान ग्रन्थ में कवि ने अपने को उदयभान का पौत्र कहा है।

उदैभान कवि कौ खुमान कवि पौत्र पवित्र कविन में ३२२

---

(१) नागरी प्रचारिणी पत्रिका, भाग १३, अंक ४, माघ १९८९, 'खुमान कृत हनुमन्नखशिख लेख (२) नागरी प्रचारिणी पत्रिका, भाग ६, संख्या ४, माघ १९८१, पृष्ठ ३८३

खुमान के निम्नलिखित ग्रन्थ खोज में मिल चुके हैं :—

(१) अमर प्रकाश—१९०३।७४, १९०५।८६। यह संस्कृत के प्रसिद्ध अमर कोश का हिन्दी अनुवाद है। इसकी रचना सम्बत् १८३६, बैशाख शुक्ल, नृसिंह चतुर्दशी, बुधवार को हुई थी।

रस[६] गुन[३] बसु[८] ससि[१] बरष नरहरि तिथि बुधवार
तब कवि मान कियो बिरचि अमर प्रकाश प्रचार

—खोज रि० १९०५।८६

(२) अष्टयाम—१९०६।७० जे। इसमें चरखारी नरेश विक्रम साहि की दिनचर्या है। इसकी रचना सम्बत् १८५२, मार्गशीर्ष बदी ६, भौमवार को हुई :—

सम्बत द्ग[२] सर[५] नाग[८] ससि[१] मारग बदि छठ भौम
बरनौं विक्रम वीर को अष्टजाम जस सौम ९१

(३) नरसिंह चरित्र—१९०४।४५, १९०६।७० एच, १९२६।२३७ सी। इसकी रचना सम्बत् १८३९, बैशाख शुक्ल १४ (नृसिंह चतुर्दशी) को हुई :—

सम्बत नव[९] गुन[३] बसु[८] कुमुदबन्धु[१] निबंध पवित्र
नरहरि चौदस को भयो श्री नरसिंह चरित्र

—खोज रि० १९०६।७० एच, १९२६।२३७ सी

१९०४ वाली रिपोर्ट में 'गुन' के स्थान पर 'मुनि' पाठ है, तदनुसार इसका रचना-काल सम्बत् १८७९ होना चाहिये।

(४) नीति निधान—१९०६।७० एफ। इस ग्रन्थ में चरखारी के राजा खुमान सिंह के सबसे छोटे भाई (विक्रम साहि के चाचा) दीवान पृथ्वी सिंह का हाल है।

कवि मान राव पृथीस की जय पढै स्वामित धर्म की ९८१

(५) नरसिंह पचीसी—१९०६।७० आई। इस ग्रन्थ में नरसिंह भगवान की स्तुति के २५ छंद हैं।

(६) राम रासो—१९२६।२३७ डी। इसमें तुलसीकृत रामायण के अनुसार लंकाकाण्ड का अंगद संवाद से राम के अयोध्या पहुँचने तक का वर्णन है।

(७) राम कूट विस्तार—१९०६।७२।

(८) लक्ष्मण शतक—१९०६।७० डी, १९२६।२३७ ए, बी। इस ग्रन्थ में १३३ छंदों में लक्ष्मण-मेघनाद का युद्ध वर्णित है। ग्रन्थ की रचना खरगाँव में सम्बत् १८५५, बसंत पंचमी, रबिवार को हुई :—

इषु सौ ससि बसु नित्तवर रबि पंचमी बसंत
थिर खड़गांव खुमान कवि लच्छमण सतक रचंत १३३

—खोज रि० १९०६।७० डी।

न जाने किस प्रकार इस दोहे से रचनाकाल सम्बत् १८५५ निकाला गया है।

(८) समरसार—१९०६।७० जी। इस ग्रन्थ में विजय विक्रमाजीत के पुत्र धर्मपाल की उस वीरता का वर्णन है, जिसे उन्होंने अपने पिता द्वारा ब्रिटिश सरकार से सम्बन्ध स्थापन के समय किसी उद्दंड अंगरेज अफसर के अनुचित व्यवहार के दमन करने में प्रदर्शित की थी। कवि ने इस युद्ध की तिथि सम्बत् १८७८ दी है।

सम्बत् बसु[८] मुनि[७] नाग[८] ससि[१] अगिन असंत तिथि भूत
भृगु सु वार ता दिन हनो मेजर सैन अकूत २
धर्मपाल महाराज ने करी जुद्ध को ठान
सुभट सूर बुलवाइ के बोलै बोल प्रमान ३

शुक्ल जी ने प्रमाद से इस ग्रन्थ के विषय में लिखा है कि इसमें युद्ध-यात्रा के मुहूर्त आदि का विचार है।[१]

(१०) हनुमत नखशिख—१९०६।७० ई, १९२३।२१०, १९२६।२३७ ई।

(११) हनुमत पचीसी—१९०६।७० बी, सी। इस ग्रन्थ में २५ कवित्त सवैये हैं।

(१२) हनुमत विरुदावली—१९२०।१००, इस ग्रन्थ में २५ घनाक्षरी, १ सवैया और १ दोहा है।

(१३) हनुमान पंचक—१९०६।७० ए। इसमें ५ कवित्त हैं।

खुमान का रचना-काल सम्बत् १८३० से १८८० तक माना जा सकता है। इनका जन्म सम्बत् १८०० के आस-पास हुआ होगा। सरोज में दिया सम्बत् १८४० इनका रचना-काल है। लक्ष्मण शतक, भारत जीवन प्रेस, काशी से एवं हनुमलखशिख, नागरी प्रचारिणी पत्रिका के अन्तर्गत (गान १२, अंक ४, माघ १९८९) प्रकाशित हो चुका है।

जिन संन्यासी का उल्लेख सरोज में हुआ है, उनका नाम रामाचार्य था। वे चित्रकूट में निवास करते थे। लक्ष्मण शतक में मान ने अपने को इनका दास कहा है :—

चित्रकूट मन्दाकिनी राघौ प्राग निवास
श्रीमद्रामाचार्ज के सदा मान कवि दास १३२
—खोज रि० १९०६।७० डी

१३६।

(२) खुमान कवि। एक काण्ड अमरकोष का भाषा में छंदोबद्ध उल्था किया है।

सर्वेक्षण

यह खुमान १३५ संख्यक खुमान है। इन्होंने अमरकोष का भाषानुवाद अमरप्रकाश नाम से सम्बत् १८३६ में किया था।[२]

१३७।

(३) खुमान सिंह, महाराज खुमान राउत गुहलौत सिसोदिया, चित्तौरगढ़ के प्राचीन राजा सम्बत् ८१२ में उ०। यह महाराज कविता में अति चतुर और कवि लोगों के कल्पवृक्ष थे। सम्बत् ९०० में इनके नाम से एक कवि ने खुमान रायसा नामक एक ग्रन्थ बनाया है, जिसमें इनके बंश वाले प्रतापी महाराजों के और खुद इनके जीवन चरित्र लिखे हैं। टाड साहब ने राजस्थान में इस ग्रन्थ का जिक्र किया है और लिखा है कि इस ग्रन्थ के दो भाग हैं। प्रथम भाग तो खुमान सिंह के समय में बनाया गया, जिसमें पवार राजों का रामचन्द्र से लेकर खुमान तक कुर्सीनामा है और दसवीं सदी में जब कि मुसलमानों ने चित्तौड़ पर धावा किया और तेरहवीं सदी में जब अलाउद्दीन गोरी से युद्ध हुआ और चित्तौड़ लूटा गया, दूसरा भाग राना प्रताप सिंह के समय में बनाया गया, जिसमें राना प्रताप सिंह और अकबर बादशाह के युद्ध का वर्णन है।

---

(१) हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ ३८६ (२) देखिये, यही ग्रंथ, पृष्ठ २४२

सर्वेक्षण

सरोज के आधार पर खुमानरासो के सम्बन्ध में पर्याप्त भ्रान्तियाँ रही हैं। इस सम्बन्ध में सबसे पहले अगरचन्द नाहटा ने "खुमानरासो का रचनाकाल और रचयिता"[1] शीर्षक खोज पूर्ण निबंध नागरी प्रचारिणी पत्रिका में प्रकाशित कराया। तदनन्तर दूसरा महत्त्वपूर्ण लेख श्री मोतीलाल मेनारिया, एम० ए०, पी-एच० डी० ने 'खुमाण रासो'[2] नाम से प्रायः १५ वर्ष बाद उसी पत्रिका में प्रकाशित कराया। इन दोनों लेखों का निष्कर्ष यह है :—

(१) इस ग्रंथ के रचयिता तपागच्छीय जैन कवि दौलत विजय हैं जिनका दीक्षा से पूर्व का नाम दलपत था। यह शान्ति विजय के शिष्य थे।

(२) ग्रंथ की भाषा राजस्थानी है।

(३) इस ग्रन्थ में बाप्पारावल से लेकर राना प्रताप तक का ही वर्णन नहीं है, राणा प्रताप के बाद के ७ राणाओं, संग्राम सिंह द्वितीय तक का वर्णन है।

(४) इस ग्रंथ का नाम खुमानरासो इसलिये नहीं है कि इसमें खुमान द्वितीय (सम्बत् ८७०-९०० वि०) के खलीफा अलमामू से हुये युद्धों का वर्णन है, अथवा इसमें इन खुमान का प्रसंग कुछ अधिक विस्तार से है और औरों का कम विस्तार से; वल्कि यह नाम इसलिये है कि इसमें चित्तौर के राणाओं का आख्यान है, जिनकी एक उपाधि खुमान (खुमाणां) भी है। अन्य उपाधियां राणा, महाराणा, दीवाण, सीसोदा, केलपुरा, चीत्तौड़ा आदि हैं।

(५) इस ग्रन्थ का रचनाकाल सम्बत् १७६७ और १७९० विक्रमी के बीच है। यही अमरसिंह के पुत्र संग्राम सिंह द्वितीय का राज्यकाल है।

अतः खुमाणरासो न तो बीरगाथा काल का सर्वप्रथम ग्रन्थ है, न इसका रचयिता राजस्थान का आदि कवि है, न इसमें प्रताप सिंह तक का ही वर्णन है, न इसका रचनाकाल १६ वीं शताब्दी हैं, न यह प्राचीन पुस्तक का परिवर्धित संस्करण है, न ८०० वर्षों का परिमार्जित ग्रन्थ; न पीछे के राणाओं का वर्णन इसमें परिशिष्ट रूप से जोड़ा गया है और न उपलब्ध रूप इसे १७ वीं शताब्दी में ही प्राप्त हुआ। सरोजकार ने खुमान रासो के सम्बन्ध में जो भूल की है, वह टाड के कारण है।

१३८।१०९

(४) खानखाना, नवाब अब्दुलरहीम खानखाना, बैराम खां के पुत्र, रहीम और रहिमन छाप है, सम्बत् १५८० में उ०।

यह महाविद्वान अरबी, फारसी, तुरकी, इत्यादि यावनी भाषा और संस्कृत तथा ब्रजभाषा के बड़े पंडित अकबर बादशाह की आँख की पुतली थे। इन्हीं के पिता बैरम की जवाँमर्दी और तदबीर से हुमायूँ को दुबारा चिक्त का राज्य प्राप्त हुआ। खानखाना जी पंडित, कवि, मुल्ला, सायर, ज्योतिषी और गुणवान मनुष्यों के बड़े कदरदान थे। इनकी सभा रात दिन विद्वज्जनों से भरी पुरी रहती थी। संस्कृत में बनाये इनके श्लोक बहुत कठिन हैं और भाषा में नवों रसों के कवित्त-दोहे बहुत ही

---

(१) ना० प्र० पत्रिका, माघ १९९६ (२) ना० प्र० पत्रिका, माघ २००९

सुन्दर हैं। नीति संबन्धी दोहे ऐसे अपूर्व हैं कि जिनके पढ़ने से कभी पढ़ने वाले को तृप्ति नहीं होती। फारसी में इनका दीवान बहुत उम्दा है। वाकयात बाबरी अर्थात् बाबर बादशाह ने जो अपना जीवन चरित्र तुर्की जबान में आप ही लिखा है, उसका इन्होंने फारसी जबान में तर्जुमा किया है। यह ७२ वर्ष की अवस्था में सन् १०३६ हिजरी में सुरलोक को सिधारे।

श्लोक

आनीता नटवन्मया तव पुरः श्रीकृष्ण या भूमिका।
व्योमाकाशखगांबराब्धिवसवस्त्वत्प्रीतयेऽद्यावधि॥
प्रीतिर्यस्य निरीक्षणे हि भगवन्यत्प्रार्थितं देहि मे।
नोचेद् ब्रूहि कदापि मा नय पुनर्मामीदृशीं भूमिकाम्॥

शृंगार का सोरठा भाषा

पलटि चली मुसक्याय, दुति रहीम उजियाय अति
बाती सी उसकाय, मानो दीनी दीप की १
गई आगि उर लाइ, आगि लेन आई जु तिय
लागी नहीं बुझाय, भभकि भभकि बरि बरि उठै २

नीति का दोहा

खीरा सिर धरि काटिये, मलिये निमक लगाय
करुये मुख को चाहिये, रहिमन यही सजाय १

एक दिन खानखाना ने यह आधा दोहा बनाया :—

तारायनि ससि रैन प्रति, सूर होंहि ससि गैन

दूसरा चरण नहीं बना सके। रोज रात्रि को यह दोहा पढ़ा करते थे। दिल्ली में एक खत्रानी ने यह हाल सुन आधा चरण बनाकर बहुत इनाम पाया।

तदपि अँधेरो है सखी; पीव न देखे नैन।

सर्वेक्षण

गुरुवार, माघ बदी, सम्वत् १६१३ विक्रमी को रहीम का जन्म हुआ। अतः ऊपर दिया हुआ सम्वत् १५८० विक्रमी सम्वत् नहीं है, ई० सन् है। उस समय रहीम २४ वर्ष के थे। यह उनका ई० सन् में उपस्थिति काल है। रहीम ने ११ वर्ष से ही काव्य रचना प्रारम्भ की थी। इनकी मृत्यु ७० वर्ष की उम्र में सम्वत् १६८३ में फागुन के महीने में हुई।[1] हिन्दू पंचांग से इनकी आयु ७० वर्ष की है, पर मुसलिम पंचांग से यह ७२ वर्ष है।

रहीम की रचनाओं के अनेक सुन्दर सम्पादित संकलन निकल चुके हैं। इनमें सर्वश्रेष्ठ है मयाशंकर द्वारा सम्पादित रहीम रतनावली। इसमें निम्नलिखित रचनायें है :—

(१) दोहावली—नीति के लगभग ३०० दोहे

(२) नगर सोभा—विभिन्न जातियों की स्त्रियों के रूपवर्णन करने वाले १४२ दोहे।

(३) वरवै नायिका भेद।

(४) खानखाना कृत वरवै।

(५) मदनाष्टक।

---

(१) अकबरी दरबार के हिन्दी कवि, पृष्ठ १३३-३७, १६४-७१

(६) शृंगार सोरठा—६ शृंगारी सोरठे।

(७) फुटकर।

(८) खेट कौतुक जातकम्—संस्कृत में ज्योतिष ग्रन्थ।

सरोज में प्रमाद से दो रहीमों की स्थापना हो गई है। एक तो खानखाना के नाम से (संख्या १३८), दूसरे रहीम के नाम से (संख्या ७७८)।

१३९।११२

(५) खूबचन्द कवि, माड़वार देशवासी। इन्होंने राजा गम्भीर साहि ईडर के रईस के भड़ौवा में एक कवित्त बनाया है। इसके सिवाय और कविता इनकी हमने नहीं देखी।

सर्वेक्षण

प्रसंग प्राप्त छंद सरोज से यहाँ उद्धृत किया जा रहा है :—

मान दस लाख दियो दोहा हरिनाथ के पै
हरिनाथ कोटि दै कलंक कवि कैहै को
बीरबर दै छ कोटि केशव कवित्तन में
शिवराज हाथी दियो भूषन ते पैहै को
छप्पै में छत्तीस लाख गंगै खानखाना दियो
याते दिन दूनो दान ईदर में ऐहै को
राजा श्री गम्भीर सिंह छंद खूबचन्द के में
विदा में दगा दई, न दीन कोऊ दैहै को

इस कवि के सम्बन्ध में और कोई सूचना सुलभ नहीं।

१४०।११५

(६) खान कवि, इनके कवित्त दिग्विजयभूषण में हैं।

सर्वेक्षण

सरोज में इनका एक कवित्त है जिसमें परिसंख्या अलंकार की सहायता से किन्हीं राजन जू की प्रशंसा की गई है। अन्य कोई सूचना सुलभ नहीं।

१४१।११३

(७) खान सुलतान कवि, इनका एक ही कवित्त मिला है, परन्तु उसमें भी भ्रम है।

सर्वेक्षण

सरोज में इनका एक कवित्त उद्धृत है जिसमें पावस पंचबान का सांगरूपक है। द्वितीय चरण में खान सुलतान शब्द आया है।

दादुर दरोगा, इन्द्रचाप इत माम घटा,
जाली बगजाल ठाढ़ो खान सुलतान है।

सरोजकार का भ्रम यह है कि यह कवित्त किसी खान सुलतान नामक कवि का है अथवा कवि का नाम केवल खान है। सुलतान रूपक का भी अंग हो सकता है।

१४२।१११

(८) खंडन कवि, बुन्देल खंडी, सम्बत् १८८४ में उ० । इन्होंने भूषणदास नाम का एक ग्रन्थ नायिका भेद सम्बन्धी महाविचित्र रचा है । यह ग्रंथ झाँसी में रामदयाल कवि के, बीजापुर में ठाकुर दास कवि और कुञ्जबिहारी कायस्थ के तथा दिलीपसिंह बन्दीजन के पास है ।

सर्वेक्षण

खंडन के निम्नलिखित ५ ग्रंथ खोज में मिले हैं । इनमें सरोज में उल्लिखत भूषणदास भी हैं :—

(१) सुदामा समाज—१९०६।५९ ए । इस ग्रन्थ का दूसरा प्रसिद्ध नाम 'सुदामा चरित्र' भी है । इसमें ५१ छन्द हैं ।

(२) मोहमर्दन की कथा—१९०६।५९ बी । मोहमर्दन नामक एक धार्मिक राजा की कथा, दोहा-चौपाइयों में कुल ३६१ छंद । ग्रंथ की रचना भादौं सुदी ११, बुधवार, सम्बत् १७८१ को हुई ।

सत्रह सै इक्यासिया समवो नाम अनन्द
भादौं सुदी एकादशी बार जान सुत चन्द

खंडन जी दतिया के अन्तर्गत पचोखर नामक ग्राम के श्रीवास्तव कायस्थ थे । यह दतिया नरेश रामचन्द्र (शासनकाल सम्बत् १७६३-९० वि०) के समय में थे । इनके पिता का नाम मलूकचंद था । यह सब सूचना इस ग्रन्थ से मिलती है :—

पंचोखर उत्तिम स्थान
जहाँ बसै नर धर्म निधान
नृप जहँ रामचन्द्र बुन्देल
पौरिष दीह जुद्ध दल ठेल ३
जहाँ मलूक चन्द परधान
श्रीवास्तव गुन बुद्धि निधान
तिनके सुत कवि खंडन भये
नृपति मोह मर्दन गुन ठये ४

(३) भूषणदाम—१९०५।९६, १९०६।५९ सी । यह अलंकार ग्रन्थ है । रचनाकाल-सूचक दोहा इसमें दिया गया है, पर उसका अर्थ बहुत स्पष्ट नहीं हैं ।

संबत रिषि बसु गुन सुसत रस ऊपर सुखदान
माघ मास त्रितिया सुकुल बार तमीपति जान ४१५

१९०५ वाली रिपोर्ट में इसको सम्भवतः सम्बत् १७८७ माना गया है और १९०६ वाली रिपोर्ट में १७४९ ई० (सम्बत् १८०६ वि०) । दोनों में दोहा एक ही है । १९०५ वाली रिपोर्ट में सु सत रस के स्थान पर सुमत रस पाठ है जिसका कोई अर्थ नहीं । मेरी समझ से इसका पाठ यह है :—

संबत रिखि[७] बसु[८] गनि सु सत्तर सौ १७०० ऊपर सुखदान

इससे ग्रन्थ का रचनाकाल माघ सुदी ३, सोमवार, सम्बत् १७८७ निकलता है । इस ग्रन्थ में भी कवि ने अपना परिचय दिया है ।

काइथ खरे सुढारिया श्रीबास्तव बुधिधाम
वासी नगर दतीय के चन्द मलूक सुनाम ४१२
तिनके सुत खंडन भये मन्द सुमति बसु जाम
रच्यो ग्रंथ तिन यह सुखद नाम सु भूषन दाम ४१३

(४) नाम प्रकाश—१९०६।५९ डी। यह एक पद्यबद्ध शब्द कोष है, जिसकी रचना आश्विन वदी ११, बुधवार, सम्बत् १८१३ को हुई। इसमें १११९ दोहे हैं।

सम्बत दस बसु सत गनौं ऊपर नव श्रुति दोइ
आश्विन बदि एकादशी बार ससिसुत सोइ ८

इस ग्रन्थ में भी कवि ने अपना परिचय दिया है।

(५) जैमिनि अश्वमेध—१९०६।५९ ई। युधिष्ठिर के अश्वमेध यज्ञ की कथा। इसका रचनाकाल पौष सुदी ७, सम्बत् १८१९ है।

सम्बत दस बसु सै गनौं ऊपर द्वादस सात
पौष मास सुदि सप्तमी ससि सुत मत अवदात

कवि ने एक बार बाल्यावस्था में भी यह कथा लिखी थी, अब प्रौढ़ावस्था में उसने यही कथा फिर लिखी।

सिसुपन मैं पहिले कही बनौ न सत उच्चार
तातै अब बरनत बहुरि पाइ चित्त मत भार ३
पहिल रची तो यह कथा बनो न सुन्दर सोइ
ताते बर्ननि फिर करौं ज्ञान नीर हिय धोइ २०
अब विरची मंजुल महा खंडन लहि मति छन्द
बढ़ै बुद्धि जाके पढ़े सुनत होइ आनन्द २१

इस ग्रन्थ में भी कवि ने आत्म परिचय दिया है। इस प्रकार खंडन जी का रचनाकाल सम्बत् १७८१ से सम्बत् १८१९ तक है। अतः सरोज में दिया हुआ सम्बत् १८८४, अशुद्ध है।

१४३।

(१) खेतल कवि। ऐजन। (निरंथक, प्रथम एवं द्वितीय संस्करणों) में नहीं है।

सर्वेक्षण

खेतल कवि खरतरगच्छीय जिन राज सूरि जी के शिष्य दयावल्लभ जी के शिष्य थे। दीक्षा नन्दी सूची के अनुसार आप की दीक्षा सम्बत् १७४१ के फागुन बदी ७, रविवार को चन्द्र सूरि के पास हुई थी। आपने पद्यों में अपना नाम खेतसी, खेता और खेतल दिया है। दीक्षा नन्दी सूची के अनुसार इनका मूल नाम खेतसी और दीक्षित अवस्था का दयासुन्दर था। इन्होंने 'चित्तौड़ गज़ल' सम्बत् १७४८, सावन बदी २ को और 'उदयपुर गज़ल' सम्बत् १७५७ मार्गशीर्ष कृष्णपक्ष में बनाई थी। आप का एक ग्रन्थ बावनी है जिसकी रचना अगहन सुदी १५, शुक्रवार, सम्बत् १७४३ को दहरवास गाँव में हुई थी।[१] इसका अंतिम छंद यह है :—

---

(१) खोज रि० भाग २, पृष्ठ १००, १०३

संबत सत्तर त्रयाल मास सुदी पक्ष मगसिर
तिथि पूनम शुक्रवार थपी बावनो सुथिर
बार खरी रो बन्ध कवित्त चौंसठ कथन गति
दहरवास चौमास समय तिथि भया सुखी अति
श्री जैनराज सूरीसवर दयाबल्लभ गणि तास सिखि
सुप्रसाद तास खेतल सुकवि लहि जोड़ि पुस्तक लिखि ६४

१४४।

(१०) खुसाल पाठक, रायबरेली वाले। ऐजन। (निरर्थक, प्रथम एवं द्वितीय संस्करणों में नहीं है।)

सर्वेक्षण

इस कवि के सन्बम्ध में कोई सूचना सूलभ नहीं हो सकी। ग्रियर्सन में (८०८) इनके संबंध में जो कुछ लिखा गया है, वह ऐजन का अशुद्ध अर्थ करने के कारण है।

१४५।११६

(११) खेम कवि (१) बुन्देल खंडी। ऐजन। (निरर्थक, प्रथम एवं द्वितीय संस्करणों में नहीं है।)

सर्वेक्षण

इनका सरोज में एक शृंगारी सवैया उद्धृत है, अतः यह रीतिकालीन कवि प्रतीत होते हैं। बुन्देल वैभव[1] में एक खेमराज ब्राह्मण हैं, जो सम्बत् १५६० में ओरछा में उत्पन्न हुये थे। यह तत्कालीन ओरछा नरेश रुद्रप्रताप के दरबारी कवि थे। इन्होंने 'प्रताप हजारा' नामक ग्रन्थ की रचना की थी। इनका कविता काल सम्बत् १५९० वि० है। सम्भवतः यही सरोज के खेम बुन्देलखंडी हैं और सरोज में इनके नाम से किसी दूसरे खेम का सवैया उद्धृत हो गया है।

१४६।११४

(१२) खेम कवि (२) ब्रजवासी, सम्बत् १६३० में उ०। रागसागरोद्भव रागकल्पद्रुम में इनके पद हैं।

सर्वेक्षण

भक्तमाल में कुल ६ खेम हैं :—

(१) खेम गोसाईं, इनका उल्लेख छप्पय संख्या ८३ में, हुआ है। यह रामोपासक थे।

(२) खेम, छप्पय संख्या ९८ में वर्णित २८ पर अर्थपरायण भक्तों में से एक सूरज, कुम्भनदास, विमानी, खेम विरागी।

(३) छप्पय १०० में वर्णित २६ भक्तपाल दिग्गजभक्तों में से एक।

खेम श्रीरंग, नन्द, विषद, बीदा बाजूसुत

(४) छप्पय १४७ में वर्णित २३ भक्तों में से एक।

---

(१) बुन्देल वैभव, भाग २, पृष्ठ २७२

किंकर, कुन्डा, कृष्णदास, खेम, सोठा, गोपानंद

(५) छप्पय १४९ में वर्णित मधुकरी माँग-माँग कर भक्तों की सेवा करने वाले १३ भक्तों में से एक। यह खेम पंडा के नाम से प्रसिद्ध थे और गुनौर के रहने वाले थे।

बीठल ठेंड़े, खेम पंडा गुनौरे गाजै

(६) छप्पय १५० में उल्लिखित अग्रदास जी के सोलह शिष्यों में से एक।

इनमें से पहले और छठवें खेम एक ही प्रतीत होते हैं, क्योंकि ये दोनों रामोपासक हैं। हो सकता है ऊपर वर्णित ६ खेमों में से कोई सरोज का अभीष्ट खेम हो। बुन्देल वैभव के अनुसार खेम या खेमदास का जन्म सम्बत् १६५५ वि० में हुआ था। इनका रचनाकाल सम्बत् १६८० कहा गया है, और इनके एक ग्रन्थ 'सुखसंवाद' का नामोल्लेख है।[1] विनोद में (२१८।१) एक खेम हैं जिनका रचनाकाल १६६० के पूर्व कहा गया है। यह दादूदयाल के शिष्य और 'रम्भा-शुक संवाद' के रचयिता थे। मुझे तो ऊपर का 'सुख संवाद' यही 'रम्भा-शुक संवाद' प्रतीत होता है। परन्तु खेम कवि ब्रजवासी वैष्णव थे, दादू के शिष्य को निर्गुनिया होना चाहिये। सरोज में रागकल्पद्रुम से इनका कृष्ण-भक्ति सम्बन्धी एक पद उद्धृत है। यही पद बुन्देल वैभव में भी उतार लिया गया है।

१४७।

(१३) खडगसेन कायस्थ, ग्वालियर निवासी, सम्बत् १६६० में उ०। इन्होंने दान लीला, दीपकालिका चरित्र इत्यादि ग्रन्थ बड़े परिश्रम से उत्तम बनाये हैं।

सर्वेक्षण

सरोज में इनका विवरण भक्तमाल के आधार भर दिया गया है :—

गोपी ग्वाल पितु मातु नाम निरनै कियो भारी
दान केलि दीपक प्रचुर अति बुद्धि उचारी
सखा सखी गोपाल काल लीला में बितयो
कायथ कुल उद्धार भक्ति दृढ़ अनत न चितयो
गौतमी तंत्र उर ध्यान धरि, तन त्याग्यो मंडल सरद
गोबिन्द चन्द गुन ग्रथन कौं खर्गसेन बानी बिसद १६१

टीका में प्रियादास ने इन्हें ग्वालियर वासी कहा है :—

ग्वालियर वास, सदा रास को समाज करै,
सरद उजारी अतिरंग चढ्यो भारी है ५६३

रूपकला जी के अनुसार कहते हैं कि ये श्री हितहरिवंश जी के सम्प्रदाय युक्त थे।[2] सरोज में दिया सं० १६६० उपस्थिति काल है, क्योंकि भक्तमाल की रचना सं० १६४९ में हुई थी।

---

(१) बुन्देल वैभव, भाग १, पृष्ठ २३४ (२) माल, पृष्ठ ८५७

ग

१४८।११७

(१) गंग कवि (१) गंगा प्रसाद, ब्राह्मण, एकनौर, जिला इटावा अथवा बंदीजन, दिल्ली वाले, सम्बत् १५६५ में उ० । गंग कवि को हम सुनते रहे कि दिल्ली के बन्दीजन हैं और अकबर बादशाह के यहाँ थे, जैसा कि किसी कवि ने बन्दीजनों की प्रशंसा में यह कवित्त लिखा है :—

कवित्त

प्रथम विधाता ते प्रगट भये बन्दीजन
पुनि पृथु जज्ञ ते प्रकास सरसात है
मानो सूत सौनकन सुनत पुरान रहै
जस को बखाने महा सुख बरसात है
चन्द चउहान के, केदार गोरी साहि जू के
गंग अकबर के बखाने गुनगात है
काग कैसो मास अजनास धन भाटन को
लूटि धरै ताको खुराखोज मिटि जात है ॥१॥

परन्तु अब जो हमने जाँचा तो विदित हुआ कि गंग कवि एकनौर गांव, जिले इटावा के ब्राह्मण थे । जब गंग मर गये और जैन खां हाकिम ने एकनौर में जुल्म किया तब गंग जी के पुत्र ने जहाँगीर शाह के यहां एक कवित्त अर्जी के तौर पर दिया, जिसका अंतिम अंश था :—

जैन खाँ जुनारदार मारे एकनौर के,

जुनारदार फारसी में जनेऊ रखने वाले का नाम है लेकिन खास ब्राह्मण ही को जुनारदार कहते हैं । खैर जो हो, गंग जी महाकवि थे । राजा बीरबल ने गंग को "अमर अमत" इस छप्पय में एक लक्ष्य रुपये इनाम दिये थे । इसी प्रकार अकबर, जहाँगीर, बीरबल, खानखाना, मानसिंह सवाई इत्यादि सब ने गंग को बहुत दान-मान दिया है ।

सर्वेक्षण

अकबरी दरबार के हिन्दी कवि में गंग को ब्रह्मभट्ट माना गया है और इस सम्बन्ध में कई प्रमाण भी दिये गये हैं । इनका जन्म-सम्बत् १५६५ वि० माना गया है जो वस्तुतः सरोज में दिया हुआ सम्बत् ही है । सरोज में दिया हुआ यह सम्बत् अकबरी दरबार से सम्बद्ध होने के कारण ई० सन् है । इस सन् में अर्थात् सम्बत् १६५२ वि० में गंग उपस्थित थे । यह उनका जन्मकाल नहीं है । उक्त ग्रन्थ में गंग की मृत्यु सम्बत् १६७४ और १६८२ के बीच किसी समय हुई, ऐसा अनुमान किया गया है । गंग की मृत्यु जहांगीर की आज्ञा से हाथी से कुचले जाकर हुई थी ।[1]

अकबरी दरबार के हिन्दी कवि में "जैन खाँ जुनारदार मारे एकनौर के" चरणान्त वाले ३ कवित्त उद्धृत किये गये हैं जिन्हें क्रमशः गंग, कोई अज्ञात कवि और काशीराम की रचना कहा गया है । लिखा गया है कि सरोज के अनुसार काशीराम गंग के पुत्र थे । सरोज में गंग के पुत्र का उल्लेख है, पर उसका नाम कहीं भी नहीं दिया गया है ।

---

(१) अकबरी दरबार के हिन्दी कवि, पृष्ठ ११४-३३

गंग एकनौर, जिला इटावा के ब्रह्मभट्ट थे। अकबरी दरबार के प्रसिद्ध कवि थे। नर-काव्य करने वालों में इनकी परम ख्याति है। इनके फुटकर छंद ४०० तक मिलते हैं। इनका एक गद्य ग्रन्थ 'चन्द छंद बरनन की महिमा' है, जो खड़ी बोली में है। सम्बत् १६२७ में गंग ने यह रचना अकबर को सुनाई थी। इसमें चन्दबरदाई के प्रसिद्ध छंद (पृथ्वीराजरासो) की महिमा वर्णित है। खोज में इनकी निम्नांकित रचनायें मिली हैं। :—

(१) खानखाना कवित्त १९१२।५५

(२) गंग पचीसी १९२६।१२६ ए, बी, सी, १९२९।१०९

(३) गंगपदावली १९३२।६२ ए

(४) गंग रनतावली १९३२।६२ बी

(५) (गंग) संग्रह १९२३।११४

(६) चन्द छंद बरनन की महिमा १९०९।८४

श्री बटे कृष्ण, एम० ए०, ने नागरी प्रचारिणी सभा, काशी की आकरग्रन्थमाला के लिये गंग ग्रन्थावली का सम्पादन कर लिया है, जिसका प्रकाशन शीघ्र होने जा रहा है।

१४९।११८

(२) गंग कवि (२) गंगाप्रसाद ब्राह्मण, सपौली, जिले सीतापुर सम्बत् १८९० में उ०। सपौली गांव इनको कविता करने के कारण माफ़ी में मिला है। इनके पुत्र तीहर नाम कवि विद्यमान हैं। गंगाप्रसाद ने एक ग्रन्थ 'दूती विलास' बनाया है। उसमें सब जाति की दूतियों का श्लेष से वर्णन है।

सर्वेक्षण

ग्रियर्सन में (५९७) से दिया हुआ सम्बत्-जन्म सम्बत् माना गया है। पर विनोद में (२४४५) इन्हें सम्बत् १९४० में उपस्थिति कवियों की सूची में स्थान दिया गया है। ग्रियर्सन में "इनके पुत्र तीहर नाम कवि विद्यमान है" को "इनके पुत्र अब तिहरना में विद्यमान हैं" के भ्रष्ट रूप में स्वीकार किया गया है।

खोज में एक गंगाप्रसाद मिले हैं जो चतुर्भुज दीक्षित के पुत्र थे। चतुर्भुज दीक्षित महाबन, मथुरा के रहने वाले सनाढ्य ब्राह्मण थे। यह महाबन छोड़कर बदायूं जिले में आ बसे थे।[1] सम्भवतः इन्हीं बदायूं जिले वाले गंगाप्रसाद को अपने काव्य के लिये सपौली गांव माफ़ी में मिला। सरोज से स्पष्ट है कि यह मूलतः सपौली के निवासी नहीं थे। बदायूं वाले गंगाप्रसाद ने सम्बत् १८८० में 'सुबोध' नामक वैदक ग्रन्थ की रचना की थी।

संबत ठारह सै असी, चैत शुक्ल तिथि काम
सोमवार शुभ योग में कियो ग्रन्थ अभिराम

१५०।११९

(३) गंगाधर (१) कवि बुन्देलखंडी महा ललित कविता की है।

---

(१) खोज रिपोर्ट १९१२।४७

सर्वेक्षण

विक्रम की २०वीं शताब्दी में बुन्देलखंडी कवियों में गंगाधर अग्रगण्य हैं। इनका जन्म माघ बदी ९, मंगलवार, सम्बत् १८९९ को हुआ था। यह सनाढ्य ब्राह्मणों के व्यास कुल में उत्पन्न हुये थे। इनके पिता का नाम रामलाल व्यास और पितामह का लटोरे लाल व्यास था। इनके पूर्वज पहले ब्रज-मंडल में निवास करते थे, फिर वे लोग महोबा में आ बसे, जहाँ से पुनः वे लोग छत्रपुर में आये। गंगाधर व्यास इसी छत्रपुर के रहने वाले थे। सत्योपाख्यान नामक रामचरित्र सम्बन्धी ग्रंथ में कवि ने अपनी जन्मभूमि का वर्णन किया है :—

अपनो देश ग्राम कुल नामा
विधि मुहि जन्म दियो जिहि ठामा
देसन गाई सुन्दर धरनी
कहूँ बुन्देलखंड बर बरनी
छत्रसाल नृप को यश छायो
सुदिन सुभ करी शहर बसायो
नाम छतरपुर तासे राख्यो
देश देश जाहिर जस भाख्यो

गंगाधर व्यास तत्कालीन छत्रपुर नरेश विश्वनाथ सिंह जू देव के आश्रय में थे जिनकी ओर से इन्हें मासिक बँधेज बँधा हुआ था।

रहै सदा सुख सो सब प्रानी
विश्वनाथ नृप की रजधानी

इस ग्रन्थ में कवि ने स्वयं अपना वंश-परिचय दिया है :—

द्विज सनाढ्य कुल में जनम व्यास वंश अभिराम
गंगाधर की कृपा ते भो गंगाधर नाम

कवि ने अपनी छाप गंग भी रखी है :—

द्विज गंग भनत पूरन प्रगट, तुव प्रताप चौदह भुवन
श्रीराम चरित बरनन करत, कृपा करहु अंजनि सुवन

श्री गंगाधर व्यास का देहान्त सावन सुदी १४, सोमवार, सम्बत् १९७२ को हुआ। इनकी बनाई हुई ७-८ पुस्तकें हैं, जिनमें से ५ हैं :—

(१) मंजरी, (२) गो माहात्म्य, (३) भरथरी चरित्र, (४) श्री विश्वनाथपताका—ओरछा नरेश की प्रशस्ति, (५) सत्योपाख्यान। यह संस्कृत से दोहा-चौपाइयों में अनुवाद है।

इन ग्रन्थों के अतिरिक्त इन्होंने फुटकर कवित्त, सवैये, फाग, शेर आदि छन्दों की रचना भी बहुत की है। सम्बत् १९८४ के आस-पास व्यास जी की कुछ रचनायें हिन्दी चित्रमय जगत् में प्रकाशित हुई थीं। वियोगी हरि ने कवि कीर्तन में इनका विवरण संख्या १५४ पर दिया है।[1]

---

(१) माधुरी वर्ष ६, खंड २, संख्या ४, वैसाख १९८५ (मई १९२८) में कवि चर्चा स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित कविवर गंगाधर जी व्यास का भाषा छंदोबद्ध सत्योपाख्यान के आधार पर।

१५१।१३२

(४) गंगाधर (२) कवि। उप सतसैया नाम सतसई का तिलक कुंडलिया, छंद और दोहों में बनाया है।

सर्वेक्षण

बिहारी सतसई सम्बन्धी साहित्य में रत्नाकर जी ने इन गंगाधर से अनभिज्ञता प्रकट की है और सरोज में जो परिचय और उदाहरण दिया गया है, उसी को उद्धृत करके संतोष किया है। विनोद में (१४२२) भ्रम से इन्हें बुन्देलखंडी मान लिया गया है। खोज में एक गंगाधर उपनाम गंगेश मिश्र मिले हैं। यह माथुर ब्राह्मण थे। इनके पिता का नाम मकरन्द था। इनका निम्नांकित ग्रन्थ मिला है :—

विक्रम विलास—१९०६।८६,१९१२।५६, १९१७।५६, १९२६।१११ ए, बी। सम्भवतः इसी ग्रन्थ की किसी खंडित प्रति का विवरण १९२३।१२१ में 'विक्रम बैताल संवाद' नाम से दिया गया है। इसके कर्त्ता भी गंगेश ही कहे गये हैं। इसी ग्रन्थ से पता चलता है कि कवि के पिता का नाम मकरन्द था, जो माथुर कुल में कलश सदृश श्रेष्ठ थे। :—

माथुर कुल कलसा भये मति अमद मकरन्द
तिनके भयो तनूज मैं गंगाधर मतिमंद

१९१२ वाली प्रति में गंगाधर के स्थान पर गंगापति पाठ है। इन्हीं मकरन्द के पुत्र गंगाधर ने सम्बत् १७३९ में विक्रम-विलास की रचना की :—

तिन किनी विक्रम कथा अपनी मत अनुसार
जो विशेष जहं चाहिये सो तंह लेहु सुधार
सम्बत सत्रह सै बरस बीते उनतालीस
माघ सुदी कुज सप्तमी कीन्हो ग्रन्थ नदीस

इस दोहे में कवि ने अपना नाम 'नदीश' दिया है, समुद्र के अर्थ में नहीं, नदियों में श्रेष्ठ गंगा के रूप में। आर्शीवाद वाले अन्त के छप्पय में कवि का नाम गंगेश आया है।

जब लगि प्रवाह गंगा जमुन जब लगि वेदन को कहौ
विक्रम विलास गंगेश कृत बत लगि या जग थिर रहौ

पुष्पिका में भी "गंगेश मिश्र विरचिते" कहा गया है। अस्तु, कवि के चार नाम हैं—गंगाधर, गंगापति, गंगेश, और नदीश। सम्भवतः विक्रमविलास वाले यह गंगाधर ही उप सतसई वाले गंगाधर हैं। इन गंगाधर के अतिरिक्त दो गंगाधर और भी खोज में मिले हैं :—

(१) राजयोग भाषा नामक गद्य में लिखित वैद्यक ग्रंथ के रचयिता—(१९३२।६३)

(२) गोवर्धन लीला नामक गीत प्रबन्ध के रचयिता—(द १९३१।३२, १९३८।५०)

१५२।१५७

(५) गंगापति कवि, सम्बत् १८४४ में उ०। कविता सरस है।

सर्वेक्षण

सरोज के तृतीय संस्करण में १७४४ के स्थान पर १८४४ सम्बत् दिया गया है। सरोज में गंगापति का भ्रमरगीत सम्बन्धी एक अत्यन्त सरस कवित्त दिया गया है, जो दिग्विजय भूषण से लिया गया है, (अध्याय ६, संख्या ६६) । विनोद में (६७५) गंगापति को 'विज्ञान विलास' नामक बेदान्त ग्रन्थ का रचयिता माना गया है और कविता काल सम्बत् १७७६ दिया गया है । ग्रियर्सन (३२०) में विज्ञान विलास का रचना-काल सम्बत् १७७५ दिया गया है और १८४४ को जन्म-काल मानकर सरोज में वर्णित गंगापति का उल्लेख संख्या ४८१ पर किया गया है तथा जन्मकाल सन् १७८७ ई० (सम्बत् १८४४ वि०) दिया गया है । वस्तुतः ग्रियर्सन के दोनों गंगापति एक ही हैं और इनका रचना-काल सम्बत् १७७५ है ।

१५३।१५८

(६) गंगादयाल दुबे, निसगर, जिले रायबरेली के विद्यमान हैं । संस्कृत के महापंडित और भाषा-काव्य में भी निपुण हैं ।

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध में कोई सूचना सुलभ नहीं है ।

१५४।१६३

(७) गंगाराम कवि, बुन्देल खंडी, सम्बत् १८६४ में उ० । सामान्य कविता है ।

सर्वेक्षण

विनोद में (२११३) गंगाराम के तीन ग्रन्थों का उल्लेख है—सिंहासन बत्तीसी, देवी-स्तुति, रामचरित्र । ये सभी ग्रन्थ खोज में भी मिल चुके हैं । किसी में भी रचना-काल नहीं दिया गया है । सिंहासन बत्तीसी[1] दोहा-चौपाइयों में है । देवी-स्तुति और रामचरित्र की प्रति एक जिल्द में मिली है ।[2]

एक गंगाराम की कृति ज्ञानप्रदीप है । यह मालवी त्रिपाठी ब्राह्मण थे । :—

गंगाराम त्रिपाठि द्विज मालवीय विख्यात
कीन्हों ज्ञान प्रदीप वर बिमल ग्रन्थ अवदात

ग्रन्थ की रचना सम्बत् १८४६ में हुई :—

अष्टादश शत अरु अधिक छालिस सम्बत माह
भयो ग्रन्थ भादो सुदी चतुर्दशी गुरुखोज रिपोर्ट १६०३।१६ काह

सरोज में अर्द्धनारीश्वर शिव का ध्यान सम्बन्धी एक छप्पय उद्धृत है, जिससे इनकी भक्ति-प्रवृत्ति परिलक्षित होती है । मुझे तो ज्ञान प्रदीप के रचयिता गंगाराम त्रिपाठी जी सरोज के गंगाराम जान पड़ते हैं । विनोद वाले (२११३) ऊपर उल्लिखित गंगाराम भी यही हो सकते हैं । विनोद में (१८३४।१) एक और गंगाराम हैं, जिनकी रचना 'शब्दब्रह्म जिज्ञासु' है ।

---

(१) खोज १६०३।६ (२) खोज १६०१।८८

इसकी प्रतिलिपि सम्बत् १८६३ की है। अतः यह उक्त सम्बत् के पूर्ववर्त्ती हैं। यह भी सरोज के अभीष्ट गंगाराम हो सकते हैं। गंगाराम जी का कविता काल सम्बत् १८४६ से सम्बत् १८६४ तक माना जा सकता है।

१५५।१२०

(८) गदाधर भट्ट, बांदा वाले, कवि पद्माकर जू के पौत्र, सम्बत् १६१२ में उ०। इनके प्र-पितामह मोहन भट्ट बुन्देलखंड के नामी कवि पन्ना के राजा हिन्दू पति बुन्देला के यहाँ रहे। पीछे राजा जगत सिंह सवाई के यहाँ रहे। उनके पुत्र पद्माकर जी के मिहीलाल और अम्बा प्रसाद दो पुत्र हुये। मिहीलाल के बंशीधर, गदाधर, चन्द्रधर और लक्ष्मीधर ये चार पुत्र हुये। अम्बाप्रसाद को एक पुत्र विद्याधर नामक उत्पन्न हुआ। यद्यपि ये सब कवि हैं तथा सब में उत्तम कवि गदाधर हैं। यह राजा भवानी सिंह, दतिया नरेश, के पास रहा करते हैं। अलंकार चन्द्रोदय नामक एक ग्रन्थ इन्होंने बनाया है।

सर्वेक्षण

सरोज में जो तथ्य एवं तिथि दी गई है, सभी ठीक हैं। सम्बत् १६१२ कवि का रचना-काल है। इनका जन्म सम्बत् १८६० के लगभग हुआ था। यह पहले दतिया राज दरबार में राजा भवानी सिंह के यहां रहे। सम्बत् १६४० में यह मालवा प्रान्तान्तर्गत राजधानी सुठालिया, जिला ऊमदवाड़ी के राजा माधव सिंह वर्मा के यहाँ गये। यहीं इन्होंने छंदोमंजरी नामक प्रसिद्ध पिंगल ग्रन्थ सम्बत् १६४१ में बनाया। इसका प्रथम संस्करण सम्बत् १६४५ वि० में भारत जीवन प्रेस, काशी से प्रकाशित हुआ था।[1] विनोद में प्रमाद से गदाधर भट्ट का उल्लेख १८३६।२ और २०७६ संख्याओं पर दो बार हो गया है। १८३६।२ पर इन्हें दतिया वासी और पद्माकर का पौत्र कहा गया है। सम्बत् १८६४ रचना-काल दिया गया है। वृत्त चन्द्रिका (रचना-काल १८६४), कामन्दक (र० का० १८६५), विरदावली (र० का० १८६४), वृजेन्द्र विलास (रचना-काल १६०३), केसर सभा विनोद (रचनाकाल १६३६) और देशाटन विनोद (प्र० त्रै० रि०) का रचयिता माना गया है। संख्या २०७६ पर इन्हें अलंकार चन्दोदय, गदाधर भट्ट की बानी, केसर सभा विनोद और छंदोमंजरी का कर्त्ता माना गया है। इनमें से गद धर भट्ट की बानी चैतन्य महाप्रभु के शिष्य प्रसिद्ध भक्त गदाधर भट्ट की रचना है। शेष इन गदाधर भट्ट की रचनायें हैं। विनोद के अनुसार लगभग ८० वर्ष की वय में इनकी मृत्यु सम्बत् १६५५ के आस-पास हुई।

१६६।१२५

(६) गदाधर कवि, शान्त रस के कवित्त चोखे हैं।

---

(१) छंदोमंजरी, द्वितीय संस्करण की भूमिका के आधार पर।

सर्वेक्षण

सरोज में इनका शान्त रस का एक कवित्त उद्धृत है। नाम, रस और एक उदाहरण मात्र के सहारे इनकी पकड़ सम्भव नहीं प्रतीत होती।

१५७।१६०

(१०) गदाधर राम, इनकी कविता सरस है।

सर्वेक्षण

सरोज में इनका भँवरगीत सम्बन्धी एक सरस सवैया उद्धृत है। मात्र इतनी सामग्री के सहारे इन गदाधर राम को भी खोज निकालना असंभव है। यह छंद, भाषा काव्य-संग्रह से उद्धृत। उक्त ग्रंथ में इनका यही एक छंद है, विवरण भी नहीं है।

१५८। १६८

(११) गदाधरदास मिश्र ब्रजबासी, सम्बत् १५८० में उ०।

इनके पद रागसागरोद्भव में हैं। इनका बनाया हुआ यह पद "सखी हौं श्याम के रंग रँगी" और "विकाय गई वह सुरति मूरति हाथ बिकी" देखकर स्वामी जीव गोसाईं जो उस समय बड़े महात्मा थे, इनसे बहुत प्रसन्न हुये।

सर्वेक्षण

सज्जन सुहृद सुशील बचन आरज प्रतिपालय
निर्मत्सर निहकाम कृपा करुणा कौ आलय
अनन्य भजन दृढ़ करनि धर्यो कछु भक्तनि काजै
परम ध्यान कौ सेतु विदित वृन्दावन गाजै
भागौत सुधा बरषै बदन, काहू को नाहिन दुखद
गुन निकर गदाधर भट्ट अति, सबहिन कौ लागै सुखद

—भक्तमाल छप्पय १३८।

रूपकला जी लिखते हैं कि "ये बंगाली नहीं थे और बाँदा वाले भी नहीं थे। और श्री बल्लभाचार्य जी के शिष्य गदाधर मिश्र दूसरे ही थे"।[१] इससे स्पष्ट है कि सरोजकार ने बल्लभ-सम्प्रदाय के गदाधर मिश्र का नाम लिया है और जीवन के तथ्य चैतन्य सम्प्रदाय के गदाधर भट्ट के दिये हैं। 'श्याम के रंग रँगी' वाले पद का उल्लेख प्रियादास जी ने अपनी टीका में किया है।[२]

गदाधर भट्ट दाक्षिणात्य ब्राह्मण थे और ब्रजभाषा के अत्यन्त प्रौढ़ भक्त कवि थे। यह पहले से ही राधा-कृष्ण के भक्त थे और गृहस्थ जीवन व्यतीत करते थे। इनके सरोज

---

(१) भक्तमाल, पृष्ठ, ७८७ (२) भक्तमाल, कवित्त संख्या ४२३-२४

वर्णित उक्त दोनों पदों को दो रमते राम साधुओं ने जीवगोसाईं के आगे गाया। उक्त गोसाईं परम प्रभावित हुये। उन्होंने साधुओं को निम्नांकित श्लोक लिखकर दिया और गदाधर जी को दे देने का आदेश दिया :—

अनाराध्य राधा पदाम्भोज युग्म मनाश्रित्य वृंदाटवीं तत्पदांकाम्।
असंभाव्य तद्भावगंभीर चित्तान् कुतः श्यामसिन्धो रसस्यावगाहः॥

श्लोक को पढ़कर गदाधर जी मूर्छित हो गये। संज्ञा प्राप्त होने पर यह घर बार छोड़ वृन्दावन चले आये।

आचार्य शुक्ल के अनुसार गदाधर भट्ट ने वृंदावन में जाकर चैतन्य महाप्रभु से दीक्षा ली थी। यह उन्हें भागवत सुनाया करते थे। इनका रचना-काल सं० १५८० एवं मृत्युकाल सं० १६०० के पीछे किसी समय हुआ।[१] पर शुक्ल जी का कथन असमीचीन है। चैतन्य महाप्रभु का जन्म फाल्गुन पूर्णिमा, सं० १५४२ को हुआ था। उन्होंने सं० १५६६ में संन्यास लिया, सं० १५७२ की विजय-दशमी को वृंदावन के लिए प्रस्थान किया। रास्ते में आते-जाते काशी में रुके और वैशाख १५७३ में काशी से पुरी के लिए प्रस्थान किया। पुरी में १८ वर्ष रहकर १५९० में वहीं दिवंगत हुए। यह वृंदावन में सं० १५७२ में केवल दो महीने रहे। गदाधर भट्ट जीवगोस्वामी के आमंत्रण पर वृंदावन गए थे। जीव गोस्वामी, रूप और सनातन के अनुज वल्लभ के पुत्र थे। इनका जन्म रामकेली ग्राम में सं० १५६८ में हुआ था। यह नदिया एवं काशी में शिक्षा प्राप्त कर २४ वर्ष की वय में सं० १५९२ में वृंदावन पहुँचे थे और अंत तक वहीं रहे। यहीं इनका देहावसान सं० १६५२ पौष शुक्ल ३ को हुआ। स्पष्ट है गदाधर भट्ट सं० १५९२ के पश्चात् किसी समय वृंदावन आए। यह न चैतन्य के शिष्य थे और न उन्हें भागवत की कथा ही सुनाते थे। चैतन्य महाप्रभु को कथा सुनाने वाले भी गदाधर नाम के ही एक सज्जन थे, जो बंगाली थे और गदाधर प्रभु या गदाधर पंडित नाम से प्रख्यात थे।

गदाधर भट्ट चैतन्य संप्रदाय में दीक्षित थे। यह चैतन्य महाप्रभु के शिष्य श्री रघुनाथ भट्ट के शिष्य थे जो महाप्रभु के ६ प्रसिद्ध शिष्य गोस्वामियों में से एक थे। गदाधर भट्ट ने वृंदावन में राधा बल्लभ जी के मंदिर के सामने 'मदन मोहन' जी का विग्रह स्थापित किया था, जिसकी पूजा आज भी इनके वंशज करते हैं। इनके दो पुत्र हुए—रसिकोत्तंस जी और वल्लभ रसिक जी। वल्लभ रसिक जी भी अत्यंत सुंदर कवि थे।[२]

गदाधर जी की फुटकर रचनायें भी मिलती हैं। इनका एक फुटकर संग्रह गदाधर भट्ट की बानी नाम से मिला है। इसमें कुल ६२ रचनायें हैं। रिपोर्ट में इन्हें बल्लभ सम्प्रदाय का वैष्णव कहा गया है, जो ठीक नहीं है।[३] इस ग्रन्थ का ६२ वां पद शुक्ल जी के इतिहास में गदाधर भट्ट की रचना के उदाहरण में उद्धृत है।

जयति श्री राधिका कृष्ण सुख साधिका
तरुनि मनि नित्य नूतन किशोरी

---

(१) हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृ० १८२-८३ (२) साहित्य, वर्ष ६, अंक ४, जनवरी १९५६ —'श्री गदाधर भट्ट, ले० श्री ब्रजरत्नदास, पृष्ठ ६३-६५ (३) खोज रिपोर्ट १९०९।८१

ध्यान मंजरी इनकी एक अन्य रचना है,[1] जो रोला छंद के ११४ चरणों में समाप्त हुई है। इसमें श्रीकृष्ण का ध्यान वर्णित है।

१५६। १२१

(१२) गिरिधारी ब्राह्मण, बैसवारा, गाँव सातन पुरवा वाले (१) सम्बत् १६०४ में उ०। इनकी कविता या तो श्रीकृष्ण चन्द्र की लीला सम्बन्धी है या शान्त रस की। यह कवि पढ़े बहुत न थे परन्तु ईश्वर के अनुग्रह से कविता सुन्दर रचते थे।

सर्वेक्षण

गिरिधारी लाल त्रिपाठी, ब्राह्मण, सातन पुरवा, जिला रायबरेली, के रहने वाले थे। यहीं के रहने वाले अयोध्याप्रसाद बाजपेयी, औध भी थे। यह सम्बत् १६०४ में उपस्थित थे। इनके पौत्र केदार नाथ त्रिपाठी, गांव उत्तर पाड़ा, पोस्ट भांव, जिला रायबरेली, में सम्बत् १६८४ में विद्यमान थे।[2] गिरिधारी लाल जी ने भागवत दशम स्कंध का अत्यन्त ललित यमक पूर्ण घनाक्षरियों में अनुवाद किया था। खोज में यह ग्रन्थ भागवत दशम स्कन्ध भाषा,[3] श्याम विलास,[4] श्री कृष्ण चरित्र [5] तथा गिरिधारी काव्य [6] नाम से मिल चुका है। इनके दो ग्रन्थ और मिले हैं :—

(१) रहस्य मंडल—१६२३।१२४ बी। इसमें कवित्तों में रासलीला का सरस वर्णन है।

(२) सुदामा चरित्र—१६२३।१२४ सी, १६४७।६६ क। यह भी कवित्तों में है। प्रमाद से खोज के कवि परिचय में सुदामा चरित्र को सूदन चरित्र लिख दिया गया है। सम्भवतः यह दोनों स्वतंत्र ग्रन्थ नहीं है, उक्त भागवत के ही अंग हैं।

१६०।१२२

(१३) गिरीधारी कवि (२)। स्फुट कवित्त इनके मिलते हैं।

सर्वेक्षण

सरोज में इन गिरिधारी का एक कवित्त उद्धृत है, जिसमें श्रीमद्भागवत को कल्पतरु सिद्ध किया गया है। कवि भक्त प्रतीत होता है। सम्भवतः यह भक्तिमाहात्म्य के रचयिता गिरिधारी हैं।[7] भक्तिमाहात्म्य की रचना दोहा-चौपाइयों में सम्बत् १७०५ में हुई। यह गंगा तट पर कहीं रहते थे और इनके पिता का नाम गंगाराम था।

---

(१) खोज रिपोर्ट १६१२।५४ (२) माधुरी, वर्ष ५, खंड १, संख्या : ६, जनवरी १६२७, पृष्ठ ८८५, "एक अप्रकाशित ग्रन्थ" शीर्षक टिप्पणी के आधार पर (३) खोज रिपोर्ट १६२३।१२४ ए (४) खोज रिपोर्ट १६२६।१४१ (५) खोज रिपोर्ट १६१२।६१ (६) खोज रिपोर्ट १६४७।६६ ख, ग, घ (७) खोज रिपोर्ट १६०६। ६४ ए, बी, १६४१। ४८६

फागुन सुदि तिथि प्रतिपदा शुक्रवार सो वार
संवत सत्रह से अधिक पांच पक्ष उजियार
ते दिन कथा कीन्ह गिरिधारी
धर्म वाक्य सब कहा सवारी
जन्म भूमि कर करौं बखाना
सुरसरिता उत्तिम अस्थाना
करामात तेहि पुर की आही
गंगाराम पिता कर आही

भारतेन्दु के पिता के अतिरिक्त एक गिरिधर बनारसी और हुये हैं जो काशी के गोपाल मंदिर के अधिष्ठाता थे। इन्होंने सम्बत् १८८७ में मुकुन्दराय की वार्ता लिखी। इसमें श्रीनाथ (मेवाड़) से मुकुन्दराय के काशी आगमन और गोपाल मंदिर में पधारे जाने की कथा, गद्य में वर्णित है।[१] सरोज वाले गिरिधारी यह गिरधर बनारसी भी हो सकते हैं। एक अन्य गिरिधारी लाल और मिले हैं, जिन्होंने विभिन्न छंदों में नायिका भेद लिखा है।[२]

१६१। १२३

(१४) गिरिधर कवि, बन्दीजन, होलपुर वाले (१) सम्बत् १८४४ में उ०। यह कवि महाराज टिकैत राय दीवान नवाब आसफुद्दौला लखनऊ के यहाँ थे।

सर्वेक्षण

नवाब आसफुद्दौला का शासन काल सम्बत् १८३२-५४ है। अतः सरोज में दिया सम्बत् १८४४ कवि का उपस्थिति काल है। इन गिरिधर कवि का 'रस मसाल' नामक ग्रन्थ खोज में मिला है।[३] यह नायिका भेद का ग्रन्थ है। इसमें १८५ कवित्त और २६२ दोहे हैं। ग्रन्थ में कवि का नाम गिरधर आया है, अन्य कोई सूचना इससे नहीं मिलती। खोज रिपोर्ट एवं विनोद (१०५४) में इन्हीं गिरधर के इस ग्रन्थ का रचयिता होने की सम्भावना व्यक्त की गई है। ग्रियर्सन में (४८३) सम्भावना की गई है कि यही होलपुर वाले गिरिधर प्रसिद्ध कुंडलियाकार गिरिधर कविराज हैं। पर यह सम्भावना ठीक नहीं।

१६२। १२४

(१५) गिरिधर कविराय अन्तरवेद वाले, सम्बत् १७७० में उ०। इनकी सामयिक नीति सम्बन्धी कुंडलियाँ विख्यात हैं।

---

(१) खोज रिपोर्ट १९०६।६३; (२) खोज रिपोर्ट १९२३।१२३ (३) खोज रिपोर्ट १९०६।९२

सर्वेक्षण

पंडित मातादीन मिश्र ने अपने कवित्त रत्नाकर में लिखा है कि गिरिधर भाट थे, जयपुर के निवासी थे, महाराज जयशाह के समय में थे। उक्त महाराज ने इन्हें कविराय की उपाधि दी थी। इनकी पत्नी भी कवयित्री थीं। उन्होंने भी कुन्डलियाँ लिखी हैं। जिन कुन्डलियों में साईं शब्द आया है, इन्हीं की रचनायें हैं, गिरिधर की नहीं।[1] सरोज के अनुसार यह अन्तर्वेद के रहने वाले थे और सम्बत् १७७० इनका उपस्थिति काल है। ग्रियर्सन (३४५) और विनोद (७३१) में सम्बत् १७७० को उत्पत्ति काल माना गया है। ग्रियर्सन में इनके होलपुर वाले गिरिधर[2] से अभिन्न होने की संभावना की गई है, जो पूर्णतया अशुद्ध है। सच बात तो यह है कि इस कवि के सम्बन्ध में अभी तक कोई बहुत प्रामाणिक विवरण उपलब्ध नहीं हो सका है। इनका केवल एक ग्रन्थ मिलता है जो नीति सम्बन्धी फुटकर कुन्डलियों का संकलन है।

१६३।१२६

(१६) गिरिधर बनारसी, बाबू गोपाल चन्द्र, साहुकाले हर्षचन्द्र के पुत्र, श्री बाबू हरिश्चन्द्र जू के पिता, सम्बत् १८९६ में उ०। इनका बनाया हुआ दशावतार कथामृत ग्रन्थ बहुत सुन्दर है और अलंकार में भारतीभूषण नामक भाषा भूषण की टीका बहुत अपूर्व बनाया है। इनके पुत्र बाबू हरिश्चन्द्र बनारस में बहुत प्रसिद्ध और गुण-ग्राहक हैं। इनके सरस्वती भंडार में बहुत ग्रन्थ थे।

सर्वेक्षण

बाबू गोपाल चन्द्र उपनाम गिरिधर दास का जन्म काशी के एक अत्यन्त सम्पन्न अग्रवाल कुल में पौष कृष्ण १५, सम्बत् १८९० वि० को हुआ था। इनके पिता का नाम हर्षचन्द्र काले था। इनके पुत्र प्रसिद्ध बाबू हरिश्चन्द्र हुये, जो भारतेन्दु के नाम से अधिक प्रख्यात हैं। इनकी मृत्यु २७ वर्ष की अल्प आयु में वैशाख सुदी ७, सम्बत् १९१७ को हुई। सम्बत् १८९६ में यह केवल ६ वर्ष के थे। भारतेन्दु के अनुसार इन्होंने कुल ४० ग्रन्थ रचे थे।

जिन श्री गिरिधर दास कवि रच्यो ग्रन्थ चालीस[3]
ता सुत श्री हरिचन्द को न नवावै सीस

इनके निम्नांकित २४ ग्रन्थों का उल्लेख ब्रजरत्नदास जी ने किया है :—

(१) जरासन्ध बध महाकाव्य, (२) भारती भूषण, (३) भाषा व्याकरण, (४) रस रत्नाकर, (५) ग्रीष्म वर्णन, (६) मत्स्यकथामृत, (७) कच्छपकथामृत, (८) बाराहकथामृत, (९) नृसिंहकथामृत, (१०) बावनकथामृत, (११) परशुरामकथामृत, (१२) रामकथामृत, (१३) बलरामकथामृत, (१४) बुद्धकथामृत (१५) कल्किकथामृत, (१६) नहुष नाटक, (१७) गर्ग संहिता (१८) एकादशी माहात्म्य (१९) प्रेम तरंग, (२०) ककारादि सहस्रनाम, (२१) कीर्तन के पद, (२२) मलार के पद, (२३) बसंत के पद (२४) बहार।

श्री राधाकृष्ण दास ने इनके निम्नांकित ग्रन्थों का और भी नामोल्लेख किया है। :—

---

(१) कवित्त रत्नाकर, भाग १, कवि संख्या २. (२) देखिए, यही ग्रंथ, कवि संख्या १६७
(३) चंद्रावली नाटिका, प्रस्तावना।

(१) बाल्मीकि रामायण, (२) एकादशी की कथा, (३) छंदार्णव, (४) नीति, (५) अद्भुत रामायण, (६) लक्ष्मीनखशिख, (७) वार्त्ता संस्कृत, (८) गया यात्रा, (९) गयाष्टक, (१०) द्वादश दल कमल, (११) संकर्षणाष्टक, (१२) रामाष्टक, (१३) कालियकालाष्टक, (१४) दनुजारिस्तोत्र, (१५) रामस्तोत्र, (१६) शिवस्तत्र, (१७) गोपालस्तोत्र, (१८) राधास्तोत्र, (१९) भगवतस्तोत्र, (२०) बाराहस्तोत्र।

भारतीभूषण और दशावतार कथामृत, नवल किशोर प्रेस, लखनऊ, से प्रकाशित हो चुके हैं। रसरत्नाकर हरिश्चन्द्र कला के अंतिम खंड में संकलित है। जरासन्ध बध को बाबू ब्रजरत्नदास ने पूर्ण करके काशी से प्रकाशित कराया है। हाल ही में इनका नहुष नाटक भी नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, से प्रकाशित हुआ है।

१६४। १२७

(१७) गोपाल कवि प्राचीन, सम्बत् १७१५ में उ०। केहरी कल्याण, मित्रजीत सिंह के यहां थे।

सर्वेक्षण

सरोज में इनका एक कवित्त उद्धृत है, जिसमें इनके आश्रयदाता का नाम आया है।

केहरी कल्यान मित्रजीत जू के तेरे डर
सुत तजि पति तजि वैरिनी विहाल हैं

मेरा अनुमान है कि आश्रयदाता का नाम कल्यान सिंह है। उक्त छंद में सिंह के स्थान पर केहरी शब्द का प्रयोग हुआ है। मित्रजीत, कल्यान सिंह के पिता का नाम होना चाहिये।

खोज में अनेक गोपाल मिले हैं। इनमें सबसे पुराने कुंवर गोपाल सिंह हैं, जिन्होंने रागरत्नावली की रचना सम्बत् १७५८ में की थी:—

संवत गनि बसु[८] बान[५] रिसि[७] चन्द्र[१] सु माधव मास
सुद्ध तृतीया बुद्ध जुत रत्नावलि परकास ७

—खो रि० १९०६।४२

यह बुन्देल क्षत्रिय थे और त्रिलोक सिंह के पुत्र थे।

१६५। १३४

(१८) गोपाल कवि (१) कायस्थ, रीवाँ वासी, सम्बत् १९०१ में उ०। महाराजा विश्वनाथ सिंह बान्धव नरेश के यहाँ कामदार थे। गोपाल पचीसी ग्रन्थ बहुत सुन्दर बनाया है।

सर्वेक्षण

गोपाल बक्सी-कृत शृंगार पचीसी तिलक समेत खोज में मिली है।[२] कवि ने अंत में सूचित किया है कि तिलक भी उसी का रचा हुआ है।

श्री बगसी गोपाल, विरचि सिँगार पचीसिका
किय यह तिलक रसाल, सुनत गुनत सुकविहिं सुखद

---

(१) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, पृष्ठ ४१, ५३, ले० ब्रजरत्नदास (२) खोज रिपोर्ट १९०६।२५४, १९२३।१३२

ग्रन्थ की रचना सम्बत् १८८५ में हुई :—

संबत सर[५] बसु[८] बसु[८] ससी[१], चैत द्वैज सित पच्छ
बार सोम सुभ समय येहि, भो संपूरन स्वच्छ

इस ग्रन्थ की कविता अत्यन्त सरल है। यह बक्सी गोपाल, रीवाँ वाले गोपाल कायस्थ ही हैं, और सरोज में दिया हुआ सम्बत् १९०१ इनका उपस्थिति काल है, जो इनके आश्रयदाता रीवाँ नरेश विश्वनाथ सिंह जू देव के शासन काल का अन्तिम वर्ष है। ग्रंथ का खोज में दिया हुआ नाम शृंगार पचीसी है, और सरोज में दिया हुआ गोपाल पचीसी। एक रस के अनुसार है दूसरा कवि और आलम्बन के अनुसार।

१९६।१३५

(१९) गोपाल बन्दीजन (२) चरखारी, बुन्देलखंड, सम्बत् १८८४ में उ०। यह कवि महाराजा रतनसिंह बुन्देला, चरखारी भूप के यहाँ थे।

सर्वेक्षण

इनकी कविता के उदाहरण में सरोज में निम्नांकित छप्पय उद्धृत है, जिससे पता चलता है कि चरखारी के किस राजा के दरबार में कौन कवि था।

प्रथम पढ़िव हरिचंद भूप छतसाल निवासह
बिय पढ्ढिब पहलाद भूप जगतेस सुवासह
गुन पढ़ि दानी राम भूप की कीर्ति सुहाई
नृप खुमान ढिग भान दास बहु काव्य सुनाई
विक्रम महीप कवि भान पढ़ि सुजस साखि साखिन बढ़े
करुनानिधान रतनेस ढिग कवि गोपाल नित प्रति पढ़े।

रतन सिंह विक्रमाजीत सिंह के पुत्र रणजीत सिंह के पुत्र थे और विक्रमाजीत सिंह की मृत्यु के अनन्तर सम्बत् १८८५ में चरखारी की गद्दी पर बैठे थे। इन्होंने सम्बत् १९१७ तक राज्य किया। इन्हीं के दरबार में गोपाल कवि थे, जो मृगया विनोद के लेखक थे। यह तीन भाई थे। तीनों का नाम दरबार में एक ही था—(१) गोपाल कवि (२) गुपाल दत्तात्रै (३) गोपाल भट्ट[१]।

गोपाल बन्दीजन थे। श्यामदास के पुत्र थे। चरखारी नरेश के आश्रित थे। इन्हें सुकवि की उपाधि मिली थी। इनका निम्नांकित ग्रन्थ खोज में मिला है :—

शिख नख दर्पण—१९०६।४०। यह बलभद्र के प्रसिद्ध नखसिख की टीका है। इसकी रचना सम्बत् १८९१ में हुई :—

सम्बत ससि[१] नव[९] बसु[८] धरा[१] सीत पख बुधवार
सिखनख दर्पन को भयो ताही दिन अवतार १५

ग्रंथ रतन सिंह के आश्रय में लिखा गया। इसमें उनकी प्रशस्ति भी है।

चिरंजीव रतनेस नृप छत्रसाल कुल छत्र
दींह दान किरिन कौ जिहि भुजावन जयपत्र

---

(१) ना० प्र० पत्रिका, भाग ९, अंक ४, माघ १९८९, पृष्ठ ३८२-८३

पुष्पिका से कवि के पिता का नाम ज्ञात होता है।

"इति श्री स्यामदासात्मज गोपाल कवि कृतं सिखिनख दर्पणं समाप्तं"

कवि के विवरण में लिखा गया है कि यह बलभद्री व्याकरण, हनुमन्नाटक की टीका तथा गोबर्धन सतसई की टीका के भी रचयिता थे। रिपोर्ट की यह बात ठीक नहीं। इन तीनों ग्रन्थों के रचयिता प्रसिद्ध कवि केशव के भाई बलभद्र मिश्र थे, न कि गोपाल। गोपाल ने लिखा है कि जिन बलभद्र ने बलभद्री व्याकरण की रचना की, हनुमन्नाटक का तिलक किया, गोवर्धन सतसई की टीका की, भला उनकी गति का वर्णन कौन कर सकता है ? किन्तु मुझ मतिमन्द ने महाराज रतनसिंह की आज्ञा से उनके प्रताप तथा यश का जप करते हुये बलभद्र के नखशिख की यह टीका लिखी है :—

जिहि बलभद्र कियो बियो बलभद्री व्याकर्नं
हनुमन्नाटक को कियो तिलक अर्थ आभर्नं
गोवर्धन सतसई को टीको कीन्हों चारु
इत्यादिक बहु ग्रन्थ जिहि कीने अर्थ अपार
तिहि की गति को कहि सकै, किहि की मति सु अमन्द
करी ढिठाई मैं सु यह, अबुध अधिक मतिमन्द
रतन सिंह महराज को अद्भुत अमित प्रताप
तिहि बल तैं कछु मैं कह्यो हियो तासु जस जाप

खोज में एक ग्रन्थ चारों दिशाओं के सुख-दुख या पुरुष-स्त्री संवाद मिला है।[१] इसे कभी चरखारी वाले गोपाल की रचना कहा गया है और कभी बृन्दावन वाले गोपाल की। कभी बिना कोई निर्णय दिये यों ही छोड़ दिया गया है। इसकी प्राचीनतम प्रति सम्बत् १८९६ वि० की है।

१९७।१३६

(२०) गोपाल लाल कवि (३) सम्बत् १८५२ में उ०। शान्त रस में इनके कवित्त अच्छे हैं।

सर्वेक्षण

एक गोपाल कवि का सुदामा चरित्र नामक ग्रन्थ खोज में मिला है, जो कवित्त-सवैयों में लिखा गया है। उसकी रचना सम्बत् १८५३ वि० में हुई थी।[२]

एक सतनामी साधु गोपाल नामक हुये हैं जिन्होंने सम्बत् १८३१ में बोध प्रकाश[३] नामक ग्रन्थ लिखा। इसमें कवित्त बहुत से हैं :—

अष्टादस सत संवत अधिक वर्ष एकतीस
सुचि सित नौंमी भानु दिन पूर्ण घटी गत बीस

इस ग्रन्थ में भी राम नाम का महत्त्व वर्णन करने के बहाने प्रह्लाद की कथा कही गई है। प्रतीत होता है कवित्त सवैयों में सुदामा एवं प्रह्लाद की कथा कहने वाले दोनों गोपाल एक ही हैं। बोध प्रकाश के रचयिता गोपाल ने अपना पता यह दिया है:—

---

(१) खोज रिपोर्ट १९२६।१४७ ए, बी, १९२९।१२४, १९३८।५४ (२) खोज रिपोर्ट १९०६।२५३ (३) खोज रिपोर्ट १९२३।१३१

अवध नगर जयसिंह पुर अग्नि कुण्ड के तीर
आश्रम दास गरीब के अग्नि कोन जाहीर

सरोज के शांत रस वाले गोपाल यही प्रतीत होते हैं। ऐसी स्थिति में सरोज में दिया हुआ सम्बत् १८५२ कवि का निश्चित रूप से उपस्थिति काल है।

१६८।१५६

(२१) गोपाल राय कवि। नरेन्द्रलाल शाह और आदिल खाँ की प्रशंसा में कवित्त कहे हैं।

सर्वेक्षण

सरोज में गोपाल राय के दो कवित्त उद्धृत हैं। पहले में नरेन्द्रलाल शाह और दूसरे में आदिल खाँ की प्रशंसा है। इनमें से नरेन्द्रलाल शाह पटियाला नरेश नरेंद्र सिंह हैं, जिन्होंने सम्बत् १९०२ से १९१९ तक राज्य किया था।[1] खोज में पटियाला दरबार से सम्बन्धित गोपाल राय के ग्रंथ मिले हैं। इन गोपाल राय ने पटियाला नरेश के अनुज अजीत सिंह के लिये रासपंचाध्यायी सटीक नामक ग्रन्थ लिखा था, जिसमें इन्होंने इस तथ्य का स्पष्ट उल्लेख किया है :—

हरि राधा सखि जनन के, चरनन करि परनाम
सिरी अजित सिंह नृपति हित, कियो ग्रन्थ अभिराम २२६

—खोज रिपोर्ट १९१२।६२

गोपाल राय वृन्दावन के रहने वाले थे। यह चैतन्य महाप्रभु के गौड़ीय सम्प्रदाय के वैष्णव थे। इनके पिता का नाम खड्ग राय, उपनाम प्रवीन राय था और गुरु का नाम रामबख्श भट्ट था। इनका रचना काल सम्बत् १८८५-१९०७ है। इनके निम्नलिखित ग्रन्थ खोज में मिले हैं :—

(१) दम्पत्ति वाक्य विलास—१९२२।६२ ए। यह १३१ पन्ने का एक बड़ा ग्रन्थ है। इसमें परदेश के दुख-सुख, व्याह प्रबन्ध, यात्रा प्रबन्ध, सवारी प्रबन्ध, निवास प्रबन्ध, काव्य प्रबन्ध, बनिज प्रबन्ध और जाति प्रबन्ध आदि का वर्णन है। इसकी रचना सम्बत् १८८५ में हुई :—

ठारै से पिच्चासिया पून्यो अगहन मास
दम्पत्ति वाक्य विलास को तब कीनो परकास

(२) रस सागर १९१२।६२ बी। यह नायिका भेद का ग्रंथ है। इसकी रचना सम्बत् १८८७ में हुई :—

ठारह सै सत्तासिया जेठ बदी रबि तीज
कवि गोपाल बर्नन कर्यो रस सागर को बीज

(३) बन जात्रा—१९१२।६२ सी। इस ग्रंथ में ब्रज की परिक्रमा और ब्रज के तीर्थों का वर्णन ललित पद छंद में है। ग्रन्थ की रचना सम्बत् १८९७ में हुई।

पूस मास नवमी रविवासर सुकुल पच्छ सुखदाई
सम्बत सहस अठारह ऊपर सत्तानबे गनाई

---

(१) पंजाब रिपोर्ट १९२२।११७

ग्रन्थारम्भ में महाप्रभु (चैतन्य) की वन्दना है :—

श्री आचारज महाप्रभुन कौं बंदहुँ बारम्बारा
जिनकी शिक्षा मंत्रहिं सुनि नरनारि भये भवपारा

(४) बृन्दाबन माहात्म्य–१६१२।६२ डी। यह माहात्म्य पद्मपुराण के अनुसार है।

बृन्दाबन माहात्म्य यह, पद्म पुराण मझार
कवि गुपाल भाषा करं, संतन हित सुखकार

इस ग्रन्थ की रचना सम्बत् १६०३ में हुई :—

सम्बत सत उन्नीस पर तीन और सुखकार
भाद्रमास तिथि सप्तमी कृष्ण पक्ष बुधवार

(५) धुनि विलास—१६१२।६२ ई। इस ग्रन्थ में ध्वनि-काव्य है। इसकी रचना सम्बत् १६०७ में चैत्र शुक्ल ६ को हुई :—

सम्बत सत उन्नीस पर सात राम अवतार
ता दिन ग्रन्थ भयो प्रगट धुनि विलास कौ त्यार

(६) रास पंचाध्यायी सटीक—१६१२।६२ एफ़। यह कवित्त बन्ध ग्रन्थ है, और पटियाला नरेश के अनुज अजित सिंह के लिये लिखा गया था।

(७) भाव विलास—१६१२।६२ जी। यह भाव सम्बन्धी ग्रन्थ है।

(८) दूषण विलास—१६१२।६२ एच। यह काव्य दोष सम्बन्धी ग्रन्थ है। इसका प्रतिलिपि काल जन्माष्टमी १६०७ है।

(९) भूषण विलास—१६१२।६२ आई। यह ६७ पन्नों का एक बड़ा अलंकार ग्रन्थ है।

(१०) बृन्दावनधामानुरागावली—१६१२।६२ जे, १६०८।६७ बी। बृन्दाबन के धामों का वर्णन इस ग्रन्थ में हुआ है। प्राचीनतम प्राप्त प्रति का लिपिकाल सम्बत् १६०० है।

(११) वर्षोत्सव—१६१२।६२ एल। इसमें वर्ष भर के वैष्णव उत्सवों एवं त्योहारों का वर्णन है। ग्रन्थ का प्रतिलिपि काल सम्बत् १६०३ है।

(१२) मान पचीसी—१६०८।६७ ए। ग्रन्थकर्त्ता ने इसमें अपने पिता का नामोल्लेख किया है—रायप्रबीन के नंद गुपालनैं सोधि के मान पचीसो बनायो। इस ग्रन्थ में मुद्रा अलंकार की अद्‌भुत छटा है।

(१३) अस्फुटिक कवित्त—पं १६२२।११६ ए। यह संग्रह ग्रन्थ है। इसमें देव, गिरिधर, प्रताप आदि पुराने कवियों की दुर्गा, गंगा, यमुना, राम आदि सम्बन्धी रचनायें संकलित हैं। इसका संकलन-काल सम्बत् १६११ है।

(१४) वैराग्य शति—पं १६२२।११६ बी। इसमें पटियाला नरेश नरेन्द्र सिंह तथा उनके पुत्र युवराज रघुराज सिंह की मृत्यु का वर्णन है। रघुराज सिंह मराठों की लड़ाई में दिवंगत हुये थे। इसमें कुछ छंद वैराग्य सम्बन्धी भी हैं।

बंसीलीला[1] नामक एक और ग्रन्थ इनका कहा गया है। पर यह किसी अन्य गोपालराय की रचना है जो हित सम्प्रदाय के अनुयायी थे।

---

(१) खोज रिपो० १६१२।६२ के

(१) श्री हरिबंश की लीलहि कौं हरिबंशहि के पद बंदहि है,
सखि भावना के रत व्यास जू कौं पद जो अति आनँदकंदहि है।
रवि की प्रभु व्यास के बैन लिखे निज ग्रन्थहि मैं मति मंदहि है,
तिहि की दुति तैं सु-गुपाल के बैन रु बीतैं प्रकाश ज्यो चंदहि है।
(२) श्री गुपालहि कों हित के वश में लखि कै हरि के जन जाँचत हैं

इस ग्रन्थ में ६६ सवैये हैं। प्रारम्भ में इसे गुपालराय की ही रचना कहा गया है। संभव है कि यह हित हरिबंश के ही राधावल्लभी सम्प्रदाय के रहे हों, गौड़ीय सम्प्रदाय के न रहे हों जैसा कि रिपोर्ट में (१६१२।६२) लिखा गया है। १६२१ वाली रिपोर्ट में उल्लिखित बारहो ग्रन्थ बृन्दावन में एक व्यक्ति, लाला बद्रीदास वैश्य के यहाँ मिले हैं।

विनोद में गुपालराय का वर्णन १०६४, १२८१ और १६६३ संख्याओं पर तीन-तीन बार हो गया है।

१६६।१६५

(२२) गोपाल शरण राजा, सम्बत् १७४८ में उ०। इन्होंने महाललित पद और प्रबन्ध घटना नामक सतसई का टीका बनाया है।

सर्वेक्षण

सरोज में इनका एक पद राधारूप सम्बन्धी है। अन्तिम चरण में इनके नाम के साथ नृप लगा हुआ है, जिससे ज्ञात होता है कि यह कहीं के राजा थे :—

"गज गति चाल चलत मोहन दुति, नृप गोपाल पिय सदा विशेष"

इस कवि के सम्बन्ध में कोई अन्य प्रामाणिक सामग्री उपलब्ध नहीं।

१७०।१६७

(२३) गोपाल दास ब्रजवासी, सम्बत् १७३६ में उ०। इनके पद रागसागरोद्भव में हैं।

सर्वेक्षण

गोपाल दास ब्रजवासी का एक पद सरोज में उद्धृत है, जिससे ज्ञात होता है कि यह कृष्णोपासक सगुणधारा के भक्त थे। रागकल्पद्रुम के अतिरिक्त इनके पद ख्याल टिप्पा नामक संग्रह ग्रन्थ में भी हैं।[1]

सरोज में गोपलदास ब्रजवासी के नाम पर जो पद उद्धृत है, उसके अंतिम चरण में कवि छाप के साथ-साथ उनके इष्टदेव मदनमोहन का भी नाम है:—

"गोपालदास मदनमोहन कुंज भवन वसति रंग,
मुदित अवनि भावती सु मानि के रली"

मदनमोहन जी काशीवासी सेठ गोपालदास के इष्टदेव थे। यह स्वरूप इनके बाप सेठ पुरुषोत्तम दास को संबत् १५५० में मकान की नींव खुदवाते समय मिला था। अतः स्पष्ट है कि सरोज के अभीष्ट गोपलदास ब्रजवासी नहीं थे, काशीवासी चौपड़ा खत्री थे। इन गोपालदास जी का जन्म संबत् १५५१ में हुआ था। यह अपने पिता के साथ सं० १५५२ में बल्लभ संप्रदाय में दीक्षित

---

(१) खोज रिपोर्ट १६०२।५७

हुए थे। गोसाईं विट्ठलनाथ जी के जीवन काल (मृ० १६४२) में यह जीवित थे। स्पष्ट है कि सरोज में दिया सं० १७३६ भी अशुद्ध है। गोपालदास जी ने विरह के बहुत से पद लिखे हैं। इनका विवरण चौरासी वैष्णवन की वार्ता में पुरुषोत्तम दास की वार्ता (सं० ६) के अन्तर्गत दिया गया है।[1]

खोज में एक 'गोपाल' मिले हैं जिन्होंने सं० १७५५ में 'रास पंचाध्यायी' की रचना भाद्रपद की अष्टमी (कृष्ण जन्माष्टमी) बुधवार को की :—

सम्बत सत्रह सै समय, पचपन भादव मास
आठौ बुध गोपाल जन, बरन्यो रास विलास

—खोज रिपोर्ट १६४१।५६

सरोज में वर्णन इनका है, उदाहरण गोपालदास बनारसी का है।

खोज में एक और गोपाल दास मिले हैं, जिन्होंहे प्रह्लाद चरित्र,[2] ध्रुव चरित्र[3], मोहमर्द राजा की कथा[4], राजा भरत चरित्र,[5] मोह विवेक[6], और परिचयी स्वामी दादू जी की[7] रचना की। यह दादू के शिष्य थे, और निरगुनिये थे। इनका रचना काल सम्बत् १७०० के आस-पास है।

१७१।१३७

(२४) गोपा कवि, सम्बत् १५६० में उ०। इन्होंने राम भूषण, अलंकार चन्द्रिका, ये दो ग्रंथ बनाये हैं।

सर्वेक्षण

सरोज में कवि परिचय देते समय कवि का नाम गोपा दिया गया है, पर उदाहरण देते समय उसे गोप कहा गया है (यह वैषम्य तृतीय संस्करण में भी है)। साथ ही जो उदाहरण दिया गया है, उसमें भी छाप गोप ही है। अतः कवि का नाम गोप है, न कि गोपा। खोज में गोप कवि की दो रचनायें मिली हैं :—

(१) पिंगल प्रकरण—१६०६।३६ बी। यह ६ उल्लासों में विभक्त है।

(२) रामालंकार १६०६।३६ ए, १६४७।७७। यह अलंकार ग्रन्थ है। इसमें दिये हुये उदाहरण राम कथा से सम्बन्धित हैं। सरोज में गोप के दो ग्रन्थों का नाम दिया हुआ है—राम भूषण और अलंकार चन्द्रिका। खोज में प्राप्त यह रामालंकार या रामचन्द्राभरण ही रामभूषण है। सम्भवतः इसी का एक अन्य नाम अलंकार चन्द्रिका भी है। अलंकारों में राम कथा से युक्त होने के कारण इनका नाम राम भूषण पड़ा और अलंकार ग्रन्थ होने के कारण अलंकार चन्द्रिका। रामालंकार के प्रारम्भ में कवि ने अपना वंश परिचय विस्तार पूर्वक दिया है। इसके अनुसार नन्दनाथ दीक्षित दक्षिण से गोकुल में आये। उनके पुत्र रामकृष्ण थे, जो अपनी विरादरी के गोकुलस्थों के सरदार थे। रामकृष्ण के पुत्र बलभद्र जू हुये, जिनका स्वभाव ही जप, तप, यज्ञ का था। बल्लभाचार्य

---

(१) प्राचीन वार्ता रहस्य भाग ३, पृष्ठ २४–२५; उसी ग्रंथ का गुजराती विवरण, पृष्ठ १–६। (२) खोज रि० १६००।२३; १६२६।१२३ डी (३) खोज रि० १६००।२५ १६२६।१२३ बी. सी (४) खोज रि० १६२६।१२३ ए (५) खोज रि० १६००।२८ (६) खोज रि० १६०२।२१५ (७) खोज रि० १६०२।२३६

के किसी बंशज ने इनके पैर पूजे थे, और इन्हें सोने के पंचपात्र और अनेक सामग्रियाँ दी थीं, तथा इन्हें भट्टमणि कहा था। इन बलभद्र जू के पुत्र यदुनाथ कवि हुये, जो परम पंडित एवं रामविलास के रचयिता थे। इन यदुनाथ के तीन पुत्र हुये। सबसे ज्येष्ठ थे केशव राय, मझले थे गोप और कनिष्ठ थे बालकृष्ण। इन गोप ने गोकुल से ओरछा आकर, पृथ्वी सिंह के आश्रय में रहकर, रामालंकार ग्रंथ की रचना की :—

दच्छिन ते दीछित प्रगट, नन्द नाथ अवतार
राम कृष्ण तिनके तनय, गोकुलस्थ सरदार २
तिनके सुत बलभद्र जू, जप तप जज्ञ सुभाइ
बल्लभ कुल प्रभु जगत गुरु, पूजो जिनके पाइ ३
कंचन की पँचहइ दई, अरु लदाउ को ठाम
भट्टनि-मनि सबते सरस, महापात्र तुव नाम ४
तिनके सुत जदुनाथ कवि, पंडित परम प्रवीन
राम विलास प्रकाश कर, सदा भागवत लीन ५
तिनके प्रगटे तीन सुत, जेठे केशव राय
मझले सुत कबि गोप जू, बालकृष्ण लघु भाय ६
नगर ओरछे आइ कै, पृथ्वीसिंह नृप पास
बैठि जज्ञसाला सरस, कीन्हें ग्रन्थ प्रकाश ७

खोज रिपोर्ट में अनुमान किया गया है कि गोप का पूरा नाम सम्भवतः गोपाल भट्ट था। ओरछा के राजा पृथ्वीसिंह का राज्य-काल १७३५-५२ ई० दिया गया है। अतः गोप कवि का रचना-काल भी सम्बत् १७९२-१८०९ वि० हुआ और उन्होंने रामालंकार की रचना सम्बत् १८०० के आस-पास किसी समय की, सम्बत् १७९३ के पूर्व तो की नहीं। पंडित मयाशंकर जी याज्ञिक के अनुसार गोप सम्बत् १७७२ में उपस्थित थे।[1] विनोद में गोपा और गोप को दो कवि माना गया है। गोपा का उल्लेख संख्या १२१ पर, गोप का संख्या ११५ एवं ६६३।३ पर हुआ है। विनोद में गोपा का विवरण सरोज के आधार पर एवं गोप का खोज के आधार पर है। वस्तुतः दोनों एक ही कवि हैं। श्री भगीरथ मिश्र ने भी गोप और गोपा को एकही कवि माना है।[2] सरोज में दिया हुआ गोपा का सम्बत् १५९० अशुद्ध है।

१७२।१४२

(२५) गोकुलनाथ बंदीजन, बनारसी, कवि रघुनाथ के पुत्र, सम्बत् १८३४ में उ०। इनका चेतचन्द्रिका ग्रन्थ कवि लोगों में प्रामाणिक समझा जाता है और गोविन्द सुखद विहार नामक दूसरा ग्रन्थ वहुत सुन्दर बना है। यह कवि महाराजा चेत सिंह काशीनरेश के प्राचीन कवीश्वर हैं। चेतचन्द्रिका में राजा की वंशावली का विस्तारपूर्वक वर्णन है। चौरा गाँव जो पंचकोसी के भीतर है, उसमें इनका घर है। महाराजा उदित नारायण की आज्ञानुसार, अष्टादसपर्व भारत के हरिवंश पर्यन्त का भाषा में उल्था किया है। गोपीनाथ इनके पुत्र और मणिदेव गोपीनाथ के शिष्य भी

---

(१) मर्यादा वर्ष १०, संख्या ३, सन् १९१५ ई० (२) हिन्दी काव्य शास्त्र का इतिहास, पृष्ठ ५१

भारत के उल्था में शरीक हैं। काशी में रघुनाथ कवीश्वर का घराना कविता करने में महा उत्तम और इस भारतवर्ष में सूर्य के समान प्रकाशमान् है।

सर्वेक्षण

गोकुलनाथ जी काशी के प्रसिद्ध कवि रघुनाथ बन्दीजन के पुत्र थे। यह काशीनरेश महाराजा बरिबण्ड सिंह (शासन काल १७९७-१८२७ वि०), महाराजा चेत सिंह (शासनकाल १८२७-३८ वि०) और महाराजा उदित नारायण सिंह (शासन काल सम्वत् १८५२-९२ वि०) के आश्रय में रहे। खोज में इनके निम्नांकित ग्रन्थ मिले हैं :—

(१) चेतचन्द्रिका—१९०४।१२, १९०६।६६ बी, १९२०।५१, पं १९२२।१३०। यह अलंकार ग्रन्थ है और चेत सिंह के नाम पर बना है। इसका रचना काल नहीं दिया गया है। यह भारत जीवन प्रेस, काशी, से प्रकाशित भी हो चुका है।

(२) राधाकृष्ण विलास—१९०३।१५। यह ग्रन्थ सम्वत् १८५८ में रचा गया :—

बसु[८] सर[५] बसु[८] विधु[१] (बरस मैं) माधव मास अमंद
ग्रन्थ कर्यो प्रारम्भ लहि पून्यो पूरन चन्द

ग्रन्थ में राधाकृष्ण चरित्र के साथ-साथ नायिका भेद भी है।

(३) राधा नखशिख—१९०६।६६ सी। इस ग्रन्थ में ९१ सोरठे हैं।

(४) नाम रत्नमाला या अमरकोष भाषा—१९००।२, १९०६।६६ ए। इस ग्रन्थ की रचना सम्वत् १८७० में हुई :—

गगन[०] अद्रि[७] बसु[८] विधु[१] सम्वतवर कार्तिक पुन्य कदंब
सुकुल पंचमी पाय पुन्य भव कियो कोष प्रारम्भ

(५) सीताराम गुणार्णव—१९०४।२३। यह अध्यात्म रामायण का अनुवाद है।

(६) कवि मुख मंडन—१९०३।३५। काशी नरेश महाराजा बरिबण्ड सिंह की आज्ञा से २१ दिनों में लिखित अलंकार ग्रन्थ।

'गोविन्द सुखद विहार' की कोई प्रति नहीं मिली है। हो सकता है कि यह राधाकृष्ण विलास का ही दूसरा नाम हो। इन सातों ग्रन्थों से अधिक महत्वपूर्ण कार्य इनका महाभारत दर्पण नामक महाभारत का भाषानुवाद है। इसे इन्होंने अपने पुत्र गोपीनाथ और शिष्य मणिदेव की सहायता से पूर्ण किया था। अनुवाद सम्वत् १८३० में महाराजा उदित नारायण की आज्ञा से प्रारम्भ हुआ और ५४ वर्ष के पश्चात् सम्वत् १८८४ में पूर्ण हुआ। इस महान् ग्रन्थ के निम्नांकित अंश[१] गोकुलनाथ जी द्वारा अनूदित हुए :—

(१) आदि पर्व, (२) सभा पर्व, (३) बन पर्व, (४) अध्यायों को छोड़कर, इन्हें मणिदेव ने पूरा किया), (४) विराट पर्व, (५) उद्योग पर्व (६) भीष्म पर्व (केवल ५ अध्याय, शेष इनके पुत्र गोपीनाथ ने पूरा किया), (७) द्रोण पर्व (केवल ४ अध्याय, शेष इनके पुत्र गोपीनाथ ने पूरा किया) (८) शान्ति पर्व (केवल ९ अध्याय, ३० अध्याय गोपीनाथ ने अनूदित किये।)

---

(१) विनोद, भाग २, पृष्ठ ७४१

मणिदेव गोपीनाथ के शिष्य नहीं थे, गोकुलनाथ के ही शिष्य थे।[1]

१७३।१४५

(२६) गोपीनाथ बन्दीजन, बनारसी, गोकुल नाथ के पुत्र, सं० १८५० में उ० । इनकी अवस्था का बहुत-सा भाग भारत के उल्था करने में व्यतीत हुआ, शेष काल शृङ्गारादि नवरसों के काव्य में बीता। हमने भारत के सिवाय और कोई ग्रन्थ नायिका भेद अथवा अलंकार इत्यादि का इनका बनाया नहीं देखा। शृंगार में स्फुट कवित्त देखे हैं। लोग कहते हैं कि महाराजा उदितनारायण ने भारत का भाषा करने के लिये एक लक्ष रुपये इन्हें दिये थे।

सर्वेक्षण

गोपीनाथ, गोकुलनाथ बन्दीजन बनारसी के पुत्र थे। यह काशीनरेश महाराज उदितनारायण सिंह (शासन काल १८५२-९२ वि०) के आश्रित थे। इन्होंने अपने पिता गोकुल नाथ और उनके शिष्य मणिदेव की सहायता से उक्त काशी नरेश की आज्ञा से महाभारत का अनुवाद विविध छंदों में किया था। सरोज में दिया हुआ सम्बत् १८५० इनका उपस्थिति काल है। इन्होंने महाभारत के निम्नांकित अंशों का अनुवाद किया था :—[2]

(१) भीष्म पर्व (५ अध्याय छोड़कर, इन्हें इनके पिता गोकुल नाथ ने अनूदित किया था), (२) द्रोण पर्व (४ अध्याय छोड़कर, इन्हें इनके पिता गोकुलनाथ ने अनूदित किया था), (३) अश्वमेध पर्व, (४) आश्रमवासिक पर्व, (५) मुशल पर्व. (६) स्वर्गारोहण पर्व, (७) शांति पर्व (केवल ३० अध्याय, इसके ९ अध्यायों का अनुवाद इनके पिता गोकुलनाथ ने किया था।), (८) हरिवंश पुराण।

१७४।१६२

(२७) गोकुलबिहारी, सम्बत् १६६० में उ०। इनकी कविता मध्यम है।

सर्वेक्षण

सरोज में इनका एक कवित्त उद्धृत है जिसमें कृष्ण और कंस के कुबलयापीड़ हाथी का सामना वर्णित है।

झूमत झुकत मतवारो अति भारो गज
गरजन गरजत महा प्रलै काल की
कोमल कमल उत गोकुल बिहारी लाल
जैसी कोउ कुञ्ज में फिरन कंजनाल की

कुछ पता नहीं कवि का नाम गोकुल है, गोकुल बिहारी है, गोकुल विहारी लाल है, अथवा केवल लाल है या सब कृष्ण के लिये ही प्रयुक्त हुआ है। इस कवि के सम्बन्ध में कोई भी सूत्र सुलभ नहीं।

१७५।१५६

(२८) गोपनाथ कवि सम्वत् १६७० में उत्पन्न। इनके बहुत अच्छे कवित्त हैं।

(१) विनोद, भाग २, पृष्ठ ७३९ (२) वही, पृष्ठ ७४१

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध में कोई सूचना सुलभ नहीं।

१७६। १४७

(७९) श्रीगुरु गोविन्द सिंह शोढ़ी खत्री पंजाबी, सम्बत् १७३८ में उ०। यह गुरु साहब गुरु तेगबहादुर के आनन्द पुर पटना शहर में उत्पन्न हुये थे। गुरु तेगबहादुर का औरंगजेब ने बध किया था। हिन्दुओं के मन्दिर इत्यादि खुदाने के कारण रुष्ट होकर गुरु गोविन्द सिंह ने नैना देवी के स्थान में महा घोर तप द्वारा वरदान पाकर सिख-मत को स्थापित कर एक ग्रन्थ बनाया, जिसमें इनके सिवाय और कवि महात्माओं का काव्य भी है, और शिष्य लोग जिसको ग्रन्थ साहब कहते हैं। इसमें भविष्य काल का भी वर्णन है। गुरु साहब ने ब्रजभाषा, पंजाबी और फ़ारसी, तीनों जबानों में महासुन्दर कविता की है।

सर्वेक्षण

गुरु गोविन्द सिंह सोढ़ी खत्री जाति के पंजाबी और सिक्खों के दसवें और अंतिम गुरु थे। इनका जन्म पूस सुदी ७, सम्बत् १७२३ में पटना में और सत्यलोक-वास सम्बत् १७६५ में हुआ। यह सिक्खों के नवें गुरु तेगबहादुर के पुत्र थे। इनके बनाये हुये ग्रन्थ निम्नांकित हैं—

(१) सुनीति प्रकाश—नीति सम्बन्धी रचनायें।
(२) सर्वलोह प्रकाश—नानक की रचनाओं की टीका।
(३) प्रेम सुमार्ग—सिक्ख धर्म के लक्ष्य।
(४) बुद्धिसागर—भजन संग्रह।
(५) चंडी चरित्र—दुर्गा सप्तशती की कथा। इसके तीन अनुवाद हैं। सवैयों में, पौड़ियों में और नाना छंदों में।
(६) गोविन्द रामायण।
(७) त्रियाचरित्रोपाख्यान।
(८) जफ़र नाना—फारसी में

इनमें से गोविन्द रामायण का प्रकाशन अभी हाल ही में श्रीरामचन्द्र वर्मा ने अपने साहित्य रत्नमाला कार्यालय, काशी से किया है। त्रियाचरित्रोपाख्यान का एक अंश 'भूप मंत्री संवाद' सभा की खोज (१९२६। १५५) में मिला है। इस ग्रन्थ में ४०४ स्त्री चरित्र वर्णित हैं। इसका रचना काल सम्बत् १७५३ है। दशम ग्रन्थ इनकी प्रायः समस्त रचनाओं का संकलन है।[१]

गुरु गोविन्द सिंह हिन्दी, फ़ारसी, पंजाबी के अच्छे ज्ञाता और कबि थे। यह न तो सिख-मत के प्रवर्त्तक थे और न गुरु ग्रन्थ साहब के रचयिता। सिक्ख मत का प्रवर्तन गुरु नानक ने किया था और गुरु गोविन्द सिंह ने सिक्खों को एक सैनिक शक्ति के रूप में बदला। गुरु ग्रन्थ साहब के संकलयिता सिक्खों के ५ वें गुरु अर्जुन देव थे।

---

(१) शुक्ल जी का इतिहास, पृष्ठ ३३१-३२, हरिऔध कृत हिन्दी भाषा और साहित्य का विकास, पृष्ठ ३८२-९० तथा ग्रियर्सन कवि संख्या १६६

सरोज में दिया हुआ सम्बत् १७३८ गुरु गोविन्द सिंह का उपस्थिति काल है। इस समय उनकी अवस्था १५ वर्ष की थी। सप्तम संस्करण में १७२८ है, प्रथम में १७३८।

१७७। १५४

(३०) गोविन्द, अष्टम कवि, सम्बत् १६७० में उ०। इनके कवित्त हजारे में हैं।

सर्वेक्षण

सरोज में गोविन्द अटल का नीति सम्बन्धी एक छप्पय उद्धृत है, जिसका अंतिम चरण यह है—

गोबिन्द अटल कवि नन्द कहि, जो कीजै सो समय सिर

कुछ संदेह होता है कि कवि का नाम गोविन्द अटल है अथवा कवि नन्द। यह भी हो सकता है कि कवि का भूत नाम नन्द हो और गोविन्द अटल विशेषण के ढंग पर व्यवहृत होने वाला उपनाम हो। इस कवि के सम्बन्ध में अभी तक कोई सूचना सुलभ नहीं।

१७८। १५५

(३१) गोविन्द जी कवि, सम्बत् १७५७ में उ०। ऐजन। (इनके कवित्त हजारा में हैं।)

सर्वेक्षण

सरोज में इस कवि का एक पद उद्धृत है, जिसके अंतिम चरण में कवि छाप रसिक गोविन्द है।

मुहिं तन तकत बकत पुनि मुसिकत
रसिक गो -द अभिराम लँगरवा

रसिक गोविद जी निम्बार्क सम्प्रदाय के वैष्णव थे और जयपुर के रहने वाले थे। शुक्ल जी ने अपने इतिहास में इनके निम्नांकित ६ ग्रन्थों का विवरण दिया है—

१. रामायण सूचनिका—३२ दोहों में रामायण की कथा।

२. रसिक गोविन्दानन्द घन—यह एक रीति ग्रन्थ है। इसकी रचना सम्बत् १८५८ में हुई थी—

बसु[८] सर[५] बसु[८] ससि[१] अंक रवि दिन पंचमी बसंत
रच्यो गोविन्दानन्दघन वृन्दाबन रसवन्त

इस ग्रन्थ में कवि ने अपना पूरा परिचय दिया है।

जादोदास साह को सपूत पूत सालिग्राम
सुत न रानी (?) बात मुकुन्द कहायो है
जैपुर बसैया विलसैया कोक काव्यनु को
ताको लघु भैया श्री गोविन्द कवि गायो है
सम्पति विनासी तब चित्त में उदासी भई
सुमति प्रकासी यातो ब्रज को सिधायो है

सब हरि व्यास कृपा विनही वितास रास
सब सुख रासि वास वृन्दावन पायो है

दोहा

मा ान गुविन्द को, पिता जु सालिगराम
श्री सरवेश्वर शरण गुरु, बा विन्दाबन धाम
रच्यो गोबिन्दानन्द घन, श्री नारायण हित्त
कृष्णादत्त पांडे 'हैंनति दियो जानि निज मित्त

यह नारायण जिनके लिये ग्रन्थ रचा गया इन्हीं के बड़े भाई बालमुकुन्द के पुत्र थे।

बेटा बालमुकुन्द कौ श्री नारायण नाम
तासु हित ग्रन्थ ये रसिक गो वँद अभिराम

एक छंद में कवि ने अपना परिचय पुनः दिया है।

वैष्णव रसिक गोविन्द लोक कोक ाध्य वलसैया
सालिग्राम सुत जात नटनी बाल मुकुन्द को भैया
जयपुर जन्म जुगल पद सेवी नित्य बिहार गवैया
श्री हरि व्यास प्रसाद पाय भो वृन्दाविपिन वसैया

३. लछिमन चन्द्रिका—यह रसिक गोविन्दानन्दघन के लक्षणों का संक्षिप्त संग्रह है। यह संग्रह-लछिमन कान्यकुब्ज के आग्रह से कवि द्वारा सम्बत् १८८६ में किया गया था।
४. अष्टदेश भाषा—ब्रज, खड़ी, पंजाबी, पूर्वी आदि ८ बोलियों में राधाकृष्ण-लीला का वर्णन।
५. पिंगल।
६. समय प्रबन्ध—८५ पद्यों में राधाकृष्ण की ऋतुचर्या।
७. कलिजुग रासो—१६ कवित्तों में कलिकाल की बुराइयों का वर्णन। रचना काल-सम्बत् १८६५।
८. रसिक गोविन्द—यह अलंकार ग्रन्थ है। रचना काल सम्बत् १८९०।
९. युगल रस माधुरी—इस ग्रन्थ में ालरो छंदों में राधाकृष्ण विहार वर्णित है। लछिमन चन्द्रिका और रसिक गोविन्द को छोड़ शेष सभी १९०६ की खोज में मिल चुके हैं।

सरोज में उद्धृत पद तो इन्हीं अलि रसिक गोविन्द का है। इनका रचनाकाल सम्बत् १८५०-९० है। अतः इनकी रचना हजारे से नहीं हो सकती। हजारे में किसी दूसरे गोविन्द की, सम्भवतः अष्टछापी गोविन्द स्वामी की रचना रही होगी।

१७१। १६६

(३२) गोविन्द दास ब्रजवासी; सम्बत् १६१५ में उ०। रागसागरोद्भव में इनकी कविता है। यह कवि नाभा जी के शिष्य थे।

सर्वेक्षण

सरोज में जो पद उद्धृत है, वह अष्टछापी गोविन्द स्वामी का है। गोविन्द स्वामी का जन्म

सम्बत् १५६२ में भारतपुर राज्यान्तर्गत आँतरी गाँव में हुआ था। वे सनाढ्य ब्राह्मण थे। वे विरक्त होकर महावन से आकर भगवद् भजन करते थे। इनके शिष्य भी थे, जो इनके पदों को गाया करते थे। सम्बत् १५९२ वि० में गोविन्द स्वामी ने विट्ठलनाथ जी से वल्लभसम्प्रदाय में दीक्षा ली। और तबसे वे गोवर्धन के निकट कदमों के एक मनोरम उपवन में रहने लगे जो आज गोविन्द दास की कदमखंडी नाम से प्रसिद्ध है। यह इतने सुन्दर गायक थे कि स्वयं तानसेन इनकी कला पर मुग्ध था। इनकी भी गणना अष्टछाप में है। पुष्टि-सम्प्रदाय की मान्यता के अनुसार इनका देहावसान फल्गुन वदी ७, सम्बत् १६४२ को गोवर्द्धन ही में हुआ।[१]

ब्रजवासी कवि के अनुसार गोविंद स्वामी का जन्म सम्बत् १५७७, चैत्र शुक्ल ९ को हुआ था। आपके पिता का नाम द्वारिका नाथ और माता का कालिंदी देवी था—

जनमे नाथ द्वारिका घर में
गोविंद स्वामी मातु कालिंदी आनँदधाम सुघर में
संबत पंद्रह सौ सत्तर द्रुति सात, मास मधुवर में
नौमी तिथि, पछ सुकल, जोग वरन सुभ कर में
ब्रजवासी कवि प्रगट भए हैं, नाथ सखा रसवर में [२]

गोविंद स्वामी ने अपने पिता से ही हिन्दी, संस्कृत, संगीत, वाद्य, वेद आदि की शिक्षा पाई। उनका स्वयं-कथन है—

लागे फेर सोंग्रे पढ़ाय
साँझ प्रात खान लागे पिता श्री समुझाइ
संग बालक गाँव के तो ज्ञान दीजौ भाइ
भेद भाषा वेद विद्या गान वाद्य सुभाई
कर दियो गुन रूप आगर चतुर नागर जाइ
'दास गोविँद' दया करिकै कर दियौ गति भाइ [३]

गोविन्द स्वामी का कोई ग्रन्थ नहीं है। ५०० के लगभग फुटकर पद हैं। विद्या विभाग, कांरोकोली द्वारा इनकी रचनाओं का एक सुन्दर सु-सम्पादित संस्करण अभी हाल ही में 'गोविन्द दास पदावली' नाम से प्रकाशित हुआ है। इसके पहले इनके केवल २५२ पद उपलब्ध थे।

सरोज में प्रमाद से गोविन्द स्वामी को नाभादास का शिष्य कहा गया है। सम्बत् १६१५ में तो नाभादास जी बहुत बच्चे रहे होंगे। गोविन्द स्वामी उस समय पूर्ण प्रौढ़ रूप में उपस्थित थे। भक्तमाल में अष्टछाप वाले गोविन्द स्वामी का उल्लेख १०२ संख्यक छप्पय में हुआ है। भक्तमाल में १९२ संख्यक छप्पय में एक भक्तमाली गोविन्द का वर्णन है, जिन्हें नारायण दास ने भक्तमाल पढ़ा दी थी। यह उसका अत्यन्त सुन्दर ढंग से एवं शुद्ध पाठ करते थे। सरोजकार ने इन्हीं गोविन्द दास भक्तमाली को नाभा का शिष्य कहा है, पर उदाहरण अष्टछापी गोविन्द स्वामी का दे दिया है और इस प्रकार दो व्यक्तियों को एक में मिला दिया है।

———

१. अष्टछाप परिचय, पृष्ठ २४१-४५

२,३. कल्याण, वर्ष ३३, अंक १, नवम्बर १९५९ में 'गोविंद स्वामी—एक अध्ययन, लेखक आचार्य श्री पीतांबर राव जी तेलंग।

१८० । १२६

(३३) गोविन्द कवि, सम्बत् १७६१ में उ० । यह कवीश्वर बड़े नामी हो गये हैं। इनका बनाया हुआ 'कर्णाभरण' बहुत कठिन और साहित्य में शिरोमणि है।

सर्वेक्षण

कर्णाभरण अलंकार ग्रन्थ है। यह भारत जीवन प्रेस, काशी से प्रकाशित हो चुका है। इसकी रचना सम्बत् १७६७ में हुई थी।

नग[७] निधि[९] ऋषि[७] विधु[१] बरस में सावन सित तिथि संभु
कीन्ह्यो सुकवि गुविंद जू कर्नाभरन अरंभु

प्रथम संस्करण में १७६१ के स्थान पर १७६८ है।

१८१। १६४

(६४) गुरुदीन पांड़े कवि, सम्बत् १८६१ में उ०। इन महाराज ने वाकमनोहर पिंगल बहुत बड़ा ग्रन्थ रचा है, जिसमें पिंगल के सिवाय अलंकार, षट्ऋतु, नखशिख इत्यादि और भी साहित्य के अंग वर्णन किये हैं। यह ग्रन्थ बहुत अपूर्व है और कवि लोगों के पढ़ने योग्य है।

सर्वेक्षण

ग्रन्थ के जो अंश सरोज में उद्धृत हैं, उनमें से तीन दोहे ये हैं :—

कहत चतुरमुख पंचपति नाय सीस तिन तीन
वाक मनोरथ ग्रन्थ मति प्रगटति कवि गुरुदीन

बहु ग्रंथन को विविध मत, अति विस्तार न पार
कहत सुकवि गुरुदीन निज मति मन रुचि अनुसार

सिसिर सुखद ऋतु मानिए माह महीना जन्म
सम्बत नभ रस वसु ससी वाक मनोहर जन्म

इन दोहों से स्पष्ट है कि ग्रन्थ का नाम वाकमनोहर है। यह साहित्य शास्त्र संबंधी सभी विषयों का निरूपण करता है। अतः सरोज में दिया हुआ इसका नाम वाकमनोहर पिंगल ठीक नहीं। शुक्ल जी ने इस ग्रन्थ का नाम 'बाग मनोहर' दिया है।[१] यह भी ठीक नहीं। इस ग्रन्थ के कर्त्ता गुरुदीन हैं, जिन्होंने इसकी रचना सम्बत् १८६० वि० में की। पुराने कवियों ने सर्वत्र रस से ६ का ही अर्थ लिया है। शुक्ल जी ने भी इसका रचनाकाल सम्बत् १८६० ही माना है।[२] पर शिवसिंह ने 'रस' से ९ और 'नभ' से एक का अर्थ लेकर कवि का समय सम्बत् १८९१ दिया है। सरोजकार ने अनेक स्थलों पर नभ को एक का सूचक माना है। इस ग्रन्थ में वर्णवृत्तों का भी प्रयोग हुआ है।

एक गुरुदीन पांड़े का शालिहोत्र नामक ग्रन्थ खोज में मिला है।[३] सम्भवतः यह सरोज वाले ही गुरुदीन पांड़े हैं।

वाक मनोहर के रचयिता गुरुदीन पाँड़े के निवास-स्थान का कुछ पता नहीं। एक गुरुदीन का पिंगल भाषा प्रस्तार नामक खंडित ग्रन्थ खोज में मिला है।[४] यह मोहन लाल गंज, लखनऊ के निवासी कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे। इनके भाई ईश्वरी प्रसाद के वंशज अभी तक उक्त ग्राम में हैं। कवि

१—हिन्दी साहित्य का इतिहास पृष्ठ ३०६। (२) वही (३) खोज रि० १९४४।८४ क ख, १९४७।६८ (४) १९४७।६९

वर्तमान ग्रन्थस्वामी के बाबा या परबाबा थे, जिनका समय १९०० के आस-पास होना चाहिये। बहुत सम्भव है पिंगल प्रस्तार वाले यह गुरुदीन, सरोज के अभीष्ट गुरुदीन पाँड़े ही हों।

१८२।१४९

(३५) गुरुदीन राय बन्द जन, मैपैतेपुर जिले सीतापुर के, विद्यमान हैं। यह कवि राजा रणजीत सिंह जाँगरे, ईसा नगर, जिले खीरी के यहाँ रहा करते हैं। कविता में निपुण हैं।

सर्वेक्षण

गुरुदीन राय बन्दीजन के सम्बन्ध में कोई सूचना सुलभ नहीं हो सकी है। एक अन्य गुरुदीन अवश्य मिले हैं जो सम्बत् १८७८ के पूर्व वर्तमान थे। यह दास मनोहर नाथ के शिष्य थे। इन्होंने आल्हा छंदों में श्रीरामचरित्र राग सैरा[१] और रामाश्वमेध यज्ञ व राम चरित्र[२] ग्रन्थों की रचना की थी।

१८३।१५०

(३६) गुरुदत्त कवि प्राचीन (१) सम्बत् १७८७ में उ०। यह कवि राय शिवसिंह सवाई जयसिंह के पुत्र के यहाँ थे।

सर्वेक्षण

सरोज में गुरुदत्त प्राचीन के तीन कवित्त उद्धृत हैं, जिनमें से प्रथम यह है :—

बाजत नगारे बीर गजात निसान गहे
गुरुदत्त तेज की अगारो लेखियतु हैं
काँपै कोप कीन्हों राव जै सिंह को नन्द आजु
नैन अरु कान लाल रंग लेखियतु है
सिंह सो समर पैठि सत्रुन की सेना पर
राव सिव सिंह वीर रूप पेखियत है
सनमुख आई सो सिरोही की फिरोही रन
मेटी जा सिरोही सो गिरो ही देखियतु है

प्रथम संस्करण में 'राव जै सिंह के नंद' पाठ है, पर सप्तम संस्करण में 'रावसिंह जू के नंद' पाठ हैं, इससे पिता के नाम में संदेह हो सकता है। पुनः प्रथम संस्करण में १७८७ दिया गया है, जो सप्तम संस्करण में १८८७ हो गया है। यह सब उलट पलट बहुत भ्रामक है।

सप्तम संस्करण में एक और भी उलट-पलट है। प्रथम संस्करण में पहले 'गुरदत्त शुक्ल' का वर्णन है, तदनन्तर गुरदत्त प्राचीन का। सप्तम में पहले गुरुदत्त प्राचीन को कर दिया गया है, गुरुदत्त शुक्ल को बाद में कर दिया गया है।

खोज में एक गुरुदत्त मिले हैं, जो ब्राह्मण हैं, जिनके पिता का नाम विष्णुदत्त और पितामह का दिनमणि है तथा जो भक्ति मंजरी[३] के रचयिता हैं। एक और गुरुदत्तके तीन ग्रन्थ 'कवित्त',

---

(१) खोज रि० १९०४।२४ (२) खोज रि० १९०९।१०१, १९२६।१३२ (३) खोज रिपोर्ट १९४७।९७।

'कवित्त श्री विन्ध्याचल देवी जी के' और 'कवित्त हनुमान जी के' खोज में मिले हैं।[1] पहले ग्रन्थ में सिक्खों के अकाली दल और गुरुगोविन्द सिंह की प्रशस्ति है।

१८४।१५१

(३७) गुरुदत्त कवि २, शुक्ल मकरन्द पुर अन्तर्वेद वाले, सम्बत् १८६४ में उ०। यह महाराज बड़े कवि थे। देवकी नन्दन, शिवनाथ, गुरुदत्त ये तीन भाई थे। तीनों महान् कवि थे। इनका बनाया पर्व विलास ग्रन्थ बहुत सुन्दर है।

सर्वेक्षण

गुरुदत्त और देवकी नन्दन यह दोनों भाई-भाई थे। शिवनाथ इनके पिता का नाम था :—

प्रकट भये शिवनाथ कवि सुकुल वंश में अंस
ताको सुत गुरुदत्त कबि कविता को अवतंस

—विनोद कवि संख्या१२४७

अवधूत भूषण में देवकी नन्दन ने भी अपने पिता का नाम शिवनाथ दिया है। देवकी नन्दन ने अवधूत भूषण की रचना सम्बत् १८५६ में की थी।[2] अतः सरोज में दिया हुआ गुरुदत्त का सम्बत् १८६४ यदि ठीक है तो उपस्थिति काल ही है।

गुरुदत्त जी का पर्व विलास खोज में मिला है। यह अत्यन्त प्रौढ़ रचना है। प्रत्येक कवित्त सवैये में कवि का पूरा नाम आया हुआ है। पर उपलब्ध प्रतियों से कवि के सम्बन्ध में कोई सूचना नहीं मिलती।[3] समय को ध्यान में रखते हुये असंभव नहीं कि गुरुदत्त प्राचीन भी यही गुरुदत्त हों।

मातादीन के कवित्त रत्नाकर के अनुसार गुरुदत्त जी पक्षी विलास की रचना के अनन्तर मकरन्द नगर, कन्नौज, छोड़कर गोरखपुर की ओर किसी राजा के यहाँ चले गए। यहीं इन्हें दो गाँव मिले। यहीं सं० १८६३ में इनका देहावसान हुआ। यह कान्यकुब्ज ब्राह्मण, शुक्ल थे।

१८५।१२८

(३८) गुमान जी मिश्र (१) साँड़ीवाले, सम्बत् १८०५ में उ०। यह कवीश्वर साहित्य में महानिपुण, संस्कृत में महा प्रवीण, काव्यशास्त्र को मिश्र सर्वसुख से पढ़कर प्रथम दिल्ली में मुहम्मद शाह बादशाह के यहाँ राजा जुगल किशोर भट्ट के पास रहे। पीछे राजा अली अकबर खाँ मुहम्मदी अधिपति के पास रहे। अली अकबर बड़े कवि थे। उनके यहाँ निधान, प्रेम इत्यादि बड़े-बड़े कवि नौकर थे। निदान गुमान जी ने श्री हर्ष कृत नैषध काव्य को नाना छंदों में प्रति श्लोक भाषा करि ग्रन्थ का नाम काव्य कलानिधि रक्खा। पंच नली, जो नैषध में एक कठिन स्थान है, उसको भी सरल कर दिया। इस ग्रन्थ के देखने से गुमान जी का पांडित्य विदित होता है। निम्नश्लोकानुवाद कितना सुन्दर है :—

तोटक

कवि तानि सुमेरुन बाँटि दियो
जलदावन सिंधु न सोकि लियो

---

(१) खोज रिपोर्ट १९४१।५० क ख ग (२) यही ग्रंथ, कवि संख्या ३६४
(३) खोज रि० १९२३।१४५ ए बी।

दुहुँ ओर बँधी जुलफें सुभती
नृप मानप औ यश को अवली

सर्वेक्षण

गुमान मिश्र, साँड़ी, जिला हरदोई के रहने वाले थे और सोमनाथ मिश्र के पुत्र थे।[1] इनके तीन ग्रन्थ खोज में मिले हैं :—

१—नैषध ग्रन्थ—१९२३।१४१ वी। यह ग्रन्थ पहले श्री वेंकटेश्वर प्रेस, बम्बई से प्रकाशित हुआ था। इधर इसका एक अच्छा संस्करण काव्य कलानिधि नाम से हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग ने निकाला है। यह ग्रन्थ मोहम्मदी जिला सीतापुर नरेश, अली अकबर खां के आश्रय में बना था। ग्रन्थारम्भ में कवि ने मुहम्मदी और वहाँ के उक्त राजा का पूरा विवरण दिया है।

खाँ साहेब के हुकुम ले मिश्र गुमान विचारि
वरनो नैवध की कथा संस्कृत की अनुहारि १७

कवि के गुरु का नाम मिश्र सर्वसुख था :—

मिश्र सर्व सुख सुकविवर श्री गुरुचरन मनाइ
वरनि कथा हौं कहत हौं है है बड़ी सहाइ १८

ग्रन्थ की रचना सम्बत् १८०३ में हुई हैं :—

संयुत प्रकति पुराण सै सम्बतसर निरदंभ
सुर गुरु सह सित सप्तमी कर्‌यो ग्रंथ प्रारम्भ १९

माधुरी[2] में मिश्र सर्व सुख को ही प्रमाद से ग्रन्थकर्त्ता मान लिया गया है और ग्रन्थ का रचना काल सम्बत् १८२४ माना गया है, क्योंकि सांख्य शास्त्र के अनुसार प्रकृतियाँ २४ हैं।

२—अलंकार दर्पण—१९१२।९८ ए, १९४१।४९० । अलंकार का यह ग्रन्थ सम्बत् १८१८ में रचा गया।

संवत दस वसु सै जहाँ बोई आगे देहु
माधव शुक्ला पंचमी वार सुकवि गनि लेहु

यह अलंकार ग्रन्थ मम्मट के अनुसार है :—

अलंकार संक्षेप सो मैं बरने बुधि बोध
मम्मट मत अनुसार सो तीजो कवि जन सोधि ४२९

पुष्पिका से ज्ञात होता है कि यह ग्रन्थ बिसवां, जिला सीतापुर के तालुकेदार गुलाल चन्द के आश्रय में बना :—

"इति श्री विविधविद्यानिधान महालक्ष्मी कृपावलोकननिधान श्री लाला आत्माराम गुलाल चन्द कृते मिश्र गुमान विरचिते अलंकार दर्पण अर्थालंकार सम्पूर्णम् शुभम्"

गुलाल चन्द्रोदय—१९१२।९८ बी, १९२३।१४१ ए, १९२६।१५७ ए, बी। नवरस और नायिका भेद का ग्रन्थ है। इसकी रचना सम्बत् १८२० में हुई :—

संबत नभ॰ लोचन[2] दुरद[8] भू[1] प्रमान सुख सार
पौष सुकुल दशमी गुरौ भयो ग्रन्थ अवतार

यह ग्रंथ भी बिसवाँ के उक्त तालुकेदार गुलाल चन्द के ही लिये बना। बिसवां का वर्णन करते हुए कवि कहता है :—

(१) खोज रि० १९१२।९८ (२) माधुरी वर्ष ४, खंड २, अंक १

धरम के धाम, नरनारी अभिराम, ऐसी
बीसनाथ नगरी सु बिसवाँ बसति है।

ग्रन्थ की रचना भरत के अनुसार हुई है :—

निरख सकल साहित्य मत, भरत मुनीस विचारि
श्री गुलाल चँद चन्द्र को, रचो उदै विस्तारि

इन तीनों पुस्तकों में कवि का नाम गुमान मिश्र ही लिखा गया है।

१८६।१३१

(३९) गुमान कवि (२) सम्वत् १७८८ में उ०। इन महाराज ने 'कृष्णचन्द्रिका' नामक ग्रंथ बनाया है।

सर्वेक्षण

यह गुमान त्रिपाठी थे। महेवा छतरपुर बुन्देल खंड के निवासी थे। गोपालमणि त्रिपाठी के पुत्र थे। इनके अन्य तीन भाई दीप साहि, खुमान, और अमान थे। इनका कविता काल सम्बत् १८३८ वि० है। सरोज में दिया सम्बत् १७८८ इनके जन्म काल के निकट है। इनके दो ग्रन्थ खोज में मिले हैं।—

(१) छंदाटवी—१९०६। ४४ बी। यह पिंगल ग्रन्थ है।

(२) श्रीकृष्णचन्द्रिका—१९०५। २३, १९०६। ४४ ए। इस ग्रन्थ की रचना सम्बत् १८३८ में हुई :—

वसु[८] गुन[३] बसु[८] ससि[१] ठीक दै, यह संवत निरधार
मधु माधव सित पच्छ की, त्रयोदसी गुरुवार

खुमान ने कृष्णायन लिखा और गुमान ने कृष्णचन्द्रिका। कृष्णचन्द्रिका अनुवाद नहीं है। कृष्णायन तुलसी-कृत रामायण की शैली में एवं कृष्णचन्द्रिका रामचन्द्रिका के प्रतिपक्ष में विविध छंदों में लिखित हैं। उदय शंकर भट्ट ने कृष्णचन्द्रिका का सम्पादन करके १९३५ ई० के आस-पास लाहौर से प्रकाशित कराया था।

ग्रियर्सन में (३४९) गुमान मिश्र और गुमान कवि दोनों को एक में मिला दिया गया है। शुक्ल जी ने भी दोनों को एक कर दिया है।[२] बुन्देल-वैभव में भी दोनों को अभिन्न मान लिया गया है।[३] श्री विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने भी इन्हें एक मान लिया है[४]। यह सब ठीक नहीं। विनोद में गुमान मिश्र का वर्णन ७३६ संख्या पर और गुमान तिवारी का १०३२ संख्या पर उचित ही अलग-अलग हुआ है।

१८७।१३३

(४०) गुलाल कवि, सम्वत् १८७५ में उ०। यह कविराज कविता में महा निपुण थे। इनके कवित्तों और इनके बनाये शालिहोत्र ग्रन्थ से इनका पांडित्य प्रगट होता है।

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध में कोई सूचना सुलभ नहीं।

---

(१) खोज रिपोर्ट १९०५। २३ (२) हिन्दी साहित्य का इतिहास पृष्ठ ३५९-६० (३) बुन्देल वैभव भाग २, पृष्ठ ४४६ (४) हिंदी साहित्य का अतीत, भाग २, पृष्ठ ८१७-२४.

१८८।१३८

(४१) ग्वाल कवि बन्दीजन (१) मथुरा निवासी, सम्बत् १८७९ में उ० । यह कवि साहित्य में बड़े चतुर हो गये हैं। इनके संगृहीत दो बहुत बड़े-बड़े ग्रन्थ हमारे पास हैं। इनके नखशिख, गोपी पचीसी, यमुना लहरी इत्यादि छोटे-छोटे ग्रन्थ और साहित्य दूषण, साहित्य दर्पण, भक्ति भाव, दोहा शृंगार, शृंगार कवित्त भी बहुत सुन्दर ग्रन्थ हैं।

सर्वेक्षण

ग्वाल वृन्दावन में उत्पन्न हुये थे और मथुरा में रहते थे।

वासी वृन्दा विपिन को, श्री मथुरा सुखवास

—यमुना लहरी, (सरोज)

यह जाति के वन्दीजन थे। इनके पिता का नाम सेवाराम था—

विदित विप्र वन्दी विसद बरने व्यास पुरान

ता कुल सेवाराम को सुत कवि ग्वाल सुजान

—जमुना लहरी, (सरोज)

सरोज में इनका समय सम्बत् १८७९ दिया गया है, जो यमुना लहरी का रचना काल है।

संवत निधि[९] ऋषि[७] सिद्धि[८] ससि[१] कार्तिक मास सुजान

पूरनमासी परम प्रिय राधा हरि को ध्यान

ग्वाल कवि का जन्म सम्बत् १८५९ और मृत्यु सम्बत् १९२४ है। शुक्ल जी ने इनका रचना-काल १८७९-१९१८ माना है। खोज में ग्वाल कवि के निम्नांकित ग्रन्थ मिले हैं:—

(१) अलंकार भ्रम मंजन—१९०५।१२, १९१७।६५ ए। १९३२।७३ ए, इस ग्रन्थ में ४२६ छंद हैं। ग्रन्थ में कवि का नाम आया है, रचना काल नहीं दिया गया है। ग्रन्थ गद्य-पद्य मय है।

(२) (अ) षट्ऋतु सम्बन्धी कवित्त १९३५।३३वी

(ब) ऋतु सम्बन्धी कवित्त १९३५।३३ सी

(स) ग्रीष्मादि ऋतुओं के कवित्त १९३५।३३ ए

(द) कवित्त बसंत १९३८।५५ बी, यह कोई स्वतन्त्र ग्रन्थ न होकर ग्रन्थ का एक अंश मात्र है।

(य) होरी आदि का छंद १९३८।५५ सी, यह भी षट्ऋतु वर्णन का एक अंश प्रतीत होता है।

(३) (अ) कवित्तों का संग्रह १९३५।३३ ई

(ब) कवित्त संग्रह १९३२।७३ बी

(स) फुटकर कवित्त १९३५।३३ एफ

(द) ग्वाल कवि के कवित्त १९३५।३३ डी

(य) शान्तरसादि के कवित्त १९३५।३३ जी

ये सभी फुटकर संग्रह हैं, स्वतन्त्र ग्रन्थ नहीं।

(४) कवि दर्पण या दूषण दर्पण १९०९।१०२, १९१७।६५सी, राजस्थान रि० भाग ३, पृष्ठ ११२। ग्रन्थ की रचना सम्बत् १८९१ में हुई।

संवत ससि[1] निधि[9] सिद्धि[8] ससि[1] आस्विन उत्तम मास
विजै दसमि रबि प्रगट हुअ दूषन मुकुर प्रकास ४

ग्रन्थकर्त्ता ने इस ग्रन्थ में अपना परिचय दिया है—

वन्दी विप्र सु ग्वाल कवि श्री मथुरा सुखधाम
प्रगट कियो या ग्रंथ को दूषण दर्पण नाम ३

ग्रन्थ गद्य-पद्य दोनों में हैं।

(५) कवि हृदय विनोद १९२०।५८ सी, १९२३।१४६ ए, १९२६।१३५ बी। इन ग्रन्थों में देवी, गंगा, यमुना, कृष्ण, राम की स्तुति और शोभा, गजोद्धार, बलदेव, शान्त रस के कवित्त हैं। फिर ब्रज भाषा, पूर्वी भाषा, गुजराती भाषा, पंजाबी भाषा के छंद हैं, तदनन्तर षट्ऋतु वर्णन, कलियुग वर्णन प्रस्तावक, नेत्र, कुच तथा फुटकर शृङ्गारी छंद और अंत में गोपी पचीसी है। इस प्रकार स्पष्ट है कि यह कोई स्वतन्त्र ग्रन्थ नहीं है, कई छोटे-छोटे ग्रन्थों का संग्रह है।

(६) गोपी पचीसी १९०१।९०, १९२०।५८ ए, १९२३।१४६ सी, १९२६।१६१ ए, १९२९। १३५ ए, द १९२१।३४. इस लघु ग्रन्थ में गोपी उद्धव संवाद अत्यन्त ललित कवित्तों में वर्णित हैं। यह 'कवि हृदय विनोद' में भी संकलित है।

(७) नखशिख १९०१।८९, १९२९।१३५ सी, इसमें कृष्ण का नखशिख है। ग्रन्थ में कुल ६६ छंद, मुख्यतया कवित्त हैं। इसकी रचना सम्वत् १८८४ में हुई।

वेद[4] सिद्धि[8] अहि[8] रैनिकर[1] संवत आस्विन मास
भयो दसहरा कौ प्रगट, नख सिख सरस प्रकाश

(८) प्रस्तार प्रकाश १९३८।५५ ए, यह पिंगल सम्बन्धी गद्य-पद्य-मय ग्रन्थ है।

(९) प्रस्तावक कवित्त १९३८।५५डी। इसमें शान्त रस एवं नीति के कवित्त हैं। यह ग्रन्थ 'कवि हृदय विनोद' में संकलित हैं।

(१०) वंशी बीसा १९२०।६५बी, १९३२।७३ ई मुरली सम्बन्धी २० कबित्त।

(११) भक्त भावना १९०५।१४, १९२०।६५ बी। यह जमुना लहरी, नखशिख, गोपी पचीसी, राधाष्टक, कृष्णाष्टक, रामाष्टक, गंगा देवी गणेशादि का ध्यान, षट्ऋतु वर्णन, अन्योक्ति आदि-आदि का संकलन हैं। ग्रन्थारम्भ में कवि ने स्वयं स्वीकार किया है —

तिनके चरनांबुजन कों करि साष्टांग प्रनाम
ग्रन्थ फुटकरन को करत एक ग्रन्थ अभिराम २

यह संकलन सम्बत् १९१९ में हुआ।

संवत निधि[9] ससि[1] निधि[9] ससी[1], मास असाढ़ बखान
सित पख द्वितिया रवि विषे, प्रगट्यो ग्रन्थ सुजान ४

(१२) यमुना लहरी १९०१।८८, १९२०।५८ बी। यह ग्रन्थ सम्बत् १८७९ में रचा गया था। यह ग्रन्थ भक्त भावना के अन्तर्गत संकलित है।

(१३) रस रंग १९०५।११, १९३२।७३ डी, राज० रि० भाग ३, पृष्ठ १३९। यह नायिका-भेद का ग्रन्थ है। ग्वाल का षट्ऋतु वर्णन इसी ग्रन्थ का एक अंश है। ग्रन्थ बड़ा है। इसमें कुल १५३ पन्ने हैं। इसकी रचना सम्बत् १९०४ में हुई।

संवत वेद[४] ख[०] निधि[९] ससी[१] माधव सित पख संग
पंचम ससि को प्रगट हुअ, ग्रन्थ जु यह रस रंग
—खोज रि० १६०५।११

(१४) रसिकानन्द १६००।८४, १६२६।१६१ बी, राज० रि० भाग ३, पृष्ठ १४४। इस ग्रन्थ में नायिका-नायक भेद, हाव, भाव, रस वर्णन आदि है। यह ग्रन्थ नाभा नरेश जसवंत सिंह के लिए लिखा गया, ऐसा राजस्थान रिपोर्ट में कहा गया है। ग्रन्थारम्भ में पद्य ४ से २५ तक नाभा नगर, राज वंश, तुरंग और राज सभा का वर्णन है :—

१. श्री हमीर सिँह नन्द नर श्री जयवंत मृगेस
आयु तनय धन राजयुत वृद्धि करै परमेस

२. नाभा के नरिन्द आगे कबित कह्यौ करैं तो
कवि ताकी कविता की सिकल भयो करै।

विवरण में ग्रंथ का रचनाकाल संबत् १८७९ दिया गया है :—

संवत निधि[९] ऋषि[७] सिद्धि[८] ससि[१] श्याम पत्त मधु मास
अदितबार सु द्वादसी रसिकानन्द प्रकास

१५. लछना व्यंजना १६३२।७३ सी। ग्रंथ की पुष्पिका से ज्ञात होता है कि ग्वाल ने कोई ग्रंथ साहित्यानन्द नाम का लिखा था, यह उसी का एक प्रकरण है।

इति श्री साहित्तानंदे ग्वाल कवि विरचिते रूढादि शब्द अभिधा, लछना, व्यंजना वर्णनं नाम एकादशमो स्कन्द।

१६. हम्मीर हठ १६०५।१३।१६४१।४६१ ग्रंथ की रचना सम्बत् १८८३ में हुई।

संबत गुन[३] सिधि[८] सिधि[८] ससी[१] कातिक कुहू बखान
श्री हमीर हठ प्रगट्यो अमृतसर सुभे थान २३६

१७. रस रूप—राज०रि० भाग ३, पृष्ठ १४२। इस ग्रंथ में ८ कवित्त हैं। प्रथम कवित्त में गणेश स्तुति एवं अंतिम में राम-स्तुति है। यह कोई स्वतंत्र ग्रंथ नहीं ज्ञात होता। देवी देवताओं की स्तुति संबंधी किसी ग्रंथ का अंश प्रतीत होता है, संभवतः कवि-हृदय-विनोद और भक्त-भावना का।

शुक्ल जी ने अपने सप्रसिद्ध इतिहास में राधा माधव मिलन नामक एक और ग्रंथ का नाम लिखा है।

ग्वाल ब्रज भाषा के अत्यंत समर्थ कवियों में से हैं। इनका नाम पद्माकर के साथ लिया जाता है। इनकी समस्त रचनाओं का संपादन श्री विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने ग्वाल-ग्रंथावली नाम से कर लिया है, जो प्रकाशन की प्रतीक्षा में है।

१८६।५३

४२. ग्वाल प्राचीन २, सं० १६१५ में उ०। इनके कवित्त हजारा में हैं।

सर्वेक्षण

ग्वाल के कवित्त हजारा में थे, अतः संवत १८५७ के पूर्व इनका अस्तित्व असंदिग्ध है। नवीन ने भी सुधासर में मथुरावाले ग्वाल के अतिरिक्त एक अन्य ग्वाल प्राचीन का उल्लेख किया है।[१] इस कवि के संबंध में अन्य कोई सूचना सुलभ नहीं।

---

(१) यही ग्रंथ, भूमिका पृष्ठ, १२०

१६०।१३०

४३. गुनदेव बुंदेलखंडी, सं० १८५२ में उ०। कवित्त सुंदर हैं।

सर्वेक्षण

गुनदेव का एक ग्रंथ 'कलिजुग कथा, खोज में मिला है।[१] यह ना० प्र० सभा के आर्यभाषा पुस्तकालय में सुरक्षित है। इसका लिपिकाल सं० १८६० है। ग्रंथ में कवि का नाम बराबर आया है—

'कहि गुनदेव कहाँ लौं बरनों, ये कलिधर्म कहावैं'

कवि के संबंध में अन्य कोई प्रामाणिक विवरण सुलभ नहीं।

१६१।१६१

४४ गुणाकर त्रिपाठी कांथा, जिला उन्नाव के निवासी, विद्यमान हैं। यह संस्कृत और भाषा दोनों में काव्य करते हैं। ज्योतिष शास्त्र तो इनके घर में बहुत काल से प्रसिद्ध चला आता है।

सर्वेक्षण

गुणाकर जी शिवसिंह के समकालीन एवं उन्हीं के गाँव के थे, अतः इनके संबंध में दिये हुये तथ्य निर्भ्रांत माने जाने चाहिये। गुणाकर ने शिवसिंह के पिता रणजीत सिंह की प्रशस्ति लिखी है—

'श्री रनजीत की देखि प्रभा सब भूमि को भूषन कांथा विराजत'

१६२।१५२

४५. गजराज उपाध्याय काशी वासी, सं० १८७४ में उ०। इन महाराज ने 'वृत्तहार' नामक पिंगल और 'रामायण' ये दो ग्रंथ रचे हैं।

सर्वेक्षण

खोज में इनका पिंगल ग्रंथ सुवृत्तहार मिला है[२]। रिपोर्ट के अनुसार इसकी रचना सं० १९०३ में हुई थी—

गनाधिपै १९०३ गति बाम, बरस माघ सुदि पंचमी
गुरुवासर अभिराम, पूर्वभाद्र उडु परिघ जुजि

ऊपर उद्धृत सोरठे के गनाधिपै से न जाने किस प्रकार संबत् १९०३ निकलता है। रिपोर्ट में यह गनाधिपै के आगे ऊपर की तरह छपा भी हुआ है। सरोज में दिया हुआ सं० १८७४ कवि का जन्म-काल हो सकता है।

१६३।१४८

४६. गुलामराम कवि। यह कवित्त सुंदर बनाये हैं।

---

(१) खोज रि० १९३२।६६ (२) खोज रि० १९०३।७१, १९४४।७३

सर्वेक्षण

सरोज में गुलामराम के दो कवित्त उद्धृत हैं। दोनो रामभक्ति संबंधी हैं। मेरा ऐसा विचार है कि यह कवि मिर्जापुर के प्रसिद्ध रामायणी पंडित रामगुलाम द्विवेदी हैं। छंद में नाम का प्रयोग उलटकर गुलामराम हो गया है। बहुत संभावना है कि तुलसी की प्रशस्ति करनेवाले ६४ संख्यक गुलामी कवि भी यही हों।

रामगुलाम जी अपने कवित्तों में ऐसा प्रयोग करते थे :—

(८) तऊ न 'गुलाम राम सकत विलोकि कलि,
हाय हनुमान मोसो दूसरो निकाम को

(९) बदत 'गुलाम' राम दया करि दीजै राम
मेरे मन बसै सोई मूरति कृपामई

—राम भक्ति में रसिक संप्रदाय, पृष्ठ ४२९-४३०

रामगुलाम जी मिर्जापुर के पास असनी नामक गाँव के निवासी थे। यह प्रसिद्ध रामभक्त एवं मानस-तत्वज्ञ थे। अल्पायु में ही इनके पिता का देहांत हो गया था, अतः यह प्रारंभ में मिर्जापुर में पल्लेदारी करते थे। लोंहदी के महावीर के यह आजन्म भक्त थे। वहाँ यह नित्य जाकर मानस-पाठ किया करते थे। बाद में इन्होंने अयोध्यावासी परमहंस रामप्रसाद जी से दीक्षा लेली और उनसे वाल्मीकि रामायण के गूढ़ तत्वों का अध्ययन किया। इनका देहावसान सं १८८८ में माघ शुक्ल ९ के आस पास उसी समय हुआ, जब अयोध्या के प्रसिद्ध रामायणी रामचरणदास का हुआ। इनके काव्यग्रंथों की हस्तलिखित प्रतियाँ काशीवासी पं० सीताराम चतुर्वेदी जी के पास हैं। डा० भगवती प्रसाद सिंह ने इनके निम्नांकित ग्रंथों की सूची दी है :—[1]

(१) कवित्त प्रबंध (२) रामगीतावली (३) ललितनामावली (४) बिनय नवपंचक (५) दोहावली रामायण (६) हनुमानाष्टक (७) रामकृष्ण सतक (८) श्रीकृष्णपंचरत्न पंचक (९) श्री रामाष्टक (१०) राम विनय (११) रामस्तवराज (१२) बरवा।

१९४।१४९

४७. गुलामी कवि। ऐजन, कवित्त सुंदर बनाये हैं।

सर्वेक्षण

सरोज में तुलसी प्रशस्ति संबंधी इनका एक कवित्त उद्धृत है। संभवतः यह १९३ संख्यक गुलामराम ही हैं।

१९५।१३९

४८. गुनसिंधु कवि बुंदेलखंडी, सं० १८८२ में उ०। उनके शृंगार रस के चोखे कवित्त हैं।

सर्वेक्षण

इस कवि के संबंध में कोई सूचना सुलभ नहीं।

---

१ राम भक्ति में रसिक संप्रदाय, पृष्ठ ४२८-३०

१६६।१४०

४६. गोसाईं कवि राजपूतानेवाले, सं० १८०५ में उ० । इनके नीति संबंधी सामयिक दोहा बहुत अच्छे हैं ।

सर्वेक्षण

इस कवि के संबंध में कोई सूचना सुलभ नहीं । प्रथम संस्करण में ज० सं० १८०५ है, पर सप्तम संस्करण में १८८२ ।

१६७।१४१

(५०) गणेश कवि, बन्दीजन बनारसी, विद्यमान हैं । ये कवीश्वर महाराजा ईश्वरीनारायण सिंह काशीनरेश के यहाँ कविता में महा निपुण हैं ।

सर्वेक्षण

गणेश बन्दीजन काशी नरेश महाराज उदित नारायण सिंह (सं० १८५२–६२) एवं ईश्वरी नारायण सिंह (सं० १८६२–१९४६) के यहाँ थे । इनका पूरा नाम गणेश प्रसाद था । यह गुलाब कवि के पुत्र एवं लाल कवि के पौत्र थे । इनके पुत्र वंशीधर स्वयं सुकवि थे । वंशीधर ने अपने पूर्वजों का उल्लेख निम्नांकित कवित्त में इस प्रकार किया है :—

भए कबि लाल, जस जगत बिसाल,
जाके गुन को न पारावार, कहाँ लौं सो गाइए
ताके भए सुकबि गुलाब, प्रीति सन्तन में,
कविता रसाल सुभ सुकृत सुनाइए
सुकवि गनेस की कविता गनेस सम
करै को बखान, मम पितु सोई गाइए
तिनतें सु पढ़ि कीन्हों मति अनुसार
जानौं सियाराम जस ग्रंथ औघड़ सु भाइए
—खोज रि० १९२०।१२

शुक्ल जी ने अपने सुप्रसिद्ध इतिहास[१] में गणेश बन्दीजन के इन तीन ग्रंथों का उल्लेख किया है ।

(१) बाल्मीकि रामायण श्लोकार्थ प्रकाश— इसमें बालकांड का पूर्ण अनुवाद है तथा शुक्ल जी के अनुसार किष्किंधा और खोज के अनुसार[२] सुन्दर कांड के पांच अध्यायों का भी अनुवाद है । यह अनुवाद महाराजा उदित नारायण सिंह की आज्ञा से हुआ था ।

(२) प्रद्युम्न विजय नाटक—यह यद्यपि अंक, प्रवेशक, विष्कंभक आदि नाट्यांगों से युक्त है, पर नाटक नहीं है। यह एक प्रबन्ध-काव्य है । जो बात गद्य में रंगमंच निर्देश के रूप में दी जानी चाहिए, वह भी अटूट रूप से पद्य में दी गई है, अतः नाटकत्व नहीं आ पाया है । उदाहरणार्थ—

बोले हरि इन्द्र सों बिनै कै कर जोरि दोऊ,
आजु दिग्विजय हमारे कर आयो है ।

(३) हनुमत् पचीसी

खोज में गणेश के निम्नांकित ग्रंथ मिले हैं :—

(१) हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ २७७-७८ (२) खोज रि० १९०३।२४

१. कालिकाष्टक १९४१।४७ क
२. जनक वंश वर्णन १९४१।४७ ख
३. त्रिवेणी जू के कवित्त या पंचाशिका १९४१।४७ ग
४. रामचन्द्र वंश वर्णन और झांकी वर्णन १९४१।४७ घ
५. वाल्मीकि रामायण श्लोकार्थ प्रकाश १९०३।२४
६. हनुमत् पचीसी—१९०६।८३। इसकी रचना सं० १८९६ में हुई।

षट[६] ग्रह[९] गज[८] भू[१] बरस में कृष्ण अष्टमी पाय
कवित पचीसी कीसपति की कीन्हौं है राय

१९८।१४४

(५१) गीध कवि। इनके फुटकर छप्पै, दोहा, कवित्त हैं।

सर्वेक्षण

गीध कवि के सम्बन्ध में कोई सूचना सुलभ नहीं।

१९९।१४५

(५२) गड्डु कबि राजपूतानेवाले, सं० १७७० में उ०। कूट, गूढ़ और सामयिक छप्पे इनके विख्यात हैं।

सर्वेक्षण

खोज रिपोर्ट १९०२ के अनुसार जोधपुर के महाराज मानसिंह (शासनकाल सं० १८६०-१९००) के यहाँ बागीराम और गाडूराम नामक दो भाई कवि थे। आश्विन १८८२ में जोधपुर आ, इन्होंने जसभूषण और जसरूपक नामक दो ग्रंथ मिलकर बनाए, जिनमें क्रमशः जलंधरनाथ और उक्त राजा मानसिंह का यश वर्णित है। संभवतः यही गाडूराम सरोज के उक्त गड्डु अथवा ग्रियर्सन (३८९) और विनोद (६३६) के गड्डु कवि हैं। यदि ऐसा है तो सरोज में दिया हुआ संबत् अशुद्ध है।

२००।

(५३) गिरिधारी भाट, मऊ रानीपुरा, बुन्देलखंडी, विद्यमान हैं।

सर्वेक्षण

खोज में एक गिरिधर भट्ट मिले हैं। इन्हें ब्राह्मण कहा गया है। यह बाँदा जिले में गौरिहर की एक छोटी जागीर के रहने वाले थे। इनका रचनाकाल सं० १८८६-१९१२ है। संभवतः यह सरोज के उक्त गिरिधारी भाट हैं। यह भाट भट्ट का ही विकृत रूप है। यह या तो ब्रह्मभट्ट रहे होंगे या पद्माकर की भाँति दाक्षिणात्य भट्ट ब्राह्मण। कवि जन्मता कहीं है, यश लाभ कहीं करता है, अतः इनका सम्बन्ध गौरिहर और मऊरानीपुर दोनों स्थानों से होना असम्भव नहीं। दोनों स्थान बुन्देलखंड के अन्तर्गत है। साथ ही समय दोनों का एक ही है। खोज से प्राप्त गिरिधर भट्ट का रचनाकाल सं० १९१२ तक है। यह सरोजकार के समय में भी विद्यमान रह सकते हैं।

गिरिधर भट्ट के तीन ग्रंथ खोज में मिले हैं।

(१) राधा नख शिख—१९०६।३८ ए । इस ग्रंथ की रचना सं० १८८६ में हुई।

रस[६] वसु[८] अहि[८] जुत सोम[१] सित आश्विन प्रतिपद बुद्ध
कवि गिरिधर विरच्यो बिमल राधा नख सिख सुद्ध ३१

(२) सुवर्ण माला—१९०६।३८ बी। यह श्रृंगारी ग्रंथ दोहों में रचा गया है। प्रत्येक दोहे में सभी मात्राओं के सहित एक विशेष अक्षर प्रयुक्त हुआ है। जैसे निम्नांकित दोहे में हकार, ह हा हि ही आदि सभी रूपों में, प्रयुक्त हुआ है।

हसंत हास हिसकत नहीं, हुलस हूलसी हेर
है होसन हौं कहत चल, हंसह गबनि सबेर ३८

इस ग्रंथ में कुल ३९ दोहे हैं, जिनमें प्रारम्भिक ९ दोहे भूमिका स्वरूप हैं और अन्तिम दोहा उपसंहार रूप है। अतः उक्त चमत्कार से पूर्ण दोहे केवल २८ हैं। ये क ख ग घ च छ ज झ ट ठ ड त थ द ध न प फ ब भ म य र ल व श स ह वर्णों वाले दोहे हैं। यह ग्रंथ किसी प्रभाकर पंत के लिए रचा गया था।

नाम प्रभाकर पंत, प्रभा प्रभाकर के सद्दस
करत दया अत्यंत, दीन दुखी द्विज देखिकै ४
कबि गिरिधर सौं नेहु, बांधि बेचन बोल्यो विमल
दोहा कछु रचि देहु, अकारादि सब बरन के ६
यह आयस को पाय, मोद महा उमड़ो हिए
गुरु गनेस कौं ध्याय, सुबरन माला रचत हौं ७

उपसंहार में कवि ने कहा है—

अच्छर तो औरौ कहे, ते नहिं भाषा जोग
ताहीते बरने न इत, छमियो अधि कवि लोग ३९

यहाँ पर ङ ञ ढ ण ष आदि अक्षरों की ओर संकेत है।

यह ग्रंथ सं० १९०८ में रचा गया—

वसु[८] नभ[०] ग्रह[९] ससि[१] जुत नवमि, जेठ मास सित बुद्ध
कवि गिरिधर विरच्यो विमल, सुबरन माला सुद्ध ९

(३) भाव प्रकाश—१९०६। ३८ सी। यह संस्कृत के प्रसिद्ध आयुर्वेद ग्रंथ भाव प्रकाश के एक अध्याय का छंदात्मक अनुवाद है—

यह आसय को पाइकै आनँद भयो निकंट
कवि गिरिधर भाषा रचत हरीतक्यादि निघंट

इसकी रचना सं० १९१२ में हुई—

रासि[१२] निरखि ग्रह[९] छिति[१] असित भाद्र चतुरदस चंद
हरीतक्यादि निघंट को भाषा करत दुचन्द

२०१।

(५४) गुलाब सिंह पंजाबी, सं० १८४६ में उ० यह कुरुक्षेत्र में क्षेत्र संन्यास ले रामायण चन्द्रप्रबोध नाटक, मोक्षपंथ, भाँवर साँवर इत्यादि नाना वेदान्त के ग्रन्थ भाषा किए हैं।

सर्वेक्षण

गुलाब सिंह पंजाबी अमृतसर के रहने वाले सिक्ख थे। इनके निम्नांकित दो ग्रन्थ खोज में मिले हैं—

(१) मोक्षपंथ प्रकास—१९०३।७८, १९२०।५४ यह सरोज वर्णित मोक्षपंथ ग्रंथ है। ग्रंथ की पुष्पिका से ज्ञात होता है कि यह मानसिंह के शिष्य और गौरी राय के पुत्र थे।

इति श्रीमन्मानसिंह चरण शिक्षित गुलाब सिंघेन गौरीरायात्मजेन विरचितं मोक्ष पंथ प्रकासे बिदेह मुक्ति निर्णयो नाम पंचमो निवास॥ सं० १८३७॥ ग्रन्थ की रचना सं० १८३५ में बसन्त पंचमी को हुई:—

सत अष्ठदसै सुभ संबत मैं पुनि त्रिंस रु पाँच भये अधिकाई
सुभ माघ सुदी सुभ भौम समै सुभ वासर सोम महा सुखदाई
तिथि पंचम नाम वसन्त कहैं सब लोकन को सुजने हरखाई
दिन ताहि सु पूरन ग्रंथ भयो हरि के पद पंकज भेंट चढ़ाई

इन्होंने गुरु नानक तथा गुरु गोविन्द सिंह आदि की भी स्तुति की है।

ता गुरु नानक कै पद पंकज सीस नवाइ के बन्द हमारी

(२) भाव रसामृत—१९४७।७१। इस ग्रन्थ में पहले कवि ने अपने गुरू मानसिंह की प्रार्थना की है।

विद्या साँत सुज्ञान सुखदाइक फल सुभ चार
मानसिंह गुरु के सदा बन्दौ पाइ उदार

ग्रन्थ का नाम इस दोहे में है—

कंठ अँचै जिहि दुख मिटै, पावै सुख संसार
भावरसामृत ग्रंथ यह, भाखे हरि उर धारि

इस ग्रन्थ से भी कवि के पिता का नाम ज्ञात होता है। यह सेषव नगर के रहने वाले थे।

गोरीराइ आ मात-पित, सेषव नगर उदार
गुलाबसिंह कुल दीप सुत कर्यौ ग्रंथ निरधार

ग्रन्थ की रचना सं० १८३४ में हुई—

सत अष्टदसा सुभ संमत में पुनि त्रिंसु रू चारि भए अधिकाई
घन पूरि रहे दिसि चारि घने पुनि मंद समीर सुवंद सुहाई
ससि पूरना मा रवि वासर थो सुभ हाउ सभापति को हित आई
दिन ताहि समापति ग्रंथ भयो हरि के पद पंकज भेंट चढ़ाई १३०

इस ग्रन्थ में कवित्त सवैयों का प्रयोग हुआ है। इस ग्रन्थ की भी पुष्पिका से इनके गुरु और पिता का नाम ज्ञात होता है। कवि के ज्ञात ग्रन्थों का रचनाकाल सं० १८३४ और १८३५ है, अतः सरोज में दिया हुआ सं० १८४६ कवि का उपस्थितिकाल है।

२०२।

(५५) गोवर्द्धन कवि, सं० १६८८ उ०।

सर्वेक्षण

विनोद में (३६५) एक गोवर्द्धन चारण हैं, जिन्होंने १९०२ वाली रिपोर्ट के अनुसार

राजपूतानी भाषा में सं० १७०७ में कुंडलिया राजा पद्म सिंह जी री' नामक ग्रन्थ लिखा है। संभवतः यही सरोज वाले गोवर्द्धन हैं। दोनों के समय में केवल १६ वर्ष का अन्तर है तथा सरोजकार ने राजस्थानी काव्य संग्रहों का भी उपयोग सरोज के प्रणयन में किया था।

खोज में दो गोवर्द्धन और मिले हैं। एक को रचनाएँ ख्याल टिप्पा नामक प्रचीन संग्रह में मिलती है।[1] दूसरे गोवर्द्धन स्वामी हैं जो गोविन्द के गुरु थे और सं० १८५८ के पूर्व वर्तमान थे।[2]

२०३।

५६. गोघू कवि सं० १७५५ सं० उ०।

सर्वेक्षण

इस कवि के संबंध में कोई सूचना सुलभ नहीं। ग्रियर्सन (३१०) और विनोद में (५६७) इस कवि का उल्लेख प्रमाद से गोध नाम से हुआ है।

२०४।

५७. गरोश जी मिश्र, सं० १६१५ में उ०।

सर्वेक्षण

मल्लावां जिला हरदोई में एक गनेश नामक कवि हुए हैं। इन्होंने रसवल्ली नामक नायिका भेद का ग्रन्थ २२६ बरवै छंदों में लिखा है। इन्होंने मालवां, वहाँ के राजा राजमनि और वहाँ के निवासियों का वर्णन किया हैं—

सहर मलामै दीसी पूरन जोति
सुरसरि चारि कोस दुति दूनी होति
सुकृत राजमनि राजै राजै राज
पंडित कवि कुल मंडित गुन गन साज
षट सहस्र परिपूरन षटकुल वृंद
करम धरम जस बाढ़ सरद ज्यों चंद

मलावाँ में षटकुल कनौजियों का आधिक्य था। संभवतः यह गरोश कवि कनौजिया ब्राह्मण थे और कनौजियों में भी मिश्र। यह ग्रन्थ फागुन सुदी गुरुवार सं० १८१८ को रचा गया था।

बसु[8] भू[1] करि पुनि बसु[8] भू[1] फागुन मास
संवत सुकुल द्वैजगुरु ग्रंथ उजास

कवि ने अपने को मल्लावां का निवासी कहा हैं—

नगर मलामै बसत गनेस अनंद
किय सु ग्रन्थ सुनि छमियों कवि कुल चंद

कवि ने अपने को रसवल्ली का कर्ता भी कहा है—

बरन विचारि प्रवीन सकज रस धाम
रच्यो गनेस ग्रन्थ रसवल्ली नाम २२६

यह ग्रन्थ खोज में मिल चुका है।[3] इसका विशेष विवरण माधुरी में प्रकाशित हो चुका है।[4] यदि सरोज के गरोश मिश्र मलावांवाले यही गरोश है, तो सरोज का संवत अशुद्ध है।

(१) खोज रि० १९०२।५७ (२) खोज रि० १९१३।६५
(३) खोज रि० १९०६।८२ (४) माधुरी, वर्ष ५, खंड २, अंक ४, मई १९२७ पृष्ठ ५५४

खोज में एक गणेशदत्त मिश्र मिले हैं। यह बलरामपुर गोंडा निवासी थे। इनके पिता का नाम भवानी शर्मा था। यह पं० द्वारिका प्रसाद जमींदार लखाही, परगना बलरामपुर के आश्रित थे। यह सं० १६५८ के पूर्व वर्तमान थे। इनकी रचना वैष्णव विलास है।[१] यह सरोजवाले गणेश मिश्र से भिन्न प्रतीत होते हैं।

विनोद में (१६३) गणेश मिश्र के नाम पर विक्रम बिलास नामक ग्रन्थ चढ़ा हुआ है। विक्रम विलास वस्तुतः गंगापति उपनाम गंगेश की रचना है। रिपोर्ट में प्रमाद से कवि परिचय वाले प्रकरण में कवि नाम का दूसरा 'जी' छूट गया है और गंगेश, गनेश या गणेश हो गया है।[२]

२०५।

५८. गुलाल सिंह, सं० १७८० में उ०।

सर्वेक्षण

गुलाल सिंह बख्शी पन्ना बुन्देलखंड के निवासी थे। इन्होंने सं० १७५२ में दफ्तरनामा नामक ग्रन्थ लिखा —

विवि[२] सर[५] सिंधु[७] ससांक[१] गत संबत विक्रम राज
सिव वसंत का अन्त यह जन करता सुभ काज
असित पच्छ आषाढ़ कौ संजुत चौथ बखान
सिद्ध जोग बिनवत परौ करिहै सिद्ध निदान

इस ग्रन्थ में बहीखाता की मुसलमानी प्रणाली वर्णित है।[३]

दफ्तरनामा के रचनाकाल को देखते हुए सरोज में दिया हुआ सम्बत् १७८० कवि का उपस्थितिकाल सिद्ध होता है।

२०६।

(५६) गजसिंह। इन्होंने गजसिंह विलास बनाया है।

सर्वेक्षण

विनोद में (८३०) गजसिंह का रचनाकाल सम्वत् १८०८-१८४४ दिया गया है और इन्हें गजसिंह बिलास तथा गजसिंह के कवित्त का रचयिता कहा गया है।

२०७।

(६०) ज्ञानचन्द यती राजपूताने वाले, सम्बत् १८७० में उ०। यह कवि टाडसाहब एजेंट राजपूताने के गुरु हैं, और इन्हीं की सहायता से राजपूताने के बड़े-बड़े ग्रन्थ वंशावली और प्रबन्ध साहब ने उल्था किए।

सर्वेक्षण

टाड ने राजस्थान की रचना सम्बत् १८८० में की, अतः सरोज दत्त सम्बत् १८७० ज्ञानचन्द यती का उपस्थितिकाल है।

---

(१) खोज रि० १९४७।६० (२) खोज रि० १९१७।५६ (३) खोज रि० १९०५।२२

२०८।

(६१) गोविन्दराय वंदीजन राजपूताने वाले। इन्होंने हाड़ा लोगों की वंशावली और सब राजों के जीवन चरित्र का एक ग्रन्थ हारावती इतिहास लिखा है, जिसमें राव रतन की प्रशंसा में यह दोहा कहा है—

दोहा

सरवर फूटा जल बहा, अब क्या करो जतन्न
जाता घर जहँगीर का, राखा राव रतन्न

सर्वेक्षण

विनोद में (१०८) हाड़ावती के रचयिता गोबिन्दराय का रचनाकाल सम्बत् १६०६ दिया गया है।

२०६।

(६२) गोपालसिंह ब्रजबासी। इन्होंने तुलसी शब्दार्थ प्रकाश नामक ग्रन्थ बनाया है जिसमें आठ कवियों का अष्टछाप के नाम से वर्णन कर उनके पद लिखे हैं, अर्थात् सूरदास १, कृष्णदास २, परमानन्द ३, कुम्भनदास ४, चतुर्भुज ५, छीत स्वामी ६, नन्ददास ७, गोबिन्द दास ८।

सर्वेक्षण

खोज में तुलसी शब्दार्थ प्रकाश नामक एक ग्रन्थ मिला है।[१] इसके रचयिता जयगोपाल सिंह हैं। यह ब्रजबासी नहीं थे। यह बनारस के दारानगर मुहल्ले के रहने वाले थे। मार्गशीर्ष १८७४ में यह दर्शनार्थ विंध्याचल गए। वहाँ सुप्रसिद्ध रामायणी पं० रामगुलाम द्विवेदी को मिर्जापुर में देखा। तब इनके मन में तुलसी के ग्रंथों से संग्रह करके एक ग्रंथ रचने की इच्छा हुई। इसी लिये ग्रंथ का नाम तुलसी शब्दार्थ प्रकाश रक्खा। इस ग्रन्थ में कुल नव प्रकरण हैं।—

१ अष्टद वस्तु विचार, जैसे १ ब्रह्म, २ नेत्र, ३ लोक, ४ वेद आदि। २ स्फोटक भेद। ३ आह्निक भेद। ४ सामुद्रिक। ५ वैदक विचार। ६ काल ज्ञान। ७ गणित विधि विचार। ८ ज्योतिष बिचार। ९ पिंगल बिचार।

यह ग्रन्थ सम्बत् १८७४ में रचा गया। ग्रन्थ एवं रचयिता के नाम का साम्य अद्भुत है। निवास और विषय में घोर अन्तर है। तुलसी शब्दार्थ प्रकाश का अष्टछाप से कोई बुद्धि ग्राह्य सम्बन्ध नहीं प्रतीत होता। सम्भवतः सरोजकार ने ग्रन्थ नाम देने में भूल की है।

२१०।

(६३) गदाधर कवि

सर्वेक्षण

कवि परिचय के अन्तर्गत पृष्ठ ५६ पर इनकी कविता के उदाहरण होने का निर्देश किया गया है, पर उक्त पृष्ठ पर पद्माकर के पौत्र गदाधर भट्ट की रचना है। अतः यह कवि दोहरा उठा है। गदाधर भट्ट का विवरण देखिये कवि संख्या १५५। यह कवि प्रथम एवं द्वितीय संस्करण में नहीं। यह तृतीय से बढ़ा है।

---

(१) खोज रिपोर्ट १६०२।१०३

घ

२११।१६६

(१) घनश्याम शुक्ल असनी वाले, सम्वत् १६३५ में उ० । यह कवि कविता में महा निपुण और वान्धव नरेश के यहाँ थे । ग्रन्थ तो पूरा हमने कोई नहीं पाया, इनके कवित्त २०० तक हमारे पास हैं । कालिदास ने भी इनके कवित्त हजारा में लिखे हैं ।

सर्वेक्षण

इस कवि का ठीक-ठीक विवरण उपलब्ध नहीं है । विनोद में दो घनश्याम शुक्ल हैं । पहले घनश्याम शुक्ल २२६ संख्या पर हैं । इनका जन्म सम्बत् १६३५ और रचना काल सम्बत् १६६० दिया गया है । इन्हे सांभी और मानस पूरपक्षावली नामक दो ग्रन्थों का रचयिता कहा गया है । पर खोज में मानस पूर पक्षावली के रचयिता का नाम घनश्याम त्रिवेदी दिया गया है ।[१] विनोद के दूसरे घनश्याम शुक्ल ४३८ संख्या पर हैं । यह सम्वत् १७३७ के लगभग उत्पन्न हुये और संम्बत् १८३५ तक वर्त्तमान रहे । यह रीवां नरेश के यहाँ थे । इनके छन्द में कम्पनी का भी नाम आया है । इन्होंने एक छन्द में औरङ्गजेब के सेनापति दलेल खाँ का वर्णन किया है । १६३५ में जन्म लेने वाले घनश्याम दूसरे होंगे क्योंकि उस समय तक तो दलेल खाँ का जन्म भी न हुआ रहा होगा ।

२१२।१७०

(२) घन आनन्द कवि, सम्बत् १६१५ में उ० । यह कवि कवि, लोगों में महा उत्तम हो गये हैं ।

सर्वेक्षण

देखिये आनन्द घन कवि संख्या २२ । यहाँ दिया हुआ सम्बत् पूर्णरूपेण अशुद्ध है ।

२१३।१७१

(३) घासीराम कवि, सम्बत् १६८० में उ० । कालिदास जी ने हजारा में इनके कवित्त लिखे हैं ।

सर्वेक्षण

एक घासी राम का पक्षी विलास नामक ग्रन्थ खोज में कई बार मिला है ।[२] बिना किसी आधार के पक्षी विलास वाले घासीराम का तादात्म्य सरोज वाले घासी राम से कर दिया गया है ।

एक घासीराम सम्बत् १७५० से पूर्व अवश्य हुये । क्योंकि इनकी रचना हजारे में थी पर वे घासी राम पक्षी विलास वाले ही थे, इसका कोई प्रमाण नहीं । पक्षी विलास वाले घासीराम ब्राह्मण और मलावा जिला हरदोई के रहने वाले थे । पक्षी विलास शृंगारी ग्रन्थ है । इसमें ७२ कवित्त सवैये हैं । प्रायः प्रत्येक छन्द में किसी न किसी पक्षी का नाम अवश्य आया है । प्राप्त ग्रन्थ का अन्तिम छन्द ठाकुर कवि का है । पक्षी विलास वाले घासीराम के अतिरिक्त कुछ और भी घासीराम हैं—

(१) घासीराम—यह भरतपुर के रहने वाले थे । इन्होंने काव्य प्रकाश तथा रस गंगाधर की टीका लिखी । यह भाषा गीत गोविन्द के रचयिता हैं । इनका देहान्त सम्बत् १८१५ में हुआ ।[३]

(२) घासीराम—समथर बुन्देलखंड के रहने वाले उपाध्याय ब्राह्मण थे । इन्होंने ऋषि पंचमी की कथा लिखी है ।[४]

---

(१) खोज रि० १९०१।६० (२) खोज रि० १९०९।६१,१९२३।१२२,१९२६।१३६
(३) विनोद कवि संख्या ८४२।१ (४) खोज रिपोर्ट १९०६।३७

नवीन ने सुधासर के अंत में नामरासी कवियों की सूची में दो घासीराम माने हैं। एक घासी राम प्रचीन, दूसरे घासीराम कोटा वारे राव। यह घासीराम प्राचीन सम्भवतः सरोज के घासीराम हैं, जिनकी रचना हजारे में थी।

२१४।

(४) घनराय कवि, सम्बत् १६९२ में उ०।

सर्वेक्षण

खोज में एक घनराय मिले हैं, जिनका रचना काल सम्बत् १७५७ दिया गया है। यह कायस्थ थे और ओरछा नरेश राजा उदोत सिंह के दरबार में थे। उदोत सिंह का शासन काल सम्बत् १७४६ से १७९२ तक है। इन घनराय का गणित का एक ग्रन्थ मिला है, जो संस्कृत की प्रसिद्ध कृति लीलावती का अनुवाद है।[१] इन घनराय के अतिरिक्त किसी अन्य घनराय का पता नहीं। यदि सरोज के घनराय यही हैं, तो सरोज में दिया हुआ सम्ब्रत् १६९२ अशुद्ध है। यह कवि का जन्म काल हो सकता है। बुन्देल वैभव के अनुसार कवि का जन्म सम्वत् १७२९ है।[२] सरोजकार को इनकी जानकारी हजारा से हुई।

२१५।

(५) घाघ कान्यकुब्ज अन्तरवेद वाले, सम्बत् १७५३ में उ०। इनके दोहा, छप्पै, लोकोक्ति तथा नीति सम्बन्धी सामयिक ग्रामीण बोल चाल में विख्यात हैं।

दोहा

मुये चाम ते चाम कटावैं, भुइ मा सकरे सोवैं
घाघ कहैं ये तीनो भकुवा, उढ़रि जाइ फिरि रोवैं १

सर्वेक्षण

इस लोक-प्रसिद्ध कवि के सम्बन्ध में कोई प्रामाणिक सूचना उपलब्ध नहीं।

२१६।

(६) घासी भट्ट

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध में कोई सूचना सुलभ नहीं।

च

२१७।१७२

(१) चन्द कवि प्राचीन बन्दीजन (१) संभल निवासी, सम्बत् ११९६ में उ०। यह चन्द कवि महाराजा वीसल देव चौहान रनथम्भोर वाले के प्राचीन कवीश्वर की औलाद में थे। सम्बत् ११२० में राजा पृथ्वीराज चौहान के पास आकर मंत्री और कवीश्वर दोनों पद को प्राप्त हुये। पृथ्वी राज रायसा नामक एक ग्रन्थ में एक लक्ष श्लोक भाषा के रचे। इसमें ६९ खण्ड हैं और पुरानी बोली हिन्दुओं की है। इस ग्रन्थ में चन्द कवि ने सम्बत् १११० से सम्बत् ११४९ तक

---

(१) खोज रिपोर्ट १९०६।३५ (२) बुन्देल वैभव भाग २, पृष्ठ ४००

पृथ्वीराज का जीवन चरित्र महा कविता के साथ बहुत छन्दों में वर्णन किया है। छप्पै छन्द तो मानों इसी कवि के हिस्से में था, जैसे चौपाई छन्द श्री गोसाईं तुलसीदास के हिस्से में पड़ा था। इस ग्रन्थ में क्षत्रियों की बंशावली और अनेक युद्ध, आबू पहाड़ का माहात्म्य, दिल्ली इत्यादि राजधानियों की शोभा और क्षत्रियों के स्वभाव और चाल चलन—व्यवहार का बहुत विस्तारपूर्वक वर्णन किये हैं। यह कवि केवल कवीश्वर नहीं थे वरन् नीति शास्त्र और चारण के काम-काज में निपुण, महा शूरवीर भी थे। सम्बत् ११,४६ में पृथ्वीराज के साथ यह भी मारे गये। इन्हीं की औलाद में शारङ्गधर कवि थे जिन्होंने हमीर रासा और हमीर काव्य भाषा में बनाया है।

सर्वेक्षण

चन्द वरदाई के सम्बन्ध में दिये हुये सरोज के सभी सम्बत् अशुद्ध हैं। चन्द का रचना काल सम्बत् १२२५ से १२४६ तक माना गया है। सरोजकार द्वारा दिये गये सम्बत् इतिहास प्रसिद्ध सम्बत् से १०० वर्ष कम हैं। ये सभी सम्बत् रासो से ही दिये गये हैं। पृथ्वीराज और चन्द की मृत्यु युद्ध में सम्बत् १२४६ में हुई, न कि सम्बत् ११४६ में। चन्द को संभल निवासी कहा गया है। पर इसे आज तक किसी विद्वान् ने स्वीकार नहीं किया। कहा तो यह जाता है कि चन्द लाहौर में उत्पन्न हुआ था। संभल से सरोजकार का अभिप्राय संभवत: सांभर से है न कि बदायूँ जिले के उक्त नाम के कस्बे से। पृथ्वीराज चौहान सांभर, शाकम्भरी नरेश कहे जाते हैं। और इस स्थान से चन्द का लगाव रहा है। रासौ के सम्बन्ध में सरोज में जो विवरण दिया गया है, वह ठीक है। शारङ्गधर ने हम्मीर रासो और हम्मीर काव्य की रचना की थी, यह ठीक है। यह शारङ्गधर प्रसिद्ध चन्द्र का वंशधर था, ऐसा उल्लेख अन्य कहीं नहीं मिलता।

चन्द कवि की कविता के जो उद्धरण पद्मावती खण्ड, आल्ह खंड और दिल्ली खंड से दिये गये हैं, उनमें प्राचीनता की पर्याप्त झलक है। परन्तु आदि में जो दो कवित्त और चार दोहे दिये गये हैं, उनकी भाषा एकदम रीतिकालीन है। ये ६ छन्द दिग्विजय भूषण से लिये गये हैं और किसी दूसरे चन्द की रचना हैं। प्रथम एवं द्वितीय संस्करण में कवि का समय ११६६ तृतीय में ११६८ एवं सप्तम में १०६८ दिया गया है।

२१८।१७५

(२) चन्द कवि (२) सम्बत् १७४६ में उ०। यह कवि सुलतान पठान नव्वाब राज गढ़ भाई बन्धु बाबू भूपाल के यहाँ थे। इन्होंने विहारी सतसई का तिलक कुण्डलिया छन्द में सुलतान पठान के नाम से बनाया है।

सर्वेक्षण

सरोज में इस कवि के दो परिचयात्मक सोरठे उद्धृत है।

सुलतान मुहम्मद साह, नाम नवाब बखानिये
कविताई अतिचाह, करत रहत गढ़ नगर में
देश मालवा माहि, कुण्डलिया करि सतसई
हरगुन अधिक सराहि, चंद कवीसुर तेहि सभा

चंद द्वारा प्रस्तुत यह टीका मिलती नहीं। ५ दोहों पर इनकी लगाई कुण्डलियाँ विहारी विहार में उद्धृत हैं, जिन्हें रत्नाकर जी ने भी विहारी सतसई सम्बन्धी साहित्य में उद्धृत कर लिया है।

इन चन्द के आश्रयदाता पठान सुलतान का विवरण इसी ग्रन्थ में आगे संख्या ८८७ पर

दिया गया है। इसके अनुसार इनका नाम सुलतान मुहम्मद खाँ था और ये सम्बत् १७६१ में राजगढ़ भूपाल के नवाब थे। यही समय इनके आश्रित चन्द कवि का भी होना चाहिये। सरोज में दिया हुआ सम्बत् १७४६ कवि का उपस्थिति-काल ही है।

२१६।१७४

३. चन्द कवि ३। यह सामान्य कवि थे।

सर्वेक्षण

केवल नाम के सहारे इस कवि की कोई पकड़ सम्भव नहीं। कायस्थों की निन्दा की एक कवित्त इनकी कविता के उदाहरण में सरोज में उद्धृत है, जिससे इनका अत्यन्त सामान्य कवि होना स्पष्ट है।

२२०।१७३

४. चन्द कवि ४। इन्होंने शृंगार रस में बहुत सुन्दर कविता की है। हजारा में इनके कवित हैं।

सर्वेक्षण

इन शृंगारी चन्द के दो छंद सरोज में उद्धृत हैं जिनमें दूसरा प्रसिद्ध कवि देव का है।[1] इनकी कविता हजारे में थी, अतः इनका अस्तित्व सम्बत् १८७५ के पूर्व स्वयं सिद्ध है। इस समय के पूर्व के दो चन्दों का उल्लेख खोज रिपोर्ट में हुआ है।

१. चन्द—सम्बत् १५६३ में इन्होंने हितोपदेश का भाषानुवाद दोहा-चौपाइयों में किया है—

संबत पन्द्रह सय जब भयऊ
तिरसठि बरस अधिक चलि गयऊ
फागुन मास पाख उजियारा
सुभ नछत्र सातइ ससिबारा
तेहि दिन कवि आरंभेऊ, चांद चतुर मन लाइ
हितोपदेस सुनत सुख-दुख बयराग्य नसाइ

२. चन्द—संबत् १७१५ में इन्होंने 'नाग लीला' नामक एक पुस्तक रची। इसका नाम विवरण 'नाग नौर की लीला[2]' और 'नाग लीला'[3] नाम दिया गया है। इस ग्रन्थ में नाग नथइया की कथा है। कवि परिचय में कवि को न जाने किस आधार पर रिपोर्ट में बुन्देलखंडी कहा गया है। रचना-कालसूचक छंद यह है—

(१) देव सुधा, छंद ५६ (२) खोज रि० १६०६।१८ (३) खोज रि० १६२६।७६

संबत सत्रह सै दस पंच छछ्‌ममा मैं कही
सावन सुदि तिथि पंचमी चंद कबि यों कही
माडो गिरंथु दिन मूल महा बुधवार है
परिह हजी नाग दवन को छंद करो विस्तार है

सरोज में शृंगारी चन्द का जो सवैया उद्‌धृत है, वह अत्यन्त सुन्दर है। यह प्रौढ़ परिमार्जित ब्रजभाषा में है। उक्त छंद इन दोनों में से किसी भी चन्द की रचना नहीं प्रतीत होता।

चन्द के नाम से कई कवियों कौ रचनायें खोज रिपोर्टों में उल्लिखित हैं। यह निश्चय करना अत्यन्त कठिन है कि २१९ और २२० संख्यक चन्द की रचनायें इनमें से कौन हैं।

२२१।१८०

४. चिन्तामणि त्रिपाठी टिकमापुर, जिले कानपुर वाले, सं० १७२९ में उ०। यह महाराज भाषा साहित्य के आचार्यों में गिने जाते हैं। अंतरवेद में प्रसिद्ध है कि इनके पिता दुर्गा-पाठ करने नित्य देवी जी के स्थान में जाते थे। वह देवी जी बनकी भुइया कहाती हैं, जो टिकमापुर से एक मील के अन्तर पर हैं। एक दिन महाराजराजेश्वरी भगवती प्रसन्न होकर चारि मुन्ड दिखाकर बोलीं, यही चारों तेरे पुत्र होंगें। निदान ऐसा ही हुआ कि चिन्तामणि, भूषण, मतिराम जटाशंकर या नीलकंठ ये ४ पुत्र उत्पन्न हुये। इनमें केवल नीलकंठ महाराज एक सिद्ध के आशीर्वाद से कवि हुये, शेष तीनों भाई संस्कृत काव्य पढ़कर ऐसे पंडित हुये कि उनका नाम प्रलय तक बाकी रहेगा। इन्हीं के बंश मे शीतल और बिहारी लाल कवि, जिनका उपनाम लाल है, सम्बत् १९०१ तक विद्यमान थे। निदान चिन्तामणि महाराज बहुत दिन तक नागपुर में सूर्य बंशी भोंसला मकरन्द शाह के यहाँ रहे। उन्हीं के नाम से इन्होंने छंद विचार नामक पिंगल का बहुत ग्रन्थ बनाया। काव्य विवेक, कवि कुल कल्पतरु, काध्य प्रकाश, रामायण, ये ५ ग्रन्थ इनके बनाये हुये हमारे पुस्तकालय में मौजूद हैं। इनकी रामायण कवित्त और अन्य नमूना छंदों में बहुत अपूर्व है। बाबू रुद्रसाहि सोलंकी, शाहजहाँ बादशाह और जैनदी अहमद ने इनको बहुत दान दिया है इन्होंने अपने ग्रन्थों में कहीं-कहीं अपना नाम मणिलाल कहा है।

सर्वेक्षण

चिन्तामणि त्रिपाठी का उपनाम मणिलाल था। इनके पिता का नाम रत्नाकर त्रिपाठी था। इनका जन्मकाल सम्वत् १६६६ के लगभग और कविता काल सम्बत् १७०० के लगभग ठहरता है। यह रीतिकाल के प्रमुख आचार्यों में गिने जाते हैं। इनके निम्नलिखित ग्रन्थ खोज में मिल चुके हैं :—

१. कविकुल कल्पतरु—१९००। १२७, १९२३। ८० बी सी, इस ग्रन्थ में मुख्यतया काव्य के सभी अंगों का विवेचन हुआ है। इसकी रचना सम्बत् १७०७ में हुई, ऐसा उल्लेख शुक्ल जी ने अपने इतिहास में किया है ; पर खोज के अनुसार इसकी रचना सम्बत् १७५१ चैत बदी ४, बुधवार को हुई—

संबत सत्रह सै जहाँ ऊपर इक्कावान वदि चैत
बुध दिन कवि कुल कल्पतरु चौथि रचित जग जैत

—खोज रि० १९२३। ८० बी

रचनाकाल वाले इस दोहे में कहीं पाठ की अशुद्धि है। भगीरथ मिश्र ने दतिया राज्य पुस्तकालय में ग्रन्थ के उपलब्ध हस्तलेख के आधार पर इसका रचनाकाल सम्बत् १७०७ ही दिया है। इस ग्रन्थ की रचना के पहले ही कवि अपना पिंगल रच चुका था, इसका उल्लेख उसने इस ग्रन्थ में किया है।

मेरे पिंगल ग्रंथ ते समुझे छंद बिचार
रीति सुभाषा कवित की वरनत बुधि अनुसार

इस ग्रन्थ में रुद्रसाहि सोलङ्की की प्रशस्ति भी कवि ने की है। सरोज में ऐसा एक छन्द उद्धृत है :—

साहेब सुलंकी सरताज बाबू रुद्रसाह
तोसो रन रचत बचत खल कत है

यह रुद्रसाहि सोलङ्की वही हैं, जिनके पुत्र हृदय राम ने भूषण को कवि भूषण की उपाधि दी थी और जिन्हें भूषण ने चित्रकूट अधिपति कहा है।

२—कवित्त विचार—१९२०।३१। यह भी सभी साहित्यांगों से सम्बन्ध रखने वाला ग्रन्थ है। ग्रन्थ खंडित मिला है, अतः रचनाकाल आदि ज्ञात नहीं हुये।

३—पिङ्गल चिन्तामणि या चिन्तामणि पिङ्गल या पिङ्गल या छन्द विचार या पिङ्गल-छन्द विचार—१९००।४०, १९०३।३६, १९०४।११९, १९०६।१५१, १९०९।५०, १९२३।८० ए, डी, ई, पं १९२२।२१, द १९३१।२२। कहा जाता है कि यह ग्रन्थ नागपुर के भोंसला राजा मकरन्द शाह के लिये बनाया गया था—

सूरजबंसी भोंसला लसत साह मकरन्द
महाराज दिगपाल जिमिभाल समुद'सुभचंद

यह दोहा सरोज में भी उद्धृत है—

चिन्तामनि कबि को हुकुम कियो साहि मकरन्द
करो लच्छि लच्छन सहित भाषा पिंगल छंद

यह दोहा भगीरथ मिश्र ने 'हिन्दी काव्यशास्त्र का इतिहास' में उद्धृत किया है। स्पष्ट हैं कि चिन्तामणि जी किसी सूर्यवंशी भोंसला राजा मकरन्द शाह के यहाँ अवश्य थे, पर यह मकरन्द शाह कहाँ के थे, कहा नहीं जा सकता। नागपुर में उस समय इस नाम का कोई राजा नहीं था और न तो मराठों का अधिकार ही उस समय तक नागपुर पर हो पाया था। सम्भवतः यह वही माल मकरन्द हैं, जो इतिहास में मालो जी के नाम से प्रसिद्ध हैं और जिनका उल्लेख भूषण ने शिव भूषण में इस प्रकार किया है :—

भूमि पाल तिनमें भयो बड़ौ माल मकरन्द ६
सदा दान करवान में जाके आनन अंभ
साहि निजाम सखा भयो दुग्ग देवगिरि खंभ ७

इन्हीं मालो जी के पुत्र साहि जी थे, जिनके पुत्र शिवाजी महाराज हुए। पंजाब रिपोर्ट में इस ग्रन्थ का रचनाकाल सम्बत् १७९७ दिया गया है—

कहत अंक मन द्वीप द्वै जानु बराबर लेव

अंक = ९, मन = १, द्वीप = ७। पूरा सम्बत् स्पष्ट नहीं होता। चिन्तामणि के समय को ध्यान में रखवे हुये यह १७१९ हो सकता है, १७९७ कदापि नहीं।

श्री भगीरथ मिश्र ने चिन्तामणि रचित 'श्रृङ्गार मंजरी' नामक नायिका-भेद का ग्रन्थ सम्पादित करके प्रकाशित कराया है। इसमें गद्य में भी व्याख्या है। यह चिन्तामणि की मौलिक कृति नहीं है। यह तेलगू भाषा में लिखित किसी ग्रन्थ का अनुवाद है। अधिकांश उदाहरण चिन्तामणि की मौलिक रचनायें हैं। मूल ग्रन्थ साहराज के पुत्र बड़े साहिब अकबर साहि के नाम पर बना था। यह ग्रन्थ रसमंजरी नाम से खोज में भी मिल चुका है।[1] पर वहाँ स्पष्ट उल्लेख नहीं हुआ है कि यह रचना इन्हीं प्रसिद्ध चिन्तामणि की है। वहाँ यह लेख है कि यह चिन्तामणि अकबर महान् अथवा अकबर द्वितीय के आश्रय में थे। 'श्रृङ्गार मंजरी' 'कविकुल कल्पतरु के पहले की रचना है। कविकुल कल्पतरु में इसका उल्लेख कवि ने स्वयं किया है—

प्रोषित भर्तृ को लक्षण, श्रृङ्गार मंजरी यथा[2]।

काव्य विवेक, काव्य प्रकाश और रामायण अभी तक खोज में नहीं मिले हैं।

२२२।१८१

६. चिन्तामणि २। इन्होंने ललित काव्य की रचना किया है।

सर्वेक्षण

खोजरिपोर्टों में अनेक चिन्तामणि हैं। इन्हीं में से कोई सरोजवाले यह दूसरे चिन्तामणि होंगे।

१—चिन्तामणि—सम्बत् १६११ के लगभग वर्त्तमान, राजा पहाड़ सिंह के आश्रित। गीतगोविन्द सटीक या गीतगोविन्दार्थ सूचनिका (१६१७।४१, १६२७।७१ ए) और संगीत चिन्तामणि (१६२६।७१ बी) के रचयिता। सम्बत् १८१६ गीतगोविन्द की टीका का रचनाकाल है—

२—चिन्तामणि—रास मन्डान (१६४१।६७) के रचयिता।

३—चिन्तामणि—कर्मविपाक (१६३८।३१) के रचयिता।

४—चिन्तामणि दास—अम्बरीश चरित्र (१६०६।५१) के रचयिता।

२२३।१८२

७. चूड़ामणि कवि, सम्बत् १८६१ में उ०। यह कविराज एक अपने ग्रन्थ में गुमान सिंह और अजीत सिंह की बड़ाई करते हैं। ग्रन्थ का नाम मालूम नहीं होता।

सर्वेक्षण

एक चूड़ामणि ब्राह्मण चरखारी वाले मोहन लाल के पिता थे। (१६०५।७०)। एक अन्य चूड़ामणि का एक ग्रन्थ नागलीला खोज में मिला है। (१६४४।११४) गुमान सिंह और अजीत सिंह

---

(१) खोज रिपोर्ट १६०६।१५० (२) हिन्दी काव्य शास्त्र का इतिहास, पृष्ठ ७८-८२

की प्रशस्ति में लिखे हुये कवित्त सरोज में उद्धृत हैं। कवि के सम्बन्ध में कोई विशेष जानकारी नहीं सुलभ हो सकी है।

२२४।१८३

८. चन्दन राय कवि बन्दीजन नाहिल पुवायां, जिले शाहजहाँपुर वाले, सम्बत् १८३० में उ०। यह कवि महा विद्वान् बड़े संतोषी, राजा केसरी सिंह गौर के यहाँ थे। उनके नाम से केसरी प्रकाश ग्रन्थ रचा है। इनके ग्रन्थों की संख्या साफ जानी नहीं जाती। जो ग्रन्थ हमने पाये अथवा देखे हैं, उनका व्योरा निम्न है—

प्रथम श्रृंगार सार ग्रन्थ बहुत भारी काव्य है। दूसरा कल्लोल तरंगणी, तीसरा काव्याभरण, चौथा चंदन सतसई, पाँचवाँ पथिक बोध। ये सब ग्रन्थ बहुत ही सुन्दर, देखने पढ़ने योग्य हैं।

इनके १२ शिष्य थे, और बारहो महान् कवि हुये। सबसे अधिक कबीश्वर मनभावन कवि हैं। चन्दन राय नाहिल छोड़कर किसी राजा बाबू, बादशाह के यहाँ नहीं गये। एक दफे किसी बुन्देलखंडी रईस ने वंश गोपाल कवि का बनाया हुआ कूट कवित इनके पास अर्थ लिखने के लिये भेजा। और जब इनके अर्थ लिखे देखे तो बहुत प्रसन्न होकर पालकी सवारी को कुछ द्रव्य सहित भेजी। चन्दन राय वहाँ नहीं गये। केवल यह दोहा लिख कर भेज दिया।

खरी टूक खर खरथुवा, खरी नोन सँजोग
ये तो जो घर ही मिलै, चंदन छप्पन भोग ॥ १ ॥

सर्वेक्षण

चन्दन राय भाट थे। इनका रचना-काल सम्बत् १८१० से १८६५ तक है। इनके पिता का नाम धर्मदास, पितामह का फकीरे राय, और प्र-पितामह का भीषम था। ये लोग विहदर पुरी के निवासी थे। कवि ने प्राग्य विलास में अपने पूर्वजों का परिचय दिया है—

विधि सो विधि छितितल रची विहदर पुरी पुनीत
तहा बंस भूषन भये भीषम उत्तम गीत
तासु तनय गुण गन सदन भये फकीरे राय
सदा भजन भगवंत को करो मनो वच काय
धर्मदास तिनके भये धर्मदास बिन आस
बिश्वम्भर को भजन नित करत धरे विश्वास
तिनके सुत चन्दन भगत भयो देव दुज दास
करि बन्दन गुर को कह्यो प्राज्ञ बिलास प्रकास

—खोज रि० १९२३।७३ सी

चंदन राय के दो पुत्र थे—प्रेमराम और जीवन। इनका कविता काल सम्बत् १८१० से १८६५ तक है। कहा जाता है कि इन्होंने कुल ५२ ग्रन्थ रचे थे। इनमें से ८ खोज में मिल चुके हैं—

१ काव्याभरण—१९०९।४०, १९२३।७३ए, १९२६।७७, १९४७।९०। यह १९५ दोह का अलंकार ग्रंथ है। इसकी रचना सम्बत् १८४५ में हुई—

सम्बत् ठारह सै जहाँ पैंतालीस बिचार
चंद बार तिथि दुवैज सुदि मार्ग ग्रन्थ विस्तार

२. कृष्ण काव्य—१९१२।३४ ए। इसमें कृष्ण जन्म से कंस वध तक की कथा भागवत के आधार पर है। इसकी रचना क्वार सुदी १०, मंगलवार, सम्वत् १८१० को हुई—

संबत ठारह सै जहाँ, दस बरनो कुजवार
क्वार सुदी दसमी विजै, कृष्ण काव्य अवतार

३. केशरी प्रकाश—१९१२।३४ बी। यह नायिका भेद का ग्रन्थ है। आश्रयदाता केशरी सिंह गौर के नाम पर इसकी रचना सम्बत् १८१७ में हुई—

प्रगट अठारह सै जहाँ, सत्रह सम्वत चारु
क्वार सुदी दसमी सु तिथि, बिजै हतो रविबार

४. तत्व संज्ञा—१९०१।२६, १९१७।३७। इस ग्रन्थ में विभिन्न वस्तुओं की नाम सूची है। यथा-पंच ज्ञानेन्द्रिय, पंच कर्मेन्द्रिय, ३० राग। यह एक प्रकार का कोष है। यह कोई योग सम्बन्धी ग्रन्थ नहीं हैं जैसा कि नाम से भ्रम हो सकता है।

५. नखशिख राधा जी को—१९१२।३४ ई, १९२३।७३ बी। रचना काल सम्बत् १८२५, यह सूचना १९२३ वाली प्रति की पुष्पिका से मिलती है।

६. प्राज्ञ विलास—१९१२।३४ सी, १९२३।७३ सी। वेद और मतों पर तर्क-वितर्क इस ग्रन्थ का विषय है। यह ग्रन्थ सम्बत् १८२५ में रचा गया—

ठारह सै पच्चीस जहँ, संबत बरन्यो चारु
कातिक सुदि दुतिया प्रगट, भयो ग्रंथ अवतार

७. पीतम बीर विलास—१९१२।३४ डी। यह नायिकाभेद और नवरस का ग्रंथ है। इसकी रचना सम्बत् १८६५ में हुई—

सम्बत ठारह सै जहाँ, पैंसठ सुर गुरुवार
दुतिया सित मधु मास सुभ, भयो ग्रंथ अवतार

८. रस कल्लोल—१९१२।३४ एफ। यह रस निरूपण सम्बन्धी ग्रन्थ है। सम्भवतः यही सरोज वर्णित कल्लोल तरंगिणी है। ग्रियर्सन ने (१७४) इसका रचना काल सम्बत् १८४६ दिया है।

सरोज उल्लिखित चन्दन सतसई, पथिक बोध और शृङ्गार सार अभी तक खोज में नहीं मिले है। शुक्ल जी ने शृङ्गार सागर, नाममाला कोष, तत्व संग्रह और सीत बसन्त नामक इनके अन्य ग्रन्थों का उल्लेख किया है। यह 'शृंगार सागर' सम्भवतः सरोज का 'शृंगार सार' है और 'तत्व संग्रह' सम्भवतः खोज में प्राप्त 'तत्व संज्ञा' नामक ग्रन्थ है। 'नाममाला' संभवतः 'तत्वसंग्रह' या 'तत्व संज्ञा' का ही पर्याय प्रतीत होता है। शुक्ल जी ने पथिक बोध के अतिरिक्त 'पत्रिका बोध' नामक इनके एक अन्य ग्रन्थ का भी उल्लेख किया है, पर मुझे लगता है कि 'पत्रिका बोध' 'पथिक बोध' का ही विकृत नाम है। सीत बसन्त एक कहानी है। चन्दन जी फारसी में भी लिखते थे। इनका तखल्लुस चन्दन का पर्याय 'संदल' था। शुक्ल जी के अनुसार इनका 'दीवाने संदल' कहीं-कहीं मिलता है।

२२५।१७६

६ चोखे कवि। इनकी कविता चोखी है।

सर्वेक्षण

चोखे के सम्बन्ध में कोई सूचना सुलभ नहीं।

२२६।१७७

१० चतुर बिहारी कवि, ब्रज वासी, सम्बत् १६०५ उ०। इनके पद रागसागरोद्भव में बहुत हैं।

सर्वेक्षण

चतुर बिहारी गोसाईं विट्ठलनाथ के शिष्य थे। यह आगरा के रहने वाले क्षत्री (? खत्री) थे। इनका विवरण दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता में हैं। यह आठ वर्ष की ही वय से कविता करने लगे थे। गोकुल जाकर इन्होंने गुसाईं जी से दिक्षा ली थी, ऐसा उल्लेख वार्ता में है। गोसाईं जी गोकुल में १६२८ से रहने लगे थे, अतः इनका दीक्षाकाल १६२८ के बाद ही सिद्ध होता है। सरोज दत्त संबत् १६०५ इनका प्रारम्भिक जीवन काल है। वार्ता के अनुसार चतुर बिहारी जी गोकुल एवं गोवर्द्धन छोड़ कहीं नही गए और संत दास से इनकी पटरी बैठती थीं[1]। ख्याल टिप्पा नामक ग्रन्थ में चतुर बिहारी के भी पद संकलित हैं।[2]

२२७।१८७

११ चतुर सिहराना, सम्बत् १७०१ में उ०। सीधी बोली में इनकेकवित्त हैं।

सर्वेक्षण

सीधी बोली से अभिप्राय खड़ी बोली है। इस कवि के सम्बन्ध में कोई सूचना सुलभ नहीं।

२२८।१८९

१२ चतुर कवि इनकी कविताएँ सुन्दर हैं।

सर्वेक्षण

यह चतुर कवित्त सवैया लिखने वाले रीतिकालीन शृंगारी कवि हैं। इनका कोई सूत्र अभी तक नहीं मिल पाया है। इनका कवित्त दिग्विजय भूषण से उद्धृत किया गया है। इन चतुर की अवतारणा संभवतः सुजान चरित्र के आधार पर हुई है। अतः इनका समय सम्वत् १८१० के पूर्व या आरम्भ होना चाहिए।

एक चतुर दास ने, जो संत दास के शिष्य थे, सम्बत् १६९२ में श्रीमद्भागवत के एकादश स्कंध का भाषानुवाद किया था।[3] पर यह सरोज के 'चतुर' नहीं प्रतीत होते।

---

(१) दो सौ बावन वैष्णवन की वार्त्ता, तृतीय खंड, पृष्ठ ३२७-३३० (२) खोज रिपोर्ट १९०२।२७ (३) खोज रिपोर्ट १९००।७१, १९०१।११०

२२९।१९०

१३ चतुर विहारी २ ऐजन। इनकी कविताएँ हैं।

सर्वेक्षण

सरोज के यह चतुर विहारी शृंगारी कवित्त-सवैये लिखने वाले रीतिकालीन कवि हैं। इनका एक कवित्त जो दिग्विजय भूषण से उद्धृत है, सरोज में उदाहृत है। इस कवित्त का पहला चरण है—

चतुर विहारी पै मिलन आई बाला साथ
मागत है आज कछु हम पै देवाइये

इस चरण में चतुर विहारी कृष्ण के लिये प्रयुक्त प्रतीत होता हैं। यह कवि का नाम नहीं है। दिग्विजय भूषण में कवि सूची में चतुर विहारी नाम अवश्य है पर यह सूची एकान्त निर्भ्रान्त नहीं।

२३०।१९१

१४. चतुर्भुज ऐजन। इनकी सुन्दर कविता है।

सर्वेक्षण

सरोज वाले यह चतुर्भुज कवित्त सवैया रचने वाले शृंगारी कवि हैं। इनकी कविता दिग्विजय भूषण से उद्धृत की गई है। रीति परम्परा पर चलने वाले निम्नांकित दो चतुर्भुज खोज में मिले हैं। इन्हीं में से एक प्रसंग प्राप्त चतुर्भुज होने चाहिये—

१—चतुर्भुज बाजपेयी—नन्द किशोर के पुत्र, सातन पुरवा, जिला रायबरेली वाले, अयोध्या प्रसाद बाजपेयी 'औध' के भाई, सम्बत् १८६० के लगभग वर्तमान[1]।

२—चतुर्भुज मिश्र—गौतम गोत्रीय अहलुवा अल्ल के सुकुल। रामकृष्ण मिश्र के पुत्र कुलपति मिश्र के वंशज, भरतपुराधीश महाराज बलवंत सिंह के आश्रित। सम्वत् १८९९ में 'अलंकार-आभा' की रचना की।

२३१।१९४

१५. चतुर्भुज दास, सम्वत् १६०१ में उ०। रागसागरोद्‌भव में इनके बहुत पद हैं। यह महाराज स्वामी विठ्ठल नाथ करौली के राजा गोकुलस्थ के शिष्य थे। अष्टछाप में इनका भी नाम है।

सर्वेक्षण

भक्तमाल में अष्टछापी चतुर्भुजदास का उल्लेख नहीं है, यहाँ दो अन्य चतुर्भुज दास हैं—

१—करौली नरेश चतुर्भुज जी, छप्पय ११४—

यह रीति करौलीधीश की तन मन धन आगे धरैं।
चतुर्भुज नृपति की भक्ति को कौन भूप सरवर करैं॥

सरोजकार ने प्रमादवशविवरण में अष्टछापी चतुर्भुजदास एवं इन करौली धीश चतुर्भुज का

---

(१) खोज रि० १९२३।२४ (२) खोज रि० १९१७।१९,१९३८।२७

घालमेल कर दिया है। करौली नरेश कवि नहीं थे। सरोज में उदाहरण अष्टछापी चतुर्भुज का है।

(२) कीर्तन करने वाले, हित हरिवंश के अनुयायी, मुरलीधर छाप रखने वाले राधा वल्लभी चतुर्भुज, छप्पय १५८। सरोज में इनका उल्लेख नहीं है।

चतुर्भुज दास अष्टछाप के प्रसिद्ध एवं सबसे ज्येष्ठ कवि कुम्भन दास के पुत्र थे एवं स्वयं भी अष्टछाप में थे। यह गौरखा क्षत्रिय थे। सम्बत् १५८७ के लगभग इनका जन्म हुआ था। सम्बत् १५९७ विक्रमी में १० बर्ष की वय में यह विट्ठलनाथ द्वारा पुष्टि-संप्रदाय में दीक्षित हुये। इन्हें बचपन से ही काव्य और संगीत की शिक्षा मिली थी तथा साम्प्रदायिक रहस्य की भी जानकारी हो गई थी। इनका देहावसान गोसाईं विट्ठलनाथ जी की मृत्यु के अनन्तर ही सम्बत् १६४२ में गोवर्धन में रुद्र कुण्ड पर हुआ। इनका कोई काव्य ग्रन्थ नहीं, फुटकर पद हैं जिनका प्रकाशन सम्बत् २०१४ में विद्या विभाग, काँकरोली से हुआ है। इसमें कुल ३६५ पद हैं। कल्पद्रुम द्वितीय भाग में इनके पर्याप्त पद है।[1]

२३२।१७८

(१६) चैन कवि

सर्वेक्षण

'बाणी संग्रह' में पृष्ठ ३८८-३९१ पर चैन कवि की साखियाँ हैं। इस संग्रह का लिपिकाल सम्बत् १८२५ है।[2] अतः चैन के सम्बन्ध में इतना ही कहा जा सकता है कि यह सम्बत् १८२५ के पहले कभी हुये।

यह दादू के अनुयायी कहे गये हैं। इनका एक ग्रन्थ चित्रबन्ध खोज में मिला है।[3]

२३३।१७९

(१७) चैन सिंह खत्री लखनऊ वाले, सम्बत् १९१० में उ०। इनका उपनाम हरचरण है। भारत दीपिका, शृंगार सारावली, ये दो ग्रन्थ इन्होंने बनाये हैं।

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध में कोई जानकारी सुलभ नहीं। १९१० कवि का उपस्थिति काल ही है। विनोद में (२०३२) इनके एक तीसरे ग्रन्थ 'बृहत्कवि बल्लभ' का उल्लेख हुआ है। यह ग्रन्थ बिहारी सतसई के प्रसिद्ध टीकाकार हरिचरण दास का है, लखनऊ वाले चैन सिंह का नहीं।

२३४।१८८

(१८) चैनराय

सर्वेक्षण

सरोज के चैनराय रीतिकालीन शृङ्गारी कवि हैं। सरोज में परकीया विप्रलब्धा सम्बन्धी इनका

---

(१) अष्टछाप परिचय, पृष्ठ २६३-७५ (२) रा० रि० भाग ३, पृष्ठ ६० (३) खोज रिपोर्ट १९४४। १५३

एक शृङ्गारी कवित्त उदाहृत है। इन शृङ्गारी चैनराय के सम्बन्ध में सूचना का कोई सूत्र सुलभ नहीं।

शृङ्गारी चैनराय के अतिरिक्त खोज में एक भक्त चैनराय मिले हैं। यह भक्तमाल की टीका करने वाले प्रियादास के शिष्य थे। इन्होंने 'भक्ति सुमिरनी' नामक एक पुस्तिका लिखी है। इसमें भक्तमाल में आये हुये भक्तों की नामावली है। प्रियादास की प्रेरणा से यह ग्रन्थ सम्बत् १७६९ में लिखा गया।[१]

२३५।१९२

(१९) चण्डीदत्त कवि, सम्बत् १८९८ में उ०। यह कवि महाराज मानसिंह के साथ अवध में कुछ दिन रहे थे। इनकी कविता सरस है।

सर्वेक्षण

द्विजदेव महाराज मानसिंह ने सम्बत् १९०६ में अपना प्रसिद्ध काव्य ग्रंथ 'शृङ्गार लतिका' लिखा। यही उनके जीवन काल का सबसे सरस समय था। इसी समय उन्होंने कवियों को विशेष रूप से प्रश्रय दिया होगा। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुये यह स्पष्ट है कि सम्बत् १८९८ चंडीदत्त जी का उपस्थिति काल है, न कि उत्पत्ति काल।

२३६।१९३

(२०) चरणदास, ब्राह्मण, पंडित पुर, जिला फैजाबाद, सम्बत् १५३७ में उ०। इन्होंने ज्ञानस्वरोदय ग्रन्थ बनाया है।

सर्वेक्षण

खोज में चरणदास के निम्नलिखित ग्रन्थ मिले हैं, जिनसे कवि के सम्बन्ध में पर्याप्त प्रामाणिक सामग्री सुलभ हो गई है :—

१. ज्ञान स्वरोदय—१९०१।७०, १९०६।१४७ ई, १९१७।३८ सी, १९२०।२९ सी, १९२३।७४ जे के एल एम एन ओ, १९२६। ७८ एच एन ओ पी क्यू, १९२९।६६ डब्लू एक्स, वाई जेड, १९४७।९३ ग, पं १९२२। १८ ए बी। इस ग्रन्थ के पहले ही दोहे से सूचना मिलती है कि इनके गुरु का नाम शुकदेव था।

नमो नमो शुकदेव जी करूँ प्रणाम अनंत
तब प्रसाद स्वर भेद को चरणदास बरनंत

ग्रन्थ के अन्त में चरणदास ने एक दोहा और छप्पय दिया है जिससे सूचित होता है कि यह दहरा गाँव (अलवर राज्य) में एक ढूसर बनिये के घर में पैदा हुये थे। इनके पिता का नाम मुरली था। इनका शिष्य होने के पहले का नाम रनजीत था। बाल्यावस्था में घूमते-घामते यह दिल्ली आये। यहाँ गुरु शुकदेव से इनकी भेंट हुई। यहीं इन्होंने शिक्षा ली, तब इनका नाम चरणदास हुआ।

दोहा

सुखदेब गुरु किया सु साध दया सुजान
चरणदास रनजीत ने कह्यो स्वरोदै ज्ञान २२६

---

(१) खोज रिपोर्ट १९०६। १४३

छप्पय

डहरे को मेरो जनम नाम रनजीत बखानो
मुरली को सुत जान जात दूसर पहिचानो
बालावस्था माहि बहुरि दिल्ली में आयो
रमत मिले सुखदेव नाम चरनदास धरायो
जोग जुगति हरि मुक्ति करि, ब्रह्म ज्ञान दृढ़ करि गह्यौ
आतम तत्त विचारि कै, अजपा मैं सत सत रह्यो २२७

स्वरोदय प्राणायाम को कहते हैं। इस ग्रन्थ में योग की इसी क्रिया का वर्णन २२७ छंदों, मुख्यतया दोहों में हुआ है।

सरोज में चरणदास का जो कुछ भी विवरण दिया गया है, सब अशुद्ध है। यह न तो ब्राह्मण थे, न तो पंडित पुर जिला फैजाबाद के रहने वाले थे, और न तो सम्बत् १५३७ में उपस्थित ही थे। हाँ, ज्ञानस्वरोदय इनका बनाया हुआ अवश्य है। सरोजकार की सारी जानकारी भाषा-काव्य संग्रह पर निर्भर है। इस ग्रन्थ में चरणदास को सम्वत् १५३७ में मृत कहा गया है।[1] भाषा काव्य संग्रह में जिस स्वरोदय का उल्लेख है, वह इन्हीं चरणदास का है। भाषाकाव्य संग्रह में इस ग्रन्थ के ७ दोहे उद्धृत हैं, जिनमें से पहले और दूसरे दोहे सरोज में भी ले लिये गये हैं।

चारि वेद को भेद है, गीता को है जीव
चरणदास लखु आप में, तो मैं तेरा पीव १
सब योगन को योग है, सर्व ज्ञान को ज्ञान
सर्व सिद्धि की सिद्धि है, तत्व स्वरन को ध्यान २

इनमें से पहिला दोहा १९२३।७४ जो रिपोर्ट में पृष्ठ ३८१ पर उद्धृत है, भाषा काव्य-संग्रह के पाँचवें दोहे में कवि के गुरु का नाम आया है—

शुकाचार्य गुरु कृपा करि, दियो स्वरोदय ज्ञान
तब सों यह जानी परी, लाभ होय की हानि ५

भाषाकाव्य-संग्रह के ६ और ७ संख्यक दोहे स्वरोदय के १० और ११ संख्यक दोहे हैं, जो रिपोर्ट १९२०।२९ बी, पृष्ठ १०१ पर उद्धृत हैं—

इँगला पिँगला सुषुमना, नाड़ी तीन विचार
दहिने बाएं स्वर लखै, लखै धारणा धार ६
पिँगला दहिने अंग है, इँगला सु बाएं होइ
सुषुमन बीचोबीच है, जब चालै स्वर दोइ ७

(२) अमरलोक अखंड धाम-१९०६।१४७ एफ, १९१७।३८ ए, १९२६।७८ ए, १९२९।६५ ए बी, इस ग्रन्थ में गोलोक और राधा कृष्ण के प्रेम का वर्णन है।

(३) अष्टांग योग-१९०५।१७, १९१२।३६ बी, १९२९।६५ सी। गुरु-चेला संवाद रूप में योगासन प्राणायाम और अष्टसिद्धि का वर्णन।

(४) काली नाथन लीला—१९३५।१६ बी।

(५) कुरुक्षेत्र लीला—१९०९।४५। इस ग्रंथ में गुरु का नाम आया है।

(१) भाषा काव्य संग्रह, पृष्ठ ३१

अपने गुरु सुखदेव को, सीस नवाय कैं
कहूँ कथा भागवत, सुनो चित लाय कैं

(६) चरणदास के पद—१९३८।२५ बी।
(७) चरणदास सागर—१९०१।७० !
(८) जागरण माहात्म्य—१९३५।१६ ए।
(९) जोग—१९२९।६५ पी।
(१०) जोग शिक्षा उपनिषद्—१९३८।२५ जी।
(११) तत्व जोग नामोपनिषद्—१९३८।२५ एच।
(१२) तेज विद्योपनिषद्—१९३८।२५ एफ।
(१३) दान लीला—१९०६।१४७ जी।
(१४) धर्म जहाज—१९२९।६५ एन।
(१५) नासिकेत—१९०५।१८, १९२०।२९ सी, १९२९।६५ क्यू, आर, एस, टी।
(१६) निर्गुन बानी १९३५।१६ डी।
(१७) पंच उपनिषद्, अथर्वण वेद की भाषा—१९२६।७८ एल, १९२९।६५ यू।
(१८) पद और कवित्त—१९३८।२५ ई।
(१९) बानी चरणदास की—१९३८।२५ ए।
(२०) बाल लीला—१९२९।६५ डी।
(२१) ब्रज चरित्र—१९२९।६५ एल, १९४७।९३ क।
(२२) ब्रह्मज्ञान सागर—१९१२।३६ सी, १९२६।७८ डी ई एफ जी, १९२९।६५ एच आई जे के, १९४७।९३ ख।
(२३) भक्ति पदार्थ—१९१७।३८ बी, १९०६।१४७ डी, १९२३।७४ बी से लेकर जे तक, १९२९।६५ ई एफ जी।
(२४) भक्ति सागर—१९१२।३६ ए, १९२६।७८ बी सी।
(२५) मटकी और हेली—१९३८।२५ डी।
(२६) मनविरक्तकरन गुटका—१९०६।१४७ बी, १९२३।७४ एफ जी, १९२९।६५ बी।
(२७) माखनचोरी लीला—१९३५।१६ सी।
(२८) योगसंदेह सागर या सार—१९०५।१९, १९२६।७८ आई, जे, के।
(२९) राम माला—१९०६।१४७ ए।
(३०) शब्दों के मंगलाचरण या शब्द—१९०६।१४७ सी, १९१७।३८ डी, १९२३।७४ एफ आई, १९२९।६५ एम।
(३१) षट्रूप मुक्ति, गुरु चेले की गोष्ठी—१९२६।७८ एम, १९२६।६६ ओ।
(३२) सर्वोपनिषद्—१९३८।२५—आई।
(३३) स्फुट पद और कवित्त—१९३८।२५ सी।
(३४) हंसनाद उपनिषद्—१९३२।३८।

कुछ और ग्रन्थ भी मिले हैं जो वस्तुतः एक ग्रन्थ न होकर कई ग्रन्थों के संकलन है, यथा—
१. अनेक प्रकार १९२०।२८ ए, १९२३।७४ ए। इसमें ब्रज चरित्र, अमरलोक कथा,

योग सार, ज्ञानस्वरोदय, ब्रह्मज्ञान सागर, भक्तिपदार्थ, मनविरक्तकरन गुटका, संदेश सागर आदि आठ ग्रन्थ और फुटकर छप्पय कवित्त और स्तुति आदि हैं।

२. भक्तिसागर—राज० रि० भाग १ पृष्ठ ८४। चरणदास की निम्नांकित १७ रचनाएं हैं :—

१—ब्रज चरित्र, २—अमरलोक अखंड धाम, ३—धर्म जहाज, ४—ज्ञान स्वरोदय ५—अष्टांग जोग, ६—पंच उपनिषद् अथर्वण वेद की भाषा, ७—संदेह सागर ८—भक्ति-पदार्थ, ९—चारों जुग वर्णन कुंडलिया, १०—नाम का अंग, ११—सील का अंग, १२—दया का अंग, १३—मोह छुटावन का अंग, —१४—भक्ति पदार्थ, १५—मनविरक्तकरन गुटका सार, १६—ब्रह्मज्ञान, १७—शब्द।

यह ग्रन्थ नवल किशोर प्रेस, लखनऊ से १८९८ ई० में प्रकाशित हुआ था। इसमें ऊपर वर्णित, १, २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, १५, १६, १७ संख्यक ग्रन्थ और षट्रूप मुक्त तथा छप्पय कवित्त कुल १३ ग्रन्थ थे। चैत्र शुक्ल १५ सोमवार, सं० १७८१ को चरणदास ने इस ग्रन्थ के रचने का विचार किया।

संबत सत्रह सै इक्यासी
चैत सुदी तिथि पूरणमासी
सुकुल पच्छ दिन सोमहिवारा
रचूं ग्रंथ यों कियो विचारा
तब ही सों अस्थापन करिया
कछु इक बानी वा दिन करिया

—माधुरी, दिसम्बर १९२७, पृष्ठ ८९८-९९

चरणदास की शिष्या सहजोबाई ने इनका जीवन चरित्र सहजप्रकाश नाम से लिखा है। इसके अनुसार इनका जन्म भाद्रपद शुक्ल ३, मंगलवार, सं० १७६० को हुआ।[१] इनकी मृत्यु अगहन सुदी ४, सं० १८३९ को दिल्ली में हुई।[२] चरणदास जी की प्रधान गद्दी दिल्ली में है। इनके ५२ शिष्य थे। इनमें सहजोबाई, दयाबाई, श्यामाचरण, रामरूप या गुरु भक्तानन्द और जसराम प्रसिद्ध हैं। चरणदास हैं तो निर्गुनिए, पर इन्होंने कृष्ण लीला सम्बन्धी ग्रन्थ भी रचे हैं। इन ग्रन्थों में भी इन्होंने अपने गुरु का स्मरण किया है। यह इस बात को सूचित करता है कि इनमें सांप्रदायिक कट्टरता अधिक नहीं थी। अपने संप्रदाय के अनुयायियों में यह कृष्ण के अवतार माने जाते हैं। यह श्यामचरणदासाचार्य नाम से भी स्मरण किए जाते हैं। डा० त्रिलोकीनारायण दीक्षित ने 'चरनदास' पर डी० लिट्० की उपाधि प्राप्त की है। 'चरनदास' हिन्दुस्तानी एकेडेमी से प्रकाशित हो चुका है।

२३७।१८६

(२१) चेतन चंद्र कवि, सं० १६१६ में उ०। राजा कुशलसिंह सेंगर वंशावतंश की आज्ञानुसार 'अश्व विनोद' नामक शालिहोत्र बनाया है।

सर्वेक्षण

अश्व विनोद की अनेक प्रतियाँ खोज में मिली हैं।[३] इस ग्रंथ का नाम अश्व विनोदी भी है। इसकी रचना कुशलसिंह के लिए हुई थी।

---

(१) उत्तर भारत की संत परम्परा, पृष्ठ ५६७ (२) वही, पृष्ठ ५६६ (३) खोज रि० १९०१। ४६, १९२३।७७ ए, बी, १९२६।८० ए, बी, १९२९।६६, १९४४।१३८ क ख, राज० रि० भाग ४, पृष्ठ २३२

श्री कुशलेश नरेश हित, नित चित चाह लह्यो
अश्व विनोदी ग्रन्थ यह, सार बिचार कह्यो ७

ग्रन्थ का रचनाकाल सं० १६१६ है—

संबत सोलह सौ अधिक चार चौगुने आन
ग्रन्थ कह्यो कुशलेश हित रखक श्री भगवान
माघ फालगुन शुक्ल पख दुतिया सुभ तिथि नाम
चेतन चन्द सुभाखियत गुरु को कियो प्रनाम

—खोज रिपोर्ट १६२३।७७ ए

रचनाकाल सूचक यह छन्द सरोज में भी है। कुशल सिंह सेगरवंशीय क्षत्रिय थे। कवि बाल्यावस्था से ही इनकी शरण में था—

श्री महराजधिराज जू सेंगरवंश नरेश
गुणग्राहक गुणि जनन के जगत बिदित कुशलेश
बालापन में शरन रहि मैं सुख पायो वृंद
सालिहोत्र मत देखि कैं बरतत चेतन चन्द

चेतनचंद कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे। इनके पिता का नाम गोपानाथ था। यह चार भाई थे। तीन भाइयों के नाम इन्द्रजीत, लछिमन और यदुराय थे। यह चौथे भाई थे। इनका मूल नाम तारा चंद था।

घुरहा पाड़े गोपीनाथ
कान्यकुविज में भए सनाथ
तिनके सुत चारौं उधिकाइ
इन्द्रजीत लछिमन जदुराइ
चौथे ताराचन्द कहायो
जिन यह अश्व विनोद बनायो

—खोज रि० १६२६।६६, राज० रि० भाग ४, पृष्ठ २३२

कवि संभवतः बैसवाड़े का निवासी था।

२३८।१८५

(२२) चिरंजीव ब्राह्मण बैसवारे के, सं० १८७० में उ०। इन्होंने (सं० १८१७ प्रथम संस्करण) भारत को भाषा किया है।

सर्वेक्षण

चिरंजीव विरचित 'वर्णाकर पिंगल' खोज में मिला है। इससे इनके पिता का नाम शंकर विदित होता है।

संकर सुत चिरंजीव यह बर्णिक वृत्त गाई—खोज रि० १६२६।७२

खोज में एक वालदास मिले हैं।[१] इन्होंने 'चिन्ताबोध और ब्रह्मवाद' नामक वेदान्त ग्रन्थ रचे हैं। यह रायबरेली जिले के जयनगर निवासी कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे। यह खाकी द्वारा के दिगंबर अखाड़े के थे, जो वैष्णवों का एक उपसंप्रदाय है। इनके पिता का नाम चिरंजीव प्रसाद तिवारी था। सरोज में उदाहरण देते समय चिरंजीव कवि को गोसाईं कहा गया है। प्रतीत होता है कि इन

---

(१) खोज रि० १६२६।३१

बालदास के पिता चिरंजीव तिवारी और भारत भाषा के रचयिता बैसवारे वाले उक्त चिरंजीव ब्राह्मण एक ही व्यक्ति हैं। उनके गोसाईं कहे जाने का रहस्य उनका वैष्णवों के उक्त संप्रदाय से सम्बन्धित होना है। अतः चिरंजीव जी जयनगर जिला रायबरेली के रहने वाले कान्यकुब्ज तिवारी ब्राह्मण थे। विनोद में (१२०१) इनको गोसाईं खेरा का रहने वाला कहा गया है। इससे भी इनका गोसाईं होना सूचित होता है। गोसाईं खेरा जयनगर के पास कोई छोटा सा गाँव होना चाहिए।

चिरंजीव गोसाईं ने भारत भाषा में अपना वंश परिचय इस छप्पय में दिया है :—

बैसवार सुभ देस मनो रतनाकर सागर
सुर गुरु सम कवि लसैं जहाँ बहु गुन के आगर
तहाँ गोसाईं खेर सबै गोस्वामिन को घर
रामनाथ तहँ वैस जाति जाहिर सब भू पर
तिनके सु वंश प्रकट्यो सुकवि नाम चिरंजू लाल कहि
सुभ भारत को भाषा करत सब पुरान को सार लहि
—सरोज, पृष्ठ ९४

चिरंजीव का नाम सूदन की सूची में है। अतः इसका समय १८१० के आसपास या और पूर्व होना चाहिए। १८७० अशुद्ध है। प्रथम संस्करण में इनका समय सं० १८१७ दिया गया है, जो ठीक है।

२३९।१८४

(२३) चंदसखी ब्रजवासी, सं० १६३८ में उ०। इनके पद रागसागरोद्भव में हैं।

सर्वेक्षण

चन्द्रसखी के सम्बन्ध में अभी तक यह भ्रम रहा हैं कि यह मीरा के समान राजस्थान की कोई स्त्री भक्त थीं। श्रीमती पद्मावती शबनम ने 'चन्द्रसखी और उनका काव्य' में इन्हें स्त्री ही स्वीकार किया है। विनोद (१६१) में इन्हें पुरुष स्वीकार किया गया है, जो ठीक है। चन्द्रसखी जी हित हरिवंश के राधावल्लभ संप्रदाय के शिष्य थे। इनकी रचनाओं में 'बालकृष्ण' शव्द आया है। यह बालकृष्ण इनके गुरु थे, जो उक्त संप्रदाय के नागा थे और अपने दल के साथ यत्र-तत्र विचरण किया करते थे। यह 'बालकृष्ण' गो० हरिलाल के शिष्य थे, स्वयं हित हरिवंश के वंशज नहीं थे। चन्द्रसखी की कुछ रचनाओं में गो० हरिलाल (जन्म सं० १७१७ के लगभग) और गो० उदय लाल (जन्म सं० १७०० के लगभग) की भी छाप है। अतः चन्द्रसखी जी का जन्म सं० १७५० के आसपास हुआ प्रतीत होता है। चन्द्रसखी उपनाम है, इनका मूल नाम चन्द्रलता या चन्द्रकिशोर जैसा रहा होगा। इनकी रचनाओं में 'चन्द्र' छाप भी प्रयुक्त है। किंवदन्ती के अनुसार इनका जन्म स्थान ओरछा एवं मृत्यु स्थान वृन्दावन है। चन्द्रसखी जी भी अपने गुरु के समान अपने शिष्य मंडली के साथ यत्र-तत्र विचरण किया करते थे। अतः इनकी वाणी का प्रसार राजस्थान; ब्रज, और उत्तरी मध्यप्रदेश में बहुत है। इनके काव्य लोक-साहित्य में घुल मिल गये हैं। इनका शिष्य समुदाय बहुत था। रसिक दास इनके बाद गद्दी पर बैठे थे। रसिकदास के शिष्य वल्लभ दास थे। ये लोग रसिक सखी और वल्लभ सखी नाम से रचना करते थे।[१]

(१) चन्द्रसखी की जीवनी और रचनाओं की खोज—प्रभुदयाल मीतल, हिन्दी अनुशीलन, अप्रैल, जून-वर्ष १०, अंक २।

२४०।१९५

(२४) चोवा कवि, हरि प्रसाद वंदीजन डालमऊ वाले विद्यमान है। यह कवि असोथर वाले खोचियों के पुराने कवि है। चोवा कवि कविता में निपुण हैं और अब थोड़े दिन से होलपुर में रहा करते हैं।

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध में कोई सूचना सुलभ नहीं है।

छ

२४१।१९७

(१) छत्र साल बुन्देला, महाराजा पन्ना बुन्देलखंड, सं० १६६० में उ०। यह महाराज महान् कवि, कवि लोगों के कल्पवृक्ष, गुणग्राहक, साहित्य के निपट चाहक, सूर शिरोमणि, उदार चित्त बड़े नामी हुए हैं। इनके दरबार तक जो कवि पहुँचा वह मालामाल हो गया। बहुतेरे कवि नित्य प्रति के लिए नौकर थे, और सैकड़ों भूमि के चारों ओर से इनका सुयश सुन हाजिर होते थे। इनके जमाने से लेकर आज तक जो, जो राजा दीवान बाबू भाई बेटे सभासिह, हृदय साहि, अमानसिंह हिन्दूपति इत्यादि पन्ना में हुए, वे सब कवि कोविदों के क़दरदान रहे। राजा छत्रसाल ही के दान सम्मान सुन सुन किसी जमाने में बुन्देलखन्ड, बैसवारा, अन्तरवेद इत्यादि में सैकड़ों हजारों मनुष्य कवि हो गए थे। एक दफे उड़छे के बुन्देला राजा ने राजा छत्रसाल जी को ठट्ठा के तौर पर यह लिखा कि 'ओंड़छे के राजा अरु दतिया की राई। अपने मुँह छत्रसाल बन भना बाई।' तब छत्रसाल ने 'सुदामा तन हेर्‌यो तब रंकहू ते राव कीन्हो' यह कवित्त बनाकर उनके पास भेजा। राजा छत्रसाल ने 'छत्र प्रकाश' ग्रन्थ बनवाया है जिसमें बुन्देलों की उत्पत्ति से लेकर अपने समय तक बुन्देल खंडी राजों का वृत्तांत है। जो युद्ध राजा वीरसिंह देव और अब दुस्समद खाँ अबुलफजल के दमाद से हुआ है, सो देखने योग्य है। बुन्देला अपने को एक गहरवार की शाखा अर्थात् काशी नरेश के वंश में समझते हैं। महेवा में इनकी आदि राजधानी है।

सर्वेक्षण

छत्रसाल चंपतराय के पुत्र थे। इनका जन्म ज्येष्ठसुदी ३, संवत् १७०५ को हुआ था और यह ज्येष्ठ बदी ३, सं० १७८८ को दिवंगत हुए। इनके १७ रानियाँ और ६९ पुत्र थे। इनके वड़े पुत्र हृदय साहि (शासनकाल सं० १७८८-९६) थे, हृदयसाहि के पुत्र सभासिह (शासनकाल सं० १७९६-१८०९) हुए, सभासिंह के पुत्र अमान सिंह (शासनकाल १८०९-१३) और हिन्दूपति (शासनकाल सं० १८१३-३४) हुए जो क्रमशः पन्ना के राजा हुए। ये सभी कवियों के आश्रय दाता हुए हैं।

महाराज छत्रसाल स्वयं कवि थे। इनकी कविताओं का संकलन वियोगीहरि द्वारा संपादित होकर 'छत्रसाल ग्रन्थावली' नाम से प्रकाशित हो चुका है। बुन्देल वैभव[१] में इनके निम्नांकित आठ ग्रन्थों की सूची दी गई है। ये आठों ग्रन्थ छत्रसाल ग्रन्थावली में संकलित हैं—

(१) श्री राधाकृष्ण पचीसी, (२) कृष्णावतार के, कवित्त, (३) रामावतार के कवित्त, (४) ग्राम ध्वजाष्टक, (५) हनुमान पचीसी, (६) महाराज छत्रसाल प्रति अक्षर अनन्य प्रश्न, (७) दृष्टांती औरफुटकर कवित्त, (८) दृष्टांती तथा राजनैतिक दोहा समूह।

---

(१) बुन्देल वैभव, भाग २, पृष्ट ३२१

छत्रसाल के दरबार में प्रसिद्ध कवि लाल थे, जिन्होंने वीर रस का प्रसिद्ध ग्रन्थ 'छत्र प्रकाश' लिखा था। यह ग्रन्थ सभा द्वारा प्रकाशित हो चुका है। लाल के अतिरिक्त इनके यहाँ नेवाज, हरिचन्द, हरिकेश, पुरुषोत्तम, पंचम, लालमणि आदि कवि भी थे। अक्षर अनन्य से भी इनका पूरा संपर्क था। महाकवि भूषण की पालकी में तो इन्होंने अपना कंधा ही लगा दिया था।[1]

छत्रसाल की राजधानी पहले मऊ के पास महेवा थी, फिर पन्ना हुई। छत्रपुर इन्हीं का बसाया हुआ है।

सरोज में दिया हुआ १६६० ईस्वी सन् है। इस सन् अर्थात् सं० १७४७ में छत्रसाल उपस्थित थे। सं० १६६० विक्रमी में तो छत्रसाल का जन्म भी नहीं हुआ था। छत्रसाल ने सं० १७२२ से १७८८ तक राज्य किया। इस बीच ओरछे में निम्नांकित राजा हुए[2] :—

(१) सुजान सिंह १७२०-२६
(२) सुजान सिंह के भाई, इन्द्रमणि १७२६-३२
(३) इन्द्रमणि के पुत्र जसवन्त सिंह १७३२-४७
(४) जसवन्त सिंह के पुत्र भगवन्त सिंह १७४७-४८
(५) उदीत सिंह १७४८-६३

इन पाँच राजाओं में से किसने छत्रसाल को 'अपने मुँह छत्रसाल बनत भनाबाई' कहा था, निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता। यह घटना छत्रसाल के प्रारम्भिक जीवनकाल की होगी।

२४२।१६६

(२) छितिपाल, राजा माधव सिंह, बन्धल गोत्री, अमेठी जिले सुल्तांपुर के रईस, विद्यमान हैं। इन महाराज के वंश में सदैव से काव्य को चर्चा रही है। राजा हिम्मत सिंह, राजा गुरु दत्त सिंह, राजा उमराव सिंह इत्यादि सब खुद भी कवि थे। इनके यहाँ कवि लोगों में जो शिरोमणि कवि थे उनका मान रहा और ऐसा दान मिला कि फिर दूसरी सरकार में जाने की चाह कम रही। राजा हिम्मत सिंह के यहाँ भाषाकाव्य के महान् पंडित सुखदेव मिश्र और गुरुदत्त सिंह के पास उदय नाथ कवींद्र तथा उमरावसिंह के पास सुवंश शुक्ल जैसे नामो गिरामी कवि थे और उनके नाम के बड़े-बड़े साहित्य के ग्रंथ रचे हैं। राजा माधव सिंह इस अवध प्रदेश में कविकोविदों की कदरदानी में बहुत ही गनीमत हैं। इन महाराजा के बनाए हुए मनोज-लतिका, देवीचरित्र सरोज, त्रिदीप अर्थात् भर्तृहरि शतक का भाषा उल्था, ये तीन ग्रंथ हमारे पास मौजूद हैं। और ग्रन्थ हमने नहीं देखे।

सर्वेक्षण

अमेठी के राजा माधव सिंह छितिपाल नाम से कविता करते थे। यह भारतेंदुयुगीन कवि हैं। द्विजदेव इनसे कुछ पूर्ववर्ती कवि हैं। सरोज में छितिपाल के मनोज-लतिका ग्रन्थ से 'कूकि उठी कोकिलान···' कवित्त उद्धृत है। यह द्विजदेव के श्रृङ्गार-लतिका छन्द १४ की पूर्ण छाया है।

---

(१) बुन्देलखंड का संक्षिप्त इतिहास, अध्याय २३, पैरा ११, १३, १४, १५, १६ (२) वही, अध्याय १५, पैरा १४-१७

मनोज-लतिका में कुल २२७ और शृङ्गार-लतिका में २२८ छन्द हैं। शृङ्गार-लतिका के अंतिम छन्द की पूर्ण छाया मनोज-लतिका का २२५ वाँ छंन्द है। शृङ्गार-लतिका की रचना सं० १६०७ में और मनोज-लतिका की रचना सं० १६१३ में हुई।

गुन[३] भू[१] खंड[९] सचंद[१], वत्सर पावन जानिए
गुरु बासर आनन्द, माघ शुक्ल तिथि पंचमी

ग्रन्थ में कवि ने अपना परिचय भी दिया है :—

सूरज कुल कछवाह ते, प्रगट्यो बंधुल गोत
अरि तम दारन हित कर्‍यो, दूजा भान उदोत
रतनाकर सो कुल विदित, विदित रतन से भूप
प्रगट भयो छितिपाल तहँ, माधो सिंह अनूप
देश अमेठी पाइ, रामनगर वर बाटिका
रही सघन झलराइ, यह मनोजलतिका ललित

—खो० रि० १६४१।१६८

सुन्दरी तिलक में छितिपाल की रचना है। ग्रियर्सन में (३३२) छितिपाल को गुरुदत्त सिंह का उपनाम समझ लिया गया है। सुवंश शुक्ल के आश्रयदाता उमराव सिंह बिसवाँ, जिला सीतापुर के कायस्थ तालुकेदार थे। अमेठी में उमराव सिंह नामक कोई राजा यदि हुआ भी हो, तो सुवंश से उसका कोई सम्बन्ध नहीं।

२४३।२०६

(३) छेमकरण कवि ब्राह्मण, धनौली जिले बाराबंकी, सं० १८७५ में उ०। इनके बनाए हुए ग्रन्थ रामरत्नाकर, रामास्पद, गुरु कथा, आह्निक, रामगीत माला, कृष्णचरितामृत, पद-विलास, वृत्तभास्कर, रघुराज घनाक्षरी इत्यादि बहुत सुन्दर हैं। प्रायः ६० वर्ष की अवस्था में सं० १६१८ में इनका देहान्त हुआ।

सर्वेक्षण

छेमकरन का पूरा परिचय महेशदत्त ने अपने भाषा काव्य संग्रह में दिया है। छेमकरन जी उक्त महेशदत्त के नाना थे। इनके अनुसार छेमकरन जी सरयूपारीण ब्राह्मण थे। यह गोमती नदी तट-स्थित धनौली नामक ग्राम, तहसील राम सनेही, जिला बाराबंकी के रहने वाले थे। इनके पिता का नाम आधार मिश्र, पितामह का लक्ष्मणराम और प्रपितामह का लालमणि मिश्र था। संवत् १८३५ में इनका जन्म हुआ था। इन्होंने कई पंडितों से संस्कृत का अध्ययन किया था। इनका मुख्य कार्य अध्यापन था। यह अंबाला, बड़ौदा और बम्बई आदि नगरों में द्रव्योपार्जनार्थ गए थे। इनके आठ कन्याएँ थी। इन्होंने अपने जीवन के अन्तिम १४ वर्ष अयोध्या में बिताए। यहीं सं० १६१८ में इनका देहावसान हुआ। यह संस्कृत और हिन्दी में समान रूप से रचना करते थे। महेशदत्त ने इनके निम्नांकित ग्रंथों की सूची दी है।

संस्कृत ग्रन्थ—(१) श्रीरामरत्नाकर वृत्त, (२) रामास्पद (३) गुरुकथा, (४) आह्निक।
हिन्दी ग्रन्थ—(१) रामगीत माला, (२) कृष्णचरितामृत, (३) पदविलास, (४) वृत्तभास्कर, (५) रघुराज घनाक्षरी (६) गोकुलचन्द्र कथानक।

यह रामोपासक थे और इन्होंने अपने ग्रंथों में हरि का यशोवर्णन ही किया है।

छेमकरण जी के निम्नांकित ग्रन्थ खोज में मिले है :—

(१) कृष्णचरितामृत—१९०६।४६

(२) गोकुलचंद्र प्रभाव या उषा चरित्र—१९२३।२२७ ए। यह ३८ पन्नों का ग्रन्थ है। इसके २० पन्नों में इनके आश्रयदाता गोकुलचंद्र का वर्णन है। गोकुलचंद्र नैऋत्यकोण में मथुरा से ३६ कोस की दूरी पर स्थित हिंडोन नामक स्थान के रहने वाले सनाढ्य ब्राह्मण थे। कवि से इनकी भेंट बम्बई में हुई थी। अन्तिम १८ पन्नों में उषा-अनिरुद्ध की कथा है।

(३) पद विलास—१९२३।२२७ बी। रामचरित तथा विविध देवी देवताओं की आरती।

(४) रघुराज घनाक्षरी—१९२३।२२७ सी। कविता में राम कथा। इसकी रचना अयोध्या में सं० १९११ में हुई :—

इंदु[१] इंदु[१] अंक[९] चंद्र[१] सम्बत सँभारे पर
फागुन की सातैं शुचि बुधबार वर में
राज रघुराज की घनाक्षरी प्रथित भई
छेमकर छेमकर अवध नगर में

(५) रामचरित वृत्तप्रकाश—१९२३।२२७ डी। यह पिंगल ग्रन्थ है, साथ ही साथ इसमें राम कथा भी है। इसका रचनाकाल सं० १९०० है :—

नभगनाथ प्रति कृपा तें, नभ[०] नभ[०] नव[९] ससि[१] जोरि
संवत्सर आनन्द कहि, आनन्द हरिहि निहोरि

(६) रामगीत माला—१९२३।२२७ ई, १९३१।५२ ए बी।

'पक्षी चेतावनी' नामक एक ग्रन्थ और भी खोज में मिला है।[१] यह निश्चय पूर्वक नहीं कहा जा सकता कि यह इन्हीं क्षेमकरण मिश्र की रचना है अथवा नहीं। इस ग्रन्थ में कवि की छाप खेमकर है। यह कवि भी ब्राह्मण है। क्षेमकरण मिश्र भी कभी-कभी अपनी छाप खेमकर रखते थे, जैसा कि रघुराज घनाक्षरी के ऊपर उद्धृत कवित्त से स्पष्ट है। संभवतः यह इन्हीं क्षेमकरण मिश्र की रचना है। इस ग्रन्थ में कुल ३१ दोहे हैं। प्रत्येक दोहे में किसी न किसी पक्षी का नाम आया है। यह संभवतः शकुन विचार सम्बन्धी ग्रन्थ है। इसकी नायिका विरहिणी है। ग्रन्थ का दूसरा नाम 'चिरई चेतन' भी है।

कहत खेमकर द्विज समुझि, खेमकरनि विश्राम
नृपति सभा महँ चित्त दै, चिरई चेतन नाम ३१

२४४।२०१

(४) छेमकरन २, अंतरवेद वाले। इनके कवित अच्छे हैं।

सर्वेक्षण

ग्रियर्सन (३११) और विनोद में (१४४४, ११३७।१) धनौली वाले क्षेमकरण से इन अन्तर्वेद वाले क्षेमकरण को अभिन्न समझा गया है। अन्तरवेदी क्षेमकरण की छाप क्षेम है, जिसके खेम हो जाने की भी संभावना है। चिरई चेतन या पक्षी चेतावनी १९२६।२३५ इन अन्तरवेदी छेमकरण की भी रचना हो सकती है।

---

(१) खोज रि० १९२६।२३५

२४५।१९६

(५) छत्तन कवि । इनकी कविता बहुत विचित्र है ।

सर्वेक्षण

छत्तन के सम्बन्ध में कोई सूचना सुलभ नहीं ।

२४६।१९८

(६) छत्रपति कवि ।

सर्वेक्षण

ग्रियर्सन में (७५) इनके विजय मुक्तावली वाले छत्र कवि होने की संभावना की गई है । इस कवि के भी संबंध में कोई सूचना सुलभ नहीं ।

२४७।२००

(७) छेम कवि, सं० १७५५ में उ० ।

सर्वेक्षण

पद्माकर के चाचा, मोहनलाल के बड़े भाई, एवं जनार्दन भट्ट के पुत्र क्षेमनिधि अपनी कविता में क्षेम छाप रखते थे । क्षेमनिधि का जन्म मोहनलाल के जन्म (सं० १७४३) के पहले कभी हुआ होगा । अतः सरोज में दिया हुआ क्षेम का सं० १७५५ कवि का रचनाकाल है । पद्माकर के पुत्र अंबुज के वंशज भालचंद्र ने महाकवि पद्माकर शीर्षक लेख में इनका एक कवित्त उद्धृत किया है ।[१]

२४८।२०२

(८) छबीले कवि ब्रजवासी । रागसागरोद्भव में इनके पद हैं ।

सर्वेक्षण

विनोद में (३३२) इनका रचनाकाल सं० १७०० दिया गया है । सूचना-सूत्र नहीं सूचित किया गया है । सूदन ने प्रणम्य कवियों की सूची में इनका भी नामोल्लेख किया है, अतः यह संवत् १८१० के पूर्ववर्ती अवश्य हैं ।

२४९।२०३

(९) छैल कवि, सं० १७५५ में उ० । हजारा में इनके कवित्त हैं ।

सर्वेक्षण

छैल की कविता कालिदास के हजारे में थी और हजारे का रचनाकाल सं० १८७५ के आसपास है, अतः अधिक से अधिक यही कहा जा सकता है कि छैल कवि उक्त संबत् के लगभग उपस्थित थे ।

एक छैल जौनपुर निवासी थे । यह राजाराम कायस्थ और शेख फतह मुहम्मद के आश्रित थे । इनका रचनाकाल नहीं ज्ञात है, जिससे इनके हजारा वाले छैल से अभेद स्थापित किया जा सके । इनका एक ग्रन्थ कवित्त नामक मिला है ।[२]

---

(१) माधुरी वर्ष १२, खंड २, अंक १, माघ १९९० (२) खोज रि० १९४४।११७

१. सहस धारा धारा बिथरिगो विमल किति
निति निति नई रुचि पुहुमी बिसेखिए
कायथ मयंक महि मंडल में मंडलीक
खंड खंड सुखद प्रचंड तेज पेखिए
गोबरधन तनै को पूरन प्रताप राजै
रूव-याहि थे राजाराम राजाराम लेखिए
करन करतूति रीति प्रीति धर्म द्वार जाके
जौनपुर माहि छैल छहु रितु देखिए १

२. छैल भनै कुरसै जु करै सिगड़ी गढ़ टूटत ख्याल सुनीके
श्री सेख फते मुहम्मद को जस फैलि चल्यो मुख माह गुनी के २

यह सिगड़ी आजमगढ़ जिले के अन्तर्गत सगड़ी तहसील तो नहीं है ?

२५०।२०४

(१०) छीत कवि, सं० १७०५ में उ० । ऐजन । हजारा में इनके कवित्त हैं ।

सर्वेक्षण

हजारे में इनकी रचना है, अतः यह सं० १८७५ के पूर्ववर्ती है । सरोज में दिया हुआ सं० १७०५ असंदिग्ध रूप से न तो जन्मकाल माना जा सकता है, न रचनाकाल । सरोज में इस कवि का शृंगारी कवित्त उद्धृत है, जिससे यह कवि रीतिकालीन ज्ञात होता है और अष्टछापी छीत स्वामी से इसकी विभिन्नता भी सिद्ध हो जाती है । ग्रियर्सन में (४१) दोनों को अभिन्न समझ लिया गया है ।

२५१।२०५

(११) छीत स्वामी, ब्रजवासी, सं० १६०१ में उ० । इनके पदराग कल्पद्रुम में बहुत हैं । यह महाराज वल्लभाचार्य के पुत्र विट्ठलनाथ जी के शिष्य थे । इनकी गिनती अष्टछाप में है ।

सर्वेक्षण

छीत स्वामी का जन्म सं० १५७२ के लगभग मथुरा में हुआ था । यह मथुरा के चौबे पंडा, बीरबल के पुरोहित एवं शैव मतावलंबी थे । साथ ही दुष्ट प्रकृति के भी थे । मथुरा के प्रसिद्ध गुंडों में वे थे और छीतू चौबे के नाम से कुख्यात थे । सं० १५९२ में इन्होंने गोस्वामी विट्ठलनाथ जी से वल्लभ संप्रदाय में दीक्षा ली । दीक्षा लेने के अनन्तर यह गोवर्द्धन के पास पूँछरी नामक स्थान पर एक श्याम तमाल के नीचे रहने लगे । गोसाईं विट्ठलनाथ के देहावसान के अनन्तर, ७० वर्ष की आयु में, १६४२ में ही, इनका भी देहावसान, पूँछरी में हो गया । इनके मृत्यु-स्थल पर इनका स्मारक बना हुआ है ।[1]

छीत स्वामी का कोई ग्रन्थ नहीं । इनके २०१ फुटकर पद हैं, जो २०१२ में विद्या विभाग, काँकरोली से सुसंपादित होकर प्रकाशित हुए हैं ।

---

(१) अष्टछाप परिचय, पृष्ठ २६२-६३

भक्तमाल में छीत स्वामी का नामोल्लेख भगवद्‌गुणगान करने वाले २२ भक्तों की सूची में छप्पय १४६ में हुआ है।

२५२।२०७

(१२) छेदीराम कवि, सं० १८९४ में उ०। इन्होंने कवि नेह नामक पिंगल बनाया है। यह कविता में महा निपुण मालूम होते हैं। यद्यपि यह ग्रन्थ हमारे पुस्तकालय में है, तथापि इनके ग्राम का नाम उसमें नहीं पाया गया।

सर्वेक्षण

कवि नेह पिंगल की रचना सं० १८९४ में हुई। यही संवत् सरोज में दिया हुआ है। सरोज में रचनाकाल सूचक यह दोहा भी उद्‌धृत है :—

मकर महीना पच्छ सित, संवतसर हर केह
जुग[४] ग्रह[९] वसु[८] जिव[१] कुज दिवस, जन्म लियो कवि नेह

विनोद के अनुसार (९८६) छेदीराम वैश्य थे, 'नेह' इनका उपनाम था, नेह पिंगल में 'नष्ट उदिष्ट मेरु मर्कटी पताका' इत्यादि कहे गए हैं और ग्रंथ २६० अनुष्टुप श्लोकों के बराबर है। विनोद में अंक विपर्यय से १८९४ का १८४९ हो गया है।

२५३।

(१३) छत्र कवि, सं० १६२५ में उ०। इन्होंने विजय मुक्तावली नामक ग्रन्थ अर्थात् भारत की कथा का बहुत ही संक्षेप से सूची-पत्र के तौर से नाना छन्दों में वर्णन किया है।

सर्वेक्षण

छत्र कवि के तीन ग्रन्थ खोज में मिले हैं :—

(१) विक्रम चरित्र—१९१२।४४। इस ग्रन्थ में विक्रमादित्य की कथा है। इसकी रचना अगहन पूर्णिमा, बुधवार को सं० १७५१ में हुई—

संवत सत्रह से इक्यावन
मारग सुदि पून्यो मनभावन
बिधु सुत बास (वार?) सदा सुखकारी
तादिन कीन्यो ग्रन्थ विचारी

उस समय दिल्ली में औरङ्गजेब का शासन था :—

दिल्लीपुर अमरावती, सुरपति औरँगसाहि
गिरिवर गन अरि बस किए, अरु सम दीजै काहि

(२) विजय मुक्तावली—१९०६।२३, १९०९।४८, १९२६।८३ ए से के तक, कुल ११ प्रतियाँ। १९२९।६८ ए से ई तक, द १९३१।२१। सरोज में इस ग्रन्थ का उल्लेख हुआ है इसकी रचना सं० १७५७ में हुई :—

संवत सत्रह सै सपत ऊपर बाहि पचास
शुक्ल पच्छ एकादशी रचौ ग्रन्थ नभ मास

—खोज रि० १९०६।२३

इसमें बहुत संक्षेप में महाभारत की कथा है।

(३) सुधा सार—१६२६।६८ एफ। यह श्रीमद्भागवत के दशम स्कंध का भाषानुवाद है। इसकी रचना सं० १७७६ में हुई—

संबत सत्रह सै बरस और छिहत्तरि तत्र
चैत्र मास तिस अष्टमी ग्रंथ कियो कवि छत्र

इन तीनों ग्रन्थों में कवि ने अपना और अपने आश्रयदाताओं का परिचय दिया है। कवि का पूरा नाम छत्र सिंह था। यह श्रीवास्तव कायस्थ थे। यह अटेर राज्य भदावर ग्वालियर के निवासी थे। यह अटेर नगर अब ग्वालियर में है। भदावर के राजा का राज्य इधर बहुत संकुचित हो गया। था। अटेर भिंड से हटकर उनकी राजधानी आगरा जिले की बाह तहसील के नौगवाँ नामक गाँव में आ गई थी।

मथुरा मंडल में बसैं देस भदावर ग्राम
उगलत प्रसिद्ध महि छेत्र बटेश्वर नाम
सुजस सुवास सु निकट ही पुरी अटेरहिं नाम
जप जाज्ञ होमादि व्रत रचन धाम प्रति धाम
नगर आहि अमरावती वासी विबुध समान
आखंडल सों लसत तहँ भूपति सिंह कल्यान
श्रीवास्तव कायस्थ है छत्रसिंह यह नाम
रहत भदावर देस में ग्रह अटेर सुख धाम

—विजय मुक्तावली १६२६।६८ बी

छत्रसिंह के पिता का नाम भगीरथ और पितामह का नाम गोविन्द दास था :—

श्रीवास्तव कायस्थ है अमर दास के वंस
गोविन्द दास भए प्रगट निज कुल के अवतंस १४
तिनके भगीरथ भए कुल दीपक गुन ग्राम
तिनके प्रगटे निज तनय छत्रसिंह इहि नाम १५

—विक्रम चरित्र १६३२।४४

विजय मुक्तावली की रचना करते समय, सं० १७५७ में छत्र कवि भदावार नरेश कल्यान सिंह के आश्रय में थे, किन्तु सुधासार की रचना के समय वहीं के गोपाल सिंह के आश्रय में थे।

सोहहि सिंह गुपाल की कीर्ति दिसा बिदिसानि
भूतल खलभल अरिन के गहतु खर्ग जब पानि
भूपति भानु भदोरिया किरनि क्रांति जुग छाइ
सुहृद सकल नृप के सुखद तम अरि गए बिलाइ
ताको सुखद अटेर पुर मुलुक भदाबर माँहि
चारि वर्ण युत धर्म तहँ रहत भूप की छाँह

खोज रिपोर्ट १६०६ और १६०६ में प्रमाद से कल्यान सिंह अमरावती के राजा कहे गए हैं। वस्तुतः वह अहेर के राजा थे। अमरावती अटेर का उपमान है। विजय मुक्तावली से उद्धृत ऊपर वाले अंश में यह स्पष्ट देखा जा सकता है।

छत्र सिंह के ग्रन्थों के आधार पर स्पष्ट है कि इनका रचनाकाल सं० १७५१ से १७७६ है। अतः सरोज में दिया संबत् १६२५ ठीक नहीं।

२५४।२०८

(१४) छेम कवि २, बन्दीजन, डलमऊ के, सं० १५८२ में उ०। यह कवि हुमायूँ बादशाह के यहाँ थे।

सर्वेक्षण

हुमायूँ का शासनकाल सं० १५८७-६७ है, अतः सरोज में दिया हुआ संबत् कवि का रचनाकाल है। कवि के संबंध में कोई अन्य सूचना सुलभ नहीं।

२५५।२०६

(१) जगत सिंह बिसेन, राजा गोंड़ा के भाई बंद, सं० १७६८ में उ०। यह कवि राजा गोंडा और भिनगा के भैया थे और देउतहा नामक रियासत के ताल्लुकेदार थे। शिव कबि अरसेला बन्दीजन इन्हीं के ग्राम देउतहा के वासी थे। उनसे काव्य पढ़कर यह महा विचित्र कविता की है। छन्द शृङ्गार ग्रन्थ पिंगल में और साहित्य सुधानिधि नामक ग्रन्थ अलंकार में बनाए हैं; पर वे हमारे पुस्तकालय में नहीं हैं।

सर्वेक्षण

जगत सिंह बिसेन ठाकुर थे। यह भिनगा जिला बहराइच के ताल्लुकेदार ठाकुर दिग्विजय सिंह के पुत्र थे। यह सरजू के उत्तरी किनारे पर स्थित देउतहा, जिला गोंडा में रहा करते थे। इनका रचनाकाल संबत १८२० से १८७७ तक है, जो खोज में प्राप्त इनके १२ ग्रन्थों से ज्ञात होता है। अतः सरोज में दिया हुआ संबत् १७६८ इनके जन्मकाल के निकट है। हां, यदि यह ईस्वी-सन् हो तो रचनाकाल भी हो सकता है।

खोज में इनके निम्नांकित १२ ग्रंथ मिले हैं :—

(१) अलंकार साठि दर्पण—१६२३।१७६ ए। लगभग २०० के अलंकार कहे गए हैं, जिनके हजारों भेदोपभेद हैं। इनमें से मम्मट ने ६० मुख्य अलंकार चुन लिए थे। मम्मट के आधार पर इन ६० अलंकारों का वर्णन इस ग्रंथ में हुआ है।

सत सहस्र मथि साठि जे मम्मट लिए निकारि
तिनै प्रगट भाषा करौं नाना शास्त्र बिचारि ६

यह ग्रन्थ 'साहित्य सुधानिधि' के बाद की रचना है जिसका उल्लेख इस साठि में हुआ है :—

कहे एक सै आठ जे अलंकार परिमान
भरत सूत्र के मत समुझि अगनित भेद बखान १२३
मम कृत साहित सुधानिधि कह्यो सबै तेहि मांह
अलंकार वासौं सबै जानि लेहु कवि नाह १२४

इस ग्रन्थ में कुल १२४ दोहे हैं। पुष्पिका में इन्हें श्रीमन्महाराजकुमार बिशेनवंशावतंस दिग्विजयसिंहात्मज जगत कवि कहा गया है। इससे इनकी जाति और इनके पिता का नाम ज्ञात होता है। राज वंश के होने के कारण यह अपने को महाराजकुमार कहते थे। पुष्पिका से ही इसका रचनाकाल सं० १८६४ ज्ञात होता है।

(२) उत्तम मंजरी—१९२३।१७९ ओ। यह चार पन्ने का छोटा सा ग्रन्थ है। इसमें बिहारी सतसई के चुने हुए १८ दोहों की टीका है। ये दोहे उत्तम काव्य, व्यंग, के उत्कृष्ट नमूने हैं। यह साहित्य सुधानिधि की परवर्ती रचना है। इसमें लक्षण साहित्य सुधानिधि से दिए गए हैं और उदाहरण बिहारी सतसई से।

अलंकार धुनि वनि सहित दोष रहित रसखान
सतसैया मथि कैं रच्यो उत्तम काव्य प्रमान

रचनाकाल नहीं दिया गया है।

(३) चित्र मीमांसा या चित्र काव्य—१९०९।१२७ बी, १९२०।६४ सी। यद्यपि भरत आदि ने चित्र काव्य की चर्चा नहीं की है, पर व्यास के अनुसार, और कवियों के आग्रह से जगत सिंह ने इस ग्रंथ की रचना की है।

चित्र काव्य भरतादि मत नहीं कियो परिमान
तदपि व्यास मत समझि कै करत पच सज्ञान २

(४) जगत प्रकाश—१९२३।१७९ सी। दोहों में नायक नायिका का नखशिख वर्णन है। यह रस मृगांक के बाद की रचना है, क्योंकि इसमें इसका नामोल्लेख हुआ है। ग्रन्थ का रचनाकाल सं० १८६५ है।

घर तरु रस बसु ससी कहि, बितसर स्वंबा?
माधव सित सुख सप्तमी लियो ग्रन्थ अवतार ३

(५) जगत विलास—१९२६।१९२ ए। या रसिकप्रिया का तिलक १९२३।१७९ एच, आई, जे। टीका गद्य में है।

(६) नायिका दर्श—१९२३।१७९ ई। इस ग्रंथ में कुल ११८ छन्द हैं, १ छप्पय, ३३ दोहे, ८४ कवित्त। ग्रन्थ नखशिख सम्बन्धी है। इसका रचनाकाल सं० १८७७ है।

संबत नग[७] नग[७] नाग[८] ससि[१] ससि बासर सुभ चारु
माधव सित तिथि पंचमी, लियो ग्रन्थ अवतारु

१९०९।१२७ सी पर वर्णित नखशिख इसी ग्रन्थ की एक खंडित प्रति है, जिसमें ५९ ही छंद है।

(७) नखशिख—१९२३।१७९ डी। यह ऊपर वर्णित ग्रन्थ से पूर्णतया भिन्न है। रचनाकाल नहीं दिया गया है। इसमें नायिका के अंगों के वर्णन के साथ-साथ राधाकृष्ण का मिलन आदि भी वर्णित है। इसमें कवित्त सवैये प्रयुक्त हुए हैं।

(८) भारती कंठाभरण—१९२३।१७९ बी, १९४७।१०६ क। यह पिंगल ग्रन्थ है। इसमें कुल ५५५ छन्द हैं।

पंचावन अरु पांच सै, सकलछन्द परिमाण
सेस मतो उर आनि कै, भाषा कियो विधान

प्राप्त प्रति का लिपिकाल सं० १८६४ है। शिवसिंह ने संभवतः इसी ग्रन्थ का उल्लेख छन्द शृङ्गार नाम से किया है। इसमें कवि ने अपने वंश का भी वर्णन किया है। वत्स गोत्र में मयूर नामक कवि हुए हैं। उन्हीं मयूर के वंश में विसेन हुए। विसेनों ने मझौली में राज्य किया। इसी

वंश के एक राजकुमार ने गोंडा राज जीता। इस राजकुमार का नाम प्रतापमल था। इनके पुत्र साहिमल्ल हुए। साहिमल्ल के कुसुम सिंह हुए। कुसुम सिंह के मान सिंह हुए, जिनकी प्रशंसा स्वयं दिल्लीपति ने की। मान सिंह के लछिमन सिंह हुए, लछिमन सिंह के नरबाहन हुए। नरबाहन के पुत्र दुर्जन सिंह और दुर्जन सिंह के पुत्र अमर सिंह हुए। अमर सिंह के रामचन्द्र, रामचन्द्र के दत्तसिंह, दत्तसिंह के उदवंतसिंह हुए। दत्तसिंह के छोटे भाई का नाम भवानी सिंह था, जो नरसिंह सदृश थे। इन भवानी सिंह ने अजवार क्षत्रियों को हराकर भिनगा राज्य की स्थापना की। इनके पुत्र का नाम बरिबंड था। बरिबंड सिंह के पुत्र का नाम दिग्विजय सिंह था। इन्हीं दिग्विजय सिंह के पुत्र जगत सिंह हुए, जा इस ग्रन्थ के रचयिता हैं। इन्है द्योतहरी गाँव जागीर में मिला था।

दत्तसिंह को बंधु लघु नाम भवानी सिंह
हाटक कस्यप रिपु भए उदै आय नरसिंह २३
महा जुद्ध कीने अमित जानत सब संसार
बसि लीन्हें भिनगा सकल भाजे सब जनवार २४
भरत खण्ड मण्डन भयो ताकों सुत बरिबंड
जिन उजीर सों रन रचे अपने ही भुजदंड २५
शिव पुरान भाषा कियो जानत सब संसार
सकल शास्त्र को देखि मत सुने पुरान अपार २६
ता सुत भो दिग्विजय सिंह सकल गुनन को खानि
सबै महीपति भूमि के राखत जाकी आनि २७
जाहिर या संसार में जस विवेक को ऐन
जाके गुन जानै गुनी जो देखै निज नैन २८
जगत सिंह ताको तनय बंदि पिता के पाय
पिंगल मत भाषा करत छमियो सब कविराय २९

(९) रत्न मंजरी कोष—१९२३।१७९ एल। क से ह तक और क्ष तथा स्वरों के नाम संज्ञा का वर्णन। कुल ६१ दोहे। रचनाकाल सं० १८६३ :—

कहे राम[३] रस[६] नाग[८] ससि[१] कातिक दुतिया सेत
जगत सिंह भाषा कियो जानि लेहु कवि हेतु ६०

यह ग्रन्थ क्षपणक के अनुसार है।

छपनक, मतो विचारि के निज मति के अनुसार
रतन मंजरी नाम कहि रचे कवित करतार ६१

(१०) रस मृगांक—१९२३।१७९ के। इस ग्रन्थ में रस, अलंकार, नखशिख और नायिका-भेद, सभी कुछ है। इसमें केवल उदाहरण है, लक्षण नहीं। इसमें सब दोहे ही दोहे हैं। लिपिकाल सं० १८६३ है। यही रचनाकाल भी हो सकता है।

(११) रामचन्द्र चन्द्रिका—१९२३।१७९ एफ। या राम चन्द्रिका की चन्द्रिका १९२३।१७९ जी। कवि ने राम चन्द्रिका के छन्दों के लक्षण इस ग्रन्थ में दिए हैं।

केशवदास प्रकास करि, राम चन्द्रिका चारु
बहु छन्दनि जुत पावनी राम चरित सुख सारु १

छंद ज्ञान जिनको नहीं, लिखि लिखि कियो अशुद्ध
ताते मैं लच्छन कियो, होइ न छन्द विरुद्ध

(१२) साहित्य सुधानिधि—१९०६।१२७ ए, १९२०।६४ ए बी, १९२३।१७९ एम, एन, १९२६।१९२ बी, १९४७।१०६ ख। यह ग्रन्थ बरवै छन्दों में रचा गया है। इसमें कुल ६३६ बरवै हैं। ग्रन्थ १० तरङ्गों में विभक्त है।

कहे छ सै छत्तीसै बरवै बीनि
दस तरङ्ग कर जानी ग्रंथ नवीन

ग्रन्थ की रचना सं० १८५८ में हुई।

संबत वसु[८] सर[५] वसु[८] ससि[१] अरु गुरुवार
शुक्ल पंचमी भादों रच्यो उदार

प्रथम तरंग में काव्य निरूपण उत्तम मध्यम अधम, द्वितीय में शब्द निरूपण, तृतीय में उत्तम और मध्यम गुणीभूत काव्य, चतुर्थ में कुटिला वृत्ति लक्षणा, पंचम में सरलावृत्ति अभिधा, षष्ट में अलंकार, सप्तम में गुण, अष्टम में भाव, नवम में रीति, दशम में दोष वर्णित है। ग्रन्थ में कवि ने दो बरवों में अपने निवास स्थान का भी परिचय दिया है, जो सरोज में भी उद्धृत हैं।

श्री सरजू के उत्तर गोंड़ा ग्राम
तेहि पुर बसत कविन गन आठों जाम
तिन महँ एक अल्प कवि अति मतिमन्द
जगत सिंह सो बरनत बरवै छन्द

ग्रन्थ संस्कृत के पुराने साहित्याचार्यों के आधार पर रचा गया है। यह रसमृगांक का परवर्ती ग्रन्थ है। कवि ने नायिका भेद आदि को रसमृगांक में देखने का निर्देश किया है।

नायिकादि संचारी सात्विक हाव
रसमृगांक ते जानौ सब कविराव

विनोद में (८७९) चित्र मीमांसा और चित्र काव्य, दो अलग ग्रन्थ मान लिए गए हैं। इसमें छन्द शृंगार ग्रन्थ भी दिया गया है और न जाने किस आधार पर इसका रचनाकाल सं० १८२७ स्वीकार किया गया है।

२५६।२१५

(२) जुगुल किशोर भट्ट २, कैथलवासी, सं० १७६५ में उ०। यह महाराज मुहम्मदशाह के बड़े मुसाहबों में थे। इन्होंने संबत् १८०३ में 'अलंकार निधि' नामक एक ग्रन्थ अलंकार का अद्वितीय बनाया है, जिसमें ६९ अलंकार उदाहरण समेत वर्णन किए हैं। उसी ग्रन्थ में ये दोहे अपने नाम और सभा के समाचार में कहे हैं।

दोहा—ब्रह्मभट्ट हौं जाति को, निपट अधीन नदान
राजा पद मोकौं दियो, महमद साह सुजान १
चारि हमारी सभा में, कवि कोविद मति चारु
सदा रहत आनंद बढ़े, रस को करत विचारु २

मिश्र रुद्रमनि विप्रवर और सुखलाल रसाल
सतंजीव सु गुमान हैं, सोभित गुनन बिसाल ३

सर्वेक्षण

अलंकार निधि की एक प्रति खोज में मिली है।[१] इसमें कवि ने अपने सम्बन्ध में अनेक सूचनाएँ दी है। कवि जाति का ब्रह्म भट्ट था। बादशाह महम्मदशाह ने (राज्यकाल सं० १७७६-१८०५ वि०) इसे राजा का पद दिया था। इनकी सभा में रुद्रमणि, सुखलाल, सतंजीव, गुमान, आदि चार प्रसिद्ध कवि थे। यह सब सूचनाएँ सरोज उद्धृत दोहों से मिल जाती हैं। ग्रन्थ में और भी परिचयात्मक दोहे हैं, जिनसे ज्ञात होता है कि इनके पिता का नाम बालकृष्ण और पितामह का निहबल राम था, स्वयं इनका पूरा नाम जुगल किशोर था। इनके छह पुत्र थे। इनका जन्म-स्थान कैथल था। यह दिल्ली में सुखपूर्वक रहते थे।

जुगल किसोर सु नाम है, बालकृष्ण मो तात
दादो निहबल राम है, छ अमल सुत अवदात ४
कैथल जन्म स्थान है, दिल्ली है सुखवास
जामें विविध प्रकार है, रस कौ अधिक विलास ५

सरोज के अनुसार इसकी रचना सं० १८०३ में हुई थी, पर वस्तुतः इसकी रचना सं० १८०५ में हुई।

सर[५] नभ[०] वसु[८] ससि[१] सहित है संबत फागुन मास
कृष्ण पच्छ नौमी बुधौ पूज्यो ग्रंथ विलास ४२

इस ग्रंथ के ७७ संख्यक किशोर भी यही है। दोनों कवियों का पूरा नाम जुगुल किशोर है, दोनों बन्दीजन हैं, दोनों दिल्ली में रहते थे, दोनों बादशाह मुहम्मदशाह के आश्रित थे। इनके किशोर संग्रह की कोई प्रति खोज में नहीं मिली है। इनके दो अन्य संग्रह मिले हैं, जिनमें किशोर संग्रह के ही समान अन्य कवियों की भी रचनाएँ संकलित हैं। ये संग्रह हैं, 'कवित्त संग्रह' (१९२३।२१२) और 'फुटकर कवित्त' (१९०२।५९) कवित्त संग्रह में पद्माकर, गुलाल, किशोर, मंडन, भूधर, महबूब और परसाद के ४३ कवित्त संकलित हैं।

ग्रियर्सन (३४८) के अनुसार कैथल पंजाब के करनाल जिले में है।

२५७।२१४

(३) जुगुल किशोर कवि १। इनके शृंगार रस में कवित्त अच्छे हैं।

सर्वेक्षण

इस नाम के तीन कवि अभी तक खोज में मिले हैं। इनमें से किस के साथ सरोज के इस कवि का अभेद स्थापित किया जाय, कहना कठिन है।

(१) जुगल किशोर—१९०६।२७४। जुगल आह्निक इनकी रचना है। इसमें राधाकृष्ण का दैनिक कार्य-क्रम है। यह अष्टयाम-सा है। सरोज में दिया हुआ कवित्त इसी ग्रन्थ का प्रतीत होता है। विनोद में (१४६६) इस कवि का उल्लेख अज्ञात कालिक प्रकरण में हुआ है।

---

(१) खोज रि० १९०१।१४२

(२) युगलकिशोर मिश्र—१९२६।५०८, १९१२।८७ बी रिपोर्टों में इनके युगल कृत नामक ग्रन्थ का उल्लेख है। वस्तुतः पदों में लिखित यह ग्रंथ जुगल दास[1] की रचना है।

(३) युगल किशोर चारण—यह लिंबड़ी राज्य के चारण थे। यह सं० १९३५ में उपस्थित थे।[2] इनके पूर्वज सम्भवतः पंजाबी थे। यह महाराज जसवन्त सिंह के आश्रित थे।[3]

२५८।२३०

(४) युगराज कवि। इनका बहुत ही सरस काव्य है।

सर्वेक्षण

इस कवि के संबंध में कोई सूचना सुलभ नहीं। विनोद में (१४६५) इस सरस कवि को बहुत ही निम्न श्रेणी दी गई है।

२५९।२४८

(५) जुगुल प्रसाद चौबे। इनकी बनाई हुई दोहावली बहुत सुन्दर है।

सर्वेक्षण

विनोद में (१४६७।१) प्रथम त्रैवार्षिक खोज रिपोर्ट के आधार पर इनके 'रामचरित्र-दोहावली' नामक ग्रन्थ का उल्लेख है। संभवतः यही सरोज वर्णित दोहावली है; पर सरोज के अन्तर्गत जो रचना दोहावली से उद्धृत है, वह न तो दोहा है, न राम चरित्र। वह तो रोला छन्द में राधा-कृष्ण काव्य है।

षट भूषन अनुराग सहज सिंगार जुगल वर
रसनिधि रूप अनूप वैस ऐस्वर्य गुनन गुर
लीला षट ऋतु दान मान मंजुल मन मोदी
भोजन सदन विहार करै ललिता की गोदी—सरोज, पृष्ठ ११७

२६०।२४३

(६) जुगुल कवि, सं० १७५५ में उ०। इनके बनाए हुए पद अति अनूठे एवं महा ललित हैं।

सर्वेक्षण

ग्रियर्सन (३१३) में इस ग्रन्थ के इन २६० संख्यक जुगुल कवि और ३०३ संख्यक जुगुलदास की अभिन्नता की सम्भावना की गई है। इस सम्भावना में सार है। दोनों पद रचयिता हैं। जुगुलदास अपने पदों में जुगुल और जुगुलदास दोनों छाप रखते हैं। सरोज में जुगुलदास की कोई रचना उद्धृत नहीं है, जुगुल कवि का एक पद उद्धृत है जो राधावल्लभी संप्रदाय के पूर्ण रूपेण अनुकूल है। इसके अन्तिम दो चरण ये हैं :—

---

(१) यही ग्रन्थ, कवि संख्या ३०३ (२) विनोद कवि संख्या २३३२।१ (३) माधुरी, जून १९२७, 'गुजरात का हिन्दी साहित्य' शीर्षक लेख।

मंद मंद मुसकात परसपर प्रेम के फन्द परे हैं
छतियाँ जुगुल जुगुल सियरावत बतियाँ करत खरे हैं

खोज रिपोर्टों में जुगुलदास के ५ पूर्ण और १ अपूर्ण पद उद्धृत हैं। अपूर्ण पद में कवि छाप नहीं है, ३ पूर्ण पदों में जुगुल छाप है और २ में जुगुलदास। जुगुल छाप वाले पद :—

१ मैन के जाल विसाल नैन दोउ मैन फँसी ऐसो को न फँसी है
जुगुल जाहि अनुराग न या छवि ताहि त्यागि मुँह लाइ मसी है
२ सुर मुनि गावत पार न पावत जा जस दस आठ चार षट
जुगुल जाहि सिव धरत समाधा, ताहि लगी राधा राधा रट—१९१२।८७ बी

३ ब्रह्म सनातन सहित प्रेम
जुगुल कियौ बस बिनहिं नेम—१९२६।२११

जुगुलदास छाप वाले पद :—

१ चमक परत बनत मास, पुहमि सुहमि पर प्रकास,
ठान्यो जनु दुतिय रास, निरखत अधिकारी
सब विधि मति मन्द जासु, बरनत कवि जुगुलदास,
दीजै रति रसिक रास, आन आस टारी—१९१२।८७ बी

२ जुगुलदास जस कीट अंग
कृष्ण सुमिरि हो कृष्ण रंग—१९२६।२११

जुगुलदास का रचनाकाल सं० १८२१ है।[1] सरोज में जुगुल का समय सं० १७५५ दिया गया है। इसे कवि का जन्मकाल माना जा सकता है।

२९१।२२१

(७) जानकी प्रसाद पँवार, जोहे बनकटी, जिले रायबरेली। वि०। यह कवि ठाकुर भवानी प्रसाद के पुत्र फारसी, संस्कृत, भाषा इत्यादि विद्याओं में बहुत प्रवीण है। इनके बनाए हुए बहुत ग्रन्थ हमारे पास हैं। उर्दू जबान में शाहनामा अर्थात् हिन्दुस्तान की तारीख, और भाषा में रघुबीर ध्यानावली, राम नवरत्न, भगवती विनय, रामनिवास रामायण रामानन्द विहार, नीति विलास, ये सात ग्रन्थ हैं। यह चित्रकाव्य और शांत रस के वर्णन में बहुत अच्छे हैं। इनमें सहनशीलता उदारता भी बहुत है।

सर्वेक्षण

मातादीन मिश्र ने इनको जुहवा ग्राम रायबरेली का रहने वाला कहा है। इन्हें जीवित कवियों में माना है, जैसा कि ये थे भी। इनकी नीति व्यवहार सम्बन्धी एक पुस्तक का उल्लेख है जिसमें

---

(१) यही ग्रंथ, कवि संख्या ३०३

३६० कवित्त थे।[१] विनोद (१८१२) के अनुसार इनका 'नीति विलास' नामक ग्रन्थ १९०६ में छपा था। इसमें ३६१ कवित्त थे। यह वही ग्रंथ है जिसकी ओर संकेत मातादीन जी ने किया है।

जानकी प्रसाद जी अपनी रचनाओं में कभी-कभी पूरा नाम रखते थे, कभी-कभी केवल पमार। खोज में इनके दो ग्रन्थ मिले है :—

(१) भगवती विनय १९२६।१९६ए, १९४७।१३० क।

(२) राम नवरत्न १९२६।१९६ बी, १९४७।१३० ख। इस ग्रन्थ का रचनाकाल सं०१९०८ है।

भई पूर्ण ज्यों पूर्णिमा चंद आनन्दमै जैति श्री राम निर्भेद गीता
तिथी कार्तिकी पूर्णिमा विक्रमादित्त, उन्नीस सै अष्ट संबत पुनीता

इस ग्रन्थ में कवि ने अपने प्रपितामह का नाम निहाल सिंह, पितामह का नाम झाऊ सिंह और पिता का नाम भवानी सिंह दिया है :—

नाम निहाल सिंह जग जाहिर
झाऊ सिंह तासु सुत माहिर
तासु भवानी सुवन सुजाना
ताकै मै मतिमन्द अजाना

इस ग्रन्थ में नव विनय है :—

(१) अवधी भाषा में २५१ छन्दों में देवी देवताओं आदि की वंदना

(२) नाम की ओर चित्ताकृष्ट करने वाले ५१ छन्द

(३) राम नाम का माहात्म्य ५१ छन्द

(४) कृष्ण-लीला १०१ छन्द

(५) राम-कृष्ण की प्रार्थना के १०१ छन्द, चित्र काव्य

(६) ब्रजभाषा में स्तुतियाँ

(७) राम-स्तुति ५१ छन्द

(८) पंजाबी ढङ्ग पर वाह गुरु की वंदना

(९) पूर्वीय भाषा में १२३ छन्दों में राम भक्ति

ग्रन्थकार ने इस ग्रन्थ में अपने निवास स्थान का भी वर्णन कर दिया है।

राम कृपा ते पद रति माते जमींदार पुर जोहवै
दच्छिन गंगा डेढ़ कोस है परगन डलमरू सोहवै

इसके अनुसार इनका गाँव जोहवै है, जो गंगा से डेढ़ कोस दक्षिण रायबरेली जिले के डलमऊ परगने में स्थित है। यह जमींदार के रहने की जगह है।

२६२।२२२

(८) जानकी प्रसाद २। दुशाले की याचना सिंहराज से करने का केवल एक कवित्त हमने पाया है।

---

(१) कवित्त रत्नाकर भाग २, कवि संख्या ४

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध में कोई सूचना सुलभ नहीं।

२६३।२२३

(६) जानकी प्रसाद कवि बनारसी ३, सं० १८६० में उ०। इन्होंने संबत् १८७१ में केशव कृत रामचन्द्रिका ग्रन्थ की टीका बनाई है, और युक्ति रामायण नाम ग्रन्थ रचा है, जिसके ऊपर घनीराम कवि ने तिलक किया है।

सर्वेक्षण

देवकी नन्दन की प्रसिद्ध हवेली वाले काशी नरेश के भाई देवकीनन्दन के पुत्र का नाम जानकी प्रसाद था। बिहारी सतसई की सतसैयावर्णार्थ देवकी नन्दन टीका के रचयिता असनी वाले ठाकुर देवको नन्दन के यहाँ थे। इन ठाकुर के पुत्र धनीराम जानकी प्रसाद के आश्रय में थे। इन्हीं धनीराम के पुत्र प्रसिद्ध कवि सेवक हुए।

जानकी प्रसाद ने केशव कृत राम चन्द्रिका की जो टीका बनाई है, उसी का नाम राम भक्ति प्रकाशिका है। विनोद (११३१) में इस एक ग्रन्थ को दो ग्रन्थ समझ लिया गया है। यह टीका सं० १८७२ में बनी थी, न कि १८७१ में, जैसा कि सरोज में लिखा है। खोज में इसकी ३ प्रतियाँ मिली है।[१]

जानकी प्रसाद कृत युक्ति रामायण की दो प्रतियाँ खोज में मिली है।[२] धनीराम ने इस ग्रन्थ की टीका तत्वार्थ प्रदीप नाम से की है। इस ग्रन्थ की भी एक प्रति खोज में मिली है।[३] अप्रकाशित संक्षिप्त रिपोर्ट में लिखा गया है कि यह रचना भूल से जानकी प्रसाद के नाम से चढ़ गई है, है धनीराम की ही। पर रिपोर्टों में उपलब्ध सारी सामग्री के अध्ययन से यह बात ठीक नहीं प्रतीत होती, सरोज की ही बात ठीक सिद्ध होती हैं। तत्वार्थ प्रदीप के अन्त में दो पुष्पिकाएँ है। पहली मूल ग्रन्थ के अन्त में, दूसरी टीका के अन्त में। पहली पुष्पिका में मूल ग्रन्थ के रचयिता का नाम जानकी प्रसाद दिया गया है—

इति जानकी प्रसाद विरचिते युक्ति रामायण प्रतिहार सर्ग ७

दूसरी पुष्पिका में टीकाकार का नाम धनीराम दिया गया है—

इति श्री धनीराम विरचितस्य तत्वार्थ प्रदीपस्य समाप्तः संबत् १९६३ अश्वनि मासे कृश्न पक्षे अमावस्यां ग्रन्थ समाप्तः।

२६४।२१३

(१०) जनकेश भाट, मऊ, बुन्देलखंड, सं० १९१२ में उ०। यह कवि छत्रपुर में राजा के यहां नौकर है। इनका काव्य बहुत मधुर है।

---

(१) खोज रि० १९०३।२०, १०४७।१२६ क, ख (२) खोज रि० १९२६।१९७, १९४१।८० (३) खोज रि० १९२६।१०३

सर्वेक्षण

मऊ झांसी जिले में है। सं० १९१२ कवि का उपस्थिति काल ही होना चाहिए, क्योंकि यदि इसे जन्मकाल माना जायगा तो सरोज के प्रणयनकाल में कवि की वय केवल २३ वर्ष की होगी, जो प्रसिद्धि प्राप्त करने के लिए पर्याप्त नहीं है। सूचना का अन्य कोई सूत्र सुलभ नहीं।

२६५।२२६

(११) जसवन्त सिंह बघेले, राजा तिरवा, जिले कन्नौज, सं० १८५५ में उ०। यह महाराज संस्कृत, भाषा, फारसी आदि में बड़े पंडित थे। अष्टादश पुराण और नाना ग्रन्थ साहित्य इत्यादि सब शास्त्रों के इकट्ठे किए। शृङ्गार शिरोमणि ग्रन्थ नायिका भेद का, भाषा भूषण अलंकार का और शालिहोत्र, ये तीन ग्रन्थ इनके बनाए हुए बहुत अद्भुत हैं। सम्बत् १८७१ में स्वर्गवास हुआ।

सर्वेक्षण

जसवंत सिंह बघेल क्षत्रिय थे। यह फर्रुखाबाद जिले के अंतर्गत स्थित तिरवा के राजा थे। शृङ्गार शिरोमणि की अनेक प्रतियाँ खोज में मिली हैं।[1] पर इनसे कवि के विषय में कोई सूचना नहीं मिलती। यह रस ग्रन्थ है। इसमें अन्य कवियों के भी उदाहरण हैं। विनोद (११०५) के अनुसार इनका रचनाकाल सं० १८५६ है। शालिहोत्र की कोई प्रति अभी तक नहीं मिली है, भाषा भूषण तिरवा नरेश जसवंत सिंह की रचना नहीं है। यह जोधपुर नरेश प्रसिद्ध जसवन्त सिंह राठौर की रचना है।

यह संस्कृत विद्या में पंडित, बड़े कवि, शूर, योगी तथा पंडित कवि और गुणी लोगों का आदर करने वाले थे। इनके पुस्तकालय में अठारहों पुराण मूल संस्कृत में थे। ये सं० १९३० में इनके पौत्र राजा इन्द्र नारायण के यहाँ विद्यमान थे। इनके कोई पुत्र नहीं था, अतः इन्होंने अपने भाई के पुत्र को गोद लिया था। इनकी मृत्यु सं० १८७१ में हुई। इनके पश्चात इनके अनुज प्रीतम सिंह स्थानापन्न हुए।[2]

सभा के अप्रकाशित संक्षिप्त विवरण के अनुसार प्रसिद्ध कवि ग्वाल ने इन्हीं जसवन्त सिंह के आश्रय में रहकर रसिकानन्द नामक ग्रन्थ की रचना की, यह कथन ठीक नहीं। ग्वाल ने रसिकानन्द की रचना सं० १८७९ में नामा नरेश जसवन्त सिंह के नाम पर की थी। उक्त ग्रन्थ में नाभा नामा राज वंश आदि का पूरा वर्णन प्रारम्भ के ४-२५ छन्दों में हुआ है।[3]

२६६।२३७

(१२) जसवन्त कवि २, सं० १७३२ में उ०। इनके कवित्त हजारा में हैं।

सर्वेक्षण

खोज में सं० १७५० के पूर्व दो जसवन्त मिलते हैं। एक हैं जसवन्त सिंह स्थविर जैन, सारङ्गपुर, मालवा निवासी, जिन्होंने सं० १६९४ में कर्मरेख की चौपाई लिखी।[4] दूसरे हैं जोधपुर नरेश प्रसिद्ध जसवन्त सिंह राठौर। सम्भवतः इन्हीं दूसरे जसवन्त की रचना हजारे में रही होगी।

---

(१) खोज रि० १९०१।१२६, १९२३।१८४ ए बी सी डी, १९२६।२०२ (२) कवित्त रत्नाकर, भाग १, कवि संख्या १७ (३) राज० रि०, भाग ३, पृष्ठ १४४।४५ (४) द १९३१।४२

जसवन्त सिंह जोधपुर के महाराज गज सिंह के पुत्र और सूर सिंह के पौत्र थे। यह अजीत सिंह के पिता थे। इनका जन्म सं० १६८३ में हुआ था। इनका राज्यकाल सं० १६९५ से १७३५ तक है। यह बादशाह शाहजहां के कृपा पात्र थे। बलख और कंधार की लड़ाइयों में यह अटक पार गए थे। यह दक्षिण मालवा और गुजरात के सूबेदार भी थे। औरङ्गजेब के भाई शुजा से मिलकर इन्होंने औरङ्गजेब से युद्ध किया था। और उसका खजाना लूटकर जोधपुर ले गए थे। औरंगजेब ने इन्हें फिर गुजरात का सूबेदार बनाया था और शिवा जी का दमन करने को भेजा था; किन्तु इन्होंने उन्हें विशेष कष्ट नहीं दिया। अतः बादशाह ने अप्रसन्न होकर इन्हें काबुल भेज दिया, जहां ६ वर्ष रह कर इन्होंने पठानों को दबाया। वहीं जमुरँद नदी के किनारे सं० १७३५ में इनका देहावसान हुआ।

खोज के अनुसार आगरे के प्रसिद्ध कवि सूरति मिश्र इनके काव्य गुरु थे; [१] पर यह बात ठीक नहीं। सूरति मिश्र का रचनाकाल सं०१७६६-१८०० है[२] और जसवन्त सिंह का देहान्त सं० १७३५ में हो गया था। अतः दोनों का भेंट भी संभव नहीं, गुरु शिष्य होना तो दूर की बात है।

जसवन्त सिंह के निम्नांकित ग्रन्थ खोज में मिले हैं :—

(१) अनुभव प्रकाश १९०१।७२, १९०४।१५०, राज० रि०, भाग १। इस ग्रन्थ में ईश्वर और माया का वर्णन है।

(२) आनन्द विलास १९०१।७३, १९०४।१७, राज० रि०, भाग १। इसमें शंकर के अनुसार वेदान्त कथन है। इसका रचनाकाल सं० १७२४, कार्तिक सुदी १०, बुधवार है।

संबत सत्रह सै बरस ता ऊपर चौबीस
सुकुल पच्छ कार्तिक विषे दसमी सुत रजनीस

(३) अपरोक्ष सिद्धान्त १९०१।७१, १९०४।१४, १९२६।२०१ ए, राज० रि०, भाग १। इसमें आत्म तत्त्व का विवेक है।

(४) इच्छा विवेक—राज० रि०, भाग १। इसमें केवल ६ कवित्त हैं।

(५) प्रबोध चन्द्रोदय नाटक—१९०४।२२, राज० रि० भाग १

(६) भाषा भूषण १९०४।४७, १९०६।१७६, २५१, १९२०।७०, १९२३।१८३ ए बी सी डी ई एफ, १९२६।२०१ बी सी डी ई, १९२९।१७०, द १९३१।४३, राज० रि०, भाग १। यही जसवन्त सिंह का सर्वाधिक ख्यात ग्रन्थ है। यह अलंकार ग्रन्थ है। इसमें एक ही दोहे में लक्षण और उदाहरण दिए गए हैं। इसकी बहुत-सी टीकाएँ हुई हैं। यह ग्रन्थ काव्य की दृष्टि से नहीं लिखा गया है, आचार्यत्व की दृष्टि से लिखा गया है। यह कवियों में आचार्य गिने भी जाते हैं। भाषा भूषण की कुछ प्रतियों में कतिपय अन्य साहित्यांग भी मिलते हैं।

(७) सिद्धान्त बोध—१९०४।१६, राज० रि०, भाग १। इसमें ब्रह्मज्ञान का विवेचन है।

(८) सिद्धान्त सार—१९०४।४६, राज० रि०, भाग १। मोक्ष और आत्मज्ञान का निरूपण इसका विषय है।

---

(१) खोज रि० १९०१।८६ (२) देखिए, यही ग्रंथ, सूरति मिश्र कवि संख्या ९३१

२६७।२१०

(१३) जवाहिर कवि १, भाट विलग्रामी, सं० १८४५ में उ०। इन्होंने जवाहिर रत्नाकर नामक ग्रन्थ बहुत सुन्दर बनाया है।

सर्वेक्षण

जवाहिर राय, विलग्राम, जिला हरदोई के भाट थे। इनके पिता का नाम रतन राय था। जवाहिर के निम्नलिखित तीन ग्रन्थ खोज में मिले हैं :—

(१) जवाहर रत्नाकर—१९१२।८४ बी। यह अलंकार का ग्रंथ है। इसमें कुल ४६४ छन्द हैं। यह सं० १८२६, भादों सुदी ७, गुरुवार को पूर्ण हुआ।

भादों सुदि तिथि सप्तमी और वार गुरुवार
अठारह सत सिती औ षट सम्बत् चारु
संभु कृपा अपार ते सुभ दिन अरु सुभवार
सिरी नगर विलग्राम में भयो ग्रंथ अवतार

कवि के किसी पूर्वज परशुराम को गो० तुलसीदास ने अपने हाथ की लिखी रामचरित मानस की एक प्रति दी थी :—

स्वामी तुलसी दास जू तिन पर कीन्हों नेहु
रामायन निज हाथ की लिखी दई सुनि लेहु
अबहीं जो सो धरी है रामायन अभिराम
स्वामी तुलसी दास की पूजन मन के काम

इस ग्रंथ में अमीर मीर हैदर की प्रशस्ति भी है। यह संभवत: इनके आश्रयदाता थे:—

जगत सकल तह प्रगट कर करन करन छवि धीर
कलिजुग अमी अमी वचन हयदर मीर अमीर

(२) बारह-मासा—१९१२।८४ ए, १९२३।१८५। इस ग्रन्थ में १३० छन्दों में राधा-कृष्ण का चरित्र है। इसकी रचना सं० १८२२ आषाढ़ सुदी ३ को हुई।

सुदि असाढ़ तृतिया रुचिर, बार शुक्र अवतार
बारहमासा का भयो संबत् ये उर धार १२९
ठारह सत बाईस, संबत लीजो जानि कै
कृपा करैं हरि ईस, कहत जवाहर जो सुनै १३०

(३) नखशिख—१९१२।८४ सी। इसमें कुल २६४ दोहे हैं। रचनाकाल नहीं दिया गया है। जवाहर का रचनाकाल सं० १८२२-२६ है। अतः सरोज में दिया हुआ स० १८४५ कवि का उपस्थितकाल ही हो सकता है, जन्म काल नहीं।

२६८।२११

(१४) जवाहिर कवि २, भाट, श्री नगर, बुन्देलखंडी, सं० १९१४ में उ०। इन्होंने बहुत सुन्दर कविता की है।

सर्वेक्षण

सरोज में दिया हुआ सं० १९१४ कवि का उपस्थितिकाल ही होना चाहिए, क्योंकि यदि यह जन्मकाल है तो २० वर्ष के कवि की कविता का सरोज में संकलित किया जाना बहुत सम्भव नहीं।

२६७ संख्यक जवाहिर, विलग्रामी के जवाहिर रत्नाकर में एक दोहा है—

शंभू कृपा अपार ते, सुभ दिन अरु सुभवार
सिरी नगर विलग्राम में, भयो ग्रंथ अवतार

—खोज रि० १९१२।८४ बी

दोहे के द्वितीय दल में सिरी नगर शब्द आया हुआ है। कहीं इसने तो सरोजकार को नहीं छला। यदि ऐसा है तो २६७, २६८ संख्यक दोनों जवाहिर एक ही हैं और सं० १९१४ विशुद्ध कल्पना प्रसूत है। उस युग में ऐसी भ्रांतियाँ बहुत हुई हैं।

२६९।२१७

(१५) जैनुद्दीन अहमद कवि, सं० १७३६ में उ०। यह कवि लोगों के महा मानदान दायक और आप भी महान् कवि थे।

सर्वेक्षण

ग्रियर्सन १४४ के अनुसार यह चिंतामणि त्रिपाठी के आश्रयदाता थे। ऐसी स्थिति में सरोज में दिया हुआ सं० १७३६ इनका उपस्थितिकाल ही है। सरोज में उदाहृत पीठ वाला इनका कवित्त दिग्विजय भूषण से उद्धृत है।

२७०।२१८

(१६) जयदेव कवि १, कंपिला निवासी, सं० १७७८ में उ०। यह कवि नवाब फाजिलअली खाँ के यहाँ थे और सुखदेव मिश्र कंपिला वाले के शिष्यों में उत्तम थे।

सर्वेक्षण

विनोद के अनुसार (४३०) सुखदेव मिश्र सं० ७६० तक अवश्य जीवित रहे, अतः उनके शिष्य जयदेव का रचना काल सं० १७६० के पूर्व होना चाहिए। जयदेव सं० १७७८ में भी उपस्थित रहे हों, असंभव नहीं। नवाब फाजिलअली खाँ औरङ्गजेब के सिपहसालार थे। सुखदेव मिश्र ने इनके नाम पर 'फाजिलअली प्रकाश' की रचना की थी। गुरु-शिष्य एक ही दरबार से सम्वन्धित रहे हों, असम्भव नहीं।

२७१।२१९

(१७) जयदेव कवि २, सं० १८१५ में उ०। इनके कवित्त चोखे हैं।

सर्वेक्षण

इन जयदेव दूसरे के सम्बन्ध में कोई सूचना सुलभ नहीं।

२७२।२२०

(१८) जैतराम कवि। इनके शांत रस के कवित्त अच्छे हैं।

सर्वेक्षण

जैतराम के तीन ग्रन्थ खोज में मिले हैं, सभी शान्त रस के हैं। इनका रचनाकाल सं० १७९५ है।

(१) गीता की सुबोधिनी टीका। १९१२।८५, १९१७।८८, राज० रि०, भाग ४, पृष्ठ ७। इस टीका में ७६२ चौपाई, ३६३ दोहे, ४ छन्द, और २ श्लोक हैं। इस ग्रन्थ से सूचित होता है कि यह वृन्दावन में निवास करते थे।

श्री वृन्दावन पुलिन मधि वास हमारी सोइ
जहां जैत भाषा करी सुनत सबै सुख होइ
रास स्थली याही कूँ कहिए
प्रेम पीठ नाम सो लहिए
ज्ञान गूदरी प्रसिद्ध मानो
ताके मधि स्थान सु जानो

—राज० रि०, भाग ४, पृष्ठ ७

इस टीका का आधार श्रीधर की संस्कृत टीका है। यह टीका दोहा-चौपाइयों में है।

ताते कछुक भाषा ज्ञानुं
दोहा अरु चौपाई बखानुं
श्री गुरु की अज्ञा भई, जयतराम उर धारि
कहौं सुबोध प्रकासिनो श्रीधर के अनुसार

—खोज रि० १९१७।८८

(२) सदाचार प्रकाश। १९०९।१४०। यह ग्रंथ ७६२ चौपाइयों, ३६३ दोहों, ४ छन्द, और २ श्लोकों में है। इसमें भक्ति और वैराग्य का प्रतिपादन हुआ है। इसका रचनाकाल सं० १७९५ है।

संवत सत्रह सै गया असी पंचदस और
पूर्णिमा असौज की पच्छ सु जानै गौर ॥३०
चन्दवार अस्वनि बिसै सिद्धि योग पुनि जोय
जयतराम या ग्रन्थ की भई समापति सोय ॥३१

(३) योगप्रदीपिका स्वरोदय—राज० रि०, भाग २। इस ग्रंथ की रचना सं० १७९४ में हुई:-

सम्वत सतरा सै असी अधिक चतुर्दश जान
आश्विन सुदि दसमी विजै पूरण ग्रंथ समान ९०

१९१७ वाली रिपोर्ट में इन्हें १५७३ ई० में अकबर के दरबार में उपस्थित कहा गया है, जो ठीक नहीं। अकबर के दरबारी कवि जैत इन जैतराम से भिन्न हैं।

२७३।२४५

१९ जैत कवि, सं० १६०१ में उ०। यह अकबर बादशाह के यहाँ थे।

सर्वेक्षण

जैत, अकबरी दरबार के कवि हैं। अकबरी दरबार के कवियों की सूची वाले सवैये में इनका भी नाम है। सं० १६०१ ईस्वी-सन् है। यह कवि का रचनाकाल है।

'जोध जगन्न जमे जगदीश जगामग जैत जगत्त है जानी'

२७४।२२४

(२०) जयकृष्ण कवि, भवानी दास कवि के पुत्र। इन्होंने छन्दसार नामक पिंगल ग्रन्थ बनाया है। इनका सन्-संबत्, निवास, ग्रंथ के खंडित होने के कारण नहीं मालूम हुआ।

सर्वेक्षण

भवानी दास के पुत्र जयकृष्ण कटारिया गोत्र के पुष्करण बीसा ब्राह्मण थे। सरोज वर्णित इनके छन्दसार की अनेक प्रतियाँ मिली हैं।[१] इसका नाम 'रूप दीप' और 'नामरूप दीप पिंगल' है। ग्रन्थ मूलरूप में प्राकृत में है। कवि ने विद्यार्थियों के लाभ के लिए इसका भाषानुवाद किया। कवि के गुरु का नाम कृपाराम था। इनसे उसने यह ग्रन्थ पढ़ा था। मेरा अनुमान है कि यह कृपाराम जयपुर वाले हैं, जिन्होंने हित तरंगिणी की रचना की है। इस ग्रन्थ में कुल बावन छन्दों का विवेचन हैं।

सारद माता तुम बरी सुबुधि देत हर हाल
पिंगल की छाया लिए बरनो बावन चाल १
गुरु गणेश के चरण गहि हिये धारि कै विष्णु
कुवर भवानी दास को जुगत करै जयकृष्ण २
रूप दीप परगट करौं भाषा बुद्धि समान
बालक को सुख होत है उपजै अच्छर ज्ञान ३
प्राकृत को बानी कठिन भाषा सुगम प्रतच्छ
कृपाराम की कृपा सों कंठ करे सब शिष्य ४

द्विज पुहकर नेन्यात, तिसमें गोत कटारिया
सुनि प्राकृत सौं बात, तैसौं हौं भाषा करी ५४

बावन बरनी चाल सब, जैसी मोमैं बुद्धि
भूत भेद जाको लहै, करो कबीसुर सुद्ध ५५

ग्रन्थ की रचना सं० १७७६, भादों सुदी २, गुरुवार को हुई।

सम्बत सत्रह सै बरस और छिहत्तर पाय
भादों सुदि दुतिया गुरू, भयो ग्रन्थ सुखदाइ ५६

सरोज में इस ग्रन्थ से जो उद्धरण दिया गया है, उसमें रूपमाला छन्द में इस ग्रन्थ में आए निम्नांकित बावनों छन्दों की सूची है :—

१. सारङ्ग, २. दोधक, ३. मोतीदास, ४. तोटक, ५. तारलनैन, ६. भुजङ्गी, ७. कामिनी मोहन, ८. मैनावती, ९. नाराच, १०. प्रमाणिका, ११. मल्लिका, १२. संखनारी, १३. मालती, १४. तिलका, १५. विमोहा, १६. दोहा, १७. सोरठा, १८. गाथा, १९. उगाहा, २०. चुल्लिका, २१. चौपाई, २२. अरिल्ल, २३, तोमर, २४, मधुभार, २५. अनुकूला, २६. हाकलि, २७. चित्रपदा, २८. पर्वगम, २९. आसावरी या रसावली, ३०. पद्धरी, ३१. द्रवैया या दुबहिया, ३२. संकर, ३३. द्रिपदठा या झटपट, ३४. त्रिभंगी, ३५. मरहटा, ३६. लीलावती, ३७. उपमावली, ३८. गीता, ३९. पंडी, ४०. रोला, ४१. कुंडलिया, ४२. कुंडली, ४३. रंगिका, ४४. रंगी, ४५. घनाक्षरी, ४६. दूमल, ४७. मत्तगयंद, ४८. कड़खा, ४९. झूलना, ५०. सवैया, ५१. छप्पय, ५२. साटिका।

---

(१) खोज रि० १९००।८०, १९०९।१३८, १९२३।१९० ए बी, पं १९२२।४६

सभा के अप्रकाशित संक्षिप्त विवरण में जयकृष्ण को जोधपुर का निवासी कहा गया है और जोधपुर नरेश महाराज बखत सिंह के दीवान फतहमल सिंघी के पुत्र ज्ञानमल सिंघी का आश्रित कहा गया है। यह ज्ञानमल जोधपुर के हाकिम थे और परम शैव थे। इन्हीं के कहने से इन्होंने ये दो ग्रंथ रचे।

(१) शिव माहात्म्य भाषा—१६०२।८६। इसकी रचना सं० १८२५ में हुई :—

संवत ठारै सै बरस बहुरि पचीसो जान
सिव महात्म भाषा रच्यौ ज्ञान हेत सुखदान

(२) शिव गीता भाषार्थ १६०२।६१। इसकी रचना सं० १८२४ में हुई। पं० १६२२।४६ और १६०६।१३८ में संदेह प्रकट किया गया है कि ये दोनों ग्रंथ रूप दीप के अनुवादक जयकृष्ण के नहीं है, क्योंकि दोनों के रचनाकाल में ५० वर्षों का अन्तर है। पर यह सन्देह ठीक नहीं। रूप दीप, कवि के प्रारम्भिक जीवन की रचना है और ये दोनों ग्रन्थ उसकी वृद्धावस्था के हैं, यह भी अनुमान किया जा सकता है।

जयकृष्ण का एक ग्रन्थ जयकृष्ण के कवित्त नाम का और भी मिला है।[१] विनोद (६७८) के अनुसार इसका रचनाकाल सं० १८१७ है। रिपोर्ट के अनुसार इसमें जयकृष्ण के अतिरिक्त रस-पुंज, रसचन्द, भूषण, रामराय, कुन्दन, मकरन्द, बलभद्र 'काशीराम के भी कवित्त संकलित हैं।

२७५।२२६

(२१) जय कवि बन्दीजन लखनऊ वाले १६०१ में उ०। यह कवि वाजिद अली बादशाह लखनऊ के मुजराई थे। इन्होंने बहुत सी कविता भाषा उर्दू जबान में की है। इनका काव्य नीति सामयिक चेतावनी सम्बन्धी होने से सब को प्रिय है। मुसलमानों से बहुत दिनों तक इनका झगड़ा दीन की बाबत होता रहा। अन्त में इन्होंने यह चौबोला बनाया, तब मुसलमानों से बचे।

सुनौ रे तुरकौ करौ यकीन
कुरआँ माफ़ खुदाय कहि दीन
लुकुमदीन कुंवलुकुमुद्दीन

सर्वेक्षण

वाजिद अली का शासनकाल सं० १६०४-१३ वि० है। अतः सरोज में दिया हुआ सं० १६०१ जय कवि का उपस्थितिकाल है।

२७६।२४२

(२२) जय सिंह कवि। इनके शृंगार रस के कवित्त चोखे हैं।

---

(१) खोज रि० १६०२।६८

सर्वेक्षण

खोज में दो जयसिंह मिले हैं। एक रायरायान जयसिंह कायस्थ। यह पहले किसी मुगल बादशाह के आश्रित थे। अन्त में अयोध्या चले गए थे और संन्यासियों की भाँति रहने लगे थे। सं० १८१२ में इन्होंने सन्तों की श्रेष्ठता प्रतिपादित करने वाला एक ग्रन्थ संतसई लिखा था। इसमें कुल ४६१ दोहे हैं।

सम्बत दस औ आठ सै आठ चारि अधिकाइ
दरसन ठाकुर करि रच्यो संतसई सुखदाइ
—खोज रि० १६०६।१३६

दूसरे जय सिंह प्रसिद्ध रीवाँ नरेश हैं, जो विश्वनाथ सिंह के पिता और रघुराज सिंह के पितामह थे। यह सं० १८२१ में उत्पन्न हुए थे, सं० १८६१ में इन्होंने अपने पुत्र विश्वनाथ सिंह के लिये सिंहासन छोड़ दिया था। इन्होंने लगभग १०० वर्ष की वय पाई थी। अनुभव प्रकाश, उभय मत सार, कृष्ण-चरित्र, हरि चरितामृत इनकी खोज में उपलब्ध रचनाएँ हैं।[1]

ये दोनों जयसिंह भक्त हैं। सरोज के जयसिंह कोई रीतिकालीन श्रृङ्गारी कवि हैं। इन दोनों में से किसी के साथ इनकी अभिन्नता नहीं स्थापित की जा सकती। सरोज में उद्धृत कवित्त आलम के प्रसिद्ध कवित्त 'कीधों मोर सोर तजि गए री अनत भाजि' का किंचित् परिवर्तित रूप है। यह कवित्त इन्हें अत्यंत साधारण कोटि का कवि सिद्ध करता है।

२७७।२१२

(२३) जगन कवि, सं० १६५२ में उ०। ऐजन इनके श्रृङ्गार रस के कवित्त चोखे हैं।

सर्वेक्षण

यह अकबरी दरबार के कवि हैं। इनका नाम अकबरी दरबार के कवियों की सूची प्रस्तुत करने वाले सवैये में है—

'जोध जगन्न जमे जगदीस जगामग जैत जगत्त है जानी'

सरोज में दिया हुआ सं० १६५२ विक्रमी संवत है। यह अकबर के शासनकाल में पड़ता है। अकबर की मृत्यु सं० १६६२ में हुई थी। यह कवि का रचनाकाल है।

खोज में जगन कवि की जगन बत्तीसी[2] नामक पुस्तक प्राप्त हुई है। इसमें ३२ सवैये और १ कवि हैं। इसमें राम चरित वर्णित है। इनके गुरु का नाम संभवतः छल था।

सरसुति सुमरू हुआ रस बुधि दीजै मोहि
नमो पाइ गनपति गुनहि गभीर के
एक चित्त ह्वैके गुर छल को प्रनाम करूँ
जाके गुन ऐसे जैसे गुन दुधि छीर के
जिते कवि कलि में कलोलै करै कबिता को
वचन रचन जो पवित्र गंगा नीर के

---

(१) राज० रि०, भाग १

जनक प्रसाद के जे 'जगन' भगत होंहि
सवैया बतीस राज राम रघुबीर के
—खोज रि० १९४४।१२२

यह जगन, २९९ संख्यक जगनेस और ३०१ संख्यक जगन्नाथ एक ही कवि हैं।

२७८।२१६

(२४) जनार्दन कवि, सं० १७१८ में उ०। ऐजन। इनके शृङ्गार रस के कवित्त चोखे हैं।

सर्वेक्षण

जनार्दन, क्षेमनिधि एवं मोहन लाल के पिता तथा पद्माकर के पितामह थे। यह सं० १७४३ में उपस्थित थे, क्योंकि इसी वर्ष इनके पुत्र मोहनलाल का जन्म हुआ था। सरोज में दिया हुआ सं० १७१८ इनका प्रारम्भिक रचनाकाल प्रतीत होता है। पद्माकर के पूर्वजों में काव्य इन्हीं से प्रारम्भ होता है, जो इनके वंश में आज तक चला जा रहा है। इसी से पद्माकर का वंश कवीश्वर वंश नाम से प्रसिद्ध है।[१]

२७९।२४९

(२५) जनार्दन भट्ट। इन्होंने वैद्य रत्न नामक ग्रंथ वैद्यक का बनाया है।

सर्वेक्षण

जनार्दन भट्ट के निम्नांकित ६ ग्रन्थ खोज में मिले हैं।

(१) वैद्य रत्न १९०२।१०५, १९०६।२६७ बी, १९२०।६८, १९२३।१८१ ए, बी, १९२६। २०० ए, बी, सी, १९२९।१६८ ए, बी, सी, डी, पं १९२२।४५, राज० रि० भाग २ पृष्ठ १४८-४९। राज० रि० के अनुसार इसका रचनाकाल सं० १७४९, माघ सुदी ६ है। पंजाब रिपोर्ट के अनुसार ग्रन्थकर्ता का नाम गोस्वामी जनार्दन भट्ट है।

(२) बाल विवेक १९०६।२६७ ए। यह ज्योतिष का प्रारम्भिक ग्रन्थ है।

(३) हाथी का शालिहोत्र १९०६।२६७ सी। इसमें हाथी की बीमारियों और तत्सम्बन्धी दवाओं का वर्णन है।

(४) दुर्ग सिंह शृङ्गार—राज० रि० भाग २, पृष्ठ २२। यह शृङ्गार रस का ग्रंथ है और किसी दुर्ग सिंह के लिए लिखा गया है। इस ग्रन्थ में भी ग्रंथकर्त्ता गोस्वामी कहे गए हैं। इसका रचनाकाल सं० १७३५, जेठ शुक्ल ९, रविवार है :—

सतरे सै पैंतीस सम, जेठ शुक्ल रविवार
तिथि नौमी पूरण भयो दुर्ग सिंह शृङ्गार ३४४

(५) व्योहार निर्णय—राज० रि० भाग ४, पृष्ठ ६७। इस ग्रन्थ में व्यवहार का वर्णन हुआ है।

---

(१) माधुरी, माघ १९९०, पृष्ठ ७६

नृप देखे व्योहार सब, द्विज पंडित के संग
धरम रीति गहि, छोड़ि के काम लोभ परसंग

ग्रंथ की रचना सं० १७३०, कार्तिक बदी ६, रविवार को पूर्ण हुई :—

सत्रह सै तीस बदि कातिक अरु रबिबार
तिथि षष्टी पूरन भयो यह भाषा व्योहार

ग्रंथ की पुष्पिका में इनके पिता और पितामह का नाम दिया गया है :—

इति श्री गोस्वामि श्रीनिवास पौत्र, गोस्वामि जगन्निवास पुत्र "गोस्वामि जनार्दन भट्ट विरचित" भाषा व्योहार निर्णय संपूर्ण ।

६. लक्ष्मीनारायण पूजा सार—राज० रि० भाग २, पृष्ठ १४८ । यह ग्रंथ बीकानेर नरेश अनूप सिंह के लिए लिखा गया था ।

प्राप्त ग्रंथों के आधार पर जनार्दन भट्ट का रचना काल सं० १७३०-४७ है । कवि राजस्थान निवासी है ।

---

२८० । २२५

(२६) जमाल कवि, सं० १६०२ में उ० । यह कवि गूढ़ कूट में बहुत निपुण थे । इनके दोहे बहुत सुन्दर हैं ।

सर्वेक्षण

इस ग्रंथ के २८० संख्यक जमाल और २८९ संख्यक जमालुद्दीन एक ही हैं ।

सरोज में जमालुद्दीन को पिहानी निवासी कहा गया है । पिहानी जिला हरदोई में गोमती नदी के किनारे स्थित है । जमाल ने एक दोहे में गोमती का स्पष्ट उल्लेख किया है ।

गलियन गलियन गरकि गइ, गति गोमति की आज
विकल लोग, यह तिय खुशी, कह जमाल किहि काज १६४

मनीषी समर्थदान जमाल को पिहानी का ही रहने वाला मानते हैं । अतः इन दोनों कवियों की एकता में कोई संदेह नहीं । खोज में जमाल के ३ ग्रंथ कहे गए हैं :—

१. जमाल पचीसी १९१२।८२ ए
२. स्फुट दोहे १९२०।६५
३. भक्तमाल की टिप्पणी १९१२।८२ बी

जमाल पचीसी कोई स्वतंत्र ग्रंथ नहीं है । यह जमाल के २५ दोहों का संकलन मात्र है । स्फुट दोहे भी कोई स्वतंत्र ग्रंथ नहीं है, जैसा कि नाम से ही प्रकट है । भक्तमाल की टिप्पणी जमाल की रचना नहीं है । गद्य और पद्य में लिखित इस ग्रंथ में जमाल का यह दोहा देखकर अन्वेषक ने इसे पूरी की पूरी जमाल की कृति समझ लिया ।

चित्र चितेरा जो करै, रचि पचि सूरत बाल
वह चितवनि, वह मुरि चलनि, क्योंकर लिखै जमाल ४६

न तो ग्रंथ के आदि में और न तो अंत ही में ग्रंथकर्ता का नाम दिया गया है । प्रतीत होता है कि किसी भावुक ने यह भक्त वार्ता लिखी और बीच-बीच में उसने अन्य कवियों के दोहे भी

जोड़ दिए। इसी दोहे के ऊपर विहारी का यह दोहा दिया गया है, अन्वेषक की दृष्टि इस पर नहीं गई[१]।

लिखन बैठि जाकी सबी, गहि गहि गरब गरूर
भए न केते जगत के चतुर चितेरे कूर

श्री महाबीर प्रसाद गहलौत ने जमाल की सारी प्राप्य रचनाओं का संकलन जमाल दोहावली नाम से एक सुन्दर भूमिका और आवश्यक टिप्पणी सहित संपादित कर प्रकाशित कराया है।

जमाल अकबरकालीन है। ऐसी स्थिति में सरोज में दिया हुआ सं० १६०२ विक्रम-संवत् न होकर ईस्वी-सन् है। यह जमाल का उपस्थितिकाल है।

२८१।२२७

(२७) जीवनाथ भाट, नवलगंज जिले उन्नाव के, सं० १८७२ में उ०। यह कवि महाराजा बाल कृष्ण, बादशाह के दीवान के घराने के प्राचीन कवि हैं। इन्होंने 'वसंत पचोसी' ग्रंथ महा अद्भुत बनाया है।

सर्वेक्षण

बालकृष्ण लखनऊ के नवाब आसफुद्दौला (शासन काल सं० १८३२-५४ वि०) के दीवान थे। अतः सरोज में दिया हुआ सं० १८७२ कवि का उपस्थितिकाल है। इस तथ्य को ध्यान में रखकर विनोद (९५७) में इनका जन्मकाल सं० १८०३ और रचनाकाल सं० १८३० दिया गया है।

२८२।२२८

(२८) जीवन कवि १, सं० १८०३ में उ० मोहम्मद अली बादशाह के यहाँ थे। इन्होंने कविता सुन्दर की है।

सर्वेक्षण

मोहम्मद अली लखनऊ के नवाब थे। इनका शासनकाल सं० १८९४-९९ वि० है। अतः जीवन जी को कम से कम सं० १९०० के आस-पास तक अवश्य जीवित रहना चाहिए।

जीवन जी पुवाआं जिला शाहजहांपुर के भाट थे। यह हिन्दी के प्रसिद्ध कवि चंदन के पुत्र थे। चंदन का रचनाकाल सं० १८१०-६५ है। अतः सरोज में दिया हुआ सं० १८०३ पूर्ण रूप से अशुद्ध है। सरोजकार को मोहम्मद अली में दिल्ली के मुगल बादशाह मोहम्मद शाह रँगीले (शासन काल सं० १७७६-१८०५) का भ्रम हो गया है।

जीवन का 'बारिबंड विनोद' नामक ग्रंथ खोज में मिला है। इसकी रचना सीतापुर जिलांतर्गत नेरी के रईस बारिबंड सिंह के नाम पर हुई। इनका रचनाकाल सं० १८७३ श्रावण २ गुरुवार है।

---

(१) जमाल दोहावली की भूमिका के आधार पर।

श्रावनै सु द्वैज ही गुरै सु वार गनिए
नछत्र श्रावनै तही सो प्रीत जोग आनिए
संवत अठारहै तिहितनै सु मानिए
बरबंड सो विनोद को भयो वतार जानिए
—खोज रि० १६१२।८६

२८३।२३१

(२६) जगदेव कवि, सं० १७६२ में उ०। इनकी कविता सरस है।

सर्वेक्षण

इस कवि के संबंध में कोई सूचना सुलभ नहीं।

२८४। २३२

(३०) जगन्नाथ कवि १, प्राचीन। शांतरस के इनके कवित्त अच्छे हैं।

सर्वेक्षण

विनोद (६७६) में जगन्नाथ प्राचीन को मोहमर्दराज की कथा का कर्त्ता माना गया है। इस ग्रंथ की रचना कार्तिक वदी १२, सोमवार सं० १७७६ को हुई :—

संबत सत्रह सौ छयोत्रा वर्ष
यह भाषो करि बहुत हर्ष
कातिक बदी द्वादसी दिनै
सोमवार यह गिनोतर गिनै
—खोज रि० १६२६।१६३ सी, डी, ई।

इसी ग्रन्थ से सूचित होता है कि यह किसी तुलसीदास के शिष्य थे :—

श्री तुरसीदास जु धरयो सिर हाथ
यह मोह मरद कथा कही जन जगन्नाथ

इन जगन्नाथ प्राचीन या जन जगन्नाथ के निम्नांकित ग्रन्थ और भी मिले हैं :—

१. गुरुचरित या गुरुमहिमा १६०६।१२६। इस ग्रन्थ में १० दोहे और ४६ चौपाइयाँ हैं।

दस दोहा वर्णन किए, चौपाई उनचास
जगन्नाथ उनसठि वचन, गुरु चरित्र की रास

इस ग्रन्थ में भी कवि ने अपने गुरु का नाम तुलसीदास दिया है :—

स्वामी तुलसीदास के सेवक अति मति हीन
जगन्नाथ भाषा सरस गुरु चरित्र कहि कीन्ह

ग्रन्थ की रचना सं० १७६०, माघ सुदी ८, मंगलवार को हुई :—

संवत सत्रह सै अरु साठै
माघ मास उजियारी आठै
भरणी ऐंद्र रू मंगलवार
गुरु चरित्र भाषा विस्तार ४०

इसी ग्रन्थ का एक अन्य नाम गुरू माहात्म्य[१] भी है।

२. मन बत्तीसी १९०६।२६६। इस ग्रन्थ में मानव मन पर ३२ छंद हैं। यह ग्रन्थ भी इसी वर्ष लिखा गया।

३. होली संग्रह १९२६।१६४ ए। इस ग्रन्थ में राधा-कृष्ण की लीला वर्णित है। कवि परिचय में इसका रचनाकाल सं० १७७५ दिया गया है।

इस जगन्नाथ के अतिरिक्त निम्नांकित जगन्नाथ और मिलते हैं, जो शांत रस के कवि न होने के कारण सरोज के अभीष्ट जगन्नाथ प्राचीन से भिन्न हैं।

१. जगन्नाथ—यह जैसलमैर के रावत अमर सिंह के यहाँ थे। इन्होंने उनके लिए सं० १७१४ जेठ सुदी १० सोमवार को 'रति भूषण'[२] नामक ग्रन्थ बनाया। सं० १७४४ में उन्हीं के लिए 'माधव चरित्र'[३] की रचना की। संभवतः इसमें माधवानल कामकंदला की कथा है।

२. जगन्नाथ भट्ट—यह सखी संप्रदाय के भक्त थे। इनका सखी नाम किशोरी अली था। इन्होंने 'सार संग्रह'[४] नामक एक ग्रन्थ संकलित किया है जिसमें संतों की महिमा, सत्संग का प्रभाव और नवधा भक्ति का वर्णन है। यह सखी संप्रदाय के भक्त कवियों की रचनाओं का संग्रह है। प्रतिलिपिकाल सं० १८८७ है। अतः कवि इससे पूर्वकालीन है।

३. जगन्नाथ—यह ढिगवस जिला प्रतापगढ़ के एक विसेन ठाकुर थे। इन्होंने सं० १८८७ में 'जुद्धजोत्सव'[५] नामक ग्रन्थ लिखा।

२८५।२३३

(३१) जगन्नाथ कवि २ अवस्थी, सुमेरपुर जिला उन्नाव। वि०। यह महाराज संस्कृत साहित्य में इस समय अद्वितीय हैं। प्रथम महाराजा मान सिंह अवध नरेश के यहां बहुत दिन तक रहे। अब महाराजा शिवदान सिंह अलवर देशाधिपति के यहाँ हैं। इनके संस्कृत के बहुत ग्रन्थ हैं। भाषा में काव्य का, कोई ग्रन्थ सिवा स्फुट कवित्त दोहों के नहीं देखने में आया।

सर्वेक्षण

कवि सरोजकार का समकालीन है, अतः दिए हुए तथ्य प्रामाणिक हैं। द्विज देव ने सं० १९०७ में शृङ्गार लतिका लिखी। यही इनका काव्यानुराग काल है। इसी समय के आस-पास जगन्नाथ जी अयोध्या में रहे होंगे।

२८६।२४४

(३२) जगन्नाथदास। रागसागरोद्भव में इनके पद हैं।

---

(१) खोज रि० १९२६।१६३ ए (२) राज० रि० भाग २ (३) राज० रि० भाग ४ पृष्ठ २१४-१५ (४) खोज रि० १९२६।१६४ ए, बी (५) खोज रि० १९०६।१२३

सर्वेक्षण

सरोज में उद्धृत पद से सूचित होता है कि इनकी छाप जगन्नाथ कविराय है। यह अकबरकालीन कवि है। संभवतः इनका सम्बन्ध अकबरी दरबार से था। यह तानसेन के समान संगीतज्ञ कवि थे।

जगन्नाथ कविराय के प्रभु रीझि हँसे
तब होंहू हँसी, वह सुख कहत बनै ना

२८७।२४१

(३३) जलालउद्दीन कवि, सं० १६१५ में उ०। हजारा में इनके कवित हैं।

सर्वेक्षण

जलालुद्दीन के कवित हजारे में थे, अतः इनका समय सं० १८५० से पूर्व है, इतना ही निश्चय पूर्वक कहा जा सकता है। सरोज में इनका एक सवैया उद्धृत है। सवैयों की भरमार सं० १६४० के आस-पास हुई। अतः सं० १६१५ इनका जन्मकाल माना जा सकता है।

२८८।२४७

(३४) जसोदानन्दन कवि, सं० १८२८ में उ०। इन्होंने बरवै छंद में बरवै नायिका भेद नामक ग्रन्थ अति विचित्र बनाया है।

सर्वेक्षण

सरोज में रचनाकाल सूचक यह बरवै उद्धृत है :—

मैं लिखि लीनो चैतहि तेरसि पाइ
सम्बत हय७ विवि२ कारि८ कै ब्रह्म१ मिलाइ

स्पष्ट है कि ग्रन्थ का रचनाकाल सं० १८२७ है। सरोज में दिया हुआ सं० १८२८ उपस्थिति काल है। प्रमाद से ग्रियर्सन (४६५) विनोद (११०६) और शुक्ल जी के इतिहास में (पृष्ठ ३०५) इसे जन्मकाल मान लिया गया है।

खोज में एक यशोदानन्द शुक्ल मालवीय का रागमाला[१] ग्रन्थ मिला है। सेठ महताबराय के निर्देश से इस संगीत ग्रन्थ की रचना चैत्र शुक्ल नवमी, रविवार सं० १८१५ को हुई :—

बीत अठारह सै बरस अरु पंद्रह परिमान
चैत्र शुक्ल नवमी रवौ भयो ग्रन्थ सुखदान ३१

इसमें कुल ४१७ छंद हैं। संभवतः सभी दोहे हैं। पुष्पिका में कवि का नाम आया है :—

"इति श्री सकल कला कोविद रसिक सुखकंद शुक्ल यशोदानन्द विरचित रागमाला समाप्तः"

बरवै वाले यशोदानंदन और रागमाला वाले यशोदानंद के रचनाकाल में केवल १२ वर्ष का अंतर है। अतः दोनों कवि एक भी हो सकते हैं।

---

(१) खोज रि० १९०९।३३४

२८९।२३४

(३५) जगनंद कवि वृंदावन वासी, सं० १६५८ में उ० । इनके कवित्त हजारा में हैं ।

सर्वेक्षण

हजारा में इनकी कविता है । अतः निश्चयपूर्वक इतना ही कहा जा सकता है कि यह स० १८५० से पूर्वकालीन है । सरोज में उद्धृत कवित से इनका ब्रज प्रेम प्रकट होता है ।

इस कवि की सम्पूर्ण सुलभ कविताओं का प्रकाशन 'जगतानंद' नाम से विद्या विभाग कांकरोली द्वारा १९३२ ई० में हुआ है । ग्रन्थों में कवि का परिचय भी दिया गया है । इस परिचय के अनुसार विनोद के ३०५ जगनंद और ४७४ जगतानंद दोनों एक ही व्यक्ति हैं । इस कवि की छाप जगनंद, नंद, जगतनंद एवं जगतानंद है । इस ग्रन्थ में इनके निम्नांकित ६ ग्रन्थ हैं :—

(१) श्री वल्लभ वंशावली
(२) श्री गुसाईं जी की वनयात्रा
(३) ब्रज वस्तु वर्णन
(४) ब्रज ग्राम वर्णन
(५) दोहरा साखी
(६) उपखाने सति दशम कथा (भागवत दशम स्कंध की कथा) ।

इनकी रचनाओं से स्पष्ट है कि कवि वल्लभ संप्रदाय का अनुयायी था । वल्लभ वंशावली के अनुसार इसके गुरु का नाम गोवर्द्धनेश था । गोवर्द्धनेश जी गुसाईं विट्ठल नाथ के चतुर्थ पुत्र गोकुलनाथ के पौत्र, और गोकुल नाथ के कनिष्ठ पुत्र विट्ठलराय के पुत्र थे । गोवर्द्धनेश जी का जन्म समय सम्बत् १६७३ है । इसी के बाद, संपादक के अनुसार सं० १७०० के आस-पास जगतानंद का जन्म हुआ । वल्लभ वंशावली में कवि ने रचनाकाल सं० १७८१ दिया है :—

सम्बत् सत्रह सै बन्यौ इक्यासी वदि माह
द्वैज चंद पोथी लिखी जगतनंद करि चाह १८४

स्पष्ट है सरोज का सम्वत् अशुद्ध है । जगनंद जी वृन्दावन में न रहकर गोकुल में रहा करते थे ।

२९०।२३५

(३६) जोइसी कवि, सं० १६५८ में उ० । इनके कवित हजारा में है ।

सर्वेक्षण

हजारा में इनकी रचना है, अतः इनका रचनाकाल सं० १७५० से पूर्व है । इनका एक ही सवैया उपलब्ध है, जो सरोज में भी उद्धृत है । विनोद (२९०) के अनुसार यह परम विशद है । जोइसी कवि का असल नाम नहीं है । जोइसी ज्योतिषी का ही रूप है । कवि ज्योतिषी था, संभवतः ब्राह्मण भी । उसने अपने पेशेवाले नाम को अपना उपनाम बना लिया है ।

करुणाभरण के रचयिता लछीराम के एक मित्र मोहन थे । मोहन के पिता का नाम शिरोमणि, पितामह का रामकृष्ण और प्रपितामह का जोइसी ईसुरदास था ।[१] इनमें से रामकृष्ण श्रेष्ठ

(१) देखिए, यही ग्रन्थ, कवि संख्या ८१७

कवि थे। संभवतः शिरोमणि और जोयसी ईसुरदास भी कवि थे। लछीराम का समय सं० १७०० के आस-पास है। लछीराम के मित्र मोहन के प्रपितामह सं० १६५८ तक पूर्ण वृद्ध रूप में जीवित रह सकते है। हो सकता है कि यही जोयसी ईसुरदास सरोज के प्रसंग प्राप्त जोयसी हों।

२९१।२३६

(३७) जीवन कवि, सं० १६०८ में उ०। ऐजन। इनके कवित्त हजारा में हैं।

सर्वेक्षण

जीवन कवि की रचना हजारे में थी, अतः सं० १८५० के पूर्व इनका अस्तित्व था, इसमें संदेह नहीं। द्रौपदी चीरहरण संबंधी इनका एक अत्यंत कलापूर्ण कवित्त सरोज में उद्धृत है। इसे सं० १६५० के बाद की रचना होना चाहिए। इस दृष्टि से सरोज में दिया हुआ सं० १६०८ कवि के जन्मकाल के निकट है।

पन्ना के प्रसिद्ध साधु प्राणनाथ के एक शिष्य जीवन मस्ताने हुए हैं। इन्होंने सं० १७५७ के आस-पास पंचक दहाई नामक ग्रन्थ लिखा।[1] यह सरोज के जीवन से भिन्न हैं। यह अपने नाम के साथ मस्ताने जोड़ते थे, साथ ही इनकी भाषा में खड़ी बोली का कुछ मेल है।

२९२।२३८

(३८) जगजीवन कवि, सं० १७०५ में उ०। ऐजन। इनके कवित्त हजारा में हैं।

सर्वेक्षण

सरोज में उद्धृत छंदों से सिद्ध होता है कि जगजीवन कवि रीति परंपरा में पूर्णरूपेण डूबे हुए हैं। इनको रचना हजारे में थी, अतः सं० १७५० के पूर्व इनका अस्तित्व सिद्ध है। खोज में कई जगजीवन मिले हैं। किसी के साथ इनकी अभिन्नता स्थापित करानेवाला कोई सूत्र सुलभ नहीं है।

१. जगजीवन—आगरावासी जैन, सत्यसार की टीका के रचयिता। विनोद (३४६) में इन्हीं को हजारेवाला जगजीवन कहा गया है।

२. राधावल्लभीय जगजीवनदास—इन्होंने सं० १७४९ में अपने पिता धरणीधरदास के ग्रन्थ चौरासी सटीक की प्रतिलिपि की थी।[2]

३. जगजीवन—हनुमान नाटक के रचयिता[3]।

२९३।२३९

(३९) जदुनाथ कवि, सं० १६८१ में उ०। तुलसी के संग्रह में इनके कवित्त हैं।

---

(१) खोज रि० १९०१।३३ (२) खोज रि० १९१२।५१, (३) राज रि० भाग २,

सर्वेक्षण

जदुनाथ की कविता तुलसी के संग्रह में है, अतः इनका रचनाकाल सं० १७१२ के पूर्व होना चाहिए। इस दृष्टि से सं० १६८१ ही इनका रचनाकाल हो सकता है। कवि रीति-परंपरा में पूर्णरूपेण डूबा हुआ है।

२६४।२४०

(४०) जगदीश कवि, सं० १५८८ में उ०। यह अकबर बादशाह के यहाँ थे।

सर्वेक्षण

अकबरी दरबार के कवियों की नामावली प्रस्तुत करनेवाले सवैये[1] में जगदीश का भी नाम है। १५८८ ईस्वी-सन् है। यह कवि का रचनाकाल है।

२६५।

(४१) जय सिंह कछवाहे महाराजा आमेर, सं० १७५५ में उ०। यह महाराज सर्वविद्या-निधान, कविकोविदों के कल्प वृक्ष, महान् कवि थे। आपही अपना जीवनचरित्र लिख, उस ग्रन्थ का नाम जयसिंह कल्पद्रुम रक्खा है। यह ग्रन्थ अवश्य विद्वानों को दर्शनीय है।

सर्वेक्षण

जयसिंह सवाई द्वितीय जयपुर के वह प्रसिद्ध महाराज हैं, जिन्होंने जयपुर नगर बसाया। इनका जन्म सं० १७४५ में हुआ था और देहावसान सं० १८०० में हुआ। यह संस्कृत, फारसी और ज्योतिष के बहुत बड़े विद्वान् थे। कृष्ण भट्ट कवि कलानिधि और कृपाराम इन्हीं के आश्रय में थे। इनका शासनकाल सं० १७५६-१८०० है। सरोज में दिया हुआ सं० १७५५ शुद्ध है। यह उपस्थितिकाल है।

२६६।

(४२) जय सिंह सिसौदिया, महाराना उदयपुर, सं० १६८१ में उ०। यह महाराजा राना राज सिंह के पुत्र, महान् कवि और कविकोविदों के कल्पवृक्ष थे। एक ग्रन्थ जयदेव विलास नामक अपने वंश के राजों के जीवन चरित्र का बनवाया है।

सर्वेक्षण

टॉड के अनुसार ग्रियर्सन (१८८) में इनका शासनकाल १६८१-१७०० ई० दिया गया है। स्पष्ट ही सरोज में दिया हुआ सं० १६८१ ईस्वी-सन् है। यह जयसिंह का राज्यारोहण काल है। ग्रियर्सन के अनुसार जयदेव विलास में उन राजाओं का जीवन चरित्र है, जिन्हें जयसिंह ने जीता था। इस संबंध में सरोज की ही बात ठीक जान पड़ती है। विनोद (४६७) में भी सरोज की ही बात स्वीकार की गई है। प्रथम संस्करण में प्रमाद से सीसौदिया को राठौर लिख दिया गया है।

---

(१) यही ग्रन्थ, कवि संख्या १

२९७।२४६

(४३) जलील, सैयद अब्दुल ज़लील विलग्रामी, सं० १७३९ में उ० । यह कवि औरंगजेब बादशाह के यहाँ बड़े पद पर थे । अरबी, फारसी, इत्यादि यावनीभाषा में इनका पांडित्य इनके बनाए हुए ग्रन्थों से प्रकट होता है । अंत में हरिवंश मिश्र कवि विलग्रामी से भाषा काव्य पढ़कर सुन्दर कविता की है ।

सर्वेक्षण

जलील हिन्दी के प्रसिद्ध कवि मीर गुलाम नबी रसलीन के चचेरे मामा थे । इनका रसलीन के परिवार पर विशेष स्नेह था । इन्होंने रसलीन का जन्मसंवत्सूचक छंद फारसी में लिखा है । रसलीन के जन्म के समय यह औरंगजेब के साथ गढ़ सितारा के निकट डेरा डाले पड़े थे । यहीं इन्होंने उक्त छंद लिखा था । उक्त तिथि २० जून १६९९ ई० है । इससे स्पष्ट है कि सं० १७५६ में जलील जीवित थे । हरिवंश मिश्र के पुत्र दिवाकर मिश्र ने इनके संबंध में यह दोहा कहा है :—

हुआ न है औ होयगा ऐसो गुनी सुशील
जैसो अहमद नंद जग हुय गयो मीर जलील

इस दोहे से स्पष्ट है कि जलील के बाप का नाम अहमद था ।[१]

सरोज की सूचनाएँ मातादीन मिश्र के कवित्त रत्नाकर के अनुसार हैं । मिश्र जी के अनुसार यह दिल्ली से ईरान के बादशाह के यहाँ राजदूत होकर गए थे । वहाँ से लौटने पर औरंगजेब के यहाँ अन्य राजाओं और बादशाहों के नाम खत लिखने के मुन्शी हुए थे ।[२] सरोज में इनकी कविता का उदाहरण भी मिश्र जी के उक्त ग्रन्थ से लिया गया है । औरंगजेब का शासनकाल सं० १७१५-६४ है । इसी के बीच पड़नेवाला सं० १७३९ कवि का रचनाकाल ही है ।

२९८।

(४४) जमालुद्दीन पिहानीवाले, सं० १६२५ में उ० । यह अच्छे कवि थे ।

सर्वेक्षण

२८० संख्यक जमाल और २९८ संख्यक जमालुद्दीन एक ही कवि हैं । सं० १६२५ उपस्थितिकाल है । विशेष विवरण संख्या २८० पर देखिए ।

२९९।

(४५) जगनेश कवि । ऐजन । अच्छे कवि थे ।

सर्वेक्षण

३०१ संख्यक जगन्नाथ अपनी छाप जगनेस भी रखते थे, जो 'जगन' से संबंधित है । अतः २७७, २९९, ३०१ संख्यक कवि एक ही हैं ।

---

(१) संपूर्णानंद अभिनंदन ग्रन्थ पृष्ठ १२७-१२९ । (२) कवित्त रत्नाकर, भाग १, कवि संख्या ४

३००।

(४६) जोध कवि, सं० १५६० में उ० । यह अकबर बादशाह के यहाँ थे ।

सर्वेक्षण

अकबरी दरबार के कवियों की सूची प्रस्तुत करनेवाले सवैये में जोध का नाम है।[1] १५६० ई० सन् है और यह कवि का उपस्थितिकाल है।

३०१।

(४७) जगन्नाथ । ऐजन । यह अकबर बादशाह के यहाँ थे ।

सर्वेक्षण

जगन्नाथ मिश्र अकबरी दरबार के कवि थे । इन्हें मुगल दरबार की ओर से कुछ जमीन जौनपुर जिले में आज के आजमगढ़ जिले की निजामबाद तहसील में मिली हुई थी। अकबर का शासनकाल सं० १६१३-६२ है । यही समय जगन्नाथ मिश्र का भी होना चाहिए। इनके वंशज अभी तक आजमगढ़ के गुरु टोला मुहल्ले में रहते हैं। इनकी लिखी एक पुस्तक राजा हरिश्चन्द्र की कथा मिली है। यह दोहा-चौपाइयों में लिखित एक साधारण कृति है।[2] यह 'जनजगन्नाथ' और 'जगनेश' छाप भी रखते थे। यह २७७ जगन और २६६ जगनेस से अभिन्न हैं।

३०२।

(४८) जगामग । ऐजन । अकबर बादशाह के यहाँ थे ।

सर्वेक्षण

अकबरी दरबार के कवियों की सूची प्रस्तुत करनेवाले सवैये में जगामग का नाम है।[3] अकबर का शासनकाल सं० १६१३-६२ है। यही जगामग का भी समय होना चाहिए।

३०३।

(४६) जुगुलदास कवि । इन्होंने पद बनाए हैं ।

सर्वेक्षण

जुगुलदास के ३ ग्रन्थ खोज में मिले हैं :—

१. चौरासी सटीक १६१२।८७ ए । यह हित चौरासी की टीका है। इसकी रचना सं० १८२१ में हुई :—

> अठारह सै इकीस के संवत में . भई पूरि
> यह बानी अद्भुत सरस रसिकनि जीवन मूरि

---

(१) यही ग्रंथ कवि संख्या १ (२) खोज रि० १६०६।१२४, १६४७।१०८ (३) यही ग्रंथ, कवि संख्या १

२. जुगल कृत १६१२।८७ बी। ग्रन्थ का पूरा नाम जुगलकृत पद होना चाहिए। इसमें श्रीकृष्ण संबंधी विनय और प्रेम के १२६ पद हैं। यही रचना युगलकिशोर के नाम से भी प्रमाद से दे दी गई है।[1]

३. जुगुलदास की बानी १६२६।२११। इस ग्रन्थ में कुल ४६ रचनाएँ हैं।

खोज में जगन्नाथ रिचारिया का कृष्णायन नामक ग्रन्थ मिला है। यह सं० १८४५ में लिखा गया था। कवि परिचय में बताया गया है कि यह जुगलदास के पुत्र थे। यह छतरपुर बुन्देलखण्ड के रहने वाले थे—

बान[५] वेद[४] वसु[८] इन्द्र[१] लौं अंक वास गत चारु
असुना सुदी दसमी गुरौ कृष्णाइन औतारु ३१
दुज रिछारिया सेव जू, कौसिक गोत्र बखान
कृष्णाइन भाषा करी, लिखी प्रीति उर आनि

—खोज रि० १६०६।१२५

अतः जुगलदास जी राधावल्लभ संप्रदाय के वैष्णव थे। यह कौशिक गोत्रीय ब्राह्मण थे। यह छतरपुर के रहनेवाले थे और इनका रचनाकाल स० १८२१ है। इस ग्रन्थ के २६० सख्यक जुगल कवि भी यही हैं।

३०४।

(५०) जगजीवन दास चन्देल, कोठवा जिला बाराबंकी, सं० १८४१ में उ०। यह महाराज बड़े महात्मा सत्यनामी पंथ के चलानेवाले थे। भाषा काव्य भी किया है। और आज तक जलालीदास इत्यादि जो महात्मा इनकी गद्दी पर बैठे हैं, सब काव्य करते हैं। परन्तु बहुधा शांत रस की ही इनकी कविता है। दूलमदास, देवीदास इत्यादि सब इसी घराने के शिष्य हैं, जिनके पद बहुत सुनने में आते हैं।

सर्वेक्षण

यह सतनामी पंथ के प्रवर्तक एक सुप्रसिद्ध महात्मा हो गए हैं। इनका जन्म सरदहा कोटवां जिला बाराबंकी में एक चंदेल क्षत्रिय घराने में माघ सुदी ७, मंगलवार, सं० १७२७ को हुआ था। इनके पिता का नाम गंगाराम था। यह विश्वेश्वर पुरी और बुल्ला साहब के शिष्य थे। गुलाल साहब इनके गुरुभाई थे। यह दामोदरदास, दूलनदास, नवलदास, तथा देवीदास के गुरु थे। दुलारेदास, दूलनदास का उपनाम है। इस नाम का कोई अन्य शिष्य नहीं हुआ। कोटवा में अब तक इनके संप्रदाय का प्रधान केन्द्र है। इनका देहावसान बैशाख बदी ७, मंगलवार, सं० १८१७ को हुआ।[2] सरोज में दिया हुआ सं० १८४१ अशुद्ध है। इसके २४ वर्ष पहले जगजीवन दास का देहांत हो चुका था। खोज में इनके निम्नांकित ग्रन्थ मिले हैं :—

१. अघ विनाश १६२३।१७५ ए, बी; १६४७।१०५ क, ख, ग, घ,। रचनाकाल सं० १७८०
२. अस्तुति महावीर जी की, जन्म की, १६४७।१०५ ङ

---

(१) खोज रि० १६२६।५०८ (२) अप्रकाशित संक्षिप्त विवरण और खोज रिपोर्ट १६२३।१७५

३. आरती १९२३।१७५ सी

४. उग्र ज्ञान १९२९।१६२ के। रचनाकाल सं० १८११

५. कहरानामा प्रथम १९२९।१६२ ई, १९४७।१०५ च,। रचनाकाल सं० १८१०

६. कहरानामा दूसर १९२९।१६२ एफ। रचनाकाल सं० १८१२

७. कहरानामा तीसर १९२९।१६२ जी। रचनाकाल सं० १८१४

८. चरण वंदगी १९२९।१६२ एच। रचनाकाल सं० १८११

९. छंद विनती १९२९। १६२ एल। रचनाकाल सं० १८११

१०. जगजीवन दास जी की बानी १९०९।१२२,१९४१।७३, या वाणियाँ १९४७।१०५ ठ

११. ज्ञान प्रकाश १९२९।१६२ आर, १९४४।११८ ख, १९४७।१२५ छ ज। रचनाकाल सं० १८१३

१२. दृढ़ ध्यान १९२९।१६२ सी। रचनाकाल सं० १८१०

१३. दृष्टांत की साखी १९२९।१६२ एस

४१. दोहावली १९२६।१८७ ए। रचनाकाल सं० १७८९

१५. परम ग्रंथ १९१२३।१७५ ई, १९२९।१६२ बी, १९४७।१०५ झ। रचनाकाल सं० १८१२

१६. बारह मासा १९२९।१६२ एम। रचनाकाल सं० १८१२

१७. बुद्धि वृद्धि १९२९।१६२ बी। रचनाकाल सं० १७८५

१८. मन पूरन १९२९।१६२ ए। रचनाकाल स० १८१४

१९. महाप्रलय १९२९।१६२ क्यू, १९४४।११८ क। रचनाकाल सं० १८१३

२०. महाप्रलय कहरानामा १९४७।१०५ ञ

२१. लीला १९२३।१७५ डी, १९२६।१८७ बी, १९४७।१०५ ट

२२. विवेक ज्ञान १९२९।१६२ जे। रचनाकाल सं० १८११

२३. विवेक मन्त्र १९२९।१६२ डी। रचनाकाल सं० १८१०

२४. शरन वंदगी १९२९।१६२ आई। रचनाकाल सं० १८१४

२५. शब्द सागर १९२९।१७५ जी एच, १९२६।१८७ सी १९४७।१०५ ड

२६. स्तुति महावीर जी की १९२३।१७५ एफ, १९२९।१६२ एन, ओ। रचनाकाल सं० १८१२। इन २६ ग्रन्थों में से जगजीवन दास की बानी और शब्द सागर इनके प्रायः सभी ग्रन्थों के संकलन ही हैं।

३०४।

(५१) जुल्फकार कवि, सं० १७८२ में उ०। इन्होंने विहारी सतसई का तिलक बहुत विचित्र बनाया है।

सर्वेक्षण

जुल्फिकारअली अलीबहादुर के पुत्र थे। इन्हें शाह आलम ने नजफर खां की उपाधि दी थी। बाजीराव पेशवा जब महाराज छत्रसाल की मदद के लिए पन्ना आए थे, तब उन्होंने

पन्ना दरबार की वेश्या की बेटी मस्तानी को रख लिया था और उसे अपने साथ पूना ले गये थे। उसके गर्भ से बाजीराव को एक पुत्र शमशेर बहादुर हुआ था, जिसकी मृत्यु पानीपत की तीसरी लड़ाई में हुई थी। शमशेर बहादुर के लड़के का नाम अली बहादुर था। अली बहादुर मराठों की मदद के लिए बुन्देलखण्ड भेजा गया था। यहां वह सं० १८४६ में आया। हिम्मत बहादुर की सहायता से यह बांदा का नवाब हुआ। कालिंजर के युद्ध के समय अली बहादुर की मृत्यु सं० १८५६ में हुई। अली बहादुर के दो लड़के थे। बड़े का नाम शमशेर बहादुर और छोटे का नाम जुल्फिकार अली था। जिस समय अली बहादुर मरे, उस समय बड़ा लड़का शमशेर बहादुर पूना में था, अतः हिम्मत बहादुर और अली बहादुर के चचा गनी बहादुर ने जुल्फिकार अली को ही बांदा का नवाब बना दिया। पर मराठों की सहायता से शीघ्र ही शमशेर बहादुर बांदा का नवाब हो गया। अपने बाबा गनी बहादुर को जहर दे दिया। सं० १८६१ में अंग्रेजों ने शमशेर बहादुर के राज्य को हड़प लिया और उसे चार लाख रुपयों की जागीर दे दी गई। इसी साल सं० १८६१ में ही शमशेर बहादुर मर गया। तदुपरांत जुल्फिार अली को चार लाख की पेंशन मिली और यह बांदा का नवाब भी कहलाता रहा। इसके वंशज इन्दौर में बहुत दिनों तक रहे और १३ हजार सालाना पेंशन पाते रहे।[1]

इन्हीं जुल्फिकार अली ने बिहारी सतसई का तिलक कुंडलिया वृत्तों में किया। यह ग्रन्थ जुल्फिकार सतसई के नाम से प्रख्यात है। इसका असल नाम कुंडलिका वृत्त है। इसका रचनाकाल श्रावण सुदी पंचमी बुधवार, सं० १९०३ है[2] :—

गुन[3] नभ[0] ग्रह[9] अरु इन्द्र[1] नाभ सित पंचमि बुधवार
जुल्फिकार सतसई को प्रगट भयौ अवतार[2]

ऐसी स्थिति में सरोज में दिया हुआ संवत् १७८२ अशुद्ध है।

३०६।

(५२) जगनिक वंदीजन, महोबा, बुन्देलखंड, सं० ११२४ में उ०। यह कवि चंद कवीश्वर के समय में था। जैसे चंद का पद पृथ्वीराज चौहान के यहाँ था, वैसे परिमाल महोबेवाले चंदेल राजा के यहाँ जगनिक का मान-दान था। चंद ने रासो में बहुत जगह इनकी प्रशंसा की है।

सर्वेक्षण

जगनिक चंद के समकालीन थे, अतः इनका समय सं० ११२४ अशुद्ध है। इनका रचनाकाल सं० १२५० के आस-पास होना चाहिए। इनकी रचना जनवाणी में मिलकर अपना मूल रूप खो चुकी है। इनकी कृति आल्हा की कोई पुरानी प्रति नहीं मिलती।

३०७।

(५३) जबरेश वंदीजन, बुन्देलखण्डी वि०।

सर्वेक्षण

विनोद (२४४६) के अनुसार जबरेश रीवां नरेश के यहां सं० १९४० में उपस्थित थे।

---

(१) बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त इतिहास, अध्याय ३११ (२) खोज रि० १९०४।२० तथा बिहारी सतसई सम्बन्धी साहित्य ना० प्र० पत्रिका, कार्तिक १९८५, पृष्ठ ३२६

ट

३०८।२५०

(१) टोडर कवि, राजा टोडरमल खत्री, पंजाबी, सं० १५८० में उ० । यह राजा टोडरमल अकबर बादशाह के दीवान आला थे। इनके हालात से तारीख फारसी भरी हुई है। अरबी, फारसी और संस्कृत में यह महा निपुण थे तथा श्रीमद्‌भागवत का संस्कृत से फारसी में उल्था किया है और भाषा में नीति सम्बन्धी बहुत कवित्त कहे हैं। इन महाराज ने दो काम बहुत शुभ हिंदुस्तानियों के भलाई के लिए किए हैं, एक तो पंजाब देश में खत्रियों के यहाँ रिवाज तीनसाला मातम का उठाकर केवल वार्षिक रस्म को नियत किया, दूसरे फारसी हिसाब किताब को ईरान देश के माफिक हिंदुस्तान में जारी किया। सन् ९९८ हिजरी में शहर लाहौर में देहांत हुआ।

सर्वेक्षण

टोडरमल पहले शेरशाह के यहाँ ऊँचे पद पर थे। फिर अकबर के समय में भूमिकर-विभाग में मन्त्री हुए। इन्होंने शाही दफ्तरों में हिन्दी के स्थान पर फारसी का प्रचार किया, जिसके लिए हिन्दी वाले इनके कभी भी कृतज्ञ नहीं हो सकते, क्योंकि फारसी की ही जगह पर उर्दू आई, जो एक युग तक हिन्दी की जड़ काटती रही।

टोडरमल की मृत्यु का सम्वत् निश्चित है। यह सन् ९९८ हिजरी (सं० १६४६ वि०) में लाहौर में दिवंगत हुए। सरोज में दिया सं० १५८० ईस्वी-सन् है और कवि का उपस्थितिकाल है।

सं० १५९७ में शेर खाँ ने आगरा-दिल्ली पर अधिकार किया था। सं० १६०० में हुमायूँ ईरान भागा था। शेरशाह की मृत्यु २२ मई सन् १५४५ ई० तदनुसार सं० १६०२ में हुई। अतः सं० १६०२ के पूर्व टोडरमल शेरशाह के यहाँ उच्चाधिकारी रहे होंगे। यदि सरोज-दत्त संवत् १५८० को विक्रम संवत् और टोडरमल का जन्मकाल मानें तो २२ वर्ष की अल्प आयु में वे शेरशाह के यहाँ उसकी मृत्यु के समय उच्चाधिकारी थे। यदि दो वर्ष भी पहले उनकी नियुक्ति हुई रही हो तो उस मुस्लिम युग में किसी हिंदू का २० वर्ष की ही वय में उच्चाधिकारी हो जाना संभव नहीं। सं० १५८० न तो जन्मकाल है और न तो विक्रम संवत् है, यह ई० सन् में उपस्थितिकाल है।

टोडरमल ने कोई काव्य ग्रंथ नहीं लिखा। यह कभी-कभी नीति संबंधी फुटकर छंद लिखा करते थे। श्री मया शंकर याज्ञिक ने बड़े श्रम से इनकी रचनाओं को ढूँढकर टोडरमल संग्रह नाम से संकलित किया है।[१] शुक्ल जी के अनुसार इनका जन्मकाल सं० १५५० है।

३०९।

(२) टेर कवि, मैनपुरी जिले के वासी, सं० १८८८ में उ०। इन्होंने सुन्दर कविता की है।

सर्वेक्षण

टेर के संबंध में कोई सूचना सुलभ नहीं।

---

(१) खोज रि० १९३२।२१८

३१०।

(३) टहकन कवि पंजाबी। इन्होंने पांडवों के यज्ञ इतिहास की कथा संस्कृत से भाषा में की है।

सर्वेक्षण

टहकन कवि का एक ग्रन्थ अश्वमेध भाषा में मिला है। वह जलालपुर, पंजाब के रहनेवाले चोपड़ा खत्री थे। यह रंगीलदास के पुत्र थे। यह कृष्ण भक्त भी थे। इन्होंने अश्वमेध भाषा की रचना सं० १७२६ में की।[१] सरोज में उल्लिखित पांडवों के यज्ञ इतिहास की कथा तथा विनोद (४५२।१) में वर्णित जैमिनि अश्वमेध ग्रंथ यही है।

३११।२५१

(१) ठाकुर कवि प्राचीन, सं० १७०० में उ०। ठाकुर कवि को किसी ने कहा है कि वह असनी ग्राम के बंदीजन थे। सं० १८०० के करीब मोहम्मदशाह बादशाह के जमाने में हुए हैं। और कोई कहता है कि नहीं, ठाकुर कवि कायस्थ बुन्देलखण्डवासी हैं। किसी बुन्देलखण्डी कवि का बयान है कि छत्रपुर बुँदेलखण्ड में बुँदेला लोग हिम्मत बहादुर गोसाईं को मारने को इकट्ठा हुए थे। ठाकुर कवि ने यह कवित 'समयो यह बीर बरावने हैं,' लिख भेजा। सब बुन्देला चले गए और हिम्मत बहादुर ने ठाकुर को बहुत रुपये इनाम में दिए। हिम्मत बहादुर सं० १८०० में थे। कवि कालिदास ने हजारा संवत् १७४५ के करीब बनाया है और ठाकुर के बहुत कवित्त और ऊपर लिखा हुआ कवित्त भी लिखा है। इससे हम अनुमान करते हैं कि ठाकुर कवि बुन्देलखण्डी अथवा असनी वाले, भाट या कायस्थ कुछ हों, पर अवश्य संवत् १७०० में थे। इनका काव्य महा मधुर लोकोक्ति अलंकारों से भरापुरा सर्वप्रसन्नकारी है। सवैया इनके बहुत ही चुटीले है। इनके कवित्त तो हमारे पुस्तकालय में सैकड़ों हैं, पर ग्रंथ कोई नहीं। न हमने किसी ग्रन्थ का नाम सुना।

सर्वेक्षण

वस्तुतः दो ठाकुर हुए हैं। हजारा के सम्बन्ध में मैंने जो शोध किया है, उसके अनुसार हजारा १८७५ के आस-पास की रचना है। और ठाकुर प्राचीन का अस्तित्व नहीं सिद्ध होता।

१. ठाकुर कायस्थ बुन्देलखंडी, जिनका संबंध पन्ना दरबार से था, जो पद्माकर के समकालीन थे, और हिम्मत बहादुर से जिनका संबंध था, यही ठाकुर दोनों ठाकुरों में सर्वाधिक प्रसिद्ध हैं। इन्हीं की रचनाओं के संकलन करने का प्रयास लाला भगवान दीन ने 'ठाकुर ठसक' में किया है। पर इसमें दोनों ठाकुरों की रचनाएँ मिली जुली हैं। इस ठाकुर का जन्म सं० १८२३ में ओरछा में हुआ था। इनका देहांत सं० १८८० में हुआ। यह गुलाब राय के पुत्र थे।

२. ठाकुर बंदीजन असनी वाले, यह ऋषिनाथ कवि के पुत्र, धनीराम कवि के पिता और सेवक कवि के पितामह थे। यह काशी नरेश के भाई देवकी नंदन के यहाँ थे। उन्हीं के नाम पर सं० १८६१ में इन्होंने विहारी सतसई की 'सतसई बरनार्थ देवकी नंदन टीका' लिखी।

---

१. खोज रि० १९२२।११० ए, बी

३१२।२५२

(२) ठाकुरप्रसाद त्रिपाठी १ किशुनदासपुर जिले रायबरेली सं० १८८२ में उ०।

यह महान् पंडित संस्कृत साहित्य में महा प्रवीण थे। सारे हिंदुस्तान में काव्य ही के हेतु फिरकर ७२ बस्ते पुस्तकें केवल काव्य की इकट्ठा की थी। अपने हाथ से भी नाना ग्रंथ लिखे थे। बुंदेलखंड में तो घर घर कवियों के यहाँ फिर कर एक संग्रह भाषा के कवियों का इकट्ठा किया था। रस चंद्रोदय ग्रंथ इनका बनाया हुआ है। तत्पश्चात् काशी जी में गणेश और सरदार इत्यादि कवियों से बहुत मेल-जोल रहा। अवध देश के राजा महाराजों के यहाँ भी गए। जब इनका संवत् १९२४ में देहांत हुआ, तो इनके चारों महामूर्ख पुत्रों ने अठारह-अठारह बस्ते बाँट लिए और कौड़ियों के मोल बेंच डाले। हमने भी प्रायः २०० ग्रंथ अंत में मोल लिए थे।

सर्वेक्षण

शिवसिंह, ठाकुरप्रसाद और उनके चारों पुत्रों से परिचित थे, अतः इनके संबंध में दी हुई सारी सूचनाएँ ठीक समझी जानी चाहिए। सं० १८८२ कवि का रचनाकाल ही है।

३१३।२५३

(३) ठाकुरराम कवि, इनके कवित्त शांत रस के सुन्दर हैं।

सर्वेक्षण

इस कवि के संबंध में कोई सूचना सुलभ नहीं है।

३१४।२५४

(४) ठाकुर प्रसाद त्रिवेदी, अलीगंज जिले खीरी, विद्यमान हैं। यह सत्कवि हैं।

सर्वेक्षण

इस कवि के भी संबंध में कोई विशेष सूचना नहीं प्राप्त हो सकी।

ढ

३१५।२५५

(१) ढाखन कवि, इनका महा अद्भुत काव्य है।

सर्वेक्षण

इस कवि के भी संबंध में कोई विशेष सूचना नहीं सुलभ हो सकी।

त

३१६।२५६

(१) श्रीगोस्वामी तुलसीदास जी १, सं० १६०१ में उ०।

यह महाराज सरवरिया ब्राह्मण राजापुर, जिले प्रयाग के रहनेवाले संवत् १५८३ के लगभग उत्पन्न हुए थे। संवत् १६८० में स्वर्गवास हुआ। इनके जीवन चरित्र की पुस्तक वेणीमाधव दास कवि उसका ग्रामवासी ने, जो इनके साथ-साथ रहे, बहुत विस्तार पूर्वक लिखी है। उसके देखने से इन महाराज के सब चरित्र प्रकट होते हैं। इस पुस्तक में ऐसी विस्तृत-कथा को हम कहाँ तक संक्षेप में वर्णन करें। निदान गोस्वामी जी बड़े महात्मा रामोपासक महायोगी सिद्ध हो गए हैं। इनके बनाए ग्रंथों की ठीक-ठीक संख्या हमको मालूम नहीं हुई। केवल जो ग्रंथ हमने देखे अथवा हमारे पुस्तकालय में हैं, उनका ज़िक्र किया जाता है। प्रथम ४९ कांड रामायण बनाया है, इस तफ़सील से, १ चौपाई रामायण ७ कांड, कवितावली ७ कांड, ३ गीतावली, ७ कांड, ४ छंदावली ७ कांड, ५ बरवै ७ कांड, दोहावली ७ कांड, ७ कुंडलिया ७ कांड। सिवा इन ४९ कांडों के १ सतसई, २ राम शलाका, ३ संकट मोचन, ४ हनुमत बाहुक, ५ कृष्ण गीतावली, ६ जानकी मंगल, ७ पार्वती मंगल, ८ करखा छंद, ९ रोला छंद, १० झूलना छंद इत्यादि और भी ग्रंथ बनाए है। अंत में विनयपत्रिका महा विचित्र मुक्ति रूप प्रज्ञानंदसागर ग्रंथ बनाया है। चौपाई गोस्वामी महाराज की ऐसी किसी कवि ने नहीं बना पाई और न विनयपत्रिका के समान अद्भुत ग्रंथ आज तक किसी कवि महात्मा ने रचा। इस काल में जो रामयण न होती, तो हम ऐसे मूर्खों का बेड़ा पार न लगता। गोसाईं जी श्री अयोध्या जो, मथुरा-वृंदावन, कुरुक्षेत्र, प्रयाग, वाराणसी, पुरुषोत्तम पुर इत्यादि क्षेत्रों में बहुत दिनों तक घूमते रहे हैं। सबसे अधिक श्री अयोध्या, काशी, प्रयाग और उत्तराखंड, वंशीवट जिले सीतापुर इत्यादि में रहे हैं। इनके हाथ की लिखी हुई रामायण जो राजापुर में थी, खंडित हो गई है पर मलीहाबाद में आज तक संपूर्ण सातों कांड मौजूद हैं। केवल एक पन्ना नहीं है। विस्तार भय से अधिक हालात हम नहीं लिख सकते। दो दोहे लिखकर इन महाराज का वृत्तांत समाप्त करते हैं।

दोहा—कविता कर्ता तीनि है, तुलसी, केसव सूर
कविता खेती इन लुनौ, सीला बिनत मजूर ॥१॥
सूर सूर तुलसो ससी, उडुगन केसवदास
अबके कवि खद्योत सम, जहँ तहँ करत प्रकास ॥२॥

सर्वेक्षण

राजापुर को तुलसीदास की जन्मभूमि माना जाता है। पंडित चंद्रवली पांडेय इसे कर्म भूमि मानते हैं। वे तुलसी की जन्मभूमि होने का गौरव अयोध्या को देते हैं। कुछ लोगों का हठ सोरों के लिए भी है। राजापुर, बांदा जिले में यमुना के दाहिने किनारे पर है, न कि प्रयाग जिले में।

सं० १६०१ में तुलसीदास जी उपस्थित थे। सरोजकार के अनुसार गोस्वामी जी सं० १५८३ के लगभग उत्पन्न हुए, पर अधिकांश विद्वान् इनका जन्मकाल सं० १५८९ मानते हैं। बाबा बेणीमाधवदास और बाबा रघुबरदास रचित मूल गोसाईं चरित और तुलसी चरित के अनुसार गोस्वामी जी का जन्म सं० १५५४ में हुआ।

बाबा वेणीमाधवदास के जिस गोसाईं चरित का उल्लेख सरोज में हुआ है, वह वस्तुतः भवानीदास का लिखा हुआ है और सं० १८२५ के आस पास रचा गया था। यह ग्रियर्सन द्वारा संपादित और खड्ग विलास प्रेस, बाँकीपुर से १८८९ ई० में प्रकाशित रामचरित मानस के आदि में संलग्न है।

तुलसीदास के नाम पर अनेक ग्रंथ मिलते हैं, परंतु निम्नांकित १२ ही प्रामाणिक माने जाते हैं।

१. रामचरित मानस, २. विनय पत्रिका, ३. गीतावली, ४. कृष्ण गीतावली, ५. कवितावली, हनुमान बाहुक सहित, ६. दोहावली, ७. बरवै रामायण, ८. जानकी मंगल, ९. पार्वती मंगल, १०. राम लला नहछू, ११. वैराग्य संदीपनी, १२. सगुनावली या राम शलाका या रामाज्ञा प्रश्न।

मलीहाबाद वाली रामचरित मानस की प्रति के तुलसीदास लिखित होने में संदेह प्रकट किया जाता है। राजापुर वाली प्रति में केवल अयोध्याकांड शेष है, जिसे किसी को दिखाया नहीं जाता, अतः इसके भी संबंध में संशय बना हुआ है।

तुलसी जी के देहावसान के संबंध में यह दोहा प्रचलित है—

संवत सोरह सै असी, असी गंग के तीर
श्रावण शुक्ला सप्तमी तुलसी तज्यो शरीर

श्रावण शुक्ला सप्तमी के स्थान पर, 'श्रावण श्यामा तीज शनि' पाठ भी कहा जाता है। यह भी कहा जाता है कि तुलसी के मित्र टोडर के वंशज तुलसी के नाम पर अब भी सावन बदी तीज को ब्राह्मण को सीधा देते हैं।

३१७।२५८

(१) तुलसी २. श्री ओझा जी, जोधपुर वाले। सुंदरी तिलक में इनके कवित हैं। शृंगार रस का इन्होंने चोखा वर्णन किया है।

सर्वेक्षण

तुलसीदास ओझा, जोधपुर के राजगुरु थे। यह कवि और पहलवान थे। यह सं० १९२६ में काशी आए थे। यहाँ बालक अंबिकादत्त व्यास की सरस और चमत्कार पूर्ण समस्यापूर्तियों को सुनकर परम प्रसन्न हुए थे और उन्हें प्रशंसापत्र तथा पुरस्कार में वस्त्र आदि दिए थे।[1]

३१८।२५९

(३) तुलसी ३, कवि यदुराय के पुत्र, सं० १७१२ में उ०। यह कवि कविता में सामान्य कवि हैं। इन्होंने कविमाला नामक एक संग्रह बनाया है, जिसमें प्राचीन ७५ कवियों के कवित्त लिखे है। ये सब कवि संवत् १५०० से लेकर १७०० तक के हैं। इस संग्रह के बनाने में इस ग्रंथ से हमको बड़ी सहायता मिली है।

सर्वेक्षण

सं० १७१२ कबिमाल का रचनाकाल है। सरोज में रचनाकाल सूचक यह दोहा दिया गया है :—

सत्रह सै बारह बरस, सुदि असाढ़ बुधवार
तिथि अनंग को सिद्ध यह भई जो सुख को सार

विनोद (३३५) में इनका एक ग्रन्थ 'ध्रुव प्रश्नावली' और दिया गया है। विनोद में ३९२ संख्या पर एक तुलसी और हैं, जिनका रचना काल सं० १७११ है और जो रस कल्लोल तथा रस-

---

(१) भारतेंदु मंडल, पृष्ठ ११३

भूषण के रचयिता हैं। ये दोनों ग्रन्थ कविमाला वाले तुलसी के ही हैं। सं० १७११ रस कल्लोल का ही रचनाकाल है।[1]

३१६।२५६

(४) तुलसी ४, इनका काव्य सरस है।

सर्वेक्षण

तुलसी नाम के अनेक कवि खोज में मिले हैं। केवल नाम और एक उदाहरण के सहारे इस कवि की पकड़ बहुत संभव नहीं। सरोज में उदाहृत कविता से यह धार्मिक प्रवृत्ति के ज्ञात होते हैं। संभवतः भगवद्गीता भाषा और ज्ञान दीपिका के रचयिता तुलसी यही हैं। ज्ञान दीपिका की रचना सं० १६३१ में हुई थी।[2] यह संभवतः ज्ञान संबंधी फुटकर छंदों का संग्रह है और सरोज में उद्धृत कवित्त इसी ग्रन्थ का है।

३२०।२६८

(५) तानसेन कवि ग्वालियर निवासी, सं० १५८८ में उ०। यह कवि मकरंद पांड़े गौड़ ब्राह्मण के पुत्र थे। प्रथम श्री गोसाईं स्वामी हरिदास जी गोकुलस्थ के शिष्य होकर काव्यकला को यथावत सीखकर पीछे शेख मोहम्मद गौस ग्वालियर वासी के पास जाकर संगीत विद्या के लिए प्रार्थना की। शाह साहब तंत्र-विद्या में अद्वितीय थे। मुसलमानों में इन्हीं को इस विद्या का आचार्य सब तवारीखों में लिखा गया है। शाह साहब ने अपनी जीभ तानसेन की जीभ में लगा दी। उसी समय से तानसेन गान विद्या में महानिपुण हो गए। इनकी प्रशंसा आईन अकबरी में ग्रन्थकर्ता फ़हीम ने लिखा है कि ऐसा गाने वाला पिछले हजारा में कोई नहीं हुआ। निदान तानसेन ने दौलत खां, शेर खां बादशाह के पुत्र, पर आशिक होकर उनके ऊपर बहुत सी कविता की। दौलत खां के मरने पर श्री बांधव नरेश राम सिंह बघेला के यहां गए। फिर वहां से अकबर बादशाह ने अपने यहां बुला लिया। तानसेन और सूरदास जो से बहुत मित्रता थी। तानसेन जी ने सूरदास की तारीफ में यह दोहा बनाया—

किधौं सूर को सर लग्यो, किधौं सूर की पीर
किधौं सूर को पद लग्यो, तन मन धुनत सरीर ॥१॥

तब सूरदास जी ने यह दोहा कहा :—

बिधना यह जिय जानि कै, सेस न दीन्हें कान
धरा मेरु सब डोलते, तानसेन की तान ॥२॥

इनके ग्रन्थ रागमाला इत्यादि महा उत्तम काव्य के ग्रन्थ हैं।

सर्वेक्षण

तानसेन का वास्तविक नाम त्रिलोचन पांडे था। यह ग्वालियर निवासी मकरंद पांडे के पुत्र थे। इन्होंने प्रसिद्ध स्वामी हरिदास बृन्दावनी से पिंगल शास्त्र तथा संगीत विद्या का अध्ययन किया था। इन्होंने ग्वालियर के प्रसिद्ध संगीतज्ञ शेख मुहम्मद गौस से भी गान विद्या सीखी थी। यह पहले

---

(१) खोज रि० १६०६।३३६ (२) खोज रि० १६०६।३३८

शेरखां के पुत्र दौलत खां के आश्रित थे, फिर रीवां नरेश महाराज राम सिंह के यहाँ रहे। राम सिंह ने सं० १६१६ में इन्हें अकबर के दरबार में भेजा। यह अकबरी दरबार में आने पर बहुत प्रसिद्ध हुए। यह अपने समय के सर्वप्रसिद्ध संगीताचार्य थे। ऐसी ख्याति का संगीतज्ञ आज तक कोई दूसरा नहीं हुआ। यह अकबरी दरबार के नव रत्नों में थे।

'अकबरी दरबार के हिन्दी कवि' में तानसेन पर कुछ विस्तार से विचार हुआ है। सरोज में दिया सं० १५८८ इनका जन्मकाल माना गया है पर यह ठीक नहीं। वस्तुतः यह ईस्वी, सन् है और तानसेन का उपस्थितिकाल है। डा० सुनीतिकुमार तानसेन का जन्मकाल अनुमान से सन् १५२० ई० मानते हैं।[१] दो सौ बावन वैष्णवों की वार्ता के अनुसार तानसेन का संबंध वल्लभ-संप्रदाय से भी था। 'अकबरनामा' में स्पष्ट रूप से लिखा है कि तानसेन की मृत्यु अकबर के शासनकाल ही में सं० १६४६ (२३ अप्रैल १५८३ ई०) में हुई।[२]

तानसेन का संपूर्ण काव्य नर्वदेश्वर चतुर्वेदी द्वारा संपादित होकर साहित्य भवन लिमिटेड प्रयाग, से प्रकाशित हो चुका है। इनके तीन ग्रंथ हैं—१. संगीत सार, २. राग माला, ३. श्री गणेश स्तोत्र। विनोद (८१) के अनुसार प्रथम दो का रचनाकाल सं० १६१७ है। इन ग्रंथों के अतिरिक्त इनके फुटकर पद और गीत भी हैं। इनमें इनकी हिंदू आत्मा स्पष्ट झाँक रही है। इधर प्रभु दयाल मीतल, मथुरा ने, इनकी संपूर्ण रचनाओं का एक और संकलन प्रकाशित किया है।

३२१।२६०

(६) तारापति कवि, सं० १७९० में उ०। इनकी नखशिख के कविता सुंदर हैं।

सर्वेक्षण

सरोज में उरोज संबंधी इनका एक सुंदर कवित्त उदाहृत है, जो दिग्विजय भूषण से उद्धृत है। संभव है इन्होंने नखशिख का कोई ग्रंथ लिखा हो। कवि के संबंध में कोई अन्य सूचना सुलभ नहीं। इनका नाम सूदन ने लिया है।

३२२।२६१

(७) तारा कवि, सं० १८३६ में उ०। इन्होंने सुंदर कविता की है।

सर्वेक्षण

ग्रियर्सन (४१९) ने ३२१ तारापति और ३२२ तारा को अभिन्न माना है। सरोज में दोनों कवियों के नखशिख संबंधी एक-एक कवित्त उदाहृत है, जो ग्रियर्सन की संभावना की सत्यता के लिए एक हलका आधार हो सकते हैं।

नीति के दोहों वाले प्रसिद्ध कवि वृंद के गुरु काशीवासी तारा पंडित थे।[४] वृंद ने इनसे साहित्य, वेदांत, तथा अनेकानेक विषयों का ज्ञान प्राप्त किया था, साथ ही इन्हीं से कविता करना भी

---

(१) ऋतंभरा पृष्ठ १११ (२) अकबरी दरबार के हिन्दी कवि, पृष्ठ ९८-११४ (३) वही (४) राजस्थानी भाषा और साहित्य, पृष्ठ १६४

सीखा था। अतः वृंद के गुरु यह तारा पंडित अच्छे कवि भी रहे होंगे। वृंद का जन्म सं० १७०० में और मृत्यु सं० १७८० में हुई। अतः तारा पंडित सं० १७२० के आस-पास काशी में उपस्थित रहे होंगे। सरोज के तारा और इन तारा पंडित के समय में १०० वर्ष से भी अधिक का अंतर है। तारा काशीस्थ और ३२१ तारापति के समय में भी ५० वर्ष का अंतर है। हो सकता है ये तीनों कवि एक ही हों और अनुमान पर आधृत होने के कारण सरोज के संवत् अशुद्ध हों।

५२३।२६२

(८) तत्ववेत्ता कवि, सं० १६८० में उ०। इनके हजारा में कवित्त हैं।

सर्वेक्षण

तत्ववेत्ता जी निबार्क-संप्रदाय के संत, मारवाड़ राज्य के जैतरण नगर के निवासी और जाति के छैन्याती ब्राह्मण थे। इनके असली नाम का पता नहीं। तत्ववेत्ता इनका उपनाम था। ये सुकवि और चमत्कारी महात्मा थे। अपने पीछे सैकड़ों शिष्य छोड़कर गोलोकवासी हुए, जिनमें तीन-चार की गद्दियाँ आज भी अजमेर, जयपुर, जैतारण आदि विभिन्न स्थानों में चल रही हैं। इनका आविर्भाव काल सं० १५५० के लगभग है। इनके एक ग्रंथ का पता चलता है। राजस्थानी भाषा और साहित्य में इसका नाम 'कवित्त' और राज० रि०,भाग १ में 'तत्ववेत्तारा सवैया' है। यह ग्रंथ न तो कवित्तों का है, न सवैयों का। इसमें कुल ९८ छप्पय हैं। इनमें राम, कृष्ण, नारद, जनक आदि महा पुरुषों की महिमा का कथन है। सरोज, राजस्थानी भाषा और साहित्य तथा राज० रि० में इनके एक एक छप्पय उद्धृत हैं। संभवतः ये सभी इसी ग्रंथ से हैं। यह ग्रंथ व्रज भाषा में है।[1]

३२४।२६३

(९) तेगपाणि कवि, सं० १७०८ में उ०। ऐजन। हजारा में इनके कवित्त हैं।

सर्वेक्षण

तेगपाणि के संबंध में कोई सूचना सुलभ नहीं।

३२५।२७०

(१०) ताज कवि, सं० १६५२ में उ०। ऐजन। हजारा में इनके कवित्त हैं।

सर्वेक्षण

क्यामखानी वंश का शासन राजस्थान के फतहपुर और झुंझनू में कई शताब्दियों तक रहा है। इस वंश का मूल पुरुष चौहान वंशीय था। अतः इसके वंशजों को अपने मूल चौहान वंश का गौरव सदा ही रहा है। अकबर के समय में फदन खाँ चौहान यहाँ के राजा थे। इन्हीं की बेटी ताज थी। इसका व्याह अकबर से हुआ था। फ़दन खाँ के वंशज अतप खाँ के पुत्र यामत खाँ उपनाम

---

(१) राज० रि० १ और राजस्थानी भाषा और साहित्य, पृष्ठ १०

जान कवि ने 'क्याम खाँ रासा' नामक ग्रंथ लिखा है, जिसमें उक्त विवाह का उल्लेख है, पर ताज का नाम नहीं हैं। यह विवाह अकबर बादशाह के कहने पर हुआ था। बादशाह को उस समय तक हिन्दुओं पर पूरा विश्वास नहीं हुआ था। अतः यह अकबर के शासन का प्रारंभिक काल रहा होगा।

हिंदी के मुसलमान कवि में, ताज स्त्री थीं या पुरुष, यह प्रश्न उठाया गया है। सरोज में इस संबंध में कुछ नहीं कहा गया है। संभवतः सरोजकार इन्हें पुरुष ही समझते थे। सामान्यतया वे स्त्री मानी जाती रही हैं। अब तो वे अकबर की स्त्री सिद्ध हो गई हैं, फिर यह प्रश्न ही नहीं रह जाता।

ताज गोस्वामी विट्ठल नाथ की शिष्या थी। गोकुल के आस पास ही इनकी मृत्यु हुई। रसखान और ताज की समाधियाँ महावन के निकट कदमखंडी में प्राप्त हुई हैं। ताज की समाधि पर एक घिसा हुआ लेख है। उसके पूरे न पढ़े जाने पर भी उसमें ताज नाम स्पष्ट पढ़ा जा सका है।

ताज ने कवित्त, सवैया, दोहा धमार एवं पद प्रचुर मात्रा में लिखे हैं। उनकी साढ़ी बारह पुष्टि संप्रदाय में मान्य है और पुष्टि संप्रदाय के मंदिरों में गाई जाती है। इनका एक ग्रंथ हैं 'बीबी बाँदी का झगरा।' इस ग्रंथ में लोकोक्तियों का प्रयोग बहुत है।[१]

सरोज में दिया सं० १६५२ ताज का रचनाकाल है। ताज विट्ठल नाथ की शिष्या थीं। उन्होंने यह शिष्यत्व सं० १६४२ के पूर्व किसी समय स्वीकार किया होगा। क्योंकि यही उनका देहावसानकाल है।

'हिंदी के मुसलमान कवि' में 'पूरबले जनम कमाई जिन खूब करी' के अनुसार इनको अवध, विहार अथवा बंगाल में उत्पन्न कहा गया है। पर पूरब और ले अलग अलग शब्द नहीं हैं। यह एक शब्द पूरबले है। पूरबले जन्म का अर्थ है पूर्व जन्म। पंजाबी शब्दों के प्राचुर्य के कारण मिश्रबंधु इन्हें पंजाबिन समझते हैं।[२]

सिहोर निवासी गोविंद गिल्लाभाई को ताज की एक पुस्तक मिली थी, जिसमें निम्नांकित विषयों पर रचनाएँ थीं।[३]

१. गणेश स्तुति, २. सरस्वती समाराधन, ३. भवानी वंदना, ४. हरदेव जी की प्रार्थना, ५. मुरलीधर के कवित्त, ६. दशावतार वर्णन, ७. निरोष्ठ कवित्त, ८. होरी फाग, ९. बारहमासा, छप्पयों में, १०. बारहमासा, कवित्तों में, ११. बारहमासा, कुंडलियों में, १२. भक्ति पक्ष के कवित्त १३. फुटकर।

३२६।२७१

(११) तालिबशाह, सं० १७६८ में उ०। इनके कवित्त अच्छे हैं।

---

(१) कवियित्री ताज रचित एक अज्ञात ग्रंथ, व्रज भारती, वर्ष १३, अंक २, भाद्रपद २०१२ (२) विनोद, कवि संख्या ९९ (३) हिन्दी के मुसलमान कवि पृष्ठ १६२

सर्वेक्षण

ग्रियर्सन (४३१) में तालिबअली उपनाम रसनायक विलग्रामी और इन तालिब शाह के एक होने की संभावना की गई है, जो ठीक नहीं प्रतीत होती, क्योंकि तालिबअली अपनी छाप रसनायक रखते थे और तालिब शाह अपने नाम का पूर्वांश केवल तालिब। इस कवि के संबंध में और कोई सूचना नहीं।

३२७।२६९

(१२) तीर्थराज ब्राह्मण, बैसवारे के, सं० १८०० में उ०। यह महाराज महान कवीश्वर बैस वंशावतंश राजा अचल सिंह बैस रनजीतपुरवावाले के यहाँ थे और उन्हीं की आज्ञानुसार संवत् १८०७ में समरसार भाषा किया।

सर्वेक्षण

अचल सिंह डौंड़ियाखेरा के राजा थे। तीर्थराज ने इन्हीं के आश्रय में सं० १८०७ में समरसार की रचना की, जैसा कि सरोज में कहा गया है तथा इसकी खोज में प्राप्त प्रति में दिए रचनाकाल सूचक दोहे से भी सिद्ध है—

संवत मुनि, नभ, उरग ससि, ज्येष्ठ सुक्ल रवि तीज
बयो सुजस फल तेहन को, समर सार को बीज

खोज रि० १९०६।११५

इस ग्रन्थ में युद्ध प्रारंभ करने का मुहूर्त विचार है।

३२८।२६६

(१३) तीखी कवि, ऐजन। (निरर्थक) प्रथम एवं द्वितीय संस्करणों में नहीं है।

सर्वेक्षण

तीखी कवि की कविता के उदाहरण में सरोज में यह कवित्त दिया गया है—

सिंह पै खवाओ, चाहौ जल में डुबाओ,
चाहौं सूली पै चढ़ाओ, घोरि गरल पियाइबी
बींछी सों डसाओ, चाहौ सांप पै लिटाओ,
हाथी आगे डरवाओ, एती भीति उपजाइबी
आगि में जराओ, चाहौ भूमि में गड़ाओ,
तीखी अनी बेधवाओ, मोहिं दुख नहिं पाइबी
ब्रज जन प्यारे कान्ह कान यह बात करौ,
तुम सों विमुख ताको मुख ना दिखाइबी

'तीखी अनी बेधवाओ' में 'तीखी' अनी का विशेषण है, न कि कवि का नाम। तीखी का अर्थ है तीक्ष्ण और अनी का अर्थ है नोक। यह कवित्त भक्तमाल के प्रसिद्ध टीकाकार प्रियादास की रचना है और उक्त टीका का अंतिम(६२८ वां) कवित्त है।

---

(१) देखिए, यही ग्रन्थ, शंभुनाथ, कवि संख्या ८४० (२) देखिए, यही ग्रन्थ, कवि संख्या ३९२

३२६।६२७

(१४) तेही कवि । ऐजन । निरर्थक, प्रथम एवं द्वितीय संस्करणों में नहीं है ।

सर्वेक्षण

मेरी धारणा है कि कवि का नाम तेही न होकर नेही है । आगे इसी ग्रंथ में नेही नामक कवि हैं ।[१] लिखते समय 'न' का 'त' और 'त' का 'न' हो जाना बहुत सरल है । इस कवि का एक ही छंद सरोज में उद्धृत है । जब तक इस कवि के अनेक छंद तेही छाप से युक्त नहीं मिल जायँ, इसके अस्तित्व के संबंध में संदेह बना ही रहना चाहिए ।

३३०।२६४

(१५) तोष कवि, सं० १७०५ में उ० । यह महाराज भाषा काव्य के आचार्यों में हैं । ग्रन्थ इनका हमको कोई नहीं मिला । पर इनके कवित्तों से हमारा कुतुबखाना भरा हुआ है । कालिदास तथा तुलसी जी ने भी इनकी कविता अपने ग्रंथों में बहुत सी लिखी है ।

सर्वेक्षण

तोष का पूरा नाम तोषमणि[१] था जैसा कि इनके प्रसिद्ध ग्रंथ सुधानिधि की एक हस्तलिखित प्रति की पुष्पिका से प्रकट है । सुधानिधि की रचना सं० १६६१ में हुई :—

संवत सोलह सै बरस गो इकानबे बीति
गुरु अषाढ़ की पूर्णिमा रच्यो ग्रन्थ करि प्रीति

अतः स्पष्ट है कि सरोज में दिया हुआ सं० १७०५ कवि का रचनाकाल ही है और इनको रचनाएँ अवश्य ही कवि माला (सं० १७१२) और हजारा (सं० १८७५) में रही होंगी । शुक्ल जी ने प्रमाद से इस ग्रंथ का रचनाकाल सं० १७६१ दे दिया है । सुधानिधि रस का ग्रन्थ है । इसमें रस और नायिका भेद वर्णित हैं । यह ग्रन्थ भारत जीवन प्रेस, काशी से सन् १८९२ ई० में प्रकाशित हो चुका है । सरोज में यद्यपि तोष के किसी ग्रन्थ का नाम नहीं दिया गया है, और प्रमादवश सुधानिधि की गणना तोषनिधि के ग्रन्थों में हो गई है, पर तोष की कविता का उदाहरण देते समय ऊपर 'सुधानिधि ग्रन्थे' लिख दिया गया है ।

तोषमणि शुक्ल चतुर्भुज शुक्ल के पुत्र थे । यह इलाहाबाद जिले के अंतर्गत, गंगा के तट पर स्थित सिंगरौर, (शृङ्गबेरपुर) के रहनेवाले थे । सुधानिधि के इस सवैये में कवि ने अपना परिचय स्वयं दे दिया है :—

शुक्ल चतुर्भुज को सुत तोष बसै सिंगरौर जहाँ रिखि थानो
दच्छिन देवनदी निकटै दस कोस प्रयागहि पूरब मानो
सोधि के सुद्ध पढ़ैंगे सुबोध सु हौं न कछू कवितारथ जानों
केलि कथा हरि राधिका की पद छेम जथामति प्रेम बखानों ५१४

३३१।२६५

(१६) तोषनिधि ब्राह्मण कंपिलानगर वासी, सं० १७९८ में उ० ।

---

(१) खोज रि० १६०६।३१६

इनके बनाए हुए तीन ग्रन्थ हैं—१ सुधानिधि, २ व्यंग्य शतक, ३ नखशिख। ये तीनों ग्रन्थ विचित्र हैं।

सर्वेक्षण

तोषनिधि कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे। यह फर्रुखाबाद जिले के अंतर्गत गंगा तट स्थित कंपिला के रहनेवाले थे, जहाँ के रहनेवाले प्रसिद्ध सुखदेव मिश्र थे। सुधानिधि इनका ग्रंथ नहीं है। यह तोषमणि की रचना है।[१] इनके निम्नांकित ग्रंथ खोज में मिले है :—

१. व्यंग्य शतक—१९१२, १८९, १९३२।२१९। यह १०० दोहों में भगवान से अत्यंत व्यंग्य और मर्मपूर्ण प्रार्थना है। इसीलिए ग्रंथ का नाम व्यंगशतक या व्यंग शत है। इसके प्रथम और अंतिम दोहों में कवि का नाम तोषनिधि आया है।

सुमिरि तोषनिधि दीन जन दीनबंधु घनश्याम
सौ दोहा मय ग्रंथ किय, दीन व्यंग सत नाम १
नहिं पंडित, कवि भक्त नहिं, गुनी प्रवीन न संत
अर्थ पाइ निज तोषनिधि, कबि समुझायो तंत १००

२. रति मंजरी—१९२०।१९६। यह न तो रस ग्रंथ है, न इसमें नायिका भेद ही है। इसमें रति संबंधी बातें हैं—

सुर नर नाग सबै रहे या रति के आधीन
ता सुख हित रति मंजरी कहौं तोष परवीन

ग्रंथ का रचनाकाल सं० १७९४ है—

सत्रह सै चौरानबे संवत सौ गुरुबार
पौष कृष्ण तिथि पंचमी रति मंजरी विचार

यद्यपि इस ग्रंथ में एवं पुष्पिका में तोष ही नाम दिया गया है, फिर भी समय को ध्यान में रखते हुए इसे इन्हीं तोषनिधि की रचना मानना पड़ता है और इस ग्रंथ के मिल जाने से सरोज में दिया हुआ इस कवि का सं० १७९८ रचनाकाल सिद्ध हो जाता है।

सरोज में नखशिख से भी एक छंद उद्धृत है जिसमें कविछाप तोषनिधि है। इससे स्पष्ट है कि यह भी इन्हीं की रचना है। विनोद (९८४।१) में इनके निम्नांकित ग्रन्थों का नाम निर्देश है :—

१ कामधेनु, २ सरोज, ३ भैयालाल पचीसी, ४ कमलापति चालीसा, ५ दीन व्यंग शतक, ६ महाभारत छप्पनी।

विनोद के अनुसार इनके पिता का नाम ताराचंद और पुत्र का नाम गिरिधर लाल है। इन्हें प्रमाद से कान्यकुब्ज शुक्ल माना गया है। यह कान्यकुब्ज अवस्थी थे। इनके वंशज शिवनंदन अवस्थी अभी तक कंपिला में हैं।[२]

तोषनिधि राजा दौलत सिंह जिला एटा राज्य राजौर के दरबारी कवि थे। माधुरी[३] के अनुसार इनके निम्नांकित ग्रन्थों का पता चलता है :—

१—भारत पंचाशिका। यही विनोद का 'महाभारत छप्पनी' ग्रन्थ प्रतीत होता है।
२—दौलत चंद्रिका।

---

(१) यही ग्रंथ, तोष कवि संख्या ३३० (२) व्रज भारती, वर्ष १३, अंक २, संवत् २०१२, पृष्ठ ३६ (३) माधुरी, नवम्बर १९२७, पृष्ठ ५८४–८५

३—राजनीति

४—आत्म शिक्षा

५—दुर्गा पच्चीसी। संभवतः यही 'भैयालाल पचीसी' है।

६—नायिका भेद—अपूर्ण।

७—व्यंग्य शतक

यद्यपि सरोज, ग्रियर्सन और विनोद में तोष और तोषनिधि को भिन्न-भिन्न कवि माना गया है, और पंडित कृष्ण बिहारी मिश्र ने साहित्य समालोचक और माधुरी में दोनों कवियों की विभिन्नता दिखलाने के लिए लेख लिखे थे, फिर भी आचार्य शुक्ल ने न जाने कैसे दोनों कवियों को एक कर दिया है।[१]

द

३३२।२७६

(१) राजा दत्त सिंह कवि, बुंदेलखण्डी, सं० १७८१ में उ०। इन्होंने केवल प्रेम पयोनिधि नामक ग्रंथ राधा माधव के परस्पर नाना लीला विहार के वर्णन में बनाया है।

सर्वेक्षण

सरोज के आधार पर विरचित ग्रंथों को छोड़ इस कवि का उल्लेख अन्यत्र कहीं नहीं मिलता।

३३३।२८२

(२) दलपति राय बंशीधर श्रीमाल ब्राह्मण, अमदाबादवासी, सं० १८८५ में उ०। इन्होंने भाषा-भूषण का तिलक दोनों ने मिलकर बहुत विचित्र रचना करके बनाया है।

सर्वेक्षण

भाषा-भूषण के जिस तिलक का उल्लेख सरोज में हुआ है, उसका नाम अलंकार रत्नाकर है। खोज में इसकी अनेक प्रतियाँ मिली है।[२] इस ग्रंथ से तीन दोहे सरोज में उद्धृत हैं, जिनसे इन कवि-द्वय के संबंध में पर्याप्त अभिज्ञता होती है। दलपति राय श्रीमाल महाजन (तेली) थे और बंशीधर मेदपाट ब्राह्मण। दोनों अहमदाबाद के रहने वाले थे। दलपतिराय ने गद्य में इस ग्रंथ के लक्षण लिखे और वंशीधर ने कहीं-कहीं पर स्वरचित कवित्तों के उदाहरण दिए। महाराज जसवंत सिंह कृत भाषा भूषण कहीं-कहीं लक्षण हीन है। दलपतिराय ने अत्यंत श्रम से कुवलयानंद के आधार पर उसको शोध भी दिया है।

भाषा भूषण अलंकृत कहुँ यक लच्छन हीन
श्रम करि ताहि सुधारि सो दलपतिराय प्रवीन १
अर्थ कुवलयानंद को बांध्यो दलपतिराय
बंशीधर कवि ने धरे कहूँ कवित्त बनाय २
मेदपाट श्रीमाल कुल, विप्र महाजन काइ
वासी अमदाबाद के बंसो दलपतिराय ३

---

(१) हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ २८२ (२) खोज रि० १९०४।१३, १९१२।१८, ४५, १९२३।८२ ए बी, १९२६।८६ ए बी, राज० रि० ३, पृ० ११०

यह ग्रंथ उदयपुर के महाराजा जगत सिंह की प्रेरणा से लिखा गया

उदयापुर सुरपुर मनौ सुरपति श्री जगतेस
जिनकी छाया छत्र बसि कीन्ही ग्रंथ असेस—१६२६।८६ ए

ग्रंथ का रचनाकाल सूचक दोहा केवल एक प्रति में दिया गया है —

सतरै सै अंठावने माह पच्छ सितवार
सुभ बसंत पांचै भयो यहै ग्रंथ अवतार—खोज रि० १६१२।४५

इस दोहे के अनुसार रचनाकाल सं० १७५८ हुआ। पर शोध-निरीक्षक श्री श्याम बिहारी मिश्र ने इसे उदयपुर नरेश जगत सिंह के शासनकाल सं० १७६१-१८०८ से सामंजस्य न खाता देख अनुमान किया कि यह अंठावने, अंठान्बे होना चाहिए। इतना सब होते हुए भी संभवतः लेख दोष से विनोद (७१६-१७) और शुक्ल जी के इतिहास[1] में इसका रचना काल सं० १७६२ दिया गया है। राजस्थानी भाषा और साहित्य में इसका रचनाकाल सं० १७६८ अवश्य दिया गया है। इसके अनुसार अलंकार रत्नाकर में दलपति राय और वंशीधर दोनों की कविता है और यह ग्रंथ संवत् १६३८ में उदयपुर के राज्य यंत्रालय से प्रकाशित भी हुआ था। इस ग्रंथ के उदयपुर सरकार द्वारा प्रकाशित किये जाने से यह और भी स्पष्ट हो जाता है कि इस कवि का सम्बन्ध इस दरबार से अवश्य था। एक रिपोर्ट में इसका रचना काल माघ सुदी ५, सं० १८६८ भी दिया हुआ है।[3] सरोज में दिया इस कवि का समय अशुद्ध है।

दलपति राम के नाम पर श्रवणाख्यान नामक एक ग्रंथ खोज में मिला है।[4] यह कवि भी अहमदाबाद का रहने वाला था। इसने इसे बलरामपुर नरेश दिग्विजय सिंह के आश्रय में रहकर सं० १६२४ में रचा। इस कवि के बाप का नाम डाहिया था। यह कवि अलंकार रत्नाकर वाले दलपति राय से भिन्न है। भास्कर रामचंद्र भालेराव ने 'गुजरात का हिंदी साहित्य' शीर्षक लेख में इस कवि का नाम दलपत राम दिया है और इसका कुछ और भी विवरण दिया है।[5] इन दलपत राम का जन्म सं० १८७७ (१८२० ई०) में एवं देहान्त ७२ वर्ष की आयु में १६५५ (१८६८ ई०) में हुआ। यह स्वामि नारायण संप्रदाय के थे।[6]

विनोद के अनुसार अलंकार रत्नाकर में निम्नांकित ४४ अन्य कवियों की भी रचनाएँ उदाहृत हैं—

१. यशवंत सिंह—स्फुट छंद और सारा भाषा भूषण, २. सेनापति, ३. केशवदास, ४. बलभद्र, ५. भगवंत सिंह, ६. गंग, ७. विहारी लाल, ८. मुकुन्द लाल. ९. बंदन, १०. शिरोमणि ११. सुखदेव, १२. चातुर, १३. सूरति मिश्र, १४. नील कंठ, १५. मीरन, १६. राम कृष्ण, १७. आलम, १८. देवी, १९. दास, २०. घोरी, २१. कृष्ण दंडी, २२. देव, २३. कालि दास,

---

(१) हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ २८३ (२) राजस्थानी भाषा और साहित्य पृष्ठ १८४
(३) खोज रि० १ ०४।१३ (४) खोज रि० १६०६।१२ (५) माधुरी ५।२।५ जून १६२७
(६) साहित्य, वर्ष ८।१ अप्रैल १६४७, 'कवीश्वर दलपत राम कृत श्रवणाख्यान' लेखक—उमाशंकर नागर, गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद।

२४. दिनेश, २५. बीठल राय, २६. अनीस, २७. काशी राम, २८. चिंतामणि, २९. पुखी, ३०. शिव, ३१. गोप, ३२. रघुराय, ३३. नेही, ३४. मुबारक, ३५. रहीम, ३६. मतिराम ३७. रसखान, ३८. निरमल, ३९. निहाल, ४०. निपट निरंजन, ४१. नंदन, ४२. महाकवि, ४३. राधा कृष्ण, ४४. ईश।

३३४।२८९

(३) दयाराम कवि १। इन्होंने अनेकार्थ माला ग्रंथ बनाया है।

सर्वेक्षण

दयाराम नाम के अनेक कवि खोज में मिले हैं। संभवतः यह गुजराती दयाराम नागर हैं। यह नर्वदा तट पर बसे चंडी ग्राम, जो अब चाणोद कहलाता है, के निवासी थे। यह वल्लभ संप्रदाय के अनुयायी थे। इनका जन्म सं० १८२४ और मृत्यु सं० १९०९ में हुई।[1] इन्होंने कृष्ण नाम चन्द्रिका, दयाराम सतसई, श्रीमद्भागवतानुक्रमणिका अनन्य चन्द्रिका और वस्तुवृन्द नामदीपिका[2] नामक ग्रंथ लिखे हैं। संभवतः वस्तुवृन्द नाम दीपिका ही सरोज वर्णित अनेकार्थ माला ग्रंथ है। वस्तुवृन्द नाम दीपिका में १०८ स्तवक हैं। इसमें विषयवार वस्तुओं के नामों का संग्रह है, जैसे चतुर्दश महामाया नाम, चतुर्दश मन्वंतर नाम। इनमें से दयाराम सतसई का रचना काल सं० १८७२ है।

शक अष्टादश दुहुतरा शुभ्र पच्छ नभ मास
मिति श्री राधा अष्टमीवार गुरु शुभ रास ७२६

दयाराम का मूल नाम दयाशंकर था। पहले यह शैव थे। वैष्णव होने पर दयाराम हो गए। इनके पिता का नाम प्रभुराम और माता का महालक्ष्मी था। यह साठोदरा नागर कुल के थे। बाल्यावस्था में ही यह मातृ-पितृहीन हो गए और बीस से चालीस की वय तक समस्त भारत में तीर्थयात्रा करते घूमते रहे। यह बड़े सुन्दर और शौकीन थे। इन्होंने संस्कृत, मराठी, उर्दू, पंजाबी और हिन्दी तथा गुजराती में रचना की है। गुजराती में इनके ४२ एवं हिन्दी में ४१ ग्रंथ हैं। इनके हिन्दी ग्रंथों की सूची यह है—

१. सतसैया, २. रसिक रंजन, ३. वस्तुवृन्द दीपिका, ४. व्रज विलासामृत, ५. पुष्टि भक्तरूप मलिका, ६. हरिदास मणिमाला, ७. क्लेश कुठार, ८. विज्ञप्ति विलास, ९. श्रीकृष्ण नाम चन्द्रकला, १०. पुष्टि पथ रहस्य, ११. प्रस्थाविक पीयूष, १२. स्वम्यापार प्रभाव, १३. श्रीकृष्ण नाममाहात्म्य मार्तंड, १४. श्रीकृष्ण नाम चंद्रिका, १५. विश्वासामृत, १६. वृन्दावन विलास, १७. कौतुक रत्नावली, १८. दशम अनुक्रमणिका, १९. श्री भागवत अनुक्रमणिका, २०. श्री भागवत माहात्म्य, २१. अकल चरित्र चंद्रिका २२. श्रीकृष्ण नामरत्न मालिका, २३. अनन्य चन्द्रिका, २४. मंगलानन्द माला, २५. प्रस्ताव चंद्रिका, २६ चिंतामणि, २७. पिंगल सार, २८. श्रीकृष्ण नामामृत, २९. श्रीकृष्ण स्तवनामृत लघु, ३०. स्तवन पीयूष, ३१. चतुर चित्त विलास ३२. श्रीहरि स्वप्न सत्यता ३३. अनुभव मंजरी ३४. गुरु पूर्वार्द्ध शिष्य उत्तरार्ध ३५. माया मत खंडन ३६. भगवद्भक्तोत्कर्षता ३७. ईश्वरता प्रतिपादक ३८. भगवद्-

---

(१) नागरी प्र० पत्रिका, वर्ष ६१, अंक १, सं० २०१३, पृष्ठ ४९, पाद टिप्पणी, खोज रि० १९४४।१४९ क ख ग घ ङ

इच्छोत्कर्षता ३६. मूर्ख लक्षणावलि ४०. श्रीकृष्ण नाममाहात्म्य ४१. शुद्धाद्वैत प्रतिपादन।

दयाराम जी वल्लभ संप्रदाय के वैष्णव थे। इनके गुरु का नाम गिरिधर लाल था। यह मुख्यतया शृंगारी कवि हैं।[१]

३३५।२६१

(४) दयाराम कवि त्रिपाठी, सं० १७६६ में उ०। इनके शांत रस के कवित्त चोखे हैं।

सर्वेक्षण

सं० १७६६ के आस पास एक दयाराम वैद्य मिले हैं, जो तीर्थराज प्रयाग के रहनेवाले थे। इनका दया विलास अथवा वैद्यक विलास नामक ग्रंथ खोज में मिला है।[२] इस ग्रन्थ की रचना कार्तिक सुदी ११, गुरुवार सं० १७७६ को हुई—

खंड[९] दीप[७] मुनि[७] मेंदिनी[१] विक्रम साहि सुजान
संवत सुनि साके सुनो सालवाहिनी नाम
सालवाहिनी नाम वेद विधिमुख रस चंदा
तूल के प्रगट पतंग सेत पख कहत कहेंदा
दया सुधा सुध ग्रन्थ सिद्धिभृगु खेती आखे
उदित सयन प्रभु पूजि मितर गुरु लाभ सुभाखे

निम्नांकित चरणों में कवि ने अपने निवास स्थान की सूचना दी है—

तं तं तं तीर्थराजसजति प्रान प्राग सतगुन पद चारि
दं दं दं दया बास जहँ शंभु निरत माधौ वपु धारि

पुष्पिका में इन्हें लछीरामात्मज कहा गया है। कवि दिल्ली के मुगल बादशाह मुहम्मदशाह (शासनकाल सं० १७७६-१८०५) के समय में हुआ। यह किसी चतुरसेन का आश्रित था। यह चतुरसेन दिल्ली निवासी थे और इनका सम्बन्ध मुहम्मद शाह के दरबार से था :—

चतुरसेन चतुरंगिनी राजत रजत जहान
सुरपति सम गम लच्छिमी दिल्ली सुजस मकान
दिल्ली सुजस मकान, तिमिर को वंस तिमिरहर
लच्छन लच्छ प्रकार कहत कवि कोटि महीधर
तपै मुहम्मद साहि प्रनत भूपति महिमाकर
दया कविन को दास जासु जस चंद्र दिवाकर

सभा के संक्षिप्त अप्रकाशित विवरण में इन्हें वदन कवि का पितामह और बेनीराम का गुरु कहा गया है। संभवतः यही सरोज के दयाराम त्रिपाठी हैं।

---

(१) साहित्य, वर्ष ७, अंक २, जुलाई १९५६ ई०, श्री अंबाशंकर नागर कृत लेख 'कवि दयाराम की हिन्दी कविता, पृष्ठ ३६-३८ (२) खोज रि० १९०१।४०, १९०२।११४, १९०६।६३, १९२०।३७, १९२३।८७ ए बी, १९२६।९४, १९३८।३७, १९४१।५०१

३३६।२६३

(५) दयानिधि कवि २।

सर्वेक्षण

विनोद (१४८४।१) में इन्हें राधावल्लभी कहा गया है। सरोज में राधा के चरणों की स्तुति करनेवाला इनका एक कवित्त उद्धृत भी है।

वसुधा ते न्यारी रस धारा बहै जामें ऐसी
दसधा त्रिवेनी प्रिया पाद पदमन में

दयानिधि के कवित्त ग्वालकृत कवि दर्पण या दूषण दर्पण[1] और षट्ऋतु वर्णन[2] में संकलित है। दूषण दर्पण का रचनाकाल सं० १८९१ है। अतः दयानिधि जी सं० १८९१ के पूर्व किसी समय उपस्थित थे।

३३७।२९४

(६) दयानिधि ब्राह्मण, पटनावासी, ३।

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध में कोई सूचना सुलभ नहीं है। सरोज में उदाहृत छन्द दिग्विजय भूषण से लिया गया है।

३३८।२९२

(७) दयानिधि कवि बैसवारे के, सं० १८११ में उ०। इन्होंने राजा अचल सिंह बैस की आज्ञानुसार शालिहोत्र ग्रन्थ बनाया है।

सर्वेक्षण

शालिहोत्र की अनेक प्रतियाँ खोज में मिली हैं[3]। अचल सिंह बैस क्षत्रिय थे। यह डौंड़िया खेरा (उन्नाव) के राजा थे। इनके पिता का नाम वीरशाह और पितामह सबलशाह था—

बयस वंस अवतंस मनि जगत सुजस चहुँ ओर
भूमंडलपुरहूत में सबल साह सिरमौर ३
वीरसाह जाके भये ज्यों कस्यप के भान
दान समै बलि करन से रन में भीम समान ४
अचलसिंह ताके भये ज्यों जजाति के पूर
धर्म धुरन्धर धरनि में ग्यानी दाता सूर ५
सुकवि दयानिधि सों कह्यो अचलसिंह सुखमानि
सालिहोत्र को ग्रंथ यह भाषा कीजै जानि ६
अचलसिंह के हुकुम ते जानि संस्कृत पंथ
भाषा भूषित करत हौं सालिहोत्र को ग्रंथ ७

---

(१) राज० रि० ३, पृष्ठ ११५ (२) वही, पृष्ठ १४८ (३) खोज रि० १९०१।६२, १९२३।८६ ए बी, १९४७।१५३

अन्तिम दो दोहे सरोज में उद्धृत हैं। ग्रंथ में रचनाकाल नहीं दिया गया है। प्राचीनतम प्रति सम्वत् १८१० की लिखी हुई है। तीर्थराज ने सं० १८०७ में इन्हीं अचल सिंह के लिए 'समर सार' नामक ग्रंथ की रचना की थी।[१] अतः सं० १८११ दयानिधि का उपस्थितिकाल ही है।

३३६।३०४

(८) दयानाथ दुबे, सं० १८८९ में उ०। इन्होंने आनन्द रस नाम ग्रंथ नायिका भेद का बनाया है।

सर्वेक्षण

सरोज में दिया हुआ सं० १८८९ आनन्द रस नामक नायिका भेद का रचनाकाल है। इसी वर्ष कवि ने सावन पूर्णिमा शनिवार को यह ग्रन्थ रचा। रचनाकाल सूचक यह दोहा सरोज में उद्धृत है :—

संवत् ग्रह[९] वसु[८] गज[८] मही[१] कह्यो यहै निरधार
सावन सुदि पूनो सनी भयौ ग्रन्थ परचार १

३४०।२७४

(९) दयादेव कवि।

सर्वेक्षण

खोज में इनके फुटकर कवित्तों का संग्रह 'दयादेव कवित्त' मिला है।[२] पर इससे कवि के सम्बन्ध में कोई नवीन सूचना नहीं मिलती। सूदन ने इनका नाम प्रणम्य कवियों की सूची में दिया है। अतः इस कवि का रचनाकाल सं० १८१० से पहले होना चाहिए। सरदार के शृङ्गार संग्रह में भी इनके कवित्त हैं।

३४१।

(१०) दत्त प्राचीन, देवदत्त ब्राह्मण कुसमड़ा जिले कन्नौज, सं० १८७० में उ०। इन् महाराज ने सुन्दर कविता की है।

सर्वेक्षण

ग्रियर्सन (२६१) में ३४१ दत्त प्राचीन, ३६२ देवदत्त, ३६५ देवदत्त को तथा विनोद (२६१) में ३४१ दत्त प्राचीन और ३६२ देवदत्त को अभिन्न माना गया है। यदि ऐसा है तो सरोज में दिया सं० १८७० अशुद्ध है। इस कवि के सम्बन्ध में कोई सूचना सुलभ नहीं। प्रथम संस्करण में कवि का समय सं० १७०३ दिया गया है।

महाकवि देव (सर्वेक्षण ३६०) का जन्म सं० १७३० में इटावा में हुआ था। यही २९ वर्ष की वय में इटावा छोड़, कुसमड़ा जिला मैनपुरी में आ बसे थे। यह कवि उक्त महाकवि देव ही हैं, जो १८२२ के आसपास तक जीवित रहे। यहाँ जिला और समय अशुद्ध दिए गए हैं। और १७०३ को यदि अंक व्यत्यय मान लिया जाय तो यह १७३० हो सकता है, जो देव का जन्मकाल है। अन्यथा संवत् अशुद्ध है।

(१) यही ग्रन्थ, कवि संख्या ३२७ (२) खोज रि० १९४१।६५

३४२।३०३

(११) दत्त, देवदत्त ब्राह्मण साढ़ जिले कानपुर, सं० १८३६ में उ०। यह कवि पद्माकर के समय में महाराज खुमानसिंह बुन्देला चरखारी के यहाँ थे। उन दिनों पद्माकर, ग्वाल, तथा दत्त इन तीनों कवियों की बड़ी छेड़छाड़ रहती थी। 'धारा बांधि छूटत फुहारा मेघमाला से' इस कवित्त पर राजा सुखमान सिंह ने दत्त जी को बहुत दान दिया था।

सर्वेक्षण

चरखारी नरेश खुमान सिंह का शासनकाल सं० १८१२-३६ है। यही समय दत्त का भी होना चाहिए। सरोज में दिया हुआ इनका सं० १८३६ ठीक है और कवि का रचनाकाल है। इस दत्त के तीन ग्रन्थ खोज में मिले हैं—

१. लालित्य लता—१६०३।५५, १६०६।५६। यह अलंकार का ग्रन्थ है। इसकी रचना सं० १७६१ में हुई थी।

संवत सत्रह सै परे एकानबे प्रमान
यह लालित्य लता लखित रची पौष सुदि बान
—खोज रि० १६०३।५५

इस ग्रन्थ में कवि ने अपना-निवास स्थान अंतरवेद के अंतर्गत, असनी और कन्नौज के बीच गंगा तट पर स्थित जाजमऊ बताया है, जहाँ राजा ययाति ने ६६ यज्ञ किए थे—

अंतरवेद पवित्र महा असनी और कनौज के मध्य बिलास है।
भागीरथी भव तारनि के तट देखत होत सो पातक नास है।
देव सरूप सबै नर नारि दिनों दिन देखिये पुन्य प्रकास है।
जज्ञ निनानबे कीने जजाति सो जाजमऊ कवि दत्त को वास है।

लगता है जाजमऊ से लगा हुआ साढ़ि कोई गांव हैं, जिसका उल्लेख सरोजकार ने किया है।

२. सज्जन विलास—१६०३।३६। यह नायिका भेद का ग्रन्थ है। इसकी रचना चैत सुदी ६, बुधवार सं० १८०४ को हुई:—

संवत ठारह सै बरस, चारि चैत सुदि चारु
नौमी बुध दिन को भयो, नयो ग्रन्थ अवतारु

यह ग्रन्थ टिकारी, गया, के राजकुमार फते सिंह की आज्ञा से बना था।

३. स्वरोदय–१६०३।१२०। नासिका के सुर से राजाओं के चढ़ाई पर जाने का मुहूर्त-विचार इस ग्रंथ में वर्णित है। प्राप्त प्रति अपूर्ण है और महाराज बनारस के पुस्तकालय में है। इसके प्रथम छंद में दत्त छाप है। यह गणेश-वंदना का कवित्त है। यही लालित्य लता का भी पहला छंद है, अतः यह ग्रन्थ भी इन्हीं दत्त का है।

दत्त अवस्था में पद्माकर से बहुत बड़े थे। इनका रचनाकाल सं० १७६१–१८३६ है। पद्माकर का जन्म सं० १८१० में हुआ था और इनका रचनाकाल उस समय प्रारम्भ होता है, जब कि दत्त का समाप्त होता है। इसी प्रकार ग्वाल का रचनाकाल सं० १८७६ से १६१६

तक है। पद्माकर का देहावसान सं० १८६० में हुआ, अत: दत्त और पद्माकर कुछ समय तक साथ रहे होंगे और दत्त, पद्माकर तथा ग्वाल कभी एक साथ न रहे होंगे। ऐसी स्थिति में तीनों कवियों की पारस्परिक छेड़-छाड़ सम्बन्धी सरोज का कथन ठीक नहीं। सरोज में प्रमाद से दूसरी बार खुमान सिंह के स्थान पर सुखमान सिंह छप गया है।

३४३।२८०

(१२) दास, भिखारीदास, कायस्थ, अरवत बुन्देलखंडी, सं० १७८० में उ०। यह महान् कवि भाषा साहित्य के आचार्य गिने जाते हैं। छंदोर्णव नाम पिंगल, रस-सारांश, काव्य निर्णय, शृङ्गार निर्णय, बाग बहार, ये पाँच ग्रन्थ इनके बनाए हुए अति उत्तम काव्य हैं।

सर्वेक्षण

लाला भिखारीदास हिन्दी के सुप्रसिद्ध आचार्य कवियों में हैं। छंदोर्णव के पाँचवें छंद में इन्होंने अपना परिचय दिया है। छंद के एक-एक अक्षर छोड़कर पढ़ने से यह परिचय प्राप्त होता है—

अभिलाषा करी सदा सेसनि का होय ब्रित्थ
सब ठौर दिन सब याही सेवा चरण चानि
लोभा लई नीचे ज्ञान हलाहलही को अंशु
अंत है क्रिपा पाताल निंदा रस ही को खानि
सेनापति देवी कर शोभा गनती को भूप
पन्ना मोती हीरा हेम सौदा हांस ही को जानि
होय पर देव पर बढै यश रटै नाउं
खगासन नगधर सीतानाथ कोलपानि ५

रहस्य की कुंजी अगले दोहे में है :—

या कवित्त अंतर वरण तै तुकंत द्वै छंडि
दास नाम कुल ग्राम कहि नाम भगति रस मंडि ६

इस निर्देश का पालन करने पर यह पदावली हाथ लगती है :—

भिखारीदास कायत्थ, वरन वही वार भाई चैनलाल को, सुत कृपालदास को,
नाती वीरभानु को, पन्नाती रामदास को, अरबर देश टेउंगा नगर ता थल।

इसके अनुसार भिखारीदास वर्ण से कायस्थ थे। इनके भाई का नाम चैन लाल, पिता का नाम कृपालदास, पितामह का वीरभानु, तथा प्रपितामह का रामदास था। यह अरबर देशांतर्गत टेउंगा के रहनेवाले थे। यह स्थान प्रतापगढ़ शहर से एक मील दूर है। सरोजकार ने प्रमाद से इसे बुंन्देलखंड के अंतर्गत समझ लिया है। यह प्रमाद दास के आश्रयदाता प्रतापगढ़ी हिन्दूपति और छत्रसाल के पौत्र पन्नानरेश प्रसिद्ध हिन्दूपति के नाम-साम्य के कारण हुआ है।

१. अमर तिलक—१६२६।६१ ए, बी १६४७।२६१ क। यह संस्कृत के अमरकोश का क्रम-बद्ध पद्यमय तिलक है। विनोद का कथित 'नाम प्रकाश' ग्रन्थ भी यही है। सरोज उल्लिखित 'बाग-बहार' ग्रन्थ की चर्चा किसी ने भी नहीं की है। विनोद (७१२) का अनुमान है कि यह अमरकोश के हिन्दी अनुवाद अमर तिलक का फारसी रूपांतर है।[१] पर पं० विश्ननाथ प्रसाद मिश्र के अनुसार यह सब असंगत है और दास ने बागबहार का कोई ग्रन्थ नहीं लिखा।[२]

(१) खोज रि० १६२६।६१ (२) भिखारीदास, भाग १, पृष्ठ ७

२. काव्य निर्णय—१९०३।६१, १९२०।१७ ए, बी, १९२३।५५ डी, ई, १९२६।६१ ई, एफ, जी, एच, आई, १९४७।२६१ ग, पं० १९२२।२२। यह इनका सर्वाधिक प्रसिद्ध ग्रन्थ है। इसमें काव्य के विविध अंगों का विवेचन हुआ हैं। इसकी रचना सं० १८०३ में हुई—

अट्ठारह सै तीन है सम्वत् आश्विन मास
ग्रंथ काव्य निर्णय रच्यो बिजै दसै दिन दास

इस ग्रन्थ के प्रमुख आधार चंद्रालोक और काव्य प्रकाश हैं--

बूझि सु चंद्रालोक अरु काव्यप्रकाश सु ग्रन्थ
समुझि समुझि भाषा कियो लै औरौ कवि पंथ

यह ग्रन्थ अरबर देशाधीश के अनुज हिन्दूपति सोमवंशी ठाकुर के लिए बना था—

जगत विदित उदयाद्रि सो अरबर देश अनूप
रवि लौं पृथ्वीपति उदित तहाँ सोम कुल भूप
सोदर ताके ज्ञाननिधि हिन्दूपति सुभ नाम
जिनकी सेवा से लह्यो दास सकल सुख धाम

इस ग्रन्थ का संक्षिप्त रूप तेरिज काव्य निर्णय नाम से खोज में अलग भी मिला है।[1]

३. छंदार्णव—१९०३।३१,१९२०।१७ सी, १९२३।५५ ए, बी, सी, १९२६।६१ सी, डी, १९४७।२६१ घ। इस पिंगल ग्रन्थ की रचना सं १७९९ में हुई—

सत्रह सै निन्नानबे मधु बदि नवै कविंद
दास बढ़यौ छंदारनौ सुमिरि सांवरे इंदु

इसी ग्रन्थ का 'छंद प्रकाश' नाम से एक परिशिष्ट काशीनरेश महाराज उदित नारायण सिंह (शासनकाल सं० १८५२-९२) के किसी दरबारी कवि ने प्रस्तुत किया था। यह सूचना स्वयं ग्रन्थ में दी गई है पर प्रमाद से इसे दास का एक स्वतंत्र ग्रन्थ मान लिया गया है।[2]

४. रस सारांश—१९०४।२१, १९२३।५५ एफ, जी, १९२६।६१ जे, के, १९४७।२६१ च, छ, ज। यह नायिका भेद का ग्रन्थ है। इसकी रचना सं० १७९१ में हुई--

सत्रह सै इक्यानबे नभ सुदि छठि बुधवार
अरबर देश प्रताप गढ़ भयो ग्रन्थ अवतार

इस ग्रन्थ की एक संक्षिप्त प्रति तेरिज रस सारांश नाम से भी मिली है।[3]

५. विष्णु पुराण भाषा—१९०९।२७ बी, १९२६।६१ क्यू, आर, १९४७।२६१ झ। यह ग्रन्थ दश हजार अनुष्टुप छंदों के बराबर है :—

यह सब नुष्टुप छंद में दस सहस्र परिमान
दास संस्कृत ते कियो भाषा परम ललाम

६. शतरंज शतक—१९०९।२७ ए। ग्रन्थ में केवल ५ पन्ने हैं। यह ग्रन्थ प्रतापगढ़ राज-

---

(१) खोज रि० १९२६।६१ ओ (२) खोज रि० १९०३।३२ (३) खोज रि० १९२६।६१ पी

पुस्तकालय से प्राप्त हुआ है। पुष्पिका में इसे भिखारीदास की कृति कहा गया है। छंदों में भी कवि की छाप दास है—

परम पुरुष के पांय परि पाय सुमति सानंद
दास रचै शतरंज की सतिका आनँद कंद

७. शृंगार निर्णय—१९०३।४६, १९२३।५५ एच, आई, १९२६।६१ एल, एम, एन। यह ग्रन्थ भी प्रतापगढ़ के राजा के छोटे भाई हिन्दूपति के लिए रचा गया—

श्री हिन्दूपति रीझि के समुझि ग्रंथ प्राचीन
दास कियो शृंगार को निरनय सुनौ प्रवीन

इसकी रचना सं० १८०७ वैशाख सुदी १३, गुरुवार को अरबर प्रदेश में हुई—

सम्बत् विक्रम भूप को अट्ठारह सै सात
माधव सुदि तेरसि गुरौ अरबर थर विख्यात

महेशदत्त ने भिखारीदास का जन्मकाल सं० १७४५ और मृत्युकाल सं० १८२५ दिया है।[1] शुक्ल जी इनका रचनाकाल सं० १७८५-१८०७ मानते हैं।[2] भिखारीदास ग्रन्थावली का प्रकाशन सभा की आकर-ग्रन्थमाला से दो भागों में हुआ है। इधर जवाहर लाल चतुर्वेदी ने भी काव्य-निर्णय का एक बृहद् सटीक संस्करण संपादित करके प्रकाशित कराया है। यह ग्रन्थ पहले भी छप चुका है।

३४४।२७७

(१३) दास २ बेनी माधवदास, पसका, जिले गोंडा, सं० १६५५ में उ०। यह महात्मा गोस्वामी तुलसीदास जी के शिष्य उन्हीं के साथ रहते रहे हैं और गोसाईं जी के जीवन-चरित्र की एक पुस्तक 'गोसाईं चरित्र' बनाई है। सम्बत् १६९९ में इनका देहांत हुआ।

सर्वेक्षण

गो० तुलसीदास का बेनीमाधवदास नाम का कोई ऐसा शिष्य नहीं हुआ, जिसने 'गोसाईं-चरित्र' नामक ग्रन्थ रचा हो। सरोजकार ने यह सब विवरण महेशदत्त शुक्ल कृत भाषाकाव्य संग्रह के आधार पर दिया है।[3] महेशदत्त ने भवानीदास की रचना को बेनीमाधवदास की रचना मान लिया है। भवानीदास ने गोसाईं चरित्र की रचना तुलसीदास की मृत्यु के १५० वर्ष बाद सं० १८३० वि० के लगभग सं० १८०८ और १८६० के बीच की, अतः बेनीमाधवदास का अस्तित्व सिद्ध नहीं होता। पूर्ण विवरण 'गोसाईं चरित्र' की भूमिका में मिलेगा। मैंने यह ग्रन्थ प्राप्त करके संपादित कर दिया है।

३४५।२८७

(१४) दान कवि। इनकी शृङ्गार रस की सरस कविता है।

---

(१) भाषा काव्य संग्रह, पृष्ठ १३२ (२) हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ २७७ (३) भाषा-काव्य संग्रह, पृष्ठ १३५

सर्वेक्षण

कवि के सम्बन्ध में कोई सूचना सुलभ नहीं ।

३४६।३०८

(१५) दामोदर दास, ब्रजवासी, सं० १६०० में उ० । इनके पद रागसागरोद्भव में हैं ।

सर्वेक्षण

सरोज में इनका एक पद उद्धृत है जिससे ज्ञात होता है कि यह हितहरिवंश के राधावल्लभी संप्रदाय के थे, क्योंकि इनके नाम के साथ हित जुड़ा हुआ है ।

दामोदर हित सुवेस, सोभित सखि सुख सुदेस,
नव निकुंज, भँवर गुंज, कोकिल कल गाजै

यह हित दामोदर दास वृन्दावन निवासी थे और लाल कृपाल स्वामी के शिष्य थे । लाल कृपाल स्वामी गो० हित हरिवंश के तृतीय पुत्र गोपीनाथ जी के शिष्य थे । दामोदर जी सं० १६८७-९२ के लगभग वर्तमान थे । सरोज प्रथम संस्करण में इनका समय सं० १६२२ दिया गया है, जो सप्तम संस्करण में १६०० हो गया है । दोनों संवत् अशुद्ध हैं । यह दामोदरदास, राधावल्लभ संप्रदाय के प्रसिद्ध कवि दामोदरदास उपनाम 'सेवक' जी से भिन्न हैं । सेवक जी गढ़ा (जिला जबलपुर) में सं० १५७७ में उत्पन्न हुए थे । यह हित हरिवंश जी के समकालीन थे और उनकी मृत्यु के एक ही वर्ष बाद सं० १६१० में दिवगंत हुए थे ।[1] खोज में इनके निम्नांकित ग्रन्थ मिले हैं—

१. गुरु प्रताप लीला—१९१२।४६ बी, १९४१।५०३ ख। इस ग्रन्थ में गुरु-माहात्म्य वर्णित है—

गुरु भक्तनि सौ इतनी आस
माँगत हित दामोदर दास ८०

२. जजमान कन्हाई जस—१९१२।४६ ए । इस ग्रन्थ में कृष्ण लीलाएँ हैं । इसमें कुल ४२ छंद हैं, जिनमें ३२ सवैये हैं । अंत में दो दोहे हैं । ग्रंथ में कवि की छाप है—

छांड़ि सबे हित दास दामोदर, सोई गह्यो जजमान कन्हाई

इस ग्रन्थ की रचना सं० १६९२ में कार्तिक बदी ७ को हुई—

संवत भुज[२] निधि[९] रस[६] ससी[१] कातिक सातैं आदि
बतिस सवैया अष्ठ सिद्धि जसु बरन्यो जु अनादि

३. नेम बत्तीसी—१९१२।४६ डी, १९२९।७५, १९४१।५०३ क । इस ग्रन्थ में ३२ दोहे हैं । इस ग्रन्थ से कवि के गुरु, लाल कृपाल और इनके निवास-स्थान वृन्दावन का पता चलता है—

श्री गुरु लाल कृपाल बल, ये मेरे निर्धार
श्री वृंदावन छाँड़ि के भटकौं नहि संसार १

---

(१) राधावल्लभ संप्रदाय—सिद्धांत और साहित्य, पृष्ठ ३४९

श्री गुरु लाल कृपा करी, दयो वृंदावन वास
अब हौं मन निश्चल करौं, तजौं अनत की आस २
कुंज कुंज निरखत फिरौं, जमुना जल में न्हाउं
श्री वृंदावन छांड़ि के, अनत न कतहूँ जाउं ३

ग्रन्थ की रचना सं० १६८७, अगहन सुदी ११ को हुई—

संबत सागर[७] सिद्धि[८] गनि रस[६] ससि[१] गनि रितु हेम
अगहन मास रु पच्छ सित एकादसि कृति नेम ३१

अंतिम दोहे में कवि का नाम भी आ गया है—

सरव पचीसो चंद रस नित प्रति पाठ कराउं
दामोदर हित रसिक जे तिनकी बलि बलि जाउँ ३२

संभवतः इसी ग्रंथ का उल्लेख निंब बत्तीसो[१] नाम से हुआ है।

४. पद, दामोदर स्वामी के पद—१६१२।४६ एफ, १६४१।१०२ क। श्री कृष्ण लीला सम्बन्धी पद्य ग्रन्थ बड़ा है। कुल १३६ पन्ने में पूर्ण हुआ है। पदों में हित दामोदर छाप है।

५. रहस विलास—१६१२।४६ एफ। राधाकृष्ण का विहार वर्णन। ग्रंथ में कुल २२ छंद हैं, जिनमें १५ कवित्त और ३ सवैये हैं। आदि में ३ दोहे हैं—

गनि पढ़िए गुन[३] दोहरा, तिथि[१५] गुन[३] केलि कवित्त
दामोदर हित उर बसौ लाल लाड़िली नित्त

६. राधा कृष्ण वर्णन—१६४१।१०२ख।

७. रास पंचाध्यायी—१६१२।४६ जी। यह ग्रंथ सवैयाबंध कहा गया है, पर है कवित्त बंध। इस ग्रंथ में भी गुरु का नाम आया है—

लाल कृपाल कृपा करो, भयो कछु बुद्धि प्रकास
दामोदर हित भक्ति रति बरन्यौ रास विलास ३०

ग्रंथ की रचना सं० १६६६ में हुई। इसमें कुल ३० कवित्त हैं :—

रवि[१२] रस[६] गुन[३] अरु अंक[९] मिलि ए गनि पढ़ो कवित्त
दामोदर हित के हियो चढ़े रहो सुख नित्त

८. रस लीला पावस वर्णन—१६१२।४६ आई। इस ग्रंथ में पावस काल की रस लीला वर्णित है। दो-दो चरणों के ११७ छंद हैं। ग्रंथ में कवि की छाप है—

दामोदर हित कै यह साधा
पुरवहु करुणा करि हरि राधा ११६

९. बसंत लीला—१६१२।४६ ई। यह ग्रन्थ चौपहीबंध है। इसमें दो-दो चरणों के कुल १०५ छंद हैं। यह चौपही वस्तुतः रोला छंद है।

हरि रस माते रसक मध्य तिन मैं दिन बासा
हित दामोदर दास की जु पुरवहु यहु आसा १०५

१०. स्वगुरु प्रताप—१६१२।४६ सी। गुरु लाल कृपाल की प्रशस्ति। ग्रंथ में कुल ४४ छंद है।

जय जय गुरु लाल कृपाल
पावन गुन भक्तनि प्रतिपाल

---

(१) खोज रि० १६४१।५०३ग

लाल कृपाल सदा सुख बरषें
लाल कृपाल सदा मन हरषें

ग्रंथांत में कवि ने अपना नाम भी दिया है—

दामोदर हित जस दिन गावै
संत जनन को माथो नावै ४३

११. हरि नाम महिमा—१९४१।१०२ ग।

३४७।२७५

(१६) दामोदर कवि २।

सर्वेक्षण

दामोदर कवि का एक शृङ्गारी सवैया सरोज में उद्धृत है। इससे यह कोई रीतिकालीन शृङ्गारी कवि प्रतीत होते हैं। पुराने साहित्य में दो दामोदर मिलते हैं। एक तो निर्गुनिएँ हैं जो दादू के शिष्य जगजीवनदास के चेले थे।[1] दूसरे दामोदर महाराष्ट्र हैं। यह ओरछा नरेश हमीर सिंह देव के गुरु थे। महाराज विक्रमाजीत ने ओरछा की गद्दी पर सम्वत् १८३३ से १८७४ तक राज्य किया। अपने जीवन काल ही में इन्होंने अपने पुत्र धर्मपाल को गद्दी दे दी थी, जो सम्वत् १८९१ में निःसन्तान मरा। महाराजा विक्रमाजीत ने पुनः राज्य की बागडोर सँभाली, पर वे भी इसी साल दिवंगत हो गये। तब इनके भाई तेज सिंह राजा हुए। इन्होंने सम्वत् १८९१ से १८९८ तक राज्य किया। तेजसिंह के पश्चात् इनका पुत्र सुजानसिंह राजा हुआ, किन्तु धर्मपाल की महिषी लँड़ई रानी ने आपत्ति की और गोद लेने का दावा किया। सम्वत् १९११ में अंग्रेजी सरकार ने रानी के दावे को स्वीकार किया और रानी ने हमीर सिंह को गोद लिया। सम्वत् १९२२ में हमीर सिंह को महाराजा की पदवी मिली। यह भी सम्वत् १९३१ में निःसन्तान मरे।[2] इन्हीं हमीर सिंह के गुरु दामोदर देव थे।

दामोदर देव दाक्षिणात्य मराठे ब्राह्मण थे। इनके पिता का नाम पद्मदेव था। यह सम्वत् १८८८-१९२३ के लगभग उपस्थित थे। महाराष्ट्र की नारियाँ केशों में पुष्प-प्रसाधन किया करती हैं, सरोज-उद्धृत छंद में ऐसी ही एक नारी का चित्र है, जो 'आछे से केस में फूल भरावै।' अतः सरोज के दामोदर यही दामोदर देव प्रतीत होते हैं। दामोदर देव के निम्नांकित पाँच ग्रन्थ खोज में मिले हैं—

१. रस सरोज—१९०६।२४ ए। यह रीति-ग्रन्थ है। सरोज में उद्धृत छंद इसी ग्रन्थ का प्रतीत होता है। इसकी रचना चैत्र शुक्ल पक्ष में रविवार के दिन सम्वत् १८८८ में चित्रकूट में प्रारम्भ हुई।

सम्बत वसु[8] वसु[8] वसु[8] सु विधु[1], मधु सु धवल हरि रोज
चित्रकूट यह आरम्भ्यो सुन्दर सरस सरोज

---

(१) विनोद कवि संख्या ३५७, ४० (२) बुन्देलखंड का संक्षिप्त इतिहास, अध्याय ३२, अनुच्छेद ९, १० तथा अध्याय ४०, अनुच्छेद २

प्रतीत होता है कि ग्रन्थ धीरे-धीरे करके बहुत दिनों में पूरा हुआ। लिखा गया है कि ओरछा नरेश हमीर सिंह की आज्ञा से ग्रन्थ लिखा गया। ऐसा लगता है कि ग्रन्थारम्भ सम्वत् १८८८ में हुआ, जबकि हमीर सिंह न तो राजा हुये थे और न गोद ही लिये गये थे। इसके प्रारम्भ काल के २३ वर्ष बाद १९११ में यह गोद लिये गये। सम्भवतः इनके गोद लिये जाने की संभावना देख विनम्रता वश इन्हें राजा कहा गया है, जैसे अनन्य ने सेनुहड़ा के जागीरदार पृथ्वीचन्द्र को नरेश कहा है। यह भी संभव है कि ग्रन्थ में बहुत से छंद बहुत बाद में जोड़े गये। इस ग्रन्थ से पता चलता है कि दामोदर हमीर सिंह के गुरु थे।

माँगत दामोदर यहै, है संतन को दास
जो तुम अपनो गुरु कियो, तो दीजे ब्रजवास ६४८

यह पुष्टि-सम्प्रदाय के अनुयायी थे। ग्रन्थ के प्रथम छंद से यह सूचना मिलती है—

पुष्ठि पंथ कुवलय बलय, विमल चन्द्रिका चारु मुख
धरि हृदय पाद रज तन सुमति, सुमति पाइ मैं हुव विदुष १

कवि शृङ्गारी होता हुआ भी भक्त है—

रस सरूप श्री कृष्ण पद पदमा धरे उरोज
वे निज उर धरि जथा मति, वरनौं सुरस सरोज २

ग्रन्थ की निम्न पुष्पिका महत्त्व पूर्ण है—

"इति श्रीमन्महाराजाधिराज श्री महाराजा श्रीमहेन्द्र महाराज हमीरसिंह बहादुर जू देव की आज्ञानुसार वेद मूर्ति भट्टाचार्य पंडित श्री दाव जू साहब दामोदर देवकृत रससरोज नाम काव्ये अष्टमं दलं।"

ग्रन्थ की प्रतिलिपि सम्बत् १९२३ की है, जब कि उक्त हमीर सिंह जी को राजा की पदवी मिले एक वर्ष हुआ था।

२. बलभद्र शतक—१९०६।२४ बी। इस ग्रंथ में बलराम सम्बन्धो कवित्त हैं। इसकी भी रचना हमीर सिंह की आज्ञा से हुई—

श्री गुरु गोपालै सुमिरि श्री बलभद्रै ध्याइ
श्री हमीर भूपत्ति के हुकुमै हेत मनाइ १
कियो सतक बलभद्र को गुरु दामोदर देव
नित प्रति याके पाठ ते बाढ़ै छेम अछेव २

३. उपदेशाष्टक—१९०६।२४ सी। इसमें ८ कवित्त हैं, जिनका अंतिम चरण यह है—

कीन्हें बहुतेरे सब साधन के ढेरे अरे
हरे कृष्ण हरे कृष्ण हरे कृष्ण कहु रे

४. वृन्दावनचन्द्र सिखनखध्यानमंजूषा—१९०६।२४ डी। यह ग्रन्थ कवित्तों में है। इसे भी नृप हमीर के लिये ही लिखा गया।

श्री हमीर नृप हेत, दामोदर गुरु प्रगट किय
मन चीते फल देत, श्री गुरु चरनन की कृपा ४०

कवि ने इस ग्रन्थ की प्रतिलिपि स्वयं ही सम्वत् १९२३ में राजा हमीर सिंह के पढ़ने के लिए

को तथा यह वल्लभाचार्य के अनुयायी थे। यह सब सूचना प्राप्त ग्रन्थ की पुष्पिका से मिलती है—

इति श्रीमद्वल्लभाधीशचरणशरण दासानुदास दामोदर भट्टाचार्यकृत श्री वृन्द्रावन चन्द्र सिखनख ध्यान मंजूषा ॥ वा श्री गोपजन वल्लभार्पणमस्तु ॥ सम्वत् १९२३ श्रावण शुक्ल ७ भृगौ ॥ मु० टीकमगढ़ लि० स्वहस्तेन ॥ श्री मन्महाराजाधिराज श्री महेन्द्र महाराजा हमीर सिंहबहादुर जू देव पठनार्थं ॥०॥

५. बलभद्र पचीसी १९०६।२४ ई०। इस ग्रन्थ में कुल ३४ छन्द हैं।

३४८।२७२

(१७) द्विजदेव, महाराजा मानसिंह शाकद्वीपी, अवध नरेश, सम्वत् १९३० में उ०। यह महाराजा संस्कृत, भाषा, फारसी, अंग्रेजी इत्यादि विद्याओं में महा निपुण थे। प्रथम सम्वत् १९०७ के करीब इनको भाषाकाव्य करने की बहुत रुचि थी। इसी कारण 'शृङ्गार लतिका' नामक एक ग्रन्थ बहुत सुन्दर टीका सहित बनाया। इनके यहाँ ठाकुर प्रसाद, जगन्नाथ, बलदेव सिंह इत्यादि महान् कवि थे। अन्त में इन दिनों अब कानून अंग्रेजी का शौक हुआ था। सम्वत् १९३० में देहान्त हुआ और देश के रईसों के भाग फूट गये।

सर्वेक्षण

शृङ्गारलतिका अनेक बार प्रकाशित हो चुकी है। इसमें रचनाकाल नहीं दिया गया है, न तो कोई परिचयात्मक छन्द ही है। इस ग्रन्थ में कुल २२८ कवित्त सवैये हैं। ग्रन्थ ३ खन्डों में विभक्त है। प्रथम खंड में बसंत वर्णन है, दूसरे में कृष्ण लीला सम्बन्धी शृङ्गारी छन्द है और तीसरे में नखशिख है। ग्रन्थ सटीक है। कवि ने स्वयं टीका लिखी है। टीका ब्रजभाषा गद्य में है और बहुत साफ है। द्विजदेव का एक और ग्रन्थ 'शृङ्गार बत्तीसी' है। यह भी शृङ्गार लतिका के समान नवल किशोर प्रेस, लखनऊ से प्रकाशित हो चुका है। इस ग्रन्थ के आदि में मंगलाचरण का छप्पय है, तदनन्तर आत्मपरिचय सम्बन्धी निम्नांकित दो दोहे हैं—

अवध ईस मंडनभुवन, दर्शन सिंह नरेश
जिनके यश सों श्वेत भो दिशि दिशि देश विदेश १
तिनको सुत अति अल्पमति मानसिंह द्विजदेव
किय शृङ्गार बत्तीसिका हरि लाला परमेव २

फिर बत्तीसी में शृङ्गारी कवित्त सवैये हैं, जिनमें अनेक में पावस का सरस वर्णन है। अन्त में दो फुटकर छन्द भी दे दिये गये हैं।

१८५७ ई० (सं० १९१४) की क्रांति में द्विजदेव ने अंग्रेजों की अच्छी सहायता की थी, जिसके लिए इन्हें दो लाख रुपये की जागीर मिली थी; पर विरोधियों के भड़काने से अंग्रेजी शासन की कोपदृष्टि इन पर पड़ी और इन्हें कारावास में डाल देने की योजना बनी। षड्यंत्र का

पता द्विजदेव जी को चल गया और वे वृन्दावन चले गये।[१] सम्वत् १२६३ फसली में ईस्ट इण्डिया कम्पनी के भय से द्विजदेव ने सावन-भादौं का महीना यहीं बिताया था और यहीं पर भरी बरसात में श्रृङ्गार बत्तीसी की रचना की थी। इसीलिए यह ग्रन्थ इतना पावसमय और सरस है। शरद्काल में यह काशी आये। यहाँ मणिकर्णिका घाट पर गंगा-स्नान किया। फिर अविमुक्त पंचदसी बनाकर वाराणसी की स्तुति की और परमेश्वर की कृपा से उन्हें अपना राज्य पुनः वापस मिला।[२] अविमुक्त पंचदसी में १५ छन्द, सम्भवतः कवित्त-सवैये ही हैं, पर यह ग्रन्थ आज तक देखा नहीं गया। द्विजदेव जी का जन्म अगहन सुदी ५, सं० १८७७ (१० दिसम्बर १८२०) और देहान्त सम्वत् १९२७ में कार्तिक वदी द्वितिया (१० अक्तूबर १८७० ई०) को हुआ।[३] यह स्वयं सुकवि थे और कवियों के समादर कर्ता थे। जैसा कि सरोज में लिखा गया है, ठाकुर प्रसाद, जगन्नाथ, बलदेव सिंह, राम नारायण आदि कवि इनके दरबार में थे।

३४९।२७३

(१८) द्विज कवि, पंडित मन्नालाल बनारसी, विद्यमान हैं। इनके कवित्त सुन्दरीतिलक में हैं।

सर्वेक्षण

द्विजकवि पंडित मन्नालाल बनारसी भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र के दरबारियों में थे। 'सुन्दरी-तिलक' में इनके भी सरस श्रृङ्गारी सवैये संकलित हैं। किसी द्विज का एक ग्रन्थ 'श्री राधा नखशिख' महाराज बनारस के पुस्तकालय में है।[४] यह मन्नालाल बनारसी की रचना नहीं है। क्योंकि इस ग्रन्थ का प्रतिलिपिकाल सम्वत् १८८५ विक्रमी है और उस समय तक तो द्विज मन्नालाल जी का सम्भवतः जन्म भी नहीं हुआ रहा होगा।

मन्नालाल जी ने सम्वत् १९२३ के लगभग एक संग्रह ग्रन्थ बनाया था जिसका नाम 'रघुनाथ शतक' है। इसमें २६ कवियों के रामचन्द्र विषयक उत्तमोत्तम छंदों का संकलन हुआ है। इन्होंने अपने वाराणसीय संस्कृत यन्त्रालय में इस ग्रन्थ को समाधान कविकृत 'लक्ष्मण शतक' के साथ एक ही जिल्द में छपाया था।

विनोद में (२२५९) इनके एक अन्य संग्रह ग्रन्थ 'प्रेम तरंग संग्रह' का उल्लेख हुआ है। इसमें भी दूसरे कवियों की श्रृङ्गारी रचनाएँ संकलित हैं। ग्रियर्सन में (५८३) यद्यपि इनका अलग

---

(१) हिन्दी साहित्य का वृहत् इतिहास, भाग ६, पृष्ठ ५३९-४० (२) श्रृङ्गार बत्तीसी, तृतीय संस्करण (१८८९ ई०) की द्विजदेव के भतीजे भुवनेश जी लिखित भूमिका के आधार पर। (३) हिन्दी साहित्य का वृहत् इतिहास, भाग ६, पृष्ठ ५३९-५४० (४) खोज रि० १९०३।२७

वर्णन है, फिर भी भ्रान्त कल्पना की गई है कि यह संभवतः अयोध्या नरेश मान सिंह ही हैं, क्योंकि दोनों का कवि नाम 'द्विज' समझ लिया गया है। मन्नालाल का नाम द्विज था और मान सिंह का द्विज देव। इस सूक्ष्म भेद पर ग्रियर्सन का ध्यान नहीं गया।

३५०।२६६

(१६) द्विजनन्द कवि।

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध में कोई सूचना सुलभ नहीं। इनका एक घोर शृङ्गारी कवित्त सरोज में उद्धृत है, जिससे यह रीतिकालीन कोई कविन्द प्रतीत होते हैं।

३५१।३०७

(२०) द्विज चन्द कवि, सम्वत् १७५५ में उ०।

सर्वेक्षण

सरोज में द्विज चन्द का एक कवित्त उद्धृत है, जिसमें किसी खरग मनि के खड्ग गहने को अयुक्तिपूर्ण प्रशंसा है।

> को पि कर बर गहो खर्गुसे खरगमनि
> भूतल खसाई मीर केते सरदार है।
> कहै द्विज चन्द रुन्ड मुन्डन पटित महि
> झुन्डन चमुन्डा लेत आमि व अहार है।

जब तक खरगमनि की पहचान नहीं हो जाती, इनके समय की जांच सम्भव नहीं और तब तक १७५५ को उपस्थिति-काल मानना ही समीचीन है।

३५२।२७६

(२१) दिलदार कवि, सम्वत् १६५० में उ०। हजारा में इनका काव्य है।

सर्वेक्षण

कालिदास के हजारे में इनकी कविता थी। अतः यह सम्बत् १८७५ के पूर्व उपस्थित थे, इतना ही निश्चयपूर्वक कहा जा सकता है। सरोज में इनका एक कवित्त उद्धृत है, जो परम प्रौढ़ है।

३५३।२९५

(२२) द्विजराम कवि।

सर्वेक्षण

कवि के सम्बन्ध में कोई सूचना सुलभ नहीं।

३५४।२६०

(२३) दिला राम कवि।

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध में कोई सूचना सुलभ नहीं।

३५५।२८८

(२४) दिनेश कवि। इनका नखशिख बहुत ही विचित्र है।

सर्वेक्षण

दिनेश कवि टिकारी, गया के रहने वाले थे। इनका 'रस रहस्य' ग्रन्थ खोज में मिला है।[1] यह नायिका भेद और रस का ग्रन्थ है। इसमें टिकारी राज्य, राजवंश, फल्गु नदी, मगध गौरव आदि पर भी सुन्दर रचना है। ग्रन्थ की रचना सम्वत् १८८३ बसंत पचमी को हुई।

सम्वत ठारह से त्रिजुत असी माघ सित चारु
ऋतुपति पंचमि को भयो रस रहस्य अवतारु

मंगलाचरण के गणेश वन्दनावाले कवित्त का अंतिम चरण है।

चारि छौ अठारह दिनेश सद्ग्रन्थ आदि
जाको नाम पीठ पटिया पै पाइयत है।

संभवतः इसी 'चारि छौ अठारह' का शीघ्रता में ठीक अर्थ न कर सकने के कारण इसे रचना काल समझकर ग्रियर्सन में (६३३) रस-रहस्य का रचनाकाल सन् १८०७ ई० अर्थात् सम्बत् १८६४ दिया गया है। यह वस्तुतः सदग्रन्थ हैं, जैसा कि कवि ने स्वयं कहा है। इनसे चार बेद, छह शास्त्र और अठारह पुराण अभीष्ट हैं। दिनेश जी का एक अन्य ग्रन्थ 'काव्य कदंब' है।[2] इसकी रचना सम्बत् १८९१ में हुई।

बरस चन्द[1] अरु खंड[९] बसु[८] ससि[1] माधव सित पच्छ
सुक्ल पंचमी को भयो अच्छ स्वच्छ प्रत्यच्छ

ग्रन्थ किसी मगधेश की आज्ञा से लिखा गया।

श्री नृप मनि मगधेश की उत्तम आज्ञा पाइ
कियो ग्रन्थ संक्षेप जहँ काव्य पन्थ दरसाइ

इसमें छंद, रस, नायिका भेद आदि सभी हैं।

---

(१) बिहार रिपोर्ट, भाग २, ग्रन्थ संख्या ४४ (२) माधुरी, दिसम्बर १९२८, पृष्ठ ७५१, ५२, 'कवि दिनेश' शीर्षक लेख, लेखक शिवनन्दन सहाय

छंद सरूप प्रसिद्ध कछु नवरस रूप ललाम
रुहित नाइका भेद सो रच्यो ग्रन्थ अभिराम

सरोज में नखशिख सम्बन्धी उद्धृत सवैया दिग्विजय भूषण से लिया गया है। दिग्वियज भूषण में दिनेश के नखशिख सम्बन्धी बहुत से कवित्त-सवैये हैं। इसी के आधार पर शिवसिंह ने इनके नखशिख को "बहुत ही विचित्र" कहा है। दिग्विजय भूषण वाले दिनेश टिकारी वाले ही दिनेश हैं, जो अपने समय के प्रख्यात कवि प्रतीत होते हैं। इसीसे ब्रज जी ने दिग्विजय भूषण में इनके पर्याप्त छन्द दिये हैं।

दिनेश के पुत्र वैजनाथ भी सुकवि थे। बैजनाथ जौनपूर जिले के अन्तर्गत बादशाहपुर के निवासी सीताराम जी के आश्रित थे। इनके दो ग्रन्थ हैं—(१) आलम्बन विभाव, (२) बाम-विलास। इनमें से बाम-विलास की रचना सम्वत् १९१९ वि० में हुई थी। कवि की अनुमति से सम्वत् १९२८ में इसकी प्रतिलिपि की गई थी।[१] अतः उस समय तक यह जीवित रहे होंगे। ग्रियंसन (६३३) के अनुसार दिनेश का 'रस रहस्य' रामदीन सिंह के खड्गविलास प्रेस, बांकीपुर, पटना द्वारा प्रकाशित भी हो चुका है।

विनोद के अनुसार (११७३) एक दिनेश के छन्द दलपति राय वंशीधर कृत 'अलंकार-रत्नाकर' (रचनाकाल सम्वत् १७९८) में भी है। निश्चय ही यह दिनेश टिकारी वाले दिनेश से भिन्न हैं। बिहार ही में एक और दिनेश हुये हैं, जो डुमरांव के रहने वाले थे, वहाँ के राजा अमर सिंह के भाई प्रबल सिंह के आश्रय में रहते थे। इन्होंने सम्वत् १७२४ में 'रसिक संजीवनी' नामक काव्य-ग्रन्थ बनाया था।

द्वितिया शुक्ल असाढ़ की, पुष्प नखत गुरुवार
सत्रह सै चौबीस में करी प्रगट करतार

यह दिनेश ब्राह्मण थे—

पूजै पांय पखारि जुग ज्ञानि मित्र द्विजराज
गज तुरंग आगे किये दिये सकल सुख साज

यह ग्रन्थ १८९३ ई० में रत्नाकर जी द्वारा सम्पादित होकर प्रकाशित हुआ था। सम्भवतः इन्हीं दिनेश की रचना 'अलंकार रत्नाकर' में है।[२]

ग्रियंसन के अनुसार (६३३) रस-रहस्य नखशिख का ग्रन्थ है। विनोद में (११७३) रस रहस्य और नखशिख को दो ग्रन्थ माना गया है।

३५६।२९७

(२५) दीन दयाल गिरि बनारसी, सम्वत् १९१२ में उ०। यह कवि संस्कृत के महान् पंडित थे। इन्होंने भाषा साहित्य में 'अन्योक्ति कलपद्रुम' नामक ग्रंथ बहुत ही सुन्दर बनाया है। 'अनुराग बाग' और 'बाग बहार' ये दो ग्रन्थ भी इनके बहुत विचित्र हैं।

---

(१) बिहार रि० भाग २, ग्रन्थ ९, १०१ (१) माधुरी, दिसम्बर १९२८, पृष्ठ ७५१

सर्वेक्षण

बाबू श्यामसुन्दर दास जी ने 'दीनदयालगिरि ग्रन्थावली' सम्पादित करके सन् १६१६ ई० में सभा से प्रकाशित कराई थी। प्रारम्भ में एक लघु भूमिका भी है। बाबा जी का जन्म शुक्रवार, बसन्त पंचमी, सम्वत् १८५६ वि० को काशी के गायघाट मुहल्ले में एक पाठक ब्राह्मण कुल में हुआ। जब यह ५-६ वष के ही थे, तभी इनके माता-पिता दिवंगत हो गये और मरने के पहले इन्हें महन्त कुशागिरि को सौंप गये। इन्हीं महन्त जी ने इनका लालन-पालन किया तथा इन्हें शिक्षा-दीक्षा दी। जब महन्त जी के मरने पर उनकी जायदाद नीलाम हो गई, तब ये देहली विनायक के पास मौठली गाँव वाले मठ में रहने लगे। इनकी मृत्यु सम्वत् १६२२ में हुई। भारतेन्दु बाबू के पिता बाबू गोपाल दास उपनाम गिरिधरदास से इनका बड़ा स्नेह था। लाला भगवानदीन ने भी 'दीनदयालगिरि ग्रन्थावली' सम्पादित एवं प्रकाशित की थी। सभावाली ग्रन्थावली में निम्नलिखित ग्रन्थ हैं—

(१) अनुराग बाग—इस ग्रन्थ में ३६६ कवित्त-सवैये आदि छन्द हैं। यह बाबा जी का श्रेष्ठतम ग्रन्थ है। इसकी रचना चैत सुदी नवमी, मंगलवार, सम्वत् १८८८ को हुई—

> **बसु[८] बसु[८] बसु[८] ससि[१] साल में, रितु बसंत मधुमास**
> **राम जनम तिथि भौम दिन भयो सुभाग विकास**

(२) दृष्टान्त तरंगिणी—इसमें दृष्टान्त देने वाले २०६ दोहे हैं। इसकी रचना सम्बत् १८७६ में हुई थी—

> **निधि[९] मुनि[७] बसु[८] ससि[१] साल में आसुन मास प्रकास**
> **प्रतिपग मंगल दिवस को, कीन्यौ ग्रन्थ विकास २०६**

(३) अन्योक्तिमाला—इसमें कुण्डलिया छन्दों में एक सौ दस अन्योक्तियाँ हैं।

(४) अन्योक्ति कल्पद्रुम—इस ग्रन्थ में भी अन्योक्तियाँ हैं जो अधिकतर कुण्डलिया छन्दों में हैं। अन्योक्तिमाला की अधिकांश रचनाएँ इसमें अन्तर्भुक्त हैं। इसकी रचना सम्बत् १६१२ में हुई। यही समय सरोज में दिया गया है।

> **कर[२] छिति[१] निधि[९] ससि[१] साल में माघ मास सित पच्छ**
> **तिथि बसंत जुत पंचमी रवि बासर सुभ स्वच्छ**
> **सोभित तिहि औसर विषै, बसि कासी सुख धाम**
> **बिरच्यो दीनदयाल गिरि कल्पद्रुम अभिराम**

यह इनका सर्वाधिक प्रसिद्ध ग्रन्थ हैं।

(५) वैराग्य-दिनेश—कवित्त-सवैयों में रचित इस ग्रन्थ का रचनाकाल सम्बत् १६०६ है—

> **रितु[६] नभ[०] निधि[९] ससि[१] साल में माधव कदम रसाल**
> **नर वैराग्य दिनेश यह उदै भयो तेहि काल**

सरोज में उल्लिखित ग्रन्थ 'बागबहार' सम्भवतः अनुराग बाग ही है। बाबा जी का 'बागबहार'

नाम का कोई ग्रन्थ नहीं मिलता। खोज में इनके निम्नलिखित लघु ग्रन्थ मिले हैं, जो सभी वैराग्य दिनेश के अंश हैं, कोई स्वतंत्र ग्रंथ नहीं—

१. अन्तर्लापिका—१९०४।९६
२. काशी पंचरत्न—१९०४।९१
३. कुण्डलिया—१९०४।९२
४. विश्वनाथ नवरत्न—१९२६।४४
५. चकोर पंचक—१९०४।७१
६. दीपक पंचक—१९०४।९२

३५७।२७८

(२६) दीनानाथ कवि, बुन्देलखंडी, सं० १९११ में उ०। इनके कवित्त अच्छे हैं।

सर्वेक्षण

विनोद में (२०४४) सं० १९११ को कविताकाल माना गया है और खोज के आधार पर इनके एक ग्रंथ 'भक्ति मंजरी' का उल्लेख हुआ है।[१] सरोज में इनका एक कवित्त उद्धृत है जिसमें दीनानाथ शब्द आया है अवश्य, पर वह स्पष्ट ही ब्रह्मवाचक है।

दीनबन्धु दीनानाथ एते गुन लिए फिरौं
करम न थारी देत ताको मैं कहा करौं

प्रच्छन्न रूप से इसमें कवि छाप भी हो सकती है, पर बात संदिग्ध ही है। इस खोज में दो दीनानाथ और मिले हैं।

१. दीनानाथ—बोड़ा पुष्करणी ब्राह्मण, लक्ष्मीनाथ के पिता तथा बालकृष्ण के पुत्र। सं० १८८३ के पूर्व वर्तमान।[२]

२. दीनानाथ—कान्यकुब्ज ब्राह्मण, ब्रह्मोत्तर खंड भाषा[३] के रचयिता।

३५८।२८३

(२७) दुर्गा कवि, सं० १८६० में उ०।

सर्वेक्षण

खोज में एक दुर्गा प्रसाद मिले हैं।[४] यह सं० १८५३ के आसपास उपस्थित थे और पंडित राजाराम के आश्रित थे। इन्होंने अपने ग्रंथ में रीवां के महाराज अजीत सिंह के सरदारों और पेशवा के सरदार जसवंत सिंह के साथ रीवां से चार मील दूर चारहट के मैदान में होनेवाले सं० १८५३ के युद्ध का वर्णन अजीत फते ग्रन्थ उपनाम नायक रासो में किया है। इस युद्ध में बघेलों की जीत हुई

---

(१) खोज रि० १९०९।७५ (२) खोज रि० १९०२।२१ (३) खोज रि० १९२६।१०७ (४) खोज रि० १९००।४१२.

थी। राजाराम कौन थे, इसकी कोई सूचना नहीं मिलती। कवि ने अपने सम्बन्ध में भी कुछ नहीं लिखा है। प्रतीत होता है कि कवि बुन्देलखण्डी था और उक्त युद्ध के समय उपस्थित था।

सरोज के दुर्गा और यह दुर्गा, समय की दृष्टि से एक ही प्रतीत होते हैं। सरोज में इस कवि का दुर्गास्तुति सम्बन्धी वीर रस का एक कवित्त उद्धृत है। अतः सरोज का कवि भी वीर-रस का कवि प्रतीत होता है। यह तथ्य दोनों कवियों की अभिन्नता को और भी असंदिग्ध बना देता है।

उक्त रीवां नरेश अजीत सिंह के पुत्र महाराजा जयसिंह (शासनकाल सं० १८६६-९२) के लिए 'द्वैताद्वैतवाद' नामक दर्शन ग्रंथ की रचना करनेवाले दुर्गेश कवि भी सम्भवतः यही हैं और दुर्गेश इनकी छाप है।[१]

नृप बघेल अवधूत सुत श्री अजीत महराज
ता सुत जै सिंघ देव नृप निखिल नृपति सिरताज २
कछुक विशिष्टाद्वैत कछु द्वैताद्वैत विधान
द्वै मतवाद विचार वर लिख्यो शास्त्र अनुमान ३
छंदवद्ध के हेतु पुनि दीन्हेउ नृपति निदेस
द्वै मतवाद सो ग्रंथ यह रचेहु सुकवि दुरगेस ४

प्राप्त प्रति का लिपिकाल सं० १८८९ है। यह रचनाकाल भी हो सकता है।

३५९।३०१

(२८) दूलह त्रिवेदी, बनपुरावाले कविंद जी के पुत्र, सं० १८०३ में उ०। इनका बनाया हुआ 'कवि कुलकंठाभरण' नामक ग्रंथ भाषा साहित्य में बहुत प्रामाणिक है।

सर्वेक्षण

दूलह हिन्दी के प्रसिद्ध कवि कालिदास के पौत्र और उदयनाथ 'कविंद' के पुत्र थे। कविंद ने सं० १८०४ में 'रस चन्द्रोदय' नामक ग्रन्थ की रचना अपने पुत्र दूलह के पढ़ने के लिए की।[२] इस आधार पर विनोद में (७३७) दूलह का जन्मकाल सं० १७७७ के आसपास अनुमित है। पर अन्य प्रमाण इस मत के प्रतिकूल हैं। इस स्थिति में या तो रसचंद्रोदय का रचनाकाल अशुद्ध है अथवा कविंद ने अपने अत्यंत प्रौढ़ पुत्र के अनुरोध से यह ग्रन्थ लिखा, उसकी काव्य शिक्षा के लिए नहीं।

कवि कुलकंठाभरण की कुल ९ प्रतियाँ खोज में मिली हैं।[३] किसी में भी रचनाकाल नहीं दिया गया है। पर एक रिपोर्ट में न जाने किस आधार पर इसका रचनाकाल सं० १८०७ दिया गया है।[४] श्री शुकदेवबिहारी मिश्र ने इसका एक सुसंपादित और सटीक संस्करण सं० १९९२ में गंगा

---

(१) खोज रि० १९१७।५३ (२) देखिए, यही ग्रन्थ कवि संख्या ७४ (३) खोज रि० १९०३।४३, १९०६।१६३, १९०९।७७, १९२०।४५ ए बी, १९२३।१०७ ए, बी, सी, डी। (४) खोज रि० १९२०।४५ बी।

पुस्तक माला, लखनऊ से प्रकाशित कराया था। इस प्रकाशित प्रति में भी रचनाकालसूचक छन्द नहीं है। दूलह का एक ही ग्रंथ कविकुलकंठाभरण प्रसिद्ध है। इसमें कुल ८१ छन्द हैं। प्रारम्भ में ७ छन्द भूमिका स्वरूप हैं, तदनंतर ७४ कवित्त सवैयों में अलङ्कार कथन है। एक ही छन्द में लक्षण और उदाहरण दोनों दिए गए हैं। अतः भाषाभूषण के समान यह ग्रन्थ भी अलंकार के विद्यार्थियों के ही काम का है।

'दूलह विनोद' नामक एक ग्रन्थ का एक पन्ना खोज में मिला है।[1] रिपोर्ट में इस ग्रन्थ के ये तीन छन्द उद्धृत हैं :—

अलख अमूरति अगम गति, कहत न जीभ समाइ
अद्भुत अवगति जाहि की, सो क्यों बरनी जाहि १
आदि जन्म सब एक हैं, अरु पुनि अंतहु एक
बौरें ते जग कहतु हैं, हिन्दू तुरुक विवेक ६
मोहन रूप अनूप सी मूरति, भूप बली, विधि रूप सुधारो
तेग बली अरु त्याग बली, अरु भाग्य बली, सिरताज सँवारो
साहि सुजान, विहान को भान, जहान को जान, औ नैननि तारो
साहिब आलम साहिनसाह महम्मद साहि सुजा जग प्यारो १

पहला छन्द मंगलाचरण है, जिसमें निर्गुण ब्रह्म का गुणानुवाद है। दूसरे में हिन्दू-मुसलमान की अभिन्नता का कथन है। तीसरे में कवि ने अपने आश्रयदाता महम्मद साहि की प्रशस्ति की है। यह महम्मद साहि सम्भवतः प्रसिद्ध मुगल बादशाह महम्मद शाह रँगीले हैं, जिनका शासनकाल सं० १७७६-१८०५ है और जिनके दरबार में प्रसिद्ध कवि घनानंद और उनकी प्रिया सुजान थी। यही समय दूलह का भी है। इससे प्रतीत होता है कि 'दूलह विनोद' के रचयिता दूलह, प्रसिद्ध दूलह से अभिन्न हैं।

बूंदी नरेश महराव बुद्ध सिंह ने औरंगजेब की मृत्यु (सं० १७६४) के अनंतर उत्तराधिकार के लिए होनेवाले शाहजहाँ के युद्ध में मुअज्जम (बहादुर शाह) की मदद की थी, जिसमें बहादुर शाह विजयी हुआ था। इस युद्ध का वर्णन दूलह ने निम्नांकित कवित्त में किया है :—

युद्ध मांहि जाजव के बुद्ध ह्वै सक्रुद्ध उद्ध
आजम के महाबीर काटि डारे ऊजा से
कहै कवि दूलह समुद्र बढ़े सोणित के
जुग्गिन परेत फिरे जंबुक अजूजा से
एक लीन्हें सीस खाय बेस इस एकन को
एकन की उपमा निहारी मनु ऊजा से
अधफटे फैलि फैलि कर में विराजैं मानों
माथे मुगलन के तरासे तरबूजा से

इस छन्द से सिद्ध है कि दूलह का सम्बन्ध राव बुद्ध सिंह से भी था।[2] इस कवित्त में सं० १७६४ के युद्ध का वर्णन है, अतः सं० १७७७ दूलह का जन्म काल नहीं हो सकता।

(१) राजस्थान रि०, भाग २, पृष्ठ २३ (२) माधुरी, वर्ष ७, खण्ड २, अंक १, पृष्ठ १३२

३६०।३०२

(२६) देव कवि प्राचीन, देवदत्त ब्राह्मण, समनि गांव, ज़िले मैनपुरी के निवासी, सं० १६६१ में उ०। यह महाराज अद्वितीय कवि अपने समय के भाम, मम्मट के समान भाषा-काव्य के आचार्य हो गये हैं। शब्दों में ऐसी समाई कहाँ कि उनमें इनकी प्रशंसा की जाय। इनके बनाए ग्रन्थों की संख्या आज तक ठीक ७२ हमको मालूम हुई है। इनमें केवल ११ ग्रंथों के नाम जो हमको मालूम हुए हैं, लिखे जाते हैं, जिनमें से कुछ को अक्सर हमने भी देखा है—(१) प्रेम तरंग, (२) भाव विलास (३) रस विलास, (४) रसानंद लहरी, (५) सुजान विनोद, (६) काव्य रसायन पिंगल, (७) अष्टयाम, (८) देवमायाप्रपंच नाटक, (९) प्रेम दीपिका, (१०) सुमिल विनोद, (११) राधिका विलास।

सर्वेक्षण

सरोज में दिया हुआ न तो देव का सं० १६६१ ठीक है, न इनके गांव का नाम समनि गांव है। भाम से तात्पर्य आचार्य भामह से है। महाकवि देव ने १६ वर्ष की वय में सं० १७४६ में भाव-विलास की रचना की :—

> सुभ सत्रह सै छियालिस चढ़त सोरही वर्ष
> कढ़ी देव मुख देवता भाव बिलास सहर्ष—भाव विलास, अंत में

अतः इनका जन्मकाल सं० १७३० है। इनका जन्म इटावा में द्योसरिहा कान्यकुब्ज ब्राह्मण कुल में हुआ था—द्योसरिहा कवि देव को नगर इटावो वास। इनके पिता का नाम बिहारीलाल था। २९ वर्ष की वय में यह इटावा छोड़कर कुसमरा, जिला मैनपुरी में आ बसे। यहाँ इनके वंशज अभी तक हैं। इनकी मृत्यु अनुमानतः सं० १८२५ में हुई। मया शंकर जी याज्ञिक ने इनको सं० १८२२ तक निश्चित रूप से जीवित सिद्ध किया है। उन्होंने देव के सूरजमल और जवाहर सिंह, भरतपुर नरेश, की प्रशस्ति सम्बन्धी कई छन्द भी उद्धृत किए हैं। उनका अनुमान है कि सुजान विनोद में सुजान से अभिप्राय सूरजमल उपनाम सुजान से ही है।[१] वस्तुतः दिल्ली के रईस पतीराम के पुत्र सुजानमणि के लिए सुजान विलास की रचना हुई थी।[२] यह अपने प्रत्येक कवित्त और सवैया में देव या देव जू छाप रखते थे। इनके निम्नलिखित ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं—

१. भाव विलास,
२. अष्टयाम भारत
३. भवानी विलास
} भारत जीवन प्रेस, काशी

(१) माधुरी, वर्ष २, खंड २, अंक २, फाल्गुन ३०० तुलसी सम्वत्, 'महाकवि देव और भरतपुर राज्य' शीर्षक लेख। (२) हिन्दी साहित्य का बृहद् इतिहास, भाग ६, पृष्ठ ३३०

४. सुजान विनोद
५. राग रत्नाकर } देव ग्रंथावली, प्रथम भाग, ना० प्र० सभा, काशी
६. प्रेम चन्द्रिका

७. सुख सागर तरंग—लखनऊ

८. शब्दरसायन या काव्यरसायन—हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग

९. आत्म दर्शन पचीसी
१०. तत्व दर्शन पचीसी } देव शतक नाम से जयपुर से प्रकाशित
११. प्रेम पचीसी
१२. जगद्दर्शन पचीसी

संस्कृत में 'शृङ्गार विलासिनी' नामक नायिका भेद का ग्रन्थ महाकवि देव के नाम से जयपुर के बालचन्द्र यंत्रालय से प्रकाशित हुआ है ; पर विद्वान इसे किसी अन्य देव की रचना मानते हैं। देव के अप्रकाशित ग्रन्थ ये हैं—

(१) प्रेम तरंग, (२) कुशल विलास, (३) देव चरित्र, (४) रस विलास, (५) जाति विलास, (६) वृक्ष विलास, (७) पावस विलास, (८) रसानन्द लहरी, (९) प्रेम दीपिका, (१०) सुमिल विनोद, (११) राधिका विलास, (१२) नखशिख प्रेम दर्शन, (१३) नीति शतक, (१४) कोई वैद्यकग्रन्थ। इनमें से रस विनोद का रचनाकाल सं० १७८३ है :—

संवत सत्रह सै बरस और तिरासी जानि
रस विलास दसमी विजय पूरन सकल कलानि

—हिन्दी काव्यशास्त्र का इतिहास, पृष्ठ ९६

देवमाया प्रपंच नाटक भी इन्हीं देव की कृति समझा जाता है। यह भी किसी अन्य देव की कृति है।

भ्रमतु फिर्यो हौं आज लौं, जग मृग तृष्णा प्यास
श्री धन सोभा सिंधु की लहर पियाई व्यास
जय जय जय राधेरमन, जय जय श्री जदुराइ
हृदे बसौ कवि देव के, सत संगति के पाइ

पहले दोहे में आया हुआ व्यास संदेह बढ़ाने के लिये पर्याप्त है। हिन्दी काव्यजगत् में देव का बड़ा नाम है। डा० नगेन्द्र ने 'देव की कविता' नाम से इन पर सुन्दर आलोचना भी प्रस्तुत कर दी है। परन्तु जब तक इनकी समस्त ग्रंथावली पूर्ण छानबीन के साथ प्रकाशित नहीं कर दी जाती, तब तक यह सब आलोचना पानी पर बने बेलबूटे के सदृश है। सरोज में देव के १२ छन्द उद्धृत हैं। इनमें से छठाँ छन्द द्विजदेव का और दसवाँ छन्द रसखान का है। यह कवि ३४१ संख्यक दत्त प्राचीन से अभिन्न है।

३६१।३००

(३०) देव २, काष्ठजिह्वा स्वामी, काशीस्थ। यह महाराज पंडितराज षट्शास्त्र के वक्ता थे। इन्होंने प्रथम संस्कृत काशी जी में पढ़ी। दैवयोग से एक बार अपने गुरु से वाद कर बैठे। पीछे पछताय काष्ठ की जीभ मुँह में डाल बोलना बंद कर दिया। पाटी में लिख के बातचीत

करते थे। उन्हीं दिनों श्रीमन्महाराज ईश्वरी नारायण सिंह, काशी नरेश ने इनसे उपदेश ले, रामनगर में टिकाया। तब इन महाराज ने भाषा में विनयामृत इत्यादि नाना ग्रंथ बनाए। इन्हीं के पद आज तक काशी नरेश की सभा में गाए जाते हैं।

सर्वेक्षण

जैसा कि सरोज में लिखा है, इन्होंने गुरु से विवाद करने के प्रायश्चित स्वरूप अपनी जिह्वा पर काठ की खोल चढ़वा ली थी और काष्ठजिह्वा स्वामी कहलाने लगे थे। कविता में इनकी छाप देव, देव कवि और देव स्वामी है। यह काशी नरेश महाराज ईश्वरी नारायण सिंह (शासनकाल सं० १८९२-१९४६) के गुरु थे। उक्त महाराज का समय ही इनका भी समय है। सरोज की भूतकालिक क्रियाओं से ज्ञात होता है कि यह सरोज के प्रणयन के पूर्व ही दिवंगत हो गए थे। इनके लिखे निम्नलिखित चार ग्रन्थ खोज में मिले हैं।

१. जानकी—विंदु १९२६।९७

२. पदावली—१९०१।१४। इस ग्रन्थ में पदों में रामायण की कथा है। इसकी रचना सं० १८९७ की कृष्णाष्टमी को हुई :—

> हित मीत बनारस भूपति के युवराज महामतिमान धनी
> श्री राम प्रसन्न प्रसन्न रहे यह राम सभा एहि हेत बनी
> मुनि[७] अंक[९] अठारह[१८] संबत् में तिथि मोहन जन्म अनंद सनी
> अब कृष्ण सुधा छबि दा रसु में जिहि में बरनी एक बात छनी

३. रामलगन—१९०६।१७९

४. रामायण परिचर्या—१९०४।९९

विनोद में (१७९०) विनयामृत और वैराग्य प्रदीप नामक इनके दो और भी ग्रंथों का नाम दिया गया है। डा० भगवती प्रसाद सिंह ने इनके निम्नांकित १५ ग्रंथों का उल्लेख किया है[१]—(१) रामायण परिचर्या, (२) विनयामृत, (३) पदावली, (४) राम लगन, (५) वैराग्य प्रदीप, (६) अयोध्या विंदु, (७) अश्विनी कुमार विंदु, (८) गया बिंदु, (९) जानकी विंदु, (१०) पंचक्रोश महिमा, (११) मथुरा विंदु, (१२) राम रंग, (१३) श्याम रंग, (१४) श्याम सुधा, (१५) उदासी संत स्तोत्र। काशीराज न्यास से इनके ग्रंथ अब प्रकाशित हो रहे हैं।

३६२।३०५

(३१) देवदत्त कवि, सं० १७०५ में उ०। इनका ललित काव्य है।

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध में डा० नगेन्द्र की दो धारणाएँ हैं :—

एक तो यह कि यह छन्द (इस कवि के नाम पर सरोज में उद्धृत एकमात्र छन्द) देव के ही किसी प्रारम्भिक अप्राप्य ग्रन्थ में से ही न हो। दूसरी यह कि रचयिता कोई दूसरा देवदत्त कवि था जो हमारे आलोच्य से अवस्था में लगभग २५ वर्ष बड़ा था, वह भी रीतिकार कवि था और उसने भी नायिका भेद पर कोई ग्रंथ लिखा था। प्रस्तुत छन्द उसी में कलहांतरिता के उदाहरण रूप दिया गया होगा। कविता में यह अपना उपनाम न लिख कर पूरा नाम देवदत्त ही लिखता था,

---

(१) राम भक्ति में रसिक सम्प्रदाय, पृष्ठ ४४१

जब कि देव ने एक भी छन्द में देव या देव जू छोड़ कहीं देवदत्त नहीं लिखा। हमारी धारणा यह दूसरी ही है।—देव और उनकी कविता, पृष्ठ १३

३६३।२८१

(३२) देवीदास कवि, बुन्देलखण्डी, सं० १७१२ में उ०। यह महान् कवि नाना ग्रन्थ बनाकर सम्वत् १७४२ में भैया रतनपाल सिंह यादव वंशावतंस करौली अधिपति के यहाँ जाकर महा मान पाकर जन्म भर उसी जगह रहे और उन्हीं के नाम से 'प्रेम रत्नाकर' नाम का एक महा अपूर्व ग्रंथ रचा, जो हमारे पुस्तकालय में मौजूद है। इनके नीति सम्बन्धी कवित्त हर एक मनुष्य को जानना आवश्यक है।

सर्वेक्षण

प्रेम रत्नाकर ग्रन्थ सरोजकार के पास था। उसने इस ग्रन्थ से सरोज में उदाहरण भी दिए हैं, जिनसे सिद्ध होता है कि यह करौली नरेश के यहाँ थे और इन्होंने उन्हीं के लिए इस ग्रन्थ की रचना सं० १७४२ में की :—

संबत् सत्रह सै बरस बयालीस निरधार
आस्विन सुदि तेरसि कियो सुभ दिन ग्रंथ बिचार १
को रजपूतानी जन्यो ऐसो और सपूत
ना ऐसो दाता कहूँ ना ऐसो रजपूत २
ऐसे अगनित गुनन करि जगमगात रतनेस
जाके दावन सों लग्यो जदुमंडल को देस ३
रजधानी जदुपतिन की नगर करौरी राज
जहँ पंडित अरु कबिन को राजत बड़ो समाज ४

इस ग्रन्थ की अनेक प्रतियाँ खोज में मिली हैं।[1] इसमें कवि ने राजवंश का बड़े विस्तार से वर्णन किया है। कवि के अनुसार इस वंश की वंशावली है—गोपाल—द्वारिकादास—विनय मुकुन्द—जगमनि—छत्रपाल—धर्मपाल और रतनपाल।

इस ग्रन्थ में प्रेम का निरूपण हुआ है। प्रेम के अधिकारी, साधुओं का प्रेम, सती का प्रेम, चातक, चकोर और हंस आदि आदि सभी प्रेमियों की चर्चा है। 'सोमवंश की वंशावली' इनका एक अन्य ग्रन्थ प्राप्त हुआ है।[2]

नीति की कविता करनेवाले देवीदास इनसे भिन्न हैं। राजनीति के कवित्त वाले देवीदास का उल्लेख सीकर, जयपुर, के इतिहास में मिलता है। यह जाति के वैश्य थे। यह संभवतः उत्तरप्रदेशीय थे और मारवाड़ में जाकर बस गए थे। देवीदास जी राव लूनकरन के मंत्री थे। लूनकरन जी का सम्बन्ध सीकर राजवंश से है। यह सम्राट अकबर के समकालीन थे। एक बार राव लूनकरन और मन्त्री देवीदास में लक्ष्मी और बुद्धि की श्रेष्ठता के सम्बन्ध में विवाद उठ खड़ा हुआ। देवीदास ने बुद्धि का पक्ष लिया। राव लूनकरन ने रूठकर इन्हें अपने छोटे भाई रायसल के

---

(१) खोज रि० १९०६।२२०, १९१७।४७ बी, १९२३।९६ बी, १९२६।२७, १९३१।२९
(२) खोज रि० १९४४।१६५

पास लाम्यां चले जाने के लिए कहा और कहा कि वहाँ अपने कथन को प्रमाणित करो। देवीदास रायसल के पास चले गए और उन्हें लेकर अकबर से मिले। उस समय अफ़गान कुतलू खां ने आक्रमण किया था। उस युद्ध में रायसल ने शाहजादे की प्राण रक्षा की। अकबर ने प्रसन्न होकर रायसल को दस परगने दिये। यह सब देवीदास के बुद्धि बल से हुआ। यह कथा टॉड के राजस्थान में भी दी गई है।[1] इनकी 'राजनीति के कवित्त' नामक ग्रन्थ खोज में मिल चुका है, पर इसे प्रेम रत्नाकर वाले बुन्देलखण्डी देवीदास की ही कृति समझा गया है,[2] जो ठीक नहीं। विनोद में (५२१) इन्हें एक अन्य ग्रन्थ 'दामोदर लीला' का भी कर्त्ता माना गया है, पर खोज रिपोर्ट में इसे अन्य देवीदास की रचना कहा गया है।[3]

३६४।२९९

(३३) देवकीनन्दन शुक्ल, मकरंदपुर, जिले कानपुर, सं० १८७० में उ०। यह महाराज काव्य में बहुत ही निपुण थे। इनकी कविता देखने से इनका पांडित्य प्रगट होता है। यह तीन भाई थे—देवकीनन्दन १, गुरुदत्त २, शिवनाथ ३। तीनों महान् कवि थे। गुरुदत्त का बनाया हुआ 'पक्षी विलास' ग्रन्थ तो हमने देखा है, पर देवकीनन्दन का केवल नखशिख और स्फुट दो-तीन सौ कवित्त हमारे पास हैं। शिवनाथ का कोई ग्रन्थ नहीं देखने में आया।

सर्वेक्षण

देवकीनन्दन, गुरुदत्त और शिवनाथ भाई-भाई नहीं थे। शिवनाथ पिता थे और देवकीनन्दन तथा गुरुदत्त परस्पर भाई थे अर्थात् शिवनाथ के पुत्र थे। अवधूत भूषण[4] में इस सम्बन्ध में देवकीनन्दन ने स्वयं उल्लेख किया है। इस ग्रन्थ के अनुसार इनके पूर्वजों का क्रम यह है—हरिदास शुक्ल—नाथ शुक्ल—मधुराम शुक्ल—सबली शुक्ल—शिवनाथ—देवकीनन्दन।

देवकीनन्दन कन्नौज से एक मील दूर स्थित मकरंद नगर नामक गाँव के रहने वाले थे। यह रूदामऊ, तहसील मलायें, जिला हरदोई के रैकवार क्षत्रिय राजा अवधूत सिंह के यहाँ रहते थे। इनके आश्रय में इन्होंने 'अवधूत भूषण' नामक ग्रंथ की रचना सं० १८५६ में की थी।

संवत् जुग निधि सैकरा छप्पन बरस निहारि
क्वार मास सित पंचमी रच्यो ग्रंथ विरतारि १०

रूदामऊ का पूरा भौगोलिक वर्णन भी कवि ने दिया है—

सहर मलाये के निकट रजधानी परसिद्ध
रैकवार जामै बसे भरे सिद्धि अरु निद्धि

इनका दूसरा ग्रन्थ 'शृङ्गार चरित्र'[5] है। इसकी रचना सं० १८४० में हुई थी—

संवत युगनिधि सैकरा वेद सुन्य सुभ जानि
माघ मास तिथि पंचमी रच्यों ग्रन्थ रसखानि

इनका तीसरा ग्रन्थ 'सरफराज चंद्रिका' है।[5] यह सं० १८४३ में रचा गया था। यह उमराव गिरि के पुत्र कुंवर सरफराज गिरि के नाम पर बना था।

---

(१) माधुरी, वर्ष अगस्त १९२७, पृष्ठ १३१-३२। (२) खोज रि० १९०२।१, ८२, १९०६ २७, ।४७ १९१७ए (३) खोज रि० १९२०।४० (४) खोज रि० १९०९।६५ बी, १९२३।९० ए (५) खोज रि० १९०९।६५ ए, १९२३।९० डी

'ससुरारि पचीसी'[1] इनका चौथा ग्रंथ है। इसमें कुल ३५ कवित्त सवैये हैं। यह माधुरी में पूर्ण रूप से प्रकाशित हो चुका है।[2] प्राप्त ग्रन्थों के आधार पर देवकी नन्दन शुक्ल का रचनाकाल सं० १४८० से १८५६ वि० तक है। अतः सरोज में दिया हुआ सं० १८७० इनका उपस्थितिकाल ही है।[3] सरोज में मकरंदपुर को कानपुर जिले में बताया गया है, जो ठीक नहीं यह फर्रुखाबाद जिले में है।

३६५।३०६

(३४) देवदत्त, कवि २, सं० १७१२ में उ०। इन्होंने 'योग तत्त्व' ग्रन्थ बनाया है।

सर्वेक्षण

कवि के सम्बन्ध में कोई सूचना सुलभ नहीं। ग्रियर्सन में (२६१) ३६५,३४१ ३६१, संख्यक कवि अभिन्न समझे गये हैं। विनोद में भी (४६४) ३४१, ३६५ को मिला दिया गया है।

३६६।२८४

(३५) देवीदत्त कवि। इनके शान्त और सामयिक कवित्त सुन्दर हैं।

सर्वेक्षण

देवीदत्त जैतपुर, बुन्देलखण्ड निवासी भाट थे। यह सं० १८१२ के लगभग वर्तमान थे। इनके निम्नांकित ग्रंथों का पता लगा है :—

१. अटक पचीसी—१९०४। ८५, पं १९२२।२६। यह पचीस यमकमय दोहों का संग्रह है।

जमकन देवी दत्त ये दोहा करे पचीस
बुधजन तिनके अर्थ अब लीजो करि कवि ईस ३०

अर्थ करने में कवियों की मति अटकेगी, इसी से यह नाम—

देवीदत्त जथा सुमति अटक पढ़न रमनीय
कवि मति अटकन के घटत अटक पचासी कीय २

यह ग्रन्थ सं० १८०९ वि० में रचा गया—

संवत निधि[9] नभ[0] नाग[8] भुव[1] पौच नवैं सनिवार
जमकन करि प्रतिपद यहै अटक पचीसी चार ३१

'पौच नवैं' के स्थान पर पौष नवैं पाठ ठीक प्रतीत होता है।

इस ग्रन्थ का अटकाने वाला यमकमय एक दोहा उदाहरणार्थ उद्धृत किया जाता है :—

भाषत बनत (न) बाम कछु जैसी दरसी आजु
भाषत बनत (न) बाम कछु जैसी दरसी आजु २९

२. बैताल पचीसी—१९०५। २७। यह इसी नाम के संस्कृत ग्रन्थ का विविध छन्दों में हिन्दी पद्यानुवाद है, जो सं० १८१२ में पूरा हुआ।

बरस अठारा सै हू बारा
सावन सुदि दसमी यतवारा
ता दिन देवीदत्त सुहाई
कथा भाषि पूरन पहुढ़ाई

---

(१) खोज रि० १९०१।४७ (२) खोज रि० १९२३।९० बी, सी, १९४१।४०१ (३) माधुरी, ज्येष्ठ १९८६, पृष्ठ ६६१-६३

३६७।२८५

(३६) देवी कवि । इनके शृङ्गार रस के चोखे कवित्त हैं ।

सर्वेक्षण

सरोज में उद्धृत दो शृङ्गारी कवित्त सवैयों और अधूरे नाम के सहारे इस कवि की कोई पकड़ संभव नहीं । इस नाम के अनेक कवि मिलते हैं ।

३६८।२८६

(३७) देवीदास, वंदीजन, सं० १७५० में उ० । इन्होंने 'सूम सागर' इत्यादि हास्य रस के ग्रन्थ बनाये हैं ।

सर्वेक्षण

सूम सागर की दो प्रतियाँ खोज में मिली हैं ।[१] यह ग्रन्थ सम्वत् १७६४ में रच गया—

संवत सत्रह सै जहां चौरानबे प्रमाण
चैत कृष्ण तिथि अष्टमी शनिबासर ठहरान २

इस ग्रंथ में सूमों की चरचा है—

सूमन को महिमा बड़ी, को कहि पावै पारु
कवि देवी संक्षेप सो कछु कछु कियौ विचारु ४

संक्षेप से विचार करने पर भी इस ग्रंथ में लगभग २०० प्रकार के मनुष्यों की प्रवृत्ति का चित्र खींचा गया है ।

१६२३ वाली रिपोर्ट में अनुमान किया गया है कि यह संभवतः जैतपुर निवासी, बैताल पचीसी तथा अटक पचीसी के रचयिता तथा संवत् १८१२ के लगभग उपस्थित देवीदत्त हैं । प्रेम रत्नाकर और सूम सागर के रचनाकालों में ५२ वर्षों का अन्तर है । इससे लगता है कि दोनों कवि भिन्न-भिन्न हैं । सरोज सप्तम संस्करण में प्रमाद से सूम सागर के स्थान पर सूर सागर छप गया है । कवि का रचना काल १७६४ है । अतः सरोज में दिया हुआ सम्वत् १७५० इसका जन्म काल हो सकता है ।

३६९।३०६

(३८) देवीराम कवि, १७५० में उ० । इनका काव्य मध्यम और शान्त रस का है ।

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध में कोई सूचना सुलभ नहीं है ।

३७०।२६८

(३९) देवा कवि (३) राजपूताने वाले, सं० १८५५ में उ० । यह कवि कृष्णदास पय अहारी गतला जी वाले के शिष्य और उदयपुर के समीप एक मंदिर में चतुर्भुज स्वामी के पुजारी थे ।

---

(१) खोज रि० १९२०। ४०, १९२३।९४

सर्वेक्षण

भक्तमाल, छप्पय ३९ में कृष्णदास पयअहारी के चौबीस शिष्यों में यह भी परिगणित हैं। एक देवा जी का उल्लेख छप्पय ५२ में भी हुआ है। प्रियादास के अनुसार (कवित्त २२७-२९) यह राना के चतुर्भुज के मन्दिर में पुजारी थे। रूपकला जी ने दोनों को देवा जी पण्डा कहा है, अतः दोनों अभिन्न हैं। सरोज में भी इन्हें अभिन्न ही माना गया है। रामानन्द के शिष्य अनंतानंद, अनंतानंद के कृष्णदास पयअहारी थे। कृष्णदास पयअहारी के शिष्य अग्रदास, कील्ह दास और देवा आदि थे। अग्रदास का समय १६३२ स्वीकृत[१] है, अंतः देवा का भी यही समय होना चाहिये।

३७१।

(४०) दौलत कवि, सं० १६५१ में उ०।

सर्वेक्षण

दौलत नाम के कम से कम ८ कवि खोज में मिले हैं, पर सभी प्रसंग प्राप्त दौलत कवि से भिन्न हैं। किसी के साथ इस कवि की अभिन्नता नहीं स्थापित की जा सकती।

३७२।

(४१) दील्ह कवि, सं० १६०५ में उ०।

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध में कोई सूचना सुलभ नहीं है।

३७३।

(४२) देव नाथ कवि।

सर्वेक्षण

विनोद में (८३९,९७०।१,१४९७) देवनाथ का रचनाकाल सं० १८३२ दिया गया है। खोज में भी एक देवनाथ मिले हैं। इनकी कृति शिव सगुनविलास[२] है। यह शकुन विचार सम्बन्धी ग्रंथ है। इसकी रचना बैशाख शुक्ल ७, सं० १८४० को हुई।

माधौ शुक्ल पक्ष जब होई
तिथि सत्तमी प्रगट यह खोई
तन वेद वसु इन्दु बखाना
ये संबत बीतै बुध जानौ

संभवतः तन के स्थान पर गगन पाठ है। समय की दृष्टि से दोनों कवि एक ही प्रतीत होते हैं।

---

(१) शुक्ल जी का इतिहास, पृष्ठ १४६ (२) खोज रि० १९२३।९१

३७४।

(४३) देवमणि कवि, १६ अध्याय तक चाणक्य राजनीति को भाषा किया।

सर्वेक्षण

देवमणि के खोज में २ ग्रंथ मिले हैं—

१—राजनीति के भाव—१६०६।१५७ यह चाणक्य राजनीति का स्वतंत्र अनुवाद है। प्राप्त प्रति में केवल ७ अध्यायों तक का अनुवाद है। ग्रंथ का प्रतिलिपि काल सं० १८२४ है। अतः देवमणि जी सं० १८२४ के पूर्व के हैं।

२. चर नायके—१६०६।६६। ग्रंथ में केवल ७६ दोहे हैं। इसमें राजाओं के कर्तव्य का वर्णन है।

३७५।

(४४) दास ब्रजवासी। इन्होंने प्रबोध चन्द्रोदय ग्रंथ बनाया है।

सर्वेक्षण

यह ब्रज विलास के रचयिता ब्रजवासीदास हैं। इन्होंने प्रबोध चंद्रोदय नाटक का संस्कृत से भाषानुवाद सं० १८१६ में किया था। इनका विस्तृत विवरण संख्या ५३७ पर है। संख्या ५३४ पर भी इन्हीं का पुनः उल्लेख हुआ है।

३७६।

(४५) दिलीप कवि।

सर्वेक्षण

दिलीप, चैनपुर भभुआ, जिला शाहाबाद, बिहार के रहनेवाले थे। इन्होंने सं० १८५६ में रामायन टीका नामक ग्रंथ लिखा था।[१]

३७७।

(४६) दीनानाथ अध्वर्यु, मोहार, जिले फतेपुर, सं० १८७६ में उ०। इन्होंने ब्रह्मोत्तर खंड को भाषा किया।

सर्वेक्षण

कवि के सम्बन्ध में कोई सूचना सुलभ नहीं।

३७८।

(४७) देवीदीन, वंदीजन, बिलग्रामी, विद्यमान हैं। यह कवि रसाल बिलग्रामी के भांजे हैं और यद्यपि सत्कवि हैं, पर संतोष और घर बैठने के कारण दारिद्रय के हाथ से तंग हैं। इनका बनाया हुआ नखशिख और रस दर्पण ये दो ग्रंथ सुन्दर हैं।

---

(१) खोज रि० १६०३।१४०

सर्वेक्षण

विनोद में (२४५६) इनका उल्लेख सं० १९४० में उपस्थित कवियों की सूची में है।

३७९।

(४८) देवी सिंह कवि।

सर्वेक्षण

देवी सिंह ओड़छा नरेश मधुकर साहि की पांचवी पीढ़ी में हुए थे। यह सं० १७३३ के आस-पास तक वर्तमान थे। खोज में इनके निम्नलिखित ग्रंथ मिले हैं—

१. नृसिंह लीला—१९०६।२८ ए। इस ग्रंथ में कवि ने अपना वंश परिचय दिया है।

श्री नृसिंह की लीला गाई
राज देवी सिंह बनाई
नृप मधुकर ते पांचो जो है
नृप भारथ को सुत सुख सो है
राजा राम साहि की पनती
राजा कविन माह की गनती
साहि सिग्राम नृपति कौ नाती
जाके करे ग्रंथ बहु भाँती
सोम वंश कासीसुर आही
कहत बुंदेला जग में जाही
गहरवार कुल नृप अवतंस
जाकी जगत माह परसंस

स्पष्ट है कि इनके पिता का नाम भारथ, पितामह का नाम संग्राम सिंह, प्रपितामह का नाम राम साहि और प्र-प्रपितामह का नाम मधुकर साहि था।

२. आयुर्वेद विलास—१९०६।२८ बी। यह वैद्यक का ग्रंथ है। देवीसिंह विलास[१] और अर्बुद विलास[२] भी संभवतः इसी ग्रंथ के अन्य नाम हैं। ग्रंथ में कवि का नाम है।

देवी सिंघ नारिंद कह आप वेद परकास
तत्त रूप यह देख सुन भाषा करौ विलास

'आप वेद परकास' संभवतः 'आयुर्वेद प्रकाश' का भ्रष्ट पाठाँतर है।

---

(१) खोज रि० १९२६। २८ डी (२) खोज रि० १९२६ ।२८ ई

३. रहस्य लीला—१९०६। २८ सी। यह रेखता में कृष्ण लीला है।

मटक नाच्यो मुकटधारी
लटक पर सिंघ बलिहारी

४. बारामासी—१९०६।२८ एफ। इस ग्रन्थ में विरहिणी विलाप है।

५. कौशिल्या की बारहमासी—१९२६।१०१, १९४७।१६७।

६. शृङ्गार शतक—राज० रि० ४, पृष्ठ ८०। यह लगभग १०० शृङ्गारी कवित्त सवैयों का संग्रह है। इसकी रचना जेठ वदी ९, सं० १७२१ को हुई।

३८०।३१०

(४९) दयाल कवि बंदीजन, बेंतीवाले भौन कवि के पुत्र, विद्यमान हैं।

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध में कोई नई सूचना सुलभ नहीं। ६१० संख्यक भौन के प्रसंग में भी इनका उल्लेख सरोज में हुआ है।

घ

३८१।३११

(१) घन सिंह कवि, सं० १७९१ में उ०। यह कवि मौरावां, जिले उन्नाव के रहनेवाले बंदीजन महा निपुण कवि हो गए हैं।

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध में कोई सूचना सुलभ नहीं।

३८२।३१२

(२) धनीराम कवि बनारसी, सं० १८८० में उ०। इनकी कविता बहुत ललित है। बाबू देवकी नंदन, बनारसी की आज्ञानुसार काव्य प्रकाश को संस्कृत से भाषा किया और रामचन्द्रिका का तिलक बनाया।

सर्वेक्षण

धनीराम जी असनी के कवि ऋषिनाथ के पौत्र, ठाकुर के पुत्र तथा सेवक और शंकर के पिता थे। यह काशी नरेश के भाई बाबू देवकी नंदन सिंह और उनके पुत्र बाबू रतन सिंह एवं जानकी प्रसाद के आश्रित थे। विनोद (११३०) के अनुसार इनका जन्म सं० १८४० के आसपास, कविता काल सं० १८६७ और मृत्यु सं० १८९० के लगभग हुई। इनके निम्नलिखित ग्रन्थ खोज में प्राप्त हुए हैं—

१. काव्य प्रकाश—१९२३।९९। यह ग्रन्थ सं० १८८० में वसंत पंचमी, गुरुवार को प्रारम्भ किया गया था—

व्योम० सिद्धि८ सिधि८ चंद्र१ गुरु तिथि पंचमी वसंत
कर्यौ ग्रंथ प्रारंभ हौं सुमिरि हिये भगवंत ५

रिपोर्ट में आश्रयदाता का नाम राय रात लिखा है, जो रायरतन होना चाहिए यह राय-रतन देवकी नंदन जी के पुत्र थे।

२. राम गुणोदय—१९०३।११६, १९२६।१०३ ए। इस ग्रन्थ में रामाश्वमेध का वर्णन है। यह ग्रन्थ ज्येष्ठ वदी ११, शुक्रवार, सं० १८६७ को श्री देवकी नंदन की प्रेरणा से रचा गया था—

अब्धि[७] दर्शन[६] सिद्धि[८] सम्मित चंद[१] संवत राजही
शुक्र श्री तिथि रुद्र शुक्र सु पच्छ स्यामल साजही
रेवती उडु में प्रसस्त यह द्विजोग सो ठाइयो
चारु ता दिन ग्रन्थ पूरनता बिसेषि सो पाइयो

—खोज रि० १९०३।११६

३. तत्वार्थ प्रदीप—१९२६।१०३ बी। यह इनके आश्रयदाता जानकी सिंह कृत 'युक्ति रामायण' की टीका है।

३८३।३१५

(३) धीर कवि सं० १८७२ में उ०। यह कवि, शाह आलम बादशाह दिल्ली के यहाँ थे।

सर्वेक्षण

शाह आलम का शासनकाल सं० १८१८-६३ है। अतः सरोज में दिया हुआ सं० १८७२ कवि का उपस्थितिकाल ही है। प्रथम संस्करण में १८७२ के स्थान पर १८२२ है। खोज में इनका एक ग्रन्थ 'कवि प्रिया का तिलक' मिला है। यह तिलक सं० १८७० में किसी राजा वीर किशोर के निर्देश से किया गया। प्रतीत होता है कि सं० १८६३ में शाह आलम के देहावसान के अनंतर धीर जी कहीं अन्यत्र चले गए।

संवत द्वादस षष्ट सत सत्तर सुभ नभ मास
प्रथम द्वैस बुध धीर कवि कीनो अर्थ प्रकाश २७

खोज में एक धीर और मिले हैं। इन्होंने अलंकार मुक्तावली[१] की रचना चंद्रालोक के आधार पर की थी—

ग्रन्थ चंद्र अवलोकि के दीनो अर्थ जनाय
अलंकार मुक्तावली कीन्हीं धीर बनाय ७६

पुष्पिका से पता चलता है कि यह कहीं के राजा थे—

"इति श्रीमन्महाराजाधिराज श्री महाराज धीर सिंघ विरंचताया अलंकारमुक्तावली संपुरन समापता सुभमस्तु श्रीरस्तु"

यह महाराज धीर सिंह किसी दूसरे के आश्रय में रहकर काव्य नहीं कर सकते, अतः यह सरोज के धीर से भिन्न हैं। १९४७ की खोज में प्राप्त प्रति का लिपिकाल सं० १८५२ हैं, अतः यह महाराज धीर सं० १८५२ के या तो पूर्ववर्ती हैं या फिर समसामयिक। रिपोर्ट के उद्धृत अंश में कवि का नाम आया है।

---

(१) खोज रि० १९०५।३५, १९४७।१७४

अलंकार उपमा इहै आनन चंद समान
साधारन प्रयास है कीनो धीर बखान ६

३८४।३१४

(४) धुरंधर कवि । इनके कवित्त दिग्विजय भूषण में हैं ।

सर्वेक्षण

धुरंधर की रचना सरदार के शृंगार संग्रह में भी है, अतः यह सं० १९०५ के पूर्ववर्ती कवि हैं । विनोद में (१९२८) इनके एक ग्रन्थ 'शब्द प्रकाश' का भी उल्लेख है ।

३८५।३१२

(५) धीरज नरिंद महाराजा इंद्रजीत सिंह बुन्देला, उड़छावाले, सं० १६१५ में उ० । इन्हीं महाराज के यहाँ कवि केशवदास थे और प्रवीणराय पातुर भी इन्हीं की सभा में विराजमान थी । इनके समय में उड़छा बड़ी राजधानी थी ।

सर्वेक्षण

इंद्रजीत सिंह के पिता मधुकरशाह का शासनकाल सं० १६११-४९ है । केशव ने इंद्रजीत के आश्रय में सं० १६४८ में रसिकप्रिया की रचना की थी । ऐसी स्थिति में सरोज में दिया हुआ सं० १६१५ इनका जन्मकाल हो सकता है । बुन्देल वैभव में इनका जन्मकाल सं० १६२० अनुमित है । इंद्रजीत ओड़छे के राजा नहीं थे । सं० १६४९ में मधुकरशाह की मृत्यु के अनंतर ओड़छा का राज्य ८ भागों में विभक्त हो गया । राम सिंह राजा हुए, शेष भाई जागीरदार । दूसरे पुत्र वीर सिंह देव को बड़ौनी और तीसरे पुत्र इन इंद्रजीत को कच्छौवा की जागीर मिली थी । कालांतर में इनका वीरसिंह देव से गृह युद्ध भी हुआ था । यह अपने सबसे बड़े भाई राजारामसिंह के दाहिने हाथ थे । यह संभवतः सं० १६८० के आस पास तक जीवित रहे । इनका लिखा कोई ग्रन्थ नहीं मिलता ।

३८६।३१७

(६) धोंधेदास, ब्रजवासी । इनके पद राग सागरोद्भव में हैं ।

सर्वेक्षण

विनोद (३३६) के अनुसार इनका रचनाकाल सं० १७०० है । पर इन्होंने १६२८-१६४२ के बीच किसी समय गोकुल जाकर गो० विट्ठलनाथ से पुष्टि-संप्रदाय की दीक्षा ली थी । वह मुसलमान थे । दिल्ली आगरा के बीच किसी गांव में इनका जन्म हुआ था । माता-पिता के मरने पर यह आगरा आ गये और गाकर जीवकोपार्जन करने लगे । तदनंतर गोकुल जाकर दीक्षा ले ली और गोकुल तथा गोबर्धन में रहने लगे । इनकी कथा २५२ वैष्णवों की वार्ता में है ।[१]

---

(१) २५२ वैष्णवों की वार्त्ता, तृतीय भाग, पृष्ठ २८४।८५

३८७।३१६

(७) धौंकल सिंह बैस, न्यावां जिले रायबरेली, सं० १८६० में उ०। इन्होंने रमल प्रश्न इत्यादि छोटे-छोटे ग्रन्थ बनाए।

सर्वेक्षण

रमल प्रश्न[1] शकुन-विचार सम्बन्धी ग्रन्थ है। यह संस्कृत से अनूदित है—

यह मत सकल ऋषिन कर साचैं
प्रश्न सो सत्य जानि मन भाई
भाषा धौंकल सिंह बनाई।

ग्रन्थ की रचना सं० १८६४ में श्रावण पूर्णिमा रविवार को हुई—

निगमागम भूसुर वरण वस्तु लेव विचार
नभ सित रावर्तिथि सहित पुनि पर्व प्रकार निरधारि

वस्तु के स्थान पर संभवतः वसु तू शुद्ध पाठ है। निगम ४, आगम ६, भूसुर वरण १, और वसु ८। सरोज में दिया सं १८६० कवि का उपस्थिति-काल है।

न

३८८।३१८

---

(१) नरहरि राय, वंदीजन, असनीवाले, सं० १६०० के बाद उ०। यह कवि जलालुद्दीन अकबर बादशाह के यहाँ थे। असनी गाँव इनको माफी में मिला था। इनके पुत्र हरिनाथ महाकवीश्वर और उदार चित्त थे। नरहरिवंशी बंदीजन इस समय वाराणसी और इधर-उधर देशांतरों में तितिर-बितिर हो गए हैं। गांव भी ब्राह्मणों के दखल में है। इनका घर जो असनी से लगा हुआ पूर्व ओर ऐन गंगा के किनारे बड़े महाराजों का ऐसा गढ़ था, अब ढहा पड़ा है। ईंटे आज तक बिकती हैं। गीदड़, श्वानादि दिन दोपहर फिरा करते हैं। इनका बनाया हुआ कोई ग्रन्थ हमारे देखने-सुनने में नहीं आया। कवित्त और बहुधा छप्पै देखने-सुनने में आए हैं। एक बार अकबर बादशाह ने करन कवि सिरोहिया वंदीजन से पूछा कि तुम्हारी जाति में कौन भाट बड़े हैं। करन बोले, महाराज, सिरोहिया भाट कलंगी के समान सर्वोपरि हैं। तब अकबर शाह ने नरहरि से पूछा। नरहरि बोले, महाराज सत्य है, सिरोहिया शिर के समान और हम पांव के तुल्य हैं। तब अकबर शाह बोले, और सब भाट तो गुण के पात्र हैं, तुम महापात्र हो। तब से नरहरि वंशी भाट महापात्र कहाए।

सर्वेक्षण

नरहरि रायबरेली जिले की डलमऊ तहसील के पखरौली नामक ग्राम में उत्पन्न हुये थे।

---

(१) खोज रि० १९१७।५०

इनका जन्म सं० १५६२ में हुआ था। यह ब्रह्मभट्ट थे। इनका संपर्क बाबर, हुमायूँ, शेरशाह, सलेमशाह (इस्लाम शाह सूरी), पुरी के राजा मुकुन्द गजपति, रीवाँ नरेश रामचन्द्र सिंह, और अकबर से था। इनकी मृत्यु सं० १६६७ में हुई।[१] महेशदत्त ने इनका मृत्यु सम्बत् १६६६ माना है।[२]

नरहरि के तीन ग्रंथ कहे जाते हैं—रुक्मिणी मंगल, छप्पय नीति, और कवित्त संग्रह। रुक्मिणी मंगल एक लघु प्रबन्ध है, जो दोहा-चौपाई छन्दों में लिखा गया है। शेष दोनों फुटकर रचनाओं के संग्रह हैं।[३]

अकबर ने फतेहपुर जिले में इनको असनी नामक गाँव दिया था। यहाँ पर इनके वंशज अब भी हैं। इन्हीं की प्रार्थना पर अकबर ने गो-बध बंद करा दिया था। अकबर ने उन्हें महापात्र की उपाधि दी थी।

सरोज में दिया हुआ सं० १६०० विक्रम सम्वत् भी हो सकता है। अकबरी दरबार से सम्बन्धित होने के कारण यह ईस्वी-सन् प्रतीत होता है। हर हालत में यह उपस्थितिकाल है और सरोज का सम्वत् शुद्ध है। खोज में इनके ये दो ग्रन्थ मिले हैं—१. रुक्मिणी मंगल—१६०३।११। २. नरहरि के कवित्त—१६४१।१२० क, ख। नरहरि के नाम पर 'अवतार चरित्र' नामक एक और बड़ा ग्रन्थ मिला है, पर यह किसी राजस्थानी 'बारहट नरहरदासेन विरचितं' है।[४]

ग्रियर्सन में (११३) इनका नाम नरहरि सहाय दिया गया है और अविश्वसनीय मानते हुए भी इनके सम्बन्ध में निम्नांकित कथा दी गई है। नरहरि ने अपनी कविता से प्रसन्न करके शेरशाह से पुरस्कार में हुमायूँ की चोली बेगम को माँग लिया। फिर उसे रीवां ले गया, जहाँ गर्भिणी चोलीबेगम ने अकबर को जन्म दिया। नरहरि के वंशज अजबेस ने भी रीवां के किले में हुमायूँ की बेगम और उसके पुत्र अकबर के शरण लेने की चर्चा एक कवित्त में की है, जो सरोज में उद्धृत है।[५]

३८६।३३५

(२) निपट निरंजन स्वामी, सं० १६५० में उ०। यह महाराज गोस्वामी तुलसीदास के समान महान् सिद्ध हो गए हैं। इनके ग्रंथों की ठीक-ठीक संख्या मालूम नहीं होती। पुरानी संग्रहीत पुस्तकों में सैकड़ों कवित्त हम इनके देखते हैं। हमारे पुस्तकालय में शांत-सरसी और निरंजन संग्रह, ये दो ग्रन्थ इन महाराज के बनाए हुए हैं। इनकी कविता में बहुत बड़ा प्रभाव यह है कि मनुष्य कैसा ही काम-क्रोध इत्यादि पापों से बद्ध हो, इनके वाक्य के श्रवण-कीर्तन से निःसन्देह मुक्त हो जायगा।

---

(१) अकबरी दरबार के हिन्दी कवि, पृष्ठ ४४-७६ (२) भाषाकाव्य संग्रह, पृष्ठ १३७ (३) अकबरी दरबार के हिन्दी कवि, पृष्ठ १४६-५१ (४) खोज रि० १६०६।२१, राज रि० भाग १, संख्या १२ (५) यही ग्रन्थ, कवि संख्या २

सर्वेक्षण

श्री सफ़ीउद्दीन सिद्दीकी, आर्ट्स और साइंस कालेज, औरङ्गाबाद, हैदराबाद, दकन में अध्यापक हैं। इन्होंने दिल्ली से निकलने वाले साप्ताहिक उर्दू आईना[१] में निपट निरंजन पर एक लेख लिखा है, जिसका शीर्षक है 'औरङ्गजेब से गुस्ताखियाँ करनेवाले संत कवि, हिन्दी-उर्दू दोनों के मुश्तरका शायर'। इस लेख में निपट निरंजन के अनेक कवित्त उद्धृत हैं, जिनमें आलमगीर का नाम आया है। उदाहरण के लिये ऐसा एक कवित्त यहाँ उद्धृत किया जा रहा है।

हम तो फ़क़ीर खुद मस्त हैं खुदा पै फ़िदा
रहें जग से जुदा, कुछ लेना है न देना है
शाहों के वे शाह, नहीं हमें कुछ परवाह
बैला बाटी की न चाह, ताना है न बाना है
मन ही नहाना धोना, पवन का खाना पीना
आस का ओढ़ना, और पृथ्वी का बिछौना है
कहैं निपट निरंजन सुनो आलमगीर
सुन्न हरि महल बीच सोना ही तो सोना है

इस लेख के अनुसार निपट निरंजन औरङ्गजेब के शासनकाल सं० १७१५-६४ में हुये। अतः सरोज में दिया हुआ सं० १६५० ठीक नहीं। लेख के अनुसार यह बुन्देलखण्ड के चन्देरी गाँव के रहने वाले थे। यहाँ से जाकर यह खुल्दाबाद, औरङ्गाबाद, में बस गए। बचपन ही में इनके पिता का देहांत हो गया था। इनकी माँ ने इनका लालन-पालन किया था। लड़कपन ही से इनका साधुओं से संग रहा। इनका असल नाम अज्ञात है। कविता में छाप निपट निरंजन है। सं० १७४० के आस-पास औरङ्गजेब ने दक्षिण में औरंगाबाद बसाया, उसी समय निपट निरंजन दक्षिण गए और औरङ्गाबाद के निकट एकनाथ के मन्दिर में बसेरा लिया। फिर कुटिया बनाकर वहाँ रहने लगे। यहाँ से यह देवगिरि (दौलताबाद) चले गए। औरङ्गजेब के २५ वर्षीय दक्षिण प्रवास के समय इनकी मुलाकात उससे हुई थी। आलमगीर निपट महाराज की आध्यात्मिक शक्ति का कायल था। इनकी कविता में अरबी-फ़ारसी के शब्द और खड़ी बोली के प्रयोग भी मिलते हैं। इसीलिए इनको हिन्दी उर्दू का सम्मिलित कवि कहा गया हैं। खोज में इनके तीन ग्रन्थ मिले हैं:—

१. कवित्त निपट जी के—१९१७।१२८। यह निपट जी की फुटकर कविताओं का संग्रह है। ग्रन्थ अपूर्ण है, फिर भी इसमें २१४ कवित्त सवैये हैं। संकलनकर्ता कोई दूसरा है, यह इस दोहे से स्पष्ट है—

निपट निरंजन समय पर, कहे जु बचन विलास
ते सब में अनुक्रम करि, लिखे नाम धरि तास ३

२. शांत रस वेदांत—१९३२।३०६। यह प्रति शिव सिंह के पुस्तकालय की है। संभवतः इसी का उल्लेख सरोजकार ने शांत सरसा नाम से किया है। यह भी कवित्त सवैयों में है और अपूर्ण है। इस प्रति में ६५ छंद हैं।

३—१९२६।२५३। प्राप्त ग्रन्थ आदि अंत दोनों ओर से खंडित है।

---

(१) आईना, १६ सितम्बर १६५५

३६०।३१६

(३) निहाल, ब्राह्मण, निगोहां, जिले लखनऊ, सं० १८१० में उ० । इनकी कविता बहुत ही ललित है ।

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध में कोई सूचना सुलभ नहीं । यह संभवतः बुंदेलखण्डी करन भट्ट के काव्य गुरु थे । ऐसी दशा में यह कान्यकुब्ज पांडेय ब्राह्मण थे ।[१]

निगोहांवाले इन निहाल से भिन्न एक और निहाल हैं, जो पटियाला नरेश महाराज कर्मसिंह और नरेंद्रसिंह के आश्रित थे और सं० १८६३-१६१६ के लगभग वर्तमान थे । इन्होंने निम्नलिखित ग्रन्थ लिखे हैं :—

१. महाभारत भाषा—१६०४।६७ ।

२. साहित्य शिरोमणि—१६०३।१०५ । रचनाकाल सं० १८६३ ।

३. सुनीति पंथ प्रकाश—१६०३।१०६। रचनाकाल सं० १८६६ ।

४. सुनीति रत्नाकर—१६०५।१०७। रचनाकाल सं० १६०२ ।

३६१।३२३

(४) नानक जी वेदी, खत्री, तिलवड़ी गाँव पंजाब वासी, सं० १५२६ में उ० । यह महात्मा कार्तिक पूर्णमासी को संवत् १५२६ में उत्पन्न और संवत् १५९६ में बैकुंठवासी हुए । इनकी कथा सभी छोटे-बड़ों पर विदित है । इनका ग्रन्थ 'ग्रन्थ साहब' के नाम से नानकपंथियों में पूजनीय है । उसमें दसों गुरुओं की कविता के सिवा और भक्त कवि लोगों का काव्य भी शामिल है । इस तफसील से १. नानक जी, २. अंगद जी, ३. अमरदास, ४. रामदास, ५. हरिरामदास, ६. हरि गोविंद, ७. हरि राय, ८. हरिकिसुन, ९. तेगबहादुर, १०. गोविंद सिंह । इन दसों में ६,७,८ के पद ग्रन्थ साहब में नहीं हैं, और सब के हैं । छाप सब की नानक है । जहाँ महल्ला लिखा है, उसीसे मालूम होता है कि यह पद किस गुरु का है । सिवा इन दसों के और जिनके काव्य ग्रन्थसाहब में हैं, उनके ये नाम हैं—१. कबीरदास, २. त्रिलोचन, ३. धना भक्त, ४. रैदास, ५. सेन, ६. शेखफरीद, ७. मीरा बाई, ८. नाम देव ९. बलभद्र ।

सर्वेक्षण

सिक्ख सम्प्रदाय के प्रवर्तक गुरु नानक वेदी खत्री थे । कार्तिक पूर्णिमा सं० १५२६ को तिलवंडी ग्राम (लाहौर) में इनका जन्म हुआ । इनके पिता का नाम कालूचंद था, जो लाहौर के पास सूबा बुलार के पठान के कारिंदा थे । सं० १५४५ में इनका विवाह गुरुदासपुर के मूलचंद खत्री की कन्या सुलक्षिणी से हुआ था । इनका देहांत सं० १५९६ में हुआ । सरोज में गुरु नानक से सम्बन्धित सभी तथ्य और तिथियाँ ठीक हैं ।

गुरु नानक की सारी रचना ग्रन्थसाहब के पहले महले में है । ये रचनाएँ साखी, सुखमनी, और अष्टांग योग हैं । इनकी रचनाएँ हिन्दी ही में हैं ।

---

(१) देखिए, यही ग्रन्थ, कवि संख्या ६६

गुरु नानक पहुँचे हुए फकीर थे। इन्होंने हिन्दू-मुसलमान मतों को मिलाने का प्रयास किया। यह एक ईश्वर को मानने वाले थे। इन्होंने हरिद्वार, काशी, गया, मक्का आदि सभी स्थानों की यात्रा की थी।

३९२।३३१

(५) नेही कवि। इन्होंने सरस कविता की है।

सर्वेक्षण

दलपति राय वंशीधर कृत 'अलंकार रत्नाकर' में नेही की भी कविता है। अतः इनका रचना-काल सं० १७९८ के पूर्व है। सूदन में भी उल्लेख है।

३९३।३३२

(६) नैन कवि। ऐजन। इन्होंने सरस कविता की है।

सर्वेक्षण

खोज में नैन के दो ग्रन्थ मिले हैं—

१. कवित्त हजरत अली साह मरदानसेरे खुदा सलतातुलाह अलेहवाल ही वोसलम की हाल गढ़ लंबा की लड़ाई का तथा कवित्त हजरत अली के मिजिजा के १९४१।१३० क। इस ग्रन्थ से प्रतीत होता है कि इनका सम्बन्ध किसी मुसलमान आश्रयदाता से अवश्य था, अन्यथा इस विषय पर लिखने की इन्हें कोई आवश्यकता नहीं थी।

२. अंगद रावण संवाद—१९४१।१३० ख। सूदन में नामोल्लेख है, अतः १८१० के पूर्व या समकालीन हैं।

३९४।३२०

(७) नोने कवि, बंदीजन, बाँदा, बुन्देलखण्ड निवासी, कवि हरिलाल जी के पुत्र, सं० १९०१ में उ०। यह महान् कवि भाषा-साहित्य में निपट प्रवीण बहुत अच्छा काव्य करते हैं। ग्रन्थ इनका हमने नहीं देखा है।

सर्वेक्षण

सरोज सप्तम संस्करण में परिचय तथा उदाहरण देते समय दोनों स्थलों पर इन्हें कवि हरिलाल का पुत्र कहा गया है। साथ ही ९६१ संख्यक हरिदास के विवरण और उदाहरण देते समय दोनों स्थलों पर इन्हें नोने कवि का पिता लिखा गया है। ग्रियर्सन (५४५) और विनोद (२२६२) में नोने के पिता का नाम हरिदास स्वीकार किया गया है। अन्य प्रमाणों के अभाव में नोने के पिता का नाम हरिदास ही स्वीकार किया जा रहा है। कवि के सम्बन्ध में कोई सूचना सुलभ नहीं।

सं० १७५० के लगभग बंधौरा, बुन्देलखण्ड के जागीरदार राजा दुर्जन सिंह के आश्रय में एक नोने व्यास नामक कवि हुए हैं, जिन्होंने 'धनुष विद्या' नामक ग्रन्थ बनाया है।[१]

---

(१) बुन्देल वैभव, भाग २, पृष्ठ ५०२

३९५।३४९

(८) नैसुक कवि, बुन्देलखण्डी, सं० १९०४ में उ० । इनके शृङ्गार के सुन्दर कवित्त हैं ।

सर्वेक्षण

नैसुक के सम्बन्ध में कोई सूचना सुलभ नहीं है ।

३९६।३५५

(९) नायक कवि । दिग्विजय भूषण में इनके कवित्त हैं ।

सर्वेक्षण

सरदार के 'शृंगार संग्रह' में भी नायक की रचना है । सूदन ने इनका भी नाम प्रणम्य कवियों की सूची में दिया है, अतः इनका रचनाकाल सं० १८१० के आसपास अथवा उससे कुछ पूर्व है । खोज में नायक के नाम पर ये दो ग्रन्थ मिले हैं :—

१. दत्तात्रय सत्संग उपदेश सागर—१९४१।१२८ क ।

२. सर्व सिद्धांत श्रीराम मोक्ष परिचय—१९४१।१२८ ख ।

३९७।३५६

(१०) नबी कवि । इनका नखशिख अद्भुत है ।

सर्वेक्षण

नखशिख वाले नबी कवि का कोई पता नहीं मिलता । खोज में एक शेख नबी अवश्य मिले हैं । यह मऊ जौनपुर के निवासी थे । इन्होंने जहाँगीर के शासनकाल में सं० १६७६ में ज्ञानदीप नामक प्रेमाख्यान काव्य लिखा, जिसमें राजा ज्ञानदीप और रानी देव जानी की प्रेम कथा है ।[1]

३९८।३५७

(११) नागरीदास कवि, सं० १६४८ में उ० । हजारा में इनके कवित्त हैं ।

सर्वेक्षण

हिन्दी में नागरीदास नामक कुल चार कवि हुए हैं :—

१. आचार्य नागरीदास —श्री स्वामी हरिदास जी की शिष्य परम्परा में, विहारिनिदास के शिष्य, एक प्रसिद्ध महात्मा और कवि । इनका असल नाम शुक्लांबरधर था । इनके पिता का नाम कमलापति था । यह सं० १६०० में माघ शुक्ल ५ को पैदा हुए थे । इनका देहावसान ७० वर्ष की बय में सं० १६७० में वैशाख सुदी ९ को हुआ । सरस देव इनके भाई थे । इनका जन्म सं० १६११ में आश्विन शुक्ल १५ को हुआ था । इनकी मृत्यु सं० १६८३ में श्रावण सुदी १५ को हुई ।[2] दोनों भाई अच्छे कवि थे । ध्रुवदास ने दोनों भाइयों का इस प्रकार स्मरण किया है—

कहा कहौं मृदुल सुभाव अति सरस नागरी दास
श्री विहारी बिहारिन कौ सुजन गायौ हरसिहुलास

यह हरिदासी संप्रदाय के तीसरे आचार्य थे । इनका आचार्यत्वकाल सं० १६५९-७० वि० है । इनके ग्रन्थ ये हैं:—

(१) खोज रि० १९०२।२१२ (२) हरिदास वंशानुचरित्र, पृष्ठ ६९, ७६,

१. नागरीदास की बानी—१६०५।३१, १६२३।२६१

२. स्वामी हरिदास जी का मंगल १६०५।४०

२. नागरीदास—ओड़छा के पास पलेहरा ग्राम के रहने वाले पँवार क्षत्रिय बुन्देलखण्ड अन्तर्गत ओड़छा राजा के वंशज सं० १६५० के लगभग वर्तमान। हित हरिवंश जी के ज्येष्ठ पुत्र स्वामी वनचंद्र जी के शिष्य। पहले वृन्दावन में रहते थे, बाद में बरसाने चले गए थे। वहाँ इन्होंने एक कुटी बनाई, जो आज तक मौजूद है। इनके ग्रन्थ ये हैं :—

१. अष्टक या हिताष्टक—१६१२।११६ ए

२. नागरीदास की बानी—१६१२।११६ बी, १६४१।५१० क

३. नागरीदास के दोहे—१६१२।११६ सी

४. नागरीदास के पद—१६१२।११६ डी, १६४१।५१० ख

३. विप्र नागरीदास—चरणदास के ५२ शिष्यों में से एक, उच्चकोटि के साधक और कवि, भागवत का स्वतंत्र अनुवाद करनेवाले। इनका सम्बन्ध अलवर से था। यह अनुवाद मरुखंडाधिपति जोरावर सिंह तत्पुत्र महब्बत सिंह और उनके पुत्र रावराजा श्री प्रताप सिंह के दीवान और प्रतिनिधि हलदिया कुलावतंस श्री छाजूराम के स्नेहांकित अनुग्रह से चरणदास के जीवनकाल ही में सं० १८३२ वैसाख सुदी ३ को प्रारम्भ हुआ और छाजूराम के मृत्युकाल सं० १८४५ के पूर्व ही किसी समय पूर्ण हुआ। इनका पूरा विवरण आगरा विश्वविद्यालय के हिन्दी इंस्टीच्यूट की त्रैमासिक शोध-पत्रिका भारतीय साहित्य के प्रथम अंक में प्रकाशित हुआ है। इनके भागवत की प्रतियाँ खोज में भी मिली हैं।[1]

४. नागरीदास—यह कृष्णगढ़ के राजा थे। इनका असल नाम सावंत सिंह था। यही सरोज के अभीष्ट नागरीदास हैं। कृष्णगढ़ नरेश महाराज सावंत सिंह, सम्बन्ध नाम नागरीदास का जन्म रूपनगर में सं० १७५६ में हुआ था। इनकी मृत्यु सं० १८२१ में वृन्दावन में हुई। ऐसी स्थिति में सरोज में दिया सं० १६४८ अशुद्ध है। यह वल्लभ सम्प्रदाय के वैष्णव और अत्यन्त उच्च कोटि के कवि थे। इन्होंने गृहकलह से ऊबकर सं० १८१४ में गद्दी छोड़ दी थी और विरक्त होकर वृन्दावन में रहने लगे थे। इन्होंने कुल ७५ ग्रन्थ लिखे थे, जिनका सर्वसंकलन 'नागर समुच्चय' नाम से सं० १६५५ में निर्णय सागर प्रेस, बम्बई से प्रकाशित हो चुका है। यह वैराग्य सागर, शृंगार सागर और पद सागर नामक तीन भागों में विभक्त है।

वैराग्य सागर में ये १५ ग्रन्थ हैं—१. भक्ति मग दीपिका, २. देह दशा, ३. वैराग्य वटी, ४. रसिक रतनावली, ५. कलि वैराग्य वल्ली, ६. अरिल्ल पच्चीसी, ७. छूटक पद, ८. छूटक दोहा, ६. तीर्थानन्द, १०. रामचरित्र माला, ११. मनोरथ मंजरी, १२. पद प्रबोधमाला, १३. जुगल भक्त विनोद, १४. भक्ति सार, और १५. श्रीमद्भागवत पारायण विधि।

शृङ्गार सागर में ५१ ग्रन्थ हैं—१. व्रजलीला, २. गोपीप्रेम प्रकाश, ३. पदप्रसंग माला,

---

(१) खोज रि० १६१७।११८, १६२६।२४१

४. व्रजवैकुण्ठ तुला, ५. व्रज सार, ६. विहार चन्द्रिका, ७. भोर लीला, ८. प्रातरसमंजरी, ९. भोजनानन्द अष्टक, १०. जुगलरस माधुरी, ११. फूल विलास, १२. गोधन आगम, १३. दोहनानन्द अष्टक, १४. लगनाष्टक, १५. फाग विलास, १६. ग्रीष्म विहार, १७. पावस पचीसी, १८. गोपी वैनविलास, १९. रासरस लता, २०. रैन रूपारस, २१. सीत सार, २२. इश्क चमन, २३. छूटक दोहा मजलस मंडन, २४. रास अनुक्रम के दोहा, २५. अरिल्लाष्टक, २६. सदा की मांझ, २७. वर्षा ऋतु की मांझ, २८. होरी की मांझ, २९. शरद की मांझ, ३०. श्री ठाकुर जी के जन्मोत्सव के कवित्त, ३१. श्री ठकुरानी जी के जन्मोत्सव के कवित्त, ३२. सांझी के कवित्त, ३३. सांझी फूल बीननि समै संवाद अनुक्रम, ३४. रास के कवित्त, ३५. चाँदनी के कवित्त, ३६. दिवारी के कवित्त, ३७. गोवर्द्धनधारण के कवित्त, ३८. होरी के कवित्त, ३९. फाग खेल समै अनुक्रम, ४०. वसन्त वर्णन के कवित्त, ४१. फाग विहार, ४२. फाग गोकुलाष्टक, ४३. हिंडोरा के कवित्त, ४४. वर्षा के कवित्त, ४५. छूटक कवित्त, ४६. वन विनोद, ४७. वाल विनोद, ४८. सजनानन्द, ४९. रास अनुक्रम के कवित्त, ५०. निकुञ्ज विलास, और ५१. गोविंद परचई ।

पद सागर में कुल तीन ग्रन्थ हैं—१. वन जन प्रशंसा, २, पद मुक्तावली, ३. उत्सवमाला । कुल मिलाकर ६९ ग्रन्थ हुए । राधाकृष्ण दास[१] एवं शुक्ल जी[२] ने इनके ७५ ग्रन्थों की सूची दी है । इन सूचियों के निम्नलिखित ६ ग्रन्थ नागर समुच्चय की ग्रन्थ सूची में नहीं हैं :—

१. सिखनख, २. नखसिख, ३. चर्चरियाँ, ४. रेखता, ५. वैन विलास, ६. गुप्त रस प्रकाश । ये छहों ग्रन्थ अप्राप्त समझे जाते हैं, पर ऐसी बात नहीं, ये सभी पद 'मुक्तावली' नामक वृहत ग्रन्थ के अन्तर्गत हैं । इन ७५ ग्रन्थों में से अनेक ग्रन्थ बहुत ही छोटे हैं, जिनमें कुछ ही छंद हैं और जो शीर्षक मात्र हैं । शरद की मांझ में तो एक ही छंद है । अनेक ग्रन्थों का रचनाकाल कवि ने स्वयं दे दिया है, जिनके सहारे इनका रचनाकाल सं० १७८२-१८१९ सिद्ध होता है । सभा भी आकर-ग्रन्थमाला के अन्तर्गत नागरीदासग्रन्थावली प्रकाशित करने जा रही है । सरोज में नागरीदास के तीन छंद उद्धृत हैं, जो इनके ग्रन्थों में मिल जाते हैं ।

१. भादों की कारी अँध्यारी निशा—वर्षा के कवित्त, छंद ७वाँ
२. गांस गँसीली ये बातें छिपाइए—होरी के कवित्त, छंद १९वाँ
३. देवन की औ रमापति की—काम विहार, छंद ८वाँ

३९९।३५८

(१२) नरेश कवि । नायिका भेद का कोई ग्रन्थ बनाया है, क्योंकि इनके कवित्तों से यह बात पाई जाती है ।

सर्वेक्षण

नरेश के सम्बन्ध में कोई सूचना सुलभ नहीं ।

---

(१) राधाकृष्ण भक्ति ग्रन्थावली, पृष्ठ २०२-३ (२) हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ ३४८

४००।३५६

(१३) नवीन कवि। इनके शृङ्गार रस के बहुत ही सुन्दर कवित्त हैं।

सर्वेक्षण

नवीन का असल नाम गोपाल सिंह था। यह वृन्दावन निवासी कायस्थ थे। जयपुर वाले ईश कवि इनके काव्य-गुरु थे। यह नाभा नरेश मालवेन्द्र महाराज जसवंत सिंह तथा उनके पुत्र देवेन्द्र सिंह के आश्रित थे। इनके वंशज अब भी अलवर राज्य के आश्रित हैं। इनके निम्नलिखित ग्रन्थ खोज में मिले हैं :—

१. नेह निदान—१९०५।३९। यह नायिका भेद का ग्रन्थ है। प्रतिलिपिकाल सं० १९०७ है।

२. प्रबोध रस सुधा सागर या सुधारस या सुधा सर—१९३५।६९ ए बी, १९४७।१८५ यह अत्यन्त श्रेष्ठ संग्रह ग्रन्थ है। इसकी रचना सं० १८९५ में हुई :—

प्रभु[१] सिधि[८] कबि रस[९] तत्व[५] गिन संवतसर अवरेख
अर्जुन शुक्ला पंचमी सोम सुवासर लेख

यह संग्रह श्री जसवंत सिंह की आज्ञा से प्रस्तुत किया गया। इसमें शृङ्गार, व्रज रसरीति, राज समाज, नीति, भक्ति, दान लीला, गोपी-कृष्ण प्रश्नोत्तर, विविध जानवरों और पक्षियों की लड़ाई का वर्णन, और वीर रस की रचनाओं का संग्रह है। इस ग्रन्थ में २५७ पुराने कवियों की कविताएँ संकलित हैं। इस संग्रह में ऐसी रचनाएँ संकलित हैं, जो सामान्यतया अन्य संग्रहों में दुर्लभ हैं। रिपोर्ट में केवल १८६ संकलित कवियों की सूची दी गई है। इसका नायिका भेद वाला अंश, वह भी अपूर्ण रूप में, सुधा सर नाम से बहुत पहले भारत जीवन प्रेस, काशी, से प्रकाशित हुआ था। ग्रन्थ के प्रकाशन की व्यवस्था होनी चाहिए। इस संग्रह में २६९ दोहे, २२९५ कवित्त सवैये, ३५ छप्पय, ३ कुण्डलियाँ, १० बरवै और ४ चौपाइयाँ हैं। इस ग्रन्थ के अन्त में एक ही नाम वाले और दो-दो नाम से कविता करने वाले कवियों की सूची दी गई है। उपयोगिता की दृष्टि से ये सूचियाँ प्रस्तुत ग्रंथ के भूमिका भाग में दे दी गई हैं। नवीन के दो अन्य ग्रन्थ सरसरस और रङ्गतरङ्ग हैं। विनोद (१७९५) के अनुसार रङ्गतरङ्ग का रचनाकाल सं० १८९९ है। यह ग्रन्थ १८९८ में प्रारम्भ हुआ—

प्रभु[१] सिधि[८] निधि[९] पर सिध[८] सरस् सुभ संवत सुखसार
लीनों 'रङ्गतरङ्ग' वर ग्रन्थ आइ अवतार[१]

इसकी समाप्ति १८९९ में हुई :—

ठारह सै निन्यानवे संवत सर निरहार
माधव सुकला तीज गुरु भयो ग्रन्थ अवतार[२]

यह ग्रन्थ इण्डिया लिटरेचर सोसाइटी द्वारा मुरादाबाद में १९०० वि० में छपा भी था।[३] इन नवीन के अतिरिक्त दो नवीन और हैं :—

१. नवीन भट्ट, विलग्राम, हरदोई के रहनेवाले। जन्मकाल स० १८९८; भक्त थे तथा बड़ी

(१-३) हिन्दी साहित्य का बृहत इतिहास, भाग ६, पृष्ठ ४११

सरस और मनोहर कविता करते थे। यह शिव तांडव भाषा तथा महिम्न भाषा के रचयिता हैं।[1]

२. नवीन--शृङ्गार शतक के रचयिता। प्राप्त प्रति क्वार सुदी ७, सं० १८३५ की लिखी है। यह कवि सरोज के नवीन का पूर्ववर्ती है।[2]

४०१।३२४

(१४) नवनिधि कवि। इनकी कविता बहुत सरस है।

सर्वेक्षण

नवनिधि दास, लखौनिया, रसड़ा, जिला बलिया के निवासी कबीर पंथी कायस्थ थे। यह चनरू राम उपनाम रामचन्द्र के शिष्य थे। इनके पुत्र का नाम रामखेलावन था। खोज में इनके दो ग्रन्थ मिले हैं :—

१. संकट मोचन—१९०९।२१२। इस ग्रन्थ के मंगलाचरण से इनका निर्गुनियाँ होना सिद्ध है। इससे इनके गुरु का नाम रामचन्द्र ज्ञात होता है :—

सत्त नाम सहिब धनी, सत्गुरु चंद्दुराम
दास खास नवनिद्धि है, नमो नमो सुख धाम

इस ग्रन्थ में भगवत्स्तुति सम्बन्धी ४० सवैये हैं, जिनमें से प्रत्येक का अंतिम चरण एक ही है।

नवनिद्धि बिहाल पुकारत आरत क्यों मेरी बेर तू देर लगायो

२. मंगल गीता—१९१४।१२१। इस ग्रन्थ की रचना सं० १९०५ में हुई :—

तिरपन छप्पै जानिए, कृष्ण चरित सुभ सिद्धि
संमत उनइस सौ पांच है भाषेउ जन नवनिद्धि

इस ग्रन्थ में निम्नलिखित विषय हैं—१. गङ्गा, २. कृष्ण पुकार, ३. ककहरा निर्गुण-सगुण के पद, ४. फगुवा, ५. बारहमासा, ६. सिद्धांत, ७. रामखेलावन वाक्य।

४०२।३६५

(१५) नाभादास कवि, नाम नारायण दास महाराज दक्षिणी, सं० १५४० में उ०। इनको स्वामी अग्रदास जी ने गलता नाम इलाके आमेर में लाकर अपना शिष्य बनाकर भक्तमाल नामक ग्रन्थ लिखने की आज्ञा की। नाभा जी ने १०८ छप्पै छन्दों में इस ग्रन्थ को रचा। पीछे स्वामी प्रियादास वृंदावनी ने इसका तिलक कवित्तों में किया। फिर लाल जी कायस्थ कांधला के निवासी ने सन् ११५८ हिजरी में उसीका टीका बनाकर 'भक्त उरबसी' नाम रक्खा। इन दिनों उसी भक्तमाल को महा रसिक भगद्भक्त तुलसीराम अगरवाल भीरापुर निवासी ने उर्दू में उल्था कर 'भक्तमाल प्रदीप' नाम रक्खा है। नाभादास की विचित्र कथा भक्तमाल में लिखी है।

---

(१) विनोद कवि संख्या २२३२ (२) खोज रि० १९२६।३३०

सर्वेक्षण

सरोज एवं ग्रियर्सन (५१) के अनुसार भक्तमाल में १०८ छप्पय हैं। माला के अनुरूप यह संख्या ठीक है भी। शुक्ल जी के अनुसार इस ग्रन्थ में २०० भक्तों के चमत्कार पूर्ण चरित्र ३१६ छप्पयों में लिखे गए हैं।[1] इस समय जो भी भक्तमाल मुद्रित या हस्तलिखित रूप में उपलब्ध हैं, उनमें कुल २१४ छंद (१७ दोहे[2] और १९७ छप्पय) हैं। स्पष्ट है कि भक्तमाल में परिवर्द्धन हुआ है। इसमें कुल ८९ छप्पय बाद में जोड़े गए।

सामान्यतया नाभादास भक्तमाल के रचयिता समझे जाते हैं और नारायनदास इनका मूल नाम समझा जाता है। मेरी धारणा है कि नारायनदास और नाभादास दो भिन्न-भिन्न व्यक्ति हैं और नारायनदास मूल भक्तमाल के कर्त्ता हैं तथा नाभादास परिवर्द्धित अंश के। जिस रूप में भक्तमाल आज उपलब्ध है, वह नाभादास का दिया हुआ है, अतः यही भक्तमाल के रचयिता के रूप में प्रख्यात हैं।

भक्तमाल की रचना विद्वानों के अनुसार गोसाईं विट्ठलनाथ की मृत्यु (सं० १६४२) के पश्चात् और गोस्वामी तुलसीदास की मृत्यु (सं० १६८०) के पूर्व किसी समय हुई, क्योंकि भक्तमाल में विट्ठलनाथ का स्मरण भूतकाल में और तुलसीदास का स्मरण वर्तमान काल में हुआ है। भक्तमाल के आधुनिक और गद्य टीकाकार रूपकला जी इसका रचनाकाल सं० १६४९ देते हैं। इन्हीं के अनुसार सं० १६५२ में श्री कान्हरदास के भण्डारे में समवेत महानुभावों ने मिलकर नाभादास को गोस्वामी की पदवी दी। नाभादास का देहावसान सं० १७१९ में हुआ,[3] अतः सरोज में दिया सं० १५४० अशुद्ध है।

ग्रियर्सन (५१) के अनुसार नाभादास ने एक सौ आठ छप्पयों में भक्तमाल रचा, फिर इनके शिष्य नारायणदास ने शाहजहाँ के शासनकाल में इसे पुनः लिखा। नारायणदास नाभादास के शिष्य नहीं थे, ज्येष्ठ गुरु भाई थे। जो हो, ग्रियर्सन भी भक्तमाल का संयुक्त कर्तृत्व मानते हैं। भक्तमाल की रचना अग्रदास की आज्ञा से हुई :—

> **अग्रदेव आज्ञा दई, भक्तन कौ यश गाव**
> **भव सागर के तरन को नाहिन और उपाउ ४**

मूल भक्तमाल के रचयिता नारायणदास हैं। इनका नाम ग्रन्थान्त में आया है। नाभादास का नाम कहीं भी नहीं आया है।

> **काहू के बल जोग जग, कुल करनी की आस**
> **भक्त नाम माला अगर उर (बसो) नरायनदास २१४**

इस ग्रन्थ के दो छप्पय अग्रदास के हैं। इनमें अग्रदास की छाप है :—

> कविजन करत विचार बड़ौ कोउ ताहि भनिज्जै
> कोउ कह अवनी बड़ी जगत आधार फनिज्जै
> सो धारी सिर सेस सेस शिव भूषन कीनौ
> शिव आसन कैलास भुजा भर रावन लीनौ

---

(१) हिंदी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ १४७ (२) भक्तमाल, छंद संख्या १-४, २९, २०३-१४ (३) भक्तमाल सटीक, भक्तिसुधा स्वाद तिलक, पृष्ठ ९९३

रावन जीत्यो कालि, बालि राघो इक सायक दद्दे
अगर कहे त्रैलोक में हरि उर धरे तेई बड़े २००
नेह परस्पर अघट निबहि चारों जुग आयौ
अनुचर कौ उतकर्ष श्याम अपने मुख गायौ
ओत प्रोत अनुराग प्रीति सबही जग जाने
पुर प्रवेश रघुवीर भृत्य कीरति जु बखाने
अगर अनुग गुन बरनते सीतापति नित होंय बस
हरि सुजस प्रीति हरिदास के त्यों भावैं हरिदास जस २०१

संभवत: नाभादास ने श्रद्धापूर्वक गुरु के इन छप्पयों को अपने छप्पयों के साथ मूल ग्रन्थ में जोड़ दिया है। भक्तमाल का रचनाकाल संवत १६४९ है, पर उपलब्ध भक्तमाल में एकाध ऐसे भी भक्त हैं जिनका उस समय जन्म भी नहीं हुआ रहा होगा, जैसे :—

कुंजबिहारी केलि सदा अभ्यंतर भासै
दम्पति सहज सनेह प्रीति परमिति परकासै
आनि भजन रस रीति पुष्ट मारग करि देखी
विधि निषेध बल त्यागि पागि रति हृदय बिसेखी
माधव सुत सम्मत रसिक तिलक दाम धरि सेव लिय
भगवन्त मुदित उदार जस रस रसना आस्वाद किय १९८

माधवदास के पुत्र भगवन्त मुदित आगरे के सूबेदार के मुख्य मंत्री थे। यह वृन्दावन के गोविन्ददेव के मन्दिर के अधिकारी श्री हरिदास जी के शिष्य थे। इनके लिखे हुए निम्नांकित चार ग्रन्थ खोज में प्राप्त हुए हैं :—

१. हित चरित्र—१९०९।१३ ए
२. सेवक चरित्र—१९०९।२३ बी
३. रसिक अनन्य माला—१९०९।२३ सी
४. वृन्दावन शतक—१९१२।२१

इनमें से वृन्दावन शतक का रचनाकाल सं० १७०७ है :—

सम्बत दस सै सात सै अरु सात वर्ष हैं जानि
चैत मास में चतुर वर भाषा कियो बखानि

जिन भगवन्त मुदित का रचनाकाल सं० १७०७ है, वे सं० १६४९ के पूर्व प्रसिद्ध भक्त और महात्मा के रूप में कदापि नहीं उपस्थित रहे होंगे, संभवतः उस समय उत्पन्न भी नहीं हुए रहे होंगे। अतः यह बाद में जोड़े हुए लोगों में से हैं और यह छप्पय स्पष्ट ही नाभादास रचित है। इसी प्रकार एक भक्त गोविन्द दास भक्तमाली हैं, जिनका विवरण निम्नांकित छप्पय में है :—

रुचिर सील घन नील लील रुचि सुमति सरितपति
विविध भक्त अनुरक्त व्यक्त बहु चरित चतुर अति

लघु दीरघ सुर सुद्ध वचन अविरुद्ध उचारन
विस्व वास विस्वास दास परिचै विस्तारन
जानि जगत हित सब गुननि सु सम नरायन दास दिय
भक्त रत्न माला सुधन गोविन्द कंठ विकास किय १९२

इन गोविन्ददास को सम्पूर्ण संसारी जीवों का हित करने वाला और सब शुभ गुणों में अपने समान जानकर नारायणदास ने इन्हें भक्तमाल पढ़ा दिया था। यह उसका अत्यन्त शुद्ध पाठ करते थे। इस छप्पय से स्पष्ट है कि मूल भक्तमाल के रचयिता नारायणदास थे और मूल भक्तमाल में यह छप्पय नहीं था। इसे बाद में नाभादास ने जोड़ा। यदि यह छप्पय नारायनदास का ही होता, तो इन्होंने यह लिखा होता कि मैंने गोविन्ददास को भक्तमाल पढ़ाया। वे यह कदापि न लिखते कि नारायनदास ने पढ़ाया। जिस समय भक्तमाल रचा गया था, उस समय यह गोविन्ददास संभवतः बच्चे रहे होंगे। मेरी धारणा है कि छप्पय ५-२८, जिनमें पौराणिक भक्तों का उल्लेख है, बाद की जोड़ तोड़ हैं। पहले २९ वाँ दोहा प्रारम्भ के चार दोहों के साथ पांचवें छन्द के रूप में रहा होगा।

छप्पय २०२ या तो अग्रदास की कृति होगा अथवा नाभादास का। २००-२०१ संख्यक छप्पय तो अग्रदास कृत हैं ही। ६० छप्पय और भी नाभादास कृत होने चाहिये। भक्तमाल के एक छप्पय में प्रायः एक ही भक्त का विवरण है। कुछ छप्पय ऐसे भी हैं, जिनमें एक कोटि के बहुत से भक्तों का सामूहिक नामोल्लेख हुआ है, यथा ३२-३४, ४९-५८,६९,७८,८२,८५,९५-१०७,१०९, ११२-११४,११६-१२२, १३५,१३६,१३८,१४१-५१,१५३-५८ आदि ६१ छप्पय। मेरा विश्वास है कि भक्तों का सामूहिक रूप से उल्लेख करने वाले ये छप्पय भी नाभादास के हैं। भक्तों की माला में एक भक्त एक मनका के समान होना चाहिये। बहुत से भक्तों को एक मनका बना देना ठीक नहीं प्रतीत होता। नारायणदास ने भक्तमाल को माला का रूप दिया था, नाभादास ने उसे परिवर्द्धित अवश्य किया, पर उसका माला का रूप जाता रहा। नाभादास के अष्टयाम से भी इनकी नारायण-दास से भिन्नता सिद्ध होती है। नाभा ने इस ग्रंथ में नारायणदास को अपने से भिन्न व्यक्ति के रूप में स्मरण किया है :—

सहचर श्री गुरुदेव के नाम नरायनदास
जगत प्रचुर सिय सहचरी विहरत सकल विलास ४
भवसागर दुस्तर महा मोहि मगन लखि पाइ
सदय हृदय जिनको सरस तब यह भई रजाय ५

—खोज रिपोर्ट १९२०।१११

स्पष्ट है कि नारायणदास और नाभादास दोनों ही अग्रदास के शिष्य थे, नारायणदास वय में नाभा से पर्याप्त बड़े थे, संभवतः अग्रदास के वय के थे, इसी से इन्हें उनका सहचर कहा गया है।

नाभादास को अग्रदास और कील्हदास ने अकाल की दशा में किसी बन में पाया था। उस समय इनकी अवस्था ५ ही वर्ष की थी। कुछ लोग इन्हें क्षत्रिय कहते हैं, कुछ हनुमानवंशीय डोम। मेरा ऐसा ख्याल है कि इनमें से एक जाति नारायणदास की है, दूसरी नाभादास की। जिस तरह इनके नाम मिल गये, उसी तरह इनकी जाति भी। नाभादास संवभतः डोम थे। डोम से अभिप्राय शूद्र

(१) भक्तमाल सटीक, भक्तिसुधा स्वाद तिलक, पृष्ठ ९५१

बँसफोड़ डोमड़े से नहीं है। यह भांट, चारण, कत्थक के समान गायकों की एक उत्तम जाति है, जैसा कि इस कहावत से प्रकट है—

"नाच न जाने डोमनी, गावे ताल बेताल।"

भक्तमाल के अंश-कृतित्व के अतिरिक्त नाभा की दो रचनाएँ और हैं। इन दोनों का नाम अष्टयाम है। एक गद्य में है, दूसरा पद्य में। शुक्ल जी ने दोनों का उल्लेख किया है।[१] पद्यबद्ध अष्टयाम की एक प्रति खोज में मिली है।[२] इसमें अनेक बार कवि का नाम आया है—

१—ललित अंग सुख आभहि नाभहि देहु
पीतम लाल पियरवा यह जसु लेहु
२—श्री अग्र अगर सागर सुमन, नाभा अलि रस लीन्ह
अष्टजाम सिय राम गुन, जलधि कीन्ह मन मीन
३—नाभा श्री गुरु दास, सहचर अग्र कृपाल को
विहरत सकल विलास, जगत विदित सिय सहचरी

गुरु के रूप में अग्रदास का भी उल्लेख अनेक बार हुआ है :—

१—श्री अग्रदेव करुणा करी, सिय पद नेह बढ़ाय
२—श्री अग्रदेव गुरु कृपा ते बाढ़ी नवरस बेलि

खोज में एक और पद्यबद्ध अष्टयाम नाभा के नाम पर चढ़ा[३] है। केवल पुष्पिका में नाभा का नाम आया है। ग्रंथ अग्रअली के नाम से वर्णित अष्टयाम[४] से मिलता है, ऊपर वर्णित नाभा के अष्टयाम से नहीं। यही ग्रंथ अन्यत्र रामचरित्र[५] के नाम से नारायणदास का कहा गया है। संभवतः दोहा-चौपाई वाला यह अष्टयाम या रामचरित्र अग्रअली या अग्रदास का है। तीनों प्रतियों का अंतिम अंश एक ही है। प्रारम्भिक अंश में अन्तर अवश्य है। बिना सम्पूर्ण ग्रन्थ को देखे निश्चयपूर्वक कुछ नहीं कहा जा सकता है। नाभादास अग्रदास द्वारा राम भक्ति में चलाये गये सखी-सम्प्रदाय के वैष्णव थे।

अग्र सुमति को वंस उदारा
अली भाव रति जुगल विहारा—खोज रिपोर्ट १९२३।२८९ ए

४०३।३२७

(१६) नरवाहन जी, कवि, भौगांव निवासी, सं० १६०० में उ०। यह कवि स्वामी हित हरिवंश जी के शिष्य थे। इनके पद बहुत विचित्र हैं, इनकी कथा भक्तमाल में है।

---

(१) हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ १४८ (२) खोज रिपोर्ट १९२३। २८९ ए (३) खोज रिपोर्ट १९२०।१११ (४) खोज रिपोर्ट १९०९।२ (५) खोज रिपोर्ट १९२३।२८९ सी

सर्वेक्षण

भक्तमाल छप्पय १०५ में २२ भक्तों की नामावली के अन्तर्गत नरवाहन का भी नाम है। प्रियादास ने नरवाहन की कथा एक कवित्त में दी है :—

> रहै भव गांव नांव नरवाहन साधु सेवी,
> लूटि लई नाव जाकी बंदी खाने दियौ है।
> लौंड़ी आवै दैन कछु खायबें कौं, आई दया,
> अति-अकुलाई, लै उपाय यह कियौ है।
> बोलो राधा बल्लभ औ लेओ हरिवंश-नाम,
> पूछै सिष्य नाम कहौ, पूछी, नाम लियौ है।
> दई मँगवाय वस्तु राखि या दुराय बात,
> आप दास भयौ कहीं रीझि पद दियो है॥

नरवाहन छाप के केवल दो पद मिलते हैं। ये दोनों पद हितचौरासी के ११, १२ संख्यक पद हैं। यह आश्चर्य की बात है कि नरवाहन के पद हित हरिवंश के ग्रंथ में मिलें और वे हरिवंश जी के ही समझे जायें। इन पदों के सम्बन्ध में नागरीदास ने अपने गद्य ग्रन्थ पद प्रसंगमाला में एक कथा दी है। यह कथा प्रियादास के ऊपर उद्धृत कवित्त की कथा से बहुत कुछ मिलती-जुलती है। नागरीदास के अनुसार नरवाहन जमींदार थे। यह राहजनी भी किया करते थे। एक बार इन्होंने एक व्यक्ति को लूटा और उसे कैद कर लिया। वह व्यक्ति हित हरिवंश के पदों का प्रतिदिन पाठ किया करता था। बिना पाठ पूरा किए अन्न नहीं ग्रहण करता था। नरवाहन को जब यह ज्ञात हुआ कि वह वंदी हरिवंश जी का शिष्य है, तब उन्होंने उसे तत्काल छोड़ ही नहीं दिया उसका सारा धन लौटा देने के साथ-साथ अपनी ओर से भी बहुत कुछ दिया, क्योंकि यह भी हरिवंश जी के शिष्य थे और वह वंदी इनका गुरुभाई था। जब नरवाहन की इस गुरु भक्ति का पता हरिवंश जी को चला, तो उन्होंने प्रसन्न होकर अपने दो पदों में इनके नाम की छाप देकर हित चौरासी में सम्मिलित कर लिया। इस प्रसंग से सिद्ध होता है कि नरवाहन हरिवंश के शिष्य थे, इनके नाम पर हित चौरासी में मिलने वाले दोनों पद वस्तुतः हरिवंश जी के हैं, इनके नहीं।[१]

नरवाहन का निवास स्थान भौगांव नहीं, भैगांव है। भैगांव मथुरा जिले में यमुना के इसी पार स्थित है। इनके बनाए दो ग्रन्थ हैं—१—दान वेलि, २—पदावली।[२]

हितहरिवंश का समय सं० १५५९-१६०९ है। अतः सरोज में दिया हुआ नरवाहन का सं० १६०० उपस्थितिकाल ही है। संप्रदाय के मान्यता के अनुसार यह सं० १५७० में उत्पन्न हुए थे।[३]

---

(१) नागरी प्रचारिणी पत्रिका, हीरक जयंती अंक में प्रकाशित 'नरवाहन और हित चौरासी' शीर्षक मेरा लेख। (२) राधाबल्लभ सम्प्रदाय और साहित्य, पृष्ठ १०९, ५९७ (३) साहित्य, वर्ष ८, अंक २—'राजा नरवाहन' शिर्षक लेख।

४०४।३६६

(१७) नरसिया कवि अर्थात् नरसी, जूनागढ़ निवासी, सं० १५६० में उ०। इनके पद रागसागरोद्भव में हैं।

सर्वेक्षण

महा स्मारत लोग, भक्ति लौलेस न जानैं।
माला मुद्रा देखि तासु की निंदा ठानैं॥
ऐसे कुल उत्पन्न भयौ, भागौत सिरोमनि।
ऊसर तें सर कियो खंड दोषहिं खोयो जिनि॥
बहुत ठौर परचौ दियो रस रीति भक्ति हिरदे धरी।
जगत विदित नरसी भगत, जिन गुज्जर धर पावन करी॥

—भक्तमाल, छंद १०८

भक्तमाल के इस छप्पय से स्पष्ट है कि नरसी गुजरात की धरा को पवित्र करने वाले थे। प्रियादास ने २७ कवित्तों में इनके चमत्कार पूर्ण जीवन का विवरण दिया है। प्रथम कवित्त के प्रथम शब्द से ही इनका जूनागढ़ वासी होना प्रकट होता है :—

जूनागढ़ वास, पिता माता तन बास भयो।
रहे एक भाई औ भौजाई रिस भरी है॥ ४२१

रूपकला जी के अनुसार नरसी मेहता का जन्मकाल सं० १६०० और मृत्यु काल १६५३ है।[१] विनोद (१३६) में इनका रचनाकाल सं० १६३० ठीक ही दिया गया है। विनोद में इन्हें स्फुट पद और सामलदास का विवाह का कर्ता माना गया है। ग्रियर्सन २८ में नरसी के स्थान पर नरमी और नरसिया के स्थान पर नरमिया पाठ है। सरोज के तृतीय संस्करण में भी यही पाठ है, यही पाठ द्वितीय संस्करण में भी रहा होगा, और ग्रियर्सन ने मक्षिका स्थाने मक्षिका रख दिया।

४०५।३६६

(१८) नवखान कवि, बुन्देलखण्डी, सं० १७९२ में उ०। इनके कवित्त सुन्दर हैं।

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध में कोई सूचना सुलभ नहीं। यह रीतिकालीन कोई अत्यन्त साधारण कवि हैं। सरोज में उद्धृत इनका एक मात्र प्राप्त कवित्त सरोज में ही उद्धृत अकबर के दूसरे सवैये की पूर्ण छाया मात्र है।

४०६।३२६

(१९) नारायण भट्ट गोसाईं, गोकुलस्थ, ऊँचगाँव बरसाने के समीप के निवासी, सं० १६२० में उ०। इनके पद रोगसागरोद्भव में हैं। यह महाराज बड़े भक्त थे। वृन्दावन मथुरा, गोकुल इत्यादि में जो तीर्थस्थान लुप्त हो गए थे, उन सब को प्रकट कर रासलीला की जड़ इन्होंने प्रथम डाली है।

---

(१) भक्तमाल, पृष्ठ ६७४

सर्वेक्षण

नारायण भट्ट के दो ग्रन्थ खोज में मिले हैं :—

१. गोवर्द्धन लीला—१६४४।१६२ क

२. स्वामिनी जी का ब्याह—१६४४।१६२ ख

भक्तमाल के सहारे सरोज वर्णित इनका सब विवरण सत्य सिद्ध हो जाता है।

गोप्य स्थल मथुरा मंडल जिते बाराह बखाने।
ते किए नारायण प्रगट प्रसिद्ध पृथ्वी में जाने॥
भक्ति सुधा कौ सिंधु सदा सतसंग समाजन।
परम रसज्ञ अनन्य कृष्ण लीला को भाजन॥
ज्ञान समारत पच्छ को, नाहिन कोउ खंडन बियौ।
ब्रज भूमि उपासक भट्ट सो, रचि पचि हरि एकै कियो॥ ८७

बाराह पुराण वर्णित व्रज के सभी तीर्थों की खोज आपने की थी। प्रियादास ने भी एक कवित्त में इनका विवरण दिया है :—

भट्ट श्री नारायन जु भए ब्रज परायन,
जायं याही ग्राम तहां व्रत करि आए हैं॥
बोलि कै सुनावैं इहां अमुकौ सरूप है जू,
लीला कुंड धाय स्याम प्रगट दिखाए हैं॥
ठौर ठौर रास के विलास लै प्रकास किए,
जिए यौं रसिकजन कोटि सुख पाए हैं॥
मथुरा ते कही, चलौ बेनी, पूछै बेनी कहां,
ऊंचे गांव आप खोदि सोत लै लखाए हैं॥ ३५६

ऊंचे गाँव का उल्लेख यहाँ अवश्य हुआ है, पर यह नहीं कहा गया है कि यह नारायण भट्ट का निवास स्थान था। नारायण भट्ट का उल्लेख एक और छप्पय में भी हुआ है :—

श्री नारायण भट्ट प्रभु परम प्रीति रस बस किए
ब्रज वल्लभ बल्लभ परम दुर्लभ सुख नैननि दिए ८८

इन बल्लभ के लिए वर्तमानकाल और अब का प्रयोग किया गया है :—

"अब लीला ललितादि बलित दंपतिहि रिझावत"

इससे स्पष्ट है कि यह वल्लभ भक्तमाल के रचनाकाल सं० १६४६ में विद्यमान थे। ऐसी स्थिति में यह प्रसिद्ध महाप्रभु बल्लभाचार्य (मृत्यु सं० १५८७) नहीं है। सं० १६२० इन नारायण भट्ट का जन्मकाल नहीं हो सकता, यह उनका उपस्थितिकाल है। यदि इसे जन्मकाल माना जायगा, तो सं० १६४६ में इनकी वय केवल २६ वर्ष की होगी और यह वय प्रसिद्ध साधु महात्मा बनने के लिए अत्यन्त कम है।

नारायण भट्ट का जन्मकाल संवत् १५८८ माना जाता है और तिरोधान संवत् १७०० के कुछ

पहले अनुमान किया जाता है। इनकी तिरोधानतिथि वामन द्वादशी है। यह दक्षिणात्य ब्राह्मण थे। इन्होंने ब्रज भक्तिविलास, ब्रज प्रदीपिका, ब्रजोत्सव चन्द्रिका, ब्रज महोदधि, ब्रजोत्सवाह्लादिनी, बृहत् ब्रजगुणोत्सव, ब्रज प्रकाश, ये सात ग्रन्थ राधाकुण्ड में रहकर लिखे थे, फिर ऊँचे गाँव में रहकर ५२ ग्रंथ लिखे। भक्ति भूषण संदर्भ, भक्ति विवेक, भक्ति रस तरंगिणी, साधन रसिकाह्लादिनी (भागवत की टीका) दीपिका, प्रभांकुर नाटक आदि भी आपके ग्रन्थ है। नीमरावा (अलवर) में इनके वंशज और इनके सेवक ठाकुर श्री लाड़िले जी विराजमान हैं।[1] रास लीला के प्रवर्तक हितहरिवंश जी हैं।[2]

४०७।३२१

(२०) नारायण राय, बंदीजन, बनारसी, कवि सरदार के शिष्य २, विद्यमान हैं। इन्होंने भाषाभूषण का तिलक कवित्तों में और कवि प्रिया का टीकावार्तिक बनाया है। शृङ्गार रस के बहुतेरे कवित्त इनके हमारे पास हैं। ग्रन्थ कोई नहीं हैं।

सर्वेक्षण

नारायण राय प्रसिद्ध कवि सरदार बनारसी के शिष्य थे। यह सरदार के अनेक साहित्यिक कार्यों में उनके सहयोगी भी रहे हैं। रसिकप्रिया की टीका में सरदार ने यह स्वयं स्वीकार किया है।

> कहुँ कहुँ नारायण कियो याको तिलक अनूप
> चित्त वृत्ति दै करि कृपा मुदित भए सब भूप २०

रसिक प्रिया की टीका सं० १९०३ में प्रस्तुत की गई :—

> शिवद्दग[3] गगनो[0] ग्रह[9] सु पुनि रदगनेस[1] को साल
> जेठ शुक्ल दसमी सु गुरु करो ग्रंथ सुख माल १७

उस समय तक नारायण जी पर्याप्त प्रौढ़ बुद्धि वाले हो गए रहे होंगे, तभी तो रसिक प्रिया जैसे प्रौढ़ ग्रंथ की टीका में उनका भी कुछ हाथ रहा। सरदार ने सं० १९०५ में शृङ्गार संग्रह प्रस्तुत किया। इसमें भी नारायण के बहुत से छंद हैं। इस समय तक यह प्रौढ़ कवि भी हो गए थे। इससे सहज ही अनुमान किया जा सकता है कि यह सं० १८७५ के आस-पास किसी समय उत्पन्न हुए रहे होंगे। यह भारतेन्दु युग में भी जीवित रहे होंगे। इनके गुरु सरदार की मृत्यु भारतेन्दु की मृत्यु के दो साल पहले सं० १९४० में हुई थी।

नारायण राय ने सं० १९२५ में उद्धवब्रजगमन चरित्र नामक ग्रंथ धरंगधर के राजा राममल्ल सिंह के लिए बनाया था। यह काशी के सोनारपुरा महल्ले के रहने वाले थे। इनके पिता का नाम भवानी दीन था। यह जाति के भाट थे।[3]

---

(१) सर्वेश्वर, वर्ष ५, अंक १-५, चैत्र २०१३, पृष्ठ २६१-६२ (२) राधा बल्लभ संप्रदाय, सिद्धान्त और साहित्य, पृष्ठ २७७-९० (३) खोज रि० १९०६, पृष्ठ ४६८

विनोद में इस एक कवि का विवरण १५२४,२१५२, २४५७ संख्याओं पर तीन-तीन बार हुआ है। इस घपले की भी कोई हद है।

४०८।३६४

(२१) नारायणदास कवि ३, सं० १६१५ में उ०। इन्होंने हितोपदेश राजनीति को भाषा में छंदोवद्ध रचा है।

सर्वेक्षण

हितोपदेश की ११ प्रतियाँ खोज में मिली हैं। इनसे यह ज्ञात होता है कि ग्रन्थकर्ता का नाम नारायण था।[1] सबसे पुरानी प्रति[2] की पुष्पिका में इसे भट्ट नारायण-कृत कहा गया है। भट्ट नारायण नाम के आधार पर ऊँच गांव वाले ४०६ संख्यक नारायण भट्ट से इनका अभेद स्थापित किया जा सकता है। सरोज में दिए दोनों के समय में केवल ५ वर्षों का अंतर है।

राजनीति की दो प्रतियाँ खोज में मिली हैं।[3] यह चाणक्य का भाषानुवाद है। इसके अनुवादक भी यही नारायण प्रतीत होते हैं। अनुवाद और विषय की दृष्टि से यह अनुमान असंगत नहीं प्रतीत होता। इस नाम के और भी अनेक कवि मिले हैं।

४०६।३६७

(२२) नारायणदास वैष्णव ४। इन्होंने छंदसार पिंगल बनाया है, जिसमें ५२ छंदों का वर्णन है। ग्रन्थ में सन्-संवत् नहीं लिखे हैं।

सर्वेक्षण

छंदसार पिंगल[4] खोज में मिल चुका है। इसी ग्रन्थ की प्रतियाँ पिंगल छंद[5] और पिंगल मात्रा[6] नाम से भी मिली हैं। ग्रंथ सं० १८२६ में चित्रकूट में बना। इसमें कुल ५२ छंदों का वर्णन है।

> संवत अष्टादस जु सत, अरु उनतीस मिलाइ
> भादौं चौदसि वार गुरु, कृष्ण पक्ष सुखदाइ
>
> —१६०६।७८ ए, छंद १०४, १९१७।१२३ ए छन्द ५०
>
> द्वादस अरु चालीस ए, छंद जु किए प्रकास
> चित्रकूट महँ ग्रंथ यह, कियो नरायनदास
>
> —१६०६।७८ सी, छन्द ८७, १९१७।१२३ बी, छन्द ४६

ग्रन्थ का नाम छन्दसार है—

---

(१) खोज रि० १६०४।६०,१६०६।८६,१६२०।११५ ए, बी, १६२३।२६७ ए, बी, सी, डी, १६२६।३२२ ए, बी, सी (२) खोज रि० १६२६।३२२ ए (३) खोज रि० १६२६।३२१ ए, बी (४) खोज रि० १६०६।७८ ए, १६१७।१२३ ए, बी (५) खोज रि० १६२६।३२३ (६) खोज रि० १६०६।७८ सी

श्री गुरु हरि पद कमल को, वंदि मनोज्ञ प्रकास
छंद सार यह ग्रंथ सुभ, करत नरायनदास १

इनमें ५२ छन्दों का वर्णन है—

पिंगल छंद अनेक हैं, कहे भुजंगम ईस
तिनते लिए निकारि मैं, द्वादस अरु चालीस २

ये दोनों दोहे सरोज में भी हैं। ग्रन्थ पिंगल का तो है ही, साथ ही हरि भक्ति का भी है।

बुधि को विलास, हरि नाम को प्रकास जामें
नारायनदास कियो ग्रन्थ छंदसार है

—१९०६।७८ ए, छन्द १०१, १९१७।१२३ बी, छन्द ४८

खोज में इनका एक ग्रन्थ 'भाषाभूषण की टीका' और मिला है। ग्रन्थ की पुष्पिका से स्पष्ट है कि ग्रन्थ इन्हीं का है :—

"इति भाषा भूषनं श्री राजा जसवन्त सिंघ कृतं तस्य: टीका वैस्नव नारायनदास:"

—खोज रि० १९०६।७८ बी

इस टीका का नाम 'रहस्य प्रकाशिका' है। यह राम सिंह महाराज के लिए लिखी गई—

राम सिंह महराज जहं नव रस विविध विलास
टीका रहसि प्रकासिका, कियो नरायनदास

—खोज रि० १९२०।११६

यह टीका सं० १८२८ में लिखी गई :—

अष्टादस संवत जु सत, बरष आठ अरु बीस
गए मास तिथि पूर्णिमा, वासर सुमन दिनीस

रचनाकाल भी सूचित करता है कि यह छन्दसार के रचयिता की ही रचना है। ग्रन्थ के प्रारम्भ में भी इसे 'वैष्णो नारायन कृत' कहा गया है।

४१०।३३३

(२३) निधान कवि १, प्राचीन, सं० १७०८ में उ०। इनकी कविता सरस है। हजारे में इनका नाम है।

सर्वेक्षण

इन निधान का एक ग्रन्थ 'जसवन्त विलास' खोज में मिला है।[१] यह अलङ्कार और नायिका भेद का सम्मिलित ग्रंथ है। इसकी रचना सं० १६७४ में चैत्र शुक्ल १३, सोमवार को हुई।

संवत दिग[४] दिपु[७] सै जहाँ, षोडस[१६] आदि प्रमान
चैत सुकुल तेरस ससी, बरनो सुकवि निधान

प्रतिलिपिकार ने जसवन्त सिंह को महाराज कुमार कहा है, अतः स्पष्ट है यह कहीं के राजा नहीं थे।

---

(१) खोज रि० १९१२।१२३

''इति श्री मन्महाराजकुमार जसवन्त सिंह हेतवे सुकवि निधान विरचितायां जसवन्त विलासे अलंकारदर्पणो नाम सप्त दसमो प्रभाव'' । ग्रन्थ ७२ पन्ने का है और अच्छा है ।

सरोज में दिया हुआ सं० १७०८ कवि का अन्तिम जीवनकाल हो सकता है ।

४११।३३४

(२४) निधान २, ब्राह्मण, सं० १८०८ में उ० । यह राजा अली अकबर खाँ बहादुर मोहम्मदी वाले के यहाँ महान् कवि थे । इन्होंने शालिहोत्र भाषा में बहुत ही अच्छी कविता की है ।

सर्वेक्षण

शालिहोत्र की कई प्रतियाँ खोज में मिली हैं ।[१] ग्रन्थ की रचना सं० १८१२ में वैशाख सुदी ५, बुधवार को हुई :—

संवत बसु[८] दस सै जहाँ उत्तर जानी भानु[१२]
शालिहोत्र भाषा रची नूतन सुकवि निधान २
शुक्ल पक्ष तिथि पंचमी सहित सुभग बुधवार
माधव मास पुनीत अति भयौ ग्रंथ अवतार ३

निधान, अली अकबर खाँ मोहम्मदी, सीतापुर के यहाँ थे । शालिहोत्र की रचना उन्हीं के आदेश से हुई :—

सैयद सबल समत्थ मति मंडल बुद्धि निधान
अकबर अली सभा भली विद्या विदित विधान ४
एक दिना नृप कविन सों दीयो यह फुरमाय
शालिहोत्र है संस्कृत भाषा देहु बनाय ५

ठीक इसी के आगे अकबर की वंशावली वाला छप्पय है, जो सरोज में भी उद्धृत है पर दोनों में पाठान्तर बहुत है । सरोज का पाठ अधिक अच्छा है :—

सदर जहाँ जग जानि सुजस सम वली खस मथ्यो
वली सब जाँ खान दान करि भावर थप्यो
फेरि सैद महमूद सिंचिन वारि दारि करि
मुकुन्द रिम धाव पत्र की है सवाल धरि
खरम सैद साखा सघन वदुल्लाह खान सुमन हुव
दैत सकल मनकामना अली अकबर कल प्रकट तुव

खोज में निधान दीक्षित का एक ग्रन्थ 'बसंतराज' मिला है ।[२] इसकी रचना सं० १८३३ में हुई:—

अष्टादस सत तीस औ, तीन सु संवत जान
भादव कृष्णा त्रयोदसी, मंगल मंगल खान

---

(१) खोज रि० १९१२।१२४, १९२३।२०४ ए, बी, १९२६।३२४, १९४७।१९३ (२) खोज रि० १९१७।१२७

यह ग्रन्थ गङ्गा तट स्थित अनूपशहर, जिला बुलंदशहर के राजा धर्म सिंह की आज्ञा से बना :—

धर्म सिंह भूपाल जहं, सुरसरि सहर अनूप
पूरन कियौ निधान तहं, ग्रंथ सगुन गुन रूप

इस ग्रन्थ में कवि ने राज वंश और कवि वंश का भी वर्णन किया है। धर्म सिंह के पूर्वज अनीराय थे, जो तत्कालीन दिल्ली सुल्तान की सेवा में रहते थे। इनके पुत्र सूरत सिंह, सूरत सिंह के छत्र सिंह, छत्र सिंह के अचल सिंह, अचल सिंह के तारा सिंह और तारा सिंह के धर्म सिंह हुए। निधान अपने बड़े भाई घासीराम के साथ पहले तारा सिंह के तदनन्तर धर्म सिंह के दरबार में रहे। निधान के पिता का नाम नंदराम, पितामह का धरमदास और प्रपितामह का जगन्नाथ था। इनके गुरु का नाम सुखानन्द था।

शालिहोत्र और बसंत राज दोनों के निधान एक ही प्रतीत होते हैं। विनोद में दोनों का अभेद स्वीकृत भी है। प्रतीत होता है कि यह पहले अली अकबर खाँ के यहाँ थे, फिर धर्म सिंह के यहाँ चले आये।

४१२।३२२

(२५) निवाज कवि १, जुलाहा, बिलग्रामी, सं० १८०४ में उ०। इनके शृंगार के अच्छे कवित्त हैं।

सर्वेक्षण

जुलाहा निवाज बिलग्रामी का अस्तित्व मान्य होना चाहिए। शृङ्गारी सवैये इन्हीं के हैं। खोज इनके सम्बन्ध में मौन है।

४१३।३२०

(२६) निवाज कवि २, ब्राह्मण, अंतरवेद वाले, सं० १७३९ में उ०। यह कवि महाराजा छत्रसाल बुन्देला पन्ना नरेश के यहाँ थे। आजमशाह की आज्ञा के अनुसार शकुन्तला नाटक की संस्कृत से भाषा की। एक दोहे से लोगों को शक है कि निवाज कवि मुसलमान थे, पर हमने बहुत जांचा तो एक निवाज मुसलमान और एक निवाज हिन्दू पाए गए।

तुम्हें न ऐसी चाहिए, छत्रसाल महराज
जहं भगवत गीता पढ़ी, तहं कवि पढ़े निवाज

सर्वेक्षण

खोज में इनके दो ग्रंथ मिले हैं :—

१. छत्रसाल विरुदावली—१६१७।१२६ बी। इस ग्रंथ के प्राप्त हो जाने से यह सिद्ध हो जाता है कि निवाज कवि छत्रसाल के दरबार में अवश्य थे। ग्रंथ के आदि और अंत दोनों स्थलों पर निवाज को ग्रन्थकर्ता कहा गया है। इस ग्रन्थ से एक अंश उद्धृत किया जा रहा है, जिसमें कवि और आश्रयदाता दोनों का नाम आ गया है।

यह कवि निवाज मजलिस बनी, जय दुंदुभि धुक्कार किय
छत्रसाल नायक बली, विजय दुलहिया ब्याह लिय

यह छत्रसाल पंचम के वंशज, बुन्देल, और चम्पति राय के पुत्र थे। इन सब का भी उल्लेख यथास्थान छंदों में हुआ है। इसलिए संदेह के लिए रंच भी अवकाश नहीं रह जाता।

१. यह बरनिए विरुदावली पंचम छता छितिपाल की
२. छितिपाल चंपति नंद पूरन चंद सो जग जगमगै
३. जगमगत जंबू दीप में बुन्देल वंश प्रदीप है

ग्रन्थ में रचनाकाल नहीं दिया गया है। छत्रसाल का शासनकाल सं० १७२२-८८ है। इसी बीच किसी समय यह ग्रन्थ रचा गया होगा।

२. शकुन्तला नाटक—१६०३।७५, १६१७।१२६ ए, १६२०।१२०, १६२३।३०३। यह ग्रन्थ आजम खान की आज्ञा से बना। कवि ने आजम खान का पूरा परिचय दिया है।

नवल फिदाई खान के नंदन मुसवी खान
कर कसेर की दै फते मो इक आजम खान २
बखत बिलंद महाबली आज़म खान अमीर
दाता ज्ञाता सूरिमा साचौ सुंदर धीर ३
देखि सूम साहिब सकल जस जग तें उठि आइ
हिम्मत आजम खान के, हिअ में रहो समाइ ४
कलप वृच्छ सब सरन ज्यों करि पायो असमान
त्यों पायो सब गुनन मिलि भू मैं आजम खान ५
आजम खान नवाब कौ भावत सुकवि समाज
तातैं अति ही करि कृपा बोल्यो सुकवि निवाजि ६
आजम खान निवाज की दीनों इहि फुरमाइ
सकुन्तला नाटक हमें भाषा देव बनाइ ७ —खोज रि० १६१७।१२६ए

फिदाई खान के पुत्र मुसवी खान मुसले खान थे।[१] इनके शौर्य और साहस से फर्रुखसियर को फतह मिली थी। अतः इन्हें आजम खान उपाधि मिली। फर्रुखसियर का शासनकाल सं० १७७०-७६ है। अतः मुसवी खान या मुसलेखान सं० १७७० में आजम खान हुए रहे होंगे और इसी के आस-पास शकुन्तला नाटक की रचना हुई रही होगी। आचार्य शुक्ल ने इस ग्रन्थ का रचनाकाल सं० १७३७ दिया है।[२] यह ठीक नहीं, क्योंकि उस समय तक तो आजम खान का अस्तित्व भी नहीं था, मुसवी खान का रहा हो तो रहा हो।

नेवाज और उनके आश्रयदाता मुसवी खान के सम्बन्ध में दी हुई उपर की सामग्री हिन्दी के

---

(१) खोज रि० १६२०।१२०, १६२३।३०३ (२) हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ २६३

किसी इतिहास ग्रन्थ में नहीं मिलती । पर आश्चर्य है कि तासी ने इनके सम्बन्ध में ठीक यही विवरण दिया है । उसने मुसवी खान का नाम मौला खाँ दिया है । तासी का कहना है कि फोर्ट विलियम कालेज के लिए नेवाज के इसी शकुंतला नाटक के आधार पर काजिम अली जवाँ ने उर्दू में शकुंतला नाटक ग्रन्थ प्रस्तुत किया था । जवाँ ने उक्त ग्रन्थ की भूमिका में लिखा है कि नेवाज ने ११२८ हिजरी में उक्त ग्रन्थ की रचना की थी । तासी ने इसे ईस्वी सन् १७१६ कहा है[१], जो विक्रम संवत १७७३ के बराबर हुआ । अतः नेवाज ने शकुतला नाटक की रचना सं० १७७३ वि० में की । शुक्ल जी ने किस आधार पर सं० १७३७ दिया है, उन्होंने कोई उल्लेख नहीं किया है । मेरा ऐसा खयाल है कि यह सं० १७७३ ही अंक व्यत्यय से १७३७ हो गया है है । यह व्यत्यय चाहे स्वयं शुक्ल जी द्वारा हुआ हो, चाहे जहाँ से उन्होंने यह संवत् स्वीकार किया वहीं हो गया रहा हो या यह प्रेस वालों से भी हो गया हो, ऐसी भी आशंका है ।

शकुन्तला नाटक की प्राप्त ४ प्रतियों में से किसी में भी रचनाकाल नहीं दिया गया है । ऐसी स्थिति में सरोज में दिया हुआ सं० १७३९ कवि का जन्मकाल हो सकता है । शकुन्तला नाटक यद्यपि अंकों में विभक्त है, पर यह नाटक नहीं है । यह प्रबंध काव्य है । अंक सर्ग के स्थानीय हैं । यह ग्रन्थ महाकवि कालिदास के सुप्रसिद्ध नाटक अभिज्ञान शाकुन्तलम् के आधार पर है, इसलिए इसे नाटक की संज्ञा दे दी गई है । ग्रन्थ की पुष्पिका से ज्ञात होता है कि यह तिवारी थे :—

"इति निवाज तिवारी विरचितायां सुधा तरन्यां शकुन्तला नाटक"—खोज रि० १९१७।१२६ए

शुक्ल जी ने इनके आश्रयदाता को औरंगजेब का पुत्र आजम शाह समझ लिया है ।[२] पर यह ठीक नहीं, जैसा कि ऊपर दिखाया गया है । उर्दू के इतिहासकारों ने निवाज तिवारी को मुन्शी निवाज और शाह निवाज समझ लिया है ।[३]

सरोज में इनके नाम पर जो छंद उदाहृत है, उसमें छत्रसाल की प्रशस्ति है । यही छंद रस कुसुमाकर में भूषण के नाम पर दिया गया है । यह भूषण की रचना के रूप में ही प्रसिद्ध भी है । छंद के प्रारम्भिक शब्द ये हैं :—

"दाढ़ी के रखयन की दाढ़ी सी रहत छाती"

४१४।३२६

(२७) निवाज ब्राह्मण ३, बुन्देलखण्डी, सं० १८०१ में उ० । यह कवि भगवंत राय खींची गाजीपुर वाले के यहाँ थे ।

सर्वेक्षण

एक निवाज का अखरावती नामक ग्रन्थ खोज में मिला है ।[४] इसका रचनाकाल सं० १८२० है ।

---

(१) हिंदुई साहित्य का इतिहास, पृष्ठ १२०-२१ (२) हिंदी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ २९३ (३) हंस, मई १९३६, पृष्ठ ५३, ५८ (४) खोज रि० १९०९।२१७

कहि नाम संवत सै अठारह तिस सहत गुन गए
आषाढ़ सुदि तिस सविका ग्रन्थ संपूरन भए
रितु वार मंगल कारि पच्छ नछत्र उदार है
अस्थान सस प्रमान बरनौं नाम पुर रविवार है

यह गौड़ीय सम्प्रदाय के वैष्णव थे, जैसा कि इनके चैतन्य स्मरण से सूचित होता है :—

चैतन्य मन में आनि करि धरि ध्यान परम उदारहीं
जस पवन गति ठहराय अविचल ध्यान गति अस मानहीं

कवि भक्त है और अपने को नेवाजदास कहता है :—

जाकी कृपा लवलेस दास नेवाज सब पहिचानेऊ
अवगाह अगम अपार भव जल धार पार बखानेऊ

यह वेदांत ज्ञान सम्बन्धी ग्रन्थ है। विविध छंदों में लिखा गया है। एक-एक छंद वर्णानुक्रम से प्रारम्भ होता है—

कर जोरि सतगुरु चरन बंदौं ज्ञान जो सत पायऊ
आखर ककहरा छंद सोरठ दोहरा करि गायऊ

इन नेवाजदास का एक ग्रन्थ 'ग्रन्थ लीला' और मिला है।[१] अखरावती रिपोर्ट में बुन्देलखण्डी नेवाज ब्राह्मण की रचना माना गया है। समय की दृष्टि से यह बात ठीक लगती है पर विषय और प्रवृत्ति की दृष्टि से यह भिन्न कवि प्रतीत होते हैं। हाँ, यदि कवि ने अपने अंतिम जीवनकाल में गौड़ीय सम्प्रदाय में दीक्षा ले ली हो, तो बात दूसरी है। मेरी यह धारणा है कि सरोज के दूसरे और तीसरे निवाज एक ही हैं। जो निवाज छत्रसाल के यहाँ थे, वही असोथर के भगवंतराव खीचीं के यहाँ भी थे। पहले निवाज इनसे भिन्न हैं और मुसलमान हैं। दोनो कवि समसामयिक हैं।

४१५।३४८

(२८) नरोत्तम दास ब्राह्मण (१) बाड़ी जिले सीतापुर के, सं० १६०२ में उ०। इन्होंने सुदामा-चरित्र बनाया है. मानो प्रेम समुद्र बहाया है।

सर्वेक्षण

सुदामा चरित्र की बहुत-सी प्रतियाँ खोज में मिल चुकी हैं। यह अत्यन्त जनप्रिय ग्रन्थ है और इसके अनेक सुन्दर संस्करण निकल चुके हैं। एक विशेष सूत्र के सहारे विनोद में (७२) नरोत्तमदास के एक अन्य ग्रन्थ ध्रुव चरित्र का नामोल्लेख हुआ है और सुदामा चरित्र का रचना काल सं० १५८२ दिया गया है। महेश दत्त ने भी सुदामा चरित्र का रचनाकाल यही दिया है, पर उन्होंने ध्रुव चरित्र का कोई उल्लेख नहीं किया है। ग्रियर्सन ने (३३) इनका जन्मकाल सं० १६१० माना है पर कवित्त और सवैया के प्रचलन पर ध्यान देते हुये सरोज में दिया हुआ सं० १६०२ रचनाकाल नहीं प्रतीत होता, उत्पत्ति काल प्रतीत होता है। इस कवि के काल निर्णय में मेरा ग्रियर्सन से मतैक्य है।

४१६।३४३

(२९) नरोत्तम (२) बुन्देलखण्डी सं० १८५६ में उ०। इन्होंने सरस कविता की है।

---

(१) खोज रि० १९४७।१९५

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध में कोई सूचना सुलभ नहीं।

४१७।३६२

(३०) नरोत्तम (३) अन्तर्वेद वाले, सं० १८९६ में उ०। ऐजन। इन्होंने सरस कविता की है।

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध में भी कोई सूचना सुलभ नहीं। मेरा अनुमान है कि ४१६,४१७ संख्यक दोनों नरोत्तम एक ही हैं। दोनों के समय में केवल चालीस वर्ष का अन्तर है। सं० १८५६ कवि का प्रारम्भिक कविताकाल और १८९६ अंतिम कविताकाल है तथा १८२३-१९०० उसका जीवन काल हो सकता है। अन्तर्वेद और बुन्देलखण्ड में भी केवल यमुना का अन्तर है जिसे आसानी से पार किया जा सकता है। सरोज में इन कवियों के एक-एक शृंगार छंद उद्धृत है। इनके भी कारण इन दोनों कवियों की अभिन्नता में कोई बाधा नहीं आती।

४१८।३६३

(३१) नीलकंठ मिश्र, अन्तर्वेद वासी, सं० १६४८ में उ०। दास जी ने इनकी प्रशंसा ब्रजभाषा जानने की की है।

सर्वेक्षण

दास जी के कवित्त का वह चरण जिसमें नीलकंठ का नाम आया है, यह है—

लीलाधर सेनापति निपट नेवाज निधि
नीलकंठ मिश्र सुखदेव देव मानिये

सरोज में यह पंक्ति अशुद्ध ढंग से यों उद्धृत है—

नील कंठ नीलाधर निपट नेवाज निधि
नीलकंठ मिश्र सुखदेव देव मानिये

इस अशुद्ध पाठ के कारण दो नीलकंठ हो गये। सरोजकार ने पहले नीलकंठ को तो नीलकंठ त्रिपाठी उपनाम जटाशंकर, भूषण का भाई, मान लिया। दूसरे नीलकंठ की समस्या उन्होंने मिश्र सुखदेव के मिश्र को वहां से हटाकर नीलकंठ के आगे जोड़कर एक नये नीलकंठ मिश्र की कल्पना द्वारा हल की। स्पष्ट है कि सरोजकार ने भ्रम से इस कवि की सृष्टि कर दी है।

४१९।३५०

(३२) नीलकंठ त्रिपाठी, टिकमापुर वाले, मतिराम के भाई, सं० १७३० में उ०। इनका कोई ग्रन्थ हमने नहीं देखा।

सर्वेक्षण

विनोद में (२९६) नीलकंठ के एक ग्रन्थ अमरेसविलास का रचना काल सं० १६९८ दिया

गया है। इस ग्रन्थ की एक प्रति खोज में मिली है।[1] यह अमरुक शतक के १०८ श्लोकों का पद्यानुवाद है। प्राप्त प्रति में रचनाकाल सूचक यह छंद दिया गया है, जिससे विनोद में दिया सं० १६९८ सत्य सिद्ध होता है—

बरस से सोरह ठानवे, सातें सावन मास
नीलकंठ कवि उच्चरित श्री अमरेस विलास

इस ग्रन्थ के छन्दों में 'कंठ' भी छाप है।

नीलकंठ जी का नायिका भेद का एक खंड-ग्रन्थ और भी मिला है। इसमें भी 'कंठ' और 'नीलकंठ' दोनों छाप है।[2] सरोज में दिया हुआ सं० १७३० स्पष्ट ही कवि का उपस्थितिकाल है।

४२०।४३०

(३३) नीलसखी, जैतपुरा, बुन्देलखण्डी, सं० १९०२ में उ०। इनके पद रसीले हैं।

सर्वेक्षण

सरोज में नीलसखी का एक पद उद्धृत है—जय जय विसद व्यास की बानी। इससे सूचित होता है कि यह हरीराम व्यास के प्रशंसकों में थे। नीलसखी का जन्म सं० १८०० वि० के आसपास ओरछा में हुआ था। इनका रचनाकाल सं० १८४० है। यह चैतन्य महाप्रभु के गौड़ सम्प्रदाय के वैष्णव थे। यह अपने अन्तिम दिनों में वृन्दावन में रहने लगे थे। इनकी बानी में एक सौ दस सरस पद हैं।[3] सरोज में दिया हुआ सं० १९०२ अधिक से अधिक कवि का अन्तिम काल हो सकता है, यद्यपि इस समय तक जीवित रहने की सम्भावना बहुत कम है, फिर यह जन्म-काल कैसे हो सकता है, जैसा कि ग्रियर्सन (५४८) और विनोद (२२६०) में स्वीकृत है।

४२१।३६८

(३४) नरिन्द कवि (१) प्राचीन, सं० १८८८ में उ०।

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध में कोई सूचना सुलभ नहीं है।

४२२।३६१

(३५) नरिन्द (२), महाराजा नरेन्द्र सिंह पटियाला के, सं० १९१४ में उ०। इनकी कविता सरस है। इनका नाम हमको केवल सुन्दरी तिलक से मालूम हुआ है।

---

(१) खोज रिपोर्ट १९०३।१ (२) खोज रिपोर्ट १९४७।१९४ (३) बुन्देल वैभव, भाग २, पृष्ठ ४९१

सर्वेक्षण

नरेन्द्र सिंह पटियाला नरेश थे। इनकी मृत्यु सं० १६१६ में हुई।[1] इनके दरबार में अनेक कवि थे। इन्होंने रामनाथ, अमृतराय, चंद, कुबेर, निहाल, हंसराज, मंगलराम, उमादास और देवीदिता राम से महाभारत का अनुवाद कराया था। इन कवियों के अतिरित, इनके दरबार में चन्द्रशेखर वाजपेई, ऋतुराज, दल सिंह (दास), ईश्वर और वीर कवि भी थे। चन्द्रशेखर वाजपेई ने इन्हीं नरेन्द्र सिंह की आज्ञा से हम्मीर हठ की रचना की थी।[2] नरेन्द्र सिंह जी के कुछ शृंगार सवैये सुन्दरी तिलक में हैं।

४२३।३३६

(३६) नन्दन कवि, सं० १६२५ में उ०। यह महाराज सत्कवि हो गये है। हजारे में इनका नाम है।

सर्वेक्षण

हजारे में नन्दन जी की कविता है, अतः सं० १७५० के पूर्व इनका अस्तित्व सिद्ध है। उदाहृत कवित्त की प्रौढ़ता देखते हुये इनका रचनाकाल सं० १६५० के पूर्व नहीं प्रतीत होता। ऐसी स्थिति में सरोज में दिया हुआ संवत् १६२५ इनका जन्मकाल माना जा सकता है, जैसा कि ग्रियर्सन (८६) और विनोद (१६५) में माना गया है।

४२४।३३७

(३७) नन्द कवि। इनका कवित्त सुन्दर है।

सर्वेक्षण

इस कवि का नाम सूरत ने लिया है। नंद नाम के चार कवि मिलते हैं उनमें से किसी के भी साथ इनका तादात्म्य स्थापित करना असम्भव है :—

१. केसरी सिंह—उपनाम नंद, सगारथ लीला के रचयिता।[3]

२. नंद व्यास—सं० १७६६ के पूर्व वर्तमान। इनका ग्रंथ है मान लीला और यज्ञ लीला।[4]

३. नंद या नंदलाल जैन—आगरा निवासी गोयल गोत्रीय अग्रवाल, पिता का नाम भैरव, माता का चन्दन और गुरु का त्रिभुवन कीर्ति। यह जहाँगीर के समकालीन थे और सं० १६६३-१६७० के लगभग, वर्तमान थे। इनके लिखे ग्रन्थ सुदंशन चरित्र और यशोधर चरित्र हैं।[5]

---

(१) ग्रियर्सन ६६० (२) अप्रकाशित संक्षिप्त विवरण (३) विनोद १५२६।१ और खोज रिपोर्ट १६०५।३७ (४) खोज रिपोर्ट १६०६।३०० ए, बी (५) खोज रिपोर्ट १६४७।१७८ क, ख, ग

४. नंद या नंद दास बुन्देलखण्डी, जन्म सं० १७२० के लगभग, श्री लालबाबा दाराशिकोह की गोष्ठ के रचयिता ।[१]

४२५।३२८

(३८) नंद लाल, कवि (१), सं० १६११ में उ० । ऐजन । इनके कवित्त सुन्दर हैं । हजारे में इनके कवित्त हैं ।

सर्वेक्षण

नंदलाल की रचना हजारे में थी, अतः यह सं० १७५० के पूर्व अवश्य उपस्थित थे । इनके छंद की प्रौढ़ता को देखते हुए इनका रचनाकाल सं० १६५० के पहले का नहीं हो सकता और सरोज में दिया हुआ संवत् १६११ इनका जन्मकाल ही प्रतीत होता है, जैसा कि ग्रियर्सन (८०) और विनोद (१६८) में माना गया है ।

४२६।३३८

(३९) नंद लाल (२), सं० १७७४ में उ० । इनकी कविता सरस है ।

सर्वेक्षण

खोज में कम से कम निम्नलिखित ६ नंदलाल मिले हैं । कुछ कहा नहीं जा सकता कि सरोज के अभीष्ट नंद लाल इनमें से कोई हैं भी या नहीं ।

१. नंद लाल, पीताम्बरदत्त के पिता । छिन्दवाड़ा (मध्यप्रदेश) के निवासी सं० १७०२ के पूर्व वर्तमान ।[२]

२. नंद लाल, मलीहाबाद निवासी । सं०१८४४ के लगभग वर्तमान, राग प्रबोध के रचयिता ।[३]

३. नंद लाल शाहाबाद के निवासी, पिता का नाम मतिराम, सं० १८७२ के लगभग वर्तमान, जैमुनि पुराण (अश्वमेध) के रचयिता ।[४]

४. नंद लाल, हावड़ा जंक, सं०, १८८८ के लगभग वर्तमान, मूलाचार के रचयिता ।[५]

५. नंद लाल, सं० १९२१ के पूर्व वर्तमान, बारह मासा राधा कृष्ण के रचयिता ।[६]

६. नंद लाल, पनघट की रंगत लंगड़ी के रचयिता ।[७]

---

(१) बुन्देल वैभव, भाग २ पृष्ठ ३६५ (२) खोज रि० १९१२।१२८ (३) खोज रि० १९२६।३१९ (४) खोज रि० १९२९।२४५ ए बी सी (५) खोज रि० १९१७।१२१ (६) खोज रि० १९२३।२९६ (७) खोज रि० १९२६।३१२

४२७।३३६

(४०) नंदराम कवि। इनके शान्ति रस के चोखे कवित्त हैं।

सर्वेक्षण

खोज में निम्नलिखित नन्दराम मिले हैं :—

१. नंदराम—खण्डेलवाल वैश्य, अमरावती निवासी, बलिराम के पुत्र, सं० १७४४ में इन्होंने कलियुग वर्णन सम्बन्धी 'नंदराम पचीसी' नामक ग्रन्थ लिखा। संभवतः यही सरोज के अभीष्ट नंदराम हैं। इन्होंने अपने सम्बन्ध में यह लिखा है—

> नन्दराम खन्डेलवाल है 'बावति को वासी
> सुत बलिराम गोत है रावत मत है क्रसन उपासी
> संवत सत्रह से चौगोला कातिकचन्द्र प्रकाशा
> नंदराम कछु दुनिया माही देख्या अजब तमाशा
>
> —खोज रिपोर्ट १९००।१२६

२. नंदराम—कान्यकुब्ज ब्राह्मण, निधान दीक्षित और घासीराम के पिता। सं० १८३३ के पूर्व उपस्थित।[1]

३. नंदराम—योगसार वचनिका, यशोधर चरित्र, त्रैलोक्यसार पूजा-ग्रन्थों के रचयिता। रचनाकाल सं० १९०४।[2]

४. नंदराम—लखनऊ के निकट सालेहनगर के रहने वाले कनौजिया ब्राह्मण, जन्म सं० १८९४ के आस-पास और मृत्यु सं० १९४४ के आस-पास हुई। सं० १९२९ में 'शृङ्गार दर्पण' नामक ग्रन्थ दोहा, सवैया, घनाक्षरी आदि छंदों में लिखा। यह ग्रन्थ भारत जीवन प्रेस, काशी से प्रकाशित हो चुका है।[3]

५. नंदराम—यह मेवाड़ के महाराज जगत सिंह दूसरे के आश्रित थे। इन्होंने सं० १७९० ज ग विलास[4] और सं० १८०२ में शिकार भाव,[5] नामक ग्रन्थ लिखे।

६. नंदराम—यह बीकानेर नरेश अनूप सिंह के यहाँ थे। इन्होंने अलसभेदिनीनामक[6] नायिका-नायक भेद और अलंकार का ग्रन्थ लिखा।

---

(१) खोज रि० १९१७।१२७ (२) बिनोद, कवि संख्या २००४।१ (३) विनोद, कवि संख्या २१८६ (४) राज रि० भाग १, ग्रन्थ संख्या ४१ (५) राज० रि० भाग १, ग्रन्थ संख्या १४६ (६) राज० रि० भाग २. कवि संख्या ४८, पृष्ठ १५२

४२८।३७०

(४१) नंददास, ब्राह्मण रामपुर, निवासी, विट्ठलनाथ जी के शिष्य, सं० १५८५ में उ०। इनकी गणना अष्टछाप अर्थात् व्रजभूमि के आठ महान् कवि—सूर, कृष्णदास, परमानंद, कुंभनदास, चतुर्भुज, छीत, नंददास और गोविंददास में की गई है। इनकी बाबत यह मसल मशहूर हैं कि 'और सब पढ़िया नंददास अड़िया'। इनके बनाए हुए ग्रन्थों के नाम हैं—नाम माला, अनेकार्थ पंचाध्यायी, रुक्मणी मंगल, दशम स्कंध, दान लीला, नाम लीला। इन ग्रन्थों के सिवा इनके हजार पद भी हैं। इन आठों महाकवीश्वरों के रचे अनेक ग्रन्थ आज तक व्रज में मिलते हैं।

सर्वेक्षण

लीला पद रस रीति ग्रन्थ रचना में नागर
सरस उक्ति जुत जुक्ति भक्ति रस गान उजागर
प्रचुर पयध लौं सुजस, रामपुर ग्राम निवासी
सकल सुकुलसंवलित भक्त पद रेनु उपासी
चंद्रहास अग्रज सुहृदुपरम प्रेम पै मैं पगे
श्री नंददास आनंद निधि रसिक सु प्रभु हित रंगपगे

—भक्तमाल, छप्पय ११०

सरोज में दिया हुआ नंददास का विवरण भक्तमाल के इस छप्पय के मेल में है, अतः प्रामाणिक है। नंददास अष्टछापी कवियों में वय के अनुसार सबसे छोटे हैं। कवित्व की दृष्टि से इनका नाम सूर के अनंतर आता है। इनका जन्म सं० १५९० के लगभग सोरों, जिला एटा के पास रामपुर गाँव में सनाढ्य ब्राह्मण जीवाराम के घर हुआ। भक्तमाल के अनुसार यह चंद्रहास के अग्रज एवं सोरों सामग्री के अनुसार गो० तुलसीदास के चचेरे भाई थे।

यह एक रूपवती खत्रानी पर आसक्त हो गए थे। उसका पीछा करते हुए गोकुल पहुँचे। वहाँ सं० १६०७ के आस-पास बिट्ठलनाथ जी ने इन्हें वल्लभ-सम्प्रदाय में दीक्षित किया। सूरदास का सत्संग लाभ इन्हें हुआ। कुछ दिनों के अनंतर यह अपने घर चले गए, वहाँ विवाह किया और गृहस्थ-जीवन बिताया। सं० १६२४ के लगभग पुनः विरक्त भाव से गोवर्द्धन चले गए। सं० १६४० के लगभग गोबर्द्धन ही में मानसी गंगा के किनारे एक पीपल तरु के नीचे परम धाम लाभ किया।[१]

नंददास-ग्रन्थावली के दो सुन्दर संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं। एक तो प्रयाग विश्व-विद्यालय की हिन्दी परिषद् द्वारा और दूसरा सभा द्वारा। ग्रंथावली में निम्नलिखित ग्रंथ संकलित हैं:—

(१) अनेकार्थ मंजरी या अनेकार्थ नाममाला या अनेकार्थ माला, (२) मान मंजरी या नाम मंजरी या नाममाला या नामचिन्तामणिमाला, (३) रस मंजरी (४) रूप मंजरी, (५) विरह मंजरी, (६) प्रेम बारह खड़ी, (७) स्याम सगाई, (८) सुदामा चरित, (९) रुक्मिणी मंगल, (१०) भंवर गीत, (११) रास पंचाध्यायी, (१२) सिद्धांत पंचाध्यायी, (१३) दशम स्कंध भाषा, (१४) गोवर्द्धन लीला, (१५) पदावली।

---

(१) अष्टछाप परिचय, पृष्ठ २०९-१२

सरोज में दिया सं० १५८५ इनके जन्मकाल के निकट है। यह इनका रचनाकाल नहीं है। इनके केवल ढाई-सौ पद मिलते हैं, जो उक्त ग्रन्थावलियों में संकलित हैं। अभी तक इनके हजार के लगभग पद देखने में नहीं आए।

४२६।३५४

(४२) नन्द किशोर कवि। इन्होंने राम-कृष्ण गुणमाला नाम का ग्रन्थ बनाया है।

सर्वेक्षण

इस नाम के ४ और कवि मिलते हैं। किसी से इनका तादात्म्य स्थापित करना कठिन है।

१. नन्दकिशोर—इन्होंने सं० १७५८ में पिंगल प्रकाश की रचना की।[1]

२. नन्दकिशोर बाजपेयी—सातनपुरवा वाले अयोध्या प्रसाद बाजपेयी औध के पिता। सं० १८६० के पूर्व वर्तमान।[2]

३. नन्दकिशोर—लखनऊ निवासी, सं० १९०५ के लगभग वर्तमान। सत्यनारायण कथा के रचयिता।[3]

४. नन्दकिशोर—श्रीमद्भागवत् के एक अंश रास पंचाध्यायी की ब्रजभाषा गद्य में टीका करने वाले।[4]

४३०।३४०

(४३) नाथ कवि १। नाथ कवि के नाम से मालूम नहीं हो सकता कि कितने नाथ हुए। उदयनाथ, काशीनाथ, शिवनाथ, शंभुनाथ, हरिनाथ, इत्यादि कई नाथ हो गए हैं। जहाँ तक हमको मालूम हुआ, हमने हर एक नाथ की कविता अलग-अलग लिख दी है।

सर्वेक्षण

इन नाथ के सम्बन्ध में कुछ नहीं कहा जा सकता। स्वयं सरोजकार ने कुछ नहीं कहा है। इनके नाम पर सरोज में उद्धृत कवित्त दिग्विजय भूषण से लिया गया है।

किसी नाथ के नाम से पावस पच्चीसी[5] और रंगभूमि[6] नामक ग्रन्थ मिले हैं। रंगभूमि में सीता स्वयंवर की कथा है। कहा नहीं जा सकता कि ये किस नाथ के ग्रन्थ हैं।

---

(१) विनोद ६१२।१ (२) खोज रि० १९२३।४४ (३) खोज रि० १९२६।३१७ (४) बिहार रि०, भाग २, ग्रन्थ १०९ (५) खोज रि० १९४१।१२६ (६) खोज रि० १९२६।३२५

४३१।३४१

(४४) नाथ २, सं० १७३० में उ० । यह कवि नवाबफजल अली खां के यहाँ थे ।

सर्वेक्षण

सरोज में इनका एक कवित्त उदाहृत है, जिसमें फजल अली की प्रशस्ति है । ग्रियर्सन (१६२) और विनोद (६१०) में इन फजल अली को फाजिल अली समझ लिया गया है, जो ठीक नहीं । फाजिल अली औरङ्गजेब के मन्त्री थे । नाथ को भगवन्तराय खींची और इनके दरबार से सम्बन्धित कहा गया है । पर मूल ही नहीं, तो शाखा कहाँ ?

४३२।३४२

(४५) नाथ कवि ३, सं० १८०३ में उ० । यह मानिक चन्द के यहाँ थे ।

सर्वेक्षण

सरोज में इन नाथ के दो कवित्त उद्धृत हैं, जिसमें मानिक चन्द की प्रशस्ति है । जब तक इन मानिक चन्द की पहचान न हो जाय, इस कवि के सम्बन्ध में कुछ नहीं कहा जा सकता । ग्रियर्सन (४४०) में मानिक चन्द के पुत्र का सम्भावित नाम इच्छन दिया गया है ।

४३३।३४३

(४६) नाथ ४, सं० १८११ में उ० । यह राजा भगवन्त राय खींचा के यहाँ थे ।

सर्वेक्षण

यह नाथ ४ और ८३६ संख्यक शंभुनाथ मिश्र एक ही हैं । सं० १८११ उपस्थितिकाल है ।

४३४।३४४

(४७) नाथ ५, हरिनाथ गुजराती, काशी वासी, सं० १८२६ में उ० । अलंकार दर्पण नामक ग्रन्थ इन्होंने बहुत अद्भुत बनाया है ।

सर्वेक्षण

आगे देखिये, हरिनाथ संख्या ६६८।

४३५।३४५

(४८) नाथ ६ । इनकी कविता सुन्दर है ।

सर्वेक्षण

इस नाथ के भी सम्बन्ध में कुछ विशेष नहीं कहा जा सकता । सरोज में इनका दुर्गा स्तुति सम्बन्धी एक सवैया उद्धृत है ।

४३६।३४६

(४६) नाथ कवि ७, ब्रजवासी, गोपाल भट्ट, ऊचगाँव वाले के पुत्र, स० १६४१ में उ०। इनका काव्य रागसागरोद्भव में षट्ऋतु इत्यादि पर सुन्दर है।

सर्वेक्षण

नाथ भट्ट का विवरण भक्तमाल के इस छप्पय के आधार पर किया गया है और ठीक है—

आगम निगम पुरान सार शास्त्रनि जु विचार्यो
ज्यों पारो दै पुटहि सबनि को सार उधार्यो
श्री रूप सनातन जीव भट्ट नारायन भाख्यो
सो सर्बस उर सांचि जतन करि नीके राख्यो
फनी वंश गोपाल सुब, रागा अनुपा को अयन
रस रास उपासक भक्तराज, नाथ भट्ट निर्मल बयन १८६

रूपकला जी ने इनको ऊँचगांव का रहने वाला कहा है।[१] नाथ भट्ट चैतन्य महाप्रभु के पट्ट शिष्य श्री गोपाल भट्ट के शिष्य थे। इनका पूरा नाम गोपीनाथदास था। इनके छोटे भाई दामोदर दास जी के वंशज गोस्वामी लोग अब तक श्रीराधारमण जी के मन्दिर के सेवक हैं।[२]

विनोद में १३७ में इनका जन्मकाल सं० १६०५ और रचनाकाल सं० १६३० दिया गया है, पर सरोज में दिया गया सं० १६४१ इनका उपस्थितकाल है। खोज में भागवत पचीसी नामक ग्रन्थ मिला है।[३] इसमें २५ कवियों में भागवत महिमा वर्णित है। यह सम्भवतः इन्हीं नाथ ब्रजवासी की रचना है।

४३७।३५१

(५०) नवल किशोर कवि।

सर्वेक्षण

केवल नाम और एक शृङ्गारी कवित्त के सहारे कवि की पकड़ सम्भव नहीं। खोज में इस नाम के दो व्यक्ति अभी तक मिले हैं :—

१. नवल किशोर उपनाम आनन्द किशोर—इन्होंने संगीत का एक ग्रन्थ लिखा है। इसमें रागों का उदाहरण और दुर्गा तथा शिव की स्तुति साथ-साथ है।[४]

२. नवल किशोर—प्रेम जंजीर के रचयिता गो० नन्दकुमार के पिता। यह वृन्दावनी थे, इनका समय १९ वीं शताब्दी का मध्य है।

---

(१) भक्तमाल सटीक भक्ति सुधास्वाद तिलक, पृष्ठ ८४६ (२) साहित्य७ वर्ष ६ अंक ४, जनवरी १६५८, पृष्ठ ६४ (३) खोज रि० १६०६।२०६ (४) पंजाब रि० १६२२६,।

४३८।३५२

(५१) नवल कवि, सूदन में नाम है। अतः ये १८१० के आस-पास थे।

सर्वेक्षण

सरोज में इनका एक शृङ्गारी कवित्त उद्धृत है जिसमें इनकी छाप नोल है। निश्चय ही नील इनका पूरा नाम नहीं है। यह नाम का पूर्वार्द्ध है। कवि का नाम नवल दास, नवल किशोर, नवल राम, नवल कुमार जैसा ही कुछ रहा होगा। खोज में कई नवल मिलते हैं। अपनी शृङ्गारी प्रवृति के कारण यह उन सबसे भिन्न हैं।

४३९।३५३

५२—नवल सिंह, कायस्थ, झांसी के निवासी, राजा संथर के नौकर, सं० १९०८ में उ०। यह महान् कवि हैं और नाम रामायण, हरिनामावली, ये दो ग्रंथ इन्होंने अद्‍भुत बनाये है।

सर्वेक्षण

नवल सिंह, श्रीवास्तव कायस्थ थे, रामानुज सम्प्रदाय के वैष्णव थे। इनका उपनाम रामानुज शरण दास या श्री शरण था। यह झांसी निवासी थे और समथर के राजा हिन्दूपति (शासन काल सं० १८८४-१९४२) के यहाँ नौकरी करते थे। यह दतिया और टीकमगढ़ दरबारों में भी रहे थे। यह कवि के अतिरिक्त चित्रकार भी थे। इनका भक्ति और ज्ञान की ओर विशेष झुकाव था। इन्होंने भिन्न-भिन्न विषयों पर भिन्न-भिन्न शैलियों में छोटे-छोटे अनेक ग्रन्थ लिखे हैं। शुक्ल जी ने अपने प्रसिद्ध इतिहास में इनके २९ ग्रन्थों की सूची दी है।[१] इनके निम्नलिखित ग्रन्थों का विवरण खोज रिपोर्ट १९०६।७९ में है।

१—रामायण कोश—इस ग्रन्थ में पर्याय देने के साथ-साथ राम-कथा का कोई न कोई अंश भी पद्यों में आता गया है। इस ग्रन्थ का अन्य नाम नामरामायण भी है। इसमें कुल ७७७ दोहे हैं जो काण्डों में विभक्त है। इसकी रचना सं० १९०३ में हुई।

> राम[३] ख[०] निधि[९] ससि[१] साल में, राम जन्म तिथि चीन
> जन्म नाम रामायनहि जन्म समय में लीन १०७

कवि ने अपना नाम, जाति और संप्रदाय निम्नांकित दोहे में दिया हैं—

> नवल सिंह, कास्यथकुल, श्रीवास्तव सनाम
> संप्रदाय श्री वैष्णवी दुतिय श्री शरण नाम १०८

इस ग्रन्थ की पुष्पिका भी काम की है। "इति श्री वैष्णवसम्प्रदायपरायन श्री सरन रामानुजवासामिधेय प्रधान नवलसिंहेन श्री नामरामायने उतरकाण्ड समाप्त ॥७१॥ एकत्र ७८७"

२—शंका मोचन—सगुन सम्बन्धी पचीस कहानियाँ। कवि की छाप नव रस भी है—

---

(१) खोज रि० १९१८।१०४, पं १९२२।४३, १९३८।१०५, १९०५।३८ (२) हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ ३८७

मनै नवलेस फैलो विसद मही मैं जस
बरन न पावै पार फार फन पति से

इसकी रचना सं० १८७३ में हुई—

संवत सहस्र सत अष्ट लेख
पुनि अधिक तिहत्तर तासु रेख
बैसाख मास तिथि तीज वेस
ससिवार चारु वृत्त पुष केस १०

३—रसिक रंजनी—यह भानुदत कृत्त रसमंजरी के आधार पर रचित नायिका-भेद का ग्रन्थ है :—

तरनि दत कृत मंजरी निज गुन गुंफहु सोइ
रसिकन को रस जुक्त यह उ॰ आभूषन होइ २

इसकी रचना सं० १८७७ में हुई—

संवत ऋषि[७] ऋषि[७] अष्ट[८] ससि, हरि अष्टमी सुजान
बुध दिव इव प्रारंभ किय, स्वयं से सुखी मान ३.

आत्मपरिचय सम्बन्धी निम्नांकित दोहा इस ग्रन्थ में है—

श्रीवास्तव कायस्थ सुचि सुकुल कटेरावार
नवल सिंह नामाभिमत त्रपुरा अनुग उदार ४

४—विज्ञान भास्कर—इसमें चौपाई में आध्यात्मिक ज्ञान और भक्ति का निरूपण है। भादों सुदी एकादशी, सं० १८७८ इसका रचना काल है।

बसु[८] ऋषि[७] बसु[८] ससि[१] संवत जाना
ताकर नन्दन नाम बखाना
वर्षा ऋतु वर भादव मासा
पच्छ पुनीत निसेस प्रकासा १४४
एकादसी तिथि रवि सुचवारु
दस घटिका चौबिस पल चारु
नखत उत्तरा षाड़ सुहावा
घटिका तास एक पल ठाँवा १४५
सोभन जोत तब दिन दीसा
इकतालीस घटी पल बीसा
त्रितिय चंद्र सुखदायक तरन
तेहि दिन ग्रन्थ भयौ यह पूरन १४६

५—ब्रज दीपिका—इसमें दोहा और कवित्त तथा अन्य विविध छन्दों में ब्रज का वर्णन है। आश्विन सुदी ५, सं० १८८३ में यह ग्रंथ रचित है—

संबत सिखि[३] वसु[८] सिद्ध[८] ससि[१] आश्विन सित तिथि बान[५]
किये प्रकाश ब्रजदीपिका सुनि सुख लहहि सुजान २०५

६—शुक-रंभा-संवाद—सं० १८८८ में यह विरचित हुआ।

नाग[८] सिद्धि[८] वसु[८] इन्दु[१] में माघ सकट व्रज जान
तिहि दिन रचि पूरन करो यह सुग्रन्थ मुद दान ६१

७—नाम चिन्तामणि—इस ग्रन्थ में दोहों में प्रत्यय और समास द्वारा नवीन शब्दों के निर्माण का सिद्धान्त वर्णित है। इसका रचनाकाल सं० १९०३ है—

तीन[३] शून्य[०] नव[९] एक[१] में माधव सुदि कुजवार
तिथि नौमी दिन नाम भय चिन्ता मनि अवतार ५१

८—जौहरिन तरंग—इसमें जौहरिन के रूप में कृष्ण का राधा से भेंट करना वर्णित है। यह कवि के एक बड़े ग्रन्थ 'सनेह सागर' का एक अंश है। सनेह सागर संवत् १८७५ में रचा गया था और उसमें ३०० छन्द हैं। सारी पुस्तक में एक ही छन्द प्रयुक्त हुआ है।

दस वसु सत संवत तिहि ऊपर पचहत्तर परवानो
मास असाढ़ शुक्ल पख पाँच ससि सुतवार बखानो
छन्द तीन से बीन एक से रचो कथा रस भीनी
अभिजित समय जान तिहि वासर पुस्तक पूरन कीनी ३००

९—मूल भारत—सं० १९१३ में विरचित इस ग्रंथ में दोहा-चौपाइयों में महाभारत की कथा है।

१०—भारत सामित्री—इसमें कवित्त छन्दों में कौरव-पाण्डवों का मूल वर्णन है। ग्रन्थ सं० १९१२ में रचा गया।

दग[२] ससि[१] नव[९] महि[१] अब्द में माघ कृष्ण की तीज
रवि वासर में वर्णियो यह भारत को बीज १३०

११—भारत कवितावली—कवित्तों में महाभारत की कथा है। सं० १९१३ में इस ग्रंथ की रचना हुई—

राम[३] चन्द्र[१] अंक[९] त्यों मयंक[१] अंक संवत कों
मधु मधुमास शुक्ल पूनै बार मानवी

१२—भाषा सप्तसती—संस्कृत से भाषा में यह पद्यानुवाद है। स० १९१७ में इस ग्रंथ को रचना हुई—

उनइस से सत्रा विदित संवतसर कौ अंक
ज्येष्ठ कृष्ण नवमी विदित संयुतबार मयंक ३०

१३—कवि जीवन—सं० १९१८ में विरचित यह छन्द सम्बन्धी ग्रन्थ है।

अष्ट[८] ससि[१] अंक[९] त्यों मयंक[१] अंक वत्सर को
माधव सुकुल त्रितिया सु रविवार कौ
पूरन भयो है मत अच्छय सु तुर्न करै
छन्द वर्तो सूरन को जोग अधिकार कौ

१४—महाभारत—सं० १९२२ में रचित इस ग्रंथ में कुल ५४६ छंद हैं:—

उनइस से बाइस को भांदों, सुदि आठैं कुजवार
दिवस सत्तर वर्ष गांठ कौ, श्री बृत आराधत किय वार

सं० १९२२ में कवि ७० वर्ष का हो गया था, अतः उसका जन्मकाल सं० १८५२ है।

१५—आल्हा रामायण—यह ग्रंथ ५४६ आल्हा छंदो में सं० १९२२ में विरचित है—

उनइस सै बाइस के संबत करि के हरि में प्रीति
आल्हा आल्हा कथा काढ़ि के वरनो आल्हा ही की रीति

१६—रुक्मिणी मंगल—यह ३०७ रोला छंदो में सं० १९२५ का लिखित है।

भांदों सुदि आठैं दिवस सर[५] दग[२] नव[९] भू[१] ताल
श्री रुक्मिनि मंगल चरित किय श्री शरन विसाल ७०

१७—मूल ढोला—यह सं० १९२५ में रचित है।

संबत सवा उनैस से सोभन आश्विन मास
वदि अष्टमि को श्री शरन रचि के कियो प्रकास २०१

१८—रहस लावनी—इसमें लावनी छन्दों में रास पंचाध्यायी की कथा है।

श्री वृन्दाबन चंद के चरन कमल उर ध्याय
कहा लावनी छन्द में रास पंच अध्याय १

ग्रन्थ की रचना सं० १९२६ में हुई—

उनइस सै छब्बीस में सुचि असाढ़ के मास
गुरु जुत कृष्ण सु अष्टमिहि किय श्री शरन प्रकाश

१९—अध्यात्म रामायण—चौपाई-छंदों में संस्कृत अध्यात्मरामायण का यह भाषानुवाद है।

२०—रूपक रामायण—इसमें हरिगीतिका छंद में राम की कथा हैं।

२१—नारी प्रकरण—संस्कृत ग्रन्थ हारीतसंहिता के आधार पर नाड़ी ज्ञान का यह ग्रंथ है—

'नारी प्रकरण कहत हौं हारीतक मत ल्याइ'

२२—सीता स्वयंवर—कुल १३३३ छन्दों में यह रचित है।

२३—रामविवाह खण्ड—दोहा-चौपाई में यह रचित है।

२४—भारत वार्तिक—गद्य में महाभारत की कथा है।

२५—रामायण सुमिरनी—१९ कवित्तों में राम कथा है।

२६—विलास खण्ड—किसी संस्कृत ग्रन्थ के आधार पर चौपाई-छंदों में राम-विवाह का वर्णन है।

२७—पूर्व शृङ्गार खण्ड—राम का विलास वर्णन।

२८—मिथिला खण्ड—इसमें सीता स्वयंवर के समय का मिथिला का वर्णन है।

२९—दान लोभ संवाद।

३०—जन्म खण्ड।

नवल सिंह का रचनाकाल सं० १८७३–१९२६ है। २२ वर्ष की अवस्था में इन्होंने काव्य-रचना आरम्भ की थी।

४४०।३६०

(५३) नवलदास, क्षत्रिय, गुड़गाँव, जिला बाराबंकी, सं० १३१९ में उ०। इन्होंने 'ज्ञान सरोवर' नामक ग्रन्थ बनाया। यह नाम महेशदत्त ने अपनी पुस्तक में लिखा है पर हमको सन्-संवत् ठीक होने में सन्देह है।

सर्वेक्षण

नवलदास अनवार क्षत्रिय थे। यह जिला बाराबंकी तहसील राम सनेही, ग्राम गूढ़ के रहने वाले थे। यह और सत्नामी सम्प्रदाय के प्रवर्तक जगजीवनदास के शिष्य थे, घनेसा ग्राम में गोमती के किनारे कुटी बनाकर रहते थे। यहाँ इन्होंने अजपा-जाप की साधना की थी और इन्हें कुछ सिद्धि भी मिली थी। यह सं० १८१७-८५ के लगभग वर्तमान थे। सरोज में इनके सम्बन्ध में जो सूचनायें दी गयी हैं, सब महेशदत्त के भाषा-काव्य संग्रह के आधार पर हैं।[१] संभवतः सरोजकार को इस ग्रन्थ का जो संस्करण प्राप्त था, उसमें १३१९ ही सं० था। मेरी पुस्तक में अपने ही गाँव में इनके १९१३ में मरने का उल्लेख है। स्पष्ट है कि प्रेस के भूतों की बदौलत १९१३ का १३१९ हो गया है। ग्रियर्सन (७९८) और विनोद (१४) में इस कवि का उल्लेख है। किसी ने महेशदत्त के इस ग्रन्थ को उठाकर देखने का कष्ट नहीं किया। महेशदत्त ने इनका मृत्युकाल १९१३ दिया है। पहले तो यही अशुद्ध है, क्योंकि कवि इसके बहुत पहले मर गया रहा होगा। प्राप्त पुस्तकों से इसका रचनाकाल सं० १८१७-३८ सिद्ध है। फिर इस १९१३ का १३१९ हो जाना कोढ़ में खाज के सदृश है। नवलदास के बनाये हुए निम्नांकित ग्रन्थ खोज में मिले हैं :—

१—(अ) भागवत दशम स्कंध—१९०९।२१३, १९२७।२७८, १९२३।३०१ डी, १९४७।१८३ ज भ। आदि और अंत में ग्रन्थकर्ता का नाम साहेब नवलदास दिया गया है। मंगलाचरण संस्कृत में है, पर बिल्कुल निर्गुनियों का है—

अवतंसं निर्गुणं भाषा नाम रूपं प्रभासितम्
आगारे अबर वासे आबरनं बरनं बिना[२]

(ब) भागवत पुराण भाषा जन्मकाण्ड—१९०९।२१६। इसमें इन्होंने अपने गुरु जग जीवन दास का उल्लेख किया है :—

सतगुरु सांचै राम, तुम्ह स्वीकृत सद्रस प्रभु
हृदय करिय विश्राम, जगजीवन जग तारन

इस ग्रन्थ की रचना सं० १८२३, क्वार सुदी १०, सोमवार को हुई—

संवत अठारह सै तहां, तेइस ऊपर जानि
तब गावत गुन स्याम के, दास नवल रुचि मानि
अस्विन मास विजै तिथि आई
अभि निकेत ससि वासर पाई
तब सत्गुरु प्रताप उर आवा
स्याम जन्म कीरति कछु गावा

यह कोई स्वतंत्र ग्रन्थ नहीं है। ऊपर वर्णित भागवत दशम-स्कंध का अंश है।

२. कहरानामा—१९२६।२४९ बी, १९४४।१८४। ग्रंथ में कवि ने अपने को जगजीवनदास का चेला कहा है—

प्रभु साहेब जगजीवन स्वामी, भवन भवन विश्रामा रे
दास नवल तिनकर यक चेला, गावत कहरा नामा रे

---

(१) भाषाकाव्य संग्रह, पृष्ठ १२८

रिपोर्ट के अनुसार इसका रचनाकाल सं० १८१८ है । रचनाकाल सूचक छंद नहीं उद्धृत है।

३. ज्ञान सरोवर—१९२३।३०१ ए, १९२६।३२७ ए, १९४७।१८३ ख, ग, घ, ङ, च, छ । इस ग्रन्थ में विविध धार्मिक कथाएँ हैं। ये पौराणिक परंपरा पर हैं, निर्गुन परंपरा पर नहीं। इस ग्रन्थ की रचना सं० १८१८ में हुई।

संवत अठारह सै अठारह, माघ पूरनमासिया
संक्राति सुन्दर जानि कै, रवि मानि कथा प्रकासिया

कवि ने इस ग्रन्थ में अपने तत्कालीन निवासस्थान की भी सूचना दी है।

पश्चिम दिसि है अवध से, नवल रहे रटि नाम
कोसन जोजन पांच पर, ग्राम धनेसा नाम

४. माधवरत्न ज्ञान—१९२३।३०१ बी, १९४७।१८३ ज । इस ग्रन्थ की रचना सं० १८३८ में हुई—

संवत अठारह से अढ़तीसा
कहियत नाइ भक्त पद सीसा
माघ मास सुभ पूरनमासा
कृपा समुझि हरि चरित प्रकासी

इस ग्रन्थ में भी गुरु जगजीवनदास का नाम आया है।

सतगुरु सांचे राम, सत दिन कर भ्रम तमहरन
हृदय करिय बिसराम, जगजीवन जगतारनी

५. राम गीता—१९४७।१८३ ट ।

६. शब्दावली—१९२९।२४९ ए, १९४७।१८३ ठ । रिपोर्ट के अनुसार इस ग्रन्थ की रचना सं० १८१७ में हुई। ग्रन्थ में जगजीवन दास की आरती है।

साहेब तुम जगजीवन स्वामी
जीव जंतु सब अंतरजामी
देवीदास और दूलनदासा
इन्हके घर संपूरन वासा
खेमदास श्री दास गोसाई
यह आए साहेब सरनाई
दास नवल सुमिरे कर जोरे
कब अइहो साहेब घर मोरे

७. सुख सागर—१९२३।३०१ सी, १९६२।३२७ बी, १९४७।१८३ ड, ढ, ण । इस ग्रंथ की रचना सं०१८१७ में हुई।

संवत अठारह सै सत्रह, यह मैं कहौं बखानि
जेठ मास.............................।

८. स्तुति श्री बजरंग जी—१९४७।१८३ क ।

९. मंगलगीत और शब्दावली — १९४७।१८४

४४१।

(५४) नीलाधर कवि, सं० १७०५ में उ० । इनकी दास जी ने प्रशंसा की है ।

सर्वेक्षण

दास जी ने लीलाधर कवि का नाम लिया है, न कि नीलाधार का । अतः तथाकथित नीलाधर कवि का अस्तित्व समाप्त हो जाता है ।[1]

४४२।

(५५) निधि कवि, सं० १७५१ में उ० । ऐज़न । इनकी दास जी ने प्रशंसा की है ।

सर्वेक्षण

ग्रियर्सन (१३१) में निधि कवि को सं० १६५७ में समुपस्थित कहा गया है और कहा गया है कि इनका उल्लेख गोसाईंचरित और रागकल्पद्रुम में हुआ है ।

४४३।

(५६) निहाल, प्राचीन, सं० १६३५ में उ० ।

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध में कोई सूचना सुलभ नहीं ।

४४४।

(५७) नारायण, बंदीजन, काकूपुर, जिले कानपुर, सं० १८०६ में उ० । इन्होंने राजा शिवराजपुर चन्देले की वंशावली महा अपूर्व नाना छन्दों में बनाई है ।

सर्वेक्षण

यह कवि दुहरा उठा है । इसका विस्तृत विवरण संख्या ६२५ (भूप नारायण) पर देखें ।

प

४४५।३७१

(१) परसाद कवि, सं० १६०० में उ० । यह कवि महाराना उदयपुर के यहाँ थे । इनकी कविता बहुत विख्यात है ।

सर्वेक्षण

परसाद कवि की शृङ्गारी रचनाएँ पुराने संग्रहों में प्रायः मिलती हैं । इस शृङ्गारी परसाद का पूरा नाम बेनीप्रसाद है । यह उदयपुर नरेश जगतसिंह दूसरे (शासनकाल, सं० १७९१-१८०८)

---

(१) दास जी के कवित्त के प्रसंग-प्राप्त चरण के शुद्ध और अशुद्ध, दोनो पाठों के लिए देखिए—यही ग्रंथ, कवि संख्या ४१८

के यहाँ थे। इन्होंने 'शृङ्गार समुद्र' नामक नायिका भेद का ग्रन्थ उक्त जगतसिंह के लिए लिखा था। ग्रन्थ में रचनाकाल सूचक यह दोहा है—

सत्रह सै पचवानें सावन सुदि दिन रुद्र
रसिकन के मुख देन को भो शृंगार समुद्र—खोज रि० १९१७।२१

इस दोहे के अनुसार ग्रन्थ का रचनाकाल सं० १७५५, सावन सुदी ११ है। यह संवत् जगतसिंह के शासनकाल के पूर्व पड़ता है। हो सकता है कि अनवधानता के कारण प्रतिलिपिकार ने पचानवें के स्थान पर पचावनें लिख दिया हो। यदि ऐसा है तो ग्रंथ का रचनाकाल सं० १७९५ है। यदि ऐसा नहीं है, तो ग्रन्थ उस समय लिखा गया जब जगतसिंह युवराज ही थे। प्रथम संस्करण में १६०० के स्थान पर १६८० है जो दोनों अशुद्ध हैं। प्राप्त प्रति के आदि और अंत, दोनों स्थलों पर कवि का नाम बेनो प्रसाद दिया गया है। अंत में आश्रयदाता का भी उल्लेख है।

"इति श्री महाराजाधिराज जगतराजविनोदार्थ कवि बेनीप्रसाद कृत, शृङ्गार-समुद्र नामक वर्नन नाम द्वितीय प्रकास।"

खोज रिपोर्ट में जगतराज को छत्रसाल का पुत्र कहा गया है,[१] पर यह ठीक नहीं। जगतराज से अभिप्राय उदयपुर के जगतसिंह दूसरे से ही है। इन्हीं के दरबार में दलपतिराय वंशीधर भी थे। सरोजकार परसाद को उदयपुर दरबार से सम्बन्धित मानते हैं। उनका यह अनुमान ठीक है। सरोज में इनका जो कवित्त उद्धृत है, उसमें उदयपुर के राजाओं की इसलिए प्रशंसा की गई है कि उन्होंने मुसलमानों को अपनी बहिन-बेटी नहीं दी। यह कवित्त सरोज के कथन को पुष्ट करता है :—

बाढ़ी पातसाही ज्योंही सलिल प्रलै के बढ़े
बूड़े राजा राव पै न कीन्हें तेग खर को
देन लगे नवल दुलहिया नौरोजन में
नीठि तीठि पीछे मुख हेरे आनि घर को
वाही तरवारि बादसाहन सों कीन्हीं रारि
भनै परसाद अवतार सांची हर को
दुहूँ दीन जाना जस अकह कहाना ऐसे
ऊँचे रहे राना जैसे पात अछैबर को

४४६।३७२

पद्माकर भट्ट, बाँदा वाले, मोहन भट्ट के पुत्र, सं० १८३८ में उ०। यह कवि प्रथम आपा साहेब अर्थात् रघुनाथ राव पेशवा के यहाँ थे। जब पद्माकार जी ने यह कवित्त—'गिरि ते गरे ते निज गोद ते उतार ना' बनाया तो पेशवा ने एक लक्ष मुद्राएँ पद्माकर को इनाम में दीं। फिर पद्माकरजी ने

---

(१) खोज रि० १९१७।२१

जयपुर में जाकर सवाई जगत सिंह के नाम से जगद्विनोद नामक ग्रंथ बनाया। बहुत रुपया, हाथी, घोड़े, रथ, पालकी पाए और गंगा सेवन में शेष काल व्यतीत किया। गंगालहरी नामक ग्रन्थ भी इनका है।

सर्वेक्षण

पद्माकर का जन्म सं० १८१० में सागर, मध्यप्रदेश में हुआ था। यह तेलंग ब्राह्मण थे। इनके पिता का नाम मोहनलाल भट्ट था। मोहनलाल भी सुकवि थे। पद्माकर का सम्बध निम्न-लिखित राजाओं के दरबारों से था।

१. नागपुर के महाराज रघुनाथ राव, अप्पा साहब।

२. जयपुर-नरेश महाराज प्रताप सिंह एवं जगतसिंह।

३. सगरा के नाने अर्जुन सिंह।

४. बाँदा के अनूप गिरि गोसाईं, उपनाम हिम्मत बहादुर।

५. ग्वालियर-नरेश आलीजाह दौलत राव सिंधिया।

इन दरबारों से पद्माकर ने बड़ा यश और धन कमाया। अंतिम दिनों में यह कुष्ट रोग से पीड़ित होकर कानपुर आए, जहाँ गंगा की कृपा से रोग मुक्त हो तो गए, पर छह महीने के बाद ही सं० १८९० में इन्हें गंगा लाभ हो गया।

श्री पं० विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने पद्माकरग्रन्थावली स्वयं सम्पादित करके प्रकाशित करायी है जिसमें निम्नलिखित ग्रन्थ हैं :—

१. हिम्मत बहादुर विरुदावली—इसमें हिम्मत बहादुर और अर्जुन सिंह के युद्ध का वर्णन है। यह युद्ध सं० १८४९ बैशाख वदी १२, बुधवार को हुआ था।

२. पद्माभरण—यह दोहों में अलंकार ग्रन्थ है।

३. जगद्विनोद—जयपुरनरेश जगत सिंह के नाम पर नायिकाभेद का ग्रन्थ है। यह पद्माकर का श्रेष्ठतम ग्रन्थ है और कवित्त-सवैयों में लिखा गया है।

४. प्रबोध पचासा—भक्ति और वैराग्य के ५० प्रौढ़ कवित्त।

५. गंगालहरी—गंगा महिमा सम्बधी ५० कवित्त।

इन ग्रन्थों के अतिरिक्त अंत में ३८ फुटकर छंद खोज कर दिए गए हैं। उक्त ग्रन्थावली में पद्माकर के निम्नलिखित ग्रन्थ नहीं संकलित हो सके हैं—

१. राम रसायन—बूँदी नरेश के कहने पर वाल्मीकि रामायण के कुछ काण्डों का अनुवाद। अनुवाद शिथिल है।

२. आलीजाह प्रकाश—ग्वालियर के दौलत राव सिंधिया के नाम पर नायिकाभेद का ग्रन्थ। इसमें और जगद्विनोद में बहुत कम अंतर है। इसकी रचना सं० १८७८ में हुई। एक मात्र इसी ग्रन्थ में पद्माकर ने रचनाकाल दिया है।

निद्धि दुगुन करि जानि, उन पर अठहत्तर अधिक
विक्रम सो पहिचानि, सावन सुदि इंदु अष्टमी

३. हितोपदेश का गद्य-पद्यात्मक भाषानुवाद—उक्त दौलतराव के एक मुसाहब ऊदो जी के कथनानुसार रचित।

४. विरुदावली—जगत सिंह की प्रशंसा के कवित । १६०६।८२

५. ईश्वर पचीसी—१६०१।८५

सरोज में दिया हुआ सं० १८३८ कवि का उपस्थितिकाल है । पद्माकर का वंशवृक्ष[1] निम्न है—
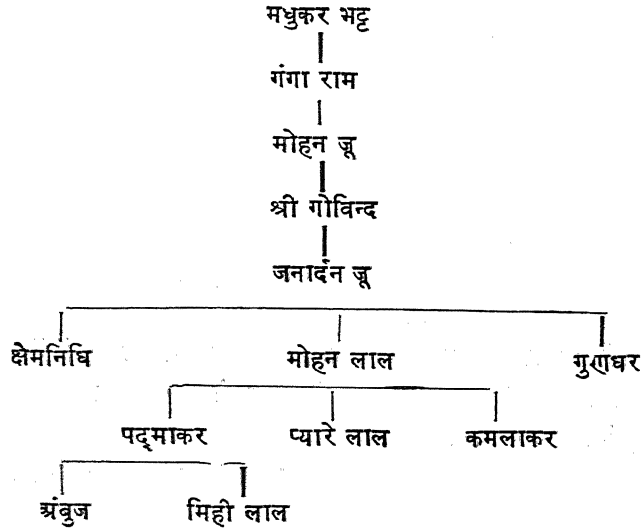
४४७।३७४

(३) पजनेस कवि, बुंदेलखण्डी, सं० १८७२ में उ० । यह कवि पन्ना में थे और इन्होंने मधुप्रिया नामक ग्रन्थ भाषा-साहित्य का अद्भुत बनाया है । इस कवि की अनूठी उपमा, अनूठे पद तथा अनुप्रास और यमक प्रसंशा के योग्य हैं । पर शृंगार रस में, टवर्ग, और कटु अक्षरों को जो अपनी कविता में भर दिया है, इस कारण इनका काव्य कवि लोगों के तीररूपी जिह्वा का निशाना हो रहा है । इनका नखशिख देखने योग्य है । फ़ारसी में भी इन्होंने श्रम किया था ।

सर्वेक्षण

मधुप्रिया की एक प्रति खोज में मिली है, जो सटीक है[2] । प्राप्त प्रति में केवल नखशिख सम्बंधी ३१ कवित्त हैं । प्रतीत होता है कि यह मधुप्रिया का एक अंश-मात्र है । इस प्रति की पुष्पिका से ही यह संकेत मिलता है :—

"इति पजनेस कृत ग्रन्थ मधुप्रिया स्वामिनी जू को वर्णन मूल कवित्त टीका नखशिख समाप्तः"

---

(१) माधुरी, माघ १९९०, पृष्ठ ७९ (२) खोज रि० १९०५।९३

टीकाकार का नाम अज्ञात है। विनोद (१८०४) में एवं उसी के आधार पर शुक्ल जी के इतिहास में इनके दो ग्रन्थों—मधुप्रिया और नखशिख का उल्लेख है। पर जैसा कि हम अभी देख चुके हैं, नखशिख कोई स्वतंत्र ग्रन्थ न होकर मधुप्रिया का अंग मात्र है। शुक्ल जी ने मधुप्रिया को मधुर-प्रिया बना दिया है[1]।

महेशदत्त के भाषा-काव्यसंग्रह के अनुसार 'प्रजनेस' महाकवि केशव के वंश के थे।[2] भारत जीवन प्रेस, काशी ने पजनेस के ५६ कवित्त-सवैयों को पहले पजनेसपचासा नाम से फिर १२७ छंदों को पजनेसप्रकाश नाम से प्रकाशित किया था। अन्य प्रमाणों के अभाव में सरोज में दिए सं० १८७२ को कवि का जन्मकाल न समझकर उपस्थितिकाल ही समझना चाहिए।

४४८।३७३

(४) परतापसाहि, बंदीजन, बुंदेलखंडी, रतनेश के पुत्र, सं० १७६० में उ०। यह कवि महाराज छत्रसाल परना पुरन्दर के यहाँ थे। इनका बनाया हुआ भाषा साहित्य का 'काव्य विलास' ग्रन्थ अद्वितीय है। भाषा भूषण और बलभद्र के नखशिख का तिलक, विक्रम साहि की आज्ञा के अनुसार इन्होंने बनाया था। विज्ञार्थकौमुदी ग्रन्थ इनका बनाया हुआ बहुत ही सुन्दर है।

सर्वेक्षण

शिव सिंह ने प्रमाद से प्रताप साहि को छत्रसाल की सभा में समुपस्थित मानकर इनका समय सं० १७६० दिया है। न तो यह छत्रसाल की सभा में थे, न इनका सरोज-दत्त संवत् ही ठीक है। यह चरखारी नरेश विजय विक्रमाजीत सिंह के दरबारी कवि थे। विक्रमाजीत का शासनकाल सं० १८३९-८६ है। यही समय प्रतापसाहि का भी होना चाहिए। सरोज की भूल के कारण खोजियों ने दो प्रतापों की कल्पना कर ली, एक प्रताप वे जो छत्रसाल के दरबार में थे, दूसरे वे प्रताप जो विक्रमाजीत के आश्रय में थे। प्रतापसाहि वंदीजन थे। रतनेस कवि के पुत्र थे, चरखारी नरेश विक्रमाजीत और रतन सिंह (शासनकाल सं० १८८६-१९१७) के आश्रित थे। इनके निम्नांकित ग्रन्थ खोज में मिले हैं :—

१. व्यंगार्थ कौमुदी—१९०३।५२, १९०६।९१ जे, १९२०।१३२, १९२३।३२१ ए, बी, सी, डी। इस ग्रन्थ में कुल १०३ छंद हैं। इसमें ध्वनि काव्य में नायिकाभेद कथित है। यह ग्रन्थ भारत जीवन प्रेस, काशी, से प्रकाशित हो चुका है। इस अत्यन्त प्रौढ़ और श्रृंगारी ग्रंथ की रचना सं० १८८२ में हुई।

> संवत ससि[१] वसु[८] वसु[८] सु द्वै[२] गनि असाढ़ कौ मास
> किय विग्यारथ कौमुदी, सुकवि प्रताप प्रकाश १२६

---

(१) हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ ३९१ (२) भाषा काव्य-संग्रह पृष्ठ १३३-३४

२. काव्य विलास—१६०५।४६, १६०६।६१ बी, १६२६।१५१ ए, बी, सी, डी, १६४१। १६। इसी ग्रन्थ का उल्लेख सरोजकार ने किया है। इसकी रचना सं० १८८६ में हुई।

संवत ससि[१] वसु[८] वसु[८] बहुरि ऊपर षट पहिचान
सावन मास त्रयोदसी, सोमवार उर आन ११४२

यह ग्रन्थ नायिका भेद का है और काव्यप्रकाश, काव्यप्रदीप, साहित्य दर्पण और रस-गंगाधर के आधार पर बना है।

मत लहि काव्य प्रकाश को, काव्य प्रदीप सँजोइ
साहित दर्पन चित्त समुझि, रस गंगाधर सोइ

३. शृङ्गार मंजरी—१६०६।६१ सी। यह ग्रन्थ भी नायिका भेद का है। इसकी रचना सं० १८८६ में हुई। इसका आधार भानुदत्त कृत ग्रन्थ है।

यह सिंगारही मंजरी, सुकवि प्रताप विचार
बरनत नायक नायिका, निज मत के अनुसार
भानुदत्त को मत समुझि, मन में सुकरि विचार
किय सिंगार की मंजरी, निज मति को अनुसार
संवत अष्टादस परे, साल नवासी जानि
मार्ग मास सित पंचमी, भृगुवासर उर आनि

४. शृङ्गार शिरोमणि—१६०६।६१ डी। यह भी नायिका भेद का ग्रन्थ है।

रसमंजरी विचारि मोद परिमल सु चित्त धर
समुझि तिलक शृंगार काव्य रूपक रतनाकर
साहित दर्पन साधि भरत सूत्रहि के मत लहि
पुनि सुन्दर शृंगार बहुरि रसराज भेद लहि
रसिक प्रिया सु विचारि चित अपर ग्रन्थ रस के गनत
शृंगार सिरोमनि ग्रन्थ यह कवि प्रताप भाषा भनत

इसकी रचना सं० १८६४ में हुई।

संवत अष्टादस सरस, नब्बे ऊपर चार
माघ मास तिथि पंचमी, यहै ग्रन्थ अवतार

५. अलंकार चिंतामणि—१६०६।६१ ई। इस ग्रन्थ में कुल १०८ अलंकार हैं।

कहै एक से आठ सब, अलंकार निरधार
श्रुति नवीन प्राचीन मत, समुझि ग्रन्थ कौ सार ३६६

इसकी रचना सं० १८६४ में हुई।

संवत अष्टादस पुरे नब्बे ऊपर धारि
माघ मास पख कृष्न तहँ ससि सुत वार उदार ४००

६. रतन चंद्रिका—१६०६।६१ एफ। चरखारी के राजा रतन सिंह के अनुरोध पर बिहारी सतसई की यह गद्य टीका सं० १८६६ में लिखी गई।

संवत अष्टादस परैं, नवल परैं षट मानि
कृष्ण पक्ष तिथि पंचमी, माधव मास बखानि

७. रसराज तिलक—१९०६।६१ जी। रसराज की यह टीका भी उक्त रतन सिंह के अनुरोध पर सं० १८९६ में ही लिखी गई थी।

रतन सिंघ नृप हुकुम तें मन में करि अति बोध
सुगम तिलक रसराज कौ, कीनौ निज मति सोध ४२५
संवत षट[6] नव[9] वसु[8] ससी[1] फागु मास सित पच्छ
वार ससी तिथि पंचमी कीनौ तिलक सुदच्छ ४२७

८. काव्य विनोद—१९०६।६१ एच। यह ध्वनि का ग्रन्थ है।

काव्य प्रदीप निहारि कछु काव्य प्रकाश विचारि
सो भाषा करि कहत हौं धुनि के सकल प्रकार

यह गन्थ सं० १८९६ में बना—

संवत षट[6] नव[9] वसु[8] ससी,[1] मार्ग मास सित पच्छ
तिथि पंचमी, वार बुध, कियो ग्रन्थ यह स्वच्छ

९. जुगुल नखशिख—१९०५।५०, १९०६।६१ आई, १९०१।२२७। यह सीताराम का नखशिख है। इसमें २५ छन्द हैं। ग्रंथ सं० १८८६ में बना।

संवत षट ऊपर असी हरि तिथि निसिकर वार
मार्ग मास सित पच्छ लहि शिख नख कह्यो विचार

१०. बलभद्र कृत नखशिख १९०६।६१ के। विक्रम साहि की आज्ञा से बलभद्र मिश्र के नख-शिख की गद्य टीका। इन सब ग्रंथों का रचनाकाल सं० १८८२-९६ है।

इनका एक ग्रन्थ जयसिंह प्रकाश और कहा गया है।[1] इसका रचनाकाल सं० १८५२ है।

संबत ससि[1] बसु[8] सर[5] नयन[2] माघ मास सित बार
सुक्ल पच्छ तिथि पंचमी यहै ग्रन्थ अवतार—खोज रि० १९०६।६१ ए

यह साहित्य का ग्रन्थ न होकर ज्योतिष का ग्रन्थ है। जय सिंह ने प्रसन्न होकर फादिलपुर गाँव इनाम में दिया था।

होरा शास्त्र प्रसिद्ध जग अगम सु पारावार
लघु मति सुकवि प्रताप ने भाषा कियो विचार
फिरि बोले जय सिंघ नृप अमर कियो मो नाउं
ताको तुमको देत हौं फादिलपुर को गाउं

विक्रमाजीत और रतन सिंह के पश्चात् चरखारी में जयसिंह नामक एक राजा हुए हैं, जिनका शासनकाल सं० १९३७-६३ है। यह जयसिंह प्रकाश वाले जयसिंह से भिन्न और उनसे प्रायः सौ वर्ष पूर्ववर्ती हैं। यह ग्रन्थ इन्हीं प्रतापसाहि का है, इसमें मुझे पूर्ण संदेह है।

---

(१) खोज रि० १९०६।६१ ए और मर्यादा, भाग ११, संख्या ५, सन् १९१६ ई० श्री माया शंकर याज्ञिक का लेख।

४४१।३४६

(५) प्रवीणराय पातुर, उड़छा, बुंदेलखण्ड वासिनी, सं० १६४० में उ० । इस वेश्या की तारीफ में केशवदास जी ने कविप्रिया ग्रन्थ के आदि में बहुत कुछ लिखा है । इसके कवि होने में कुछ संदेह नहीं । इसका बनाया हुआ ग्रन्थ तो हमको कोई नहीं मिला, केवल एक संग्रह मिला है, जिसमें इसके बनाए सैकड़ों कवित्त हैं । हमने यह किसी तवारीख में लिखा नहीं देखा कि बादशाह अकबर ने प्रवीण को बुलाया । केवल प्रसिद्धि है कि अकबर ने प्रवीण की प्रवीणता सुन दरबार में हाजिर होने का हुक्म दिया तो प्रवीणराय ने प्रथम राजा इन्द्रजीत की सभा में जाकर ये तीन कूट-कवित्त पढ़े—"आई हो बूझन मंत्र" इत्यादि । फिर जब प्रवीण बादशाह की सभा में गई, तो बादशाह से इस प्रकार प्रश्नोत्तर हुए ।

बादशाह—जुवन चलत तिय देह ते, बटकि चलत केहि हेत ।
प्रवीण—मनमथ वारि मसाल को, सेंति सिहारो लेत ।।१।।
बादशाह--ऊंचे ह्वै सुर बस किए, सम ह्वै नर बस कीन ।
प्रवीण—अब पताल बस करन कौ, ढरकि पयानो कीन ।।२।।

इसके पीछे जब प्रवीण ने यह दोहा पढ़ा कि—

बिनती राय प्रवीन की, सुनिए शाह सुजान ।
जूठी पतरो भखत हैं, बारी बायस स्वान ।।१।।

तब बादशाह ने उसे विदा किया और प्रवीण इन्द्रजीत के पास आ गई ।

सर्वेक्षण

प्रवीणराय के सम्बन्ध में सरोज में जो भी बातें दी गई हैं, साहित्य के इतिहास-ग्रंथों में वे ज्यों की त्यों स्वीकृत हैं । सरोज में दिया हुआ सं० १६४० प्रवीणराय का उपस्थितिकाल है, केशव ने इसी के लिए सं० १६५८ में कविप्रिया की रचना की थी ।

४५०।३८१

(६) प्रवीण कविराय २, स० १६६२ में उ० । इनके नीति और शांत रस के कवित्त सुन्दर हैं । हजारे में इनके कवित्त हैं ।

सर्वेक्षण

बुंदेलवैभव में प्रवीण कविराय को ओरछावासी और तत्कालीन ओरछा नरेश का दरबारी कवि कहा गया है ।[१] सुधासर के नामरासी कवियों की सूची में दो प्रवीण हैं—एक तो प्राचीन हैं, जो सरोज के प्रसंग प्राप्त प्रवीण कविराय हैं, दूसरे, बेनी प्रवीण वाजपेयी हैं । इनकी रचनाएँ हजारे में थी, अतः सं० १७५० के पूर्व इनका अस्तित्व अवश्य सिद्ध है । पर इनकी कोई निश्चित तिथि देना सम्भव नहीं ।

---

(१) बुंदेल वैभव, भाग २, पृष्ट ३०१

४५१।३७५

(७) परमेश कवि, प्राचीन १, सं० १६६८ में उ०। इनके कवित्त हजारे में हैं।

सर्वेक्षण

परमेश के कवित्त हजारे में थे, अतः सं० १७५० के पूर्व इनका अस्तित्व स्वयं सिद्ध है, पर इनकी कोई निश्चित तिथि नहीं दी जा सकती। बुन्देल वैभव के अनुसार यह ओरछावासी थे और तत्कालीन ओरछा नरेश के दरबार में थे।[1] सुधासर के नामरासी कवि सूची में दो परमेश हैं—एक तो प्राचीन, जो यही हैं, और दूसरे है वृन्दावन वासी परमेश। इनका उल्लेख सरोज में नहीं हुआ है। सरोज में एक तीसरे परमेश और हैं। यह सतावाँ, जिला रायबरेली के रहने वाले थे।

———

४५२।३७६

(८) परमेश वंदीजन २, सतावां, जिले रायबरेली, सं० १८९६ में उ०। इन्होंने फुटकर कवित्त बनाए हैं। ग्रन्थ कोई नहीं है।

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध में कोई सूचना सुलभ नहीं है।

———

४५३।३७७

(९) प्रेम सखी, सं० १७९१ में उ०।

सर्वेक्षण

प्रेमसखी जी का जन्म शृंगवेरपुर (प्रयाग) के निकट एक ब्राह्मण-कुल में हुआ था। बाल्यावस्था में ही विरक्त हो यह चित्रकूट चले गए। यहाँ यह रामदास सूदर के शिष्य हो गए। चित्रकूट से यह मिथिला गए और वहाँ से अयोध्या आए। इसके पश्चात् आजीवन चित्रकूट में निवास किया। अवध के नबाब ने सवा लाख की थैली इनके पास भेजी थी, पर इन्होंने उसे अस्वीकार कर दिया था।[2]

प्रेमसखी जी रामानुज संप्रदाय के सखी-समाज के वैष्णव थे। यह पुरुष थे, स्त्री नहीं, जैसा कि बुंदेल वैभव में स्वीकार किया गया है। इस ग्रन्थ के अनुसार यह बुंदेलखण्डी थे। इनका जन्म सं० १८०० के लगभग एवं रचनाकाल सं० १८४० माना गया है।[3] छतरपुर में पूछताछ करके मिश्रबंधुओं ने इनका रचनाकाल सं० १८८० स्वीकार किया है। उन्होंने इनके पद, कवित्त, होरी और नखशिख नामक चार ग्रन्थों का उल्लेख किया है।[4] खोज में इनके निम्नलिखित चार ग्रन्थ मिले हैं--

१. प्रेम-सखी की कविता—१९००।३९। इसमें कुल १३८ छंद हैं। अधिकतर कवित्त-सवैये

---

(१) बुंदेल वैभव, भाग २, पृष्ठ २८९ (२) रामभक्ति में रसिक संप्रदाय, पृष्ठ ४०७ (३) बुंदेल वैभव, भाग २, पृ० ५११ (४) विनोद कवि संख्या १२३९

हैं। सभी सीताराम सम्बन्धी हैं।

२. सीताराम या जानकी राम को नखशिख—१९०६।२३० ए, बी, १९१७।१३७ सी डी, १९२०।१३४ बी।

३. होरी, छंद, कवित्त, दोहा, सोरठा, छप्पय प्रबन्ध—१९०६।३०८, १९१७।१३७ ए, १९२०।१३४ ए।

४. कवित्तादि प्रबंध—१९१७।१३७ बी।

रिपोर्टों में उद्धृत अवतरणों से यह अच्छे कवि जान पड़ते हैं।

सरोज में दिया संवत् १७९१ इनका जन्मकाल अनुमान किया जा सकता है।

४५४।३८२

(१०) परम कवि, महोबे के वंदीजन, बुंदेलखंडी, सं० १८७१ में उ०। इनका बनाया नखशिख ग्रंथ बहुत सुन्दर है।

सर्वेक्षण

सूदन ने प्रणम्य कवियों की सूची में परम का भी नाम दिया है। अतः एक परम सं० १८१० के पूर्व अथवा आस-पास अवश्य हुए। विनोद में दो परम हैं—एक सरोजवाले यह वंदीजन (१९९९), दूसरे परम शुक्ल (५८०) जिनका समय सूदन के अनुसार देने का प्रयास करते हुए भी प्रमाद से सं० १७५४ के पूर्व उपस्थित कहा गया है। यद्यपि जाति का अंतर है, पर असंभव नहीं यदि दोनों कवि एक ही हों। सरोज में परम के नाम पर दो कवित्त उदाहृत हैं, एक में कवि छाप परम है, दूसरे में परमेश। यदि दोनों कवित्त एक ही कवि के हैं, तो परम और परमेश एक ही कवि के दो नाम हुए। यह भी संभव है कि सरोजकार ने प्रमाद से परमेश का भी छंद परम के नाम पर उद्धृत कर दिया हो।

४५५।३८३

(११) प्रेमी यमन, मुसलमान, दिल्ली वाले, सं० १७९८ में उ०। इन्होंने अनेकार्थमाला ग्रन्थ-कोष बहुत सुन्दर रचा है।

सर्वेक्षण

प्रेमी अब्दुल रहिमान दिल्ली वाले का उपनाम है[१]। यमन, यवन का विकृत रूप है। सरोज दत्त सं० १७९८ कवि का रचनाकाल है। विनोद (९७१) के अनुसार अनेकार्थमाला में कुल १०३ छंद, विशेषकर दोहे हैं। ग्रियर्सन (४३३) में प्रमाद से अनेकार्थ और नाममाला को दो ग्रंथ समझा गया है।

---

(१) देखिये, यही ग्रन्थ, कवि संख्या ३२

४५६।३८४

१२. परमानंद लल्ला पौराणिक अजयगढ़ बुन्देलखंडी, सं० १८९४ में उ० । इनका नखशिख ग्रन्थ सुन्दर है ।

सर्वेक्षण

परमानंद जी अजयगढ़, बुन्देलखंड के रहने वाले थे। इनके पिता का नाम ब्रजचंद था। संस्कृत के प्रसिद्ध ग्रंथ हनुमन्नाटक का अनुवाद इन्होंने 'हनुमन्नाटक दीपिका'[1] नाम से किया है। संभवतः इन्हीं परमानन्द ने किसी रामावतार की सहायता से आत्मबोध टीका[2] और तत्वबोध-टीका[3] नामक दो और टीकाएँ लिखीं।

४५७।३८५

१३. प्राणनाथ कवि १, ब्राह्मण बैसवारे के, सं० १८५१ में उ० । इन्होने चक्रव्यूह का इतिहास, नाना छंदों में बहुत अद्भुत बनाया है ।

सर्वेक्षण

बैसवारेवाले प्राणनाथ ने सं० १८५० में कार्तिक सुदी ९, मंगलवार को चक्रव्यूह इतिहास की रचना की थी। रचनाकाल-सूचक यह दोहा सरोज में दिया गया है—

> संवत व्योम[0] नराच[5] वसु[8] मही[1] महिज उर्ज मास
> सुक्ल पच्छ तिथि नवमि लिखि चक्रव्यूह इतिहास

कवि ने कवि प्रान और जन प्राननाथ छाप रखी है।

> १. कवि प्रान किमि श्रीपति कथा नहिं जात पसुपति सों कही
> २. गोपाल लाल चरित्र पावन कहहिं सुनहिं जे गावहीं
> जन प्राननाथ सनाथ ते फल चारि मंजुल पावहीं

सं० १७६५ में उपस्थित, जीवनाथ कथा[4] या जैमिनि पुराण,[5] बभ्रुवाहन कथा[6] और कल्कि-चरित्र[7] के रचयिता प्राणनाथ त्रिवेदी से यह भिन्न हैं।

४५८।४०६

१४. प्राणनाथ २. कोटावाले, सं० १७८१ में उ० । यह राना कोटा के यहाँ थे। इनकी कविता सुन्दर है।

(१.) खोज रि० १९०६।८८ (२.) खोज रि० १९४४।२०१ क (३.) खोज रि० १९४४।२०१ ख (४) खोज रि० १९०९।२२६ (५) खोज रि० १९४१।१४० (६) खोज रि० १९१२।१३१ (७) खोज रि० १९०३।२९,१९०४।१३५

सर्वेक्षण

विनोद में (५०४) इनका जन्मकाल सं० १७१४ और रचनाकाल सं० १७४० दिया गया है, पर सूत्र का संकेत नहीं किया गया है। खोज में एक प्राणनाथ त्रिवेदी मिले हैं, जिनके निम्नलिखित ग्रन्थों का पता चला है :—

१. कल्कि चरित्र, १६०३।२६, १६०४।१३५। इस ग्रंथ की रचना सं० १७६५ में हुई।

संवत सत्रह पै प्रगट पैंसठि मकर सुमास
बुध वासर श्री पंचमी कलकी कथा प्रकास

२. वभ्रुवाहन की कथा, १६१२।१३१, १६४७।२१६। इस ग्रन्थ का भी रचनाकाल सं० १७६५ है।

३. जीवनाथ कथा, १६०६।२२६ या जैमिनि पुराण, १६४१।१४०। जैमिनि पुराण की रचना सं० १७५७ में हुई।

संवत सत्रह सै सुभग सत्तावन बर मास
मकर भूम रितु पंचमी कवि इतिहास प्रकास

ग्रन्थ में कवि का नाम और जाति है—

विदित त्रिवेदी कान्ह कुल प्राननाथ कवि नाथ
सादर संभु प्रसाद बर वरन्यौ हरि गुन गाथ

इस ग्रंथ में पट्टन की देवी की स्तुति है :—

पट्टन देवी रटन बिनु संकट बिकट कटै न
यथा अगोचर भास्कर मेचक छोर छुटै न

यह छंद जीवनाथ की कथा में भी है। इससे स्पष्ट है कि दोनों ग्रंथों के रचयिता एक ही प्राणनाथ हैं।

हो सकता है कि इन तीनों ग्रंथों के रचयिता प्राणनाथ कोटावाले यह प्राणनाथ ही हों। ऐसी स्थिति में सरोज में दिया हुआ सं० १७८१ कवि का उपस्थितिकाल है।

४५६।४०६

१५ परमानंद दास ब्रजवासी, बल्लभाचार्य के शिष्य, सं० १६०१ में उ०। इनके पद रागसागरोद्भव में बहुत हैं। इनकी गिनती अष्टछाप में है।

सर्वेक्षण

भक्तमाल में अष्टछापी परमानंद दास का विवरण नहीं है। छप्पय ७४ में एक परमानंद दास हैं, पर इनकी छाप सारंग है, जो इन्हें अष्टछापी परमानंददास से अलग करती है। वियोगीहरि जी ने ब्रजमाधुरी सार में यथासंभव भक्तमाल के अथवा अन्य पुराने छप्पय कवियों के परिचय पहले दिए हैं। जब ऐसा संभव नहीं हो सका है, तब अपने बनाए छप्पय दिए हैं। अष्टछापी परमानंददास का परिचय उन्होंने स्व-रचित छप्पय में दिया है। श्री चंद्रबली पांडेय ने इस छप्पय में वर्णित परमानंद दास सारंग को अष्टछापी परमानंददास समझ लिया है।

परमानंद दास का जन्म मार्गशीर्ष शुक्ल ७, सोमवार सं० १५५० को कन्नौज में एक कान्य-

कुब्ज ब्राह्मण परिवार में हुआ था। यह बचपन ही से काव्य और संगीत में बहुत निपुण थे। युवावस्था ही में यह कवि और कीर्तनकार के रूप में प्रसिद्ध हो गए थे और स्वामी कहलाते थे। सं० १५७६ में यह संक्रांति-स्नान के लिए प्रयाग आए। उन दिनों महाप्रभु वल्लभाचार्य यमुना पार अरैल में थे। सं० १५७७ की ज्येष्ठ शुक्ल १२ को परमानंद स्वामी, वल्लभाचार्य के शिष्य बनकर परमानंद दास हो गए। सं० १५८२ में वे अरैल से ब्रज आए। गोवर्द्धन आने पर वे सुरभि-कुण्ड पर श्याम तमाल वृक्ष के नीचे रहा करते थे। सं० १६४१ भाद्रपद कृष्ण ६ को, ६१ वर्ष की वय में इन्होंने सुरभि कुंड पर ही नश्वर शरीर छोड़ा।[1]

जिस प्रकार सूरदास जी सूरसागर कहे जाते थे, उसी प्रकार परमानंद दास भी परमानंद सागर कहलाते थे। इनकी पदावली परमानंदसागर का संपादन प्रकाशन, विद्या विभाग, कांकरोली द्वारा हो चुका है। इनके पद २००० के लगभग कहे जाते हैं। सरोज में दिया सं० १६०१ इनका उपस्थितिकाल है।

४६०।४०८

१६. प्रसिद्ध कवि प्राचीन, सं० १५६० में उ०। यह महान् कवीश्वर खानखाना के यहाँ थे।

सर्वेक्षण

सरोज में प्रसिद्ध के दो कवित्त हैं। प्रथम में खानखाना के शौर्य की प्रशस्ति है।

गाजी खानखाना तेरे धौंसा की धुकार सुनि,
सुत तजि पति तजि भाजी बैरी बाल हैं।

अकबरी दरबार से संबंध होने के कारण सरोज में दिया हुआ सं० १५६० ईस्वी-सन् है। इस समय (सं० १६४७ में) कवि उपस्थित था। अकबरी दरबार के कवियों की गणना करने वाले सवैये में भी इनका नाम है।

खोज में एक नवीन प्रसिद्ध भी मिले हैं। इन्होंने सं० १८१३ में 'जानकीविजय रामायन' की रचना की—

एक सहस अरु आठ सै संवत दस अरु तीन
सुक्ल पच्छ दुतिया मास मधु, भाषी कथा नवीन

४६१।४०४

१७. प्रधान केशवराव कवि, इन्होंने शालिहोत्र भाषा बनाया है।

सर्वेक्षण

केशवराय प्रधान का एक ग्रन्थ जैमुन की कथा खोज में मिला है। इसकी रचना सं० १७५३ विक्रमी में हुई :—

---

(१) अष्टछाप परिचय, पृष्ठ १७७-८२

सम्बत सत्रा सै बरनि त्रेपन साल विचार
सुभग मास बैसाख की पून्यो अरु गुरुवार
ता दिन कथा प्रसंग किय उत्तिम पावन भाय
जैमुन व्रत किय छंद रचि लघुमति केसव राय

इति श्री महाभारथे अस्वमेध के पर्वने जैमुनिव्रते प्रधान केसो राय विरचितायां फलस्तुति बर्ननो नाम सरसठ्योघ्याय ।।६७।।—खोज रिपोर्ट १६०५।१०

इस पुष्पिका से सूचित होता है कि यह जाति के प्रधान (कायस्थ) थे। रिपोर्ट के अनुसार यह माधोदास के पुत्र, मुरलीधर के भाई और पन्नानरेश महाराज छत्रसाल (१७०६-८८ वि०) और उनके धर्म पुत्र नरसिंह के आश्रित थे। महाराज छत्रसाल से इन्हें एक गाँव मिला था। यह बुन्देलखंडी केशव राय ही सम्भवतः सरोज में वर्णित बघेलखंडी केशव राय हैं।

४६२।४०५

१८. प्रधान कवि, सं० १८७५ में उ०। इनके कवित्त सुन्दर हैं।

सर्वेक्षण

प्रधान के दो कवित्त सरोज में उदाहृत हैं। दोनों छंद नीति-संबंधी हैं। एक में सुजान वैद्य का और दूसरे में कुत्सित वैद्य का वर्णन है। दोनों छंद रामनाथप्रधान-कृत कवित्त राजनीति में हैं। इस ग्रंथ में निम्नांकित लोगों के कवित्तवद्ध लक्षण हैं[१] :—

१. भूप, २. देवान, ३. सरदार, ४. मुसद्दी, ५. बौहरा, ६. पंच, ७. वैद ८. स्त्री, ९. पाखंडी, १०. दंभी, ११. विद्यार्थी, १२. गुलाम, १३. सच्चा, १४. लबार, १५. मित्र, १६. दरबारी, १७. चुगुल, १८. बारो, १९. जनाना, २०. गरुरदार, २१. ब्राह्मण, २२. ठाकुर, २३. चाकर २४. रसोइया, २५. भंडारी।

अस्तु, यह प्रधान, रामनाथ प्रधान[२] हैं। सं० १८७५ में यह उपस्थित थे।

४६३।४०१

१९. पंचम कवि प्राचीन १, बंदीजन बुंदेलखंडी, सं० १७३५ में उ०। यह महाराज छत्रसाल बुन्देला के यहाँ थे।

सर्वेक्षण

पंचम के नाम से सरोज में एक कवित्त उद्धृत है, जिसकी दूसरी पंक्ति यह है—

पंचम प्रचंड भुज दंड के बखान सुनि,
भागिबे को पच्छी लौं पठान थहरात हैं।

यह छंद भूषण का माना जाता है और छत्रसाल दशक में नवीं संख्या पर संकलित है। इस कवित्त में भूषण की छाप नहीं है। पंचम से पंचम सिंह का अर्थ लिया जाता है। पंचम सिंह बुन्देलों के पुरखा थे। इन्हीं के पुत्र महाराज बुन्देल हुए।

---

(१) खोज रि० १९२०।१५३ बी (२) देखिए, यही ग्रंथ, कवि संख्या ७३४

इस छंद का कर्तृत्व संदिग्ध है। यदि इसे किसी पंचम कवि की रचना माना जाय, तो उक्त कवि अवश्य ही छत्रसाल का समकालीन रहा होगा। ऐसी दशा में सरोज में दिया सं० १७३५ कवि का उपस्थितिकाल है, क्योंकि उक्त महाराज छत्रसाल का राज्यकाल सं० १७२२—८८ है। खोज में दो पुराने पंचम मिलते भी हैं—

१. पंचम सिंह, यह महाराज छत्रसाल के भतीजे थे। यह पन्ना-नरेश हृदय साह के समकालीन थे और प्राणनाथ के शिष्य थे। सं० १७६२ के लगभग यह वर्तमान थे। इनका एक ग्रंथ कवित्त[1] मिला है, जिसमें रेखते हैं। विनोद में इनका उल्लेख संख्या ६६५ पर है।

२. पंचम सिंह कायस्थ, यह ओरछा नरेश पृथ्वी सिंह के आश्रित थे। इन्होंने सं १७६६ में नौरता की कथा[2] नामक ग्रंथ लिखा :—

सत्रह सै निन्यानबे, भादौं सुदि है ग्यास
सुनि पंचम परधान ने, ता दिन कीन्यो ब्यास

इन पंक्तियों में ओरछा और पृथ्वी सिंह का उल्लेख है :—

नगर ओड़छौ उत्तिम थान
तहँ को राजा चतुर सुजान
पृथी सिंह सब जग में जान

इनके पिता का नाम श्यामसुन्दर था :—

स्याम सुंदर सुत पंचम जान
जाति प्रधान नहीं अभिमान

विनोद में (३६८) एक और पंचम हैं, जिनका रचनाकाल सं० १७०७ दिया गया है।

४६४।४०२

२०. पंचम कवि २, लखनऊ वाले।

सर्वेक्षण

सरोज के प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय संस्करणों में २० संख्या पर डलमऊ वाले पंचम नहीं हैं। सप्तम संस्करण में इनका २० और ४२ संख्याओं पर दो बार उल्लेख हो गया है। तृतीय संस्करण में इनका उल्लेख ४१ संख्या पर है। इस कवि का विवेचन आगे संख्या ४८६ पर देखिए।

४६५।४०३

२१. पंचम कवि नवीन ३, बंदीजन बुन्देलखंड के, सं० १९११ में उ०। यह राजा गुमानसिंह अजयगढ़ वाले के यहाँ थे।

---

(१) खोज रि० १९०६।८१ ए (२) खोज रि० १९०६।८६ डी

सर्वेक्षण

सरोज में इन पंचम का एक कवित्त उद्धृत है, जिसमें गुमान सिंह की प्रशस्ति है--

पंचम गुमान सिंह हिंद के पनाह,
ठकुराइसि को टीको यार तेरे दरबार में।

अतः पंचम का गुमान सिंह के दरबार में होना निश्चित है। यदि पंचम का अर्थ पंचम वंशीय बुंदेल किया जाय, तो यह कवित्त किसी अज्ञात कवि की रचना है, जिसका सम्बन्ध उक्त गुमान सिंह के दरबार से था।

गुमान सिंह सं० १८२२ में बांदा और अजयगढ़ के शासक हुए थे। यह छत्रसाल के प्रपौत्र, जगतराज के पौत्र, और कीरतराज के पुत्र थे[1]। इन्होंने सं० १८३५ तक शासन किया। अतः सरोज में दिया सं० १६११ अशुद्ध है।

४६६।३६६

२२. प्रियादास स्वामी बृंदावन वासी, सं० १८१६ में उ०। इन्होंने नाभा जी के भक्तमाल की टीका कवित्तों में बनाया है। यह महाराज बड़े महात्मा हो गए हैं।

सर्वेक्षण

विरक्त होने के पूर्व प्रियादास का नाम कृष्णदत्त यह था, प्रियादासचरिताअमृत[2] में उल्लेख हुआ है। सामान्यतया समझा जाता है कि प्रियादास नाभादास के शिष्य थे और उन्हीं के कहने से उन्होंने भक्तमाल की टीका की। पर बात ऐसी है नहीं। नाभादास रामानंद-संप्रदाय के थे और प्रियादास गौडीय संप्रदाय के वैष्णव थे। नाभादास ने इनको प्रत्यक्ष कोई आज्ञा नहीं दी थी। प्रियादास चैतन्य महाप्रभु का ध्यान कर रहे थे, उसी ध्यानावस्था में नाभादास ने उन्हें भक्तमाल की कवित्तबद्ध टीका करने की आज्ञा दी थी। टीका के इस कवित्त से यह तथ्य ज्ञात होता है।

महाप्रभु कृष्ण चैतन्य मनहरन जू के
चरन को ध्यान मेरे नाम मुख गाइए
ताही समै नाभा जू ने आज्ञा दई लाइ धरि
टीका बिसतारि भक्तमाल की सुनाइए
कीजिए कबित बंध, छंद अति प्यारो लगै
जगै जग माँहि कहि बानी बिरमाइए
जानौं निजमतिऐ, पै सुन्यो भागवत सुक
द्रुमनि प्रवेस कियो ऐसे ही कहाइए

---

(१) बुंदेलखंड का संक्षिप्त इतिहास, अध्याय २४,३०, ३२ (२) खोज रि० १६०१।१६

इस कवित्त के प्रथम चरण में मनहरन शब्द आया है, जो कृष्ण चैतन्य का विशेषण-सा है। पर यह प्रियादास के गुरु मनोहरदास [1] की ओर संकेत करता है। भक्तमाल की प्रियादास-कृत टीका की एक हस्तलिखित प्रति [2] की पुष्पिका यह है :—

"श्री उदयपुर मध्ये राणां श्री संग्राम सिंह जी विजय राज्ये स्वामी श्री हरिदास तत शिष्य प्रियादास जी लिखावतम आत्मार्थे बाचनार्थ ।"

इस प्रति का लिपिकाल सं० १७८९ है। लिपिकर्ता कोई नारायणदास हैं। प्रतिलिपि, स्वामी श्री हरिदास के शिष्य प्रियादास के पढ़ने के लिए की गई थी। यह प्रियादास भक्तमाल की टीका करनेवाले प्रियादास से भिन्न हैं।

प्रियादास वृंदावन में राधा-रमण जी के मंदिर में रहते थे। यहीं इन्होंने सं० १७६९, फाल्गुन वदी ७, को भक्तमाल की टीका पूर्ण की थी—

नाभा जू को अभिलाष पूरन लै कियो मैं तो
ताकी साखि प्रथम सुनाई नीके गाइ के
भक्ति बिसवास जाके, ताही सौं प्रकास कीजै,
भीजे रंग हियो लीजै संतनि लड़ाइ के
संवत प्रसिद्ध दस सात सत उन्हत्तर
फालगुन मास बदि सप्तमो बिताइ के
नारायनदास सुखरास भक्तमाल लैके
प्रियादास दास उर बस्यौ रहै छाइ के ६२७

अप्रकाशित संक्षिप्त विवरण के अनुसार प्रियादास रसजानिदास के गुरु और वैष्णवदास के पिता थे। वस्तुतः यह वैष्णवदास के पितामह थे। वैष्णवदास ने स्व-रचित भक्तमाल-माहात्म्य में यह उल्लेख स्वयं किया है। यह माहात्म्य रूपकला जी वाली भक्तमाल की टीका के नवल किशोर प्रेस, लखनऊ वाले संस्करण में संलग्न है।

प्रियादास अति ही सुखकारी
भक्तमाल टीका बिस्तारी
तिनको पौत्र परम रंग भीनो
भक्तन हित महात्म यह कीनो—भक्तमाल, पृष्ठ ६६४

वैष्णवदास का एक ग्रंथ 'गीत गोविंद भाषा [3]' मिला है। इस ग्रंथ से सिद्ध है कि यह वैष्णवदास भी चैतन्य महाप्रभु के गौडीय संप्रदाय के वैष्णव थे। इनके गुरु का नाम हरि जीवन था, यह भी वृन्दावन में रहते थे, प्रियादास के यह कृपा पात्र थे और इस ग्रन्थ की रचना सं० १८१४ में हुई थी। ग्रंथ की पुष्पिका में रसजान वैष्णवदास के विशेषण के रूप में प्रयुक्त हुआ है :—

---

(१) यही ग्रंथ, कवि संख्या ६८२ (२) राज० रि०, भाग ३, पृष्ट ३६-३७ (३) खोज रि०, १९०६।३२४

"इति श्री जयदेव कृत गीतगोविंद भाषायां रसजान वैष्णवदास कृतायां द्वादश सर्गः"

फिर भी संभव है कि प्रियादास के किसी शिष्य का भी नाम रसजानिदास रहा हो। खोज में प्रियादास के निम्नलिखित ग्रंथ मिले हैं—

१ भक्तमाल की रसबोधिनी टीका, १९०१।५५, १९०६।२४७, १९१७।१३८, १९२०।१३५ ए, बी, १९२३।३२३ ए, बी, सी, १९२६।३६१ ए, बी, १९२९।२७३ बी, १९३१।६७। जैसा कि हम अभी लिख आए हैं, यह टीका नाभा की प्रेरणा से सं० १७६९ में लिखी गई।

२. भक्ति प्रभा की सुलोचना टीका, १९२०।१३५ सी,

सेवनीयमिदं शास्त्रं तस्मात्सर्वत्र सर्वदा।

सोमसिद्धांतवर्य्यो हि प्रियादास विनिर्मितम्॥

ग्रंथ के आदि और अंत में श्री राधावल्लभो जयति लिखा हुआ है।

३. पद रत्नावली, १९२०।१३५ डी, १९४१।१४२। यह पदों का संग्रह है। पदों में प्रियादास छाप है।

४. प्रियादास संग्रह, १९२६।३६१ सी। इसमें भी कृष्ण लीला के पद हैं और पदों में प्रियादास छाप है।

५. अनिन्द्य मोदिनी, १९२९।२७३ ए, १९४१।५१९ क। इस ग्रंथ के प्रारंभ में गौड़ीय संप्रदाय के महात्माओं—चैतन्य महाप्रभु, मनोहरदास, नित्यानंद, अद्वैत प्रभु, रूप और सनातन की प्रशस्ति है।

श्री राधावल्लभोजयीह

श्री चैतन्य मनहरन भजि श्री नित्यानंद संग

श्री अद्वैत प्रभु पारषद जैसे अंगी अंग

रसिक शिरोमनि विज्ञवर श्री मति रूप अनूप

सदा सनातन धर हिये दोऊ एक सरूप

रसिक अनन्यनि कौ गमन जा मारग में होय

ताके आचारज एई यह छवि मन में सोय

कवि ने ग्रंथांत में अपना नाम भी दिया है—

अनिन्द्य मोदिनी रुचि कही देत अनिन्द्य मोद

प्रियादास जे दृढ़ भरा तिनकी सुर भरी गोद

६. पीपा जो की कथा, १९२९।२७३ सी। यह भक्तमाल की टीका का एक अंश हैं। रिपोर्ट में इसका रचनाकाल सं० १७६९ दिया गया है, जो उक्त टीका का रचनाकाल है।

७. रसिक मोदिनी, १९२९।२७३ डी। इस ग्रंथ के भी प्रारंभ में गौड़ीय संप्रदाय के महात्माओं का गुण-गान है। गुरुमनोहरदास का भी नाम है।

महाप्रभू चैतन्य हरि रसिक मनोहर नाम

सुमिरि चरन अरविंद बर बरनौं महिमा धाम

ग्रंथ दोहों में है। अंतिम दोहों में से एक में कवि का नाम भी आया है:—

रसिक इन्दु गोविंद श्री कुंज बास अनयास

प्रियादास इह नाम जिन गुह्यो चातुरी बास

८. संगीत रत्नाकर, १९२९।२७३ ई। पदों में प्रियादास की छाप है। प्रथम पद वही है जो पीछे ४ संख्या पर वर्णित प्रियादास-संग्रह का प्रथम पद है।

९. संगीत माला, १९२९।२७३ एफ। यह ग्रंथ भी संगीतरत्नाकर के मेल में है। उसी का संक्षिप्त रूप प्रतीत होता है। संगीतरत्नाकर और इसके आदि के दोनों उद्धृत पद एक ही हैं। अंत के भी पदों में एक, 'पंडित रूप बने बनवारी', मिलता है।

१०. संग्रह, १९२९।२७३ जी। यह ग्रंथ भी प्रियादास संग्रह और संगीतरत्नाकर के मेल में है। अंत के पद तीनों ग्रंथों के मिलते हैं।

तासी ने भागवत के भाषानुवादक एक प्रियादास का उल्लेख किया है। ग्रियर्सन (३१९) का अनुमान है कि वह प्रियादास यही हैं। खोज में भी प्रियादास छाप युक्त भागवत का एक अनुवाद मिल चुका है। इन प्रियादास से भिन्न दो अन्य प्रियादास खोज में और मिले हैं —

१. प्रियादास[1]—यह हित संप्रदाय के अनुयायी थे, रसिकानंद लाल के शिष्य थे, यमुना तट स्थित दनकौर गांव, तहसील सिकंदराबाद, जिला बुलंदशहर के रहने वाले थे। इनके पिता का नाम श्रीनाथ और माता का नाम ब्रज कुँवरि था। यह सं० १८२७ के आसपास उपस्थित थे।

२. प्रियादास[2]—यह बीकानेर के रहनेवाले थे, इन्होंने सं० १८८० में जलकेलि पचीसी और सं० १८७९ में झूला पचीसी की रचना की। दानलीला और सीता मंगल भी इनके दो अन्य ग्रंथ हैं।

४६३।४००

(२३) पुरुषोत्तम कवि वंदीजन बुन्देलखंडी, सं० १७३० में उ०। यह कवि राजा छत्रसाल के यहाँ थे।

सर्वेक्षण

सरोज में पुरुषोत्तम कवि का एक कवित्त उद्धृत है, जिसमें छत्रसाल के युद्ध-कौशल की प्रशंसा है—

> कवि परसोत्तम तमासे लगि रहे मान
>
> वीर छत्रसाल अदभुत जुद्ध ठाटे हैं
>
> नादर नरेस के सवाइ रजपूत लड़े
>
> मारैं तरवारैं गज बादर से काटे हैं

छत्रसाल का शासनकाल सं० १७२२-८८ है, अतः सं० १७३० पुरुषोत्तम कवि का उपस्थिति-काल है। खोज में इन पुरुषोत्तम कवि का कोई पता नहीं चलता, पर अन्य कई पुरुषोत्तम मिले हैं।

१ पुरुषोत्तम[3]—कंपिला निवासी, कुमाऊंप्रवासी। हनुमान दूत रचनाकाल सं० १७०१, और अमरुशतक भाषा रचनाकाल सं० १७२० के रचयिता। राम के प्रपौत्र, गदाधर के पौत्र और मानिक के पुत्र। गोकरण गोत्र के सनाढ्य ब्राह्मण। नीलचंद्र के पुत्र कुमाऊं के राजा बाज बहादुर चंद के आश्रित।

२ पुरुषोत्तम[4]— फतेह चंद कायस्थ के आश्रित, सं० १७१५ के लगभग विद्यमान, राग विवेक के रचयिता।

---

(१) खोज रि० १९१२।१३७, १९०६।१३१। (२) खोज रि० १९१२।१३८ (३) रा० रि० भाग ४, पृष्ठ २१, ७० । (४) खोज रि० १९०३।४८

३. पुरुषोत्तम[१]—राधावल्लभी संप्रदाय के वैष्णव, इनके दो ग्रंथ मिले हैं, जिसमें एक का नाम है उत्सव। यह ब्रजभाषा गद्य में है। इसमें संप्रदाय के पर्वों का तिथि निर्णय है। दूसरा भक्तमाल माहात्म्य है। इसमें प्रियादास की टीका का भी उल्लेख है, अतः यह सं० १७६९ के बाद की रचना है।

४६८।३९७

(२४) पहलाद कवि, सं० १७०१ में उ०। इनके कवित्त हजारे में हैं।

सर्वेक्षण

पहलाद का एक शृंगारी कवित्त सरोज में उद्धृत है, जो दिग्विजय भूषण में लिया गया है। इनके कवित्त हजारे में थे, अतः इनका रचनाकाल सं० १८७५ के पूर्व निश्चित है। खोज में पहला कवि की एक रचना बैताल पचीसी[२] मिली है। प्राप्त प्रति में रचनाकाल सं० १७६१ दिया हुआ है, किन्तु रचयिता के अनुसार—

अकबर साहि सिद्ध बरदाई
तिहि के राज यह कथा चलाई

अकबर का का शासन काल सं० १६१३-६२ है। अतः ऊपर वाला सं० १७६१ ठीक नहीं। यह संभवतः लिपि काल है अथवा प्रमाद से १६६१ के स्थान पर १७६१ लिख गया है और सौ वर्ष की भूल हो गई है। रिपोर्ट में ग्रंथ का केवल विवरण दिया गया है, उद्धरण नहीं, अतः जांच संभव नहीं। सं० १७०१ में भी यह जीवित रह सकते हैं, पर उस समय इनकी अत्यन्त वृद्ध अवस्था होनी चाहिये। बहुत करके यह संवत् अशुद्ध है।

४६९।३९८

(२५) पंडित प्रवीण, ठाकुर प्रसाद, पयासी के मिश्र, अवध वाले, सं० १९२४ में उ०। यह महान् कवि पलिया शाहगंज के करीब के निवासी थे और महाराजा मान सिंह के यहाँ रहे। इनकी कविता देखने योग्य है।

सर्वेक्षण

सरोज में पंडित प्रवीण के १३ कवित्त उद्धृत हैं, जिनमें ६ में मान सिंह की अत्युक्तिपूर्ण प्रशंसा की गई है। यह मानसिंह अयोध्या नरेश प्रसिद्ध द्विजदेव हैं, जिनका देहान्त सं० १९२७ में हुआ था। अतः सरोज में दिया सं० १९२४ पंडित प्रवीण का उपस्थितिकाल है।

पलिया नामक एक गांव आजमगढ़ जिले में मऊ जंकशन के पास पिपरीडीह और खुरहट स्टेशनों के बीच स्थित है। संभवतः सरोज का अभीष्ट पलिया यही है।

सार संग्रह[३] नाम का किसी प्रवीण कवि का एक ग्रन्थ खोज में मिला है। रिपोर्ट में संभावना व्यक्त की गई है कि यह इन्हीं पंडित प्रवीण की रचना है।

---

(१) खोज रि० १९१२।१३९ (२) पंजाब रि० १९२२।८५ (३) खोज रि० १९०९, पृष्ठ ४७०, संख्या ४६।

४७०।३६६

(२६) पतिराम कवि, सं० १७०१ में उ०। हजारे में इनके कवित्त हैं।

सर्वेक्षण

पतिराम जाति के सुनार थे, ओरछा के रहने वाले थे और महाकवि केशव के मित्र थे। केशव ने इनका उल्लेख निम्नलिखित २ दोहों में किया है[१]—

> बांचि न आवै लिखि कछू, जानत छांह न घाम
> अर्थ सोनारी वैदई, करि जानत पतिराम
> तुला तौल कस बान बनि, कायथ लिखत अपार
> राख भरत पतिराम पै सोनो हरति सोनार

इनका जन्मकाल सं० १६२० और रचनाकाल सं० १६६० स्वीकार किया जाता है।[१] यह सं० १७०१ वि० तक जीवित रह सकते हैं।

४७१।३७६

२७. पृथ्वीराज कवि, सं० १६२४ में उ०। ऐज़न (हजारे में इनके कवित्त हैं।) यह कवि बीकानेर के राजा और संस्कृत भाषा के बड़े कवि थे।

सर्वेक्षण

पृथ्वीराज का विवरण भक्तमाल के आधार पर दिया गया है :—

> सवैया, गीत, स्लोक, बेलि, दोहा गुन नव रस
> पिंगल काव्य प्रमान विविध विधि गायो हरिजस
> पर दुख विदुख सलाघ्य वचन रचना जु विचारै
> अर्थ वित्त निर्मोल सबै सारँग उर धारै
> रुक्मिनी लता बरनन अनूप, बागीश बदन कल्यान सुव
> नरदेव उभै भाषा निपुन, पृथीराज कविराज हुव १४०

इसी 'उभै भाषा निपुन' के आधार पर सरोज में इन्हें संस्कृत और भाषा का कवि स्वीकार किया गया है। प्रियादास की टीका के अनुसार इन्हें काबुल की लड़ाई में अकबर की ओर से लड़ना पड़ा तथा इनकी मृत्यु मथुरा में हुई थी।

पृथ्वीराज[२] राठौर उपनाम कमलध्वज, बीकानेर नरेश राजा राव कल्याण मल के तृतीय पुत्र और महाराज राय सिंह के भाई थे। यह स्वयं बीकानेर नरेश नहीं थे। इनका जन्म मार्गशीर्ष शुक्ल १, सं० १६०६ को हुआ था। कुछ दिनों तक यह अकबर के दरबार में नजरबंद थे। यह महाराणा

---

(१) बुंदेल वैभव, भाग २, पृष्ठ २८१ (२) राजस्थानी भाषा और साहित्य, पृष्ठ १२१-२२

प्रताप सिंह के बड़े हितैषी और उत्तेजना देने वाले कवि थे। इनके द्वारा रचित 'श्रीकृष्णदेव रुक्मिनी बेलि' अत्यन्त प्रसिद्ध रचना है। यह डिंगल भाषा में रचित ३०५ छन्दों का खंड-काव्य है। इसके अनेक सुन्दर सटीक सुसंपादित संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं। सबसे बड़ा और महत्वपूर्ण संस्करण हिन्दुस्तानी एकेडेमी, प्रयाग का है। यह ग्रंथ सं० १६३७ में प्रारम्भ किया गया था।

बरसि अचल[७] गुण[३] अंग[६] ससी[१] संवति
तवियौ जस करि स्री भरतार
करि श्रवणे दिन राति कंठि करि
पामै स्री फल भगति अपार

यह ग्रंथ सं० १६४४, वैशाख सुदी ३, सोमवार को पूर्ण हुआ :—

सोलह सै संवत चमालै बरसै, सोम तीज वैशाख सुदि
रुक्मीण कृष्ण रहस्य रमण रस, कथी बेलि प्रथीराज कमंधि

इनकी मृत्यु सं० १६५७ में हुई। राजस्थानी भाषा और साहित्य में पृथ्वीराज के निम्नलिखित ५ ग्रन्थ कहे गए हैं।

१ बेलि क्रिसन रुक्मणी री।
२ दसम भागवत रा दूहा—कृष्णभक्ति विषयक १८४ दोहे।
३. दशरथ राव उत—राम-स्तुति के पचास दोहे।
४. बसदेव राव उत—१६५ दोहों में कृष्ण का गुणानुवाद।
५. गंगा लहरी—गंगा महिमा के ८० दोहे।

४७२।३८८

(२८) परवत कवि, सं० १६२४ में उ०। ऐज़न। (हजारे में इनके कवित्त हैं)।

सर्वेक्षण

इनका निम्नलिखित शृंगारी सवैया सरोज में उद्धृत है :—

फैलि रहो बिरहा चहुँओर तें, भाजिबे को कोउ पार न पावै
जानत हौ परबत्त सबै तुम, जाल को मीन कहां लगि धावै
चाहै कछूक सँदेस कह्यौ सु तो जी महँ आवत, जीभ न आवै
ऊधौ जू वा मधुसूदन सों कहियों जो कछू तुम्हें राम कहावै

यही छन्द संख्या ५४६ पर मधुसूदन कवि के नाम से उद्धृत है। द्वितीय चरण में जरा-सा अंतर कर दिया गया है—

जानत हौ पर बात सबै तुम जाल को मीन कहां लगि धावै

'बत्त' को बात कर दिया है, बस। यह छन्द वस्तुतः परबत कवि का ही है, मधुसूदन का नहीं। मधुसूदन स्पष्ट ही कृष्ण के लिये प्रयुक्त है। 'परबत्त' को 'पर बात' कर देने से वाक्य में शिथिलता तो आती ही है, अधिक पदत्व-दोष भी आ जाता है।

राज पुस्तकालय जोधपुर में 'फुटकल कवित्त' नामक एक काव्य संग्रह है। इसमें परवत कवि की रचना संग्रहीत है[१]। अतः इस नाम के कवि के अस्तित्व में कोई संदेह नहीं रह जाता।

बुंदेल वैभव में इस कवि का नाम परवते दिया गया है। इन्हें ओरछावासी सुनार कहा गया है। 'दशावतार कथा' और 'रामरहस्य कलेवा' नामक इनके दो ग्रंथों का उल्लेख हुआ है। इनका जन्मकाल सं० १६८४ और कविता काल स० १७१० माना गया है।[२] सूदन में इसका उल्लेख है।

४७३।३६५

(२६) परशुराम कवि १। दिग्विजय भूषण में इनके कवित्त हैं।

सर्वेक्षण

सरोज में द्विग्विजय भूषण से नखशिख सम्बन्धी इनका एक कवित्त उद्धृत है। यह परशुराम शृंगारी कवि हैं और भक्त कवि परशुराम बृजवासी[३] से भिन्न हैं।

खोज में कई परशुराम मिले हैं। इनमें से किसी के भी साथ इनकी अभिन्नता स्थापित करना अत्यन्त कठिन है—

१. परशुराम मिश्र, कुलपति मिश्र के पिता, आगरा निवासी, १७ वीं शताब्दी के अंत में वर्तमान। दे० १६००।७२
२. परशुराम, कायस्थ, टिकैतराय के पुत्र, मृत्यु सं० १७१३। दे० १६४१।११४
३. परशुराम, प्रसिद्ध कवि सेनापति के पितामह। दे० १६०६।२६७
४. परशुराम, भागवत छठें और सातवें स्कंध के अनुवादक। दे० १६३५।७३
५. परशुराम, अमर बोध शास्त्र, जोड़ा और राग सागर के रचयिता। दे० १६३२।१६३ ए बी सी।
६. परशुराम, सगुनौती प्रश्न के रचयिता। दे० १६२२।८१
७. परशुराम, शिव स्मरण के रचयिता। दे० १६२२।८२

४७४।३७६

(३०) परशुराम २, ब्रजवासी, सं० १६६० में उ०। इनके पद रागसागरोद्भव में है। यह महाराज श्रीभट्ट और हरिव्यास जी के मत पर चलते थे। यह बड़े भक्त थे। इनकी कविता बहुत सुन्दर है। यथा—

माया सगी न मन सगा, सगा न यह संसार
परशुराम यहि जीव को, सगा सो सिरजनहार

---

(१) खोज रिपोर्ट १६०२।४६ (२) बुंदेल वैभव, भाग २, पृष्ठ २६३ (३) यही ग्रन्थ, कवि संख्या ४७४

सर्वेक्षण

परशुराम ब्रजवासी, निंबार्क संप्रदाय के संत हरिव्यास देव के शिष्य थे। इनकी गणना उक्त संप्रदाय के प्रमुख आचार्यों में होती है। इनका जन्म जयपुर राज्यांतर्गत किसी पंच गौड़ ब्राह्मण-कुल में हुआ था। खोज में इनका परशुराम सागर मिला है।[१] यह इनके छोटे-बड़े २२ ग्रन्थों तथा ७५० के लगभग फुटकर कविताओं का संग्रह है। ग्रन्थ में कुल २९९ पन्ने हैं। १७४ पन्नों में २२ ग्रन्थ और शेष १२५ पन्नों में ७५० फुटकर रचनाएँ हैं। इसमें सम्मिलित ग्रन्थों की सूची यह है :—

१. साखी का जोड़ा ८३ पन्ने, २ छंद का जोड़ा ८ पन्ने, ३ सवैया दस अवतार का १ पन्ना, ४ रघुनाथ चरित्र २ पन्ने, ५ श्रीकृष्ण चरित्र ३ पन्ने, ६ सिंगार सुदामा चरित्र ७ पन्ने, ७. द्रोपदी का जोड़ा १ पन्ने, ८ छप्पय गज ग्राह-को १ पन्ना, ९ प्रहलाद चरित्र ११ पन्ने, १० अमर-बोध लीला ४ पन्ने, ११ नामविधिलीला १५ पन्ने, १२ साँच निषेध लीला ३ पन्ने, १३ नाथ-लीला १ पन्ना, १४ निज रूप लीला ४ पन्ने, १५ श्रीहरि लीला ४ पन्ने, १६ श्री निर्वाण लीला १३ पन्ने, १७ समझणी लीला १ पन्ना, १८ तिथि लीला १ पन्ना, १९ वार लीला १ पन्ना, २०. श्री नक्षत्र लीला ७ पन्ने, २१ श्री बावनी लीला २ पन्ने, २२ विप्रमती १ पन्ना।

इनमें से विप्रमती का रचनाकाल सं० १६७७ कहा गया है पर यह वस्तुतः उस पोथी का लिपि काल है जिसकी प्रतिलिपि सं० १८३७ में की गई जिसका बिवरण उक्त रिपोर्ट में है। यह बात पुष्पिका से स्पष्ट है—

"इति विप्रमती। इति श्री परशुराम जी की वाणी संपूर्ण। पोथी को संवत १६७७ वर्ष।"

जो हो, सरोज में दिया संवत् १६६० कवि का उपस्थितिकाल ही है, क्योंकि इनके दादा गुरु श्री भट्ट[२] जी का काव्यकाल सं० १६०० के आस-पास है। सूर पूर्व ब्रजभाषा और उसका साहित्य[३] में परशुराम जी का समय सं० १६०० के आस-पास निर्धारित किया गया है, जो ठीक नहीं।

ऊपर लिखित ग्रन्थों में से अंतिम १२ खोज में अलग-अलग भी मिले हैं। इसी वर्ष की खोज में इनकी पदावली भी मिली है।[४] इनकी साखी भी मिल चुकी है।[५] इनके अतिरिक्त निम्नलिखित दो ग्रन्थ और मिले हैं जो परशुराम सागर में नहीं सम्मिलित हैं।

१ वैराग्य निर्णय, १९००।७५

२ उषा चरित्र, १९१२।१२७, १९२३।३११, १९८६।३४४, १९२९।२६४ ए बी।

परशुराम ग्रंथावली का संपादन सभा करा रही है। परशुराम का विवरण भक्तमाल के इस छप्पय में है :—

---

(१) राज० रि० भाग १, संख्या ७१, राजस्थानी भाषा और साहित्य, पृष्ठ १४१-४२ और खोज रि० १९१२।१२६ (२) देखिए, यही ग्रन्थ संख्या ८६४ (३) सूर पूर्व ब्रजभाषा और उसका साहित्य, पृष्ठ २०३ (४) खोज रि० १९३२।७४ (५) खोज रि० १९२०।१२६

ज्यौं चंदन कौ पवन निंब पुनि चंदन करई
बहुत काल तम निबिड़ उदै दीपक ज्यौं हरई
श्री भट पुनि हरि व्यास संत मारग अनुसरई
कथा कीरतन नेम रसन हरि गुण उच्चरई
गोविंद भक्ति गदरोगगति, तिलक दाम सद वैद्य हद
जंगली देस के लोग सब, परसुराम किय पारषद १३७

४७५।३७८

(३१) पुंडरीक कवि बुन्देलखंडी, सं० १७६९ में उ० । इनकी कविता बहुत ही सुन्दर है ।

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध में कोई सूचना सुलभ नहीं । इस कवि का राम चरित्र सम्बन्धी एक कवित्त उद्धृत है । जान पड़ता है कि तुलसीकृत कवितावली के ढंग पर इस कवि ने रामचरित पर कोई छोटी-मोटी रचना की थी ।

४७६।३८६

(३२) पद्मेश कवि, सं० १८०३ में उ० । इन्होंने सुन्दर कविता की है ।

सर्वेक्षण

सरोज में पद्मेश के दो छंद हैं, पहला छप्पय है जिसमें १८ पुराणों का नाम गिनाया गया है, दूसरे में किसी करनेश की प्रशस्ति है ।

राजा करनेस के करेरे पद्मेस वीर
तेरे कर करि कला राखी मुगलान में

जब तक मुगलों से लोहा लेने वाले इन करनेश का पता नहीं लग जाता, तब तक पद्मेश के समय की जांच संभव नहीं ।

४७७।३८७

(३३) पुषी कवि ब्राह्मण, मैनपुरी के समीप के निवासी, सं० १८०३ में उ० । इन्होंने सुन्दर कविता की है ।

सर्वेक्षण

अकबरी दरबार के कवियों की गणना करने वाले प्रसिद्ध सवैये में पहला नाम इन्हीं का है ।

'पुखी प्रसिद्ध पुरंदर ब्रह्म......

प्रथम संस्करण में 'पुषी' पाठ है, द्वितीय में यह 'पुई' हो गया है और सप्तम में इसका 'पाई' रूप में संशोधन हो गया है । स्पष्ट है कि पुखी अकबरी दरबार के कवि थे । अतः सरोज में दिया इनका सं० १८०३ अशुद्ध है । इनका रचनाकाल सं० १६६२ के आसपास होना चाहिए ।

४७८।३६०

(३४) पद्मनाभ जी ब्रजवासी, कृष्णदास पय अहारी गलता जी के शिष्य, सं० १५७० में उ०। इनके पद राग सागरोद्भव में बहुत हैं। कील्ह, अग्रदास, केवलराम, गदाधर, देवा, कल्याण, हठी नारायण, पद्मनाभ ये सब कृष्णदास जी के शिष्य और महान् कवि हुए हैं। अग्रदास के शिष्य नाभादास थे।

सर्वेक्षण

समय के थोड़े ही हेर-फेर से तीन पद्मनाभ हुए हैं, एक पद्मनाभ कबीर के शिष्य थे, दूसरे कृष्णदास पय अहारी के, और तीसरे महाप्रभु वल्लभाचार्य के। कुछ पता नहीं, इनमें से पहले दो कवि थे या नहीं, तीसरे कवि थे। सरोजकार ने विवरण दूसरे पद्मनाभ का दिया है और उदाहरण तीसरे का।

कबीर के शिष्य पद्मनाभ का विवरण भक्तमाल के इस छप्पय में है—

नाम महानिधि मंत्र, नाम ही सेवा पूजा
जप तप तीरथ नाम, नाम बिन और न दूजा
नाम प्रीति नाम बैर, नाम कहि नामी बोले
नाम अजामिल साखि, नाम बंधन ते खोले
नाम अधिक रघुनाथ तें, राम निकट हनुमत कह्यो
कबीर कृपा तें परम तत्व, पद्मनाभ परचौ लह्यो ६८

कृष्णदास पय अहारी के शिष्यों का नाम भक्तमाल के निम्नलिखित छप्पय में है। इसी में पद्मनाभ का भी नाम है—

कील्ह, अगर, केवल, चरण, ब्रत हठी नरायन
सूरज पुरुषो पृथू तिपुर हरि भक्ति परायन
पद्मनाभ, गोपाल, टेक, टीला, गदाधारी
देवा, हेम, कल्यान, गंगा गंगा सम नारी
विष्णुदास, कन्हर, रंगा, चाँदन, सबीरी, गोविंद पर
पैहारी परसाद ते, सिष्य सबै भए पारकर ३६

तीसरे पद्मनाभ का अस्तित्व सरोज में उदाहृत इस पद से स्वयं सिद्ध है। इस पद में वल्लभ और उनके पिता लछिमन भट्ट का नाम आया है—

हेली नव निकुंज लीला रस पूरित श्री वल्लभ वन मोरे
अँग रवि पुन छिप न घन दामिनि दुति फल फल पति दोरे
करत अनेस विरह विरहिनि स्रुति भूतल बहुतक थोरे
पद्मनाभ मथुरेस बिचारत श्री लछिमन भट सुत ओरे

खोज में भी इन तीसरे पद्मनाभ का एक ग्रन्थ 'पद्मनाभ जी के पद'[१] नाम से मिला है। पदों में गुजराती शब्दों की भरमार है। अतः अनुमान किया गया है कि यह गुजराती थे। यह

(१) खोज रि० १९३२।१२६

गुजरातीशब्द-बाहुल्य किसी गुजराती प्रतिलिपिकार के कारण भी सम्भव है। रिपोर्ट में उद्धृत पदों में वल्लभ और उनके पिता लक्ष्मण भट्ट का नाम आया है।

१. 'श्री वल्लभ पद पंकज माधुरी, जिनको अलियां रुचि मानी'

२. 'श्री लक्ष्मण भटपुत्र पद रज बहुत रजधानी'

पद्मनाभदास जी का जन्म संवत १५२० में कन्नौज में एक कान्यकुब्ज ब्राह्मण परिवार में हुआ था। १५५२ में यह कन्नौज में ही वल्लभाचार्य जी के पधारने पर पुष्टि-सम्प्रदाय में दीक्षित हुए थे। यह संवत् १६३० तक जीवित रहे। इनकी वार्ता 'चौरासी वैष्णवन की वार्ता' में चौथी है। प्राचीन वार्तारहस्य, प्रथम भाग में गुजराती में जो विवेचन दिया गया है, उससे इनके जीवन-काल के सम्बन्ध में विशेष जानकारी होती है।[१]

दूसरे पद्मनाभ अग्रदास के गुरु भाई थे। अग्रदास का समय सं० १६३२ माना जाता है। यही इनका भी उपस्थितिकाल होना चाहिए। ग्रियर्सन (५०) और विनोद (१५७) में भी यही इनका उपस्थितिकाल स्वीकृत है।

४७६।३६१

(३५) पारस कवि। इनके कवित्त सुन्दर हैं।

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध में कोई सूचना सुलभ नहीं। विनोद (२२०८) में इनको वर्तमान प्रकरण के अंतर्गत सं० १६२६ के पूर्व स्थित कवियों में माना गया है।

४७०।३६२

(३६) प्रेम कवि। ऐज़न। इनके कवित्त सुन्दर हैं।

सर्वेक्षण

प्रेम कवि का एक घोर शृङ्गारी सवैया सरोज में उदाहृत है :—

'रति के रस के, कुच के मसके, जे लई सिसके, ते अजौं कसकैं'

अतः सरोज के यह प्रेम, कोई रीतिकालीन कविद प्रतीत होते हैं।

खोज में प्रेम नामक एक कवि मिले हैं, जिन्होंने सं० १७४०, चैत सुदी १०, सोमवार को ६७ दोहों का प्रेम मंजरी[२] नामक ग्रन्थ बनाया।

सतरै सै चालोतरा चैत्र मास उजियार
अटकनि अटकहि लिख चुके तिथि दसमी शिव वार

---

(१) प्राचीन वार्तारहस्य, प्रथम भाग, पृष्ठ १३८-१४१ (२) राज० रिपोर्ट, भाग २, पृष्ठ २५

प्रथम दोहे में गुरु गोविंद कूं प्रणाम किया गया है—

मन बच करूँ प्रणाम, प्रथमहि गुरु गोविंद कूं
पूजै मन की काम, जिनकी कृपा सु दृष्टि तें १

इस गुरुगोविंद के तीन अर्थ हो सकते हैं— १ गुरु और गोविंद, २ गुरुरूपी गोविंद, ३ गोविंद नामक गुरु।

खोज में एक प्रेम नामक कवि और मिले हैं। इनकी रचना का नाम उत्पत्ति अगाध बोध[1] है। इसमें भी प्रारम्भ में इसी प्रकार गुरु गोविंद का स्मरण है।

गुरू गोविंद कृपा उर धारौं
ग्रन्थ अगाध बोध बिस्तारौं

इस कवि का परिचय देते समय गुरु गोविंद का ऊपर लिखित तीसरा अर्थ लिया गया है और गुरु गोविंद को पहचान सिक्खों के दसवें गुरु गोविंदसिंह से की गई है। प्रेममंजरी और उत्पत्ति अगाधबोध के रचयिता प्रेम एक ही प्रतीत होते हैं। गुरु गोविंद दोनों की एकता की ओर संकेत करता है। प्रेममंजरी का रचनाकाल सं० १७४० गुरु गोविंद सिंह के जीवनकाल सं० १७२३-६५ के मेल में भी है। प्रेममंजरी कवि की प्रारम्भिक कृति होगी और उत्पत्ति अगाध-बोध उसकी वृद्धावस्था की।

४८१।३९३

(३७) पुरान कवि। ऐज़न। इनके कवित्त सुन्दर हैं।

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध में कोई सूचना सुलभ नहीं। सरोज में पुरान का एक कवित्त उदाहृत है, जो दिग्विजय-भूषण से उद्धृत है।

४८२।३९४

(३८) परवीने कवि। इनकी कविता देखने योग्य हैं।

सर्वेक्षण

सरोज के तृतीय संस्करण में कवि का नाम पखाने है। सरोज के संशोधक श्री रूपनारायण पांडेय ने इसे अत्यन्त भ्रष्ट समझकर इसे परवीने बना दिया। सप्तम संस्करण में यह इसी रूप में उपस्थित है। सरोज में जो ५ दोहे कवि के नाम पर उदाहृत हैं, वे 'दिग्विजय-भूषण' से उद्धृत हैं। दिग्विजय-भूषण में 'अथ पखाने कवि कै' के अनंतर ६ दोहे और ८ चौपाइयाँ उद्धृत हैं। इन्हीं ६ दोहों में से ५ सरोज में अवतरित हैं। दिग्विजय-भूषण में संकलित इन चौदहों छंदों में लोकोक्ति अलंकार है। प्रायः प्रत्येक छंद में 'कहै पखानो' शब्द आया है। ब्रज जी ने 'पखानो' को कवि का

---

(१) खोज रि० १९३२।१६६

नाम समझ लिया। वस्तुतः 'पखानो' उपाख्यान का तद्भव रूप है। उपाख्यान का अर्थ है लोकोक्ति अथवा कहावत। ब्रज जी ने इस रहस्य को नहीं समझा। सरोजकार ने भी मक्षिका-स्थाने मक्षिका रख दिया।

पखाने कवि के नाम पर जो कविताएँ उदाहृत हैं, वे जयपुर के कवि राय शिवदास की हैं और उनके रसग्रन्थ 'लोकोक्तिरस कौमुदी' से ली गई हैं। यह ग्रन्थ सं० १८०९ में लिखा गया। इसमें लोकोक्तियों में नायिका-भेद कहा गया है। महामहोपाध्याय पंडित सुधाकर द्विवेदी ने सं० १९४७ में इस अत्यन्त सरस ग्रन्थ को संशोधित तथा सम्पादित कर भारत जीवन प्रेस, काशी से प्रकाशित कराया था। इस मुद्रित संस्करण की एक प्रति काशी के कारमाइकेल पुस्तकालय में है। ग्रन्थ की एक हस्तलिखित प्रति बलरामपुर के राज पुस्तकालय में है। वहाँ के दरबारी कवि ब्रज ने इसी हस्तलिखित प्रति का उपयोग किया था। यह ग्रन्थ खोज[1] में मिल चुका है।[2]

४८३।४०७

(३९) पुष्कर कवि। इन्होंने 'रस-रतन' नामक साहित्य का ग्रन्थ बनाया है।

सर्वेक्षण

पुष्कर कवि जाति के कायस्थ थे। मैनपुरी जिले में भोगाँव के पास सोम तीर्थ है। यहीं प्रतापपुरा में इनका जन्म हुआ। यह बेन के प्रपौत्र थे। इनके पिता तीन भाई थे—प्रतापमल, मोहन दास और हरिवंश। पुष्कर मोहनदास के पुत्र थे। यह स्वयं सात भाई थे—१. पोहकर या पुष्कर, २. सुन्दर ३. राघव रतन, ४. मुरलीधर, ५. शंकर, ६. मकरंद राय और ७. सकत सिंह। यह जहाँगीर के शासनकाल में हुए। जहाँगीर ने इन्हें किसी बात पर कैद कर लिया था। वंदीगृह में ही इन्होंने 'रस रत्न' नामक ग्रन्थ लिखा।[3]

रस-रत्न, साहित्य-शास्त्र का ग्रन्थ नहीं है जैसा कि सरोज में लिखा गया है। यह एक उत्पाद्य-प्रेम कहानी है। इसमें संयोग और वियोग की विविध दशाओं का साहित्य की रीति पर वर्णन है। वर्णन उसी ढंग के हैं जिस ढंग के मुक्तक कवियों ने किए हैं। पूर्वराग, सखी, मंडन, नखशिख, ऋतु वर्णन आदि शृङ्गार की सब सामग्री एकत्र की गई है। कविता सरस और प्रौढ़ है।[4] इसमें चंपावती नगरी के राजा विजयपाल की बेटी रम्भावती और बैरागढ़ के राजा सोमेश्वर के बेटे सूरसेन की प्रेम-कथा है। कहते हैं कि जहाँगीर ने वंदी की कवि-प्रतिभा से प्रसन्न होकर उसे मुक्त कर दिया था। इस ग्रन्थ की रचना सं० १६७३ में हुई थी—

---

(१) खोज रि० १९०९।२४१ (२) हरिऔध, अप्रैल १९२६ में मेरा लेख, शिवसिंह सरोज के परवीने,कवि, पृष्ठ १४-२८। (३) खोज रि० १९०५।४८, १९०६।२०८, १९१७।१४०, १९२०।१२८, पंजाब रि० १९२२।८४ (४) हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ २२८

अग्नि[३] सिंधु[७] रस[६] इंदु[१] प्रवाना
सों विक्रम संवत ठहराना—खोज रि० १९०५।४८

खोज में इनका एक ग्रन्थ नखशिख[१] और मिला है।

४८४।४१०

(४०) पराग कवि बनारसी, सं० १८८३ में उ०। यह कवि महाराजा उदितनारायण सिंह काशी-नरेश के यहाँ थे। तीनों कांड अमरकोष की भाषा की है।

सर्वेक्षण

महाराज उदितनारायण सिंह का शासनकाल सं० १८५२-९२ है।[२] अतः सरोज में दिया सं० १८८३ कवि का उपस्थितिकाल है। इस कवि के सम्बन्ध में और कोई सूचना सुलभ नहीं।

४८५।

(४१) पहलाद वंदीजन, चरखारी वाले। राजा जगतसिंह बुंदेला चरखारी वाले के यहाँ थे

सर्वेक्षण

चरखारी राज्य कीं स्थापना सं० १८२२ में खुमान सिंह के द्वारा हुई। सं० १८२२ और सरोज के प्रणयनकाल सं० १९३४ के बीच चरखारी में जगत सिंह नाम का कोई राजा नहीं हुआ।[३] चरखारी राज्य के संस्थापक खुमान सिंह प्रसिद्ध छत्रसाल के प्रपौत्र, जगतराज के पौत्र और कीर्ति सिंह के पुत्र थे। जगत राज के हिस्से में चरखारी भी सम्मिलित था। जगतराज ने सं० १८१५ तक शासन किया। सरोजकार का अभिप्राय इन्हीं जगतराज से है, और पहलाद का समय भी सं० १८१५ के आस-पास होना चाहिए।

चरखारी के किस राजा के दरबार में कौन कवि हुआ, इसका वर्णन चरखारी के ही गोपाल कवि ने एक छप्पय में किया है। इस कवि की कविता के उदाहरण में उक्त छप्पय सरोज में उद्धृत है। इस छप्पय के अनुसार पहलाद कवि जगतेस के पास थे।[४]

पहलाद, चरखारी के प्रसिद्ध कवि खुमान के पितामह के पितामह थे। इनके पिता का नाम हरिचन्दन और पितामह का हठेंसिंह था। यह लोहट में रहते थे। इनके पुत्र दानीराम, पौत्र उदयभान, प्रपौत्र उदित और प्र-प्रपौत्र खुमान थे। खुमान ने लक्ष्मण-शतक में यह वंश-परंपरा स्वयं दी है।[५]

---

(१) खोज रि० १९०३।१६१ (२) 'संसार' साप्ताहिक का काशीराज्य विशेषांक (३) ना० प्रचारिणी पत्रिका, भाग ९, अंक ४, माघ सं० १९८५, चरखारी राज्य के कवि (४) देखिए, यही ग्रन्थ, पृ० २६२

४८६।४०२

(४२) पंचम कवि, वंदीजन, डलमऊ, जिले रायबरेली, सं० १९२४ में उ० ।

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध में कोई सूचना सुलभ नहीं । सरोज-दत्त सं० १९२४ कदापि जन्मकाल नहीं हो सकता, क्योंकि यदि यह जन्मकाल है तो सरोज के प्रणयन के समय कवि की वय केवल १० वर्ष की होती है और इस अल्प-आयु में कोई कवि नहीं बन सकता ।

४८७।

(४३) प्रेमनाथ, ब्राह्मण, कलुआ जिले खीरी के, सं० १८३५ में उ० । राजा अली अकबर मोहम्मदी वाले के यहाँ थे । इन्होंने ब्रह्मोत्तर खण्ड की भाषा की है ।

सर्वेक्षण

प्रेमनाथ मोम्हमदी जिला सीतापुर के राजा अली अकबर के यहाँ थे । इन्हीं के यहाँ नैषध-चरित के प्रसिद्ध अनुवादक गुमान मिश्र थे । प्रेमनाथ कृत 'ब्रह्मोत्तरखंड भाषा' की कोई प्रति अभी तक खोज में नहीं मिली है । इनका एक अन्य ग्रन्थ 'महाभारत आदिपर्व' मिला है । इसका रचना-काल सं० १८३९ है ।

ग्रह[९] गुन[३] वामहि जानु, जेष्ठ सुकुल गौरी दिवस
पूर्न ग्रन्थ यह जानु, प्रेमनाथ मोहे सकत—खोज रि० १९१२।१३६

संभवतः 'वामहि' के बदले 'वसु महि' पाठ रहा होगा । सरोज-दत्त सं० १८३५ ठीक है और कवि का उपस्थितिकाल है ।

४८८।

(४४) प्रेम पुरोहित ।

सर्वेक्षण

प्रेम पुरोहित ने बिहारी-सतसई के दोहों का कोई क्रम दिया है । इस सम्बन्ध में रत्नाकर जी ने बिहारी सतसई सम्बन्धी साहित्य में विचार किया है ।[1] प्रेम पुरोहित का क्रम ग्यारहवाँ है । इस क्रम की एक सतसई जयपुर से रत्नाकर जी के पास आई थी । इसके प्रारम्भ में ७ दोहे भूमिका स्वरूप थे । इसके दूसरे तीसरे दोहे ये हैं—

विप्र बिहारी नाम हुव, सोती ख्याति प्रवीन
तिन कबि साढ़े सात सै, दोहा उत्तम कीन २
बीते काल अपार तें, भए व्यतिक्रम देखि
करे अनुक्रम फेरि तें, प्रोहित प्रेम बिसेखि ३

इससे प्रकट होता है कि बिहारी के बहुत दिनों पश्चात् प्रेम पुरोहित ने यह अनुक्रम बाँधा था । रत्नाकर जी के अनुसार यह क्रम विषयानुसारी है । सातवें दोहे का उत्तरार्द्ध यह है—

'करे अनुक्रम राम जू जातें समझैं छिप्र'

रत्नाकर जी का अनुमान है कि यह अनुक्रम प्रेम पुरोहित ने जयपुर नरेश उन राम सिंह के लिए प्रस्तुत किया जो सं० १८९१ में सिंहासनारूढ़ हुए थे ।

विनोद में (१९८४) एक रामजू हैं जिन्होंने बिहारी-सतसई की एक टीका लिखी है । रत्नाकर जी का अनुमान है कि संभवतः ऊपर उद्धृत दोहे का ठीक-ठीक अर्थ न समझ पाने के

---

(१) नागरी प्रचारिणी पत्रिका, भाग ९, अंक १, पृष्ठ ८४, ८७

कारण राम जू की कल्पना कर ली गई है और अनुक्रम को टीका समझ लिया गया है। किंतु बात ऐसी नहीं है। विनोद में राम जू का उल्लेख यह टीका देखकर नहीं हुआ है, सरोज देखकर हुआ है।

बिहारी सतसई की एक प्रति रत्नाकर जी के देहावसान के अनंतर सन् १९३८ ई० में मिली है।[१] यह प्रेम पुरोहित वाली टीका से संयुक्त है। इसके प्रारम्भ में भूमिका सम्बन्धी सातों दोहों के अतिरिक्त सर्वप्रथम मंगलाचरण सम्बन्धी दोहे भी हैं। मंगलाचरण का पहला दोहा बिहारी का सुप्रसिद्ध दोहा 'मेरी भव बाधा हरौ' है। दूसरा मंगलाचरण प्रेम पुरोहित का है—

गज मुख, मोदक प्रिय मुदित, भूषक वाहन जास
विघन हरन, विधुवर विमल, नमो प्रेम नित तास २

तीसरा मंगलाचरण कवि राम का है—

नाग धरन सुत, नागधर, नाग वदन सुख जाल
इकहि जु छवि कवि राम कहि, दूज सोभै सुभ लाल ३

इसके आगे प्रेम कवि का मंगलाचरण सम्बन्धी यह दोहा और है—

खान पान परधान बहु पान वान दिन दान
बुधिदा विधि वन आदि सों नमो प्रेम तिहि वान ४

इसके आगे भूमिका सम्बन्धी सातों दोहे हैं, जिनकी क्रमसंख्या अलग से पुनः २ से ७ तक दी गई है। एक अंक वाला दोहा नहीं है।

प्रेम पुरोहित वाली टीका पर विचार करते हुए रत्नाकर जी लिखते हैं, "इस क्रम में यह विलक्षणता है कि मंगलाचरण का दोहा 'मेरी भव बाधा' इत्यादि न होकर 'प्रगट भए द्विजराज कुल' इत्यादि है।" इस प्रति में यह दोहा भूमिका वाले दोहों के समाप्त होने पर 'श्रीकृष्ण के दोहा' शीर्षक के नीचे प्रथम दोहा है। स्पष्ट है कि यह दोहा मंगलाचरण रूप में नहीं स्वीकृत है। १९३८ ई० वाली प्रति में 'मेरी भव बाधा हरौ' वाला दोहा ही मंगलाचरण के स्थान पर सर्वप्रथम दिया गया है। रत्नाकर जी वाली प्रति में यह दोहा और मंगलाचरण सम्बन्धी अन्य तीन दोहे नहीं हैं।

इस विस्तृत विवरण से इतना तो स्पष्ट है कि बिहारी-सतसई का एक अनुक्रम प्रेम पुरोहित ने लगाया। सन् १९३८ में प्राप्त प्रति सं० १८९० की लिखी हुई है, अतः कवि उसी समय का है अथवा उससे कुछ पूर्ववर्ती है। ऐसी स्थिति में जयपुर की गद्दी पर सं० १८९१ में बैठने वाले राम सिंह को इसमें घसीटना ठीक नहीं, क्योंकि वे परवर्ती सिद्ध हो जाते हैं। इस प्रति के मंगलाचरण के तीसरे दोहे से स्पष्ट है कि इस ग्रन्थ से कवि राम का भी कुछ लगाव है। या तो यह प्रेम पुरोहित के भी कुछ बाद हुए अथवा दोनों समकालीन हैं। प्रेम पुरोहित और राम कवि के अनुक्रम एक ही हैं। ऐसा स्थिति में मेरी यह धारणा है कि दोनों कवि समकालीन एवं सह-श्रमी हैं। भरतपुर में 'प्रेम' और 'राम' नामक वीररस के दो कवि साथ-साथ हुए हैं। कवि राम सूरजमल (शासन काल सं० १८१२-२०) और कवि प्रेम मूल नाम मुरलीधर रणजीत सिंह (शासनकाल सं० १८३४-६२) के दरबार में थे।[२] हो सकता है कि यह अनुक्रम इन्हीं का कृत्य हो।

बुन्देल-वैभव के अनुसार सतसई का अनुक्रम लगानेवाले राम जू कवि का जन्मकाल सं० १६९२ एवं कविताकाल सं० १७२० है। इनका जन्म ओरछा में हुआ था और यह ओरछा नरेश सुजान सिंह के दरबारी कवि थे।[३]

---

(१) खोज रि० १९३८।१९६ (२) माधुरी, फरवरी १९२७, मयाशंकर याज्ञिक का 'भरतपुर और हिन्दी' शीर्षक लेख (३) बुंदेल-वैभव, भाग २, पृष्ठ २९९

४८६।

(४५) राम पूरनचन्द। इन्होंने 'राम-रहस्य रामायण' बनाई है।

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध में कोई सूचना सुलभ नहीं। प्रथम संस्करण में कवि का नाम 'राम पूरनचन्द' एवं अन्यों में 'पूथ पूरनचन्द' है।

---

(४६) पुंड कवि उज्जैन के निवासी, सं ७७० में उ०। टाड साहब अपनी किताब 'राजस्थान' में अवंतीपुरी के पुराने प्रबन्धों के अनुसार लिखते हैं कि संवत् ७७० विक्रमी में राजा मान अवंतीपुरी का राजा बड़ा पंडित और अलंकार ज्ञान में अद्वितीय था। उसके पास पुंड भाट ने प्रथम संस्कृत अलंकार ग्रन्थ पढ़ा, पीछे भाषा में दोहे बनाए। इसी राजा मान के संवत् ७७० में राजा भोज उत्पन्न हुआ। हमको भाषा काव्य की जड़ यही कवि मालूम होता है क्योंकि इससे पहले के किसी भाषा कवि और काव्य का नाम मालूम नहीं होता।

सर्वेक्षण

इस कवि का विवरण टाड के आधार पर किया गया है। टाड के अनुसार Pnshha ने अवंती के राजा मान (जो कि भोज का बेटा था) की प्रशस्ति उनके चित्तौर के निकट बनवाए विशाल सरोवर 'मान सरवर' के तट पर निर्मित शिला-स्तंभ का लेख रचा था। इस लेख को कदण के पौत्र सेवादित ने सं० ७७० में उत्कीर्ण किया था। Puhha ने कोई अलंकार का ग्रन्थ नहीं रचा। वह अलंकार में प्रवीण अवश्य था (Verseel Alankars)।[1] स्पष्ट है कवि का नाम न तो पुण्ड है, न पुष्प है, न पुष्य और न पुष्पी है। यह कवि अपभ्रंश के प्रसिद्ध कवि पुष्पदंत से २५० वर्ष पूर्व हुआ है, अतः यह उससे भिन्न है। यह उससे अभिन्न नहीं है जैसा कि डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी अनुमान करते हैं।[2]

टाड के अनुसार यह नहीं सिद्ध होता है कि मान संस्कृत अलंकार विद्या का पंडित था और पूष ने उससे अलंकार पढ़ा। भोज मान का बाप था न कि उसका पुत्र, और न भोज का जन्म-काल ही सं० ७७० है। टाड से यह भी नहीं पता चलता है कि उक्त शिलालेख किस काल में है। शिलालेख का अंग्रेजी अनुवाद टाड में दिया गया है[3]।

फ

४६१।४११

(१) फेरन कवि। इनका काव्य बहुत ही सुन्दर है।

सर्वेक्षण

फेरन का कोई ग्रंथ नहीं मिलता, केवल फुटकर रचनाएँ मिलती हैं। विनोद में इनका दो बार उल्लेख है। एक बार अज्ञातकालिक प्रकरण में संख्या १५५७ पर और दूसरी बार संख्या २०८२ पर। यहाँ इन्हें रीवाँ नरेश महाराज विश्वनाथ सिंह जू देव (शासनकाल सं० १८९२-१९११) का दरबारी कवि कहा गया है और इनका रचनाकाल सं० १९२० दिया गया है।

४९२।४१२

(२) फूलचंद कवि। ऐज़न। इनका काव्य बहुत ही सुन्दर है।

सर्वेक्षण

इस कवि का कोई पता नहीं।

४९३।४१३

(३) फूलचंद ब्राह्मण, वैसवारे वाले, सं० १९२८ में उ०।

---

(१) टॉड का राज स्थान, भाग १, द्वितीय संस्करण पृ० ६२५-२६ (२) हिन्दी साहित्य का आदि काल, पृ० ७(३) टॉड का राजस्थान, भाग १, द्वितीय संस्करण, पृ० ६२५-२६

सर्वेक्षण

फूलचंद त्रिवेदी ब्राह्मण थे, बालादीन के पुत्र थे और रायबरेली जिले के रहनेवाले थे। इन्होंने सं० १९३० में 'अनिरुद्ध-स्वयंवर[१]' नामक ग्रंथ लिखा था। सरोज में इनकी कविता का उदाहरण देते समय इनके नाम के आगे भोजपुर लिखा हुआ है, जो इनके गाँव का सूचक है। सरोज में उदाहृत छंद में किसी रनजीत की प्रशंसा है। यह रनजीत सम्भवतः सरोजकार के पिता हैं।

४९४।

(४) कालकाराव अनोवानरहय ग्वालियर निवासी, सं० १९०१ में उ०। यह पंडित जी लछिमनराव के मंत्री और महान् कवि थे। इन्होंने कवि प्रिया का तिलक बहुत सुन्दर बनाया है।

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध में कोई सूचना सुलभ नहीं।

४९५।

(५) फैजी, शेख अबुलफैज, नागौरी, शेख मुबारक के पुत्र, सं० १५८० में उ०। इनको छोटे-बड़े सभी विद्वान् भलीभाँति जानते हैं कि यह अरबी, फ़ारसी और संस्कृत भाषा में महानिपुण थे। इनका ग्रन्थ भाषा का हमने नहीं पाया, केवल दोहरे मिले हैं। यह अकबर के दरबार के कवि थे।

सर्वेक्षण

ग्रियर्सन (११०) ने ब्लाचमैन कृत आईन-ए-अकबरी के अंग्रेजी अनुवाद के आधार पर फैजी का जन्मकाल ९५४ हिजरी या १५४७ ई० दिया है। सरोज में दिया सं० १५८० ईस्वी-सन् में कवि का उपस्थितिकाल है। सरोजकार ने अकबरी दरबार के प्रायः सभी कवियों का समय ईस्वी-सन् में दिया है, जो सदैव उपस्थितिकाल है।

४९६।

(६) फहीम, शेख अबुलफ़जल फैजी के कनिष्ठ सहोदर, सं० १५८० में उ०। इनके केवल दोहरे हमने पाए हैं, ग्रन्थ कोई नहीं मिला। यह अकबर के वज़ीर थे।

सर्वेक्षण

ग्रियर्सन (११०) में फ़हीम का जन्मकाल अनुमान से १५५० ई० दिया गया है। यह फैजी (जन्मकाल १५४७) के छोटे भाई थे, अतः ग्रियर्सन का अनुमान ठीक हो सकता है। सरोज में दिया हुआ सं० १५८० ईस्वी-सन् है और कवि का उपस्थितिकाल है। यदि ऐसा नहीं माना जाता तो मानना पड़ेगा कि दोनों भाई जुड़वाँ थे, क्योंकि दोनों भाइयों को सं० १५८० में उ० कहा गया है।

---

(१) खोज रि० १९०९, पृष्ठ ४९९, संख्या ४२

ब

४९७।४६७

ब्रह्म कवि, राजा बीरबल ब्राह्मण अंतरवेद वाले, सं० १५८५ में उ०। इनका प्रथम नाम महेश दास था। यह कान्यकुब्ज ब्राह्मण दुबे, जिले हमीरपुर के किसी गाँव के रहने वाले थे। काव्य पढ़ लिख कर राजा भगवानदास आमेर नरेश के यहाँ कवियों में नौकर हो गए। राजा भगवानदास ने इनकी कविता से बहुत प्रसन्न होकर अकबर बादशाह को नजर के तौर दे दिया। यह कवि काव्य में अपना उपनाम 'ब्रह्म' रखते थे। अकबर ने कविता के सिवा इनमें सब प्रकार की बुद्धि पाकर पूर्व संस्कार के अनुसार प्रथम अपना मित्र बनाकर कविराय की पदवी दी, तदुपरांत पाँच हजारी का मनसब और मुसाहेब दानिशवर राजा बीरबल का खिताब दिया। इनके विचित्र जीवन चरित्र तवारीखों में लिखे हैं। सन ९९० हिजरी में बिजौर इलाके काबुल में पठानों के हाथ से समर भूमि में मारे गये। इनका समग्र ग्रंथ तो कोई हमने देखा सुना नहीं, पर इनकी फुटकर कविता बहुत-सी हमारे पुस्तकालय में हैं। सूरदास जी ने कहा है—

सुन्दर पद कवि गंग के, उपमा को बरबीर
केसव अर्थ गंभीर को, सूर तीन गुन तीर

राजा बीरबल ने अकबर के हुक्म से अकबरपुर गाँव जिले कानपुर में बसाकर आपने भी अपना निवास-स्थान उसी को नियत किया और नारनौल कसबे में इनकी पुरानी बड़ी आलीशान इमारतें आज तक मौजूद हैं। चौधराई का ओहदा बहुधा ब्राह्मणों को मिला, गोवध बंद हुआ, और हिंदू-मुसल्मानों में बहुत मेल जोल हो गया। ये सब बातें इन्हीं महाराज की कृपा से हुई थीं।

सर्वेक्षण

अकबरी दरबार के हिंदी कवि में बीरबल पर पर्याप्त विचार हुआ है[1]। इस ग्रंथ के अनुसार ब्रह्म का असल नाम महेश दास था। इनके पिता का नाम गंगा दास था। यह ब्रह्म-भट्ट थे। भट्ट को निकाल कर इन्होंने केवल 'ब्रह्म' अपना उपनाम रख लिया था। इनका जन्म-स्थान काल्पी सरकार के अंतर्गत तिकवाँपुर है। यह वही तिकवाँपुर है, जो अब कानपुर जिले में है और जहाँ के रहने वाले भूषण, मतिराम आदि थे। इसी तिकवाँपुर से दो मील के अंतर पर बीरबल द्वारा बसाया हुआ 'अकबरपुर बीरबल' नामक गाँव है।

सरोज में दिया गया सं० १५८५ इनका जन्मकाल माना गया है। राजा बीरबल नामक ग्रन्थ में इनका जन्मकाल सं० १५८५ स्वीकार किया गया है। सरोज का सं० १५८५ वस्तुतः ईस्वी-सन् है और यह कवि का उपस्थितिकाल है।

कई दरबारों में घूमते-घामते बीरबल अकबर के यहाँ पहुँचे थे। स्मिथ एवं टॉड के अनुसार बीरबल पहले आमेर नरेश भगवानदास के यहाँ थे। इन्हीं भगवानदास ने इन्हें अकबरी दरबार में पहुँचाया। सरोज का भी यही कथन है। यह रीवाँ नरेश राम सिंह के भी यहाँ रह चुके थे। अकबर ने इन्हें कविराय की उपाधि दी थी और नगर कोट, पंजाब, के पास अच्छी जागीर दी थी। इन्हें राजा की भी उपाधि दी थी और लाहौर के मिर्जा इब्राहीम के भाई मसऊद को पकड़ लाने के उपलक्ष में मुसाहिब दानिशवर की उपाधि दी थी।

(१) अकबरी दरबार के हिन्दी कवि, पृष्ठ ७६-८७

बीरबल की मृत्यु माघ सुदी १२, शुक्रवार, सं० १६४२ को काबुल के इलाके में एक युद्ध में हुई, जिसमें पारस्परिक द्वेष भी मिला हुआ था।

बीरबल दीन इलाही के सदस्य थे। साथ ही इनका संपर्क वल्लभ-संप्रदाय से भी था। इनकी बेटी इस संप्रदाय में दीक्षित थी। अष्टछाप के प्रसिद्ध कवि मथुरिया छीत स्वामी इनके पुरोहित थे।

ब्रह्म के फुटकर छंद ही मिलते हैं। इनके १०० कवित्त-सवैये अकबरी दरबार के हिंदी कवि में संकलित हैं। इनका एक कवित्त संग्रह[1] लखनऊ विश्व-विद्यालय के प्रोफेसर स्व० पं० बद्रीनाथ भट्ट के पास था। इसमें कुल २३ कवित्त थे। इनका एक लघु-ग्रंथ 'सुदामाचरित[2]' मिला है। रिपोर्ट में प्रथम एवं अंतिम कवित्त उद्धृत हैं। अंतिम कवित्त में कवि ब्रह्म छाप भी है। पुष्पिका में 'इति श्री बीरबल कृत सुदामाचरित्र संपूर्ण' लिखा हुआ है। ग्रंथ गुटकाकार २३ पन्ने का है। यह अनूप संस्कृत पुस्तकालय, बीकानेर में है। ब्रह्म छाप वाला अंतिम कवित्त यह है—

जाके दरबार 'कवि ब्रह्म' व्यास वालमीकि,
कहाँ हाहा हूहू गायत सु कैसे कै रिझायबौ
रुद्र से महा सिंगारी, नारद से बीन धारी
रमा सी निरतकारी, सुक से पढ़ायबौ
बैकुंठ निवासी आय, भयो ब्रजवासी स्याम
राधिका रमन कविवरन सोइ गायबौ
सुदामा चरित्र चिंतामनि सब सावधान
कंठ के पियार राखि साधनि सुनायबौ

'सुंदर पद कवि गंग के' वाला दोहा सूर का नहीं है, न जाने किस अज्ञात कुल शील कवि आलोचक की रचना है।

ब्रह्म का उल्लेख सरोज में एक बार पुनः हुआ है।[3]

४९८।४२७

(२) बुद्धराव, राव बुद्ध हाड़ा बूँदी वाले, सं० १७५५ में उ०। यह महाराज बूदी के राजा और आमेर वाले जयसिंह सवाई के बहनोई थे। बहादुर शाह बादशाह ने इनका बड़ा मान किया। इस बादशाह के यहाँ दूसरे की ऐसी इज्जत न थी। जब सय्यद बारहा बादशाह को बेदखल कर आपही बादशाही नक्कारा बजाते हुए गली कूचों में निकलने लगा, तब भला इस शूर बीर से कब रहा जा सकता था। सय्यदों का मुँह तरवार की धार से फेर दिया और तमाम उमर बादशाह के यहाँ रहे। इनकी कविता बहुत ही अपूर्व है। यह कवि लोगों का बहुत मान-दान करनेवाले थे।

---

(१) खोज रि०, १९२३।६७ (२) राज० रि०, भाग ४, पृष्ठ ३२-३३। (३) देखिए यही ग्रंथ, कवि संख्या ५८९

सर्वेक्षण

रावराजा बुद्ध सिंह का जन्म सं० १७४२ में हुआ था। यह बूँदी नरेश महाराज अनिरुद्ध सिंह की मृत्यु के अनंतर पौष कृष्ण १३ को, १० वर्ष की वय में बूँदी के राजा हुए थे। सम्राटों के निर्माता सैयद बंधुओं का इन्होंने पूरा विरोध किया था। यह स्वयं अच्छे कवि एवं कवियों के उदार आश्रयदाता थे। श्रीकृष्ण भट्ट, 'लाल' कवि-कलानिधि पहले इन्हीं के दरबार में थे, फिर यहीं से जयपुर नरेश सवाई जयसिंह इन्हें माँग ले गए थे। यह जयसिंह राव बुद्ध सिंह के साले थे। जय सिंह यद्यपि बड़े पंडित और शूर थे, पर राज्य का लोभ कुछ ऐसा था कि इन्होंने अपने बहनोई रावराजा बुद्ध सिंह को सं० १७८७ में हराकर गद्दी से उतार दिया था। बुद्ध सिंह की मृत्यु सं० १७९६ में हुई। उस समय यह बूंदी के शासक नहीं थे।[१] रावराजा इनकी पुस्तैनी उपाधि थी। बहादुरशाह ने इन्हें महारावराजा की उपाधि दी थी, क्योंकि औरंगजेब की मृत्यु के अनंतर सं० १७६४ में मुगल साम्राज्य के उत्तराधिकार के लिए हुए जाजव के युद्ध में इन्होंने उसकी सहायता की थी। इनके दरबार में लोकनाथ कवि थे। भूषण ने भी इनकी प्रशंसा एक कवित्त में की है।

बुद्ध सिंह का लिखा एक रीति ग्रंथ 'स्नेह तरंग' खोज में मिला है।[२] इसमें दोहा, कवित्त, सवैया और छप्पय छंदों का प्रयोग हुआ है। इसकी छंद संख्या ४४६ है। ग्रंथ ब्रजी में है और १४ तरंगों में विभक्त है। इसमें रस और अलंकार दोनों हैं। इस संबंध में कवि स्वयं कहता है :—

नव रस पिंगल छंद कछु अलंकार बहु रंग
कवि पंडित हित समझि के बरन्यौ नेह तरंग ४४५

ग्रंथ की रचना सं० १७८४ में भादों सुदी ९, सोमवार को हुई :—

सतरह सै चौरासिया, नवमी तिथि ससिवार
शुक्ल पच्छ भादों प्रगट, रच्यो ग्रंथ सुख सार ४४६

पुष्पिका में कवि नाम आया है।

इति श्री नेह तरंग रावराजा बुद्ध सुरचिता अलंकार निरूपन नाम चतुरदशे तरंग ॥१४॥

४९९।४३८

(३) बलदेव कवि १, बघेली खंडी, सं० १८०९ में उ०। यह कवि राजा विक्रमसाहि बघेली देवरा नगर वाले के यहाँ थे। उन्हीं राजा की आज्ञानुसार एक 'सत्कविगिराविलास' नामक बहुत ही अद्भुत संग्रह-ग्रंथ इन्होंने बनाया। इस ग्रंथ में १७ कवियों की कविता है। उसमें शंभुनाथ मिश्र, शंभुराज सोलंकी, चिंतामणि, मतिराम, नीलकंठ, सुखदेव पिंगली, कविंद त्रिवेदी, कालिदास, केशवदास, विहारी, रवि दत्त, मुकुंदलाल, विश्वनाथ अताई, बाबू केशवराय, राजा गुरुदत्तसिंह अमेठी, नवाब हिम्मतबहादुर, दूलह और बलदेव का महाविचित्र काव्य है।

---

(१) माधुरी, वर्ष ७, खंड २, अंक १, माघ १९८५, पृष्ठ १३१-३४ (२) राज० रि०, भाग १, एवं भाग ४, पृष्ठ १३२, खोज रि० १९३८।१९

सर्वेक्षण

रीवाँ राज्य के अंतर्गत देउरा नामक एक बहुत बड़ा इलाका अथवा छोटी रियासत थी, किंतु जमींदारी-उन्मूलन कानून ने रियासत के अस्तित्व को समाप्त कर दिया है। उसके मालिक अब भी हैं। देउरा आजकल देवराज नगर कहलाता है, पर पारस्परिक बात-चीत में अब भी लोग उसे देउरा ही कहते हैं। पहले यह रीवाँ जिले में था। विंध्य-प्रदेश के निर्माण काल से वह सतना जिले में चला गया। यह सोनभद्र के किनारे बसा हुआ है। यहाँ डाकखाना और मिडिल स्कूल है। विक्रमसाहि बघेल यहीं के राजा थे। इन्हीं के दरबार में रहकर बलदेव कवि ने सरोज की भूमिका के अनुसार सं० १८०३ में 'सत्कविगिराविलास' की रचना की थी। इस ग्रंथ की कोई प्रति अभी तक खोज में उपलब्ध नहीं हुई है। सरोज में उद्धृत छंदों में से एक में कवि ने देउरा का वर्णन इस प्रकार किया है—

'पूरन पांइ चले जहँ पुन्य सु भूमि को भूषन देवरा राजत'

एक छंद में विक्रमसाहि की सभा का वर्णन इस प्रकार है—

बैठि सिंहासन राजत आपु लसैं कवि कोविद वीर खुमानी
देखि सभा वर विक्रम भूप की नीकी लगे न सुरेस कहानी

इन विक्रमसाहि को चरखारीवाले विक्रम साहि समझने का भ्रम न होना चाहिए।

इन बलदेव का 'दशकुमार चरित्र'[१] नामक ग्रंथ खोज में मिला है। नीचे के दोहों में कवि और आश्रयदाता का नाम आया है—

दीन्हों आयसु करि कृपा श्री विक्रम महिपाल
दसकुमार की सब कथा भाषा करो बिसाल ५
पाइ हुकुम, बलदेव कवि कीन्हों ग्रंथ प्रकास
जाते जानैं जगत के नृप नृप-नीति-बिलास ६

पुष्पिका से इनका बघेलखंडी होना सिद्ध है।

इति सकलाराति जनाकी कीर्ति छपामुखाभ्युदित यश चंद्रिकानं दिता मित्र चकोर बघेल वंसावतंस श्री महाराजकुमार विक्रमाजीत देव प्रोत्साहित बलदेव कवि विरचिते दसकुमारचरिते अपहार वर्मा चरितं नाम सप्तमोच्छ्वासः।

खोज में कादंबरी का एक पद्यात्मक भाषानुवाद मिला है।[२] इसकी रचना बलदेव ने सं० १८४१ में की—

चंद[१] वेद[४] बसु[८] चंद[१] पुनि लिखि संवत लखि लेहु
सावन वदि गुरु त्रैदसी रची ग्रंथ करि नेहु
ग्रंथ नाम कादंबरी कियो सुकविबर बान
लै ताको छाया कियो सोई धरि अभिधान

विनोद (१०१३) में यह ग्रथ बघेलखंडी बलदेव का स्वीकार किया गया है। इस ग्रथ की रचना

---

(१) खोज रि० १९४४।२३१ (२) खोज रि० १९०५।५८

बलदेव ने किसी गौरीप्रसाद की आज्ञा से की थी। यह सूचना पुष्पिका से मिलती है। विनोद में, बलदेव बघेलखंडी का जन्मकाल सं० १८०९ दिया गया है, और रचनाकाल सं० १८३५। बलदेव ने सं० १८०३ में 'सत्कविगिराविलास' की रचना कर ली थी! ऐसी स्थिति में १८०९ कदापि जन्मकाल नहीं हो सकता। इसमें संदेह नहीं कि दशकुमार चरित और कादंबरी, इन दोनों ग्रंथों के अनुवादक दोनों बलदेव एक ही हैं। अतः ये सत्कविगिराविलास वाले बलदेव से अभिन्न हैं। इनका रचनाकाल सं० १८०३-४१ है।

५००।४३९

(४) बलदेव कवि, चरखारी वाले, २, सं० १८९६ में उ०। यह बहुत अच्छे कवि थे।

सर्वेक्षण

चरखारी नरेश विजय विक्रमाजीत, शासनकाल सं० १८३९-८६, के दरबारी कवि प्रसिद्ध खुमान थे। यह किसी बात पर रूठकर ग्वालियर चले गए थे। बलदेव इन्हीं खुमान के नाती थे। यह चरखारी नरेश जयसिंह के शासनकाल सं० १९१७-३७ के बीच किसी समय चरखारी लौट आए। जयसिंह ने खुमान का पुराना अपराध क्षमा कर उन्हें माफी मिले गाँव वापस दे दिए।[१] सरोज में दिया सं० १८९६ इनका प्रारंभिक रचनाकाल हो सकता है। विनोद (१८४६) में इसे रचनाकाल ही माना गया है। विनोद के अनुसार इनका एक ग्रंथ 'विचित्र रामायण' है, यह कथन ठीक नहीं। विचित्र रामायण की रचना बलदेव खंडेलवाल ने सं० १९०३ में भरतपुर नरेश बलवंत सिंह के लिए की थी। यह हनुमन्नाटक का अनुवाद है।[२]

सरोज में इनका एक ही कवित्त उद्धृत है, जिसमें द्विज मोहन कवि की प्रशस्ति है।

राम पद भक्ति मांह आठो जाम रांचो रहै
सांचो द्विज मोहन कविन में कविंद है

संभवतः यह द्विज मोहन पद्माकर के पिता मोहनलाल भट्ट हैं, जो पन्ना-नरेश हिंदूपत के गुरु थे।

५०१।४४८

(५) बलदेव क्षत्रिय ३, अवध इलाके के निवासी, सं० १९११ में उ०। यह कवि महाराजा मान सिंह और राजा माधव सिंह के साहित्य विद्या के गुरु थे। यह काव्य में बहुत अच्छे कवि हो गए हैं।

सर्वेक्षण

बलदेव जी अयोध्या नरेश मान सिंह द्विजदेव और अमेठी, सुलतान पुर नरेश राजा माधव सिंह, 'छितिपाल'—इन दोनों कवि राजाओं के काव्य-गुरु थे। द्विजदेव का काव्य-प्रेम सं० १९०७ के

---

(१) ना० प्र० पत्रिका, भाग ९, अंक ४, माघ १९८५, चरखारी राज्य के कवि (२) खोज रि० १९१७।१५

आस-पास अपने पूर्ण विकास पर था। अतः इनके काव्यगुरु बलदेव का सरोज-दत्त सं० १९११ उपस्थितिकाल ही है।

५०२।४५८

(६) बलदेव कवि प्राचीन ४, सं० १७०४ में उ०। इनके कवित्त हजारे में हैं।

सर्वेक्षण

इन बलदेव की रचना हजारे में थी। अतः सं० १८७५ के पूर्व इनका अस्तित्व सिद्ध है। यह सं० १६५० और १८७५ के बीच किसी समय हुए। यह उल्लेख इनके शृंगारी सवैये को देखकर किया जा रहा है।

५०३।४८२

(७) बलदेव कवि अवस्थी ५, दासापुर जिले सीतापुर के, वि०। इन्होंने राजा दलथंभन सिंह गौर सवैया हथिया के नाम 'शृंगार सुधाकर' नामक नायिका भेद का ग्रंथ बनाया है।

सर्वेक्षण

विनोद में (२०८८) बलदेव अवस्थी का पूरा विवरण दिया गया है। इसके आधार पर इनका और इनके ग्रंथों का परिचय दिया जा रहा है।

बलदेव अवस्थी, उपनाम द्विज बलदेव कान्यकुब्ज ब्राह्मण का जन्म कार्तिक वदी १२, सं० १८९७, मौजा मानपुर, जिला सीतापुर में हुआ था। इनके पिता का नाम ब्रजलाल था। ब्रजलाल जी खेती किसानी करते थे। बलदेव जी के तीन विवाह हुए, जिनसे इनके छह पुत्र और तीन पुत्रियां हुईं। इनका पुत्र गंगाधर अच्छा कवि था, जो ३५ वर्ष की ही वय में, इन्हीं के जीवन-काल में, सं० १९६१ में, दिवंगत हो गया था। इन्होंने ज्योतिष, कर्मकांड और व्याकरण का अध्ययन था। १८ वर्ष की वय में इन्होंने दासापुर की भक्तेश्वरी देवी पर अपनी जिह्वा काटकर चढ़ा दी थी, जो बाद में समय पाकर ठीक हो गई थी। इन्होंने ३२ वर्ष की वय में काशीवासी स्वामी निजानंद सरस्वती से काव्य पढ़ा और सं० १९२९ में भारतेंदु से उत्तम कवि की सनद पाई। सं० १९३३ में इनके पिता का देहांत हुआ। बलदेव जी काशिराज, रीवाँ नरेश, महाराज जयपुर और महाराज दरभंगा के यहां क्रमशः गए और सर्वत्र सम्मानित हुए। यह आशु कवि थे। इनकी दर्पोक्ति थी—

देइ जो समस्या तापै कबित बनाऊँ चट,
कलम रुकै तो कर कलम कराइए।

विनोद के प्रणयन (सं० १९७०) के कुछ पूर्व ही इनका देहांत हो गया था। बलदेव अवस्थी के ग्रन्थों की सूची निम्न है—

१. प्रताप विनोद—इस ग्रन्थ में सभी काव्यांगों का वर्णन है। इसकी रचना सं० १९२६ में रामपुर मथुरा, जिला सीतापुर के ठाकुर रुद्रप्रताप सिंह के नाम पर हुई थी।

२. शृङ्गार सुधाकर— सं० १९३० में यह ग्रन्थ हथिया के पँवार दलथंभन सिंह की आज्ञा से बना।

३. भक्तमाल—शांत रस के १०८ छन्द, रचनाकाल सं० १९३१ । यह रानी कटेसर जिला सीतापुर की आज्ञा से रचा गया ।

४. रामाष्टयाम—रचनाकाल सं० १९३१ । उक्त रानी जी के ही लिए बना ।

५. समस्या प्रकाश—रचनाकाल सं० १९३२ । यह भी उक्त रानी जी के लिए बना ।

६. शृङ्गार-सरोज—रचनाकाल सं० १९५० ।

७. हीरा जुबिली—सं० १९५३ में महारानी विक्टोरिया की हीरक-जयन्ती के अवसर पर विरचित ।

८. चन्द्रकला काव्य—रचनाकाल सं० १९५३ । बूंदी की प्रसिद्ध कवियित्री चन्द्रकला बाई की प्रशस्ति ।

९. अन्योक्ति महेश्वर—रचनाकाल सं० १९५४ । रामपुर मथुरा के ठाकुर महेश्वर बख्श सिंह के नाम पर यह अन्योक्ति ग्रन्थ बना ।

१०. ब्रजराज-बिहार—रचनाकाल सं० १९५४ । इटौंजा जिला लखनऊ के राजा इंदु विक्रम सिंह की आज्ञा से रचित ।

११. प्रेम-तरंग—रचनाकाल सं० १९५८ । यह फुटकर रचनाओं का संग्रह है ।

१२. बलदेव विचारार्क—सं० १९६२ में यह गद्य-पद्यमय ग्रन्थ रचा गया । इनमें से १, २, ३, १० संख्यक ग्रन्थ खोज में भी मिल चुके हैं ।[१]

५०४।४८३

(८) बलदेवदास कवि ६, जौहरी, हाथरस वाले, सं० १९०३ में उ० । इन्होंने कृष्ण खंड के हर श्लोक का भाषा में उल्था किया है ।

सर्वेक्षण

बलदेल हाथरस, अलीगढ़ निवासी, अग्रवाल बनियाँ थे । इनके पूर्वज जौहरी थे, अतः यह भी जौहरी कहलाते थे । यह सं० १९०३-१६ में निश्चित रूप से विद्यमान थे । यह धौलपुर के महाराज कीरत सिंह के आश्रित थे । खोज में इनके निम्नलिखित ग्रन्थ मिले हैं—

१. कृष्ण खंड—१९२३।३० ए, १९४७।२३०। यह ब्रह्मवैवर्तपुराण के कृष्ण खंड का भाषानुवाद है । सं० १९०३ भादों वदी ६, बुधवार को यह ग्रन्थ पूर्ण हुआ । सरोज में इसी का रचनाकाल दिया गया है । उदाहरण में भी इसी के प्रारम्भ का दसवाँ दोहा उद्धृत है । रिपोर्ट के अनुसार यह ग्रन्थ एक बार आगरा से लीथो में छप चुका है । यह ग्रन्थ धौलपुर में और वहीं के महाराज की आज्ञा से रचा गया था । ग्रन्थ दोहा चौपाई में है । रिपोर्ट में उद्धृत अंश में कवि का नाम आया है—

मति अनुसार कथा सुखदाई
यों बलदेव जौहरी गाई

---

(१) खोज रि० १९२३।३९ ए, बी, सी, डी ।

२. रामचन्द्र हनुमान की नामावली—१९२३।३० बी। इस ग्रन्थ की रचना सं० १९१६ में हुई।

रस[6] ससि[1] अंक[9] चन्द्रमा[1] कातिक पूर्णा तिथि गुरुवारा
परम प्रीति बलदेव जौहरी हनुमत नाम उचारा

इस ग्रन्थ में राम, सीता और हनुमान की पद्यबद्ध नामावली है।

सभा के अप्रकाशित संक्षिप्त विवरण में विचित्र रामायण और कृष्ण लीला नामक दो ग्रन्थ इनके और कहे गए हैं। पर ये इनकी रचना नहीं हैं, अन्य समसामयिक बलदेवों की रचना हैं। विचित्ररामायण के कर्ता बलदेव खंडेलवाल थे और अपने नाम के साथ जौहरी नहीं लगाते थे, जब कि हाथरस वाले बलदेव अपने नाम के साथ जौहरी अवश्य लगाते थे। विचित्ररामायण की रचना सं० १९०३ में भरतपुर नरेश ब्रजेंद्र बलवन्त सिंह की आज्ञा से हुई थी।[1] यह हनुमत् नाटक का अनुवाद है। पं० मयाशंकर याज्ञिक ने इनके एक अन्य ग्रन्थ 'गंगा लहरी' का भी उल्लेख किया है[2]।

इसी प्रकार कृष्णलीला[3] भी किसी अत्यंत असफल अन्य बलदेव की रचना है। इसमें कवि की छाप बलदेवा है। यह बहुत कम पढ़ा लिखा कवि है। इसकी रचना सं० १९०१ में हुई।

५०५।४१९

(९) विजय, राजा विजय बहादुर बुंदेला टेहरीवाले, सं० १८७८ में उ०। यह कवियों के कदरदान कविता में महा प्रधान थे।

सर्वेक्षण

विजय बहादुर चरखारी नरेश विजय विक्रमाजीत का जन साधारण में बहु प्रचलित नाम है। यह कवि दुहरा उठा है। इसका विस्तृत विवरण आगे संख्या ५०६ पर देखिए। टेहरी गढ़वाल वाली टेहरी नहीं है। यह भी बुंदेलखंड के अंतर्गत है[4]।

५०६।४२०

(१०) विक्रम, राजा विजय बहादुर बुंदेला चरखारीवाले, सं० १८८० में उ०। इन्होंने 'विक्रम विरदावली' और 'विक्रम सतसई', दो ग्रन्थ महा अद्भुत बनाए हैं।

सर्वेक्षण

बाँदा गजेटियर से विजय विक्रमाजीत के सम्बन्ध में पर्याप्त जानकारी होती है। उक्त गजेटियर के आधार पर चरखारी राज्य के कवि[5] शीर्षक लेख में चरखारी वासी कुँवर कन्हैया जू ने इनके विषय में विस्तृत विवरण दिया है, जिसका सार यह है—

---

(१) खोज रि० १९१७।१५ (२) माधुरी, फरवरी १९२७, पृष्ठ ८२ (३) खोज रि० १९२६।३२ (४) देखिए, यही ग्रन्थ, केशवदास संख्या ६३ (५) ना० प्र० पत्रिका, भाग ९, अंक ४, माघ सं० १९८५

प्रसिद्ध छत्रसाल के पुत्र जगतराज थे। जगतराज के पुत्र कीर्ति सिंह हुए। कीर्ति सिंह के १० पुत्र हुए, जिनमें गुमान सिंह और खुमान सिंह प्रसिद्ध हैं। खुमान सिंह चरखारी के पहले राजा हैं। सं० १८३९ में खुमान सिंह अपने भाई बांदा के राजा गुमान सिंह से उलझ गए और उसके सेनापति नौने अर्जुन सिंह के हाथ मारे गए। तदनंतर खुमान सिंह के पुत्र विजय विक्रमाजीत चरखारी के राजा हुए। पर नौने अर्जुन सिंह ने इनको चरखारी से निकाल दिया। इस समय इन्होंने झाँसी में शरण ली। प्रवासकाल ही में इन्होंने 'विक्रम विरदावली' नामक ग्रंथ रचा। इसमें १०८ दोहे थे, पर अब १०५ ही मिलते हैं। इसमें दशावतार विशेषतः राम और कृष्ण की स्तुति है। अन्त में हनुमान जी का नखशिख और स्तुति है। ग्रन्थ में कवि ने अपने छिने हुए राज्य की पुनः संप्राप्ति के लिए प्रार्थना की है। सं० १८४६ में विजय विक्रमाजीत बाँदा के नवाब अली बहादुर से मिले और उनके सेनापति राजा अनूप गिरि गोसाईं उपनाम हिम्मत बहादुर ने इनका साथ दिया। इन्हें अपना राज्य पुनः मिला। यह नौने अर्जुन सिंह और हिम्मत बहादुर वही हैं, जिनके दीक्षा-गुरु पद्माकर थे और जिनके युद्ध का विवरण पद्माकर ने 'हिम्मत बहादुर विरदावली' में दिया है। सं० १८६० में अँगरेजों ने बुंदेलखण्ड में प्रवेश किया। विजय विक्रमाजीत पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने सं० १८६१ में उनसे राज्य की सनद ली। सनद सं० १८६८ में दुहराई गई, क्योंकि पहली सनद में कुछ गांवों का उल्लेख नहीं हो पाया था। इन्होंने मौधा का किला बनवाया, चरखारी के ताल खुदवाए और गेस्ट हाउस कोठी बनवाई। इनका देहावसान सं० १८८६ में हुआ। यह चरखारी के लोगों में विजय बहादुर नाम से ही अधिक प्रसिद्ध हैं। यह विक्रमादित्य और विक्रमसाहि नामों से भी प्रख्यात हैं। सरोज में जो इनका नाम विजयबहादुर दिया गया है, वह यही जन-साधारण में बहु प्रचलित नाम है।

विक्रम विरदावली से अधिक प्रसिद्ध विक्रम सतसई है। डा० श्यामसुन्दर दास ने हिंदुस्तानी एकेडेमी से प्रकाशित स्व-संपादित 'सतसई सप्तक' में इसे स्थान दिया है।

इनका एक तीसरा ग्रन्थ 'हरि भक्ति विलास' नाम से श्रीमद्भागवत का अनुवाद है। खोज में यह ग्रन्थ पूर्वार्द्ध[1] और उत्तरार्द्ध[2] दो खण्डों में अलग-अलग प्राप्त हुआ है। यह अनुवाद संवत् १८८० में पूर्ण हुआ:—

संवत अष्टादस असी माघ मास गुरुवार
किय हरि भक्ति विलास यह सकल श्रुतिन कौ सार

ग्रन्थ में कवि का नाम आया है—

नहिं कविता सनबंध कछु, नहिं बल बुद्धि विचार
जन विक्रम प्रभु चरित कहि, निज मति की अनुसार

—खोज रि० १९०३।७३

पुष्पिका के इनका पूरा पता ज्ञात होता है—

इति श्रीमान महाराज छत्रसाल-बंसावतंस नृपति विक्रमादित्य कृत हरिभक्तिविलास नव्वे अध्यायः ॥९०॥

(१) खोज रि० १९०३।७२ (२) खोज रि० १९०३।७३

विजय विक्रमाजीत के दरबार में खुमान या मान, बिहारीलाल उपनाम भोज, प्रताप साहि और प्रयाग दास जैसे गुणी और अच्छे कवि थे।

सरोज में दिया स० १८८० कवि का उपस्थितिकाल है। सरोज में इनका उल्लेख पिछली संख्या पर एक बार और हुआ है।

५०७।४३४

११. बेनी कवि प्राचीन १, असनी जिले फतेपुर वाले, सं० १६६० में उ०। यह महा कवीश्वर हुए हैं। इनका एक नायिका भेद का ग्रन्थ अति विचित्र देखने में आया है। इनकी कविता बहुत ही सरस, ललित और मधुर है।

सर्वेक्षण

बेनी कवि का 'रसमय'[1] नामक एक ग्रन्थ खोज में मिला है। यही ग्रन्थ 'शृङ्गार'[2] नाम से भी मिला है। यही सरोज में संकेतित नायिका भेद का ग्रन्थ है। इन दोनों ग्रन्थों में नाम का ही और नाम मात्र का ही अन्तर है। रसमय में ४४१ और शृङ्गार में ४५० छन्द हैं। दोनों ग्रन्थों में रचनाकाल-सूचक दोहा एक ही है। इसके अनुसार ग्रन्थ का रचनाकाल स० १८१७ है।

अष्टादश शत वर्ष गत सत्रह औरो जानि
फागुन दशमी सित सुभग चंद्रवार अनुमानि ४३६

अतः सरोज में दिया इनका सं० १६६० अशुद्ध है।

बेनी असनी जिला फतेहपुर के रहने वाले कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे। यह उपमन्यु गोत्र के बाजपेयी थे। शुक्ल जी ने इन्हें स० १७०० में उपस्थित असनी का वन्दीजन कहा है,[3] जो पूर्ण रूपेण भ्रष्ट है। प्राप्त ग्रन्थ के अन्त में कवि ने अपना यह परिचय दिया है—

लसत बंस उपमन्य वर बाजपेउ करि जज्ञ
सुकृती साधु कुलीन वर नव रस में सरवज्ञ ४३६
बेनी कवि को वासु है असनी वर सुभ थान
बसत सबै षटकुल जहाँ करैं वेद को गान ४३७

नायिका भेद का यह ग्रन्थ किसी निहचल सिंह के आदेश से बना। यह सूचना ग्रन्थ के आदि और अन्त दोनों स्थलों पर दी गई है।

आदि—कीनो निहचल सिंह जू बेनी कवि सों नेहु
लीला राधा कान्ह की भाषा में करि देहु
अन्त—निहचल सिंह सुजान वर को अनुसासन पाइ
कीनो रसमय ग्रन्थ यह बरनि नाइका भाइ ४३८

बेनी के कवित्तों का एक संग्रह भी खोज में[4] मिला है। इसमें २६७ कवित्त हैं। एक अन्य कवित्त सग्रह[5] भी मिला है, जिसे असनी के बेनी कवि का कहा गया है। यह सरोजकार के

---

(१) खोज रि० १९०३।१२२, १९०४।२२ (२) खोज रि० १९०३।६२ (३) हिंदी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ २४३ (४) खोज रि० १९०३।८६ (५) खोज रि० १९२३।३७

पुस्तकालय का ग्रन्थ है। इस कवित्त संग्रह में बेनी के अतिरिक्त शिव, परमेश, शम्भु, शिवलाल और कलानिधि के भी फुटकर कवित्त हैं।

हिंदी-साहित्य के इतिहास ग्रन्थों में यह बेनी शृङ्गारी बेनी के नाम से ख्यात हैं।

५०८।४३५

१२. बेनी कवि २, वन्दीजन, बेंती जिले रायबरेली के निवासी, सं० १८४४ में उ०। यह कवि महाराज टिकैतराय, नवाब लखनऊ के दीवान, के यहाँ थे और बहुत वृद्ध होकर संवत् १८६२ के करीब मर गए।

सर्वेक्षण

बेनी कवि, बेंती जिला रायबरेली के रहने वाले वन्दीजन थे। इनके लिखे हुए निम्नलिखित ग्रन्थ खोज में मिले हैं—

१. अलंकार प्रकाश १९२३।३८ सी। या टिकैतराय प्रकाश १९०६।१४, १९४७।२४३ख—ये दोनों ग्रन्थ एक ही हैं। यह ग्रन्थ टिकैतराय के लिए बना। इसमें टिकैतराय की प्रशंसा के अनेक छन्द हैं। टिकैतराय लखनऊ के नवाब आसफुद्दौला के वजीर थे। आसफुद्दौला का शासनकाल स० १८३२-५४ है। यही बेनी वन्दीजन का भी सयय है। इस ग्रन्थ में रचना-सूचक दो दोहे हैं—

१. भूपित राय टिकैत को दीन्हों ग्रन्थ बनाय
चन्द्र[१] बान[५] बसु[८] चन्द्र[१] युत संवतसर को पाय
२. रंध्र[९] वेद[४] बसु[८] चन्द्र[१] युत संवतसर को पाइ
भादौं सुदि पांचै रचो अलंकार गुरु ध्याइ

पहला दोहा ग्रन्थारम्भ में एवं दूसरा ग्रन्थांत में है। लगता है, स० १८४६ में कवि ने ग्रन्थारम्भ किया और सं० १८५१ में ग्रन्थ-समाप्ति। दोनों ग्रन्थों में प्रत्येक छन्द के अंत में टीका के नाम पर गद्य में अलंकार-निरूपण भी है।

२. रस विलास, १९१२।१६, १९२३।३८ ए, १९४७।२४३ क। ग्रन्थ का रचनाकाल सं० १८७४ है:—

दिए वेद[४] रिषि[७] वसु[८] तहाँ शशि[१] सावन जिय जानि
बेनी कवि निरमित कियो रस विलास सुख खानि

पुष्पिका में कवि का नाम बेनीराम है। वस्तुत: यह बेनीराय है, जैसा कि इन्हीं के एक ग्रन्थ 'यशलहरी' के इस दोहे में है भी—

राम नाम गुन कहि सकै, कैसे बेनीराय
पढ़े न भाषा संस्कृत, ना तो बुद्धि सहाय[3]
—खोज रि० १९२३।३८ बी

रिपोर्ट के अनुसार यह ग्रन्थ बैसवाड़ा के स्वामी खूबचन्द कायस्थ की आज्ञा से बना था। विनोद (९८५) के अनुसार यह बेनी संभवत: हित हरिवंश के अनुयायी थे, ऐसी बात नहीं है। बेनी के आश्रयदाता स्वामी खूबचन्द कायस्थ राधावल्लभी संप्रदाय के थे, स्वयं बेनी नहीं।

मिश्रबंधुओं को यहां थोड़ा भ्रम हो गया है। 'रस विलास' के प्रारम्भ में यह प्रसंग कवि ने स्वयं उठाया है।

विद्या विनैविवेक ते भूतल के अवतंस
राधावल्लभ पंथ किय गोस्वामी हरिवंस
गोसाईं हरिवंस के सेवक मोहन दास
कायथ बारह जाति में कीन्हों सुयस प्रकास
मोहन मोहनदास के भे गिररिधारीदास
दानसील संपति सुजस पुहुमी पुन्य प्रकास
पर स्वारथ के जोग ते जगत जथारथ नाम
श्री गिरधारीदास के कुशल सिंह सिरताज
कुशल सिंह के सुत सुखद हरीलाल गुन जाल
दान ज्ञान मति मेरु से मूरति मरन विसाल

—खोज० रि१९२३।३८ ए

यह कवि के आश्रयदाता की वंशावली है। इसी वंश वाले हित० संप्रदाय के अनुयायी थे, उद्धरण से यह स्पष्ट है। रिपोर्ट में इतना ही अंश उद्धृत है और वंशावली अपूर्ण है।

३. यशलहरी, १९२३।३८ बी। यह बेनी कवि की फुटकर रचनाओं का संग्रह है। यह नाम स्वयं कवि का दिया हुआ नहीं है। इसमें देवी-देवताओं, राजा-रईसों का यश वर्णित है। इस ग्रन्थ में चापमल्ल के पुत्र राजा टिकैतराय कायस्थ, गुलाब राय, रामसहाय राजा, श्री खुशाल राय, शीतलप्रसाद, इच्छाराय, यशवंतराय, हुलास राय, बैजनाथ, धनपति राय, राय मैकूलाल, तथा नवाब आसफुद्दौला के सुयश सम्बन्धी छन्द हैं। ग्रन्थ खंडित है फिर भी इसमें २५१ छन्द हैं। पर यह बहुत खंडित नहीं है। २५२ वें छन्द का निम्नलिखित अंश बचा है। यह रचनाकाल-सूचक दोहा है।

अस्विन सुदि गुरु प्रतिपदा बेद[४] वासर[७] (व) सु[८] बंद[१]
तिथि.......................................।

वासर और सु के बीच संभवतः व प्रमाद से छूट गया है। ऐसा मान लेने पर इस ग्रन्थ का रचनाकाल सं० १८७४ सिद्ध होता है। यही 'रस विलास' का भी रचनाकाल है।

हिंदी साहित्य के इतिहास में यह बेनी 'बेनी भँड़ौआकार' के नाम से प्रसिद्ध हैं।

५०६।४३६

१३. बेनी प्रवीन ३, बाजपेयी, लखनऊ के निवासी, सं० १८७६ में उ०। यह कवि महा सुन्दर कविता करने में विख्यात हैं। इनका ग्रन्थ नायिका-भेद का देखने के योग्य है।

सर्वेक्षण

बेनी प्रवीन बाजपेयी के नायिका भेद ग्रन्थ का नाम 'नवरस तरंग' है। यह रसग्रन्थ भी है, जैसा कि इसके नाम से स्वतः प्रकट है। ग्रन्थ खोज में[१] मिल चुका है और इसका एक सुसंपादित संस्करण श्रीकृष्णबिहारी मिश्र ने लखनऊ से प्रकाशित कराया था। इसकी रचना सं० १८७४ में हुई।

समय देखि दिग[४] दीप[७] युत सिद्धि[८] चंद्र[१] बल पाय
माघ मास श्री पंचमी श्री गोपाल सहाय २७

(१) खोज रि० १९०९।१९, १९२०।१३, १९२१।४०, १९२६।४५

बेनी प्रवीन, लखनऊ निवासी कान्यकुब्ज ब्राह्मण, उपमन्युगोत्रीय ऊँचे के बाजपेयी थे। लखनऊ के बादशाह गाजीउद्दीन हैदर (शासनकाल सं० १८७१-८४) के दीवान राजा दयाकृष्ण कायस्थ के पुत्र नवल कृष्ण उपनाम 'ललन' के आश्रय में यह थे। इन्हीं ललन जी के कहने से यह ग्रन्थ रचा गया था। यह सूचना ग्रन्थ की पुष्पिका से मिलती है :—

इति श्रीमन्महाराजाधिराजमनि श्री नवलराय आज्ञप्त प्रवीन बेनी बाजपेयी कृत नवरस-तरंग नाम ग्रन्थ संपूर्ण समाप्त शुभमस्तु।

इस ग्रन्थ से स्पष्ट प्रकट है कि बेनी प्रवीन धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति थे।

ऐसी कछु उपजै हियै छाँड़ि जगत की आस
स्यामा स्यामै ध्याइए करि वृंदावन बास २३१

अप्रकाशित संक्षिप्त रिपोर्ट के अनुसार यह हित हरिवंश के वंशज बंशीलाल के आश्रित थे। पर मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि बंशीलाल जी बेनी प्रवीन के दीक्षागुरु थे और बाजपेयी जी भी राधावल्लभी संप्रदाय में दीक्षित थे। 'नवरस तरंग' के प्रथम छन्द में ही बंशीधर के चरणों की वंदना की गई है—

गणपति गुरु गौरी गिरा गंगाधरहि मनाय
बरनत बेनी दीन कवि वंशीधर के पाय १

दूसरे छन्द में भी कवि ने कहा है—

दरद दरन, दुख हरन, करन सुख,
सेवत चरन हौं गुसाई बंसीलाल के २

ग्रन्थ के अंतिम छन्द में तो नाम नहीं आया है, पर गुरुचरणों की कृपा का उल्लेख है—

राम नाम बोहित करनधार गुरु पाइ,
भव पारावार में मगन होत बावरे २३०

हिन्दी साहित्य के बृहद् इतिहास के अनुसार बेनी प्रवीन वल्लभसंप्रदायी बंशीलाल के शिष्य थे। बंशीलाल वल्लभसंप्रदाय के नहीं थे, राधावल्लभ संप्रदाय के थे। उक्त ग्रन्थ के ही अनुसार इनका मूल नाम बेनीदीन एवं पिता का नाम शीतल था।[1]

सरोज में दिया सं० १८७६ कवि का उपस्थितिकाल है, क्योंकि इसके दो वर्ष पूर्व ही कवि अपना प्रसिद्ध ग्रन्थ लिख चुका था। अतः उक्त संवत् जन्मकाल कदापि नहीं है, जैसा ग्रियर्सन (६०८) में स्वीकृत है।

विनोद (११०४) में बेनी प्रवीन का अच्छा विवरण है। इसके अनुसार इनका पहला ग्रंथ 'शृंगार भूषण' है। दूसरा ग्रन्थ 'नवरस तरंग' है। इसका रचनाकाल सं० १८७८ दिया गया है। ऐसा दिग का अर्थ ८ करने के कारण हुआ है। सामान्यतया दिशाएँ ४ ही मानी जाती हैं। नवरस-तरंग में बहुत से छन्द शृङ्गारभूषण के भी हैं। इनका तीसरा ग्रन्थ 'नानाराव प्रकाश' है। यह कवि-प्रिया के ढंग का है और बिठूर के नानाराव के नाम पर लिखा गया है।

बाजपेयी जी के कोई संतान नहीं थी। अंतिम दिनों में रुग्ण होकर यह अरावली की पहाड़ियों पर चले गए थे। वहीं इनका देहांत हुआ।

कहा जाता है कि अपने समकालीन बेंती वाले बेनी वंदीजन से विभिन्न समझे जाने के लिए यह अपनी कविताओं में बेनी प्रवीन छाप रखते थे।

---

(१) हिन्दी साहित्य का बृहत् इतिहास, भाग ६, पृष्ठ ४१०

५१०।४३७

१४. बेनी प्रगट ४, ब्राह्मण, कविंद कवि नरवल निवासी के पुत्र, सं० १८८० में उ०। इनका काव्य महा सुन्दर है।

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध में कोई सूचना सुलभ नहीं। इनके पिता नरवल निवासी कविंद थे और पितामह सखीसुख। सरोज में सखीसुख का समय सं० १८०७ दिया गया है[1]। अतः १८८० बेनी प्रगट का उपस्थिति-काल ही है।

५११।४४०

१५. वीर कवि, दाऊ दादा बाजपेयी मंडिला निवासी, सं० १८७१ में उ०। इनके भाई विक्रम साहि ने जो महान् कवि थे, अपने भाई दाऊ दादा को यह समस्या दी कि 'तिय भूमती भूमि लौं' तब दाऊ दादा ने इसी समस्या पर 'स्नेह सागर' ग्रंथ की जोड़ का 'प्रेम दीपिका' नामक एक ग्रंथ महा अद्भुत बनाया। यह कवि महा निपुण थे।

सर्वेक्षण

वीर कवि कान्यकुब्ज बाजपेयी ब्राह्मण थे। यह मंडला, जबलपुर के निवासी थे। इनका 'प्रेम दीपिका' नामक ग्रंथ खोज में मिला है।[2] इसमें विविध छंदों में कृष्ण-कथा है। गोपी संदेश, कुरुक्षेत्र में पुनर्मिलन एवं रुक्मिणी विवाह का कुछ विस्तार से वर्णन हुआ है। प्रेमदीपिका के ही नाम से इसके विभिन्न अंश भिन्न-भिन्न स्थानों से मिले हैं। एक में कुरुक्षेत्र में पुनर्मिलन है, एक में गोपी संदेश है, एक में रुक्मिणी परिणय है। ग्रंथ की रचना सं० १८१८ में हुई थी, अतः सरोज में दिया सं० १८७१ ठीक नहीं। सरोज के तीसरे संस्करण में तो सं० १८९१ दिया गया है, जो और भी बुरा है।

५१२।४४१

१६. वीर २, बीरबर कायस्थ दिल्ली निवासी, सं० १७७७ में उ०। यह महाकवि थे। इनका बनाया हुआ और 'कृष्ण चंद्रिका' नामक ग्रंथ साहित्य में बहुत सुंदर और हमारे पुस्तकालय में मौजूद है।

सर्वेक्षण

बीरवर श्रीवास्तव कायस्थ थे और दिल्ली के रहनेवाले थे। इनके पिता का नाम उत्तमचंद था। कवि का असल नाम रामप्रसाद है, क्योंकि कवि ने रामप्रसाद को महामतिमंद कहा है और ऐसा विशेषण अपने को ही विनम्रतावश दिया जा सकता है, अपने किसी पुरुषा को नहीं। ग्रंथ की रचना सं० १७७९ में माघ वदो ११, सोमवार को हुई। यह सब सूचना सरोज में कृष्णचंद्रिका से उद्धृत इन दोहों से मिलती हैं—

कायथ कुल श्रीवासतव उत्तम उत्तिम चंद
रामप्रसाद भयो तनय तासु महा मतिमंद १
चंद्र[1] वार[7] ऋषि[7] निधि[9] सहित, लिखि संवत्सर जानि
चंद्रवार एकादसी, माघ बदी उर आनि २

---

(१) यही ग्रंथ कवि संख्या ८७८ (२) खोज रि० १९०६।१४०

निगम बोध कुरुक्षेत्र जहँ कालिन्दी के तीर
इंद्रप्रस्थ पुर बसत लखि इंद्रपुरी पुनि वीर ३
करयो जथामति आपनी कृष्णचंद्रिका ग्रन्थ
जैसो कछू बताइगे, पूरब पंडित पंथ ४

५१३।४४५

१७. बलभद्र १, सनाढ्य, टेहरी वाले केशवदास कवि के भाई, सं० १६४२ में उ०। इनका 'नखशिख' सारे कवि-कोविदों में महा प्रामाणिक ग्रन्थ है। इन्होंने भागवतपुराण पर टीका भी बहुत सुंदर की है।

सर्वेक्षण

बलभद्र मिश्र सनाढ्य ब्राह्मण थे और हिंदी के प्रसिद्ध कवि केशवदास के बड़े भाई थे। सरोज में दिया सं० १६४२ इनका रचनाकाल है। इनके छोटे भाई केशवदास ने इसके ६ ही वर्ष बाद सं० १६४८ में 'रसिक प्रिया' की रचना की। इनके पिता का नाम काशीनाथ था। इनका ग्रन्थ 'नखशिख' बहुत प्रसिद्ध है। यह भारत जीवन प्रेस ,काशी से प्रकाशित हो चुका है। यह नखशिख न होकर शिखनख है। इसमें ६५ कवित्त और एक छप्पय है। इसकी अनेक टीकाएँ हुई हैं। एक टीका चरखारी के गोपाल कवि ने शिखनख दर्पण[1] नाम से की है। उक्त टीका में प्रारंभ में भूमिका स्वरूप तीन दोहे बलभद्र के संबंध में हैं।

जिहि बलभद्र कियो बियो बलभद्री व्याकर्न
हनुमन्नाटक को कियो तिलक अर्थ आभर्न
गोवर्द्धन सतसई को टीको कीन्हो चारु
इत्यादिक बहु ग्रंथ जिहि कीने अर्थ अपार
तिहिकी मति को कहि सकै, किहिकी मति सु अनंद
करी ढिठाई मैं सु यह अबुध अधिक मति मंद

इन दोहों से प्रकट है कि बलभद्र ने बहुत से ग्रन्थों की रचना की थी, जिनमें से ३ ये हैं—

१. बलभद्री व्याकरण
२. हनुमन्नाटक की टीका
३. गोवर्द्धन सतसई की टीका

खोज में किसी बलभद्र का 'दूषण विचार[2]' नामक ग्रन्थ मिला है। विनोद १४५ में संभावना की गई है कि हो न हो यह इन्हीं बलभद्र की रचना हो। पर यह बात समीचीन नहीं प्रतीत होती क्योंकि इस ग्रन्थ का रचनाकाल सं० १७१४ है और उस समय तक यह बलभद्र संभवतः जीवित भी न रहे होंगे।

वेद[४] इंदु[१] स्वर[७] ससि[१] सरद पुस्तक काव्य प्रकार
माघ शुक्ल एकादशी सिद्ध सुद्ध बुधवार ६०

इस ग्रन्थ का एक नाम 'भाषाकाव्य प्रकाश' भी है।

विनोद (१४५) के अनुसार बलभद्र मिश्र कृत भागवत का अनुवाद भी मिल चुका है।

---

(१) खोज रि० १६०६।४० (२) खोज रि० १६०६।१६, १६२३।२६

५१४।४५४

१८. व्यास जी कवि, सं० १६८५ में उ० । इनके दोहे नीति-व्यवहार संबंधी बहुत सुंदर हैं । हजारे में बहुत दोहे इनके लिखे हैं ।

सर्वेक्षण

यह व्यास ५१५ संख्यक हरीराम शुक्ल ओड़छे वाले हैं । सं० १६८५ अशुद्ध है । इनका देहांत सं० १६६३-७५ के बीच निश्चित रूप से हो चुका था । इस समय तक वे जीवित नहीं थे ।

व्यास जी का पूरा विवरण आगे संख्या ५१५ पर देखिए ।

५१५।४६०

१६. व्यास स्वामी, हरीराम शुक्ल उड़छेवाले, सं० १५६० में उ० । इनके पद राग सागरोद्भव में बहुत हैं । इन महाराज ने संवत् १६१२ में, ४५ वर्ष की अवस्था में, उड़छे से वृन्दावन आकर, भगवत-धर्म को फैलाया । इस गुरुद्वारे के सेवक हरव्यामी नाम से पुकारे जाते हैं ।

सर्वेक्षण

व्यास जी की सारी वाणी सुसंपादित होकर सं० २००६ में प्रकाशित हुई है । ग्रन्थ का नाम है, 'भक्त कवि व्यास जी' । इसके संपादक हैं उक्त व्यास जी के वंशज श्री बासुदेव गोस्वामी और प्रकाशक हैं श्री प्रभुदयाल मीतल, अग्रवाल प्रेस, मथुरा । ग्रंथ में दो खंड हैं—प्रथम खंड में जीवन और साहित्य का विवेचन है, द्वितीय में उनकी रचनाएँ हैं । प्रथम खंड के आधार पर व्यास जी का परिचय प्रस्तुत किया जा रहा है ।

हरीराम व्यास का जन्म मार्गशीर्ष कृष्ण ५ बुधवार, सं० १५६७ को ओरछा में हुआ था । इनके पिता का नाम समोखन शुक्ल था और माता का देविका । हरीराम जी प्रारंभ में पुराण के वक्ता थे, अत: इनका आस्पद हुआ व्यास । यह सनाढ्य ब्राह्मण थे । इनके परिवार में पत्नी, एक छोटा भाई, बहिन, पुत्री तथा तीन पुत्रों का पता चलता है । व्यास जी को पुराण एवं वेदांत की अच्छी शिक्षा मिली थी । ये प्रसिद्ध शास्त्रार्थी पंडित थे और अनेक पंडितों को इन्होंने हराया था ।

सं० १५६१ में व्यास जी वृन्दावन आए । हितहरिवंश के राधावल्लभी संप्रदाय का उस समय जोर था । व्यास जी पर भी हरिवंश जी की भक्ति का प्रभाव पड़ा । वे आठ नौ वर्षों में लौटे और अपने पिता समोखन शुक्ल से दीक्षित हो युगल-मंत्र की साधना में लीन हो गए । गुरु-पिता की मृत्यु के पश्चात् व्यास जी सं० १६१२ में सदा के लिए वृन्दावन आ रहे । यहाँ यह स्वामी हरिदास और हितहरिवंश के साथ रहने लगे । हरिवंश जी से इन्हें अपनी साधना में अत्यंत सहायता मिली । वे इनके साधना-गुरु थे । इनकी भक्ति माधुर्य-भाव की थी ।

ओरछा नरेश मधुकरशाह (शासनकाल सं० १६११-४६) इनके शिष्य थे । जब सं० १६१२ में व्यास जी वृन्दावन में आकर बस गए, तब मधुकरशाह भी इन्हें वापस बुलाने गए थे ।

व्यास जी सं० १६६३ के पश्चात् तक निश्चित रूप से जीवित रहे । सं० १६७५ में ओरछा नरेश वीरसिंह देव ने इनकी समाधि बनवाने में हाथ लगाया । अतः इनकी मृत्यु सं० १६६३ और सं० १६७५ के बीच किसी समय हुई ।

५१४ संख्यक व्यास के ४ दोहे सरोज में उद्धृत हैं, जिनमें से प्रथम दो, भक्तकवि व्यास जी के साखी प्रकरण के ११२,११३ संख्यक दोहे हैं । ५१५ संख्यक व्यास का पद इस ग्रन्थ का ३२५

संख्यक पद है। विनोद के ७८,२८१ संख्यक व्यासों के उदाहरण में दिए पद ग्रंथ के क्रमशः ४,१६६ संख्यक पद हैं। उदाहरणों की यह एकता इन दोनों व्यासों की भी एकता सिद्ध करती है।

हरीराम व्यास की शिष्य-परंपरा के लोग हरिव्यासी नहीं कहलाते, यह कथन सरोजकार का शुद्ध भ्रम है। श्री भट्ट जी के शिष्य हरिव्यासदेव थे। यह निबार्क संप्रदाय के अनुयायी और हरीराम व्यास के समकालीन थे। इन्हीं हरिव्यासदेव के शिष्य हरिव्यासी कहलाए। हरिव्यासदेव का विवरण विनोद में संख्या ४२।१ पर है और २८१ संख्या वाले व्यास के साथ भ्रमपूर्ण एकात्मकता का भी उल्लेख है।

ग्रियर्सन (५४) में इन व्यास को एक बार ओरछा का और दूसरी बार देवबंद सहारनपुर का निवासी कहा गया है। वास्तविकता यह है कि हितहरिवंश के पिता का भी नाम व्यास था। यह दूसरे व्यास देवबंद के रहनेवाले थे। ग्रियर्सन ने दोनों को मिलाकर घपला कर दिया है। यहाँ इन्हें विलसन के अनुसार नीमादित्य का शिष्य कहा गया है। यह कथन भी अनर्गल है।

भक्तमाल में व्यास जी का विवरण छप्पय ९२ में है।

५१६।४६५

२०. वल्लभ रसिक कवि १, सं० १६८१ में उ०। हजारे में इनके कवित्त बहुत सुंदर हैं।

सर्वेक्षण

वल्लभ रसिक जी चैतन्य संप्रदाय वाले प्रसिद्ध गदाधर भट्ट के पुत्र थे। इनके एक भाई रसिकोत्तंस जी थे।[1] यह सं० १६८१ में उपस्थित थे। इनके लिखे हुए निम्नलिखित ग्रंथ खोज में मिले हैं—

१. वल्लभ रसिक जी की मांझ, १९००।६७। मांझ छंद में लिखित राधाकृष्ण की कुछ क्रीड़ाओं का वर्णन। यह लघु ग्रंथ २६ छंदों में पूर्ण हुआ है। प्रत्येक छंद के चतुर्थ चरण के प्रारम्भ में वल्लभ रसिक छाप है। यथा प्रथम छंद में—

वल्लभ रसिक विलास रास उल्लास गांस सुधि आई।

२. वल्लभ रसिक जी की सांझी, १९०९।३२६। खोज रिपोर्ट में लिखा है कि यह ऊपर वर्णित मांझ ग्रंथ ही है। यहाँ सांझी का ही अशुद्ध रूप मांझ माना गया है। प्रमाद से यह कल्पना कर ली गई है कि मांझ नामक कोई वस्तु होती ही नहीं। पर यह अतथ्य है। मांझ एक छंद है, जिसके अन्य नाम ललितपद, दोवै, नरेंद्र और सार हैं। इसके प्रत्येक चरण में १६,१२ के विराम से २८ मात्राएँ होती हैं और चरणांत में दो गुरु होते हैं। नागरीदास के ४ ग्रंथ मांझ अभिधान वाले हैं। सांझी में राधाकृष्ण की पुष्प चयन संबंधी शरद सांध्यलीला का वर्णन होता है। सब दृष्टियों से यह स्वतंत्र ग्रंथ है। इस ग्रन्थ का अंतिम अंश यद्यपि मांझ छंद ही में है, पर इसका प्रारंभिक भाग दूसरे छंद में है।

३. वल्लभरसिक बाईसी, १९२६।४९०। इस ग्रन्थ में राधाकृष्ण संबंधी २२ शृंगारी कवित्त हैं।

---

(१) यही ग्रंथ, कवि संख्या १५८ या साहित्य वर्ष ९, अंक ४, जनवरी १९५९, व्रजरत्नदास जी का लेख 'गदाधर भट्ट', पृष्ठ ६३-६५

४. बारह बाट अठारह पैंड़े, १९१२।१४ बी, १९४४।२३५। इस ग्रन्थ में कुल १०८+२ छंद हैं। इसमें राधाकृष्ण का स्नेह वर्णित है।

५. सुरतोल्लास, १९१२।१४ बी। इस ग्रन्थ में २७ छंद हैं। इसमें राधाकृष्ण की सुरति का वर्णन है।

इनका एक ग्रन्थ 'वल्लभ रसिक जी की बानी'[१] नाम से मिला है। यह संभवतः वल्लभ रसिक जी की संपूर्ण रचनाओं का संग्रह है। इसमें कुल ५७ पन्ने हैं। इस संग्रह का अंतिम ग्रंथ 'बारह बाट अठारह पैंड़े' है। १९२६ वाली रिपोर्ट में इनके ये तीन ग्रन्थ और गिनाए गए हैं—१ हिंडोर, २ सनेही विनोद, और ३ प्रेम चंद्रिका। संभवतः ये सभी ग्रन्थ इस बड़े ग्रंथ में समाहित हैं। हिंडोर तो इसका प्रथम ग्रन्थ प्रतीत होता है।

५१७।४७६

२१. वल्लभ कवि २, सं० १६८६ में उ०। इनके दोहे बहुत सुन्दर हैं।

सर्वेक्षण

वल्लभ का पूरा नाम वल्लभदास था। यह राधावल्लभीय संप्रदाय के वैष्णव, ब्रजवासी और सेवक स्वामी (मृत्युकाल सं० १६१०) के अनुयायी थे। १६८९ इनका अंतिम जीवन-काल हो सकता है। खोज में इनके तीन ग्रन्थ मिले हैं—

१. सेवक बानी को सिद्धांत, १९०९।३२५। यह एक गद्य कृति है। इसमें हितचौरासी में कथित राधाकृष्ण के वृन्दावन, नित्य निकुंज विलास और राधावल्लभीय संप्रदाय के दृढ़ रसिक अनन्य धर्म के सिद्धांतों का वर्णन है। इस ग्रंथ के आदि और अंत में वल्लभदास को महंत कहा गया है।

२. मान विलास, १९१२।१३। इस ग्रन्थ में राधा का कृष्ण से मान करना और कृष्ण का उन्हें मनाना वर्णित है। ग्रन्थ दोहों में है, बीच में कवित्त भी हैं। इसमें कुल ३९ छंद हैं। अंतिम छंद में कवि का नाम है।

वल्लभ मान विलास को, गावत जे करि हेत
लाल लली तिनको सदा, मन वांछित फल देत ३९

ग्रन्थ से कवि की भक्ति-भावना टपकती है—

राधा मेरी स्वामिनी, वल्लभ स्वामि अनूप
निसिदिन मो चित नित बसो, श्री वृंदावन भूप ३८

३. गूढ़ शतक, १९१७।१८। इस ग्रन्थ में १०७ दोहे हैं। इनमें कृष्ण के अंग, भूषण, वसन आदि का वर्णन और भक्तिरस पूर्ण उक्तियाँ हैं। ग्रन्थ के तीसरे दोहे में कवि का नाम आया है—

कहइ कुँवरि सुजान मनि, किय आयसु चित लाय
रस सिंगार मत गूढ़ सत वल्लभ नित बनाय ३

---

(१) खोज रि० १९१२।१४ ए.

सरोज में उद्धृत दोहे संभवतः इसी ग्रंथ के हैं।

वल्लभदास की रचनाएँ ख्याल टिप्पा [1] नामक संग्रह में भी हैं।

किसी वल्लभ की एक लघु-कृति 'स्वरोदय'[2] मिली है। यह किसी हृदयराम के राज्य में लिखी गई थी। कहा नहीं जा सकता कि यह ग्रंथ राधावल्लभीय संप्रदाय के वल्लभदास का है अथवा किसी निर्गुनिए वल्लभदास का अथवा वल्लभ संप्रदाय के विट्ठलनाथ के शिष्य वल्लभ का।

एक वल्लभ का उल्लेख बुंदेल वैभव में 'लग्न सुंदरी' ग्रंथ के कर्त्ता के रूप में हुआ है। इनका वास्तविक नाम मथुरा था। इनके पिता ओरछे में आ बसे थे। यह केशव के समकालीन थे।[3]

५१८।४६१

२२. वल्लाभचार्य ३, ब्रजवासी गोकुलस्थ, सं० १६०१ में उ०। इनके पद रागसागरोद्भव में बहुत हैं। राधावल्लभीय संप्रदाय के यही महाराज आचार्य हैं।

सर्वेक्षण

महाप्रभु वल्लभाचार्य भारद्वाज गोत्र के तैलंग ब्राह्मण थे। इनके पिता का नाम लक्ष्मण भट्ट था तथा माता का इल्लमगारू। ये गोदावरी तट स्थित काँकरवाड़ गाँव के निवासी थे। ये दंपति तीर्थयात्रा करते हुए दक्षिण से उत्तर आए और काशी में रहने लगे। वल्लभाचार्य का जन्म रायपुर (मध्यप्रदेश) जिले के चंपारण्य नामक वन में वैशाख कृष्ण ११, रविवार, सं० १५३५ को हुआ, जब इनके माता-पिता बहलोल के आक्रमण के भय से काशी से दक्षिण की ओर भागे जा रहे थे।

वल्लभाचार्य ने १० वर्ष की वय में वेद, वेदांग, दर्शन, पुराण में अद्भुत योग्यता प्राप्त कर ली थी। इन्होंने संपूर्ण भारत की यात्रा की थी और शास्त्रार्थ में विजय प्राप्त की थी। इनोंहने शंकर के मायावाद का खंडन एवं ब्रह्मवाद और भक्तिमार्ग का मंडन किया। इनका मत दार्शनिक दृष्टि से शुद्धाद्वैत कहलाता है, भक्ति की दृष्टि से इनके पंथ का नाम पुष्टि मार्ग है।

२३ वर्ष की वय में इन्होंने विवाह किया। इनके दो पुत्र हुए। बड़े पुत्र गोपीनाथ थे, जिनका जन्म सं० १५६८, आश्विन कृष्ण १२ को प्रयाग के निकट अरइल नामक गांव में हुआ था। दूसरे पुत्र विट्ठलनाथ का जन्म सं० १५७२ में पौष कृष्ण ९ को काशी के पास चरणाट गाँव में हुआ था।

इन्होंने श्रीनाथ जी का मंदिर सं० १५५६ में प्रारंभ किया, जो १७ वर्ष पश्चात् संवत्

---

(१) खोज रि० १९०२।५७ (२) राज० रि० भाग २, पृष्ठ १३० (३) बुंदेल वैभव भाग २, पृष्ठ ४५१

१५७६ में वैशाख सुदी ३ को पूर्ण हुआ। इसी मंदिर में अष्टछाप के कवि लोग सेवा-कीर्तन किया करते थे।

वल्लभाचार्य के ३० ग्रंथ प्रसिद्ध हैं, जिनकी सूची प्रभुदयाल मीतल ने अष्टछाप परिचय में दी है। इनमें अणुभाष्य और सुवोधिनी बहुत प्रसिद्ध हैं। अणुभाष्य बादरायण कृत ब्रह्मसूत्र की एवं सुवोधिनी श्रीमद्भागवत की टीका है। इनमें शांकर अद्वैत का खंडन और शुद्धाद्वैत का मंडन है। सुवोधिनी में केवल १,२,३,१०,११ स्कंधों की टीका है। वल्लभाचार्य के समस्त ग्रन्थ संस्कृत में हैं। यद्यपि इन्होंने स्वयं ब्रजभाषा में कोई रचना नहीं की, फिर भी ब्रजभाषा काव्य की प्रगति में इनका और इनके संप्रदाय का बहुत बड़ा योग रहा है। रागसागरोद्भव में वल्लभ छाप वाले जो पद हैं, वे इनके नहीं हैं। ब्रजभाषा में इनका एक गद्य-ग्रन्थ 'चौरासी अपराध' इनका माना जाता है।

वल्लभाचार्य ने ४० दिन तक अनशन और विप्रयोग करने के अनन्तर सं० १५८७ में आषाढ़ शुक्ल ३ को मध्याह्न के समय काशी में हनुमान घाट पर गंगा की बीच धारा में, ५२ वर्ष की वय में, जल समाधि ली।[1]

सरोज में दिया गया सं० १६०१ ठीक नहीं। साथ ही वल्लभाचार्य के नाम पर इस ग्रंथ में जो दो रचनाएँ दी गई हैं, वे किसी वल्लभ नामक अन्य कवि की हैं, जो इनके वल्लभ-संप्रदाय में दीक्षित था और इनके पुत्र विट्ठलनाथ का शिष्य था। यह इन्हीं रचनाओं से स्पष्ट है।

१. बाती कपूर की जोति जगमगै, आरती विट्ठलनाथ विराजै।

यह विट्ठलनाथ वल्लभाचार्य के पुत्र हैं और कवि के गुरु हैं।

२. गायो न गोपाल, मन लायो न रसाल लीला,
सुनि न सुबोध, जिन साधु संग पायो है
सोयो न सवाद करि धरि अवधरि हरि
कबहु न कृष्ण नाम रसना कहायो है
वल्लभ श्री विट्ठलेस प्रभु की सरन आय
दीन ह्वै कै मूढ़ छन सीस ना नवायो है
रसिक कहाय अब लाजहू न आवै तोहि
मानुष सरीर धरि कहा धौं कमायो है

यहाँ सुबोध सुनने से अभिप्राय-श्रीमद्भागवत की वल्लभाचार्य कृत सुबोधिनी टीका के श्रवण करने से है। वल्लभ, कवि का नाम है। विट्ठलेस की शरण में आने से अभिप्राय वल्लभ-संप्रदाय में गोसाईं विट्ठलनाथ द्वारा दीक्षित होने से है।

सरोज और ग्रियर्सन (३४) के अनुसार वल्लभाचार्य राधावल्लभीय संप्रदाय के प्रवर्तक थे। किंतु यह बात ठीक नहीं। यह वल्लभ-संप्रदाय के प्रवर्तक थे, राधावल्लभीय संप्रदाय के प्रवर्तक तो हितहरिवंश थे।

---

(१) अष्टछाप परिचय, पृष्ठ ३-१७ के आधार पर लिखित।

महाप्रभु वल्लभाचार्य को गोकुलस्थ नहीं कहा जा सकता। गोकुल को तो गो० विट्ठलनाथ ने बाद में सं० १६३८ में बसाया था।

वल्लभाचार्य के ८४ शिष्य हुए, जिनकी कथा 'चौरासी वैष्णवन की वार्ता' में है। इन ८४ में ४ बहुत प्रसिद्ध हैं—कुंभनदास, सूरदास, कृष्णदास अधिकारी और परमानंद दास। इनकी गणना अष्टछाप के कवियों में है।

वल्लभाचार्य का उल्लेख मात्र विष्णुस्वामी के संप्रदाय वाले छप्पय (४८) में हुआ है। भक्तमाल में इन पर कोई स्वतंत्र छप्पय नहीं है। छप्पय ८२ में एक वल्लभ हैं, जो भक्तमाल की रचना के समय जीवित थे, अतः प्रसिद्ध वल्लभाचार्य से भिन्न हैं।

५१६।४७१

२३. विट्ठलनाथ गोकुलस्थ, गोस्वामी वल्लभाचार्य के पुत्र, सं० १६२४ में उ०। यह महाराज वल्लभाचार्य के पुत्र परमभक्त वात्सल्य निष्ठ हुए हैं। इनके सात पुत्रों की सात गद्दियाँ गोकुल जी में चली आती हैं। इनकी कविता, पद इत्यादि बहुत से रागसागरोद्भव में हैं।

सर्वेक्षण

गोसाई विट्ठलनाथ का जन्म सं० १५७२, पौष कृष्ण ६, शुक्रवार को, काशी के निकट चरणाट नामक गाँव में हुआ था। यह महाप्रभु वल्लभाचार्य के द्वितीय पुत्र थे। इनकी पहली पत्नी रुक्मिणी से ६ पुत्र, ४ पुत्रियाँ तथा दूसरी पत्नी से घनश्याम नामक एक पुत्र उत्पन्न हुआ था।

इन्हीं सातों पुत्रों की बाद में सात गद्दियाँ चलीं। इनके बड़े भाई गोपीनाथ जी सं० १५८७ में महाप्रभु वल्लभाचार्य के देहावसान के अनंतर आचार्य हुए। १२ वर्ष के बाद ही सं० १५९९ में उनकी मृत्यु जगदीशपुरी में हो गई। उस समय उनके पुत्र पुरुषोत्तम जी केवल १२ वर्ष के थे। कुछ लोग पुरुषोत्तम जी को आचार्य बनाना चाहते थे और कुछ लोग विट्ठलनाथ जी को। इस गृह-कलह को लेकर श्रीनाथ जी के मंदिर के अधिकारी कृष्णदास ने विट्ठलनाथ जी का मंदिर-प्रवेश तक रोक दिया था। पर सं० १६०६ में पुरुषोत्तम जी का भी देहावसान १९ वर्ष की अल्प आयु में हो गया। फलतः गृह-कलह स्वतः शांत हो गया। सं० १६०७ में विट्ठलनाथ जी विधिपूर्वक पुष्टि-संप्रदाय के आचार्य हुए। इसी वर्ष इन्होंने अष्टछाप की स्थापना की। इनका तिरोधान सं० १६४२ में फाल्गुन कृष्ण ७ को हुआ। इनकी मृत्यु के अनंतर इनके सात पुत्रों की सात गद्दियाँ चलीं, जिनके वंशधरों की गद्दियाँ आजकल निम्नांकित स्थानों पर हैं—

१ गिरिधर जी के वंशधरों की गद्दी		कोटा
२ गोविंद राय	,,	नाथद्वारा, मेवाड़
३ बालकृष्ण	,,	काँकरोली
४ गोकुलनाथ	,,	गोकुल
५ रघुनाथ	,,	कामवन
६ यदुनाथ	,,	सूरत
७ घनश्याम	,,	कामवन

गोसाईं विट्ठलनाथ के रचे संस्कृत-ग्रंथ ५० हैं। [1] विट्ठलनाथ जी ने भी ब्रजभाषा में कविता नहीं की। ब्रजभाषा गद्य में इनके चार टीका ग्रंथ हैं--

१. यमुनाष्टक १९१२। २८, १९३२। ७२ ए। वल्लभाचार्य के इसी नाम के संस्कृत ग्रंथ की ब्रजभाषा गद्य में टीका।

२. नवरत्न सटीक १९१२। २८, १९३२। ७२ सी।

३. शृंगार रस मंडन १९०९। ३२।

४. सिद्धांत मुक्तावली १९३२। ७२ बी।

रागसागरोद्भव रागकल्पद्रुम में विट्ठलछापयुक्त पद अन्य विट्ठलों के हैं। सरोज में इनके नाम से जो पद उद्धृत है, उसमें विट्ठल गिरिधरन छाप है।

'श्री विट्ठल गिरिधरन सी निधि अब भक्त को देत हैं बिनहिं मांगी'

विट्ठल गिरिधरन छाप वाले पद गोसाईं विट्ठलनाथ की शिष्या गंगाबाई कृत हैं। गंगाबाई के पदों का एक संग्रह खोज में मिला है। यह क्षत्राणी थीं और महावन में रहा करती थीं। विट्ठलनाथ[2] के २५२ शिष्य थे। इनकी कथा 'दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता' में है। ब्रजभाषा के इस गद्य ग्रंथ में गंगाबाई की भी वार्ता है।

विट्ठलनाथ जी के शिष्यों में गोविंद स्वामी, छीतस्वामी, चतुर्भुजदास और नंददास, ये चार श्रेष्ठ कवि हैं और अष्टछाप में परिगणित हैं।

भक्तमाल में विट्ठलनाथ का विवरण छप्पय ७९ में है। इनके सातों पुत्रों की नामावली छप्पय ८० में है।

---

५२० । ४८८

२४ विपुल विट्ठल २, गोकुलस्थ श्री स्वामी हरिदास के शिष्य, १५८० में उ०। इनके पद रागसागरोद्भव में हैं। यह महाराज मधुवन में बहुधा रहा करते थे।

सर्वेक्षण

विट्ठल विपुल स्वामी हरिदास के शिष्य तो थे ही, उनके मामा भी थे। हरिदास जी का जन्मकाल सं० १५३७ और तिरोधानकाल सं० १६३२ माना जाता है। यही समय विट्ठल विपुल का भी होना चाहिए। सरोज में दिया हुआ सं० १५८० रचनाकाल ही है। यदि इसे जन्मकाल माना जायगा तो मामा, भांजे से ४३ वर्ष कनिष्ठ हो जायगा।

सर्वेश्वर के अनुसार वीठल विपुल स्वामी हरिदास के मामा नहीं थे, ममेरे भाई थे। यह हरिदास जी से ५ वर्ष बड़े थे। इनका जन्म सं० १५३२ में अगहन शुक्ल पंचमी को हुआ था। यह तिथि नागरीदास जी ने स्वरचित इनकी बधाई में दी है :—

प्रगटे विपुल सुखनि सुखदाता
श्री वृंदा विपिन विहार प्रकास्यो सोभानिधि गुन गाता
मँगसिर सुकल विहार पंचमी रसिकनि हिय हुलसाता

---

(१) अष्टछाप परिचय, पृष्ठ २४-४१ के आधार पर (२) खोज रि० १९३५। २४

इनके पिता का नाम गुरुजन और माता का श्रीमती कौसल्यादेवी था। इनका जन्म वृन्दावन के ही निकट राजपुर में हुआ था। इनका देहांत हरिदास जी की मृत्यु के कुछ ही दिनों बाद हुआ। स्वामी जी की मृत्यु से विकल हो यह निधुवन में पड़े थे। इनकी सांत्वना के लिए हरीराम व्यास आदि वैष्णवों ने रास का आयोजन किया और इन्हें वहाँ ले गए। रसिकों की मंत्रणा के अनुसार स्वामिनी-स्वरूप ने इनका हाथ पकड़ लिया और कहा, "बाबा, आँखें खोल और मेरा दर्शन कर।" वीठल विपुल ने दर्शन के लिए आँखें खोलीं और स्वामिनी-स्वरूप में सदा के लिए लीन हो गए। इसीलिए भक्तमालकार ने इन्हें 'रस सागर' कहा है। इस कथा का उल्लेख विट्ठल विपुल के शिष्य विहारिन देव ने एक पद में किया है। प्रियादास जी ने भी भक्तमाल की टीका में इस घटना का उल्लेख किया है।[१]

हरिदास वंशानुचरित्र के अनुसार वीठल विपुल की मृत्यु हरिदास जी के देहावसान के सात दिन बाद कार्तिक वदी ७ सं० १६३२ को हुई। यह सं० १५८० में स्वामी हरिदास जी के मुख्य शिष्य हुए थे। सरोज में यही संवत् दिया गया है। इस ग्रंथ में इनका जन्म काल सं० १५५०, मार्गशीर्ष शुक्ल ५ दिया गया है, जो ठीक नहीं।[२] इनके दो प्रमुख शिष्य, कृष्णदास और विहारिन दास हुए हैं।

सरोज के अनुसार विट्ठल विपुल जी मधुवन में बहुधा रहा करते थे। ग्रियर्सन (६२) में इसका यह अर्थ किया गया कि यह मधुवन के राजा के आश्रित थे। विनोद (७९) में भी ग्रियर्सन का अंधानुकरण कर यही कहा गया है। मधुवन स्थान का नाम है, किसी राजा-रानी का नाम नहीं। सरोजकार ने भी संभवतः प्रमाद से निधुवन के स्थान पर मधुवन लिख दिया है। निधुवन वृन्दावन का एक भाग है। यहीं स्वामी हरिदास रहा करते थे। वृन्दावन में यह स्थान अब भी जंगल के रूप में सुरक्षित है। संभवतः यहीं विट्ठल विपुल भी रहते रहे होंगे। विट्ठल विपुल जी की बानी[३] खोज में मिल चुकी है। इसमें केवल ४० पद हैं।

भक्तमाल छप्पय ९४ में वृन्दावन की माधुरी का आस्वाद लेने वाले १४ भक्तों की नामावली में विट्ठल विपुल का भी नाम है। इन्हें 'रस सागर' कहा गया है। सं० १६३२ के आस-पास ही स्वामी हरिदास की मृत्यु के अनंतर इनका देहावसान हुआ। प्रियादास ने रस सागर की व्याख्या करते हुए यह कहा है :—

> स्वामी हरिदास जू के दास, नाम बीठल है,
> गुरु से वियोग, दाह उपज्यो अपार है
> रास के समाज में विराज सब भक्तराज,
> बोलि के पठाए, आए आज्ञा बड़ो भार है
> युगल सरूप अवलोकि, नाना नृत्य भेद
> गान तान कान सुनि, रही न सँभार हैं

(१) सर्वेश्वर, वर्ष ५, अंक-१-५, चैत्र सं० २०१३, पृ० २३८ (२) हरिदासवंशानुचरित्र, पृष्ठ ३१,३९ (३) खोज रि० १९०१ और १९१२।२१

मिलि गए वाही ठौर, पायो भाव तन और
कहे रस सागर, सो ताको यों विचार है ३७७

५२१।४६६

२५. बीठल कवि ३। इनके शृङ्गार में अच्छे कवित्त हैं।

सर्वेक्षण

बीठल का एक कवित्त सरोज में 'दिग्विजय भूषण' से उद्धृत है। यह रीति परम्परा में डूबे हुए कोई अज्ञात कविद हैं। यह उक्त कवित्त के अंतिम चरण मात्र से भलीभाँति अनुमान किया जा सकता है।

विरह ने दही, रात पिय बिन रही, रात
आवै नियरात, तिय जात पियरात है।

ग्रियर्सन (३५) में इस कवि के विट्ठलनाथ से अभिन्न होने की बेतुकी कल्पना की गई है।

५२२।४७०

२६. बलि जू कवि। ऐज़न। इनके शृङ्गार में अच्छे कवित्त हैं।

सर्वेक्षण

सरोज में आगे संख्या ५६६ पर एक और बलि जू कवि का विवरण है। इन दोनों कवियों की कविता का पृष्ठ-निर्देश (२१६) एक ही है। अतः दोनों कवि एक ही हैं। विनोद (४४६) में भी दोनों कवियों का अभेद स्वीकृत है। यहाँ इनका जन्मकाल सं० १६६४ और रचनाकाल १७२२ दिया गया है, जो सरोज ५६६ संख्यक बलि जू के अनुसार है। प्रथम संस्करण में कवि का नाम वलिराम है, तृतीय में राम छूट गया है केवल 'वलि' रह गया है, सप्तम में 'जू' और लगकर कवि 'बलि जू' बन गया है। तृतीय एवं सप्तम संस्करणों में पृष्ठ-निर्देश भी अशुद्ध है।

५२३।४९३

२७. बलराम दास ब्रजवासी। इनके पद रागसागरोद्भव में हैं।

सर्वेक्षण

बलरामदास ब्रजवासी थे। इनके पद रागकल्पद्रुम भाग २, में कीर्तन सम्बन्धी पदों में हैं। यह कृष्णभक्त कवि थे। सरोज में चीर-हरण सम्बन्धी इनका एक पद उद्धृत है। इनके सम्बन्ध में कोई प्रामाणिक सूचना सुलभ नहीं। ग्रियर्सन (७६८) के अनुसार यह वह बलरामदास हैं, जिनका उल्लेख तासी ने सृष्टि-विधान सम्बन्धी 'चित विलास' नामक ग्रन्थ के कर्ता रूप में किया है। विनोद

(५३१) में पदों के रचयिता एक बलिराम हैं, जो सं० १७५० में उपस्थित कहे गए हैं। कुछ कहा नहीं जा सकता कि यह सरोज के बलरामदास से भिन्न हैं अथवा अभिन्न। सं० १८१० के लगभग उपस्थित, रामधाम[1] के रचयिता, बंधुआ हसनपुर जिला सुलतानपुर के नानकपंथी महंत से तो यह निश्चय ही भिन्न हैं।

५२४।४६५

२८. वंशीधर। ऐज़न। इनके पद रागसागरोद्भव में हैं।

सर्वेक्षण

यह वल्लभ-सम्प्रदाय के अनुयायी थे। इनका एक ग्रन्थ 'दानलीला[2]' खोज में मिला है। रिपोर्ट में इन्हें १६ वीं शताब्दी के मध्य में उपस्थित कहा गया है। इनके गुरु का नाम द्वारिकेश कहा गया है, जो ठीक नहीं प्रतीत होता। यह शब्द कृष्ण के लिए प्रयुक्त हुआ है। वल्लभाचार्य इनके गुरु प्रतीत होते हैं।

द्वारिकेश पद कमल कौ बंसीधर धरि ध्यान
श्री बल्लभ जिह हेत ते करयो भक्ति को दान

रिपोर्ट एवं सरोज में उद्धृत अंशों से प्रतीत होता है कि कृष्ण का गिरिधर रूप इनका इष्ट था।

रिपोर्ट—प्यारी गोरस दान दै, भेंटे गिरिधर पीय
यह लीला नित प्रीति सो, बंसीधर को जीय ३३
सरोज– बंसीधर गिरिधर पर वारी अब कछु और न होना री

इनके पद रागकल्पद्रुम भाग २ में हैं।

५२५।४७६

२६. बंशीधर मिश्र संदीलेवाले, सं० १६७२ में उ०। इनके शांतरस के चोखे कवित्त हैं।

सर्वेक्षण

सरोज में वंशीधर मिश्र का विवरण महेश दत्त के काव्यसंग्रह से लिया गया है। सरोज में दिया सं० १६७२ भाषा काव्यसंग्रह के अनुसार बंशीधर का मृत्यु काल है।[3] यह कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे।

५२६।४६४

३०. विष्णुदास १। इनके पद रागसागरोद्भव में हैं।

---

(१) खोज रि० १९३२।१ (२) खोज रि० १६४४।३८२ (३) भाषा काव्यसंग्रह, पृष्ठ १३५-३६

सर्वेक्षण

विष्णुदास महाप्रभु वल्लभाचार्य के अंतरंग सेवक थे[1] और सरोज में उद्धृत निम्नांकित पद से इनका वल्लभनन्दन गोसाईं बिट्ठलनाथ जी का समकालीन होना सिद्ध है—

> प्रात समय, श्रीवल्लभ सुत को परम पुनीत विमल जस गाऊं
> अंबुज बदन, सुभग नयना अति, स्रवनन लै हिरदे बैठाऊँ
> जब जब निकट रहत चरनन तर पुनि पुनि निरखि निरखि सुख पाऊं
> विष्णुदास प्रभु करो कृपा मोहि वल्लभ नन्दन दास कहाऊं

८४ वैष्णवों में से एक यह भी हैं। उक्त वार्ता में यह ५० वें वैष्णव हैं। यह जाति के छीपा थे। इनका रचनाकाल सं० १५८० और १६४० के बीच होना चाहिए।

भक्तमाल में तीन विष्णुदास हैं—

१— विष्णुदास, कृष्णदास पयअहारी के शिष्य। छप्पय ३९ में कृष्णदास पयअहारी के शिष्यों में परिगणित।

२—विष्णुदास, मथुरा मंडल में बसे पहले के एवं सं० १६४९ में वर्तमान २१ भक्तों में से एक, छप्पय १०३।

३—विष्णुदास, दक्षिण दिशा में स्थित काशीर ग्राम के रहने वाले, छप्पय १५७। इनमें से दूसरे विष्णुदास सरोज के अभीष्ट विष्णुदास जान पड़ते हैं।

५२७।४६९

३१. विष्णुदास २। इनके कूट दोहे बहुत हैं।

सर्वेक्षण

सरोज में उद्धृत ५ कूट दोहों और कवि नाम के सहारे ही इस कवि को निम्नलिखित ६ विष्णुदासों में से खोज निकालना सम्भव नहीं। यह भी हो सकता है कि यह इनमें से कोई भी न हों—

१—विष्णुदास, सं० १४९२ के लगभग वर्तमान। गोपाचलगढ़ (ग्वालियर) के राजा डोंगर सिंह के आश्रित। इनके निम्नांकित ग्रंथ मिले हैं :—

क. महाभारत कथा, १९०६।२४८ ए, १९२९।३२८ ए। १९०६ वाली रिपोर्ट के अनुसार इसकी रचना सं० १४९२ में हुई।

ख. रुक्मिणी मंगल, १९१७।१९३, १९२६।४९८, १९२९।३२८ बी, १९४१।५६०द, १९३१।९६

ग. स्वर्गारोहण पर्व, १९०६।२४८ बी, १९२९।३२८ सी, डी, ई, एफ, १९४४।३८८। यह ग्रंथ महाभारत कथा का एक अंश मात्र है।

---

(१) श्री वल्लभाचार्य महाप्रभु जी की प्राकट्य वार्ता—प्रारम्भ में गुजराती प्रकरण, पृष्ठ १२

२—विष्णुदास कायस्थ। पन्ना बुंदेलखंड निवासी, अठारहवीं शताब्दी के आरम्भ में वर्तमान। एकादशी माहात्म्य १९६६।११७

३—विष्णुदास सं० १८०७ के पूर्व वर्तमान। भाषा वाल्मीकीय रामायण १९४१।२५४

४—विष्णुदास, सं० १८५१ के लगभग वर्तमान, झाझर के निवासी, गुरु का नाम संभवतः ढंढीराय सुख था। बारह खड़ी, १९०९।३२७, १९२३।४४२, १९४७।३६७

५—विष्णुदास, पाराशरी जातक १९२०।२०४ ए; सनेहलीला १९२०।२०४ बी, १९२६। ४९९। यह ग्रंथ सुंदर सरस, सरल दोहों में विरचित है।

६—विष्णुदास, ओरछा वासी, रचनाकाल सं० १७३५। मकरध्वज चरित्र, स्वर्गारोहिणी और भूगोल पुराण के रचयिता। बुंदेल वैभव, भाग २, पृष्ठ ४६७

हो सकता है कि दूसरे और छठें विष्णुदास एक ही हों।

५२८।४५१

३२. वंशीधर कवि, ३। इनके बहुत सुंदर कवित्त हैं।

सर्वेक्षण

वंशीधर नामक अनेक कवि हुए हैं। संभवतः बहुत सुंदर कवित्त रचनेवाले वंशीधर वह हैं, जिन्होंने दलपतिराय श्रीमाल के साथ मिलकर अलंकाररत्नाकर नामक भाषा भूषण की प्रसिद्ध टोका लिखो। यह अहमदाबाद निवासी मेदपाट ब्राह्मण थे और सं० १७९८ के आस पास वर्तमान थे। इनका विशेष विवरण पीछे ३३३ संख्या पर देखिए।

५२९।४१७

३३. ब्रजेश कवि, बुंदेलखंडी।

सर्वेक्षण

ब्रजेश का जन्म सं० १७६० और कविताकाल सं० १७९० है। यह ओरछे के रहने वाले थे।[१]

५३०।४४२

३४. ब्रजचंद कवि सं० १७६० में उ०। इनकी कविता अत्यन्त ललित है।

---

(१) बुंदेल वैभव, भाग २, पृष्ठ ४१८

सर्वेक्षण

ब्रजचंद का एक खंडित ग्रंथ 'आनंद सिंधु' मिला है। इसका प्रथम प्रसंग ही बचा है। यह करुणरस सम्बन्धी है। इसमें ईश्वर के विनय सम्बन्धी १०१ कवित्त-सवैये हैं। कवि के विषय में अभी कोई जानकारी प्राप्त नहीं।

५३१।४४३

३५. ब्रजनाथ कवि, सं० १७८० में उ०। इनका रागमाला काव्य महा सुंदर है।

सर्वेक्षण

श्री विश्वनाथ प्रसाद मिश्र[२] का अनुमान है कि संभवतः यही ब्रजनाथ घनानंद कवित्त के संकलयिता हैं और इन्होंने घनानंद की प्रशस्ति में ८ छंद लिखे, जिनमें से प्रथम दो प्रमाद से स्वयं घनानंद विरचित माने जाते रहे हैं।

खोज में भी एक ब्रजनाथ मिले हैं। इन्होंने सं० १७३२ में पिंगल[३] नामक ग्रंथ की रचना की थी। यह महीपति मिश्र के वंशज थे और कंपिला निवासी थे।

५३२।४४४

३६. ब्रजमोहन कवि। इनके शृंगार के चोखे कवित्त हैं।

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध में कोई सूचना सुलभ नहीं।

५३३।४४७

३७. ब्रज, लालागोकुल प्रसाद, कायस्थ बलरामपुर वाले, वि०। इनके बनाए हुए दिग्विय भूषण अष्टयाम, चित्र कलाधर, दूती दर्पण इत्यादि ग्रंथ मनोहर हैं।

सर्वेक्षण

लाला गोकुलप्रसाद ब्रज का जन्म चैत्र कृष्ण १, सं० १८७७ को बलरामपुर जिला गोंडा के एक श्रीवास्तव दूसरे कायस्थ परिवार में अखावरी वंश में हुआ था। कवि ने स्वयं निम्नांकित दोहे में अपना जन्म संवत् दिया है—

संवत रिषि[७] 'मुनि[७] नाग[८] ससि[१] संबत सोह स्वच्छ
नखत रेबती, लगन झख, गोकुल जन्म प्रतत्यच्छ

---

(१) खोज रि० १९१२।३० (२) घनआनंद ग्रंथावली, पृष्ठ ७० (३) खोज रि० १९०६।१३२, १९४७। ३७२

कवि ने ३० वर्ष की वयमें काव्यके प्रति अभिरुचि दिखलाई। इन्होंने रामप्रसाद भिनगा के प्रसिद्ध ठाकुर शिवसिंह, गदाधर प्रसाद एवं हिन्दी के प्रसिद्ध कवि बाबा दीनदयाल गिरि से काव्य-ग्रन्थ पढ़े थे। इन्होंने चित्र कलाधर में दीनदयाल गिरि को गुरु रूप में स्मरण भी किया है।

पाए जा पद प्रीति सों, कबित रीति सारंस
श्री गुरु दीनदयाल गिरि परम हंस अवतंस

व्रज जी सं० १९०५ में दिग्विजय सिंह के आश्रय में आए—

बुधि विद्या दुइ चंद्रमा, सोहै भादों मास
महाराज दिग्विजय सिंह बोलि, पठै निज पास

व्रज जी का देहावसान सं० १९६२, वैशाख शुक्ल ९, शनिवार को रात ढाई बजे हुआ। व्रज जी के बनाए हुए ग्रन्थों की तालिका निम्न है—

१—अष्टयाम, रचनाकाल वसंतपंचमी, सं० १९१९। इसमें दिग्विजय सिंह की दिनचर्या है। ग्रन्थ खोज में भी मिल चुका है।[1]

२—दिग्विजय भूषण, इस ग्रन्थ की रचना सं० १९१९ में हुई—

खंड[9] इंदु,[1] नव[9] चंद्र[1] प्रकास
विक्रम संवत सित मधु मास
ग्रन्थ दिग्विजै भूषन नाम
अलंकार वृज बिरचि ललाम

यह ग्रन्थ सं० १९२५ में लीथो में छपा था। प्रमाद से लोगों ने प्रकाशनकाल को ही रचना-काल समझ लिया है। यह व्रज जी का सर्वाधिक प्रसिद्ध और महत्वपूर्ण ग्रन्थ है। इसमें १९२ ग्रन्थ कवियों की भी रचनाएँ संकलित हैं।

३—दूती-दर्पण, यह श्लेष और मुद्रालंकार में वर्णित है और दिग्विजय भूषण में समाहित है।

४—नीति रत्नाकर, रचनाकाल सं० १९२१।

५—चित्र कलाधर, रचनाकाल, सं० १९२३। यह चित्र काव्य का ग्रन्थ है।

६—पंचदेव पंचक, रचनाकाल सं० १९२४।

७—नीति मार्तण्ड, रचनाकाल सं० १९२६। संभवतः यही ग्रन्थ नीति-प्रकाश भी है, जिसका उल्लेख विनोद में (२०९६) हुआ है।

८—वाम विनोद, रचनाकाल सं० १९२९ है। ग्रंथ खोज में मिल चुका है।[2]

खंड[9] उमै[2] ग्रह[9] चंद्रमा[1] संवत अस्विन मास
कथि दसमी सित सुभ घरी, वाम विनोद प्रकास

---

(१) खोज रि० १९२३।१२९, १९२६।१४३ ए (२) खोज रि० १९०१।९९ बी

९—सुतोपदेश, रचनाकाल सं० १९३० ।

१०—चौबीस अवतार, रचनाकाल सं० १९३१ । सम्भवतः यही ग्रन्थ नाम रत्नाकर भी है, जो खोज में (१९०९।९५ ए) मिल चुका है। रिपोर्ट में इसका रचनाकाल सं० १९०० दिया गया है, जो अशुद्ध है, क्योंकि व्रज का रचनाकाल सं० १९१९ से प्रारम्भ होता है ।

११—शोक विनाश, सं० १९३३ में कवि के ३ पुत्रों की मृत्यु हो गई। इसी वर्ष उसने यह दार्शनिक ग्रन्थ रचा ।

१२—शक्ति प्रभाकर, रचनाकाल सं० १९३६ । यह अध्यात्म रामायण का अनुवाद है।

१३—टिट्टिभि आख्यान
१४—सुहृदोपदेश
१५—मृगया मयंक
} रचनाकाल सं० १९३७

१६—दिग्विजय प्रकाश, सं० १९३९ में महाराज दिग्विजय सिंह की मृत्यु हुई। इसी वर्ष कवि ने इस ग्रन्थ में उक्त महाराज का जीवन चरित लिखा, जिसे सं० १९४६ में उनकी विधवा महारानी ने बलरामपुर के ही एक लीथो प्रेस से छपाया ।

१७—महारानी धर्मचन्द्रिका, यह मनुस्मृति का अनुवाद है। यह ग्रन्थ बलरामपुर की विधवा महारानी साहिबा के लिए सं० १९३९ के बाद किसी समय रचा गया ।

१८—एकादशी माहात्म्य, यह भी सं० १९३९ के बाद ही उक्त महारानी के लिए लिखा गया ।

व्रज जी के ये सभी ग्रन्थ बलरामपुर दरबार से सम्बन्धित हैं। इनके निम्नलिखित ३ ग्रन्थ अन्य दरबारों से सम्बन्धित हैं—

१—कृष्णदत्त भूषण, यह गोंडा नरेश कृष्णदत्त के लिए लिखा गया ।

२—अचल प्रकाश, यह मेहनौन के राजा अचल सिंह के लिए लिखा गया ।

३—महावीर प्रकाश, यह पयागपुर जिला बहराइच के भइया विजयराज सिंह के लिए लिखा गया ।

लाला गोकुलप्रसाद 'व्रज' पर किन्हीं रामनारायण मिश्र ने माधुरी[1] में विस्तृत लेख लिखा था। व्रज जी का चित्र भी छपा था। इसी लेख के आधार पर इनका विवरण प्रस्तुत किया गया है।

लाला गोकुलप्रसाद जी ने मदनगोपाल सुकुल, फतुहाबाद कृत अर्जुन विलास की पद्यबद्ध भूमिका भी लिखी थी।[2]

---

(१) माधुरी, जून १९२४ ई० (२) माधुरी, वर्ष ६, खंड २, अंक १, जून १९२८ ई०, पृष्ठ ६६१

५३४।४५३

३८. व्रजवासीदास कवि १। इन्होंने प्रबोध चंद्रोदय नाटक भाषा में किया है।

सर्वेक्षण

एक बार इस कवि का उल्लेख ३७५ संख्या पर दास ब्रजवासी के नाम से हो चुका है। यह वस्तुतः ब्रजविलास के प्रसिद्ध रचयिता ब्रजवासीदास हैं। इनका विस्तृत विवरण आगे संख्या ५३७ पर देखिए।

प्रबोध चंद्रोदय खोज में मिला चुका है। रिपोर्ट में बिना किसी आधार का संकेत किए हुए इसका रचनाकाल सं० १८१६ दिया गया है।[१]

५३५।४५५

३६. ब्रजदास कवि प्राचीन, सं० १७५५ में उ०। इनके कवित्त सुन्दर हैं। हजारे में इनका नाम है।

सर्वेक्षण

व्रजदास की कविता हजारे में थी, यह इस बात का प्रमाण है कि कवि या तो सं० १८७५ में उपस्थित था अथवा वह और पूर्ववर्ती है।

५३६।४६२

४०. व्रजलाल कवि सं० १७०२ में उ०। इनके कवित्त हजारे में हैं।

सर्वेक्षण

व्रजलाल के कवित्त हजारे में थे, अतः सं० १८७५ के पूर्व इनका अस्तित्व स्वतः सिद्ध है। इन्होंने सं० १८८१, सावन बदी ५, भृगुवार को छंद रत्नाकर[२] की रचना की थी। यह बेतिया के वंदीजन थे और काशी नरेश महाराज उदित नारायण सिंह के आश्रित थे।

५३७।४७८

४१. व्रजवासीदास २, वृंदावन निवासी, सं० १८१० में उ०। इन्होंने संवत् १८२७ में व्रजविलास नामक ग्रंथ बनाया।

सर्वेक्षण

व्रजवासीदास वल्लभ-सम्प्रदाय के वैष्णव थे। व्रजविलास में उन्होंने वल्लभाचार्य की वंदना की है।

---

(१) खोज रि० १९०४।८, १९०६।१४१, १९२३।६६ (२) खोज रि० १९०४।१६

बंदौं प्रथम कमलपद नीके
श्री वल्लभ आचारज जी के
—खोज रि० १९२०।२२ ए, १९४१।२६१

व्रजविलास की रचना सं० १८२७ में हुई थी—

संवत् सुभ पुराण सत जानौ
तापर और नछत्रन आनौ
माघ सु मास पच्छ उजियारा
तिथि पंचमी सुभग ससिवारा
श्री बसंत उत्सव दिन जानी
सकल विश्व मन आनंद दानी
—खोज रि० १९२०।२२ ए, १९४१।२६१

व्रजविलास के अंत में छंद संख्या दे दी गई है ।

सिगरे दोहा आठ सौ और नवासी आहिं
हैं इतने ही सोरठा, व्रज विलास के माहिं
दस सहस्र षट सों अधिक चौपाई बिस्तार
छंद एक शत षट, अधिक मधुर मनोहर चारु
सब कौं नुष्टुप छंद करि दस सहस्र परिमान
खंडित होन न पावई लिखियो जानि सुजान
—खोज रि० १९२०।२२ ए, १९४१।२६१

व्रजविलास में छंद क्रम यह है—

द्वादस चौपाई प्रति दोहा
तँह प्रति एक सोरठा सोहा
कहूँ कहूँ सुभ छंद सोहाए
भाषा सरल, न अर्थ दुराए

'व्रजविलास' सूरसागर के आधार पर है। दोहा-चौपाइयों में रचित यह काव्य हिन्दी के त्यन्त जनप्रिय काव्यों में से है। अनेक बार यह छप चुका है। खोज में भी इसकी अनेक पूर्ण प्रतियाँ मिली हैं।[1] इस ग्रंथ के विभिन्न प्रसंग भी अलग-अलग ग्रंथ रूप में मिले हैं, यथा माखनचोरी-लीला,[2] मानचरित लीला,[3] अघासुरबध लीला,[4] पुरातन कथा[5] आदि ।

सरोज में दिया हुआ सं० १८१० कवि का रचनाकाल ही है, क्योंकि इसके ६ वर्ष बाद ही सं० १८१६ में इन्होंने 'प्रबोध चंद्रोदय' नाटक का अनुवाद किया है ।

---

(१) खोज रि० १९०१।३६, १९२०।२० ए बी, १९२६।४७ ए बी सी डी, १९४१।२६१ (२) खोज रि० १९२६।५७ ई, (३) खोज रि० १९२६।५७ जी, (४) खोज रि० १९२६।५७ एफ (५) खोज रि० १९३५।१०६

विनोद के अनुसार ब्रजवासीदास माथुर ब्राह्मण थे। यह वल्लभाचार्य के वंशज मोहन गोसाईं के शिष्य थे। इनके गुरु का पता व्रजविलास से लगता है। ब्रजवासीदास का उल्लेख सरोज में ३७५ और ५३४ संख्याओं पर दो बार और हो चुका है।

५३८।४८१

४२. ब्रजराज कवि बुँदेलखंडी, सं० १७७५ में उ०। इनके कवित्त बहुत सुंदर हैं।

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध में कोई सूचना सुलभ नहीं।

५३९।४९२

४३. ब्रजपति कवि, सं० १६८० में उ०। इनके पद रागसागरोद्भव में हैं।

सर्वेक्षण

खोज में एक ब्रजपति भट्ट का ग्रंथ 'रंग भाव माधुरी'[1] मिला है। इनके पिता का नाम हरिदेव भट्ट था। रिपोर्ट में इनका जन्मकाल सं० १६६० और रचनाकाल सं० १६८० दिया गया है, जिसका मूल आधार सरोज ही है। स्वयं ग्रंथ में न तो रचनाकाल दिया गया है और न प्रतिलिपि काल ही। यह नव रस, नायिकाभेद, नखशिख, अलंकार एवं ऋतु-वर्णन का ग्रंथ है। ग्रंथ के चार छंद उद्धृत हैं, पर किसी में कवि छाप नहीं है। यह ग्रंथ कवित्त सवैयों का है। प्रवृत्ति से यह ब्रजपति शृंगारी और रीतिकालीन प्रकट होते हैं। यद्यपि रिपोर्ट में यह सरोज वाले ब्रजपति से भिन्न नहीं समझे गए हैं, पर सरोज के ब्रजपति इनसे भिन्न जान पड़ते हैं, क्योंकि सरोज में इनका एक चीरहरण सम्बन्धी पद उद्धृत है, जिससे यह भक्त ज्ञात होते हैं। भक्त कवियों ने भी कवित्त सवैये लिखे हैं, पर सामान्यतया नायिका भेद के ग्रंथ नहीं लिखे हैं। जब तक कोई निचत आधार न मिल जाय, इन कवियों को एक कर देना समीचीन नहीं।

५४०।४१८

४४. विजयाभिनन्दन बुंदेलखंडी, सं० १७४० में उ०। यह राजा छत्रसाल बुंदेला पन्नाधिपति के यहाँ थे।

सर्वेक्षण

छत्रसाल का शासनकाल सं० १७२२-८८ है। यही विजयाभिनन्दन का भी काव्यकाल होना चाहिए। अतः सरोज में दिया सं० १७४० ठीक है और कवि का उपस्थितिकाल है। सरोज में

---

(१) खोज रि० १९१२।२३

इनके दो कवित्त उद्धृत हैं, जिनसे इनका छत्रसाल का प्रशस्तिगायक कवि होना सिद्ध है।

१—एक छत्र छत्ता छितिपाल होइ छत्रिन में
वहै छवि छाजी त्याग तेग के अजूबा में

इस चरण में आए 'छत्ता' का अर्थ है छत्रसाल।

२—रचो करतार अवतार भू को भरतार
मही में महेवा वाल तेग त्याग आँकरे

इस चरण का उत्तरार्द्ध अशुद्ध है। इसका शुद्ध रूप यह है—

महो में महेवा वाल तेग त्याग आँकरे

महेवा छत्रसाल की राजधानी थी। भूषण ने भी छत्रसाल को 'मरद महेवा वाल' कहा है।[१]

५४१।४२१

४५. वंशरूप कवि बनारसी, सं० १६०१ में उ०। यह महाराज बनारस के प्रशंसक सत्कवि थे।

सर्वेक्षण

सरोज में उद्धृत वंशरूप के चार कवित्तों में से प्रथम में काशिराज की बाहों की प्रशंसा है—

पुन्य अवगाहैं, ये भुवन पर दाहैं, बाहैं
साहन निबाहैं, कासिराज महाराज की

यह कौन काशिराज हैं, स्पष्ट उल्लेख नहीं हुआ है। विनोद (१६८८) में सरोज के अनुसार इनका जन्मकाल सं० १८७५ और रचनाकाल सं० १६०१ दिया गया है।

५४२।४२२

४६. वंश गोपाल कवि वंदीजन।

सर्वेक्षण

सरोज में इनका एक छंद उद्धृत है जिसमें वंदीजन की मनोवृत्ति स्पष्ट झलकती है—

सान करें बड़ी साहिबी की फिरि दान में देत हैं एक अधेला

इस कवि का उल्लेख सरोज में सख्या ५८५ पर पुनः हुआ है।

५४३।४२३

४७. बोधा कवि, सं० १८०४ में उ०। इनके कवित्त महा सुन्दर हैं।

---

(१) भूषण, पृष्ठ २३६, छंद ४२०

सर्वेक्षण

हिन्दी काव्य जगत् में दो बोधा हुए हैं, एक फिरोज़ाबादी और दूसरे बुंदेलखंडी। इनमें बुंदेलखंडी बोधा ही प्रसिद्ध हैं। विनोद (८८७) में दोनों बोधाओं को मिला दिया गया है।

बुंदेलखंडी बोधा यमुना तट स्थित प्रसिद्ध राजापुर, जिला बाँदा में उत्पन्न हुए थे। यह सरयूपारीण ब्राह्मण थे। लड़कपन ही में यह पन्ना चले गए। इनका नाम बुद्धिसेन था। पन्नानरेश महाराज खेत सिंह ने इन्हें प्यार से बुद्धिसेन से बोधा बना दिया। दरबार की यवनी नर्तकी सुभान पर यह आसक्त हो गए थे। फलतः साल भर के लिए देश निकाला हो गया। इस निर्वासनकाल में इन्होंने 'विरह वारीश' अथवा 'माधवानल कामकंदला' की रचना की। जब लौटकर आए, तब दरबार में 'विरह वारीश' पढ़कर सुनाया। राजा खेत सिंह ने प्रसन्न होकर कहा, जो कहो दें। बोधा ने कहा, 'सुभान अल्ला'। सुभान इन्हें मिल गई। 'विरह वारीश' नौ खंडों में है। इसमें दोहा-चौपाई एवं कतिपय अन्य छंद भी प्रयुक्त हुए हैं। बोधा का दूसरा ग्रन्थ है 'विरही सुभान दंपति विलास' अथवा 'इश्कनामा।'[१]

प्रो० पं० विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने 'बोधा ग्रन्थावली' संपादित कर ली है। यह प्रकाशन की प्रतीक्षा में है। इश्कनामा भारत जीवन प्रेस, काशी से पहले प्रकाशित हो चुका है। यह बोधा के फुटकर कवित्त सवैयों का संग्रह है।

सरोज में दिया सं० १८०४ ठीक है और कवि का रचनाकाल है। पन्नानरेश खेत सिंह का शासनकाल सं० १८०६-१५ है। सं० १८१५ में भाई द्वारा इनकी हत्या कर दी गई थी। इसी समय बोधा इनके दरबारी कवि रहे और इसी बीच 'विरह वारीश' रचा।

५४४।४२४

४८. बोध कवि बुंदेलखंडी, सं० १८५५ में उ०। ऐज़न। इनके कवित्त महा सुन्दर हैं।

सर्वेक्षण

ग्रियर्सन (५००) में इन बोध के प्रसिद्ध बोधा होने की संभावना की गई है। यह संभावना ठीक प्रतीत होती है। बोधा का सं० १८५५ तक जीवित रहना असंभव नहीं।

५४५।४४६

४९. वलभद्र कायस्थ २, पन्ना निवासी, सं० १९०१ में उ०। यह राजा नरपति सिंह बुंदेला पन्ना महिपाल के यहाँ थे। कविता में निपुण थे। इनका काव्य सरस है।

---

(१) बोधा का वृत्त, ना० प्र० पत्रिका, वर्ष ५२, अंक १, सं० २००४

सर्वेक्षण

पन्ना के राजा हरवंश राय सं० १९०६ में निः संतान मरे। इससे इनके भाई नृपति सिंह राज्य के उत्तराधिकारी हुए। इन्होंने सं० १९२७ तक राज्य किया।[१] अतः इनके दरबारी कवि बलभद्र कायस्थ का भी समय यही होना चाहिए। ऐसी स्थिति में सरोज में दिया सं० १९०१ कवि का रचनाकाल ही हो सकता है। यह जन्मकाल नहीं जैसा कि ग्रियर्सन (५११) और विनोद (२२२३) में स्वीकार किया गया है।

सरोज में बलभद्र रचित नृपति सिंह की प्रशंसा का एक कवित्त उद्धृत है, जिससे सिद्ध है कि यह उक्त राजा के दरबारी कवि थे।

परना पुरंदर महीपति नृपति सिंह
सुजस तिहारो कलानिधि ते सरस है

ओरछा नरेश वीर सिंह देव के आश्रय में रहने वाले, 'अबुल फजल विजय' नामक काव्यग्रन्थ रचने वाले बलभद्र कायस्थ नाम के एक कवि बहुत पहले और हो चुके हैं।[२]

५४६।५४९

५०. विश्वनाथ कवि १, सं० १९०१ में उ०। यह लखनऊ निवासियों के चलन-व्यवहार पर बहुत कवित्त बनाए हैं।

सर्वेक्षण

खोज में एक विश्वनाथ भाट मिले हैं, जो बिसवां जिला सीतापुर के रहने वाले थे। इनके दो ग्रन्थ मिले हैं—

१—अलंकारादर्श, १९१२।१९५। यह ग्रन्थ जालिम सिंह गौर के लिए सं० १८७२, क्वार सुदी १०, बुधावार को बना—

विवि[२] सुर[७] वसु[८] अरु इन्दु[१] जहँ संवतसर बुधवार
क्वार सुदी दसमी विजय भयो ग्रन्थ अवतार २
अलंकार आदरस यह नाम ग्रन्थ को जानि
अलंकार मूरति सबै यामें भासत आनि ३
जालिम सिंह, नरेश बहु दानो बुद्धि निकेत
अलंकार को ग्रन्थ यह कीन्हों है सह हेत ४

इस ग्रन्थ में कुल २९९ छंद एवं ११० पन्ने हैं। इसमें १०१ अलंकारों का निरूपण हुआ है।

अब के अरु प्राचीन के तिनके मतहिं बिचारि
अलंकार सत एक है लच्छन ते निरधारि २९९

२—अलंकार दर्पण, १९१२।१९५ बी। यह ग्रन्थ भी सं० १८७२, क्वार सुदी १० बुधवार को रचा गया—

उभय[२] सस[७] वसु[८] इन्दु[१] जहं संवतसर बुधवार
क्वार शुक्ल दसमी विजय भयो ग्रन्थ अवतार २

---

(१) बुंदेलखंड का संक्षिप्त इतिहास, अध्याय ३२, पैरा १९,२० (२) बुंदेल वैभव, भाग २, पृष्ठ २८०

इस ग्रन्थ का नाम अलंकार दर्पण है—।

अलंकार दर्पण धरचो नाम ग्रन्थ को आनि
अलंकार मूरति सबै जामो भासित आनि ३

इस ग्रन्थ का दूसरा नाम 'शिवबख्श प्रकाशक' भी है—

श्री स्यो बक्स प्रकासक नाम दूसरो जानि
कवि कोविद सुख पाइहैं जो सुभ उत्तम बानि ४

यह ग्रन्थ देव सिंह के पुत्र शिवबख्श सिंह, कटेसर जिला खीरी के लिए बना ।

देव सिंह नंदन बड़ो दानी बुद्धि निकेत
अलंकार को ग्रन्थ यह कीन्हो है तेहि हेत ५

इस ग्रन्थ में केवल १७ पन्ने हैं और छंद भी ७५ ही हैं। ग्रन्थांत में पुका नहीं है। मुझे यह ग्रन्थ खंडित प्रतीत होता है।

अलंकार एवं अलंकारादर्श दर्पण दोनों संभवत: एक ही ग्रन्थ हैं क्योंकि दोनों की रचना तिथि एक ही है। लगता है कि इस कवि ने एक ही ग्रन्थ से दो-दो आश्रयदाताओं को तुष्ट किया। हो सकता है दोनों में थोड़ा हेर-फेर भी हो। जो कवि फरेब कर सकता हो, संभवत: वही लखनऊ के लोगों के चाल व्यवहार में छिद्रान्वेषण भी कर सकता है। यदि ऐसा है तो सरोज-दत्त सं० १६०१ कवि का उपस्थितिकाल है।

५४७।४५०

५१. विश्वनाथ २, वंदीजन, टिकई जिले रायबरेली के, वि०। यह सामान्य कवि हैं।

सर्वेक्षण

विश्वनाथ वंदीजन टिकई जिले रायबरेली के रहने वाले थे। इन्होंने सरोजकार के पिता ठाकुर रनजीत सिंह की प्रशस्ति में छंद रचना की है। ऐसा एक छंद सरोज में उद्धृत है—

कहाँ लौं सराहो, तेरे भुज की उमाही बीर
रनजीत सिंह तेरे बादशाही नक्से।

सरोजकार ने महानंद वाजपेयी कृत शिवपुराण भाषा को स्वरचित पद्यबद्ध भूमिका सहित प्रकाशित कराया था। इस भूमिका में उन्होंने अपना और अपने पिता का परिचय दिया है। यहीं उन्होंने लिखा है कि कवि लोग इनके पिता की प्रशंसा में छंद रचना किया करते थे। ऐसा कहकर वे सरोज में उद्धृत विश्वनाथ कवि का यही छंद उद्धृत करते हैं।[1] बहुत सम्भव है कि सरोजकार इस कवि से परिचित भी रहा हो।

५४८।४६८

५२. विश्वनाथ ३, महाराज विश्वनाथ सिंह बघेले, बांधव नरेश, सं० १८६१ में उ०।

---

(१) खोज रि० १६२३।२५२, पृ० ६६१

यह महाराज कविकोविदों व ब्राह्मणों के कल्पतरु और कविता क्या, सर्वविद्या-निधान थे। इन्होंने सर्व संग्रह नामक ग्रन्थ संस्कृत का बहुत ही सुन्दर बनाया है, और कबीर के बीजक नाम ग्रन्थ, विनय पत्रिका का तिलक और रामचंद्र की सवारी, ये बहुत सुन्दर ग्रन्थ बनाए हैं। इस रियासत में सदैव कविकोविदों का मान रहा है। महाराज राम सिंह ने अकबर के समय में एक दोहे पर हरिनाथ कवि को एक लक्ष मुद्राएँ दी थीं।

सर्वेक्षण

रीवां नरेश महाराज विश्वनाथ सिंह महाराज जयसिंह के पुत्र थे। जयसिंह ने बड़ी लम्बी आयु पाई थी। उन्होंने अपने जीवनकाल ही में इन्हें सं० १८९२ में रीवां की गद्दी दे दी थी। विश्वनाथ सिंह का जन्म चैत्र शुक्ल १४, सं० १८४३ को हुआ था[1]। विश्वनाथ सिंह जी ने सं० १८९२ से सं० १९११ तक राज्य किया। इनकी मृत्यु कातिक कृष्ण ७ भृगुवार सं० १९११ को हुई।[2] रीवां नरेश प्रसिद्ध रघुराज सिंह इन्हीं के पुत्र थे। बख्शी समन सिंह, शिवनाथ, गंगाप्रसाद, अजवेश आदि कवि इनके आश्रय में थे।

विनोद (१७८४।१) में (विश्वनाथ सिंह जू देव के कुल ३१ ग्रन्थों का नामोल्लेख है। शुक्ल जी के यहाँ यह संख्या ३२ है। डॉ० भगवती प्रसाद सिंह ने विश्वनाथ सिंह जी के ३८ ग्रंथों की सूची दो है।[3] इस सूची में आगे दी हुई सूची की अपेक्षा अनेक ग्रंथ अधिक हैं। पूरी छानबीन करने पर यह संख्या घट भी सकती है। इन्होंने टीकाएँ बहुत सी लिखी हैं। गद्य रचनाएँ भी पर्याप्त की हैं। इनके लिखे ग्रन्थों की सूची यह है।

टीकाए

अ. कबीर के ग्रंथों की

१—आदि मंगल, १९०९।३२९ ए। यह कबीर के बीजक की टीका है। इस टीका का नाम पाखंड खंडिनी (१९०६।२४९ सी) है। यह ग्रंथ विनोद एवं शुक्ल जी के इतिहास में तीन नामों से तीन बार दिया गया है—क. कबीर के बीजक की टीका ख. पाखंड खंडिनी ग. आदि मंगल।

२—बसन्त, १९०९।३२९ बी

३—चौतीसी, १९०९।३२९ सी ४—चौरासी रमैनी, १९०९।३२९ डी

५—कहरा, १९०९।३२९ ई ६—सवद, १९०९।३२९ जी ७—साखी, १९०९।३२९ एच

ग्रंथ २ से ६ तक प्रथम ग्रंथके विभिन्न अंशहैं।

ब. अन्य कवियों के ग्रंथों की

१—विनय पत्रि

---

(१) राम भक्ति में रसिक संप्रदाय, पृष्ठ ४३१ (२) वही (३) वही, पृष्ठ ४३५

२—गीत रघुनन्दन प्रामाणिक टीका, १९००।४४। जमुनादास एक रामोपासक वैष्णव साधु थे। गीत गोविन्द के ढंग पर इन्होंने गीत रघुनन्दन की रचना की थी। यह इसी की टीका है। विनोद और शुक्ल जी के इतिहास में यही ग्रंथ दो-दो बार लिखा गया है और वह भी अशुद्ध नाम से। यह अशुद्धि खोज रिपोर्ट के रोमन लिपि में होने के कारण है। पहली बार इसे 'गीता रघुनन्दन-शतिका' कहा गया है। गीता और शतिका के स्थानों पर क्रमशः गीत और सटीक होना चाहिए। दूसरी बार इसे 'गीता रघुनन्दन प्रामाणिक' कहा गया है। होना चाहिए 'गीतरघुनन्दन प्रामाणिक टीका सहित'। यह ग्रन्थ सं० १९०१ में रचा गया।

ख. अपने ही सटीक ग्रन्थ

१—उत्तम नीतिचंद्रिका, १९०६। २४९ ए, डी। यह ध्रुवाष्टक नामक नीति ग्रन्थ की वस्तृत टीका है। ध्रुवाष्टक में आठ कवित्त हैं।

२—वेदांत पंचक सटीक, १९०४।८४। इस ग्रन्थ को भी विनोद और लजी के इतिहास वेदांत पंचक शतिका' कहा गया है।

३—शांतशतक की मुक्तिप्रदीपिका टीका, १९०९।३२९ आई। इस ग्रन्थ में अध्यात्म सम्बन्धी ३२ छंद हैं, जिनकी यह टीका है। विनोद एवं शुक्ल जी के इतिहास में यह 'ग्रन्थ-शांति शतक' नाम से आया है।

४—धनुर्विद्या मूल और टीका, १९००।४७,१९०१।२०

काव्य-ग्रन्थ

१—अष्टयाम आह्निक, १९००।४३। सीताराम की दिनचर्या। रचनाकाल सं १८८७।

२—उत्तम काव्यप्रकाश, १९०४।१४५। रचना काल सं० १९०४।

३—आनन्द रामायण, १९०१।६, १९०९।३२१ एफ। यह ग्रन्थ रामायण और आनन्द रामायण नाम से विनोद और शुक्ल जी के इतिहास में दो-दो बार उल्लिखित है।

४—सर्वसंग्रह, सरोज के अनुसार यह संस्कृत ग्रंथ है।

५—रामचन्द्र की सवारी।

६—भजन।

७—पदार्थ।

८—परम तत्व प्रकाश, १९००।४८, १९२०।२०५ ए। दोहा, चौपाई, सोरठा आदि छंदों में भक्ति निरूपण।

९—गीतावली पूर्वार्द्ध, १९०४।११४।

१०—अबाध नीति, शुक्ल जी ने इसका नाम अबोध नीति दिया है।

११—राग सागर, १९२०।२०५ बी।

गद्य ग्रन्थ

१—परम धर्म निर्णय, १९०१।१६,१२,१८। ग्रन्थ चार भागों में है। केवल तीन भाग खोज में मिले हैं। इसमें प्राचीन आचार्यों के अनुसार वैष्णव धर्म की व्याख्या है।

२—विश्व भोजन प्रकाश, १९०९।३२९ जे। यह पाकशास्त्र का ग्रन्थ है।

नाटक

१—आनन्द रघुनन्दन नाटक—हिन्दी साहित्य के इतिहास में महाराज विश्वनाथ सिंह अपने इस नाटक के लिए सदा स्मरण किए जायँगे। यह हिन्दी का पहला नाटक है। इसमें ब्रजभाषा का प्रयोग हुआ हैं। पद्य की भरमार है। इसका प्रकाशन नवल किशोर प्रेस, लखनऊ से बहुत पहले हुआ था। सभा भी इसके एक सुसंपादित संस्करण की व्यवस्था में है।

५४९।४८५

५३. विश्वनाथ अताई ४, बघेलखंड निवासी, सं० १७८४ में उ०। इनके कवित्त और दोहे सत्कवि गिराविलास नामक ग्रन्थ में हैं।

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध में कोई सूचना सुलभ नहीं है। इनकी छाप केवल विश्वनाथ है। सत्कवि-गिराविलास में इनकी रचना है, अतः यह सं० १८०३ के पूर्ववर्ती हैं।

५५०।४८०

५४. विश्वनाथ कवि प्राचीन ५, सं० १६५५ में उ०।

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध में कोई सूचना सुलभ नहीं।

५५१।४१४

५५. बिहारी लाल चौबे, व्रजवासी, सं० १६०२ में उ०। यह कवि जयसिंह कछवाहे महाराजा आमेर के यहाँ थे। जयपुर की तवारीख देखने से प्रकट है कि महाराजा मान सिंह से, जो सं० १६०३ में विद्यमान थे, सं० १८७६ तक तीन जयसिंह हो गए हैं पर हमको निश्चय है कि यह कवि मान सिंह के पुत्र जयसिंह के पास थे जो महा गुणग्राहक थे। दूसरे सवाई जयसिंह इन जय सिंह के प्रपौत्र संवत् १७५५ में थे। यह बात प्रकट है कि जब महाराजा जयसिंह किसी एक थोड़ी अवस्था वाली रानी पर मोहित होकर रात दिन राजमंदिर में रहने लगे, राज्य के संपूर्ण काम काज बन्द हो गए, तब बिहारीलाल ने यह दोहा बनाकर राजा के पास तक किसी उपाय से पहुँचवाया।

नहि पराग, नहिं मधुर मधु, नहिं विकास यहि काल
अली कली ही सो बिंध्यो, आगे कौन हवाल,

इस दोहे पर राजा ने अत्यन्त प्रसन्न होकर १०० मोहरें इनाम देकर कहा, इसी प्रकार के और दोहे बनाओ। बिहारीलाल ने ७०० दोहे बनाए और ७०० अशर्फियाँ इनाम में पाईं। यह सतसई ग्रंथ अद्वितीय है। बहुत कवियों ने इसके ढंग पर सतसइया बनाकर अपनी कविता का रंग

जमाना चाहा, पर किसी कवि को सुर्ख रूई नहीं प्राप्त हुई। यह ग्रन्थ ऐसा अद्भुत है कि हमने १८ तिलक तक इसके देखे हैं और आज तक तृप्ति नहीं हुई। लोग कहते हैं कि अक्षर कामधेनु होते हैं, सो वास्तव में इसी ग्रन्थ के अक्षर कामधेनु दिखाई देते हैं। सब तिलकों में सूरति मिश्र, आगरेवाले का तिलक विचित्र है और सब सतसइयों में विक्रम सतसई और चन्दन सतसई लगभग इसके टक्कर की हैं।

सर्वेक्षण

बिहारी माथुर ब्राह्मण थे। सं० १६५२ में इनका जन्म ग्वालियर के निकट बसुवा गोविन्दपुर नामक गाँव में हुआ। इनकी बाल्यावस्था बुन्देलखण्ड में बीती और तरुणाई में ये अपनी ससुराल मथुरा में रहे। यह जयपुर नरेश मिरज़ा राजा जयसिंह (शासनकाल सं० १६७८-१७२४) के दरबार में थे। बिहारी सतसई के निर्माण की जो कथा सरोजकार ने दी है, वह परम प्रसिद्ध एवं सर्वमान्य है। रत्नाकर जी के अनुसार सतसई की समाप्ति सं० १७०४ में हुई। इसमें कुल ७१३ दोहे हैं, जिनमें कुछ सोरठे भी हैं। बिहारी सतसई की पहली टीका सं० १७१९ में हुई। लोगों ने इसी को सतसई का रचनाकाल समझ रक्खा है। बिहारी की मृत्यु सं० १७२१ में हुई। सरोज में दिया सं० १६०२ अशुद्ध है।

५५२।४६०

(५६) बिहारी कवि, प्राचीन २ सं० १७३८ में उ०। इनके हज़ारे में महा सुन्दर कवित्त हैं।

सर्वेक्षण

हज़ारे में बिहारी के कवित्त थे। अतः सं० १८७५ के पूर्व इनका अस्तित्व स्वतः सिद्ध है।

५५३।४७२

(५७) बिहारी कवि ३, बुदेलखण्डी, सं० १७८६ में उ०। इन्होंने सरस कविता की हैं।

सर्वेक्षण

बिहारी बुन्देलखण्डी का एक कवित्त सरोज में उद्धृत है। इसमें रामचन्द्र के घोड़ों का वर्णन है।

मन ते सरिस चलिबे की चपलाई अंग
राजत कुरंग ऐसे बाजी रघुवीर के

प्रतीत होता है कि कवि राम भक्त है। खोज में बिहारी का एक ग्रन्थ 'नखशिख रामचन्द्र को'[1] मिला है। इसकी रचना सं० १८२० के आस-पास हुई। इसमें ५० कवित हैं। यह रामभक्त बिहारी

(१) खोज रि० १९१२।२५

सरोज के ही बिहारी जान पड़ते हैं। विनोद में (६१६) इनका जन्मकाल सं० १७६६ और रचना-काल सं० १८२० दिया गया है। विनोद में ८४७ संख्या पर एक और बिहारी हैं, जो ओरछा बुन्देलखण्ड के रहने वाले कायस्थ हैं। सरोज के आधार पर इनका जन्मकाल सं० १७८६ और रचनाकाल सं० १८१० दिया गया है। इनके ग्रन्थ का नाम है 'दम्पति ध्यान मंजरी'। सम्भवतः इस ग्रन्थ में दम्पति सीता और राम का ध्यान वर्णित है। अतः यह कवि भी सरोज के अभीष्ट बिहारी हैं। विनोद में (८६६) एक और बुन्देलखण्डी बिहारी लाल हैं, जिन्होंने सं० १८१५ में हरदौल चरित्र[१] की रचना की। सम्भवतः रामभक्त बुन्देलखण्डी बिहारी ही ने एक बुन्देलखण्डी वीर के प्रति अपनी श्रद्धा-भक्ति प्रकट करने के लिए यह ग्रन्थ रचा। अस्तु, बिहारी ओरछा के रहने वाले कायस्थ हैं, जो सं० १७८६ के आस-पास उपस्थित थे। यह रामभक्त थे। इन्होंने रामचन्द्र जी को नखशिख, दम्पति ध्यान मंजरी एवं हरदौल चरित्र नामक ग्रन्थ लिखे। इनमें से अन्तिम का रचनाकाल सं० १८१५ है।

५५४।४८६

(५८) बिहारीदास कवि ४, ब्रजवासी, सं० १६७० में उ०। इनके पद रागसागरोद्भव राग कल्पद्रुम में हैं।

सर्वेक्षण

बिहारीदास जी व्रजवासी थे, टट्टी सम्प्रदाय के वैष्णव थे तथा स्वामी हरिदास के शिष्य विट्ठल विपुल के यह शिष्य थे। इनकी रचना 'श्री बिहारिनिदास जी की बानी'[२] नाम से मिली है। एक हस्तलिखित प्रति की प्रारम्भिक पंक्तियों से इनके सम्प्रदाय आदि की सूचना मिलती है।

अथ श्री स्वामी हरिदास जी के शिष्य श्री वीठलविपुल-जिनकी कृपा कौ समुद्र श्री बिहारिनिदास जी, तिनकी बानी प्रगट, जासौं श्री स्वामी को धर्म जान्यो जाइ, सो लिख्यते।

—खोज रि० १६०५।६१

रिपोर्ट[३] के अनुसार यह २५ वर्ष की ही वय में भक्त हो गए थे और इन्होंने ब्रह्मचर्य-जीवन बिताया था।

बिहारीलाल के पिता श्री मित्रसेन दिल्ली के बादशाह के उच्च पदाधिकारियों में थे। स्वामी हरिदास के आशीर्वाद से मित्रसेन जी ने आपको पाया था। हरिदास वंशानुचरित्र के अनुसार बिहारीलाल जी का जन्म सं० १५५० में श्रावण शुक्ल ५ को हुआ था। इन्होंने ६१ वर्ष श्री वृन्दावन में निवास किया। इनकी मृत्यु ६८ वर्ष की वय में सं० १६५६ में मार्गशीर्ष शुक्ल १३ को प्रातःकाल सूर्योदय के समय हुई। मित्रसेन की मृत्यु के पश्चात् यह कुछ दिनों तक राजसेवा में रहे। फिर विरक्त हो हरिदास जी के शरण आ वीठल विपुल के शिष्य हो गए।[४] हरिदास जी के पश्चात् आप ही गद्दी के अधिकारी हुए थे। सम्प्रदाय में यह 'गुरुदेव' के नाम से अभिहित किए जाते हैं। आपने अपनी वाणी में हरिदास जी के सिद्धान्तों का बड़ी अनन्यता एवं स्पष्टता से विवेचन किया है।[५] सरोज में दिया संवत् १६७० अशुद्ध है। कविता में इनकी छाप बिहारीदास और बिहारिनिदास दोनों है।

(१) खोज रि० १६०१।६२ (२) खोज रि० १६०५।६१, १६१२।२७ (३) खोज रि० १६१२।२७ (४) हरिदास वंशानुचरित्र, पृष्ठ ३७, ६६ (५) सर्वेश्वर, वर्ष ४, अङ्क १-४, चैत्र सं० २०१३, पृष्ठ २४०२

५५५।४१५

(५९) बालकृष्ण त्रिपाठी १, बलभद्र जी के पुत्र और काशीनाथ कवि के भाई, सं १७८८ में उ० । इन्होंने रसचन्द्रिका नामक पिङ्गल बहुत सुन्दर बनाया है ।

सर्वेक्षण

यह बालकृष्ण त्रिपाठी बलभद्र त्रिपाठी के पुत्र और काशीनाथ त्रिपाठी[1] के भाई थे। इनका रचा हुआ रसचन्द्रिका[2] नामक ग्रन्थ खोज में मिल चुका है। इनका रचनाकाल सं० १७८८ ही माना-जाना चाहिये, जब तक इसके विरुद्ध कोई निश्चित प्रमाण न मिल जाय। प्राप्त प्रति से रचनाकाल पर कोई प्रकाश नहीं पड़ता। बालकृष्ण त्रिपाठी न तो नखशिख के रचयिता प्रसिद्ध बलभद्र मिश्र के पुत्र थे, न महाकवि केशव के भतीजे थे, न काशीनाथ मिश्र के भाई थे और न इनका समय ही सं० १६५७ था, और न यह त्रिपाठी के स्थान पर मिश्र ही थे। ग्रियर्सन (३८), विनोद (२११) और बुन्देल वैभव[3] में इस कवि की यही छीछा-लेदर बड़े इत्मीनान से की गई है।

५५६।४१६

(६०) बालकृष्ण कवि, २। इनकी कविता सामान्य है।

सर्वेक्षण

खोज में निम्नलिखित पाँच बालकृष्ण प्राप्त हुए हैं, पर इनमें से किसी के साथ सरोज के इस कवि का अभेद स्थापित करना सम्भव नहीं—

१. बालकृष्ण, वोरटा के रहने वाले, सं० १७०५ में रागरूपमाल[4] नामक ग्रन्थ बनाया।

२. बालकृष्ण, सं० १८०४ के लगभग वर्तमान, भागवत एकादश स्कन्ध[5] के रचयिता।

३. बालकृष्ण भट्ट, गोकुल निवासी, द्रविड़ ब्राह्मण। वैद्यमार्तंड[6] के रचयिता।

४. बालकृष्णदास, गो० गिरिधरलाल बनारसी के शिष्य। वल्लभ सम्प्रदाय के अनुयायी सं० १८८५ के लगभग वर्तमान। गिरिधरलाल का समय सं० १८८५-१९०० है। बालकृष्णदास ने अपने गुरु की आज्ञा से सूरदास के दृष्टिकूट की टीका[7] गुजरात के भाम नगर में की।

---

(१) देखिए, यही ग्रन्थ कवि संख्या ६५ (२) खोज रि० १९४१।१५७ (३) बुन्देल वैभव, भाग १, पृष्ठ २०७, ८ (४) खोज रि० १९३२।१९ (५) खोज रि० १९२९।२६, १९३१।१० (६) खोज रि० १९१२।११ (७) खोज रि० १९००।६

५. बालकृष्ण, इनका सुदामा चरित[1] नामक ग्रन्थ प्राप्त हुआ है। अनुमान से यह सं० १८२० के लगभग उपस्थित थे। कहा गया है कि इस ग्रन्थ में ८८ अत्यन्त प्रौढ़ छन्द हैं।

५५७।४२५

(६१) बोधीराम कवि।

सर्वेक्षण

कवि के सम्बन्ध में कोई सूचना सुलभ नहीं। सरोज में एक शृंगारी कवित्त है, जिसमें छाप बोधी है।

५५८।४२६

(६२) बुद्धिसेन कवि।

सर्वेक्षण

बुद्धिसेन नाम प्रसिद्ध बुन्देलखण्डी बोधा का था। यही नाम फिरोजाबादी बोधा का भी था। सरोज के यह बुद्धिसेन प्रसिद्ध बोधा बुन्देलखण्डी नहीं हैं। यह या तो फिरोजाबादी बुद्धिसेन हैं या और कोई। सरोज में उद्धृत कवित्त में कवि छाप बुद्धिसेन है। यदि यह फिरोजबादी बुद्धिसेन हैं, तो यह १९ वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में हुए। विनोद (८८७) के अनुसार यह सं० १८८७ में वर्तमान थे। इनका एक पत्र सं० १८४५ का लिखा हुआ मिला है। खोज में इनके निम्नांकित ग्रन्थ मिले हैं।

१—बाग विलास या बाग वर्णन १९३२।३१ ए; २—बारह मासी, १९३२।३१ बी; ३—फूलमाला १९३२।३१ सी; ४—पक्षी मंजरी, १९३२।३१ डी।

५५९।४२९

(६३) बिंदादत्त कवि। इनके शृंगार के महा सुन्दर कवित्त हैं।

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध में कोई सूचना सुलभ नहीं है।

५६०।४३०

(६४) बदन कवि।

सर्वेक्षण

बदन कवि का एक ग्रन्थ 'रस-दीप' मिला है। इस ग्रन्थ की रचना सं० १८०९ में हुई थी।

मास पक्ष अस्वनि अक्षित तिथि दसमी निसि मान
वर्ष रंध्र[९] नभ[०] वसु[८] ससो[१] संबतसर चित्र भान—

—खोज रि० १९०५।५७

---

१ राज रि०, भाग १

यह अलङ्कार और नायिका भेद का सम्मिलित ग्रन्थ है। कवि ने इस ग्रन्थ में अपना पूरा परिचय दिया है। बदन जी अग्निहोत्री ब्राह्मण थे। इनके पिता का नाम दामोदर, पितामह का दयाराम और प्रपितामह का मनीराम था। यह बाँदा जिले के गिरवां (गिरिग्राम) के रहने वाले थे।

छत्रसाल के पुत्र हृदयसाहि थे, जिन्हे छत्रसाल के राज्य का एक तिहाई भाग मिला था। इनके हिस्से में पन्ना, मऊ, गढ़ाकोटा, कालिंजर, शाहगढ़ और आस-पास का इलाका आया था। हृदयसाहि ने सं० १७८८ से १७९६ तक राज्य किया। हृदयसाहि के ६ पुत्र थे। इनके देहावसान के अनन्तर बड़े पुत्र सभासिंह राजा हुए, जिन्होंने सं० १७९६ से १८०९ तक राज्य किया। इन्हीं ६ लड़कों में एक पृथ्वीराज थे। यह पेशवा बाजी राव के पास गए। पेशवा ने सभासिंह को विवश कर इन्हें शाहगढ़ और गढ़ाकोटा का इलाका दिला दिया। पृथ्वीराज ने बदले में पेशवा को चौथ दी।[1] वदन कवि इन्हीं पृथ्वीराज के यहाँ रहा करते थे।

> भूप छत्रसाल वंस भयो अवतंस
> हिरदेस नरनाह जाको जग जस छायो है।
> ताकौ सुत भयो महाराज प्रथी सिंह
> कविराजन कौ कल्पतरु पुहुमी सुहायो है।
> गढ़कोटा जाकी राजधानी जानो जाहिर है
> पुरी पुरहूत की समान समदायो है।
> ग्रंथ रस दीपक विचारि के बदन कवि
> वासी गिरवां के तिहि बैठक बनायो है।

—खोज रि० १९०५।५७

बुन्देल वैभव[2] के अनुसार इनका जन्मकाल सं० १७७८ है।

५६१।४३१

(६५) बंदन पाठक, काशीवासी, विद्यमान हैं। 'मानस शंकावली रामायण' की टीका बहुत अद्भुत बनाई है। आज के दिन रामायण के अर्थ करने में ऐसा दूसरा कोई समर्थ नहीं है।

सर्वेक्षण

मानस शंकावली[3] ग्रन्थ खोज में मिल चुका है। इसके अनुसार बंदन पाठक मिरजापुर के रहने वाले थे। मिरजापुर के प्रसिद्ध रामायणी पं० रामगुलाम द्विवेदी के शिष्य चोपईदास के यह शिष्य थे।

---

(१) बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त इतिहास, अध्याय २४, पैरा १२ (२) बुन्देल बैभव, भाग २, पृष्ठ ४०४ (३) खोज रि० १९२०।२०१, १९२३।४३८

श्रीमद्रामगुलाम के सिष्य सो चोपईदास
तासु सिष्य बंदन नमत श्री मिरजापुर वास ५

१६२० वाली रिपोर्ट में मिरजापुर पाठ है, जो अशुद्ध है। बंदन पाठक लक्ष्मण पाठक के पुत्र, बेनीराम पाठक के पौत्र, और शिवप्रसाद पाठक के प्रपौत्र थे।

शिवप्रसाद पाठक विमल, ता सुत बेनीराम
तासु पुत्र लच्छमण लसत, ता सुत बंदन नाम ६

यह ग्रन्थ काशीनरेश महाराज ईश्वरीनारायण सिंह के आश्रय में बना।

श्री काशीपति ईश्वरी नारायण नृपराज
तेहि के सुभग सनेह ते प्रगट ग्रन्थ द्विजराज ७

रामचरित मानस के सम्बन्ध में जो शंकाएँ की जाती हैं, उन सब का समाधान इस ग्रन्थ में गद्य में किया गया है।

श्री मानस शंका सकल रही विश्व में छाइ
ताके उत्तर बोध हित ग्रन्थोद्भव सुख पाइ

इस ग्रन्थ की रचना सं० १६०६ में हुई।

संबत् रस[६] नभ[०] अंक[६] ससि[१] ऋतु वसंत मधु मास
शुक्ल पक्ष नौमी सु तिथि संकावली प्रकास

विनोद में (२४६४) इनका जन्मकाल सं० १६१५ दिया गया है। इसके ६ वर्ष पहले पाठक जी मानस शंकावली की रचना कर चुके थे। इनका जन्मकाल सं० १८७५ के आस-पास होना चाहिए।

५६२।४२८

(६६) वृंदावन कवि। इनके कवित्त सुन्दर हैं।

सर्वेक्षण

सरोज में इस कवि के नाम पर जो कवित्त उद्धृत है, उसके चौथे चरण में वृन्दावन शब्द आया है, पर यह वृन्दावनचन्द अर्थात् कृष्ण के एक अंश के रूप में आया है, न कि कवि छाप के रूप में।

वृंदावन चंद नख चंद समता के हेत
चंद यह मंद कोटि छंद करिबो करै

वृन्दावन नाम के अनेक कवि खोज में मिले हैं, पर जब सरोज के इस कवि का कोई अस्तित्व ही नहीं रह गया, फिर किसी से इसके तादात्म्य की चर्चा उठाना ही व्यर्थ है।

५६३।४३२

(६७) विश्वेश्वर कवि ।

सर्वेक्षण

विनोद में (१५८५) विश्वेश्वर को वैद्यक ग्रन्थ का रचयिता माना गया है, पर कोई प्रमाण नहीं दिया गया है। सरोज में उदार वैद्य सम्बन्धी इनका एक सवैया अवश्य उद्धृत है। पर यह क्षीण-सूत्र कवि के वैद्य होने और वैद्यक ग्रन्थ रचयिता होने का अपार भार नहीं सँभार सकता।

खोज में किसी विश्वेश्वर के ये तीन लघु ग्रन्थ मिले हैं—

१—दोहा पचीसी, १६३८।१६२ ए, रामभक्ति सम्बन्धी २५ दोहे।

२—उल्था श्री सत्यनारायण, १६३८।१६२ बी, तीन कवित्तों में सत्यनारायण की कथा।

३—कृष्णपदाष्टक, १६३८।१६२ सी, भ्रमरगीत सम्बन्धी ८ पद।

एक और विश्वेश्वरदास मिले हैं, जो काशीवासी महाराष्ट्र ब्राह्मण थे। यह नारायण के पुत्र और शंकर के पौत्र थे। इन्होंने 'काशीखण्ड कथा'[१] की रचना की है।

शिवशंकर की कथा सोहाई
दास बिसेसर ने यह गाई
द्विज महाराष्ट्र जाति मम जानो
नारायण को पुत्र बखानो
तिनके भ्रात गोविंद सुनामा
उनके सुत माधव गुणवाना
मम पितु पिता रहे कछु ज्ञानी
तिन करि कृपा दीन्ह मोहिं बानी
तिनकर शंकर नाम बखानो
बादशाह के चाकर जानो
आनंद वन आनंद पुरी श्री काशी शिव धाम
तीन साख तहँ वास हर दिन्हु मोहि विश्राम

ग्रन्थ की रचना सं० ००४७ में हुई—

.........रहे, सत ऊपर चालीस
भादौं कृष्ण अष्टमी, बुद्धवार रजनीस

५६४।४३३

(६८) विदुष कवि इन्होंने श्रीकृष्ण जी की लीला कवित्तों में वर्णन की है।

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध में कोई सूचना सुलभ नहीं।

---

(१) खोज रि० १९४१।२५३

५६५।४५२

(६६) बारन कवि, राउत गढ़, भूपाल वाले, सं० १७४० में उ०। यह कवि, सुजाउलशाह नव्वाब राजगढ़ के यहाँ थे और 'रसिकविलास' नामक ग्रन्थ साहित्य का अति अद्भुत बनाया है। यह ग्रन्थ अवश्य देखने योग्य है।

सर्वेक्षण

वारन कवि के दो ग्रन्थ खोज में मिले हैं—

१—रसिक विलास, १६०५।६३। यह ग्रन्थ राजगढ़ भूपाल के नवाब सुजाउल्लशाह के आश्रय में बना।

'सुलतान साह साहेब सुजा कवि वारन यह उच्चरत'

कवि बारन मुसलमान थे और करीम के करम की आशा रखते थे।

कोई करै आस आय बुधि वर वाहन की,
बारन को आस तो करीम के करम के

इस ग्रन्थ का रचनाकाल कवि ने इन सोरठों में दिया है—

तीन दहा विधि वार, संवत सत्रह सै हुते
उज्जवल पच्छ की बार, बुध भद्रा तिथि द्वादसी
सन तुरकी सहसेक, नेनवे ऊपर दोय है
सुनहु चतुर नर नेक, तब कवि के इच्छा भई

ग्रन्थ का रचनाकाल बहुत स्पष्ट नहीं है। यह सम्भवतः सं० १७३७ है। तीन दहा ८३०, 'विधि' सम्भवतः वृद्धि, बढ़ती है। 'वार' सात का सूचक है। यह हिजरी सं० १०६२ है। यह ग्रथ नायिका-भेद का है।

२—रत्नाकर, १६०४।७६। यह छंदःशास्त्र और शब्द कोष साथ-साथ है। इस ग्रन्थ में कवि ने अपना असल नाम बरारी दिया है। बड़ा मानिकपुर के सैयद अशरफ़ जहांगीर इनके पीर थे। इन्होंने इनका नाम बारन रखा।

बारन की जाति है, काव्व शाल परमान
नाम बरारी जनम को, मोगल है सब जान
कवि बारन पदवी दई, गुरू मया करि ताहि
कड़े नगर वासी सदा, सब जग जानै वाहि

इस ग्रन्थ में कुल ५०८ दोहे हैं—

किए पांच से दोहरे, आठ अधिक पुनि जानि
भई प्रगट सब जगत में, बारन कवि की बानि

इस ग्रन्थ की रचना १०६५ हिजरी में शाहजहां के जलूस संवत् २८ में, विक्रम सं० १७१२ में आषाढ़ सुदी ८, मंगलवार को हुई।

सन तुरकी सहसेक पर, साठि अधिक अरु पांच
साहिजहान जलूस के, अट्ठाइस हैं साँच
सुकुल पच्छ तिथि अष्टमी, मंगल मास अषाढ़
संवत सत्रह सै हुते, बारह तापै बाढ़

इन ग्रन्थों के मिल जाने से कवि का रचनाकाल सं० १७१२-३७ स्थिर हो जाता है। सरोज में दिया सं० १७४० ठीक हैं और कवि का उपस्थितिकाल है।

विनोद में 'रसिक विलास' और 'रत्नाकर' ग्रन्थों के रचयिता बारन भिन्न-भिन्न समझे गये हैं, यह ठीक नहीं। रत्नाकर में जो शाहसुजा की प्रशस्ति है, उसी से मिश्रबन्धुओं को भ्रम हो गया। उनके ध्यान में यह मोटी बात नहीं चढ़ी कि यह शाहसुजा राजगढ़ वाले सुजाउलशाह का संक्षिप्त रूप हो सकता है। विनोद में इनका उल्लेख ४५२।२ और ३९९ संख्याओं पर हुआ है।

५९६।४५६

(७०) वृन्द कवि।

सर्वेक्षण

वृन्द शाकद्वीपीय ब्राह्मण थे। इनके पूर्वज बीकानेर के रहने वाले थे। कारणवश इनके पिता जी मेड़ता में बस गये थे। यहीं मेड़ता, जोधपुर, में इनका जन्म सं० १७०० में हुआ। इनकी माता का नाम कौसल्या और पत्नी का नवरंग गदे था। १० वर्ष की वय में यह विद्याध्ययनार्थ काशी आए। यहाँ तारा नामक पण्डित से इन्होंने साहित्य और वेदान्त आदि पढ़ा, साथ ही इन्हीं से काव्य-रचना भी सीखी। यहाँ से पढ़कर जब यह वापस गये, तब 'भाषा भूषण' के रचयिता जोधपुर नरेश प्रसिद्ध जसवंत सिंह ने इनका बड़ा सम्मान किया और कुछ भूमि भी दी। जसवंत सिंह के द्वारा इनका परिचय औरंगजेब के मन्त्री नवाब मुहम्मद खाँ से हुआ और इनके लिए शाही दरबार का दरवाजा सदा के लिए खुल गया। औरंगजेब ने इनकी काव्य-प्रतिभा से प्रसन्न होकर इन्हें अपने ज्येष्ठ पुत्र मुअज्जम (बहादुरशाह) तथा पौत्र का अध्यापक बनाया था। कालान्तर में यह अजीमुश्शान के बंगाल का सूबेदार होकर जाने पर उसके साथ बंगाल गये थे। सं० १७६४ के लगभग रूपनगर के राजा राजसिंह ने वृन्द को बहादुरशाह से माँग लिया और इन्हें अच्छी जागीर देकर अपने राज्य में बसा लिया। यहीं सं० १७८० में भादौं बदी ३ को[१] इनका देहान्त हुआ। इनके वंशज अब भी किशनगढ़ में हैं। वृन्द जी डिंगल और पिंगल, दोनों के कवि थे। इनके लिखे ८ ग्रन्थ हैं।

१—वृन्द सतसई अथवा दृष्टान्त सतसई, १९००।१२१, १९०२।९, १९१७।३३० बी, १९२३। ४४६ बी। अजीमुश्शान के लिए इसकी रचना सं० १७६१ में ढाका हुई।

> संवत ससि[१] रस[६] वार[७] ससि[१] कातिक सुदि ससिबार
> सातैं ढाका सहर में, उपज्यो याहि विचार

इस ग्रन्थ में नीति के ७१३ दोहे हैं।

२—यमक सतसई, १९४१।२५६ ग, १९४४।३९६। इस ग्रन्थ में कला और भाव पक्ष का अपूर्व सन्तुलन हुआ है। इसका नाम 'वृन्द विनोद' भी है। इसकी रचना १७६३ में हुई।

---

(१) राज रि०, भाग ३, पृष्ठ १०६

गुन[३] रस[६] सुख[७] अमृत[१] बरस बरस सुकुल नभ मास
दूज सुकवि कवि वृंद ये दोहा किए प्रकास १४

× × ×

जमक सतसया को धरयो नाम सु वृंद बिनोद

कवि ने एक दोहे में अपने निवास-स्थान मेंड़ता की भी सूचना दी है—

आगर नागर नरन कौं नगर मेरते वास

पुष्पिका से कवि का पूरा नाम वृन्दवन ज्ञात होता है—

"इति श्री षोड़स जातीय पुष्करना कवि वृन्दावन विरचितायां यमकालंकार सतसया सम्पूर्ण ।"

३—भाव पंचासिका, १६०६।३३० ए, १६२३।४४६ ए, १६४१।५६२। इस ग्रन्थ में २५ दोहे और २५ सवैये हैं। इनकी रचना सं० १७४३ में औरंगाबाद में हुई।

सत्रह तैंतालीस सुदि, फागुन मंगलवार
चौथ भाव पंचासिका प्रगटी अवनि उदार

४—शृङ्गार शिक्षा, १६०२।४२। औरंगजेब के मंत्री नवाब मुहम्मद खाँ के पुत्र मिरजा कादरी, अजमेर के सूबेदार की कन्या को पातिव्रत-धर्म की शिक्षा देने के लिए, इस ग्रन्थ की रचना सं० १७४८ में हुई।

सतरह अठतालैं समै, उत्तम आसू मास
सुदि पाचैं बुधवार सुभ, पोथी भई प्रकास

५—वचनिका, रचनाकाल सं० १७६२। इस ग्रन्थ में धौलपुर के उस युद्ध का वर्णन है, जो सं० १७१५ में औरंगजेब और उसके भाइयों में दिल्ली की गद्दी के लिये हुआ था। रूपनगर नरेश रूपसिंह इस युद्ध में दारा की ओर से लड़े थे और मारे गये थे। रूप सिंह की कीर्ति को अक्षय बनाने के लिए यह ग्रन्थ रचा गया था। नाम से यह गद्य-ग्रन्थ प्रतीत होता है, पर इसे कविता का ग्रन्थ कहा गया है।

६—सत्य स्वरूप, रचनाकाल सं० १७६४। यह वृन्द की अन्तिम रचना है। इसमें औरंगजेब की मृत्यु के बाद दिल्ली की गद्दी के लिये गृह-युद्ध का वर्णन है। इसमें रूपनगर के नरेश राजसिंह ने शहजादा मुअज्जम (बहादुरशाह) का पक्ष लिया था। इस लड़ाई की विजय का श्रेय इन्हीं को प्राप्त है।[१] खोज में इनके दो ग्रन्थ और प्राप्त हुए हैं।

१—पति मिलन, १६४१।२५६ क। ग्रन्थ खण्डित है। इसमें कवित्तों में आगतपतिका का शृंगार वर्णित है।

२—पवन पचीसी, १६४१।१५६ ख। यह षट्ऋतु वर्णन सम्बन्धी ग्रन्थ है।

५६७।४५७

(७१) वाजीदा कवि, सं० १७०८ में उ०। इस कवि की कुछ कविता हजारे में है।

---

(१) राजस्थानी भाषा और साहित्य, पृष्ठ १६४-६८ के अधार पर।

सर्वेक्षण

वाजीदा जी का असल नाम वाजिद था। यह मुसलमान थे। यह दादू के शिष्य थे और बावा वाजिद के नाम से प्रसिद्ध थे। खोज रिपोर्ट में इन्हें सं० १६५७ के लगभग उपस्थित माना गया है। इनके निम्नलिखित ग्रन्थ खोज में मिले हैं।

१—गुन राजा कृत, १९३३।२२७ सी। यही ग्रन्थ राज कीर्तन[१] नाम से भी मिला है। इसमें दोहा-चौपाइयों में एक राजा की कथा है, जिसे अपने पूर्व जन्म के भाइयों को अपने ही राज्य में साहु, बढ़ई और कोढ़ी के रूप में देखकर विरक्ति हुई।

२—निरंजन गुननामा
३—गुन पवेरा
४—गुन विरहनामा } १९३२।३२७ ए। तीनों ग्रन्थ एक ही जिल्द में मिले हैं।

५—नैन नामौ, १९३२।३२७ बी। आँखों के ऊपर नीति और अध्यात्म के दोहे।

६—अरिल्ल, १९२९।३२७ ए। इस ग्रन्थ में निम्नांकित ९ अंग हैं—१—विरह, २—सुमिरण ३—काल, ४—उपदेश, ५—कृपन, ६—चाणक, ७—विश्वास, ८—साध, ९—पतिव्रता। इस ग्रन्थ में ज्ञानोपदेश सम्बन्धी १३३ अरिल्ल हैं।

७—साखी, १९२९।३२७ बी। प्राप्त प्रति खण्डित है। यह भी सुमिरन आदि अंगों के क्रम से है।

दादू का जन्म-संवत् १६०१ और मृत्यु-संवत् १६६० माना जाता है।[२] वाजिद सं० १६६० के पहले दादू के शिष्य हो गये रहे होंगे। दादू के प्रसिद्ध शिष्य सुन्दरदास का जीवनकाल सं० १६५३-१७४६ है। लगभग यही जीवनकाल वाजिद का भी होना चाहिये। अतः सरोज में दिया सं० १७०८ ठीक है और कवि का उपस्थिति काल है।

राजस्थानी भाषा और साहित्य के अनुसार[३] वाजिद पठान थे। एक वार हरिणी का शिकार करते समय इनके मन में दया उत्पन्न हुई और ये अहिंसक होकर, दादू के शिष्य हो गए तथा भगवद्भजन में काल-यापन करने लगे। इनके ग्रन्थों की यह सूची दी गई है—

१. अरिल्लैं, २. गुण कठियारानामा, ३. गुण उत्पतिनामा, ४. गुण श्रीमुखनामा, ५. गुण घरियानामा, ६. गुण हरिजननामा ७. गुण नांवमाला, ८. गुण गजनामा, ९. गुण निरमोहीनामा, १०. गुण प्रेम कहानी, ११. गुण विरह का अंग, १२. गुण नीसानी, १३. गुण छन्द, १४. गुण हित उपदेश, १५. पद, १६. राज कीर्तन।

५६८।४५९

(७२)—बुधराम कवि सं० १७२२ में उ०। हजारे में इनके कवित्त हैं।

सर्वेक्षण

हजारे में बुधराम के कवित्त हैं, अतः सं० १७५० के पूर्व इनका अस्तित्व सिद्ध है। विनोद

---

(१) खोज रि० १९०२।७९ (२) हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ ८९ (३) राजस्थानी भाषा और साहित्य, पृष्ठ २२६

(४४७) में सरोज दत्त सं० १७२२ कवि का रचनाकाल स्वीकार किया गया है। यह रचनाकाल ही प्रतीत होता है।

५६९।४६१

(७३) बलि जू कवि, सं० १७२२ में उ०। ऐज़न। इनके हजारे में कवित्त हैं।

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध में कोई सूचना सुलभ नहीं है।

५७०।४६३

(७४) बनवारी कवि, सं० १७२२ में उ०। यह कवि राजा अमर सिंह, हाड़ा, जोधपुर के यहाँ थे।

सर्वेक्षण

बनवारी जोधपुर नरेश प्रसिद्ध 'भाषा भूषण' के सुप्रसिद्ध रचयिता जसवंत सिंह के बड़े भाई अमर सिंह राठोर (हाड़ा नहीं) के प्रशस्ति गायक कवि थे। अमर सिंह ने गँवार कह देने के कारण सलावत खाँ को शाहजहाँ के भरे दरबार में मार डाला था और आगरे के किले से घोड़े पर बाहर कूद पड़े थे। सरोज में बनवारी के दो कवित्त उद्धृत हैं। एक में उक्त घटना का उल्लेख हुआ है। शुक्ल जी ने बनवारी का रचनाकाल सं० १६९०–१७०० माना है।[1] बनवारी सं० १७२२ में भी उपस्थित रह सकते हैं। सरोज का संवत् अशुद्ध नहीं कहा जा सकता। इसी कवित्त के सहारे यह नहीं कहा जा सकता कि यह अमर सिंह के दरबारी कवि थे ही। इस उत्तेजित करने वाली घटना को आधार बनाकर आज भी नाटक और नौटंकियाँ लिखी गई हैं।

५७१।४६४

(७५) विश्वम्भर कवि। इनके शृंगार के कवित्त सुन्दर हैं।

सर्वेक्षण

सरोज में विश्वम्भर कवि का एक शृंगारी सवैया उद्धृत है, अतः यह रीतिकालीन कवि हैं। इनके सम्बन्ध में इतना ही निश्चयपूर्वक कहा जा सकता है।

५७२।४७३

(७६) बैताल कवि वन्दीजन, सं० १७३४ में उ०। इनके सामयिक नीति सम्बन्धी छप्पै बहुत सुन्दर हैं। महाराजा विक्रम शाह के यहाँ थे।

---

(१) हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ ३२९

सर्वेक्षण

बैताल ने अपने छप्पयों में विक्रम को सम्बोधित किया है। इतिहासकारों के अनुसार यह विक्रम चरखारी नरेश विजय विक्रमाजीत (शासनकाल सं० १८३९-८६) हैं। अतः बैताल का भी रचनाकाल यही होना चाहिये। ऐसी स्थिति में सरोज में दिया सं० १७३४ कम से कम १०० वर्ष पूर्व है और अशुद्ध है।

तासी ने उर्दू के एक कवि सन्तोष राय बैताल का उल्लेख किया है। ग्रियर्सन ने (५१५) तासी के इस उर्दू कवि को सरोज के इस हिन्दी कवि से व्यर्थ के लिए मिला दिया है। इसी प्रकार खोज में किसी कवि का किया हुआ 'बैताल पचीसी' का भाषानुवाद मिला हैं, जिसे रिपोर्ट[1] में बैताल के नाम मढ़ दिया गया है। पुष्पिका में इसे बैताल की रचना कहा गया है और रिपोर्ट में स्वीकार कर लिया गया है। इस ग्रन्थ की भाषा बैताल के छप्पयों की भाषा से बहुत पुरानी है।

५७३।४७४

(७७) बेचू कवि सं० १७८० में उ०। इनके कवित्त बहुत सुन्दर हैं।

सर्वेक्षण

बेचू शृंगारी कवि हैं। विनोद के अनुसार (६८७) इनका जन्मकाल सं० १७५० और रचनाकाल सं० १७८० है। इस कवि के सम्बन्ध में कोई सूचना सुलभ नहीं। इतिहासों में जो भी उल्लेख हुए हैं, सब सरोज के ही आधार पर। विनोद का भी कथन सरोज पर निर्भर है।

५७४।४७५

(७८) बजरंग कवि, ऐज़न। इनके कवित्त बहुत सुन्दर हैं।

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध में कोई सूचना सुलभ नहीं है।

५७५।४७७

(७९) बकसी कवि, इनके कवित्त सुन्दर हैं।

सर्वेक्षण

बकसी कवि की छाप है, यह उसका नाम नहीं है। प्रायः कायस्थ लोग बख्शी हुआ करते हैं। यह रीतिकालीन कवि हैं। ग्रियर्सन में (८६१) इन्हें तानसेन से भी पूर्वकालीन प्रसिद्ध संगीतज्ञ बकसू से मिलाने का प्रयास किया गया है, जो ठीक नहीं। इस कवि के सम्बन्ध में कोई प्रामाणिक सूचना सुलभ नहीं।

---

(१) खोज रि० १९२६।२७

५७६।४८४

(८०) बाजेश कवि, बुन्देलखण्डी, सं० १८३१ में उ० । इन्होंने अनूप गिरि की तारीफ़ में बहुत कवित्त कहे हैं।

सर्वेक्षण

सरोज में बाजेश कवि का एक कवित्त उद्धृत है, जिससे इनका अनूपगिरि का प्रशस्ति-गायक कवि होना सिद्ध है।

> महाराज राजा श्री अनूपगिरि तेरी धाक
> गालिब गनीमन के पैर गरे जात हैं

अनूपगिरि गोसाईं की मृत्यु सं० १८६१ में अत्यन्त वृद्धावस्था में हुई। इनका शौर्य सं० १८२० में बक्सर की लड़ाई में पहली बार चमका था, जब इन्होंने अवध के नवाब शुजाउद्दौला की जान अपनी जाँघ में एक घाव खाकर भी बचाई थी। अतः इनका शौर्यकाल सं० १८२०-६१ है। यही बाजेश का रचनाकाल होना चाहिये। अतः सरोज में दिया हुआ सं० १८३१ ठीक है और बाजेश का उपस्थितिकाल है। विनोद में (६६१) इसे रचनाकाल ही स्वीकार भी किया गया है।

५७७।४८६

(८१) बालनदास कवि, सं० १८५० में उ०। इन्होंने रमल भाषा ग्रन्थ बनाया है। रमल विद्या के ग्राहकों के लिए यह ग्रन्थ बहुत अच्छा है।

सर्वेक्षण

सरोज में दिया सं० १८५० 'रमलसार' का रचनाकाल है। रचनाकाल सूचक यह दोहा स्वयं सरोज में उद्धृत है।

> इंदु[१] नाग[८] अरु बान[५] नभ[०] अंक अब्द श्रुति मास
> कृस्न पच्छ तिथि पंचमी बरनेउ बालनदास १

कवि अपनी छाप 'बाल' भी रखता है—

> गुरु गनेश सुभ सेष मुनि गरुड़ध्वज गोपाल
> रमल कथा मुख कमल करि बरनन की रज बाल २

इस ग्रन्थ का विषय इस दोहे में दिया गया है—

> चौसठि प्रश्न बिचारि के, संकर कीन प्रकास
> तेहि मा सुख संसार को, बरनत बालनदास ३

इनका बनाया हुआ 'साठिका' नाम का एक अन्य ज्योतिष-ग्रन्थ और भी खोज में मिला है।[१] इस ग्रन्थ में ६० वर्ष के समय-चक्र का ज्योतिष सम्बन्धी सिद्धान्त निरूपण है। कहा जाता है कि साठ-साठ वर्ष के बाद समय चक्र बदला करता है। प्राप्त प्रति का लिपिकाल सं० १८४५ माना गया है, जो ठीक नहीं। यह रचनाकाल है। पुष्पिका में इसका प्रतिलिपिकाल अलग से सं० १८६४ दिया गया है।

---

(१) खोज रि० १९१२।१०

इनका एक अन्य खण्डित ग्रन्थ 'स्वरोदय' मिला है।[१] बालनदास का नाम बालदास और बालचन्द्र भी है।

५७८।४६६

(८२) वृन्दावनदास २, ब्रजवासी, सं० १६७० में उ०। इनके पद रागसागरोद्भव में हैं।

सर्वेक्षण

चाचा हित वृन्दावनदास, जिनका रचनाकाल सं० १८००-४४ है, और जो हित-सम्प्रदाय के प्रसिद्ध भक्त तथा हिन्दी साहित्य के सुप्रसिद्ध कवि हैं, उनसे यह वृन्दावनदास ब्रजवासी भिन्न हैं। चाचा जी की रचनाओं में नाम के पूर्व हित अवश्य लगा रहता है। सरोज में, उद्धृत पद में कवि नाम के पहले हित नहीं लगा है, जो इनकी हित-सम्प्रदाय वाले इसी नाम के कवि से विभिन्नता प्रकट करता है।

"चित्र लिखी सी रहि गई ता छिन, वृन्दावन प्रभु वृन्दावन में"

परन्तु डॉ० विजयेन्द्र स्नातक का अभिमत है कि चाचा हित वृन्दावनदास की रचनाओं में तीन छापें मिलती हैं—(१) वृन्दावन हित रूप (२) वृन्दावन हित, (३) वृन्दावन।[१] यदि यह तथ्य ठीक है तो उक्त पद प्रसिद्ध राधावल्लभी कवि चाचा हित वृन्दावनदास का भी हो सकता है।

चाचा हित वृन्दावनदास का जन्मकाल संवत् १७६५ माना जाता है। इनकी पहली संवतांकित रचना अष्टयाम है, जिसका रचनाकाल सं० १८०० कार्तिक शुक्ल एकादशी है। अन्तिम ज्ञात रचना 'सेवक परिचयावली' है, जिसका रचनाकाल सं० १८४४ है। इन्हें गौड़ ब्राह्मण माना जाता है। यह प्रारम्भ से ही विरक्त थे और कभी भी गृहस्थ नहीं रहे। सं० १७६४ के पहले यह राधावल्लभ सम्प्रदाय के गोस्वामी हित रूप लाल के शिष्य हो चुके थे। यह ब्रजवासी एवं वृन्दावन वासी थे, पर इनके जन्मस्थान का ठीक पता नहीं।

राधावल्लभीय ग्रन्थसूची में चाचा हित वृन्दावनदास के १५८ ग्रन्थ कहे गये हैं। इनके सवा लाख पद कहे जाते हैं। इन्होंने १४ तो अष्टयाम ही लिखे हैं, जिनके रचनाकाल सं० १८०० से १८३७ तक हैं। श्री विजयेन्द्र स्नातक ने इनके ९८ ग्रन्थों की सूची दी है जिनमें से २७ का रचना-काल नहीं ज्ञात है, शेष ७१ का रचनाकाल ज्ञात है और स्नातक जी ने उनका उल्लेख भी किया है।

स्नातक जी ने अपने ग्रन्थ में चाचा जी के निम्नलिखित १२ ग्रन्थों की आलोचना भी दी है—

(१) लाड़ सागर (२) ब्रज प्रेमानन्द सागर (३) वृन्दावनजस प्रकाश बेली (४) विवेक पत्रिका वेली (५) कलिचरित्र वेली (६) कृपा-अभिलाषा बेली (७) रसिकपथ चन्द्रिका (८) जुगल-सनेह पत्रिका (९) श्री हित हरिवंश सहस्र नाम (१०) छद्म लीला (११) आर्त पत्रिका (१२) स्फुट पद। इनमें से ग्यारहवां अप्रकाशित हैं, शेष ११ प्रकाशित हैं।

ब्रज के भक्ति सम्प्रदायों में जितने वाणीकार हुए हैं, परिभाषा की दृष्टि से चाचा वृन्द्रावन दास की रचनाओं की संख्या सर्वाधिक है।[२]

---

(१) खोज रि० १९३६।३० (२) राधावल्लभ सम्प्रदाय: सिद्धान्त और साहित्य, पृष्ठ ५१२-५२८

५७६।४६७

(८३) विद्यादास ब्रजवासी, सं० १६५० में उ०। ऐज़न। इनके-पद रागसागरोद्भव में हैं।

सर्वेक्षण

रागकल्पद्रुम द्वितीय भाग में विद्यादास जी के पद हैं। सं० १८२५ में प्रतिलिपित वाणी संग्रह[1] में विद्यादास के पद, पृष्ठ २५१ पर हैं और गुटका विविध संग्रह[2] में भी इनके पद हैं। इनके सम्बन्ध में कोई अन्य सूचना सुलभ नहीं है।

५८०।

(८४) बारक कवि, सं० १६५५ में उ०।

सर्वेक्षण

कोई सूचना सुलभ नहीं है।

५८१।

(८५) बनमाली दास गोसाईं, सं० १७१६ में उ०। यह कवि अरबी, फ़ारसी और संस्कृत भाषा में महा-निपुण थे। यह दाराशिकोह के मुंशी थे। वेदान्त में इनके दोहरे बहुत चुटीले हैं।

जैसा मोती ओस का, वैसे है संसार
झलकत देखा दूर से, जात न लागै बार

इन्हीं महाराज ने पण्डित रघुनाथ कृत राजतरंगिणी और मिश्र विद्याधर कृत राजावली का संस्कृत से फ़ारसी में उल्था किया है।

सर्वेक्षण

सं० १७१५ में औरंगजेब गद्दी पर बैठा। इसी समय उसने दारा आदि अपने अन्य भाइयों को हराया। अतः दारा के मुन्शी बनमालीदास गोसाईं का सरोज में दिया सं० १७१६ ठीक है और यह कवि का उपस्थितिकाल है।

५८२।

(८६) बेनीमाधव भट्ट।

सर्वेक्षण

बेनीमाधव भट्ट का उपनाम प्रवीन था। यह सं० १७९८ के पूर्व वर्तमान थे। खोज में इनके ये दो ग्रन्थ मिले हैं।

१—विचित्रालंकार
२—चतुर्विध पत्री[3] } १९४४।३९८

---

(१) राज रि०, भाग ३, पृष्ठ ४६ (२) वही, पृष्ठ ६६ (३) खोज रि० १९२६।३३

खोज में एक ग्रन्थ बेनीमाधो की 'बारहमासी'[1] मिला है। इसके रचयिता बेनीमाधो माने गए हैं, जो ठीक नहीं। यह रचना किसी सूरदास की है। अन्तिम छन्द में सूरदास छाप है भी। इसी रिपोर्ट में अन्यत्र यही ग्रन्थ महाकवि सूरदास के नाम पर चढ़ा हुआ है।[2]

५८३।

(८७) वंशीधर वाजपेयी, चिन्ताखेरा, जिले रायबरेली, १६०१ में उ०। इन्होने बहुत ग्रन्थ बनाये हैं।

संग किसी के मत चलै, यह जग माया रूप
ताते तुम वाको भजहु, जो जगदीस अनूप

सर्वेक्षण

सप्तम संस्करण में इन्हें सं० १६०१ में उ० कहा गया है, जो प्रेस की भूल है। विनोद (१६८७) एवं सरोज तृतीय संस्करण में इनका समय सं० १६०१ दिया गया है। वंशीधर वाजपेयी रायबरेली, जिलान्तर्गत चिन्ताखेड़ा के रहने वाले कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे। यह संस्कृत-व्याकरण के अच्छे अध्येता थे। पहले यह पश्चिमोत्तर प्रदेश (अब उत्तरप्रदेश) के शिक्षा-विभाग में पुस्तकों के भाषानुवाद के लिए नियुक्त हुए थे, फिर आगरा के नार्मल स्कूल में सेकण्ड मास्टर हुए थे।[3]

वंशीधर जी ने हिन्दी-उर्दू का एक पत्र निकाला था। हिन्दी वाले अंश का नाम 'भारत-खण्डामृत' और उर्दू कालम का नाम 'आबे हयात' था। उनकी लिखी पुस्तकों के नाम यह हैं—

१. पुष्प वाटिका (गुलिस्ता के एक अंश का अनुवाद, सं० १६०६)
२. भारतवर्ष का इतिहास (सं० १६१३)
३. जीविका परिपाटी (अर्थशास्त्र की पुस्तक, सं० १६१३)
४. जगत् वृत्तान्त (सं० १६१५)[4]

५८४।

(८८) वंशीधर कवि बनारसी, गणेश, वन्दीजन कवीद्र के पुत्र, सं० १६०१ में उ०। इन्होंने साहित्य वंशीधर, भाषा राजनीति, ये दो ग्रन्थ बनाये हैं, जिनके नाम विदुर प्रजागर और मित्र मनोहर हैं। ये दोनों ग्रन्थ नीति के न्यारे-न्यारे हैं।

सर्वेक्षण

वंशीधर बनारसी का एक ग्रन्थ साहित्य-तरंगिणी[5] खोज में मिला है। इसकी रचना सं० १६०७ में आषाढ़ सुदी ५, रविवार को हुई—

मुनि[7]अकास[0] अंकनि[9] अवधि ससि[1] संवतसर नाम
तह अषाढ़ सुदि पंचमी, रवि बासर सुख धाम

---

(१) खोज रि० १६२६।४७१ ओ (२) कवित्त रत्नाकर, प्रथम भाषा कवि १ (३) हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ ४३७ (४) खोज रि० १६२०।१२

यह ग्रन्थ काशीनरेश महाराज ईश्वरीनारायण सिंह के खवास (अंग-रक्षक) औघड़ के लिए बना—

औघड़ वीर खवास वर, कासीपति कौं जानि
तिनकी कृपा सुपाय के, रचत ग्रन्थ सुखदानि ३

× × ×

राम सिया मोद लेइ
ईश्वरी नरेश सेइ
बिश्वनाथ रूप होइ
औघड़ सनाथ सोइ

इस ग्रन्थ में कवि ने अपना वंश परिचय भी दिया है। इसके अनुसार यह गणेश के पुत्र, गुलाब के पौत्र एवं लाल के प्रपौत्र थे। लाल, गुलाब एवं वंशीधर, ये तीनों काशीनरेशों के दरबारी कवि थे।

भए कबि लाल, जस जगत बिसाल, जाके
गुन कौ न बारापार, कहाँ लौं सो गाइये
ताके भये सुकवि गुलाब प्रीति सन्तन में
कविता रसाल सुभ सुकृत सुनाइये
सुकवि गनेस की कविता गनेस राम
करै को बखान मम पितु सोइ गाइये
तिन तैं सु पढ़ि कीन्हों मति अनुसार
जानो सिया राम जस ग्रन्थ औघड़ सु भाइये

यह ग्रन्थ पाँच तरंगों में विभक्त है। प्रथम तीन तरंगों में ध्वनि-काव्य का निरूपण है। चतुर्थ में नायिका-भेद और पञ्चम में चित्र-काव्य है।

'भाषा राजनीति' अथवा 'मित्र मनोहर'[१] नामक ग्रन्थ खोज में मिला है। यह ग्रन्थ वंशीधर बनारसी का नहीं है। यह बंशीधर प्रधान (कायस्थ) की कृति है। इसकी रचना सं० १७७४ ई० में हुई थी।

प्रभु को पञ्चम[४८] रूप पर, मिलवहु वेद[४] पुरान[१८]
सत्रह सै पर वदित, संवत् गनौ प्रमान
पूस मास गनि ऊख ज्यों, ग्रन्थ सरस रस चाहि
हर तिथि रवि सुत सुदिन लहि, चोरहन लयो सराहि
सकतेस नन्द आनन्दमय, मान महीप महीप मनि
कह बंशीधर ग्रन्थ यह गुनि मित्र मनोहर नाम भनि

इन्हीं वंशीधर प्रधान का बनाया हुआ हिसाब का एक ग्रन्थ 'दस्तूर मालिका'[२] भी खोज में मिला है। इसकी रचना सं० १७६५ में हुई।

---

(१) खोज रि० १९०२।६४ (२) खोज रि० १९०६।१०

संवत सत्रा सैकरा, पैंसठ अधिक पुनीत
करि वर्णन यहि ग्रन्थ कौ, ह्वै चरनन कौ मीत ८

यह वंशीधर प्रधान किसी उग्रसेन राजा के पुत्र सकतसिंह के आश्रय में थे, जो सकतपुर में रहता था। उस समय दिल्ली में आलमगीर और बुन्देलखण्ड में छत्रसाल तप रहे थे। यह उल्लेख कवि ने ग्रन्थारम्भ में किया है।

विनोद (१९२८) में 'विदुर प्रजागर' या 'साहित्य वंशीधर' को वंशीधर बनारसी की कृति माना गया है। वंशीधर प्रधान का उल्लेख विनोद में ६२८ संख्या पर उचित ही अलग हुआ है।

ग्रियर्सन में (५७४) इस कवि के सम्बन्ध में भद्दी भूलें भरी पड़ी हैं। एक तो सरोज के संवत् को इसमें जन्मकाल माना गया है, दूसरे दो-दो नाम वाले ग्रन्थों को चार भिन्न-भिन्न ग्रन्थ समझ लिया गया है।

५८५।

(८९) वंशगोपाल वन्दीजन, जालवन निवासी, सं० १९०२ में उ०।

सर्वेक्षण

वंशगोपाल वन्दीजन, जालौन के रहनेवाले थे। सरोज-दत्त सं० १९०२ इनका कविता-काल ही है। 'भाषा सिद्धान्त' नामक ब्रजभाषा गद्य में लिखा हुआ इनका एक ग्रन्थ छतरपुर में है।[1]

५८६।

(९०) वृन्दावन, ब्राह्मण, सेमरौता, जिले रायबरेली, विद्यमान हैं।

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध में कोई सूचना सुलभ नहीं है।

५८७।

(९१) बुध सिंह पंजाबी। इन्होंने 'माधवानल' की कथा का कविता के साथ बहुत सुन्दर भाषा की है।

सर्वेक्षण

'माधवानल' और 'सभा प्रकाश'[2] के रचयिता एक बुध सिंह, कायस्थ, बुन्देलखण्डी का उल्लेख विनोद (१९००) में हुआ है। यह कवि नाम और ग्रन्थनाम तथा स्थान-वैषम्य, निश्चय ही विचित्र है। हो सकता है, सरोज में प्रमाद से कवि को पंजाबी कहा गया हो। बुन्देलखण्डी बुध सिंह का रचना काल सं० १८९७ है।

---

(१) विनोद १९७२ (२) खोज रि० १९०६।१७

५८८।

(९२) बाबू भट्ट कवि ।

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध में कोई सूचना सुलभ नहीं है ।

५८९।४६७

(९३) ब्रह्म, श्री राजा बीरबर ।

सर्वेक्षण

सरोज में ब्रह्म कवि का विवरण एक बार पहले आ चुका है। देखिये, यही ग्रन्थ-संख्या ४६७ । यह कवि प्रथम एवं द्वितीय संस्करणों में नहीं हैं, तृतीय से बढ़ा है ।

५९०।

(९४) विद्यानाथ कवि, अन्तर्वेद वाले, सं० १७३० में उ० ।

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध में कोई सूचना सुलभ नहीं है । विनोद (१५८२) में न जाने क्यों इस कवि को अज्ञातकालीन प्रकरण में स्थान दे दिया गया है ।

५९१।

(९५ बैन कवि ।

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध में कोई सूचना सुलभ नहीं ।

५९२।

(९६) विजय सिंह उदयपुर के राना, सं० १७८७ में उ० । यह महराज कवि थे। इन्होंने 'विजय विलास' नामक एक ग्रन्थ बनवाया है, जिसमें एक लक्ष दोहे हैं । इस ग्रन्थ में जो युद्ध, विजय सिंह और उनके भाञ्जे राम सिंह, अजय सिंह के पुत्र, से हुआ है, सो पढ़ने योग्य है। इसी लड़ाई के कारण मरहठे लोग मारवाड़ देश में गये । इस ग्रन्थ का एक दोहा है—

याद घने दिन आवैं, आया बोला हेल
माँगै तेनो भूपती, माल खजाना मेल ॥१॥

सर्वेक्षण

विजय सिंह जोधपुर के राजा थे, उदयपुर के राना नहीं । यह ऊपर दिये विवरण में मराठों के मारवाड़ प्रवेश वाले अंश से प्रकट है। ग्रियर्सन ने (३७१) भी टॉड के आधार पर यही बात कही है और इनका शासन काल सं० १८१०-४१ दिया है। अतः सरोज में दिया हुआ सं० १७८७ ठीक नहीं । यह हो सकता है कि विजय सिंह इस संवत् के आस-पास उत्पन्न हुए रहे हों ।

५६३।

(६७) बरवै सीता कवि, राठौर, कन्नौज के राजा, सं० १२४६ में उ० । यह महाराजाधिराज कन्नौज के राजा, भाषा में बड़े कवि हो गये हैं।

सर्वेक्षण

इस कवि का न तो ग्रियर्सन में और न तो विनोद ही में उल्लेख है। इस कवि की कविता भी आज तक कहीं देखने में नहीं आई। इस नाम का कोई राजा कन्नौज में नहीं हुआ। न जाने किस आधार पर सरोज में इस कवि का उल्लेख हुआ है।

५६४।

(६८) बारदरबेणा कवि, वन्दीजन, राठौरों का प्राचीन कवि, सं० ११४२ में उ० । जब महाराज जयचन्द का जमाना पलटा और शिव जी जयचन्द के पुत्र, मेवाड़ देश की ओर भाग गये, तब यह कवि उनके साथ गया और वहाँ मुधियावार नामक एक लक्ष रूपये का इलाका उसके पास था।

सर्वेक्षण

इस कवि का उल्लेख ग्रियर्सन में नहीं हुआ है, विनोद में (११) हुआ है। इस कवि का समय सं० १२५० के आस-पास होना चाहिये। सरोज में दिया गया सं० ११४२ कदापि ठीक नहीं।

५६५।

(६६) वेनीदास कवि, वन्दीजन, मेवाड़ देश के निवासी, सं० १८६२ में उ० । यह कविराज, सं० १८६० के करीब मारवाड़ देश के प्रबन्ध-लेखक अर्थात् तारीख़नवीसों में नौकर थे।

सर्वेक्षण

सं० १८६० के करीब यह मारवाड़ के इतिहास-लेखकों में थे। अतः सं० १८६२ कदापि जन्मकाल नहीं हो सकता, जैसा कि ग्रियर्सन में (६७१) स्वीकार किया गया है। इस कवि के सम्बन्ध में कोई अन्य सूचना सुलभ नहीं है।

५६६।४८७

(१००) बादेराय कवि, वन्दीजन, डलमऊ वाले, सं० १८८२ में उ० । यह कवि महराजा दयाकृष्ण, दीवान, सरकार लखनऊ के यहाँ थे।

सर्वेक्षण

खोज में बादेराय का एक ग्रन्थ रामायण मिला[1] है। इसमें ५६२ पन्ने हैं। कवि ने इस ग्रन्थ में अपना परिचय दिया है—

---

(१) खोज रि० १६२६।१६

नगर तिलोई मेरो धामा
नाम पिता को राम गुलामा
राज तिलोई बहुत बखानी
बहुत काल तक कीन्ह दिवानी
अन्त काल हरि पद चित लायो
राम कृपा से धाम सिधायो

ग्रन्थ की रचना सं० १९१४ में हुई—

संवत कौ परगास, नौ दस सत चौदह रह्यो
राम चरन धरि आस, अर्थ कियो तब यह कथा

इन्होंने अपनी जाति का नाम नहीं लिखा है। ग्रन्थ की पुष्पिका में इन्हें बादीराय कहा गया है। इससे प्रतीत होता है कि यह कायस्थ थे। नाम के आगे राय लगा देख सरोजकार ने इन्हें बन्दीजन समझ लिया है।

अपने अन्तिम दिनों में यह लाला मक्खन लाल की जमीदारी जफरपुर, परगना देवा, जिला बाराबंकी चले गये थे। यहीं इनकी देख-रेख में उक्त रामायन की प्रतिलिपि पांच दिनों में की गई थी। यह सूचना प्राप्त-प्रति की पुष्पिका से प्राप्त होती है—

"पोथी रामायन तफंनीस लाला वादीराय साहब, साकिन तिलोइ, हाल वारिद दर मुकाम जफरपुर, जमीदारी लाला मक्खनलाल कानूनगो अज इत्तिफाकात वक्त रफ़तन खुद दर मुकाम मजकूरह सुद पोथी रामायन वामुआइना खुद आमदा व खमल मासफ सुदन नकल तहरीर करद व मुआविनत साहिबान आजा दर पंज राज जुमला पोथी समाप्त करदीद दर सन् १२६६ फसली सुरु माह पूस दर मुकाम जफरपुर मुतअल्लिकै परगनै देवा जमीदारी ला० मक्खनलाल साहब कानूनगो कथा रामायन समाप्त।"

सरोज में दिया सं० १८८२ इनका प्रारम्भिक रचनाकाल हो सकता है।

भ

५६७।५१६

(१) भूषण त्रिपाठी, टिकमापुर जिले कानपुर, सं० १७३८ में उ०। रौद्र, वीर, भयानक, ये तीनों रस जैसे इनके काव्य में है, ऐसे अन्य कवियों की कविता में नहीं पाये जाते। यह महाराज प्रथम राजा छत्रसाल पन्ना नरेश के यहाँ छः महीने तक रहे। तेहि पीछे महाराज शिवराज सौलंकी, सितारागढ़ वाले के यहाँ जाय बड़ा मान पाया। जब यह कवित्त भूषण जी ने पढ़ा, 'इन्द्र जिमि जृंभ पर' तब शिवराज ने पांच हाथी और २५ हजार रुपये इनाम में दिए। इसी प्रकार भूषण ने बहुत बार बहुत रुपये, हाथी, घोड़े, पालकी इत्यादि दान में पाये। ये ऐसे कवित्त, ऐसे शिवराज बनाये हैं, जिनके बराबर किसी कवि ने वीर यश नहीं बना पाया। निदान जब भूषण अपने घर को चले, तो पन्ना होकर राजा छत्रसाल से मिले। छत्रसाल ने विचारा अब तो शिवराज ने इनको ऐसा कुछ धन-धान्य दिया है कि हम उसका दसवाँ हिस्सा भी नहीं दे सकते। ऐसा सोच-विचार कर चलते समय भूषण की पालकी का बाँस अपने कंधे पर धर लिया। ब्राह्मण कोमल हृदय तो

होते ही हैं, भूषण जी ने बहुत प्रसन्न होकर यह कवित्त पढ़ा—

साहू को सराहौं की सराहौं छत्रसाल को

और दूसरा यह कबित्त बनाया—

तेरी बरछी ने बर छीने हैं खलन के

इनके सिवा दो दोहे और बना कर छत्रसाल को देकर आप घर में आये—

यक हाडा बंदी धनी, मरद महेवा वाल
सालत औरंगजेब के, ये दोनों छत्रसाल
वे देखो छत्ता पता, ये देखो छत्रसाल
वे दिल्ली का ढाल, ये दिल्ली ढाहनवाल

भूषण जी थोड़े दिन घर में रह, बहुत देशान्तरों में घूम-घूम रजवाड़ों में शिवराज का यश प्रकट करते रहे। जब कुमाऊं में जाय राजा कुमाऊँ के यश में यह कवित्त पढ़ा—

उलदत मद अनुमद ज्यों जलधि जल

तब राज ने सोचा कि ये कुछ दान लेने आये हैं और हमने जो सुना था कि शिवराज ने लाखों रुपये इनको दिये, सो सब झूठ है। ऐसा विचार कर हाथी, घोड़े, मुद्रा, बहुत कुछ भूषण के आगे रक्खा। भूषण जी बोले, इसकी अब भूख नहीं। हम इसलिये यहां आये थे कि देखें शिवराज का यश यहां तक फैला है या नहीं। इनके बनाये हुए ग्रन्थ शिवराज भूषण, भूषण हजारा, भूषण उल्लास, दूषण उल्लास, ये चार सुने जाते हैं। कालिदास जी ने अपने ग्रन्थ हजारा के आदि में ७० कवित्त नवरस के इन्हीं महाराज के बनाये हुए लिखे हैं।

सर्वेक्षण

'भूषण' कवि का उपनाम है, मूल नाम नहीं, जैसा कि शिवराज-भूषण के इस दोहे से प्रकट है—

कुल सुलंक चित्रकूट पति, साहस सील समुद्र
कवि भूषण पदवी दई, हृदैराम सुत रुद्र

चित्रकूट पति और रुद्र के सुत हृदय राम ने कवि को 'कविभूषन' की उपाधि दी। कब उपाधि दी, किसको उपाधि दी, ये प्रश्न विचारणीय हैं।

पिछले कुछ दिनों से भूषण का मूल नाम जानने का प्रयास प्रारम्भ हुआ है। मतिराम के वजन पर पतिराम[१] और मनिराम[२] की कल्पना पहले की गई थी। श्री विश्वनाथप्रसाद मिश्र ने घनश्याम नाम का अनुमान किया है।[३] मातादीन मिश्र ने कवित्त रत्नाकर में भूषण का परिचय देते समय इनका नाम ब्रजभूषण दिया है। यह नाम प्रामाणिक प्रतीत होता है, पर यह भी अनुमान ही पर आश्रित है।

इधर भूषण के दो नए ग्रन्थ मिले हैं। जिसमें इनका नाम मुरलीधर दिया गया है। इनका एक ग्रन्थ है, अलंकार प्रकाश[४] जिसकी रचना सं० १७०५ में हुई।

---

(१) डॉ० पीतम्बरदत्त बड़थ्वाल का लेख संग्रह 'मकरंद' (२) भूषण, पृष्ठ १०२—६ (३) ना० प्र० पत्रिका, वर्ष,६०, अंक २, सं०,२०१२,में प्रकाशित लेख 'महाकवि भूषण का,समय' (४) भूषण, पृष्ठ१८,

पाँच सुन्न सत्रह बरिस कातिक सुदि छठि जानु
अलंकार परकासु को कवि कीनो निरमानु

भूषण ने इस ग्रन्थ की रचना देबी सिंह के लिए की थी। अलंकार प्रकाश के अन्त में कवि ने अपना वंश-परिचय इस प्रकार दिया है—

"वीराधवीर राजाधिराज श्री राजा देवीशाह देव प्रोत्साहित त्रिपाठी रामेश्वर आत्मज कवि भूषण मुरलीधर विरचिते अलंकार प्रकाश अविधा निरूपनो नाम दसमो उल्लासः। समाप्तम् शुभमभूयात्।"

ग्रन्थ के ४३२वें दोहे में भी भूषण ने अपना वंश-परिचय इस प्रकार दिया है—

रामकृष्ण कश्यप कुलहि, रामेश्वर सुत तासु
ता सुत मुरलीधर कियो, अलंकार परकासु

कश्यप कुल में रामकृष्ण के पुत्र रामेश्वर हुए और रामेश्वर के पुत्र मुरलीधर हुए, जिन्होंने 'अलंकार प्रकाश' की रचना की। ग्रन्थ में आये छन्दों में कवि ने अपना नाम भूषण दिया है। यह ग्रन्थ अगस्त १९६३ में भारतीय प्रकाशन मन्दिर, अलीगढ़ से प्रकाशित हो गया है।

दूसरा नया प्राप्त ग्रन्थ 'छन्दो हृदय प्रकाश'[1] है। यह पिंगल ग्रन्थ है। इसकी रचना १७२३, कार्तिक पूर्णिमा को हुई—

संमत सतरह सय वरस तेइस कातिक मास
पूनिव का पूरन भयो छंदो हृदय प्रकास

इस ग्रन्थ में भी कवि ने अपना नाम मुरलीधर, पिता का नाम रामेश्वर, पितामह का नाम रामकृष्ण तथा आश्रयदाता का नाम पञ्चम देवी सिंह दिया है। कवि अपने पिता का पाँचवाँ पुत्र था।

गहवर गुन मंडित, कवि, पंडित, रामकृष्ण कश्यप कुल पूषन
रामेसर ता तनय सुकबि जा···जहिं न निरखेउ नेकु दूषन
मुरलीधर ता सुअनु, सु पंचम देवी सिंघ कियउ कवि भूषन
छंदो हृदय प्रकासु रचउ तिन जगम मातु जिमि मिहिर मयंकन

इस ग्रन्थ की पुष्पिका भी महत्वपूर्ण है—

"इति श्री पौलस्त्य वंश वारिज विकासन मार्तंड, दुर्गाधिराज लक्ष्मी, रक्षण विचक्षण दौर्दंड, चतुःषष्टि कलाविलासनीभुजंग, महाधिराजधीरा, श्री महाराज हृदयनारायण देव प्रोत्साहित त्रिपाठी रामेश्वरात्मज मुरलीधर कवि भूषण विरचिते छंदो हृदय प्रकाशे गद्य विवरण नाम त्रयोदशोध्यायः ॥१३॥"

इस प्रति का लिपिकाल भी बहुत पुराना है—

"लिखितमिदं पुस्तकं त्रिपाठी शंभुनाथेन सं० १७३० माघ सुदो ११ हरिधवलपुर ग्रामे समाप्त।

राज० रि० में हृदयनारायण को मार्तंडगढ़ का राजा कहा गया है। यह भ्रम, अर्थ ठीक-ठीक न समझने के कारण है। मार्तंड का सम्बन्ध गढ़ा से नहीं है, पौलस्त्य वंश वारिज विकासन से है। हृदयनारायण जी गढ़ा दुर्ग के अधिराज हैं। यह गढ़ा जबलपुर जिले में है।

(१) राज० रि०, भाग २, पृष्ठ ११

इस ग्रन्थ की सारी सूचनाएं 'अलंकार प्रकाश'[1] की सूचनाओं के मेल में हैं। यह ग्रन्थ हिन्दी विद्यापीठ, आगरा विश्वविद्यालय से १६५६ ई० में प्रकाशित भी हो गया है।

'शिवराज भूषण' भूषण का सर्वाधिक प्रसिद्ध ग्रन्थ है। इसमें भी कवि ने अपना परिचय दिया है—

दुज कनौज कुल कस्यपी, रतनाकर सुत धीर
बसत तिविक्रमपुर सदा, तरनि तनूजा तीर २६
धीर वीरवर से जहाँ, उपजे कवि अरु भूप
देव विहारीश्वर जहाँ विश्वेश्वर तद्रूप २७

इसके अनुसार, भूषण कश्यप गोत्रोत्पन्न कान्यकुब्ज ब्राह्मण रत्नाकर के पुत्र थे। यह यमुना के किनारे स्थित त्रिविक्रमपुर, तिकवांपुर, में बसते थे। इस ग्रन्थ में पितामह का नाम नहीं दिया गया है, पिता का नाम दिया गया है। पर यह अलंकार प्रकाश और छन्दो हृदयप्रकाश में दिए पिता के नाम से मेल नहीं खाता। शूर वीर सिंह ने 'महाकवि भूषण का समय' शीर्षक लेख में अनुमान किया है कि रत्नाकर महाकवि भूषण के पिता रामेश्वर का उपनाम था। जिस प्रकार मुरलीधर कवि, भूषण के उपनाम से प्रसिद्ध हुए, उसी प्रकार उनके पिता रामेश्वर, रत्नाकर नाम से प्रसिद्ध हुए होंगे।[1]

श्री विश्वनाथप्रसाद मिश्र ने भूषण में शिवराज भूषण या शिव भूषण का पाठ सं० १८१८ की लिखी इस ग्रन्थ को प्राचीनतम प्राप्त प्रति के आधार पर दिया है। इस प्रति में उक्त दोहे का रूप यह है—

द्विज कनौज कुल कश्यपी, रतिनाथ कौ कुमार
बसत त्रिविक्रमपुर सदा, जमुना कंठ सुठार २६

यहाँ पिता का नाम रतिनाथ हो गया है। विश्वनाथ जी का मत है कि रतिनाथ असल नाम है और रत्नाकर उपनाम।

इस सारे विवरण से हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि शिवराज भूषण के रचयिता भूषण और छन्दो हृदयप्रकाश तथा अलंकार प्रकाश के रचयिता मुरलीधर कवि भूषण, दो अलग-अलग व्यक्ति हैं। इस निष्कर्ष तक पहुँचने में ये चार तर्क सहायक हैं—

(१) महाकवि भूषण को 'कवि भूषण' बनाने वाले 'हृदयराम सुत रुद्र' थे और मुरलीधर को 'कवि भूषण' बनाने वाले देवी सिंह। हृदयराम सोलंकी थे और देवी सिंह चन्देरी के पचंम या बुन्देला राजा।

(२) महाकवि भूषण के पिता का नाम रतिनाथ अथवा रत्नाकर था, मुरलीधर के पिता का नाम रामेश्वर था।

(३) अलंकार प्रकाश दस उल्लासों में और छन्दो हृदयप्रकाश तेरह उल्लासों में है। दोनों ग्रन्थों में प्रायः एक सी पदावली में प्रत्येक उल्लास के अन्त में कवि परिचयात्मक पुष्पिका दी गई है।

---

(१) ना० प्र० पत्रिका, वर्ष ६०, अंक २, सं० २०१२।

शिवराज भूषण में ऐसी कोई पुष्पिका नहीं है। यदि दोनों कवि अभिन्न होते, तो शिवराज भूषण में भी इस प्रकार की परिचयात्मक पुष्पिका अवश्य होती।

(४) दोनों कवियों के काव्यादर्श में भी घोर अन्तर है। मुरलीधर, कृष्णचरित से युक्त रचना को ही काव्य मानते हैं—

कहिए वहै कविता सब गुन सून जऊ है जू
जसुमति बालक लीला बरनित जिती साधु सुखित सुनिकै है जू
—छन्दो हृदय प्रकाश, पृष्ठ ६१, छन्द २३

और भूषण का आदर्श है—

'पुन्य पवित्र सिबा सरजै बरम्हाय पवित्र भई बर बानो'

शिवराज भूषण का रचनाकाल सं० १७३० है—

सम सत्रह सै तीस पर सुचि बदि तेरस भान
भूषन शिव भूषन कियो पढ़ियो सुनो सुजान

भूषण के दो ग्रन्थ और प्रचलित हैं—शिवा बावनी और छत्रसाल दशक। इन नामों से भूषण ने कभी कोई ग्रन्थ नहीं रचे। निःसन्देह इन ग्रन्थों में संकलित रचनाएँ भूषण की हैं। पर ये संकलन भूषण के किये हुए नहीं हैं। ये संकलन सं० १९४७ के पश्चात् किसी समय प्रस्तुत किये गये। सरोज में इन ग्रन्थों का उल्लेख नहीं है। विश्वनाथ जी ने इन संकलनों का इतिहास 'भूषण' में दिया है।[1]

सरोज में शिवराज भूषण के अतिरिक्त भूषण उल्लास, दूषण उल्लास और भूषण हजारा नामक तीन अन्य ग्रन्थों का भी उल्लेख हुआ है। ये ग्रन्थ आज तक कहीं देखे नहीं गये। प्रतीत होता है कि भूषण ने काव्य के दसों अंगों का विवेचन करने वाला कोई ग्रन्थ लिखा था, जिसमें अध्यायों को उल्लास कहा गया था। अलंकार प्रकाश में अध्यायों को उल्लास ही कहा भी गया है। एक-एक उल्लास में एक-एक अंग रहे होंगे। भूषण उल्लास और दूषण उल्लास इसी सम्भाव्य ग्रन्थ के दो अध्याय प्रतीत होते हैं। प्राचीनकाल में आवश्यकतानुसार बड़े ग्रन्थों के विभिन्न खण्ड अलग पुस्तक रूप में लिख लिये जाते थे। रामचरित मानस, सूरसागर, ब्रजविलास के ऐसे अनेक खण्ड अलग-अलग उपलब्ध भी हुये हैं। इन ग्रन्थ खण्डों से स्वतन्त्र ग्रन्थों की भ्रान्ति असम्भव नहीं। भूषण हजारा में या तो भूषण के १००० मुक्तक छन्द रहे होंगे या यह भी सम्भव है कि कालिदास के समान उन्होंने भी पूर्ववर्ती और सम सामयिक कवियों की एक हजार चुनी कविताएँ संकलित की हों।

चिन्तामणि भूषण, मतिराम और जटाशंकर सगे भाई थे अथवा नहीं, इस सम्बन्ध में भी लोगों ने विवाद उठाया है। श्री विश्वनाथप्रसाद मिश्र ने लोगों की शंकाओं का समाधान भूषण की भूमिका में कर दिया है और सिद्ध कर दिया है कि ये चारों भाई-भाई थे।[2]

श्री भगीरथ दीक्षित ने भूषण के समय के सम्बन्ध में आपत्ति उठाई है। वे सरोज में दिये 'सं० १७३८ में उ०' के उ० का अर्थ उत्पन्न करके इसको जन्मकाल मानते हैं और शिवभूषण के रचनाकाल सम्बन्धी दोहे का विचित्र रहस्यमय अर्थ करते हैं, जो बुद्धि ग्राह्य नहीं है। सरोज के संवतों को जन्मकाल मानने वालों का पथ-निर्देश करने वाले श्री ग्रियर्सन (१४५) तक सं० १७३८

(१) भूषण, पृष्ठ ८३-८८, ८८-९४। (२) वहीं, पृष्ठ ९७-१०२।

को जन्मकाल नहीं मानते। वे भूषण को सन् १६६० ई० में समुपस्थित मानते हैं। ग्रियर्सन के चरण-चिह्नों पर चलने वालों में अग्रगण्य मिश्रबन्धुओं ने भी विनोद में (४२६) भूषण का जन्मकाल अनुमान से सं० १६७० के लगभग माना है और इनका देहावसान काल सं० १७७२ दिया है। खोज रिपोर्ट[1] भी सरोज के इस संवत् को भूषण का जन्मकाल नहीं मानतीं। फिर भगीरथ जी को ही इस सम्बन्ध में इतना भगीरथ प्रयत्न करने की क्या सूझ पड़ी, जो वे इतिहास उलटने पर उतारू हो गये। सरोज के प्रथम एवं द्वितीय संस्करणों में संवतों के साथ 'में' उ० है ही नहीं, अस्तु 'मूलभास्ति कुतो शाखा'।

भूषण के सम्बन्ध में जितनी किंवदंतियाँ हैं, प्रायः सब का आदि स्रोत सरोज ही है।

५६८।५२४

(२) भगवत रसिक, वृन्दावन निवासी, माधवदास जी के पुत्र, हरिदास जी के शिष्य, सं० १६०१ में उ०। इनकी कुण्डलियाँ बहुत सुन्दर हैं।

सर्वेक्षण

भगवत रसिक हरिदास जी के शिष्य नहीं थे, उनके द्वारा स्थापित हरिदासी-सम्प्रदाय के अनुयायी अवश्य थे। साथ ही उनके पिता का नाम माधवदास नहीं था। इनका सं० १६०१ भी अशुद्ध है। सरोजकार ने इस संवत् की कल्पना स्वामी हरिदास जी के समय को ध्यान में रखते हुए की है। प्रश्न है कि आखिर ये सब तथ्य सरोजकार को कहाँ से मिले। उन्होंने ये सब बातें योंही तो दे न दी होंगी। असल बात यह है कि सरोजकार ने परिचय दूसरे व्यक्ति का दिया है और नाम तथा उदाहरण दूसरे व्यक्ति का। परिचय का आधार भक्तमाल है। भक्तमाल में एक भगवन्त मुदित नाम के भक्त हैं जिनके पिता का नाम माधवदास था।

माधव सुत संमत रसिक, तिलक दाम धरि सेव लिय
भगवत मुदित उदार जस, रस रसना आस्वाद किय ११८

प्रियादास जी की टीका के अनुसार इन भगवन्त मुदित के गुरु का नाम हरिदास था, जो वृन्दावन में गोविन्द देव जी के मन्दिर के अधिकारी थे। सरोजकार ने गुरु का यह नाम प्रियादास से लिया, पर हरिदास को प्रसिद्ध स्वामी हरिदास समझने की भूल भी कर दी। यह भगवन्त मुदित जी नवाब शुजाउलमुल्क के दीवान थे। रूपकला जी के अनुसार यह शुजाउलमुल्क आगरे के शासक थे।

सूजा के दीवान, भगवन्त रसवन्त भये
वृन्दावन वासिन की सेवा ऐसी करी है
विप्र कै गुसाईं साधु कोऊ व्रजवासी जाहु
देत बहु धन एक प्रीति मति हरी है
सुनी गुरुदेव अधिकारी श्री गोविन्द देव
नाम हरिदास, जाय देखें चित धरी है
जोग्यताई सींवां, प्रभु दूधभात माँगि लियो
कियो उतसाह तऊ पेखैं अरबरी है ६२७

---

(१) शिवराज भूषण, १९०३।४८, १९२३।६१ ए, बी, १९२६।६७ ए, बी।

इन भगवन्त मुदित का समय सं० १७०७ है। इसी साल इन्होंने 'वृन्दावन शतक' नामक ग्रन्थ लिखा था।

संवत दस सै सात सै अरु सात वर्ष हैं जानि
चैत मास में चतुर वर भाषा कियो बखानि १४६

इनके लिखे निम्नलिखित ग्रन्थ खोज में मिले हैं—

१—सेवक चरित्र, १६०६।२३ बी। इस ग्रन्थ में हित-सम्प्रदाय के प्रसिद्ध भक्त सेवक जी का चरित्र है।

२—रसिक अनन्यमाल, १६०६।२३ सी। यह २३६ पृष्ठों का बड़ा ग्रन्थ है। इसमें हित-हरिवंश और उनके अनुयायियों के चरित्र हैं। हित चरित्र और सेवक चरित्र इसी ग्रन्थ के अंश हैं।

३—वृन्दावन शतक, १६१२।२१। इसमें कुल १४६ विविध छन्द हैं। इसकी रचना सं० १७०७ में हुई। इनके ग्रन्थों से स्वयं स्पष्ट है कि यह राधावल्लभी सम्प्रदाय के थे।

भगवन्त मुदित के इस परिचय से स्पष्ट है कि सरोजकार ने भगवत रसिक का नाम और उनकी कविता का उदाहरण तो ठीक दिया है, पर परिचय भगवन्त मुदित का दे दिया है।

हरिदासी सम्प्रदाय के आठ प्रमुख आचार्य हुए हैं। सातवें आचार्य ललित किशोरी जी थे, जिनका जन्म अगहन बदी ८, सं० १७३३ को और मृत्यु पौष बदी ६, सं० १८२३ को हुई। आठवें आचार्य ललितमोहिनी जी थे, जिनका जन्म आश्विन सुदी १०, सं० १७८० को और मृत्यु फागुन बदी ६, सं० १८५८ को हुई। भगवत रसिक इन्हीं आठवें आचार्य ललितमोहिनी जी के शिष्य थे। सहचरिशरण जी ने इन आचार्यों का अवतार और अन्तर्धान काल आचार्योत्सव सूचना में दिया है।

ललित किसोरी ललित प्रगट पद अगहन बदि आठैं दिन
सत्रह सै तैंतीस मनोहर ताहि न भूलौं इक छिन
अन्तरध्यान पौष बदि छठि कौं रसिकन के उर दाहू
वर्ष अठारह सै तेईसा हर्ष हर्‌यो सब काहू
ललित मोहिनी प्रभा सोहिनी आश्विन सुदि दसमी कौं
कियो प्रकास सरद जनु चन्द्रम वर्षायो सु अमी कौं
संवत सत्रह सै सु असी कौ अति प्रमोद कौ दानी
सरन माघ बदि इकदसमी को सबही नै यह जानी
फागुन बदि नवमी को प्रमुदित रंग महल को गमने
वर्ष अठारह सौं अट्ठावन निरखत राधा रमने

—ब्रजमाधुरी सार, पृष्ठ ३४०

ब्रजमाधुरी सार[१] में इनका जन्मकाल सं० १७६५ अनुमित है। शुक्ल जी ने भी इनका

(१) ब्रजमाधुरी सार, पृष्ठ ३३६।

जन्मकाल यही माना है और इनका रचनाकाल सं० १८३०-५० दिया है।[1] ललितमोहिनी दास जी की मृत्यु के अनन्तर सं० १८५८ में भगवत रसिक जी ही को हरिदासी सम्प्रदाय का नवाँ आचार्य होना चाहिये था। पर इन्होंने अस्वीकार कर दिया और आचार्य-परम्परा समाप्त हो गई।[2]

भगवत रसिक जी ने वस्तुतः बहुत सुन्दर कुण्डलियाँ लिखी हैं। इन्होंने छप्पय, पद, दोहे और अरिल्ल भी लिखे हैं। अपनी बानी के सम्बन्ध में इनका यह कथन है—

भगवत रसिक रसिक की बातें
रसिक बिना कोउ समुझि सकै ना

इनकी कविता में शृङ्गार और वैराग्य दोनों का सुन्दर वर्णन हुआ है।[3] खोज में भगवत रसिक जी के निम्नलिखित ग्रन्थ मिले हैं—

१—रसिक निश्चयात्मक ग्रन्थ, १६००।२६,१६४१।५२६। इसमें वैष्णव-सम्प्रदाय सम्बन्धी निज सिद्धान्तों तथा उपदेशों का वर्णन है। इसमें कुल ४७ छन्द हैं।

२—नित्यबिहारी जुगल ध्यान, १६००।३०,१६२३।२०। राधाकृष्ण की युगल-मूर्ति वृन्दावन, सखी समाज आदि का ध्यान निरूपण।

३—अनन्य रसिकाभरण, १६००।३१। श्री राधाकृष्ण का नित्य विहार वर्णन। इसका एक अन्य नाम 'रस शृङ्गार केलि सागर' भी है। यह १२ झाँकियों में विभक्त है।

४—निश्चयात्मक ग्रन्थ उत्तरार्द्ध, १६००।३२। इस ग्रन्थ में वैष्णवमत सम्बन्धी निजी सिद्धान्त हैं। इसी ग्रन्थ के एक पद में भक्तों की नामावली दी गई है, जिसमें अकबर बादशाह को भी सम्मिलित कर लिया गया है। यह पद ब्रजमाधुरी सार में संकलित ३१ वाँ पद है।

५—निर्विरोध मनरंजन, १६००।३३। वैष्णवमतानुसार उपदेश, शिक्षा तथा निज सिद्धान्त कथन।

६—जुगल ध्यान, १६३२।२०। यह नित्यबिहारी जुगल ध्यान से भिन्न ग्रन्थ है। इसमें राधाकृष्ण के रूप और शृङ्गार तथा उनके प्रेम और भक्ति का वर्णन है। सरोज के तृतीय संस्करण में इनका नाम भगवत रमित है। यही नाम ग्रियर्सन (६१) में भी है।

५६६।५१४

(३) भगवन्त राय कवि १। इन्होंने सातों काण्ड रामायण की महा अद्भुत रचना कवित्तों में की है।

सर्वेक्षण

यह भगवन्तराय असोथर, गाजीपुर, जिला फतेहपुर के प्रसिद्ध राजा भगवन्तराय खींची हैं। खींची चौहान क्षत्रियों की एक शाखा विशेष है। भगवन्त राय बड़े ही वीर और गुणग्राही राजा थे। इनके दरबार में सुखदेव मिश्र, शम्भुनाथ मिश्र, मल्ल, भूधर, गोपाल आदि अनेक कवि थे। इनके मरने पर किसी कवि ने कहा था—

---

(१) हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ ३५७। (२) ब्रजमाधुरी सार, पृष्ठ ३४०-४१। (३) वही।

भूप भगवन्त सुरलोक को सिधारो आजु
आजु कवि गन को कलपतरु टूटि गो

लखनऊ के नवाब सआदत खाँ के साथ इनका युद्ध हुआ था, जिसमें इन्होंने परम वीरता प्रदर्शित की थी। गोपाल कवि ने इस युद्ध का वर्णन भगवन्तराय की विरुदावली[१] में किया है।

लखनऊ में दो सआदत हुए हैं। एक तो हैं सआदत खाँ बुरहानुलमुल्क, जिन्होंने लखनऊ की नवाबी की नींव डाली। इनका शासनकाल सं० १७७९-९६ है। इसी शासनकाल के आधार पर अनेक लोगों ने भगवन्तराय का कविताकाल सं० १७८०-९७ माना है। दूसरे सआदत, सआदत अली खाँ हैं जिन्होंने सं० १८५५-७१ तक राज्य किया। निश्चय ही भगवन्तराय खींची का युद्ध इन दूसरे सआदत से नहीं हुआ, क्योंकि प्रसिद्ध सुखदेव पिंगली इनके दरबार में रह चुके थे और इन सुखदेव का रचनाकाल सं० १७२८-६५ माना जाता है। अतः सआदत से अभिप्राय लखनऊ के प्रथम नवाब से ही है पाँचवें नवाब से नहीं, जैसा कि खोज रिपोर्ट में स्वीकार किया गया है।[२]

ग्रियर्सन (३३३) में सप्लीमेण्ट टू फतेहपुर गजेटियर, पृष्ठ ८ के आधार पर लिखा है कि इन्होंने कई वर्षों तक बादशाही सेना का सामना किया और अपनी स्वतन्त्रता की रक्षा की। परन्तु सं० १८१७ में धोखे से मारे गये। तदनन्तर इनका पुत्र रूपराम गद्दी पर बैठा।

भगवन्त राय का लिखा हुआ एक ग्रन्थ खोज में मिला है जिसका नाम है 'हनुमान जी के कवित्त'[३]। इसमें ५२ कवित्त हैं। इसी का नाम हनुमन्त पचासा' भी है। इसमें सुन्दर काण्ड की कथा तथा हनुमान के नखशिख सम्बन्धी कवित्त हैं। शुक्ल जी का अनुमान है कि बहुत सम्भव है कि ये कवित्त इनकी लिखी रामायण के ही अंश हों।[४] सरोज में भगवन्त राय के दो कवित्त उद्धृत हैं। उद्धरण देने के पहले लिखा गया है, रामायण सुन्दर काण्ड। पहला उद्धरण है—

सुबरन गिरि सो सरीर प्रभा सोनित सी
तामैं झलमलै रंग बाल दिवाकर को

यह हनुमन्त पचासा का पहला कवित्त है। इससे शुक्ल जी का अनुमान पुष्ट होता है। सरोज में उद्धृत दूसरा कवित्त गजोद्धार सम्बन्धी है। विनोद (७४२) में खोज के आधार पर इनके एक ग्रन्थ हनुमत्पचीसी, रचनाकाल सं० १८१७, का उल्लेख है। यह सम्भवतः हनुमन्त पचासा का ही एक अंश है।

६००।५१५

४—भगवन्त कवि २। इनके शृङ्गार के कवित्त बहुत सुन्दर हैं।

सर्वेक्षण

जैसा कि ग्रियर्सन (३३३) का अनुमान है, यह शृङ्गारी भगवन्त, भगवन्तराय खींची ही हैं। कवि

---

(१) खोज रि० १९०१।९८। (२) वही। (३) खोज रि० १९२३।४२, १९२६।४९ए, बी। (४) हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ ३६२।

अनेक रसों की कविताएँ लिखते ही हैं। केवल रस-भेद से कविभेद करना ठीक नहीं। भगवन्त राय के हनुमन्त पचासा में भी कवि छाप केवल भगवन्त है।

६०१।५०१

(५०) भगवान कवि। ऐजन। इनके शृङ्गार के कवित्त बहुत सुन्दर हैं।

सर्वेक्षण

ग्रियर्सन (३३३) में इन भगवान को भी भगवन्त राय खीँची में मिला दिया गया है। किन्तु यह ठीक नहीं, क्योंकि भगवन्तराय खीँची की छाप भगवन्त है, इस कवि की छाप भगवान है। भगवान नाम के कई कवि मिले हैं, पर किसी के साथ सरोज के इन भगवान के अभेद-स्थापन के कोई सूत्र उपलब्ध नहीं हैं।

१—भगवान, सं० १८५५ के पूर्व वर्तमान। अनुभव विलास के रचयिता।१९३८।१।

२—भगवान, इनकी रचनाएँ ख्याल टिप्पा नामक संग्रह में हैं—१९०२।५७।

३—भगवान, गुरु गैबो ग्रन्थ और तमाचा के रचयिता—१९२६।३४ ए, बी।

४—भगवानदास, नल राजा की कथा के रचयिता। जन्मकाल सं० १७१७, रचनाकाल स० १७४२—विनोद ५२२।

५—भगवानदास, भाषामृत के रचयिता। जन्मकाल सं० १७२५, रचनाकाल सं० १७५६ —विनोद ६०५।

१९२३।४१ पर एक भगवान और हैं। इनके विचारमाल का विवरण दिया गया है, पर यह ठीक नहीं। यह रचना अनाथपुरी की है। इसका विवरण अनेक बार किया गया है। सरोज में भी इसका उल्लेख है[1]।

६०२।५०३

(६) भगवतीदास ब्राह्मण, सं० १६८८ में उ०। इन्होंने 'नासिकेत' उपाख्यान भाषा में बनाया।

सर्वेक्षण

सरोजकार ने भगवतीदास ब्राह्मण का विवरण महेश दत्त के भाषाकाव्यसंग्रह के आधार पर दिया है। इस ग्रन्थ में स्पष्ट शब्दों में लिखा है कि इन्होंने संवत् १६८८ में नासिकेतोपाख्यान का निर्माण किया और १७१४ में स्वर्गीय हुए।[2] इस ग्रन्थ की कई प्रतियाँ खोज में मिली है जिनमें रचनाकाल-सूचक यह छन्द है—

---

(१) देखिए, यही ग्रन्थ, कवि संख्या २६। (२) भाषाकाव्यसंग्रह, पृष्ठ,१२७।

संवत सोलह सै अट्ठासी
जेठ मास दुतिया परगासी
सुकुल पच्छ औ सोम क बारा
मृग सिर नखत कीन्ह उपचारा
सन्त भक्ति करि सेवा, हरि चरनन कै आस
नासिकेत गुन गावै, विप्र भगौती दास

—खोज रि० १९२३।४८ ये[१]

यह ग्रन्थ संस्कृत से अनूदित है। ग्रियर्सन (२४५) और विनोद (४०९) में इस कवि के संवत् की भ्रष्टता तो है ही, जो उ० को उत्पन्न मानने के कारण है। विनोद में इनके एक अन्य ग्रन्थ 'चेतन कर्म चरित्र' का भी उल्लेख है। इस ग्रन्थ का रचनाकाल सं० १७३२ दिया गया है। यह ग्रन्थ जैन भगवतीदास का है, विप्र भगवती दास का नहीं। रिपोर्ट १९२३।४८ में इस सम्बन्ध में सचेत भी कर दिया गया है, फिर भी यह प्रमाद, विनोद में हो ही गया है।

६०३।५०४

(७) भगवानदास निरंजनी। इन्होंने भर्तृहरि शतक का कवित्तों में भाषा किया है।

सर्वेक्षण

भगवानदास निरंजनी के निम्नलिखित ग्रन्थ खोज में मिले हैं—

१—अमृतधारा, १९०६।१३६, १९२६।४८, १९२९।३६ डी। इस ग्रन्थ में ज्ञान और वैराग्य के विचार है। इसकी रचना सं० १७२८ कार्तिक बदी ३ को हुई –

सत्रह सै अट्ठाइसा संबत सिष्य सुजान
कातिक तृतिया प्रथम ही, पूरन ग्रन्थ प्रमान

अगले दोहे में कवि ने अपने स्थान और नाम की सूचना दी है—

मान मुकाम प्रमान यह चेत्र वास सुनान
तहाँ ग्रन्थ पूरन प्रगठ यों भाषै भगवान

कवि के गुरु का नाम अर्जुनदास था—

अमृतधारा ग्रन्थ यह कह्यो वेद परमान
अरजुनदास प्रकाश युत तत सेवक भगवान

२. कार्तिक माहात्म्य कथा १९२२।१३, १९२९।३६ ए बी सी, १९३८।१० बी। इस ग्रन्थ का प्रारम्भ सं० १७४२, पौष सुदी ५ को हुआ था।

---

(१) नासिकेत गरुड़ पुराण १९२३।४८ ए बी; नासिकेतोपाख्यान १९२३।४८ सी; नासिकेत-कथा प्रसंग १९२६।११; पोथी नासकेत १९२९।३८; नासिकेत कथा १९४१।१७०।

सत्रह से संवत सरिस बयालीस पुनि मान
पूस पंचमी ससि सहित, आरम्भ करन दिन जान

—खोज रि० १९३८।१० बी

इसकी समाप्ति सं० १७४३, फागुन कृष्ण ८, बुधवार को बारल बैहट स्थान में हुई।

संवत सत्रह सं प्रगट, तैंतालिस पुनि और
फागुन कृष्ण अष्टमी, बुधवार सिरमौर
बारल बहट अस्थान है, सुभावि पुनु कौ वास
तहाँ ग्रंथ पूरन भयो, निर्मल धर्म विलास

—खोज रि० १९२९।३६-ए

इस ग्रन्थ में कुल २९ अध्याय हैं।

३—गीतामाहात्म्य, १९२३।४२ ए बी सी, १९४४।२५१। यह माहात्म्य पद्मपुराण के आधार पर है। कुछ प्रतियों की पुष्पिकाओं से सूचित होता है कि यह ग्रन्थ भगवानदास निरञ्जनी का है।[1]

४—जैमिनी अश्वमेध, १९३८, १० ए। यह जैमिनी पुराण का हिन्दी रूपान्तर है। इसमें पाण्डवों के अश्वमेध की कथा है। इसकी रचना सं० १७५५, ज्येष्ठ सुदी २, शुक्रवार को हुई।

सत्रह सै पिचावनो दुतिय जेठ परमान
स्वाति सुक्ला, असुर गुरु अरंभ कै दिन जान ५

इस ग्रन्थ से भी इनके गुरु का नाम अर्जुनदास सिद्ध होता है।

अरजुनदास निरंजनी तास सिष्य भगवान
पांडव की कीरति प्रगट कहै बुद्धि उन्मानि ६

५—अनुभव हुलास, १९३८।९। इस ग्रन्थ में अनुभव द्वारा ब्रह्म विचार की बात १३७ दोहों में कही गई है। १२४वें दोहे में भगवान शब्द आया है।

अखंड ब्रह्म कूं खंडित, जे कहिए अज्ञान
क्षेत्रनि मे क्षेत्रज्ञ हूं, यौं भाखै भगवान १२४

यह भगवान् कृष्ण वाचक भी हो सकता है, पर शैली से यह भगवानदास निरञ्जनी ही जान पड़ता है।[2]

६—भर्तृहरि वैराग्य शतक, वैराग्य वृन्द, राज० रि० भाग ४, पृष्ठ ७८-७९। यह वैराग्य वृंद नाम से भर्तृहरि के वैराग्यशतक का अनुवाद है।

---

(१) खोज रिपोर्ट १९२३।४८ बी, १९४४।२५१ (२) मिलाइए, ऊपर उद्धृत अमृतधारा का दूसरा दोहा।

मूल भर्तहरि शत यहै, ताको धरि मन आश
ता परिभाषा नाम यह, वैराग्य वृंद परकास

७—गीता वार्तिक, १९२६।३५। गीता का यह गद्यानुवाद सं० १७५६ में प्रस्तुत किया गया। रिपोर्ट में इसे भगवानदास की रचना कहा गया है। मेरा अनुमान है कि यह इन्हीं भगवानदास निरञ्जनी की रचना है। इन्होंने गीतामाहात्म्य लिखा ही है, उस का अनुवाद भी यह कर सकते हैं। इसका रचनाकाल भी इस निष्कर्ष के अनुकूल है। भगवानदास निरञ्जनी निर्गुनिए थे, फिर भी जन साधारण के लिए इन्होंने सगुणोपासना के संस्कृत ग्रन्थों का भाषानुवाद किया। इससे इनकी साम्प्रदायिक अकट्टरता और उदारता प्रकट होती है। इनका रचनाकाल सं० १७२८-५६ है। अनुवादों में इन्होंने प्रायः दोहा-चौपाई का प्रयोग किया है। यह वारल विहटा क्षेत्रवास के रहने वाले थे।

६०४।५२०

(८) भगवान हित रामराय, इनके पद रागसागरोद्भव में हैं।

सर्वेक्षण

श्री रामराय जी अकबर के समकालीन थे। यह माध्व गौड़ेश्वर सम्प्रदाय के आचार्य थे। भक्तमाल में (छप्पय १९७) में इनका उल्लेख है। भारतेन्दु ने भी उत्तरार्द्धभक्तमाल (छप्पय १७५) में इनका नाम लिया है। श्री रामराय के शिष्य महाराजा भगवानदास थे, जो सम्भवतः जयपुर के नरेश थे। इन भगवानदास ने मानसी गङ्गा का पक्का घाट और हरदेव जी का मन्दिर गोवर्द्धन में बनवाया था, ऐसा खोज रिपोर्ट[1] का अभिमत है। परन्तु भक्तमाल की प्रियादास-कृत टीका के अनुसार हरदेव का मन्दिर भगवानदास मथुरा निवासी ने बनवाया था। बहुत से लेखकों और विद्वानों ने इन्हें भगवान हित रामराय मानकर श्री रामराय को हितानुयायी बताया है। हितु को हित कर देने के कारण यह भ्रम हुआ है। यह अकबरकालीन हैं, अतः इनका समय सं० १६५० के आस-पास होना चाहिए। यही समय इनके शिष्य इन भगवानदास का भी है, जो अपनी छाप भगवान हितु रामराय रखते थे। खोज में इनके निम्नलिखित ग्रन्थ प्राप्त हुए हैं—

(१) प्रेम पदारथ, १९४१।१६७। इस ग्रन्थ के इस छन्द से कवि के नाम का रहस्य भेद होता है।

जाको भावे यह कथा, सोई पुरुष पुरान
रामराय के हेत जानि के, कहे दास भगवान

(२) रुक्मिणी मंगल, १९४४।२५२ क। इस ग्रन्थ में भी ऐसी दो पंक्तियाँ हैं।

---

(१) खोज रिपोर्ट १९३८, पृष्ठ ५

ते धन्य सब विधि रूप कमनी मंगल तनमै गावहीं
श्री रामराय गिरिधरन भज भगवान प्रभु मन भावहीं

(३) प्रह्लाद चरित्र—१६४४।२५२ ख। इसमें भी ऐसी दो पंक्तियाँ हैं।

भक्तवछल गुन रूप निधाना
रामराइ हित कहे भगवाना

भक्तमाल (छप्पय ११७) में भक्तों का समादर करने वाले भक्त राजाओं की नामावली में इन भगवानदास का भी नाम है। इन भगवानदास के पद रागकल्पद्रुम द्वितीय भाग में हैं।

६०५।५२५

(६) भगवानदास मथुरा निवासी, सं० १५६० में उ०। इनके पद रागसागरोद्भव में हैं।

सर्वेक्षण

मथुरा निवासी इन भगवानदास का विवरण भक्तमाल में है—

भजन भाव आरूढ़ गूढ़ गुन वलित ललित जस
श्रोता श्री भागौत रहसि ज्ञाता अक्षर रस
मथुरापुरी निवास आस पद संतनि इक चित
श्रीजुत खोजी स्याम धाम सुखकर अनुचर हित
अति गंभीर सुधीर मति, हुलसत मन जाके दरस
भगवानदास श्री सहित नित, सुहृद सील सज्जन सरस १८८

प्रियादास के अनुसार इन्हीं भगवानदास ने गोवर्द्धन में हरदेव जी का मंदिर बनवाया—

जानिबे को पन पृथ्वीपति मन आई
यो दुहाई लै दिवाई माला तिलक न धारियै
मानि आनि प्रान लोभ केतिकनि त्याग दिए
छिए, नहीं जात जानि बेगि मारि डारियै
भगवानदास उर भक्ति सुख रास भर्यो
कर्यो लै सुदेस वेस, रीति लागि प्यारियै
रीझ्यो नृप देखि रीझि, मथुरा निवास पायो
मंदिर करायो हरिदेव सो निहारियै ६२१

रूपकला जी के अनुसार बादशाह ने भगवानदास जी की निष्ठा देख इन्हें मथुरा का शासक बना दिया था और भमवानदास जी का बनवाया हुआ श्री हरिदेव जी का मंदिर गोवर्द्धन के समीप अब भी वर्तमान है।

भगवानदास जी, श्री खोजी जी एवं श्याम जी के धाम के अनुचर थे। इन दोनों महात्माओं का उल्लेख भक्तमाल छप्पय ९७ में १७ सन्त विटपों में हुआ है।

सरोज में उदाहरण देते समय इन्हें भगवानदास ब्रजवासी कहा गया है। इनका एक पद उद्धत किया गया है, इस पद से यह वल्लभ-सम्प्रदाय के वैष्णव ज्ञात होते हैं। इस पद में वल्लभ, वल्लभ सुत, बिट्ठलनाथ और विट्ठलनाथ के सात पुत्रों में से गोकुलनाथ को छोड़ शेष छह का उल्लेख हुआ है।

श्री वल्लभ सुत परम कृपाल
तैसेइ श्री गिरिधर श्री गोविंद बालकृष्ण जू नयन विसाल
श्री वल्लभ रघुपति श्री जदुपति मोहन मूरति श्री घनश्याम
जन भगवान जाय बलिहारी यह सुनि जपौं तिहारो नाम

भक्तमाल में भगवत गुणानुवाद करने वाले एक जनभगवान का उल्लेख १४६वें छप्पय में २१ भक्तों के साथ हुआ है। यही जनभगवान सम्भवतः वल्लभ-सम्प्रदाय के जनभगवान हैं, जो मथुरा निवासी भगवानदास से सम्भवतः भिन्न हैं; क्योंकि मथुरा वाले भगवानदास तो खोजी एवं श्यामदास के अनुयायी हैं। सरोजकार ने वर्णन किसी का किया है और उदाहरण किसी का दिया है।

खोज में भाषामृत नामक श्रीमद्भगवद्गीता का ६१८ पन्ने का एक विशाल अनुवाद मिला है।[1] यह रामानुजाचार्य के भाष्य के आधार पर रचा गया है। ग्रन्थ का प्रतिलिपि काल सं० १७५६ है। ग्रन्थ के प्रारम्भ और परिसमाप्ति में लेखक की ओर से जो कथन है उसमें भगवद्दासेन शब्द आया है, जिससे अनुवादक का नाम भगवानदास प्रतीत होता है। लेखक की पुष्पिका से प्रतिलिपिकर्त्ता की यह पुष्पिका अधिक महत्व की है।

"संवत् १७५६ मार्गशीर्ष मास शुक्ल पक्षे रविवासरे आसोपा नाम सहर के विषे ए ग्रंथ समाप्त किया है।...श्री स्वामी कूबा जी के पोता शिष्य। श्री स्वामी दामोददास जी के शिष्य। श्री पतिवादी भयंकराचार्य के विद्यारथी नाम भगवानदास वैष्णव तिन ए भाषा ग्रंथ गीता भाष्य का अर्थ व्रज बोली माहि प्रकट कियो है।"

हो सकता है यह अनुवाद प्रसङ्ग प्राप्त भगवानदास का ही हो। इस सम्बन्ध में कुछ निश्चयपूर्वक नहीं कहा जा सकता।

६०६।५०५

(१०) भोज कवि प्राचीन १, सं० १८७२ में उ०।

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध में कोई सूचना सुलभ नहीं। ६०७ संख्यक भोज इनसे भी लगभग १०० वर्ष पुराने हैं, अतः इन्हें भोज प्राचीन कहना ठीक नहीं।

---

(१) खोज रिपोर्ट १९००।६६

६०७।५०६

(११) भोज कवि (२), मिश्र, सं० १७८१ में उ०। यह महाराज राव बुद्ध हाड़ा बूंदी वाले के यहाँ थे और 'मिश्र शृङ्गार' नामक ग्रन्थ इन्होंने बहुत सुन्दर बनाया है।

सर्वेक्षण

भोज मिश्र के आश्रयदाता राव बुद्ध सिंह ने सं० १७८४ में 'स्नेह तरंग' की रचना की थी[1], अतः सरोज में दिया सं० १७८१ इनका रचनाकाल ही है। इस कवि के सम्बन्ध में अभी तक कोई अन्य सूचना सुलभ नहीं हुई है।

६०८।५०७

(१२) भोज कवि (३), बिहारीलाल बन्दीजन चरखारी वाले, सं० १६०१ में उ०। यह कवि महाराज रतन सिंह बुन्देला चरखारी वाले के यहाँ थे। इनकी कविता महा सुन्दर है। इन्होंने 'भोज भूषण' नामक ग्रन्थ बहुत अद्भुत रचा है। यह शरफ़ो नामक वेश्या पर बहुत स्नेह रखते थे, अतः उसकी तारीफ़ में बहुत कवित्त बनाए है। 'चाह के हैं चाकर' यह कवित्त बहुत सुन्दर है। इनका बनाया हुआ 'रस विलास' नामक एक और ग्रन्थ बहुत सुन्दर है।

सर्वेक्षण

चरखारी वाले भोज के निम्नलिखित तीन ग्रन्थ खोज में मिले हैं—

१. रसिक विलास, १६०३।५६। इसी ग्रन्थ का उल्लेख सरोज में हुआ है। यह रस ग्रन्थ है।

२. उपवन विनोद, १६०६।१५ बी। यह ग्रन्थ चरखारी नरेश नृप विक्रम के लिए लिखा गया था।

सु नजर नित सेवत उपर अति हिय सुजस उमाह
सुकवि जनन को कलपतरु नृप विक्रम जग माह

नृप विक्रम का शासनकाल सं० १८३६ से लेकर १८८६ तक है और इस ग्रन्थ का रचनाकाल सं० १८८४ की कातिक पूर्णिमा है।

संवत श्रुति(४) वसु(८) वसु(८) ससि(१) हिमंत
कातिक सुदि पूनो ससि लसंत
यह ग्रन्थ ति दिन रचि सुकवि भोज
उर धरि करि हरि पद सरोज

ग्रन्थान्त में कवि ने इसका विषयोल्लेख इन शब्दों में किया है—

---

(१) खोज रिपोर्ट १६३८।१६

वृद्ध ग्रायुरवेद भेद सभेद भुम्मि विधान
हेत स्वाद सुगंध दोष ग्रदोष ग्रौषद जान
लोक की बहुधा मुनिदन की कही पहचान
सोध बाग विधान या विधि भोजराज बखान १३५

यह ग्रन्थ सारङ्गधर के संस्कृत ग्रन्थ के आधार पर लिखा गया है—

सारंगधर कृत ग्रन्थ के कही सु कही प्रवीन
होबो ग्रनहोबो सकल ईश्वर के ग्राधीन १३६

३. भोजभूषण १९०५।६५, १९०६।१५ ए। इस ग्रन्थ का भी उल्लेख सरोज में हुआ है। यह ग्रलङ्कार ग्रन्थ है। पुष्पिका में आश्रयदाता का नाम आया है—

"इति श्रीमन्महाराजाधिराज श्री महाराजा श्री राजा छत्रसाल जू वंशावतंस श्रीमन्महाराजाधिराज श्री महाराजा श्री राजा रतनसिंघ बहादुर जू देव ... भोजराज सुकवि विरंचते भोज भूषन नाम काव्ये षड्विधलंकार निरूपने नांमं षष्टमो प्रकाश।"

इस ग्रन्थ में कवि ने ग्रपने गुरु रामानुज की वंदना की है—

श्रीमत श्री रामानुजहि वंदत हौं कह भोज
जिह प्रसाद ते बसत है बानी वदन सरोज

सम्भवतः यही रामानुज चरखारी वाले खुमान के भी गुरु थे, जिसका उल्लेख उन्होंने लक्ष्मण-शतक में रामाचार्य नाम से किया है।[1]

रतन सिंह विक्रमादित्य के ज्येष्ठ पुत्र रणजीत सिंह के पुत्र थे ग्रौर रणजीत सिंह का समय से पूर्व मृत्यु हो जाने के कारण विक्रमादित्य के पश्चात् गद्दी पर बैठे थे। इनका शासनकाल सं० १८८६-१९१७ है, ग्रतः सरोज में दिया सं० १९०१ ठीक है ग्रौर कवि का रचनाकाल है।

६०९।५१८

(१३) भौन कवि प्राचीन (२), बुन्देलखंडी, सं० १७६० में उ०। इनके श्रृङ्गार के सुन्दर कवित्त है।

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध में कोई सूचना सुलभ नहीं।

६१०।५१३

(१४) भौन कवि १, नरहरि वंशी वंदीजन, बेंती जिले रायबरेली वाले, सं० १८८९ में

(१) देखिए, यही ग्रन्थ, कवि संख्या १३५

उ०। यह महाकवि श्रृङ्गार-रस के वर्णन में बड़े प्रवीण थे। इनका बनाया हुआ अलङ्कार का 'श्रृङ्गार रत्नाकर' नामक ग्रन्थ बहुत ही सुन्दर है। इनके पुत्र दयाल कवि भी कविता में निपुण हैं।

सर्वेक्षण

सरोज में 'श्रृङ्गार रत्नाकर' को अलङ्कार ग्रन्थ कहा गया है। किन्तु यह ठीक नहीं प्रतीत होता। नाम से तो यह रस ग्रन्थ जान पड़ता है। भौन कवि का एक ग्रन्थ रसरत्नाकर[1] खोज में मिला है। सम्भवतः यही सरोज उल्लिखित श्रृङ्गार रत्नाकर ग्रन्थ है। यह नायक-नायिका भेद का ग्रन्थ है। इसमें कुल ४३० छन्द हैं। ग्रन्थ अत्यन्त प्रौढ़ है। इस ग्रन्थ की पुष्पिका से ज्ञात होता है कि यह भौन कवि महापात्र खुशालचन्द के पुत्र थे और इन्होंने इस ग्रन्थ की रचना किसी महाराजकुँवर रामबक्स सिंह के लिए की थी।

"इति श्री महापात्र खुशालचंद तदात्मज श्री भौन कवि कृत श्री महाराजकुमार श्री ठाकुर राम बक्स हेत कृते रसरत्नाकरोऽयं ग्रंथ समाप्तम्।"

ग्रन्थ में रचनाकाल नहीं दिया गया है। प्राचीनतम प्रति सं० १८६१ चैत्र बदी १२ की लिखी हुई है।[2] सरोज में दिया हुआ सं० १८८१ कवि का रचनाकाल ही हो सकता है, जन्मकाल कदापि नहीं हो सकता, जैसा कि ग्रियर्सन (६११) में स्वीकृत है।

सं० १८५१ में रचित 'शक्ति मंजरी' इनकी रचना नहीं है, जैसा कि खोज रिपोर्ट में स्वीकृत है।[3] यह भावन की कृति है। विनोद में भी (६८७) इसे भौन की रचना मान लिया गया है तथा इसी के अनुकूल इनका जन्मकाल सं० १८२५ अनुमित है।

६११।५१२

(१५) भावन कवि, भवानी प्रसाद पाठक, मौरावाँ, जिले उन्नाव के, सं० १८६१ में उ०। यह महाराज बड़े नामी कवि हो गए हैं। इनका बनाया हुआ काव्यशिरोमणि नामक ग्रन्थ बहुत सुन्दर है। इस ग्रन्थ में पिङ्गल, अलङ्कार नायक-नायिका, दूती-दूत, नव रस, षट्ऋतु इत्यादि सब काव्य के अङ्ग विस्तारपूर्वक वर्णन किए हैं। इस ग्रन्थ का दूसरा नाम काव्यकल्पद्रुम भी है।

सर्वेक्षण

भावन जी का वास्तविक नाम भवानीप्रसाद था। यह मयूरध्वज नगर, मौरावाँ जिला उन्नाव के निवासी थे। यह छितुपुरी पाठक ब्राह्मण थे। इनके छोटे भाई का नाम फणीन्द्र दत्त; पिता का नाम गङ्गाप्रसाद, पितामह का शीतल शर्मा और प्रपितामह का भाव दत्त था।[4] भावन के लिखे तीन ग्रन्थ खोज में मिले हैं—

---

(१) खोज रिपोर्ट १९१२।२२, १९२३।५२ ए बी, १९४७।२७२ (२) खोज रिपोर्ट १९४७।७२ (३) खोज रिपोर्ट १९२३।५२ सी (४) खोच रिपोर्ट १९४७।२६० ग

(१) कवित्त १९४७।२६० क

(२) बरवै, १९४७।२६० ख। इसमें विविध जाति की नायिकाओं का वर्णन है।

(३) शक्ति-चिंतामणि, १९०९।२८, १९२३।५२ सी, १९२६।५७, १९४७।२६० ग घ।

शक्ति-चितामणि का रचनाकाल वैशाख सुदी ५, गुरुवार, सं० १८५१ है--

१ ५ १५
शशि शर धृत संवत प्रगट, मधु रितु, माधव मास
शुक्ल पक्ष गुरु पंचमी कीन्हौं ग्रन्थ प्रकाश ३८

१९०९, १९२३, १९२६ वाली रिपोर्टों में इस ग्रन्थ को भौन कवि का माना गया है। इन प्रतियों से कवि के सम्बन्ध में कोई भी उद्धरण रिपोर्टों में नहीं दिए गए हैं। १९४७ वाली रिपोर्ट में इस ग्रन्थ से कवि परिचय सम्बन्धी ये छन्द उद्धृत हैं—

गंगा जू ते उतर दिसि जोजन तीनि प्रमान
नाम मयूरध्वज नगर जाहिर सकल जहान २५

भावदत्त छितुपुरी, पाठक तहां प्रधान
आठ पुत्र तिनके भए, विद्या बुद्धि निधान ३२

तिनमें शीतल शर्म यक, ज्योतिर्विद बुधिवंत
चारि पुत्र तिनके भए, ते चारयौ मतिवंत ३३

तिन चहून में जानिए, जेठे गंग प्रसाद
विद्या बुद्धि विवेक निधि, वैष्णव भक्त अविवाद ३४

तिनके द्वै सुत भे प्रगट, प्रथम भवानीदत्त
पुनि फणींद्र दत्तहि गनौ, निपट अग्य उनमत्त ३५

इनके गुरु का नाम सम्भवतः दयाल था।

यदपि कुटिल वंचक निपटरंचक भाग न भाल
तदपि पढ़ायो करि दया, श्री गुरु देव दयाल ३६

शक्ति-चिंतामणि नायिका भेद और नवरस का ग्रन्थ है।

भावन जी का प्रामाणिक रचनाकाल सं० १८५१ है। सं० १८९१ तक उनका परम वृद्ध रूप में जीवित रहना अशक्य नहीं।

६१२।५०२

(१६) भीषम कवि, सं० १६८१ में उ०। हज़ारे में इनके कवित्त हैं।

सर्वेक्षण

सरोज में दो भीषम हैं, एक यह ६१२ संख्यावाले, दूसरे संख्या ६२४ वाले। पहले का रचना-काल सं० १६८१ और दूसरे का सं० १७०८ दिया गया है। दोनों संवतों में केवल २७ वर्ष का अन्तर है, जो बहुत नहीं है। दोनों का निर्दिष्ट उदाहरण एक ही है। दोनों कवियों का विवरण कि इनकी कविता हजारे में है, एक ही हैं। अतः ये दोनों भीषम निश्चित रूप से एक ही हैं।

सरोज में इन भीषम का दानलीला विषयक एक शृङ्गारी सवैया उद्धृत है, जिससे इनका रीतिकालीन कवि होना स्पष्ट है। इनकी रचना हजारे में थी, अतः सं० १७५० के पूर्व इनका अस्तित्व असन्दिग्ध रूप से सिद्ध है। इनका रचनाकाल चाहे सं० १६८१ हो चाहे १७०८ और चाहे दोनों।[1]

नखशिख और नखशिख-वर्णन[2] नाम के दो ग्रन्थ खोज में मिले हैं, जिनके रचयिता भीषम हैं। सम्भवतः ये भीषम सरोज के ही भीषम, हैं। नखशिख में कुल ५१ कवित्त हैं। नखशिख-वर्णन के भीषम अंतर्वेदवासी कहे गए हैं और इन्हें सं० १६२४-५१ के बीच वर्तमान कहा गया है।

कुछ अन्य भीषम ये हैं—

१. भीषम, भागवत के अनुवादक[3]। यह निर्गुनियाँ हैं। इनकी गुरु परंपरा[4] है—कबीर, नीर, जंत्रलोक, पीतांबरदास, रामदास दयानन्द, हरिदास, स्यामदास, भीषम। विनोद में (३५६) इनका रचनाकाल सं० १७१० माना गया है।

२. भीषम, पुष्पावती के राजा गोविन्दचन्द के आश्रित और सं० १८०० के लगभग वर्तमान। इन्होंने माधवविलास या माधवानल कामकंदला[5] लिखा है।

३. भीषम, काशी नरेश महाराज बलवंत सिंह के आश्रित और भागवत दशमस्कंध पूर्वार्द्ध का बालमुकुन्द लीला नाम से अनुवाद करने वाले।[6]

४. भीषम, कोड़ा जहानाबाद, जिला फतेहपुर के रहने वाले, बांदा के प्रसिद्ध अनूपगिरि गोसाईं उपनाम हिम्मत बहादुर के आश्रित।[7]

६१३।५२१

(१७) भीषमदास। रागसागरोद्भव में इनके पद हैं।

सर्वेक्षण

भीषमदास का एक पद सरोज में उद्धृत है, जिससे इनका वल्लभ-सम्प्रदाय का वैष्णव होना ज्ञात होता है। इस पद में महाप्रभु वल्लभाचार्य के पुत्र गोसाईं विट्ठलनाथ की स्तुति है।

---

(१) खोज रिपोर्ट १९२६।६२ (२) खोज रिपोर्ट १९४७।२६३ (३) खोज रिपोर्ट १९१७।२५ ए बी, १९२६।४६ ए बी सी डी ई एफ (४) खोज रिपोर्ट १९३८।१२ बी, पृष्ठ ११० (५) खोज रिपोर्ट १९४४।२६१ (६) खोज रिपोर्ट १९०३।१२ (७) मातादीन मिश्र कृत कवित्त रत्नाकर, भाग २, कवि संख्या ७.

यहि कलि परम सुभग जन धनि श्री विट्ठलनाथ उपासी
जो प्रगटे व्रजपति विठलेश्वर तो सेवक व्रजवासी।

विट्ठलनाथ का निर्धन सं० १६४२ में हुआ था, अतः भीषमदास का भी रचनाकाल सं० १६४० के आस-पास जान पड़ता है। २५२ वैष्णवों की वार्ता में गुजरात के राजा भीम का वर्णन १८३वीं वार्ता में है। इन्हें अनेक पदों का कर्ता कहा गया है।

"सो इनके श्री गुसाईं जी के तथा श्री गोकुल के अनेक पद किये हैं।"

१७० वीं वार्ता भीषमदाम की है, जो पूरब के रहने वाले क्षत्रिय थे, गोकुल आकर गोसाईंजी के शिष्य हुए थे और सपरिवार गोकुल ही में बस गए, घर पुनः न लौटे। इनके कवि होने का उल्लेख वार्ता में नहीं हैं हो सकता है यह भी पद रचते रहे हों और अन्तिम 'छन्द से युक्त पद इन्ही का हो ।

सम्भवतः यही प्रसङ्ग प्राप्त भीषमदास हैं। इन भीषम का नामोल्लेख भक्तमाल छप्पय १०२ में हरि सुयश का प्रचुर प्रचार करने वाले १६ भक्तों के अन्तर्गत हुआ है।

खोज में एक निर्गुनिए भीषमदास मिले हैं, जिनका रचनाकाल सं० १८३०-९६ है। इनके १४ ग्रन्थों का विवरण लिया गया है। इनका वास्तविक नाम भीषमदास उपनाम अनन्तदास था। यह पहले अवध के नवाब शुजाउद्दौला के यहाँ फौज में सूबेदार थे पर किसी साधु की सङ्गति में आकर साधु हो गए थे।[१]

६१४।५२२

(१८) भंजन कवि, सं० १८३१ में उ०। इनकी कविता महा ललित है।

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध में कोई सूचना सुलभ नहीं। इनके केवल फुटकर छन्द मिलते हैं। ग्रियर्सन में इन भंजन (४६८) के अतिरिक्त एक और भंजन मैथिल (८८१) का उल्लेख है।

६१५।५१६

(१९) भूमिदेव कवि, सं० १९११ में उ०।

सर्वेक्षण

सरोज में सम्मिलित किए जाने योग्य अवस्था प्राप्त करने के लिए सरोज दत्त सं० १९११ को रचनाकाल मानना होगा, जैसा कि विनोद (२०४५) में स्वीकृत है, इसे जन्मकाल नहीं माना

(१) खोज रिपोर्ट १९३५।१४

जा सकता, जैसा कि ग्रियर्सन (६८८) में स्वीकार किया गया है। इस कवि के भी सम्बन्ध में कोई सामग्री सुलभ नहीं।

६१६।५१७

(२०) भवानीदास कवि, सं० १६०२ में उ०।

सर्वेक्षण

जैसा कि विनोद (१६६५) में स्वीकृत है, सरोज दत्त सं० १६०२ कवि का रचनाकाल है, न कि जन्मकाल, जैसा कि ग्रियर्सन (६८३) में माना गया है। खोज में इनका सूर्यमाहात्म्य[1] नामक ग्रन्थ मिला है। पद्मपुराण के सम्बन्धित अंश का अनुवाद हैं। इसका प्रतिलिपिकाल सं० १६२० है। यह प्रतिलिपि काल स्पष्ट सूचित करता है कि सरोज-दत्त संवत रचनाकाल है।

६१७।५०८

(२१) भानदास कवि, वंदीजन, चरखारी वाले, सं० १८५५ में उ०। राजा खुमान सिंह बुंदेला राजा चरखारी के पास थे और इन्होंने 'रूप विलास' नामक पिंगल बनाया है।

सर्वेक्षण

चरखारी नरेश खुमान सिंह प्रसिद्ध विक्रम साहि के पिता थे। इनका देहान्त सं० १८३६ में हुआ था, अतः सरोज दत्त सं० १८५५ स्पष्ट रूप से इनका रचनाकाल ही है। इनका जन्म सं० १८०० के आस-पास हुआ होगा। ग्रियर्सन (५०६) में इनका उपस्थितिकाल सं० १८७२ तदनुसार विनोद (१२१०) में इनका जन्मकाल सं० १८४५ और रचनाकाल सं० १८७२ दिया गया है। ग्रियर्सन और विनोद के ये संवत् ठीक नहीं हैं।

६१८।५०६

(२२) भूधर कवि काशीवासी, सं० १७०० में उ०। इनके कवित्त हजारे में हैं।

सर्वेक्षण

काशीवासी किसी भूधर का कोई शोध अभी तक नहीं मिल है। अन्य दो भूधर अवश्य मिले हैं।

(१) भूधर मिश्र, यह शाकद्वीपी मिश्र भार्गवराम के पुत्र थे। सं० १७३०, माघ बदी ६ को दक्षिणगढ़ नादेरी में 'रागमंजरी' नामक ग्रन्थ बनाना प्रारम्भ किया था। ग्रन्थ के अन्त में सं० १७४० का निर्देश है और लिखा है कि आजमशाह के प्रयाण के समय कवि ने सैन्य के साथ दन्तिन ग्राम देखा। कवि ने अपना निवास-स्थान सूबा बिहार, गढ़ मुंगेर लिखा।[2]

---

(१) खोज रिपोर्ट १६२०।१६ (२) राज० रिपोर्ट भाग २, पृष्ठ १५३, ६६, ६७

(२) भूधरदास जैन, यह आगरे के रहने वाले खण्डेलवाल बनिए थे। इनके बनाए तीन ग्रन्थ हैं—(१) पार्श्व पुराण, (२) जैन शतक, १०७ कवित्त, सवैये, दोहे आदि, (३) पद संग्रह कुल ८० पद हैं। यह अट्ठारहवीं शती के अत्यन्त श्रेष्ठ कवियों में से एक हैं।[1]

६१९।५१०

(२३) भूसुर कवि, सं० १९११ में उ०।

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध में कोई सामग्री सुलभ नहीं। ग्रियर्सन में (६८९) सरोज-दत्त सं० १९११ जन्मकाल और विनोद में (२०४६) रचनाकाल माना गया है। यह रचनाकाल ही है। कवि के सम्बन्ध में कोई सूचना सुलभ नहीं। सम्भवतः इस कवि का वास्तविक नाम कुछ और ही है और अपनी जाति के आधार पर उसने अपना उपनाम भूसुर रख लिया है।

६२०।५११

(२४) भोलासिंह कवि, पन्ना बुन्देलखण्डी, सं० १८९८ में उ०।

सर्वेक्षण

भोलासिंह के सम्बन्ध में कोई सूचना सुलभ नहीं।

६२१।४९८

(२५) भूपति कवि, राजा गुरुदत्त सिंह वंधलगोती, अमेठी, १८०३ में उ०। यह महाराज महाकवि, कवि-कोविदों के कल्पवृक्ष थे। कवीन्द्र इत्यादि इनकी सभा में थे।

सर्वेक्षण

गुरुदत्त सिंह अमेठी जिला सुलतानपुर के राजा थे। इनका रचनाकाल इनके प्राप्त ग्रन्थों के आधार पर सं० १७८८–९९ है। प्रथम संस्करण में १८०३ है और सप्तम में १९०३। खोज में इनके तीन ग्रन्थ मिले हैं—

(१) भूपति सतसई, १९२३।६० ए बी, या सतसैया १९२६।६६। इस ग्रन्थ की रचना सं० १७९१, कातिक सुदी ३, बुधवार को हुई।

> **सत्रह शत एकानबे कातिक सुदि बुधवार**
> **ललित तृतीया में भयो सतसैया अवतार २**

(२) रस दीपक, १९०३।४२, १९०४।२८, १९२३।६० सी। यह नायिका-भेद का ग्रन्थ है।

---

(१) विनोद ६५

इसकी रचना सं० १७६६, कार्तिक सुदी ३, बुधवार को हुई—

सत्रह सतक निन्यानबे, कार्तिक सुदि बुधवार
ललित तृतीया में भयो, रस दीपक अवतार

ग्रन्थ का नाम रसदीप भी है।

३. रसरत्न, १६२३।६० डी, १६४७।२६३। यह रस और अलङ्कार दोनों का ग्रन्थ है। इसकी रचना सं० १७८८, बैशाख सुदी ६, बुधवार को हुई।

सत्रह सतक अठासि सम, माधव सुदि बुधवार
तिथि नौमी रस रतन को, भयो रुचिर अवतार ६

रसरत्न और रसदीपक ग्रन्थों में कवि ने अपने निवास-स्थान अमेठी का वर्णन किया है—

आठौ दिसा चुनीन सम करि राखी अवरुध्य
नगर अमेठी रायपुर सोभित ज्यों मनि मध्य
पुन्य फलनि सों अति फली नगरी मोद प्रकास
भूपति तह गुरुदत्त थव नित प्रति करत निवास

भूपति निरसन्देह कवि-कोविदों के कल्पवृक्ष थे। इनके दरबार में उदयनाथ कवीन्द्र और कवीन्द्र के पुत्र दूलह थे। लखनऊ के नवाब सआदत खाँ से इनका युद्ध हुआ था, जिसका वर्णन कवीन्द्र ने इस प्रकार किया है—

समर अमेठी के सरोष गुरुदत्त सिंह
सादत की सेना समसेरन सो भानी हैं[1]

'पक्षी विलास' गुरुदत्त शुक्ल मकरन्दपुर वाले की रचना है। 'रस रत्नाकर' रस-रत्न का ही विस्तृत नाम है। 'भागवत भाषा' गुरुदत्त कायस्थ की रचना है। इसी प्रकार कण्ठाभरण या कण्ठा-भूषण दूलह कृत कविकुल कण्ठाभरण[2] है। ये सभी ग्रन्थ इन राजा गुरुदत्त के नाम पर विभिन्न ग्रन्थों में चढ़े हुए हैं।[3]

६२२।४६६

२६. भृङ्ग कवि, सं० १७०८ में उ०। इनके कवित्त हजारे में हैं।

सर्वेक्षण

भृङ्ग कवि के नाम पर सरोज में जो सवैया उद्धृत है, वह सम्भवतः हजारा से अवतरित

---

(१) हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ २८१ (२) देखिए, यही ग्रन्थ कवि संख्या ३५६ (३) अ—पक्षी विलास—सभा का अप्रकाशित संक्षिप्त विवरण; ब—कण्ठाभूषण, रस रत्नाकर, हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृ० २८६; स—कण्ठाभरण, भागवत भाषा—विनोद ७१४

है । पूर्ण अभिज्ञता न होने से सरोजकार ने इस सवैये में आए 'भृङ्ग' शब्द को कवि छाप समझ लिया है और एक कवि की वृद्धि कर दी है। यह सवैया गो० तुलसीदास कृत कवितावली, उत्तरकाण्ड का १३३वाँ छन्द है। भृङ्ग, उद्धव के लिए प्रयुक्त हुआ है।

"ब्रजराज कुमार बिना सुन भृङ्ग अभंग भयो जिय को गरजी"

६२३।५००

(२७) भरमी कवि, सं० १७०८ में उ०। ऐज़न। (इनके कवित्त हज़ारे में हैं।)

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध में कोई सूचना सुलभ नहीं। सरोज दत्त सं० १७०८ ग्रियर्सन में (२७३) जन्मकाल और विनोद में (३५५) रचनाकाल के रूप में स्वीकृत है। जो हो, इनकी रचना हजारे में थी, अतः सं० १७५० के पूर्व इनका अस्तित्व स्वयं सिद्ध है। इनके फुटकर छंद मिलते हैं, जो सुन्दर हैं।

६२४।५०२

(२८) भीषम कवि, सं० १७०८ में उ०। ऐजन (इनके कवित हज़ारे में हैं।)

सर्वेक्षण

इस कवि का विवरण ६१२ संख्या पर एक बार पहले आ चुका हैं।

६२५।५२३

२९. भूपनारायण वंदीजन, काकूपुर जिले कानपुर, सं० १८५९ में उ०। शिवराजपुर के चन्देल क्षत्रिय राजों की वंशावली बनायी है।

सर्वेक्षण

इस कवि का विवरण एक बार पहले ४४४ संख्या पर नारायण नाम से सरोज में आ चुका है, दोनों को काकूपुर का रहने वाला कहा गया है। दोनों के सम्बन्ध में लिखा गया है कि इन्होंने शिवराजपुर के चन्देले क्षत्रिय राजाओं की वंशावली बनाई। दोनों के समय में थोड़ा अन्तर है। नारायण का समय सं० १८०९ और भूप नारायण का १८५९ दिया गया है। ये संवत् एक ही व्यक्ति के जीवनकाल के विभिन्न समयों की सूचना देते हैं, अतः दोनों कवि एक ही हैं। पहला विवरण अधूरे नाम से और दूसरा पूरे नाम से दिया गया है। यह प्रमादत्वरा के कारण हुआ है। ग्रियर्सन में (४५४, ६४५) और विनोद (१०४३ और ११५२) में यही गलती दुहरा-तिहरा गई है।

सरोजकार ने इस कवि का विवरण मातादीन मिश्र के 'कवित्त रत्नाकर' से लिया है।[1] इस ग्रन्थ में इनका उल्लेख भूप नाम से हुआ है। यह लखनऊ के नवाब शुजाउद्दौला के समकालीन कहे गए हैं। शुजाउद्दौला का शासनकाल सं० १८११-३२ है, अतः सरोज में दिए दोनों संवत् ठीक हैं और दोनों रचनाकाल ही हैं।

६२६।

(३०) भोलानाथ ब्राह्मण, कन्नौज निवासी इन्होंने बैताल पचीसी छन्दों में रची है।

कोई जो विक्रय करै, वस्तु सुवन के हेत
सदा चकरिया आपनो, तन विक्रय कर देत

सर्वेक्षण

कन्नौज निवासी घोर बैतालपचीसी के रचयिता भोलानाथ ब्राह्मण का विवरण सरोज में मातादीन मिश्र कृत कवित्त रत्नाकर के आधार पर दिया गया है।[2] इन भोलानाथ से भिन्न दो और भोलानाथ खोज में मिले हैं—

१. भोलानाथ दीक्षित, इनके पिता प्रजापति दीक्षित थे जो बुन्देलखण्ड के अन्तर्गत बेलाहारी के जागीरदार थे। बेलाहारी छतरपुर के निकट है। इनके दो ग्रन्थ मिले हैं।—

१. माया लीलावती, १९०६।१६ तथा २. विक्रम विलास, १९२३।५७। इसमें बैतालपचीसी की ही कथा है। इसका प्रतिलिपिकाल सं० १८९० है। हो सकता है कि यह ग्रन्थ कन्नौजी भोलानाथ का हो। पूर्ण ग्रन्थ देखने पर ही कुछ कहा जा सकता है।

२. भोलानाथ श्रीवास्तव, यह कन्नौज के निकट जहानगंज के रहने वाले थे। यह लावनी के अखाड़िए शायर थे। जोगी लीला की लावनी में इनका और प्रसिद्ध फर्रुखाबादी लावनीबाज, कवि गणेश का नाम एक साथ आया है।

बंदिश गनेश कहैं भोलानाथ बखाने
धरि जोगी रूप अनूप चले बरसाने

खोज में[3] इनके ९ ग्रन्थ मिले हैं—१. शिव पार्वती संवाद, २. जोगी लीला, ३. राधाकृष्ण लीला, ४. बारह मासा विरह, ५. पथरीगढ़ की लड़ाई, आल्हा, ६. बारहमासा-कृष्ण जी, ७. शिव-स्तुति, ८. ख्याल संग्रह, ९. बारहमासा लावनी। इनमें से पथरीगढ़ की लड़ाई का रचनाकाल सं० १९०७ है।

६२७।५२६

(३१) भूधर कवि २, असोथर वाले, सं० १८०३ में उ०। यह भगवन्तराय खीची के यहाँ थे।

---

(१) कवित्त रत्नाकर, भाग १, कवि संख्या २७ (२) वही, भाग १, कवि संख्या १५ (३) खोज रिपोर्ट १९२९।४८

सर्वेक्षण

भूधर का एक कवित्त सरोज में उद्धृत है जिसमें भगवन्तराय और लखनऊ के नवाब सम्रादत खाँ के युद्ध का वर्णन है। अतः इनका भगवन्तराय के दरबार से सम्बन्धित होना सिद्ध है। मयाशङ्कर याज्ञिक के अनुसार यही भूधर भरतपुर नरेश सूरजमल (शासनकाल सं० १८१२-२०) के छोटे भाई जवाहर सिंह (शासनकाल सं० १८२०-२५) के दरबार में थे[1]।

६२८।५५३

(१) मानदास कवि, (२) ब्रजवासी, सं० १६८० में उ०। इनके पद रागसागरोद्भव में हैं। इन्होंने बाल्मीकीय रामायण, हनुमन्नाटक इत्यादि रामायणों से सार खींचकर रामचरित्र को बहुत ललित भाषा में वर्णन किया है। यह महाकवि थे।

सर्वेक्षण

सरोज में मानदास का विवरण भक्तमाल के निम्नलिखित छप्पय के आधार पर दिया गया है—

> **करुणा वीर सिंगार आदि उज्ज्वल रस गायो**
> **पर उपकारक धीर कवित कवि जन मन भायो**
> **कोसलेस पद कमल अननि दासत ब्रत लीनौ**
> **जानकि जीवन सुजस रहत निसि दिन रंग भीनौ**
> **रामायन नाटक की रहसि उक्ति भाषा धरी**
> **गोप्य केलि रघुनाथ की मानदास परगट करी** १३०

मानदास जी किसी पुरुषोत्तमदास के शिष्य थे, जिन्होंने इन्हें ब्रज में मक्खनदास से रामायण पढ़ने की आज्ञा दी थी। इनके निम्नांकित ग्रन्थ खोज में प्राप्त हुए हैं—

१. कृष्ण विलास, १९०६। इस ग्रन्थ की रचना सं० १८१७ में हुई। इसमें कृष्ण-लीला वर्णित है।

२. राम कूट विस्तार, १९०६। दोहा-चौपाई में लिखित रामचरित्र सम्बन्धी ग्रन्थ। यह सम्भवतः वही ग्रन्थ है जिसका उल्लेख सरोज में हुआ है। इसकी रचना सं० १८६३ में हुई।

इन ग्रन्थों[2] के मिल जाने से सरोज में दिया हुआ इनका सं० १६८० अशुद्ध सिद्ध हो जाता है। इनका रचनाकाल सं० १८१७-६३ है।

बुन्देलवैभव के अनुसार मानदास बुन्देलखण्डी थे। इनके ग्रन्थों के हस्तलेख छतरपुर, पन्ना और अजयगढ़ में पाए जाते हैं। इनके एक ग्रन्थ भागवत दशमस्कंध की कथा का रचनाकाल और तत्सूचक यह दोहा इसमें दिया गया है।

---

(१) माधुरी, फरवरी १९२७ में प्रकाशित 'भरतपुर और हिन्दी' शीर्षक लेख। (२) बुन्देलवैभव, भाग २, पृष्ठ ४५१

संवत अष्टादस जु सत अरु सत्रा की साल
भादों हरि की अष्टमी कथा रची तिहि साल

दोहे के अनुसार ग्रन्थ का रचनाकाल सं० १८१७ है। मेरी समझ से यह ऊपर वर्णित 'कृष्ण-विलास' नामक ग्रन्थ ही है। दोनों का रचनाकाल और विषय एक ही है। १९०६ वाली रिपोर्ट में ग्रन्थों से कोई उद्धरण नहीं दिया गया है, अन्यथा कोई निश्चित बात कही जा सकती थी।

६२९।५२७

२. मान कवि, इनके शान्त रस के सुन्दर कवित्त हैं।

सर्वेक्षण

सरोज में मान के दो कवित उद्धृत हैं। दोनों का चतुर्थ चरण एक ही है—

भई जेरवारी, नहिं करिए अबारी अब,
अवध बिहारी सुधि लीजिए हमारी है।

स्पष्ट है कि कवि रामोपासक है। यह कवि या तो रामोपासक ब्रजवासी मानदास हैं अथवा बुन्देलखण्डी मान या खुमान। ग्रियर्सन में (५१७) चरखारी वाले मान से इनके अभिन्न होने की सम्भावना व्यक्त की गई है। विनोद में (५८४) इनके नाम पर चरखारी वाले मान या खुमान के 'महाबीर जी का नखशिख और 'हनुमान पचीसी' तथा मानदास ब्रजवासी के 'राम कूट विस्तार' और 'हनू नाटक', ये चार ग्रन्थ चढ़े हुए हैं। स्पष्ट है इस कवि का अलग कोई अस्तित्व नहीं।

६३०।५२८

३. मान कवि ब्राह्मण ३ वैसवारे के, सं० १८१८ में उ०। इन्होंने 'कृष्ण कल्लोल' नामक ग्रन्थ, अर्थात् कृष्ण खण्ड को नाना छन्दों में लिखा है। इस ग्रन्थ के आदि में शालिवाहन से लेकर चम्पतिराय तक की वंशावली है। वह अवश्य देखने योग्य है।

सर्वेक्षण

सरोज में दिया सं० १८१८ कृष्णकल्लोल का रचनाकाल है। स्वयं सरोज में रचनाकाल-सूचक यह दोहा दिया गया है—

अष्टादस सै बरस सो बरस अष्टदस साल
सुनि सैनी वर वार को, प्रगट्यो ग्रंथ विसाल

इस ग्रन्थ में चम्पतिराय के पुत्र वैरीसाल या शत्रुसाल या छत्रसाल को आशीर्वाद दिया गया है—

जब लगि ध्रुव सनकादि सब, अरुनादिक दूनौ अनुज
तब लगि नृप वैरीसाल सुख, चिरंजीवि चंपति तनुज

छत्रसाल की मृत्यु सं० १७८८ में हो गई थी और ग्रन्थ की रचना सं० १८१८ में उनकी मृत्यु के ३० वर्ष बाद हुई। फिर उन्हें आशीर्वाद देने का तुक क्या है? हो सकता है कि कवि छत्रसाल के किसी पुत्र के दरबार में रहा हो। यह भी हो सकता है कि ऊपर वाले दोहे में वैरीलाल 'सुख' के स्थान पर वैरीसाल 'सुत' या 'सुव' पाठ हो।

६३१।५२६

४. मोहन भट्ट १ कवि पद्माकर के पिता, सं० १८०३ में उ०। यह महाराज महाकवि प्रथम राजा हिन्दूपति बुन्देला पन्ना नरेश के यहाँ और पीछे सवाई प्रताप सिंह तथा जगत सिंह के यहाँ रहे। इनकी कविता बहुत सरस है।

सर्वेक्षण

मोहन भट्ट का पूरा नाम मोहनलाल भट्ट है। यह जनार्दन भट्ट के पुत्र और प्रसिद्ध कवि पद्माकर भट्ट के पिता थे। इनका जन्म बांदा में, विनोद (५४५) के अनुसार सं० १७४४ में और पद्माकर के वंशज भालेराव भट्ट के अनुसार[1] सं० १७४३ में हुआ था। मोहनलाल जी तैलंग ब्राह्मण थे। यह पूरे पण्डित और कवि थे। पहले यह नागपुर के महाराजा रघुनाथ राव, अप्पा साहब के यहाँ रहे, फिर सं० १८०४ में पन्ना नरेश महाराज हिन्दू पति के यहाँ आए। वहाँ उन्हें मन्त्र दिया और दक्षिणा में ५ गाँव पाया। यहाँ से यह सं० १८४० के आस-पास[2] जयपुर नरेश प्रताप सिंह के यहाँ गए थे, जहाँ इन्हें एक हाथी, एक जागीर, सुवर्णपदक तथा कविराज शिरोमणि की पदवी मिली थी।

भालेराव ने इनके एक ग्रन्थ 'शृङ्गार संग्रह' का उल्लेख किया है।[3]

६३२।५३०

५. मोहन कवि २, सं० १८७५ में उ०। यह कवि सवाई जय सिंह ३, महाराजा आमेर के यहाँ थे।

सर्वेक्षण

खोज में इस समय के एक मोहनदास मिश्र मिले हैं, जो शिवराम मिश्र के पुत्र थे और चन्द्रपुरी के रहने वाले थे। यहाँ के राजा का भी नाम मोहन महीप था। इनके निम्नलिखित चार ग्रन्थ मिले हैं—

१. कृष्ण चन्द्रिका, १९०६।१९९ ए। इस ग्रन्थ की रचना सं० १८३९ में हुई थी।

संवत अष्टादक्ष सतक बहुरि उनंतालीस
दक्षिन रवि, बरसा सुरितु, षट गत हय शिव बीस ३७
नभसि धवल पख ब्रह्म तिथि, वासर हर सिर वास
कृष्ण चंद्रिका ता दिन, कियो प्रकास ८३

---

(१) माधुरी, माघ सं० १९९०, पृष्ठ ८० **(२) बुन्देल वैभव, भाग २, पृष्ठ ३९५**
(३) माधुरी, माघ सं० ७९०, पृष्ठ ८०

२. भागवत, दशम स्कंध भाषा, १९०६।१९९ बी।

३. रामाश्वमेध, १९०६।१९९ सी।

४. गीत गोविंद की टीका, १९०५।७२। इस टीका का नाम 'भाव चंद्रिका' भी है। इसकी रचना सं० १८५१ में हुई—

इंदु[१] बान[५] वसु[८] भूमि[१] सुचिमास सुकृत वादि
भावचंद्रिका जा दिन आरंभित सुख सादि

सरोज में मोहन के जो उदाहरण दिए गए हैं, उनमें से एक में जयसिंह की प्रशस्ति है।

मोहन भनत महराज जयसिंह तेरी
तेग रन रंग में खिलावे खल व्याली को

सरोज में इन जयसिंह को सवाई जयसिंह ३ कहा गया है। इन सवाई जयसिंह ३ का शासनकाल सं० १७५६-१८०० है। इन्हीं जयसिंह के मंत्री आयामल्ल के यहाँ विहारी सतसई की कवित्त बन्ध टीका के रचयिता कृष्ण कवि थे। यदि इन्हीं के यहाँ मोहन कवि थे तो सरोज में दिया समय सं० १८७५ अशुद्ध है। अथवा यह भी सम्भव है कि एक मोहन कवि सवाई जयसिंह ३, के यहाँ सं० १७५६-१८०० के आस पास हुए और एक मोहन सं० १८७५ के आस पास। १८७५ के कुछ पूर्व तक एक मोहन पद्माकर के पिता भी थे। एक मोहनदास मिश्र का उल्लेख ऊपर अभी-अभी हुआ है।

६३३।५८३

(६) मोहन कवि ३, सं० १७१५ में उ०। इनके कवित्त हजारे में हैं।

सर्वेक्षण

हजारे में किसी मोहन के कवित्त हैं, अतः सं० १७५० के पूर्व एक मोहन का अस्तित्व निश्चित रूप से है। सं० १७५० के पहले तीन मोहन खोज में मिले हैं—

१. मोहनलाल मिश्र, यह चरखारी के रहने वाले थे। यह चूड़ामणि मिश्र के पुत्र एवं लक्ष्मीचन्द मिश्र के पिता थे। इन्होंने सं० १६१६ में 'श्रृङ्गार सागर'[१] नामक ग्रन्थ लिखा था।

संवत रस[६] ससि[१] रस[६] सु ससि[१], विसद वसंत वहार
माघ सुकुल सनि पंचमी, भयो ग्रंथ अवतार

ग्रन्थ की पुष्पिका से कवि के पिता का नाम ज्ञात होता है—

"इति श्री सर्व गुनगुनालंकार सर्व विद्या वित्पन्य सर्वशास्त्रकोविदं दुजकुल कमल प्रकासकर...पं० मिश्र चूड़ामनि जू तस्यात्मज मोहनलाल सुकवि विरंचते सिंगार...नवमो तरंग:"

मोहन लाल मिश्र ने इस ग्रन्थ की रचना अपने पुत्र लक्ष्मीचन्द के लिए की थी।

---

(१) खोज रिपोर्ट १९०५।६०

२. मोहनलाल कायस्थ, यह नैमिषारण्य के निकट स्थित कुरसथ गाँव के रहने वाले श्री यादो जी के पुत्र थे। इन्होंने सं० १६८७ में 'स्वरोदय पवन विचार'[1] नामक ग्रन्थ लिखा था—

कथितं मोहनदास कवि काइथ कुल अहिवान
श्री गंगा के कूल ढिग कनवज के अस्थान ३६४
नीमसार के निकट ही कुरसथ गाउं विख्यात
तहाँ हमारो वास निजु श्री यादो मम तात ३६५
संवत सोरह सै रच्यो ऊपर अस्सी सात
विक्रम तें बीतो बरस मारग सुदि तिथि सात

३. मोहन उपनाम सहजसनेही, मथुरा निवासी, इन्होंने जहाँगीर के शासनकाल में सं० १६६७ में अष्टावक्र[2] नामक ग्रन्थ लिखा।

सोलह से सतसठा सु नाहा
सावन पड़वा, बुध दिन राहा
× × ×
जहांगीर आदिल कर राजू
× × ×
मोहन मथुरा महँ बसै कीनी कथा बनाइ

यह मोहन शिरोमणि के पिता थे। इनके तीन ग्रन्थ और मिले हैं—१. आनंद लहरी, १९४४।३०७ क; २. कल्लोल कलि १९४४।३०७ ख; ३. मोहन हुलास, १९४४।३०७ ग। इन्हीं तीनों मोहनों में से किसी एक की सम्भवतः प्रथम की रचना हजारे में थी।

६३४।५३१

(७) मुकुन्द लाल कवि बनारसी, रघुनाथ कवीश्वर के गुरु, काश्यस्थ सं० १८०३ में उ०। इनका काव्य तो सूर्य के समान भासमान है।

सर्वेक्षण

रघुनाथ कवीश्वर का रचनाकाल सं० १७९०-१८१० है, अतः इनके गुरु का समय या तो यही या इससे कुछ पूर्व होना चाहिए। सरोज में दिया सं० १८०३ इनका रचनाकाल है। सप्तम संस्करण में 'काश्यस्थ' का 'के शिष्य' हो गया है।

---

(१) खोज रिपोर्ट १९००।५ (२) खोज रिपोर्ट १९०३।४

६३५।५३२

(८) मुकुन्द सिंह हाड़ा, महाराजा कोटा, सं० १६३५ में उ० । यह महाराज शाहजहाँ बादशाह के बड़े सहायक और कविता में महा निपुण व कवि कोविदों के चाहक थे ।

सर्वेक्षण

सरोज में इनके नाम पर यह कविता दिया गया है—

> **छूटैं चंद्रबान भले बान औ कुहुक बान**
> **छूटत कमान जिमी आसमान छ्वै रह्यो**
> **छूटै ऊंटनालैं जमनालैं हथनाल छूटैं**
> **तेगन को तेज सो तानि जिमि ब्वै रह्यो**
> **ऐसे हाथ हाथन चलाइ के मुकुंद सिंह**
> **अरि के चलाइ पाइ वीर रस च्वै रह्यो**
> **हय चले हाथी चले संग छोड़ि साथी चले**
> **ऐसी चलाचल में अचल हाड़ा ह्वै रह्यो**

यह छन्द भूषण के नाम से भी प्रसिद्ध है। यह 'छत्रशालदशक' में संख्या २ पर सङ्कलित है। दशक में सङ्कलित छन्द में कहीं भी भूषण छाप नहीं और वहाँ मुकुन्द सिंह भी छाप नहीं है। ऊपर उद्धृत छन्द में कवि छाप मुकुन्द सिंह है। यह स्वयं हाड़ा नरेशों में से एक नहीं है, हाड़ा नरेश के कीर्तिगायक कवि हैं।

सरोज में दिया सं० १६३५ ईस्वी-सन् में उपस्थिति किया है। ऊपर उद्धृत छन्द में औरङ्गजेब और दारा के उस युद्ध का सङ्केत है, जिसमें दारा की ओर से हाड़ा नरेश लड़े थे और दिवङ्गत हुए थे। यह घटना सं० १७१५ के आस पास की है।

६३६।५८४

(९) मुकुन्द कवि प्राचीन, सं० १७०५ में उ०। इनके कवित्त हजारे में हैं।

सर्वेक्षण

मुकुन्द का समय सं० १७०५ से भी पहले है। इन्होंने रहीम की प्रशस्ति इस छप्पय में लिखा है।

> **कमठ पीठ पर कोल कोल, पर फन फनिंद फन**
> **फनपति फन पर पुहुमि, पुहुमि पर दिगत दीप गन**
> **सप्त दीप पर दीप एक जंबू जग लिक्खिय**
> **खानान खान बैरम तनय, तिहि पर तुम्र भुज कल्पतरु**
> **जगमगहि खग्ग भुज अग्ग पर खग्ग अग्ग स्वामित बरु**

रहीम की मृत्यु सं० १६८४ में हुई पर उनका वैभव विलास सं० १६६२ के पूर्व तक ही रहा। अतः यह रचना सं० १६६२ के पूर्व की होनी चाहिए। ऐसी स्थिति में कवि का जन्म सं० १६३५ के आस पास होना चाहिए।[1] कवि सं० १७०५ तक भी जीवित रह सकता है।

खोज में एक मुकुन्द दास मिले हैं, जिन्होने शाह सलीम (जहाँगीर) के शासनकाल में सं० १६७२ एवं १६९५ में कोकशास्त्र संबंधी दो ग्रंथ लिखे थे।[2] एक से आवश्यक उद्धरण दिए जा रहे हैं—

साह सलीम जगत सुलताना
अहि निवास आगर अस्थाना
\+ + +
सोलह सै बहत्तरी संवत् हम जे यूना दस बीस
सनद पत्र में देखा एक हजार पचीस

कुछ कहा नहीं जा सकता, यह कोकशास्त्र वाले मुकुन्ददास सरोज वाले प्राचीन मुकुन्द हैं अथवा नहीं।

६३७।५३३

(१०) माखन कवि १ सं० १८७० में उ०। इनकी कविता बहुत ही ललित है।

सर्वेक्षण

सं० १८७० के आस-पास उपस्थित माखन सम्भवतः माखन पाठक हैं। माखन पाठक ने 'वसंत मंजरी' नामक नायक-नायिक भेद का एक ग्रन्थ रचा था। इस ग्रन्थ में होली वर्णन के रूप में ही सभी नायक-नायिकाओं की स्थापना की गई है। लक्षण दोहों में एवं उदाहरण कवित्त-सवैयों में हैं। यह ग्रन्थ भारत जीवन प्रेस, काशी से सन् १८९४ में प्रकाशित हो चुका है। इसकी एक प्रति महोबा वासी नारायण नामक लेखक द्वारा सं० १८६० में लिखी गई थी। वही प्रति किसी प्रकार नकछेदी तिवारी को १८९३ ई० में प्राप्त हो गई। इसी प्रति के आधार पर उन्होंने इस ग्रन्थ को भारत जीवन प्रेस से प्रकाशित करा दिया था। इस ग्रन्थ के निम्नलिखित दोहे से कवि के नाम, ग्राम और जाति का पता चलता है।

माखन पाठक द्विज बसे, पटी टहनगा गाँव
कृष्ण खेल व वर्णन करो, वसंत मंजरी नाँव

मूल प्रति सं० १८६० की एक महोबी द्वारा लिखी गई है। अतः कवि बुन्देलखण्डी हो सकता है और उसका रचना काल सं० १८६० के आस-पास होना चाहिए।

---

(१) माधुरी, दिसम्बर १९२७, पृष्ठ ८६७—६८ (२) खोज रिपोर्ट १९०९।१८३ ए बी, १९२६।२२४

विनोद में सरोज वाले माखन का उल्लेख १६७५ और वसंत मंजरी वाले माखन पाठक का ११२० संख्या पर है। १८७० को जन्मकाल मानने के कारण विनोद में इन्हें दो अलग कवि मान लिया गया है। माखन नामक दो और भी पुराने कवियों का पता खोज से मिलता है—

(१) माखन,[1] यह रतनपुर, (विलासपुर, मध्य प्रदेश) के राजा राजसिंह, (शासनकाल सं० १७५६-७६) के आश्रित थे। इनके पिता का नाम गोपाल और पितामह का गङ्गाराम था। गोपाल भी सुकवि थे। इनके बनाए हुए विनोदशतक, शृङ्गारशतक, कीर्तिशतक, पुण्यशतक, वीरशतक और कर्मशतक ये छह ग्रन्थ हैं। माखन के बनाए ग्रन्थों की सूची यह है—

(१) श्री नाग पिंगल, १६४१।१६१, (२) भक्ति चिन्तामणि, (३) रामप्रताप, (४) जैमिनि अश्वमेघ, (५) खंब तमाशा, (६) सुदामा चरित्र, (७) छन्द विलास—संभवतः यह श्री नाग पिंगल का ही अन्य नाम है।

(२) माखनदास, यह रामोपासक वैष्णव थे। इनका ग्रन्थ दोहावली[2] है, जिसका प्रतिलिपि-काल सं० १८६१ है। अतः कवि १८६१ का पूर्ववर्ती हैं।

६३८।५३४

(११) माखन लखेरा २ पन्ना वाले, सं० १६११ में उ०। ऐज़न। (इनकी कविता बहुत ही ललित है।)

सर्वेक्षण

लखेरा वाले माखन के नाम पर विनोद (२१२१) में रस चौंतीसी[3] नामक ग्रन्थ चढ़ा हुआ है। इनका जन्मकाल ग्रियर्सन (६७०) के आधार पर सं० १८६१ माना गया है और तदनुसार रचनाकाल सं० १६२० दिया गया है। स्पष्ट है कि सरोज में दिया सं० १६११ कवि का रचनाकाल है—

कुल पहाड़, हमीरपुर के रहनेवाले एक और माखनलाल चौबे मिले हैं। इनके लिखे निम्न-लिखित दो ग्रन्थ उपलब्ध हुए हैं—

१. गणेश जी की कथा, १६०६।६६ ए, १६२६।२२३ बी। यही ग्रन्थ गणेश की पूजा तथा होम विधि नाम से भी मिला है—१६२६।२२३ ए। इस प्रति का लिपिकाल सं० १८०० है।

२. सत्य नारायण की कथा, १६०६।६६ बी।

६३६।५४३

(१२) मनसा कवि, इनकी कविता लालित्य और सुन्दर अनुप्रासों में विदित हैं।

सर्वेक्षण

ग्रियर्सन (८८५) में सम्भावना व्यक्त की गई है कि यह मनसाराम से अभिन्न हैं। यह

---

(१) खोज रिपोर्ट १६४१।१६१ (२) खोज रिपोर्ट १६४१।१६२ (३) खोज रिपोर्ट १६०६।६८

सम्भावना ठीक प्रतीत होती है। मनसाराम पूरा नाम है और मनसा अधूरा। कवि आवश्यकतानुसार दोनों छाप रखता है।

६४०।५४४

(१३) मनसाराम कवि, नायिका भेद का इनका ग्रन्थ अद्भुत है।

सर्वेक्षण

खोज में चार मनसाराम मिले हैं।

१. मनसाराम भाट, यह बिलग्राम निवासी भाट थे। इनके पिता का नाम हरिवंश उपनाम घसीटे था। सं० १८४३ में इनके पुत्र हरप्रसाद ने कुछ रचना की थी, अतः यह इस संवत् के पूर्व वर्तमान थे। इनका एक ग्रन्थ वियोगाष्टक[1] मिला है, जो सरस एवं सुन्दर है।

२. मनसाराम पांडे, सं० १८६४ के लगभग वर्तमान। इन्होंने भारत प्रबन्ध[2] नामक ग्रन्थ रचा है। यह महाभारत की संक्षिप्त कथा है। इसकी रचना सं० १८६४ में हुई थी—

संवत अठारा सत चौंसठि प्रथम मास
मधु रितु राज वदी दसमी गनाई है।
जीव वार सुखद समाज गृह नखत
सुभ लग्न दिन सानुकूल सुखदाई है।

मङ्गलाचरण वाले छन्द में ही कवि ने अपना नाम दे दिया है—

श्री गणेश करिवर वदन, एक रदन सुखधाम
ताहि सुमिरि वरनत चरित, पांड़े मनसाराम

३. मनसाराम शुक्ल, सुवंश शुक्ल के वंशज, टेढ़ा जिला उन्नाव के निवासी। इनका एक ग्रन्थ कवित[3] खोज में मिला है।

४. मनसाराम, यह राजस्थानी कवि हैं। इनकी छाप मञ्छ है। यह रघुनाथ रूपक[4] के रचयिता हैं।

उपनाम की भिन्नता के कारण राजस्थानी मनसाराम निश्चय ही सरोज के मनसाराम से भिन्न हैं, पर प्रथम तीन में से कौन से सरोज वाले मनसाराम हैं, यह कहना सन्देह को आमन्त्रण देना है।

६४१।५६३

१४. मन ब्राह्मण, असोथर, गाजीपुर के निवासी, सं० १८६० में उ०। यह कवि, कवि

---

(१) खोज रिपोर्ट १९१२।११० (२) खोज रिपोर्ट १९०५।६६ (३) खोज रिपोर्ट १९२३। २७३ (४) खोज रिपोर्ट १९०६।२८९

लोगों में बड़े विख्यात हो गए हैं। इन्होंने बहुत ग्रन्थ बनाए हैं पर हमारे पास केवल 'राम-रावण का युद्ध' नामक एक छोटा-सा ग्रन्थ इनका है।

सर्वेक्षण

मन का 'सीताराम विवाह' नामक ग्रन्थ खोज में मिला है।[1] इस ग्रन्थ के अन्त में कवि ने अपना परिचय इस दोहे में दिया है—

सीताराम विवाह को लिख्यो मून करि नेह
असोथर शुभ ग्राम में बैठि आपने गेह

असोथर, फतेहपुर जिले में गाजीपुर नामक कसबे के पास एक गाँव है। यहीं के रहनेवाले प्रसिद्ध भगवन्तराय खींची थे। ग्रन्थ की पुष्पिका से कवि का पूरा नाम मुनिलाल ज्ञात होता है।

"इति श्री मुनलाल कृति सीताराम विवाह सम्पूर्ण सुभनस्तु सुभम्भूयात्।"

६९४ संख्यक मुनिलाल इन मून से अभिन्न प्रतीत होते हैं। विनोद (१११५) में इनके एक नामहीन नायिकाभेद के ग्रन्थ का भी उल्लेख है।

६४२।५६४

(१५) मणिदेव बन्दीजन बनारसी, सं० १८९६ में उ०। यह कवि महाकवियों में गिने जाते हैं। उल्था में गोकुलनाथ, गोपीनाथ के साथ इन्होंने भी भारत के कई पर्वों का उल्था किया है। इनका काव्य महा सुन्दर है।

सर्वेक्षण

मणिदेव बन्दीजन थे। यह भरतपुर राज्य के अन्तर्गत जहानपुर के निवासी थे। यह काशी में रहने लगे थे। यह गोकुलनाथ बनारसी के शिष्य एवं काशी नरेश महाराज उदितनारायण के आश्रित कवि थे। इनकी मृत्यु सं० १९२० में हुई।[2]

ग्रियर्सन (५६६) में इन्हें गोपीनाथ का शिष्य कहा गया है, जो ठीक नहीं। यह गोपीनाथ के बाप के शिष्य थे। विनोद (८८२) के अनुसार महाभारत के प्रसिद्ध अनुवाद में इनका निम्नलिखित योग है[3]—

(१) कर्ण पर्व, (२) शल्य पर्व, (३) गदा पर्व, (४) सौप्तिक पर्व, (५) ऐषिक पर्व,[4] (६) विशोक पर्व,[5] (७) स्त्री पर्व, (८) महा प्रस्थान पर्व, (९) शांति पर्व के शेष २२५ अध्याय।

६४३।५६५

(१६) मकरन्द कवि, सं० १८१४ में उ०। शृङ्गार के इनके कवित्त बहुत ललित हैं।

---

(१) खोज रिपोर्ट १९०९।२०१ (२) खोज रिपोर्ट १९०४।६४ (३) विनोद, भाग २, पृष्ठ ७४१ (४) खोज रिपोर्ट १९२६।२९३ ए (५) खोज रिपोर्ट १९२६।२९३ बी।

सर्वेक्षण

इस समय के आस पास एक हित मकरन्द कवि हुए हैं, जिन्होंने सं० १८१८ में 'मकरन्द-बानी' नामक ग्रन्थ रचा। इसमें १०५ छन्द हैं—

जै श्री हित मकरंद बरषि सुख छायो
मिष्ट दृष्टि रस झरझर सरसायो
संवत दस सौ आठ अठारह
आसौजी सुदि द्वैज उर धारहि
दोह कवित अरु चौपई इक सत ऊपर पांच
रति रण केलि लतानि को छिन छिन प्रति उर सांचि

—खोज रि० १९४१।१८०

सरोज में मकरन्द के दो कवित हैं। एक में मानिनी नायिका का चित्र है, दूसरे में प्रोषित-पतिका का। हित मकरन्द भी कवित्त लिखने वाले कवि हैं। सम्भवतः ये शृङ्गारी रचनाएँ दीक्षा पूर्व की इनकी प्रारम्भिक कृतियाँ हैं।

६४४।५६६

(१७) मकरन्दराय बन्दीजन, पुवावाँ जिले शाहजहाँपुर, सं० १८८० में उ०। यह कवि चंदन कवि के घराने में हैं। इन्होंने 'हास्यरस' नामक एक ग्रन्थ बहुत रोचक बनाया है।

सर्वेक्षण

मकरन्दराय चंदन राय के घराने में हैं, यह उनके वंशज नहीं हैं। यह चंदनराय के सम-सामयिक हैं। यह नाहिल पुवायाँ के रहने वाले बन्दीजन थे। इनके बनाए हुए दो ग्रन्थ खोज में मिले हैं—

१. हंसाभरण, १९१२।१०६। इस ग्रन्थ की रचना सं० १८२१ में हुई—

अठारह सै यकईस है नव रस में सब आइ
सुरस हास मकरंद भनि यह कलिकाल सुभाइ

इसका प्रथम छन्द यह है—

गनपति हौ गुनधाम, दीनबंधु सब दुख हरन
देहु मोहि बरदान, कहा चहौं कछु हास रस

इसी हंसाभरण का उल्लेख सरोज में 'हास्यरस' नामक ग्रन्थ के रूप में हुआ है। ऊपर उद्धृत दोहे के 'कहा चहौं कछु हासरस' के हासरस से ही सरोजकार ने ग्रन्थ का नाम निर्माण किया है।

२. जगन्नाथ माहात्म्य, १९०२।६८,१९०९।१८२।

हंसाभरण के मिल जाने से सरोज में दिया सं० १८८० या तो अशुद्ध सिद्ध हो जाता है या फिर यह कवि का एक दम वृद्धकाल है।

६४५।५६७

(१८) मंचित कवि, सं० १७८५ में उ०। इनकी कविता महा सरस है।

सर्वेक्षण

विनोद (९७२) के अनुसार मंचित, मऊ महेवा बुन्देलखण्ड के रहने वाले ब्राह्मण थे। इन्हें 'सुरभीदान लीला' और 'कृष्णायन' नामक ग्रन्थों का रचयिता कहा गया है। पहले ग्रन्थ में बाल-लीला, यमलार्जुन पतन तथा दानलीला का विस्तृत वर्णन सार छन्द में हुआ है। इसमें कृष्ण का नखशिख भी सुन्दर है। कृष्णायन, तुलसीकृत रामायण के समान दोहा-चौपाइयों में है। यह संस्कृतनिष्ठ ब्रजभाषा में रचित है। विनोद में सूचना सूत्र का कोई सङ्केत नहीं है। इनका उपस्थितकाल सं० १८३६ माना गया है।

खोज में मंचित का एक ग्रन्थ दानलीला[१] मिला है। रिपोर्ट के अनुसार इसमें कृष्ण के मथुरा से प्रयाण के समय वसुदेव ने अश्वमेध यज्ञ किया है। उस समय जो कुछ दान उन्होंने किया है, उसी का वर्णन इस ग्रन्थ में हुआ है; पर जो उद्धरण दिया गया है, उससे यह बात पुष्ट होती नहीं प्रतीत होती। उद्धरण से तो इसमें प्रसिद्ध गोपीकृष्ण दानलीला वर्णन की प्रतीति होती है। यथा—

एकै कहै सखी इन काजै काम देह दै डंडौ
अधर सधर रद खंडन करिकै मनै लगै तौ छंडौ
एकै कहै छेड़ कीर इनकौ फिरि इक सपत करावौ
उरज स्वयंभु संभु कर अपनी तिन पर कर पसरावौ १२

यह तो सार छन्द में लिखित वही 'सुरभी दानलीला' ग्रन्थ प्रतीत होता है, जिसका उल्लेख विनोद में हुआ है। रिपोर्ट के अनुसार मंचित, सं० १७८५ के लगभग वर्तमान थे।

६४६।५६८

(१९) मुबारक, सय्यद मुबारक अली विलग्रामी, सं० १६४० में उ०। इनका काव्य तो प्रसिद्ध है पर इनका ग्रन्थ कोई हमने नहीं पाया, कवित्त सैकड़ों हमारे पुस्तकालय में है।

सर्वेक्षण

मुबारक के दो ग्रन्थ 'अलक शतक' और 'तिल शतक' प्रकाशित हो चुके हैं। ये सौ-सौ दोहों

---

(१) खोज रिपोर्ट १९०६।७१

वाले ग्रन्थ हैं। यह शृङ्गारी कवि हैं। इनके अत्यन्त सरस फुटकर कवित्त-सवैये बहुत मिलते हैं। यह अरबी-फ़ारसी और संस्कृत के अच्छे जानकार थे। यह विलग्राम, जिला हरदोई के रहने वाले एक सम्भ्रान्त मुसलमान थे। सरोज-दत्त सं० १६४० इनका जन्मकाल स्वीकार किया जाता है, जो इस कवि के सम्बन्ध में मुझे भी मान्य है। इसका कारण यह है कि यह पूर्ण रूप से रीति-परम्परा में डूबे हुए कवि हैं।

६४७।५७१

(२०) मातादीन शुक्ल अजगरा, जिले प्रतापगढ़, विद्यमान हैं। यह पंडित जी राजा अजीत सिंह सोमवंशी प्रतापगढ़ वाले के यहाँ दो-चार ग्रन्थ छोटे-छोटे बना चुके हैं।

सर्वेक्षण

पण्डित मातादीन अजगरा वाले के सम्बन्ध में जो भी तथ्य सरोज में दिए गए हैं, सभी ठीक हैं। सं० १९३१ में इनके निम्नांकित सात ग्रन्थों का एक संग्रह 'नानार्थ संग्रहावली' नाम से नवल-किशोर प्रेस से कवि के जीवनकाल ही में और सरोज के प्रणयन के तीन-चार वर्ष पूर्व ही प्रकाशित हुआ था।

(१) संग्रहावली, १९२३।२७४, १९२६।२९७ आई, जे, के, एल। यह कवि की फुटकर कविताओं का संग्रह है और कवि का श्रेष्ठतम ग्रन्थ है। ग्रन्थ में कुल २०२ छन्द हैं, जिनमें अधिकांश कवित्त-सवैये हैं। लोकोक्ति अलङ्कार का इसमें बहुत सुन्दर प्रयोग हुआ है। कवि ने अपना परिचय इस दोहे में दिया है। एक-एक अक्षर छोड़कर पढ़ने से कवि का परिचय प्राप्त होता है।

माधो तारो दीन नर, सुनो कुशल का देर
सब प्रभुता को पद गन्यों, ढर्यौ अरज पग नेर

मातादीन सुकुल, देस प्रतापगढ़, अजगर।

(२) रामायण माला, १९२६।२९७ ई, एफ। रचनाकाल सं० १८९६—

अट्ठारह सै छानबे, संवत् मिति बैसाख
रामायन माला रचो, एकादसि सित पाख

इस ग्रन्थ में कवि ने अपने घर का पता दिया है—

जोजन चारि प्रयाग तें, उत्तर अजगर ग्राम
तासु दून है अवध तें, दक्षिन जहँ मम धाम

(३) राम गीताष्टक १९२६।२९७ सी, डी।

(४) ज्ञान दोहावली, १९२६।२९७ ए, बी, १९४१।५४०। रचनाकाल सं० १९०३—

संवत् एक सहस सहित नव सै तीन समेत
रची ज्ञान दोहावली चैत पंचमी श्वेत

(५) रस सारिणी, १९२६।२९७ एफ, जी। रचनाकाल सं० १९०३—

एक सहस नव सै त्रिजुत, संवत् मिति वदि जेष्ठ
तेरसि तिथि शनि दिन रची, रस सारिणी सुश्रेष्ठ

यह दोहों में नायिका भेद का ग्रन्थ है।

(६) तिथि बोध—यह ग्रन्थ संस्कृत में है। कवि ने अपना नाम तक 'मातृ दत्त' बना लिया है। ग्रन्थ की रचना सं० १८९२ में हुई—

२ ९ ८ १
युग्म ग्रहे भ भ युक्ते, वर्षे मार्गे सितेत्तरे
पक्षे काम तिथो प्रोक्तस्तिथबोधो बृहस्पतौ

(७) वृत्त दीपिका, १९३५।६१। यह पिङ्गल ग्रन्थ भी संस्कृत में है। इसकी रचना सं० १८९९ में हुई।

ये सातों ग्रन्थ प्रतापगढ़ के रईस श्री अजीत सिंह के निर्देश से बने थे और उन्हीं की आज्ञा से इनका प्रकाशन भी हुआ था—

९ ९ ८ १
ग्रह ग्रहे भ भ युक्ते, वर्षे पौष सितेत्तरे
पक्षे कुहुतिथौ सूर्ये निर्मिता वृत्तादीपिका

६४८।५७२

(२१) मानिकदास कवि मथुरा निवासी। इन्होंने 'मानिकबोध' नामक ग्रन्थ श्रीकृष्णचन्द्र जी की लीला का बनाया है।

सर्वेक्षण

मानिकदास रचित 'मानिक बोध' खोज मे मिल चुका है।[1] प्राप्त प्रति सटीक है। टीकाकार ग्रन्थकार से भिन्न है। प्राप्त प्रति सं० १९१५ की लिखी हुई है। ग्रन्थ कवित्त सवैयों में है। इसका दूसरा नाम 'आत्मविचार' है। ग्रन्थ कृष्णलीला विषयक नहीं है, जैसा कि सरोज का कथन है, यह आत्मज्ञान सम्बन्धी ग्रन्थ हैं। इसमें पाँच प्रकरण है—१. अनुबन्ध निरूपण २. अध्यास-निरूपण, ३. आत्मस्वरूपावधारण, ४. आत्मस्वरूपस्थिति निरूपण, ५. आत्मफल द्वारा स्तुति। सरोज में उद्धृत सवैया इस ग्रन्थ का अन्तिम छन्द है, जिसमें कृष्ण-स्तुति है।

"मानक के मन माहिं बसो ऐसो नंद को नन्दन बाल कन्हैया"

सरोज में 'नंद को नंद यशोदा को छैया' पाठ है।

---

(१) खोज रिपोर्ट १९४१।१९३

विनोद (१६३६) में इनके एक अन्य ग्रन्थ 'कवित्त-प्रबंध'[1] का भी उल्लेख है, पर इसके रचयिता मानिकदास मथुरावासी नहीं थे, शिप्रा तट वासी एवं उज्जैन निवासी थे। यह ग्रन्थ वेदान्त और भक्ति का है। यदि दोनों स्थानों पर रहने वाले व्यक्ति एक ही सिद्ध किए जा सकें, तो मानिकवोध और कवित्त-प्रबंध के कर्ताओं में अभेद स्थापित किया जा सकता है। विषय की दृष्टि से दोनों कवि एक ही हैं।

६४६।५७३

(२२) मुरारिदास व्रजवासी। इनके पद रागसागरोद्भव में हैं।

सर्वेक्षण

भक्तमाल में एक मुरारिदास हैं। यह राम भक्त थे। इन्होंने रामवन गमन सम्बन्धी एक पद का कीर्तन करते हुए देह-त्याग किया था। यह मारवाड़ निवासी थे। कुछ कहा नहीं जा सकता कि यह कवि भी थे अथवा नहीं।

विदित विलौंदा भांव देस मुरधर सब जानै
महा महोच्छौ मध्य संत परिषद परवानै
पगनि घूँघुरू बांधि राम को चरित दिखायो
देसी सारंगपानि हंस ला संग पठायो
उपमा और न जगत में, प्रथा विना नाहिन बियो
कृष्ण विरह कुंती सरीर त्यों मुरारि तन त्यागियो १२८

यदि यह मुरारिदास कवि भी थे तो यह सरोज के अभीष्ट कवि हो सकते हैं। इनका समय सं० १६४६ के पूर्व होना चाहिए।

६५०।५७४

(२३) मन्य कवि। इनके श्रृङ्गार के सुंदर कवित हैं।

सर्वेक्षण

मन्य कवि का 'रस कन्द' नामक नायिका भेद का ग्रन्थ खोज में प्राप्त हुआ है।[2] इसमें कुल २३५ छन्द हैं। ग्रन्थ से कवि के समय पर कोई प्रकाश नहीं पड़ता, पर उसका वंशपरिचय अवश्य मिलता है। जगत दुबे के दो पुत्र थे, दामोदर और हरब्रह्म। पुनः दामोदर के दो पुत्र हुए, सुखदेव और लालमनि। सुखदेव के पुत्र वृन्दावन हुए। वृन्दावन के तीन पुत्र देवकीनन्दन, सदानन्द और मायाराम ज्ञानी हुए। मन्य इन्हीं मायाराम ज्ञानी के पुत्र थे। मन्य के पिता ज्ञानी जी भी सुकवि थे, पर इनकी कविता का कोई उदाहरण अभी तक नहीं मिला है।

---

(१) खोज रिपोर्ट १९०१।१३२ (२) खोज रिपोर्ट १९०६।१६३

जगत दुबे जग जासु जसु, तासु पुत्र श्रीमान
दामोदर हरब्रह्म पुनि, परम पुरुष कल्याण ३

छप्पय

दामोदर के पुत्र दोइ सुखदेव लालमन
सुखदेव के भयो पुत्र उदित वृन्दावन
वृन्दावन सुत तीन देवकीनन्द सदानन्द
मायाराम ज्ञानी सु काव्य कर ध्यावत हरि पद
मन्य सुकवि ज्ञानी सुवन, देखि सुमति रस ग्रंथ सब
सो राधेकृष्ण विहार सुनि कियो ग्रंथ रसकंद अब ४

रोमन अक्षरों की कृपा से यह 'रसकन्द' विनोद में (१६२८) जाकर 'रसकुंड' हो गया है।

६५१।५७५

(२४) मननिधि कवि। ऐज़न। (शृङ्गार के सुंदर कवित्त हैं।)

सर्वेक्षण

सरोज में उदाहृत कवित्त 'दिग्विजय भूषण' से उद्धृत है। इस कवि के सम्बन्ध में कोई और सूचना सुलभ नहीं।

६५२।५७६

(२५) मणि कंठ कवि। ऐज़न। (शृङ्गार के सुंदर कवित्त हैं।)

सर्वेक्षण

खोज में मणिकण्ठ का एक ग्रन्थ 'बैताल पच्चीसी'[1] मिला है। इसका रचनाकाल सं० १७८२ है। यह संस्कृत के इसी नाम के ग्रन्थ का भाषानुवाद है। कवि के आश्रयदाता का नाम निरतन लाल था। यह अपने पिता भवानी साहु के तीसरे पुत्र थे। यह गर्ग गोत्रीय अग्रवाल वैश्य थे और आजमपुर के रहने वाले थे।

है आजमपुर विदित ग्राम
सुख संपति आनंद धाम
अगरवार के गोत सुभ, तेहि पुर बसै अनेक
गर्ग वंशधर एक है, विदित धर्म की टेक

---

(१) खोज रिपोर्ट १६२३।२६६, १६४४।२७३ क, ख।

धर्म धुरंधर सील जुत, भए भवानी साहु
मुदित जगहि लखि हित सदा, अरि उर उपजत दाह
तिनके सुत तह तीन मे, लहुरे निरतन लाल
रूप काम सस काम तरु, दाता दीन दयाल

१९२३ वाली रिपोर्ट में मणिकण्ठ को बनियाँ कहा गया है, जो ठीक नहीं। १९४४ वाली रिपोर्ट के अनुसार यह मिश्र थे और नगरा नगर, गाजीपुर के राजा फकीर सिंह के आश्रित थे। दोनों रिपोर्टों में रचनाकाल सं० १७८२ दिया है, पर रचनाकाल सूचक छन्द किसी में भी नहीं उद्धृत है।

कवीन्द्राचार्य सरस्वती की प्रशस्ति में हिन्दी कवियों ने 'कवींद्र चंद्रिका' ग्रन्थ बनाया था। इसमें ३२ कवियों की रचनाएँ हैं। इनमें दो कवि सीतापति त्रिपाठी और गोपाल त्रिपाठी हैं। दोनों को मणिकण्ठ पुत्र कहा गया है। कवीन्द्राचार्य सरस्वती का समय सं० १६५७-१७३२ है।[1] यही समय मणिकण्ठ का भी होना चाहिए। इस प्रमाण से यह त्रिपाठी सिद्ध होते हैं, मिश्र नहीं।

६५३।५७७

(२६) मोतीलाल कवि। ऐज़न। (शृङ्गार के सुंदर कवित्त हैं।)

सर्वेक्षण

सरोज में उदाहृत कवित्त 'दिग्विजय भूषण' से उद्धृत है। इस कवि के सम्बन्ध में कोई अन्य सूचना सुलभ नहीं।

६५४।५७८

(२७) मुरली कवि। ऐज़न। (शृङ्गार के सुंदर कवित्त हैं।)

सर्वेक्षण

सरोज में मुरली का निम्नलिखित कवित्त उदाहृत है—

अरुनाई एड़िन की रवि छवि छाजत है
चारु छवि चंद आभा नखन करे रहैं
मंगल महावर गुराई बुध राजत हैं
कनक बरन गुरु वनक धरे रहैं
सुक्र सम जोति, सनि राहु केतु गोदना है
मुरली सकल सोभा सौरभ भरे रहैं

---

(१) यही ग्रन्थ। पृष्ठ १९४-९५।

नवौ ग्रह मोहन ते सेवक सुभाइन ते
राधा ठकुराइन के पांइन परे रहैं

इस छन्द में कवि ने राधा के पदों की वर्णना की है। प्रतीत होता है कि इसने नखशिख सम्बन्धी कोई ग्रन्थ रचा है। खोज में नखशिख के रचयिता एक मुरली मिलते भी हैं। उपलब्ध मुरली का पूरा नाम मुरलीधर मिश्र है। यह आगरा के रहने वाले ब्राह्मण थे। इनके बनाए हुए निम्नलिखित ग्रन्थ खोज में उपलब्ध हुए हैं—

१. नखशिख, पं १९२२।९८, १९२३।२८८ ए, १९४७।३०३ क। इस ग्रन्थ में कुल ६१ छन्द हैं। इसमें राधा का नखशिख वर्णित है।

तीन लोक ठाकुर सदा दूलह नंद कुमार
दुलहिनि रानी राधिका नखसिख ओप अपार २
यह नखसिख पोथी रची मुरलीधर सुखकारि
भूल्यौ हौंहूं जहां कछु लीजौ सुकवि सुधारि ६१

पुष्पिका में इन्हें मिश्र कहा गया है। ऊपर उद्धृत छन्द सम्भवतः इसी ग्रन्थ का है।

"इति श्री मिश्र मुरलीधर विरचित नखशिख संपूर्णम्"

२. रामचरित्र, १९३२।१४८, १९४४।३०४ ख। १९३२ वाली प्रति खण्डित है। १९४४ वाली प्रति पूर्ण है। इस पूर्ण प्रति से कवि के सम्बन्ध में पूर्ण जानकारी प्राप्त होती है। कवि का नाम मुरलीधर मिश्र है। यह भारद्वाजगोत्रीय माथुर ब्राह्मण हैं। गङ्गा-यमुना के मध्य में गभीरौ नामक कोई गाँव है। वहाँ माथुरों का निवास है। इन्हीं माथुर ब्राह्मणों में एक परमानन्द हुए। इन परमानन्द को अकबर ने शतावधानी की उपाधि दी थी। अकबर ने इन्हें मिश्र की भी पदवी दी। उसने इन्हें आगरे में बसाया भी। परमानन्द के पुत्र कपूरचन्द थे। इन्होंने आगरे में यमुना के किनारे मथुरिया टोला में घर लिया। कपूरचन्द के पुत्र पुरुषोत्तम हुए, जो शाहजहाँ के दरबार में थे। पुरुषोत्तम के पुत्र प्रेमराज हुए, जो स्वतन्त्र प्रकृति के थे। यह किसी के नौकर नहीं हुए। प्रेमराज के पुत्र पृथ्वीराज हुए और पृथ्वीराज के दिनमणि। दिनमणि जी प्रसिद्ध ज्योतिषी थे। इन्हीं दिनमणि जी के पुत्र मुरलीधर मिश्र हुए। यह दिल्ली के मुगल बादशाह रङ्गीले के दरबार में थे। मुहम्मद शाह का शासनकाल सं० १७७६-१८०५ है। यह मुरलीधर जी का भी समय होना चाहिए।

गंगा जमुन के मधि गभीरौ पुरीन को गांउ है
बहु कोटि ऊँचो सुघर नीको परम उत्तम ठांउ है
× × ×
माथुर बसै हैं जाय कै, तहं सजे सदन सुहावने
मुनि से लसत हैं निगम आगम, गुनन ज्ञान बढ़ावने
उन्हीं में परमानन्द प्रगटे, पढ़ी विद्या जिन भली
गुन गन सुनत ही बोलि लीनौ आगरे अकबर बली
चरचा भई दरबार के मधि ·रीझि के अकबर कह्यो

हम कह्यो तुमहिं सतावधानी आन से नहिं गुन लह्यो
बकसीस कीनो बहुत उनकौ मिश्र की पदवी दई
उन वास अपने ग्राम राख्यो, चाकरी त्यां कर लिई
उनके सनामि कपूरचंद तिन वास अर्गलपुर कियो
टोला मथुरिया कालिंदी तट सदन वसिबे को लियो
वे बसे आय कुटुंब के जुत, सील गुन मति खानि हैं
सबहीन जान्यो सबन मान्यो, सबन सौं हित बानि है
तिन तनय पुरुषोत्तम सु जिनकी सुनी कविता अति भली
दिल्लीस के सेनापती की चाकरी तिनकौं फली
वे मिले साहिजहाँ बली सौं मिली बकसिस प्यार में
सोभा बढ़ाई साहि जिनकी कबिन के दरबार में
तिनके भए सु हैं प्रेमराज न चाकरी चित में धरी
मिलबौ करैं सज्जनन ही सौं, जीविका सहजें करी
तिनके सु पृथ्वीराज तिनने लह्यो गुन अरु ज्ञान है
सबही सराहे सुघरता कौं परम बुद्धि निधान हैं
नितके तनय दिनमणि भए जिन ग्रंथ ज्योतिष के पढ़े

× × ×

तिनके सुतन में भयो मुरलीधर कछुक गुनवान है
कवि कोविदन ने कृपा करिके लई कविता मानि है ४४
दिल्लीस महमद साहि सौं मिलि चाकरी हूं करि लई
औरौ अमीरन कृपा करि मन रीझि कें बकसिस दई

जब नादिरशाह के आक्रमण से दिल्ली उजड़ गई तो कवि विरक्त हो गया और उसने राम चरित्र लिखा ।

वह गयो ह्यां हिंदुवान के मधि राज औरै ह्वै गयो
सब मिटि गई गुन ज्ञान चर्चा कृपन जग सिगरौ भयो
तब चित आई होहु चाकर, चरित बरनौं राम को
नेकहू जो कृपा करिहैं तो सबै हौं काम को

ग्रन्थ की रचना सं० १८१८ कार्तिक शुक्ल ११, रविवार को हुई—

वसु (८) ससि (१) वसु (८) ससि (१) मै लखौ संवत कातिक मास
शुक्ल पक्ष एकादसी रवि भौ ग्रंथ प्रकास ४६

पुष्पिका में भी कवि को मिश्र मुरलीधर कहा गया है—

"इति श्रीमन्मूर्ति मिश्र मुरलीधर विरचितं श्री रामचरित्रे श्रीरामगुणानुवाद वर्णनो नाम चत्वारिंशतमः प्रभाव ४० ।।"

१९३२ वाली खण्डित प्रति में भी परिचय है, पर वह दोहा छन्दों में है और संक्षिप्त है। रोला छन्दों में नहीं है और न इतने विस्तार ही से है। ग्रन्थ कवित्त, सवैया, छप्पय, गीतिका, हरिगीतिका, तोमर, दोहा, चौपाई, हरि आदि छन्दों में लिखा गया है। कवि सिद्धहस्त है। १९३२ वाली प्रति के अनुसंधायक के अनुसार ग्रन्थ का परिमाण और कविता की उत्तमता इसे महाकाव्य का पद दे सकती हैं। इस रिपोर्ट में प्रमाद से कवि को अकबरकालीन कहा गया है।

३. नलोपाख्यान, १९१२।११७, १९४४।३०४ क। इस ग्रन्थ में नल-दमयंती की प्रसिद्ध कथा है। इसकी रचना सं० १८१४ में माघ वदी ७, मंगलवार को हुई—

वेद भूमि वसु ससि लखो संवत माघ सु मास
कृष्ण पक्ष कुज सप्तमी कीनो ग्रंथ प्रकास

पुष्पिका में कवि नाम के साथ मिश्र जुड़ा हुआ है—

"इति श्री मिश्र मुरलीधर विरचिते नलोपाख्याने स्वदेशराज्ञागमनो नाम षोडसो विलास।"

१९४४ वाली प्रति में कवि ने अपना पूरा परिचय ही दे दिया है—

विप्र माथुर वंश भारद्वाज प्रगट्यो आय
पिता दिनमणि पढ़े ज्योतिष भए ज्योतिषराय
पुत्र मैंने पढ़ी कविता भयो रघुवरदास
नाम मुरलीधर दियो उन कियो जगत प्रकास

—खोज रिपोर्ट १९४४।३०४ क

४. पिंगल पीयूष, १९२३।२८८ बी, १९४७।३०३ ख। ग्रन्थ में कवि का नाम आया है—

बड़े बड़े सत्कविन के सुनि सुनि विविध विचार
मुरलीधर छंदनि रचत अपनी मति अनुसार ३

इसकी रचना १८११ में, पौष शुक्ल ९, गुरुवार को हुई—

विधि ससि वसु ससि में लखौ संवत पौष सु मास
शुक्ल पक्ष नवमी गुरौ कीनी ग्रन्थ प्रकास ८५

खोज रिपोर्ट में विधि का तीन अर्थ लेकर इसका रचनाकाल सं० १८१३ दिया गया है। पुष्पिका में कवि नाम के पहले मिश्र लगा हुआ है। ग्रन्थ ८७ पन्ने का है और पर्याप्त बड़ा है।

"इति श्री मिश्र मुरलीधर विरचितं पिंगल पीयूष ग्रन्थ समाप्तम्।"

५. रस संग्रह, १६२३।२८८ सी। इस ग्रन्थ में नव रसों के स्व-रचित कवित सङ्कलित हैं। ग्रन्थ ५६ पन्नों का है, इसकी रचना सं० १८१६ में हुई, ऐसा रिपोर्ट में लिखा गया है और रचना-काल सूचक यह दोहा भी दिया गया है—

१ ८ १ ९

नृप वस ससि अंकनि लखौ, संवत फागुन मास
असित पक्ष दसमी रबौ, कीनो ग्रंथ प्रकास

यहाँ 'अङ्कानाम वामतो गतिः' का अनुसरण नहीं हुआ है। नृप का अर्थ एक लिया गया है। इस ग्रन्थ की भी पुष्पिका में कवि नाम के पहले मिश्र लगा हुआ है—

"इति श्री मिश्र मुरलीधर विरचते रस संग्रह ग्रन्थ सतैसो सर्ग संपूर्णम्'

६. शृङ्गार सार, १६३८।१०२। यह ग्रन्थ बहुत छोटा है। इसमें १२ पन्ने एवं ४३ छन्द हैं। यह भानुदत्त कृत रसमञ्जरी नामक संस्कृत ग्रन्थ के आधार पर बना है। यह केवल लक्षण-ग्रन्थ है, इसमें उदाहरण नहीं हैं। एक ही छन्द में अनेक लक्षण दिए गए हैं। इस ग्रन्थ की पुष्पिका में कवि नाम के पहले मिश्र नहीं जुड़ा है पर खोज रिपोर्ट में यह इन्हीं मिश्र मुरलीधर की रचना स्वीकृत है। अतः यहाँ इसका उल्लेख कर दिया गया है।

शृङ्गार सार की पोथी और अखेराम का प्रेमरससागर एक ही हाथ के लिखे एक ही जिल्द में बँधे मिले हैं। इससे दोनों कवियों में भी निकटता का आभास होता है। अखैराम जी भरतपुर के राजा वदन सिंह, (शासन काल सं० १७७६-१८१२) एवं सूरजमल (शासनकाल सं० १८१२-२०) के यहाँ थे। इन्होंने सिंहासन बत्तीसी का अनुवाद किया था। यह भागवत के अनुवादक भीषम के वंशज थे। गंगा माहात्म्य, कृष्णचंद्रिका तथा हस्तामलक वेदान्त इनके अन्य ग्रन्थ हैं। इसी समय भरतपुर दरबार में एक मुरलीधर भी थे। इन मुरलीधर ने भागवत के पञ्चम स्कन्ध का अनुवाद भरतपुर नरेश जवाहिर सिंह (शासनकाल सं० १८२०-२५) के भाई नवलसिंह के लिए किया था।

नवलसिंह नृप ने कही, मुरलीधर कविराइ
स्कंध पांचयों भागवत भाषा देहु बनाइ ४

—खोज रि० १९४४।३०३

बहुत सम्भव है ऊपर वर्णित मुरलीधर मिश्र और भागवत पञ्चम स्कन्ध के अनुवादक मुरलीधर एक ही हों।

६५५।५७६

(२८) मोतीराम कवि, सं० १७४० में में उ०। हजारे में इनके कवित्त हैं।

सर्वेक्षण

मोतीराम की कविता हजारे में थी, अतः सं० १७५० के पूर्व इस कवि का अस्त्वि स्वतः सिद्ध है। सरोज में दिया सं० १७४० इस कवि का जन्मकाल कदापि नहीं हो सकता, जैसा कि

ग्रियर्सन (२१६) में माना गया है। यह कवि का रचनाकाल है। विनोद में (५०७) इसे रचनाकाल ही माना गया है। ग्रियर्सन और विनोद के अनुसार यह मोतीराम माधोनल के बृजभाषा-पद्यानुवादकर्त्ता हैं। लल्लू जी लाल एवं मजहर अली विला ने फोर्ट विलियम कालेज, कलकत्ता के लिए इसी पद्यानुवाद का गद्यानुवाद किया था। खोज में इस ग्रन्थ की कोई प्रति अभी मिली नहीं है, अतः कुछ निश्चयपूर्वक नहीं कहा जा सकता।

६५६।५८०

(२९) मनसुख कवि, सं० १७४० में उ०। ऐज़न। (हज़ारे में इनके कवित्त हैं।)

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध में कोई सूचना सुलभ नहीं। इनकी रचना हज़ारे में थी, अतः सं १७४० जन्मकाल कदापि नहीं हो सकता, यह कवि का रचनाकाल ही है, क्योंकि इसके १५ वर्ष बाद ही हजारा का प्रणयन हुआ था और इसे जन्मकाल मानने पर यह उस समय बच्चे ही रहेंगे।

६५७।५८१

(३०) मिश्र कवि, सं० १७४० में उ०।ऐज़न। (हज़ारे में इनके कवित्त हैं।)

सर्वेक्षण

मिश्र छाप से सरोजकार को कुछ छन्द हज़ारा में मिले थे, अतः यह मिश्र जी हजारा के समसामयिक कवि हैं अथवा पूर्ववर्ती। सरोज का सं० १७४० यदि शुद्ध है तो यह जन्मकाल कदापि नहीं हो सकता। यह रचनाकाल ही है। मिश्र, कवि की जाति है, न कि उसका नाम।

६५८।५८२

(३१) मुरलीधर कवि, सं० १७४० में उ०। ऐज़न। (हज़ारे में इनके कवित हैं।)

सर्वेक्षण

मुरलीधर का एक कवित्त सरोज में उद्धृत है, इसमें राम-जन्म का वर्णन है। यह कवित्त मुरलीधर मिश्र कृत 'रामचरित्र' का हो सकता है, हज़ारा में उद्धृत मुरलीधर का नहीं। सम्भवतः हज़ारे में श्रीधर मुरलीधर के छन्द होंगे। विनोद (६३९) में इस कवि के नाम पर जितने भी ग्रन्थ दिए गए हैं, वे अन्य मुरलीधरों के हैं। 'कवि विनोद', श्रीधर मुरलीधर की रचना है। सम्भवतः रस विनोद भी। 'नलोपाख्यान' आगरे वाले मुरलीधर मिश्र की रचना है और 'श्री साहब जी की कविता 'प्रनामी-सम्प्रदाय' के मुरलीधर बुंदेलखण्डी की।

६५६।५८५

(३२) मलूकदास कवि ब्राह्मण, कड़ा मानिकपुर, सं० १६८५ में उ०। इनकी कविता बहुत ललित है।

सर्वेक्षण

पं० महेशदत्त मिश्र ने अपने भाषाकाव्य संग्रह में मलूकदास को कड़ा मानिकपुर में रहने वाला ब्राह्मण कहा है। इनका मृत्युकाल सं० १६६५ दिया है और लिखा है कि अयोध्या से चित्रकूट जाते समय गो० तुलसीदास की इनसे भेंट हुई थी।[1] सरोजकार ने सम्भवतः यहीं से मलूकदास की तिथि और जाति स्वीकार की। विनोद में दो बार इनका उल्लेख हुआ है—एक बार (२४३) इन्हें ब्राह्मण कहा गया है, दूसरी बार (६४०) इन्हें कालपीवासी क्षत्री बताया गया है। मलूकदास न ब्राह्मण थे और न क्षत्रिय, यह खत्री थे। यह कड़ा मानिकपुर, जिला इलाहाबाद के रहनेवाले प्रसिद्ध साधु थे। इनके पिता का नाम लाला सुन्दरदास था। इनके वंशज अभी तक सिराथू, इलाहाबाद में उपस्थित हैं। इनका जन्म वैशाख बदी ५, सं० १६३१ को हुआ और इनकी मृत्यु सं० १७३६ में १०८ वर्ष की वय में कड़ा में हुई। सरोज में दिया हुआ सं० १६६५ इनका उपस्थितकाल है और ठीक है।

अजगर करै न चाकरी, पंछी करै न काम
दास मलूका कहि गए, सब के दाता राम

यह सुप्रसिद्ध उक्ति इन्हीं की है। इनकी गद्दियाँ कड़ा, जयपुर, गुजरात, मुलतान, पटना, नैपाल और काबुल तक में हैं।[2]

बाबू कृष्ण बलदेव वर्मा, द्विवेदी युग के एक अच्छे गद्य लेखक हुए हैं। मलूकदास जी वर्मा जी के नाना के बाबा थे। वर्मा जी ने एक लेख मलूकदास पर सरस्वती में लिखा था। इस लेख से मलूकदास के सम्बन्ध में अनेक स्पष्ट सूचनाएँ मिलती हैं और अनेक भ्रान्तियों का निरसन हो जाता है। खोज में मलूकदास के निम्नलिखित ग्रन्थ मिले हैं—

१. भगत वछल, १९०४।८०, १९०६।१८५ ए बी, १९२६।२९, १९३२।१३८ ए बी, १९४७।२८८।
२. भक्त विरदावली, १९०६।१९४ ए छ।
३. गुरु प्रताप, १९०६।१९४ बी।
४. पुरुष विलास, १९०६।१९४ सी।
५. अलख बानी, १९०६।१९४ डी।
६. रतन खान, १९०९।१८५ बी, १९४१।५३८।
७. ज्ञान बोध, १९१७।१०९ ए, १९४७।२८८ ग घ ङ।

---

(१) भाषाकाव्यसंग्रह, पृष्ठ १२९-३० (२) हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ ९०

८. राम अवतार लीला, १९१७।१०९ बी।
९. मलूक जस, १९३२।१३८ सी।
१०. विष्णु सत्य नाम, १९३२।१३८ डी।
११. प्रगट ज्ञान, १९४१।१८८ ।
१२. करखा, १९४७।२८८ क।
१३. ज्ञानपरीक्षा, १९४७।२८८ ख।
१४. ध्रुव चरित्र, १९४७।२८८ च।
१५. मयूरध्वज चरित्र, १९४७।२८८ ज।
१६. विभु विभूति, १९४७।२८८ झ।
१७. साखी, १९४४।२७५ ।
१८. सुख सागर, १९४७।२८८ ञ।

सरोज में मलूकदास के नाम पर तीन घोर शृङ्गारी कवित्त-सवैये उद्धृत हैं। निश्चय ही ये सन्त मलूकदास की रचना नहीं हैं। यह शृङ्गारी मलूक कोई रीतिकालीन कवि हैं। खण्डन कवि[1] के पिता का नाम मलूक चन्द था। यह श्रीवास्तव कायस्थ थे। खण्डन का रचनाकाल सं० १७८१-१८१९ है। मलूक चन्द भी सम्भवतः कवि थे। इनका रचनाकाल सं० १७५०-८० के आस-पास होना चाहिए। सरोज में मलूकदास के नाम पर उद्धृत रचनाएँ सम्भवतः इन्हीं की हैं। खोज में मलूक के नाम पर 'ऊधो पच्चीसी'[2] नामक कवित्त-सवैयों का एक लघु ग्रन्थ मिला है। यह सम्भवतः इन्हीं मलूकचन्द की रचना है।

६६०।५८६

(३३) मीर रुस्तम कवि, सं० १७३५ उ०। इनके कवित्त हजारे में हैं।

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध में कोई सूचना सुलभ नहीं है। हजारे में इनके कवित्त थे, अतः सं० १७५० के पूर्व इनका अस्तित्व सिद्ध है। यदि सरोज का संवत् १७३५ ठीक है, तो यह रचनाकाल ही हो सकता है, जन्मकाल कदापि नहीं हो सकता।

६६१।५८७

(३४) महम्मद कवि, सं० १७३५ में उ०। ऐजन। (इनके कवित्त हजारे में हैं।)

(१) भाषाकाव्यसंग्रह, कविसंख्या १४२ (२) खोज रिपोर्ट १९४१।१८७

सर्वेक्षण

महम्मद कवि की रचना हजारे में थी, अतः इस कवि का सं० १७५० के आस-पास या पूर्व अस्तित्व सिद्ध है। सरोज में दिया सं० १७३५ कवि का रचनाकाल ही हो सकता है। यदि इसे जन्मकाल माना जायगा, तो हजारे के प्रणयन काल में कवि की वय बहुत कम रहेगी। सरोज में इनका एक सवैया उद्धृत है, जो छन्द की दृष्टि से बहुत सफल नहीं है।

खोज में किसी महम्मद साहि का 'संगीत मालिका'[1] नामक ग्रन्थ मिला है। इसका प्रारम्भिक अंश खण्डित है। यह कवि पिरोज शाह के वंश में ततार शाह के पुत्र थे। सरोज के इन महम्मद से इनका तादात्म्य स्थापित कराने वाला कोई सूत्र सुलभ नहीं है।

६६२।५८८

(३५) मीरी माधव कवि, सं० १७३५ में उ०। ऐज़न। (इनके कवित्त हजारे में हैं।)

सर्वेक्षण

भक्तमाल की टीका में रूपकला जी ने एक स्थान पर ११ माधवदासों का उल्लेख किया है, इनमें से एक माधवदास काबुली भी हैं। इनका उपनाम 'मीर माधव' है।[2] सम्भवतः यही सरोज के मीरी माधव हैं। यह सं० १७२० के पूर्व उपस्थित रहे होंगे। सरोज में दिया सं० १७३५ इनका जन्मकाल कदापि नहीं हो सकता। हजारे में इनकी रचना है। इस दृष्टि से भी यही निर्णय दिया जा सकता है। कि यह अनुप्रास प्रेमी कवि थे।

६६३।५८९

(३६) मदन किशोर कवि, सं० १८०७ में उ०। इन्होंने सरस कविता की है।

सर्वेक्षण

इस कवि का उल्लेख आगे ७०६ संख्या पर पुनः हुआ है।

६६४।५९०

(३७) मखजात कवि, वाजपेयी जालिपा प्रसाद, तार गाँव जिले उन्नाव, वि०।

सर्वेक्षण

विनोद (२३८४) में इस कवि का समय सं० १९४५ के लगभग स्वीकार किया गया है। यहाँ जालिपा प्रसाद, ज्वालाप्रसाद और मखजात मखजातक हो गए हैं। सरोज के तृतीय संस्करण

---

(१) राज० रिपोर्ट भाग २, पृष्ठ ६७ (२) भक्तमाल, पृष्ठ ९०८

में भी मखजातक ही पाठ है। सरोज में इनका एक ही कवित्त है, पर उसमें कवि छाप नहीं है। अतः निश्चय नहीं किया जा सकता कि इनका नाम मखजात था या मखजातक।

६६५।५६१

(३८) महराज कवि। सुन्दरी तिलक में इनके कवित्त हैं।

सर्वेक्षण

महराज कवि की रचना सरदार के शृङ्गार संग्रह में हैं। अतः यह कवि सं १६०५ से पहले का है। विनोद (१२३४) में इन्हें न जाने किस आधार पर सं० १८७६ के पहले का बताया गया है।

खोज में किसी महराज कवि का एक ग्रन्थ निघंट मदनोदै[1] मिला है। यह वैद्यक का ग्रन्थ है। कवि का नाम ग्रन्थ में आया है।

छीर सिंधु में वास जेहि, पीत वसन, भुज चारि।
ताहि बंदि महराज कवि, नमि विंति निरधारि॥

कुछ कहा नहीं जा सकता कि यह वैद्यक ग्रन्थ रचने वाले महराज कवि सरोज के महराज कवि से भिन्न हैं अथवा अभिन्न।

६६६।५६२

(३९) मुरलीधर कवि २। ऐज़न। (सुन्दरी तिलक में इनके कवित्त हैं।)

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध में कोई प्रामाणिक सूचना सुलभ नहीं। विनोद में इस नाम के कम से कम आठ कवि है।[2] अत्र केवल नाम के सहारे किस के साथ इनका अभेद स्थापित किया जाय।

६६७।५६५

(४०) मोतीलाल कवि, बांसी राज्य के निवासी, सं० १५६७ में उ०। इन्होंने गणेशपुराण भाषा में बनाया।

सर्वेक्षण

मोतीलाल का गणेशपुराण निम्नलिखित विभिन्न नामों से खोज में मिल चुका है—

(क) गणेशपुराण, १६०१।७६, १६०६।२००, १६२३।२८२ ए। १६२६।३०६ ए, बी, सी, डी है, १६४४।३०६ क, ख।

---

(१) खोज रि० १६४४।२७६ (२) विनोद, कवि संख्या ६३६, ६६१।१, ११२१, १६४१, १६४१।१, १६४२, १६४३, १६४७।१

(ख) गणेश माहात्म्य व्रत, १९२३।२८२ बी।

(ग) गणेश कथा, १९२३।२८२ सी।

(घ) गणेश चौथ की कथा, १९२३।२८२ डी।

किसी भी प्रति में रचनाकाल नहीं दिया गया है। प्राचीनतम प्राप्त प्रति सं० १८६२ की लिखी हुई है। इस ग्रन्थ के अन्तिम छन्द में कवि ने अपना नाम दिया है—

गन नायक की सुभ कथा, संस्कृत मध्य बिसाल
जथा बुद्धि भाषा रचित, जड़मति मोतीलाल

सरोजकार ने इस कवि का विवरण महेशदत्त के भाषाकाव्य संग्रह के आधार पर दिया है। इस ग्रन्थ के अनुसार ये सरवरिया ब्राह्मण बाँसी के राज्य में बघैला ग्राम के वासी बहुत दिन पठन-पाठन कर सं० १५९८ में वहीं मृतक हुए।[1] उन्होंने गणेशपुराण को भाषा किया। पर महेशदत्त की बात ठीक नहीं प्रतीत होती। उनकी सूचनाएँ अनेक स्थलों पर भ्रष्ट हैं। १९४४ वाली प्रति के अनुसार मोतीलाल नौबस्ता, नागनगर परगना प्रयाग के निवासी थे।

नाग नगर के प्रगणा नौ बस्ता सुभ ग्राम
सुर सरि के तट बसत हैं, तहाँ है कवि को धाम ४९
षट जोजन है ग्राम ते, पश्चिम दिसि सो गाउं
बसै विप्र बुद्धिमान तहं नौबस्ता जेहि नाउं ५०

इस कवि का रचनाकाल भी ऐसी स्थिति में असन्दिग्ध नहीं। अधिक से अधिक यही कहा जा सकता है कि यह कवि सं० १८६२ के पहले किसी समय हुआ।

६६८।५९७

४१ महेशदत्त ब्राह्मण धनौली, जिले बाराबंकी, विद्यमान हैं। इन्होंने भाषा काव्य का बनाना आरम्भ किया है और संस्कृत अच्छी जानते हैं।

सर्वेक्षण

यह वही महेशदत्त हैं, जिनके भाषाकाव्य संग्रह के परिशिष्ट रूप में दिए गए कवि परिचय की भ्रान्तियों ने शिव सिंह को सरोज के प्रणयन की प्रेरणा दी। ग्रन्थान्त में महेशदत्त ने अपना भी परिचय दिया है। कम से कम महेशदत्त का यह कवि परिचय तो प्रामाणिक माना ही जाना चाहिए। इस परिचय के अनुसार महेशदत्त जी सरवरिया ब्राह्मण थे। यह मझगवाँ के सुकुल थे। बाराबंकी जिले की रामसनेही तहसील के अन्तर्गत गोमती नदी के उत्तरी किनारे पर स्थित धनौली ग्राम के यह निवासी थे। यह उसी जिले में रामनगर की पाठशाला में संस्कृत के अध्यापक थे।[2] इनके पिता का नाम अवधराम था। कवि क्षेमकरण जी इनके नाना थे। महेशदत्त का जन्म सं०

---

(१) भाषाकाव्य संग्रह, पृष्ठ १३० (२) वही, पृष्ठ १३८

१८६७ की आषाढ़ पूर्णिमा को हुआ था। विनोद के अनुसार (२१५७) इनका मृत्यु-संवत् १६६० है। विनोद में इनके निम्नलिखित ग्रन्थों की सूची दी गई है—

१. विष्णुपुराण भाषा, गद्य-पद्य दोनों में, १९२६।२२१ एल।
२. अमर कोष टीका १९२६।२२१ ए।
३. देवी भागवत।
४. बाल्मीकीय रामायण, १९२६।२२१ ई, एफ, जी, एच, आई, जे, के—क्रमशः सातों काण्ड।
५. नृसिंहपुराण, १९२६।२२१ बी, सी, डी।
६. पद्मपुराण।
७. काव्य संग्रह—सं० १९३२ में नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ से प्रकाशित।
८. उमापति दिग्विजय।
९. उद्योग पर्व भाषा।
१०. माधव निदान।
११. कवित्त रामयण टीका। इनके अतिरिक्त इनका एक ग्रन्थ खोज में मिला है जिसका उल्लेख विनोद में नहीं है।
१२. अठारह पुराण की नामावली और पचीस अवतारों के नाम १९२६।२८५।

६६९।५९८

(४२) मनभावन ब्राह्मण, मुंड़िया, जिले शाहजहाँपुर, सं० १८३० में उ०। यह कवि चन्दनराय के १२ शिष्यों में प्रथम शिष्य हैं। इनका बनाया हुआ ग्रन्थ 'शृङ्गार-रत्नावली' देखने योग्य है।

सर्वेक्षण

चन्दन का कविताकाल सं० १८२०-५० है।[1] अतः इनके शिष्य मनभावन का सरोजदत्त सं० १८३० इनका रचनाकाल ही है। कवि के सम्बन्ध में कोई अन्य सूचना सुलभ नहीं।

६७०।५९९

(४३) मनियार सिंह कवि क्षत्रिय, काशी निवासी, सं० १८६१ में उ०। यह महा उत्तम कवि हो गए हैं। इनके बनाये हुए दो महा सुन्दर ग्रन्थ 'हनुमत छब्बीसी' और 'सौन्दर्य लहरी' भाषा हमारे पुस्तकालय में मौजूद हैं।

---

(१) भाषाकाव्य संग्रह, कवि संख्या २२४

सर्वेक्षण

मनियार सिंह ने महिम्न कवित्त में अपना परिचय इस प्रकार दिया है—

६ ४ ८ १
सम्वत् के अंकरंध्र, वेद वसु चन्द्र पुरो
चन्द्रमा सरद को बरद धर्म धन को,
चाकर अखंडित श्री रामचन्द्र पण्डित को
मुख्य शिष्य कवि कृष्ण लाल के चरन को।
मनियार नाम स्याम सिंह को तनय
भो उदय क्षत्रि वंश काशी पुरी निवसन को
पारवती कन्त जस जग में दिगन्त कियो
भाषा अर्थवंत पुष्पदंत महीमन को।

इस कवित्त के अनुसार मनियार सिंह, स्यामसिंह के पुत्र थे, काशी वासी थे, जाति के क्षत्रिय थे, कृष्णलाल कवि के मुख्य शिष्य थे, रामचन्द्र पंडित के अखंडित चाकर थे। इन्होंने सं० १८४६ में पुष्पदंत कृत 'शिव महिम्न स्त्रोत' का अनुवाद कवित्तों में किया। इस ग्रन्थ में कुल ३५ कवित्त हैं। इस ग्रन्थ का एक अन्य नाम 'भावार्थ चन्द्रिका'[1] भी है।

इन्हीं मनियार सिंह के समकालीन और इसी काशी में एक और मनियार सिंह हुये हैं, उनसे यह कवि मनियार सिंह भिन्न हैं। दूसरे मनियार सिंह काशी नरेश महाराज चेतसिंह के चचेरे भाई थे, मेहरवान सिंह के पुत्र थे, जाति के भूमिहार थे और कवि नहीं थे। वे वारेन हेस्टिग्ज के उपद्रव के समय अपने ६०० घुड़सवारों के साथ चेतसिंह के साथ थे।

मेरे पास भारत जीवन प्रेस, काशी के छपे हुए मनियार सिंह के तीन ग्रन्थ हैं—

(१) महिम्न कवित्त, ३५ कवित्त।
(२) हनुमत् छब्बीसी, २६ कवित्त।
(३) सुन्दर काण्ड, ६३ छन्द, मुख्यतः कवित्त।

सरोज उल्लिखित इनका 'सौन्दर्य लहरी' नामक ग्रन्थ भी खोज में मिल चुका है।[2] इसमें देवी की स्तुति के १०३ कवित्त हैं। इसका रचनाकाल सं० १८७३ है—

३ ७ ८ १
रुद्र नैन सहित समुद्र वसु चन्द्र जुत
सम्वत् सुहात शुद्ध सर्व सुखखानी को,
जेठ तिथि पूरन संपूरन दिनेस दिन
महिमा बखानी सर्व सिद्धि फलखानी को।

---

(१) खोज रिपोर्ट १९०३।४७ (२) खोज रिपोर्ट १९२३।२७०

सामंसिह सुत मनियार सिह नाम
काशी नगर निवासी, विश्वनाथ राजधानी को ।
कामना कलपतरु फरो भरो वैभव ते
ग्रन्थ अवतरों श्री भवानी राजरानी को ॥ १०३ ॥

कवि अपनी छाप मनियार या यार रखता है ।

मनियार सिंह के सुन्दर काण्ड का विवरण एक खोज रिपोर्ट में हनुमान विजय नाम से दिया गया है । कवि का नाम चिंतामनि मनियार सिंह दिया गया है ।[1] निम्नलिखित दल का ठीक अर्थ न समझ सकने के कारण यह भ्रान्ति हो गई है—

"चिन्तामनि मनियार के, हनूमान कपि भूप ।"

इसका अन्वय यह है 'कपि भूप हनुमान मनियार के चिन्तामनि' हैं ।

६७१।५४६

(४४) मधुसूदन कवि, सं० १६८१ में उ० । इनके कवित्त हजारे में हैं ।

सर्वेक्षण

सरोज में मधुसूदन के नाम पर जो सवैया उद्धृत है, वह इनका न होकर परबत कवि का है । उक्त सवैये में आया मधुसूदन शब्द कृष्णार्थक है ।[2] इस एक सवैये के आधार पर इस कवि का अस्तित्व सम्भव नहीं । यदि हजारे में इस कवि के और छन्द भी रहे हों तो बात दूसरी है ।

६७२।५४७

(४५) मधुसूदन माथुर ब्राह्मण, इष्टकापुरी के, सं० १८३९ में उ० । इन्होंने रामाश्वमेघ भाषा रचा है ।

सर्वेक्षण

रामाश्वमेध के रचयिता मधुसूदनदास इष्टकापुरी अर्थात् इटावा के रहने वाले थे । यह माथुर चौबे थे और अपनी छाप मधु अरि दास भी रखते थे । माधुरीदास भी इनका उपनाम है । इन्होंने गोविन्द दास नामक एक धनाढ्य सज्जन के कहने पर सं० १८३२ में रामाश्वमेघ नामक ग्रन्थ बनाना प्रारम्भ किया था । यह ग्रन्थ रामचरित मानस की प्रणाली पर है । इसकी अनेक प्रतियाँ खोज में मिल चुकी हैं ।[3] आचार्य शुक्ल के अनुसार यह सब प्रकार से गोस्वामी जी के रामचरित मानस का परिशिष्ट होने योग्य है । कवि ने ग्रन्थ के प्रारम्भ में कहा है—

---

(१) खोज रिपोर्ट १९३२।४५ (२) देखिए, वही ग्रन्थ कवि संख्या ४७२ (३) खोज रिपोर्ट १९०१।८७, १९०६।१८१, १९२०।९७, १९२३।२५१ ए०, बी, १९२६।२७८ ए, बी०, सी

१—श्री गोबिंद वर दास, जिन प्रति वैभव कियो
तिन मोहि कीन्ह प्रकास, बरनहु रघुवर मख कथा

२—मधु अरि दास नाम यह मोरा
माथुर जाति जन्म मति थोरा
भानुसुता सुरसरिहि मझारा
पावन देस विदित संसारा
नगर इष्टिका पुरी सुहावन
निकट कलिन्द सुता बहै पावन
सम्वत वसु दस सत गनहु, पुनि बतीस मिलाइ
दिवस मास आषाढ़ रितु, पावस सुखद सुहाइ
शुक्ल पक्ष तिथि, द्वैज सुहाई
जीव वार सुभ मंगलदाई
हसत जोग, पुनर्बस रिक्षा
प्रकटी प्रभु जय वरनन इच्छा
श्री रामानुज कूट मझारी
कीन्ह कथा आरम्भ विचारी

६७३।५५९

(४६) मनीराम कवि २, मिश्र, कन्नौज वाले, सं० १८३९ में उ०। 'छन्द छप्पनी' नामक पिंगल का बहुत ही सुन्दर ग्रन्थ इनका बनाया हुआ है। पिंगल के संकेतों को भली-भाँति खोला है।

सर्वेक्षण

छन्द छप्पनी की प्रति खोज में मिल चुकी है।[1] खोज रिपोर्ट के अनुसार इसकी रचना सं० १८२९ में हुई थी। उद्धृत अंशों में रचनाकालसूचक अंश नहीं है। ग्रन्थ की पुष्पिका से इनकी जाति मिश्र और इनके पिता का नाम इच्छाराम ज्ञात होता है—

"इति श्री मिश्र कासादनो इच्छाराम, तनय मनीराम वर्न विरचितायां छन्द छप्पनी समाप्त पूस वदि ४, संवार सं० १८५३।"

इस ग्रन्थ के मिल जाने से स्पष्ट है कि सरोज में दिया हुआ संवत् १८३९ ठीक है और यह कवि का उपस्थितिकाल है।

---

(१) खोज रिपोर्ट १९१२।१०७

६७४।५५८

(४७) मनीराम कवि १। इनके शृङ्गार के सुन्दर कवित्त हैं।

सर्वेक्षण

मनीराम नाम के ५ कवि खोज में मिले हैं जिनमें से किसी के भी साथ इनका अभेद स्थापित करना सम्भव नहीं—

(१) मनीराम वाजपेयी, हम्मीरहठ के रचयिता चन्द्रशेखर बाजपेयी के पिता। यह मुअज्जमाबाद, जिला फतेहपुर के पास के रहने वाले थे। चन्द्रशेखर का जन्म सं० १८५५ में हुआ था, अतः इनके पिता का रचनाकाल यही होना चाहिये।[१]

(२) मनीराम, सारसंग्रह के रचयिता। उपलब्ध ग्रन्थ का प्रतिलिपिकाल सं० १७८३ है।[२]

(३) मनीराम, मनीराम द्विज, उनियारा के राजा महासिंह तोमर के आश्रित। इन्होंने बलभद्र के नखशिख की टीका[३] गद्य में सं० १८४२ में की थी। एक और मनीराम द्विज का नख-शिख[४] मिला है। यह दोनों मनीराम सम्भवतः एक ही हैं।

४. मनीराम, असनी के महापात्र, नरहरि के वंशज, शाहजहाँ के दरबारी। इनके ग्रन्थ ये हैं—

(क) पातिशाही के कवित्त शाहिजहाँ के, १९४१।१८५ क।

(ख) मनीराम के कवित्त, १९४१।१८५ ख।

(५) मनीराम, आनन्द मङ्गल[५] नामक ग्रन्थ के रचयिता।

६७५।५६०

(४८) मनीराय कवि। ऐज़न। (इनके शृङ्गार के सुन्दर कवित्त हैं।)

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध में कोई सूचना सुलभ नहीं।

६७६।५५४

४९. मदन गोपाल शुक्ल, फतूहाबाद वाले, सं० १८७६ में उ०। यह कवि बहुत दिन तक

---

(१) विनोद १२०४ (२) खोज रिपोर्ट १९०३।१५१ (३) खोज रिपोर्ट १९१२।१०८ (४) खोज रिपोर्ट १९४१।५३५ (५) खोज रिपोर्ट १९०६।२९०

जनवार वंशावतंस श्री राजा अर्जुन सिंह बलरामपुर के यहाँ थे और उन्हीं की आज्ञानुसार 'अर्जुन विलास' नामक महा विचित्र ग्रन्थ बनाया है। दूसरा ग्रन्थ इनका वैद्य-रत्न वैद्यक का महा सरल है।

सर्वेक्षण

सरोज में मदनगोपाल शुक्ल का विवरण महेशदत्त मिश्र के 'भाषा काव्यसंग्रह' के आधार पर है। इसके अनुसार अर्जुन विलास की रचना सं० १८७६ में हुई थी। यह ग्रन्थ खोज में भी मिल चुका है।[१] यह ग्रन्थ किसी एक विषय का नहीं है। इसमें वैद्यक, ज्योतिष, नीति, न्याय, व्याकरण, तन्त्र-मन्त्र शास्त्र, अलङ्कार, शृङ्गार, अर्जुनसिंह का दान तथा इनकी महिमा और इनके पुत्र दिग्विजय सिंह का जन्म आदि वर्णित हैं।

६ ७ ८ १
रस रिषि वसु इन्दु सम्वत में ग्रन्थ मञ्जु
मदनगोपाल बुध कीन्हें जो प्रकास है
भूप विरदावली सवृद्धि वेस वंसावलि
मन्त्री मित्र सभा सैन धाम ग्राम वास है
व्याकरन नीति न्याय जोतिसादि धर्मशास्त्र
तन्त्र मन्त्र काव्य कोष वैदक विकास है
गुन अभिराम जामैं ललित ललाम धरि
अर्जुन महीप नाम अर्जुन विलास है

मदनगोपाल सांकृतगोत्रीय कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे। यह बलरामपुर नरेश अर्जुनसिंह के आश्रित थे। अर्जुनसिंह का शासनकाल सं० १८७४-८७ है। ग्रन्थ, कवि के प्रौढ़ वय की कृति है। उस समय उसकी आयु कम से कम ४० वर्ष की होनी चाहिए। ऐसी स्थिति में कवि का जन्मकाल सं० १८३६ के आस-पास होना चाहिए। ग्रन्थरचना के कुछ ही दिनों के पश्चात् कवि का देहावसान हो गया। बाद में अर्जुनसिंह के पुत्र दिग्विजय सिंह ने सं० १९१८ में यह ग्रन्थ कवि के पुत्र से लिया और इसका नाम अर्जुनविलास रखा। लाला गोकुलप्रसाद व्रज ने प्रारम्भ में एक पद्य-वद्ध भूमिका जोड़ दी। ऊपर उद्धृत छन्द इन्हीं व्रज जी का है, मदनगोपाल शुक्ल का नहीं है। व्रज लिखित उक्त कवित्त के आगे के दो छन्द ये हैं—

अर्जुन महीप के नाम ग्रन्थ
अर्जुन समान गुन विसद पन्थ
रस अमित मञ्जु ज्यों सुमन बाग
कवि मधुकर के अनुराग जाग

प्रश्नवत दोहा

सुमन सुवासित ग्रन्थ यह, क्यों नहिं भयो प्रकास
विधिवत कहि कारन कवन, जो सुनि संसय नास

---

(१) खोज रिपोर्ट १९२३।२५०, १९४७।२७८

कवि और आश्रयदाता की मृत्यु के कारण ग्रन्थ नहीं प्रकाशित हो सका था। बाद में इसके प्रकाशन की व्यवस्था दिग्विजय सिंह ने की।[1]

बहुत सम्भव है वैद्य रत्न अर्जुनविलास का ही वैद्यक वाला अंश हो।

६७७।५६४

(५०) मदनगोपाल २।

सर्वेक्षण

इन मदनगोपाल का एक शृङ्गारी कवित्त सरोज में उद्धृत है। यह कवित्त दिग्विजय भूषण में भी है[2] और वहीं से सरोजकार ने इसे लिया है। ब्रज जी ने मदनगोपाल फतूहाबादी के अर्जुनविलास की पद्यबद्ध भूमिका लिखी थी और उससे पूर्ण परिचित थे। मेरी दृढ़ धारणा है कि ब्रज जी ने उक्त कवित्त अर्जुनविलास से लिया है। मदनगोपाल जी के पुत्र के यहाँ से उक्त पोथी सं० १९१८ में महाराज दिग्विजय सिंह ने मँगाई थी। ब्रज जी ने सं० १९१९ में दिग्विजय भूषण की रचना की। अतः उन्होंने इस ग्रन्थ का भी उपयोग अपने संग्रह में किया, इसमें सन्देह नहीं। ऐसी दशा में इन मदनगोपाल का समावेश मदनगोपाल संख्या ६७६ में हो जाता है।

६७८।५५५

(१५) मदनगोपाल कवि ३, चरखारी वाले।

सर्वेक्षण

इनके नाम पर सरोज में उद्धृत कवित्त में मदन छाप है। यह छाप किसी मदनमोहन या मदनकिशोर नामक कवि की भी हो सकती है। यह कवि प्रथम एवं द्वितीय संस्करणों में नहीं है। ५५५ कवि संख्यक उदाहरण के पहले प्रमाद से 'मदनगोपाल कवि चरखारी वाले' लिखा हुआ है, इसी आधार पर तृतीय संस्करण से इस नवीन कवि की सृष्टि हो गई है। यह कवि वस्तुतः ६७९ संख्यक मदनमोहन हैं।

६७९।

(५२) मदनमोहन कवि, चरखारी वाले, बुन्देलखण्डी २, सं० १८८० में उ०। यह महा निपुण कवि राजा चरखारी के मन्त्रियों में थे। इनके शृङ्गार के कवित्त सुन्दर हैं।

---

(१) माधुरी, जून १९२८, पृष्ठ ६६१-६४ (२) दिग्विजय भूषण, पञ्चदश प्रकाश (नख शिख) छन्द १९

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध में कोई सूचना सुलभ नहीं। मदनमोहन चरखारी वाले की कविता का उदाहरण नहीं दिया गया है। मेरा ऐसा ख्याल है कि ५५५ कवि संख्या पर उदाहृत कवित्त इन्हीं का है। प्रमाद से उदाहरण के ऊपर 'मदनगोपाल कवि चरखारीवाले' लिखा हुआ, होना चाहिये था 'मदनमोहन कवि चरखारी वाले'।' कवित्त में केवल 'मदन' छाप है और ६७८ संख्यक मदनगोपाल का विवरण प्रथम एवं द्वितीय संस्करणों में है भी नहीं। इस प्रकार ६७८-६७९ संख्यक मदनगोपाल एवं मदनमोहन एक ही कवि हैं, असल नाम मदनमोहन है। प्रथम संस्करण में १८८२ है, जो सप्तम संस्करण में १८८० हो गया है।

६८०।५६९

(५३) मनोहर कवि १, राय मनोहरदास कछवाहा, सं० १५९२ में उ०। यह महाराज अकबरशाह के मुसाहब फारसी और संस्कृत भाषा के महाकवि थे। फारसी में अपना नाम तोसनी लिखते थे।

सर्वेक्षण

तुजुक जहाँगीरी, प्रथम भाग, पृष्ठ १७, में लिखा है कि राय मनोहरदास की युवावस्था अकबर के दरबार में एवं वृद्धावस्था जहाँगीर के दरबार में बीती। अकबर की इन पर बड़ी कृपा थी। इन्हें उसने राय की उपाधि दी थी। जहाँगीर ने अपने राज्यारोहण के आठवें वर्ष, सं० १६७० में इनको एकहजारी का पद और आठ सौ घोड़े प्रदान किये थे। इनके एक पुत्र था पृथ्वीचन्द, जिसको जहाँगीर ने ५०० का मनसब, ४०० घोड़ों सहित, प्रदान किया था और उसे भी राय की उपाधि दी थी। इसकी मृत्यु जहाँगीर के राज्यारोहण के १५वें वर्ष सं० १६७७, में कांगरा के मोर्चे में हो गई थी। पुत्र पिता के जीवनकाल ही में मर गया था। अतः राय मनोहरदास सं० १६७७ के बाद तक जीवित रहे। इनका उत्कर्षकाल सं० १६४५ है ?[1]

सरोज में दिया सम्वत १५९२, ईस्वी सन् में कवि का उपस्थिति काल है। अकबरी दरबार के प्रायः सभी कवियों का समय सरोज में ईस्वी-सन् ही में दिया गया है। अतः यह सं० १६४९ में उपस्थिति थे। यह संवत सब प्रकार से शुद्ध है।

---

(१) अकबरी दरबार के हिन्दी कवि, पृष्ठ ४९-५०

विनोद (८३) में एवं तदनुकरण पर शुक्ल जी के प्रसिद्ध इतिहास[1] में राय मनोहर-दास का एक ग्रन्थ शतप्रश्नोत्तरी नाम का स्वीकृत है। १०० प्रश्न एवं उत्तर वाला यह ग्रन्थ मनोहरदास निरञ्जनी का है।[2] ग्रियर्सन (१०७) के अनुसार इनके बाप का नाम लूनकरन था।

६८१।५७०

(५४) मनोहर २, काशीराम रिसालदार, भरतपुर वाले, विद्यमान हैं। इनका बनाया हुआ मनोहर शतक ग्रन्थ सुन्दर है।

सर्वेक्षण

श्री मयाशंकर जी याज्ञिक के अनुसार भरतपुर नरेश महाराज जसवन्त सिंह, (शासन-काल सं० १९०९-५०) के समय में काशीराम जी, मनोहर, रिसालदार ने मनोहर शतक नामक शृङ्गार ग्रन्थ रचना।[3] याज्ञिक महोदय के कथन से सरोजकार की बात पुष्ट होती है।

६८२।५९३

(५५) मनोहर कवि ३, सं० १७८० में उ०।

सर्वेक्षण

भ्रमरगीत सम्बन्धी इनका एक सवैया सरोज में उद्धृत है। इस सवैय को ध्यान में रखते हुए स्वीकार करना पड़ता है कि इसके रचयिता गौड़ सम्प्रदाय के अनुयायी मनोहरदास थे, जो वृन्दावन में रहा करते थे और जो प्रियादास के गुरु थे। इन्होंने सं० १७५७ में राधारमण रस सागर लीला या श्री राधिकारमण रस सागर[4] नामक ग्रन्थ कवित्त सवैयों में लिखा था।

संवत सत्रै सै सतावन जानि कैं
सावन वदि पंचमी महोत्सव मानि कैं
निरखि श्री राधा रमण छवि लड़ैती लाल कौं
हरि हाँ, मनोहर सम्पूरन वनराज विचार्यो ख्याल कौं ११४

१९४१ वाली रिपोर्ट में मनोहरदास जी का गुरु सम्प्रदाय दिया हुआ है। चैतन्य महा-प्रभु के शिष्य श्री गोपाल भट्ट, गोपाल भट्ट के श्रीनिवासाचार्य, श्रीनिवासाचार्य के रामचरण चटराज। यही चटराज सम्भवतः चटर्जी हैं। यही रामचरण मनोहरदास के गुरु थे। इनका उल्लेख रामशरण नाम से राधारमण रस सागर के इस कवित्त में हुआ है।

---

(१) हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ २०५ (२) देखिए, भक्ती ग्रन्थ, कवि संख्या ७११। (३) माधुरी, फरवरी १९२७, पृष्ठ ८४ (४) खोज रिपोर्ट १९०९।१९१, १९१२।१०९, १९४१।१८६

प्रथम प्रणाम गुरु श्री रामशरण नाम
चन्द राज चरण सरोज मन भायो है
कृपा करि दीनी सिक्षा दीक्षा परिचर्या निज
राधिका रमण वृन्दावन दरसायो है
सद्गुण समुद्र दया सिंधु प्रेमा पारावार
सील सदाचार की बितान जग छायो है
ता दिन सफल जन्म भयो है अनाथ वन्धु
मनोहर नाम राखि मोहि अपनायो है १

निम्नलिखित कवित्त में कवि ने अपने वृन्दावनी होने का उल्लेख किया है।

राधिका रमण रस सागर सरस सत
पठत दिवस रैनि चैन नहीं मन मैं
सेवन की अभिलाष राखत छिन ही छिन
बिन दरसन तलफत वृन्दावन मैं
ऐसो बड़भागी पै करत कृपा अभिमत
निरखें युगल हित पुलकित तन मैं
मनोहर करै आस वास नित निकट मैं
रहै श्री गोपाल भट परिकर मैं ११३

प्रियादास ने सं० १७६९ में भक्तमाल की टीका लिखी थी। इस टीका में इन्होंने मनोहर-दास का गुरु रूप में स्मरण किय है।[1]

सरोज में दिया सं० १७८० कदापि जन्मकाल नहीं हो सकता, जैसा कि ग्रियर्सन में (४०२) स्वीकृत है। यह कवि के जीवन का सान्ध्यकाल है।

विनोद में (६११) इनके नाम-लीला और धर्म-पत्रिका नामक दो अन्य ग्रन्थों का और उल्लेख हुआ है।

६८३।५३५

(५६) माधवानन्द भारती, काशीस्थ, सं० १९०२ में उ०। इन्होंने शंकर दिग्विजय को संस्कृत से भाषा किया है।

सर्वेक्षण

काशी वाले माधवानन्द भारती, रामकृष्ण भारती के शिष्य थे। इनके लिखे दो ग्रन्थ खोज में मिले हैं।

---

(१) देखिये, खोज रिपोर्ट, कवि संख्या ४६६।

(१) कैलाश भाग—१६२६।२७७ ए। यह स्कन्द पुराण के ब्रह्मोत्तर खण्ड का अनुवाद है। इसका रचनाकाल फागुन सुदी १०, शनिवार, सं० १६२६ है।

> इन्दु, अंक विंशतिषट साला
> आनन्दवन यह चरित रसाला
> फागुन सुखद पाख उजियारा
> दसमी रनि पुष्य सनिवारा

ग्रन्थारम्भ में यह लेख है—

"अथ कैलाश मार्ग अर्थात स्कन्द पुराण का ब्रह्मोत्तर खण्ड जिसको श्री स्वामी रामकृष्ण भारती, शिष्य माधवानन्द भारती ने दोहा-चौपाई-छन्द रीति से काशी जी में भाषा किया। संवत १६२६ में शीतलाप्रसाद सराफ ने लिखा।"

(२) शंकर दिग्विजय,—१६२६।२७७ बी। ग्रन्थ की पुष्पिका में तो कवि का नाम आया ही है, बीच में भी छन्दों में व्यवहृत हुआ है।

> **जो पायो है मोद, यह मैं माधव भारती**
> **तैसो लहै प्रमोद, सम्भु कृपा से लोग सब**

ग्रन्थ का प्रतिलिपिकाल सं० १६२७ है। इस संस्कृत से अनूदित ग्रन्थ में शंकराचार्य का जीवन-चरित है।

सरोज में दिया सं० १६०२ कवि का जन्मकाल कदापि नहीं हो सकता, जैसा ग्रियर्सन (५८७) और विनोद (२८७०) में स्वीकृत है। यदि इसे जन्मकाल माना जायगा; तो यह स्वीकार करना पड़ेगा कि कवि ने २४ वर्ष की वय के पहले ही संन्यास ले लिया था। यह धारणा ठीक नहीं, क्योंकि यह संन्यास लेने की वय नहीं है। अतः यह कवि का उपस्थिति काल ही है।

६८४।५३६

(५७) महेश कवि, सं० १८६० में उ०।

सर्वेक्षण

जिन महेश की कविता सरोज में उदाहृत है, वे कान्यकुब्ज ब्राह्मण पाण्डेय थे, कन्नौज के निकट मीरा की सराय के रहने वाले थे। यह ज्योतिष, कोष, पिङ्गल, अलङ्कार, नायिका भेद में प्रवीण थे। द्विज देव जी के दरबारी थे। इनका देहान्त अपने घर पर ही १८६३ ई० (सं० १६२०) में अर्द्धाङ्ग रोग से हुआ। मातादीन मिश्र ने कवित्त रत्नाकर में यह सब सूचना

दी है। महेश जी इन्हीं मातादीन के गाँव के रहने वाले थे, अतः सूचना प्रामणिक है। सरोज में इनका समय सं० १८६० दिया गया है। यह १८६० वस्तुतः ईस्वी-सन् में उपस्थितिकाल है। इन महेश के अतिरिक्त खोज में तीन महेश और मिले हैं :—

(१) महेश उपनाम है। कवि का पूरा नाम राजा शीतलाबख्श बहादुर सिंह है। यह बस्ती के राजा थे। इनके पुत्र का नाम पटेश्वरीप्रसाद नारायण सिंह था। महेश जी कवि लछिराम के आश्रयदाता थे। इन्होंने शृङ्गार शतक[1] की रचना की है। विनोद (२३६४) के अनुसार यह सं० १९४१ के लगभग तक जीवित थे। खोज के अनुसार यह सं० १८६० के लगभग वर्तमान थे। यह सूचना शृङ्गार शतक के वर्तमान स्वामी से मिली है और प्रामाणिक प्रतीत होती है।

(२) महेश, हम्मीर रासो के[2] रचयिता। प्राप्त प्रति सं० १८६१ की लिखी हुई है, अतः यह इस संवत के पहले के हैं।

(३) महेशदत्त त्रिपाठी, यह नन्दापुर जिला सुलतानपुर के रहने वाले थे। इन्होंने नीलकण्ठ के पुत्र भट्ट शंकर रचित संस्कृत ग्रन्थ व्रतार्क का अनुवाद हिन्दी गद्य में व्रतार्क भाषा नाम से किया है।[3]

६८५।५३७

(५८) मदनमोहन, सं० १६९२ में उ०। इनके पद रागसागरोद्भव में हैं।

सर्वेक्षण

यह पद रचने वाले भक्त कवि हैं। इनके पद राग कल्पद्रुम में हैं। सरोज में उद्धृत पद में मदनमोहन छाप है, फिर भी यह सम्भव है कि यह प्रसिद्ध सूरदास मदनमोहन से भिन्न न हों।

सूरदास मदनमोहन अकबर के समय में संडीला के अमीन थे। सारी सरकारी जमा साधुओं को खिला कर यह आधी रात में खिसक गए थे। यह ब्राह्मण थे। भागने के अनन्तर इन्होंने गौड़ीय सम्प्रदाय में दीक्षा ले ली थी। यह वृन्दावन में रहने लगे थे। शुक्ल जी ने इनका रचना काल सं० १५९०-१६०० के बीच अनुमान किया है।[4] अकबर का शासनकाल सं० १६६२ तक है। सरोज में दिया सं० १६९२ इनका अन्तिम जीवनकाल हो सकता है।

---

(१) खोज रिपोर्ट १९४७।२९२। (२) खोज रिपोर्ट १९०१।६२, १९४१।५३६। (३) खोज रिपोर्ट १९२६।२२२ (४) हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ १८७।

६८६।५३८

(५९) मंगद कवि ।

सर्वेक्षण

सरोज वाले यह मंगद यदि राजा मंगद सिंह हैं, जिनके आश्रय में मण्डन थे,[१] तो इनका भी रचनाकाल सं० १७१६ के आस-पास होना चाहिए ।

६८७।५३९

(६०) माधवदास, ब्राह्मण, सं० १५८० में उ० । इनके पद रागसागरोद्भव में हैं । यह महाराज बड़े पण्डित थे और जगन्नाथपुरी में रहा करते थे । एक बार ब्रज में भी आये थे ।

सर्वेक्षण

सरोजकार ने माधवदास जगन्नाथी का विवरण भक्तमाल के आधार पर दिया है ।

पहिले वेद विभाग कथित पुरान अष्टादस
भारत आदि भागौत मथित उद्धारयो हरि जस
अब सोधे सब ग्रन्थ अर्थ भाषा विस्तारियो
लीला जै जै जैति गाय भव पार उतारयो
जगन्नाथ इष्ट वैराग्य सींव करुणा रस भीज्यो हियो
विनै व्यास मनो प्रगट ह्वै, जग को हित माधो कियो ७०

प्रियादास की टीका से ज्ञात होता है कि यह ब्राह्मण थे और अपनी पत्नी के मर जाने पर विरक्त हो जगन्नाथ जी में रहने लगे थे ।

माधोदास दिवज निज तिया तन त्याग कियो
लियो मन जानि जग ऐसोई व्योहार है
× × ×
आये नीलगिरि धाम रहे गिरि सिन्धु तीर
अति मतिधीर भूख प्यास न विचार है ३१५

प्रियादास की टीका के ही अनुसार यह एक बार वृन्दावन भी आये थे ।

देखि-देखि वृन्दावन मन में मगन भए
गए श्री विहारी जू के चरना तहाँ पाये हैं । ३२५

---

(१) हिन्दी साहित्य का इतिहास संख्या ६६६

प्रियादास जी ने १२ कवित्तों में (३१५-२६) इनके अनेक चमत्कार वर्णित किये हैं। माधो जगन्नाथी के निम्नलिखित ग्रन्थ खोज में मिले हैं—

१. ध्यान लीला—राज० रिपोर्ट, भाग १, संख्या ५८। इसमें कुल ७७ छन्द हैं। विषय ईशाराधना है। ग्रन्थ के अन्तिम चरणों से जगन्नाथ से इनका सम्पर्क स्पष्ट है।

सोइ हरी श्री नील शिखर करै भोग विलासा
श्री जगनाथ को दासनुदास गावै माधोदासा ७७

नीलशिखर शब्द प्रियादास के ऊपर उद्धृत कवित्त में भी आया है। यह स्पष्ट ही जगन्नाथपुरी की ओर इङ्गित करता है।

२. नारायण लीला—राज० रिपोर्ट, भाग १, संख्या ६२, १६०६।१७७ए। इस ग्रन्थ के भी प्रारम्भिक एवं अन्तिम अंशों से इसी बात की सूचना मिलती है।

आदि—जय जय जय श्री जगन्नाथ नारायण स्वामी
ब्राह्मादि कीतान्तजीर्ब सर्वांतरयामी

अन्त—शङ्ख चक्र गदा पदम मुकुट कुण्डल पीताम्बरधारी
नील शिखर श्री भ्राजमान सेवक सुखकारी
श्री जगन्नाथ को रूप देखि मन भयो हुलासा
श्री जगन्नाथ को दास गावै गुसाईं श्री माधोदासा २६६

(३) रथ लीला, १६४१।१६६। इस ग्रन्थ की ये पंक्तियाँ इन्हें माधो जगन्नाथी की रचना सिद्ध करती हैं।

(क) जै जै जै श्री जगनाथ रथ बिजै मुरारी
(ख) श्री जगन्नाथ कौ दासानुदास गावै माधोदास १५५

सं० १८२५ में प्रतिलिपित वाणी संग्रह[1] में माधौ जगनाथी के पद पृष्ठ २५४-५५ पर हैं।

सरोज में दिया हुआ सं० १५८० माधोदास जगन्नाथी का रचनाकाल ही होना चाहिए। ग्रियर्सन (२६) और विनोद (१०१) में यह जन्म संवत के रूप में स्वीकृत है। सरोज में माधवदास के नाम पर यह पद उद्धृत है।

श्री गोकुलनाथ निज वपु धरयो
भक्त हेत प्रगटे श्री वल्लभ जग ते तिमिर जू हर्यो

---

(१) राज० रिपोर्ट, भाग ३, पृष्ठ ६५

नन्द नन्दन भए तव गिरि गोप ब्रज उद्धर्यो
नाथ विटठल सुवन वहै कै परम हित अनुसर्यो
अति अगाध अपार भवनिधि तारि अपनो कर्यो

यह पद निश्चय ही माधौदास जगन्नाथी का नहीं है। सरोज में परिचय एक माधवदास का है और उदाहरण दूसरे माधवदास का। जिन माधवदास का उदाहरण दिया गया है, वे गोसाईं गोकुलनाथ के शिष्य हैं। गोकुलनाथ विट्ठलनाथ के सात पुत्रों में से चौथे थे और इनकी गद्दी गोकुल में थी। यही गोकुलनाथ वार्ता साहित्य के आदि जनक कहे जाते हैं। यह सं० १६४२ में आचार्य हुए थे। यही विट्ठलनाथ का तिरोधानकाल है। ऐसी स्थिति में माधवदास का समय भी सं० १६४२ के आस-पास ही होना चाहिए। सं० १६५६ का रचा हुआ विनोद सागर नामक कृष्ण चरित सम्बन्धी एक ग्रन्थ मिला है। इसके रचयिता का नाम माधवदास है। समय की दृष्टि से यह माधवदास प्रसंग प्राप्त माधवदास प्रतीत होते हैं।

संवत सोरह से ओनसठा
रितु वसन्त उपजो उतकठा
चैतहि शुक्ल पक्ष तिथि सातै
गुरु मुख जोग ब्रह्म अघ घातै
अकबर पातिशाह कै राजू
एहि कथा को किएउ समाजू

—खोज रिपोर्ट १९०५।६८

ग्रियर्सन (२६) में माधवदास को भगवत रमित या रसिक का पिता कहा गया है। भगवत रसिक के पिता का भी नाम माधवदास था, पर वह माधौदास जगन्नाथी एवं गोकुलनाथ के शिष्य माधवदास से भिन्न हैं। भगवत रसिक हरिदास के शिष्य थे। 'वन परिक्रमा' के रचयिता एक माधवदास मिले हैं, जो हरिदास के शिष्य थे।

परम भगत रुचि उपजहि उर आणंद प्रकाश
श्री हरिदासन दास गावै माधौदास

—राज० रिपोर्ट, भाग १, ग्रन्थ संख्या १२८

सम्भवत यह 'वन परिक्रमा' वाले माधवदास ही भगवत रसिक के पिता माधवदास हैं और पिता-पुत्र दोनों हरिदास के शिष्य हैं।

६८८।५४०

(६६) महाकवि, सं० १७८० में उ०।

सर्वेक्षण

महाकवि, कालिदास त्रिपाठी का उपनाम है। सरोज सप्तम संस्करण में महाकवि की कविता के उदाहरण वाले पृष्ठ पर पाद टिप्पणी में संशोधक रूपनारायण पाण्डेय लिखते हैं। पण्डित कृष्णविहारी मिश्र, बी० ए०, एल एल० बी० ने प्रमाणित किया है कि महाकवि कालिदास कवि ही का एक उपनाम है।

विनोद (७१६) के अनुसार भी महाकवि असल में कालिदास त्रिवेदी का उपनाम है। वधू विनोद में इन्होंने इस नाम से भी कविता की है। ऐसा मानते हुए भी विनोद में कालिदास का विवरण ४३१ संख्या पर और महाकवि का ७१६ संख्या पर अलग-अलग दिया गया है। यह आश्चर्यजनक तो है ही, हास्यास्पद भी है। इसी प्रकार ग्रियर्सन में भी इनका विवरण अलग-अलग है। सरोजकार को यह भ्राँति दिग्विजय भूषण के कारण हुई। दिग्विजय भूषण में कालिदास और महाकवि दो अलग-अलग कवियों के रूप में स्वीकृत हैं। सरोजकार ने कालिदास त्रिवेदी का विवरण हजारे के आधार पर दिया है और महाकवि का ग्रहण दिग्विजय भूषण के आधार पर किया है। महाकवि के नाम पर उद्धृत सवैया दिग्विजय भूषण से लिया गया है। सुधा सर के अन्त में दी दूत छापी कवि सूची में भी कालिदास और महाकवि एक व्यक्ति के दो नाम स्वीकृत किए गए हैं।[1]

सरोज में दिया सं० १७८० कालिदास उपनाम महाकवि का अन्तिम जीवनकाल हो सकता है।

६८६।५४२

(६२) महताब कवि। इन्होंने नखशिख बहुत सुन्दर बनाया है।

सर्वेक्षण

सरोज में किसी राना और हिन्दूपति बादशाह की प्रशस्ति में लिखा हुआ महताब का यह कवित्त भी उद्धत है।

कहै मन चित को लगाय कै चरन रहौ
स्रवन कहत गुन गाथ सो गहो करौं

---

(१) राज० रिपोर्ट भूमिका, पृष्ठ १२६

बैन यों कहत राना रूप को पढ़ौंगो हयाँई
नैन जू कहत रूप लाह सो लहो करौं
त्योंही महताब दोइ मास घर सीख बिन
बैस यों कहत परदेस क्यों रहो करौं
कीजिए दुरस न्याउ हिन्दूपति बादशाह
कौन को उराहनो द्यों कौन को कहो करौं

राना और हिन्दूपति ये दोनों अभिधान मेवाड़ नरेशों के हैं। विनोद (७८४) में महताब को उन हिन्दूपति का आश्रित कहा गया है, जिनके यहाँ लाला भिखारीदास थे। दास के समय को ध्यान में रखते हुए इनका समय सं० १८००. दिया गया है। पर राना और हिन्दूपति शब्दों पर ध्यान देते हुए इस समय में संशोधन के लिए प्रचुर अवकाश है।

———

६६०।५४५

(६३) मीरन कवि। ऐजन। (इन्होंने नखशिख बहुत सुन्दर बनाया है।)

सर्वेक्षण

इस श्रृङ्गारी कवि के सम्बन्ध में कोई सूचना सुलभ नहीं।

———

६६१।५५०

(६४) मल्ल कवि, सं० १८०३ में उ०। भगवंतराय खींची के यहाँ थे।

सर्वेक्षण

सरोज में मल्ल के नाम पर दो कवित्त दिए गए हैं। दोनों भगवन्तराय खींची से सम्बन्धित हैं। एक में उनकी दुन्दुभी का और दूसरे में उनकी मृत्यु का वर्णन हुआ है। अतः इनका उक्त खींची के दरबार में रहना सिद्ध है। भगवन्तराय का मृत्यु काल सं० १८१७ माना जाता है। अतः सरोज में दिया हुआ मल्ल कवि का संवत १८०३ ठीक है और यह इनका उपस्थितिकाल है।

महाराज छत्रसाल के पौत्र और हृदय साहि के पुत्र कुँवर मैदिनीमल्ल भी मल्ल नाम से रचना करते थे। इन्होंने सं० १७८७ में श्री कृष्णप्रकाश नाम से हरिवंश पुराण का अनुवाद किया था।[1]

———

(१) खोज रिपोर्ट १९०५।६६

६६२।५५१

(६५) मानिकचन्द कवि, सं० १६०८ में उ० । रागसागरोद्‌भव में इनके पद हैं ।

सर्वेक्षण

मानिकचन्द का यह पद सरोज में उदाहृत है ।

जै जन गए सरन ते तारे
दीनदयाल प्रगट पुरुषोत्तम विट्‌ठलनाथ ललारे
माला कण्ठ तिलक माथे दै सङ्ख चक्र वपु धारे
मानिकचन्द प्रभु के गुन ऐसे महा पतित निस्तारे

इस पद से ज्ञात होता है कि मानिकचन्द जी वल्लभ सम्प्रदाय के वैष्णव थे और विट्ठलनाथ जी के शिष्य थे । ऐसी दशा में सरोज में दिया सं० १६०८ एकदम ठीक है और यह कवि का उपस्थितिकाल है । मानिकचन्द की कथा २५२ वैष्णवों की वार्ता में है । इनकी वार्ता वारहवीं है । यह आगरा के रहने वाले क्षत्री (खत्री) थे ।

मानिकचन्द की एक कृति गुसाईं जी की बधाई उपलब्ध हुई है । यह गुसाईं जी और कोई नहीं, विट्ठलनाथ जी हैं ।

बहुरि कृष्ण श्री गोकुल प्रगटे श्री विट्ठलनाथ हमारे
द्‌वापर वसुधा भार हर्‌यो हरि, कलयुग जीव उधारे
× × ×
ऐसो को कवि है, जुग महियाँ बरने गुन जु तिहारे
मानिकचन्द प्रभु को सिव खोजत, गावत वेद पुकारे

—राज० रिपोर्ट भाग ३, पृष्ठ २७

यह ग्रन्थ सं० १६०७ और १६४२ के बीच किसी समय रचा गया होगा ।

———

६६३।५६१

(६६) मानिकचन्द कायस्थ, सं० १६३० में उ० । जिले सीतापुर के अच्छे कवि हैं ।

सर्वेक्षण

सं० १६३० के ४ वर्ष बाद ही सरोज का प्रणयन हुआ, अतः यह संवत कवि का रचना-काल है । कवि सरोजकार का समकालीन है । ग्रियर्सन में (७१०) व्यर्थ के लिए सन्देह उठाया गया है कि यह जन्म संवत है अथवा रचना संवत ।

६६४।५५२

(६७) मुनिलाल कवि ।

सर्वेक्षण

मुनिलाल का रामप्रकाश नाम अलङ्कार ग्रन्थ खोज में मिला है।[1] रिपोर्ट में रचना-काल सूचक छन्द उद्धृत नहीं है, पर रचना काल सं० १६४२ (?) दिया गया है। इस अलङ्कार ग्रन्थ में सभी छन्द रामपरक हैं, ऐसा प्रतीत होता है। सरोज में इनका राम के पद-नख का उज्ज्वल वर्णन करने वाला एक कवित्त उद्धृत है। हो सकता है, यह कवित्त इसी रामप्रकाश ग्रन्थ का हो। सम्भवतः यह ६४१ संख्यक मून या मुनिलाल से अभिन्न हैं। मून की अधिकांश रचनाएँ रामपरक हैं।

६६५।५४८

(६८) मतिराम त्रिपाठी टिकमापुर, जिले कानपुर के, सं० १७३८ में उ०। यह महाराज भाषा-काव्य के आचार्यों में गिने जाते हैं। हिन्दुस्तान में बहुधा बड़े राजों-महाराजों के यहाँ थोड़े-थोड़े दिन रहे और राजा उदोतचन्द, कमाऊँ नरेश और भाऊ सिंह हाड़ा छत्रसाल राजा कोटाबन्दी और शम्भुनाथ सुलंकी इत्यादि के यहाँ बहुत दिनों तक रहे। ललित-ललाम अलङ्कार का ग्रन्थ राव भाऊ सिंह कोटा वाले के नाम से बनाया और छन्दसार पिङ्गल फतेसाहि बुन्देला श्रीनगर के नाम से रचा। रसराज नायिका भेद का ग्रन्थ बहुत सुन्दर बनाया।

सर्वेक्षण

मतिराम रीतिकाल के सुप्रसिद्ध कवियों और आचार्यों में हैं। यह परम्परा से भूषण और मतिराम के भाई प्रसिद्ध हैं। इनका जन्म सं० १६७४ के लगभग तिकवाँपुर, जिला कानपुर में रत्नाकर त्रिपाठी के यहाँ हुआ था। इनका मृत्यु संवत् १७७३ माना जाता है। कृष्णविहारी मिश्र ने मतिराम ग्रन्थावली का सम्पादन किया है, जो गङ्गा पुस्तक माला, लखनऊ से प्रकाशित हो चुकी है। अभी हाल ही में इसका एक नया संस्करण हुआ है। इसमें मतिराम के तीन सुप्रसिद्ध ग्रन्थ, रसराज, ललित-ललाम और मतिराम सतसई सङ्कलित हैं। मतिराम के निम्न-लिखित ग्रन्थ खोज में मिले हैं—

(१) ललित-ललाम—१६०३।६७, १६२३।२७६ ए, बी, सी, १६२६।३०० ए, बी, सी। मतिराम बूँदी के महाराव भाव सिंह के यहाँ बहुत दिनों रहे। यहीं सं० १७१६-४५ के बीच इन्होंने किसी समय यह अलङ्कार ग्रन्थ रचा। १७१६-४५ भाव सिंह का शासनकाल है।

---

(१) खोज रिपोर्ट १६०६।२६८

(२) रसराज—१९००।४०, १९०१।६७, १९०६।१९, ६ ए, १९२०।१०५ बी, १९२३।२७६ ए, १९२६।३०० डी, ई, एफ, जी, एच, आई, जे। यह नायिका भेद और शृङ्गार रस का ग्रन्थ है। यह कवि की श्रेष्ठतम कृति है।

(३) सतसई—१९०६।१९६, १९२३।२७६ डी। १९२६।३०० के, एल। बिहारी सतसई के बाद श्रेष्ठता में इसी सतसई का स्थान है।

(४) साहित्य सार—१९०६।१९६ बी। यह नायिका भेद सम्बन्धी ग्रन्थ है।

(५) लक्षण शृङ्गार—१९०६।१९६ सी। यह भाव अनुभाव सम्बन्धी ग्रन्थ है।

(६) अलङ्कार पञ्चाशिका—पं०, १९२२।६४ ए। सं० १७४७ में कुमाऊँ के राज उदोतचन्द के पुत्र ज्ञानचन्द के लिए रचित।

(७) फूल मञ्जरी—यह ग्रन्थ खोज में नहीं मिला है। इसका परिचय कृष्णविहारी मिश्र ने मतिराम ग्रन्थावली की भूमिका में दिया है।[1]

इन ग्रन्थों के अतिरिक्त दो ग्रन्थ और भी मतिराम के कहे गए हैं। एक है बरवै नायिका भेद[2] और दूसरा है वृत्त कौमुदी।[3] बरवै नायिका भेद वस्तुतः रहीम की कृति है। रहीम ने केवल उदाहरण लिखे थे। सम्भवतः मतिराम ने इन्हें अलक्षण देख और सुलक्षण पा सलक्षण कर दिया।

यह नवीन संग्रह सुनो जो देखै चित देइ
विविध नायका नायकनि जानि भली विधि लेइ १६७

अस्तु यह बरवै नायिका भेद किसी एक व्यक्ति की रचना नहीं है। यह एक नवीन संग्रह है।

वृत्त कौमुदी की उपलब्धि ने पिछले ३५ वर्षों से साहित्य जगत में हलचल सी मचा रखी है। इस ग्रन्थ का रचनाकाल सं० १७५८, कार्तिक शुक्ल १३ है।

संवत सत्रह सै बरस अट्ठावन सुभ साल
कार्तिक शुक्ल त्रयोदशी करि विचार शुभ काल २७

यह ग्रन्थ सरूप सिंह बुन्देला के लिए रचा गया था।

वृत्त कौमुदी ग्रन्थ की सरसी सिंह सरूप
रची सुकवि मतिराम सो पढ़ो सुनो कवि रूप २८

---

(१) मतिराम ग्रन्थावली, पृष्ठ २२०-२२ (२) खोज रिपोर्ट १९२३।२७६ ई, (३) खोज रिपोर्ट १९२०।१०५ ए, पं १९२२।६४ सी।

यह सरूप सिंह मधुकर साह के वंश के हैं। मधुकर साह के ८ पुत्र थे। इनमें से एक प्रसिद्ध वीर सिंह देव थे; जिन्होंने सलीम, बाद में जहाँगीर, के लिए अकवर के परम मित्र अबुल-फजल की हत्या की थी और जिनके लिए महाकवि केशव ने 'वीर सिंह देव चरित' की रचना की थी। इन वीर सिंह देव के १२ पुत्र थे। जुझार सिंह बड़े थे। यही राजा हुए। शेष ११ भाइयों को जागीरें मिलीं। इन्हीं में एक चन्द्रभान थे। इनको कुरीच, कोंच और कोंडार की जागीर मिली थी। इन चन्द्रभान के पुत्र मित्र साहि बुन्देला थे। इन्हीं मित्र साहि के पुत्र स्वरूप सिंह बुन्देला थे, जो वृत्त कौमुदी के रचयिता मतिराम के आश्रयदाता थे। कवि ने ग्रन्थारम्भ में राज वंश का यह वर्णन दिया है।

मधु साहि सुवन बुन्देल धर, वीर सिंह अवतार लिय
जय जुथ प्रवल मंडिय जगत, जयति विदितदिस हद्द किय ८

× × ×

हुव चन्द्रभान बुन्देल सोइ, वीर सिंह पंचम सुवन
वर खग्ग दद्धि दिसि दद्धि लिय, गज्जि दुसह दव्विय दूवन ९

× × ×

बुन्देल वीर कुंजरपती चन्द्रभान महिपाल सुव
धनि धीर धरनि मण्डन प्रबल मित्र साहि नरनाह हुव १०

× × ×

नृप मित्र साहि नन्दन प्रबल गहिरवार गम्भीर भुव
कुल दीप वीर बुन्देल पर अब सरूप अवतार हुव ११

इन्हीं सरूप सिंह के लिए छन्दसार अथवा वृत्त कौमुदी नामक ग्रन्थ रचा गया।

भिक्षुक आए भुवन के सबन लहै मन काम
त्योंही नृप की सुजस, भायो कवि मतिराम १३

ताहि बचन सनमानि कै कीन्हों हुकुम सुजान
ग्रन्थ संस्कृत रीति सो भाषा करौ प्रमान १५
छन्दसार संग्रह रच्यौ सकल ग्रन्थ मति देखि
बालक कविता सिद्धि का भाषा सरल विशेष १६

यहाँ तक तो कोई बाधा नहीं। आगे कवि ने स्ववंश वर्णन किया है। इसके अनुसार मतिराम वत्स गोत्री त्रिपाठी थे, वनपुर के रहने वाले थे, चक्रमणि त्रिपाठी के प्र-प्रपौत्र, गिरिधर के प्रपौत्र, वलभद्र के पौत्र, विश्वनाथ के पुत्र और श्रुतिधर के भतीजे थे।

तिरपाठी वनपुर बसै वत्स गोत्र सुनि गेह
बिबुध चन्द्रमनि पुत्र तहँ गिरिधर गिरिधर देह २१

भूमिदेव वलभद्र हुव तिनहि तनुज मुनि जान
मण्डित-पण्डित मंडली मंडन मही जहान २२

तिनको तनय उदार मति विश्वनाथ हुव नाम
दुतिधर श्रुतिधर को अनुज, सकल गुनन को धाम २३

तासु पुत्र मतिराम कवि, निज मति के अनुसार
सिंह सरूप सुजान को बरन्यो सुजस अपार २४

इस वंशावली से स्पष्ट है कि वृत्त कौमुदी के रचयिता मतिराम प्रसिद्ध भूषण के भाई नहीं थे, क्योंकि भूषण तो—

द्विज कनौज कुल कश्यपी, रत्नाकर सुत धीर
बसत त्रिविक्रम पुर सदा, तरनि तनूजा तीर २६

थे। इस प्रकार वृत्त कौमुदी के रचयिता मतिराम वनपुर के रहने वाले हैं। यह वनपुर वही हैं, जहाँ के रहने वाले प्रसिद्ध कवि कालिदास, उनके पुत्र उदयनाथ कवीन्द्र, पौत्र दूलह हुए हैं और जहाँ इन्द्रजीत त्रिपाठी नामक एक अन्य कवि हुए हैं, जो औरङ्गजेब के आश्रित थे। भूषण वनपुर के रहने वाले नहीं हैं, यह त्रिविक्रमपुर अथवा तिकवाँपुर के रहने वाले थे। मतिराम विश्वनाथ त्रिपाठी के पुत्र हैं, भूषण रत्नाकर के। मतिराम १० कुल के निकृष्ट कान्य-कुब्जों में हैं, वत्स गोत्र के हैं, भूषण षट्कुल के उत्तम कान्यकुब्जों में हैं, कश्यप गोत्र के हैं। ऐसी दशा में वृत्त कौमुदी के कर्ता मतिराम प्रसिद्ध महाकवि भूषण के भाई नहीं। पर परम्परा कहती है कि मतिराम भूषण के भाई थे। सरोज, ललित-ललाम और मतिराम सतसई भूषण के भाई मतिराम की रचनाएँ हैं। फिर इसका समाधान क्या।

चरखारी नरेश विक्रम साहि के दरबार में विहारी लाल नामक एक कवि हुए हैं। इन्होंने उक्त विक्रम साहि रचित विक्रम सतसई की टीका सं० १८७२ में रस चन्द्रिका नाम से की थी। इस टीका में कवि ने अपना वंश वर्णन भी किया है।[1]

बसत त्रिविक्रमपुर नगर कालिन्दी के तीर
विरचौ भूप हमीर जनु मध्य देस कौ हीर २८

भूषन चिन्तामन तहाँ कवि भूषन मतिराम
नृप हमीर सनमान ते कीना निज निज धाम २९

हैं पन्ती मतिराम के सुकवि विहारी लाल
जगन्नाथ नाती विदित सीतल सुत सुभ चाल ३०

कस्यप वंस कनोजिया विदित त्रिपाठी गोत
कविराजन के वृन्द में कोविद सुमति उदोत ३१

(१) ना० प्र० पत्रिका, माघ १९८५ में प्रकाशित चरखारी राज्य के कवि शीर्षक लेख।

बिविध भाँति सनमान करि ल्याए चित महिपाल
आए विक्रम की सभा सुकवि बिहारी लाल ३२

इस वर्णन के अनुसार कालिन्दी तट स्थित तिकवाँपुर में भूषण चिन्तामणि और मतिराम नामक प्रसिद्ध कवि हुए। टीकाकार विहारी लाल इन्हीं मतिराल के पन्ती, प्रपौत्र, जगन्नाथ के पौत्र, एवं शीतल के पुत्र थे। यह सब कश्यप गोत्रीय त्रिपाठी कनौजिए थे। विहारीलाल के इस वर्णन से परम्परा का पोषण होता है।

ऐसी स्थिति में यह स्वीकार करना पड़ता है कि मतिराम नाम के दो कवि हुए। दैवयोग से दोनों समकालीन भी थे। इनमें से एक षट्कुल के प्रसिद्ध कश्यप गोत्रीय त्रिपाठी थे, तिकवाँपुर के रहने वाले थे, प्रसिद्ध कवि भूषण त्रिपाठी के भाई थे, रसराज, ललित-ललाम और मतिराम सतसई के रचयिता थे। दूसरे वनपुर के रहने वाले, दशकुल के वत्स गोत्रीय त्रिपाठी थे, विश्वनाथ के पुत्र थे और वृत्तकौमुदी अथवा छन्दसार के रचयिता थे। मतिराम के नाम पर मिलने वाले शेष ग्रन्थ साहित्य सार, लक्षण शृङ्गार के सम्बन्ध में निश्चयपूर्वक नहीं कहा जा सकता कि ये किस मतिराम के हैं। अलङ्कार पञ्चाशिका भूषण के भाई मतिराम की रचना है, क्योंकि भूषण का सम्बन्ध कुमाऊँ दरबार से था, उनके भाई मतिराम का भी उस दरबार से सम्बद्ध होना असमीचीन न होगा।

सरोज में छन्दसार-पिङ्गल से दो छन्द दिए गए हैं। प्रथम कवित्त में मित्र साहि के सुपुत्र सरूप सिंह की प्रशस्ति है, जिससे स्पष्ट है कि छन्दसार दूसरे मतिराम की ही रचना है। इसकी रचना पहले मतिराम ने फतेसाहि बुन्देला श्रीनगर के नाम पर नहीं की, जैसा कि सरोज का कथन है। सरोज में दिया हुआ सं० १७३८ ठीक है और मतिराम का उपस्थिति-काल है।

६९।५४९

(६९) मण्डन कवि, जैतपुर बुन्देलखण्डी, सं० १७१६ में उ०। यह कवि बुन्देल खण्ड में महाकवि हो गए हैं। यह राजा मङ्गद सिंह के यहाँ रहे। रस रत्नावली, रस विलास, नयन-पचासा, ये तीनों ग्रन्थ इनके बनाए हुए महा उत्तम हैं। रस रत्नावली, साहित्य में देखने योग्य ग्रन्थ है।

सर्वेक्षण

मण्डन का पूरा नाम है मणिमण्डन मिश्र। यह जैतपुर के रहने वाले थे और अपने युग के प्रख्यात कवियों में थे। यह मङ्गद सिंह के आश्रित थे। इनके निम्नलिखित ग्रन्थ खोज में मिले हैं—

(१) जनक पचीसी—१९०६।७२। किरीटधारी राम का २५ चौबोलों में वर्णन। प्रत्येक छन्द का अन्तिम चरण यह है—

"कहैं मंडन श्रीपति मुकुट धरै, हम देखे राम जनकपुर में"

(२) रस रत्नावली—१९२०।१०३, १९२६।२९२ ए, बी, सी, डी, १९४१।१८३। यह नायिका भेद का ग्रन्थ है। रचनाकाल नहीं दिया गया है। इसमें २३४ कवित्त, सवैये, दोहे छन्द हैं। १९४१ वाली प्रति सं० १७८८ की लिखी हुई है।

(३) पुरन्दर माया—१९०६।२९१

(४) जानकी जू को व्याह—१९०६।७५

(५) शृङ्गार कवित्त०–१९२३।२६५। यह फुटकर कवित्तों का संग्रह है अथवा रस रत्नावली का एक अंश है।

(६) वारामासी, १९४४। २६५। यह वारामासी कवित्त-सवैयों में है।

सरोज उल्लिखित रस विलास और नयन पचासा अभी तक खोज में नहीं मिले हैं।

सुधा रस में नाम रासी कवियों की सूची में दो मण्डन हैं। एक तो प्राचीन मण्डन हैं, यह जैतपुरी मण्डन हैं। दूसरे मण्डन जैपुर वाले लाल कवि के नाती हैं। जयपुर के यह लाल कवि सम्भवतः श्रीकृष्ण भट्ट लाल कवि कलानिधि हैं।

कुछ लोगों का ख्याल है कि पुरन्दर माया के रचयिता और गौड़ क्षत्रिय राजा केशरी सिंह के आश्रित मणिमण्डन मिश्र मण्डन कवि से भिन्न हैं।[1] विनोद (३५८) में यह कृति मणिमण्डन मिश्र उपनाम मण्डन के नाम पर चढ़ी है और इसका रचनाकाल सं० १७१६ दिया गया है, सूत्र का सङ्केत नहीं किया गया है। पुरन्दर माया के रचयिता मणिमण्डन मिश्र का उल्लेख विनोद तृतीय भाग में पुनः पृष्ठ १४२५ पर हुआ है। इस बार इन्हें सं० १९४७ से पूर्व उपस्थिति कहा गया है। इससे स्पष्ट है कि ३५८ संख्या पर पुरन्दर माया का जो रचनाकाल सं० १७१६ दिया गया है, वह केवल प्रमादवश। यह वस्तुतः सरोज में दिया हुआ मंडन का समय है। मेरी समझ से मण्डन और मणिमण्डन मिश्र एक ही व्यक्ति हैं। आश्रयदाता की विभिन्नता से कवि की विभिन्नता बहुत आवश्यक नहीं। एक कवि का अनेक राज-दरबारों से सम्बन्धित होना प्रायः देखा गया है।

विनोद (३५८) के अनुसार मण्डन गो० तुलसीदास के समकालीन थे। अब्दुल रहीम खानखाना की प्रशंसा में लिखा हुआ इनका यह कवित्त विनोद की बात को पुष्ट करता है।

---

(१) माधुरी, दिसम्बर १९२७ में कवि-चर्चा स्तम्भ के अन्तर्गत 'मण्डन' लेख, पृष्ठ ७२५-२६ और माधुरी, जून १९२८ में कवि-चर्चा के अन्तर्गत 'हिन्दी के कुछ कवियों के विषय में टिप्पणियाँ' शीर्षक लेख, पृष्ठ ६६२-६३

तेरे गुन खानखाना परत दुनी के कान
यह तेरे कान गुन अपनो धरत है
तू तो खग्ग खोलि खोलि खलन पै कर लेत
लेत यह तोपै कर नेक ना डरत है
मण्डन सुकवि तू चढ़त नव खण्ड पर
यह भुजदण्ड तेरे चढ़िए रहत है
ओहती अदलखान साहब तुरुक मान
तेरी या कमान तोसों तेहु सो करत है

सं० १७१६ मण्डन का अन्तिम जीवन काल हो सकता है। रस रत्नावली में कवि ने अपने को द्विजराज कहा है।

करि करि मथ्यो रसार्नव, कवि मण्डन द्विजराज
काढ़ी रस रत्नावली, भाषा कवि के काज

रस रत्नावली में मंगद सिंह एवं दराब खाँ की प्रशस्तियाँ भी हैं। ये सरोज में उद्धृत हैं। मिश्र-बन्धुओं का अनुमान है कि मण्डन ने कुछ पद भी बनाए थे।

६९७।५५६

(७०) मेधा कवि, सं० १८६७ में उ०। इन्होंने चित्रभूषण नामक चित्र-काव्य का ग्रन्थ बहुत सुन्दर बनाया है।

सर्वेक्षण

सरोज में चित्र भूषण से उदाहरण दिया गया है। साथ ही रचनाकालसूचक दोहा भी उद्धृत किया गया है, जिससे सिद्ध है कि सरोज में दिया सं० १८६७ कवि का उपस्थिति-काल है।

संवत मुनि(७) रस(६) वसु(८) ससी(१), जेठ प्रथम सनिवार
प्रगट चित्र भूषण भयो, कवि मेधा सिंगार २

यह एक संग्रह-ग्रन्थ है जिसमें दूसरों की रचनाएँ एकत्र हैं।

जे भविष्य व्रतमान कवि, तिनसों विनय हमारि
परम कृपाजुत सादरन, करि हैं याहि प्रचार ३
अपनी मति लघु समुझि कै, याते संग्रह कीन
उदाहरन सतकविन के, राख्यों सुमति प्रवीन ४

६६८।५५७

(७१) महबूब कवि, सं० १७६२ में उ० । यह सत्कवियों में गिने जाते हैं ।

सर्वेक्षण

महबूब कवि का जन्म बुन्देलखण्ड के अलीपुरा राज्य में सं० १७६० में हुआ था। इनका रचनाकाल सं० १७९० है। अलीपुरा में इनका कोई ग्रन्थ है।[1] सरोज के उ० का उत्पन्न अर्थ करके यह संवत् कल्पित किया गया प्रतीत होता है।

विनोद (६५८) में १९०६ वाली रिपोर्ट के आधार पर इनके एक ग्रन्थ कवित्त का नामोल्लेख है।

६६९।५६२

(७२) महानन्द वाजपेयी बैसवारे के, सं० १९०१ में उ०। यह महाराज परम शैव, सारी उमर शिव जी के यशो वर्णन में व्यतीत की। इन्होंने वृहच्छिव पुराण को संस्कृत से भाषा किया है।

सर्वेक्षण

महानन्द वाजपेयी डलमऊ, रायबरेली के रहने वाले थे। खोज में इनका 'शिव पुराण' नामक विशालकाय अनुवाद ग्रन्थ पूर्वार्द्ध और उत्तरार्द्ध दो खण्डों में मिला है।[2] प्राप्त प्रति शिवसिंह के पुस्तकालय की है। शिवसिंह ने इसे सं० १९२६ में पाया था और उर्दू में छपवा भी दिया था। उत्तरार्द्ध की पुष्पिका से महानन्द के पिता का नाम ठाकुरप्रसाद ज्ञात होता है—

"इति श्री बाजपेयी वंशोद्भव श्री ठाकुरप्रसादात्मज श्रीमन्महानन्द विरचिते भाषा श्री शिवपुराणे........।"

विवरण के अनुसार महानन्द जी की मृत्यु शिवसिंह के ग्रन्थ पाने के १० वर्ष पहले अर्थात् सं० १९१६ में हो गई थी। रिपोर्ट के परिशिष्ट १ में १० वर्ष पूर्व और परिशिष्ट २ में प्रमादवश १०५ वर्ष पूर्व लिखा है। १० वर्ष पूर्व ही ठीक है, क्योंकि सरोज में इन्हें सं० १९०१ में उ० लिखा है। यदि १०५ वर्ष पूर्व की बात ठीक होती तो सं० १८०१ में उ० लिखा गया होता। १९०१ स्पष्ट ही उपस्थिति-काल है। यह रचनाकाल कदापि नहीं है, जैसा कि ग्रियर्सन (६१९) और विनोद (२२६९) में स्वीकृत है।

७००।५९६

(७३) मीराबाई, सं० १४७५ में उ०। हमने इनका जीवनचरित्र तुलसीदास कायस्थ कृत भक्तमाल में देखा और तारीख चित्तौर से मिलाया, तो बड़ा फ़रक पाया गया। अब हम इनका

(१) बुन्देल वैभव, भाग २, पृष्ठ ४२८ (२) खोज रिपोर्ट १९२३।२५२ ए बी।

हाल चित्तौर के प्राचीन प्रबन्ध से लिखते हैं। यह मीराबाई मारवाड़ देश में राना राठौर वंशावतंस रतिया देशाधिपति के यहाँ उत्पन्न हुई थीं। यह रियासत सारे मारवाड़ के फिरकों में उत्तम है। मीराबाई का विवाह सं० १४७० के करीब राना मोकलदेव के पुत्र राना कुम्भकर्णसी चित्तौर नरेश के साथ हुआ था। सं० १४७५ में ऊदा राना के पुत्र ने राना को मार डाला। मीराबाई महा स्वरूपवती और कविता में अति निपुण थीं। इन्होंने 'राग गोविन्द' ग्रन्थ भाषा का बहुत ललित बनाया है। चित्तौर गढ़ में दो मन्दिर राना रायमल के महल के करीब थे। एक राना कुंभा का और दूसरा मीराबाई का। सो मीराबाई अपने इष्टदेव श्यामदेव श्यामनाथ को उसी मन्दिर में स्थापित कर नृत्य-गीत, भाव-भक्ति से रिझाया करती थीं। एक दिन श्यामनाथ मीरा के प्रेम वश होकर चौकी से उतर अङ्क में ले कर बोले, हे मीरा! केवल इतना ही शब्द राधानाथ के मुँह से सुन मीराबाई प्राणत्याग कर रसिक विहारी गिरिधारी के नित्य विहार में जाय मिलीं। इन दोनों मन्दिरों के वनाने में नब्बे लाख रुपया खर्च हुआ था।

सर्वेक्षण

मीराबाई मेड़तिया, सरोज में इसी को रतिया कहा गया है, के राठौर रत्न सिंह की पुत्री थीं। इनका जन्म कुड़की नामक गाँव में सं० १५५५ के आस-पास हुआ था। इनका विवाह सं० १५७३ में उदयपुर एवं चित्तौर के महाराना कुमार भोजराज के साथ हुआ था, न कि कुम्भकर्णसी के साथ। विवाह के कुछ ही दिनों बाद, सं० १५७५ में ये विधवा हो गईं। साधुओं के सम्पर्क के कारण राजकुल के लोगों ने इन्हें अनेक कष्ट दिए। अन्ततः इन्होंने सं० १५६१ में गृह त्याग कर दिया। पहले यह पीहर गईं। फिर सं० १५६५ में वहाँ से भी वृन्दावन चली गईं। सं० १६०३ में द्वारिका में इनका देहावसान हुआ। इनकी भक्ति, माधुर्य भाव की थी। इनके ग्रन्थों की सूची यह है—(१) नरसी जीरो माहेरो, (२) गीत गोविन्द की टीका, (३) राग गोविन्द, (४) सोरठ के पद, (५) मीराबाई का मलार (६) गर्वा गीत, (७) फुटकर पद।[1]

सरोज में मीरा के नाम पर एक दोहा और एक कवित्त उद्धृत है। दोहा तो हित हरिवंश जी का है—

रसन कटै आनहि रटै, फुटैं आन लखि नैन
स्रवन फटैं ते सुने बिन, श्री राधा जस बैन

कवित्त महाकवि देव का है और परम प्रसिद्ध है—

कोऊ कहौ कुलटा कुलीन अकुलीन कहौ

महेशदत्त के काव्य-संग्रह में मीरा के नाम पर यह सवैया दिया गया है[2]—

पल काटौं इन नैनन के गिरिधारी बिना पल अन्न निहारैं
जीभ कटै न भजै नन्दनन्दन, बुद्धि कटै हरि नाम बिसारैं

---

(१) मीराबाई की पदावली, पृष्ठ ६–१५ (२) भाषा काव्य-संग्रह, पृष्ठ १०५

मीरा कहै, जरि जाहु हियो पद पङ्कज बिन पल अन्त न धारैं
सीस नवै ब्रजराज बिना वहि सीसहि काटि कुआँ किन डारैं

इसी सवैये का संक्षिप्त रूप ऊपर वाला दोहा है। यह काव्य संग्रह में इस सवैये के ठीक नीचे उद्धत है। सरोजकार ने यह दोहा यहीं से लिया।

इस दोहे के पश्चात्' दूसरी पंक्ति में मोटे टाइप में देवदत्त कवि छपा है, कवि शीर्षक के नीचे विषय शीर्षक है, मीरा की प्रशंसा। इस शीर्षक के नीचे 'कोऊ कहै कुलटा कुलीन अकुलीन कहै' वाला कवित्त है। सरोजकार ने कवि शीर्षक और विषय शीर्षक की ओर ध्यान नहीं दिया और देव के कवित्त को मीरा के नाम पर उद्धृत कर दिया।

७०१।

(७४) मनीराम मिश्र, साढ़ि, जिले कानपुर, सं० १८९६ में उ०।

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध में कोई सूचना सुलभ नहीं। ग्रियर्सन (६७६) और विनोद (२१२०) में सरोज दत्त सं० १८९६ जन्मकाल माना गया है। विनोद में इनके एक ग्रन्थ 'सीता का दर्पण' का उल्लेख है।

७०२।

(७५) मान कवि बन्दीजन चरखारी वाले। यह विक्रम शाह बुन्देला राजा चरखारी के यहाँ थे।

सर्वेक्षण

इन चरखारी नरेश के दरबारी कवि खुमान ही कभी-कभी अपनी छाप मान रखते थे। यह मान १३५ संख्यक खुमान से भिन्न नहीं हैं। ग्रियर्सन ने भी मान और खुमान को दो भिन्न कवि समझा है। ग्रियर्सन में खुमान का उल्लेख १७० और मान का ५१७ संख्याओं पर हुआ है।

७०३।

(७६) मघुनाथ कवि, सं० १७८० में उ०।

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध में कोई सूचना सुलभ नहीं है।

७०४।

(७७) मानराय, वन्दीजन असनी वाले, सं० १५८० में उ० । यह अकबर के यहाँ थे ।

सर्वेक्षण

सरोज में दिया सं० १५८० अकवरी दरबार से सम्बन्धित होने के कारण ईस्वी-सन् है और यह मानराय का उपस्थिति-काल है। यह सं० १६३७ में उपस्थित थे । इनके सम्बन्ध में कोई सूचना सुलभ नहीं ।

७०५।

(७८) मीतूदास गौतम, हरघोरपुर, जिले फतेहपुर, सं० १९०१ में उ० । इन्होंने वेदान्त के बहुतेरे ग्रन्थ बनाए हैं ।

जीवन मुक्त अद्वैत मत, करी न सहज प्रकास
बीज मन्त्र गति गुह्य यह, समझे मीतूदास

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध में कोई सूचना सुलभ नहीं है। ग्रियर्सन (६७९) और विनोद (२२७३) में सरोज दत्त सं० १९०१ जन्मकाल माना गया है। किन्तु यह ठीक नहीं, यह उपस्थिति-काल है।

७०६।५८९

(७९) मदन किशोर, सं० १७०८ में उ० । यह बहादुरशाह के यहाँ थे ।

सर्वेक्षण

मदन किशोर जी बहादुर शाह (शासनकाल सन् १७०७-१२ ई०) के यहाँ थे, अतः इनका रचनाकाल सन् १७०७-१२ ई० हुआ । सरोज में दिया सं० १७०८ विक्रम संवत् नहीं है, यह ई०-सन् है । अतः मदन किशोर सं० १७६५ में उपस्थित थे ।

सरोज में ६६३ और ७०६ संख्यक दोनों मदन किशोरों की कविता का पृष्ठ २७३ निर्दिष्ट है। पर उक्त पृष्ठ पर एक ही मदन किशोर हैं, अतः दोनों मदन किशोर एक ही हैं। ६६३ संख्यक मदन किशोर का समय सं० १८०७ दिया गया है। यह अङ्क-विपर्यय का खेल है और कुछ नहीं ।

७०७।

(८०) मीरा मदनायक मीर अहमद, विलग्रामी, सं० १८०० में उ०।

सर्वेक्षण

मदनायक जी विलग्राम के सबसे कुशल और विख्यात संगीतकलाविद् हुए हैं। यह रसलीन (रचनाकाल सं० १७५६-१८०७) के समकालीन थे। सरोज में दिया सं० १८०० ठीक है और कवि का उपस्थितिकाल है। सम्भवतः इनका भी कुछ प्रभाव रसलीन पर पड़ा था। इनका असल नाम था सैयद निजामुद्दीन मधनायक। हिन्दी में इन्होंने दो ग्रन्थ लिखे हैं— (१) नाद चन्द्रिका, (२) मधनायक शृङ्गार।

श्री गोपाल चन्द्र सिनहा ने रसलीना नामक एक लेख[1] में मधनायक जी के सम्बन्ध में यह सब विवरण सर्वे आजाद, पृष्ठ ३५६, के आधार पर दिया है। यह ग्रन्थ रसलीन के ही साथी श्री मीरगुलाम अली आजाद की रचना है।

७०८।

(८१) मलिक मोहम्मद जायसी, सं० १६८० में उ०। इन्होंने पद्मावत भाषा बनाया है।

सर्वेक्षण

जायसी प्रसिद्ध सूफी कवि हैं। यह शेरशाह के युग में हुए। इनका नाम मौहम्मद है, मलिक उपाधि है। जायस के रहने वाले होने के कारण यह जायसी कहलाए। इनकी ग्रन्थावली ना० प्र० सभा, काशी से प्रकाशित हो चुकी है। इसका सम्पादन आचार्य पं० रामचन्द्र शुक्ल ने किया है। प्रारम्भ में अत्यन्त प्रौढ़ भूमिका लगी हुई है। इसमें पद्मावत, अखरावट और आखिरी कलाम नामक तीन ग्रन्थ सङ्कलित हैं। इधर डा० माताप्रसाद गुप्त ने भी जायसी-ग्रन्थावली का सम्पादन किया है। यह ग्रन्थावली हिन्दुस्तानी एकेडेमी इलाहाबाद से प्रकाशित हुई है। इसमें महरी बाईसी नामक एक और ग्रन्थ भी है।

पद्मावत जायसी का ही श्रेष्ठतम ग्रन्थ नहीं है, यह सम्पूर्ण प्रेमाश्रयी निर्गुण धारा का श्रेष्ठतम और प्रतिनिधि ग्रन्थ है। यह दोहा-चौपाइयों में अवधी भाषा में लिखा गया है। इसमें रतनसेन, अलाउद्दीन और पद्मिनी की कथा है। बीच-बीच में रह-रह कर अलौकिक सत्ता की भी अद्भुत झाँकी मिलती जाती है। पद्मावत का प्रारम्भ ९२७ हिजरी में, (सं० १५७७ के लगभग) हुआ, पर ग्रन्थ शेरशाह के शासनकाल (सं० १५९६-१६००) में किसी समय पूर्ण हुआ। आखिरी कलाम की रचना बाबर के शासनकाल ९३६ हिजरी सं० १५८५,) में हुई थी।

---

(१) सम्पूर्णानन्द अभिनन्दन ग्रन्थ, पृष्ठ १३१

जायसी को सं० १६८० में उ० कहा गया है। सरोज का यह संवत ठीक नहीं। जायसी इस समय तक कदापि न जीवित रहे होंगे। शुक्ल जी ने नसरुद्दीन हुसेन जायसी का उल्लेख किया है, जिन्होंने जायसी का मृत्यु काल ४ रज्जब ९४९ हिजरी लिखा है। समय सं० १६०० के कुछ पहले ही पड़ जाता है। जायसी की कब्र राजा अमेठी के किले में है।

७०९।५४१

(८२) मलिन्द, मिहीलाल बन्दीजन लखनऊ वाले, १९०२ में उ०।

सर्वेक्षण

सरोज में मलिन्द जी का एक कवित्त है। इसमें भुआल सिंह की प्रशस्ति है।

> भनत मलिन्द महाराज श्री भुआल सिंह
> तेरी भागि देखे ते दरिद्र भागि जात है

विनोद (२२७२) के अनुसार यह भुआल सिंह या भूपाल सिंह गौरा के ताल्लुकेदार थे।

ग्रियर्सन (६२३) और विनोद में सरोज दत्त सं० १९०१ को जन्मकाल माना गया है। यह ठीक नहीं।

७१०।

(८३) मुसाहबराजा विजावर। विनय-पत्रिका और रसराज का टीका बहुत सुन्दर बनाया है।

सर्वेक्षण

ग्रियर्सन (८९४) और विनोद (१६६८) में मुसाहब को बिजावर का राजा माना गया है और इन्हें अज्ञातकालीन प्रकरण में स्थान दिया गया है। मुसाहब बिजावर के राजा नहीं थे। यह बिजावर के राजा के मुसाहब थे। यह कवि का नाम नहीं है, उसका पद है। सरोज के अभिप्रेत मुसाबह का नाम है पण्डित लक्ष्मीप्रसाद। यह ब्राह्मण थे। यह बिजावर नरेश भानुप्रताप सिंह के दरबारी थे। भानुप्रताप सिंह का शासनकाल, अतः उनके मुसाहब पण्डित लक्ष्मीप्रसाद का रचनाकाल, सं० १९०५-५६ है।[1] लक्ष्मीप्रसाद जी ने बसन्त पञ्चमी रविवार, सं० १९०९ को शृङ्गार कुण्डली[2] नामक ग्रन्थ बनाया था।

---

(१) बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त इतिहास अध्याय ३२, अनुच्छेद ३३। (२) खोज रिपोर्ट १९०५।८४।

खण्ड व्योम अरु भक्ति पुन शुद्ध दृष्टि सन बीत
तिथि वसन्त पांचे सुदी, रवि दिन माहु पुनीत

राजा भानुप्रताप के एक दोहे को सूत्र मान कर यह ग्रन्थ कुण्डलिया छन्दों में रचा गया है। प्रत्येक कुण्डलिया के प्रारम्भ में यही दोहा है। इसी दोहे पर सभी नायिकाओं की सृष्टि हुई है। इस सम्बन्ध में कवि स्वयं कहता है।

बालमीकि मुनि ने कियो प्रथम ज्यों अश्लोक
तामैं पन्छी एक को बरनी कीरति ओक १४८
त्यों दोहा महराज ने कह्यो प्रथम सुख पाई
तामैं सब साहित्य के मिले अर्थ सो पाई १४९
तिनहू के उपदेस ते बनी कुण्डली बेस
द्विज लक्ष्मी परसाद नै किया ग्रथं लवलेस १५०

रिपोर्ट में इस ग्रन्थ की यह कुण्डलिया उद्धृत है। यह ग्रन्थ की अन्तिम कुण्डलिया है।

झर झर झर झर झर लगी, बरसत सुन्दर नीर
ताल तलैया भर गई, नदी चली गम्भीर
नदी चली गम्भीर दुरद दुय मिलि अन्हवावत
अपनी अपनी सुण्ड तुङ्ग धर मोद बढ़ावत
यह विधि राजै रमा भानु परताप भूप घर
चारौ चुरुवा रोज कृपा बरसावत झर झर १४७

यदि प्रत्येक कुण्डलिया के प्रारम्भ में एक ही दोहा है तो राजा भानु प्रतापसिंह का दोहा यह होना चाहिए।

झर झर झर झर झर लगी, बरसत सुन्दर नीर
ताल तलैया भर गई, नदी चली गम्भीर

ग्रन्थ के आदि और अन्त में लक्ष्मीप्रसाद के पहले मुसाहब शव्द जुड़ा हुआ है। यह विजावर नरेश के ही मुसाहब हैं। इन अंशों ने ही मुसाहब कवि का रहस्य भेद किया है। अन्यथा यह विजावर के कोई राजा ही समझे जाते रहते और ग्रियर्सन तथा विनोद इस भ्रम प्रसार में सदा सहायक सिद्ध होते रहते, यद्यपि विजावर में इस नाम का कोई राजा नहीं हुआ। विजावर राज्य की स्थापना सं० १८२६ में गुमान सिंह द्वारा हुई। सरोज के प्रणयन काल तक यहाँ निम्न लिखित पाँच राजा हुए।[1]

---

१. बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त इतिहास, अध्याय ३२, अनुच्छेद ३२, ३३।

१. गुमान सिंह, —सं० १८२६–५०

२. केसरी सिंह, —सं० १८५०–६७

३. रतन सिंह, —सं० १८६८–९०

४. लछमन सिंह, —सं० १८९०–१९०४

५, भानु प्रताप सिंह, —सं० १९०४–५६

ग्रन्थ का प्रारम्भिक अंश यह है—

"अथ पण्डित श्री मुसाहिब लक्ष्मीप्रसाद कृत शृङ्गार कुण्डली लिख्यते।"

और अन्तिम अंश यह है।

"इति श्री शृङ्गार कुण्डली पण्डित श्री मुसाहिब लछमीप्रसाद विरचितायां शृङ्गार काव्य परपूर्ण।"

७११

(८४) मनोहरदास निरञ्जनी इन्होंने ज्ञान चूर्ण वचनिका ग्रन्थ वेदान्त में बनाया है।

सर्वेक्षण

मनोहरदास निरञ्जनी सम्प्रदाय के साधु थे। यह सं० १७१७ के आस-पास विद्यमान थे। खोज में इनके निम्नलिखित ग्रन्थ मिले हैं—

१. ज्ञान वचन चूर्णिका—१९०३।८४, १९०६।१९३ ईस्वी, १९२३।२७२बी। यह वही ग्रन्थ है जिसका उल्लेख सरोज में ज्ञान चूर्ण वचनिका नाम से हुआ है। इस ग्रन्थ में यत्र-तत्र वचनिका, (गद्य), का भी प्रयोग हुआ है।

२. ज्ञान मञ्जरी—१९०६।२९३ए, १९२३।२७२ए। यह ग्रन्थ वैशाख सं० १७१६ को पूर्ण हुआ।

सम्वत सत्रह सै मही वर्ष सोरहे माँहि
वैसाख मासे शुक्ल पक्ष तिथि पूनो है ताहि ९६

एक छन्द में मनोहरदास का नाम आया है—

मनोहर दास निरञ्जनी, सो स्वामी सो दास
स्वामी दास भयो एक सो, महाकाश घटाकाश १००।

इस ग्रन्थ में कवित्त एवं दोहों में वेदान्त कथन है। कुल १०० छन्द हैं।

३. वेदान्त-परिभाषा—१९०६।२९३ बी, १९२३।२७२ सी। इस ग्रन्थ की रचना सं० १७१७ आश्विन वदी १४ रविवार को हुई।

संवत सतरा सै मही, सोरह बरस बितीत
व्यूष सत्रह महि करी षट मास जाहि बितीत ८७

आसौज वदि है चसुरदसी, कृष्ण पक्ष अतवार
भाषा पूरन सब भई, मान एक कृतकार ८८

इसमें भी एक छन्द में कवि का नाम आया है।

मनोहर दास निरञ्जनी, करी सु भाषा सार
थोरी सी विस्तार नहिं, अर्थ सबै विस्तार ८५

यह ग्रन्थ दोहा-चौपाइयों में है।

४. शतप्रश्नोतरी—१६०३।८३, १६०६।२६३सी, १६४७।२८६। इस ग्रन्थ में वेदान्त सम्बन्धी १०० प्रश्न और उनके उत्तर हैं।

५. षट् प्रश्नी निर्णय, १६०१।५८, १६०६।२६३ डी।

६. शतप्रश्नी शतिका १६०३।१५२। यह 'शतिका' सम्भवतः 'सटीक' है।

७१२।

(८५) मतादीन मिश्र, सरायमीरा, । वि० । शाहनामे का अनुवाद हिन्दी में किया और कवित्त रत्नाकर नामक संग्रह बनाया। इस ग्रन्थ के बनाने में हमको इनसे बहुत सहायता मिली है।

सर्वेक्षण

सरायमीरा वाले पण्डित मातादीन ने सं० १६३० में कवित्त रत्नाकर नामक ग्रन्थ श्री कालिन ब्रौनिंग के आदेशानुसार सङ्कलित किया था।

(० ३ ९ १)
नभ राम अंक ससि मनहिं आनि
विक्रम के सम्वत लेहु जानि
श्री कालिन ब्रौनिंग हुक्म दीन
तब मिश्र ग्रन्थ निर्माण कीन

सं० १६३२ में यह ग्रन्थ नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ से छपा और निस्फ़ील्ड जी की आज्ञा से पाठ्य-क्रम में निर्धारित हुआ।

(२ ३ ९ १)
भुज राम निधि जलनिधिकुमार
यह विक्रम संवत पुनि बिचार
निस्फ़ील्ड बहादुर महाराज
इस्कूल शिशुन के पढ़न काज

छप जाय ग्रन्थ यह हुक्म दीन

अरु कोर्स मद्धि मञ्जूर कीन

श्री कालिन ब्रौनिग ग्रौर निस्फ़ील्ड ये दोनों शिक्षा विभाग में डायरेक्टर थे। यह ग्रन्थ दो भागों में है। प्रथम भाग में २६ और द्वितीय भाग में १८ कुल ४२ कवियों की रचनाएँ सङ्कलित हैं। गिरिधर कविराय, तुलसी, देव, ब्रह्म, शुकदेव की रचनाएँ दो भागों में हैं। दोनों भागों के ग्रन्त में कवि परिचय भी गद्य में दिया गया है। सरोजकार ने इस परिचय से लाभ उठाया है।

मातादीन ने इस ग्रन्थ में ग्रपना भी परिचय दिया है। इस परिचय के ग्रनुसार यह कन्नौज के पास मीरा की सराय के रहनेवाले परसू के मित्र थे। यह कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे। पहले घर पर ही थोड़ी-बहुत कैथी ग्रौर हुण्डीवाली विद्या पढ़ी। फ़िर सन् १८५२ ई० में ग्रागरे के नार्मल स्कूल में पढ़ने गए। १८५४ ई० में नार्मल पास किया। फिर क्रमशः फर्रुखाबाद, कन्नौज, बाँदा, मिर्जापुर, इटावा, विलग्राम, फैज़ाबाद, रायबरेली, खीरी में ग्रध्यापन किया। कवित्त रत्नाकर के प्रणयनकाल में इनकी नौकरी २२ वर्ष की हो चुकी थी ग्रौर यह खीरी के हाई स्कूल में ज्येष्ठता के क्रम से पाँचवें ग्रध्यापक थे। यह कविता भी करते थे। उसमें ग्रपना उपनाम भोग मिश्र कहा है। विनोद (२४६६) में इन्हें १६४० में उपस्थित कवियों की सूची में स्थान दिया गया है।

७१३।

(८६) मूक जी कवि बन्दीजन, राजपूतानेवाले, सं० १७५० में उ०। इस महाकवि ने खींची, जो एक शाखा चौहानों की है, उसकी वंशावली ग्रौर प्राचीन ग्रौर नवीन राजों के जीवन-चरित्र की एक पुस्तक बहुत ग्रच्छी बनाई है।

सर्वेक्षण

ग्रियर्सन (६६२) में इनका नाम भोग जी दिया है ग्रौर टाड के ग्रनुसार इन्हें १८२६ ई० में उपस्थित कहा है। ग्रतः सरोज में दिया इनका समय सं० १७५० ग्रशुद्ध है। इनका उपस्थित काल सं० १८८६ है। विनोद में (६७२) सरोज का ग्रनुसरण है।

७१४।

(८७) मान कवीश्वर बन्दीजन, राजपूताने के, सं० १७५६ में उ०।

यह कवि ब्रज भाषा में महा निपुण थे। राना राज सिंह सिसोदिया मेवाड़वाले की ग्राज्ञानुसार एक ग्रन्थ राजदेव विलास नामक उदयपुर के हालात का बनाया है। इस ग्रन्थ में राना राज सिंह और ग्रौरङ्गजेब बादशाह की लड़ाइयाँ बहुत कविता के साथ वर्णन की गयी है।

सर्वेक्षण

ग्रियर्सन में (१८६) टाड के आधार पर मान का समय सं० १७१७ दिया गया है, जो विनोद (४१०) में भी स्वीकृत है। राजदेव विलास सभा से राज विलास नाम से प्रकाशित है। इसका एक नवीन संपादित संस्करण प्रकाशित हो रहा है। जिसका सम्पादन अगरचन्द नाहटा ने किया है।

राज विलास का प्रारम्भ सं० १७३४ में आसाढ़ सुदी ७ बुद्धवार को हुआ था। इसमें १७३७ तक की ही घटनाओं का विवरण है। इसी वर्ष राजसिंह जी का देहावसान हुआ था।

सुभ सम्वत दस सात, बरस चौंतीस बधाई
उत्तम मास असाढ़ दिवस सत्तमी सुखदाई
विमल पाख बुधवार सिद्धि वर जोग सम्पत्तौ
हरष कार रिसि हस्त रासि कन्या ससि रत्तौ
तिन द्यौस मात त्रिपुरा सुतारि, कीनो ग्रन्थ मँडान कवि
श्री राज सिंघ महाराज को, रचियहिं जस ज्यौं चन्द रवि

—राज विलास, प्रथम विलास, छन्द ३८

कवि का पूरा नाम मान सिंह था, इनकी छाप मान थी। यह चारण नहीं थे, जैन यती थे। दीक्षा के पहले इनका नाम कल्याण साहे था—

'कलियान साहे कवि मान कहि सक्कर चौकी छीर युत'

—राज विलास, आठवाँ विलास, छन्द ६४

सं० १७७० में विहारी सतसई की टीका करने वाले मानसिंह से यह भिन्न हैं।[1]

७१५।

(८८) मानसिंह महाराजा कछवाह आमेरवाले, सं० १५६२ में उ०।

यह महाराज कवि-कोविदों के बड़े कदरदाँ थे। हरिनाथ इत्यादि कवीश्वरों को एक-एक दोहे पर लक्ष-लक्ष रुपया इनाम दिया। इन्होंने अपने जीवन-चरित्र की किताब बहुत विस्तार-पूर्वक बनाई है। जिसका नाम मान-चरित्र है। उसी ग्रन्थ में लिखा है कि जब राजा मानसिंह काबुल की ओर अकबर के हुक्म से चले और अटक नदी पर पहुँचकर धर्मशास्त्र को विचार कर उतरने में सोच-विचार करने लगे और अकबरशाह को लिखा, तब अकबर ने यह दोहा लिखा।

---

१. राज विलास की नाहटा कृत भूमिका के आधार पर

सबै भूमि गोपाल की, तामें अटक कहा
जाके मन में अटक है, सोई अटक रहा

यह दोहा पढ़ मानसिंह ने अटक पार जाकर स्वामिकार्य में बड़ी वीरता की।

सर्वेक्षण

राजा मानसिंह प्रसिद्ध ऐतिहासिक पुरुष हैं। सरोज में दिया इनका सं० १५६२ ईस्वी सन् है और यह मानसिंह का उपस्थितिकाल है। अकबरी दरबार से सम्बन्धित प्रायः सभी व्यक्तियों का समय ईस्वी सन् ही में दिया गया है। ग्रीयर्सन (१०६) के अनुसार इनकी मृत्यु सं० १६७५ में हुई।

७१६।६००

(१) राम कवि १ रामवख्श। राना शिरमौर के यहाँ थे और रस सागर नामक भाषा साहित्य का एक महा सुन्दर ग्रन्थ बनाया है। सतसई का टीका भी बहुत सुन्दर किया है।

सर्वेक्षण

सरोज में रससागर से ३ दोहे और ३ कवित उद्धृत हैं। अन्तिम कवित्त में सिरमौर राना द्वारा दान कि हुए हाथियों का वर्णन है।

कहै राम बकस सपूत सिरमौर राना
ऐसे गज देत महा मन्दर छबिन के
कारे मघवानवारे महा भयान वारे
दान वारे दान वारे द्वारे में कबिन के

इस कवित्त से रामबकस छाप वाले कवि का इनके दरबार से सम्बन्धित होना सिद्ध है। खोज में विप्र रामबकस छाप वाले एक कवि के तीन ग्रन्थ मिले हैं। कुछ कहा नहीं जा सकता कि ये विप्र राम बकस सरोज के इस कवि से भिन्न हैं अथवा अभिन्न।

(१) कवित १६२६।२८७ ए
(२) विप्र करुना सागर १६२६।२८७ बी
(३) राम बकस के कवित १६२६।२८७ सी

७१७।६०१

(२) राम सिंह कवि बुन्देलखण्डी सं० १८३४ में उ०। यह कवि हिम्मन्त बहादुर के यहाँ थे। इनका काव्य रोचक है।

सर्वेक्षण

हिम्मत बहादुर का शौर्यकाल सं० १८२०-६१ है, अतः सरोज में दिया हुआ राम सिंह का समय सं० १८३४ ठीक है। यह कवि का उपस्थितिकाल है।

७१८।६०२

(३) राम जी कवि १, सं० १६६२ में उ०। इनके कवित्त हजारे में हैं।

सर्वेक्षण

हजारे में इन राम जी कवि के कवित्त थे। अतः सं० १७५० के पूर्व इनका अस्तित्व सिद्ध है। बुन्देल वैभव में इन्हें ओरछा निवासी एवं ओरछा नरेश महाराज सुजान सिंह का आश्रित कहा गया है। सं० १६६२ को जन्मकाल माना गया है और रचना काल सं० १७२०। कहा गया है कि इन्होंने बिहारी सतसई का अनुक्रम लगाया।[1] विनोद में (४३२) इनके नाम पर बरवै नायिका भेद एवं शृङ्गार सौरभ नामक राम भट्ट फर्रुखाबादी की कृतियाँ चढ़ा दी गई हैं।

७१९।६०३

(४) रामदास कवि सं० १८३९ में उ०।

सर्वेक्षण

खोज में तीन रामदास मिले हैं।

(१) रामदास, मालवा के अन्तर्गत मालटी नामक गाँव के निवासी। इनके पिता का नाम मनोहरदास और माता का वीरावती था। इनके लिखे ग्रन्थ ये हैं:—

(क) उषा अनिरुद्ध की कथा—१९०६।१०२ ए।

(ख) प्रह्लाद लीला—१९०६।१७२ बी। प्रतिलिपिकाल सं० १७७७।

(ग) भागवत दशम स्कन्ध—१९४७।३३१ क ख।

(२) रामदास बरसानिया, यह नन्द गाँव बरसाना के रहने वाले थे। यह सं० १८२७ के पूर्व उपस्थित थे। इनके बनाए हुये ग्रन्थ ये हैं—

(क) गोवर्द्धन लीला १९४४।३४७ क, ख, ग।

(ख) राधा विलास १९४४।३४७ घ।

---

(१) बुन्देल वैभव, भाग २, पृष्ठ २९९

(३) रामदास, वल्लभ-सम्प्रदाय के अनुयायी थे। इन्होंने 'रुक्मिणी व्याह' नामक ग्रन्थ लिखा है।

> **श्री गिरिधर लाल प्रताप तें मुक्त भये जु कृपाल**
> **राम मन्द मति सुमति भइ गावत गीत रसाल**
> **श्री विट्ठल पद कमल बल अबल सबल बल होत**
> **प्रबल तेज तामस हरन, सरन करन उद्योत**

—खोज रिपोर्ट १९४४।३४५

७२०।६०५

(५) रामसहाय कवि, कायस्थ, बनारसी, सं० १९०१ में उ०। यह कवि महाराजा उदित नारायण सिंह गहरवार काशी नरेश के यहाँ थे। इन्होंने वृत्ततरङ्गिणीसतसई नामक पिङ्गल का बहुत सुन्दर ग्रन्थ बनाया है।

सर्वेक्षण

रामसहाय दास जी चौबेपुर, जिला बनारस के रहने वाले अष्ठाना कायस्थ थे। इनके पिता का नाम भवानीदास था। यह काशी नरेश महाराजा उदित नारायण सिंह (शासन काल सं० १८५३-९२) के यहाँ रहते थे। उक्त राजवंश भूमिहार है, न कि गहरवार, जैसा कि सरोज में लिखा गया है। बिहारी सतसई के ढङ्ग पर उन्होंने अपनी राम सतसई बनाई जो भ्रान्ति शमनार्थ नाम बदल कर शृङ्गार सतसई अभिधान से भारत जीवन प्रेस काशी से प्रकाशित हो चुकी है। सरोज में इनके ग्रन्थ का नाम वृत्त तरङ्गिणी सतसई नाम पिंगल दिया गया है। यह शब्दों के उलट-पलट का विभ्रम विलास है। सरोज वर्णित ग्रन्थ एक न होकर दो हैं। १—वृत्ततरङ्गिणी, यह पिंगल ग्रन्थ है। नाम पिंगल इसी के आगे होना चाहिये। सतसई प्रमाद से बीच में घुस आई है। २—सतसई, इसी ग्रन्थ का विवरण पीछे राम-सतसई या शृङ्गार सतसई नाम से दिया गया है। शुक्ल जी ने रामसहाय दास का रचना काल सं० १८६०-८० माना है। हो सकता है, यह सं० १९०१ में जीवित रहे हों। इनके निम्नलिखित ग्रन्थ खोज में मिले हैं—

(१) ककहरा रामसहाय दास, १९०९।२५६। इस ग्रन्थ में जन सहाय छाप है। इससे यह भक्त प्रतीत होते हैं। ग्रन्थान्त में श्री लाला रामसहाय भगत-कृत लिखा भी है।

(२) बानी भूषण १९०४।२३ यह अलङ्कार ग्रन्थ है। अनेक छन्दों में छाप राम है। सुन्दरीतिलक वाले राम यही न हों। इस ग्रन्थ में कवि ने अपना परिचय भी दिया है—

> **"बानी भूषन कों भनत जस हित राम सहाय"**

× × ×

सुवन भवानी दास को और भवानी दास
अष्ठाना कायस्थ हैं, वासी कासी खास

(३) राम सप्तशतिका, १९०४।२२। इस ग्रन्थ में ७१७ दोहे हैं। ग्रन्थ की पुष्पिका में भवानीदासात्मज लिखा हुआ है। यह वही ग्रन्थ है जिसका विवरण पीछे राम सतसई या शृङ्गार सतसई नाम से दिया गया है। यह पर्याप्त सुन्दर दोहों से सम्पन्न है।

(४) वृत्त तरङ्गिणी, १९०४।२४,१९२३।३४९ ए, बी १९२६।३९४ ए बी, १९४१।५५२। इस ग्रन्थ की रचना सं० १८७३ में हुई थी।

३ ७ ८ १
सन्ध्य सुद्धि सिधि विधु दरस, गौरी तिथि सुदि उर्ज
सुराचार्य वासर सुखद, अरु घट में गत सूर्ज

७२१।६०८

(६) रामदीन त्रिपाठी, टिकमापुर जिले कानपुर, सं० १९०१ में उ०। यह मतिराम वंशी कवि महाराजा रतन सिंह चरखारी के यहाँ बहुधा रहते थे। इन्होंने एक बार कुछ अनादर देख यह दोहा शीघ्र ही पढ़ा।

जो बाँधी छत्रसाल जू, हृदय साहि जगतेस
परिपाटी छूटे नहीं, महाराज रतनेस

सर्वेक्षण

चरखारी नरेश महाराज रतन सिंह का शासनकाल सं० १८८६–१९१७ है। अतः सरोज में दिया हुआ रामदीन त्रिपाठी का सं० १९०१ ठीक है।

खोज में 'सत्यनारायण पूजन कथा भाषा'[1] नामक एक ग्रन्थ मिला है, जिसको इन्हीं रामदीन की कृति माना गया है।

कठिन संस्कृत जानिकै, दाया मन मैं आनि
रामदीन भाषा करी, अर्थ परै सब जानि ४९
ब्राह्मण क्षत्री वैश्य पुनि, शुद्र करै जो कोइ
सत्यदेव व्रत सुभग यह, सबही कौं फल होय ५०

इसकी रचना सं० १८७६ में हुई।

---

(१) खोज रिपोर्ट १९२०।१४८; १९४१।५५०

संवत सत अष्टादसौ सत्तरि पर षट जान
पौष शुक्ल भृगु वासर तिथि अष्टमी बखान ५१

७२२।६०७

(७) रामदीन बन्दीजन अली गन्जवाले, सं० १८९० में उ०। यह बड़े कवि हो गये हैं।

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध में कोई सूचना नहीं। ग्रियर्सन (६६९) और विनोद (२१२४) में सरोज दत्त सं० १८९० जन्मकाल माना गया है पर यह उ० का उत्पन्न अर्थ करने के कारण हैं।

७२३।६०९

(८) रामलाल कवि। इनके कवित्त अच्छे हैं।

सर्वेक्षण

रामलाल नाम के अनेक कवि मिलते हैं। किसी के भी साथ सरोज के इन रामलाल का तादात्म्य सम्भव नहीं।

(१) रामलाल, सं० १८६२ के पूर्व वर्तमान। भोग रामलला हैं। रुक्मिणी मङ्गल १९१२।१४७, १९३८।१२०, १९४९।५५१

(२) रामलाल, सं० १९०० के लगभग वर्तमान। चित्त विनोद १९२०।१५० ए, राम शिरोमणि १९२०।१५० बी।

(३) रामलाल शर्मा, रामचन्द्र ज्ञान विज्ञान प्रदीपिका १९०९।२४९।

(४) रामलाल कवि, उपनाम राम कवि। भरतपुर के महाराज बलवन्त सिंह के आश्रित सं० १८९२ के लगभग वर्तमान।

(५) रामलाल स्वामी, विजावर के राजा भानु प्रताप के गुरु।

(क) अमरकण्टक चरित्र, रचनाकाल सं० १८६६, (ख) भवानी जी की स्तुति, (ग) महाबीर जी कौ तीसा, (घ) रामसागरे या राम बिलास, रचनाकाल सं०१८६६(ङ) श्री ब्रह्मसागर ग्रन्थ, रचनाकाल सं० १८६७; (च) श्रीकृष्ण-

प्रकाश, रचनाकाल सं० १८६७। ये छहों ग्रन्थ खोज रिपोर्ट १६०६।१०६ में उल्लिखित हैं।

७२४।६१०

(६) रामनाथ प्रधान अवध निवासी सं० १६०३ में उ०। ये राम कलेवा इत्यादि छोटे-छोटे ग्रन्थों के कर्त्ता हैं।

सर्वेक्षण

रामनाथ प्रधान रीवाँ के मन्त्रिवंश में थे। इनका भी सम्बन्ध रीवाँ दरबार से था। महाराज विश्वनाथ सिंह (शासनकाल सं० १८६२–१६११) कृत कबीरदास के बीजक की टीका नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, से प्रकाशित हुई थी। इसकी प्रेस कापी रामनाथ प्रधान ने तैयार की थी। यह तथ्य इनका रीवाँ दरबार से सम्बन्ध सूचित करता है। लगता है कि यह उक्त महराज को साहित्यिक कार्यों में सहायता दिया करते थे।[1] अन्तिम दिनों में यह अयोध्या आकर रहने लगे थे। इसीलिए सरोज में इन्हें अवध निवासी कहा गया है, वस्तुतः यह बघेलखण्डी हैं।

रामनाथ जाति से प्रधान या कायस्थ नहीं थे। यह ब्राह्मण भी नहीं थे, जैसा कि महेशदत्त ने भाषाकाव्यसंग्रह में लिखा है।[2] इनके पितामह का नाम ज़िन्दाराम था, जिन्हें राजद्वार में अधिकार मिलने के कारण प्रधान कहा जाता था। वही प्रधान परम्परागत हो गया। रामनाथ के पिता का नाम ठाकुर राम था, जो जिन्दाराम के ज्येष्ठ पुत्र थे। रामनाथ वैश्य परिवार में उत्पन्न हुए थे। यह सब सूचनाएँ इनके 'धनुष-यज्ञ' नामक ग्रन्थ से मिलती हैं।

जिन्दाराम नाम जग जाहिर, वैस्य बरन सब जाना
राज द्वार अधिकार पाय भैजाको छाप प्रधाना
ताको जेठ तनय स्वधर्म रत नाम सु ठाकुर रामा
तासु तनय यह रच्यो धनुष मख रामनाथ जेहि नामा

—खोज रिपोर्ट १६२०।१५३ ए

रामनाथ प्रधान के निम्नांकित ग्रन्थ खोज में मिले हैं—

(१) कवित्त राजनीति, १६०१।६, १६२०।१५३ बी, १६२३।३४६ ए, बी। इस ग्रन्थ का विवरण पीछे ४६२ संख्या पर प्रधान कवि के सम्बन्ध में दिया जा चुका है।

---

(१) सिलेक्शंस फ्राम हिन्दी लिटरेचर, भाग ६, खण्ड २, पृष्ठ २३४
(२) भाषाकाव्यसंग्रह, पृष्ठ १३२

(२) धनुष यज्ञ, १९२०।१५३ ए। यह ग्रन्थ वैशाख अमावस्या, गुरुवार, सं० १८९१ को पूर्ण हुआ, सं० १८१० में नहीं, जैसा कि खोज रिपोर्ट में लिखा है।

संवत रह्यो अठारह सै को, नौ अरु एक प्रमाना
कृष्ण पक्ष वैसाख महीना, गुरौ अमावस जाना
तेहि दिन भयो चाप मख पूरन, मङ्गल मोद निधाना
कहै सुनै तेहि सबै कामना, पुजवै श्री हनुमाना ३६९

इस ग्रन्थ के अन्तिम छन्द में कवि ने अपने पिता, पितामह एवं जाति आदि का पूरा विवरण दिया है, जो ऊपर उद्धृत किया जा चुका है।

(३) राम कलेवा, १९०४।३८६ ए, बी, १९०६।१०७, २१४, १९२३।३४६ सी, डी, ई, १९४७।३३४ क, ख। यह ग्रन्थ ज्येष्ठ सुदी १०, गङ्गा दशहरा १९०२ को प्रारम्भ हुआ और उसी वर्ष क्वार विजय दशमी को पूर्ण हुआ।

उनइस सै दुइ कै संवत में जेठ दसहरा काहीं
ग्रन्थ कियो आरम्भ अनूपम बैठि अयोध्या माहीं

× × ×

जेष्ठ दसहरा ते अरम्भ करि, क्वार दसहरा काहीं
राम कलेवा रहस ग्रन्थ यह, पूरन भौ मुद माहीं

जिस समय ग्रन्थ पूरा हुआ, कवि की आयु ४५ वर्ष की थी—

निज पैंतालिस बरस की उमर जान परमान
कियो क्लेवा ग्रन्थ यह रामनाथ परधान

इस सूचना के सहारे कवि का जन्म-सम्वत् १९०२–४५, १८५७ सिद्ध होता है। ग्रन्थ का नाम 'रामकलेवा रहस' भी है। दोनों एक ही ग्रन्थ के भिन्न-भिन्न नाम हैं, दो स्वतन्त्र ग्रन्थ नहीं, जैसा कि सभा के अप्रकाशित संक्षिप्त विवरण में माना गया है।

(४) रामहोरी रहस्य १९०१।८, १९४४।३४८। यह ग्रन्थ माघी अमावस्या सं० १९१२ को प्रयाग में प्रारम्भ हुआ और चैत्र रामनवमी को उसी वर्ष मिथिला में पूर्ण हुआ।

ओनइस सै द्वादस सम्वत में प्राग त्रिवेणी पाही
साधु रजाइसु पाय नाय सिर रच्यो ग्रन्थ मन माहीं
माघ अमावस मह अरम्भ करि राम जनम तिथि काहीं
मिथिला होरी रहस राम को पूरन भौ मुद माहीं

ग्रन्थ रचना के समय कवि की आयु ५६ वर्ष की थी—

वय में छप्पन बरस की, भोगत विषय सिरान
बरन्यो होरी रहस यह, रामनाथ परधान

ग्रन्थ छह अध्यायों में विभक्त है।

इनका प्रिय विषय रामविवाह ही प्रतीत होता है। इसीसे सम्बन्धित इनके तीन ग्रन्थ हैं।

(५) अङ्गद-रावण संवाद, १९४४। सम्भवतः यह ग्रन्थ इन्हीं प्रधान का है। महेश दत्त ने भाषाकाव्यसंग्रह में इनका मृत्यु संवत् १९२५ दिया है।[1]

संक्षिप्त विवरण में रामनाथ प्रधान के नाम पर 'चित्रकूट शतक' नामक एक और ग्रन्थ चढ़ा हुआ है। यह किसी नाथूराम की रचना है, रामनाथ की नहीं।

राम लखन सिय बसत जहँ, वेदन कियो विवेक
सो गिरि नाथूराम कौं, जिय कौ जीवन एक १०९
—खोज रिपोर्ट १९०९।२५३, १९२०।१५२

साथ ही इस ग्रन्थ की रचना सं० १८५४ में हुई और रामनाथ प्रधान इसके ३ वर्ष बाद पैदा हुए थे। १९०९ वाली प्रति के अन्त में 'एक सहस अरु आठ सै चौहन' लिखा हुआ है। खोज-रिपोर्ट में इसे १८७४ माना गया है, जो भ्रष्ट है। चौहन, चौअन के निकट है, चौहत्तर के निकट नहीं।

७२५।६११

(१०) राम सिंह देव सूर्यवंशी क्षत्रिय, खडासा वाले। इन्होंने सरस कविता की है।

सर्वेक्षण

सरोज में राम सिंह का विवरण और उदाहरण मदेशदत्त के भाषाकाव्यसंग्रह के आधार पर दिया गया है। इस ग्रन्थ के अनुसार खडासा, फैज़ाबाद जिले में है। दोनों ग्रन्थों में एक-एक और एक ही कवित्त उदाहृत हैं।[2] इस कवि के सम्बन्ध में कोई अन्य सूचना सुलभ नहीं।

---

(१) भाषाकाव्यसंग्रह, पृष्ठ १३२ (२) वही, पृष्ठ १३६

७२६।६१४

(११) रामनारायण कायस्थ, मुन्शी महाराजा मानसिंह। वि०। इनके शृङ्गार के सुन्दर कवित्त हैं।

सर्वेक्षण

रामनारायण जी अयोध्या नरेश महाराजा मानसिंह द्विजदेव के मुन्शी थे और जाति के कायस्थ थे। इनका बनाया हुआ षट्ऋतुवर्णन[1] नामक ग्रन्थ मिला है। प्रथम छन्द ही में कवि ने अपना उपनाम 'दीन' कहा है।

सोरभ सीर समीर अरु कोमल सु दल नवीन

कोकिल कलरव कलित वन वर्ननीय कवि दीन

ग्रन्थारम्भ में भी लिखा गया है, दीन, प्रसिद्ध नाम मुन्शी रामनारायण।

७२७।६१६

(१२) रामकृष्ण चौबे, कालिंजर निवासी, सं० १८८६ में उ०। इन्होंने विनय पचीसी नामक ग्रन्थ शान्त रस का बनाया है।

सर्वेक्षण

महाराज छत्रसाल के प्रपौत्र महाराज हिन्दूपत (शासनकाल सं० १८१३–३४) के तीन पुत्र थे, सरमेद सिंह, अनिरुद्ध सिंह और धौंकल सिंह। हिन्दूपत अपने बड़े पुत्र सरमेद सिंह से अप्रसन्न थे और मझले पुत्र अनिरुद्ध सिंह से प्रसन्न। अतः उन्होंने अनिरुद्ध सिंह को युवराज, बेनी हजूरी को दीवान और कायम जी चौबे को कलिंजर का शासक नियत कर दिया। इन्हीं कायम चौबे के पुत्र रामकृष्ण चौबे थे। कायम चौबे के देहान्त के अनन्तर रामकिसुन चौबे के अधिकारमें कलिञ्जर का किला आया।[2]

बुन्देल वैभव के अनुसार रामकृष्ण चौबे का जन्म सं० १८०० के आस-पास हुआ और मृत्यु सं० १८५८ में, तथा यह किलेदार खेमराज के पुत्र थे।[3]

सं० १८४६ में नोने अर्जुन सिंह को परास्त करने के बाद अली बहादुर और हिम्मत बहादुर की धाक बुन्देलखण्ड में छा गयी। इस समय कालिञ्जर का किला रामकिसुन चौबे के अधिकार में था जो अब पन्ना राज्य से स्वतन्त्र हो गया था। अली बहादुर और हिम्मत बहादुर

---

(१) खोज रिपोर्ट १९०६।२५२। (२) बुन्देल खण्ड का संक्षिप्त इतिहास, अध्याय २४, ३१, ३२। (३) बुन्देल वैभव, भाग २, पृष्ठ ४७४।

ने इस किले पर बरसों घेरा डाल रक्खा, पर जीत न सके। इसी बीच सं० १८५६ में अली बहादुर की मृत्यु हो गई। उसके मरने पर भी हिम्मत बहादुर ने प्रयत्न न छोड़ा। परन्तु अली बहादुर के पुत्र शमशेर बहादुर से अनबन हो जाने के कारण अन्त में दोनों ने कालिञ्जर से हाथ खींच लिया।[1]

अंग्रेजी राजसत्ता स्थापित होते समय (बसीन की सन्धि के अनन्तर सं० १८६० में) कालिञ्जर के किले में रामकिसुन चौबे के ८ लड़के—बलदेव, दरियाव सिंह, भरत जू, गोविन्ददास, गङ्गाधर, नवल किशोर, सालिगराम और छत्रसाल रहते थे। इनमें से दरियाव सिंह किलेदारी करते थे। दरियाव सिंह ने अंग्रेजों से सुलह कर ली, पर विद्रोहियों से मिले रहे। इसलिए सं० १८६६ में अंग्रेजों ने कालिञ्जर पर चढ़ाई की।[2] इससे स्पष्ट है कि सं १८६० में रामकिसुन चौबे कालिञ्जर के किलेदार नहीं रह गए थे। रामकृष्ण चौबे के निम्नलिखित ग्रन्थ खोज में मिले हैं।

१. कृष्ण विलास १६०६।१०० ए, १६०६।१६५ ए। रचनाकाल भादौं कृष्ण जन्माष्टमी, सं० १८१७।

संवत अष्टादस जु सत अरु सत्रह की साल
भादौं हरि की अष्टमी कथा रची ते काल १५

इस ग्रन्थ में कवि ने अपने पिता का नाम खेमराय दिया है, अतः यही प्रामाणिक है। कालिञ्जर का भी उल्लेख हुआ है।

खेमराय कै पुत्र भो, रामकृष्ण एहि नाम
बरनो कृष्णविलास जिहि, यावत स्यामा स्याम ४५७

राज अनुग्रह अति कियो, किलौ कलिञ्जर दीन
निस दिन ध्यावत रहत है, सदा कृष्ण लवलीन ४५८

हिन्दूपत सं० १८१३ में सिंहासनासीन हुए थे, अतः किला मिलनेवाली घटना सं० १८१३ और १८१७ के बीच कभी घटित हुई।

२. विनय पचीसी, १६०६।१०० बी। इसमें कुल २५ कवित्त हैं, प्रत्येक का अन्तिम चरण यह है—

नन्द के दुलारे, रामकृष्ण दृग तारे सुनो
पीत पट वारे देर मेरी बेर क्यों करी

इसी ग्रन्थ का उल्लेख सरोज में हुआ है। विनोद (५८६) में इसे उन रामकृष्ण की रचना माना गया है जिनका उल्लेख सूदन की प्रणम्य कवियों की सूची में हुआ है।

---

(१) बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त इतिहास, अध्याय ३२ (२) वही।

३. स्फुट पद, १६०६।१०० सी। विभिन्न देवी-देवताओं की स्तुति के पद।

४. स्फुट कविता, १६०६।१०० डी। कृष्ण प्रशस्ति सम्बन्धी कवित्त।

५. रुक्मिणी मङ्गल, १६०६।१००ई। विविध छन्दों में रचित।

६. रास पञ्चाध्यायी, १६०६।१०० एफ।

७. नायिका भेद के दोहा, १६०५।७७,१६०६।१००जी। कुल ३५ दोहे। आधे दोहे में लक्षण और आधे में उदाहरण।

थोरे ही में कहत हौं, समुझि लेहु सज्ञान
आधे में लक्षन कहे, आधे लक्ष बखान २

८. दूसरी, रुक्मिणी मङ्गल, १६०६।१००एच। यह पहले रुक्मिणी मङ्गल से भिन्न है।

९. वज्रनाभ की कथा, १६०६।१०० आई। संस्कृत हरिवंश के आधार पर।

१०. अवतार चेतावनी, १६०६।१००जे। ३४ दोहों में २४ अवतारों का कथन।

११. अष्टक, १६०६।१००के। कृष्ण की भक्त-वत्सलता के ८ सवैये। प्रत्येक छन्द का अन्तिम चरण एक ही है।

"है जु बड़ो समरत्थ सदा प्रभु मारनहार ते राखनहारो"

१२. ग्वाल पहेली, १६०६।६बी, १६०६।१००एल। इस ग्रन्थ में कृष्ण ने अपने साथियों से पहेलियाँ बुझाई हैं।

१३. परतीत परीक्षा, १६०६।६डी, १६०६।२४८, पं १६२२।६३ए। कृष्ण द्वारा राधा के प्रेम की परीक्षा।

१४. प्रेम परीक्षा, १६०६।६सी, पं १६२२।६३बी। राधा द्वारा कृष्ण के प्रेम की परीक्षा।

१५. राम कूट विस्तार, १६०६।१६५ बी।

सभा के संक्षिप्त विवरण में रामकृष्ण का समय १७२६-४६ दिया गया है; यह ठीक नहीं। इसमें रामकृष्ण, बालकृष्ण नायक और मानदास ये तीन नाम एक ही कवि के माने गए हैं, यह भी ठीक नहीं। बालकृष्ण नायक के दो ग्रन्थ हैं, ध्यानमञ्जरी[1] और नेहप्रकाशिका।[2] इन ग्रन्थों का रचनाकाल क्रमशः सं० १७२६ और १७४६ हैं। एक मार्च में रसिक सम्प्रदाय में डॉक्टर भगवतीप्रसाद सिंह ने ग्वाल पहेली, प्रेम परीक्षा, परतीत परीक्षा, ये तीनों ग्रन्थ बालकृष्ण नायक या बाल अली के माने हैं, जो ठीक नहीं। ये तीनों ग्रन्थ राम से सम्बन्धित न होकर कृष्ण

---

(१) खोज रिपोर्ट १६१७।१६ ए (२) वही, १६१७।१६ बी।

से सम्बन्धित हैं और कालिञ्जर वासी रामकृष्ण चौबे के हैं। ऊपर हम देख चुके हैं कि कालिञ्जर वाले रामकृष्ण चौबे का रचनाकाल सं० १८१७-६० है। अतः बालकृष्ण नायक और इन रामकृष्ण की अभिन्नता कभी भी प्रतिपादित नहीं की जा सकती। पुनः मानदास भी राम कृष्ण से भिन्न हैं। इनकी रचना एकादशी माहात्म्य[1] है। इसका रचनाकाल सं० १८८५ है। यदि रामकिसुन चौबे सं० १८६० के आस-पास विरक्त साधु महात्मा हो गए रहे हों और अपना नाम मानदास रख लिया हो, तो दोनों की एकता सम्भव भी है।

७२८।६१८

(१३) राम सखे कवि, ब्राह्मण। इन्होंने 'नृत्य राघव मिलन' नाटक ग्रन्थ बनाया है।

सर्वेक्षण

राम सखे जी की जन्म भूमि जयपुर है। इनका जन्म एक कुलीन ब्राह्मण कुटुम्ब में हुआ था। लड़कपन ही से यह राम भजन में अनुराग रखने लगे थे। कुछ बड़े होने पर यह घर-बार छोड़, तीर्थ-यात्रा पर निकले। घूमते-घामते यह काशी में माध्व-सम्प्रदाय के प्रसिद्ध केन्द्र उडुपी पहुँचे और वहाँ के तत्कालीन आचार्य वशिष्ठ तीर्थ से इन्होंने दीक्षा ली। उडुपी से वह अयोध्या आये, अयोध्या से चित्रकूट गए। चित्रकूट में कामद बन में बारह वर्ष तक तप किया। यहाँ रहते समय पन्नानरेश हिन्दूपति (शासनकाल सं० १८१३-१४) इनका दर्शन करने आए थे और कुछ गाँव भी देना चाहा था, पर रामसखे जी ने स्वीकार नहीं किया। सं० १८३१ में यह मैहर चले गए। यहीं इनका साकेतवास हुआ। अयोध्या में इनके सम्प्रदाय का नृत्य राघवकुञ्ज नामक मन्दिर है। यह सरल भाव के उपासक थे। यह कवि तो थे ही, अच्छे सङ्गीतज्ञ भी थे। डॉक्टर भगवतीप्रसाद सिंह ने इनके १० उपलब्ध ग्रन्थों की यह सूची दी है[2]—

(१) द्वैत भूषण (२) पदावली (३) रूपरसामृत सिन्धु (४) नृत्य राघव मिलन दोहावली (५) नृत्य राघव मिलन कवितावली (६) रास पद्धति (७) दान लीला (८) बानी (९) मङ्गल शतक (१०) राम माला। इनके लिखे हुए निम्नलिखित ग्रन्थ खोज में मिले हैं—

१. श्री नृत्य राघव मिलन, १९०५।७८, १९१७।१५८, १९२६।३५१। इस ग्रन्थ की रचना सं० १८०४ में हुई थी।

संवत अष्टादस चतुर, शुक्ल मधुर मधु तीज
भयो नृत्य राघव मिलन, उद्भव सब रस बीज

२. दान लीला, १९०५।८१।

३. दोहावली, १९०५।८०।

---

(१) खोज रिपोर्ट १९२९।२२६। (२) रामभक्ति में रसिक-सम्प्रदाय, पृष्ठ ४०४-४०६

४. बानी, १९०५।८२।

५. पदावली, १९०५।७९, १९०९।२५७बी, १९२०।१५८बी।

६. गीत, १९०६।१६२ए।

७. रासपद्धति और दानलीला, १९०६।२१६वी।

८. राग माला, १९०६।२१६सी।

९. मङ्गल लतिका, १९०६।२५७ ए।

१०. मङ्गलाष्टक, १९१७।१५८सी, १९२६।३९५, द, १९३१।७४।

११. कवित्त, १९१७।१५८बी या कवित्तावली, १९१७।१५८ई।

१२. सीताराम रहस्य पदावली, १९१७।१५८ एफ।

डॉक्टर बदरीनारायण श्रीवास्तव के अनुसार यह मइहर के निवासी थे और रामानन्द-सम्प्रदाय के वैष्णव थे। यह गलतां, जयपुर गए और वहाँ रास रस में डूब गए और अली भाव के उपासक हो गए। इनके बनाए ४ ग्रन्थों का उल्लेख किया गया है—१. राम सखे पदावली, २. नृत्य राघव मिलन, ३. दोहा कवित्त, ४. जानकी त्रैरत्न माणिक्य।[१]

इन रामोपासक कवि का असल नाम ज्ञात नहीं। रामसखे इनका हरि सम्बन्ध नाम है।

७२९।६४५

(१४) रामकृष्ण कवि २। इनके कवित्त बहुत ही ललित हैं।

सर्वेक्षण

सरोज में एक कवित्त कोशल नरेश के हाथियों की प्रशंसा का दिया गया है, जो दिग्विजय-भूषण से लिया गया है। यह कोशल नरेश द्विजदेव हो सकते हैं।

ग्रियर्सन (५३८) में इन्हें रामकृष्ण चौबे में मिला दिया गया है। इनका कोई स्वतन्त्र उल्लेख नहीं है।

७३०।६५९

(१५) राम दया कवि। इन्होंने राग माला ग्रन्थ महा सुन्दर बनाया है।

---

(१) हिन्दी अनुशीलन के १९५६ के संयुक्ताङ्क में प्रकाशित 'रामानन्द-सम्प्रदाय के हिन्दी कवि' शीर्षक लेख।

सर्वेक्षण

राम दया के दो ग्रन्थ खोज में मिले हैं, पर इनसे कवि के सम्बन्ध में कोई जानकारी नहीं हो पाती—

(१) सभाजीत सार, १९१२।१४५, १९४४।३४४ क ख। इस ग्रन्थ में ज्योतिष, सामुद्रिक, शालिहोत्र, वैद्यक आदि सभी कुछ हैं। कवि स्वयं ग्रन्थ का परिचय इन शब्दों में देता है—

सकल ग्रन्थ को अर्थ लै, महा बुद्धि को धाम
राम दया संग्रह कियो, सभाजीत धर नाम ३
सभाजीत ग्रन्थ को नाम, धर्‍यो यह रीति
समै समै के भेद कहि, लैइ सभा सब जीत ४

(२) वेद सामुद्रिक १९४४।३४४ ग। हो सकता है, यह कोई स्वतन्त्र ग्रन्थ न हो और सभाजीत सार का सामुद्रिक वाला अंश ही हो। सरोज में रागमाला से उद्धरण दिया गया है।

७३१।६६७

(१६) रामराइ राठौर, राजा खेमपाल के पुत्र। रागसागरोद्भव में इनके पद महा-ललित हैं।

सर्वेक्षण

सरोजकार ने अन्य अनेक भक्तमाली कवियों के समान यहाँ भी विवरण एक रामराइ का दिया है और उदाहरण दूसरे रामराइ का। भक्तमाल में एक राजा रामरैन[1] जी हैं। यह खेमाल रत्न राठौर[2] के पुत्र थे। इनकी पत्नी[3] भी परम भगतिन थीं। इनके पुत्र राजकुमार श्री किशोर सिंह[4] जी भी परम भागवत थे। इनका सारा घर ही भक्त था।[5] इस परिवार पर भक्तमाल के रचयिता का अपार प्रेम है। इसका परिचय उसने ५ छप्पयों में दिया है। सरोजकार ने इन्हीं राजा खेमाल रत्न राठौर के पुत्र रामरैन या रामराइ राठौर का विवरण दिया है। यह कवि थे या नहीं, कुछ कहा नहीं जा सकता।

सरोज में उद्धत पद से ज्ञात होता है कि रामराइ वल्लभ-सम्प्रदाय के वैष्णव थे। रामराइ जी की कथा २५२ वैष्णवन की वार्ता में हैं। इनकी वार्ता २५२ ही है। भगवान हितु रामराय छाप रखने वाले भगवानदास इनके यजमान थे।

जयति श्री वल्लभ सुवन उद्धरन त्रिभुवन
फेरि नन्द के भवन को केलि ठानी

---

(१) भक्तमाल छप्पय ११९ (२) वही, ११८। (३) वही, १२०। (४) वही, १२१। (५) वही, १२२।

इष्ट गिरिवरधरन सदा सेवक चरन

द्वार चारों वरन भरत पानी

यह रामराइ अकबर के समकालीन सारस्वत ब्राह्मण थे। यह गीतगोविन्दकार के वंशज थे। इनके पिता का नाम गुरु गोपाल जी था। गो० चन्द्रगोपाल जी इनके भाई थे। इन्हीं रामराइ के शिष्य भगवान थे जो अपनी छाप भगवान हितु रामराइ रखते थे। भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र ने इनका उल्लेख एक कुण्डलिया में किया है—[1]

जगत विदित जयदेव कवि, सेवित चरन रसाल
वृन्दावन विलसत अजहुँ, श्री राधा माधव लाल
श्री राधा माधवलाल बिहारी जी सन्निधि लखि
रामराय सम्बन्ध प्रेम वल्लभ कुल सब सुखि

नाभादास जी ने भी भक्तमाल में इनका विवरण दिया है—

भक्ति ज्ञान वैराग्य जोग अन्तरगति पाग्यो
काम क्रोध मद लोभ मोह मतसर सब त्याग्यो
कथा कीरतन मगन सदा आनन्द रस फूल्यो
सन्त निरखि मन मुदित उदित रवि पंकज फूल्यो
वैर भाव जिन द्रोह किय, तासु पाग म्वैं खसि परी
विप्र सारसुत धर जनम, रामराय हरि मत करी १९७

इस प्रकार स्पष्ट है कि सरोजकार ने विवरण रामराइ राठौर का दिया है और उदाहरण रामराइ सारस्वत का।

७३२।६६६

(१७) रामचरण ब्राह्मण, गणेशपुर, जिले बाराबंकी। यह पण्डित जी संस्कृत और भाषा दोनों कविताओं में अत्यन्त निपुण थे। कायस्थकुल भास्कर संस्कृत में और कायस्थधर्म-दर्पण भाषा में बनाया है। संस्कृत-काव्य का एक श्लोक इनका लिखते हैं—

कौशल्याशोकशल्या पहरणकुशली पादपाथोजधूल्या-
ऽहल्याकल्याणकारी शमयतु दुरितं कांडकोदण्डधारी।
रामो मारीचमारी रणनिहतखरः क्ष्माकुमारी विहारी,
संसारीतिप्रतीतः शमितदशमुखः सम्मुखः सज्जनानाम् ॥

---

(१) खोज रिपोर्ट १९३८, पृष्ठ ५, ६।

सर्वेक्षण

रामचरण जी का जन्म सं० १८१७ के लगभग प्रतापगढ़ जिले में एक कान्यकुब्ज ब्राह्मण परिवार में हुआ था। घर पर ही कुछ शिक्षा पाकर यह प्रतापगढ़ के राजा के यहाँ खजाञ्ची हो गए थे। यहाँ से यह विरक्त हो अयोध्या चले आए, जहाँ इनकी भेंट विन्दुकाचार्य महात्मा रामप्रसाद के शिष्य रघुनाथप्रसाद से हुई। यह बाद में रघुनाथप्रसाद के शिष्य हो गए। रामप्रसाद जी के साथ यह चित्रकूट गए थे। वहाँ रसिक भावना की शिक्षा इन्हें मिली। यहाँ से यह मिथिला गए। अयोध्या लौटने के अनन्तर यह रैवासा गए, जहाँ अग्रदास जी की गद्दी थी। यहाँ 'अग्रसागर' का अध्ययन किया। फिर अयोध्या लौट आए। यह रसिक-सम्प्रदाय के अन्तर्गत स्व-सुखी शाखा के प्रवर्तक हैं। रामायण की इनकी कथा अयोध्या में नित्य ही जानकी घाट पर हुआ करती थी। नबाब आसफुद्दौला ने इन्हे कई गाँव भेंट कर दिए थे। मिर्जापुर के प्रसिद्ध रामायणी रामगुलाम द्विवेदी से इनको सत्संग लाभ हुआ था। विश्वनाथ सिंह के बुलाने पर भी यह रीवाँ नहीं गए थे। साधु सन्तों की सेवा के लिए यह सदा तत्पर रहते थे, अतः अयोध्या में ये करुणासिन्धु नाम से प्रसिद्ध थे। इनकी मृत्यु अयोध्या में माघ शुक्ल ६, सं० १८८८ को हुई। इनके सुप्रसिद्ध शिष्य ये हैं—(१) जीवाराम जी 'युगल प्रिया, (२) जनकराव किशोरीशरण, रसिक अली। (३) हरीदास।

डॉ० भगवतीप्रसाद सिंह ने इनके निम्नलिखित २५ ग्रन्थों के उपलब्ध होने की चर्चा की है[1]—

(१) अमृत खण्ड, (२) शतपञ्चासिका, (३) रसमालिका, (४) रामपदावली, (५) सियाराम रसमञ्जिरी, (६) सेवा विधि, (७) छप्पय रामायण, (८) जय माल संग्रह, (९) चरण-चिह्न, (१०) कवितावली, (११) दृष्टांत वोधिक, (१२) तीर्थयात्रा, (१३) विरहशतक, (१४) वैराग्य शतक, (१५) नामशतक (१६) उपासना शतक, (१७) विवेक शतक, (१८) पिंगल (१९) अष्टयाम सेवा विधि, (२०) कवितावली (२१) काव्य शृङ्गार (२२) झूलन (२३) कोशलेन्द्र रहस्य, (२४) रामचरित मानस की टीका (२५) राम नवरत्न सागर संग्रह।

रामचरण जी के बनाए हुए निम्नलिखित ग्रन्थ खोज में मिले हैं—

(१) रस मालिका, १९०३।४४, १९०९।२४५ सी, १९४७।३२७ घ ङ। इस ग्रन्थ में अध्यात्म-ज्ञान, संसार से वैराग्य, भक्ति और सत्सङ्ग जैसे विषयों का निरूपण है। इसकी रचना सं० १८४४ में हुई थी।

संवत सत अष्ठादसौ चौआलिस दिन सूर
सरद विजै दसमी विमल रस गरन्थ भा पूर

ग्रन्थ के प्रथम छन्द में कवि का नाम रामचरण आया है।

---

(१) रामभक्ति में रसिक-सम्प्रदाय, पृष्ठ ४१८–२१

"ते वैष्णवाः चरण रामचरणौ नमस्ते"

(२) कोशलेन्द्ररहस्य या रामरहस्य १६०३।६८।

(३) दृष्टान्त बोधिका १६०६।२११,१६०६।२४५ के; १६४७।३२७ क ख ग। यह ग्रन्थ दोहों में है और ५ शतकों में विभक्त है।

(४) पिङ्गल, १६०६।२४५ ए। रचनाकाल सं० १८४१—

सम्वत सत अष्टादसौ यकचालिस रितु नीर
शुक्ल पक्ष श्रावन भौम विरचत सन्तन तीर ३४५

(५) सत पञ्चासिका, १६०६।२४५ बी। यह ग्रन्थ सं० १८४२ ई० में चित्रकूट में रचा गया—

चित्रकूट में रचत यह लखे हरत जग ताप
दोहा सत पञ्चासिका पढ़हि साधु मां बाप ७६
सम्वत सत अष्टादसौ चालिस दुइ रितुराज
कृष्ण पक्ष मधु मास बुध चौथी सन्त समाज ७७

(६) रामचरित मानस टीका, १६०६।२४५ डी। इस टीका की रचना सं० १८६५ में हुई—

तक अनुभवति सु सक मह पहर डेढ़ दिन पाठ
अवध पूर्न दिन विजै तिथि पैंसठ सन्त दस आठ

(७) सियाराम रस मञ्जरी, १६०६।२४५ ई। रचनाकाल सं० १८८१।

श्री सरजू तट रचित इति अवधपुरी श्री खास
सीय कुञ्ज श्री बास पुनि मिलव सीय पिय खास १५६
संबत सत अष्ठादसौ एकादसि श्रावन मास
शुक्ल जानकी तीज श्री सीय स्वामि मति मास १५७

(८) सेवा-विधि, १६०६।२४५ एफ, १६४७।३२७ अ।

(६) छप्पय रामायण, १६०६।२४५ जी। इस ग्रन्थ में जनक प्रतिज्ञा का वर्णन है।

(१०) जय माल संग्रह, १६०६।२४५एच। अयोध्या में राम की क्रीड़ाओं का वर्णन।

(११) चरण चिह्न,१६०६।२४५ आई। राम और जानकी के चरण चिह्नों का माहात्म्य वर्णन।

(१२) कवितावली, १६०६।२४५ जे। कवित्तों में राम-कथा।

(१३) तीर्थयात्रा, १६०६।२४५ एल।

(१४) रामपदावली। १६०६।२४५ एम। राम का बाल-विहार वर्णित है।

(१५) विरह शतक, १६०६।२४५ एन। यह दृष्टान्त बोधिका का पञ्चम शतक है।

यह दृष्टान्त प्रबोधिका सतक बिरह को अङ्ग
रामचरण तेहि समुझि रहु राम न छोड़हि अङ्ग

१६. झूलना, १६४१।२२५

१७. रामरत्न सार-संग्रह, १६४७।३२७ च।

७३३।६६८

१८. रामदास बाबा, सूर जी के पिता, सं० १७८८ में उ०। रागसागरोद्‌भव में इनके पद बहुत ललित हैं।

सर्वेक्षण

सरोज में दिया हुआ बाबा रामदास का सं० १७८८ पूर्णरूपेण भ्रष्ट है। अकबर का शासनकाल सं० १६६२ में समाप्त हुआ। सूरदास अधिक से अधिक सं० १६४० तक जवित रहे। फिर अकबरी दरबार के गायक तथा सूर के तथाकथित पिता बाबा रामदास सं० १७८८ में कैसे हो सकते हैं।

अकबरी दरबार के गायक सूरदास न तो प्रसिद्ध कवि सूरदास हैं और न तो उक्त दरबार के प्रसिद्ध गायक बाबा रामदास महाकवि सूर के पिता ही हैं। अकबरी दरबार और अकबरी दरबार के प्रसिद्ध गायक बाबा रामदास का सूर से कोई सम्बन्ध नहीं। श्री प्रभुदयाल मीत्तल ने 'अकबरी दरबार के गायक बाबा रामदास और उनके पुत्र सूरदास' शीर्षक लेख में इसका पूर्ण विवेचन किया है।[1] इस लेख का सार यह है।

अबुलफ़जल-कृत आईन-ए-अकबरी में अकबरी दरबार के गायकों की सूची दी गई है। इस सूची में ३६ नाम हैं। पहला नाम तानसेन का है, दूसरा बाबा रामदास का और उन्नीसवां सूरदास का। इस सूची में सूरदास को बाबा रामदास का पुत्र कहा गया है और दोनों को ग्वालियर निवासी कहा गया है।

यह सूरदास न तो अष्टछापी सूरदास हैं, न सूरदास मदनमोहन हैं, और न विल्वमङ्गल सूरदास ही। यह रामानन्दी सूरदास हैं। स्वामी रामानन्द के एक शिष्य अनन्तानन्द थे। अनन्तानन्द के शिष्य कृष्णदास पयअहारी थे। कृष्णदास पयअहारी के शिष्य अग्रदास और अग्रदास के शिष्य थे नाभादास जी। नाभादास ने भक्तमाल के ३७ वें छप्पय में अनन्तानन्द और उनके शिष्यों का उल्लेख किया है। अनन्तानन्द के शिष्यों में एक रामदास भी हैं। यह रामदास, कृष्णदास पयअहारी के गुरुभाई हैं। कृष्णदास पयअहारी के २४ शिष्यों का उल्लेख भक्तमाल छप्पय ३९ में हुआ है। इन २४ में एक शिष्य सूरज भी है। यही आईन-ए-अकबरी के सूरदास हैं।

---

(१) ब्रज भारती, वर्ष १३, अङ्क २, भाद्रपद २०१२।

गुरुभाई के शिष्य वैरागियों की परम्परा में पुत्रवत् हैं। यह भी हो सकता है कि यह बाबा रामदास के सगे पुत्र ही रहे हों। रामदास को बाबा कहा गया है, अतः यह वैरागी हैं और सूरदास, जिनको अबुलफ़ज़ल ने पत्र लिखकर काशी से प्रयाग आने के लिए कहा है, वे भी प्रसिद्ध सन्त प्रतीत होते हैं। ऐसा अनुमान किया जा सकता है कि बाबा रामदास और उनके तथाकथित पुत्र सूरदास, दोनों रामानन्दी साधु थे।

रामदास जी विरक्त वैष्णव होने के अतिरिक्त सङ्गीत-कला की उन्नति के भी प्रयासी थे। पहले वे लोदियों के दरबार में रहे। बाबर द्वारा लोदियों के हरा दिए जाने पर, पुराने वैभव की समाप्ति के साथ-साथ, सं० १५८३ में, दरबारी गायक रामदास ने भी दिल्ली छोड़ी और लखनऊ आ रहे। हुमायूँ को हराकर जब सूर वंशीय पठान दिल्ली में पुनः सिंहासनासीन हुए, तब यह फिर लखनऊ से दिल्ली आए। पहले १६०२ सं० में इस्लाम शाह सूर के दरबार में रहे, पर बैरमखाँ ने जब फिर हुमायूँ की राज्य सत्ता की स्थापना दिल्ली में की, तब यह बैरमखाँ के प्रिय गायक हुए। बैरमखाँ की मृत्यु के अनन्तर सं० १६१६ में इनका अकबरी दरबार में प्रवेश हुआ। इस समय इनकी अवस्था प्रायः ७० वर्ष की थी। इस समय सूरदास की वय ३०-३५ वर्ष की थी।

अकबरी दरबार में प्रवेश के कुछ ही दिनों पश्चात् बाबा रामदास का देहावसान हो गया होगा। सूरदास विरक्त हो वृन्दावन चले गए। यहाँ कुछ दिनों श्री संकेत स्थान में रहे, तदनन्तर काशी चले आए। इन्हीं सूरदास को सं० १६४२ में अबुल फ़ज़ल ने अकबर के प्रयाग आगमन के अवसर पर काशी से प्रयाग आने के लिए आमन्त्रित किया था।

अक्षयकुमार दत्त ने भारतवर्ष के उपासक सम्प्रदाय में काशी निवासी रामानन्दी सूरदास का उल्लेख किया है। यह वही सूरदास हैं। इनकी समाधि काशी से संलग्न शिवपुर में है। सभा की खोज रिपोर्ट में उल्लिखित 'राम-जन्म' और 'एकादशी-माहात्म्य' के रचयिता सूरदास यही हैं।

७३४।६१२

(१६) रघुराय कवि, बुन्देलखण्डी भाट, सं० १७६० में उ०। इन्होंने बहुत काव्य लिखा है। इनका बनाया हुआ 'यमुना शतक' ग्रन्थ देखने योग्य है।

सर्वेक्षण

सरोज में 'यमुना शतक' से एक कवित्त उद्धृत है। प्रतीत होता है कि यह ग्रन्थ सरोजकार के पास था। इस कवि के सम्बन्ध में और कोई सूचना सुलभ नहीं। प्रथम संस्करण में कवि का नाम रघुराई है।

७३५।६४४

(२०) रघुराय कवि २, सं० १८३० में उ० । इनके शृङ्गार में सुन्दर कवित्त हैं ।

सर्वेक्षण

सरोज में इनका एक शृङ्गारी कवित्त उद्धृत है जो दिग्विजय भूषण से लिया गया है । कवि के सम्बन्ध में और कोई सूचना सुलभ नहीं ।

ग्रियर्सन में (४२०) ७३४ और ७३५ संख्यक रघुराय नामक दोनों नामरासी कवियों को अभिन्न होने की सम्भावना व्यक्त की गई है ।

७३६।६४६

(२१) रघुलाल कवि, ऐजन । इनके शृङ्गार में सुन्दर कवित्त हैं

सर्वेक्षण

रघुलाल के सम्बन्ध में कोई सूचना सुलभ नहीं ।

७३७।६२७

(२२) रघुराज कवि, श्री बांधव नरेश बघेले राजा रघुराज सिंह बहादुर । विद्यमान हैं । इन महाराज ने श्रीमद्भागवत द्वादश स्कन्ध का नाना छन्दों में कविता की रीति से प्रति श्लोक उल्था करके 'आनन्दाम्बुनिधि' नामक ग्रन्थ बनाया है । हमने फ़ारसी भाषा इत्यादि में बहुत से भागवत के उल्था देखे हैं, पर ऐसा कोई उल्था नहीं हुआ । इसके सिवा 'सुन्दर शतक' इत्यादि और ग्रन्थ भी इनके बनाए हुए महा अद्भुत हैं ।

सर्वेक्षण

रीवाँ नरेश महाराज रघुराज सिंह महाराज विश्वनाथ सिंह के पुत्र और महाराज जयसिंह के पौत्र थे । इनका जन्म सं० १८८० में कार्तिक कृष्ण ४, गुरुवार को हुआ था । सं० १९११ में यह अपने पिता के दिवङ्गत होने पर ३१ वर्ष की वय में रीवाँ नरेश हुए । इनका देहावसान सं० १९३६ में माघ कृष्ण ९ को, ५६ वर्ष की वय में हुआ । इनके शिक्षा-गुरु रामानुजदास और दीक्षा-गुरु मुकुन्दाचार्य थे । इन्होंने १० वर्ष की ही वय में कार्तिक शुक्ल ११, सं० १८९० को दीक्षा ली थी ।[1] इनका उल्लेख रघुराजसिंह ने अपने राम स्वयंवर नामक ग्रन्थ में किया है । यह अत्यन्त धार्मिक पुरुष थे ।

---

१. रामभक्ति में रसिक-सम्प्रदाय, पृष्ठ ४७०

सरोज के प्रणयनकाल में रघुराज सिंह जीवित थे, अतः सरोजकार ने उन्हें 'विद्यमान हैं' लिखा। पर ग्रियर्सन के रचनाकाल में यह दिवङ्गत हो चुके थे। इस तथ्य पर ध्यान न देकर ग्रियर्सन (५३२) में इन्हें सरोज के द्वितीय संस्करण के संवत् के अनुसार १९४० में उपस्थित माना गया है।

विनोद (१८०७) में रघुराज सिंह के २८ ग्रन्थों की सूची दी गई है पर ये सभी इनकी रचनाएँ नहीं हैं। इनके आश्रित कवियों की भी अनेक रचनाएँ इसमें सम्मिलित हैं। इस तथ्य का उल्लेख स्वयं मिश्रबन्धुओं ने किया है। अच्छा होता यदि छान-बीन कर केवल इन्हीं के ग्रन्थों की सूची प्रस्तुत की गई होती। रघुराज सिंह के बनाए हुए निम्नलिखित ग्रन्थ खोज में मिले हैं—

(१) सुन्दर शतक, १९००।४५, १९०९।२३७। इस ग्रन्थ में १०० कवित्तों में हनुमान जी का चरित्र वर्णित है। इसकी रचना सं० १९०४ में हुई।

संवत उनइस सै चतुर, आस्विन सुदि सनिवार
सरद पूर्निमा को बन्यो, सुन्दर सतक उदार

यह दोहा सरोज में भी उद्धृत है। विनोद में यह हनुमत् चरित्र नाम से अलग ग्रन्थ गिना गया है, जो ठीक नहीं।

(२) विनय पत्रिका, १९००।४६। सूर और तुलसी के ढङ्ग पर, सं० १९०७ में विरचित पदावली।

(३) राम स्वयंवर, १९०१।७, १९०४।३७१ बी। इस ग्रन्थ की रचना सं० १९२६ में हुई। इसका एक संक्षिप्त संस्करण सभा से प्रकाशित हो चुका है।

(४) आनन्दाम्बुनिधि, १९०३।१७, १९२६।३७१ ए। यह भागवत का अनुवाद है। इसकी रचना में ४ वर्ष लगे थे। ग्रन्थ सं० १९११ में पूर्ण हुआ था।

संवत ओनइस सै जु पछावन
साल सात को परम सुहावन
कातिक मास अरम्भहि कीनो
आनन्द अम्बुधि ग्रन्थ नवीनो
रचत बीति गे बरसहि चारी
कियो कृपा करि पार मुरारी
ओनइस सै ग्यारह को साला
पूस मास गुरुवार विसाला
कृष्ण पक्ष दसमी सुखदाई
धन की जब संक्रातिहि आई

आनन्द अंबुनिधिहिं सुभ ग्रन्था
ज्यों सन्तन सन्तत सत पन्था
तब यह ग्रन्थ समापत भयऊ
मम वाञ्छित पूरन ह्वै गयऊ

(५) श्रीमद्भागवत माहात्म्य, १९०३।१८। यह पद्मपुराण में वर्णित माहात्म्य का भाषानुवाद है। यह अनुवाद सं० १९११, फाल्गुन कृष्ण ३०, वृहस्पतिवार को पूर्ण हुआ।

रुद्र[११] खण्ड[९] ससि[१] संवतै, अमासुर गुरुवार
मास फाल्गुन भागवत, भो महातम अवतार

(६) जगदीश शतक, १९०४।८२। श्री जगन्नाथ जी की स्तुति। विनोद में इसी को जगन्नाथशतक नाम से दिया गया है।

(७) रामरसिकावली या भक्तमाल, १९०४।८९। इस ग्रन्थ में हरि भक्तों के चमत्कार दोहा-चौपाई में वर्णित हैं। ग्रन्थ चार खण्डों में विभक्त है। एक-एक खण्डों में एक-एक युग के भक्तों की कथा है। ग्रन्थ बहुत बड़ा है और श्री वैङ्कटेश्वर प्रेस से प्रकाशित हो चुका है। इसका प्रारम्भ सं० १९००, सावन शुक्ल १४ को हुआ था।

संवत ओनइस सै चतुरदसि सावन सित पर्व
रचन रामरसिकावली कियो अरम्भ अगर्व

ग्रन्थ की समाप्ति २१ वर्ष बाद सं० १९२१ में आश्विन शुक्ल ७, गुरुवार को हुई। विनोद में इसका उल्लेख दो ग्रन्थों के रूप में हुआ है। रामरसिकावली और भक्तमाल, दो अलग-अलग ग्रन्थ समझ लिए गए हैं।

(८) रुक्मिणी परिणय, १९०६।२१०, १९२३।३३० ए। इसकी रचना सं० १९०६ में हुई।

(९) पदावली, १९२३।३३० बी।

(१०) कवित्त संग्रह, १९३८।११४

विनोद में रघुराज सिंह के नाम पर दिए अन्य ग्रन्थ ये हैं। (१) भक्ति विलास, रचनाकाल सं० १९२६, (२) रहस्य पञ्चाध्यायी, (३) विनय माला, (४) विनय प्रकाश, (५) गद्य शतक, (६) मृगया शतक, (७) चित्रकूट माहात्म्य, (८) गङ्गाशतक, (९) राम अष्टयाम, (१०) रघुपति शतक, (११) धर्म विलास, (१२) शम्भु शतक, (१३) राज रञ्जन, (१४) भ्रमर गीत, (१५) परम प्रबोध।

रघुराज सिंह के दो ग्रन्थ अभी हाल ही में सभा की खोज में और मिले है—[१]

---

१. आज रविवार विशेषाङ्क, १४ जुलाई १९५७—"काशी नागरी प्रचारिणी सभा ६४ वाँ वार्षिक खोज विवरण" शीर्षक लेख।

(१) विनै सुख सार—रचनाकाल सं० १९०७

(२) राम कीर्त्तन—रचनाकाल सं० १९०९

विनोद में यदुराज विलास और रघुराज विलास नामक दो ग्रन्थ रघुराज सिंह के नाम पर और भी चढ़े हैं। पर ये जगन्नाथ और रघुनाथ नामक कवियों के बनाए हुये हैं। स्वयं रघुराज सिंह इस सम्बन्ध में कहते हैं—

सुकवि महान गुरुदत्त पुनि ताके तनै
जगन्नाथ रघुनाथ द्विज सरुआर के
औरो बहु कालहि ते ताके कुल दीन्ह्यो प्रभु
करि अति कृपा गान सास्त्र अधिकार को
वास अब जाको अहै गोविन्द सु गढ़ मध्य
देस सो बघेलखण्ड करत उचार को
रघुराज और जदुराज को विलास क्रम
रचना कियो है मम अज्ञा अनुसार को।

—खोज रिपोर्ट १९००।४९

बहुत सम्भव है अभी और भी कुछ ग्रन्थ अन्य विरचित होने के कारण इस सूची से निकालने पड़ें। डॉ० भगवतीप्रसाद सिंह ने इनके ३२ ग्रन्थों की सूची दी है।[1]

रघुराज सिंह के दरबार में गोकुलप्रसाद, सुदर्शन दास, विश्वनाथ शास्त्री, रामचद्र शास्त्री रसिक नारायण, रसिकविहारी, गोविन्द किशोर, बालगोविन्द, हरि प्रसाद, जगन्नाथ और रघुनाथ आदि, आदिकवि थे, जो बहुत प्रख्यात नहीं है।

७३८।६५६

(२३) रघुनाथ कवि १, असेला बन्दीजन, बनारसी, सं० १८०२ में उ०। यह कवीश्वर महाराज बरिबण्ड सिंह काशीनरेश के कवि थे और चौरागाँव, काशी पञ्चकोशी के समीप रहते थे। यह महाराज भाषा-साहित्य के आचार्यों में गिने जाते हैं। इनके बनाए हुए ग्रन्थ रसिकमोहन, जगमोहन, काव्यकलाधर तथा इश्क महोत्सव बहुत सुन्दर हैं। इनके पढ़ने से फिर काव्य में दूसरे ग्रन्थ की कुछ अपेक्षा नहीं होती। इन्होंने सतसई का टीका भी किया है।

सर्वेक्षण

रघुनाथ बन्दीजन वर्तमान काशी राज्य के संस्थापक बरिबण्ड सिंह उपनाम बलवन्त सिंह (शासनकाल सं० १७९७-१८२७) के आश्रित थे। उक्त काशीनरेश ने इन्हें पञ्चकोशी

---

(१) रामभक्ति में रसिक-सम्प्रदाय, पृष्ठ ४७२

के अन्तर्गत चौरा नामक गाँव दे दिया था। इनके पुत्र गोकुलनाथ और पौत्र गोपीनाथ भी अच्छे कवि थे और काशी-राजदरबार से सम्बन्धित थे। रघुनाथ बन्दीजन के निम्नलिखित ग्रन्थ खोज में मिले हैं—

(१) रसिक मोहन, १९०३।५६, १९२३।३२६ ई, एफ। यह ग्रन्थ भारतजीवन प्रेस, काशी, से प्रकाशित हो चुका है। इसकी रचना सं० १७९६ की बसन्तपञ्चमी को हुई—

संवत सत्रह सै अधिक, बरिस छानबे पाय
माघ सुकुल श्री पञ्चमी, प्रगट भयो सुखदाय

इस ग्रन्थ से कवि के गुरु का नाम लालमुकुन्द ज्ञात होता है—

श्री गुरुदेव मुकुन्द की लहिके कृपा सहाइ
करिबे की पाई सकति ग्रन्थिन को समुदाय

यह अलङ्कार ग्रन्थ है और इसके लक्षण और उदाहरण बहुत साफ हैं।

(२) काव्य-कलाधर, १९०३।१४, १९०९।२३५ ए, १९२३।३२६ डी, १९२६।३६९ बी, सी डी। यह नायिका भेद और रस का ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ के भी प्रारम्भ में श्लेष के सहारे गुरु वर्णन है।

सुफल होत मन कामना, मिटत बिघन के वृन्द
गुन सरसत, बरसत हरष, सुमिरत लाल मुकुन्द

इस ग्रन्थ की रचना सं० १८०२ में हुई—

अट्ठारह सै द्वै अधिक, संवतसर सुख सार
काव्य कलाधर को भयौ, कार्तिक में अवतार

—खोज रिपोर्ट १९०३।१४

(३) जगत मोहन, १९०३।११२, १९०९।२३५ बी, १९२०।१३८, १९२३।३२६ बी, सी। इस ग्रन्थ की रचना सं० १८०७ में बसन्त पञ्चमी को हुई—

अट्ठारह सै मुनि अधिक, संवत् अति अभिराम
माघ शुक्ल श्रीपञ्चमी, तिथि मिति सब सुख धाम।

इस ग्रन्थ में कृष्ण की दिनचर्या वर्णित है। राजनीति, सामुद्रिक, वैद्यक, ज्योतिष, शालिहोत्र, मृगया, सेना, नगर, गढ़रक्षा, पशु-पक्षी तथा शतरञ्ज आदि सभी विषयों का समावेश करके कवि ने अपनी बहुज्ञता प्रकट की है। खोज में प्राप्त ग्रन्थ भिन्न-भिन्न आकार के हैं। १९२३।३२६ बी तो २०४ पन्नों का है और केवल पिङ्गल है। इसी प्रकार दूषण-भूषण १९२३।३२६ ए कोई

स्वतन्त्र ग्रन्थ नहीं है। यह जगतमोहन का एक अंश मात्र है। इसकी पुष्पिका में जगतमोहने शब्द आया है।

(४) बाल गोपाल चरित्र, १९२६।३६९ ए, द १९३१।६८। ग्रन्थ की पुष्पिका में इसे काशीवासी रघुनाथदास की कृति कहा गया है। प्रतिलिपिकाल सं० १८४१ है। कवित्त-सवैयों में रघुनाथ छाप है। शैली पूर्णतया इन्हीं रघुनाथ के मेल में हैं। खोज रिपोर्ट में भी यह इन्हीं रघुनाथ की रचना स्वीकृत है।

इन ग्रन्थों के अतिरिक्त रघुनाथ के दो ग्रन्थ और हैं जिनमें एक इश्क महोत्सव है। इसमें उर्दू वाली खड़ीबोली के कवित्त हैं। सरोज के अनुसार इनका दूसरा ग्रन्थ विहारी सतसई की टीका है। ये दोनों ग्रन्थ अभी तक खोज में नहीं मिले हैं। सरोज में दिया सं० १८०२ कवि का रचनाकाल है।

७३९।६१७

(२४) रघुनाथ २, पण्डित शिवदीन ब्राह्मण, रसूलाबादी। वि०। इन्होने भाव-महिम्न इत्यादि छोटे-छोटे बहुत ग्रन्थ बनाये हैं।

सर्वेक्षण

सरोज में इनके भाषा महिम्न से एक कवित्त उद्धृत है। जान पड़ता है कि यह ग्रन्थ सरोज-कार के पास था। किसी रघुनाथ का देवी जी के छप्पय[1] नामक एक खण्डित ग्रन्थ मिला है। सम्भवतः यह इन्हीं की रचना है। अब माहिम्न के स्थान पर भव महिम्न होना चाहिये।

ग्रियर्सन (७३६) में इनके इस ग्रन्थ के ८५२ संख्यक शिवदीन से अभिन्न होने की सम्भावना व्यक्त की गई है। विनोद (२४७२) में इनका नाम सं० १९४० में उपस्थित कवियों की सूची में है।

७४०।६३९

(२५) रघुनाथ प्राचीन, सं० १७१० में उ०। इनके कवित्त हज़ारे में हैं।

सर्वेक्षण

यह रघुनाथ ब्राह्मण थे और प्रसिद्ध कवि गंग के शिष्य थे। जहाँगीर के शासनकाल (सं० १६६२-८४) में उपस्थित थे। इन्होंने भानुदत्त की संस्कृत रसमञ्जरी का भाषानुवाद रघुनाथ-विलास[2] नाम से किया है। यह ग्रन्थ रसमञ्जरी[3] नाम से भी मिला है। खोज रिपोर्ट[4] में इन्हें सं० १६६७ में उपस्थित माना गया है।

---

(१) खोज रिपोर्ट १९४१।२०७, (२) वही १९०६।३१०, पं १९२२।८७। (३) वही १९२६।३६७, १९४४।३१४, (४) वही १९०६।३१०

७४१।६४३

(२६) रघुनाथराय कवि, सं० १६३५ में उ० । यह कवीश्वर राना अमर सिंह जोधपुर के यहाँ थे ।

सर्वेक्षण

रघुनाथराय का एक कवित्त सरोज में उद्धृत है, जिसमें अमर सिंह के शाहजहाँ के दरबार में बिगड़ने का उल्लेख हुआ है—

बादशाह जहाँ बैठो जंग जोरि तहाँ स्वच्छ
साहसी अमर सिंह रोप्यो रन रासे को

इसी घटना का उल्लेख बनवारी[१] ने भी किया है । इसी के आधार पर शुक्ल जी ने बनवारी का समय सं० १६६०–१७०० माना है । यही समय रघुनाथराय का भी होना चाहिये । सरोज में दिया सं० १६३५ ई० सन् प्रतीत हो रहा है । यदि ऐसा है तो यह ठीक है और कवि का रचनाकाल है ।

७४२।६४७

(२७) रघुनाथदास महन्त अयोध्यावासी । यह महाराज ब्राह्मण थे । इनका पैंतेपुर, जिला सीतापुर में घर था और रामचन्द्र के उपासक थे । भगवद्भक्ति के कारण घर-बार त्यागकर अयोध्या जी में रहा करते थे । राम नाम की महिमा के सैकड़ों कवित्त ये बनाए हैं : जिनसे लाखों मनुष्यों ने उपदेश पाया है ।

डॉ० भगवतीप्रसाद सिंह ने अयोधावासी दो रघुनाथ दास स्वीकार किये हैं । पहले के सम्बन्ध में वे लिखते हैं कि इनका जन्म सीतापुर ज़िले के पैंतेपुर नामक गाँव में चैत्र शुक्ल तृतीया सं० १८७४ को हुआ था और इनके पिता नाम दुर्गादत्त था । प्रारम्भ ही से यह विरक्त थे । गंगा-स्नान करने के बहाने यह घर से भाग निकले और लखनऊ जाकर नवाब की सेना में शामिल हो गए । भरती होने के आठ मास बाद प्रयाग में कुम्भ लगा । यह ५० दिन की छुट्टी लेकर प्रयाग गए, वहाँ महात्मा बलदेवदास जी मौनी से इन्होंने दीक्षा ले ली । सेना से भी विरक्त हो, यह पुनः प्रयाग आ गए । प्रयाग से गंगा के किनारे-किनारे १० वर्षों में काशी आए और शिवपुर में कुटी बनाकर रहने लगे । फिर गुरु के आदेश से अयोध्या चले गए । एक वर्ष अयोध्या में रहने के पश्चात् गुरु की आज्ञा से पुनः पैंतेपुर गए । तब तक पिता का देहान्त हो गया था । माता को लेकर बद्रीनाथ गए । स्त्री ने साथ न छोड़ा । उसे लाकर अयोध्या में एक वर्ष तक गृहस्थ-जीवन व्यतीत किया । इन्हें एक पुत्र उत्पन्न हुआ । तब स्त्री को घर पहुँचा आए और पूर्ण विरक्त होकर अयोध्या में ही वासुदेव घाट पर रहने लगे । अयोध्या नरेश मानसिंह, 'द्विजदेव' काशीनरेश ईश्वरीप्रसाद नारायण सिंह एवं रीवां नरेश रघुराज सिंह ने इनका दर्शन अयोध्या में किया था । इनका साकेत वास सं०

---

(१) देखिये खोज रिपोर्ट, कवि संख्या ५७०

१९३० में पौष शुक्ल ११ को हुआ। डॉ० सिंह ने इनके एक ग्रन्थ 'हरिनाम सुमिरनी' का उल्लेख किया है और कहा है कि इनकी छाप 'रघुनाथ' और 'जन रघुनाथ' हैं।[1]

दूसरे रघुनाथ 'रघुनाथदास राम सनेही' हैं। यह अयोध्या में रामघाट पर रामनिवास नामक स्थान पर रहते थे। यहीं इन्होंने विश्राम सागर की रचना चैत्र शुक्ल नवमी, सं० १९११ में की थी। विश्राम सागर से इनके जीवन के सम्बन्ध में इतना ही ज्ञात होता है कि इनके गुरु देवादास नामक काशी निवासी कोई महात्मा थे। डॉ० सिंह के अनुसार रघुनाथदास रामसनेही के जीवन वृत्त सम्बन्धी तथ्यों का ठीक-ठीक पता नहीं चलता। इनका एक मात्र उपलब्ध ग्रन्थ विश्राम सागर है।[2]

मेरी धारणा है कि डॉ० सिंह के ग्रन्थ में वर्णित दोनों रघुनाथदास एक ही हैं। डॉ० सिंह 'हरिनाम सुमिरनी' को पैंतेपुर वाले 'रघुनाथदास' की रचना मानते हैं। इसमें रघुनाथदास ने अपने गुरू का उल्लेख किया है—

श्री गुरु देवादास के चरण कमल धरि माथ
श्री हरिनाम सुमिरनी बरनत जन रघुनाथ

—खोजरिपोर्ट १९२३।३२८ ए

इसी के आगे देवादास को रामसनेही भी कहा गया है—

प्रथमहि राम प्रसाद के रहे सिस्य में सिस्य
राम सनेही संत मिलि राम नाम दियो लिष्य

—खोजरिपोर्ट १९२३।३२८ ए

इसी प्रति के प्रारम्भ में भी रघुनाथदास के राम सनेही होने का उल्लेख है—

"श्री गणेशाय नमः।। अथ श्री महाराज महंत रघुनाथदास रामसनेही कृत हरिनाम सुमिरनी ग्रन्थ लिष्यते।"

विश्राम सागर में कवि ने इन छन्दों में अपना और अपने गुरु का उल्लेख किया एवं ग्रन्थ का रचनाकाल दिया है—

संवत मुनि बसु निगम शत, रुद्र अधिक मधुमास
शुक्ल पक्ष रवि नौमि दिन, कीन्हीं कथा प्रकाश
अवधपुरी परसिद्ध जग, सकल पुरिन सरनाम
रामघाट के बाद में, रामनिवास सुधाम
तहाँ कीन्ह आरंभ मैं, रघुपति आयसु पाय
श्री गुरु देवादास के, पद निज हृदय बसाय

—खोज रिपोर्ट १९२९।२७८ सी

---

(१) राम भक्ति में रसिक सम्प्रदाय, पृष्ठ ४६२-६४ (२) वही, पृष्ठ ४८०

यह देवादास, बलदेवदास का संक्षिप्त नाम है। इनके लिखे निम्नलिखित ग्रन्थ खोज में मिले हैं—

(१) मानस दीपिका, १९२६।३७० ए, ३७२ बी, १९२९।२७८ ए, बी। यह रामचरित मानस की टीका है।

(२) हरिनाम सुमिरनी, १९२०।१३९, १९२३।३२८ ए—

श्री गुरु देवादास के चरण कमल धरि माथ
श्री हरिनाम सुमिरनी बरनत जन रघुनाथ

(३) दोहा-कवित्तादि, १९२३।३२८ बी।

(४) शङ्कावली रामायण, १९२३।३२७ ए बी, १९२६।३७० बी, ३७२ सी, १९२९। २७८ ए।

(५) विश्राम मानस, १९२६।३७० सी, ३७२ ए, १९२९।२७८ बी।

(६) भक्तमाल माहात्म्य, १९२६।३७० डी।

(७) विश्राम सागर, १९२९।२७८ सी।

(८) प्रश्नावली, १९२९।२७८ डी।

(९) ज्ञान ककहरा, १९४४।३१५

भाषाकाव्यसंग्रह में इनके सम्बन्ध में एक चमत्कार पूर्ण घटना का उल्लेख हुआ है। इसके अनुसार यह पहले अंगेजी फौज में थे। वहीं से विरक्त हो यह अयोध्या में आ रहे।[१] वस्तुतः यह लखनऊ के नवाब की फौज में थे इनकी भरती राबर्ट नामक एक अंग्रेज ने नवाब की ओर से की थी।

७४३।६५०

(२८) रघुनाथ उपाध्याय, जौनपुर निवासी, सं० १९२१ में उ०। इन्होंने निर्णय मञ्जरी नामक ग्रन्थ बनाया है।

सर्वेक्षण

निर्णय मञ्जरी के प्रारम्भ के दो दोहे सरोज में उद्धृत हैं। ज्ञात होता है कि यह ग्रन्थ सरोजकार के पास था। इस कवि के सम्बन्ध में कोई सूचना सुलभ नहीं है।

---

(१) **भाषाकाव्यसंग्रह, पृष्ठ १२९**

७४४।६१३

(२९) रसराज कवि, सं० १७८० में उ० । इनका नखशिख बहुत सुन्दर है ।

सर्वेक्षण

रसराज जी के सम्बन्ध में कहीं से कोई सूचना सुलभ नहीं ।

७४५।६५७

(३०) रसखानि कवि, सय्यद इब्राहीम पिहानीवाले, सं० १६३० में उ० । यह कवि मुसलमान थे । श्री वृन्दावन में जाकर कृष्णचन्द्र की भक्ति में यह ऐसे डूबे कि मुसलमानी धर्म त्यागकर माला कण्ठी धारण किए हुए वृन्दावन की रज में मिल गए । इनकी कविता निपट ललित माधुरी से भरी हुई है । इनकी कथा भक्तमाल में पढ़ने योग्य है ।

सर्वेक्षण

रसखान, दिल्ली के पठान थे, पिहानी के नहीं । इनकी भी वार्ता, २५२ वैष्णवों की वार्ता में है । इनका प्रेम निरूपण सम्बन्धी एक लघुग्रन्थ प्रेमवाटिका है । इसमें ५३ दोहे हैं । इसकी रचना सं० १६७१ में हुई, ऐसा माना जाता है ।

विधु (१) सागर (७) रस (६) इन्दु (१) सुभ बरस सरस रसखानि
प्रेम वाटिका रचि रुचिर चिर हिय हरष बखानि ५१

इस ग्रन्थ के तीन दोहे कवि के जीवन पर प्रकाश डालनेवाले हैं—

देखि गदर हित साहिबी, दिल्ली नगर मसान
छिनहिं बादसा वंस की, ठसक छोरि रसखान ४८

प्रेम निकेतन श्री वनहि, आइ गोवर्द्धन धाम
लह्यो सरन चित चाहि के, जुगल सरूप ललाम ४९

तारि माननि तें हियो, फेरि मोहनी मान
प्रेम देव की छबिहिंलखि, भए मियां रसखान ५०

बटेकृष्ण जी के अनुसार[१] सं० १६१२-१३ में साल डेढ़ साल के भीतर दिल्ली के लिए पाँच युद्ध हुए और चार-पाँच शासक बदले । इसी समय रसखानि दिल्ली छोड़ वृन्दावन आए । बटेकृष्ण जी के अनुसार प्रेमबाटिका का रचना काल सं० १६४१ है । संस्कृत में 'सागर' से चार का भी बोध होता है । बटेकृष्ण जी की बातें अधिक तर्कपूर्ण हैं, अतः मान्य हैं । ऐसी दशा में रसखानि का रचना सं० १६३१–४१ वि० है ।

---

(१) ना० प्र० पत्रिका सं० २०१२ अङ्क १, 'रसखान का समय' शीर्षक लेख ।

इनकी सबसे प्रसिद्ध रचना 'सुजान रसखान' हैं, जो इनके कवित्त-सवैयों का संग्रह है। इसमें कुल २१४ छन्द हैं। इनका एक लघुग्रन्थ दानलीला है। इसमें ११ कवित्त-सवैये हैं। इनकी रचना का श्रेष्ठतम संकलन श्री विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने 'रसखानि' नाम से सं २०१० में प्रकाशित किया है।

रसखान जी विट्ठलनाथ के शिष्य थे। इन्होंने सं० १६४२ के पहले किसी समय दीक्षा ली होगी। अतः सं० १६३० इनका उपस्थितिकाल ही सिद्ध होता है। यह जन्मकाल कदापि नहीं हैं।

७४६।६३१

(३१) रसाल कवि, अङ्गने लाल बन्दीजन विलग्रामी, सं० १८८० में उ०। इनका काव्य महा सुन्दर है। बरवै अलङ्कार इनका बनाया हुआ ग्रन्थ देखने योग्य है।

सर्वेक्षण

कवि का नाम अङ्गने राय है, अङ्गने लाल नहीं। यह विलग्राम के रहने वाले बन्दीजन थे। इनका एक ग्रन्थ बारहमास[1] खोज में मिला है। इसका रचनाकाल सं० १८८६ है।

(६ ८ ८ १)
ऋतु वसु सिधि गुरु चन्द, संवत कातिक दसमि तिथि
कृष्ण पक्ष सुख कन्द, बासर जानहु देव गुरु

अतः सरोज में दिया हुआ सं० १८८० स्पष्ट ही रचनाकाल है। इस ग्रन्थ में कवि ने एक कवित्त में अपने काव्य के सम्बन्ध में बहुत ठीक लिखा है—

छन्द औ कवित्त चारु सोरठा सु बरवै ये
जटित किए हैं लाय प्रेम के नगीना में
सुबरन सोधि उक्ति युक्ति कै नवीनी विधि
वृति अनुप्रासन को तापै कियो मीना में
रची प्रेम माल है रसाल करिबे को कण्ठ
गुनन गुही है आछी जुगति नवीना में
कृष्ण बिन राधा ठकुराइन गुसाइन को
बरनौं विरह वर बारह हीना में

विनोद (२०४०) में इस कवि का जन्मकाल सं० १८८० माना गया है और बारहमासा का रचना काल सं० १८८६ दिया गया है। ग्रियर्सन जो कहें वह भी ठीक और खोज जो कहे वह तो ठीक है ही। क्या अन्धेर खाता है।

---

(१) खोज रिपोर्ट १६१२।१५१, १६२६।१७

रसाल कवि अङ्गने राय जी सरोज में ७८६ संख्या पर वर्णित रामप्रसाद जी के बड़े पुत्र थे। उन्होंने अवध के नवाब मोहम्मद अलीशाह (शासन काल सं० १८९४-९९ वि०) के दीवान मुन्शी अयोध्या प्रसाद खत्री बिलग्रामी को अपनी चरम वृद्धावस्था में जो पत्र लिखा था, उसमें अपने बड़े पुत्र का नाम अङ्गन दिया है और छोटे पुत्र का गोकुल चन्द, जो पुत्र लेकर लखनऊ गया था—

मोहि रिसाय सुनाय कहो 'अङ्गने' जे बड़े फरजन्द हमारे
× × ×
दै अपनी अरजी पठयो हम गोकुलचन्द को पास तुम्हारे

———

७४७।६३२

(३२) रसिकदास, व्रजवासी। इनके पद रागसागरोद्भव में हैं।

सर्वेक्षण

रसिकदास के नाम पर सरोज में जो पद दिया गया है, वह किसी रसिकदास का नहीं। इसमें कवि की छाप गदाधर है—

रसिक रूप रूपरासि, गुन निधान जानराय,
गदाधर प्रभु जुवतीजन मुनि मन मानस मराल

रसिकदास नाम के कम से कम चार महात्मा कवि हुए हैं। इनमें से एक राधावल्लभी-सम्प्रदाय के थे, एक हरिदासी थे और दो वल्लभ-सम्प्रदाय के थे।

———

राधावल्लभीय रसिकदास—हित हरिवंश के राधावल्लभी सम्प्रदाय के रसिकदास वृन्दावन में रहते थे। इनका ज्ञात रचनाकाल सं० १७४३-५१ है। आप धीरे-धीरे गोस्वामी (सं० १६७०-१७६०) के शिष्य थे। प्रसार लता में गुरूका नाम आया हैं इनके निम्नलिखित ग्रन्थ खोज में मिले हैं।

दृढ़ धरि श्री धीरीधर चरणा
मङ्गल रूप अमङ्गल हरणा
राधावल्लभ सम्प्रदाय सिद्धान्त और साहित्य, पृष्ठ ५००

(१) रस कदम्ब चूड़ामनि, १९०६।२६२। रचनाकाल, अगहन वदी ६, रविवार, सं० १७५१।

संवत सत्रह सै बरस, एक अधिक पञ्चास
अगहन वदि षष्टी सु तिथि, दिनमनि मणि सु प्रकास

इस ग्रन्थ की पुष्पिका अद्‌भुत है—

"इति श्री रस दम्दब चूडामणौ श्री ब्रज नवतरुनि कदम्ब मुकुट मनि कृपा कटाक्षछटाप्रसादेन रसिकदासेन कृत विंशति तरङ्गः सम्पूर्णः"

(२) माधुर्य लता, १९१२।१५४ ए। रचनाकाल सं० १७४४—

इक सत दोहा लिखि कहत संवत्सर परकास
सत्रै सै चालीस पुनि चार और तिहिं पास १०२

इस ग्रन्थ में रचनाकालसूचक इस दोहे को छोड़कर १०१ दोहे हैं। ग्रन्थ हरिवंश के स्मरण से प्रारम्भ हुआ है—

सुमिरत श्री हरिवंश को, दम्पति दया निधान
रस विलास उत्सव विभव, करत तिहीं छिन दान १

(३) रतिरङ्ग लता, १९१२।१५४ बी। ३४ छन्दों में राधाकृष्ण की केलि का वर्णन है। रचनाकाल सं० १७४९, आषाढ़ वदी ८—

संवत सत्रह सै बरस, एक घाटि पञ्चास
कृष्ण पक्ष तिथि अष्टमी, लहु अषाढ़ सुख रासि ३४

(४) सुवा-मैनाचरित्रलता, १९१२।१५४ सी। इस ग्रन्थ में १०१ दोहे हैं। पहले दोहे में हित कुल को प्रणाम किया गया है—

श्री हित कुलहि प्रणाम करि लीला ललित विलास
करत चोज परिहास रस सखिन हेतु सुख रास १

(५) आनन्द लता,१९१२।१५४ डी। इस ग्रन्थ में कुल ५९ दोहे हैं।

(६) हुलास लता, १९१२।१५४ ई। इस ग्रन्थ में १८ कुलपैया छन्द और ८ दोहे हैं—

रसिकदास सु हुलास करि, लता हुलास प्रकास
कुलपैया लिखि अष्टदस, दोहा अष्ट विलास २४

ग्रन्थारम्भ में हरिवंश का स्मरण है—

श्री हरिवंस प्रसंस लड़ाऊँ
स्वारथ प्रेम पदारथ पाऊँ १

(७) अतन लता, १९१२।१५४ एफ। कुल २७ दोहे।

बीस सात दोहा लिखे, तुमहूं विस्वा बीस
सदा सर्वदा हीय में, मुदा बसत वन ईस २७

(८) रतन लता, १९१२।१५४ जी। कुल ४५ छन्द। प्रारम्भ में हरिवंश का स्मरण है—

श्री हरिवंश हिये में आवै
अद्भुत रत्न लता दरसावै

(९) रहस लता, १९१२।१५४ एच। कुल ४६ छन्द। प्रारम्भ में हरिवंश का स्मरण है—

धरि हिय श्री धोरी धराहि, चित्त रूप अवधारि
श्री हरिवंश कृपा करैं, उपजै भक्ति विचारि १

(१०) कौतुक लता, १९१२।१५४ आई। कुछ ९० छन्द।

(११) अद्भुत लता, १९१२।१५४ जे। प्रारम्भ में हरिवंश स्मरण। कुल ५७ छन्द।

श्री हरिवंश नाम उच्चरौ
श्री राधा आराधन करौ १

(१२) विलास लता, १९१२।१५४ के। इस ग्रन्थ में कुल ७४ छन्द हैं—

विलास लता तुक वन्द ये, साठ रुनौ निर्धार
एक कुण्डलिया सरस अति, दोहा चार विचार

ग्रन्थारम्भ में हरिवंश स्मरण है—

श्री हरिवंश चरन अनुसरिए
विविध विलास लता विस्तरिए १

(१३) तरङ्ग लता, १९१२।१५४ एल। २२ निधि सिधि नामा छन्द और ३ दोहे।

छन्द लिखे बाईस ये, दोहा तीन प्रकास
रसिकदास हित आस यह, हिय में रहौ विलास २५

ग्रन्थारम्भ में हरिवंश का स्मरण—

नित मन प्रसन्न श्री हरिवंश की
फंस सकल सेस करैं नंस की

(१४) विनोद लता, १९१२।१५४ एम। प्रारम्भ में हरिवंश स्मरण—

वलि वलि श्री हरिवंश गुसाईं
गुन निधि कुँवरि कपानिधि गाईं १

कुल ६९ छन्द।

विनोद लता कथि मोदमय, रसिकदास सुखरासि
साठ एक तुकवन्द ये, दोहा आठ प्रकास ६९

(१५) सौभाग्य लता, १९१२।१५४ एन। कुल ४८ छन्द।

दोहा पाँच रु सोरठा एक सुनो चित लाइ
इकतालीस कवित्त सब जोर सितालिस आइ ४८

(१६) सौंदर्य लता, १६१२।१५४ ओ। कुल १४३ दोहे।

इकसत दोहा महा रस, द्वै ऊपर चालीस
रसिकन की पद रज रहै, रसिकदास के सीस ४३

(१७) अभिलाष लता, १६१२।१५४ पी। कुल २८ छन्द।

तेरह कुण्डलिया रचै, अठपैया गनि लोक
रसिकदास अभिलाष लिखि, कृपा कटाछ बिलोक २८

प्रथम कुण्डलिया में हरिवंश का स्मरण व्यास सुवन के रूप में हुआ है—

"व्यास सुवन ललिता निजु, तिहिं रङ्ग रही रँगाइ'

(१८) मनोरथ लता, १६१२।१५४ क्यू। प्रारम्भ में 'श्री हित हरिवंश चन्द्रो जयति' लिखा हुआ है। इस ग्रन्थ में कुल १३५ छन्द हैं और इसमें सवैये भी हैं।

इक सत तीस रु पाँच सब, छन्द लिखे या मद्धि
प्रभु सम्बन्धी समझिहो, दोष न सुद्ध असुद्ध १३३

(१९) सुखसार लता, १६१२।१५४ आर। कुल ४० छन्द।

(२०) चारुलता, १६१२।१५४ एस। ५५ दोहे।

(२१) अष्टक, १६१२।१५४ टी। आठ त्रिभङ्गी छन्दों में हित हरिवंश की वन्दना—

भज मन हरिवंशं, अघकुल नन्शं, जगतप्रसंस, संश हरे

(२२) प्रसाद लता, १६०६।१८ ए। रचनाकाल सं० १७४३।[1]

इन २२ ग्रन्थों में से १ और २२ को छोड़, शेष २० बाबा सन्तदास, राधावल्लभ का मन्दिर वृन्दावन के पास हैं। अतः ये सब राधावल्लभीय रसिकदास के हैं, इसमें सन्देह नहीं। ये सभी ग्रन्थ चन्द्रसखी थे। शिष्य रसिकदास से भिन्न रसिकदास के हैं। राधावल्लभ-सम्प्रदाय में ५ रसिकदास हुए हैं।[2]

हरिदासी रसिकदास—यह रसिकदास हरिदास जी के टट्टी-सम्प्रदाय के वैष्णव थे। यह नरहरिदास के शिष्य थे। इनके ग्रन्थों में हरिदास और नरहरिदास का बराबर उल्लेख हुआ है। इनके निम्नलिखित ९ ग्रन्थ मिले हैं, जिनमें से प्रथम ६ टट्टी स्थान वृन्दावन के महन्त भगवानदास

(१) राधावल्लभ-सम्प्रदाय, सिद्धान्त और साहित्य, पृष्ठ ५००-५०१ (२) वही, पृष्ठ ४९९-५००

के पास से मिले हैं। सर्वेश्वर के अनुसार आपने सं० १७४१ से १७५८ वि० तक गद्दी को अलंकृत करने के अनन्तर निकुञ्ज प्रविष्ट हुए।[1] 'हरिदास वंशानुचरित्र' के अनुसार इनका जन्मकाल माघ शुक्ल५, सं० १७४१ है।[2] निश्चय ही यह अशुद्ध है। यह इनका गद्दीधर होने का समय है। इनका जन्म सं० १७०० के आस-पास किसी समय हुआ होगा, ऐसा अनुमान किया जा सकता है। उक्त ग्रन्थ के अनुसार इनकी मृत्यु सं० १९९८ में श्रावण कृष्ण १० को हुई।[3] निश्चय ही यह छापे की भूल है।

(१) भक्ति सिद्धान्त मणि, १९१२।१५४ यू।

श्री नरहरिदास चरन सिर नाइ
भक्ति भेद कछु कहूं बनाइ

(२) रस सार, १९१२।१५४ वी।

श्री हरिदासी नरहरिदास
स्यामा स्याम रहे मन भासि
तिनकी कृपा रस सार बखानों
तिहि छवि अमित उदार बखानों

(३) कुञ्ज कौतुक, १९१२।१५४ डबलू।

"श्री नरहरिदास पग बन्दि, प्रिया की कृपा मनाऊं"

(४) ध्यान लीला, १९१२।१५४ एक्स।

जै जै श्री हरिदास परम गुरु बड़े दयाकर
प्रगट करी रस रीति मुदित ज्यों उदति दिवाकर १
श्री नरहरि दास युग बँदि भजन उच्चार करों जब
प्रथम करो गुरु ध्यान जुगल को ध्यान कहौं तब २

(५) वाराह संहिता, १९१२।१५४ वाई। यह संस्कृत वाराहसंहिता का पद्यमय अनुवाद है।

श्री नरहरिदास चरन चित लाउँ
श्री राधा कृष्ण सुमिरि मन ध्याऊँ

(६) अष्टक १९१२।१५४ जेड। ईश्वरी-वन्दना।

---

(१) सर्वेश्वर, वर्ष ५,अङ्क १-५, चैत्र सं० २०१३, पृष्ठ २४४-४५ (२) हरिदास वंशानुचरित्र, पृष्ठ ८० (३) वही, पृष्ठ ८०

(७) पूजा विलास, १६०६।२१८ डी, १६१७।१६० वी ।

श्री नरहरि दास चरन उर धरौं
भक्ति भाय कछु बरनन करौं

× × ×

रसिकदास सरनागत ह्वै रह्यो
श्री नरहरि दास कृपा जस कह्यों

(८) रसिकदास जी के पद, १६२३।३५७ बी । यह २८ पन्नों का ग्रन्थ है, जिसके अन्त में 'ध्यान लीला' भी सङ्कलित है । अतः यह इन्हीं की रचना है । १६३२।१८६ बी पर भी एक रसिकदास के पद ग्रन्थ का विवरण है । इसके अन्त में रस सार संलग्न है, अतः यह भी इन्हीं की रचना है ।

(६) गिरिराज वर्णन, १६३२।१८५ ए ।

श्री हरिदास वर्य की महिमा को नाहिन कोउ पावत अन्त
सेस विधी सिव सनकादिक मुनिचाहत पद रज श्री भगवन्त
हों अति दीन मलीन हीन मति पाजी महा अघ ही की खान
ऐसे रसिकदास को दृढ़कर, चर्ण सर्ण राखो गहि पान

रसिकदास गो० हरिराय जी—गोस्वामी हरिराय जी महाप्रभु वल्लभाचार्य के वंशज हैं और वल्लभ-सम्प्रदाय के आचार्यों में से हैं । यह भी अपनी छाप रसिकदास, रसिक प्रीतम, रसिक शिरोमणि और रसिकराय रखा करते थे । इनके दो ग्रन्थ मिले हैं—

(१) रसिक सागर, १६३५।८५ ए—

"रसिकदास जन टेर कहत है श्री वल्लभ चरनन टेरो"

(२) चात्रक लगन, १६३५।८५ बी ।

गिरि कानन गोकुल भवन, श्री वल्लभकुल देव
आन नहीं सुपनो सखी, यह मन निश्चै टेव

रसिकदास गोपिकालङ्कारजी महाराज—यह वल्लभ-सम्प्रदाय के गोस्वामी द्वारिकेश जी के गोपिका भट्ट के नाम से भी पुत्र थे । यह ख्यात हैं । इनके रचे दो ग्रन्थ मिले हैं—

(१) कीर्तन संग्रह, १९४४।३२८ क; (२) कीर्तन समूह १९४४। ३२८ ख।

रसिक दास के नाम पर दो ग्रन्थ अभी और हैं जिनके सम्बन्ध में निर्णय करने का कोई सूत्र नहीं मिला कि ये किस रसिकदास की कृति हैं—(१) एकादशी माहात्म्य, १९०६।२१८ ई; (२) कृष्ण जन्मोत्सव, १९४१।२१८।

सभा के अप्रकाशित संक्षिप्त विवरण में ये पैंतीसों ग्रन्थ एक व्यक्ति के माने गए हैं। व्यक्ति-परिचय देते समय राधावल्लभी और हरिदासी रसिकदासों को एक में मिला दिया गया है। विनोद (३७३) में भी यह घालमेल है।

७४८।६३३

(३३) रसिया कवि, नजीब खाँ, सभासद् महाराजा पटियाला। वि०। इनके कवित्त सुन्दरी तिलक में हैं।

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध में कोई अन्य सूचना सुलभ नहीं।

७४९।६३८

(३४) रसिक शिरोमणि कवि, सं० १७१५ में उ०। इनके कवित्त हजारे में हैं।

सर्वेक्षण

महाप्रभु वल्लभाचार्य के वंशज श्री हरिराय जी रसिकदास, रसिक प्रीतम, रसिक शिरोमणि, रसिक राय आदि छाप रखा करते थे।[१] इनका जन्म सं० १६४७, भाद्रपद वदी ५ को हुआ था।[२] यह सं० १७१५ में जीवित थे। इनका देहावसान सं १७७२ में हुआ। हजारे में इनकी रचना रही होगी। सरोज में रसिक शिरोमणि के नाम पर एक कवित्त कुब्जा प्रसङ्ग का है और भक्ति-भावना के प्रतिकूल नहीं है।

---

(१) राधावल्लभ सम्प्रदायः सिद्धान्त और साहित्य, पृष्ठ ५३८ (२) अष्टछाप, पृष्ठ १४ के पश्चात् हरि राय जी के चित्र के नीचे।

७५०।६४१

(३५) रसरास कवि, सं० १७१५ में उ० । इनके शृङ्गार के सुन्दर कवित्त हैं ।

सर्वेक्षण

कवि का वास्तविक नाम रामनारायण है—रसरास उपनाम है । यह ब्राह्मण थे और रामानुज सम्प्रदाय के वेष्णव थे । यह जयपुर के रहनेवाले थे तथा जयपुर नरेशमहाराज प्रताप सिंह के दीवान जीवराज सिन्धी के आश्रित थे । इन्होंने सं० १८२७ में कवित्त रत्नमालिका नामक[1] एक काव्यसंग्रह प्रस्तुत किया था । इसमें ईश्वर भक्ति सम्बन्धी ९०९ कवित्त हैं । इनमें से १०८ कवित्त तो स्वयं रसरास जी के हैं और शेष ८०१ अन्य पूर्ववर्त्ती या समकालीन कवियों के । एक आशीर्वादात्मक कवित्त से रसरास जी के सम्बन्ध में कुछ सूचना मिलती है—

जैपुर सहर सदा सुख सों सुबस बसो
सवाई प्रताप सिंह राज करिबो करो
जसधारी जीवराज सङ्ग ही दिवान सदा
याही भाँति किए जैसे काज करिबो करो
देखो सुख संपति कलत्र पुत्र मित्रन के
विप्रन के भोजन समाज करिबो करो
सनमुख रहो सदा साँवरो नृपति याके
द्वार पै गयन्द ठाढ़े गाज करिबो करो ९०९

रसरास जी का एक लघुग्रन्थ रसिक पचीसी[2] और मिला है । इसका एक अन्य नाम 'रसरास पचीसी' भी है । इनमें २६ कवित्त हैं और इसका विषय गोपी-प्रेम है । रचना सरस एवं सुन्दर है ।

रसिक सभा में रस रङ्ग वरसायबे कौं
रसिक पचीसी रसरासिह बनाई है ।। २६ ।।

पुष्पिका से इनका जयपुर नरेश सबाई प्रताप सिंह का आश्रित होना सिद्ध है—

"इति श्रीमन्महाराजाधिराज राजराजेन्द्र सबाई प्रताप सिंह जी देवाज्ञप्त रसरासि विरचितायां रसिक पचीसी सम्पूर्णम् ।

कवि का रचनाकाल सं० १८२७ है, अतः सरोज में दिया सं० १७१५ अशुद्ध है ।

---

(१) खोज रिपोर्ट १९०१।९३, (२) राज० रिपोर्ट भाग १, खोज रिपोर्ट १९४४।३२३ ।

७५१।६४२

(३६) रामरूप कवि। ऐजन। इनके शृङ्गार के सुन्दर कवित्त हैं।

सर्वेक्षण

सरोज के प्रथम तीन संस्करणों में इस संख्या पर रसरूप कवि हैं, न कि रामरूप। साथ ही इस कवि के आगे पीछे वर्णित अन्य कवियों के नाम भी रस से ही प्रारम्भ होते हैं। फिर बीच में रामरूप का आ जाना सरोजकार की पद्धति के प्रतिकूल है। यह कृत्य जान या अनजान में सरोज के संशोधक से हुई है। रामरूप की कविता का पृष्ठ निर्देश २९० है, पर इस पृष्ठ पर किसी रामरूप की कविता नहीं है, रसरूप की है। रसरूप का विवरण आगे संख्या ७९२ पर देखिए। यह कवि दो बार आ गया है।

७५२।६५१

(३६) रसरङ्ग कवि लखनऊवाले, सं० १९०१ में उ०। ऐजन। इनके शृङ्गार के सुन्दर कवित्त हैं।

सर्वेक्षण

विनोद में रसरङ्ग का विवरण १७९६ और २२७६ संख्याओं पर दो बार दिया गया है। १७९६ पर इन्हें सं० १९०० के आस-पास उपस्थित माना है। २२७६ पर १९०१ को जन्मकाल माना गया है। यह ठीक नहीं। २२७६ पर हनुमन्तजसतरङ्गिनी और सीतारामनखशिख नामक दो ग्रन्थों का उल्लेख प्र० त्रै० रि० के आधार पर हुआ है।

७५३।६६२

(३८) रसिकलाल कवि बाँदावाले, सं० १८८० में उ०। ऐजन। इनके शृङ्गार के सुन्दर कवित्त है।

सर्वेक्षण

रसिकलाल कवि बाँदावाले का कोई विवरण अन्यत्र सुलभ नहीं। इनके पूर्ववर्ती रसिकलाल अवश्य मिले हैं। यह गो० दामोदर हित के शिष्य एवं वृन्दावन निवासी थे। सं० १७२४ में इन्होंने भाषा करुणाकन्द[1] नामक ग्रन्थ लिखा था।

---

(१) खोज रिपोर्ट १९४४।३१८

७५४।६६३

(३६) रसपुञ्ज दास दादूपन्थी। इनके प्रस्तार प्रभाकर, वृत्त विनोद, ये दोनों ग्रन्थ पिङ्गल में बहुत उत्तम हैं।

सर्वेक्षण

रसपुञ्जदास रचित तीन ग्रन्थ खोज में मिले हैं—

(१) कवित्त श्री माता जी रां, १६०२।८१। यह दुर्गा-स्तुति सम्बन्धी ग्रन्थ है।

(२) चमत्कार चन्द्रोदय, राज० रि० भाग १, संख्या ३७। यह ५ पन्ने का लघुग्रन्थ है, और दो कलाओं में विभक्त है। पहली कला में रस और दूसरी में अलङ्कार निरूपण है।

(३) प्रस्तार प्रभाकर, राज० रि० भाग २, पृष्ठ ११। इस ग्रन्थ में रचनाकाल सूचक दोहा दिया हुआ है।

संमत ससि (१) मुनि (७) वसु (८) मही (१), चैत्र कृष्ण पछ सार
पंचमी गुरु पूरण भयो, प्रभाकर सु प्रस्तार

रसपुञ्जदास मारवाड़ नरेश अभय सिंह (शासनकाल सं० १७८१–१८०५) के समकालीन कहे गए हैं।[1] इस बात को ध्यान में रखते हुए मानना पड़ेगा कि उक्त दोहे में अङ्कानाम् वामतो गतिः का अनुसरण नहीं किया गया है और प्रस्तार प्रभाकर का रचनाकाल सं० १७८१ है।

वृत्त विनोद का उल्लेख सरोज में हुआ है; पर यह ग्रन्थ अभी तक खोज में नहीं मिल पाया है।

यह सेवक जाति के थे।[2] गोसाईं रसपुञ्जदास का सम्बन्ध जयपुर नरेश महाराज प्रताप सिंह (शासनकाल सं० १८३५-६० वि०) के दरबार से भी था और यह रेखता लिखने में परम प्रवीण थे।[3]

७५५।६६४

(४०) रसलीन कवि, सय्यद गुलाम नबी विलग्रामी, सं० १७९८ में उ०। यह कवि अरबी-फ़ारसी के आलिम-फ़ाज़िल और भाषा कविता में बड़े निपुण थे। रस प्रवोध नामक अलङ्कार ग्रन्थ इनका बनाया हुआ बहुत प्रामाणिक है। इनके पुस्तकालय में पाँच सौ जिल्दें भाषाकाव्य की हैं।

(१) खोज रिपोर्ट १६०२।८१ (२) वही (३) **व्रजनिधि ग्रन्थावली, प्रस्तावना, पृष्ठ** १७; १८, १६, ४६

सर्वेक्षण

सैय्यद गुलाम नवी विलग्राम के रहनेवाले थे और रसलीन नाम से कविता करते थे। इनके बनाए हुए दो ग्रन्थ खोज में मिले हैं—

(१) अङ्गदर्पण या शिखनख रसलीन, १९०५।१५, १९२३।१४० स। यह ग्रन्थ दोहों में हैं और यह सं० १७९४ में रचा गया। इसमें १७७ दोहे हैं।

सत्रह सै चौरानबे, संवत में अभिराम
यह सिखनख पूरन करी, लै सुख प्रभु को नाम

(२) रस प्रवोध, १९०५।१६, १९०६।१६६,१९२३।१४० बी, सी। दोहों में रसवर्णन करनेवाले इस ग्रन्थ की रचना सं० १७९८ में हुई।

सत्रह सै अठानबे, मधु सुदि छठ बुधवार
बिलगराम में आइ के, भयो ग्रन्थ अवतार

इस ग्रन्थ की रचना ११५४ हिजरी में हुई और इसमें ११५४ ही दोहे भी हैं।

ग्यारह सै चौवन सकल हिजरी संवत पाइ
सब ग्यारह सै चौवनै दोहा राखे ल्याइ

यह रस-ग्रन्थ है, अलङ्कार ग्रन्थ नहीं, जैसा कि सरोज में कहा गया है। रचनाकाल सूचक दोहा सरोज में भी उद्धृत है अतः सरोजकार ने जान-बूझकर कवि का रचनाकाल दिया है। यही निष्कर्ष ठीक है।

हिन्दी के प्रसिद्ध कवि मीर अब्दुल जलील, रसलीन के चचेरे मामा थे। इन्होंने रसलीन के जन्मकाल के सम्बन्ध में यह फारसी छन्द लिखा है—

नूर चश्मे मीर वाकर गुफ़्तवामन
चूं गुले खुरशीद दर आलम दमीदन
साल तारीखे तवल्लुद खुद वगफ़तम
नूर चश्मे बाकरे अब्दुल हमीदम

मीर वाकर के पुत्र ने मुझसे कहा कि मैं संसार में सूर्यमुखी फूल के समान खिला हूँ और अपने जन्म की तारीख मैंने खुद कही है, जो यह है—

"नूर चश्मे बाकरे अब्दुल हमीदम"

इस वाक्य को फ़ारसी लिपि में लिखने पर प्रयुक्त होनेवाले वर्णों के अङ्कों का जोड़ ११११ आता है। रसलीन का जन्म ११११ हिजरी में २ मोहर्रम को,तदनुसार २० जून १६९९ ई० अर्थात् सं० १७५६ के ज्येष्ठ महीने में हुआ था।

रसलीन के विद्यागुरु मीर तुफ़ैल मोहम्मद बिलग्रामी थे। यह मूलतः अतरौली, जिला आगरा के रहनेवाले थे पर १५ वर्ष की ही वय में बिलग्राम आकर बस गए थे। यह हिन्दी, फ़ारसी, और अरबी के विकट विद्वान थे। रसलीन ने इनकी प्रशंसा में निम्नलिखित सवैया कहा है—

देस विदेसन के सब पण्डित सेवत हैं पग शिष्य कहाई
आयो है ज्ञान सिखावन को सुर को गुरु मानुस रूप बनाई
बालक वृद्ध सुबुद्धि जहाँ लगि बोलत हैं यह बात बनाई
को मन मेल कहै सुभ केल तुफैल तुफैल मोहम्मद पाई

रसलीन शिया-सम्प्रदाय के मुसलमान थे। इनमें धार्मिक उदारता और सहिष्णुता थी। इनका पर्याप्त समय शाहजहानाबाद अर्थात् दिल्ली और इलाहाबाद में बीता था। यह दिल्ली-सम्राट् के प्रधानमन्त्री नवाब सफ़दर जङ्ग के अभिन्न मित्रों में थे। इनकी मृत्यु रामचेतौनी के युद्ध में १३ सितम्बर १७५० ई०, सं० १८०७ को हुई। १७४९ ई० में फर्रूखाबाद के दूसरे नवाब कायम खाँ, रुहेलों के द्वारा युद्ध में मारे गए और इनका राज्य दिल्ली सम्राट् ने हड़प लिया। कायम खाँ के द्वितीय पुत्र अहमद खाँ ने सेना एकत्र कर दिल्ली सम्राट् की सेना से युद्ध किया था। इसी युद्ध में रसलीन दिल्ली सम्राट् की सेना में थे और मारे गए थे। रामचेतौनी, डण्डवार गञ्ज रेलवे स्टेशन के पास एक तीर्थ-स्थान है और यह एटा से १८ मील उत्तर है।

रसलीन के मित्र मीर गुलाम अली आज़ाद ने सर्वे आज़ाद में इनकी मृत्यु-तिथि पर यह छन्द कहा है—

बहोदे जमाँ सैयदे खुश सख़ुन
ज फ़िर्दोस मी जदाज जाने नबी
कलम गर य सर कदाँ तारीख़ ओ
रक़म कर्द हय-हय गुलामें नबी

अपने समय के सैयदों में जो अद्वितीय सुकवि था, उसने स्वर्ग में नबी के पान-पात्र से मदिरा का पान किया और रोती हुई लेखनी से उनकी मृत्यु की यह तारीख लिखी है—'हय-हय गुलामे नबी।' 'हय-हय गुलामे नबी' से सन् ११६३ हिजरी निकलता है।

रसलीन ने रसप्रबोध और अङ्गदर्पण के अतिरिक्त ९८ फुटकर कवित्त-सवैये भी लिखे हैं, जो एक क्रम-विशेष में आबद्ध हैं।

श्री गोपालचन्द्र सिनहा ने रसलीन पर एक सुन्दर और प्रामाणिक लेख लिखा है।[1] उसी के आधार पर यह सारी सामग्री दी गई है।

७५६।६६५

(४१) रसलाल कवि बुन्देलखण्डी, सं० १७९३ में उ०। इनके शृङ्गार के सुन्दर कवित्त हैं।

सर्वेक्षण

विनोद (६२१) और बुन्देल वैभव[2] में रसलाल का जन्मकाल सं० १७३३ और रचनाकाल सं० १७६० दिया गया है। सूत्र का कोई निर्देश नहीं है।

७५७।६२५

(४२) रसनायक, तालिब अली बिलग्रामी, सं० १८०३ में उ०। इनके शृङ्गार में अच्छे कवित्त हैं।

सर्वेक्षण

पण्डित मयाशंकर याज्ञिक ने लिखा है कि रसनायक ने सं० १८७२ में भ्रमरगीत के आधार पर विरह-विलास नामक ग्रन्थ रचा। इस ग्रन्थ की विशेषता यह है कि इसमें एक दोहा एक कवित्त, फिर एक दोहा एक कवित्त, यह छन्द-क्रम है। पहले दोहे में संक्षेप में भाव दे दिया गया है, फिर कवित्त में उसे पल्लवित किया गया है।[3] कुछ कहा नहीं जा सकता कि यह रसनायक, भरतपुरी तालिब अली बिलग्रामी रसनायक से भिन्न हैं अथवा अभिन्न। यदि अभिन्न हैं तो सरोज में दिया सं १८०३ ठीक नहीं है।

७५८।६१५

(४३) ऋषि जू कवि, सं० १८७२ में उ०। इनके शृङ्गार के अच्छे कवित्त हैं।

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध में कोइ सूचना सुलभ नहीं।

---

(१) सम्पूर्णानन्द अभिनन्दन ग्रन्थ, पृष्ठ १२४-३८। (२) बुन्देल वैभव, भाग, २ पृष्ठ ३८५

(३) माधुरी, फरवरी १९२७, पृष्ठ ८२

७५९।६१९

(४४) ऋषिराम मिश्र पट्टी वाले, सं० १९०१ में उ०। इन्होंने वंशीकल्पलता नामक ग्रन्थ बनाया है। यह कवि महाराज बालकृष्ण शाह अवध के दीवान के यहाँ थे।

सर्वेक्षण

बालकृष्ण जी अवध के नवाब आसफुद्दौला के दीवान थे। आसफुद्दौला का शासनकाल सं० १८३२-५४ है। यही समय इनके दीवान बालकृष्ण और बालकृष्ण के आश्रित कवि ऋषिराम पट्टीवाले का होना चाहिए। इस दृष्टि से सरोज में दिया हुआ इनका समय सं० १९०१ ठीक नहीं है, यद्यपि इस समय तक ऋषिराम जी का जीवित रह जाना असम्भव नहीं।

सरोज में वंशीकल्पलता से उद्धरण दिया गया है। प्रतीत होता है कि यह ग्रन्थ सरोज-कार के पास था।

७६०।६२०

(४५) ऋषिनाथ कवि। इनके शृङ्गार के सुन्दर कवित्त हैं।

सर्वेक्षण

ऋषिनाथ जी असनी, जिला फतहपुर के रहनेवाले ब्रह्मभट्ट थे। यह काशिराज के दीवान दीहाराम के भानजे सदानन्द कायस्थ, (उत्तरप्रदेश के मुख्यमन्त्री माननीय सम्पूर्णानन्द जी के पूर्वज) दीहाराम के पुत्र रघुबरदयाल तथा काशिराज के भाई बाबू देवकीनन्दन सिंह के आश्रित थे। इनका बनाया हुआ अलङ्कारमणिमञ्जरी[1] नामक ग्रन्थ खोज में मिला है।

वर्तमान काशी राज्य के संस्थापक महाराज वरिबण्ड सिंह उपनाम वलवन्त सिंह के दीवान दीहाराम थे। इनके पुत्र रघुबर और इनकी बहन के पुत्र सदानन्द के कथनानुसार ऋषिनाथ ने अलङ्कारमणिमञ्जरी की रचना की थी।

तासु तनय प्रगट्यो धरा दीहाराम उदंड
तिन देवान कीन्हों तिन्हैं कासिराज बरिबण्ड
पुण्य बीज महि में भए दीहाराम देवान
ताके फल विधि ने दए जानत सकल जहान
भो अनुजा सुत, सुत सरिस, सदानन्द कुलचन्द
बहुरो दीहाराम सुव रघुबर बखत बिलन्द

× × ×

---

(१) खोज रिपोर्ट १९२०।१६६

सदानन्द रघुबर कृपा करि राख्यो निज साथ
जस नीको नित करत है असनी को ऋषिनाथ
सदानन्द रघुबर हमें आयसु आछो दीन
रच्यो जथामति सों सुनी मैं यह ग्रन्थ नवीन

ग्रन्थ का रचनाकाल सं १८३०, वसन्त पञ्चमी, सोमवार है।

संवत नभ सङ्कुरनयन सिद्धि बहुरि निसिकन्त
वार सोम, सुभ माघ सुदि तिथि पञ्चमी वसंत

ऋषिनाथ के पुत्र ठाकुर, ठाकुर के धनीराम और धनीराम के पुत्र सेवक हुए हैं। ये सभी सुकवि थे। ठाकुर और धनीराम देवकीनन्दन सिंह के यहाँ थे। सेवक भारतेन्दुयुग के सुप्रसिद्ध कवि हैं।

७६१।६२१

(४६) रविनाथ कवि, बुन्देलखण्डी सं० १७९१ में उ०। ऐजन। इनके शृंगार के सुन्दर कवित्त हैं।

सर्वेक्षण

यद्यपि ग्रियर्सन (४२५) और विनोद (९२१) में सरोज-दत्त सं० १७९१ जन्मकाल स्वीकृत है, पर बुन्देल वैभव[1] में इस कवि का जन्मकाल सं० १७६० एवं कविताकाल सं० १७९० दिया गया है यद्यपि बुन्देल वैभव वाली बात ही ठीक है।

७६२।६२२

(४७) रविदत्त कवि, सं० १७४२ में उ०। इनके कवित्त, बलदेव कृत संग्रह में हैं।

सर्वेक्षण

रविदत्त, सविता दत्त का उपनाम है। दो नामों से इस कवि का वर्णन सरोज में दो बार हो गया है। ग्रियर्सन (३०४) में दोनों का अभेद स्वीकृत है। सरोज के ही समान विनोद (६४०, ९६४) में भी भेद बना हुआ है। विस्तृत विवरण संख्या ९०३ पर सविता दत्त के प्रसङ्ग में देखिए।

७६३।६२३

(४८) रतनेश कवि बन्दीजन बुन्देलखण्डी, प्रताप कवि के पिता, सं० १७९८ में उ०। इन्होंने श्रृंगार के अद्भुत कवित्त बनाए हैं।

(१) बुन्देल वैभव, भाग २, पृष्ठ ४२५

सर्वेक्षण

प्रताप कवि, चरखारी नरेश विक्रम साहि के दरबार में थे और इनका रचनाकाल सं० १८८०–१९०० है।[1] इनके पिता का रचनाकाल सं० १८५०–८० के आस-पास होना चाहिए । सरोज में दिया इनका सं० १७८८ अशुद्ध है। ग्रियर्सन (१९९) और विनोद (२६७) इन दोनों परवर्ती ग्रन्थों में भी रतनेश का समय ठीक नहीं है।

रतनेश का एक ग्रन्थ कान्ताभूषण[2] मिला है। इसमें कान्ता या नायिका और भूषण या अलङ्कार का कथन साथ-साथ हुआ है।

गनपति सुमति कृपाल ह्वै सुमति देहु मम अङ्ग
करौं नायिका नेह सों भूषन जुत इक सङ्ग

इस ग्रन्थ में १२७ छन्द हैं। सम्भवतः सभी दोहे हैं। ग्रन्थ केवल १० पन्नों का है। पुष्पिका में कवि नाम आया है। प्राप्त प्रति का लिपिकाल सं० १८७१ है, जो रचनाकाल से बहुत दूर नहीं है।

७६४।६२४

(४९) रत्न कुँवरि, बाबू शिवप्रसाद सितारे हिन्द की प्रपितामही, बनारसी, सं० १८०८ में० उ०। प्रेमरत्न नामक इनका ग्रन्थ श्रीकृष्ण भक्तों की जीवन मूरि है।

सर्वेक्षण

रत्न कुँवरि जी राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द की पितामही थीं, प्रपितामही नहीं। इन्होंने प्रेमरत्न नामक ग्रन्थ रचा था। यह दोहा-चौपाइयों में है। इसमें कुरुक्षेत्र में गोपी-कृष्ण पुर्नमिलन वर्णित है। ग्रन्थ नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ से प्रकाशित हो चुका है। प्रकाशन की व्यवस्था स्वयं राजा शिवप्रसाद ने की थी। राजा साहब की लिखी एक भूमिका भी आदि में जुड़ी हुई है। इस भूमिका में राजा साहब अपनी दादी के सम्बन्ध में यह कहते हैं—

"सत्तर बरस की अवस्था में भी बाल काले और आँखों की ज्योति बालकों की सी थी। वह हमारी दादी थीं, इससे हमको अब उनकी अधिक प्रशंसा लिखने में लाज आती है, परन्तु जो साधुसन्त और पण्डित लोग उस समय के उनके जानने वाले काशी में वर्तमान हैं, वह उनके गुणों को अद्यावधि स्मरण करते हैं।"

१८८७ ई० में ग्रियर्सन ने राजा शिवप्रसाद से इनकी इन दादी के सम्बन्ध में कुछ पूछताछ की थी। उत्तर में राजा साहब ने कुछ लिखा था, ग्रियर्सन ने उसे अपने ग्रन्थ में संख्या ३७९ पर ज्यों का त्यों उद्धृत कर दिया है। आवश्यक अंश का हिन्दी अनुवाद यह है—

---

(१) बुन्देल वैभव, कवि संख्या ४४८ (२) खोज रिपोर्ट १९२०।१९५

"मेरी दादी रतन कुँवरि करीब ४५ बरस पहले मरीं, जब मैं १९ वर्ष का ही था और स्वर्गीय महाराज भरतपुर के वकील की हैसियत से गवर्नर जनरल के अजमेर स्थित एजेंट कर्नल सदरलैंड की कचहरी में था। जब उन्होंने यह दुनिया छोड़ी, उनकी अवस्था ६० और ७० के बीच थी। मुझे दुख है कि मैं आपको ठीक-ठीक तिथियाँ नहीं दे सकता। प्रेमरत्न के अतिरिक्त उन्होंने अनेक पद भी रचे थे। मेरे पास एक हस्तलिखित ग्रन्थ पद की पोथी है, जिसमें उन्होंने यत्र-तत्र अपने ही हाथों अपने पद लिखे हैं।"

राजा शिवप्रसाद का जन्म सं० १८८० में हुआ था। अतः इनकी दादी की मृत्यु सं० १८९९ में हुई। उस समय इनकी वय ६०–७० वर्ष की थी, अतः इनका जन्म सं० १८३०–४० के बीच किसी समय हुआ रहा होगा। ऐसी स्थिति में सरोज में दिया समय सं० १८०८ अशुद्ध सिद्ध होता है। पर प्रेमरत्न का रचनाकाल सं० १८४४ है, अतः इनका जन्म काल सं० १८३० के कुछ पहले ही होना चाहिए।

> ठारह सै चालीस, चतुर वर्ष जब विदित भय
> विक्रम नृप अवनीस, भए, भयो यह ग्रन्थ तब
> माह माइ के माह, अति सुभ दिन सित पंचमी
> गायो परम उछाह, मङ्गल मङ्गलवार वर

प्रेमरत्न की रचना काशी में हुई—

> काशी नाम सुठाम, धाम सदा शिव को सुखद
> तीरथ परम ललाम, सुभग मुक्ति वरदान छम
> ता पावन पुर माहि, भयो जन्म या ग्रन्थ को
> महिमा बरनि न जाइ, सगुण रूप यश रस भर्‌यो

कथा का परिचय और कवि का नाम अन्तिम छन्द में आया है—

> कुरुक्षेत्र सुभ थान, ब्रजवासी हरि को मिलन
> लीला रस की खान, प्रेम रतन गायो रतन

इस ग्रन्थ की छन्द संख्या इस सोरठे में दी गई है।

> कह्यो ग्रन्थ अनुमान त्रय, शत अरसठ चौपई
> तिहि अर्द्ध रु अठ जान, दोहा, सोरह सोरठा

ग्रन्थ की अनेक प्रतियाँ खोज में मिली हैं। कुछ खोज रिपोर्ट में इसे रत्नदास बनारसी की कृति कहा गया है। १९०९।२६७, १९२३।३५९, १९२९।२९७ए बी, १९४१।२१३ इन चार खोज-रिपोर्टों में इस ग्रन्थ का विवरण है। १९०९ वाली रिपोर्ट में कोई निर्णय नहीं दिया गया है कि

यह किस रतन की रचना है। ग्रन्थ की पुष्पिका में किसी का नाम नहीं दिया गया है। १९२३ वाली प्रति की पुष्पिका में इसे कवि रतनदास-कृत कहा गया है। इसी के आधार पर रिपोर्ट में यह रत्नदास की कृति स्वीकृत है और लिखा गया है कि राजा शिवप्रसाद ने इस ग्रन्थ का कुछ अंश अपनी दादी के नाम से गुटका में दिया है, यह राजा साहब की भूल प्रतीत होती है। क्या यह उक्त प्रतिलिपिकर्ता की भूल नहीं हैं, जिसने ग्रन्थ में रतन देखा और रतनदास की कल्पना कर ली। पुनः १९२९ वाली रिपोर्ट में प्रेम रतन के रचयिता रतनदास माने गए हैं। इस वर्ष इस ग्रन्थ की दो प्रतियाँ मिली हैं। एक की पुष्पिका में कर्ता का उल्लेख नहीं है, दूसरी प्रति की पुष्पिका यह है—

"इति श्री प्रेम रतन बीबी रतन कुँवरि कृत सम्पूर्ण समाप्तः लिखतं चेतनदास स्वपठनार्थ काशीवाशी सम्वत् १९०७ वि०।"

क्या यह पुष्पिका पर्याप्त प्रमाण नहीं है कि यह ग्रन्थ रतन कुँवरि का लिखा हुआ है, रतनदास का नहीं। ग्रन्थ रचना के समय कवयित्री की वय अधिक नहीं थीं, अतः वह लिखती है—

जो जन होहु सुजान लीजो चूक सुधारि धरि
बालक अति अज्ञान, हौं अजान जानत न कछु
अति जड़ बड़ि मति मंद, नहि कवि, नहिं बुध, चतुर कछु
मोको गमहु न छन्द, यह गायो गुरु कपा ते

यहाँ बालक शब्द से पकड़ नही की जा सकती कि यह तो किसी पुरुष की रचना है, बालक में बालिका अन्तर्भूक्त है। साथ ही 'बड़ि मति मंद' में बड़ि स्त्रीलिङ्ग विशेषण ध्यान देने योग्य है।

खोज रिपोर्ट से यह रचना जहाँ एक ओर किसी रतनदास की सिद्ध होती है, वहीं दूसरी ओर रतन कुँवरि की भी सिद्ध होती है। ऐसी दशा में सरोज और राजा शिवप्रसाद की साक्षी पर यह रचना बीबी रतन कुँवरि की ही स्वीकृत की जा रही है।

———

७६५।६४६

(५०) रतन कवि १ ब्राह्मण बनारसी, सं० १९०५ में उ०। इन्होंने प्रेमरत्न नामक ग्रन्थ बनाया।

सर्वेक्षण

यह रतनकवि भ्रम से उत्पन्न हो गए हैं। वस्तुतः इनका कोई अस्तित्व नहीं। महेशदत्त ने राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द की दादी बीबी रतन कुँवरि कृत प्रेमरतन में कवि छाप रतन देखा, ग्रन्थ में काशी भी पाया, और वास्तविक रचयिता से अनभिज्ञ होने के कारण एक काशीवासी रत्न कवि की कल्पना कर ली। ग्रन्थ में यद्यपि रचनाकाल सं० १८४४ दिया हुआ है, फिर भी

महेश दत्त जी ने इसका रचनाकाल सं० १८०५ दिया है।[1] इस ग्रन्थ से कुछ अंश भाषाकाव्य-संग्रह में सङ्कलित भी किया है। सरोजकार ने इस कवि का सारा विवरण और उद्धरण महेश दत्त के उक्त भाषाकाव्यसंग्रह से लिया है। फिर भी न जाने कैसे सं० १८०५ को १९०५ में बदल दिया है। भाषाकाव्यसंग्रह से उद्धृत सरोज में उदाहृत इस कवि की निम्नलिखित कविताएँ हैं।

यह वृन्दावन सुख सदन, कुञ्ज कदम के छाँहि
कनकमई यह द्वारका, ताको रज सम नाँहि १
नृपति सभा सिंहासन, जिहि लखि लजत अनङ्ग
नहिं बिसरत वह सखन को गाय चरावन सङ्ग २
राज साज साजे सकल तिमि नहिं नेकु सुहाँहि
गुञ्ज माल बन चित्र जिमि मोर मुकुट मधि माँहि ३

ये तीनों दोहे नवलकिशोर प्रेस लखनऊ से प्रकाशित बीबी रतनकुँवरि कृत प्रेमरत्न के प्रारम्भ ही में पृष्ठ ४ पर हैं। महेशदत्त का भ्रम ठीक वैसा ही है, जैसा कि १९२३ वाली प्रति के लिपिकर्ता का। विनोद (८१३।२, २३७८) में भी यह भ्रान्ति बनी हुई है।

———

७६६।६५२

(५१) रतन कवि २ श्रीनगर बुन्देलखण्ड वासी, सं० १७३८ में उ०। यह कवि राजा फ़तेशाह बुन्देला श्रीनगर के यहाँ थे। उन्हीं के नाम से फ़तेशाह भूषण और फ़ते प्रकाश, ये दो ग्रन्थ भाषा-साहित्य के बहुत सुन्दर बनाए हैं।

सर्वेक्षण

रतन कवि श्रीनगर नरेश फतह शाह के यहाँ थे। गढ़वाल गजेटियर के अनुसार यह फ़तह-शाह श्रीनगर गढ़वाल की गद्दी पर सं० १७४१ से १७७३ तक रहे। शिव सिंह के पुस्तकालय में फ़तह प्रकाश वर्तमान है। इस ग्रन्थ के प्रथम उद्योत की समाप्ति पर यह लेखांश है—

'श्रीनगर वासी राजा फतह शाह मेदिनी शाह आत्मजेन आज्ञप्त"

मेदिनी शाह गढ़वाल नरेश फ़तह शाह के पिता का नाम था। फ़तह प्रकाश के दूसरे उद्योत में अद्भुत रस के उदाहरण में जो छन्द है, उसका अन्तिम चरण यह है—

गढ़वाल नाह फ़तेशाह शैलगाह तोहि
जग माँहि जो ऐसे ज्ञान गुनियतु है ४२

इस छन्द से भी स्पष्ट है कि फ़तह शाह गढ़वाल नरेश थे। यह न तो बुन्देला थे, न बुन्देल-खण्डी और न बुन्देलखण्ड के किसी भू-खण्ड के अखण्ड-शासक।

---

(१) भाषाकाव्यसंग्रह, पृष्ठ १२७

फिर घर में ग्रन्थ रहते हुए शिव सिंह ने इस कवि के सम्बन्ध में अशुद्ध सूचना क्यों दी, यह प्रश्न विचारणीय है। इस ग्रन्थ के प्रथम उद्योत में ४७ वें छन्द में धुरमङ्गद बुन्देला की प्रशस्ति है। यह छन्द पञ्चम कवि का है और उद्धृत किया गया है। इसमें भूषण के भी दो छन्द उद्धृत हैं। सम्भवतः धुरमङ्गद बुन्देला की प्रशस्तिवाले छन्द ने सरोजकार को भ्रम में डाला।[1]

सरोज में फ़ते प्रकाश से जो छन्द उद्धत है, उसके एक चरण में फते साहि को मेदनी साहि का नन्द या पुत्र कहा गया है।

बार न लगत ऐसे बारन बकसि देत
साह मेदनी को फ़तेसाह साहसी ढरैं।

सरोजकार के पास दोनों ग्रन्थ थे और उन्होंने दोनों से उदाहरण दिए हैं।

जब आश्रयदाता गढ़वाली सिद्ध हो गया, तब रतन कवि भी उधर ही के होंगे, बुन्देल खण्डी नहीं होंगे और इनका भी रचना काल सं० १७४१–७३ होगा। तृतीय एवं सप्तम संस्करण में कवि का समय १७३८ के स्थान पर १७९८ कर दिया गया है जो अशुद्ध है।

फतेह प्रकाश की प्रतियाँ खोज में भी मिली हैं। इसमें २२२ छन्द हैं।[2] विनोद (८७५) के अनुसार फतेह भूषण में ४६९ छन्द हैं।

७६७।६५३

(५२) रतन कवि ३ सं० १७९८ में उ०। इन्होंने सभा साहि पन्ना नरेश के यहाँ रस-मञ्जरी का भाषा में उल्था किया है। यह ग्रन्थ देखने योग्य है।

सर्वेक्षण

पन्ना नरेश सभा साहि महाराज छत्रसाल के पौत्र तथा हृदय साहि के पुत्र थे। इनका शासन काल सं० १७९६–१८०९ है। इनके पुत्र अमान सिंह (शासनकाल १८०९-१८१३) हिन्दूपत (शासनकाल सं० १८१३–३४) और खेत सिंह हुए। १७९८ के स्थान पर तृतीय एवं सप्तम संस्करणों में १७३८ कर दिया गया है।

रतन कवि का एक ग्रन्थ अलङ्कार दर्पण[3] खोज में मिला है। इस ग्रन्थ की रचना सभा साहि के पुत्र हिन्दूपत के लिए हुई।

हिन्दू सिंघ दिवान भानु कुल भूषन भए सुहाए
तिनके निकट रतन कवि अनुदिन अगनित मोद बढ़ाए

---

(१) भूषण विमर्श, पृष्ठ ११८-२१। (२) खोज रिपोर्ट १९०६।२६६, १९२३।३६० ए बी, १९२६।४०६ (३) खोज रिपोर्ट १९०६।१०३

ज्यौं पयोधि पय थम्भु मेरु भू इहि विधि हमकौ थम्भौ
अलङ्कार दर्पन बहु विधि करि नाम ग्रन्थ आरम्भौ

इस ग्रन्थ की रचना सं० १८२७ में हुई—

संवत रिस[७] भुज[२] वसु[८] परमेश्वर[१] चरन चारु उर धारौ
फागुन सुदि राका गति भद्रन सुर गुरुवार निवारौ

रस का यह सम्पूर्ण ग्रन्थ सम्भवतः इसी छन्द में लिखा गया है।

सरोज में रतन कवि की कविता का उदाहरण 'रस मञ्जरी भाषा' से दिया गया है। यह ग्रन्थ अभी तक खोज में नहीं मिला है। पर यह शिव सिंह के पास था। उद्धृत अंश के निम्नलिखित अंश कुछ काम के हो सकते हैं।

अति पुनीत कलिकलुष विहण्डन
साहि सभा सबहिन सिर मण्डन

सरोजकार ने साहि सभा का अर्थ सभा साहि किया है।

रसिकराज हरिवंश तिन चंचरीक निज हेत
भानु उदित रस मञ्जरी मधुर मधुर रस लेत

इसमें रसिकराज हरिवंश का उल्लेख है। ऊपर भी कलिकलुष-विहण्डन आया है। क्या सुप्रसिद्ध हित हरिवंश तो अभिप्रेत नहीं हैं। यदि ऐसा है तो यह रचना और भी पुरानी है और तब साहि सभा का कुछ और ही अर्थ करना होगा।

खोज में किसी रतन के निम्नाङ्कित ग्रन्थ मिले हैं, जो महाराज बनारस के पुस्तकालय में हैं:—

(१) चूक विवेक, १९०४।१००। यह नीत ग्रन्थ है।

(२) दोहा, १९०४।१०१। इस लघु-ग्रन्थ में २९ शृङ्गारी दोहे है।

(३) बुध चतुर विचार, १९०४।९८

(४) विष्णु पद, १९०४।१०२ कुल २८ पद। इनका प्रतिलिपिकाल सं० १८५५ है। विनोद (६२९) और बुन्देल-वैभव[१] में ये सभी ग्रन्थ इन रतन बुन्देलखण्डी के माने गए हैं। ये काशीवासिनी रतन कुँवरि की रचनाएँ भी हो सकती हैं।

———

७६८।६५४

(५३) रतनपाल कवि। इनके नीति-सम्बन्धी दोहे पढ़ने योग्य हैं।

---

(१) **बुन्देल-वैभव, भाग २, पृष्ठ ५०१**

सर्वेक्षण

रतनपाल करौली, राजस्थान के राजा थे। यह सं० १७४२ के लगभग विद्यमान थे। प्रेम-रत्नाकर के प्रसिद्ध कवि देवीदास इनके दरबार में थे। हो सकता है, यह रतनपाल कविता प्रेमी होने के साथ-साथ कवि भी रहे हों। यदि ऐसा है तो नीति सम्बन्धी दोहे इन्हीं रतनपाल-कृत होंगे। विनोद में प्रमाद वश इन्हें राग-रत्नाकर का रचयिता कहा गया है और रचनाकाल सं० १७४२ दिया गया है। विनोदकार सम्भवतः प्रेम-रत्नाकर का नामोल्लेख करना चाहते थे, जो इनके आश्रित कवि देवीदास द्वारा सं० १७४२ में प्रणीत हुआ।[1]

७६६।६२६

(५४) रावराना कवि, बन्दीजन, चरखारी के निवासी, सं० १८६१ में उ०। यह कवीश्वर, बुन्देलों के प्राचीन कवीश्वरों के वंश में हैं। राजा रतन सिंह के यहाँ इनका बड़ा मान था। इन्होंने कवित्त सुन्दर बनाए हैं।

सर्वेक्षण

चरखारी नरेश रतन सिंह का शासनकाल सं० १८८६–१९१७ है।[2] रावराना का सरोज-दत्त समय सं० १८६१ इसी समय के बीच पड़ता है, अतः यह ठीक है और कवि का उपस्थिति-काल एवं रचनाकाल है।

७७०।६२६

(५५) रनछोर कवि, सं० १७५० में उ०। इन्होंने सामान्य कविता की है।

सर्वेक्षण

रणछोर जी ग्रियर्सन (१८६) एवं विनोद (४६४) के अनुसार राजपट्टन नामक ग्रन्थ के रचयिता हैं तथा इनका समय सं० १७३७ है। ग्रियर्सन में इस संवत् के सम्बन्ध में सन्देह भी प्रकट किया गया है। राजपट्टन का उल्लेख टॉड के आधार पर हुआ है।

एक और रणछोर जी दीवान नागर गुजराती ब्राह्मण का पता चलता है, जो जूनागढ़ के नवाब के दीवान थे। यह शैव थे। इन्होंने सोरठी तवारीख, शिव-रहस्य, भाषा शिवपुराण, काम-दहन, सदाशिवविवाह आदि ग्रन्थ बनाए हैं। इन्होंने अपनी कविता में विशुद्ध ब्रजभाषा का प्रयोग किया है।[3]

---

(१) बुन्देल-वैभव संख्या ३६३ (२) ना० प्र० पत्रिका, माघ १९८५, चरखारी राज्य के कवि (३) माधुरी, जून १९३७, गुजरात का हिन्दी साहित्य।

७७१।६३४

(५६) रूप कवि। इन्होंने शृङ्गार के सुन्दर कवित्त लिखे हैं।

सर्वेक्षण

रूप कवि, ७७२ संख्यक रूपनारायण से भिन्न हैं। यह पोकरन जाति के ब्राह्मण थे, मेड़ता नगर के निवासी थे, रामदास के पुत्र थे और हरिदासों के दास थे।

जाति सु पोकरना प्रगट, नगर मेड़ते वास
रामदास को नन्द हौं, हरदासन को दास

स० १७३७ में प्रतिलिपित नखशिख नामक इनका एक ग्रन्थ मिला है, जिसे शृङ्गार रस की बड़ी प्रौढ़ और परिमार्जित रचना कहा गया है। इसमें १६७ कवित्त हैं।[1] सरोज में रूप कवि का जो एक कवित्त उदाहृत है, वह दिग्विजय भूषण से उद्धृत है। इसमें राधा के दातों का अद्‌भुत वर्णन हुआ है।

रूप कवि राधिका वदन में रदन छवि,
सोरहो कला को काटि बत्तिस बनायो है।

यह कवित्त उसी नखशिख का प्रतीत होता है। इसी कवि की सम्भवतः एक अन्य कृति बारहमासा[2] है। इसके दो कवित्त रिपोर्ट में उद्धृत हैं, जिनमें से एक में रूप छाप भी है। इस ग्रन्थ की प्रतिलिपि सं० १७५० में बीकानेर में हुई थी।

सं० १९०८ के भी आस-पास एक रूप कवि हुये हैं, जिन्होंने इसी वर्ष रूपमञ्जरी नामक ग्रन्थ लिखा, जिसमें भक्ति के पद हैं।

रूप मञ्जरी नाम यह रच्यो ग्रन्थ रस रीति
श्री राधा गोविन्द पद दायक मञ्जुल प्रीति ३२९
संवत विक्रम नृपति को वसु (८) व्योम (०) अङ्क (९) जु रूप (१)
पौष मास सित पक्ष तिथि षष्टी सूर अनूप ३३०

—खोज रिपोर्ट १९४४।३३६

यह रूप, सरोज के अभीष्ट रूप से परवर्ती हैं।

७७२।६३५

(५७) रूपनारायण कवि, सं० १७०५ में उ०। हज़ारे में इनके कवित्त हैं।

---

(१) राज० रिपोर्ट, भाग १, संख्या ६० (२) वही, भाग ४, पृष्ठ १६८

सर्वेक्षण

सरोज के तृतीय संस्करण में सं० १७०५ है और सप्तम संस्करण में प्रमाद से १००५ हो गया है। इनका एक शृङ्गारी सवैया सरोज में उदाहृत है, जो दिग्विजय भूषण से उद्धत है। सरदार के श्रृङ्गार संग्रह में रूपनारायण का एक सवैया वीरबल के दान की प्रशंसा में है।

पूरब पश्चिम उत्तर दक्षिण संगहि सङ्ग फिरे दिसि चार्‌यो
काहू महीप को मार्‌यो मर्‌यो, न रह्यो घर बीच, टर्‌यो नहिं टार्‌यो
रूपनरायन याचत ही चले कोटिक भूप किते पचि हार्‌यो
दीन को दावनगीर दरिद्र सु तो बलवीर के वीरहि मार्‌यो

प्रतीत होता है कवि, वीरबल से पुरस्कृत हो चुका है। वीरबल की मृत्यु सं० १६४२ में हुई,[1] अतः रूपनारायण का समय सं० १६४० के आस पास होना चाहिए। ऐसी स्थिति में इनका समय सं० १७०५ ठीक नहीं।

बुन्देल वैभव के अनुसार[2] रूपनारायण ओरछा के रहने वाले मिश्र ब्राह्मण थे। इनका जन्म-काल सं० १७५० और रचनाकाल सं० १७९० माना गया है, जो ठीक नहीं प्रतीत होता। इनका निम्नाङ्कित छन्द उक्त ग्रन्थ में उद्धृत है—

लियो वीर विरसिंह बुन्देला मनहु मिलाप मिलायो
इन्द्रजीत मधुकर को बेटा, मधुकर ज्यों उठि आयो
मधुकर ज्यों उठि आय आयकर फूल रहयो अनभायो
सङ्ग मिले सङ्गीत रसिक को, नव रस गुन गन पायो

इस छन्द से स्पष्ट है कि कवि का सम्बन्ध मधुकर शाह और उनके बेटों—इन्द्रजीत सिंह और बीरसिंह देव से था। अतः कवि महाकवि केशवदास का समकालीन सिद्ध होता है।

७७३।६५५

(५८) रूपसाहि कायस्थ, बाग महल पूना के निवासी, सं० १८१३ में उ०। यह महान् कवि हिन्दूपति बुन्देला पन्ना महाराजा के यहाँ थे। इनका बनाया हुआ रूपविलास ग्रन्थ कवियों के अवश्य देखने योग्य है।

सर्वेक्षण

रूपसाहि का असली नाम फौजदार था। यह रूपसाहि नाम से रचना करते थे। यह बाग महल पन्ना के रहनेवाले श्रीवास्तव कायस्थ थे, पूना के नहीं, जैसा कि सरोज सप्तम संस्करण में प्रमाद से लिख गया है।

---

(१) राज० रिपोर्ट, संख्या ४९७ (२) बुन्देल-वैभव, भाग २, पृष्ठ ४०५

काइथ गुनिए बारहै, श्रीवास्तवन राम
सुभ परना अस्थान है, बाग महल अभिराम

इनके पिता का नाम कमलनयन, पितामह का शिवाराम, और प्रपितामह का नारायणदास था।

काइथ वंस कुलीन अति, प्रगट नरायनदास
सिवाराम तिनके सुवन, कमल नयन सुत तासु
फौजदार तिनके तनय, रूप साहि यह नाम
कीन्हों रूपविलास तिन, ग्रन्थ अधिक अभिराम

यह पन्ना नरेश हिन्दूपति के यहाँ थे। यह हिन्दूपति, महाराज छत्रसाल के प्रपौत्र हृदय साहि के पौत्र, और सभासिंह के पुत्र थे।

छत्रलाल बुन्देल मनि, ता सुत श्री हिरदेस
सभा सिंह जाके तनय, ता सुत हिन्दु नरेस

इन हिन्दूपति का शासनकाल सं० १८१३–३४ है। रूपसाहि ने रूपविलास नामक ग्रन्थ सं० १८१३ में रचा, इसी से यह सब सूचनाएँ प्राप्त हुई हैं।

३ १ ८ १
गुन ससि वसु ससि जानिए, संवत अङ्क प्रकास
भादौं सुदि दसमी सनी, जनम्यो रूप विलास १०

यह ग्रन्थ १४ विलासों में विभक्त है और दोहों में रचा गया है। इसमें पिङ्गल, नायक-नायिका भेद, नव रस, अलङ्कार और षट्ऋतु वर्णन आदि सभी कुछ है। खोज में इनके दो ग्रन्थ मिले हैं—

(१) रूप विलास, १९०५।८३, १९०६।१०५, १९२०।१६७

(२) नव रस चतुर्वृत्ति वर्णन, १९४१।२३३। यह रूपविलास का ही एक अङ्ग भी हो सकता है।

———

७७४।६३७

(५९) राजाराम कवि १, सं० १६८० में उ०। इनके कवित्त हजारे में हैं।

सर्वेक्षण

राजाराम की रचना हजारे में थी, अतः सं० १७५० के पहले इनका अस्तित्व सिद्ध है। किसी राजाराम का षट् पञ्चासिका[1] नामक ज्योतिष ग्रन्थ मिला है। प्राप्त-प्रति का तिथिकाल सं० १७६१ है। हो सकता है, यह हजारे वाले ही राजाराम हों।

———

(१) खोज रिपोर्ट १९०६।३१७

७७५।६६५

(६०) राजाराम कवि २, सं० १७८८ में उ० । इनके शृङ्गार के सुन्दर कवित्त हैं।

सर्वेक्षण

इस समय के दो राजाराम मिलते हैं । इनमें से एक गुजराती हैं, दूसरे बुन्देलखण्डी ।

गुजराती राजाराम—यह सारंगपुर, राजनगर, गुजरात के निवासी थे । इनके पिता का नाम गंगादास था । यह वल्लभ सम्प्रदाय के अनुयायी थे और सं० १७७६ के आस-पास उपस्थित थ इसी वर्ष इन्होंने 'वल्लभकुल विस्तार कल्पवृक्ष' नामक ग्रन्थ लिखा ।

"संवत १७७६ कार्तिक शुदि १ ताई श्रीमद्वल्लभ कुल विस्तार कल्पवृक्ष लिख्यो है ।

श्रीमद्वल्लभ कुल सदा, पदपङ्कज विसराम
गुर्जर गङ्गादास सुत, सेवक राजाराम ९
रामनगर सुभ देस मधि, सारङ्गपुर निज वास
प्रेम भक्ति सों खोज करि, कीनों बुद्धि विलास १०"

—खोज रिपोर्ट १९४४।३३४

बुन्देलखण्डी राजाराम श्रीवास्तव—बुन्देलखण्डी राजाराम ने सं० १८०६ में यम-द्वितीया की कथा की रचना की—

श्री वास काइथ खरे, ज्ञाति उकासी वार
राजाराम प्रनाम करि, भाव्यो कथा प्रचार ८३
अष्टादस सत षट अधिक, संवत बिक्रमराज
चैत कृष्ण सुभ पञ्चमी, रवि वासर सिर ताज ८४

—खोज रिपोर्ट १९०६।९९

विनोद में ६२२ और ८१७ संख्याओं पर दो राजाराम हैं, जिनका जन्मकाल सरोजदत्त सं० १७८८ माना गया है । ८१७ संख्या पर यह राजाराम कायस्थ बुन्देलखण्डी हैं । इनके एक अन्य ग्रन्थ 'शृङ्गार काव्य' का भी उल्लेख हुआ है । कुछ निश्चयपूर्वक नहीं कहा जा सकता कि इनमें कौन से सरोज के अभीष्ट राजाराम हैं ।

७७६।६६१

(६१) राजा रणधीर सिंह, शिरमौर, सिङ्गारामऊ वाले । विद्यमान हैं । यह राजा कवि कोविदों का बड़ा सम्मान करते हैं और काव्य में महा निपुण हैं । इनके बनाए हुए भूषण कामुदी, काव्य रत्नाकर, ये दोनों ग्रन्थ देखने योग्य हैं ।

सर्वेक्षण

राजा रणवीर सिंह शिरमौर क्षत्रिय थे। यह सिंगरामऊ, जिले जौनपुर के तालुकेदार थे। इनका जन्म सं० १८७८ में हुआ। सं० १९१४ में यह सिंगरामऊ के राजा हुए। इनका देहान्त अयोध्या में सं० १९५२ में हुआ। इनके बनाए हुए निम्नाङ्कित पाँच ग्रन्थ हैं[1]—

(१) पिंगल नामार्णव, १९०६।३१६ ए, १९२३।३५२ सी। यह एक साथ पिंगल और पर्याय कोश है। इसकी रचना सं० १८९४ में हुई पर खोज रिपोर्ट में इसका रचनाकाल सं० १८२४ लिखा है, जो स्पष्ट ही अशुद्ध है।

(२) काव्य रत्नाकर, १९०६।३१६ बी, १९२३।३५२ बी। यह नायिका भेद और अलङ्कार का ग्रन्थ है। इसकी रचना सं० १९१२ में हुई। इसकी रचना सं० १८९७, ज्येष्ठ शुक्ल १२ को हुई—

> संवत मुनि निधि वसु ससी, अंक रीति गनि चारु
>
> जेठ शुक्ल सुभ द्वादसी, जनित ग्रन्थ गुरु वार

रचनाकाल-सूचक यह दोहा सरोज में उद्धृत है।

(३) सालिहोत्र, १९२०।१६१। इस ग्रन्थ की रचना सं० १९१२ में हुई। खोज रिपोर्ट में रचनाकाल सं० १८९४ दिया हुआ है, पर प्रमाण नहीं दिया गया है।

(४) भूषण कौमुदी, १९२३।३५२ ए। यह राजा जसवन्त सिंह के भाषा-भूषण की टीका है। इसकी रचना सं० १९१७ में हुई—

> संवत मुनि ससि निधि धरनि माघ त्रिदस सित चारि
>
> सुभ मुहूर्त्त कवि वार लहि, भयो ग्रन्थ अवतार

यह छन्द भी सरोज में उद्धृत है।

(५) रागमाला, यह भजन और गीतों का संग्रह है। सं० १९४६ में यह प्रकाशित भी हुआ है।

७७७।६४८

(६२) रज्ज़ब कवि। इनके दोहे सुन्दर हैं।

सर्वेक्षण

रज्जब जी का पूरा नाम रज्जब अली खाँ था। यह पठान थे। इनका जन्म १६२४ के

---

(१) कविता कौमुदी, द्वितीय भाग।

आस-पास जयपुर राज्य के अन्तर्गत सांगानेर नामक स्थान में हुआ था। कहा जाता है कि २० वर्ष की आयु में यह बारात लेकर विवाह करने जा रहे थे कि मार्ग में दादू से साक्षात्कार हो गया। यह वहीं उनके शिष्य हो गये और विवाह नहीं किया। दादू के देहान्त के पश्चात् इन्होंने अपनी आँखों पर गाँधारी के समान पट्टी बाँध लीं। सागानेर में ही इनका देहान्त सं० १७४६ में हुआ। इनके बनाए दो बड़े ग्रन्थ हैं, बाणी सर्वङ्गी।[1] सभा रज्जब ग्रन्थावली के प्रकाशन की व्यवस्था कर रही है।

७७८।६२८

(६३) राय कवि इनके शृङ्गार के कवित्त अच्छे हैं।

सर्वेक्षण

ग्रियर्सन (६१३) के अनुसार यह ७७९ संख्यक राय जू से अभिन्न हैं। अनुमान ठीक हो सकता है।

७७९।६३०

(६४) रायजू कवि। ऐंजन। इनके शृङ्गार के कवित्त अच्छे हैं।

सर्वेक्षण

ग्रियर्सन (६१३) में इन्हें राय कवि से अभिन्न माना गया है, जो ठीक हो सकता है।

७८०।६५८

(६५) रायचन्द कवि नागर, गुजरात निवासी। यह कवि राजा डालचंद अर्थात् जगतसेठ के यहाँ मुर्शिदाबाद में थे। इन्होंने गीत गोविन्दादर्श, भाषा गीत गोविन्द और लीलावती नामक ग्रन्थ नाना छन्दों में रचा है जिसके देखने से इनका पाण्डित्य प्रकट होता है।

सर्वेक्षण

रायचन्द नागर गुजराती ब्राह्मण थे। यह मुर्शिदाबाद में जगतसेठ राजा डालचन्द के आश्रय में थे। यह डालचन्द जी राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द के प्रपितामह थे। रायचन्द जी के लिखे दो ग्रन्थ खोज में मिल चुके हैं—

(१) गीत गोविन्दादर्श, १९१७।१६३, १९२६।४११ ए, बी, सी। यह जयदेव के सुप्रसिद्ध ग्रन्थ गीतगोविन्द का अनुवाद है। कवि ने इस ग्रन्थ में अपना परिचय दिया है—

नागर ज्ञाति अधीन, हीन छीन मति अज्ञ अति

रायचन्द द्विज दीन, नाउ गाउ गुजरात जेहि ४

---

(१) राजस्थानी भाषा और साहित्य, पृष्ठ २१६-१७

ग्रन्थ की रचना राजा डालचन्द की आज्ञा से हुई—

ताको अति मति मन्द, हौं भाषा भावारथे
चाहत कियो सुछन्द, स्वामी सासन पाय बल

× × ×

कृष्ण कृपानिधि किरपा करी
तज यह सुमति आनि उर अरी
डालचन्द नृप अज्ञा दई

ग्रन्थ की रचना मुर्शिबाद में हुई—

नगर मुरशिदाबाद, आदि सुरसरी तीर सुभ
सुबस बसै अविषाद, जहां आसरम बरन सब ७
तेहि पुर अन्त माहि, मा ....
महत महिमा सर नाहि, जाको पुर की एकहू ८

ग्रन्थ की रचना सं० १८३१ में चैत सुदी, ६ सोमवार को हुई—

अट्ठारह सै अरु इकतीसा
संवत विक्रम नृप अवनीसा
सित नवमी ससि दिन मधुमास
गीत गोविन्दादर्श प्रकास

गीतगोविन्द की यह टीका कवित्तों में है। सरोज में इस ग्रन्थ से मंगलाचरण का कवितानुवाद उद्धृत है।

(२) विचित्र मालिका, १६०६।२३६। इस ग्रन्थ की रचना सं० १८३४ में हुई।

सगुन[3] पुरान[१८] स वेद[४], दुहु दिसि तें सम्मत कहत
वेद[४] माह नहि भेद, सगुन[3] सिद्धि[८] सोइ ब्रह्म[१] इक १०५
माह माह के माह, औ बसन्त पञ्चमि सु तिथि
सुभ ससि दिन छबि छाह, श्री विचित्र लीला जनम १०६

इस ग्रन्थ में ब्रजवासी दास के ब्रज विलास, रचनाकाल सं० १८२७, के आधार पर भागवत का सार १०६ छन्दों में प्रतुस्त किया गया है।

सुमिरि सरस्वति राधिका, गोप गनेस मनाय
करी भागवत सार की, माल विचित्र सुभाय १
कहैं एक सै नव जिते, यामें छन्द रसाल

ललित लाड़िली लाल के लीला की जवमाल २
तज विलास वृज दास वृज, ताको सार नवीन
तासु सार नागर कहत, रायचन्द द्विज दीन ५

७८१।६४०

(६६) रंग लाल कवि, सं० १७०५ में उ०। यह कवि वदन सिंह के आत्मज सुजान सिंह के यहाँ थे।

सर्वेक्षण

भरतपुर नरेश सुजान सिंह का राज्यकाल सं० १८१२-२० है। इनके पश्चात् जवाहिर सिंह राजा हुए, जिनका शासनकाल सं० १८२०–२५ है। पं मयाशङ्कर याज्ञिक इन्हें जवाहिर सिंह के समय का कवि मानते हैं और इनको वीर रस की कविता रचनेवाला कहते हैं।[1] अतः इनका रचनाकाल सं० १८१२–२५ है, सरोज में दिया इनका सं० १७०५ अशुद्ध है। रंगलाल इनके प्रायः १०० वर्ष बाद हुए।

सरोज में रंगलाल का एक छप्पय उद्धृत है, जिनसे इनका वदन सिंह के आत्मज सुजान सिंह और जवाहिर सिंह का प्रशस्ति-गायक वीररस का कवि होना सिद्ध है।

७८२।

(६७)रामशरण ब्राह्मण, हमीरपुर जिले इटावा वाले, सं० १८३२ में उ०। यह गोसांई हिम्मत बहादुर के यहाँ थे।

सर्वेक्षण

सरोज में दिया हुआ रामशरण जी का समय सं० १८३२ ठीक है। यह इनका उपस्थिति-काल है। हिम्मत बहादुर का उत्कर्ष सं० १८२० की बक्सर की लड़ाई से प्रारम्भ होता है। इनकी मृत्यु सं० १८६१ में हुई।[2]

७८३।६०४

(६८) राम भट्ट, फर्रुखावादी, सं० १८०३ में उ०। यह नव्वाव कायम खाँ के यहाँ रह कर श्रृङ्गार सौरभ, बरवै नायिका भेद, ये दो ग्रन्थ बनाए हैं।

---

(१) माधुरी, फरवरी १९२७, पृष्ठ ८० (२) यही ग्रन्थ, कवि संख्या ६६६

सर्वेक्षण

रामभट्ट के आश्रयदाता कायम खाँ फर्रूखाबाद राजघराने के संस्थापक मोहम्मद खाँ वंगश के पुत्र थे। यह उक्त वंश के दूसरे शासक थे। यह सं० १८०० (दिसम्बर १७४३ ई०) में गद्दी पर बैठे थे। इन्होंने केवल ६ वर्ष राज्य किया। सं० १८०६ में यह एक युद्ध में रुहेलों के हाथ मारे गए।[1]

कायम खाँ के शासनकाल को देखते हुए सरोज-दत्त रामभट्ट का समय सं० १८०३ ठीक है और यह उपस्थिति काल सिद्ध होता है।

शृङ्गारसौरभ मिल चुका है।[2] पुष्पिका से ज्ञात होता है कि कवि का नाम रामभट्ट था—

"इति श्री राम जी भट्ट विरचित शृङ्गार सौरभे……"

कवि की छाप राम जी सुकवि है—

राम जी सुकवि अरविन्द में अलिन्द सम
लोयन को वन्दि वन्दि मीन मुरझाती हैं

विनोद में इस कवि को लेकर ४३२ और ६६२ संस्थाओं पर वड़ा घपला किया गया है।

७८४।

(६९) राम सेवक कवि। इन्होंने ध्यान चिन्तामणि ग्रन्थ बनाया है।

सर्वेक्षण

राम सेवक जी सतनामी सम्प्रदाय के साधु थे। यह बाबा रामसेवक दास कहलाते थे। यह हरिचन्दपुर, जिला बाराबङ्की के रहनेवाले थे। इनके शिष्य गजाधरदास ने सं० १८८६,ज्येष्ठ शुक्ल ६, बुधवार को अखरावली[3] की रचना की थी। रामसेवकदास देवीदास के शिष्य और सतनामी-सम्प्रदाय के प्रवर्तक कोटवा वाले जगजीवनदास के पोता शिष्य थे। जगजीवन दास की मृत्यु सं० १८१७ में हुई,[4] अतः बाबा रामसेवक दास का समय १८१७ और १८८६ के बीच होना चाहिए।

रामसेवक जी का एक ग्रन्थ अखरावली[5] नाम का मिला है। इससे इनके सम्प्रदाय और गुरु का नाम ज्ञात होता है।

अस सामरथ जग जीवन जगमग जगत पति जन क्रम दहै
प्रभु देविदास लखाइ दीन्हौ रामसेवक मिलि रहै

---

(१) सम्पूर्णानन्द अभिनन्दन ग्रन्थ, पृष्ठ १३३ (२) खोज-रिपोर्ट १९४७।३२८ (३) वही, १९२६।१२१ (४) वही कवि संख्या ३०४ (५) वही, १९०९।२५८, १९२९।२९२, १९४७।३४३

ध्यान-चिंतामणि की कोई प्रति अभी तक नहीं मिली है।

७८५।

(७) रामदत्त कवि।

सर्वेक्षण

खोज में दो राम दत्त मिले हैं—

(१) रामदत्त ब्राह्मण, गुन्जीली, डा० बौंडी, बहराइच के रहनेवाले। इन्होंने दानलीला[1] नामक ग्रन्थ सं० १८५५ में बनाया।

पूरण पूरण इन्दु, अब्द गते नृप विक्रमा
वात नक्षत्र नग इन्दु, शाल भनित प्रवीन मति

ग्रन्थ में कबि का नाम आया है—

रामदत्त सुमिरत सदा, गिरिधारी ब्रजराज
चरन कमल हिरदै बसे, दीजै विदुष समाज

(२) रामदत्त, नारनौल, पञ्जाब के रहनेवाले भक्त और कवि। यह गौड़ ब्राह्मण थे। इनकी मृत्यु सं० १९५९ में हुई। इनका एक भजन संग्रह[2] मिला है।

इनमें से पहले रामदत्त के ही सरोज के अभीष्ट रामदत्त होने की सम्भावना है। पञ्जाबी और समसामयिक दूसरे रामदत्त शिवसिंह के लिए सम्भवतः अज्ञात ही रहे होंगे।

७८६।६०६

(७१) रामप्रसाद बन्दीजन विलग्रामी, सं० १८०३ में उ०।

सर्वेक्षण

सरोज में रामप्रसाद बन्दीजन विलग्रामी का विवरण और कविता का उदाहरण मातादीन मिश्र के कवित्त रत्नाकर से लिया गया है। इस ग्रन्थ के अनुसार रामप्रसाद जी विलग्राम के रहने वाले भाट थे। यह नायिका भेद में प्रवीण थे और लखनऊ के नवाब मुहम्मदअली शाह के समय में थे। इन्होंने अपनी कुछ भूमि के सम्बन्ध में एक पद्य-बद्ध पत्र अवध के तत्कालीन दीवान मुन्शी अयोध्याप्रसाद खत्री बिलग्रामी के पास भेजा था। पत्र लेकर इनके पुत्र गोकुलचन्द लखनऊ गए थे।[3] यह पत्र पूरा का पूरा कवित्त रत्नाकर में छपा है। इनका एक सवैया सरोज में उद्धृत

---

(१) खोज रिपोर्ट १९२३।३४१ (२) वही, पं० १९२२।११८ (१) कवित्त-रत्नाकर, भाग १, कवि संख्या १।

है। प्रसिद्ध कवि अंगने राम रसाल, जिनका विवरण सरोज संख्या ७४६ पर हुआ है, इन्हीं रामप्रसाद जी के बड़े पुत्र थे, जैसा कि उक्त चिट्ठी के इस चरण से स्पष्ट है—

मोहिं रिसाय सुनाय कहीं 'अंगने' जे बड़े फरजन्द हमारे

देखिबो क्योकर ह्वै हैं वसूल तुम्हें रुपया इस साल करारे

इन रसाल जी ने संवत् १८८६ में बारहमासा नामक एक उत्तम काव्य ग्रन्थ रचा था।

लखनऊ के नवाब मोहम्मद अली शाह का शासनकाल सं० १८९४-९९ है, अतः रामप्रसाद वन्दीजन का भी यही समय होना चाहिए। इस समय कवि परम वृद्ध हो चुका था। उसमें लखनऊ जाने की शक्ति नहीं रह गई थी, अन्यथा वह स्वयं जाता। यह सब चिट्ठी के सरोज में उद्धृत सवैये से भी स्पष्ट है। अतः कवि सं० १८२५ के आस-पास उत्पन्न हुआ रहा होगा। सरोज में दिया सं० १८०३ अशुद्ध है।

खोज रिपोर्टों में इनके नाम पर जैमिनि पुराण,[1] जुगल पद,[2] बभ्रुवाहन की कथा,[3] ज्ञान बारहमासा[4] चढ़े हुए हैं। इनमें से जैमिनि पुराण का रचनाकाल सं० १८०५ है।

विसिख (५) व्योम (०) बसु (८) बुधवर (१), सुकुल अष्टमी फाग

पूरण भई श्री गुरु कृपा, कथा युधिष्ठिर राज

बभ्रुवाहन की कथा इसी का एक अंश है, अतः इसका भी रचनाकाल सं० १८०५ हुआ। अभी ऊपर हम देख चुके हैं कि रामप्रसाद जी का जन्म सं० १८२५ के आस-पास हुआ। यदि हम इनका जन्मकाल सं० १८०० भी मान लें, तो भी ये ग्रन्थ रामप्रसाद बन्दीजन विलग्रामी के नहीं हो सकते। ये किसी दूसरे रामप्रसाद के हैं। जुगल पद और ज्ञानबारहमासा के सम्बन्ध में भी निश्चयपूर्वक नहीं कहा जा सकता कि ये इन्हीं की रचनाएँ हैं।

७८७।

(७२) रघुराम गुजराती, अहमदाबाद वासी। इन्होंने माधव विलास नामक नाटक बनाया है।

सर्वेक्षण

खोज में रघुराम गुजराती के निम्नलिखित दो ग्रन्थ मिले हैं—

(१) सभा सार नाटक, १९०९।२३८, १९१२।१४०। यह ग्रन्थ नाटक नहीं है, नाटक शब्द इसके नाम के साथ जुड़ा भर है। इसकी रचना सं० १७५७, चैत सुदी ३, गुरुवार को हुई।

---

(१) खोज रिपोर्ट १९०९।२५४ ए (२) वही, १९०९।२५४ बी (३) वही, १९२६।३९० ए (४) वही, १९२६।३९० बी, सी, डी।

सत्रह सै सत्तावना, चैततीज . गुरुवार
पच्छ उजल उज्जल सुमिति, कवि किय ग्रन्थ विचार

ग्रन्थान्त में इस तथाकथित नाटक के पढ़ने-सुनने के लाभालाभ का बड़ा ओजपूर्ण वर्णन है। इस ३१६ वें छन्द में कवि छाप रघु है। यह नीति सम्बन्धी ग्रन्थ है।

विग्यान जान निरवान के, जोग ध्यान धन धरि लहै
पावत परम पर पुरुष गति, मति प्रमान कवि रघु कहै ३१६

(२) नीति उपदेश आदि की फुटकर कविताओं का संग्रह, राज० रि० भाग १। इस ग्रन्थ में कवि ने अपना परिचय भी दिया है। इसके अनुसार कवि रघुराम गुजराती नागर ब्राह्मण थे। यह अहमदाबाद के निकट सागरपुर के निवासी थे।

दिसि पस्यमगुर्जुर सुघर, सहर अहमदाबाद
भू पर के सब नगर सर, ऊपर मण्डित वाद
ता मधि सागर पुर सुभग, सुख दायक सब धाम
नागर विप्र सुसङ्ग मति, कवि पद रज रघुराम

इस कवि का सरोज वर्णित ग्रन्थ माधवविलास अभी तक नहीं मिल पाया है।

७८८।

(७३) रामनाथ मिश्र, आजमगढ़ वाले।

सर्वेक्षण

रामनाथ मिश्र, आजमगढ़ के दक्षिण मेहनगर के पास महादेवपारा नामक गाँव के निवासी थे। इनके दो ग्रन्थ खोज में मिले हैं--

(१) प्रस्तुत चिकित्सा, १९०९, पृष्ठ ४७१। इस रिपोर्ट के अनुसार यह यदुनाथ मिश्र के पुत्र थे और १९०९ ई० में जीवित थे।

(२) नलोपाख्यान, १९४४।२५५। इस ग्रन्थ की रचना इन्होंने भरसी मिश्र के साथ की।

७८९।

(७४) रुद्रमणि ब्राह्मण, सं० १८०३ में उ०। यह राजा युगलकिशोर के यहाँ दिल्ली में थे।

सर्वेक्षण

दिल्लीवाले जुगलकिशोर ने सं० १८०५ में अलङ्कार निधि नामक ग्रन्थ की रचना की थी। अतः इनके दरबारी कवि रुद्रमणि मिश्र का सरोज दत्त सं०१८०३ ठीक है। जुगलकिशोर ने उक्त ग्रन्थ में अपने चार दरबारी कवियों में इन्हें भी गिनाया है।[1]

७६०।

(७५) रुद्रमणि चौहान, सं० १७८० में उ०।

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध में कोई सूचना सुलभ नहीं।

७६१।

(७६) राजा रणजीत सिंह, जाँगरे, ईसानगर, जिले खीरी, विद्यमान। यह कविता में महा चतुर हैं और हरिवंशपुराण को भाषा में लिखा है।

सर्वेक्षण

इस कवि के भी सम्बन्ध में कोइ सूचना सुलभ नहीं।

७६२।६४२

(७७) रसरूप कवि, सं० १७८८ में उ०।

सर्वेक्षण

रसरूप जी के तीन ग्रन्थ खोज में मिले हैं—

(१) तुलसी भूषण, १९०४।११, १९४४।३२४। यह अलङ्कार ग्रन्थ है और इसमें उदाहरण तुलसीदास से दिए गए हैं। इसकी रचना सं० १८११ में हुई थी।

दस वसु सत संवत हुतो, अधिक और दस एक
कियो सुकवि रसरूप यह पूरन सहित विवेक

(२) शिखनख, १९०५।७६। इस ग्रन्थ में ७० छन्दों में राधा का नखशिख वर्णित है।

(३) उपालम्भ शतक, १९०९।२६१, १९२६।४०३। इस ग्रन्थ में कवित्तों में उद्धव-गोपी संवाद है है। छन्द संख्या १०६ है और प्रायः प्रत्येक छन्द में कवि छाप है।

---

(१) खोज रिपोर्ट, कवि संख्या २५६

हरि को जस रसरूप यह, कहा कहै मतिहीन
सज्जन जन करिहैं क्षमा, जानि आपनो दीन १०६

रसरूप कवि का उपनाम है। इसका वास्तविक नाम अज्ञात है। इनको सुकवि की उपाधि मिली हुई थी। यह संस्कृत और फारसी दोनों भाषाओं पर अधिकार रखते थे। सं० १७८८ इनका प्रारम्भिक रचनाकाल है। यह इनका जन्मकाल नहीं हो सकता, क्योंकि यदि इसे जन्मकाल माना जायगा, तो मानना पड़ेगा कि इन्होंने २३ वर्ष की ही वय में सं०१८११ में तुलसी भूषण की रचना की। इस ग्रन्थ की रचना के लिए एक तो तुलसी पर अधिकार करना है, दूसरे अलङ्कार-शास्त्र पर २३ वर्ष की अल्प वय में दोनों पर अधिकार सम्भव नहीं। इस कवि का उल्लेख एक बार पहले संख्या ७५१ पर हो चुका है।

७६३।

(७८) राधे लाल कायस्थ, राजगढ़, बुन्देलखण्डी, सं० १९११ में उ०।

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध में कोई सूचना सुलभ नहीं। २५ वर्ष बाद ही सरोज का प्रणयन हुआ, अतः यह संवत् उपस्थितिकाल है।

७६४।

(७९) रसधाम कवि, सं० १८२५ में उ०। इन्होंने अलङ्कार चन्द्रिका नामक ग्रन्थ बनाया है।

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध में कोई सूचना सुलभ नहीं। रसधाम उपनाम है।

७६५।

(८०) रसिक बिहारी, सं० १७८० में उ०।

सर्वेक्षण

महाराज सावन्त सिंह सम्बन्ध नाम नागरीदास की उपपत्नी बनीठनी जी रसिकविहारी उपनाम से रचना करती थीं। यह निःसन्तान थीं। नागरीदास के साथ वृन्दावन में रहती थीं। नागर समुच्चय के अन्त में इनके ५८ पद एकत्र हैं। इनका देहान्त नागरीदास की मृत्यु के १० मास पश्चात् सं० १८२२ में आषाढ़ पूर्णिमा को हुआ।[1] सरोज में दिया सं० १७८० इनका

(१) राधा कृष्णदास ग्रन्थावली, प्रथम भाग, पृष्ठ १९७

रचनाकाल ही है, जन्मकाल नहीं। विनोद में (८५१) ग्रियर्सन (४०५) के अनुसार १७८० को जन्मकाल मानकर एक रसिकबिहारी की मिथ्या सृष्टि की गई है। बनीठनी का विवरण विनोद में ६५९ पर है और कविताकाल सं० १७८७ दिया गया है। सरोज प्रथम संस्करण में १७३८ है, जो २, ३, ७ में १७८० हो गया है।

७६६।

(८१) रावरतन राठौर, परपोता राजा उदय सिंह रतलाम वाले। यह महाराज कवि-कोविन्दों के कल्पतरु और आप भी महान् कवि थे। इन्होंने अपने नाम से एक ग्रन्थ रायसाराव रतन नामक बहुत सुन्दर बनवाया है।

सर्वेक्षण

ग्रियर्सन में टॉड के आधार पर रतलाम के राजा उदय सिंह के प्रपौत्र राव रतन राठौर का समय १७०७ वि० दिया गया है। रायसाराव रतन बनाने वाले कवि का नाम नहीं दिया गया है।

७६७।

(८२) राना राज सिंह राजकुमार भीम पुत्र, सं० १७३७ में उ०। यह महाराज महान् कवि थे। इन्होंने राज विलास नामक अपने जीवन चरित्र का ग्रन्थ महा अद्भुत बनवाया है।

सर्वेक्षण

ग्रियर्सन (१८५) में टॉड के अनुसार उदयपुर के राना राजसिंह का शासनकाल सं० १७१६ से १७३८ वि० तक माना गया है। इसके अनुसार सरोज में दिया सं० १७३७ राजसिंह के जीवन का अन्तिम समय है। यह औरङ्गजेब के प्रसिद्ध प्रतिद्वन्दी हैं। मान कवीश्वर ने राज विलास की रचना की थी।[1]

७६८।६६९

(८३) रहीम कवि। यह रहीम कवि खानखाना के अतिरिक्त दूसरे हैं। इनकी कविता सरस है। काव्य निर्णय में दास कवि ने इनका नाम एक कवित्त में लिखा है। परन्तु दोनों रहीम अर्थात् अब्दुर्रहीम खानखाना और इन रहीम के फुटकर काव्य को छाँटना कठिन है। वह कवित्त यह है—

सूर, केसौ, मंडन, बिहारी, कालिदास, ब्रह्म,
चिन्तामनि, मतिराम भवन सो जानिए

---

(१) राधा कृष्णदास, भाग १, कवि संख्या ७१४

नीलकण्ठ, नीलाधर, निपट, नेवाज, निधि,
नीलकण्ठ, मिश्रसुखदेव, देव मानिए
आलम, रहीम, खानखाना, रसलीन, वली
सुन्दर अनेक गन गनती बखानिए
ब्रजभाषा हेत ब्रज सब कीन अनुमान
एते एते कविन की बानीहू ते जानिए

सर्वेक्षण

प्रसिद्ध अब्दुर्रहीम खानखाना के अतिरिक्त रहीम नाम का कोई अन्य कवि हिन्दी-साहित्य में नहीं हुआ। सरोज में रहीम के नाम पर जो कवित्त उद्धृत है, वह रहीम का न होकर अनीस का एक मात्र प्राप्त छन्द है और स्वयं सरोज में अनीस के नाम पर चढ़ा हुआ है।[१] परम्परा से यह अनीस की रचना के रूप में ही प्रख्यात है। ऊपर उद्धृत भिखारीदास के कवित के तृतीय चरण में रहीम खानखाना साथ-साथ आया है। सरोजकार ने व्यर्थ के लिए रहीम और खानखाना शब्दों के बीच अर्द्ध विराम लगाकर एक कवि के दो कवि बना दिए हैं। सरोजकार के इस भ्रम के ग्रियर्सन (१०८,७५६) और विनोद (१४७,६८२) भी शिकार हुए हैं और एक कवि का दो कवियों के रूप में उल्लेख किया है।

७९९।६७०

(८४) रामप्रसाद अग्रवाल, मीरापुर वाले, तुलसीराम के पिता, सं० १९०१ में उ०। इस कवि ने शान्त रस की अच्छी कविता की है।

सर्वेक्षण

रामप्रसाद जी के पुत्र तुलसीराम ने सं० १९११ में भक्तमाल की उर्दू टीका की थी।[२] ऐसी स्थिति में सं० १९०१ इनके बाप का जन्मकाल नहीं हो सकता। यह रामप्रसाद जी का उपस्थितिकाल ही है।

ल

८००।६७१

(१) लाल कवि। प्राचीन १, सं० १७३८ में उ०। यह कवि राजा छत्रसाल हाड़ा, कोटा बून्दीवाले के यहाँ थे। जिस समय दाराशिकोह और औरंगजेब फतुहा में लड़े हैं और राजा

(१) राधाकृष्ण दास ग्रन्थवली, कवि संख्या ३३ (२) सरोज की भूमिका, पृष्ठ ३

छत्रसाल मारे गए, उस समय यह कवि उस युद्ध में मौजूद थे। इनका बनाया हुआ विष्णु विलास नामक ग्रन्थ नायिका भेद का अति विचित्र है।

सर्वेक्षण

वीररस के प्रसिद्ध कवि गोरे लाल, उपनाम लाल, छत्रसाल के पुरोहित थे। यह छत्रसाल न तो हाड़ा थे और न तो कोटा बूंदी के राजा थे। यह बुन्देला थे और महेवा के राजा थे। पन्ना इनकी राजधानी थी। गोरे लाल ने सं० १७६४ के आस पास छत्रसाल का वर्णन छत्र-प्रकाश नामक प्रबन्ध काव्य में किया है। इसमें छत्रसाल का सं० १७६४ तक का ही जीवन आ सका है। ग्रन्थ अधूरा है और सभा से प्रकाशित हो चुका है। यह दोहा-चौपाइयों में है और अत्यन्त ओजपूर्ण है। इसमें कवि ने ऐतिहासिक तथ्यों की ओर विशेष ध्यान दिया है। यहाँ तक कि छत्रसाल की हारों का भी वर्णन अत्यन्त सत्यता और निर्भीकता के साथ किया है।

लाल का जन्म सं० १७१५ के लगभग हुआ था। यह मुद्गलगोत्रीय भट्ट तैलङ्ग ब्राह्मण थे तथा छत्रसाल द्वारा प्रदत्त दग्धा नामक गाँव में रहते थे।

लाल के सम्बन्ध में सरोजकार को भारी भ्रम हुआ है। वही भ्रम ग्रियर्सन (२०२) को भी हुआ है। लाल का सम्बन्ध उन छत्रसाल से कभी नहीं रहा, जो औरङ्गजेब और दारा के बीच सं० १७१५ में हुए राज्याधिकार के युद्ध में मारे गए थे। विनोद में लाल के निम्नलिखित १० ग्रन्थों को सूची दी गई है—

(१) छत्र प्रशस्ति, (२) छत्रछाया, (३) छत्रकीर्ति, (४) छत्र-छन्द, (५) छत्रसाल-शतक, (६) छत्र हजारा, (७) छत्र-दण्ड, (८) छत्र प्रकाश, (९) राज विनोद और (१०) विष्णु-विलास।

विनोद और हिन्दी साहित्य का इतिहास[1] में बरवै छन्दों में लिखित विष्णु-विलास नामक नायिका भेद का ग्रन्थ इन्हीं गोरेलाल का माना गया है।

गोरेलाल प्रसिद्ध कवि पद्माकर के नाना थे। नवीन कवि ने सुधासर के अन्त में दी गई नामराशि कवियों की सूची में यह उल्लेख किया है।[2] इसी आधार पर पण्डित मयाशङ्कर याज्ञिक भी यह सम्बन्ध स्वीकार करते हैं।[3] खोज में इनके केवल तीन ग्रन्थ मिले हैं।

(१) बरवै, १९०६।४८ ए, बरवै छन्दों में विविध-विषयक कविता।

(२) छत्र प्रकाश, १९०६।४८ बी।

(३) राज विनोद, १९०६।४८ सी, विविध छन्दों में कृष्ण-काव्य।

---

(१) हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ ३३४ (२) यही ग्रन्थ, भूमिका पृष्ठ १२६ (३) माधुरी, फरवरी १९२७, भरतपुर राज्य और हिन्दी, पृष्ठ ७९

८०१।६७२

(२) लाल कवि २, बन्दीजन बनारसी, सं० १८४७ में उ०। यह कवि राजा चेतसिंह काशी नरेश के यहाँ थे। इन्होंने आनन्द रस नामक ग्रन्थ नायिकाभेद का और लाल चन्द्रिका नामक सतसई का टीका बनाया है।

सर्वेक्षण

लाल कवि काशी राज्य दरबार से सम्बन्धित प्रसिद्ध कवि गुलाब के पिता, गणेश के पितामह और वंशीधर के प्रपितामह थे। वंशीधर ने अपने साहित्य तरंगिणी, रचनाकाल सं० १९०७, में स्वयं यह उल्लेख किया है।[1]

भए कवि लाल, जस जगत बिसाल,
जाके गुन को न वारापार, कहाँ लौं सो गाइए
ताके भए सुकवि गुलाब प्रीति संतन में
कविता रसाल सुभ सुकृत सुनाइए
सुकवि गनेस की कविता गनेस सम
करै को बखान मम पितु सोइ गाइए
तिनतें सु पढ़ि कीन्हों मति अनुसार
जानौं सियाराम जस ग्रन्थ औधड़ सु भाइए

—खोज रिपोर्ट १९२०।१२

लाल कवि काशी नरेश महाराज चेत सिंह, (शासनकाल सं० १८२७-३८) और महाराज महीपनारायण सिंह (शासनकाल सं० १८३८-५२) के आश्रित थे। अतः इनका समय सं० १८२७-५२ होना चाहिए। सरोज में दिया सं० १८४७ ठीक है। यह कवि का उपस्थिति-काल है। खोज में इनके निम्नलिखित दो ग्रन्थ मिले हैं—

(१) कवित्त महाराजा महीपनारायण बहादुर तथा और काशिराजों के, १९०३।११४, इस ग्रन्थ में विशेष कर चेत सिंह और महीपनारायण की ही प्रशस्तियाँ हैं। प्रथम काशिराज बलवन्त सिंह या बरिबण्ड सिंह (शासनकाल सं० १७९७-१८२७) तथा उनके पिता मनसाराम की प्रशस्ति के बहुत कम छन्द हैं।

(२) रसमूल, १९०३।११३। यह नायिका भेद का ग्रन्थ है। इसकी रचना चैत सिंह के आश्रय-काल में सं० १८३३ में फाल्गुन पञ्चमी को हुई थी।

---

(१) **माधुरी, वंशीधर कवि ५८४**

वाली, कृष्णलाल की टीका, पठान की टीका कुण्डलियों वाली, संस्कृत टीका, ये सात विहारी सतसई की टीका देख शब्दार्थ और भावार्थ, नायिका भेद और अलङ्कार उदाहरण समेत उक्ति युक्ति से प्रकाश कर लालचन्द्रिका टीका बनाइ व छपवाइ निज छापे खाने में श्रीमान पण्डित कवि रसिक आनन्दार्थ इति ।।"

स्पष्ट है कि जिस ग्रन्थ की पुष्पिका यह है वह छपा हुआ ग्रन्थ है, हस्तलिखित नहीं । लीथो पर छपे हुए होने के कारण हस्तलिखित प्रतीत हो, यह दूसरी बात है । छपाने वाला ही टीका बनाने वाला भी है और उसने ग्रन्थ को अपने ही छापेखाने में छपवाया है । अतः जिस लालचन्द्रिका का विवरण रिपोर्ट में है । वह लल्लू जी लाल की कृति है, जिसे उन्होंने अपने ही छापेखाने में, आगरे में सन् १८१६ ई० में छपाया था । विचारेलाल बनारसी के पास अपना छापाखाना नहीं था, लल्लू जी लाल के पास था । इस ग्रन्थ का दूसरा संस्करण १८६४ ई० में पण्डित अम्बिकादत्त व्यास के पिता पण्डित दुर्गादत्त व्यास ने लाइट प्रेस, बनारस से प्रकाशित कराया था । उक्त खोज रिपोर्ट में १८४७ को जन्मकाल मानकर लाल बनारसी ही द्वारा इसके संवत १८७५ में बनाए जाने का निर्णय दिया गया है । ग्रियर्सन ने इनका उपस्थिति-काल सन् १७७५ ई० दिया है, यह ठीक है । इसे रिपोर्ट में भ्रान्त बताया गया है और कहा गया है कि यह परिवर्तन चेत सिंह के समय से मेल खाने के लिये किया गया है । लाल, चेत सिंह के दरबारी थे । ऊपर दिये गए इनके ग्रन्थों के विवरण से यह स्पष्ट है । फिर उनके समय से लाल के समय का मेल तो बैठाना ही होगा । संवत १८४७ में उत्पन्न होने वाले लालन तो चेत सिंह के और न महीपनारायण के ही दरबारी कवि हो सकते हैं । महीपनारायण की मृत्यु के समय संवत १८५२ में इनकी आयु केवल ५ वर्ष की ठहरेगी । सरोज के उ० को उत्पन्न मानकर हिन्दी साहित्य में अनेक अनर्थ इसी प्रकार किये गये हैं ।

रत्नाकर जी ने बिहारी सतसई सम्बन्धी साहित्य में लाल कवि की टीका को काल क्रमानुसार तेरहवाँ स्थान दिया है और इसके सम्बन्ध में लल्लू जी लाल के प्रकरण में पण्डित अम्बिकादत्त व्यास के बिहार से यह उद्धरण दिया है—

"लोग कहते हैं कि काशी राज्य महाराजा चेत सिंह के दरबार के कविवर लाल कवि ने भी एक सतसई की टीका लालचन्द्रिका नाम से बनाई । यदि यह सच भी हो तो यह ग्रन्थ अलभ्य है ।[१]"

स्पष्ट है कि बिहारी-विहार के कर्त्ता को इस बात का विश्वास नहीं था कि लाल बनारसी ने लालचन्द्रिका नाम की कोई टीका बनाई थी । यदि ऐसी कोई टीका होती, तो वह निश्चय ही महाराज बनारस की लाइब्रेरी में होती, पर जो है ही नहीं, वह कहाँ से हो ।

---

(१) नागरी प्रचारिणी पत्रिका, खण्ड ६ अङ्क २, श्रावण १६८५, पृष्ठ १६१

८०२।६७६

(३) लाल कवि ३, विहारी लाल त्रिपाठी, टिकमापुर वाले, संवत् १८८५ में उ०। यह कवि मतिराम वंशी और बड़े भारी कवि थे। इस कुल में इन्हीं तक कविता रही। पीछे जो रामदीन, शीतल. इत्यादि हुए, वे सामान्य कवि थे।

सर्वेक्षण

विहारी लाल त्रिपाठी, चरखारी नरेश विक्रम साहि, महाराजा विजय विक्रमाजीत (राज्य-काल संवत् १८३९–८६) के दरबार में थे। विक्रमाजीत ने विक्रम सतसई नामक काव्य ग्रन्थ लिखा है। विहारी लाल जी ने इस विक्रम सतसई की रस चन्द्रिका नाम्नी टीका संवत् १८७२ में की थी।

२ ७ ८ १
द्रग मुनि बसु ससि वर्ष में सिद्ध सोम मधुमास
कियो ग्रन्थ आरम्भ शुभ पाँचे सिद्ध निवास ४६

अतः सरोज में दिया हुआ समय संवत् १८५५ ठीक है और यह कवि का उपस्थिति-काल है। टीका प्रारम्भ करने के पहले विहारी लाल ने राज वंश और कवि वंश वर्णन किया है। कवि वंश वाला प्रकरण उपयोगी होने के कारण उद्धृत किया जा रहा है—

वसत त्रिविक्रमपुर नगर कालिन्दी के तीर
विरचौ भूम हमीर जनु मध्य देस को हीर २८
भूषन चिन्तामनि तहाँ कवि भूषन मतिराम
नृप हमीर सनमान ते कीनो निज निज धाम २९
है वंती मतिराम के सुकवि विहारी लाल
जगन्नाथ नाती विदित सीतल सुत सुभ चाल ३०
कस्यप वंश कनोजिया विदित त्रिपाठी गोत
कविराजन के वृन्द में कोविद सुमति उदोत ३१
विविध भाँति सन्मान करि ल्याये चित महिपाल
आये विक्रम की सभा सुकवि विहारी लाल ३२

इस उद्धरण से स्पष्ट है कि विहारी लाल कानपुर जिले के अन्तर्गत यमुना तट स्थित त्रिविक्रमपुर (तिकवांपुर) के रहने वाले, मतिराम वंशी कश्यप गोत्रीय त्रिपाठी ब्राह्मण थे। यह मतिराम के पनति (प्रपौत्र) जगन्नाथ के नाती (पौत्र) और शीतल के पुत्र थे। सरोज के अनुसार शीतल, विहारी लाल के बाद हुए, यह ठीक नहीं। यह उनके पिता थे, अतः पूर्ववर्ती हैं।

———

८०३।६७४

(४) लाल कवि ४। इन्होंने चाणक्य राजनीति का उल्था भाषा दोहों में बहुत अच्छा किया है

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध में कोई सूचना सुलभ नहीं।

८०४।६९०

(५) लाल कवि ५, लल्लू लाल गुजराती आगरे,वाले, संवत् १८९२ में उ०। यह महाराज बोल-चाल की भाषा के प्रथम आचार्य है। इनका बनाया हुआ प्रेमसागर ग्रन्थ इस बात का साक्षी है। यह दोहा-चौपाई इत्यादि सीधे सादे छन्दों के बनाने में भी निपुण थे। सभा-विलास, माधव-विलास, वार्तिक राजनीति इत्यादि इनके और ग्रन्थ भी बहुत सुन्दर हैं।

सर्वेक्षण

भाषाकाव्य संग्रह में महेश दत्त जी ने लल्लू जी लाल का जन्मकाल संवत् १८३० दिया है। ग्रियर्सन (६२९) में इन्हें सन् १८०३ ई० में उपस्थित कहा गया है और इनके निम्नलिखित ११ ग्रन्थों की सूची विस्तृत परिचय के साथ दी गई है—

(१) प्रेमसागर, भागवत के दशम स्कन्ध का गद्यानुवाद, संवत् १८६०।

(२) लतायफ़-ए-हिन्दी, १०० कहानियों का उर्दू, हिन्दी, ब्रजभाषा में सङ्कलन।

(३) राजनीति, ब्रजभाषा गद्य में हितोपदेश का अनुवाद, संवत् १८६९।

(४) सभा-विलास, ब्रजभाषा के प्रसिद्ध कवियों की रचनाओं का संग्रह, संवत १८७०।

ख (०) ऋषि (७) वसु (८) चन्द्रहि (१) गनो संवत् को परवान
माघ शुक्ल नवमी रवौ कियो ग्रन्थ निर्मान

—खोज रिपोर्ट १९४१।२४३

(५) माधव-विलास, यह ब्रजभाषा गद्य-पद्य में लिखित चम्पू है।

(६) लाल-चन्द्रिका, बिहारी सतसई की सुप्रसिद्ध टीका, संवत् १८७५ में प्रस्तुत।

शिव आनन (५) रिषि (७) वसु (८) मही (१) सम्बत लेहु विचारि
माघ सुदी पांचै शनौ शनौ ग्रन्थ परचार

—खोज रिपोर्ट १९०९।१७२

(७) मसादिर-ए-भाषा, हिन्दी भाषा का व्याकरण, गद्य और नागरी लिपि में लिखित।

(८) सिंहासन बत्तीसी, गद्य-ग्रन्थ, संवत् १८६१ ।

(९) वैतालपचीसी, गद्य-ग्रन्थ ।

(१०) माधोनल या माधवानल की आख्यायिका, गद्य-ग्रन्थ ।

(११) शकुन्तला का उपाख्यान, गद्य-ग्रन्थ ।

विनोद (१११६) में इनके सम्बन्ध में लिखा गया है कि यह सहस्र औदीच्य गुजराती ब्राह्मण थे और आगरे के रहने वाले थे। इनका जन्म संवत् १८२० के लगभग हुआ था। यह फोर्ट विलियम कालेज, कलकत्ता, में हिन्दी के पण्डित थे और संवत् १८८१ तक वर्तमान थे। इनके लिखे १२ ग्रन्थों की सूची दी गई है। ऊपर दी हुई सूची के ग्रन्थों के अतिरिक्त भाषाव्याकरण नामक एक और ग्रन्थ दिया है जो मसादिर-ए-भाषा का ही अन्य नाम प्रतीत होता है। खोज में इनका एक ग्रन्थ 'अँग्रेजी-हिन्दी-फारसी बोली' मिला है।[१] यह शब्द-कोष है।

शुक्ल जी के अनुसार लल्लू जी का देहान्त संवत् १८८२ में हुआ है। विहारी बिहार में पण्डित अम्बिकादत्त व्यास ने लल्लू जी लाल का १० पृष्ठों में विस्तृत और अति उत्तम परिचय दिया है। रतनाकर जी ने इस सारे प्रसङ्ग को विहारी सतसई सम्बन्धी साहित्य में उद्धृत कर दिया है।[२] इस उद्धरण का सारांश यह है—

लल्लू जी लाल आगरे के रहने वाले गुजराती औदीच्य ब्राह्मण थे। इनके पिता का नाम चैनसुख था। यह पौरोहित्य करने वाले निर्धन ब्राह्मण थे। जीविकार्थ भ्रमण करते हुए लल्लू जी लाल संवत् १८४३ में मुर्शिदाबाद पहुँचे। यहाँ यह ७ वर्ष तक रह गये। संवत् १८५० में यह कलकत्ते गये। यहाँ प्रसिद्ध रानी भवानी के पुत्र रामकृष्ण से परिचय हुआ। उनके साथ यह नाटौर आये, पर पुनः जीविकाहीन हो कलकत्ते गये, जहाँ बड़ा कष्ट उठाया। इसी आर्थिक कष्ट की दशा में यह जगन्नाथपुरी गये। वहाँ से जब पुनः कलकत्ता लौटे, तब डॉक्टर गिलकिरिस्त से भेंट हुई, उन्होंने उनकी सहायता की इन्हें हिन्दी ग्रन्थ लिखने को दिये और मजहर अली विला तथा मिर्जापुर काजम अली जवाँ दो सहायक लेखक दिये। तब लल्लू लाल ने एक वर्ष में, संवत १८५७ में, चार ग्रन्थ लिखे—(१) सिंहासन बत्तीसी, सुन्दरदास कृत व्रजभाषा पद्यानुवाद का गद्यानुवाद, (२) वैतालपचीसी, सूरत मिश्र कृत व्रजभाषा पद्यानुवाद का गद्यानुवाद, (३) शकुन्तला नाटक, संस्कृत से अनुवाद, (४) माधोनल, मोतीराम कृत व्रजभाषा पद्यानुवाद से गद्यानुवाद। एक बार कोई अँग्रेज कलकत्ता में गङ्गा में डूब रहा था। लल्लू जी ने उसे तैर कर बचा लिया था। उसने कृतज्ञ होकर इनके लिये छापाखाने की व्यवस्था कर दी। इसी साल संवत् १८५७ में यह फोर्ट विलियम कॉलेज में पण्डित नियुक्त हुए। यह बहुत विद्वान् न थे। इनका सारा काम संस्कृत ग्रन्थों के व्रजभाषा अनुवाद पर निर्भर रहा है। कलकत्ते से

---

(१) खोज रिपोर्ट १९०६।१९२ बी, १९०९।१७४ ए (२) नागरी प्रचारिणी पत्रिका, वर्ष ६, अङ्क २, श्रावण १९८५, पृष्ठ १५४-६४

बहुत रुपया कमा कर यह आगरा आये। यहाँ अच्छा घर बनाकर यह फिर कलकत्ते चले गये। कलकत्ते ही में इनकी मृत्यु हुई। लल्लू जी को कोई सन्तति न थी। इनके पास अँग्रेजों की बहुत-सी चिट्ठियाँ थी, जिनको अँग्रेजों को दिखाकर इनके वंशज दयाल जी ने आगरा में एक स्कूल खोला था जो बाद में आगरा कालेज हुआ। लल्लू जी सम्भवतः राधावल्लभ-सम्प्रदाय के वैष्णव थे। कितनी वर्ष की वय में और कब लल्लू जी का देहान्त हुआ, व्यास जी को पता नहीं।

सरोज में लल्लू जी के नाम से सभाविलास से जो रचनाएँ उद्धृत हैं, वे इनकी नहीं हैं। सभाविलास जैसा कि पहले कहा गया है, पुराने कवियों की रचनाओं का संग्रह है।

८०५।६७५

(६) लाल गिरधर, वैसवारे वाले, सं० १८०७ में उ०। इन महाराज ने एक ग्रन्थ नायिका-भेद का पदों में ऐसा सुन्दर बनाया है, जिसके देखने से इनका पाण्डित्य प्रकट होता है।

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध में कोई सूचना सुलभ नहीं। ग्रियर्सन में (३४५) इनके कुण्डलियाकार गिरिधर कविराय होने की हास्यास्पद सम्भावना की गई है।

८०६।६७६

(७) लालमुकुन्द कवि, संवत् १७७४ में उ०। इनके शृङ्गार के बहुत सुन्दर कवित्त हैं

सर्वेक्षण

लालमुकुन्द कवि, मुकुन्द लाल बनारसी[1] से अभिन्न हैं, ग्रियर्सन (३६१) में यह सम्भावना व्यक्त की गई है। विनोद (७६१) में लाल मुकुन्द को बनारसी कहा गया है। स्पष्ट ही मिश्रबन्धु इन्हें बनारसी कहकर मुकुन्दलाल से इनकी अभिन्नता स्वीकार करते हैं। लालमुकुन्द का समय संवत् १७७४ और मुकुन्दलाल का १८०३ दिया गया है। मुकुन्दलाल के शिष्य प्रसिद्ध रघुनाथ कवीश्वर का रचनाकाल संवत् १७६०-१८१० है। यही इनका भी समय होना चाहिये। संवत् १७७४ इनका जन्मकाल नहीं हो सकता। यह रचनाकाल ही है। मुकुन्दलाल का एक ग्रन्थ 'श्रीलालमुकुन्द विलास[2]' खोज में मिला है। यह नायिका भेद का ग्रन्थ है।

८०७।६७५

(८) लालचन्द कवि। इनके कवित्त और कुण्डलिया बहुत कूट हैं।

---

(१) नागरी प्रचारणी पत्रिका, कवि संख्या ६३४ (२) खोज रिपोर्ट १६०३।६४

सर्वेक्षण

विनोद में कई लालचन्द हैं। यथा—

(१) लालचन्द ४८७।१, लीलावती भाषा बन्ध के रचयिता। रचनाकाल संवत् १७३६ सोभाग सूरि के शिष्य तथा वीकानेर नरेश अनूप सिंह कोठारी नेणसी के आश्रित इनका उल्लेख राजस्थान रिपोर्ट, भाग १ और २ में भी हुआ है। रिपोर्ट के अनुसार यह खरतर गक्षीय जैन यति थे। श्री शान्तिहर्ष जी के शिष्य एवं कविवर जिन हर्ष के गुरुभ्राता लाभवर्धन जी का, दीक्षा से पूर्ववर्त्ती नाम लालचन्द था। इन्होंने संवत् १७५३ के भादों सुदी में अक्षयराज के लिये स्वरोदय की भाषा टीका बनाई। रिपोर्ट के अनुसार आप के अन्य ग्रन्थ ये हैं :—

(१) विक्रम नव सो कन्था चौपाई एवं खापरा चोर चौपाई। इसकी रचना जैतारन में श्रावण सुदी १३ को संवत् १७२३ में हुई।

(२) लीलावती रास, रचनाकाल कार्तिक सुदी १४, सम्वत् १७२८।

(३) लीलावती रास, (गणित), संवत् १७३६, असाढ़ बदी ५, को बीकानेर में कोठारा जैतसी के लिये रचित।

(४) धर्मबुद्धि पापबुद्धि रास, संवत् १७४२ में सरसा में रचित।

(५) पाण्डव चरित्र चौपाई, रचनाकाल संवत् १७६७।

(६) विक्रम पञ्च दण्ड चौपाई, रचनाकाल फाल्गुन १७३३।

(७) शकुन दीपिका चौपाई, रचनाकाल वैशाख सुदी ३, गुरुवार, संवत् १७७०।

(२) लालचन्द सांगानेरी, विनोद ६११।१, रचनाकाल संवत् १८१८ 'षट्कर्मोपदेश माला, वरांग चरित्र, विमलनाथ पुराण, शिखरविलास, आगमशतक, 'सम्यक्त्व कौमुदी, इन ६ ग्रन्थों के रचयिता।

(३) लालचन्द पाण्डेय ६५०।१, वारांगना चरित्र के रचयिता, रचनाकाल संवत् १८२७।

(४) लालचन्द जैन १०२६।१, श्रीपाल चौपाई के कर्त्ता, रचनाकाल संवत् १८३७ यह चारों लालचन्द राजस्थानी हैं। सरोज के लालचन्द इन चारों से भिन्न कोई उत्तरप्रदेशी अन्य कवि प्रतीत होते हैं। इनकी भाषा तो इन्हें अवध प्रदेशीय घोषित करती है।

८०८।६८६

(६) लालनदास ब्राह्मण, डलमऊ वाले, संवत् १६५२ में उ०। यह महाराज बड़े महात्मा हो गये हैं। इनके कवित्त शान्त रस के हैं। हजारे में भी कालिदास ने इनका नाम लिखा है।

सर्वेक्षण

लालनदास का असल नाम लालचददास था। यह रायबरेली जिले के अन्तर्गत डलमऊ के

निवासी थे। सरोजकार ने इन्हें भ्रम से ब्राह्मण समझ लिया है। यह हलवाई थे। इन्होंने भागवत-दशम स्कन्ध का दोहा-चौपाइयों में हिन्दी अनुवाद प्रस्तुत किया है। इस अनुवाद की प्रतियाँ भागवत-भाषा[1] और हरि-चरित्र नाम से खोज में मिली हैं। इस ग्रन्थ में रचनाकाल दिया हुआ है, पर परस्पर मेल नहीं खाता। १६०६।१८६ में इसका रचनाकाल संवत् १५६५ विक्रमी, १६२३।२३८ में संवत् १५८७ विक्रमी, १६२६।२६१ ए में संवत् १५८५ विक्रमी, १६२६।२६१ बी और विहार रिपोर्ट, भाग २, में संवत् १५२७ वि० दिया गया है। १६२३ वाली खोज रिपोर्ट में रचनाकाल सूचक अंश यह है—

संवत पंद्रह सै सत्यासी जहिया
सप्तै विलंवित वरतै तहिया
मास असाढ़ कथा अनुसारी
हरि वासर रजनी उजियारी

विहार रिपोर्ट, भाग २, में प्रथम चरण का पाठ यह है—

संवत पन्द्र से सत्ताइस जबही

अन्य रिपोर्टों में रचनाकाल सूचक अंश उद्धृत नहीं हैं।

कवि ने ग्रन्थ के आरम्भ में अपने को लालच हलुवाई कहा है।

विघन हरन संतन सुखदाई
चरन गहे लालच हलुवाई

—विहार रिपोर्ट और खोज रिपोर्ट १६२३।२३८

कवि अपनी छाप जन लालच भी देता है, जैसे—

(१) **भगत हेतु जन लालच, हरसित वन्दौं पाय**
श्री गोपाल गुन गावौं, बुधि दे सारद माय

(२) **सकल कामना पूरि कै, भगति करहि मनलाय**
जन लालच के स्वामी, बासुदेव गृह जाय

—विहार रिपोर्ट, भाग २

(३) **अस जगदीश्वर जो है तेहि सुमिरहु नर नाह**
चरन सरन जन लालच हरि सुमिर मनमाँह

इनका एक नाम आसानन्द भी प्रतीत होता है। हरि-चरित्र की पुष्पिका में यह नाम आया है।

---

(१) खोज रिपोर्ट १६२६।२६१ ए, बी (२) वही १६०६।१८६, १६२३।२३८, १६४१।२४२ क ख, विहार रि० २।१०५

(१) इति श्री हरिचरित्रे दसम स्कन्धे श्री भागवते महापुराने कृष्णवैकुण्ठसिधारनो नाम ६० अध्याय । लालच आसानन्द कथा सम्पुरन । —खोज रिपोर्ट १९२३।२३८

(२) एती श्री हरी चरित्रे दसम स्कन्धे श्री भागवते महापुराने श्री ब पुत्र प्रसादना नाम छेवानवेमो अध्यायः ९६ ऐती श्री पोथी भागवत तथा क्रीत लालच आसानन्द के संपुरन जो पोथी मो देखा सो लीखा मम दोख न दीअते । —विहार रिपोर्ट, भाग २

इस ग्रन्थ में कवि ने अपने को रायबरेली का रहने वाला कहा है—

रायबरेली उत्तम वासा
लालच राम नाम की आसा

विहार खोज रिपोर्ट, भाग २, के अनुसार इन्हीं लालचदास का एक अन्य ग्रन्थ विश्वपुराण और भी है, जिसका विवरण उक्त रिपोर्ट की ग्रन्थ संख्या १०६ पर है।

खोज-रिपोर्टों में यद्यपि लालनदास ब्राह्मण डलमऊ वाले की एकता लालचदास हलवाई, रायबरेली वाले से स्थापित की गई है। फिर भी अविश्वास के लिये अवकाश है। सरोज में लालनदास के दो छन्द उद्धृत हैं। इनमें से यह दोहा इनका परिचय देता है—

दालभि ऋषि की दलमऊ सुरसरि तीर निवास
तहाँ दास लालन बसे करि अकाश की आस

इस दोहे में स्पष्ट रूप से लालनदास और डलमऊ की चर्चा है। अभी तक रिपोर्टों के किसी भी उद्धृत अवतरण में लालनदास पाठ नहीं मिला है। यद्यपि इस सम्बन्ध में अभी और प्रकाश की आयश्यकता है, फिर भी बहुत सम्भावना यही है कि दोनों कवि और दोनों ग्रन्थ अभिन्न हों। सरोज के संवत् अशुद्ध हैं। इस समय के बहुत पहले कवि नविगत हो गया रहा होगा।

८०९।६९२

(१०) लाला पाठक कवि, रुकुमनगर वाले, संवत् १८३१ में उ०। इनका बनाया हुआ शलिहोत्र बहुत सुन्दर है।

सर्वेक्षण

लाला पाठक के सम्बन्ध में कोई सूचना सुलभ नहीं।

८१०।६७९

(११) लोने कवि, बन्दीजन २, बुन्देलखण्डी, संवत् १८७६ में उ०। इन्होंने शृङ्गार की सुन्दर कविता की है।

सर्वेक्षण

लोने बुन्देलखण्डी के भी सम्बन्ध में कोई सूचना सुलभ नहीं।

८११।६७८

(१२) लोने सिंह १, बाछिल मितौली, जिले खीरीवाले, संवत १८९२ में उ०। यह कविता में महानिपुण और क्षात्रधर्म में बड़े साहसी क्रियावान थे। इन्होंने भागवत के दशम स्कन्ध की नाना छन्दों में भाषा की है। इन्होंने लड़ाई में महाशूर वीरता के साथ सिर दिया।

सर्वेक्षण

लोने दास का एक ग्रन्थ राम स्वर्गारोहण खोज में मिला है।[1] इसका रचनाकाल संवत १८९२ है।

मार्ग मास विधि अष्टमी गुरु वासर सुखपुंज
कथा लिखी सम्पूर्ण तब सुमिरि राम पद कंज
एक सहस और आठ सत, पुनि बानबै उदार
लोने तेहि संवत लिखेउ कथा मुदित विस्तार

—खोज रिपोर्ट १९२३।२४९

ग्रन्थ में लोने छाप है। न तो ग्रन्थारम्भ में और न पुष्पिका में ही ग्रन्थकर्त्ता के सम्बन्ध में कोई सूचना है। लोने नाम से ८१० संख्यक लोने बन्दीजन बुन्देलखण्डी और ८११ संख्यक लोने सिंह दोनों का बोध हो सकता है। पर तीन कारणों से यह लोने सिंह की ही रचना प्रतीत होती है। एक तो दोनों प्राप्त कृतियाँ अवध के अन्तर्गत बाराबंकी और लखनऊ में मिली हैं और लोने सिंह भी अवध के ही अन्तर्गत खीरी के रहने वाले थे। दूसरे लोने बुन्देलखण्डी कवित्त-सवैया रचने वाले शृङ्गारी कवि हैं और अवध वाले लोने सिंह भागवत दशम स्कंध के विधित छन्दों में अनुवाद करने वाले धार्मिक प्रवृत्ति के पुरुष हैं। राम स्वर्गारोहण भी धार्मिक रचना है और नाना छन्दों में लिखी गई हैं। तीसरे, संयोग की बात यह भी है कि लोने सिंह का सरोज में जो समय दिया गया है, वही इस ग्रन्थ का रचनाकाल है।

८१२।६८२

(१३) लीलाधर कवि, संवत् १६१५ में उ०। यह कवि महाराज गजसिंह जोधपुर के यहाँ थे और इनका प्रमाण सत्कवि करते आये हैं।

---

(१) **खोज रिपोर्ट १९२३।२४९, १९२६।२७२**

सर्वेक्षण

जोधपुर नरेश गज सिंह का शासनकाल संवत् १६७७-६५ है, अतः सरोज में दिया संवत् १६१५ ठीक नहीं। सूदन एवं दास ने इनका नामोल्लेख अपने कविनामावली वाले छन्दों में किया है। इसीलिये सरोजकार ने लिखा है कि इनका प्रमाण सत्कवि करते चले आये हैं। विनोद (२५१) का अनुमान है कि इन्होंने सम्भवतः नखशिख का कोई ग्रन्थ बनाया था। इन्होंने यमक का अधिक ध्यान दिया है।

८१३।६८०

(१४) लक्ष्मणदास कवि। इन्होंने पद बहुत सुन्दर बनाये हैं।

सर्वेक्षण

खोज में कई लक्ष्मणदास मिले हैं। अभिन्नता सिद्ध हो जाने पर इनकी संख्या कम भी हो सकती है।

(१) लक्ष्मणदास छुई खदान के राजा, सम्वत् १८२४ और १६१४ के बीच वर्तमान, राधाकृष्ण रसतरङ्गिणी[1] के कर्त्ता। ग्रन्थ की रचना संवत् १६१४ में हुई।

ओनैस सो चौदा बार पुनि गुरु दिन हो
भादो सुदि तिथि परवा वजे दस तिहि छिन हो
पुरो भयो तेह बेरि कृपा हरि गुरु करि हो
बार बार कर जोरि प्रभुपद सिरधरि हो।

(२) लछिमनदास—भगवत् स्तुति सम्बन्धी १०२ दोहों के एक संग्रह 'दोहाओं का संग्रह'[2] के रचियता। ग्रन्थ का प्रतिलिपि संवत् १८८६ है।

(३) लखनदास—गुरु चरितामृत[3] के रचयिता। विनोद में (१८६६) इन्हीं दो और तीन को न जाने किस आधार पर एक में मिला दिया गया है।

(४) लक्ष्मण दास—संवत १६०५ के लगभग वर्तमान। गोपीचन्दभरथरी लाल[4] और प्रहलाद चरित्र सङ्गीत[5] के रचयिता।

(५) लछिमन—यह कोई कबीर पन्थी कवि हैं। इन्होंने निर्वाण रमैनी[6] की रचना की है।

सरोज के लक्ष्मणदास सगुणोपासक भक्त हैं। इनका कीर्तन सम्बन्धी एक पद सरोज में उद्धृत है जिसमें भगवान के नामों की ही परिगणना है।

---

(१) खोज रिपोर्ट १६४१।२३५ (२) वही, १६०६।२८४ ए (३) वही, १६०६।१६८ (४) वही, १६२६।२५५ ए, बी (५) वही, १६२६।२५५ सी, डी (६) वही, १६०६।२८३

नामै सब सुख विलास, लछमन दासानुदास,
अज्ञ अल्प बुद्धि चरन सरन परि पुकारी ।

ऊपर के पाँच लक्ष्मण दासों में से कबीर पन्थी लछिमनदास का अस्तित्व तो निश्चित रूप से अलग है। शेष चार, एक कवि भी हो सकते हैं। राधाकृष्ण रसतरङ्गिणी वाले पहले लक्ष्मण दास तो सरोज वाले लक्ष्मणदास प्रतीत होते हैं।

ग्रियर्सन में इन लक्ष्मणदास का विवरण ७७६ संख्या पर है। इन्हें राजा खेमपाल राठौर का पुत्र कहा गया है। यह कथन वस्तुतः इन लक्ष्मणदास से सम्बन्धित नहीं है। ७७५ संख्या पर रामराय राठौर का विवरण है। यह रामराय राठौर खेमपाल राठौर के पुत्र थे। प्रेस के भूतों की की बदौलत इनसे सम्बन्धित उक्त कथन दो पंक्ति नीचे खिसक आया है और लक्ष्मणदास के विवरण से चिपक गया है।

८१४।६८१

(१५) लक्ष्मण सिंह, सं० १८१० में उ०। इनके शृङ्गार के सुन्दर कवित्त हैं।

सर्वेक्षण

अभिज्ञान शाकुन्तलम् के प्रसिद्ध अनुवादक राजा लक्ष्मण सिंह को छोड़कर, खोज में तीन अन्य लक्ष्मण सिंह मिले हैं—

(१) लक्ष्मण सिंह, दीवान राज सिंह के पुत्र, ओड़छा निवासी, तहरौली के जागीरदार, सं० १७९४ के लगभग वर्तमान और शाहजू पंडित के आश्रयदाता।[1]

(२) लक्ष्मण सिंह, प्रधान, टीकमगढ़ निवासी कायस्थ, सं० १८६० के लगभग उपस्थित अर्जुनसिंह के आश्रित, सभाविनोद के रचयिता।[2]

विनोद (११६१) में इन्हीं का विवरण है। इन्हें सभा विनोद, रघुवीर प्रमोद, प्रतिमाल परिणय, इन तीन ग्रन्थों का कर्त्ता माना गया है।

(३) लक्ष्मण सिंह राजा विजावर, राज्यकाल सं० १८९०-१९०४। इन्होंने संस्कृत और भाषा दोनों में रचना की है। यह नृपनीतिशतक, समयनीतिशतक भक्तिप्रकाश और धमप्रकाश, इन चार ग्रन्थों के रचयिता हैं।[3]

यह तीनों लक्ष्मण सिंह बुन्देलखण्डी हैं। सरोज के लक्ष्मण सिंह इनमें से ही कोई हैं अथवा अन्य कोई कुछ कहा नहीं, जा सकता।

---

(१) खोज रिपोर्ट १९०६।१०७ (२) वही, १९०६।६६, (३) वही १९०६।६५ए, बी, सी, डी।

सरोज में इन्हें कहा तो शृङ्गारी गया है, पर जो कवित्त इनकी कविता के उदाहरण में उद्धत किया गया है, उसमें घोड़े की जातियाँ गिनाई गई हैं।

८१५।६८३

(१६) लच्छू कवि, सं० १८२८ में उ० । ऐज़न । इनके शृङ्गार के सुन्दर कवित्त हैं।

सर्वेक्षण

लच्छू के सम्बन्ध में कोई सूचना सुलभ नहीं।

८१६।६८४

(१७) लछिराम कवि १, होलपुर के बन्दीजन । विद्यमान हैं। यह कवि शिव सिंह सरोज नामक नायिका भेद का एक ग्रन्थ हमारे नाम से वना रहे हैं।

सर्वेक्षण

यह लछिराम जी ब्रह्म भट्ट थे और कविवर होल के वंशज थे। यह अलङ्कारी लछिराम के नाम से प्रसिद्ध थे। अमोढ़ा जिला बस्ती वाले प्रसिद्ध लछिराम से यह भिन्न हैं। शिव सिंह ने सरोज के प्रणयन में इनसे बड़ी सहायता ली थी। ऐसा खोज रिपोर्ट का कथन है।[1] यह असम्भव भी नहीं। स्वयं सरोजकार के अनुसार इन लछिराम का इनसे सम्पर्क था और यह शिव सिंह के नाम पर शिव सिंह सरोज नामक नायिका भेद का ग्रन्थ बना रहे थे। महाराज वलरामपुर और महाराज बैल इत्यादि के दरबारों में इनका बड़ा सम्मान था। इनका देहावसान सं० १९५७ के आस-पास हुआ। इनके खण्डित असमाप्त नायिका भेद के ग्रन्थ कृष्ण विनोद[2] की प्राप्ति के समय सं० १९८० के आस-पास इनके एक पुत्र और दो पौत्र जीवित थे। इनके पौत्रों के अब भी जीवित रहने की सम्भावना है। कृष्ण विनोद में ग्रन्थारम्भकाल दिया गया है, जो बहुत स्पष्ट नहीं है।

> इन्दु[1] मानि निधि[9] भूमि[1] शुचि, शुभ्र त्रयोदसि जानि
> कृष्ण विनोद अरम्भ किय, गुरु वासर सुभ जानि

यह ग्रन्थ १९०१, १९११, १९२१, १९३१, १९४१, १९५१, में से किसी साल रचा गया। रचना तिथि ज्येष्ठ या आषाढ़ शुक्ल त्रयोदशी, गुरुवार है।

---

(१) खोज रिपोर्ट १९२३।२३३ (२) वही १९२३।२३३।

८१७।६८७

(१८) लछिराम कवि २, व्रजवासी । इनके पद रागसागरोद्भव में हैं ।

सर्वेक्षण

खोज में लछिराम, व्रजवासी के निम्नलिखित १० ग्रन्थों का पता चलता है––

(१) करुणाभरण नाटक, १९००।७४, १९०२।६२, १९०६।२८५ बी, राज० रिपोर्ट, भाग १, संख्या ४२ । इस ग्रन्थ में कवि ने गोपियों एवं कृष्ण के कुरुक्षेत्र में पुर्नमिलन का वर्णन किया है । यह ग्रन्थ यद्यपि सात अङ्कों में विभक्त है, फिर भी नाटक न होकर व्रजभाषा की दोहा-चौपाइयों में लिखित प्रबन्ध है । ऐसा प्रतीत होता है कि कवि ने वस्तुतः करुणाभरण नामक नाटक लिखा, मित्रों को सिखाया, और उसका अभिनय किया, तदुपरान्त उसे प्रबन्ध-काव्य का रूप दे दिया पर नाम के साथ नाटक शब्द चिपका रह गया ।

रसिक भक्त पण्डित कविन कही महाफल लेहु
नाटक करुणाभरण तुम लछीराम करि देहु १

प्रेम बढ़ै मन निपट ही, अरु आवै अति रोइ
करुना और सिंगार रस, जहाँ बहुत करि होइ २

लछीराम नाटक करयो, दीनौ गुनिन पढ़ाइ
भेष देखि नर्तन निपुन लाए नरन सधाइ ३

सुहृद मंडली जोरि तहँ, कीनौ बड़ौ समाज
जा उनि नाच्यो सो कह्यो कविता में सुख साज ४

—खोज रिपोर्ट, १९००।७४

यह लछीराम प्रसिद्ध कवीन्द्राचार्य सरस्वती के शिष्य थे । कवीन्द्राचार्य शाहजहाँ, (जीवन-काल सं० १६४८-१७१६) के समकालीन थे और उसके द्वारा समादृत भी हुए थे । यही समय लछीराम जी का भी होना चाहिये । इस ग्रन्थ के अन्त में कवीन्द्राचार्य का उल्लेख गुरु रूप में हुआ है ।

यों कवीन्द्र सरसती रिझाए
गाए वचन वेद के गाए
जब कवीन्द्र यों लई परिख्या
तब जानी सतगुर की सिख्या

—राज रिपोर्ट, भाग १

विनोद में इस नाटक का नाम करुणानाटक और इसका रचनाकाल सं० १७९१ दिया

गया है, जो ठीक नहीं। इस ग्रन्थ की पुष्पिका से ज्ञात होता है कि यही लछिराम अपनी छाप 'कृष्ण जीवन लछिराम' रखते थे।

"इति श्रीकृष्ण जीवनि लछीराम विरचितायां कर्णाभरण नाटक वर्ननम समाप्तं अङ्क शुभमस्तु संवत् १७४३ वर्षे अगहन वदी पञ्चमीं भौमे पुस्तक शुभम्।"

राग कल्पद्रुम में इन्हीं लछिराम के पद कृष्ण जीवन लछिराम की छाप से मिलते हैं।

(२) योग सुधानिधि, १९०६।२८५ ए। यह संस्कृत के सुप्रसिद्ध ग्रन्थ योग-वाशिष्ठ का अनुवाद इस पर है। इनके गुरु कवीन्द्राचार्य ने भी ग्रन्थ का अनुवाद किया था।[1]

(३) भागवत के एक अंश का भाषानुवाद, १९०९।१६३। यत्र-तत्र छन्दों में कवि की छाप है।

(क) लयो जु धोखो लछी कहि, चन्द लछमी आनन
आनन चन्दहि देखि कै, सोभा उपजी कानन

(ख) सबरु के पर मिलिहै काम
सिव जू कही तो लछीराम

(४) दम्पति रङ्ग राज० रिपोर्ट, भाग २, पृष्ठ २१। नायिका भेद का ग्रन्थ है।

करि प्रनाम मन वचन क्रम, गहि कविता को ध्यवहारु
प्रकृति पुरुष बरनन करूँ, अघ मोचन सुख सारु १
रसिक भगत कारन सदा, धरत अलख अवतार
कान्ह कुँवर रवनी रवन, प्रगट भए संसार २
जिहि विधि नाइक नाइका, वरनै रिसिन बनाइ
लछीराम तिहि विधि कहत, सो कवियन की सिख पाइ ३

ग्रन्थ का प्रतिलिपिकाल सं १७०९ है।

(५) राग विचार, राज० रिपोर्ट भाग, २, पृष्ठ, ६२। इस ग्रन्थ में हनिवन्त के अनुसार ९८ पद्यों में राग विचार है।

देव रिषिन कीने विविध, मत सङ्गीत विचार
लछीराम हनिवन्त मतु कहे सुमति अनुसार
धैवतु ग्रह सुर रागना अरु कामोद सुनाउ
लछीराम ए जानि के, तन मन आणद पाउ ९७

इन पाँच उपलब्ध ग्रन्थों के अतिरिक्त राज० रिपोर्ट, भाग २, पृष्ठ १५७, में इनके बनाये निम्नलिखित ५ अन्य ग्रन्थों का नाम निर्देश है।

(१) ज्ञानानन्द नाटक (२) ब्रह्मानन्दनीय (३) विवेक सागर ज्ञान कहानी (४) ब्रह्म तरङ्ग (५) बुद्धि बल कथा, रचना काल सं० १६८१

प्रथम चारों ग्रन्थ बीकानेर की अनूप संस्कृत लाइब्रेरी में हैं। पाँचवें ग्रन्थ का उल्लेख इटली के प्रसिद्ध राजस्थानी के प्रेमी विद्वान एल० पी० टेसटरी के सूचीपत्र में हुआ है। उक्त राज० रिपोर्ट में ज्ञानानन्द नाटक से निम्नाङ्कित अंश भी उद्धृत किया गया है। इससे कवि के जीवन की पर्याप्त जानकारी प्राप्त होती है।

देस भदावर अति सुख वास
तहाँ जोयसी ईसुरदास
राम कृष्ण ताके सुत भयो
धर्म समुद्र कवि तामसु छयो
तिनकें सुत शिरोमणि जानि
माथुर जाति चतुरई खानि
मोहन मिश्र सुगम ताको सुत
बसत गम्भीर सकल कलायुत
पुनि अवधानि परम विचित्र
दोउ लच्छीराम सो मित्र
तीनौं मित्र सने सुख रहे
धन्नि प्रीति सब जग के कहे

अथ लच्छीराम वृत्तान्त कहीयतु है—

जमुना तीर भई इक गाऊँ
राइ कल्याण बसे तिहि ठाऊँ
लछीराम कवि ताको नन्दु
जा कविता सुनि नासे दन्दु
राइ पुरन्दर कर लघु भाई
तासों मित्रन बात चलाई
नाटक ज्ञानानन्द सुनावो
देहु सखनि अरु तुम सुख पायो

इस उद्धरण से ज्ञात होता है कि लछीराम, भदावर राज्य के अन्तर्गत, यमुना तट स्थित, मई नामक गाँव के रहने वाले थे। भदावर राज्य यमुना के दोनों ओर ग्वालियर और आगरा जिले के वर्तमान स्थान पर विस्तृत था। लछीराम के पिता का नाम राय कल्याण और बड़े भाई का राय पुरन्दर था। खोज रिपोर्ट १६०६।२८५ में इनके पिता का नाम कृष्ण जीवन कल्याण दिया गया है। इनका वास्तविक नाम कल्याण ही है। कृष्ण जीवन एक रहस्यमय उपाधि है, जिसका प्रयोग पिता और पुत्र ने समान रूप से किया है। इन लछीराम की मोहन और अवधानि नामक व्यक्तियों से परम मित्रता थी। इन्हीं के कहने से कवि ने ज्ञानानन्द नाटक रचा।

कवि ने अपने परिचय के ही समान अपने मित्र मोहन का भी विस्तृत परिचय दिया है। मोहन जाति के माथुर ब्राह्मण थे। इनके पिता का नाम शिरोमणि, पितामह का राम-कृष्ण और प्रपितामह का जोयसी ईसुरदास था। सम्भवतः यह सब भी कवि थे। इसीलिए इनका विवरण दिया गया है। रामकृष्ण के सम्बन्ध में तो स्पष्ट कहा गया है कि कविता में इनका यश छाया हुआ था।

"धर्म समुद्र कविता यस छयो"

सरोज में एक कवि जोयसी हैं, जिनको सं० १६५८ में उ० कहा गया है। सम्भवतः यह जोयसी यही जोयसी ईसुरदास हैं।

इस प्रकार लछीराम व्रजवासी का रचनाकाल सं० १६८१, बुद्धि बल कथा का रचनाकाल है और यह शाहजहाँ के शासनकाल के उत्तरार्द्ध में सं० १७०० के आस-पास उपस्थित थे।

८१८।६६३

(१६) लक्ष्मणशरण दास कवि। ऐजन। इनके पद रागसागरोद्भव में हैं

सर्वेक्षण

सरोज में लक्ष्मणशरण दास का निम्नाङ्कित पद उद्धृत है—

श्री वल्लभ पुरुषोत्तम रूप
सुन्दर नयन विसाल कमल रँग, मुख मृदु बोल अनूप
कोटि मदन वारौं अंग अंग पर, भुज मृनाल अति सरस सरूप
देवी जी बड़धारनि प्रगटी दास सरन लछिमन सुत भूप

सरोजकार ने अन्तिम चरण में आए 'दास सरन लछिमन' से कवि नाम लक्ष्मणशरण दास की उद्भावना की है। यह उद्भावना कोरी कल्पना है। इस पद में महाप्रभु वल्लभाचार्य की स्तुति है। वल्लभाचार्य जी लक्ष्मण भट्ट के पुत्र थे। इस पद के अन्तिम चरण का अर्थ है, यह दास

लछिमन सुत भूप अर्थात् वल्लभाचार्य की शरण में है। इस पद का वास्तविक रचयिता कौन है, यह स्पष्ट नहीं।

अतः सरोज में उल्लिखित और अभीष्ट लक्ष्मणशरण दास नाम के कोई कवि नहीं हुए। राग कल्पद्रुम में इस नाम के किसी कवि की कोई अन्य रचना नहीं है। हाँ, उन्नीसवीं शताब्दी में अयोध्या में एक मधुकर जी हुए हैं, जिनका उपनाम लक्ष्मणशरण था, पर यह सरोज के लक्ष्मणशरण दास नहीं हैं। यह सरोज में उद्धृत उदाहरण से ही स्पष्ट है।

८१९।६८८

(२०) लोधे कवि, सं० १७७० में उ०। इनके कवित्त हजारे में हैं।

सर्वेक्षण

लोधे की कविता कालिदास के हजारे में थी, अतः सं० १७५० के पूर्व इनका अस्तित्व स्वतः सिद्ध है। विनोद ५११ के अनुसार इनका जन्म संवत १७१४ और रचना संवत १७४० है। सरोज के अनुसार यह सं० १७७० में उपस्थित थे। इस कवि के सम्बन्ध में कोई अन्य प्रामाणित सूचना सुलभ नहीं।

८२०।६८९

(२१) लोकनाथ कवि, सं० १७८० में उ०। इनकी प्रशंसा दास कवि ने काव्य-निर्णय की भूमिका में की है।

सर्वेक्षण

विनोद (५३६) के अनुसार लोकनाथ जी राधावल्लभी सम्प्रदाय के अनुयायी थे। खोज में इनका एक ग्रन्थ हित चौरासी की टीका मिला है।[१] इससे भी इनका राधावल्लभीय होना स्पष्ट है। यह बूँदी के रहने वाले थे। सं० १७६० में उपस्थित थे। यह बूँदी के महाराव बुद्ध सिंह के आश्रित थे। इनकी पत्नी भी कवयित्री थीं। इस प्रसङ्ग की एक कथा विनोद में दी हुई है। एक बार रावराजा बुद्ध सिंह काबुल जा रहे थे। कवि लोकनाथ को भी साथ चलने का हुक्म हुआ। तब इनकी पत्नी ने यह छन्द लिखकर भेजा और इन्हें काबुल जाने में मुक्ति मिली।

मैं तो यह जानी ही कि लोकनाथ पाय पति
संग ही रहौंगी अरधंग जैसी गिरिजा

---

(१) खोज रिपोर्ट १९०६।२८८

एते पै विलच्छन ह्वै उत्तर गमन कीनो
कैसे के मिटत जो वियोग विधि सिरजा
अब तौ जरूर तुम्हें अरज किये ही बनै
वेउ दुज जानि फरमाइहैं कि फिर जा
जो पै तुम स्वामी, आज कटक उलंघि जैहौं
पाती माँहि कैसे लिखूँ मिश्र मीर मिरजा

विनोद में इनके एक और ग्रन्थ 'रसतरङ्ग' का उल्लेख है।

महाराव बुद्ध सिंह औरङ्गजेब के आदेशानुसार सं० १७५३ में काबुल जा रहे थे। अतः सं० १७५२ के पहले ही लोकनाथ विवाहित हो चुके थे। यदि उस समय इनकी अवस्था ३० वर्ष की रही हो, तो इनका जन्म काल सं० १७२० के लगभग होना चाहिए। कवि रत्नमाला में मुन्शी देवी-प्रसाद ने लिखा है कि लोकनाथ की मृत्यु रावराजा बुद्ध सिंह की मृत्यु के पहले हुई तथा जब बूँदी बुद्ध सिंह से छूटी, तब लोकनाथ जी के बाल-बच्चे बूँदी से अन्यत्र चले गए। बुद्ध सिंह से बूँदी पहली बार सं० १७७२ के लगभग और अंतिम बार सं० १७८७ में छूटी थी, अतः लोकनाथ की मृत्यु सं० १७८० के आस-पास हुई।[1]

बुद्ध सिंह ने लोकनाथ को इकलौरा और धौलपुर नामक दो गाँव दिए थे। इस तथ्य का उल्लेख लोकनाथ ने अपने इस कवित्त में किया है।[2]

भूषण निवाज्यो जैसे सिवा महाराज जू ने
बारन दै बावन धरा पै जस छवि है
दिल्ली साह दिलिप भए हैं खानखाना जिन
गंग से गुनी को लखे मौज मन भाव है
अब कविराजन पै सकल समस्या हेत
हाथी घोड़ा तोड़ा दे बढ़ायो बहु नाव है
बुद्ध जू दिवान लोकनाथ कविराज कहै
दियो इकलौरा पुनि धौलपुर गाँव है।

एक लोकनाथ ब्राह्मण का 'राम व्याह कवित्त' नामक ग्रन्थ खोज में मिला है।[3] यह कवि सं० १९१५ का पूर्ववती है।

---

(१) माधुरी, माघ १९८५, सम्पादकीय, (२) वही, (३) खोज रिपोर्ट १९४७।३५८

८२१।६६१

(२२) लतीफ कवि, सं० १८३४ में उ० । इन्होंने शृङ्गार के सुन्दर कवित्त बनाए हैं ।

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध में कोई प्रामाणिक विवरण उपलब्ध नहीं। विनोद (२३२७) में इन्हें सं० १९३४ में उपस्थित कवियों की सूची में परिगणित किया गया है। सरोज और विनोद के समयों में पूरे १०० वर्ष का यह रहस्यमय अन्तर सम्भवतः चक्षु दोष के कारण है।

८२२।६८५

(२३) लेखराज कवि, नन्दकिशोर मिश्र, गन्धौली, जिले सीतापुर, विद्यामन हैं। यह महाराज भट्टाचार्यों के नातेदार, गँधौली ग्राम के नम्बरदार, काव्य में महा निपुण हैं। रसरत्नाकर, लघु भूषण अलङ्कार, गङ्गा भूषण, ये तीन ग्रन्थ इनके बहुत सुन्दर है।

सर्वेक्षण

विनोद (१८१६) में लेखराज का परिचय पर्याप्त और प्रामाणिक दिया गया है, क्योंकि इनके घराने से मिश्र बन्धुओं का निकट सम्पर्क रहा है। विनोद के अनुसार नन्दकिशोर मिश्र का जन्म सं० १८८८ में लखनऊ में एक अत्यन्त सम्पन्न कुल में हुआ था। सं० १९१४ के स्वातन्त्रय समर के समय इन्हें लखनऊ छोड़कर अपनी ज़मींदारी, गँधौली जिला सीतापुर भाग जाना पड़ा। इन्हें कविता का बड़ा शौक़ था। इन्होंने नायिका भेद का ग्रन्थ रसरत्नाकर, राधा नखशिख, और अलङ्कार के दो ग्रन्थ गङ्गा भूषण और लघु भूषण ये चार ग्रन्थ रचे। गङ्गा भूषण में गङ्गा स्तुति और अलङ्कार निरूपण साथ-साथ हैं। लघु भूषण में बरवै छन्द में अलङ्कार कथन है। इनका शरीरपात सं० १९४८ में शिवरात्रि के दिन काशी में मणिकर्णिका घाट पर हुआ। इनके तीन पुत्र थे, लाल बिहारी उपनाम द्विजराज कवि, जुगुलकिशोर उपनाम ब्रजराज कवि और रसिक विहारी। ये सभी विनोद के प्रणयनकाल सन् १९१४ ई० तक दिवंगत हो चुके थे। ये तीनों सुकवि थे। खोज में इनका गङ्गाभरण मिला है।[1] इसका रचनाकाल सं० १९२६ है। गङ्गाभरण गङ्गा भूषण का अन्य नाम है।

८२३।

(२४) लोकनाथ कवि, उपनाम बनारसीनाथ।

---

(१) खोज रिपोर्ट १९२३।२४७, १९२६।२६७

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध में कोई सूचना सुलभ नहीं।

८२४।

(२५) ललितराम कवि।

सर्वेक्षण

विनोद में सं० १९४५ में उपस्थित कवियों की सूची में ललितराम का नाम २५४३ संख्या पर है। इनके एक ग्रन्थ छुटक साखी छन्द का भी उल्लेख हुआ है।

८२५।

(२६) लक्ष्मीनारायण मैथिल, सं १५८० में उ०। यह कवि खानखाना के यहाँ थे।;

सर्वेक्षण

सरोज में दिया हुआ सं० १५८० विक्रमी संवत न होकर ईस्वी-सन् है। इस सन् अथवा सं० १६३७ वि० में कवि उपस्थित था। खानखाना के समय को ध्यान में रखते हुए यही कहना पड़ता है।

विनोद (२१४) में इनके नाम पर दो ग्रन्थ चढ़े हैं—(१) प्रेम तरङ्गिनी, (२) हनुमान जी का तमाचा। ये दोनों ग्रन्थ बाद की रचनाएँ हैं, अकबर युगीन नहीं। प्रेम तरङ्गिनी को स्वयं मिश्र-बन्धुओं ने उन्नीसवीं शती की रचना कहा है।[१] हनुमान जी का तमाचा लक्ष्मण गौड़, अयोध्या वाले की कृति है।[२]

८२६।

(२७) लक्ष्मण कवि। इन्होंने शालिहोत्र भाषा बनाया।

सर्वेक्षण

शालिहोत्र के रचयिता लक्ष्मण के नाम पर विनोद में (१९७८) निम्नलिखित ८ ग्रन्थ दिये गये हैं।

---

(१) खोज रिपोर्ट १९०६।१६६ (२) वही, १९१७।१०३ बी।

(१) धर्मप्रकाश, रचनाकाल सं० १६०५ (२) भवित्प्रकाश, रचनाकाल सं १६०२ (३) नृपनीतिप्रकाश, रचनाकाल सं० १६०० (४) समयनीति शकत, रचनाकाल सं० १६०१ (५) शालिहोत्र (६) रामलीला नाटक (७) भावनाशतक (८) मुक्तिमाल, रचनाकाल सं० १६०७।

मिश्रबन्धुओं ने इनका भावनाशतक और शालिहोत्र दरबार छतरपुर के पुस्तकालय में देखा था। इन ८ ग्रन्थों में से प्रथम ४ तो विजावर के राजा लक्ष्मण सिंह के नाम पर भी विनोद में १८२७ संख्या पर चढ़े हैं। इन राजा लक्ष्मण सिंह का जन्म संवत १८६७ में हुआ था। इनका रचनाकाल सं० १८६०-१६०४ है। हो सकता है, शालिहोत्र के रचयिता सरोज वाले लक्ष्मण यही विजावर नरेश लक्ष्मण सिंह हों। यदि छतरपुर में प्राप्त शालिहोत्र इन्हीं लक्ष्मण सिंह का है, तो सरोज वाले लक्ष्मण को इनसे अभिन्न मानने के लिए कोई बाधा न रह जायगी।

खोज रिपोर्टों में निम्नाङ्कित लक्ष्मण और मिलते हैं—

(१) लक्ष्मण वाजपेयी, अयोध्या प्रसाद औध, सन्तनपुरवा वाले के भाई।[१] सं० १८६० के लगभग वर्तमान।

(२) लक्ष्मण पाठक, भवानीशङ्कर के पिता। भदैनी, काशी निवासी।[२] सं० १८७१ के पूर्व वर्तमान।

(३) लक्ष्मण, अयोध्या के गौड़ ब्राह्मण। रामानुज सम्प्रदाय के अनुयायी। सं० १६०६ के लगभग वर्तमान। राम रत्नावली[३] और हनुमान जी का तमाचा[४] के रचयिता।

(४) लक्ष्मण, ब्राह्मण, फतेहपुर, आगरा के निवासी। इनका ग्रन्थ है, नरसीलो[५]।

(५) लक्ष्मण, कबीर पन्थी, निर्वाण रमैनी के रचयिता।[६]

———

८२७।

(२८) लाजव कवि।

सर्वेक्षण

लाजव के सम्बन्ध में कोई सूचना सुलभ नहीं।

———

(१) खोज रिपोर्ट १६२३।२४ (२) वही, १६०१।१३ (३) वही, १६१७। १०३ ए (४) वही, १६१७। १०३ बी (५) वही, १६३२:१२६ (६) वही, १६०६।२८३

८२८।

(२९) लोकमणि कवि। सूदन कवि ने इनकी प्रशंसा की है।

सर्वेक्षण

सूदन ने लोकमणि का नाम प्रणम्य कवियों की सूची में दिया है। अतः यह या तो सूदन (रचनाकाल सं० १८१०) के पूर्ववर्ती हैं या उनके समकालीन। श्रीकृष्ण मिश्र ने सं० १७९८ में तिमिर दीप[१] नामक एक ज्योतिष ग्रन्थ लिखा था। इन श्रीकृष्ण मिश्र के पिता का नाम लोकमणि मिश्र था। हो सकता है, यह लोकमणि मिश्र सरोज वाले लोकमणि ही हों। यदि ऐसा है, तो इनका रचनाकाल सं० १७९८ से कुछ पूर्व होना चाहिए।

८२९।

(३०) लक्ष्मी कवि। ऐजन। सूदन कवि ने इनकी प्रशंसा की है।

सर्वेक्षण

प्रणम्य कवियों की सूची में सूदन ने इनका नाम दिया है। अतः यह या तो सं० १८१० में उपस्थित थे या इससे पूर्ववर्ती हैं।

८३०।

(३१) लाल विहारी कवि, सं० १७३० में उ०।

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध मे कोई सूचना सुलभ नहीं।

व

८३१।६९५

(१) वाहिद कवि। इनके शृङ्गार के कवित्त बहुत ही सरस हैं।

सर्वेक्षण

यह वाहिद, विलग्राम वासी मीर अब्दुल वाहिद हैं। इनका जन्म ९१५ हिजरी (१५०९-१० ई—सं०१५६७ रिपोर्ट) में साँड़ी, जिला हरदोई में हुआ था। इनके पूर्वज विलग्राम के रहने वाले थे। इनकी बेटी का व्याह विलग्राम में हुआ, तब यह भी अपने पुरखों के गाँव विलग्राम में ही आ बसे। इनका विवाह कन्नौज में हुआ था। यह कुछ दिनों तक कन्नौज में भी रहे थे।

---

(७) खोज रिपोर्ट १९१२।१७८, १९१७।१८०

कन्नौज में ही इनकी भेंट अब्दुल कादीर बदायूनी से ९७७ हिजरी या १५६९-७० ई० (सं० १६२७ वि०) में हुई थी। इन्होंने शेख सफीउद्दीन साईपुरी से दीक्षा ली थी, फिर शेख हुसेन के मुरीद हुए, जो इनके पिता के मित्र थे और शेख सफीउद्दीन के उत्तराधिकारी थे। वाहिद को अकबर ने ५०० बीघे जमीन दी थी। इनका देहावसान शुक्रवार ३ रमजान १०१७ हिजरी (११ दिसम्बर १६०८ ई० सं०१६६५) को हुआ। उस समय इनकी उम्र १०२ की थी।[१]

मीर अब्दुल वाहिद सूफी थे। इन्होंने फारसी में अनेक ग्रन्थ लिखे हैं। यह अच्छे शायर भी थे हकायके हिन्दी इनका एक फारसी ग्रन्थ है, जिसकी रचना इन्होंने १५६६ ई० (सं० १६२३) में की थी। इसमें ध्रुवपदों, विष्णुपदों एवं अन्य हिन्दू गीतों में आने वाले कतिपय शब्दों के आध्यत्मिक अर्थ (फारसी में) दिए गए हैं।[२] इससे इनका लगाव हिन्दी कविता और पद प्रणाली से स्पष्ट प्रकट होता है। फारसी में कविता करने वाले इन्हीं वाहिद ने, हिन्दी से भी लगाव होने के कारण सम्भवतः हिन्दी में भी रचना की है और वाहिद के नाम से जो कुछ हिन्दी छन्द मिलते हैं, इन्हीं के ।

८३२।

(२) वजहन कवि। इनके दोहे-चौपाई वेदान्त के अच्छे हैं।

दोहा—वजहन कहैं तो क्या कहैं, कहने की नहिं बात
सम्मुद समान्यो बुन्द में, अचरज बड़ा देखात

सर्वेक्षण

वजहन भी मुसलमान हैं। इनके भी सम्बन्ध में कोई प्रामाणिक सूचना सुलभ नहीं।

८३३।

(३) वहाब। इनका बारहमासा प्रसिद्ध है।

सर्वेक्षण

वहाब भी मुसलमान हैं। यह किसी मुहम्मद के शिष्य थे। इनका बारहमासा खोज में मिल चुका है।[३]

स, ष, श

८३४।७०९

(१) श्री सुखदेव मिश्र कवि १, कम्पिलावासी, सं० १७२८ में उ०। यह कवि भाषा-

---

(१) हकायके हिन्दी, भूमिका, पृष्ठ २३-२८ (२) वही, भूमिका पृष्ठ ३१ (३) खोज रिपोर्ट-१९४७।२३५ क, ख।

साहित्य के आचार्यों में गिने जाते हैं। प्रथम राजा अर्जुन सिंह के पुत्र राजा राज सिंह गौर के यहाँ जाकर कविराज की पदवी पाकर वृत्त-विचार नामक पिङ्गल सब पिङ्गलों में उत्तम ग्रन्थ रचा। तत्पश्चात् फिर राजा हिम्मत सिंह बन्धलगोती, अमेठी के यहाँ आय छन्द विचार नामक पिङ्गल ग्रन्थ बनाया। फिर नवाब फाजिल अली खाँ औरङ्गजेब बादशाह के मन्त्री के नाम भाषा-साहित्य का फ़ाजिल अली प्रकाश नामक ग्रन्थ महा अद्भुत रचा। इन तीनों ग्रन्थों के सिवा हमने कहीं लिखा देखा है कि अध्यात्म प्रकाश, दशरथ राय, ये दो ग्रन्थ और भी इन्हीं महाराज के रचे हुए हैं।

सर्वेक्षण

सुखदेव मिश्र कम्पिला के रहने वाले थे। संवत १६९० के लगभग इनका जन्म हुआ। इनका कविताकाल सं १७२८ है। यह कान्यकुब्ज ब्राह्मण हिमकर के मित्र थे। कम्पिला ही में इनका विवाह हुआ और जगन्नाथ तथा बुलाकीराम नाम के इनके दो पुत्र हुए। इन्होंने काशी आकर संन्यासी, सम्भवतः कवीन्द्राचार्य सरस्वती, से तन्त्र एवं साहित्य की शिक्षा ग्रहण की थी। काशी से लौटते समय यह असोथर के राजा भगवन्त राय खींची के यहाँ गये। यहाँ से डौंडियाखेरे के राजा मर्दन सिंह के यहाँ गए। ये भी भगवन्तराय के समान इनके शिष्य हो गए। तदुपरान्त यह औरङ्गजेब के मन्त्री फाजिलअली खाँ के यहाँ रहे। अर्जुन सिंह के पुत्र राजसिंह गौर एवं अमेठी के राजा हिम्मत सिंह बन्धलगोती ने भी इनका समादर किया। हिम्मत सिंह के छोटे भाई छत्र सिंह की भी इन्होंने प्रशंसा की है। अन्त में मुरारिमऊ के राजा देवी सिंह के यहाँ गए, जिन्होंने इनके पुत्रों को दौलत-पुर गाँव दे दिया। यहाँ इनके वंशज अभी तक हैं। इसी दौलतपुर के रहनेवाले आचार्य द्विवेदी थे। द्विवेदी जी ने सरस्वी में सुखदेव मिश्र पर एक अच्छा ले लिखा था, जिसका सदुपयोग विनोद (४३०) में किया गया है। सुखदेव मिश्र के लिखे हुए निम्नलिखित ग्रन्थ खोज में उपलब्ध हुए—

(१) अध्यात्म प्रकाश, १९०५।९७, १९०६।२४०सी, १९१७।१८३ए, १९२०।१९७बी, १९२३।४१२ ए, बी,सी,डी,ई, राज० रिपोर्ट ३, पृष्ठ १,। यह ग्रन्थ वेदान्त सम्बन्धी है। गुरु-शिष्य के प्रश्नोत्तर रूप में लिखा गया है। इसकी रचना सं० १७५५ में हुई।

संवत सत्रह सै बरस पचपन असुनी प्रानि
यकादशी बुध को भयो सुक्ल पक्ष शुभ जानि

इसकी रचना दुर्जन सिंह के लिये हुई थी।

दुर्जन सिंह मुकन्द के अर्थ लिख्यो यह जानि
भूल्यो सो छमियो सबै श्रोता बुद्धि निधान

—खोज रिपोर्ट १९०५।९७

इसी ग्रन्थ का एक अन्य नाम (अनुभव प्रकाश[१]) भी है। १९१७ वाली रिपोर्ट में 'अष्टा-दशसै उनसठा' दिया गया है जो लिपिकाल है।

(२) फाजिल अली प्रकाश, १९०९।३०७ ए, १९१७।१८३ सी, १९२०।१८७ सी, १९२३। ४१२ एम, एन, ओ, १९२६।४३५ डी, ई। यह साहित्य ग्रन्थ नवाब इनाइत खाँ के पुत्र, औरङ्गजेब के मन्त्री फाजिल अली के नाम पर संवत १७३३ में बना—

दसमी रवि पूरन भयो फाजिल अली प्रकाश
संवत सत्रह सै जहाँ तैंतीस कातिक मास
—खोज रिपोर्ट १९२३।४१२ एम

(३) नखशिख १९०९।३०७ सी। इस ग्रन्थ में कुल ३२ छन्द हैं।

(४) रसार्णव १९०३।१२४,१९०४।३३,१९२०।१८७ डी, १९२३।४१२ आर। इस ग्रन्थ का नाम मरदान रसार्णव या रस रसार्णव भी है। इसकी रचना संवत १७३६ में हुई। यह नायिका भेद का अत्यन्त सरस ग्रन्थ है। यह बैसा राजा मरदान सिंह के नाम पर बना।

(५) ज्ञानप्रकाश, १९२३।४१२ पी, क्यू। शिष्य और गुरु के प्रश्नोत्तर रूप में लिखित रचनाकाल संवत १७५५।

(६) रस रत्नाकर, १९४१।२९४। यह रस ग्रन्थ है।

(७) पिङ्गल छन्द विचार, १९०३।१२३, १९०६।१२५, २४० बी, १९०९।३०७ बी १९१७।१८३ डी, १९२२।४१२ एफ, एच, जे, के, १९२६।४६५ सी, एफ़। यह ग्रन्थ अमेठी के राजा हिम्मत सिंह के लिये बना।

(८) पिङ्गल वृत्त विचार १९०६।२४० ए, १९१७।१८३ बी, १९२०।१८७ ई, १९२३। ४१२ जी, आई, एस, टी, १९२६।४६५ जी। यह ग्रन्थ राज सिंह गौड़ आज्ञा से संवत १७२८ में बना।

(९) छन्दोंनिवास सार १९२३।४१२ एल।

विनोद में इनके एक और ग्रन्थ शृङ्गार लता का उल्लेख हुआ है। आचार्य द्विवेदी के अनुसार यह सुखदेव मिश्र के किसी वंशज की रचना है। शृङ्गार लता नामक एक ग्रन्थ संस्कृत में भी है। उसके रचयिता भी एक सुखदेव मिश्र हैं। कहा नहीं जा सकता कि दोनों शृङ्गार लता एवं दोनों सुखदेव मिश्र एक हैं अथवा दो।[२]

---

(१) खोज रिपोर्ट, दिल्ली १९३१।८०ए। (२) हिन्दी काव्य-शास्त्र का इतिहास, पृष्ठ ९५

८३५।७०८

(२) सुखदेव मिश्र कवि २, दौलतपुर, जिले रायबरेली वाले, सं० १८०३ में उ०। बैसवारे में यह महाराज महाकवि हो गये हैं। राव मर्दन सिंह बैस डौड़ियाखेरे के यहाँ थे और उन्हीं के नाम से नायिका भेद का रसार्णव नामक ग्रन्थ बहुत सुन्दर बनाया है। शम्भुनाथ इत्यादि इन्हीं के शिष्य थे।

सर्वेक्षण

सरोज में ८३४, ८३५, ८३६ संख्यक ३ सुखदेव हैं, जो वस्तुतः एक ही हैं। इनका विस्तृत विवरण संख्या ८३४ पर देखिये। सरोज में दिया संवत् १८०३ अशुद्ध है। सुखदेव मिश्र का रचना-काल संवत् १७२८-५५ वि० है। रसार्णव का रचनाकाल संवत् १७३६ है।

८३६।७०७

(३) सुखदेव कवि ३, अन्तरवेद वाले, संवत १७६१ में उ०। यह कवि महाराजा भगवन्त राय, खींची, असोथर वाले के यहाँ थे। कुछ आश्चर्य नहीं कि यह महाराज सुखदेव मिश्र दौलतपुर वाले ही हों।

सर्वेक्षण

सरोजकार का सन्देह ठीक है। विस्तृत विवरण देखिये संख्या ८३४ पर।

८३७।७२२

(४) शम्भु कवि १, राजा शम्भुनाथ सिंह सुलङ्की, सितारागढ़ वाले, सं० १७३८ में उ०। यह महाराज कवि-कोविदों के कल्पवृक्ष महाकवि हो गये हैं। शृङ्गार का इनका काव्य निराला है। नायिका भेद का इनका ग्रन्थ सर्वोपरि है। यह महाराज मतिराम त्रिपाठी के बड़े मित्र थे।

सर्वेक्षण

नृप शम्भुनाथ और शम्भुराज आदि इनकी छाप है। यह सोलङ्की नहीं, मराठे थे। सरोज में दिया संवत् १७३८ इनका रचनाकाल है। इनका नखसिख, भारत जीवन प्रेस, काशी, से प्रकाशित हो चुका है। सरोज के प्रारम्भिक संस्करणों में काव्य को स्त्रीलिङ्ग मानकर उसका निराला विशेषण निराली लगा हुआ है। ग्रियर्सन ने (१४७) इनके एक काव्य का नाम काव्य निराली मान लिया है। अब कोई इसी आधार पर इनके काव्य निराली की खोज करने लगे तो उसकी मौत है।

८३८।७२३

(५) शम्भुनाथ कवि २, बन्दीजन, संवत् १७९८ में उ० । यह कवि सुखदेव के शिष्य थे । रामविलास नामक रामायण बहुत ही अद्भुत ग्रन्थ बनाया है । रामचन्द्रिका की तरह इस ग्रन्थ में भी नाना छन्द हैं ।

सर्वेक्षण

सरोज में रामविलास रामायण से रचनाकाल सूचक उद्धरण दिया गया है ।

वसु(८) ग्रह(९) मुनि(७) ससधर(१) बरस, सित फागुन वरमास
सम्भुनाथ कवि ता दिनै, कीन्हों राग विलास १

इस उद्धरण से इस ग्रन्थ का रचनकाल १७९८ सिद्ध होता है । सरोज में यही संवत् दिया गया है, जो इनका उपस्थितकाल है । इस ग्रन्थ से इनका सुखदेव का शिष्य होना भी सिद्ध है ।

श्री गुरु कवि सुखदेव के, चरनन ही को ध्यान
निर्मल कविता करन को, वहै हमारे ज्ञान २

भगवन्तराय खींची के दरबारी कवि श्री शम्भुनाथ मिश्र भी सुखदेव मिश्र के शिष्य थे । अलङ्कार दीपक में इन्होंने सुखदेव का शिष्यत्व स्वीकार किया है । प्रतीत होता है कि सुखदेव मिश्र के शम्भुनाथ नाम के या तो दो शिष्य थे—एक बन्दी जन, रामविलास के रचयिता और दूसरे मिश्र, अलङ्कार दीपक के रचयिता अथवा एक ही शिष्य था जिसको सरोजकार ने एक बार प्रमाद से बन्दीजन लिख दिया और दूसरी बार मिश्र । रामविलास की कोई प्रति अभी तक खोज में नहीं मिली है । मिल जाने पर समस्या सुलझ सकती है । सम्भावना यही है कि सरोजकार ने इस सम्बन्ध में प्रमाद किया है । शम्भुनाथ मिश्र का विवरण आगे संख्या ८३९ पर है ।

८३९।७२४

(६) शम्भुनाथ मिश्र कवि ३, संवत १८०३ में उ० । यह कवि महाराज भगवन्तराय खींची के यहाँ असोथर में रहा करते थे । शिव कवि इत्यादि सैकड़ों मनुष्यों को इन्होंने कवि कर दिया । कविता में ये महानिपुण थे । रसकल्लोल, रस तरङ्गिणी, अलङ्कार दीपक, ये तीन ग्रन्थ इनके बनाये हुए हैं ।

सर्वेक्षण

शम्भुनाथ मिश्र के निम्नलिखित चार ग्रन्थ खोज में मिले हैं:—

(१) रस कल्लोल, १९१२।१६५, १९२०।१७२ ए। यह नायिका भेद का ग्रन्थ है। इसमें भगवन्तराय खींची का यश भी वर्णित है। १९१२ वाली प्रति में और लोगों के भी छन्द जुड़े हुए हैं।

(२) भगवन्तराय यश वर्णन, १९२०।१७२ बी। इस ग्रन्थ के अन्तिम छन्द में बैसवाड़े के किसी रनजीत सिंह का भी यश वर्णित है।

सदा रनजीत यह बाबू रनजीत सिंह
दीप जम्मू दीप को, महीप बैसवारे को

(३)अलङ्कार दीपक, १९०४।२७, १९०६।२३३, १९१७।१६७। इस ग्रन्थ के निम्नलिखित दोहे से इनका सुखदेव मिश्र का शिष्य होना सिद्ध है।

श्री गुरु कवि सुखदेव के चरनन को परभाउ
बरनन कों हिय देत धरि वरनन को समुदाउ

निम्नाङ्कित दोहे में कवि, विषय, छन्द और ग्रन्थ के नाम आये हैं।

बरनि संजोग सिंगार में राधा राधानाथ
अलङ्कार दीपक करत दोहन शम्भू नाथ ३

यह अलङ्कार ग्रन्थ है, दोहों में लिखा गया है। शम्भूनाथ इसके कर्त्ता हैं। राधा और राधानाथ का सम्भोग शृङ्गार इसमें वर्णित है। इसमें ४३६ दोहे हैं। प्राचीनतम प्राप्त प्रति संवत् १८५९ की है। इस ग्रन्थ का गुरु वर्णन वाला दोहा २३८ संख्यक शम्भुनाथ बन्दीजन के राम-विलास रामायण में वर्णित गुरु वर्णन वाले दोहे के पूर्ण मेल में है, जो इन दोनों कवियों की एकता की ओर सङ्केत करता है।

(४) अलङ्कार दीपिका, १९०६।११६। इस ग्रन्थ की रचना संवत १८०७ में हुई। इस ग्रन्थ से सरोज में पाँच कवित्त उद्धृत हैं, जिनमें प्रथम दो में भगवन्तराय की प्रशस्ति है। अलङ्कार दीपक में सभी दोहे हैं। अतः यह उससे भिन्न ग्रन्थ प्रतीत होता है। सरोज में दिया हुआ संवत १८०३ कवि का उपस्थितिकाल एवं रचनाकाल ही है।

८४०।७३५

(७) शम्भुनाथ कवि ४, त्रिपाठी, डौंड़ियाखेरे वाले, संवत १८०९ में उ०। यह महाराज राजा अचल सिंह बैस, डौंड़ियाखेरे के यहाँ थे। राव रघुनाथ सिंह के नाम से वैतालपचीसी को

संस्कृत से भाषा किया है। मुहूर्त चिन्तामणि जोतिष का ग्रन्थ भी भाषा के नाना छन्दों में बनाया है। ये दोनों ग्रन्थ सुन्दर हैं।

सर्वेक्षण

शम्भुनाथ त्रिपाठी के निम्नाङ्कित ग्रन्थ खोज में मिले हैं :—

(१) मुहूर्त चिन्तामणि, १९०६।२३४ ए, १९२०।१७३, १९२३।३७१ बी, सी, दी, १९२६। ४२१ सी, दी, ई- १९४७।२७७ घ, ङ। इस ग्रन्थ के अन्य नाम मुहूर्त मञ्जरी और मुहूर्त कल्पद्रुम भी हैं। इसकी रचना संवत १८०३ में हुई। ज्योतिष का यह ग्रन्थ छन्दोबद्ध है। यह संस्कृत से अनूदित है। इसकी रचना डौंड़ियाखेरा के राजा मर्दन सिंह के पुत्र अचल सिंह के लिये हुई।

सभा मध्य बैठे हुते एक समय अचलेस
तिन कवि शम्भु नाथ को कीन्हो यहै निदेस
जैसे जातक चन्द्रिका करि दीन्ही करि नेह
त्यों मुहूर्त चिन्ता मनयों भाषा में करि देहु

पुष्पिका से इनका त्रिपाठी होना स्पष्ट है।

"इति श्रीमन्महाराज कुमार श्री अचल सिंह आज्ञा त्रिपाठी शम्भुनाथ कृत निर्मितायाम मुहूर्त मञ्ज्यर्या। गृह प्रवेश प्रकरणे इति मुहूर्त मञ्ज्यर्या समाप्त सुभमस्तु।"

(२) जातकचन्द्रिका, १९०६।२३४ सी, १९२६।४२१ बी, १९४७।३७७ ग। राजा अचल सिंह की आज्ञा से यह ज्योतिष ग्रन्थ लिखा गया। इसका उल्लेख ऊपर मुहूर्त चिन्तामणि में हुआ है। अतः यह संवत १८०३ से पहले की रचना है।

(३) वैताल-पचीसी, १९०६।२३४ बी, १९२३।३७१ ई, एफ, १९२६।४२१ ग, १९४४। ४०८। यह ग्रन्थ बगसर जिला उन्नाव के राजा राय रघुनाथ सिंह की आज्ञा से बना—

(क) सभा मध्य बैठे हुते एक समय रघुनाथ
बीर धीर उद्भट सुभट सुजन बन्धु जन साथ
कह्यो कृपा करि शंभु सौं जी में मानि सनेहु
यह वैताल कथा हमें भाषा में करि देहु

(ख) "इति श्री श्री भद्राय रघुनाथं सिंहाज्ञया त्रिपाठी शम्भूनाथ कृतो वैताल पञ्चविंसति कथा सु पञ्चविंसति तमीष्टमः।"

इस ग्रन्थ की रचना सं० १८०९ में हुई।

९ ० १८
नंद व्योम धृति जानि के संवतसर कवि शंभु
माघ अध्यारी द्वैज को कीन्हों ग्रन्थारम्भु

—खोज रिपोर्ट १९२६।४२१ ए

यही दोहा सरोज में भी उद्धृत है और सरोज में दिया हुआ सम्वत् १८०९ इसी का रचनाकाल है।

(४) प्रेम सुमन माला, १६०६।३७४। इस ग्रन्थ में प्रेम सम्बन्धी १०६ दोहे हैं। इसमें उर्दू शब्द भी व्यवहृत हुए हैं, जैसे जाहिर, माशूक, माफ़, इशारा, तूल, अरजी, मरजी, फजूल आदि।

प्यारे जी सर्वज्ञ हो, तुम्हें इशारा तूल
सुनि अरजी मरजी करौ, लिखना अधिक फजूल १०६

(५) कवित्त, १६२४। ३७१ ए। यह तीन पन्ने का ग्रन्थ है। इसमें कुल १५ कवित्त हैं। आठ हास्य रस के, दो करुण रस के, एक वीर रस का, दो होली के और दो विरहिणी के। कवित्त नाम से एक ग्रन्थ १६४७।३७७ क पर भी वर्णित है।

(६) कृष्णविलास या भागवत, दशम स्कन्ध, १६४७।३७७ ख। यह ग्रन्थ भी रघुनाथ सिंह की आज्ञा से बना।

सभा मध्य बैठे हुते एक समै रघुनाथ
मंत्री मित्र, पण्डित सुभट बन्धु, वृन्द लै साथ २
तहँ कवि शंभूनाथ को लीन्हों निकट बुलाय
सादर नजरि सु करि हिये परम प्रेम उमगाय ४
दुरित हटै जाके पढ़े कटै विकट भव बन्ध
कह्यो हमें करि दीजिये भाषा दसमस्कन्ध ५

ग्रन्थ में रचनाकाल सूचक यह दोहा दिया हुआ है, पर रचनाकाल स्पष्ट नहीं होता।

साकौ बीति गयो तहाँ रस पर्वत और भूप
सगुन उज्यारी पञ्चमी भादो मास अनूप ७

इस ग्रन्थ का नाम कृष्णविलास रखने का कारण कवि ने इस दोहे में लिखा है —

कान्ह कुंवर ब्रज बधुन को वरन्यों यामें रास
नाम धर्‌यो यहि ग्रन्थ को याते कृष्ण विलास ८

खोज के अनुसार शम्भूनाथ त्रिपाठी, टेढ़ा, जिला उन्नाव के रहने वाले थे। सरोज में वैताल पचीसी और मुहूर्त मञ्जरी से उद्धरण दिये गये हैं।

८४१।७२६

(८) शम्भूनाथ मिश्र ५, सातन पुरवा, वैसवारे वाले, सम्वत् १९०१ में उ० । यह कवि राजा यदुनाथ सिंह, बैस, खजुर गाँव के यहाँ थे । थोड़े ही अवस्था में अल्पायु हो गये । बैस वंशावली और शिवपुराण का चतुर्थ खण्ड भाषा बनाया है ।

सर्वेक्षण

शम्भुनाथ मिश्र का बैस वंशावली ग्रन्थ खोज में मिल चुका है ।[1] सरोज में इस ग्रन्थ से उद्धरण दिया गया है । विनोद (१८०८) के अनुसार यह कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे और इन्होंने खजुर गाँव के राना यदुनाथ सिंह की आज्ञा से संवत् १९०१ में शिवपुराण, चतुर्थ खण्ड, का अनुवाद भाषा के नाना छन्दों में किया । स्पष्ट है कि सरोज में दिया संवत् १९०१ कवि का रचनाकाल और उपस्थितकाल है । यह जन्मकाल नहीं है जैसा कि ग्रियर्सन (६२१) में स्वीकार किया गया है ।

८४२।७२८

(९) शम्भुप्रसाद कवि । इनके शृङ्गार के सुन्दर कवित्त हैं ।

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध में कोई सूचना सुलभ नहीं ।

८४३।७१२

(१०) शिव कवि १, अरसेला, बन्दीजन, देउतहा, जिले गोडा के निवासी, संवत् १७९६ में उ० । यह कवि असोथर में शम्भु कवि से काव्य पढ़कर भैया जगत सिंह बिसेन, अपनी जन्मभूमि के अधिपति के पास रहे और उनको भी कविता में ऐसा प्रवीण किया कि जगत सिंह का पिङ्गल विख्यात है । निदान शिव कवि ने रसिक विलास नामक एक ग्रन्थ भाषा साहित्य का ऐसा अपूर्व बनाया है, जो अवश्य दर्शनीय है । अलङ्कार भूषण और पिङ्गल—ये दो ग्रन्थ और भी इनके बनाये हुए हैं । इनके वंश में अब राम कवि विद्यमान हैं ।

सर्वेक्षण

शिव सिंह ने शिव कवि के तीन ग्रन्थों—रसिकविलास, अलङ्कार भूषण एवं पिङ्गल का उल्लेख किया है । इनमें से अन्तिम खोज में मिला है । इसका नाम है पिङ्गलछन्दोबोध । ग्रन्थ इन्हीं शिव कवि का है । इसका प्रमाण यह है कि एक छन्द में कवि ने अपने गुरु शम्भु का स्मरण किया है ।

---

(१) खोज रिपोर्ट १९२३।३७१जी

सकल सिद्धि आवे निकट, ध्यावत श्री गुरु शंभु
नयो नयो उनयो परैं, हिय जुक्ति आरम्भु
—खोज रिपोर्ट १९२३।३६१

यह ग्रन्थ सम्भवतः जुल्फकार अली के लिए लिखा गया है। इसमें जुल्फकार की प्रशस्ति है—

थकित पौन रहि जात, सिंधु नहि लहरि सँभारत
फनि पति फन नहि कढ़त, कूर्म नहिं वक्क निकारत
षट्पद भ्रमर भ्रम्यों विमल, नरपति नहिं सारद
सविता रथ रहि जात, वेग भ्रमि रतन भारथ
दलमलित बरनि आतङ्क मय, जस उदित टौद्‌यतुत
जब जुलुफकेर करिके सँभार हय सर कटार दुल-दुल चढ़त

इनकी सहायता के लिए बड़े-बड़े पीरों का भी आवाहन किया गया है—

मोमदीन अजमेर पीर गढ़ संसारै
उपमा कहि कै कौन मकनपुर साह मदारै
बहिरायच सालार या रबी बढ़ो खुदाई
दिल्ली तोखे कुतुम तास की करौ बडाई
सुमिरे हसन हुसेन जिन कुपुर मारि कीन्ही ध्वजा
मन वचस कर्म स्यहि कहै पम्पै पीर मदति सदा

जुल्फकार खाँ संवत १८५९ में अपने पिता अली बहादुर की मृत्यु के बाद बांदा का नवाब हुआ था। नवाबी तो इसने बहुत थोड़े दिनों की, क्योंकि इसका बड़ा भाई शीघ्र आकर नवाब हुआ, पर यह नवाब कहलाता रहा। संवत १८६१ में अंग्रेजों ने राज्य जब्त कर लिया। जुल्फकार ने संवत १९०३ में बिहारी सतसई पर कुण्डलियाँ लगाई।[१]

शिव कवि सरोज के अनुसार देउतहा के राजा जगतसिंह के काव्य गुरु थे। इन्हीं से पढ़ने के बाद उन्होंने अपना प्रसिद्ध पिङ्गल 'भारती कण्ठाभरण' संवत १८६४ में रचा था। इनका रचनाकाल सम्वत १८२०-७७ है।[२] शिव कवि के गुरु शम्भुनाथ मिश्र का रचनाकाल संवत १८०३ है। यह भगवन्तराय खींची के यहाँ रहा करते थे।[३]

जुल्फिकार अली, जगत सिंह एवं शम्भुनाथ मिश्र के समय पर ध्यान देने से स्पष्ट हो जाता

---

(१) खोज रिपोर्ट १९२३।३७१ बी कवि सं० ३०५, (२) वही, सं० २५५ (३) वही, सं० ८३९।

है कि सरोज में दिया हुआ शिव कवि का संवत १७९६ रचनाकाल या उपस्थितिकाल नहीं हो सकता। यह इनका जन्मकाल हो सकता है। इनका रचनाकाल १८२० से १८६० तक होना चाहिये। सरोज में इनके तीनों ग्रन्थों से उद्धरण दिये गये हैं।

८४४।७१३

(११) शिव कवि २, बन्दीजन, विलग्रामी, सम्वत् १७९५ में उ०। इन्होंने श्रृङ्गार का रस-निधि नामक एक बहुत विचित्र ग्रन्थ बनाया है।

सर्वेक्षण

सरोज में इनके रसनिधि नामक ग्रन्थ से उद्धरण दिया गया है। इनके सम्बन्ध में कोई प्रामाणिक सूचना सुलभ नहीं।

८४५।७१४

(१२) शिव प्रसाद 'सितारेहिन्द' बनारसी, विद्यमान हैं। यह राजा साहब अरबी, फारसी, संस्कृत, अँगरेजी इत्यादि बहुत जंबानों से वाकिफ़ हैं। वार्तिक में भूगोल हस्तामलक, इतिहास तिमिरनाशक इत्यादि इनके बनाये ग्रन्थ अपूर्व व अद्वितीय हैं। हमको इसमें सन्देह नहीं कि आज दिन हिन्दुओं में इन बाबू साहब के समान और मुसममानों में सैयद अहमद के सदृश तारीख इत्यादि की विद्या में दूसरा मनुष्य भारत में नहीं है। इनकी कविता छन्दोबद्ध न मिलने से हमको बड़ा अफसोस है। भूगोल में एक कवित्त मिला, सो निपट निरंजन कवि का है।

सर्वेक्षण

ग्रियर्सन (६९९) में राजा शिवप्रसाद 'सितारेहिन्द' का विवरण अत्यन्त विस्तार से दिया गया है। इनके १८ हिन्दी और १४ उर्दू ग्रन्थों का विवरण दिया गया है। राजा शिवप्रसाद 'सितारेहिन्द' का जन्म १८८० में काशी में एक सम्पन्न परिवार में हुआ था। यह बाबू गोपीचन्द के पुत्र एवं राय डालचन्द तथा बीबी रत्न कुँवरि के पौत्र थे। यह भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द के विद्या गुरु थे। संस्कृत, हिन्दी. अरबी, फारसी, अंगरेजी और बँगला के अच्छे ज्ञाता थे। इन्होंने १९०२ के सिक्ख युद्ध में अँग्रेजों की अच्छी सहायता की थी। साहित्य से विशेष रूचि होने के कारण सरकार ने इन्हें स्कूलों का इन्स्पेक्टर नियुक्त कर दिया था। पाठशालाओं में इन्होंने हिन्दी की सुरक्षा की, पर राजनैतिक परिस्थितियों ने विवश कर इन्हें हिन्दुस्तानी का हिमायती बना दिया, जो वस्तुतः देवनागरी लिपि में उर्दू ही थी। इसीलिए भारतेन्दु की इनसे पटी नहीं। सं० १९४४ में इन्हें राजा की उपाधि प्राप्त हुई। सं० १९५२ में काशी में ही इनका देहावसान हुआ। इन्होंने अधिकांश में पाठ्य पुस्तकें लिखीं। इनके लिखे हिन्दी ग्रन्थों की सूची यह है—

(१) वर्णमाला, (२) बाल-बोध, (३) विद्यांकुर, (४) वामा मनरञ्जन, (५) हिन्दी व्याकरण, (६) भूगोल हस्तामलक, (७) छोटा भूगोल हस्तामलक, (८) इतिहास तिमिरनाशक, (९) गुटका (१०) मानव-धर्म सार, (११) सैण्डफर्ड और मर्टन की कहानी; (१२) सिक्खों का उदय अस्त, (१३) स्वयं वोध उर्दू, (१४) अँग्रेजी अक्षरों के सीखने के उपाय, (१५) बच्चों का इनाम, (१६) राजा भोज का सपना; (१७) वीर राजा का वृत्तान्त। राजा साहब कवि नहीं थे, गद्य लेखक थे।

८४६।७१५

(१३) शिवनाथ कवि, बुन्देलखण्डी, सं० १७६० में उ०। यह कवीश्वर राजा जगत सिंह बुन्देला, छत्रसाल के पुत्र, के पास पन्ना में थे और इन्होंने रसरञ्जन नामक काव्य-ग्रन्थ बहुत सुन्दर रचा है।

सर्वेक्षण

छत्रसाल के पुत्र जगत सिंह बुन्देला का राज्यकाल सं० १७८८-१८१५ है। इसी बीच शिवनाथ इनके दरबार में रहे होंगे। सरोज में दिया समय सं० १७६० कवि का प्रारम्भिक रचना-काल प्रतीत होता है। यह जन्मकाल नहीं हो सकता। सरोज में रसरञ्जन से उद्धरण है। नायिका भेद का यह ग्रन्थ अभी तक नहीं मिला है। सरोज में उद्धृत एक कवित्त में जगतेश की प्रशस्ति है।

अरिन पै करि कोप, काटत झिलिम टोप,
सुजस को कोस देति घोप जगतेस को

८४७।७१६

(१४) शिवराम कवि, सं० १७८८ में उ०। इनकी प्रशंसा सूदन ने की है। इनके शृङ्गार के अच्छे कवित्त हैं।

सर्वेक्षण

शिवराम सूदन के समकालीन और सूदन के ही आश्रयदाता भरतपुर नरेश महाराज सूरजमल (शासनकाल सं० १८१२-२०) के आश्रित थे। नवधा भक्ति नामक इनके एक लघु ग्रन्थ पर महाराज सूरजमल ने इन्हें ३६ हजार रुपए दिए थे, जैसा कि इस दोहे से प्रकट है।[1]

---

(१) माधुरी, फरवरी १९२७, भरतपुर और हिन्दी शीर्षक लेख, पृष्ठ ८०

जबै ग्रन्थ पूरन भयो, तबै करी बकसीस
खरै रुपैया मान सों, दस सहस छतीस

सरोज में दिया शिवराम जी का समय सं० १७८८ ठीक है । यह कवि का प्रारम्भिक रचनाकाल है । शिवराम का एक ग्रन्थ प्रेमपचीसी खोज में मिला है ।[१] इसमें उद्धव-गोपी संवाद के २५कवित्त हैं । इस ग्रन्थ की रचना महाराज सूरजमल के छोटे भाई प्रतापसिंह के लिए हुई । रिपोर्ट में इन्हें भरतपुर नरेश सवाई प्रताप सिंह कहा गया है, जो ठीक नहीं । भरतपुर में इस नाम का कोई राजा नहीं हुआ । रिपोर्ट में रचनाकाल सं० १८४७ दिया गया है । यह भी ठीक नहीं । कवि का रचनाकाल सं० १७८८ से १८२० तक माना जाना चाहिए । इस ग्रन्थ का अन्तिम कवित्त परिचयात्मक है ।

कान्ह गोपी ऊधव को यामें है जुवाब स्वाल,
रसन सों पूरी उक्ति, जुक्ति सों सची सी है
अलङ्कार नाइकान वारे भाव भक्ति दृढ़
विरहावलम्ब हाव भावन रची सी है
विङ्ग धुनि लच्छना औ विञ्जना अनेक भरी
कहाँ लौं गनाइयतु गनन गवी सी है
साहसी प्रताप को हुकुम पाइ आडी लीक
कीना शिवराम साची प्रेम की पचीसी है

सरोज में दिया सं० १७८८ कवि का प्रारम्भिक रचनाकाल है, जन्मकाल नहीं, जैसा कि ग्रियर्सन (४१६) में स्वीकार किया गया है । यदि इसे जन्मकाल माना जायगा, तो सुजान-चरित्र की रचना के समय सं० १८१० में इनकी वय केवल २२ वर्ष के लड़के की होगी, जो अगम्य वय नहीं ।

८४८।७१७

(१५) शिवदास कवि । इनकी कविता चोखी है ।

सर्वेक्षण

शिवदास जी जयपुर के रहनेवाले थे । यह उस कवि समाज में सम्मिलित हुए थे, जिसका संयोजन सूरति मिश्र ने आगरे में किया था । सम्भवतः सूरति मिश्र इनके काव्य गुरु थे । रस सरस

---

(१) खोज रिपोर्ट १९१७।१७६ ।

सर्वेक्षण

या सरस रस ग्रन्थ सूरति मिश्र का कहा जाता है और इनका भी। इसकी रचना सं० १७९४ में हुई थी।

> **सत्रह सै चौरानबे, संवत सुभ वैसाख**
> **भयो ग्रन्थ पूरन सु यह, छठ समि पुष सित पाख**

पूरा ग्रन्थ पढ़ने पर ही यह निर्णय दिया जा सकता है कि यह ग्रन्थ सूरति मिश्र का है या शिवदास का। खोज रिपोर्टों में दिए थोड़े से उद्धरणों के पारायण से नहीं।[1] ग्रियर्सन (७५८) में शिवदास को शिव-चौपाई और लोक-उक्ति-रस-जुक्ति नामक दो ग्रन्थों का रचयिता कहा गया है। विनोद (८३७) में इनके एक अन्य ग्रन्थ 'अलङ्कार दोहा' का भी उल्लेख है। इन्हें विहारी सतसई पर कवित्तबंध टीका रचनेवाले कृष्ण कवि[2] का मित्र एवं उनके आश्रयदाता जयपुर नरेश के मन्त्री राजा आयामल्ल का छोटा भाई कहा गया है। इन्हीं शिवदास की लोक-उक्ति-रस-जुक्ति या लोकोक्ति रस कौमुदी के कुछ छन्द सरोज में परवीने या पखाने कवि के नाम से उद्धृत हैं। इस ग्रन्थ की रचना सं० १८०९ में हुई थी।[3] खोज रिपोर्ट में उल्लिखित 'देवी चरित्र'[4] भी सम्भवतः इन्हीं की रचना है।

८४९।७१८

(१६) शिवदत्त कवि। ऐजन। इनकी कविता चोखी है।

सर्वेक्षण

शिवदत्त त्रिपाठी ब्राह्मण थे। यह बनवध (प्रयाग जिले का पश्चिमी भाग जिसमें सिंगरौर आदि है,) के राजा जबरेस सिंह के आश्रय में थे। 'दशकुमार चरित्र' नामक इनका ग्रन्थ खोज में मिला है।[5] इसमें कवि ने अपने आश्रयदाता का पूर्ण विवरण दिया है।

> **धरनी चक्र समस्त में, बनवध देश अनूप**
> **नीति रीति जुत भीति बिनु, विविध बसें तहँ भूप २**

---

(१) खोज रिपोर्ट १९१७।११६, कवि संख्या ९३१ (२) वही कवि संख्या ८१ (३) हरिऔध, प्रथम अङ्क में मेरा लेख, शिव सिंह सरोज के परवीने कवि (४) खोज रिपोर्ट १९४४।४१५ (५) वही, १९४४।४१४

बनवध हू में अति सुगम, सोभित बेलखर देस
बसत लोक बिनु सोक तहँ, धन ते तुलति धनेस ३
ता पति सुर पति के सरिस, अद्भुत वीर चरित्र
मित्रजीत भूपति भए, निज कुल सरसिज मित्र ४
जगत प्रशंसा होत जेहि, वंस विदित चौहान
बछगोती विख्यात महि, उदभट उदित कृपान ५
धीर सिंह ताके तनै, भए प्रबल रन धीर
को नर सकै सराहि तेहि, जैसी मति गम्भीर ६
नीति रीति वस करि सबै, उदयत धीर नरेस
पटीपुर नृपपुर कियो, मध्य सकल निस देस १०
धीर सिंह के सुत भए, समर सिंह छितिपाल
नृप गुण रचि विरंचि·बहु, लिखे भाग्य जेहि भाल
श्री समरेस नरेस के दो सुत भे अभिराम
अमर सिंह जबरेस यौं धरे जथारथ नाम १७
सो जबरेस महीपमनि मङ्गलमय सब काल
राजत राज समाज मे भूरि भाग्य भरि माल
बार-बार शिवदत्त द्विज इमि करि बुद्धि विचार
तेहि विनोद कारन रच्यो भाषा दसो कुमार

जबरेस सिंह के अग्रज का नाम अमर सिंह, पिता का समर सिंह, पितामह का धीर सिंह और प्रपितामह का मित्रजीत सिंह था। कवि के समय के सम्बन्ध में कोई सूचना सुलभ नहीं।

८५०।७१६

(१७) शिवलाल दुबे, डौंड़ियाखेरे वाले, सं० १८३६ में उ०। यह बड़े कवि हो गए हैं। यद्यपि हमको इनका कोई पूरा ग्रन्थ नहीं मिला, तथापि हमारा पुस्तकालय इनके काव्य से भरा पड़ा है। इनका नखशिख, षटऋतु, नीति सम्बन्धी कवित्त और हास्य रस देखने योग्य है।

सर्वेक्षण

शिवलाल दुबे के सम्बन्ध में अभी तक कोई सामग्री खोज के द्वारा नहीं सुलभ हो सकी है।

किसी शिवलाल का एक ग्रन्थ कर्म विपाक,[1] एक ग्रन्थ शिवलाल का 'भक्त विरुदावली'[2] नामक ग्रन्थ खोज में मिला है। इनका प्रतिलिपिकाल क्रमशः सं० १९१० और १९२३ है। खोज में एक और शिवलाल पाठक मिले हैं, जिनके ग्रन्थ निम्मलिखित हैं :—

(१) अभिप्राय दीपक, १९०४।११२, १९२६।४४६। यह रामायण की टीका है। कवि पाठक हैं।

पाठक श्री शिवलाल उर लसत उपाएन हार

(२) मानसमयङ्क, १९०४।११३। इसकी रचना सं० १८७५ में हुई—

सायक (५) मुनि (७) वसु (८) नाथ गण दंत (१) वार गुरु जनि
पाठक श्री शिवलाल जू रचे चन्द कर खानि

———

८५१।७२०

(१८) शिवराज कवि। ये सामान्य कवि हैं।

सर्वेक्षण

शिवराज महापात्र थे। यह महापात्र कविराज के पुत्र सदानन्द और पौत्र सुखलाल के वंशज थे। यह सं० १८६६ के लगभग वर्तमान थे। इनके दो ग्रन्थ खोज में मिले हैं।

(१) रस सागर १९४७।३८९ ख। यह नायिका भेद का ग्रन्थ है। इसकी रचना सं० १७६६ में हुई थी।

संवत् अठारह सै सुखद,छासठि अति सुख पाइ
ज्येष्ठ सुदी रवि सप्तमी,..................

ग्रन्थ में कवि ने निज वंश परिचय दिया है।

महापात्र के वंश में प्रगट महा कविराज
जाहिर जम्ब दीप में वर विद्या सुख साज १
ताके सुत भे जगत में सदानन्द मतिधीर
कालिदास महीप पर गुन सागर गम्भीर २
ताके भे सुखलाल छिति धीर धर्म के साज
क्रिया नेम आचार को राजत ज्यों रिषिराज ३

---

(१) खोज रिपोर्ट १९३२।२०३ (२) वही, १९०५।९२ ए, बी

ता कुल में भो मन्द मति महापात्र शिवराज
करत ग्रन्थ प्रारम्भ है भाषा जो रसराज ४

केशव के समान शिवराज भी गर्वोक्ति करते हैं ।

भाषा जाके वंस भो कबहुं न बोलत कोइ
ता कुल में शिवराज अब भाषा कवि भो सोइ ७

इस ग्रन्थ में श्री मुनि भट्ट मयूर की प्रशस्ति है । यह सम्भवतः इनके गुरु थे ।

श्री मुनि भट्ट मयूर भे सूरज कला प्रताप
जाके ध्याए जगत में कटत कोटि 'सन्ताप
गंडक तट तेहि निकट में कीन्हों तप बहु भाँति
सूरज कर तेहि गहि कियो सूरज सम तन कन्ति ४

चौथे दोहे के प्रथम चरण का एक पाठ यह भी है—

'नगर मझौली मध्य में'

शिवराज रामपुरा के राजा बैरीसाल के आश्रित थे—

राय श्री बैरीसाल नृप, रामपुरा नरनाह
ताको जग वर बस कहि, करत ग्रन्थ छिति माह ५

इसके आगे कवि ने बैरीसाल के वंश का अत्यन्त विस्तृत वर्णन किया है । इस वर्णन के अनुसार बैरीसाल मझौली के राजाओं के वंशज थे । इनके पिता युवराज महावीर ने अपने भाई महाराज से झगड़कर मझौली छोड़ दिया । फिर इन महावीर ने प्रयाग के पश्चिम सिंगरौर और मानिकपुर के क्षेत्र कोजीतकर गङ्गा तट पर रामपुरा राज्य की स्थापना की । इनकी राजधानी डेरवा थी । यह दिल्ली नरेश के भी पास गये । यहाँ इन्हें मनसरदारी मिली और मुलतान की लड़ाई परजाना पड़ा । वहाँ से विजय कर लौटे, तो बादशाह से राजराया की उपाधि पाई । तब से रामपुरा के राजा राय कहलाने लगे ।

(२) कृष्णविलास, १९२३।३९६, १९४७।३८९क । यह नायिका भेद एवं रस का ग्रन्थ है । प्रथम प्रति के प्रथम ८ पन्ने नहीं हैं । ग्रन्थ में कवि नाम आया है ।

बर्नौं नहीं जहँ वर्नने, लक्षण लक्ष्य विचारि
कहत जो कवि शिवराज हैं लीजो सुकवि सुधारि

यह ग्रन्थ भानुदत्त की रस मञ्जरी एवं चन्द्रालोक के आधार पर लिखा गया है —

भानुदत्त मत बूझि के, चन्द्रालोक विचारि
वरणों कृष्णविलास है, यथा बुद्धि अनुसारि ७३७

पुष्पिका में ग्रन्थकर्ता का नाम शिवराज महापात्र दिया गया है। रचनाकाल सूचक दोहा अधूरा है—

'संवत अठारह सै सुखद, वा ....'

रस सागर की रचना सं० १८६६ में हुई। हो सकता है इसकी रचना १८६२ में हुई रही हो। वा से वाइस, वावन, वासठ, वानवे आदि अङ्क बनते हैं। पर यहाँ वासठ ही अधिक उपयुक्त प्रतीत हो रहा है।

———

८५२।७२१

(१९) शिवदीन कवि। ऐजन। ये सामान्य कवि हैं।

सर्वेक्षण

विनोद (१७२२) के अनुसार यह गौरिहार के रहनेवाले कायस्थ थे। इनके सम्बन्ध में कोई सूचना सुलभ नहीं।

———

८५३।७१०

(२०) शिवसिंह प्राचीन १, सं० १७८८ में उ०। ऐजन। ये सामान्य कवि हैं।

सर्वेक्षण

शिवसिंह सेंगर के अतिरिक्त शिव सिंह नाम के एक और व्यक्ति खोज में मिले हैं। यह भिनगा के राजा थे। इनके पिता का नाम सर्वदमन सिंह और पितामह का वरिवण्ड सिंह था। इनका रचनाकाल सं० १८५०-७५ के आस-पास है। सरोज में दिया संवत १७८८ इनका जन्मकाल भी नहीं हो सकता है। इनका जन्मकाल सं०१८२५ के आस-पास होना चाहिए।

शिव सिंह जी के बनाए हुए निम्नलिखित ग्रन्थ खोज में उपलब्ध हुए हैं। इनमें से प्रथम चार तो पिङ्गल ग्रन्थ हैं।

(१) भक्तिप्रकाश, १९२३।३९७ सी। रिपोर्ट के अनुसार इसका रचनाकाल सं० १८५२ है, रचनाकाल सूचक छन्द नहीं उद्धृत है।

(२) भाषावृत्त मञ्जरी, १९२३।३९७ डी।

(३) भाषावृत्त रत्नावली, १९२३।३९६ ई। यह संस्कृत से अनूदित ग्रन्थ है।

सुभग वृत्त रत्नावली छन्द शास्त्र सुर वानि
सो ताको भाषा कियो गिरिजा पद नुति ठानि

(४) श्रुतिबोध भाषा १९२३।३९७ एच। यह भी संस्कृत से अनूदित है।

(५) काव्य दुषण प्रकाश १९२३।३९ एफ। इस ग्रन्थ में तीन अध्याय हैं। पहले अध्याय में काव्य-दोष, दूसरे में चित्र-काव्य और तीसरे में प्रहेलिका है। इस ग्रन्थ में कवि ने रचनाकाल अवश्य दिया है, पर वह बहुत स्पष्ट नहीं है—

वारिज जात· खड़ानन आनन अंक
सिद्धि सदन गज मुख लखि अवदन संक २
शुक्रवार अष्टमि तिथि सित वैसाष
प्रगट कर्‌यो यह ग्रन्थै करि अभिलाष ३

वारिजजात या ब्रह्मा के चार मुख हैं और पड़ानन के छह: इस बरवै में यही दो अंक दिखाई पड़ रहे हैं हैं। सीधा पढ़ने पर इनसे ४६ और उलटा पढ़ने पर ६४ बनता है। १८०० इसमें दिया नहीं गया है। इस ग्रन्थ की रचना या तो सं० १८४६ में हुई या फिर सं० १८६४ में।

कवि ने किसी ग्रन्थ में अपना नाम नहीं दिया है। केवल भक्तिप्रकाश के अन्त में एक कवित्त में उनसे अपना नाम दिया है। इस ग्रन्थ में उसने अपना नाम घुमा फिरा कर दिया है।

नाम प्रगट करि बरनै कवि निज सर्व
हौं कैसे करि भाषौं मति अति खर्व ८
ताते प्रगट न भाखत, राखि बिगोइ
जू कवि सुमति लखि जानै, और न कोइ ९
कौन बरने मङ्गल जग, करि रिपु कौन
सौ बरने बा ग्रन्थ, लखि कवि तौन १०

प्रश्न—कौन करन मंगल जग ?

उत्तर—शिव।

प्रश्न—करि रिपु कौन ?

उत्तर—सिह।

इन दोनों प्रश्नों के उत्तर में कवि-नाम शिव सिह छिपा हुआ है।

(६) रामचन्द्र चरित्र, १९३३।३९७ जी। रिपोर्ट के अनुसार इस ग्रन्थ की रचना सं० १८५७ में हुई। रचनाकाल सूचक दोहा बहुत स्पष्ट नहीं है।

वेद ससी जगकुसन तिथि, सप्तमि सित गुरुवार
मास भादि दे बीच लखि, सम्पूरन सु बिचार

कवि ने प्रच्छन्न रूप से इस ग्रन्थ में भी अपना नाम दिया है।

मुक्ति करन कल्यानप्रद, अर्द्ध दिवदल रिपु व्याल
ये पूरन मिलि नाम जिहि, किये ग्रन्थ हित बाल

'मुक्ति करन कल्यानप्रद' का अभीष्ट 'शिव' और 'रिपु व्याल' का अभीष्ट 'सिंह' है। इनके संयोग से कवि का नाम शिव सिंह सिद्ध होता है।

ये छहों ग्रन्थ भिनगा राज्य पुस्तकालय में एक ही जिल्द में हैं। अमरकोष की तीन प्रतियाँ खोज में उपलब्ध हुई हैं। दो[1] इन शिव सिंह की कही गई हैं। एक पर इनके दरबारी कवि शिवप्रसाद का नाम चढ़ा हुआ है।[2] इस ग्रन्थ की रचना सं० १८७४ में हुई। एक प्रति में रचना-कालसूचक दोहे के आगे यह छन्द है—

ता दिन ग्रन्थ अरम्भ किय, शिव प्रसाद कायस्थ
अज्ञा श्री शिव सिंह के, रच्यो ग्रन्थ परसस्थ

अन्य प्रतियों में इसका पाठ यह है—

ता दिन ग्रन्थ अरम्भ किय, श्री शिवसिंह सुजान
अमर कोष भाषा कियो, दोहा को परनाम

इस ग्रन्थ में शिव सिंह के वंश का पूरा विवरण दिया गया है। जो कवि अपना नाम स्पष्ट रूप में देने में सकुचाता है और हिचकता है, वह अपना विस्तृत वंश वर्णन कैसे करेगा, यह असमञ्जस की बात है। अतः यह कृति शिवप्रसाद कायस्थ की है, न कि शिव सिंह विसेन की। इस ग्रन्थ की पुष्पिका से कवि के वंश, पिता और पितामह का नाम ज्ञात होता है—

"इति श्री महाराजकुमार विनेशेनवंशावतंस वरिवण्ड सिंहात्मज सर्वदमनसिंह तनूज शिवसिंह कृते भाषाया तृतीय खण्डः ।। इति।।"—खोज रिपोर्ट १९२३।३९७ ए।

इनके पुत्रों के नाम उमराव सिंह,[3] काली प्रसाद सिंह,[4] एवं सर्वजीत सिंह,[5] थे और पौत्रों के युवराज सिंह[6] और कृष्ण दत्त सिंह[7]।

---

(१) खोज रिपोर्ट १९२३।३९७ ए, बी (२) वही, १९२३।३९४ (३) वही, १९२३।१९७ (४) वही, १९२३।२०२ (५) वही, १९२३।३९० (६) वही, १९२३।१९७ (७) वही, १९२३।३९०

८५४।७११

(२१) शिव सिंह सेंगर २, कान्था, जिले उन्नाव के निवासी, सं० १८७८ में उ०। अपना नाम इस ग्रन्थ में लिखना बड़े सङ्कोच की बात है। कारण यह है कि हमको कविता का कुछ भी ज्ञान नहीं! इस हमारी ढिठाई को विद्वज्जन क्षमा करें। हमने वृहच्छिव पुराण को भाषा और उर्दू दोनों बोलियों में उल्था करके छपा दिया है और ब्रह्मोत्तर खण्ड की भी भाषा की है। काव्य करने की हमने शक्ति नहीं है। काव्य इत्यादि सब प्रकार के ग्रन्थों के उकट्ठा करने का बड़ा शौक है। हमने अरबी, फारसी, संस्कृत आदि के सैकड़ों अद्भुत ग्रन्थ जमा किये हैं और करते जा रहे हैं। इन विद्याओं का थोड़ा अभ्यास भी है।

सर्वेक्षण

शिव सिंह जी, मौजा कान्था, जिले उन्नाव के जमींदार, रनजीत सिंह के पुत्र और बख्तावर सिंह के पौत्र थे। विनोद के अनुसार इनका जन्म सं० १८९० में और मृत्यु सं० १९३५ में ४५ वर्ष की वय में हुई। सरोज के अनुसार शिव सिंह जी सं० १८७८ में उ० थे। यह १८७८ ई० सन् है और सरोज का प्रकाशनकाल है। यह जन्मकाल नहीं है। इस वर्ष कवि उपस्थित था। दैवयोग ही है कि इसी वर्ष उसकी मृत्यु भी हुई। यह पुलिस इन्स्पेक्टर थे। इनके पास हिन्दी के हस्त-लिखित ग्रन्थों का बहुत अच्छा संग्रह था, जिनके आधार पर इन्होंने सं० १९३४ में सरोज प्रणयन किया।[१] प्रथम संस्करण में सं० १८७८ में उ० के स्थान पर विद्यमान हैं, लिखा है।

८५५।७६६

(२२) शिवनाथ शुक्ल, मकरन्दपुर वाले, देवकीनन्दन कवि के भाई, सं० १८७० में उ०। इनकी कविता सरस है, परन्तु यह भी अपना उपनाम नाथ रखते थे। इनका बनाया हुआ कोई ग्रन्थ नहीं मिलता, इस कारण छः-सात नाथों के बीच से शिवनाथ को निकालना कठिन हो गया है।

सर्वेक्षण

सरोज, ग्रियर्सन (६३२), विनोद (१२८६) में शिवनाथ को देवकीनन्दन का भाई कहा गया है। यह ठीक नहीं। शिवनाथ देवकीनन्दन के पिता थे।[२] इनका रचनाकाल सं० १८४० के पूर्व होना चाहिये। वंशावली रीवां इन शिवनाथ की रचना नहीं है जैसा कि विनोद में कहा गया है। इस वंशावली के रचयिता अजवेस के पुत्र शिवनाथ हैं।[३]

---

(१) खोज रिपोर्ट १९२३।३९० भूमिका-पृष्ठ २-७ (२) वही, कवि संख्या ३६४ (३) वही, कवि संख्या ३, खोज रिपोर्ट १९०१।१०६

८५६।७६८

(२३) शिवप्रकाश सिंह, डुमराँव के बाबू, सं० १६०१ में उ०। इन्होंने विनय-पत्रिका का तिलक रामतत्वबोधिनी नाम से बहुत सुन्दर बनाया है।

सर्वेक्षण

शिवप्रकाश जी डुमराँव, जिला आरा के राजा जयप्रकाश के छोटे भाई थे। यह सुप्रसिद्ध राजा भोज के वंशज थे। इनका एक ग्रन्थ रामतत्वबोधिनी टीका खोज में मिला है।[१] यह विनय-पत्रिका की टीका है जिसका उल्लेख सरोज में हुआ है। इस ग्रन्थ में कवि ने अपना परिचय दिया है—

भोज वंश अवतंस कहि, जै प्रकाश महराज
रजधानी डुमराँव में, है तिन सुभग समाज
तिनके लघु भाई सुहृद, शिवप्रकाश जेहि नाम
तिनने यह टीका करी, सकल सास्त्र को धाम २३

इस ग्रन्थ में कवि ने अपने बनाए सात ग्रन्थों का उल्लेख किया है—(१) सत्संग विलास, (२) भजन रसार्णवामृत, (३) भगवत रस सम्पुट, (४) अद्भुत रस-तरङ्ग, (५) इतिहास लहरी, (६) भगवत तत्व-भास्कर, (७) रामतत्वबोधिनी।

प्रथम कियो सतसङ्ग विलासा
श्री रामायण तत्व प्रकासा
दूसर भजन रसार्णव आमृत
भजन तरङ्गन करियो आवृत
भगवत रस सम्पुट तीसर है
जामों रस को उठति लहर है
अद्भुत रस तरङ्ग है नाम
चौथ को सब सिद्धान्त ललाम
इतिहास लहरि पञ्चम सो भयो
कहत सुनत जेहि नित सुख नयो
भगवत तत्व भास्कर षट जो
अज्ञान तिमिर नासत झपपट जो
सप्तम विनयपत्रिका टीका
रामतत्व बोधिनी सु नीका

---

(१) खोज रिपोर्ट १६४७।३८६

८५७।७७०

(२४) शिवदीन कवि भिनगा, जिले बहिरायच वाले, सं० १६१५ में उ० । इन कवि ने राजा कृष्णदत्त सिंह विसेन, राजा भिनगा, के नाम से कृष्णदत्त भूषण नामक एक महा अद्भुत काव्य-ग्रन्थ बनाया है। भिनगा में सब राजा-बाबू कवि-कोविद होते आये हैं और अब भी भैया सुखराज सिंह इत्यादि सत्कवि हैं।

सर्वेक्षण

शिवदीन कवि का कृष्णदत्त भूषण तो नहीं, कृष्णदत्त रासा नामक ग्रन्थ खोज में मिला है।[१] इस ग्रन्थ में अवध के नवाब के नाजिम महमूद अली खाँ और भिनगा नरेश कृष्णदत्त सिंह के युद्धों का वर्णन है। यह युद्ध सं० १६०१ में हुआ था।

ब्रह्म[१] सहित नभ[०] खण्ड[९] चन्द्र[१] संवत परिमानो
बहुरि राग रस दीप आतमा शाके जानो
कियो समर नरनाह विदित विश्वेन वंशवर
उदित देस परदेस सुजस अस छायो घर घर
लखि कवि शिवदीन विचारि चित, करत ताहि वर्णन सु अब
कर जोरि विनय कवि कुल करौं, बिगरों वर्ण सम्भारि सब

ग्रन्थ की रचना सं० १६०१ के बाद ही किसी समय हुई होगी। भिनगा नरेश कृष्णदत्त सिंह सर्वजीत सिंह के पुत्र और शिव सिंह के प्रपौत्र थे। उमराव सिंह और कालीप्रसाद सिंह इनके चचा थे।[२] इन सब की भी प्रशस्ति उक्त ग्रन्थ में है। ग्रन्थ की पुष्पिका में शिवदीन कवि को बन्दीजन और विल्लुलग्रामी कहा गया है। रिपोर्ट में इन्हें शिवदीन विलग्रामी कहा गया है और सं० १६०१ को ग्रन्थ का रचनाकाल भी मान लिया गया है। किसी शिवदीन रचित रामचरित की तिथियाँ देने वाला, ५३ दोहों का एक लघुग्रन्थ रामरत्नावली विहार की खोज में मिला है।[३] सम्भवतः यह इन्हीं शिवदीन की रचना है।

८५८।७८६

(२५) शिवप्रसन्न कवि, शाकद्वीपी ब्राह्मण, रामनगर, जिले बाराबंकी। वि०। ये सामान्य कवि हैं।

सर्वेक्षण

शिवप्रसन्न का विवरण और कविता का उदाहरण महेशदत्त के भाषाकाव्यसंग्रह से लिया

---

(१) खोज रिपोर्ट १६२३।३६० (२) यही ग्रन्थ, कवि संख्या ८५३ (३) विहार रिपोर्ट, भाग २, संख्या ६०

गया है । उक्त ग्रन्थ के अनुसार इनका जन्म सं० १८८८ के आस-पास हुआ था । उक्त ग्रन्थ में इस कवि का यह विवरण दिया गया है ।

शिवप्रसन्न कवि, ये जिले बाराबंकी तहसील फतेहपुर ग्राम रामनगर के निवासी शाकद्वीपीय ब्राह्मण हैं । इनके पिता का नाम राम ज्यावन वैद्यराज, पितामह का श्यामदत्त और प्रपितामह का केशवराय पण्डित था । ये संस्कृत और भाषा दोनों के कवि हैं । इन्होंने सती चरित्र नामक एक ग्रन्थ बहुत ही उत्तम बनाया है । इनकी अवस्था ४४ वर्ष की है । —कला काव्यसंग्रह, पृष्ठ १३३

८५९।७३६

(२६) शङ्कर कवि १ । इनके शृङ्गार के बहुत सुन्दर कवित्त हैं ।

सर्वेक्षण

खोज रिपोर्टों में कम से कम १४ शङ्कर बिखरे हुए हैं । अप्रकाशित संक्षिप्त विवरण में इन्हें एकत्र कर दिया गया है । इनमें से केवल नाम और एक शृङ्गारी कवित्त के सहारे इन शङ्कर की पहचान करना समुद्र में खोई बूंद के ढूंढ़ने के सदृश है ।

८६०।७५२

(२७) शङ्कर कवि २ । ऐजन । इनके शृङ्गार के बहुत सुन्दर कवित्त हैं ।

सर्वेक्षण

८५९ संख्यक शङ्कर १ के समान इनकी भी पहचान सम्भव नहीं ।

८६१।७५३

(२८) शङ्कर कवि ३, त्रिपाठी, बिसवाँ वाले, सं० १८९१ में उ० । इन्होंने अपने पुत्र शालिक कवि की सहायता से, रामायण की कथा कवित्तों में बहुत ललित बनाई है ।

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध में कोई प्रामाणिक सूचना सुलभ नहीं । विनोद (२२८३) में इन्हें सं० १९३० में उपस्थित कवियों की सूची में स्थान दिया गया है और इन्हें सरोज वर्णित रामायण तथा १९०९ वाली रिपोर्ट में उल्लिखित बज्रसूची ग्रन्थ का कर्त्ता माना गया है । बज्रसूची ग्रन्थ

संस्कृत में है। मूल कर्त्ता कोई शङ्कर हैं, जो इनसे भिन्न होते चाहिए। इस ग्रन्थ का हिन्दी अनुवाद किसी करन कवि ने प्रस्तुत किया है। इस सम्बन्ध में विनोद और खोज रिपोर्ट दोनों भ्रान्त हैं।

सोरठा

ब्रजसूची ग्रन्थ, संकर कथ्यो सोइ समझि के
भाषा करि मान्यो,........................ ३४
यह उर उपज्यो संकल्प, ब्राह्मण निरनै कीजिए
भाषा भ्रष्ट विकल्ल, ते करन बरनन किए ३६
—खोज रिपोर्ट १९०६।२७८

खोज में एक शङ्करदास राव नामक ब्राह्मण कवि मिले हैं, इन्हें बिसवाँ निवासी कहा गया है तथा सं० १८६० से पूर्व उपस्थित माना गया है। इनके ग्रन्थ का नाम है, भाषा ज्योतिष या ज्योतिष लग्न प्रकाश।[1] रिपोर्ट का यह कथन सन्दिग्ध ही है।

८६२।७५४

(२९) शङ्कर सिंह कवि ४, चँड़रा, जिले सीतापुर, के तालुकेदार। वि०। ये सामान्य कवि हैं।

सर्वेक्षण

विनोद (२२८४) में सं० १९३० में उपस्थित कवियों की सूची में इन शङ्कर सिंह का नाम है। इनके दो ग्रन्थों—काव्याभरण सटीक और महिम्नादर्श का उल्लेख तृ० त्रै० रि० के आधार पर किया गया है।[2] ये दोनों ग्रन्थ बड़गावाँ, जिला सीतापुर, के जमींदार के यहाँ से मिले थे। सम्भवतः इसीलिए खोज रिपोर्ट में इन्हें उसी जिले के तालुकेदार शङ्कर सिंह की कृति मान लिया गया है। महिम्नादर्श में कवि अपना परिचय इस दोहे में दिया है—

सुत हुलास नृप नाम को, बरबर ग्राम स्वबास
कियो महिम्नादर्श यह, शंकर शंकरदास

इस दोहे के अनुसार महिम्नादर्श के रचयिता राजा हुलास के पुत्र, बरबर ग्राम निवासी, शङ्कर के भक्त शङ्कर हैं। ग्रन्थ का प्रतिलिपिकाल सं० १९५४ है। यह संस्कृत के शिवमहिम्नस्तोत्र का भाषानुवाद है। काव्याभरण का प्रतिलिपकाल सं० १८७८ है। सभा के अप्रकाशित संक्षिप्त विवरण में इन दोनों ग्रन्थों को बड़गावाँ के जमींदार, हुलास सिंह के पुत्र, शङ्कर सिंह की कृति

---

(१) खोज रिपोर्ट १९४४।४०५,१९४७।३७४ (२) खोज रिपोर्ट १९१२।१६८ ए, बी।

कहा गया है, जो ठीक प्रतीत होता है। यदि चँड़रा और बरबर या बड़गावाँ एक ही हैं अथवा एक ही जमींदारी के गाँव हैं, तो ये ग्रन्थ सरोज के अभीष्ट शङ्कर सिंह की ही कृतियाँ हैं, अन्यथा नहीं।

८६३।७४०

(३०) श्री गोविन्द कवि, सं० १७३० में उ०। यह कवि राजा शिवराज सुलंकी सितारे वाले के यहाँ थे।

सर्वेक्षण

श्री गोविन्द का शिवराज प्रशस्ति सम्बन्धी एक कवित्त सरोज में उद्धृत है—

भूप सिवराज साहि प्रवल प्रचण्ड तेग
तेरो दोरदण्ड भूमि भारत भड़ाका है

शिवा जी के समय (राज्याभिषेककाल सं० १७३१) को ध्यान में रखते हुए सरोज में दिया गया श्री गोविन्दजी का समय सं० १७३० उपस्थितिकाल सिद्ध होता है।

८६४।७६२

(३१) श्री भट्ट कवि, सं० १६०१ में उ०। इनके पद रागसागरोद्भव में है। प्रिया प्रियतम के चरित्र बड़ी कविता में वर्णन किए हैं।

सर्वेक्षण

श्री भट्ट जी निम्वार्क-सम्प्रदाय के वैष्णव थे। यह वृन्दावन निवासी और केशव भट्ट कश्मीरी के शिष्य थे। हरिव्यासदेवाचार्य या हरिप्रिया एवं हरिदास के यह गुरु थे। सरोज में दिया सं० १६०१ ठीक है और यह इनका रचनाकाल एवं उपस्थितिकाल है। इनका जन्मकाल सं० १५५० के आस-पास होना चाहिए। इनका बनाया हुआ एक ही ग्रन्थ है जिसके जुगलसत, आदि-बानी आदि अनेक नाम हैं। इस ग्रन्थ में कुल १०० पद हैं। प्रत्येक पद के पहले उसी आशय का एक-एक दोहा दिया गया है। दोहे में पद का आभास है। बिहार रिपोर्ट, भाग २, में यही ग्रन्थ 'आभास दोहा' नाम से वर्णित है। उक्त बिहार रिपोर्ट के सम्पादक को ग्रन्थ के नाम की उपयुक्तता में सन्देह है, जो ठीक नहीं। दोहों में पदों का आभास है, अतः नाम कोई बुरा नहीं। ग्रन्थ की पुष्पिका में इसे आदि बानी, जुगल सत, व्रजलीला कहा गया है। बिहारी सम्पादक ने श्री भट्ट को किसी जुगलकिशोर ठाकुर का चाकर कहा है। यह जुगलकिशोर कोई पार्थिव, पाँच भौतिक ठाकुर नहीं हैं, यह तो स्वयं राधा और कृष्ण हैं।

जनम जनम जिनके सदा, हम चाकर निसिभोर
त्रिभुवन पोषक, सुधाकर, ठाकुर जुगल किशोर

इस दोहे में किसी लौकिक ठाकुर की झलक किसी बुद्धि के दिवालिए को ही मिल सकती है।

ग्रियर्सन (५३) में सं० १६०१ को जन्मकाल माना गया है। यह ठीक नहीं। साथ ही इसमें विलसन के रेलिजस सेक्ट्स आफ़ द हिन्दूज़, भाग १, पृष्ठ १५१, के आधार पर इनके नीमादित्य के शिष्य केशव भट्ट से अभिन्न होने की सम्भावना व्यक्त की गई है। यह सम्भावना भी ठीक नहीं। केशव भट्ट श्री भट्ट के गुरु थे। जुगलसत के पद ६५ से दोनों की भिन्नता प्रकट है।

नित अभंग केलि हित हिय में राग
फाग खेलि चलीं गावत बाद
देखत श्री भट केशव प्रसाद ६५

अन्तिम चरण का अर्थ है कि केशव या केशव भट्ट के प्रसाद से मैं श्री भट्ट जुगलकिशोर राधा-कृष्ण की ऊपर वर्णित लीलाएँ देख रहा हूँ। इस पद से श्री भट्ट की, केशव भट्ट से विभिन्नता तो प्रकट होती ही है, साथ ही केशव भट्ट का इनका गुरु होना भी सिद्ध होता है, क्योंकि गुरु की ही कृपा से शिष्य को सूझता है।

विनोद (८७) और हिन्दी साहित्य का इतिहास में आदिबानी और जुगलसत को दो ग्रन्थ माना गया है। यह ठीक नहीं, ये एक ही ग्रन्थ के दो नाम हैं। जुगलसत का 'सत', शतक का सूचक है। इसमें १०० पद हैं, १० सिद्धान्त के, २६ ब्रज-लीला के, १६ सेवा-सुख के, २१ सहज-सुख के, ८ सुर के, १६ उत्सव-सुख के।

दस पद हैं सिद्धान्त बीसषट् ब्रजलीला पद
सेवा सुख सोलह, सहज सुख एक बीस हद
आठ सुरन, एक उनतबीस उच्छव सुख लहिए
श्रीयुत श्रीभट देव रच्यो सत जुगल जो कहिए
निज भजन भाव रुचि तें किए, इतैं भेद ये उर धरौ
रूप रसिक सब संत जन, अनुमोदन याकौ करौ

यही ग्रन्थ इन भिन्न-भिन्न नामों से खोज में मिला है—

(१) आदिबानी सत सिद्धान्त, १९१२।१२६, १९१२।७४, १९२३।१६२, १९४१।२७१ नौ।

(२) जुगलसत, १९००।३६, १९००।७५, १९०६।२३७, १९२३।४०० ए, बी।

(३) पद, १९३२।२०४ बी ।

(४) पदमाला १९४२।२०४ ए ।

(५) ग्राभास दोहा, विहार रिपोर्ट भाग २, संख्या ५ ।

श्री भट्ट जी के समय के सम्बन्ध में पर्याप्त मतभेद है। ग्रियर्सन (५३) में सरोज में दिया सं० १६०१ जन्मकाल स्वीकृत किया गया है । विनोद (८७) में इसे जन्मकाल ही समझकर रचनाकाल सं १६३० दिया गया है। हिन्दी साहित्य का इतिहास, तदनुसार व्रजमाधुरी सार, में इनका जन्म सं० १५९५ एवं रचनाकाल सं० १६२५ दिया गया है। यहाँ तक तो ग़नीमत है। पोद्दार ग्रभिनन्दन-ग्रन्थ में पृष्ठ ८४ पर पाँच प्राचीन पद दिए गए हैं। इनमें से दो श्री भट्ट के, दो हरिव्यासदेवाचार्य के ग्रौर एक परशुरामदेव का है । यहाँ श्री भट्ट का समय सं० १३५२, हरिव्यासदेवाचार्य का १३२० ग्रौर परशुरामदेव का सं० १४५० दिया गया है। यह समय ठीक नहीं। केशव भट्ट कश्मीरी के शिष्य श्रीभट्ट थे, श्रीभट्ट के शिष्य हरिव्यासदेवाचार्य थे। फिर श्रीभट्ट का समय १३५२ ग्रौर इनके शिष्य हरिव्यासदेव का समय १३२० क्यों? पुनः परशुरामदेव हरिव्यासदेव के शिष्य थे। फिर गुरु का समय सं० १३२० ग्रौर शिष्य का सं० १४५० क्यों? यह १३० वर्ष का अन्तर ग्रनर्थकारी है।

श्री किशोरीदास वाजपेयी ने जुगलशतक के रचनाकाल का यह दोहा दिया है[1]—

नयन(२) बान(५) पुनि राम(३) ससि(१), मनौ ग्रंक गति वाम

प्रगट भयो श्री जुगलसत, इहि संवत ग्रभिराम

इस दोहे से वही समय निकलता है, जो ऊपर पोद्दार ग्रभिनन्दन-ग्रन्थ में दिया गया है। यह दोहा विश्वसनीय नहीं प्रतीत होता, यद्यपि शास्त्री जी को इसकी सत्यता में तनिक भी सन्देह नहीं है। वे लिखते हैं कि परशुराम देव ग्रौर गो० तुलसीदास की भेंट वृन्दावन में हुई थी। परशुराम देव श्रीभट्ट के प्रशिष्य थे, ग्रतः तीन पीढ़ियों का ग्रन्तर है ग्रौर साधुग्रों की ग्रायु गृहस्थों की ग्रायु से प्रायः ग्रधिक होती ही है, ग्रौर तब तो ग्रौर ग्रधिक होती थी । ग्रतः जुगलशतक का रचनाकाल सं० १३५२ ठीक है। पर मुझे शास्त्री जी का यह तर्क ठीक नहीं लगता। परशुरामदेव का रचनाकाल सं० १६६० है।[2] इनके गुरु हरिव्यासदेव का समय सं० १६४० के ग्रास-पास होना चाहिए एवं हरिव्यास के भी गुरु श्रीभट्ट का समय १६०० के ग्रास-पास। कितनी भी दीर्घ ग्रायु हो, तीन पीढ़ियों का ग्रन्तर सवा तीन-सौ वर्ष कदापि नहीं हो सकता। साथ ही श्रीभट्ट के गुरु केशवभट्ट कश्मीरी का समय सोलहवीं शती का उतरार्द्ध है। यह सं० १५७० के ग्रास-पास चैतन्य महाप्रभु से हारे थे।[3] ऐसी स्थिति में श्रीभट्ट का समय १३५२ नितान्त ग्रसम्भव है। सरोज में दिया समय ठीक है ग्रौर यह कवि का रचनाकाल है। कुछ लोग 'राम' को 'राग' मानकर इसका

---

(१) माधुरी, वर्ष १२, भाद्रपद १९९०, पृष्ठ २४४-४८ (२) यही, कवि संख्या ४७४
(३) यही, कवि संख्या १२२

रचनाकाल सं० १६५२ मानना चाहते हैं।[1] पर यह तो श्रीभट्ट के पोता-शिष्य परशुरामदेव का समय है। अतः यह संवत् भी ठीक नहीं।

शास्त्री जी का अनुमान है कि श्रीभट्ट जी दाक्षिणात्य ब्राह्मण थे। सर्वेश्वर के अनुसार श्रीभट्ट जी गौड़ ब्राह्मण थे। इनके पूर्वज हिसार जिले के वासी थे। आपके माता-पिता मथुरा में आ बसे थे। आपके वंशज अब भी ध्रुवटीला, मथुरा में निवास करते हैं। यहाँ भी जुगलशतक का रचनाकाल १३५२ वि० माना जाता है।[2] इनके ग्रन्थ के आदिबानी कहे जाने का शास्त्रीजी ने यह कारण दिया है—

"श्रीभट्ट देव जी से पहले श्री निम्बार्क-सम्प्रदाय के किसी भी आचार्य ने हिन्दी में कुछ नहीं लिखा था, सबने संस्कृत में ही अपने सिद्धान्त-ग्रन्थ लिखे थे। हिन्दी को सबसे पहले प्रथम श्रीभट्ट जी ने ही दिया और सरस पदों की रचना की। इसीलिए यह श्री निम्बार्क-सम्प्रदाय में आदिबानी नाम से प्रसिद्ध हैं।"

भक्तमाल में श्रीभट्ट जी का विवरण छप्पय ७६ में है। प्रियादास ने इस छप्पय की टीका में एक भी कवित्त नहीं लिखा है।

———

८६५।६६६

(३२) श्रीपति कवि, पयागपुर, जिले बहिरायच के, सं० १७०० में उ०। यह महाराज भाषा-साहित्य के आचार्यों में गिने जाते हैं। इनके बनाए हुए काव्य-कल्पद्रुम, काव्य-सरोज, श्रीपति-सरोज, ये तीन ग्रन्थ विख्यात हैं। हमने ये तीनों ग्रन्थ नहीं देखे हैं और न इनके कुल और जन्मभूमि से ही हमको ठीक-ठीक आगाही है।

सर्वेक्षण

सरोज में श्रीपति का विवरण भाषाकाव्य-संग्रह के आधार पर है। यह सारा विवरण भ्रष्ट है। न तो कवि का सन्-संवत् ठीक है और न उसका निवास-स्थान ही। श्रीपति जी कालपी के रहनेवाले कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे। इनका सर्वाधिक प्रसिद्ध ग्रन्थ श्रीपति-सरोज या काव्य-सरोज है। ये एक ही ग्रन्थ के दो नाम हैं, दो स्वतन्त्र ग्रन्थ नहीं, जैसा कि सरोज में कथन है। इनके बनाए हुए निम्नलिखित ग्रन्थ खोज में मिले हैं—

(१) श्रीपति-सरोज या काव्य-सरोज, १६०४।४८, १६०६।३०४ ए, १६२३।४०४ ए, बी। इस ग्रन्थ की रचना सं० १७७७ में हुई। इसके कर्ता का नाम श्रीपति है और इसकी रचना कालपी में हुई। ये सभी सूचनाएँ इस ग्रन्थ में दी हुई हैं।

---

(१) सूर पूर्व ब्रजभाषा और उसका साहित्य, पृष्ठ २०२, (२) सर्वेश्वर, वर्ष ५, अङ्क १-५, चैत्र सं० २०१३, पृष्ठ १७२

अलि सम स्वाद महान को, जासो सुख सरसाइ
रचित काव्य सरोज सो, श्रीपति पंडितराइ ३

संवत मुनि मुनि मुनि ससी, सावन सुभ बुधवार
असित पञ्चमी को लियो, ललित ग्रन्थ अवतार ४
सुकवि कालपी नगर को, द्विज मनि श्रीपति राइ
जस सम स्वाद जहान को, बरनत सुख समुदाइ ५

एक खोज रिपोर्ट में इस ग्रन्थ का विवरण विनोदाय काव्य-सरोज नाम से भी हुआ है।[१] इस ग्रन्थ के मिल जाने से कवि के सम्बन्ध की अनेक भ्रान्तियों का निराकरण हो गया है।

(२) अनुप्रास, १६०६।३०४ बी०। यह अनुप्रासमय ३० छन्दों का लघु-ग्रन्थ है।

(३) विनोदाय काव्य सरोज, १६०६।३०४ सी। यह काव्य-सरोज का एक खण्ड है। इसमें काव्य-दोषों का वर्णन है और इसकी पुष्पिका में काव्य सरोज का उल्लेख है—'इति विनोदाय काव्य सरोजे अर्थ दोष निरुपणम्।'

(४) काव्य सुधाकर, १६२३।४०४ सी। इस ग्रन्थ की प्रथम कला ही उपलब्ध है। इसे १६ कलाओं का बड़ा ग्रन्थ होना चाहिए। इसका अन्तिम दोहा यह है—

कवित निरूपन पद कह्यो श्रीपति सुमति निवास
काव्य सुधाकर महँ भई पहिलो कला प्रकास

किन्तु पुष्पिका में ग्रन्थ समाप्ति की सूचना है—"इति काव्य सुधाकरे निरूपन समाप्तम् ।।इति।।"

सम्भवतः निरूपन के पहले कुछ छूट गया है। निश्चय ही यह पुष्पिका प्रतिलिपिकार की है, न कि कवि की। इस ग्रन्थ में कवि ने अपने वंश का भी वर्णन किया है, पर सम्बन्धित अंश उद्धृत नहीं है। कुछ अन्य कवियों के सम्बन्ध में इससे अवश्य सूचनाएँ मिलती हैं।

कवित किए तें पाइयतु परम सुजस धन मान
रोगन सों अरु दुखन सों कहैं सबै मतिमान ३
केसव अरु गङ्गादि को सुजस रह्यौ जग छाय
यों बैरम सुत तें लह्यो धन मुकुन्द कविराय ४

---

(१) खोज रिपोर्ट १६०६।३०४ सी।

अकबर वरु दिल्लीस तें पायो मान अनूप
ख्यालहि में तब ह्वै गयो सुकवि बीरवर भूप ५
जगन्नाथ तैं ज्यों नस्यो कवि दिनेस क। रोग
मनीराम ज्यायो तनय जानत सिगरे लोग ६

विनोद (६४३) में श्रीपति के इन ७ ग्रन्थों का नामोल्लेख हुआ है—(१) श्रीपति सरोज या काव्यसरोज (३) विक्रमविलास, (३) कवि कल्पद्रुम (४) सरोज कलिका, (५) रस सागर, (६) अनुप्रास विनोद, (७) अलङ्कार गंगा।

इनमें से १६ को छोड़ शेष अनुपलब्ध हैं। अनुप्रास विनोद ऊपर वर्णित अनुप्रास नाम का ग्रन्थ प्रतीत होता है।

८६६।७००

(३३) श्रीधर कवि १, प्राचीन, सं० १७८६ में उ०। इनके श्रृङ्गार के सरस कवित्त है।

सर्वेक्षण

सरोज में इन प्राचीन श्रीधर का यह सवैया उद्धृत है—

श्रीधर भावते प्यारी प्रवीन के रंग रँगे रति साजन लागे
अङ्ग अनङ्ग तरङ्गन सो सब आपने आपने बाजन लागे
किंकिनि पायल पैजनियाँ बिछिया घुघुरू घन गावन लागे
मानो मनोज महीपति के दरबार मरातिब बाजन लागे

यह सवैया श्रीधर उपनाम मुरलीधर का है। यह इनके ग्रन्थ में राधाकृष्णदास जी को मिला था।[1] अतः इन श्रीधर प्राचीन का कोई अस्तित्व नहीं रह जाता। सरोज में दिया इनका समय भी श्रीधर मुरलीधर के समय के मेल में हैं।[2]

८६७।७०१

(३४) श्रीधर कवि २, राजा सुब्बा सिंह चौहान, ओयल, जिले खीरी वाले सं० १८७४ में उ०। इन्होंने भाषा-साहित्य का एक महा अद्‌भुत ग्रन्थ विद्वन्मोदतरङ्गिणी नाम का बनाया है। इस ग्रन्थ में अपने और अपने गुरु सुवंश शुक्ल कवि के सिवा और भी ४४ सत्कवियों के कवित्त

---

(१) राधाकृष्णदास ग्रन्थावली, भाग १, पृष्ठ १८८ (२) यही ग्रन्थ, कवि सख्या ८६८

उदाहरण में प्रसङ्ग-प्रसङ्ग पर लिखे हैं। इस ग्रन्थ में नायिका-नायक भेद, चारों दर्शन सखी, दूती वर्णन, षट्ऋतु, रस निर्णय, विभाव, अनुभाव, भाव, रस, रसदृष्टि, भावसबलादि भाव उदय इत्यादि विषय विस्तारपूर्वक कहे हैं।

सर्वेक्षण

श्रीधर का असल नाम सूबा सिंह है। यह ओयल नरेश बखत सिंह के छोटे पुत्र थे, छोटे भाई नहीं, जैसा कि विनोद (१२४२) में लिखा गया है।

सुबा जानियो नाम, बखत सिंह को लघु तनय
द्विज मत लै अभिराम, श्रीधर कविता में कह्यो

इनके पितामह का नाम हेम सिंह और प्रपितामह का गजराज था। श्रीधर के निम्नलिखित ग्रन्थ खोज में मिले हैं—

(१) विद्वन्मोद तरङ्गिणी, १६१२।१७७ बी, १६२३।४०१ बी। इस ग्रन्थ में रचनाकाल नहीं दिया गया है। सरोज के अनुसार इसकी रचना सं० १८७४ में और विनोद के अनुसार १८८४ में हुई। मिश्रबन्धुओं ने इस ग्रन्थ को कान्था में शिवसिंह के भतीजे नौनिहाल सिंह के यहाँ देखा था। इस ग्रन्थ में श्रीधर के वहुत कम छन्द हैं। इनके काव्यगुरु सुवंश शुक्ल के छन्द अधिक हैं। इनके अतिरिक्त इस ग्रन्थ में ४४ कवियों के भी सरस कवित्त हैं। इस ग्रन्थ में सभी साहित्यांगों का वर्णन हुआ है।

(२) शालिहोत्र प्रकाशिका, १६१२।१७७ ए, १६२३।४०१ ए, १६२६।४५५ ए, बी, १६४७।४१८। यह ग्रन्थ संस्कृत में लिखित नकुल और सारङ्गधर आदि की रचनाओं पर आधृत है।

सारङ्गधर अरु नकुल मत, सालिहोत्र लखि ग्रन्थ
समुझि सुरुचि भाषा करी, लै औरौ कछु पन्थ १८

इस ग्रन्थ की रचना सं० १८६६ में हुई—

तिनके मतहिं प्रकाशिका, कातिक बदि रविवार

संवत षट्(६) नव(९) वसु(०) ससी(१), त्रयोदसी अवतार १९

इस ग्रन्थ में कवि ने अपना वंश परिचय दिया है—

हेम सिंह नृप के भए, बखत सिंह त्यों नन्द १३
बखत सिंह के चारि सुत, जेठे नृप रघुनाथ १४
बहुरि सु जालिम सिंह भो, तासु अनुज उमराउ १५

तासु अनुज लघु जानि, सुव्वा जानौ नाम तेहि
श्रीधर नाम बखानि, विरचत छन्द प्रबन्ध में १६

इस ग्रन्थ में पूर्ववर्ती रचना विद्वन्मोद तरङ्गिणी का भी उल्लेख हुआ है।

विद्वन्मोद तरङ्गिणी ज्यों कीन्हीं रसखानि
त्यों विरच्यो बहु छन्द ले सालिहोत्र सुखदानि १७

यह चौहान ठाकुर थे, जैसा कि सरोज में कहा गया है, वैसा नहीं थे, जैसा कि विनोद में लिखा गया है। यह सूचना भी इस ग्रन्थ से मिलती है।

औ चलिहै चौहान वंस याही ते भाष्यो ५
मात पिता स्वाहा अनल वत्स गोत्र चौहान
याहि वंश में प्रकट भे शंकर नृपति सुजान ७
उपजे शंकर वंश में पृथीराज महराज
जाहिर जम्बू दीप में करै धर्म के काज ८

इस प्रकार यह पृथ्वीराज चौहान के भी वंशज सिद्ध होते हैं।

८६८।७०२

(३५) श्रीधर मुरलीधर कवि। इन्होंने कवि विनोद नामक पिङ्गल ग्रन्थ बनाया है।

सर्वेक्षण

श्रीधर मुरलीधर ओझा ब्राह्मण थे और प्रयाग के रहने वाले। कहीं के नावाब मुसल्ले खाँ के आश्रित और दरबारी थे।

श्रीधर ओझा विप्रवर मुरलीधर वस नाम
तीरथराज प्रयाग में सुवस वस्यो रवि धाम

इनकी आज्ञा से सं० १७६७ में श्रीधर मुरलीधर ने चन्द्रालोक और कुवलयानन्द के आधार पर जसवन्त सिंह कृत भाषा-भूषण की शैली पर, भाषा-भूषण ही नाम का एक अलङ्कार ग्रन्थ बनाया था।

सत्रह सै सतसठि लिख्यो, संवत जेठ प्रमानि
कृष्ण पक्ष तिथि अष्टमी, बुध वासर सुखदानि ५
चन्द्रालोक विलोकि कै, कलित कुवलयानन्द
यह भाषा भूषण रच्यो, कविजन आनन्द कन्द

—खोज रिपोर्ट १९४१।२७०

श्रीधर मुरलीधर का बनाया जंगनामा सभा द्वारा प्रकाशित हो चुका है। इसमें जहाँदारशाह और फर्रूखसियर के उस युद्ध का वर्णन है, जो दिल्ली की सल्तनत के लिए उनमें हुआ था। इस ग्रन्थ का सम्पादन बाबू राधाकृष्णदास ने किया था। इसकी रचना सं० १७६९ में हुई थी।

संवत सत्रह सै उनहत्तरि, पूस पून्यो बघु तहीं

सन सो अग्यारह तेतिसा, माहे मुहर्रम चौदहीं

कवि-विनोद इनकी तीसरी कृति है और यह पिङ्गल ग्रन्थ है। सरोज में इसके दो दोहे उद्धृत हैं।

श्रीधर मुरलीधर सुकवि, मानि महा मन मोद

कवि विनोद मय यह कियो, उत्तम छन्द विनोद १

श्रीधर मुरलीधर कियो, निज मति के अनुमान

कवि विनोद पिंगल सुखद, रसिकन के मन मान २

श्रीधर मुरलीधर एक ही व्यक्ति का नाम है। ग्रियर्सन (१५६,१५७) में कवि विनोद को श्रीधर और मुरलीधर नामक दो भिन्न व्यक्तियों का संयुक्त कृतित्व स्वीकार किया गया है, जो ठीक नहीं। इसी प्रकार विनोद में एक बार कवि विनोद के रचायिता श्रीधर (५१२) का विवरण है और एक बार श्रीधर मुरलीधर (५५१) का। विनोद में श्रीधर मुरलीधर का जन्म-काल सं० १७३७ अनुमान किया गया है इनके और निम्नलिखित ग्रन्थों की सूची दी गई है—

(१)जंगनामा, (२) संगीत की पुस्तक, (३) जैन मुनियों के चरित्र, (४) कृष्णलीला के फुटकर पद्य, (५) चित्र-काव्य, (६) कवि विनोद पिङ्गल। इनमें से १ और ६ तो निश्चित रूप से इन्हीं की रचना हैं, जैन मुनियों के चरित्र किसी जैन श्रीधर की रचना होना चाहिए और २,४, ५ के सम्बन्ध में कुछ कहा नहीं जा सकता।

८६९।७०६

(३६) श्रीधर कवि ४, राजपूतानेवाले, सं० १६८० में उ०। इस कवि ने भवानी छन्द नामक एक ग्रन्थ बनाया है, जिसमें दुर्गा की कथा है।

सर्वेक्षण

राजपूताने के श्रीधर कवि ने रणमल्ल छन्द नामक ग्रन्थ बनाया है। इसमें ७० छन्द हैं। इस ग्रन्थ में ईडर के राजा रणमल्ल की उस विजय का वर्णन है,जो उसने पाटन के सूबेदार जफरखाँ पर प्राप्त की थी। यह युद्ध सं १४५४ में हुआ था। ग्रन्थ की रचना सं० १४५७ में हुई थी।[1]

भवानी छन्द और रणमल्ल छन्द में ग्रन्थ के नामकरण की पद्धति एक है। दोनो ग्रन्थों

---

(१) राजस्थानी भाषा और साहित्य, पृष्ठ ८० तथा हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ५२

की भाषा में भी साम्य है। रणमल्ल छन्द उदाहरण शुक्ल जी के इतिहास में और भवानी छन्द का सरोज में देखा जा सकता है। मुझे दोनों कवि अभिन्न प्रतीत होते हैं। ऐसी स्थिति में सरोज में दिया सं० १६८० अशुद्ध है। कवि इससे दो सौ वर्ष पुराना है।

८७०।७२६

(३७) सन्तन कवि १, विन्दकी, जिले फतेपुर के ब्राह्मण, सं० १८३४ में उ०।

सर्वेक्षण

सन्तन कवि विन्दकी जिला फतेहपुर के रहनेवाले उपमन्यु गोत्र के दुबे थे। यह पर्याप्त धनी थे और दान किया करते थे। जाजमऊ वाले सन्तन ने अपना और इनका अन्तर दिखलाने के लिए जो सवैया लिखा है, उसमें इन बातों का उल्लेख है।[1] इनका रचनाकाल सं० १७६० है।

८७१।७३३

(३८) सन्तन कवि २, ब्राह्मण, जाजमऊ, जिले कानपुर के, सं० १८३४ में उ०।

सर्वेक्षण

यह सन्तन, जाजमऊ, जिले कानपुर के रहने वाले पाँड़े थे। यह निर्धन थे और एक ही आँख वाले भी। निम्नलिखित सवैया में इन्होंने बिन्दकी वाले सन्तन से अपनी विभिन्नता प्रकट की है।

वै वरु देत लुटाय भिखारिन, ये विधि पूरब दान गऊ के
द्वै अंखियाँ चितवै उत वै, इत ये चितवें अंखियाँ यकऊ क
वै उपमन्यु दुबे जग जाहिर, पाँड़े वनस्थी के ये मधऊ के
वे कवि संतन है विन्दकी, हम हैं कवि संतन जाजमऊ के

विनोद (५५३) में इनका उत्पत्तिकाल सं० १७२८ और रचनाकाल सं० १७६० दिया गया है। आधार का सङ्केत नहीं किया गया है। खोज में इनका एक ग्रन्थ अध्यातम लीलावती[2] मिला है।

८७२।७३२

(३९) सन्त बकस बन्दीजन, होलपुर वाले। विद्यमान हैं।

---

(१) राजस्थानी भाषा और साहित्य ८७१। (२) खोज रिपोर्ट १९४७।३९७

सर्वेक्षण

खोज में इनका नखशिख नामक ग्रन्थ मिला है।[1] इसमें २५ कवित्तों में श्रीराम का नख-शिख वर्णित है। इसमें न तो रचनाकाल दिया है और न लिपिकाल। प्रत्येक कवित्त में सन्त छाप है। ग्रन्थ कवि के गाँव ही में उसके वंशजों के पास प्राप्त हुआ है, अतः इससे इनकी रचना होने में सन्देह नहीं।

८७३।७४७

(४०) सन्त कवि १, इनके शृङ्गार के अच्छे कवित्त हैं।

सर्वेक्षण

सन्त नामक तीन कवि हैं—

(१) सन्त, खानखाना के आश्रित, देखिए, संख्या ८७५

(२) सन्त बकस होलपुर वाले, देखिए, संख्या ८७२

(३) सन्त कविराज, रीवाँ के, यह दरभंगा दरबार में रहते थे। दरभंगा नरेश लक्ष्मीश्वर सिंह के नाम पर इन्होंने लक्ष्मीश्वर चन्द्रिका नामक साहित्य ग्रन्थ लिखा। इसमें नायिका भेद, अलङ्कार और नीति आदि सभी हैं। यह सन्त कवि भी ब्रह्मभट्ट ही थे। ग्रन्थ की रचना सं० १९४२ में हुई।

नैन (२) वेद (४) ग्रह (९) चन्द्रमा (१) इषु विजया रविवार
भो लछिमीश्वर चन्द्रिका भूषन ग्रन्थ तयार

—खोज रिपोर्ट १९००।५१

सरोज में दिए छन्द इन तीनों सन्तों में से किसी के हो सकते हैं।

८७४।६९९

(४१) सन्तदास, ब्रजवासी निवरी, विमलानन्द वाले सं० १६८० में उ०। रागसागरोद्भव में इनके पद हैं। इनकी कविता सूरदास जी के काव्य से मिलती-जुलती है।

सर्वेक्षण

सरोज का विवरण भक्तमाल के आधार पर है।

गोपीनाथ पद राग, भोग छप्पन भुंजाए
पृथु पद्धति अनुसरन देव दंपति दुलराए

---

(१) खोज रिपोर्ट १९२३।३७४

भगवत भक्त समान ठौर द्वै को बल गायो
कवित्त सूर सों मिलत भेद कछु जात न पायो
जन्म कर्म लीला जुगति, रहसि भक्ति भेदी भरम
विमलानन्द प्रबोध वंस, सन्तदास सींवां धरम १२५

प्रियादास ने इन पर एक कवित्त लिखा है, जिससे इनके गाँव का नाम ज्ञात होता है—

वसत निवाई ग्राम, स्याम सों लगाई मति,
ऐसी मन आई, भोग छप्पन लगाए हैं। ४६७

हिन्दी साहित्य में दो सन्तदास हुए हैं। एक सगुनिए हैं। इनका वर्णन भक्तमाल और तदनुसार सरोज में हुआ है। सरोज में इन्हीं कृष्णभक्त सन्तदास का पद उद्धृत है। राग-कल्पद्रुम में इनके अनेक पद हैं, जो आद्योपान्त सूर के पदों से मिल जाते हैं, केवल छाप का अन्तर है। इस बात को भक्तमाल के रचयिता ने आज से बहुत पहले देख लिया था। इन सन्तदास का समय सं० १६५० के आस-पास हो सकता है। सं० १६८० तक यह जीवित रह सकते हैं।

दूसरे सन्तदास निर्गुनिए हैं। यह दादू-पन्थी हैं। इनके शिष्य चतुरदास ने इनकी आज्ञा से सं० १६९२ में श्रीमद्‌भागवत के ग्यारहवें स्कन्ध का अनुवाद किया था। दोनों सन्तदास समकालीन हैं। दोनों की रचनाएँ राग-कल्पद्रुम में हैं। इनके बाद भी कई निर्गुनिए सन्तदास हुए हैं। चतुरदास के गुरु, दादूपन्थी सन्तदास का उल्लेख कई खोज-रिपोर्टों में हुआ है।[1]

———

८७५।७८५

(४२) सन्त कवि २, प्राचीन, सं० १७५९ में उ०।

सर्वेक्षण

इन सन्त कवि का एक कवित्त सरोज में उद्धृत है, जिसमें अब्दुर्रहीम खानखाना की प्रशस्ति है।

गाहक गुनी के, सुख चाहक दुनी के बीच
संत कवि दान को खजाना खानखाना था

यह सन्त कवि खानखाना के प्रशस्ति-गायक हैं। इन्होंने ऊपर उद्धृत छन्द की रचना

(१) खोज रिपोर्ट १९००।७१, १९०२।११०, १९०६।१४९ए, १९१७।४०, १९२३।७६, १९२६।७९, पं१९२२।२०

खाना की मृत्यु, सं० १६८३, के पश्चात् किसी समय की। इनका उपस्थितकाल सं० १६८३ के आस-पास मानना चाहिए। सरोज में दिया सं० १७५६ ठीक नहीं। ग्रियर्सन (३१८) ने इसे जन्मकाल मान कर और भ्रष्ट कर दिया है।

८७६।७५०

(४३) सुन्दर कवि १, ब्राह्मण, ग्वालियर निवासी, सं० १६८८ में उ०। यह महाराज शाहजहाँ बादशाह के कवि थे। पहले कविराय का पद पाकर, पीछे महाकविराय की पदवी पायी। इनका बनाया हुआ सुन्दर श्रृङ्गार नामक ग्रन्थ भाषा साहित्य में बहुत सुन्दर है। इन्हीं कवि के पद में यह वाक्छल पड़ा था—सुन्दर को पनहीं सपने।

सर्वेक्षण

सुन्दर श्रृङ्गार की अनेक प्रतियाँ खोज में मिली हैं।[१] यह ग्रन्थ, भारत जीवन प्रेस, काशी, से प्रकाशित भी हो चुका है। सरोज में दिया गया सारा विवरण इसी ग्रन्थ में दिए गए विवरण के आधार पर है और ठीक है। सुन्दर कवि ग्वालियर के रहने वाले ब्राह्मण थे और शाहजहाँ के दरबारी कवि थे। इन्हें पहले कविराय की, पुनः महाकविराय की उपाधि मिली थी।

देवी पूजि सरस्वती, पूजौं हरि के पाँय
नमस्कार कर जोरि, के, करै महाकविराय
नगर आगरे बसतु है, जमुना तट सुभ थान
तहाँ पातसाही करै, बैठो साहिजहान

× × ×

साहजहाँ तिन गुनिन को, दीने अनगन दान
तिननै सुन्दर सुकवि को, कियो बहुत सनमान
नग भूषन सब ही दिए, हय हाथी सिरपाव
प्रथम दियो कविराज पद, बहुरि महाकविराव
विप्र ग्वालियर नगर कौ, वासी है कविराज
जासों साहि मया करै, सदा गरीब नेवाज

---

(१) खोज रिपोर्ट १९००।१०६, १९०२।३, १९०६।२४१ ए, १९१७।१८४, १९२०।१८८ ए, बी, सी, १९२६, ४६६ बी, सी, १९३१।८७ राज० रिपोर्ट, पृ० १५०

सुन्दर श्रृङ्गार की रचना सं० १६८८ में हुई। सरोज में यही समय दिया गया है।

संवत सोरह सै बरस, बीते अट्ठासीत
कातिक सुदि षष्टी गुरौ, ग्रन्थ रच्यो करि प्रीति

राज० रिपोर्ट ३, में प्रमाद से इसका रचनाकाल सं० १६८० दिया गया है। अप्रकाशित संक्षिप्त विवरण में निम्नलिखित ग्रन्थ भी सुन्दर के कहे गए हैं—

(१) ध्रुवलीला १९२६।४६९ ए
(२) बारहमासी, १९०६।२४१ बी

इनमें से बारहमासी तो सन्तों सुन्दरदास की रचना है। यह सुन्दरदास-ग्रन्थावली के प्रथम भाग में, लघु ग्रन्थावली के अन्तर्गत ३४ संख्या पर सङ्कलित है। ध्रुवलीला के रचयिता सम्भवत: रुक्मांगद की एकादशी की कथा,[1] रचनाकाल सं० १७०७, और वैराट पर्व[2], रचनाकाल सं० १६८१, के रचयिता सुन्दरदास हैं। यह प्रबन्ध रुचि देखते हुए कहा जा रहा है। समय पर दृष्टि रखते हुए यह भी कहा जा सकता है कि इन तीनों प्रबन्धों के रचयिता श्रृङ्गारी सुन्दर ही हैं। खोज-रिपोर्टों में भी यह सम्भावना की गई है। ग्रियर्सन (१४२) और विनोद (२८८) के अनुसार यह सिंहासनबत्तीसी के उस अनुवाद के कर्ता हैं, बाद में जिसका उपयोग लल्लूजी लाल ने सिंहासन-बत्तीसी का अपना गद्यानुवाद प्रस्तुत करने में किया था। ग्रियर्सन में प्रमाद से सन्त सुन्दर के ज्ञान-समुद्र को भी इनकी रचना स्वीकार कर लिया गया है। ग्रियर्सन में इनके एक अन्य ग्रन्थ सुन्दरविद्या का भी उल्लेख है, जिसके सम्बन्ध में कुछ कहा नहीं जा सकता।

८७७।७५१

(४४) सुन्दर कवि २, दादू जी के शिष्य, मेवाड़ देश के निवासी। इनकी कविता शान्त रस की बहुत अच्छी है। सुन्दर सांख्य नामक एक इनका बनाया हुआ ग्रन्थ भी सुना जाता है।

सर्वेक्षण

सुन्दरदास का जन्म चैत्र शुक्ल ९, सं० १६५३ को जयपुर राज्य की द्योसा नगरी में बूसर गोत्र के खण्डेलवाल वैश्य कुल में हुआ था। इनके पिता का नाम चोखा और परमानन्द तथा माता का सती था। जब यह पाँच या छह वर्ष के ही थे, तभी इन्होंने दादू से दीक्षा पाई थी। यह १६६४ से १६८२ तक विद्या प्राप्ति के लिए काशी-प्रवासी रहे। यहाँ यह असी घाट पर रहा करते थे। काशी से वापस जाने के अनन्तर यह फतहपुर, शेखावाटी में आए और अन्त तक यहीं रहे।

---

(१) खोज रिपोर्ट १९०६।३३४ (२) खोज रिपोर्ट पं० १९२२।१०५

इनका देहान्त सं० १७४६ में कार्तिक सुदी ८ को हुआ। साङ्गानेर में इनकी समाधि बनी हुई है।[१] सुन्दर सांख्य नामक इनका कोई ग्रन्थ नहीं।

सुन्दरदास की सम्पूर्ण ग्रन्थावली का सम्पादन श्री पुरोहित हरिनारायण शर्मा, जयपुर, ने किया है। यह ग्रन्थावली दो भागों में राजस्थान रिसर्च सोसाइटी, कलकत्ता से सं० १९९३ में प्रकाशित हुई थी। इसके प्रथम भाग में विस्तृत भूमिका और जीवन-चरित्र भी है। सुन्दर ग्रन्थावली प्रथम खण्ड में निम्नाङ्कित ग्रन्थ हैं—

, प्र वभाग, १ ज्ञान समुद्र, सं० १७१० में पूर्ण। द्वितीय विभाग, लघु ग्रन्थावली, छोटे-छोटे ३७ ग्रन्थ—

(१) सर्वाङ्ग योग प्रदीपिका, (२) पञ्चेन्द्रिय चरित्र, (३) सुखसमाधि, (४) स्वप्नप्रबोध, (५) वेद-विचार, (६) उक्त अनूप, (७) अद्भुत उपदेश, (८) पञ्च-प्रभाव, (९) गुरु-सम्प्रदाय, (१०) गुन उत्पत्ति नीसानी, (११) सद्गुरु महिमा नीसानी, (१२) बावनी, (१३) गुरुदया षट्पदी, (१४) भ्रमविध्वंस अष्टक, (१५) गुरु कृपा अष्टक, (१६) गुरु उपदेश ज्ञान अष्टक, (१७) गुरुदेव महिमा-स्तोत्र अष्टक, (१८) राम जी अष्टक, (१९) नाम अष्टक, (२०) आत्मा अचल अष्टक, (२१) पञ्जाबी भाषा अष्टक, (२२) ब्रह्मस्तोत्र अष्टक, (२३) पीर मुरीद अष्टक, (२४) अजब ख्याल अष्टक, (२५) ज्ञान झूलना अष्टक, (२६) सहजानन्द, (२७) गृह-वैराग्य बोध, (२८) हरि बोल चितावनी, (२९) तर्कचितावनी, (३०) विवेकचितावनी, (३१) पवंगम छन्द, (३२) अडिल्ला छन्द, (३३) मडिल्ला छन्द, (३४) बारहमासा, (३५) आयुर्वल भेद आत्मा विचार, (३६) त्रिविध अन्तः करण भेद, (३७) पूर्वी भाषा बरवै।

द्वितीय खण्ड की रचनाएँ हैं—(१) सवैया, ३४ अंग, (२) साखी ३१ अंग, (३) पद २१८, २७ रागों में, (४) फुटकर काव्य, (५) चित्र-काव्य।

इन्हीं हरिनारायण जी ने सुन्दरदास की कुछ चुनी रचनाएँ 'सुन्दर सार' नाम से सभा से प्रकाशित कराई थीं। वेंकटेश्वर प्रेस, बम्बई, से भी बहुत पहले इनकी कुछ रचनाओं का संग्रह सुन्दर-विलास नाम से प्रकाशित हुआ था। डॉ० त्रिलोकीनारायण दीक्षित ने इन पर सुन्दर दर्शन नामक विवेचनात्मक ग्रन्थ भी इधर प्रस्तुत किया है।

८७८।७४१

(४५) सखीसुख, ब्राह्मण, नरवर वाले कविन्द के पिता, सं० १८०७ में उ०।

---

(१) सुन्दर-ग्रन्थावली की भूमिका के आधार पर

सर्वेक्षण

सखीसुख के चार ग्रन्थ खोज में मिले हैं—

(१) राग माला, १६०६।३०६ ए। यह १०१ पन्ने की पुस्तक है। इसमें राधा चरित्र वर्णित है। एक कवित्त में सखीसुख छाप है। कवि, हित हरिवंश के राधावल्लभी सम्प्रदाय में दीक्षित था।

जै नवरङ्गी जुगल वर, बहु रङ्गनि के सार
रँगे हिये हरिवंश के, करत निकुञ्ज विहार

(२) आठों सात्विक, १६०६।३०६ बी। इस ग्रन्थ का प्रतिलिपिकाल सं० १८५१ है। उद्धृत एक कवित्त में सखीसुख छाप है। ग्रन्थ में राधा-कृष्ण का हावभाव वर्णित है।

(३) भक्त उपदेशनी, १६३५।६५ ए। इस ग्रन्थ में उपदेशमय कुल ६५ दोहे हैं। अन्तिम दोहे में सुखसखी छाप है।

(४) विहारबत्तीसी, १६३५।६५ बी। इसमें राधाकृष्ण विहार के कुल ३६ दोहे हैं, जिनमें से अन्तिम में सुखसखी छाप है।

सखीसुख के पुत्र कवीन्द्र ने सं० १७६६ में रसदीप[1] की रचना की थी, अतः सरोज में दिया सं० १८०७ इनका जन्मकाल कदापि नहीं हो सकता। इस समय तक सखीसुख जी जीवित रह सकते हैं।

८७६।७४२

(४६) सुखराम कवि, सं० १६०१ में उ०। इनके शृङ्गार के सुन्दर कवित्त हैं।

सर्वेक्षण

ग्रियर्सन (७२६) में सरोज के ८७६ और ६०३ संख्यक दोनों सुखरामों की अभिन्नता सम्भव मानी गई है, जो असम्भव नहीं।

खोज में इसी युग के दो अन्य सुखराम मिले हैं। एक रतलाम के निवासी हैं। इन्होंने सं० १६०० में बूटी संग्रह वैद्यक[2] नामक गद्य ग्रन्थ लिखा। दूसरे सुखराम ने सं० १६३७ में ज्योतिष का एक ग्रन्थ पाराशरी भाषा[3] नाम से संस्कृत से भाषा गद्य में अनूदित किया।

---

(१) सुन्दर ग्रन्थावली, कवि संख्या ७५ (२) खोज रिपोर्ट १६३२।२०६ (३) यही, १६२६।४६८।

८८०।७४३

(४७) सुखदीन कवि, सं० १६०१ में उ० । ऐजन । इनके शृङ्गार के सुन्दर कवित्त हैं ।

सर्वेक्षण

विनोद (२२८८) में इन्हें १६३० में उपस्थित कवियों की सूची में स्थान दिया गया है । इस कवि के सम्बन्ध में कोई प्रामाणिक सूचना सुलभ नहीं ।

८८१।७४४

(४८) सूखन कवि, सं० १६०१ में उ० । ऐजन । इनके शृङ्गार के सुन्दर कवित्त हैं ।

सर्वेक्षण

सूखन के भी सम्बन्ध में कोई सूचना सुलभ नहीं ।

८८२।७४५

(४६) सेख कवि, सं० १६८० में उ० । हजारे में इनके कवित्त हैं ।

सर्वेक्षण

सरोज में शेख के दो शृङ्गारी कवित्त उद्धृत हैं । स्पष्ट ही ये रचनाएँ शृङ्गारी शेख आलम की बीबी और जहान की माँ की रचनाएँ हैं, ज्ञानदीप के रचयिता प्रेमाख्यानक कवि शेख नबी की नहीं । सरोजकार और ग्रियर्सन २३६ को यह नहीं ज्ञात था कि शेख कोई स्त्री है, अन्यथा इन्होंने इसका उल्लेख अवश्य किया होता ।

आलम और शेख की प्रेम कहानी हिन्दी साहित्य-जगत् में परम प्रसिद्ध है । कपड़ा रँगते-रँगते इस शोख रँगरेजिन शेख ने पगड़ी रँगाने वाले ब्राह्मण कवि का हृदय भी रँग डाला और उसे आलम बना डाला, यहाँ तक कि कवि के पूर्व ब्राह्मण नाम का सर्वथा लोप हो गया, जिसका आज पता भी नहीं । आलम का समय सं० १६४०-८० है । यही समय शेख का भी होना चाहिए । सरोज में दिया सं० १६८० उपस्थितकालसूचक है यह जन्मकाल कदापि नहीं है, जैसा कि ग्रियर्सन (२३६) ने मान लिया है । डॉ० भवानी शङ्कर याज्ञिक का अभिमत है कि शेख छाप वाले सभी छन्द प्रसिद्ध कवि आलम के ही हैं । 'शेख' उनकी जाति है, न कि उनकी पत्नी का नाम ।[1]

---

(१) पोद्दार अभिनन्दन-ग्रन्थ, पृष्ठ ३००-३०१ ।

८८३।७४६

(५०) सेवक कवि २, असनीवाले, सं० १८६७ में उ०। यह राजा रतन सिंह, चक्रपुर वाले के यहाँ थे।

सर्वेक्षण

चक्रपुर या चरखारी नरेश रतन सिंह का शासनकाल सं० १८८६ से १६१७ तक है। सरोज में सेवक के चार कवित्त उद्धृत हैं, जिनमें से दो में इन रतन सिंह की प्रशस्ति है।

(१) **भानु कुल भानु महादानी रतनेस जब**
चक्रधर सुमिरि चलत चक्रपुर ते

(२) **औनि के पनाह, नरनाह रतनेस सिंह**
को न नरनाह तेरी बाँह छाँह में रहो

इन उद्धरणों से सेवक का इन रतन सिंह से सम्पर्क सिद्ध है। सेवक असनीवासी थे, पर इनका अधिकांश जीवन बनारस में बीता और यह बनारसी के नाम से ही प्रसिद्ध हैं। सम्भवतः इनका प्रारम्भिक जीवन चरखारी में बीता।

सरोज के ८८३ और ८८४ संख्यक दोनों सेवक एक ही हैं। ग्रियर्सन में यद्यपि दोनों को अलग-अलग (६७७, ५७६) स्वीकार किया गया है, पर इनके अभिन्न होने की भी सम्भावना व्यक्त की गई है। विनोद में भी (१६०६, १८०५) दोनों को सरोज के समान दो विभिन्न कवियों के रूप में स्वीकार किया गया है। सेवक का विस्तृत विवरण आगे संख्या ८८४ पर देखिए।

८८४।७७३

(५१) सेवक कवि १, बन्दीजन, बनारसी। वि०। यह कवि काशी जी में बाबू देवकीनन्दन, महाराज बनारस के भाई, के यहाँ हैं, शृङ्गार रस के इनके कवित्त बहुत सुन्दर हैं।

सर्वेक्षण

सेवक का जन्म सं० १८७२ वि० में असनी, जिला फतेहपुर में हुआ था। इनकी मृत्यु सं० १६३८ में काशी में ६६ वर्ष की वय में हुई। अपने प्रारम्भिक जीवन-काल में यह कुछ दिन चरखारी नरेश रतन सिंह के यहाँ भी रहे थे। फिरयह काशी आए। यहाँ यह आजीवन बने रहे। यहाँ यह हरिशंकर सिंह के यहाँ रहा करते थे। इनके पितामह असनीवाले ठाकुर, काशी नरेश के भाई देवकीनन्दन सिंह के यहाँ थे। ठाकुर के पुत्र धनीराम, देवकीनन्दन सिंह के पुत्र जानकी-

प्रसाद सिंह के यहाँ थे और धनीराम के पुत्र सेवक, जानकीप्रसाद के पुत्र हरिशंकर सिंह के यहाँ थे। इस प्रकार इन दोनों कुटुम्बों ने तीन पुश्त तक आश्रयदाता और आश्रित का सम्बन्ध निर्वाह किया। सेवक ने एक सवैये में अपना वंश-परिचय यों दिया है—

श्री ऋषिनाथ को हौं मैं पनाती, औ नाती हौं श्री कवि ठाकुर केरो
श्री धनीराम को पूत मैं सेवक, शंकर को लघु बन्धु ज्यों चेरो
मान को बाप, बबा कसिया को, चचा मुरलीधर कृष्णहू हेरो
अश्विनी मैं घर, काशिका मैं हरिशंकर भूपति रच्छक मेरो

खोज में सेवक के निम्नलिखित ग्रन्थ मिले हैं—

(१) बरवै नखशिख, १९०६।२८६। ग्रन्थ प्रकाशित हो चुका है।

(२) वाग्विलास, १९२३।३८३, १९४१।२९८ ख। यह नायिका भेद का ग्रन्थ है। १९२३ वाली प्रति सं० १९२१ की लिखी हुई है। इसमें ठाकुर, धनीराम, शंकर, मान आदि इसी कुटुम्ब के अन्य कवियों की भी रचनाएँ हैं।

(३) बाग विलास, १९४१।२९८ क। इस ग्रन्थ में हरिशङ्कर द्वारा लगाए गए एक बाग का विस्तृत वर्णन है। विनोद (१८०५) में इनके दो अन्य ग्रन्थों, पीपा प्रकाश और ज्योतिष प्रकाश का और भी उल्लेख है।

८८५।७५६

(५२) शीतल त्रिपाठी, टिकमापुर वाले १, लाल कवि के पिता, सं० १८९१ में उ०। यह मतिराम वंशी कवि बुन्देलखण्ड में चरखारी इत्यादि रियासतों में आते-जाते थे।

सर्वेक्षण

शीतल त्रिपाठी, विक्रम सतसई के टीकाकार विहारीलाल के पिता थे। विहारीलाल ने अपना जो परिचय उक्त ग्रन्थ में दिया है, उसके अनुसार वे मतिराम के प्रपौत्र, जगन्नाथ के पौत्र एवं शीतल के पुत्र थे।[१] अतः शीतल कवि जगन्नाथ के पुत्र और मतिराम के पौत्र थे। विहारीलाल ने उक्त टीका सं० १८७२ में रची थी। ऐसी स्थिति में इनके बाप शीतल का समय

---

(१) पोद्दार अभिनन्दन-ग्रन्थ, कवि संख्या ८०२

१८५० के आस-पास होना चाहिए। सरोज में दिया सं० १८९१ कवि का अत्यन्त वृद्ध काल हो सकता है।

८८६।७५७

(५३) शीतलराय, बन्दीजन २, बौंडी, जिले बहिरायच, सं० १८९४ में उ०। यह कवि बड़े नामी हो गए है। राजा गुमान सिंह जनवार एकौना वाले ने कहा कि अब कोई गङ्ग कवि के समान छप्पय-छन्द के बनाने में प्रवीण नहीं है। तब इन्होंने राजा गुमान सिंह की प्रशंसा में यह छप्पय पढ़ा—...चकित पवन गति प्रबल, और एक हाथी इनाम में पाया।

सर्वेक्षण

चकित पवन प्रबल वाला छप्पय सरोज में उदाहृत है। इसमें गुमान सिंह का नाम आया है—

"दब्बै जमीन, हहलत सु गिरि, जब्बै गुमान हय वर कस्यो"

इस कवि के सम्बन्ध में कोई सूचना सुलभ नहीं।

८८७।७६२

(५४) सुलतान पठान, नवाब सुलतान मोहम्म खाँ १, राजगढ़ भूपालवाले, सं० १७९१ में उ०। यह कविता के ग्राहक थे। चन्द कवि ने इनके नाम से सतसई का टीका कुण्डलिया छन्द में किया है।

सर्वेक्षण

सरोज में दिया सं० १७९१ उपस्थितिकाल है, न कि उत्पत्तिकाल, जैसा कि ग्रियर्सन (२१४) में स्वीकार कर लिया गया है। नवाब सुलतान मोहम्मद खाँ स्वयं कवि नहीं थे, यह कविता के ग्राहक थे, आश्रयदाता थे, काव्य-प्रेमी थे। इनके नाम पर जो उदाहरण दिए गए हैं, वे इनके नहीं हैं, इनके आश्रित चन्द[1] कवि के हैं, जिसने इनके आश्रय में रहकर सतसई पर कुण्डलिया लगाई।

---

(१) पोद्दार अभिनन्दनग्रन्थ, कवि संख्या २१८

८८८।७६४

(५५) सुलतान कवि २। इनके शृङ्गार के सुन्दर कवित्त हैं।

सर्वेक्षण

सरोज में इनका एक अत्यन्त सरस और अनूठे भाव वाला शृङ्गार-सवैया उद्धत है। इस कवि के सम्बन्ध में कोई सूचना सुलभ नहीं।

८८९।७६३

(५६) सहजराम बनिया १, पैंतेपुर, जिले सीतापुर, सं० १८६१ में उ०। इस कवि ने रामायण सातों काण्ड बहुत ललित, हनुमन्नाटक और रघुवंश के श्लोकों का उलथा करके, बनाई है।

सर्वेक्षण

सहजराम की रामायण का नाम रघुवंश दीपक है। यह नाम रघु के वंश और महाकवि कालिदास के रघुवंश के आभार के कारण प्रतीत होता है। इसके दो काण्ड खोज में मिले हैं—

(१) बालकाण्ड, १९१२।१६३

(२) सुन्दरकाण्ड १९२३।३६७ डी

रघुवंश दीपक के बालकाण्ड में रचनाकाल सं० १७८९ दिया हुआ है।

संवत सत्रह सै नौवासी
चैत्र मास रितुराज प्रकासी
कीन्ह अरम्भ दोष दुख हरनी
रामकथा जग मंगल करनी

ग्रन्थ तुलसी कृत रामचरित मानस के ढङ्ग का है। कवि के अनुसार तुलसीदास ने अपने भक्त सहजराम के हृदय में वास कर स्वयं यह ग्रन्थ लिखा है।

निज अनुगामी जानि कै, स्वामी तुलसीदास
सहजराम उर वास कर, कीन्हों ग्रन्थ प्रकास

इस ग्रन्थ की रचता अवधपुरी में रामकोट नामक स्थान पर गुरु की आज्ञा से प्रारम्भ हुई—

अवधपुरी आरम्भ मैं, रामकोट पर कीन्ह
राम प्रसाद निवास जहँ सद्गुरु आयस दीन्ह २१९

सुन्दर काण्ड के अन्त में पुष्पिका रूप में यह लेख है—

"इति श्री रघुवंश दीपक सहजराम कृत सुन्दरकाण्ड समाप्तः ।"

सहजराम के नाम पर निम्नलिखित ग्रन्थ और भी मिले हैं—

(१) कवितावली, १९२३।३६७ ए। यह रघुवंशदीपक के कर्ता की ही कृति है। रघुवंशदीपक में कवि ने अपने श्रद्धेय कवि तुलसीदास के रामचरित मानस का अनुकरण किया है और इस ग्रन्थ में उसने तुलसी की कवितावली की शैली का अनुकरण किया है। प्राप्त ग्रन्थ में केवल बालकाण्ड की कथा कवित्त-सवैयों में है। हो सकता है, कवि ने और अंश भी लिखे रहे हों, जो अभी तक उपलब्ध नहीं हुए हैं।

(२) हनुमान बाललीला, १९२६।४१५ए, १९४७।४०५ ङ। वाल्मीकि रामायण के अनुसार यह कथा है।

सहजराम कीनी कथा, बाल्मीकि मत देखि
सकल सुमंगल दाहनी, मंगलकारि विसेखि

१९४७ वाली प्रति का लिपिकाल सं० १८२८ है।

(३) एकादशी माहात्म्य, १९३८।१३३। खोज रिपोर्ट में इस ग्रन्थ के कर्त्ता का नाम सहज दिया गया है और इन सहजराम से तादात्म्य स्थापित नहीं किया गया है। पर एकादशी माहात्म्य के सहज और रघुवंशदीपक के सहजराम एक ही हैं। एकादशी माहात्म्य का अन्तिम दोहा है—

एकादशी महिमा बड़ी, प्रभु को है सुखदाइ
जन सहजा चौबीस मत, हरि जू दए बताइ १८

यह हर जू जन सहजा के गुरु हैं, जिन्होंने २४ एकादशियों के सम्बन्ध में अपने शिष्य को सारी बातें बताई। रघुवंश दीपक के रचयिता सहजराम भी अयोध्यावासी गुरु का नाम यही है।

हरि दास हरि भक्त रत, सदा रट सादर दीन्ह नरेस
कही कथा रघुनाथ की, मिटैं तुम्हार कलेस २

—खोज रिपोर्ट १९१२।१६३

(४) प्रह्लाद चरित्र, १९१२।१६२, १९२३।३६७ बी, सी, १९२६।४१५ बी, सी, १९४१।२७९, १९४७।४०५ क,ख,ग,घ। प्राचीनतम प्रति १९४७।४०५ ग वाली है, जिसका लिपिकाल सं० १८०० है। यह कोई स्वतन्त्र ग्रन्थ नहीं है। यह रघुवंशदीपक बालकाण्ड का चतुर्थ सर्ग है। यह सूचना १९४७।४०५ क प्रति की पुष्पिका से ज्ञात होती है।

"इति श्री रघुवंशदीपे सहजराम कृत हिरन्यकस्यप बध नाम चतुर्थ सर्ग प्रह्लाद चरित समापितम् सुभमस्तु.........।"

१६४१ वाली प्रति की पुष्पिका में भी यह सूचना दी गई हैं । १६२३।३६७ बी की पुष्पिका भी इसे रामायण बालकाण्ड का अंश बताती है । सरोज में दिया सं० १८६१ अशुद्ध है, क्योंकि रघुवंशदीपक का रचनाकाल सं० १७८६ है । ८६० संख्यक सहजराम भी यही हैं ।

८६०।७८६

(५७) सहजराम २, सनाढ्य बन्धुआवाले, सं० १६०५ में उ० । इन्होंने 'प्रह्लाद चरित्र' नामक ग्रन्थ बनाया है ।

सर्वेक्षण

बन्धुआ, जिला सुलतानपुर में सहजराम नाम के कोई कवि कभी नहीं हुए । जब इनका अस्तित्व ही नहीं,तो फिर इनकी रचना प्रह्लाद-चरित्र का अस्तित्व कैसे हो सकता है। सरोजकार ने प्रमाद से इस कवि की मिथ्या सृष्टि कर दी है । सरोजकार ने इनका विवरण महेशदत्त मिश्र के भाषाकाव्य संग्रह से लिया है । मिश्र जी इनके सम्बन्ध में यह लिखते हैं—

"ये सनाढ्य ब्राह्मण पञ्जाब के रहने वाले थे और यहाँ सुलताँपुर के जिले में जो बन्धवा ग्राम है, वहाँ के रहने हारे एक नानकसाही ब्राह्मण के शिष्य हुए । ये भी बड़े महात्मा हुए हैं और सहजराम रामायण, प्रह्लाद-चरित, ये दो ग्रन्थ इन्हीं ने रचित किए और सं० १६०५ में इस असार संसार से निराश हो स्वर्गवास किया ।"

महेशदत्त ने जिस सं० १६०५ को इनका मृत्यकाल घोषित किया है, सरोजकार ने उसे उ० या उपस्थितिकाल कहा है, जो ठीक कहा जा सकता है । पर ग्रियर्सन (६८६) और विनोद (२१८२) में इसे उत्पत्तिकाल मान लिया गया है । हद हो गई । ये सभी संवत् अशुद्ध हैं। महेशदत्त के अनुसार दो बातें स्पष्ट हैं। एक तो यह कि सहजराम बन्धुआ के रहने वाले नहीं थे, बन्धुआ के रहने वाले इनके गुरु थे । दूसरी बात यह कि रामायण और प्रह्लाद-चरित के रचयिता दो व्यक्ति नहीं हैं, एक ही हैं । इन दो बातों को आधार मानकर ८८६ और ८६० संख्यक दोनों सहजरामों की अभिन्नता प्रतिपादित की जा सकती हैं। पीछे ८८६ संख्या पर प्रह्लाद-चरित, रघुवंश दीपक का एक अंश सिद्ध किया जा चुका है। ऐसी स्थिति में सहजराम सनाढ्य बन्धुवा वाले का अस्तित्व समाप्त हो जाता है ।

रघुवंश दीपक के रचयिता सहजराम पञ्जाबी थे अथवा पैंतेपुर जिला सीतापुर, के रहने वाले

थे, यह वनिया थे अथवा सनाढ्य ब्राह्मण थे, ये दोनों प्रश्न अभी विचारणीय हैं। उपलब्ध सामग्री के सहारे इनका निर्णय नहीं किया जा सकता है । जब तक अन्यथा न सिद्ध हो जाय, इन्हें सरोज ८८६ के आधार पर पैंतेपुर जिला का बनिया ही माना जाय । इस कवि का विवरण सरोजकार ने अपनी जानकारी के आधार पर दिया है, जो ठीक हो सकती है । ८६० संख्यक कवि का विवरण महेदत्त के आधार पर है और महेशदत्त की सूचनाएँ अधिकांश में भ्रान्त हैं, अतः ये प्रमाण नहीं मानी जा सकतीं ।

८६१।७६१

(५८) श्यामदास कवि, सं० १७५५ में उ० । इनके पद रागसागरोद्भव में हैं ।

सर्वेक्षण

भक्तमाल में पाँच श्यासदास हैं—

(१) श्याम, १७ सन्त विटपों में से एक, छप्पय ६७ ।

(२३) श्याम और श्यामदास, २२ भगवद्गुणानुवाद करने वाले भक्तों में से दो, छप्पय १४६।

(४) श्याम, सेन वंशीय, छप्पय १४६ ।

(५) श्याम, लघु लम्ब ग्राम के निवासी श्यामदास, छप्पय १७८ ।

ऐसी परिस्थिति में सरोज के श्यामदास पर निर्णयात्मक रूप से कुछ कहना बहुत सम्भव नहीं । इनके सम्बन्ध में इतना ही कहा जा सकता है कि यह कृष्ण-भक्त कवि थे, क्योंकि सरोज में इनका कृष्णभक्ति सम्बन्धी एक पद उद्धृत है । ख्याल टिप्पा[१] नामक संग्रह में इनके भी पद हैं। विनोद (६८६) में इन्हें शालग्राम माहात्म्य का कर्ता कहा गया है । खोज में किसी श्यामदास का श्री विष्णुस्वामी चरितामृत[२] नामक ग्रन्थ मिला है । सम्भवतः यह इन्हीं श्यामदास की रचना है।

८६२।७६३

(५६) श्याम मनोहर कवि । ऐजन । इनके पद रागसागरोद्भव में हैं।

सर्वेक्षण

सरोजकार ने रागकल्पद्रुम के एक बड़े पद का एक छन्द या कड़ी उद्धृत कर ली है और उसमें आए कृष्णसूचक पद श्याममनोहर को कवि छाप समझ लिया है । यह शब्द प्रायः प्रत्येक

(१) खोज रिपोर्ट १६०२।५७ (२) वही,।१६४१।३०६

कड़ी में आया है, इसीलिए सरोजकार को और भी भ्रम हुआ। यह पद श्री हरिदास नागर का है। यह हरिदास, वल्लभ सम्प्रदाय के गोस्वामी हरिराय, उपनाम रसिकदास या रसिक राय के शिष्य थे। सरोज में प्रथम बन्द के ४ चरण और द्वितीय बन्द के २ चरण मिलाकर उद्धृत किए गए हैं, कोई एक पूरा बन्द नहीं। यह कवि सरोजकार की मिथ्या सृष्टि है। प्रमाण के लिए पूरा पद उद्धृत किया जा रहा है।

गुजरी शशिवदनी सुन्दर यौवनवाली
सिर कनक मटुकिया गोरस बेचनवाली

छन्द

चली दधि बेंचन किशोरी, कुँवरि है गजगामिनी
नख शिख रूप अनूप सुन्दर, दसन द्युति मनो दामिनी
श्यामा पियारी, कुल उज्यारी, विमल कीरति ऊजरी
यौवनवाली सरस सुन्दर, चन्द्रवदनी गूजरी १
वृन्दावन भीतर श्याम मनोहर घेरी
हौं तुम्हें जान न देहौं लैहौं दान निवेरी

छन्द

लैहौं दान निवेर अपनो, करों नन्द दुहाइयां
जाति चोरी बेंचि नित प्रति, आजु पकरन पाइयां
बोलि ग्वालि लुटाय दू दधि, करों जो भावे मना
घेरी मनोहर श्यामसुन्दर, ग्वालिनी वृन्दावना २
छाँडहु मेरो अँचरा, हठ जिनि करहु गोपाला
सुन्दर मनमोहन प्यारे, अबार होत नन्दलाला

छन्द

नन्दलाल होत अबार प्रति छन, सघन वन में अति डरों
मेरे सङ्ग की सब बेंचि बगरीं, कहा उत्तर घर करौं
कब कब तुम्हारो दान लागे, वाढि झगरो ठानहू
बलि जाउँ, मानो कह्यो मेरो, लाल अँचरा छाँड़हू ३
अति चतुर ग्वालिनी अन्तर नेह बढ़ायो
श्याम मनोहर जिनको प्यारो पायो

छन्द

पायो मनोहर श्याम सुन्दर, सुरति सुभ मानो रली
नव नेह अति रस रंग बाढ़यो, दान दे उठि घर चली

कहत श्री हरिदास नागर, कामिनी गुन सागरी
जिन रसिक श्री हरिराय मोहे, अधिक चातुर नागरी ४

—रागकल्पद्रुम, भाग २, पृष्ठ १४५-४६: पद ७६

८६३।७८७

(६०) श्यामशरण कवि, सं० १७५३ में उ०। इन्होंने भाषास्वरोदय ग्रन्थ बनाया।

सर्वेक्षण

श्यामशरण जी उपनाम भवभागी, चरणदास के शिष्य और नित्यानन्द के गुरु[1] थे। चरणदास का जीवनकाल सं० १७६०-१८३८ है। ऐसी स्थिति में श्यामशरण जी का उक्त सरोजदत्त सं० १७५३ अशुद्ध है। इनका रचनाकाल सं० १८०० के पश्चात् होना चाहिए। चरणदास का स्वरोदय तो प्रसिद्ध ही है। सरोज के अनुसार श्यामशरण ने भी स्वरोदय नामक एक ग्रन्थ बनाया था। गुरु-शिष्य का एक ही विषय पर लेखनी चलना अस्वाभाविक नहीं।

८६४।७८३

(६१) श्यामलाल कवि, सं० १७७५ में उ०।

सर्वेक्षण

सरोज में श्यामलाल के नाम पर जो कवित्त उद्धृत है, उसमें किसी नरेश उमराऊ गिरि की प्रशस्ति है।

स्यामलाल सुकवि नरेश उमराउ गिरि
तुमसे न नृप कोऊ आज के जमाने हैं
हम मरदाने जानि विरद बखाने, पंर
द्वारे चोबदार कहैं साहब जनाने हैं

श्यामलाल जी कोई भाट प्रतीत होते हैं, जिन्हें परिहास से भी प्रेम है। इनके सम्बन्ध में काई भी सूचना सुलभ नहीं।

खोज में एक परवर्ती श्यामलाल मिले हैं। इनकी रचनाएँ हैं—नवरत्न भाषा[2] सैर बाटिका[3]

---

(१) खोज रिपोर्ट १६०५।४१ (२) वही, १६२१।३२१, (३) वही, १६२६।३२२,

दानलीला[१] हैं। अन्तिम दो के रचनाकाल क्रमशः १८९४, १८९१ हैं। प्रथम का प्रतिलिपिकाल सं० १९०८ है। इस कवि की भाषा उर्दू मिश्रित और रचना प्रणाली शेरों से प्रभावित है। बिहारी का प्रसिद्ध दोहा 'मोर मुकुट कटि काछनी' इनके प्रायः सभी ग्रन्थों में उद्धृत है।

८९५।७७४

(९२) सबल श्याम कवि।

सर्वेक्षण

सरोज में सबल श्याम का एक कवित्त है, जो दिग्विजय भूषण से लिया गया है। यह अमोघा नगर या अमोढ़ा, जिला बस्ती के निवासी, सूर्यवंशी क्षत्रिय थे। यह अमोढ़ा के राजा वीरसिंह के छोटे भाई थे। इनका जन्म सं० १६८८ में हुआ था। इनके लिखे दो ग्रन्थ सरोज में मिले हैं—

(१) वरवै षट्ऋतु, १९४४।४३८। एक बरवै में कवि का नाम है—

सबल श्याम बिनु, ग्रीषम उपतन बाग
तब शीतल अब ही तल जनु दव लाग १०

(२) भागवत भाषा दशम स्कन्ध, १९४७।४०१। इस ग्रन्थ में कवि ने अपना जन्मकाल सं० १६८८ दिया है—

संवत् सोरह सौ अट्ठासी, जन्म भयो छिति आइ
सबल श्याम पुर पुण्य ते, नगर अमोघा में परे देखाइ ४२३

ग्रन्थान्त में कवि ने अपना और ग्रन्थ का नाम दिया है—

राजा सबल श्याम कत, दशमोत्तर असकंध
यह समाप्त प्रमुदित भयो, संयुक्त छन्द प्रबन्ध ४२४

(३) भागवत भाषा, बारहवाँ स्कन्ध—यह अनुवाद सं० १७९६ में हुआ था।[२]

अमोढ़ा राज्य की स्थापना सं० ११९१ में कंसदेव या कंसनारायण देव ने की थी। इनकी २७वीं पीढ़ी में राजा दल सिंह हुए। दलसिंह के चार विवाह हुए थे। इनके कुल तेरह पुत्र थे। प्रथम राजा वीर सिंह, दूसरे फतेशाह और तीसरे सबल शाह या सबल सिंह थे। इन्हीं सबल शाह ने ग्रन्थों में अपना नाम सबल श्याम रखा है। ये लोग औरङ्गजेब के समकालीन हैं। राजा दलसिंह

---

(१) खोज रिपोर्ट १९२९।३२२ (२) हिन्दी रिव्यू—जनवरी १९५७ में प्रकाशित डॉ० रामअवध द्विवेदी का परिचयात्मक लेख।

को औरङ्गजेब ने कैद कर लिया था । सम्भवतः यह दलसिंह भी कवि थे । सरोज में ३३२ संख्या पर एक दलसिंह हैं, जिन्हें बुन्देलखण्ड का कोई राजा कहा गया है ।

८९६।७३१

(६३) श्याम कवि, स० १७०५ में उ० । इनके कवित्त हजारे में हैं ।

सर्वेक्षण

खोज रिपोर्टों में श्याम नाम के दो कवि हैं । एक वैद्यक[1] के रचयिता हैं, दूसरे कृष्णध्यान चतुराष्टक[2] के । पता नहीं, दोनों एक कवि हैं अथवा दो । कृष्णध्यानचतुराष्टक में चार अष्टक हैं । ये अष्टक सवैयों में हैं । ग्रन्थ का प्रतिलिपिकाल सं० १७८५ है, अतः यह कवि हजारे वाले श्याम हो सकते हैं । ऐसी दशा में यह सरोज वाले श्याम भी हैं ।

८९७।७३४

(६४) शोभा कवि । इनके शृङ्गार के सुन्दर कवित्त हैं ।

सर्वेक्षण

शोभा कवि की कविता के उदाहरण में निम्नलिखित सवैया दिया गया है और उदाहरण देते समय कवि का नाम शोभ दिया गया है ।

चाह सिंगार सँवारन की, नव बैस बनी रति वारन की है
सोभ कुमार सिवारन की, सिर सोहति जोहति बारन की है
हंसन के परिवारन की, पग जीति लई गति बारन की है
याहि लखे सरवारन की, छनकौ रति के परिवारन की है

यह सवैया कुमारमणि शास्त्री 'कुमार' का है ।[3] यह छन्द उनके प्रसिद्ध ग्रन्थ 'रसिक रसाल' का है । इसके द्वितीय चरण में कुमार छाप है भी । कुमार के पहले सोभ आया है जो सोभा के अर्थ में है । पर प्रमाद से इसे कवि का नाम कल्पित कर लिया गया है और कुमार पर ध्यान नहीं दिया गया है । अतः सरोज के यह सोभा या सोभ कवि सरोजकार की मिथ्या सृष्टि है । प्रथम संस्करण में कवि का नाम 'सोभ' ही दिया गया है ।

---

(१) खोज रिपोर्ट १९४१।३०५ (२) वही, १९३८।१५० (३) वही, कवि सं० ६७,

सोभ नामक एक अन्य कवि भरतपुराधीश जवाहिर सिंह, (शासनकाल सं० १८२०-२५) के अनुज नवल सिंह के आश्रित थे। इनके नाम पर सोभ ने सं० १८१८ में 'नवलरस चन्द्रोदय' नामक नायिकाभेद का सुन्दर ग्रन्थ रचा था।[1]

बसु विधि बसु बिधु वत्सरहि, श्रावन सुदि गुरुवार
सरब सुसिद्धि त्रयोदसी, भयो ग्रन्थ अवतार

नवल सिंह भरतपुर के राजा नहीं थे, जैसा कि खोज रिपोर्ट में लिखा है। कवि ने आदर प्रकट करने के लिए ही इन्हें महाराज कहा है।

नंद नृप नंद ब्रज चंद आनन्द मय
रहत रछपाल नवलेस महराज पर

परन्तु पुष्पिका में इन्हें ब्रजेन्द्र, भरतपुराधीशों की उपाधि, को नन्द ही कहा गया है। ब्रजेन्द्र नहीं—

"इति श्रीमन्महाराज जदुकुलवंसावतंस ब्रजेन्द्र नंद नृप नवल सिंह विनोदार्थे सोभ कवि विरचिते नवलरस चन्द्रोदये हावादि भेदकथन नाम सप्तमोल्लास ॥७॥ शुभमस्तु।"

—खोज रिपोर्ट १९१७।१७८

८९८।७८४

(९५) शोभनाथ कवि।

सर्वेक्षण

इन शोभनाथ के नाम पर सरोज में निम्नलिखित कवित्त उद्धृत है, जो वस्तुतः शोभनाथ का है।[2] अतः यह कवि सरोजकार की मिथ्या सृष्टि है।

दिशि विदिसान ते उमड़ि मढि लीने नभ
छोरि दिये धुरवा जवासे जूह जरिगे।
डहडहे भये द्रुम रञ्चक हवा के गुने
कुहू-कुहू मोरवा पुकारि मोद भरिगे

---

(१) भरतपुर राज्य और हिन्दी, माधुरी, फरवरी १९२७, पृष्ठ ८१ (२) सोभनाथ-रत्नावली, पृष्ठ ९४।

रहि गये चातक जहाँ के तहाँ देखत ही
सोभनाथ कहूँ-कहूँ बूँद हूँ न करिगे
सोर भयो घोर चहूँ ओर नभ मण्डल में
आये घन आये घन आय के उघरिगे

यहाँ लिपिदोष के कारण 'म' का 'भ' हो गया है और सोमनाथ के बदले सोभनाथ की सृष्टि हो गई है। सोमनाथ का विवरण आगे संख्या ९१६ पर देखिये।

८९९।७३५

(९९) शिरोमणि कवि, सं० १७०३ में उ०। इनके कवित्त हजारे में हैं।

सर्वेक्षण

शिरोमणि गङ्गा-यमुना के बीच स्थित पुण्डीरिन के गाँव के रहने वाले थे। यहाँ माथुर लोग बसते थे। गाँव का नाम गम्भीरा था। यहाँ माथुरों में तिवारी लोग अधिक थे। इसी गाँव में परमानन्द नामक पण्डित हुए, जिन्होंने पुराण और वेद पढ़े थे। वे शतावधानी थे। उनको यह उपाधि स्वयं अकबर बादशाह ने दी थी। यह परमानन्द शिरोमणि के पितामह थे।

गङ्गा यमुना बीच इकु पुण्डीरिन को गाँव
तहाँ मथुरिया बसतु हैं ताहि गम्भीरी नाम ६
माथुर भेद अनेक विधि एकु तिवारी भेवु
परमानन्द तहाँ उपजि पढ़ पुरान रु वेद ७
ते सत अवधानी किये समुझि चित्त की चाहि
अकबर शाहि खिताव दे प्रगट करे जग माहि ८

मोहन, शिरोमणि के पिता थे। यह जहाँगीर के दरबार में थे। शिरोमणि शाहजहाँ के आश्रय में थे, जब वह युवराज ही था।

"साहिजहाँ की चाकरी, जहाँगीर को राजु"

सम्भवतः यह बाद में भी उसी के आश्रय में रहे। सरोज में उद्धृत एक छन्द से भी इनका शाहजहाँ का आश्रित होना सिद्ध होता है।

जानि शिरोमनि साहिजहाँ ढिग बैठो महा विरहा हरु है
चपला चमको, गरजो, बरसो घन, पास पिया तौ कहा डरु है,

शिरोमणि ने नाममाला या नाम-उर्वशी[1] नामक कोषग्रन्थ बनाया है। इस ग्रन्थ में इन्होंने उक्त सारी सूचना दी है। इस ग्रन्थ की रचना संवत् १६८० में हुई।

संवत सोरह सै असी वधनु नगर तिथि मार
मूलमहीना माघ को कृष्न पच्छ गुरुवार

ग्रन्थ की पुष्पिका में इन्हें मिश्र कहा गया है, अतः खोजरिपोर्ट में भी इन्हें मिश्र कहा गया है। रिपोर्ट में इन्हें तिवारी कहा गया है जो निम्नाङ्कित चरण पर निर्भर है—

"माथुर भेद अनेक विधि, एक तिवारी भेद"

इसी के आगे वाले चरण में परमानन्द का उल्लेख है, अतः परमानन्द और इनके वंशज तिवारी हैं। इसी वंश में मुरलीधर नामक कवि हुए। मुरलीधर ने लिखा है कि परमानन्द को अकबर ने मिश्र की उपाधि दी थी,[2] अतः यह लोग अपने को मिश्र ही कहते हैं।

सरोज में दिया हुआ संवत् १७०३ शिरोमणि कवि का उपस्थितिकाल है, क्योंकि यह शाहजहाँ के शासनकाल संवत् १६८५–१७१५ के मध्य में पड़ता है। इन शिरोमणि मिश्र या तिवारी के अतिरिक्त खोज में एक शिरोमणि जैन मिले हैं, जिन्होंने संवत् १७५१ में धर्मसार की रचना की।[3]

———

९००।७३७

(६७) सिंह कवि, संवत् १८३५ में उ०। इन्होंने बहुत सुन्दर कविता की है।

सर्वेक्षण

सिंह, कवि का पूर्ण नाम नहीं है। यह उसके नाम का उत्तरार्द्ध है। खोज में एक कवि महासिंह मिले है।[4] इनका ग्रन्थ छन्द-शृङ्गार है। इसमें २२८ पद्य हैं। पहले ही छन्द में कवि छाप 'कवि सिंघ' है।

गवरि नन्द आनन्द मय, विघन व्यापि भवभयहरन
निज नाम सीस कवि सिंघ भज, जय गनेस मंगलकरन १

यह ग्रन्थ पिङ्गल का है, जो रसिकों के लिये रससार-सा है। अतः इसका नाम छन्द-शृङ्गार रखा गया है।

---

(१) खोज रिपोर्ट १९०६।२३५, १९२७।१७८, १९४४।४१२ (२) यही ग्रन्थ सं० ६५८ (३) यही ग्रन्थ १९३२।२०९ (४) राज० रिपोर्ट, भाग ४।

छन्द बोध याते लहैं, रसिकन को रस सार
नाम धर्यो इन ग्रन्थ को, ताते छन्द सिंगार ४
नाम छन्द शृङ्गार है, पढ़तहि प्रगट प्रमोद
छन्द भेद अरु नायका, जाको लहत प्रबोध २६

ग्रन्थ की रचना संवत् १८५३ में हुई। इसका रचनाकाल भी सरोज के सिंह कवि के समय से मेल खाता है।

संमत लोक[३] पांडव[५] नाग[८] चन्दन[१] नभ मास
धवल पच्छ पञ्चमि, कुज वार ठानियौ
स्वात नक्षत्र सुन्दर चन्द तुल रास आये
मध्य रवि समय इन्द्र जोग रमानियो
छन्द शृंगार नाम यह ग्रन्थ समापति भयो
नवे नगर सहरनिज मन मानियो
कहे कवि महा सिंघ जोइ पढ़ै वाच सोई
मेरो निते प्रने जइसी कृष्ण जानियो २२८

समय के मेल से सिद्ध होता है कि सरोज के सिंह और यह महासिंह एक ही है। इनके सम्बन्ध में उक्त ग्रन्थ से कुछ और बातें भी ज्ञात होती हैं। यह मेड़ता के रहने वाले भारद्वाज-गोत्रीय पोहकरण सेवक जाति के ब्राह्मण थे।

भारद्वाज गोत्र पोहकरनां, सेवक ग्यात कहावै
महा संघ नगर मेरते, बसे परमसुख पावै
जो कविता जन भयो अगाऊ, जाके बन्दत पारा
छन्द सिंगार ग्रन्थ यह कीनो, सा मधि हरि गुन गाया २२७

———

९०१।७३८

(९८) संगम कवि, सं० १८४० में उ०। यह सिंहराज के यहाँ थे।

सर्वेक्षण

सरोज में इनके दो शृङ्गारी एवं एक अन्य कवित्त उद्धृत हैं, जिसमें सिंहराज का नाम आया है।

राज सिरताज सिंहराज महराज भूलि
ऐसो गजराज कविराज को न दीजिये

इस उद्धरण से इनका सिंहराज के दरबार से सम्बन्धित होना सिद्ध होता है। सिंहराज की पहचान अभी तक नहीं हो सकी है।

खोज में एक संगमलाल मिले हैं, जो सुवंश शुक्ल के वंशज और टेढ़ा विगहंपुर, जिला उन्नाव के निवासी हैं। इनका एक ग्रन्थ कवित्त[1] नाम से मिला है।

इस ग्रन्थ में कुल १४ कवित्त हैं। ग्रन्थ अपूर्ण है। सरोज में उद्धृत पहला शृङ्गारी कवित्त एवं ऊपर उद्धृत सिंहराज वाला कवित्त इस संग्रह के क्रमशः प्रथम एवं द्वितीय कवित्त हैं। इस संग्रह के ५ कवित्तों में राजा राजसिंह और ब्रजनाथ के गजराजों का एवं एक में राजसिंह की तलवार का वर्णन हुआ है।

संगम बखानी शम्भु रानी है रिसानी कैधों
कैधौं है कृपानी राजसिंह महराज की १२

सुवंश शुक्ल का रचनाकाल संवत् १८६१ से १८८४ तक है। संगमलाल इनके वंशज हैं। अतः इनका रचनाकाल संवत् १६०० के आस-पास होना चाहिये। ऐसी स्थिति में सरोज में दिया संवत् १८४० अशुद्ध है। अधिक से अधिक यह इनका जन्मकाल हो सकता है। संगम जी का एक अन्य ग्रन्थ "श्रीकृष्ण ग्वालिन को झगरा" मिला है।[2] यह दानलीला सम्बन्धी ग्रन्थ है।

———

६०२।७३६

(६६) सम्मन कवि, ब्राह्मण, मल्लावाँ, जिले हरदोई सं० १८३४ में उ०। इनके नीति-सम्बन्धी दोहे बहुत ही सुन्दर हैं।

सर्वेक्षण

याज्ञिक त्रय ने माधुरी में 'सम्मन का काल'[3] शीर्षक एक लेख प्रकाशित कराया था। इसमें दोहा-सार नामक ग्रन्थ के आधार पर उन्होंने इनका रचनाकाल संवत् १७२० सिद्ध किया है

---

(१) खोज रिपोर्ट १६२३।३७२ (२) यही ग्रन्थ १६४७।३६६ (३) माधुरी, वर्ष २, खण्ड २, अङ्क ६।

खोजमें 'सम्मन के दोहे' नामक ग्रन्थ मिला है।[१] इससे कवि के सम्बन्ध में कोई सूचना नहीं प्राप्त होती। ये दोहे नीति सम्बन्धी हैं।

विनोद (१११३) में इनके एक ग्रन्थ 'पिङ्गल काव्यभूषण' का उल्लेख है, जिसकी रचना संवत् १८७९ में हुई, ऐसा कहा गया है। विनोद में सम्मन का जन्मकाल १८३४ और कविता-काल १८६० स्वीकार किया गया है। इस कवि के सम्बन्ध में अभी और खोज की आवश्यकता है।

———

९०३।७४८

(७०) सवितादत्त बाबू, सं० १८०३ में उ०। सत्कवि गिराविलास में इनके कवित्त हैं।

सर्वेक्षण

सवितादत्त, कवि का असली नाम है। उसने कभी-कभी रविदत्त छाप भी रख दी है। रवि, सविता का प्रसिद्ध पर्याय है। सरोज में रविदत्त और सवितादत्त इन दोनों नामों से कवि का अलग-अलग उल्लेख हुआ है। रविदत्त को संवत् १७४२ में उ० कहा गया है, जो ठीक है। सवितादत्त को संवत् १८०३ में उ० कहा गया है, जो ठीक नहीं है। इसी वर्ष बलदेव ने अपना सत्कविगिराविलास सङ्कलित किया था। शिवसिंह ने यही समय इसमें सङ्कलित सवितादत्त का भी दे दिया है।

सवितादत्त का एक ग्रन्थ कृष्णविलास मिला है जिससे इनके सम्बन्ध में ठीक-ठीक जानकारी हो जाती है। कृष्णविलास नायिका भेद का ग्रन्थ है। इसकी रचना का प्रारम्भ संवत् १७३५, जन्माष्टमी भौमवार को हुआ था।

जा दिन वैस कुमार की भई बरस बाईस
साकै विक्रम भूप के सत्रह सै पैंतीस
भादर मास पुनीत अति जाते हरषित लोग
कृष्ण जन्म तिथि अष्टमी भौमवार सिद्धि जोग
कृष्ण देव जगदीश की कृपा साहि की होइ
सविता कृष्णविलास की भई जन्म तिथि सोइ
कियो सु दिन आरम्भ तिहि श्रुति मुख छन्द बनाइ
सविता सविता देव के चरण सरोज मनाइ

सवितादत्त जी, हरदोई जिले के अन्तर्गत साँड़ी नामक कस्बे के रहने वाले थे।

---

(१) खोज रिपोर्ट १९०६।२८८

चार कोस दक्षिन बहत जामे बेई जल
तपु के भगीरथ जे काढ़े शिव सीस ते
साँडी नाम नगरी सिखा कन्नौज मंडन की
सविता रहतु तामें साखि दस बीस ते

सवितादत्त ने अपना वंश-परिचय निम्नाङ्कित छप्पय में दिया है ।

चतुर्वेद कुल तिलक, गोत्र गौतम मुनि जाको
विश्वनाथ वर विप्र पुत्र, केशव पुनि ताको
तासु पुत्र समरत्थ नाम, गोबर्धन गायो
जाको सुत कवि मंजु भक्त, रवि को जो कहायो
ताके सुत सविता दत्त कवि, कृष्ण साहि जस कर हरषि
पूरन प्रबन्ध सरवरु कियउ, विरद उक्ति अमृत बरषि

इस छप्पय के अनुसार सवितादत्त जी चतुर्वेदी ब्राह्मण थे और इनका गोत्र गौतम था । इनके पिता भी कवि थे । जिनका नाम मञ्जु था । वे सूर्य के उपासक थे । इसीलिये उन्होंने अपने पुत्र का नाम सवितादत्त रखा था । सम्भवतः बहुत दिन अपुत्र रहने के कारण सूर्य की निरन्तर आराधना करने से यह पुत्र उत्पन्न हुआ था । सवितादत्त के पितामह का नाम गोवर्धन, प्र-पितामह का केशव और प्र-प्रपितामह का नाम विश्वनाथ था । सवितादत्त ने कृष्ण साहि नरनाथ के नाम पर कृष्णविलास नामक रस एवं नायिका भेद का यह ग्रन्थ रचा था ।

कृष्ण साहि आयसु भयो, आदिहि कारन जासु
नाँऊ धर्‌यो या ग्रन्थ कों, याते कृष्ण विलास

झारखण्ड में चाँदानगर है, जहाँ एक से एक उग्र एवं वीर राजा हुए हैं । इसी वंश में एक आाक साहि नामक राजा हुए, जो परम प्रतापी थे । इनके दो पुत्र हुए, बाव जी और केशव साहि । इनके आतङ्क से गोंडवाना, बीजापुर, गोलकुण्डा एवं निजाम हैदराबाद त्रस्त रहते थे । इसी वंश में कृष्ण साहि हुए । यह सब सूचना कवि ने ग्रन्थ के आरम्भ में दी है, जिसका अधूरा उद्धरण रिपोर्ट में दिया गया है ।

———

९०४।७४९

(७१) साधर कवि, सं० १८५५ में उ० । इनकी सामान्य कविता है ।

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध में कोई सूचना सुलभ नहीं ।

———

९०५।७५५

(७२) सम्पत्ति कवि, सं० १८७० में उ० । ऐजन । इनकी सामान्य कविता है ।

सर्वेक्षण

सम्पत्ति कवि के सम्बन्ध में भी कोई सूचना सुलभ नहीं ।

९०६।७५६

(७३) सिरताज कवि बरसाने वाले, सं० १८२५ में उ० ।

सर्वेक्षण

सिरताज के भी सम्बन्ध में कोई सूचना सुलभ नहीं ।

९०७।७६०

(७४) सुमेर कवि ।

सर्वेक्षण

सुमेर का उल्लेख सूदन ने किया है, अतः इनका समय संवत् १८१० से पूर्व है । इनके सम्बन्ध में कोई अन्य सूचना सुलभ नहीं । ग्रियर्सन (७५६) और विनोद (८३६) में प्रमाद से इनका नाम सुमेर सिंह साहबजादे लिखा गया है । सुमेर सिंह साहबजादे तो भारतेन्दुयुगीन कवि हैं और इनका विवरण आगे ९०८ संख्या पर है ।

९०८।७७१

(७५) सुमेर सिंह साहेबजादे । इनके कवित्त सुन्दरी तिलक में हैं ।

सर्वेक्षण

बाबा सुमेर सिंह साहेबजादे, आजमगढ़ के निजामाबाद नामक कस्बे के रहने वाले थे । बाद में ये पटना की हरिमन्दिर संगत के महन्त हो गये थे । यह जाति के खत्री थे । सिक्खों के तीसरे गुरु अमरदास के वंशज होने के कारण यह साहेबजादे कहलाते थे । इन्होंने बिहारी सतसई के दोहों पर कुण्डलियाँ लगाई थीं, कवित्त नहीं, जैसा कि विनोद (२४८५) में कहा गया है । रत्नाकर जी ने इस ग्रन्थ को संवत् १९६२-६३ में देखा था । रत्नाकर जी के अनुसार इसकी

रचना संवत् १९५५-६० में, हुई थी। बाबा जी से हरिऔध जी ने काव्य प्रेरणा पायी थी। बाबा जी भारतेन्दु के मित्रों में थे।[२] इनके आठ सरस सवैये सुन्दरी तिलक में हैं। इनका कोई ग्रन्थ नहीं मिलता। बाबा जी ने 'प्रेम प्रकाश' नामक एक वृहत प्रबन्ध काव्य सिक्खों के दस गुरुओं पर लिखा था, जो खो गया। यह ग्रन्थ १० मण्डलों में विभक्त था। एक-एक मण्डल में एक-एक गुरु का विवरण था। गुरु गोविन्द सिंह सम्बन्धी इसका दशम मण्डल गुरुमुखी में छपा भी था। इन्होंने कर्णाभरण नामक एक अलङ्कार ग्रन्थ भी लिखा था। गुरु गोविन्द सिंह कृत फारसी ग्रन्थ 'जफरनामा' का अनुवाद 'विजय पत्र' नाम से किया था। सन्त निहाल सिंह के साथ जाप जी की एक टीका भी लिखी थी। अन्य कई धार्मिक एवं रस सम्बन्धी ग्रन्थ भी लिखे थे, पर अब सब अनुपलब्ध है।[१]

९०९।७६१

(७६) सागर कवि ब्राह्मण, सं० १८४३ में उ०। इन्होंने वामा मनरञ्जन नामक शृङ्गार का ग्रन्थ बनाया है। यह कवि महाराजा टिकैत राय दीवान के यहाँ थे।

सर्वेक्षण

टिकैत राय प्रसिद्ध दानी लखनऊ के नवाब आसफुद्दौला के वजीर थे, अतः आसफुद्दौला, टिकैत राय और सागर कवि समकालीन हुए। आसफुद्दौला का शासनकाल संवत् १८३२-५४ है, अतः सरोज में दिया हुआ समय संवत् १८४३ सागर कवि का उपस्थितिकाल या रचना-काल है। यह जन्मकाल नहीं है जैसा कि ग्रियर्सन (४८२) और विनोद (११२८) में स्वीकार किया गया है। विनोद के अनुसार सागर, लखनऊ निवासी ऊँचे वाले वाजपेयी थे। वामा मनरञ्जन की कोई प्रति अभी तक खोज में नहीं मिली है।

लखनऊ वाले इन सागर से भिन्न एक अन्य सागर कवि मालवा नरेश जोरावर सिंह के आश्रित थे। राजा जोरावर सिंह ने रामगढ़ किला के निकट मानपुर ग्राम में कवियों की एक सभा बुलाई थी, जिसमें चन्द के पुत्र बाधोरा भाट और आमेरगढ़ के कवि नान्हू राम उपस्थित थे। इस सभा में जोरावर सिंह ने साहित्य-शास्त्र पर ग्रन्थ रचने को कहा था। तब इन्होंने कविता कल्पतरु[२] नामक साहित्य ग्रन्थ की रचना संवत १७८८ में की थी।

संवत सतरह सत सुनौ बरस अठासी जान
नवमी आदि असाढ़ पख रचना ग्रन्थ प्रमान

एक सागर कवि के अनेकार्थी नाममाला[३] एवं धनजी नाममाला[४] नामक कोष ग्रन्थ तथा

---

(१) हिन्दी भाषा और साहित्य का विकास, पृष्ठ ५२२-२३ (२) खोज रिपोर्ट १९४७।४०६ (३) राज रिपोर्ट, भाग २, पृष्ठ २ (४) वही, पृष्ठ ५

रागमाला[1] नामक संगीत ग्रन्थ राजपूताने में मिले हैं। प्रथम दो का लिपिकाल १९ वीं और अन्तिम का १८ वीं शताब्दि है। ये तीनों ग्रन्थ ब्रजभाषा में है। बहुत सम्भव है कि ये तीनों ग्रन्थ जोरावर सिंह के आश्रित सागर कवि की ही रचना हो।

६१०।७६५

(७७) सुखलाल कवि, सं० १८५५ में उ०।

सर्वेक्षण

सुखलाल कायस्थ थे। यह पहले काशी में रहते थे, बाद में अयोध्या में रहने लगे थे। इनका लिखा ग्रन्थ हनुमान जन्म[2] है जिसकी प्रतिलिपि सम्बत् १९१२ की हुई है।

मैं कायस्थ काशी को वासी
गुरु प्रसाद भयउ अवध को वासी
नहिं कछु बल बुधि नहिं चतुराई
आपन काज लागि गुनगाई
गुन गावत सुखलाल के उर आनन्द अधिकान

सम्भवतः इन्हीं का बनाया हुआ विवेक सागर या सुखसागर[3] नामक ग्रन्थ भी है। इसकी रचना संवत् १८४४ में हुई।

सुकल पच्छ तिथि तीज मास असाढ़ सुहावनो
आदित वार कही जू ग्रन्थ भयो पूरन तबै ७६
सम्बत् सत्रा से असी बास बीस फिर बीस
ऊपर चार विचार के सम्मतसर कहि दीस ७७

ग्रन्थ में कवि का नाम भी है—

सुखसागर सुखलाल कहि संत सरोवर ऊब
सूझौ अञ्जन ज्ञान दे मंजन करयत खूब ७५

सरोज में इनका निम्नलिखित छन्द उद्धृत है—

दसरथ के बेटे खरे खरेटे धनुष करेटे सर टेंटे
गोरे सौंरेटे उर बघनेटे जरी लपेटे सिर फेटे

---

(१) राज० रिपोर्ट, पृष्ठ ६२ (२) खोज रिपोर्ट १९४७।४१५ (३) वही १९४७।४१६

नैना कजरेटे रन दुलहेटे रमा पलेटे चरनेटे
सुखलाल समेटे चारो बेटे हंसि करि भेंटे सौरेटे ।

इस उद्धरण से सरोज का कवि, अवधवासी सुखलाल कायस्थ प्रतीत होता है। विनोद (७६४।१) में राधावल्लभी सम्प्रदाय के एक सुखलाल गोस्वामी हैं जो संवत १८०० में उपस्थित थे और अपने सम्प्रदाय के आचार्य थे। इन्होंने स्फुट पद, भाषामृत, रासपञ्चाध्यायी की टीका एवं हित चौरासी की टीका ग्रन्थों की रचना की है। यह सुखलाल सरोज के सुखलाल से भिन्न हैं।

विहाररिपोर्ट, भाग २, संख्या १०३ पर राधा सुधानिधि की टीका इन्हीं सुखलाल गोस्वामी की मानी गई है। किन्तु यह ठीक नहीं। यह टीका इन गोस्वामी जी के एक शिष्य तुलसीदास ने की थी। इस ग्रन्थ में तुलसीदास का नामस्मरण नहीं किया गया है, जैसा कि विहाररिपोर्ट में लिखा गया है। राधावल्लभी तुलसी ने अपना दैन्य प्रकट किया है।

आरत तुलसीदास को श्री वचननि विसराम

अन्त में तो बहुत स्पष्ट कथन है—

श्री हित वंश में प्रगट हैं श्री सुखलाल अनूप
मेरे सब सुक्खनि हनौ अद्भुत कृपा सरूप ३३

विहाररिपोर्ट इसी प्रकार की अनेक भ्रष्टताओं से भरी हुई है।

९११।७३०, ७६७

(७८) सुजान कवि भाट। इनके शृङ्गार के अच्छे कवित्त हैं।

सर्वेक्षण

सरोज के प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय संस्करणों में सुजान कवि भाट के स्थान पर केवल सुजान है। प्रो० विश्वनाथ प्रसाद मिश्र का अनुमान है कि यह सुजान घनानन्द प्रिया सुजान हैं। यह मुसलमान बार बधू थी, मुहम्मद शाह रंगीले के दरबार की गायिका थी, यह उसका हिन्दू नाम है। प्रवीन राय के ही समान सुजान राय को समझना चाहिये। राय लगा देखकर शिव सिंह ने इसे कोई पुरुष भाट समझ लिया था। सप्तम संस्करण में उदाहरण देते समय भी सुजान कवि भाट लिखा हुआ है। यदि शिव सिंह ने ही ऐसा लिखा था, तो उनकी भूल का कारण मिश्र जी ने स्पष्ट कर दिया है।[१] इसका रचनाकाल सं० १८०० के आस-पास है।

---

(१) घन आनन्द ग्रन्थावली, भूमिका, भाग २, पृष्ठ ६१-६७

९१२।७६६

(७६) सबल सिंह कवि । इन्होंने षट्ऋतु बरवै और भाषा ऋतुसंहार, ये दो ग्रन्थ साहित्य के बहुत ही सुन्दर बनाये हैं । दोनों ग्रन्थों में कवि का ग्राम, कुल और सन्-सम्बत् नहीं हैं ।

सर्वेक्षण

ग्रियर्सन, विनोद एवं आचार्य शुक्ल, सभी ने षट्ऋतु बरवै एवं भाषा ऋतुसंहार के रचयिता सबल सिंह तथा महाभारत के रचयिता प्रसिद्ध सबल सिंह की एकता स्वीकार की है । इनको अभिन्न मान लेने में कोई बाधा नहीं । सबल सिंह चौहान का विवरण आगे संख्या ९१३ पर है ।

९१३।७६५

(८०) सबल सिंह चौहान, सं० १७२७ में उ० । इन्होंने दोहा-चौपाइयों में महाभारत के २४ हजार श्लोकों का उल्था बहुत ही संक्षेप के साथ किया है । कोई कहता है कि यह कवि चन्दगढ़ के राजा थे तो कोई कहता है कि सबलगढ़ के थे । इनके वंश वाले आज तक जिले हरदोई में हैं । परन्तु हम इसे ठीक नहीं मानते । हम कहते हैं कि यह कवि जिला इटावा के किसी ग्राम के जमीन्दार थे और आप ही १० पर्वों का उल्था किया सूचीपत्र लिखा है ।

सर्वेक्षण

भाषाकाव्य संग्रह में महेश दत्त मिश्र इनके सम्बन्ध में यह लिखते हैं—

"ये फर्रुखाबाद जिले में रामगंगा के तट पर सबलपुर के रहने वाले बड़े परिश्रमी पण्डित थे कि देखो सम्पूर्ण महाभारत को भाषा किया । अब इनके लड़के-वाले हरदोई जिले के साई ग्राम में रहते हैं ।"

शिव सिंह जी ने इसी सबलपुर का सबलगढ़ कहकर खण्डन किया है । सबल सिंह चौहान क्षत्रिय के रूप में प्रसिद्ध हैं, न कि पण्डित रूप में ।

पण्डित मातादीन मिश्र ने सबल सिंह के सम्बन्ध में एक दूसरी कथा दी है । इनके अनुसार सबल सिंह चन्दगढ़ के राजा थे । इन्हें कोई पुत्र नहीं हो रहा था । पण्डितों ने इनका नाम चलाने के लिये सम्बत् १७२७ में इनके नाम से महाभारत का अनुवाद प्रारम्भ किया । संवत् १७२७ तो सरोजकार ने यहीं से लिया है पर चन्दगढ़ का खण्डन किया है । इस कथा को भी नहीं स्वीकार किया है । महाभारत का रचयिता इन्हीं को माना है अज्ञातकुल शील पण्डितों को नहीं ।

सबल सिंह ने संवत १७१२ से १७८१ के बीच सम्पूर्ण महाभारत का सुन्दर अनुवाद किया। सर्गों के अन्त में रचनाकाल भी दे दिया है,[1] जिससे यह तथ्य प्रकट होता है, यथा—

(१) भीष्म पर्व संवत् १७१२ (२) कर्ण पर्व, स० १७२४ (३) शल्य पर्व, सं० १७२४ (४) सभा पर्व, सं० १७२७ (५) द्रोण पर्व, सं० १७२७(६) मुशल पर्व, सं० १७३० (७)आश्रम-वासिक पर्व सं० १७५१ (८) स्वर्गारोहण पर्व, सं० १७८१। — खोज रिपोर्ट १९०६।११२

शिव सिंह को केवल १० पर्वों का पता था। महाभारत के अतिरिक्त इनके निम्नांकित ग्रन्थ और कहे जाते हैं—

(१) रूपविलास पिङ्गल १९०६।११२, इसका रचनाकाल सं० १७५६ है।

(२) षट्ऋतु बरवै अथवा भाषा ऋतुसंहार—यह एक ही ग्रन्थ है, दो नहीं। जैसा कि सरोज में एवं अन्यत्र लिखा मिलता है। उदाहरण देते समय दोनों की एकता स्वयं सरोज में मान ली गई है।

(३) भागवत दशमस्कन्ध भाषा।

सबल सिंह ने स्वर्गारोहण पर्व को छोड़ महाभारत के प्रायः अन्य सभी पर्वों में औरङ्गजेब और राजा मित्र सेन का उल्लेख किया है। इससे मिश्र बन्धुओं का अनुमान है कि इन लोगों से सबल सिंह सम्बन्धित थे, सम्बन्ध चाहे जो रहा हो।

———

९१४।७७२

(८१) शेखर कवि। इनके शृङ्गार के सुन्दर कवित्त हैं।

सर्वेक्षण

शेखर का पूरा नाम चन्द्रशेखर बाजपेयी है।[2] इनका जन्म पौष शुक्ल १०, सं० १८५५ में असनी, जिला फतेहपुर के निकट मुअज्जमाबाद में हुआ था। इनके पिता मनीराम जी भी सुकवि थे। असनी के करनेस कवि इनके काव्य-गुरु थे। चन्द्रशेखर जी २२ वर्ष की वय में सं० १८७७ में घर से निकले। पहले यह दरभंगा नरेश के यहाँ गए, जहाँ यह ७ वर्षों तक रहे। सं० १८८४ में जोधपुर नरेश मान सिंह के यहाँ गए। यहाँ यह १०० रु० मासिक पर ६ वर्षों तक रहे। जोधपुर से यह पंजाब केशरी रणजीत सिंह के दरबार में जा रहे थे पर पटियाला में रह गए, जहाँ यह अन्त तक रहे। अब भी इनके वंशज पटियाला में हैं। इनकी मृत्यु सं० १९३२

---

(१) विनोद कवि संख्या ३६०(२) शिवाधार पाण्डेय लिखित शेखर शीर्षक लेख, मर्यादा, भाग ४, सं० १, १९१२ ई०।

में हुई। यह पटियाला में महाराज कर्म सिंह के समय में गए और महाराज नरेन्द्र सिंह के समय तक वर्त्तमान रहे।

चन्द्रशेखर जी के तीन ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं और तीनों का सम्पादन रत्नाकर जी ने किया था।

(१) नख-शिख, भारत जीवन प्रेस, काशी से प्रकाशित।

(२) हम्मीर हठ, सभा द्वारा प्रकाशित। इसकी रचना पटियाला नरेश महाराज नरेन्द्र सिंह की आज्ञा से फागुन वदी ४, सं० १९०२ को हुई थी। इसमें कुल ४०३ छन्द हैं।

(३) रसिक विनोद, रचनाकाल माघ सुदी ७, शनिवार, सं० १९०३। भारत जीवन प्रेस, काशी से प्रकाशित।

इनके अप्रकाशित ग्रन्थ ये हैं—(१) माधवी बसन्त, (२) हरि-भक्ति विलास, (३) राजनीति (४) वृन्दावन शतक, (५) गुरुपञ्चाशिका, (६) ज्योतिष का ताजक। शुक्ल जी ने इनके एक अन्य ग्रन्थ विवेक-विलास का और उल्लेख किया है। शुक्ल जी के इतिहास में 'गुरुपञ्चासिका' 'गुह पञ्चासिका' हो गई है।

९१५।७७७

(८२) शशिशेखर कवि, सं० १७०५ में उ०। इनके कवित्त हजारे में हैं।

सर्वेक्षण

हजारे में शशिशेखर जी के कवित्त थे, अतः सं० १७५० के पूर्व या आस-पास इनका अस्तित्व सिद्ध है। इससे अधिक इनके विषय में कोई सूचना सुलभ नहीं।

९१६।७७५

(८३) सोमनाथ कवि, सं० १८८० में उ०।

सर्वेक्षण

सोमनाथ जी छिरौरा वंशीय माथुर नरोत्तम मिश्र के प्रपौत्र थे। नरोत्तम जी जयपुर नरेश राम सिंह, (राज्यारोहण काल सं० १७२४) के मन्त्र-गुरु थे।[1] नरोत्तम मिश्र के दो पुत्र हुए, देवकीनन्दन और श्रीकण्ठ। देवकीनन्दन जी सोमनाथ के पितामह थे। देवकीनन्दन के चार पुत्र

---

(१) **विनोद** ७२०

हुँए—नीलकण्ठ, मोहन, महापति और राजाराम। नीलकण्ठ जी सोमनाथ के पिता थे। सोमनाथ के दो बड़े भाई और थे, आनन्दनिधि और गंगाधर। यह विस्तृत परिचय सोमनाथ जी ने अपने सुजान विलास एवं रामचरित्र रत्नाकर[1] में दिया है। दोनों ग्रन्थों में एक ही छन्द हैं।

मिश्र नरोत्तम नरोत्तम, भए छरौरा वंस
राम सिंह के मन्त्र गुरु, माथुर कुल अवतंस ३६
तिनके पुत्र प्रसिद्ध, देवकी नन्दन भए
विद्या बुद्धि समुद्र, जगत उत्तम जस लए ३७
तिनके अनुज अनूप, एक श्रीकण्ठ सुहाए
ताके जागे भाग, जिनन वे दरसन पाए ३८
उपजे नन्दन मिश्र के, चारि पुत्र सुखदानि
नीलकण्ठ मोहन बहुरि, मिश्र महापति जानि ३९
चौथे राजाराम पुनि, मन में पहिचान
सबै भांति लाइक सबै, निपट रसिक उर आनि ४०

काम अवतार से अनूप अति रूप करि,
सील करि सुन्दर सरद सुधाधर से
कविता में व्यास के प्रमान कहि सोमनाथ
जुद्ध रीति जानिवे की पारथ से दरसे
बुद्धि करि सिन्धुर वदन के समान अरु
उद्धत उदारता में भूमि सुर तरु से
सिद्धता में विमल वसिष्ठ मुनिवर से औ
जोतिस में नीलकण्ठ मिश्र दिनकर से ४१

तिनके पुत्र अनन्द निधि बड़े उजागर जानि
तिनकौ जस सु दिगन्त लौं महा उजागर आनि ४२
गंगाधर तिनके अनुज, गंगाधर परवान
सोमनाथ तिनको अनुज, सब तें निपट अजान ४३

सोमनाथ जी भरतपुर नरेश वदन सिंह के पुत्रद्वय सूरजमल एवं प्रताप सिंह के आश्रय में

(१) खोज रिपोर्ट १९१७।१७९ डी

रहकर साहित्य सेवा करते रहे। इनका असल नाम तो सोमनाथ था, किन्तु कभी-कभी यह शशिनाथ छाप भी रखा करते थे। सोमनाथ छाप कवित्तों और ससिनाथ छाप सवैयों में प्रायः देखी जा सकती हैं। यह अपनी छाप कभी-कभी नाथ भी रखते थे।[1] कभी-कभी छाप देते ही नहीं थे।[2] इन रहस्य को न जानने के कारण दिग्विजय भूषण, सरोज और ग्रियर्सन में सोमनाथ तथा शशिनाथ अलग-अलग दो कवि समझ लिए गए हैं। सोमनाथ जी के निम्नलिखित ग्रन्थ खोज में मिल चुके है—

(१) रस पीयूषनिधि, १९०६।२९८ ए, १९१७।१७९ एफ। यह दशांग काव्य का अत्यन्त उत्कृष्ट ग्रन्थ है। यह प्रताप सिंह के लिए रचा गया गया था। इसका रचनाकाल सं० १७९४, ज्येष्ठ वदी १०, भृगुवार हैं।

सत्रह सै चौरानवा, संवत जेठ सु मास
कृष्ण पक्ष दशमी भृगो, भयो ग्रन्थ परकास

(२) रास पञ्चाध्यायी, १९०६।२९८ बी। रिपोर्ट में ग्रन्थ का वर्णन कृष्ण-लीलावती पञ्चाध्यायी नाम से हुआ है। सम्पूर्ण ग्रन्थ सोमनाथ रत्नावली में सङ्कलित है। इस ग्रन्थ की रचना सं० १८०० में, अगहन शुक्ल २, बुधवार को हुई।

संवत ठारह सै बरस, उत्तम अगहन मास
शुक्ल द्वितीया, बुद्ध दिन, भयो ग्रन्थ परकास

कवि ने अन्त में शशिनाथ छाप दी है—

माथुर कवि शशिनाथ की, सुकविन कौं परनाम
भूले होय सो सोधियो, यही गुनिन कौ काम

इसमें आश्रयदाता का नाम नहीं है।

(३) रामचरित्र रत्नाकर, १९१७।१७९ डी ई।यह वाल्मीकि रामायण का अनुवाद है। यह भाषान्तर प्रताप सिंह के लिए प्रस्तुत किया गया था। खोज में इसके अयोध्याकाण्ड, अरण्य-काण्ड, किष्किन्धाकाण्ड और सुन्दरकाण्ड मिल चुके हैं। अयोध्याकाण्ड में रचनाकाल सं० १७९९ दिया गया है।

सत्रह सै निन्यानमो, संवत सावन मास
शुक्ला दसमी वार भृगु, भयो ग्रन्थ परकास

(४) राम कलाधर १९१७।१७९। सी। यह रामचरित्र सम्बन्धी ग्रन्थ है। कुछ पता नहीं

---

(१) सोमनाथ रत्नावली, पृष्ठ ८५।१७; ९०।३१ (२) वही, पृष्ठ ८७।२३, ९१।३४

कि यह रामचरित्र रत्नाकर से किसी प्रकार सम्बद्ध है अथवा कोई स्वतन्त्र ग्रन्थ है। बहुत सम्भावना है कि यह उक्त ग्रन्थ ही हो। इसके अन्त में निषाद और राम की प्रथम भेंट का वर्णन है, अतः इसमें पूरी कथा आ नहीं पायी है। ग्रन्थ में न तो रचनाकाल है और न आश्रयदाता का उल्लेख ही।

(५) सुजान विलास, १९००।८२, १९१७।१७९ जी। यह सूरजमल उपनाम सुजान के लिए लिखा गया सिंहासनबत्तीसी का अनुवाद है। इसकी रचना सं० १८०७ में जेठ सुदी ३, रविवार को हुई।

संवत विक्रम भूप को अट्ठारह सै सात
जेठ सुद्ध त्रितिया रवी भयो ग्रन्थ अवदात

कवि ने आश्रयदाता का स्पष्ट उल्लेख किया है—

श्री वदन सिंह भुवाल जदुकुल मुकुट गुननि विसाल है
तिहि कुँवर सिंह सुजान सुन्दर हिन्द भाल दयाल है
तिहि हेत कवि ससिनाथ ने यह किय सुजान विलास है
बत्तसि पुतरी की कथा यह पुर्न ग्रन्थ प्रकास है ८८

(६) माधव विनोद नाटक, १९०४।४७। यह मालती माधव का प्रबन्धकाव्य के रूप में अनुवाद है, नाटक नहीं है। यह ग्रन्थ प्रताप सिंह के लिए सं० १८०९ में, आश्विन शुक्ल १३, भृगुवार को पूर्ण हुआ।

ठारह सै अरु नव बरस, संवत आश्विन मास
शुक्ल त्रोदसी, भृगु दिना, भयो ग्रन्थ परकास

(७) ध्रुव चरित्र, १९१७।१७९ बी। इस ग्रन्थ की रचना सं० १८१२, जेठ बदी १३, भृगुवार को हुई।

संवत ठारह सै बरस, बारह जेठ सुमास
कृष्ण त्रोदसी, वार भृगु, भयो ग्रन्थ परकास ५७

कवि ने निम्नलिखित दोहे में अपने को ग्रन्थ का कर्त्ता कहा है—

माथुर कवि ससिनाथ ने, ध्रुव चरित्र यह कीन
जाके गुन बर्नन सुने रीझै हिये प्रवीन ५६

(८) ब्रजेन्द्र विनोद, १९१७।१७९ ए। सोमनाथ ने श्रीमद्भागवत के दशम स्कन्ध का

भाषानुवाद किया था। प्राप्त ग्रन्थ इसी का उत्तरार्द्ध है। इसमें रचनाकाल नहीं दिया गयाहै। यह ग्रन्थ सूरजमल के लिए रचा गया था। सूरजमल की मृत्यु सं० १८२० में हुई, अतः यह ग्रन्थ सं० १८२० से पहले रचा गया रहा होगा।

ब्रज इन्द्र परम सुजान सूरज मल्ल सुन्दर हेत हो
कवि सोमनाथ विचित्र ने बरन्यो सुबुद्धि समेत हो
भागवत दशम स्कंध भाषा अति पवित्र सुभाइ कै
यह नब्बयों अध्याय ताकौ भयो हरि गुन गाइ कै

इन ८ ग्रन्थों के अतिरिक्त सोमनाथ रत्नावली में इनके निम्नलिखित तीन ग्रन्थ और कहे गए हैं।

(१) शशिनाथ विनोद, इसमें शिव-पार्वती का विवाह वर्णित है। (२) कमलाधर, हो सकता है यह राम कलाधर का विकृत नाम हो। (३) प्रेम पच्चीसी, यह सोमनाथ के सम्भवतः प्रेम-सम्बन्धी २५ कवित्त-सवैयों का संग्रह है।

शिव सिंह को सोमनाथ की कोई जानकारी नहीं थी, ऐसा प्रतीत होता है। सरोज में इनका जो एक छन्द है, वह दिग्विजय भूषण से उद्धृत है। इनका समय सं० १८८० अनुमान से दिया गया है जो अशुद्ध है। ऊपर दिए गए ग्रन्थों के विवरण से इनका रचनाकाल सं० १७९४-१८१२ सिद्ध है। इनका जीवनकाल सं० १७६०-१८२० माना जा सकता है।

९१७।७७६

(८४) शशिनाथ कवि। इनके श्रृङ्गार के सुन्दर कवित्त हैं।

सर्वेक्षण

प्रसिद्ध कवि सोमनाथ कवित्तों में अपनी छाप सोमनाथ और सवैयों में शशिनाथ या केवल नाथ रखते थे। एक ही ग्रन्थ के विभिन्न छन्दों में यह बात देखी जा सकती है। नवीन ने भी सुधासर के अन्त में संलग्न दुत छापी कवि-सूची में ससिनाथ और सोमनाथ को एक कवि कहा है। सरोज में शशिनाथ के नाम पर जो छन्द उदाहृत है, वह दिग्विजय भूषण से उद्धृत है। दिग्विजय भूषण में सोमनाथ और शशिनाथ की भिन्नता स्वीकृत है, आधार के भ्रान्त होने के कारण सरोज में यह अभेद में भेद आ गया है। सोमनाथ का पूर्ण विवरण पीछे संख्या ९१६ पर देखा जा सकता है।

९१८।७७८

(८५) सहीराम कवि, सं० १७०८ में उ०। हजारे में इनके कवित्त हैं।

सर्वेक्षण

सहीराम के सम्बन्ध में कोई सूचना सुलभ नहीं।

९१९।७७९

(८६) सदानन्द कवि, सं० १६८० में उ०। इनका काव्य बहुत ही सुन्दर है। हजारे में इनका केवल एक ही कवित्त है और दिग्विजय भूषण में दोहे हैं।

सर्वेक्षण

सदानन्द नाम के निम्न चार कवियों का पता चलता है—

(१) सदानन्द मिश्र—यह जौनपुर और आजमगढ़ के रहने वाले थे और बलदेव मिश्र के बड़े भाई थे। इन्हीं सदानन्द के पुत्र हरजू मिश्र थे, जिन्होंने सं० १७६६ में अमरकोष टीका की रचनाकी थी एवं विहारी सतसई का आजमशाही अनुक्रम प्रस्तुत किया था। इन सदानन्द की कविता हजारे में हो सकती है।[1]

(२) सदानन्द महापात्र—यह कविराज महापात्र के पुत्र और सुखलाल महापात्र के पिता थे। इन्हीं के वंश में आगे चलकर शिवराज[2] महापात्र सं० १८६६ में हुए। इन सदानन्द की भी कविता हजारे में हो सकती है।

(३) सदानन्ददास—इनकी रचना नन्दजी की वंशावली[3] है। इसके अन्तिम दो चरण हैं—

इह वंशावली बखानी ढाढ़ी, हर्षे वल्लवराज
श्री सदानन्द प्रानन वारत, रंग भीनी सकल समाज

यदि वल्लवराज से अभिप्राय महाप्रभु वल्लभ से है, तो यह वल्लभ-सम्प्रदाय के कोई व्यक्ति हैं। यह हजारे वाले सदानन्द से पूर्ववर्ती और भिन्न हैं।

---

(१) सोमनाथ रत्नावली, कवि संख्या ९८७ (२) यही ग्रन्थ, कवि संख्या ८५१ (३) खोज रिपोर्ट १९०९।२७१, १९२३।३६५

(४) सदानन्द—भगवन्त राय खींची के आश्रित कवि और भगवन्त राय रासा[१] के रचयिता। यह हजारे वाले सदानन्द से परवर्ती हैं।

हजारे वाले सदानन्द या तो पहले हैं या दूसरे। यह शृङ्गारी कवि हैं। सरोज में उदाहृत कवित्त दिग्विजय भूषण[२] से उद्धृत है। सम्भवतः यही एक कवित्त हजारे में भी था। मिश्रबन्धुओं ने इनके तीन कवित्त देखे थे। विनोद २८३ में उद्धृत कवित्त सरोज में उदाहृत कवित्त से भिन्न है। विनोद में इनका कविताकाल सं० १६८५ माना गया है।

९२०।७८०

(८७) सकल कवि, सं० १६९० में उ०। हजारे में इनके कवित्त हैं।

सर्वेक्षण

सकल कवि के सम्बन्ध में कोई सूचना सुलभ नहीं। यह सं० १७५० के पूर्ववर्ती हैं, क्योंकि इनकी रचना हजारे में थी।

९२१।७८१

(८८) सामन्त कवि, सं० १७३८ में उ०। यह कवि औरङ्गजेब के यहाँ थे। हजारे में इनके कवित्त हैं।

सर्वेक्षण

सामन्त कवि की रचना हजारे में थी और यह औरङ्गजेब के यहाँ थे, अतः सरोज में दिया सं० १७३८ कवि का रचनाकाल या उपस्थितिकाल ही है, उत्पत्तिकाल नहीं। सरोज में इनका एक कवित्त उद्धृत है, जिसमें औरङ्गजेब की प्रशस्ति है।

९२२।७८२

(८९) सेन कवि नापित, बान्धवगढ़ के सं० १५६० में उ०। हजारे में इनमें कवित्त हैं। यह कवि स्वामी रामनन्द जी के शिष्य थे।

सर्वेक्षण

सरोज में सेन के नाम पर यह कवित्त दिया गया है।

---

(१) खोज रिपोर्ट १९२३।३६४ ए, बी (२) दिग्विजय भूषण, अष्टम प्रकाश, सङ्करालङ्कार, छन्द ३९।

जब ते गोपाल मधुवन को सिधारे आली,
मधुवन भयो मधु दावन विषम सों
सेन कहै सारिका सिखण्डी खञ्जरीट सुक
मिलि के कलेस कीनौ कालिंदी कदम सों
जामिनी बरन यह जामिनी में जाय जाय
वधिक को जुगुति तनावै टेरि तम सों
देह कारी किरच करेजो कियो चाहत है
काग भई कोयल कगायो करै हम सों

यह कविता प्रसिद्ध भक्त सेन की नहीं हो सकती। भक्त सेन की कविता का उदाहरण सिक्खों के गुरुग्रन्थ साहब में देखा जा सकता है। यह कवित्त तो संवत् १६५० के बाद की रचना प्रतीत होता है। मिश्र बन्धुओं ने भी इस तथ्य को समझा है, अतः उन्होंने इस शृङ्गारी सेन को भक्त सेन से अलग किया है और विनोद संख्या ५१ पर उल्लेख किया है। सरोज में विवरण एक सेन का और उदाहरण दूसरे सेन का दिया गया है। भक्त सेन रामानन्द के द्वादश शिष्यों में से एक हैं। यह रीवाँ के नाई थे और सं० १४५७ के आस-पास उपस्थित थे। भक्तमाल में इनका उल्लेख छप्पय ६३ में हुआ है।

९२३।७८८

(९०) सीतारामदास, बनिया बीरापुर, जिले बाराबंकी। वि० । ये जोड़-गाँठ लेते हैं।

सर्वेक्षण

सरोजकार ने सीतारामदास बनिया का विवरण महेशदत्त के भाषाकाव्यसंग्रह के आधार पर दिया है। उदाहरण भी वहीं से लिया है। विनोद (२३३८) के अनुसार इनका जन्मकाल सं० १९०७ है और इन्होंने ज्ञानसारावली नामक ग्रन्थ रचा था।

९२४।७९०

(९१) सुकवि कवि, सं० १८५५ में उ०। इनके शृङ्गार के सुन्दर कवित्त हैं।

सर्वेक्षण

सुकवि किसी भी व्यक्ति का नाम नहीं हो सकता, यह उपाधि है। यह या तो कवि द्वारा स्वयं धारण कर ली गई है अथवा किसी आश्रयदाता द्वारा प्राप्त हुई है। सुकवि छाप वाले सरोज के इस कवि का वास्तविक नाम क्या है, कहा नहीं जा सकता।

९२५।७६४

(९२) सगुणदास कवि। इनके कवित्त रागसागरोद्भव में हैं।

सर्वेक्षण

सरोज में सगुणदास का एक पद उद्धृत है, जिसमें वल्लभाचार्य की स्तुति है। अतः यह वल्लभ-सम्प्रदाय के भक्त कवि हैं।

नेही श्री वल्लभ के ह्वै गाजो
चरनांबुज गहि, मान ग्रन्थि तजि, स्वामी पद ते भाजो
गीता भागवत निगम से साखी, तौ काहे को लाजो
गीत गोविन्द विल्व मङ्गल सी बाँकी कहि सके अनदाजो
पुरुषोत्तम इनहीं तैं पैये नृह दृढ़ मति तुम साजो
सगुणदास कहें जुवति सभा में गिरिधर महल विराजो

यह गोसाईं विट्ठलनाथ के अन्तरङ्गीय सेवक[1] थे। गोसाईं जी का देहावसानकाल १६४२ है, अतः सगुणदास का रचनाकाल सं १६००-१६४० के आसपास होना चाहिए। सम्भवतः सूर की भाँति पहले यह भी स्वामी थे और शिष्य किया करते थे, तभी इन्होंने कहा है—

"स्वामी पद ते भाजो"

९२६।७५८

(९३) सुवंश शुक्ल, बिगहपुर, जिले उन्नाव वाले, संवत् १८३४ में उ०। यह महाराज प्रथम राजा उमराव सिंह बन्धल गोती अमेठी के यहाँ रहे। अमर कोष, रस तरङ्गिणी, रस मञ्जरी, ये तीन ग्रन्थ संस्कृत से भाषा में किए। फिर राजा सुब्बासिंह ओयल के यहाँ जाकर विद्वन्मोद-तरङ्गिणी नामक ग्रन्थ के बनाने में राजा साहब की सहायता की। यह महाकवि हो गए हैं और इनका काव्य देखने योग्य है।

---

(१) श्री आचार्य महप्रभु की प्राकट्य कर्ता—गुजराती में लिखित अंश, पृष्ठ १३।

सर्वेक्षण

सुवंश शुक्ल, टेढ़ा बिगहपुर, जिला उन्नाव के रहने वाले थे। यह केशी के शुक्ल थे और इनके पिता का नाम प्रयागदत्त था। इनके मुख्य आश्रयदाता, बिसवाँ, जिला सीतापुर के कायस्थ चौधरी उमराव सिंह थे। सरोज में उमराव सिंह को बन्धल गोती क्षत्रिय और अमेठी का राजा कहा गया है, जो अशुद्ध है। अमर कोश या उमराव कोश में कवि ने उमराव सिंह का पूरा वंश परिचय दिया है। उमराव सिंह पाँच भाई थे—(१) धौंकल सिंह, (२) भूम सिंह, (३) उमराव सिंह, (४) बखतावर सिंह, (५) ईश्वरी सिंह। उमराव सिंह के पिता का नाम शिव सिंह और चाचा का भवानी सिंह था। इनके पितामह का नाम अमर सिंह और प्रपितामह का बालचन्द था। सुवंश के अन्य आश्रयदाता ओयल के सुब्बा सिंह उपनाम श्रीधर थे। इन्हीं श्रीधर ने इनकी सहायता से विद्वन्मोद तरङ्गिणी नामक ग्रन्थ बनाया था। इनके कुछ अन्य आश्रयदाता साधौराम मिश्र, डौंड़ियाखेरे के राजा रघुनाथ सिंह एवं सुदर्शन सिंह भी थे। सुवंश जी के बनाए हुए निम्नांकित ग्रन्थ खोज में मिले हैं :—

(१) रस तरङ्गिणी, ११२६।४७५ ए, फ। यह ग्रन्थ सं० १८६१ में रचा गया।

> १ ६ ८ १
> **ससि रस अरु वसु वसुमती संवत् वर्ष विचार**
> **कातिक सुदि गुरु तीज को भयो ग्रन्थ अवतार**

यह रस और नायिका भेद का ग्रन्थ है। इसकी रचना उमराव सिंह के लिए हुई।

> **वानी के पद वन्दि के महा मोद सरसाइ**
> **कवि सुवंस उमराव को देत असीस बनाइ**

(२) उमराव कोश या अमरकोश, १६०५।८८, १६२०।१६१, १६२३।४२२डी, १६२६।४७५, ए, बी, १६४७।४१६क। इस ग्रन्थ की रचना सं० १८६२ में हुई।

> २ ६ ८ १
> **युग रस वसु अरु निसापति, संवत् वर्ष विचारि**
> **माघ कृष्ण प्रतिपदा को भयो ग्रन्थ अवतार**

यदि युग का अर्थ चार लिया जाय, तो इसका रचनाकाल सं० १८६४ हो जायगा। यह ग्रन्थ भी उमराव सिंह के लिए लिखा गया। ग्रन्थ में उमराव सिंह को आशीर्वाद दिया गया है।

> **"सुख देव नृपति उमराव को, उमा उमानन्दन हरषि"**

इसमें बिसवाँ की भी प्रशंसा है—

> **देस देस जाहिर नरेस यों बखान को**
> **वेस औध मण्डल में बिसवाँ बसत है।**

ग्रन्थ की पुष्पिका से भी पर्याप्त सूचनाएँ मिलती हैं ।

"इति श्री विश्वनाथ पुराखण्ड मण्डल धराधीश कायस्थ चौधरी सिवसिंह वंसावतंस उमराव सिंह कारिते सुवंस कवि विरचिते उमराव कोषे तृतीय काण्डे अनेकार्थ पुस्तक अमरकोष समाप्त म् ।" यह अमर कोष का पद्यानुवाद है ।

(३) उमराव वृत्ताकर या पिङ्गल, १६०६।३०६, १६२३।४२२ ई, १६२६।४७५ सी,डी । यह ग्रन्थ भी उमराव सिंह के ही लिए बना—

गनपति गौरि गिरीस गिरा गुरु गोपालै ध्याय
कवि सुवंस उमराव को देत असीस बनाय

इस ग्रन्थ की रचना सं० १८६५ में बसन्तपञ्चमी को हुई :—

सर(५) रस(६) वसु(८) ससि(१) जानियो, संवत वर्ष विचार
माघ शुक्ल सित पञ्चमी, भयो ग्रन्थ अवतार

उमराव वृत्ताकर और पिङ्गल एक ही ग्रन्थ के दो नाम हैं, दो अलग-अलग ग्रन्थ नहीं, जैसा कि अप्रकाशित संक्षिप्त विवरण में स्वीकार किया गया है ।

(४) रस मञ्जरी, १६२६।४७५ ई । इस ग्रन्थ की रचना सं० १८६५, सावन सुदी १३, गुरुवार को हुई—

सर(५) षट(६) वसु(८) अरु ससि(१) कह्यो, संवत वर्ष विचार
सावन सुदि तेरसि गुरौ, भयो ग्रन्थ अवतार

रिपोर्ट में उद्धृत अंश में उमराव सिंह का नाम कहीं नहीं आया है ।

(५) राम चरित्र, १६२३।४२२ बी । इस ग्रन्थ की रचना सं० १८७६ में आषाढ़ वदी ११ को हुई ।

रस(६) रिसि(७) वसु(८) औ वसुमती(१), संवत बरस विचार
असित असाढ़ एकादसी, राम चरित अवतार

रामचरित्र की रचना साधोराम मिश्र की आज्ञा से हुई थी:—

साधोराम सुबंस पै जितनी करी सहाइ
सो तो रसना एक सों कैसे बरनी जाइ

जासों बिन श्रम ही मिलै चारि पदारथ मित्र
एक द्योस मोसों कह्यो बरनौ राम चरित्र

(६) द्विघटिका, १६१२।१८० । यह संस्कृत के इसी नाम के ज्योतिष-ग्रन्थ का भाषानुवाद है--

द्विघटिका शिव कृपा ते भाषा कीन सुवंस
शम्भु कृपा ते सुधी कवि करिहैं सकल प्रसंस

यह अनुवाद सं० १८८३ में हुआ--

गुन वसु वसु अरु वसुमती, संवत वर्ष विचार
फागुन सित दसमी गुरौ, द्वैघटिका अवतार

(७) ढेंकी या झगरो राधा-कृष्ण १६०२।१०७, १६२३।४२२ ए, १६४७।४१६ ख । इस ग्रन्थ में न तो किसी आश्रयदाता का नाम है, और न रचनाकाल ही दिया हुआ है। यह अत्यन्त सरस-काव्य है। इसमें अ से लेकर ह तक के अक्षरों से प्रारम्भ होने वाले दोहा, कवित्त और कहावतें हैं। पहले दोहा है; तदनन्तर कवित्त, फिर कहावत। कुछ पता नहीं, इस ग्रन्थ का नाम ढेंकी क्यों रखा गया। १६२३ वाली रिपोर्ट में 'ठेकि' पाठ है।

(८) स्फुट-काव्य, १६२३।४२२ सी। इस ग्रन्थ में सुवंश जी के फुटकर छन्द सङ्कलित हैं। इसमें रचनाकाल नहीं दिया गया है। इसमें डोंड़ियाखेरे के राजा रघुनाथ सिंह और सुदर्शन सिंह की भी प्रशस्ति है। प्रारम्भ में गणेश और कृष्ण की स्तुति, वसन्त और वर्षा-वर्णन, भङ्ग-प्रशस्ति, फिर नर-काव्य, तदनन्तर वीर, रौद्र, करुण, हास्य, भयानक, वीभत्स रसों और भक्ति-भाव तथा गङ्गा एवं उपदेश सम्बन्धी छन्द हैं। ग्रन्थ अच्छा है।

सुवंश के काव्य-शिष्य श्रीधर कृत विद्वन्मोद तरङ्गिणी, (रचनाकाल सं० १८७४ या १८८४) में उदाहरण स्वरूप इनकी बहुत सी कविताएँ उद्धृत हैं। पूर्व वर्णित ग्रन्थों के रचनाकाल पर ध्यान देने से सुवंश शुक्ल का रचनाकाल सं० १८६१-८४ ज्ञात होता है। अतः सरोज में दिया सं० १८३४ इनके जन्मकाल के निकट है।

विनोद (११२२) में उमराव कोष के आधार पर सुवंश के दो अन्य ग्रन्थों—उमराव शतक और उमराव प्रकाश, का उल्लेख हुआ है, जो अभी तक खोज में नहीं उपलब्ध हो सके हैं।

९२७।९९७

(९४) सरदार कवि वन्दीजन बनारसी। वि०। यह महाकवि महाराजा ईश्वरीनारायण सिंह काशी-नरेश के यहाँ विद्यमान हैं। इस महानीच काल में ऐसे उत्तम मनुष्यों का होना महा

लाभ समझना चाहिये । इनके बनाए हुए जो ग्रन्थ हमने देखे-सुने वे हैं—साहित्य सरसी, हनुमत् भूषण, तुलसी भूषण, मानस भूषण, कविप्रिया का तिलक, रसिकप्रिया का तिलक, श्रृङ्गार-संग्रह और तीन सौ अस्सी सूरदास के कूटों की टीका । इनके शिष्य नारायण राय इत्यादि बड़े कवि हैं ।

सर्वेक्षण

सरदार भारतेन्दु-युग के प्राचीन काव्यधारा के श्रेष्ठ कवियों में से हैं । यह ललितपुर, झाँसी के रहनेवाले थे । इनके पिता का नाम हरिजन वन्दीजन था । यह काशीनरेश महाराज ईश्वरीनारायण सिंह के आश्रित थे । इनका रचनाकाल सं० १९०२-४० है । यह सुकवि होने के साथ-साथ सुन्दर टीकाकार भी थे । इनके शिष्य नारायणराय भी अच्छे कवि थे । इन्होंने सरदार के कई साहित्यिक कार्यों में योग दिया है । सरदार चरखारी के प्रसिद्ध कवि प्रताप साहि के शिष्य थे । यह काशी में भदैनी महल्ले में रहा करते थे । इनका देहावसान सं० १९४० में हुआ । सरदार के बनाए ग्रन्थों की सूची यह है—

(क) टीका ग्रन्थ—

(१) काशिराज प्रकाशिका, १९०४।५६ । यह केशव कृत कविप्रिया की टीका है ।

(२) सुख विलासिका, १९०४।५७ । यह केशवकृत रसिकप्रिया की टीका है । इसके प्रणयन में नारायण का भी कुछ सहयोग रहा है । इसकी रचना सं० १९०३ में हुई ।

शिव दृग[३], गगनो[०], ग्रह[९] सु पुन, रद[१] गनेस को साल
जेठ शुक्ल दसमी सु गुरु, करो ग्रन्थ सुखमाल

यह ग्रन्थ नवल किशोर प्रेस, लखनऊ, से प्रकाशित हो चुका है ।

(३) साहित्य लहरी की टीका—यह सूरदास के ३८० दृष्टिकूटों की टीका है । यह टीका भी नवल किशोर प्रेस, लखनऊ, से प्रकाशित, हो चुकी है ।

(४) विहारी सतसई की टीका—सरोज में इस टीका का उल्लेख हुआ है । रत्नाकर जी के पास इस टीका की एक प्रति थी । रत्नाकर जी का अनुमान है कि यह टीका सं० १९२० और १९३० के बीच किसी समय बनी ।

(ख) अन्य ग्रन्थ—

(५) ऋतु वर्णन, १९०९।२८३ सी । इस ग्रन्थ में २४३ छन्द हैं । मेरा अनुमान है कि यह कोई स्वतन्त्र ग्रन्थ नहीं है । यह श्रृङ्गार-संग्रह का षट्ऋतु वर्णन वाला अंश है । श्रृङ्गार-संग्रह के इस प्रकरण में २७७ कवित्त-सवैये हैं ।

(६) शृङ्गार-संग्रह, १९०६।२८३ए। यह संग्रह ग्रन्थ है और इसका रचनाकाल सं० १९०५, भादौ कृष्ण अष्टमी, मङ्गलवार है—

संवत बान खहों ग्रह सो पुनि गौरि के नन्दन को द्विज धारन
भादव कृष्ण अनूपम अष्टमी, रोहिनि ऋच्छ, मही सुत वारन
उत्तम जो कवि हैं तिनके प्रति उत्तम जानि कवित्त विचारन
संग्रह सो सरदार कियो यह इश्वरी सिंह महीपति कारन

इस संग्रह में १२५ पुराने कवियों की कविताएँ हैं। कवि ने अपने छन्द भी इसमें दिए हैं। इसमें नायिका भेद, नायक भेद, पूर्वानुराग, छवि वर्णन, नखशिख, ऋतु वर्णन, नर काव्य, नीति, भड़ौआ तथा काव्य विचार आदि विषयों के कवित्त विभिन्न अध्यायों में सङ्कलित हैं। पजनेस, नारायण और भारतेन्दु के पिता गोपालचन्द्र के कुछ छन्द अलग-अलग इन कवियों के नाम-शीर्षकों से सङ्कलित हैं। यह संग्रह नवल किशोर प्रेस, लखनऊ से प्रकाशित हो चुका है। ग्रियर्सन ने इस ग्रन्थ का उपयोग अपने ग्रन्थ 'द मॉडर्न वर्नाकुलर लिटरेचर आफ़ नदर्न हिन्दुस्तान' के प्रस्तुत करने में किया था।

(७) व्यंग्यविलास, १९०६।२८३ बी। नायिका भेद का यह लघु ग्रन्थ बरवै छन्दों में रचा गया है। इसकी रचना सं० १९१९ में विजयादशमी को हुई थी।

संवत उनइस उनइस, आसिन मास
विजय मुहूरत सुचि दिन ग्रन्थ प्रकास

(८] साहित्य सुधाकर, १९०३।९२, १९२०।१७४। इस ग्रन्थ में काव्य-लक्षण, शब्द-अर्थ, ध्वनि-लक्षण, आलंवन, उद्दीपन, ध्वनिनिरूपण, मध्यम काव्यनिरूपण, अलङ्कार, नायिकाभेद, नव रस आदि का वर्णन है। इस ग्रन्थ की रचना सं० १९०२ में चैत्र रामनवमी को हुई थी।

संवत इक घट बीस सत, ताके ऊपर दोइ
पूरन किय सरदार कवि, राम जनम तिथि जोइ

इस ग्रन्थ में कवि ने अपना पूरा परिचय निम्नलिखित दोहे में दिया है—

नगर ललितपुर वास है, काशीपति के पास
कीनी हरिजन नन्द जहँ, हरि जन हेत विलास

(९) रामरण रत्नाकर, १९०४।७६। यह रामायण है, केवल सुन्दरकाण्ड मिला है। इसका प्रतिलिपिकाल सं० १९०३ है।

(१०) रामरस वज्रमन्त्र १९०४।८६। इस ग्रन्थ में सरदार कवि के दुहरे अर्थ वाले १७९ कवित्तों का संग्रह है। टीका भी दे दी गई है।

(११) मानस-रहस्य, १९४१।२७६। इसकी रचना सं० १९०४ में हुई—

४ ० ९ १
फल प्रकास ग्रह आतमा, माघ शुक्ल बुधवार
काशीपति की कृपा तें, किय पूरन विस्तार

(१२) तर्कप्रकाश भाषा, १९४४।४४१ क।

(१३) रामकथाकल्पद्रुम, १९४४।४४१ ख।

(१४) रामलीला प्रकाश, १९०३।१५४। विनोद (१८०९) के अनुसार इसकी रचना सं० १९०६ में हुई।

इन रचनाओं के अतिरिक्त सरदार के निम्नङ्कित ग्रन्थों का नाम और भी मिलता है—(१) साहित्य सरसी, (२) हनुमत् भूषण (३) तुलसी भूषण (४) मानस भूषण। इन चारों ग्रन्थों का सर्वप्रथम उल्लेख सरोज में हुआ है और विनोद में भी इनका निर्देश है।

(५) मुक्तावली नामक संस्कृत के न्याय-ग्रन्थ का दोहा-चौपाइयों में अनुवाद। इसकी सूचना रत्नाकर जी ने बिहारी सतसई सम्बन्धी साहित्य में दी है।[१]

९२८।६९८

(९५) सूरदास ब्राह्मण, ब्रजवासी, बाबा रामदास के पुत्र, वल्लभाचार्य के शिष्य, सं० १६४० में उ०। इन महाराज के जीवन चरित्र से सब छोटे-बड़े आगाह हैं। भक्तमाल इत्यदि में इनकी कथा विस्तारपूर्वक है। इनका बनाया सूरसागर ग्रन्थ विख्यात है। हमने इनके पद ६० हजार तक देखे हैं, समग्र ग्रन्थ कहीं नहीं देखा। इनकी गिनती अष्टछाप अर्थात् ब्रज के आठ महाकवीश्वरों में हैं।

सर्वेक्षण

सूरदास का जन्म सं० १५३५, वैशाख शुक्ल ५, को दिल्ली के निकटवर्ती सीहीं ग्राम में एक निर्धन सारस्वत ब्राह्मण परिवार में हुआ था। यह जन्मान्ध थे और चार भाइयों में सबसे छोटे थे। ये वाल्यावस्था ही में विरक्त होकर घर से निकल गए और अपने जन्मस्थान के एक निकटवर्ती गाँव में ही शकुन विचार और गान-विद्या से पेट भरने लगे। यहाँ से भी विरक्त होकर यह मथुरा-आगरा के बीच रुनकता नामक ग्राम में आकर कुछ दिन रहे, जिसे लोगों ने इनका जन्मस्थान समझ लिया है। फिर यहाँ से तीन मील पश्चिम जमुना के किनारे गऊघाट पर रहने लगे। यहाँ

---

(१) ना० प्र० पत्रिका, कार्तिक १९८५, पृष्ठ ३३३

यह ३१ वर्ष की वय तक रहे। यहीं महाप्रभु वल्लभाचार्य ने सं० १५६७ में इन्हें अपने वल्लभ-सम्प्रदाय में दीक्षित किया। तदनन्तर सूरदास गोवर्द्धन आए और श्रीनाथ जी की सेवा में लग गए। यहाँ इनका स्थायी निवास निकटवर्ती गाँव परासोली था। अभी तक विद्वान् इन्हें सं० १६२० तक ही जीवित मानते आए थे, पर प्रभुदयाल मीतल के अनुसार वे सं० १६४० तक जीवित रहे और सरोज के अनुसार वे सं० १६४० में उपस्थित थे। इसी साल या इसके शीघ्र ही बाद इनका देहान्त हुआ।[1]

सूरदास के तीन ग्रन्थ प्रायः सर्वमान्य हैं, (१)—सूरसागर, (२) सूरसारावली (और ३) साहित्य-लहरी। सूरसागर का एक सुन्दर संस्करण सभा से प्रकाशित हो चुका है। इसमें ५ हजार पद हैं। न जाने कैसे शिवसिंह जी ने ६० हजार पद देख लिए। साहित्य-लहरी सूर के दृष्टकूटों का संग्रह सा है। इसकी कई टीकाएँ हो चुकी हैं। यह ग्रन्थ भी कई स्थानों से और कई टीकाकारों के परिश्रम से प्रकाशित हो चुका है। नवीनतम टीका अभी कुछ दिनों पहले लहेरिया सराय से प्रकाशित हुई है। इस ग्रन्थ में रचनाकाल भी दिया हुआ है।

मुनि पुनि रसन के रस लेख

दसन गौरीनन्द को लिखि सुबल संवत् पेख।

रसन के अर्थ पर मतभेद होने से इसका रचनाकाल १६०७,१६१७ और १६२७ माना जाता है। सूरसारावली स्वतन्त्र रूप से प्रकाशित देखने में नहीं आई। बहुत पहले राधाकृष्णदास जी ने १६०० ई० के आस-पास सूरसागर का जो संस्करण बम्बई से प्रकाशित कराया था, उसके प्रारम्भ में यह ग्रन्थ भी संलग्न है। यह सूर के ६७ वें वर्ष में सं० १६०२ में लिखी गई थी।

"गुरुप्रसाद होत यह दरसन सरसठ बरस प्रवीन"

सूरदास न तो अकबरी दरबार के गायक थे और न तो अकबरी दरबार के गायक बाबा रामदास के पुत्र ही।[2]

———

९२९।७०३

(९) सूदन कवि, सं० १८१० में उ०। यह कवि राजा बदन सिंह के पुत्र सूजान सिंह के यहाँ थे। इन्होंने कविता बहुत सुन्दर की है, दस कवित्त कवियों के नाम गणना के लिखे हैं। हमारे पास वे दस कवित्त थे, परन्तु किसी कारण से केवल अन्त वाला एक कवित्त रह गया, सो हम लिखते हैं।

---

(१) अष्टछाप परिचय, पृष्ठ १३४-४१ (२) यही ग्रन्थ, कवि सं० ७३३ तथा सूर मिश्र निर्णय, पृष्ठ १०३-४

सोभनाथ, सूरज, सनेही, शेख, श्यामलाल,
साहेब, सुमेरु शिवदास, शिवराम हैं
सेनापति, सूरति, सरबसुख, सुखलाल
श्रीधर, सबल सिंह, श्रीपति सु नाम हैं
हरिपरसाद, हरिदास, हरिवंश, हरि,
हरिहर, हीरा से हुसेन हितराम हैं
जस के जहाज जगदास के परम पति
सूदन कविन्दन को मेरो परनाम है

सर्वेक्षण

सूदन का पूरा नाम मधुसूदन[1] था। यह मथुरा निवासी थे और बसन्तराम चौबे के पुत्र थे।

मथुरा पुर सुभ धाम माथुर कुल उतपत्ति वर
पिता वसंत सु नाम, सूदन जानहु सकल कवि

सूदन भरतपुर के जाट राजा वदन सिंह के पुत्र सूरजमल उपनाम, सुजान के आश्रित थे इनकी आठ लड़ाइयों का वर्णन सूदन ने सुजान-चरित्र नामक ग्रन्थ में किया है। यह ग्रन्थ खोज में मिल चुका है।[2] १९०२ ई० में सभा ने इसका एक संस्करण प्रकाशित भी किया था। इसका सम्पादन राधाकृष्णदास जी ने किया था। इस ग्रन्थ में सं० १८०२ से लेकर सं० १८१० तक की घटनाओं का वर्णन है। ग्रन्थ सम्भवतः खण्डित है। प्रत्येक अङ्क की समाप्ति पर अन्तिम चरण में अल्प परिवर्तन के साथ निम्नलिखित छन्द दुहराया जाता रहा है—

भूपाल पालक भूमिपति व दनेस नन्द सुजान हैं
जाने दिलीदल दक्खिनी, कीने महा कलिकान हैं
ताको चरित्र कछूक सूदन कह्यो छन्द बनाइकें
कहि देव ध्यान कवीस नृपकुल, प्रथम अंक सुनाइकें

ग्रन्थ की समाप्ति पर यह छन्द नहीं है। ग्रन्थ की रचना सं० १८१० या इसके बाद शीघ्र ही किसी समय हुई। जिस समय की घटनाओं का विवरण इस ग्रन्थ में है, उस समय बदन सिंह (राज्यकाल संवत् १७७९-१८१२) भरतपुर नरेश थे, सूरजमल युवराज थे। सूरजमल का शासन-काल सं० १८१२-२० है। इस समय यदि सूदन जीवित होते, तो ग्रन्थ अवश्य ही पूर्ण हो गया

---

(१) माधुरी, फरवरी १९२७, भरतपुर और हिन्दी, पृष्ठ ७९ (२) खोज रिपोर्ट १९००।८१, १९१२।१८१, १९१७।१८१

होता। इस ग्रन्थ में परिगणन-प्रणाली अत्यधिक मात्रा में प्रयुक्त हुई है। शब्दों की तोड़-मरोड़ भी पर्याप्त है। पञ्जाबी, मारवाड़ी, पूरबी, तथा खड़ीबोली में भी अनेक छन्द इस ग्रन्थ में लिखे गए हैं। सूदन, हिन्दी के वीररस के श्रेष्ठ कवियों में से हैं। इन्होंने सुजान चरित्र के प्रारम्भ के ६ कवित्तों में (छन्द ४ से ९ तक) हिन्दी के १७५ कवियों के नाम दिए हैं और उन्हें प्रणाम किया है। यह नामसूची १० कवित्तों में नहीं है, जैसा कि सरोज में लिखा गया है। हिन्दी साहित्य का इतिहास लिखनेवालों ने इस सूची से पर्याप्त लाभ उठाया है। पहले लाभ उठाने वाले स्वयं शिव सिंह हैं।

सरोज में सं० १८१० उपस्थितिकाल है, यह जन्मकाल कदापि नहीं हो सकता, जैसा कि ग्रियर्सन ३६७ में स्वीकृत है।

९३०।७०४

(९७) सेनापति कवि, वृन्दावनवासी, सं० १६८० में उ०। इन महाराज ने वृन्दावन में क्षेत्र-संन्यास लेकर सारी वयस वहीं व्यतीत की। इनके काव्य की प्रशंसा हम कहाँ तक करें, अपने समय के ये भानु थे। इनका काव्यकल्पद्रुम ग्रन्थ बहुत ही सुन्दर है। हजारे में इनके बहुत कवित्त हैं।

सर्वेक्षण

सेनापति जी कान्यकुब्ज दीक्षित ब्राह्मण थे। इके पिता का नाम गङ्गाधर, पितामह का परशुराम और गुरु का हीरामणि दीक्षित था। इन्होंने अपना परिचय निम्न कवित्त में दिया है—

दीछित परसुराम दादो है विदित नाम
जिन कीन्हें जज्ञ, जाकी जग में बड़ाई है
गङ्गाधर पिता गङ्गाधर के समान जाके
गङ्गा तीर वसति अनूप जिन पाई है
महा जानमनि, विद्या दानहू में चिन्तामनि,
हीरामनि दीछित तें पाई पण्डिताई है
सेनापति सोइ सीतापति के प्रसाद जाकी
सब कवि कान दै सुनत कविताई है

'गङ्गातीर वसति अनूप जिन पाई है' के 'अनूप' शब्द को पकड़कर विद्वानों ने कल्पना की है कि यह बुलन्दशहर जिले के अन्तर्गत गङ्गा तट स्थित अनूपशहर के निवासी थे। श्री जितेन्द्र भारतीय शास्त्री का अभिमत है कि संस्कृत के प्रसिद्ध विद्वान् भट्ट नागेश दीक्षित ही का उपनाम सेनापति था। लोगों ने भ्रमवश सेनापति को अनूपशहर का निवासी मान रखा है।

यह गङ्गा तट स्थित सिंगरौर के राजा रामदत्त चन्द्र के आश्रय में थे। नागेश जी का जन्म सं० १६७० वि० के लगभग हुआ था। शास्त्री जी के विचार में पर्याप्त बल है।[1]

सेनापति का एक ही काव्यग्रन्थ कवित्त रत्नाकर सुलभ है। इसका एक सुन्दर संस्करण प्रयाग विश्वविद्यालय की हिन्दी परिषद् ने प्रकाशित किया है। इस ग्रन्थ की रचना सं० १७०६ में हुई—

संवत सत्रह सौ छः में, सेइ सियापति पाय
सेनापति कविता सजी, सज्जन सजौ सहाय

इस ग्रन्थ की अनेक पूरी अधूरी प्रतियाँ खोज में मिली हैं। इसमें पाँच तरङ्गें हैं—(१) श्लेष, (२) शृङ्गार, (३) ऋतु वर्णन, (४) रामायण, और (५) राम रसायन। ये सभी तरङ्ग अलग-अलग ग्रन्थों के रूप में भी मिली हैं, यथा—कवित्त १९०६।२३१, १९४१।२९७; कवित्त रत्नाकर १९०९।२८७, १९२३।३७९ ए, बी; १९२६।४३३ ए, बी; कवित्त रामायण १९३२।१९६ ए। रस तरङ्ग १९१२।१७१; रसायन १९३८।१९६ बी; श्लेष १९२०।१७६; षट्ऋतु कवित्त १९०४।५१। अन्तिम पाँच प्रतियाँ तो उक्त ग्रन्थ की एक-एक तरङ्गें मात्र हैं। लोगों ने अपनी-अपनी रुचि के अनुसार उतार लिया है।

सरोज के अनुसार सेनापति ने वृन्दावन में क्षेत्र संन्यास ले लिया था, इसकी पुष्टि सेनापति के इस कवित्त से होती है—

सेनापति चाहत है सकल जनम भरि
वृन्दावन सीमा तें न बाहिर निकसिबो
राधा मन रञ्जन की, शोभा नैन कञ्जन की
माल गरे गुञ्जन की, कुञ्जन की बसिबौ

सरोज में सेनापति के एक काव्यकल्पद्रुम का उल्लेख है। कवित्त-रत्नाकर की इसमें चर्चा नहीं है। काव्यकल्पद्रुम से जो चार कवित्त सरोज में उदाहृत हैं, उनमें से तीन प्रकाशित कवित्त-रत्नाकर में उपलब्ध हैं। ऐसी दशा में मेरा विश्वास है कि कवित्त रत्नाकर का ही दूसरा नाम काव्यकल्पद्रुम भी है।[2] विनोद २७८ में सेनापति का जन्मकाल सं० १६४६ दिया गया है।

---

(१) ब्रज भारती, बर्ष १२, अङ्क २,३, सं० २०११ (२) वही।

६३१।७०५

(६८) सूरति मिश्र, आगरे वाले, सं० १७६६ में उ० । इस महान् कवीश्वर ने बहुत ग्रन्थ बनाए हैं। इन्होंने सतसई का टीका बहुत ही विचित्र बनाया है और सरस रस, नख-शिख, रसिक प्रिया का तिलक, अलङ्कार माला, ये चार ग्रन्थ भी इन्होंने बहुत सुन्दर बनाए हैं।

सर्वेक्षण

सूरति मिश्र आगरा के रहने वाले कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे, जैसा कि इन्होंने स्वयं कहा है—

सूरति मिश्र कनौजिया, नगर आगरे वास

यह जोधपुर के दीवान अमर सिंह, नसरुल्ला खाँ, बीकानेर नरेश जोरावर सिंह और दिल्ली के बादशाह मुहम्मद शाह के आश्रित थे । जयपुर वाले राय शिवदास और हास्यरस की प्रसिद्ध कृति खटमल बाईसी के रचयिता अली मुहिब्ब खाँ प्रीतम के यह काव्य-गुरु थे । इनका रचनाकाल सं० १७६६-१८०० है। खोज में सूरति मिश्र के निम्नलिखित ग्रन्थ मिले हैं—

टीका ग्रन्थः—

(१) अमर चन्द्रिका, १९०६।२४३ सी, १९०९।३१४ सी, १९२३।४१९ सी, १९२६।४७४ ए, राज० रिपोर्ट, भाग १ । यह बिहारी सतसई की टीका है । जोधपुर नरेश महाराज अभय सिंह के मन्त्री भण्डारी नाडूला अमर सिंह के निर्देशानुसार यह टीका बनी ।

जोधपुर राज महाराज श्री अभय सिंह
नौ कोटि नाथ गाथ प्रसिद्ध बखानियें
तिनके सचिव रायराया श्री अमर सिंह
कोविद सिरोमनि जगत जस गानियें
तिन्हौं मिश्र सूरत सुकवि सौं कृपा सनेह
करिकै कही यौं एक बात उर आनियें
कविन विहारी सतसइया तापै टीका कीजै
जी कौ सुखदाई नीकौ अर्थ यातें जानियें

कवि ने अपने आश्रयदाता का वंश परिचय भी दिया है—

भण्डारी परसिद्ध जग, नाडौला गुन धाम

यह टीका सं० १७९४ में प्रस्तुत की गई—

सत्रह सै चौरानबे, आस्विन-सुदि गुरुवार
अमर चन्द्रिका ग्रन्थ कौ, विजय दसमि अवतार ११

यह टीका गद्य,पद्य और प्रश्नोत्तर रूप में है ।

(२) कविप्रिया सटीक, १९१२।१८६, १९२३।४१९ ए । यह टीका भी गद्य-पद्य और प्रश्नोत्तर रूप में है । शृङ्गार सार में इसका नाम नहीं है, अतः यह १७८५ के बाद की रचना है ।

(३) रसिक प्रिया की टीका, यह टीका दो नामों से मिलती है—

(अ) रस गाहक चन्द्रिका, १९०६।२४३ ए, १९०९। ३१४ ए, १९२६।४७४ जी । यह टीका संवत् १७९१, वैशाख शुक्ल पक्ष रविवार को बनी—

सत्रह सै इक्यानबे, माधव सुदि रविवार
यह रस गाहक चन्द्रिका, पुष्य नखत अवतार २९

'माधव सुदि' के बदले 'माघ सुदी' पाठ भी मिलता है । इसकी रचना जहानाबाद के नसरुल्ला खाँ, उपनाम रस गाहक, के लिए हुई थी, इसीलिए इस टीका का नाम रसगाहक चन्द्रिका पड़ा ।

रसिक प्रिया टीका रची, सूरत सुकवि बनाय
यह रस गाहक चन्द्रिका, नाम धर्‌यो सुख पाय २
तखत जहानाबाद में, श्री नसरुल्ला खान
दान ज्ञान बिरयान विधि जस जिहि प्रगट जहान ४

यह जहानाबाद सम्भवतः शाहजहानाबाद या दिल्ली है—

बादशाह दिय नाम निवाज, मुहम्मद खाँ जग जानै
रस गाहक यह नाम, आपनो कविताई में आनै

(ब) जोरावर प्रकाश, १९०६।२४३ डी, १९१७।१८९ ए, १९२६।४७४ एफ, राज० रिपोर्ट, भाग ३, पृष्ठ १४४ । इसकी रचना सं० १८०० में हुई—

संवत सत अष्टादशै, फागुन सुदि गुरुवार
जोरावर प्रकास कौ, तिथि सप्तमि अतवार

इसकी रचना बीकानेर नरेश जोरावर सिंह के आदेश से हुई—

बीकानेर प्रसिद्ध है, अति पुनीत सुभ धाम
× × ×
श्री जोरावर सिंह जू, राज करत तिहि ठौर
सब विद्या में अति निपुन, जिन समान नहिं और
× × ×
तिन कवि सूरति मिश्र पै कृपा नेह अति कीन

जोरावर प्रकाश, वस्तुतः रसगाहक चन्द्रिका ही है। आगे-पीछे के भूमिका और उपसंहार वाले अंश निकालकर, उनके स्थान पर नवीन दोहे जोड़कर नवीन आश्रयदाता के नाम पर नवीन ग्रन्थ बना लिया गया है।

अन्य काव्य-ग्रन्थ—

(४) अलङ्कार माला, १९०३।१०४। सरीज में इस ग्रन्थ से तीन दोहे उद्धृत हैं। पहला दोहा मङ्गलाचरण का है और दूसरे में कवि ने आत्म परिचय दिया है।

सूरति मिश्र कनौजिया, नगर आगरे वास
रच्यो ग्रन्थ नव भूषनन, वलित विवेक विलास

तीसरे दोहे में रचनाकाल सं० १७६६ दिया गया है—

संवत सत्रह सै बरस, छासठि सावन मास
सुर गुरु सुदि एकादसी, कीन्हों ग्रन्थ प्रकास

सरोज में सूरति मिश्र का यही समय दिया गया है। यह अलङ्कार का ग्रन्थ है और इसमें ३१७ दोहे हैं।

(५) काव्य सिद्धान्त, १९०६।२४३ ई, राज० रिपोर्ट ३, पृष्ठ १२४। राजस्थान रिपोर्ट के अनुसार इस ग्रन्थ की रचना सं० १७९८ कार्तिक सुदी ७, बुधवार को हुई। परन्तु कवि सिद्धान्त का नाम श्रृङ्गार सार में आया है। कवि सिद्धान्त और काव्य सिद्धान्त एक ही ग्रन्थ के दो नाम प्रतीत होते हैं। यदि ऐसा है तो इसका रचनाकाल सं० १७८५ से पहले का होना चाहिए। इस ग्रन्थ में कुल १५० छन्द हैं।

(६) छन्द सार, १९४१।२९३ ख, राज० रिपोर्ट २, पृष्ठ १०। श्रृङ्गारसार में इसका नाम है, अतः यह सं० १७८५ के पहले की रचना है। इसमें २६७ छन्द हैं।

(७) नख-शिख राधा जू को, १९२३।४१९ बी। इस ग्रन्थ में कुल ४१ कवित्त हैं। श्रृङ्गार-सार में नाम है, अतः यह सं० १७८५ से पहले की कृति है।

(८) प्रबोध चन्द्रोदय नाटक, १९४१।२९३ क। श्रृङ्गार सार में इसका नाम नहीं है, अतः यह सं० १७८५ के बाद की रचना है।

(९) भक्त विनोद, १९१७।१८९ बी, राज० रिपोर्ट १। इस ग्रन्थ में नीति, वैराग्य, ईश-भक्ति, षट्ऋतु वर्णन तथा नायिकाभेद आदि विभिन्न विषयों के ३२४ फुटकर दोहे, कवित्त, सवैया आदि सङ्कलित हैं। श्रृङ्गार सार में नाम है, अतः यह सं० १७८५ के पहले की रचना है। इसी का नाम भक्ति-विनोद भी है।

(१०) रस रत्नमाला, १६०१।८६, १६०२।६६, १६०६।२४३ बी, १६२०।१६०। इस ग्रन्थ का नाम रसरत्न और रस रत्नाकर[१] भी है। इसकी रचना सं० १७६८ में हुई थी।

वसु रस मुनि ससि सम्मतहिं, माधव, रवि दिन पाय
रच्यौ ग्रन्थ सूरति सु यह, लहि श्रीकृष्ण सहाय ६६

यह एक लघु रस-ग्रन्थ है। रस रत्न नामकरण का कारण कवि ने इस दोहे में दिया है—

चौदह ए सब कवित्त हैं, चौदह रत्न प्रमान
याते नाम सो ग्रन्थ को, यह रस रत्न बखान

कवि ने अपने इस ग्रन्थ की टीका भी कर दी है। यह टीका मेड़ता के ऋषभगोत्रीय ओसवाल सुलतानमल के लिए सं० १८०० श्रावण में की गई थी—

संवत सत अष्टादशै, सावन छठि भृगुवार
—राज० रिपोर्ट ३, पृष्ठ १४०

(११) सरस रस या रस सरस, १६०६।३१४ बी। इस ग्रन्थ की रचना सं० १७६४ वैशाखसुदी ६, को हुई।

सतरह सै चौरानबे, संवत सुभ बैसाख
भयो ग्रन्थ पूरन सु यह, छठि ससि पुष सित पाख ३०

इस ग्रन्थ की रचना आगरे में समवेत एक कविमण्डल के आदेश से हुई थी। खोज रिपोर्ट एवं राज० रिपोर्ट १ में इसे राय शिवदास की रचना कहा गया है।

एक समै मधि आगरे, कवि समाज को जोग
मिल्यो आइ सुखदाइ हिय, जिनकी कविता जोग २२
तब सबही मिलि मंत्र यह, कियो कविन बहु जान
रच्यो सु ग्रन्थ नवीन इक, नए भेद रस ठान २३
जिहि विधि कवि मिलि कै कही, जथा जोग लहि रीति
उनहीं में सब संभवै, कहे भेद युत प्रीति २४
अपनी मति परमान सों, कहे भेद विस्तार
लखौ सु यामें न्यूनता, सो कवि लेहु सुधारि २५
कवि अनेक मति मैं हुते, पै मुख कवि परवीन
जाके सम्मत से भयो, पूरन ग्रन्थ नवीन २६

---

(१) खोज रिपोर्ट १६२६।४७४ एच।

सूरति राम सुकवि सरस, कान्यकुब्जहू जान
वासी ताही नगर को, कविता जाहि प्रमान २७
केतक धरे सु ग्रन्थ में, करि कवित्त कविराइ
ताही सों गम्भीरता, अरथ बरन दरसाइ २८
आठौ रस रस भेद में, जे बरने मति ठान
राजनीति में सम्भवै, ते मति लीजो मान २९

एक प्रति की पुष्पिका में इसे लाल कवि संचित कहा गया है--

"इति श्री लाल संचित सर सरस ग्रन्थे रसनिरूपणो नाम अष्टमो विलासः सम्पूर्ण ग्रन्थ समाप्तमुशुभमस्तु कल्याणमस्तु ॥ ८ ॥ संवत १८७७ में श्री लल्लू जी लाल कवि ब्राह्मण, गुजराती सहस्र उदीच आगरेवारे ने सूरत कवि के सर सरस ग्रन्थ कौ प्राचीन कवियों के कवित्त मिलाय बढ़ाय शोधकर छपवायौं निज छापाघर में श्रीमान् पण्डित कवि रसिकनि के आनंदार्थ इति ॥"

—माधुरी वर्ष ३, खण्ड १, अङ्क ३

स्पष्ट है कि सर सरस या सरस रस ग्रन्थ मूलतः सूरति मिश्र की रचना है। १८७७ में लल्लू जी लाल ने इसे परिवर्द्धित किया। इस परिवर्द्धित संस्करण में आठ विलास १३१ छन्द हैं। इसमें निम्नलिखित कवियों की रचनाएँ संचित हैं।[१]

(१) आलम, (२) उदयनाथ, (३) कल्याण, (४) कवीन्द्र, (शायद उदयनाथ ही), (५) केशवदास, (६) गंग, (७) दत्त, (८) दयाराम, (९) भगवंत, (१०) मतिराम, (११) महाकवि, (कालिदास त्रिवेदी) (१२) लाल, (शायद सङ्कलयिता स्वयं), (१३) वीर, (१४) सुजान, (घनानन्द प्रिया), १५ सूरति मिश्र, (१६) सेनापति, (१७) हठी।

(१२) श्रृङ्गार सार, १९३२।२१३। इस ग्रन्थ की रचना सं० १७८५ में आषाढ़ सुदी ३, गुरुवार को हुई थी—

संवत सत्रह सै तहाँ, वर्ष पचासी जानि
भयो ग्रन्थ गुरु पुष्य में, सित अषाढ़ त्रय मानि

इस ग्रन्थ से कवि के पिता का नाम सिघमनि मिश्र और गुरु का गंगेश ज्ञात होता है।

नगर आगरौ बसत सौ, बाँकी ब्रज की छाँह
कालिन्दी कलमष हरनि, सदा बहति जा माँह

---

(१) माधुरी, वर्ष १, खण्ड २, अङ्क ४, अप्रैल १९२३, सुमन सञ्चय।

भगवत पारायन भए, तहाँ सकल सुखधाम
विप्र कनावज कुल कलस, मिश्र सिन्धमनि नाम
तिनके सुत सूरति सुकवि, कीने ग्रन्थ अनेक
परम रम्य बरणन विषैं, पूरी अधकसी टेक
माथे पर राजित सभा, श्रीमद्‌गुरु गंगेस
भक्तिकाव्य की रति लही, लहि जिनके उपदेस

इस ग्रन्थ में कवि ने १७८५ तक के लिखित अपने ११ ग्रन्थों के नाम भी दिए हैं—

(१) श्रीनाथ विलास, (२) कृष्ण चरित्र, (३) भक्त विनोद, (४)भक्तमाला (५)कामधेनु, (६) नख-शिख, (६) छन्द सार, (८) कवि सिद्धान्त, (९) अलङ्कार माला, (१०) रसरत्न, (११) शृङ्गार सार । इनमें से श्रीनाथ विलास, कृष्ण चरित्र, भक्तमाला और कामधेनु ये चार ग्रन्थ अभी तक नही मिले हैं।

प्रथम कियो सत कवित्त में, इक श्रीनाथ विलास
इकही तुक पर तीन सौ, प्रास नवीन प्रकास
श्री भागवत पुरान के, तह श्रीकृष्ण चरित्र
बरने गोवर्द्धन धरन, लोला लागि विचित्र
भक्त विनोद सु दीनता, प्रभु सो भिक्षा चित्त
देव तीर्थ अरु पूर्व के, समय समय सु कवित्त
बहुरि भक्तमाला कहीं, भक्तन के जस नाम
श्री वल्लभ आचार्य के, सेवक जो गुन धाम
कामधेनु इक कवित्त में, कढ़त सत बरन छन्द
केवल प्रभु के नाम तँह, धरे करन आनन्द
इक नखशिख माधुर्य है, परम मधुरता लीन
सुनत पढ़त जिहि होत है, पावन परम प्रवीन
छन्द सार इक ग्रन्थ है, छन्द रीति सब आहि
उदाहरन में प्रभु जसै, यो पवित्र विधि ताहि
कीनो कविसिद्धान्त इक, कवित्त रीति कौं देखि
अलङ्कार माला विषैं, अलङ्कार सब लेखि
इक रस रत्न कीन्हों बहुरि, चौदह कवित्त प्रमान
ग्यारह सै बावन तहां, नाइकान को ज्ञात

सार सिंगार तहँ, उदाहरन रस रीति
चारि ग्रन्थ के लोक हित, रचे धारि हिय प्रीत

(१३) बैताल पचीसी ,१९२६।४७४ बी, सी, डी, ई । यह संस्कृत बैताल पंचविंशतिका का ब्रजभाषा गद्य में अनुवाद है । इसी का सहारा लेकर लल्लू जी लाल ने फोर्ट विलियम कॉलेज के लिए अपनी बैताल पचीसी का अनुवाद प्रस्तुत किया था । विनोद के अनुसार यह अनुवाद जयसिंह सवाई की आज्ञा से हुआ ।

(१४) रास लीला ।
(१५) दान लीला । } —राज० रिपोर्ट, भाग ४, पृष्ठ २६, ३०

ये दोनों ग्रन्थ एक ही जिल्द में मिले हैं । रासलीला का प्रारम्भिक एवं दानलीला का अन्तिम छन्द उद्धृत है । दानलीला वाला यह छन्द सरोज में भी उद्धृत है । दानलीला में कुल ५० छन्द हैं । इस प्रकार खोज में सूरति मिश्र के कुल १५ ग्रन्थ मिल चुके हैं । इनके ५ और भी ग्रन्थों का नाम ज्ञात है जो अभी तक अनुपलब्ध हैं । इनमें से ४ की सूची श्रृङ्गार सार के विवरण के अन्त में दी गई है । पाँचवाँ ग्रन्थ रामचरित्र है जिसका उल्लेख विनोद में याज्ञिक त्रय की सूचना के आधार पर हुआ है ।

खोज के अनुसार सूरति मिश्र जोधपुर नरेश जसन्वत सिंह के शिक्षक थे ।[1] राजस्थान रिपोर्ट २ में इसका खण्डन किया गया है ।[2] सूरति मिश्र का रचनाकाल सं० १७६६-१८०२ है । जसन्वत सिंह का देहावसान सं० १७३५ में हो चुका था, अतः दोनों की भेंट भी सम्भव नहीं, गुरु-शिष्य होना तो दूर की बात है ।

सूरति मिश्र ने वल्लभ-सम्प्रदाय के भक्तों पर भक्तमाला नामक परिचयात्मक ग्रन्थ लिखा है । इससे इनका वल्लभ सम्प्रदाय में दीक्षित होना सूचित होता है, अन्यथा इस ग्रन्थ में अन्य सम्प्रदायों के भक्त भी सम्मिलित किए जा सकते थे ।

९३२।

(९१) शारंग कवि, बन्दीजन चन्द कवीश्वर के वंश के सं० १३५० में उ० । यह प्राचीन कवि चन्द कवीश्वर के वंश में संवत १३३० के करीब उत्पन्न हुए थे और राजा हमीर देव चौहान रनथम्भौर वाले के यहाँ, जो राजा विशाल देव के वंश में था, रहा करते थे । इन्होंने हमीर रासा और हमीर काव्य, ये दो ग्रन्थ महा उत्तम बनाए हैं । हमीर रासा राजा हमीर की प्रशंसा में लिखा है ।

---

(१) खोज रिपोर्ट ९०।८६ (२) राज० रिपोर्ट, भाग २, पृष्ठ १९३

सिंहगमन सुपुरुष वचन, कदलि फरै इक बार
तिरिया तेल हमीर हठ, चढ़ै न दूजी बार

सर्वेक्षण

सप्तम संस्करण में सं० १३५० में उ० नहीं दिया गया है और तृतीय संस्करण में है। सरोज में सारंगधर के नाम पर ७९९ संख्या पर जो कवित्त उद्धृत है, वह इनका न होकर ९५८ संख्यक असोथर वाले सारंग की रचना है। प्रथम संस्करण में कवि का नाम 'शारंगधर' एवं समय १३५७ दिया गया है।

शारङ्गधर पद्धति शारङ्गधर द्वारा संकलित एक सुभाषित संग्रह है। इसमें कवि ने अपना परिचय भी दिया है। इस ग्रन्थ के अनुसार रणथम्भौर के राजा हम्मीरदेव के प्रधान सभासदों में एक राघव देव थे। इन राघवदेव के तीन पुत्र—गोपाल, दामोदर और देवदास थे। पुनः दामोदर के तीन पुत्र हुए—शारङ्गधर, लक्ष्मीधर और कृष्ण। यही हम्मीर के दरबारी राघवदेव के पौत्र, और दामोदर के पुत्र 'शारङ्गधर पद्धति' के रचयिता हैं।[१] ग्रियर्सन के अनुसार (८) शारंगधर पद्धति की रचना संवत १४२० में हुई।

सरोज में दिया संवत १३३० या १३५० इस मान्यता के साथ दिया गया है कि स्वयं शारंगधर हम्मीर के दरबारी थे, पर ऐसा है नहीं, जैसा कि हम ऊपर देख चुके हैं। अतः सरोज में दिए संवत ठीक नहीं। इस समय तो सम्भवतः यह उत्पन्न भी न हुए रहे होंगे।

शारङ्गधर चन्द के वंशज थे, इसका कोई प्रमाण नहीं। इनका रचित हम्मीर रासो उपलब्ध नहीं। हम्मीर-काव्य सम्भवतः संस्कृत में है। इनका आयुर्वेद का ग्रन्थ तो प्रसिद्ध है ही, यह अच्छे कवि और सूत्रकार भी थे। शुक्लजी को प्राकृत पिङ्गल सूत्र उलटते-पुलटते इनके 'हम्मीर रासो' के कुछ छन्द मिल गए थे, जिनको उन्होंने अपने सुप्रसिद्ध इतिहास में उद्धृत किया है और इनकी भाषा के अपभ्रंश के अधिक निकट होने के कारण इनका अर्थ भी दे दिया है।[२]

९३३।

(१००) सदाशिव कवि बन्दीजन, सं० १७३४ में उ०। यह कवीश्वर राना राजसिंह, जो औरङ्गजेब बादशाह के दिली शत्रु थे, उनके पास रहा करते थे और उन्हीं राना के जीवनचरित्र के वर्णन में राज रत्नगढ़ नामक ग्रन्थ बनाया है।

सर्वेक्षण

ग्रियर्सन (१८७) के अनुसार राणा राजसिंह का शासनकाल सं० १७११-३८ है। ऐसी स्थिति में सरोज में दिया राणा राज सिंह के दरबारी कवि सदाशिव का सं० १७३४ ठीक है।

---

(१) हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ २४ (२) वही

विनोद (४१२) में सदाशिव के ग्रन्थ का नाम राज रत्नाकर और इसका रचनाकाल सं० १७१७ दिया गया है।

९३४।

(१०१) शिव कवि प्राचीन, सं० १६३१ में उ०। इनके कवित्त हजारे में हैं।

सर्वेक्षण

शिव कवि प्राचीन के कवित्त हजारे में थे, अतः इनका सं० १७५० के पूर्व अस्तित्व स्वयं-सिद्ध है। इस कवि के सम्बन्ध में और कोई सूचना सुलभ नहीं।

९३५।

(१०२) सुखलाल कवि, सं० १८०३ में उ०। यह कवि राजा युगलकिशोर मैथिल के पास दिल्ली में थे।

सर्वेक्षण

राजा युगलकिशोर के आगे मैथिल छप गया है, जो ठीक नहीं। यह शब्द कैथल है, जो इनके निवास-स्थान का नाम है।[1] कैथल, करनाल जिला, पञ्जाब में है।

राजा युगलकिशोर मुहम्मद शाह रंगीले के दरबारी थे। इन्होंने सं० १८०५ में अलङ्कार-निधि नामक ग्रन्थ बनाया था। इस ग्रन्थ में अपने दरबारी कवियों का नाम इन्होंने इस दोहे में दिया है, जिसमें सुखलाल का भी नाम है।

मिश्र रुद्रमनि विप्रवर, औ सुखलाल रसाल
सन्तजीव सु गुमान है, सोभित गुनन विसाल

यह दोहा सरोज में भी जुगलकिशोर भट्ट के परिचय में उद्धृत है। अतः सुखलाल का इनके यहाँ रहना सिद्ध है और सरोज में दिया हुआ इनका सं० १८०३ ठीक है और यह कवि का उपस्थितिकाल है।

विनोद (७६३) के अनुसार जुगलकिशोर के दरबारी कवि सुखलाल, गोंडा नरेश गुमान सिंह के भी आश्रित थे और इन्होंने वैद्यक सार नामक ग्रन्थ की रचना की है। यह ग्रन्थ खोज में मिल चुका है।[2] इस ग्रन्थ के अनुसार कवि मदावल देश में अटेरपुर का निवासी था।

---

(१) हिन्दी साहित्य का इतिहास, कविसंख्या २५६ (२) खोज रिपोर्ट १९०९।३१०, १९२३।४१३

देश भदावल में कह्यो अटेर कवि थान
तिन कह गउडानोय ने दिए विविध विधि दान

रिपोर्ट में इन 'अलप ज्ञान सुखलाल द्विज' के जुगलकिशोर भट्ट के दरबारी कवि होने कीं सम्भावना व्यक्त की गई है। इसी सम्भावना को विनोद में वास्तविकता का रूप दे दिया गया है। यह भदावल और अटेर ग्वालियर और आगरा के बीच हैं। यहीं के रहने वाले प्रसिद्ध कवि छत्र सिंह थे।[1] पर यह वैद्यकसार वाले सुखलाल द्विज युगलकिशोर के दरबारी सुखलाल से भिन्न हैं, क्योंकि बैद्यकसार की रचना सं० १८९२ में प्राय: ९० वर्ष बाद हुई—

संवत लोचन रन्ध्र वसु, ससि मधु मास विचार
कृष्ण चतुर्दश सौम्य दिन पूरन 'बैदक सार'
—१९२३।४१३

श्री कृष्ण-स्तोत्र[2] नामक नौ कवियों का एक ग्रन्थ मिश्र सुखलाल के नाम से मिला है। हो सकता है कि यह इन्हीं सुखलाल की रचना हो।

सुख लालची हौं मुख लाल जी के देखिये कौ
कवि सुखलाल कृष्ण चन्द्र सुख कनी कै ६

———

९३६।

(१०३) संतजीव कवि, सं० १८०३ में उ०। ऐजन। यह कवि राजा युगलकिशोर मैथिल के पास दिल्ली में थे।

सर्वेक्षण

पीछे ९३५ संख्या पर सुखलाल कवि के प्रसङ्ग में राजा युगलकिशोर भट्ट का उनके दरबारी कवियों का उल्लेख करने वाला जो दोहा उद्धृत है, उसमें सन्तजीव का भी नाम है। अतः यह भी उक्त जुगलकिशोर के दरबारी कवि थे और इनका भी रचनाकाल सं० १८०३ है। यहाँ भी 'कैथाल' 'मैथिल' हो गया है।

———

(१) खोज रिपोर्ट, कवि संख्या २५३ (२) यही ग्रन्थ १९४१।२९२।

९३७।८००

(१०४) सुदर्शन सिंह राजा चन्दापुर के राजकुमार, सं० १९३० में उ०। यह महाराज महा निपुण थे। एक ग्रन्थ इन्होंने बनाया है, जिसमें अपने बनाए पद और कवित्त आदि का संग्रह किया है।

सर्वेक्षण

सरोज में दिया सं० १९३० सुदर्शन सिंह का जन्मकाल कदापि नहीं हो सकता, क्योंकि इनके ५ वर्ष बाद ही सरोज का प्रथम संस्करण हुआ। अतः यह कवि का उपस्थितिकाल है। चन्दापुर बहराइच जिले के अन्दर है। यहाँ के राजा के यहाँ प० अयोध्याप्रसाद बाजपेयी औध गए थे और सम्मानित हुए थे।

९३८।

(१०५) शंख कवि। इनके कवित्त तुलसी कवि के संग्रह में हैं।

सर्वेक्षण

शंख कवि की कविता तुलसी कवि के संग्रह में थी, अतः इनका रचनाकाल सं० १७१२ के आप-पास या उससे कुछ पूर्व होना चाहिये।

९३९

(१०६) साहब। ऐजन। इनके कवित्त तुलसी कवि के संग्रह में हैं।

सर्वेक्षण

साहब कवि की रचना तुलसी कवि के संग्रह में थी, अतः इनका रचनाकाल सं० १७१२ के आस-पास या कुछ पूर्व होना चाहिए।

खोज में साहब राय का खण्डित ग्रन्थ रामायण[1] मिला है। यह औध के रहने वाले सक्सेना कायस्थ थे। इनके पिता का नाम नारायणदास, पितामह का दयालदास और प्र-पितामह का रामराय था। यह व्रजवासी बाबा नन्द के शिष्य थे। यह जन्म से ही अपनी ननसाल मैनिज में दक्खिन में रहे। कभी अपना असली घर औध देखा भी नहीं। इसके नाना का नाम

---

(१) खोज रिपोर्ट १९३२।१३२।

खेतलदास था। प्राप्त ग्रन्थ खण्डित है, अतः इसका रचनाकाल ज्ञात नहीं हो सका। यह नहीं कहा जा सकता कि यह तुलसी के संग्रह में आए साहब ही हैं अथवा उनसे भिन्न कोई अन्य साहब।

एक राय साहब सिंह का रामायण कोष[1] नामक ग्रन्थ और मिला है। इसके रचयिता ऊपर वर्णित रामायण के रचयिता साहब राय ही प्रतीत होते हैं।

९४०।

(१०७) सुबुद्धि। ऐजन। इनके कवित्त तुलसी कवि के संग्रह में हैं।

सर्वेक्षण

तुलसी के काव्य-संग्रह में इनकी कविता संकलित है, अतः इनका समय सं० १७१२ के आस-पास या कुछ पूर्व होना चाहिए।

सुबुद्धि का 'आरम्भ नामकमाला'[2] नाम पर्याय कोश मिला है जिसमें रचनाकाल नहीं दिया गया है।

जो कवित्त भाषा पढ़े, जो रह भाषा शुद्ध
तिनकै समुझन कौं इन्है, बरने विवध सुबुद्ध

९४१।

(१०८) सुन्दर कवि, बन्दीजन असनीवाले। इन्होंने रस प्रबोध ग्रन्थ बनाया है।

सर्वेक्षण

असनीवासी सुन्दर के सम्बन्ध में कोई सूचना सुलभ नहीं। विनोद (१७५५) में इन्हें प्रभाद से बारहमासी का भी कर्ता कहा गया है। यह बारहमासी सन्त सुन्दरदास की रचना है।

९४२।

(१०९) सोभनाथ ब्राह्मण, नाथ उपनाम साँड़ीवाले, सं० १८०३ में उ०।

---

(१) खोज रिपोर्ट १९१७।१६४ (२) राज० रिपोर्ट, भाग २, पृष्ठ ३-४

सर्वेक्षण

ग्रियर्सन में यह कवि एक बार सोभनाथ नाम से (४४७) और एक बार ब्राह्मणनाथ नाम से (४४३) उल्लिखित हुआ है। ब्राह्मण और नाथ शब्दों के बीच अर्द्ध विराम है। विनोद (८३६) में इन सोभनाथ का रचनाकाल सं० १८०९ दिया गया है और इन्हें किसी कुँवर बहादुर का आश्रित कहा गया है।

९४३।

(११०) सुखराम ब्राह्मण चहोतर, जिले उन्नाव के। वि०।

सर्वेक्षण

विनोद (२४८४) में इस सुखराम को १९४० में उपस्थित कवियों की सूची में स्थान दिया गया है और इन्हें नृप संबाद का रचयिता कहा गया है। ग्रियर्सन (७२९) में इनके ८७९ संख्यक सुखराम से अभिन्न होने की सम्भावना व्यक्त की गई है।

९४४।

(१११) समनेस कवि कायस्थ रीवाँ, बघेलखण्डवासी संवत्, १८८१ में उ०। यह कवि महाराज जया सिंह, विश्वनाथ सिंह बांधव नरेश के पिता, के यहाँ थे और काव्य भूषण नामक ग्रन्थ बनाया है।

सर्वेक्षण

समनेस का पूरा नाम बख्शी समन सिंह था। इनके पिता का नाम शिवदास और पितामह का केशवराइ था। यह रीवाँ नरेश जय सिंह और उनके पुत्र महाराज विश्वनाथ सिंह जू के दरबारी कवि थे। इनके पूर्वज गुजरात से आकर दिल्ली में रहने लगे थे। शाहजहाँ के शासनकाल में इनके पूर्वज दिल्ली से रीवाँ आए। इनके लिखे दो ग्रन्थ खोज में मिले हैं :—

(१) रसिक विलास, १९०६।२२७। यह नायिका भेद का ग्रन्थ है। इसकी रचना सं० १८४७ में हुई।

संवत रिषि(७) जुग(४) बसु(८) ससी(१) कुज पून्यो नभ मास
संपूरन सनेतस कृत बनिगो रसिक विलास १

(२) पिङ्गल काव्यविभूषण १६००।४२, १६४७।४०३। इसी ग्रन्थ का नामोल्लेख सरोज में हुआ है। इस विशद पिङ्गलग्रन्थ की रचना सं० १८७९ में हुई।

संवत निधि मुनि सिधि अवनि, राम नौमि रविवार
पिंगल काव्य विभूषनहिं, किय समनेस तयार १५

इस ग्रन्थ की रचना युवराज विश्वनाथ सिंह जी की आज्ञा से हुई थी। इन दोनों ग्रन्थों के रचनाकाल से स्पष्ट है कि सरोज में दिया सं० कवि का रचनाकाल है।

९४५।

(११२) शत्रुजीत सिंह बुन्देला, दतिया के राजा। इन्होंने की रसराज टीका बनाया है। इस ग्रन्थ में अलङ्कार, ध्वनि, लक्षरा, व्यञ्जना और व्यंग्य का यथावत् वर्णन है।

सर्वेक्षण

शत्रुजीत सिंह ने स्वयं ही रसराज की टीका नहीं बनाई। इन्होंने अपने दरबारी कवि बखतेस से यह यह टीका बनवाई। खोज में यह टीका मिल चुकी है।[1] इसका रचनाकाल सं० १८२२, मार्गशीर्ष वदी १, रविवार है।

प्रथम दोइ पुनि दोइ वसु एक सु संवत जान
मारग पहिली, द्वैज रवि कीन्हो अर्थ विधान १

कवि ने अपने आश्रयदाता और ग्रन्थ के सम्बन्ध में निम्नलिखित दोहे लिखे हैं—

भूप बली रतनेश के अनुज महा मतिवान
सत्रुजीत मोसो कह्यो कीबो अर्थ विधान २
राखत नृप रतनेस सों स्वामि धर्म की प्रीति
जाहिर सकल जहान में सत्रुजीत की जीत ३
यातें नृप रतनेस ने तन्त समर को पोत
सत्रुजीत आगे कह्यो सत्रजीत क्यों होत ४
सुकवि महा मतिराम ने कियो ग्रन्थ रसराज
तामै राखी विञ्जना उक्ति जुक्ति की खान ५

---

(१) खोज रिपोर्ट १६०६।७

भरी ऊक्ति रसराज की बरनौं ललित ललाम

दीजौ मति मतिराम की जो मतिराम दीजौ ६

लिखियत तिहि रसराज को अर्थ सुमति अनुसार

बनी बनोई, अनवन्यो लीज्यो सुकवि सुधारि ७

विनोद (९२३)के अनुसार भी शत्रुजीत दतिया के राजा थे। पर यह ठीक नहीं। शत्रुजीत दतियानरेश रतनेस या रतन सिंह के अनुज थे। विनोद में भी रसराज के टीकाकार बखतेख ही कहे गए हैं। अप्रकाशित संक्षिप्त विवरण में रतनेश को विजावर का राजा कहा गया है। इस ग्रन्थ की रचना सं० १८२२ में हुई थी। इसके ४ वर्ष के बाद विजावर राज्य अस्तित्व में आाय और विजावर के तीसरे राजा रतन सिंह हुए, जिनका शासनकाल सं० १८६७-९० है। स्पष्ट है कि संक्षिप्त विवरण की बात ठीक नहीं।

९४६।

(११३) शिवदत्त ब्राह्मण काशीस्थ, सं० १९११ में उ०।

सर्वेक्षण

शिवदत्त जी काशी के सनाढ्य ब्राह्मण थे, पर मथुरा के अन्तर्गत सादाबाद में जाकर बस निम्नलिखित तीन ग्रन्थ खोज में मिले हैं—

१))वैद्यक भाषा १९३२।२०२। यह ग्रन्थ गद्य में है। वर्तमान ग्रन्थ स्वामी के पिता पं० श्री नारयण थे, इन श्रीनारायण के पिता शिवदत्त जी थे, जो स्वयं एक अच्छे वैद्य थे। संस्कृत ग्रन्थों के आधार पर इन्होंने यह रचना की थी। इनके पिता का नाम बलदेव दत्त, पितामह का जीसुखराम, प्रपितामह का दौलतराम और प्र-प्रपितामह का टीकाराम था। ये सब सूचनाएँ इस ग्रन्थ से मिलती हैं।

(२) उत्पलारण्य माहात्म्य या ब्रह्मावर्त माहात्म्य १९२६।४४३ ए, बी, सी। इसका रचना-काल सं० १९२६ है।

संवत् रस(६) दग(२) विक्रम, तापर निधि(९) अरु चन्द(१)

ग्रन्थ कियो संपूरन रचि करि सुन्दर छन्द

(३) ज्ञान प्राप्ति बारहमासी १९२६।४४३ डी, ई। इस ग्रन्थ की रचना सं० १९२३ में हुई खोजरिपोर्ट में इन्हें रामप्रसाद का पुत्र कहा गया है। इसका आधार ये पक्तियाँ हैं—

इकइस अध्याय भये अब शिव गिरिजा संबाद
भई संहिता पूरण शिवदत्त रामप्रसाद

इसी प्रकार बारहमासी में ये पंक्तियाँ हैं—

करि प्रेम नेम समेत जोइ जन बारहमासी गावहीं
शिवदत्त राम प्रताप तें सोइ आतमा लखि पावहीं

इन पंक्तियों के आधार पर पिता का नाम रामप्रताप होना चाहिए । वस्तुतः ऐसा है नहीं । रामप्रसाद का अर्थ है राम के प्रसाद से और रामप्रताप का अर्थ हुआ राम के प्रताप से । कवि हिन्दुस्तानी है, गुजराती नहीं ।

६४७।

(११४) श्रीकर कवि । इनके कवित्त तुलसी कवि के संग्रह में हैं ।

सर्वेक्षण

श्रीकर कवि की रचनाएं तुलसी कवि के संग्रह में हैं, अतः इनका अस्तित्व सं० १७१२ के पूर्व या आस-पास सिद्ध है । विनोद (३९३) में इनका उल्लेख श्री कवि के नाम से हुआ है ।

६४८।

(११५) सनेही कवि । सूदन ने इनकी प्रसंसा की है ।

सर्वेक्षण

सनेही कवि का उल्लेख सूदन ने किया है, अतः इनका रचनाकाल सं० १८१० के पूर्व या आस पास सिद्ध है । इनका पूरा नाम सनेही राम है । नायिका भेद का इनका ग्रन्थ रसमञ्जरी[१] खोज में मिला है । रचनाकाल नहीं दिया गया है ।

६४९।

(११६) सूरज कवि । ऐजन । सूदन ने इनकी प्रशंसा की है ।

---

(१) १९०९।२७५

सर्वेक्षण

सूरज कवि का उल्लेख सूदन ने किया है, अतः इनका रचनाकाल सं० १८१० के पूर्व या आस-पास होना चाहिए ।

खोज में श्री सूर्य का एक ज्योतिष ग्रन्थ कर्म विपाक[1] मिला है। प्रतिलिपिकाल सं० ८७८ है। रिपोर्ट में सम्भावना व्यक्त की गई है कि यह सम्भवतः सूदन द्वारा उल्लिखित सूरज कवि ही हैं।

खोज में एक सूरजदास भी मिले है।यह सम्भवतः स्वामी प्राणनाथ के शिष्य थे। प्राणनाथ जी छत्रसाल (शासनकाल सं० १७२२-८८) के समकालीन थे। यही समय सूरजदास का भी होना चाहिए। अतः यह सूरजदास भी सं० १८१० के पूर्ववर्त्ती हैं। इनका भी उल्लेख सूदन द्वारा हो सकता है। इनके बनाए ग्रन्थ निम्नलिखित हैं ।

(१) एकादशी व्रत माहात्म्य १९१७। १८७ बी, १९२३।४१७ ए, बी, १९२६।४७३ ए, १९४१।५७४ । इसी ग्रन्थ का नाम रुक्माङ्गद की कथा भी है।[2]

(२) राम जन्म—१९१७।१८७ ए, १९२३।४१७ सी, १९२६।४७३ वी, १९४१।५७४ ख, विहार रि०२, सं०४७ ।

सूरजदास कवि वरनो, प्राननाथ जिव मोर
राम कथा कछु भाखौ कहत न लागै भोर

९५०।

(११७) सुखानन्द कवि बन्दीजन चचेड़ीवाले, सं० १८०३ में उ० ।

सर्वेक्षण

प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय संस्करण में कवि का नाम सुखानन्द है। सप्तम में अशुद्ध सुखाननन्द छप गया है। इस कवि के सम्बन्ध में कोई सूचना सुलभ नहीं।

खोज में सुखानन्द नाम के कई कवि मिले हैं। इनमें से एक ही ऐसे हैं जिनका समय १८३३ के पूर्व माना गया है। यह सुखानन्द निधान के गुरु थे।[3]

---

(१) १९०९।३०५ (२) १९२३।४१७ (३) १९१७।१३७

एक सुखानन्द माघ सं० १८८७ के पूर्व वर्तमान थे। यह शैव थे। हरिहरानन्द के शिष्य थे। इन्होंने पशुमर्दन भाषा[1] नामक ग्रन्थ लिखा है।

———

९५१।

(११८) सर्वसुख लाल सं० १७९१ में उ०। इनकी प्रशंसा सूदन कवि ने की है।

सर्वेक्षण

सूदन ने सर्वसुख लाल का नाम प्रणम्य कवियों की सूची में दिया है, अतः इनका रचनाकाल सं० १८१० के पूर्व या आस-पास होना चाहिए। इनके सम्बन्ध में अभी तक कोई सूचना नहीं सुलभ हो सकी है।

———

९५२।७९६

(११९) श्री लाल गुजराती माँडेर, राजूपतानेवाले, सं० १८५० में उ०। इन्होंने भाषा चन्द्रोदय आदि छः ग्रन्थ बनाए हैं।

सर्वेक्षण

श्री लाल जी शास्त्रावदीच गुजराती ब्राह्मण थे। यह जयपुर राज्यान्तर्गत माँडेर ग्राम के निवासी थे। यह संस्कृत एवं गणित में बड़े मान्य थे। पहले इन्होंने आगरा कॉलेज में कुछ दिन पढ़ाया १८४८ ई० से स्कूलों के लिए नवीन काव्यग्रन्थ लिखने के लिये पश्चिमोत्तर प्रदेशीय सरकार की ओर से नियुक्त हुए। उस समय उन्होंने विद्यार्थियों के उपयोग के लिए अनेक ग्रन्थों का अनुवाद किया। इनके बनाये कुछ शास्त्रोपयोगी ग्रन्थ हैं— शालापद्धति, समय प्रवोध, अक्षर-दीपिका, गणित प्रकाश, बीजगणित, भाषाचन्द्रोदय, ईश्वरता निदर्शन, ज्ञानचालीसा आदि। सन् १८५२ में आगरा में नार्मल स्कूल खुला और उसके ये पहले हेडमास्टर हुये। सन १८५७ में चन्देरी जिले में स्कूलों के डिप्टी इन्सपेक्टर हुए। १८५८ ई० में ग्वालियर कालेज के हेड-मास्टर हुए। उस समय इनका वेतन १५०) मासिक था। १८६७ में ज्वरग्रस्त हो आगरा में जमुना किनारे दिवङ्गत हुए।[2] सरोज में दिया समय १८५० कवित्त रत्नाकर के अनुसार है और ईस्वी सन् में उपस्थिति काल है। श्री लाल जी ने सं० १९०९ में पत्रमालिका नामक ग्रन्थ लिखा था।

———

(१) खोज रिपोर्ट १९४४।४५५, (२) कवित्त रत्नाकर, भाग १, कवि संख्या ७ (३) हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ ४३७

९५३।७२७

(१२०)शम्भुनाथ मिश्र, गञ्ज मुरादाबाद वाले।

सर्वेक्षण

विनोद (११६७) के अनुसार शम्भूनाथ का रचनाकाल सं० १८६७ है और इन्होंने राजकुमार प्रवोध नामक ग्रन्थ लिखा है।

९५४।

(१२१) समर सिंह क्षत्रिय, हड़हा, जिले बाराबङ्की। वि०। इन्होंने सातों काण्ड रामायण बहुत ही ललित पदों में बनाई है।

सर्वेक्षण

समर सिंह के सम्बन्ध में कोई सूचना सुलभ नहीं।

९५५।७९७

(१२२) श्यामलाल कवि कोड़ा, ज़हानाबाद वाले, सं० १८०४ में उ०। यह कवि भगवन्त राय खीची के यहाँ थे।

सर्वेक्षण

श्यामलाल का समय भगवन्तराय खींची (मृत्युकाल सं० १८१७[1]) के समय के मेल में है, अतः सरोज में दिया इनका सं० १८०४ रचनाकाल ही है। इनके सम्बन्ध में कोई और सूचना सुलभ नहीं।

९५६।

(१२३) श्रीहठ कवि, सं० १७६० में उ०। तुलसी कवि के संग्रह में इनके कवित्त हैं।

सर्वेक्षण

श्रीहठ के कवित्त तुलसी कवि के संग्रह में हैं, अतः इनका रचनाकाल सं० १७१२ के आस-पास या पूर्व होना चाहिये। सरोज में दिया इस कबि का समय सं० १७६० अशुद्ध है।

---

(१) खोज रिपोर्ट कविसंख्या ५९९

९५७

(१२४) सिद्ध कवि, सं० १७८५ में उ० । ऐज़न । तुलसी कवि के संग्रह में इनके कवित्त हैं।

सर्वेक्षण

सिद्ध कवि की रचना तुलसी कवि के संग्रह में हैं, अतः इनका रचनाकाल सं० १७१२ के आस-पास या पूर्व होना चाहिए। सरोज मे दिया इनका सं० १७८५ अशुद्ध है।

९५८।७९९

(१२५) शारङ्ग कवि, असोथर वाले, सं० १७९३ में उ० । यह कवि राजा भवानी सिंह खींची, भगवन्तराय जी के भतीजे, के पास असोथर में रहा क़रते थे।

सर्वेक्षण

सरोज में इनका जो कवित्त उद्धृत है, उससे इनका भवानी सिंह का आश्रित होना स्पष्ट है ।

सारङ्ग सुकवि भने भूपति भवानी सिंह
पारर्थ समान महाभारथ सो करि गो

सरोज में दिया सारङ्ग कवि का समय सं० १७९३ भगवन्तराय के समय(मृत्यु १८१७ वि०) के मेल में है[१], अतः ठीक है और रचनाकाल है। किसी शारङ्गधर का विराह चन्द्रिका[२] नामक ग्रन्थ खोज में मिला है। इसमें छन्दों में सोनारों की बोली का विवेचन किया गया है। प्राप्त प्रति का लिपिकाल सं० १७७४ है।

ह

९५९।८०७

(१) हरिनाथ कवि, महापात्र बन्दीजन असनीवाले, सं० १६४४ में उ० । यह महान् कवीश्वर नरहरि जी के पुत्र बड़े भाग्यवान् पुरुष थे। जहाँ जिस दरबार में गए, लाखों रुपए, हाथी, घोड़े, गाँव, रथ, पालकी पाकर लौटे। इन्होंने श्री बांधव नरेश राजाराम बघेल की प्रशंसा में यह दोहा पढ़ा—

---

(१) खोज रिपोर्ट कविसंख्या ५९९ (२) यही ग्रन्थ १९४७।४०८

लंका लौं दिल्ली दई, साहि विभीषन काम
भयो बघेल रमायण, राजा राजाराम

इस दोहे पर इन्होंने एक लाख रुपए का इनाम पाया। राजा मान सिंह सवाई आमेरवाले के पास ये दोहे पढ़कर दो लक्ष रुपए का दान पाया—

बलि बोई कीरति लता, करन करी द्वै पात
सींची मान महीप ने, जब देखी कुँभिलात
जाति जाति ते गुन अधिक, सुन्यो न कबहूँ कान
सेतु बांधि रघुवर तरै, हेला दे नृप मान

जब हरिनाथ जी रुपए और सब सामान लेकर घर को चले तो मार्ग में एक नागर पुत्र मिला और उसने हरिनाथ जी की प्रशंशा में यह दोहा पढ़ा—

दान पाय दोई बढ़े, की हरि की हरिनाथ
उन बढ़ि ऊँचो पग कियो, इन बढ़ि ऊँचौं हाथ

हरिनाथ ने सब धन-धान्य जो पाया था, इसी नागर पुत्र को देकर आप खाली हाथ घर को चले आए। यह अपनी और अपने पिता की कमाई तमाम उमर इसी भाँति लुटाते रहे।

सर्वेक्षण

भाषाकाव्य संग्रह में महेशदत्त ने हरिनाथ जी के सम्बन्ध में लिखा है कि यह उन्होंने नरहरि का मृत्युकाल सं० १६६६ दिया हैं। इसी आधार पर सरोजकार ने हरिनाथ का समय सं० १६४४ दिया है। स्पष्ट ही यह जन्म-संवत् दिया गया है, जो ठीक भी हो सकता है।

बांधव नरेश का नाम राजाराम या राम सिंह था, नेजाराम नहीं, जैसा कि सरोज के सप्तम संस्करण में अशुद्ध छप गया है। हरिनाथ की रचनाएँ बहुत कम मिलती है।

९९०।८०१

(२) हरिदास कवि एकाक्ष कायस्थ, पन्ना के निवासी, सं० १९०१ में उ०। इनका बनाया हुआ रसकौमुदी नामक ग्रन्थ भाषा साहित्य में बहुत सुन्दर है। इसके सिवा छन्द, अलङ्कार इत्यादि भाषाकाव्य के अङ्गों-उपाङ्गों के १२ और ग्रन्थ बनाए हैं।

सर्वेक्षण

हरिदास जी पन्ना निवासी कायस्थ थे। इनका असल नाम हरिपरसाद था। कविता में

इनकी छाप हरिदास है। इनके पिता का नाम बगसी भैरवप्रसाद था। इनका जन्म सं० १८७६ में तथा मृत्यु २४ वर्ष की अल्प आयु में सं० १९०० में हुई। इस छोटी सी आयु में १३ ग्रन्थों की रचना गौरवपूर्ण है। सरोज अथवा रिपोर्टों में उद्धृत इनकी सभी रचनाएँ उच्चकोटि की हैं। इनके निम्नलिखित तीन ग्रन्थ खोज में मिले हैं—

(१) रस कौमुदी १९०५।९५; १९०६।४६ ए। यह नायिकाभेद का ग्रन्थ है। इसकी रचना पन्ना के तत्कालीन राजा हरवंश राय, (राज्यकाल सं० १८९७-१९०६) के आदेशानुसार हुई। इसका रचनाकाल सं० १८९७ है।

संवत मुनि पुनि ग्रह गनौ वतुससे भनौ सुजान
राजनृपति हरवंश कौ, सुभ परना अस्थान

—खोज रिपोर्ट १९०५।९५

'बतु ससे' का ठीक पाठ 'वसु ससी' प्रतीत होता है।

(२) गोपाल पचीसी १९०६।४६ बी। इस लघुग्रन्थ में २५ दोहे हैं और प्रत्येक के अन्त में 'जयति विजै गोपाल' है।

(३) अलङ्कार दर्पण १९०६।४६ सी। रचनाकाल सं० १८९८।

सुभ संवत बसु खण्ड बसु ससी शुक्ल वैसाख
मंदवार एकादशी ग्रन्थ जन्म अभिलाख

'मन्द वार' के स्थान पर सम्भवतः 'चन्द्रवार' चाहिए। इस ग्रन्थ की पुष्पिका से इनके पिता का नाम ज्ञात होता है—

"इति श्री अलङ्कार दर्पन नाम ग्रन्थे श्री बगसी भैरबप्रसादस्य पुत्रश्री हरिपरसाद विरचित अलङ्कार सम्पूर्न सुभमस्तु सुभम्याभूत्......

९६१।८०२

(३) हरिदास कवि २, बन्दीजन बांदावाले, नौने कवि के पिता, सं० १८९१ में उ०। इन्होंने राधा भूषण नामक श्रृङ्गार का बहुत सुन्दरु ग्रन्थ बनाया है।

सर्वेक्षण

खोज रिपोर्ट में बाँदावाले हरिदास के निम्नलिखित दो ग्रन्थों का विवरण है—(१) भाषा भागवत समूल एकादश स्कन्ध १९०४।५५। यह टीका सं० १८१३ में महाराज अरिमर्दन के समय में गुरु गुलाल दास के निर्देश से श्रीधर तिलक का सहारा लेकर प्रस्तुत की गई थी।

३ १ ८ १
राम सुधाकर महीधर धरणी अङ्क समान
संवत विक्रम नृपति कौ तब यह कीन बखान
गुरु गुलाल सेवा रसिक अरिमर्दन भूपाल
काशिराज कुल कुमुद विधु, विशद विवेक मराल
विप्र नाम हरिदास हरिजन पद कमल पराग

× × ×

दास गुलाल निदेश लहि श्रीधर तिलक विचारि
निज मति यथा तथा कह्यो हरि जन लेहु सुधारि

(२) ज्ञान सतसई १९०४।७२। परम भागवत राजा अरिमर्दन के आदेश से गीता का यह दोहाबन्ध अनुवाद सं० १८११ में प्रस्तुत किया गया—

१ १ ८ १
एक एक बसु एक मिति, सम गत विक्रमराज
हितकर यह श्रम होउ मम संतत संत समाज
परम भागवत भूपवर अरिमर्दन विख्यात
चित प्रमोद हित तासु यह दोहा बंध सु जात
भगवत गीता श्लोक के करन सदर्थ प्रकाश
ज्ञानवती सतसई यह कीन्हीं जन हरिदास

खोज रिपोर्ट १९०६।४७ में इन हरिदास के नाम पर भाषाभूषण की एक टीका का भी विवरण है। यह टीका इनकी नहीं हैं, प्रसिद्ध टीकाकार हरिचरणदास की है।[1] प्राप्त दो ग्रन्थों के आधार पर इन हरिदास जी का समय १८११ या १८१३ है, अतः सरोज में दिया सं० १८९१ अशुद्ध हैं। नौने कवि के विवरण और उदाहरण के स्थलों पर इनके पिता का नाम हरिलाल दिया हुआ है।

———

९९२।८३७

(४) हरिदास स्वामी वृन्दावन निवासी, सं० १६४० में उ०। इन महाराज का जीवन-चरित्र भक्तमाल में हैं। यहाँ हमको केवल काव्य का ही वर्णन करना जरूरी है। सौ संस्कृतकाव्य के जयदेव कवि से इनकी कविता कम नहीं है। भाषा में तो इनके पद सूर और तुलसी के पदों के

---

(१) खोज रिपोर्ट कविसंख्या ९९५

समान मधुर और ललित है। इन्होंने बहुत ग्रन्थ बनाए हैं पर हमने इनकी कविता वही देखी है जो रागसागरोद्भव, राग कल्पद्रुम में हैं। तानसेन को इन्हीं महाराज ने काव्य और सङ्गीत विद्या पढ़ाई थी।

सर्वेक्षण

स्वामी हरिदास जी वृन्दावन में रहते थे, यह निम्बार्क-सम्प्रदाय के अन्तर्गत टट्टी सम्प्रदाय के संस्थापक थे और सिद्ध भक्त तथा सङ्गीत कलाकोविद् थे। अकबर ने छद्मवेश में तानसेन के साथ जाकर इनका सङ्गीत सुना था। यह सनाढ्य ब्राह्मण थे। अन्तिम दिनों में यह वृन्दावन के एक भाग निधुवन में रहने लगे थे।

सरोज में दिया हुआ संवत् १६४० न तो इनका जन्मकाल ही है और न रचनाकाल ही। इनका जन्म-संवत् १५३७ और मृत्यु संवत् १६३२ स्वीकार किया गया है।

स्वामी हरिदास जी देवचन्द, अनन्य रसिक, सहचरीशरण, तानसेन, वल्लभ रसिक विटठल विपुल आदि प्रसिद्ध भक्तों, कवियों और सङ्गीतज्ञों के गुरु थे। यह धीर के पुत्र, ज्ञान धीर के पौत्र और ब्रह्मधीर के प्रपौत्र थे। यह पहले हरिदासपुर में रहते थे। धीर का विवाह वृन्दावन के गङ्गाधर की पुत्री से हुआ था। इसी विवाह से स्वामी हरिदास जी का जन्म हुआ।[1]

'सर्वेश्वर' के अनुसार हरिदास जी के पिता का नाम गङ्गाधर एवं माता का चित्रा देवी था। आसधीर इनके पिता गङ्गाधर के एवं इनके भी गुरु थे। आसधीर वृन्दावन के अन्तर्गत निधि में रहा करते थे, जहाँ बाद में हरिदास जी रहने लगे थे। हरिदास जी ने वृंदावन में ७० बर्षों तक निवास किया था।[2] स्वामी हरिदास के पदों की गणना एक कवित्त में की गई है—

अनन्य नृपति स्वामी श्री हरिदास जू के
पद रस अमल बीज बकुला न जास में
प्रथम राग कानरे में तीस सुखदाई सब
बाइस केदारे माझ सरस रस रास में
बारह कल्यान, ग्यारह सारङ्ग में सुख बन्धान
दस हैं विभास, द्वै विललाव प्रकास में
आठ हैं मलार, द्वै गौड़, पाँच हैं वसन्त
गौरी छै, नट द्वै, जुग छवि पास में

—खोज रिपोर्ट १९००।३७

---

(१) खोज रिपोर्ट १९००।३७ (२) सर्वेश्वर वर्ष ५, अङ्क १–५, चैत्र सं० २०१३, पृष्ठ २३३-२३८

कान्हरा में ३०, केदारा में २२, कल्यान में १२, सारङ्ग में ११, विभास में १०, विलावल में २, मलार में ८, गौड़ में २, वसन्त में ५, गौरी में ६, नट में २, कुल मिलाकर ११ रागों में ११० पद हैं।

शिव सिंह ने हरिदास जी के पदों को संस्कृत के मधुर कवि जयदेव की तुलना में रखा है और इनके संस्कृत पद को उद्धृत भी किया है। रागसागर कृत रागकल्पद्रुम में हरिदास के पद हैं, हिन्दी में भी और संस्कृत में भी। हिन्दी वाले पद तो प्रसिद्ध स्वामी हरिदास के हैं। संस्कृत वाले पद किसी दूसरे हरिदास के हैं। यह दूसरे हरिदास बल्लभ-सम्प्रदाय के थे और महाप्रभु बल्लभाचार्य के पुत्र गोस्वामी विट्ठलनाथ के शिष्य थे रागकल्पद्रुम में प्राप्त हरिदास छाप से युक्त सभी पदों में यह सङ्केत हैं। यहाँ तक कि सरोज में उद्धृत पद में भी यह सङ्केत स्पष्ट है।

'जयति राधिकारमण वरचरण परिचरण रति वल्लभाधीश सुत विट्ठलेशे' रागकल्पद्रुम भाग २ के निम्नलिखित पदों में यह सङ्केत है—

पृष्ठ १०० पद ११ सरोज में उद्धृत पद, १०१।१३, १५८।१८, १५९।१९, २०, १६०।२१ १६६।४१, ४२, ४३, १६७।४४, ४५, ४६, १६८।४७, ४८, १६९।४९, ५०। इनमें तो सङ्केत मात्र है, निम्नाङ्कित पद में तो महाप्रभु का पूरा परिवार आ गया है—

जयति भट्ट लक्ष्मण कृष्णवदनानलश्रीमदिल्लमगारुगर्भरत्ने
दैवकृतजनसमुद्धृतिकरणकृत निजाविर्भवनविहित वहुविविधयत्ने
महालक्ष्मीपतौ गोपीनाथ श्रीविट्ठलनिधसुभगतनुजतापे
पृथित मायावादवर्तिवदन ध्वंसि विहितनिजदासजनपक्षपाते
पुष्टिपथकथन रचितानेकग्रन्थमथित भागवत पीयूष सारे
रास युवतीभाव सतत भावित हृदय सदयमानसजनित मोदभारे
निजचरणकमल धरणीपरिक्रमण कृति मात्र पावित वितत तीर्थजाले
कृष्णसेवनविहित शरणागत शिक्षणक्षयितसंदेह दासैकपाले
निजवचन पीयूषवर्षपोषित सततसाहित्य पुरुष जन भृत्यभुक्ते
विविधवाचोर्युक्ति निगमवचनोदितेरपिच दुरितदुष्टजन दुरुक्ते
ईदृशेसति शिरसिसवैदावल्लभे सकल-कर्त्तरिदयालौ
कैवपरिदेवता भवति हरिदासके सकलसाधनरहित जनकृपालौ

—रागकल्पद्रुम, भाग २, पृष्ठ १०१, पद १४

सरोज में दिया हुआ हिन्दी का कवित्त भी प्रसिद्ध स्वामी हरिदास जी का नहीं है। यह भी इन्हीं संस्कृतवाले हरिदास की रचना है। इसमें भी विट्ठलेसराय का उल्लेख है और यह

भी रागकल्पद्रुम, प्रथम भाग, पृष्ठ १५०, से सङ्कलित है। भक्तमाल छप्पय ९१ में स्वामी हरिदास का विवरण है। इसका अंतिम चरण यह है—

"आसधीर उद्योतकर, रसिक छाप हरिदास की"

रुपकला जी के अनुसार इस चरण में आया आसधीर हरिदास जी के पिता का नाम है। हरिदासवंशानुचरित के अनुसार 'आशुधीर' हरिदास जी के गुरू का नाम है। इस ग्रन्थ के अनुसार हरिदास जी का जन्म संवत् १५७७ भाद्रपद शुक्ल अष्टमी, बुधवार को राजापुर ग्राम जिला मथुरा में हुआ था और ये जाति के सनाढ्य ब्राह्मण थे। युवावस्था में एक रोज ये घोड़े पर बैठ कर वृन्दावन आए। वहाँ इनको घोड़े पर बैठा देख कर श्री स्वामी आशुधीर ने कहा—

नहिं पावत ब्रह्मादि सुर, विलसत जुगल सिहाय
अस बल कोमल भूमिपर, सुरंग फिरावत हाय

स्वामी जी के ऐसा कहते ही हरिदास जी को दिव्य दृष्टि प्राप्त हो गई और वे विरक्त हो उनके शिष्य हो गये।[1] इसी ग्रन्थ में यह भी लिखा है कि हरिदास जी को संवत् १५६७ मार्गशीर्ष कृष्ण ५ को विहारी जी ने दर्शन दिए।[2] स्पष्ट है कि इनका ऊपर दिया जन्म संवत् १५७७ अशुद्ध छप गया है और सर्वस्वीकृत सं० १५३७ ही इनका जन्म संवत् है। हरिदास जी के शिष्य सहचरिशरण जी ने इनके सम्बन्ध में अनेक सूचनाएँ दी हैं—

श्री स्वामी हरिदास रसिक सिर मौर अवीहा
दुज सनाढ्य सिरताज, सुजस कहि सकत न जीहा
भादों सुकुल अष्टमी औ बुधवार पुनीता
संवत् पंद्रह सौ सैतिस को ताविच उदित सुभीता

हरिदासवंशानुचरित के अनुसार स्वामी जी का देहावसान ९५ वर्ष की वय में संवत् १६३२ आश्विन शुक्ल पूर्णिमा को हुआ था[4]।

९६३।८०३

(५) हरिदेव कवि, बनिया, वृन्दाबननिवासी। इन्होंने छन्द-पयोनिधि नामक पिङ्गल का ग्रन्थ बहुत सुन्दर बनाया है।

---

(१) हरिदासवंशानुचरित, पृष्ठ १२ (२) वही, पृष्ठ १३ (३) आज, २० मार्च १९६०, 'सङ्गीत सम्राट स्वामी हरिदास'—जवाहरलाल चतुर्वेदी (४) वही, पृष्ठ ३८।

सर्वेक्षण

हरिदेव जी के दो ग्रन्थ खोज के मिले हैं—

(१) छन्दपयोनिधि १६१७।७२ए, १६४७।४३३। इसी ग्रन्थ का उल्लेख सरोज में हुआ है। इसकी रचना सं० १८९२ में माघ सुदी ५, रविवार को हुई—

धरौ नैन निधि सिद्धि ससि संमत सुखद उदार
माघ शुक्ल तिथि पंचमी रवि नन्दन सुभवार २०३

ग्रन्थ की पुष्पिका से इनके पिता का नाम रतीराम सूचित होता है—

"इति श्रीराधिकारमणपदारविंदमकरन्दपानानन्दित अलिद श्रीरतीराम आत्मज छन्द-पयोनिधे नाम पद्याधिकानेअष्टमोतरंग ॥८॥ —खोज रिपोर्ट १९४७।४३३

(२) भूषणभक्ति विलास १९१७।७२ बी। इस ग्रन्थ का रचनाकाल सं० १९१४ का मधुमास है—

वेद छन्द नवनिधि विसद, ब्रह्म अंक मधु मास
हरिदेव सु कीनो विसद भूषन भक्ति विलास ३९८

यह अलङ्कार का ग्रन्थ है। कवि के गुरू का नाम रसिक गोविन्द था।[१] विनोद (११४८) में सरोज के ९६३ और ९८९ संख्यक हरिदेव और हरदेव को एक कर दिया गया है। यह ठीक नहीं।

९६४।८०४

(६) हरीराम कवि, सं० १७०८ में उ०। इन्होंने पिङ्गल बहुत अच्छा बनाया है।

सर्वेक्षण

हरीराम के पिङ्गल ग्रन्थ रत्नावली की चार प्रतियाँ खोज में मिली हैं[२]। इसकी रचना सं० १७९५ में डीडवाना, जोधपुर, में हुई।

---

(१) खोज रिपोर्ट १९१७।७२ (२) वही १९०६।२५७ १९१२।७३, १९४७।४३५, राज रिपोर्ट ३, पृष्ठ १२६।

५ १ ७ १
संवत सर नव मुनि ससी नव नवमी गुरु भाँति
डीडवान दृढ़ कूप तट ग्रन्थ जन्म थल जानि ११०
—राज० रिपोर्ट ३

राज० रिपोर्ट में इसका रचनाकाल सं० १७९७ दिया गया है। यद्यपि यह प्रमादवश हुआ है। सर का निश्चित अंक ५ है, न कि ७। १९४७ वाली प्रति के स्वामी के कथनानुसार इसका रचनाकाल सं० १६५१ है। पर प्रमाणाभाव में यह कथन मान्य नहीं। इस ग्रन्थ में छन्द और अलङ्कार साथ-साथ हैं, अतः इसका नाम छन्दरत्नावली रखा गया।

ग्रन्थ छन्द रत्नावली सारथ याको नाम
भूषन भारती तें भर्यौ कहे दास हरीराम १०९

इसमें कुल ११० छन्द है। राज० रिपोर्ट के अनुसार इनका पूरा नाम हरीराम दास निरञ्जनी है।

सरोज में दिया सं० १७०८ अशुद्ध है। यह रचनाकाल तो है ही नहीं, जन्मकाल भी नहीं हो सकता। इनका जन्म सं० १७५० के आस-पास किसी समय हुआ रहा होगा। सरोज में पिलङ्ग नाम से अभिहित ग्रन्थ प्राप्त 'छन्द रत्नावली' है।

९६५।८०५

(७) हरदयाल कवि। इन्होंने शृङ्गार की सुन्दर कविता की है।

सर्वेक्षण

हरिदयाल कवि के सम्बन्ध में कोई भी सूचना सुलभ नहीं।

९६६।८०६

(८) हिरदेश कवि, वंदीजन, झाँसीवाले, सं० १९०१ में उ०। इन्होंने शृङ्गार का नवरस नामक ग्रन्थ बनाया है।

सर्वेक्षण

हिरदेश वंदीजन के भी सम्बन्ध में कोई सूचना सुलभ नहीं।

९६७।८०८

(९) हरिहर कवि, सं० १७९४ में उ० । यह सत्यकवि थे ।

सर्वेक्षण

हरिहर कवि का नाम सूदन की प्रणम्य कवि सूची में है, अतः सं० १८१० के आस-पास या कुछ पूर्व इनका अस्तित्व सिद्ध है । सरोज में दिया सं० १७९४ उपस्थितिकाल या रचनाकाल ही है । यह जन्मकाल कदापि नहीं हो सकता, जैसा कि ग्रियर्सन (४२९) और विनोद (९२६) में स्वीकार किया गया है, क्योंकि सूदन की प्रणम्य कवि सूची में सम्मिलित होने के लिए १६ वर्ष की आयु अपर्याप्त है ।

९६८।८०९

(१०) हरिकेश, जहाँगीराबाद, सेंहुड़ा, बुन्देलखण्डवासी, सं०१७६० में उ० । यह कवि राजा छत्रसाल के यहाँ पन्ना में थे । इनका काव्य बहुत ललित है ।

सर्वेक्षण

हरिकेश जी जहाँगीराबाद, परगना सैनुहड़ा, राज्य दतिया के निवासी थे । इनके निम्न लिखित दो ग्रन्थ खोज में मिले हैं—

(१) जगतराज दिग्विजय १९०६।४९ ए । इसमें जगतराज की दिग्विजय का वर्णन है । जैतपुर नरेश जगतराज के जीवन के अतिरिक्त इसमें चन्देल, भूमिहार, गौड़ आदि अन्य शासक जातियों का भी वर्णन है । ग्रन्थ इतिहास की दृष्टि से महत्वपूर्ण है ।

महाराज छत्रसाल (राज्यकाल सं० १७२२-८८) और उनके दो पुत्रों, हृदयसाहि राज्यकाल (१७८८-९६) और जगतराज (राज्यकाल सं० १७८८-१८१५) के आश्रय में हरिकेश जी थे । जगतराज और दलेल खां पठान के बीच सं० १७७६ में युद्ध हुआ था । जगतराज दिग्विजय में मुख्यतया इसी युद्ध का विवरण है, अतः यह ग्रन्थ सं० १७७६ के बाद किसी समय रचा गया । इस ग्रन्थ से कवि के सम्बन्ध में केवल इतना ज्ञात होता है कि कवि ब्राह्मण था ।[1]

उवीश पुनि विप्रहि कह्यौ जो चहो छिप्र सु मांगिए ८४५

(२) ब्रज लीला १९०६।४९ बी । इस ग्रन्थ में राधाकृष्ण की लीलाएँ हैं । इसमें छत्रसाल और हृदयसाहि की प्रशस्ति के भी कुछ छन्द हैं ।

---

(१) चरखारी राज्य के कवि, ना० प्र० पत्रिका, भाग ९, अङ्क ४, सं० १९८५

सरोज में दिया सं० १७६० हरिकेश का उपस्थितिकाल है। अनुमान से इनका जन्मकाल सं०१७४० के आस-पास होना चाहिये। यह सं० १८०० के आस-पास तक जीवित रहे होंगे।

९६९।८१०

(११) हरिवंश मिश्र, विलग्रामी, सं०१७२९ में उ०। यह महाकवि अमेठी में बहुत दिन तक राजा हनुमन्त सिंह के पास रहे हैं। हमने इनके हाथ के लिखे हुए पदमावत ग्रन्थ में यह बात देखी है कि इन्होंने अब्दुलजलील विलग्रामी को भाषाकाव्य पढ़ाया था।

सर्वेक्षण

हरिवंश मिश्र अब्दुलजलील विलग्रामी के काव्यगुरु थे। जलील औरङ्गजेब के समकालीन थे। इनका रचनाकाल सं० १७३९ है, अतः सरोज में दिया हुआ संवत् १७२९ ठीक है और हरिवंश का रचनाकाल है। हरिवंश मिश्र के पुत्र का नाम दिवाकर मिश्र था।[१]

खोज में एक और हरिवंश मिले हैं। यह विलग्राम के निकट गङ्गातट पर स्थित श्रीनगर नामक गाँव, जिला हरदोई के रहने वाले थे। यह जाति के भाट थे। इनके पिता का नाम जगदीश था और यह विलग्राम के रहने वाले नीर अहमद या मीरा मदनायक[२] के आश्रित थे। इन्होंने सं० १७६१ में नखशिख की रचना की। यह ग्रन्थ खोज में मिल चुका है[३] और इसी ग्रन्थ से यह सब सूचनाएँ मिलती हैं।

मुकुत देत अनयास, जग नायक की नायिका
मधुनायक को दास, नख शिख बरने आस के २
संवत सत्रह सै बरस एकसठ अधिक गनाइ
कातिक दुतिया चन्द को बुधवार सुख पाइ ३

कवि ने वंश वर्णन इन शब्दों में किया है—

सन्दोही के बँस में हरिहर सिव प्रसाद
ताको सुत जगदीस हौं जामें कछु न विवाद
ता कुल हरिवंश भयो प्रगट घसीटे नाम
भाट वसत श्रीनगर में गङ्गा तट सुभ ग्राम

---

(१) नागरी प्रचारिणी पत्रिका, भाग ९, अङ्क ४, कवि संख्या २९७ (२) वही ग्रन्थ, कवि संख्या ७०७ (३) खोज रिपोर्ट १९१२।७१

हरिवंश मिश्र और हरिवंश भाट, दोनों समकालीन हैं और दोनों का सम्बन्ध बिलग्राम से है। हो सकता है कि दोनों एक ही हों। केवल जाति का अन्तर बाधक है। यदि सरोज-वर्णित इन हरिवंश की जाति मिश्र न हो, तो दोनो कवि अभिन्न हो सकते हैं।

९७०।८२०

(१२) हित हरिवंश स्वामी गोसाई. वृन्दावन निवासी, व्यास स्वामी के पुत्र सं० १५५९ में उ०। इनके पिता व्यास जी ने राधावल्लभी सम्प्रदाय चलाया। यह देववन्द के रहने वाले गौड़ ब्राह्मण थे। हित हरिवंश जी महान् कवि थे। संस्कृत में राधा सुधानिधि नामक ग्रन्थ और भाषा में हित चौरासी धाम ग्रन्थ इन्होंने महा सुन्दर बनाया है।

सर्वेक्षण

हित हरिवंश का जन्म वैशाख शुक्ल ११, चन्द्रवार, सं० १५५९ को मथुरा से चार मील दक्षिण बादगाँव में हुआ था और अन्तर्धान आश्विन शुक्ल शरत्पूर्णिमा सं० १६०९ को। बहुत से लोग इनका जन्मकाल उक्त तिथि को संवत् १५३० में मानते हैं। पर उक्त वर्ष में उक्त तिथि शनिवार को पड़ी थी। वाणी ग्रन्थों में १५५९ ही स्वीकार किया गया है—

संवत पन्द्रह सौ अधिक, उनसठ कौ बैसाख
सुदि एकादसी प्रकट हित, पुजई रस अभिलाख

—उत्तमदास कृत 'रसिक माल' से

हरिवंश जी गौड़ ब्राह्मण थे। इनके पिता का नाम व्यास मिश्र और माता का तारावती था। यह देवबन्द जिला सहारनपुर के रहने वाले थे। व्यास मिश्र का ही एक अन्य नाम केशवदास मिश्र भी कहा जाता है जो ठीक नहीं। केशवदास मिश्र, व्यास मिश्र के अग्रज थे। उक्त केशवदास मिश्र ने सन्यास ले लिया था। उनका संन्यासी नाम नृसिंहाश्रम था। हरिवंश जी का जन्म यात्राकाल में हुआ था। कहा जाता है कि राधिका जी ने इन्हें स्वप्न में मन्त्र दिया था। कुछ लोग इन्हें गोपाल भट्ट का शिष्य कहते हैं पर यह बात प्रमाणित नहीं होती। गोपाल भट्ट जी की साम्प्रदायिक भावना, धार्मिक निष्ठा, भक्ति पद्धति, व्रजभूमि आगमन काल, जीवन काल आदि धार्मिक एवं ऐतिहासिक पहलुओं पर बिना विचार किए ही यह सब निराधार लिख दिया गया है। साम्प्रदायिक विद्वेष और ईर्ष्या भावना का इसमें योग है।

१६ वर्ष की आयु में इनका विवाह रुक्मिणी देवी से हुआ। इनसे इन्हें तीन पुत्र और एक

कन्या उत्पन्न हुई—(१) वनचन्द्र, संवत् १५८५, चैत्र वदी ६, मङ्गलवार; (२) कृष्णचन्द्र, संवत् १५८७, माघ सुदी ६; (३) गोपीनाथ, संवत् १५८८, फागुन पूर्णिमा; (४) पुत्री साहिबदे, संवत् १५८६ ।

हरिवंश जी की माता तारा का देहावसान सं० १५८६ में एवं पिता व्यास जी का सं० १५६० में हुआ । १५६० में ही इन्होंने देवबन छोड़ा और वृन्दाबन को चले। रास्ते में निरथावल ग्राम में आत्मदेव नामक ब्राह्मण ने इन्हें अपनी दो युवा कन्याएँ कृष्णादासी और मनोहरीदासी व्याह दी । यह उनके साथ १५६० फाल्गुन एकादशी को वृन्दावन पहुँचे १५६१ में इन्होंने 'राधा-वल्लभ' की मूर्ति सेवाकुञ्ज में स्थापित की । १५६८में मनोहरीदासी से इनके चौथे पुत्र मोहनचन्द्र का जन्म हुआ ।इनका देहावसान सं० १६०६ अश्विन पूर्णिमा को हुआ—

संवत सोलह सै रु नौ, आश्विन पूनौ स्वच्छ
ता दिन श्री हरिवंश वपु दीसत नहि जग अच्छ

—उत्तमदास की बानी[1]

इन्होंने राधाबल्लभी सम्प्रदाय की स्थापना की । इनके पिता व्यास जी इस सम्प्रदाय के संस्थापक नहीं थे, जैसा कि सरोज में लिखा है ।

हरिवंश जी ब्रजभाषा के श्रेष्ठ कवियों में हैं । इनका हित चौरासी परम प्रसिद्ध ग्रन्थ है । इसमें ८४ पद हैं । ११, १२ संख्यक पद नरबाहन छाप युक्त हैं । इनकी स्फुटपदावली में कुल २७ छन्द हैं । यमुनाष्टक (८ श्लोक) और राधासुधानिधि (२७० श्लोक) संस्कृत में हैं । इनका सारा साहित्य सं० १९९३ में श्री हित सुधा सागर नाम से प्रभुदयाल मीतल के अग्रवाल प्रेस मथुरा से प्रकाशित हो चुका है ।

९७१।८११

(१३) हरि कवि । यह महान कवि थे । इन्होंने चमत्कारचन्द्रिका नामक ग्रन्थ भाषा भूषण का टीका और कवि प्रियाभरण नामक ग्रन्थ कविप्रिया का तिलक विस्तारपूर्वक बनाया है । इन्होंने तीनों काण्ड अमरकोष की की भाषा भी किया है ।

---

(१) हित हरिवंश जी का सारा विवरण, 'राधावल्लभ सम्प्रदाय: सिद्धान्त और साहित्य', अध्याय ३ के अनुसार है ।

सर्वेक्षण

यह हरि कवि, वस्तुतः ६६५ संख्यक हरिचरणदास हैं।

६७२।८१२

(१४) हरिवल्लभ कवि। इन्होंने शान्त रस की कविता की है।

सर्वेक्षण

हरिवल्लभ जी के निम्नलिखित ग्रन्थ खोज में मिले हैं:—

(१) भगवत गीता की टीका, १६०२।६०, १६०६।२६०, १६०६।११७, १६१७।७०, १६२३।१५० ए, बी, सी, डी, १६२६।१७३ सी, १६२६।१४७ ए, बी, सी, डी, ई, एफ, एच, आई, जे,पं १६२२।३५ ए बी। यही ग्रन्थ भाषागीता ज्ञान नाम से वर्णित है।[१] इस ग्रन्थ की रचना सं० १७०१ माघ ११ को हुई।

सत्रह सै एकोतरा माघ मास तिथि ग्यास
गीता की भाषा करी हरिवल्लभ सुख रास

—खोज रिपोर्ट १६०६।११७

(२) राधा नाम माधुरी, १६२६।१४७ बी, १६४४।४८७।

(३) सङ्गीत दर्पण, १६२३।१५० ई, एफ, राज० रि० १। यही ग्रन्थ सङ्गीत भाषा[२] नाम से भी प्राप्त है। इसी ग्रन्थ का एक अध्याय 'सङ्गीत सार सुराध्याय'[३] नाम से अलग पुस्तक स्वीकार किया गया है। इसी प्रकार राज० रि० १ में भी 'रागमाला' नाम से इसका एक अध्याय है।

(४) प्रवोधचन्द्रोदय नाटक, राज रिपोर्ट २, पृष्ठ ६६। इस ग्रन्थ से पता लगता है कि हरिवल्लभ जी हित हरिवंश के अनुयायी थे। इस ग्रन्थ के प्रारम्भ में हित हरिवंश और उनके पुत्र हित वनचन्द्र जी की स्तुति है।

श्री राधा वल्लभ पद, कमल मधु के भाइ
हित हरिवंश बड़ी रसिक, रह्यो तिननि लपटाइ १

---

(१) खोज रिपोर्ट १६२६।१७३ ए। (२) यही ग्रन्थ १६०१।६१। (३) यही ग्रन्थ १६२६।७३बी।

ताके चरननि वन्दि के, बनचन्दहि सिर नाइ
रचना पौथी की करौं, जाते करैं सहाइ २

प्रतीत होता है कि हरिवल्लभ जी बनचन्द जी के शिष्य थे। ग्रन्थान्त में कवि ने अपनी छाप यों लगाई है—

हरि वल्लभ भाषा रच्यो चित में भयो निसङ्क
श्री प्रवोधचन्द्रोदयहि छठश्रों बीत्यो श्रङ्क

(५) भागवत भाषा, राज० रिपोर्ट ४, पृष्ठ १३-१४। यह अनुवाद मथुरादास के पुत्र किशोर के कथनानुसार प्रस्तुत किया गया था—

दंडन मथुरादास सत श्री किशोर बड़ भाग
हौं दग जुगलकिशोर की वल्लभ सौं अनुराग ३०
भाषा श्री भागवत की तिनके उपजी चाह
हरिवल्लभ निज बुद्धि सम कीनौ ताहि निवाह ३१

इस अनुवाद में कुछ सहायता चतुर्भुज के पुत्र कमल नयन ने भी की थी।

चतुर चतुरभुज को तनय, कमल नैन थिर चित्त
बँध्यो नेह गण सो रहें हरि, वल्लभ संग नित्त ३२
गुरु की कृपा प्रताप तें, कविन में सु प्रवीन
भाषा भागवत की करत, कछु सहाय तिन कीन ३३
यह द्वादस भाषा रच्यो, हरि वल्लभ सज्ञान
त्रयोदसी अध्याय में, आश्रय सहित बखान ३४

हरिवल्लभ कृत गीता के भाषानुवाद की चौरी एक आनन्द राय ने की है। साहित्यिक चौरी का यह एक अच्छा उदाहरण है। खोज के निरीक्षक रायबहादुर हीरालाल ने हरिवल्लभ जी के पक्ष में निर्णय दिया है।[1]

रीतिकाल के प्रसिद्ध कवि कुमारमणि भट्ट के पिता का नाम भी हरिवल्लभ था। हो सकता है कि यह हरिवल्लभ जी कुमारमणि भट्ट के पिता ही हों। कुमारमणि के रसिक रसाल का रचनाकाल सं० १७७६ है। अनेक रिपोर्टों में गीता का अनुवाद काल सं० १७७१ दिया भी है।

---

(१) खोज रिपोर्ट १९१७,पृ १४

९७३।८१३

(१५) हरिलाल कवि। इन्होंने सामान्य कविता की है।

सर्वेक्षण

खोज में चार हरिलाल मिले हैं—

(१) हरिलाल कवि—मथुरा निवासी, माथुर ब्राह्मण। अनुमानतः माथुर कृष्ण कवि के वंशज। दशम स्कन्ध भाषा,१९३२। ७५, ब्रज वनोद लीला पञ्चाध्यायी १९१७।७३;ब्रजविहार लीला १९४७।४३८।

(२) हरिलाल मिश्र—आजमगढ़ निवासी, बादशाह आलम के आश्रित। सं० १८५० के लगभग वर्तमान। राम जी की वंशावली १९०९।११३।

(३) हरिलाल व्यास सं० १८३७ के लगभग वर्तमान राधावल्लभी सम्प्रदाय के वैष्णव। सेवकबानी सटीक रसिक मेंदिनी १९०९।११४।

(४) हरिलाल गोस्वामी—रूपलाल गोस्वामी के पुत्र, राधावल्लभी सम्प्रदाय के वैष्णव सं० १७३८ के लगभग वर्तमान। इनका कोई ग्रन्थ नहीं मिला है। रूपलाल गोस्वामी के प्रसङ्ग में १९१२।१५८, इनका उल्लेख हुआ है। सरोज में ९७३ और ९९० संख्याओं पर दो हरिलाल हैं। पहले की कविता सामान्य कही गई है, एक सवैया उदाहृत है, जिसमें कवि की छाप लाल है, हरिलाल नहीं। दूसरे हरिलाल सुन्दर शृङ्गारी कवि हैं। इनका एक कवित्त उद्धृत है, जिसमें हरिलाल छाप है। सरोज के ये दोनों हरिलाल ऊपर वर्णित चारों हरिलालों में से कौन हैं, इनमें से हैं भी या नहीं, कुछ कहा नहीं जा सकता।

९७४।८१४

(१६) हठी कवि ब्रजवासी, सं० १८४७ में उ०। इन्होंने राधाशतक नामक ग्रन्थ बनाया है।

सर्वेक्षण

राधाशतक का नाम राधासुधा शतक है। इसी नाम से यह ग्रन्थ भारत जीवन प्रेस, काशी से प्रकाशित हो चुका है। इसमें प्रारम्भ में ११ दोहे, फिर १०३ कवित्त है जिनमें सवैयै मिले हुए है। एक दोहे में रचनाकाल १८३७ दिया हुआ है—

७ ३ ८ १
रिषि सु देव बसु ससि सहित, निरमल मधु को पाय
माधव तृतिया भृगु निरखि रच्यो ग्रन्थ सुखदाय १०

इस ग्रन्थ की दो प्रतियाँ खोज में भी मिली हैं।[1] १९२३।१६३ वाली प्रति के अनुसार इसका रचनाकाल सं० १८४७ है। सम्भवत: 'देव' उलटकर 'वेद' हो गया है। १९०५।८९ की पुष्पिका में हठी कवि को द्विज कालिञ्जरवासी कहा गया है। हो सकता है, यह पहले कालिञ्जर-वासी रहे हों, फिर विरक्त हो जाने पर ब्रजवासी हो गए हों। ब्रजमाधुरी सार के अनुसार यह हित सम्प्रदाय में दीक्षित थे।

सरोज (३,७ संस्करण)में दिया सं० १८८७ ठीक नहीं। कवि का रचनाकाल सं० १८३७ या १८४७ है। १८८७ तक तो यह शायद जीवित भी न रहे हों, फिर यह जन्मकाल कैसे हो सकता है, जैसा कि ग्रियर्सन (६६४) में स्वीकृत है। प्रथम संस्करण में इनका समय सं० १८४७ दिया गया है।

९७५।८१५

(१७) हनुमान कवि, बन्दीजन बनारसी। वि०। इन्होंने शृङ्गार की सरस कविता की है। सुन्दरीतिलक में इनके बहुत कवित्त हैं।

सर्वेक्षण

हनुमान बनारसी बन्दीजन थे। यह गोकुलनाथ के शिष्य मणिदेव के पुत्र थे। इनका जन्म सं० १८९८ में हुआ था। ३८ वर्ष की अल्प आयु में ही इनका देहावसान सं०१९३६ में हुआ। इनका कोई ग्रन्थ नहीं मिलता। सरस फुटकर शृङ्गारी कवित्त-सवैये इनके बहुत मिलते हैं। द्विज कवि मन्नालाल से इनकी अच्छी घनिष्टता थी।

९७६।८१६

(१८) हनुमन्त कवि। यह राजा भानुप्रताप सिंह के यहाँ थे।

सर्वेक्षण

भानुप्रताप सिंह बिजावर के राजा थे। यह सं० १९०४ में गद्दी पर बैठे थे। इनका देहान्त सं० १९५६ में हुआ।[2] यही समय इनके दरबारी कवि हनुमन्त का भी होना चाहिए।

---

(१) खोज रिपोर्ट १९०५।८९, १९२३।१६३ (२) बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त इतिहास, अध्याय ३२, उपशीर्षक बिजावर।

विनोद (२२३१) में इन्हें विजावर का ब्राह्मण और गीतमाला का रचयिता कहा गया है। इनकाजन्मकाल सं० १९०३ दिया गया है, जो बहुत ठीक नही प्रतीत होता। सं० १९३५ में इन्होंने पारासरी भाषा या उडुदाय प्रदीप की रचना की थी।[1] इस ग्रन्थ से ज्ञात होता है कि यह किसी नग्र स्थान के निवासी थे और जाति के ब्राह्मण थे।

सरोज में उदाहृत इनके दो छन्दों में से एक कवित्त में राजा भानुप्रताप का गुणानुवाद है। इससे इनका उक्त राजा का दरबारी कवि होना सिद्ध है।

९७७।८१७

(१९) होलराय कवि, बन्दीजन, होलपुर, जिले बाराबंकी सं० १६४० में उ०। यह महान् कवि अकबर के दरबार तक, राजा हरिवंश राय दीवान कायस्थ बदरकावासी के वसीले से पहुँचे और एक चक पाकर उसी में होलपुर नामक ग्राम बसाया। एक दिन श्री गोस्वामी तुलसीदास जी अयोध्या से लौटते समय होलपुर में आए। होलराय ने गोसाईं जी के लोटे की प्रशंसा में कहा—

"लोटा तुलसीदास को, लाख टका को मोल"

सुनकर गोसाई जी बोले—

"मोल तोल कछु है नहीं, लेहु राय कवि होल"

होलराय उस लोटे को मूर्ति के समान स्थापित कर उसके ऊपर चबूतरा बाँध पूजन करते रहे। हमने अपनी आँखों से देखा है कि आज तक उसकी पूजा होती है। इस होलपुर में सिवा गिरिधर और नीलकण्ठ इत्यादि के कोई नामी कवि नहीं हुए। इन दिनों लछिराम और सन्तबकस, ये दो कवि अच्छे हैं। यह गाँव आज तक इन्हीं बन्दीजनों के पास है।

सर्वेक्षण

होलराय के सम्बन्ध में इससे अधिक सूचना कहीं भी नहीं दी गई है। ग्रियर्सन (१२६) और विनोद (१४६) में सरोज में दिए सं० १६४० को उचित ही उपस्थितिकाल स्वीकार किया गया है। शुक्ल जी का इनके सम्बन्ध में यह मन्तव्य ठीक प्रतीत होता है—

"रचना इनकी पुष्ट होती थी, पर जान पड़ता है कि ये केवल राजाओं और रईसों की विरुदावली वर्णन किया करते थे जिसमें जनता के लिये ऐसा कोई विशेष आकर्षण नहीं था कि इनकी रचना सुरक्षित रहती।"—हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ २१५

---

(१) खोज रिपोर्ट १९४४।४७४

९७८।८१९

(२०) हितनन्द कवि। यह सत्कवि थे।

सर्वेक्षण

हितनन्द कवि के सम्बन्ध में कोई सूचना सुलभ नहीं।

९७९।८२१

(२१) हरिभान कवि। इन्होंने भाषासाहित्य का नरेन्द्र भूषण नामक ग्रन्थ महासुन्दर बनाया है। इन्होंने अपने घर और सन्-संवत् का कुछ हाल नहीं लिखा।

सर्वेक्षण

हरिभानु, कवि का पूरा नाम है और कविता में भानु छाप है। इनका बनाया नरेन्द्र भूषण नामक अलङ्कार ग्रन्थ खोज में मिला है।[1] यह ग्रन्थ बुन्देला रनजोर के लिये लिखा गया था। १७६, १८०, १९५, २०१, २०३, २११, २२४, २२६, २२८, २३४, और २६९ संख्यक छन्दों में रनजोर सिंह दीवान की प्रशंसा है। सरोज में इसी ग्रन्थ से दो कवित्त उद्धृत है। इनमें से दूसरे में रनजोर सिंह की प्रशस्ति है।

९८०।८२२

(२२) हुसेन कवि, सं० १७०८ में उ०। इनके कवित्त हजारे में हैं।

सर्वेक्षण

हुसेन कवि के कवित्त हजारे में थे, अतः सं० १७५० के पूर्व इनका अस्तित्व सिद्ध है। विनोद (२७६) में,सरोज में दिया गया सं० १७०८ रचनाकाल माना गया है। प्रेमाख्यानक कवि गाजीपुरी उसमान के पिता का भी नाम हुसेन था, जो सं० १६७० के पूर्व उपस्थित थे। हो सकता है, यह हुसेन वही हों। पर इसकी सम्भावना बहुत कम है, क्योंकि सरोज के हुसेन शैली एवं भाव धारा से रीतिकालीन कवि सिद्ध होते हैं।

---

(१) खोज रिपोर्ट १९२३।५२

९८१।८२३

(२३) हेमगोपाल कवि, सं० १७८० में उ०। हमने इनका एक ही कवित्त महाकूट पाया है।

सर्वेक्षण

हेमगोपाल के सम्बन्ध में कोई सूचना सुलभ नहीं।

९८२।८२४

(२४) हेमनाथ कवि। यह केहरी कल्यान सिंह के यहाँ थे।

सर्वेक्षण

केहरी कल्यान सिंह की पहचान नहीं हो सकी। हेमनाथ का महाभारत विराटपर्व खोज में मिला है।[1] प्राप्त प्रति का लिपिकाल सं० १८७५ है, अतः कवि इससे पहले का है।

९८३।८२५

(२५) हेम कवि। इनके शृङ्गार के सुन्दर कवित्त हैं।

सर्वेक्षण

सरोज के हेम कोई घोर शृङ्गारी रीतिकालीन कविंद हैं। इनसे भिन्न राजस्थान के रहने वाले हेम कवि थे। यह जैन थे। इनके गुरु का नाम गुणचन्द था। जैन-सम्प्रदाय सम्बन्धी इनका एक ग्रन्थ चूनरी[2] प्राप्त हुआ है।

९८४।८२६

(२६) हरिश्चन्द्र बाबू बनारसी, गोपालचन्द्र साह उपनाम गिरिधरदास के पुत्र। वि०। यह विद्या के प्रचार में रात-दिन लगे रहते हैं। सब विद्याओं की पुस्तकें अपने सरस्वती भण्डार में इकट्ठी की हैं। सब प्रकार के गुणीजन इनकी सभा में विराजमान रहते हैं। यह भाषा और उर्दू दोनों जबानों के कवि हैं। इन्होंने सुन्दरीतिलक नामक बहुत ही ललित संग्रह छपवाया है और जो ग्रन्थ इन्होंने बनाए हैं, उनके हालात से हम नावाकिफ़ हैं।

---

(१) खोज रिपोर्ट १९४७।४४५ (२) वही १९३८।९४

सर्वेक्षण

हरिश्चन्द्र का जन्म भाद्र शुक्ल ५, सं० १६०७ को काशी में एक अत्यन्त सम्पन्न अग्रवाल कुल में हुआ। इनके पिता का नाम गोपालदास उपनाम गिरिधरदास था। हरिश्चन्द्र हिन्दी के बहुत बड़े स्रष्टाओं एवं पोषकों में से हैं। यह आधुनिक हिन्दी के जन्मदाता, हिन्दी नाटकों के प्रमुख प्रारम्भिक प्रणेता एवं हिन्दी गद्य को नए साँचे में ढालने वाले हैं। इनके ग्रन्थों की संख्या १७५ तक कही गई हैं। ये सभी सभा से तीन भागों में प्रकाशित हो चुके हैं। इनका निधन ३५ वर्ष की अल्प आयु में सं० १६४२, में (६ जनवरी, १८८५) हुआ। सरोज में इनके सम्बन्ध में जो भी सूचनाएँ दी गई, ठीक हैं।

६८५।८२७

(२७) हरिजीवन कवि। इनके कवित्त सुन्दर हैं।

सर्वेक्षण

हरिजीवन कवि काठियावाड़, पोरबन्दर के निवासी थे और यह बड़े ब्रह्मनिष्ठ थे। इनकी बहुत सी ब्रजसम्बन्धी कविताएँ पायी जाती हैं। यह सं० १६३८ के आस-पास उपस्थित थे और सरोजकार के समकालीन थे।[1]

६८६।८३०

(२८) हरिजन कवि, सं० १६६० में उ०। इनके कवित्त हजारे में है।

सर्वेक्षण

हरिजन के कवित्त हजारे में थे, अतः सं० १७५० के पूर्व इनका अस्तित्व सिद्ध है।

६८७।८३१

(२९) हर जू कवि, सं० १७०५ में उ०। ऐजन। इनके कवित्त हजारे में है।

सर्वेक्षण

इन हर जू कवि के कवित्त हजारे में थे, अतः सं० १७५० के पूर्व इनका अस्तित्व सिद्ध है।

---

(१) गुजरात का हिन्दी साहित्य, माधुरी, जून १६२७

हरज्जू मिश्र आजमगढ़ के रहने वाले थे। यह सरयूपारीण ब्राह्मण थे। इनके पूर्वज सरवार से पहले जौनपुर आए; फिर आजमगढ़। हरज्जू के पितृव्य बलदेव मिश्र जौनपुर से आज़मगढ़ आए थे, पर जौनपुर से सम्पर्क नहीं टूटा था। हरज्जू मिश्र के वंशज श्री दयाशङ्कर मिश्र आजमगढ़ के गुरुटोला मुहल्ले में आज भी विद्यमान हैं। इनके पूर्वज आजमगढ़ के राजाओं के गुरु थे। इन्हीं लोगों के नाम पर इस मुहल्ले का नाम गुरुटोला पड़ा। आजमगढ़ की स्थापना सं० १७२२ में आजन खाँ ने की थी। बलदेव मिश्र इनके समय में थे। हरज्जू मिश्र आजम खाँ के वंशज राजा इरादत्त खाँ के मन्त्री, सहायक और शुभचिन्तक थे। इरादत खाँ के भतीजे जहाँयार खाँ ने उन्हें ५१ बीघे जमीन दी थी। हरज्जू मिश्र के बनाए हुए दो ग्रन्थ हैं और दोनों खोज में मिल चुके हैं।

(१) अमरकोष भाषा —१९०९।११२। इस ग्रन्थ का रचनाकाल सं० १७९२ है—

> १ ७ ९ २
> ससि मुनि निधि अरु पच्छ गनि संवत विक्रम लेहु
> वार दिवाकर द्वैज सित माह उदित भव एहु

इस ग्रन्थ में कवि ने अपना वंश-परिचय भी दिया है, पर यह अंश रिपोर्ट में उद्धृत नहीं है। दयाशङ्कर मिश्र से प्राप्त यह अंश नीचे दिया जा रहा है।

> ब्राह्मण सरयूपार के बसै जौनपुर आनि
> जगन्नाथ मिश्रहि दियो ग्राम दिलीश्वर मानि
> तिनके कुल पंचादरित बैद्यराज भए सर्व
> चरक सुश्रुत आदिक पढ़े ग्रन्थ सवै तजि गर्व
> तिनके कुल वलदेव कवि भए काव्यपथ पेख
> भाषा प्राकृत संसकृत तीनों बचन विशेख
> अग्र सहोदर ताहि के सदानन्द विख्यात
> तिनके हरजू मिश्र भे भाषा कवि गुन ज्ञात

यह ग्रन्थ आजमगढ़ के किसी सेठ अमीचन्द के लिए प्रस्तुत किया गया था।

(२) विहारी सतसई की टीका—१९४१।३१२, १९४४।४७७। रिपोर्ट में हरज्जू जौनपुर निवासी, किसी रामदत्त के अश्रित और सं० १७९१ में वर्तमान कहे गए हैं। यह वही टीका है, जिसमें सतसई के दोहों को वह अनुक्रम दिया गया, जो आजमशाही क्रम के नाम से ख्यात है।

> धरौ अनुक्रम ग्रन्थ को नायकादि अनुसार
> सहर जौनपुर में बसत हरजू सुकवि विचार ७१७

सकल वितिक्रमौ होइ अर्थ अति गौर
रामदत्त के हुकुम सो करौं सरल सब ठौर ७१६

हरजू मिश्र ने आजम खाँ के लिये सं० १७८१ में सतसई को आजमशाही क्रम दिया था—

सतरह सै एकाशिया अगहन पाँचै सेत १
लिखि पोथी पूरन करो आजम खाँ के हेत

सरोज में दिया सं० १७०५ अशुद्ध है।

९८८।८३२

(३०) हीरामणि कवि, सं० १६८० में उ०। ऐजन। इनके कवित्त हजारे में है।

सर्वेक्षण

हीरामणि जी का एक ग्रन्थ एकादशी माहात्म्य[२] खोज में मिला है। दोहा-चौपाइयों में है। इसके कर्त्ता प्रसिद्ध कवि सेनापति के गुरु हीरामणि दीक्षित कहे गए हैं, जो सत्रहवीं शती के मध्य में हुए हैं और जिनका उल्लेख सेनापति ने अपने प्रसिद्ध काव्य ग्रन्थ कवित्त रत्नाकर (रचनाकाल सं० १७०६) में बड़े गर्व से किया है—

महा जानमनि विद्या दानहू में चिन्तामनि
हीरामनि दीछित तें पाई पण्डिताई है

सरोज में दिया सं० १६८० ठीक है और कवि का उपस्थितिकाल या रचनाकाल है।

९८९।८२८

(३१) हरदेव कवि, सं० १८३० में उ०। यह कवि रघुनाथ राव पेशवा के यहाँ थे।

सर्वेक्षण

हरदेव कवि नागपुर के रघुनाथ राव, (सं० १८७३-७५) के यहाँ थे, अतः हरिदेव कवि का रचनाकाल सं० १८७५ है। सरोज में दिया सं० १८३० इनका जन्मकाल या बाल्यकाल हो सकता है। इनके बनाए हुए दो ग्रन्थ माने गए हैं।

---

(१) ना० प्र० पत्रिका, वैशाख १९८५, पृष्ठ ७८ (२) खोज रिपोर्ट १९२३।१६७

(१) नायिका लक्षण—११०६।१७१ ।

(२) पिङ्गलचरणपद दोहा–विहार रिपोर्ट २ । यह १९ चरणों का पिङ्गल ग्रन्थ है ।
इसी समय के हरदेव नामक दो और कवि मिले हैं—

(१) हरदेव भट्ट—इनके दो ग्रन्थ मिले हैं—

क—रङ्गभावमाधुरी १९२६।१४३ए । इसका लिपिकाल सं० १८७३ है ।

ख—केशब जसचन्द्रिका १९२६।१४३बी । इसमें कृष्ण स्वामी के शिष्य, मिश्र मोहनलाल के पुत्र, सखी सम्प्रदाय के अनुयायी केशव जी का यश वर्णित है । इसका रचनाकाल सं० १८६९ है ।

संवत सकल पराण के रस नव ऊपर सारु

हिय हरिबोध प्रबोधिनी भई चन्द्रिका चारु

इस ग्रन्थ से इनके गुरु का नाम नन्दकिशोर ज्ञात होता है—

श्री गुरु नन्दकिशोर पद बन्दौ करि मन चाव

छिप्यो जानि जिन प्रकट किय केशव हिय को भाव २

यह नन्दकिशोर जी वृन्दावन में रहते थे—

"वृन्दावन विहारहिं सदा तिहि पद कंज मकरंद"

रङ्गभावमाधुरी के विवरण के अन्त में इनका उपनाम 'दरस' लिखा गया है । मेरी समझ से यह पठन दोष के कारण 'दास' के स्थान पर 'दरस' हो गया है । इसी ग्रन्थ की पुष्पिका से ज्ञात होता है कि यह गोकुल के रहनेवाले थे और इनके पिता ज्योतिषी थे ।

(२) हरिदेव ब्राह्मण—इनके भी दो ग्रन्थ मिले हैं—

क—गुरु सत १९४४।४८५क । इसकी रचना सं० १८८९ में हुई ।

अंक(९) नाग(८) बसु(८) चन्द्र(१) युत संवत कियौ प्रमान

सुदि पष्टी आषाढ़ की रच्यौ ग्रन्थ सुभ थान ९९

ख—रामायण रामवैभव—९४४।४८५ख । इसका रचनाकाल सं० १८९४ है ।

वेद(४) अंक(९) बसु(८) चन्द्रमा(१) संवत मिती पुनीत

आश्विन शुक्ला सप्तमी बार बरनि बुध मीत

९९०।८२९

(३२) हरिलाल कवि २ । इनके श्रृङ्गार के सुन्दर कवित्त हैं ।

सर्वेक्षण

खोज में चार हरिलाल मिले हैं जिनका विवरण ९७३ संख्या पर दिया गया है। कुछ कहा नहीं जा सकता कि सरोज के ये दोनों हरिलाल अभिन्न हैं अथवा भिन्न; और ये खोज में प्राप्त चार हरिलालों में से हैं अथवा नहीं; और हैं तो कौन से हैं।

९९१।८३३

(३३) हरिराम प्राचीन, सं० १६८० में उ०। इनका नखशिख बहुत सुन्दर है।

सर्वेक्षण

इन हरिराम प्राचीन के सम्बन्ध में कोई सूचना सुलभ नहीं। ग्रियर्सन (१४१) और विनोद (२७७) में सरोज के ९६४ और ९९१ संख्यक दोनों हरीरामों को मिला दिया गया है।

९९२।८३४

(३४) हिमाचल राम कवि, शान्ति जी श्री ब्राह्मण जिले फैजाबाद, सं० १९०४ में उ०। इनकी सीधी-साधी कविता है।

सर्वेक्षण

हिमाचलराम का विवरण सरोजकार ने महेशदत्त के भाषा काव्यसंग्रह से लिया है। महेश द्वारा दिया गया पूरा विवरण यह है—

"ये शाकद्वीपीय ब्राह्मण जिले बहिरायच भटौली के राज्य में बड़े ग्राम के रहने वाले थे। इन्होंने नागलीला, दधिलीला आदि ग्रन्थ बनाए और संवत् १९१५ में वहीं मृतक हुए।"

—भाषा काव्यसंग्रह, पृष्ठ १३४

स्पष्ट है 'शांति जी श्री' भ्रष्ट हैं। यह शाकद्वीपी ब्रह्मण थे। यदि हिमाचलराम का मृत्युकाल सं० १९१५ है, तो सरोज में दिया सं० १९०४ निश्चित रूप से रचनाकाल है, यह जन्मकाल नहीं है, जैसा कि ग्रियर्सन (६२६) और विनोद (२२९४) में स्वीकृत है।

९९३।८३५

(३५) हीरालाल कवि। इनके शृङ्गार के बहुत सुन्दर कवित्त हैं।

सर्वेक्षण

हीरालाल जी दलपतिराय के पौत्र और हेमराज के पुत्र थे। इनके दो ग्रन्थ खोज में मिले हैं।

(१) राधा शतक—१९०५। सरोज में उद्धृत छन्द इसी ग्रन्थ का ज्ञात होता है। इसका रचनाकाल सं० १८३९ है।

(२) रुक्मिणी मङ्गल—१९०५।९४।

इनके अतिरिक्त दो हीरालाल और हैं जिनका विवरण विनोद में २१०१ और २५०६।१ संख्याओं पर हुआ है।

———

९९४।८३६

(३६) हुलास कवि। ऐजन। इनके शृङ्गार के बहुत सुन्दर कवित्त हैं।

सर्वेक्षण

सरोज में इस कवि के नाम पर चित्रालङ्कार सम्बन्धी एक सवैया उद्धृत हैं। इसके तीन चरण प्रश्न करते हैं और चतुर्थ चरण उत्तर देता है। तृतीय चरण में हुलास शब्द व्यवहृत है और यह उल्लास के अर्थ में प्रयुक्त है, यह कवि छाप नहीं है।

"काहे हुलास संयोगिनि के जिय ?"

अतः इस उदाहरण के सहारे हुलास का अस्तित्व स्वीकार नहीं किया जा सकता।

———

९९५।८३८

(३७) हरिचरणदास कवि। इन्होंने भाषा साहित्य का महासुन्दर, अद्‌भुत, अपूर्व बृहतकविबल्लभ नामक एक ग्रन्थ बनाया है। इस ग्रन्थ में अपने ग्राम और सन्-संवत् का वर्णन नहीं किया। हरिचरणदास के निम्नलिखित ग्रन्थ खोज में मिले हैं—

क। टीका ग्रन्थ

(१) कवि प्रियाभरण, १९०४।५८, १९०९।१०८, राज० रिपोर्ट १, संख्या २३, राज० रिपोर्ट ३, पृष्ठ १२१, १९४७।४३१ क। कविप्रिया की यह टीका सं० १८३५ के रची गई।

संवत अठारह सौ बिते पैंतिस अधिके लेखि
साक अठारह सौ जपै कियो ग्रन्थ हरि देखि १४
माघ मास तिथि पञ्चमी शुक्ला कवि को वार
हरि कवि कृति सौं प्रीति हो राधा नन्द कुमार १५
—राज० रिपोर्ट ३, पृष्ठ १२१

(२) चमत्कारचन्द्रिका या भाषा भूषण की टीका—१९०६।४७, १९२०।५९ ए। पं०१९२२।३६ ए, बी। अलङ्कारचन्द्रिका नाम से राज० रिपोर्ट ३, पृष्ठ १११।

भाषा भूषन ग्रन्थ कौ किय जसवंत नरेस
टीका हरि कवि करत है उदाहरण दै बैस २
जहाँ सु चन्द्रालोक में भाषा भुषन विरुद्ध
लच्छ सु लच्छन केरि तेहि करत सु हरि कवि सुद्ध

इस ग्रन्थ में कुल ४९८ छन्द हैं। पहले पद्य में लक्षण, फिर गद्य में टीका, अन्त में विहारी और मतिराम से उदाहरण। १९०६ वाली रिपोर्ट में इसे हरिदास, बाँदा वाले, ब्राह्मण की कृति कहा गया है। इसका खण्डन पञ्जाब रिपोर्ट में हुआ है। इस टीका की रचना सं० १८३४ में हुई।

संवत ठारह सौ बिते तापर चौतिस जान
टीका कीन्हीं पूस दिन गुरु दसमी अवदान—पञ्जाव रिपोर्ट

ग्रन्थ में कवि वंश-परिचय सम्बन्धी यह दोहा है—

पुरोहित श्री नन्द के, मुनि साहित्य महान
मैं हौं तिनके गोत में, मोहन मौ जजमान ४७३
—खोज रिपोर्ट १९०६।४७

यह दोहा विहारी सतसई की टीका में भी है, अतः सिद्ध है कि यह ग्रन्थ हरिचरणदास का ही है।

(३) विहारी सतसई की हरिप्रकाश टीका—१९०४।४, १९१७।७१, १९४१।३१६, १९४७। ४३१ग, राज रिपोर्ट ३, पृष्ठ १३५। यह टीका कृष्णजन्माष्टमी १८३४ को रची गई—

संवत अठारह सै बिते तापर तीस रु चार
जन्माठै पूरो कियो कृष्ण चरन मन धारि

राजत सूबे विहार में है सारन सरकार
सालग्रामी सुर सरित सरजू सोभ अपार १
सालग्रामी सरजु जहँ मिलीं गङ्ग सों जाय
अंतराल में देस है हरि कवि को सरसाय २
परगन्ना गोवा तहाँ गाँवा चैन पुर नाम
गङ्गा सौं उत्तर तरफ तहँ हरि कवि को धाम ३
सरजूपारी द्विज सरस वासुदेव श्रीमान
ताकौ सुत श्रीराम धन, ताको सुत हरि जान ४
नवापार में ग्राम हैं, बढ़या अभिजन तास
विस्वसेन कुल भूप वर करत राज रवि मास ५
मारवाड़ में कृष्ण गढ़ तहँ नित सुकवि निवास
भूप बहादुर राज है विरद सिंह जुबराज ६
राधा तुलसी हरि चरन हरि कवि चित्त लगाइ
तहँ कवि प्रियाभरन यह टीका करी बनाय ७
सत्रह से छ्यासठ महीं कवि को जन्म विचारि
कठिन ग्रन्थ सूधौं कियो लैहैं सुकवि सुधारि ८

—कवि प्रियाभरन, राज० रिपोर्ट ३

सालग्रामी सरजू जहाँ मिलीं गङ्ग सो आय
अंतराल में देस सो हरि कवि को सरसाय १
सेवी जुगल किशोर के प्रान नाथ जो नाँव
सप्तसती तिनसों पढ़ी बसि सिङ्गार बढ़ गाँव २
जमुना तट सिङ्गार बट तुलसी विपिन सुदेस
सेवत सन्त महन्त जेहि देखत हरत कलेस ३
पूरोहित श्री नन्द के मुनि साण्डिल्य महान
हम है ताकै-गौत में मोहन मो जजमान ४

—विहारी सतसई की टीका

नवापुरा सुभ देस में राजा बढ़ैया ग्राम
श्री विश्वम्भर वंश में वासुदेव सम नाम १

ताके सुत श्री रामधन कियो चैनपुर वास
परगन्ना गोवा तहाँ चारि बरने सहलास २
सालग्रामी सरजु तहँ मिली गङ्ग की धार
अन्तराल में देस तहँ है सारन सरकार ३
तनय रामधन सूरि कौ हरि कवि किय मरु वास
कवि वल्लभ ग्रन्थहिं रच्यो कविता दोष प्रकास ४—कवि वल्लभ

इन उद्धरणों से कवि के सम्बध में निम्नलिखित सूचनाएँ प्राप्त होती हैं। हरिचरणदास शण्डिल्य गौत्रीय सरयूपारीण ब्राह्मण थे। इनके पितामह वासुदेव नवापार बढ़ैयामें रहते थे। यहाँ पर बिसेन ठाकुरों का राज्य था। इनके पिता रामधन बढ़ैया कौ छोड़कर चैनपुर में आ बसे। चैनपुर गङ्गा और सरयू के सङ्गम के पास गङ्गा के उत्तर और परगना गोवा, जिला सारन, विहार में पड़ता है। कवि का जन्म सं० १७६६ में हुआ था। कवि ने यमुना के किनारे तुलसी वन या वृन्दावन में कृष्णभक्त प्राणनाथ से शृङ्गार वट के नीचे विहारी सतसई का अध्ययन किया। तदनन्तर वहीं १८३४ में सतसई की टीका लिखी। यह मरुदेश राजपूताने में कृष्णगढ़ नरेश बहादुर सिंह के आश्रय में थे। यह बहादुर सिंह प्रसिद्ध नागरीदास के भाई थे। कवि वल्लभ में रामधन के आगे सूरि लगा है। रत्नाकर जी का इसी से अनुमान है कि यह सम्भवतः जैन थे।[१] जो हो, बात रहस्यमय है।

रत्नाकर जी ने इनके एक अन्य ग्रन्थ कर्णाभरण कोष का भी नाम लिखा है। रत्नाकर जी ने सरोज के ९७१ हरि और ९९५ हरिचरणदास की अभिन्नता स्वीकार की है, जो ठीक है।[२] सरोज में कवि वल्लभ से जो कवित्त उदाहृत है, वह हरिचरणदास का नहीं है, ठाकुर प्राचीन का है।

राजस्थानी भाषा और साहित्य में हरिचरणदास को कृष्णगढ़ का निवासी कहा गया है और इनका मृत्युकाल १८३५ दिया गया है।[३] दोनों बातें भ्रान्त हैं। हरिचरणदास विहारी कवि हैं। इन्होंने कुछ दिनों तक ही कृष्णगढ़ में निवास किया था। १८३९ इनके कवि वल्लभ का रचनाकाल है, अतः १८३५ इनका मृत्युकाल नहीं हो सकता। हरिचरणदास की छाप 'हरि' है।

---

(१) विहारी सतसई सम्बन्धी साहित्य, ना० प्र० पत्रिका, अंङ्क २, श्रावण १९८५, पृष्ठ १३२ (२) वही, पृष्ठ १३३ (३) राजस्थानी भाषा और साहित्य, पृष्ठ १८६

९९६।८३९

(३८) हरिचन्द कवि बरसाने वाले। इन महाराज ने छन्द स्वरूपिणी ग्रन्थ पिङ्गल का बहुत सुन्दर बनाया है।

सर्वेक्षण

इस कवि का एक ग्रन्थ हरिचन्द सत और मिला है।[1] इस कवि के सम्बन्ध में कोई अन्य सूचना सुलभ नहीं।

९९७।८१८

(३९) हजारी लाल त्रिवेदी, अलीगञ्ज, जिले खीरी। वि०। इनका नीति शान्तरस सम्बन्धी काव्य सुन्दर है।

सर्वेक्षण

हजारी लाल त्रिवेदी के सम्बन्ध में कोई सूचना सुलभ नहीं।

९९८।३४४

(४०) हरिनाथ ब्राह्मण, काशी निवासी, सं० १८२६ में उ०। इन्होंने अलङ्कार दर्पण नामक ग्रन्थ बनाया है।

सर्वेक्षण

अलङ्कार दर्पण खोज में मिल चुका है।[2] सरोज में इनका विवरण एक बार और नाथ ५ के नाम से दिया गया है। यहाँ सरोज में इस ग्रन्थ का रचनाकाल १८२६ और रचनाकाल-सूचक यह दोहा दिया गया है—

रस (६) भुज (२) वसु (८) अरु रूप (१) दे संवत किया प्रकास
चन्द वार सुभ सप्तमी माधव पच्छ उजास

इस दोहे में पहले ८६ दोहों में लक्षण फिर, ४० छन्दों में उदाहरण और तदुपरान्त १७ दोहों

---

(१) खोज रिपोर्ट, १९०९।१०७ (२) वही १९०६।१७०

में अनुप्रास कथन है। विनोद (८७६) के अनुसार इतिहास सम्बन्धी इनका एक और ग्रन्थ पृथी-साह मुहम्मद साह है, जो बृटिश म्यूजियम लाइब्रेरी, लन्दन में ६६५७ संख्या पर है।

———

६६१

(४१) हिम्मत बहादुर नवाब, सं० १७६५ में उ०। बलदेव कवि ने सत्कवि गिरा विलास में इनके कवित्त लिखे हैं।

सर्वेक्षण

हिम्मत बहादुर का नाम अनूप गिरि था। नवाब शुजाउद्दौला, लखनऊ के यहाँ इनके गुरु थे। उनके मरने पर अनूप गिरि गोसाइयों के सैनिक सरदार हुए। यह बड़े वीर थे। सं० १८२० मेंबक्सर में जो लड़ाई अवध के नवाब शुजाउद्दौला और ईस्ट इण्डिया कम्पनी के बीच हुई थी, उसने अनूप गिरि ने अपनी जाँघ में एक घाव खाकर नवाब की जान बचाई थी। इससे प्रसन्न होकर नवाब ने इन्हें सिकन्दरा और विन्दकी के परगने दे दिए थे।

अनूप गिरि किसी एक पक्ष को लेकर चलने वाले जीव नहीं थे। जहाँ लाभ देखते थे, लोभ से वहीं चले जाते थे।। इसीलिए चिढ़कर लाला भगवान दीन ने स्व-सम्पादित हिम्मत बहादुर विरदावली में इनके सम्बन्ध में कहा है—

"हिम्मत बहादुर भिक्षावृत्ति धारी सनाढ्या ब्राह्मण का लड़का और पराया माल उड़ाने वाले गोसाईं का चेला था।"

नवाब शुजाउद्दौला की प्रेरणा से हिम्मत बहादुर ने पहले बाँदा पर आक्रमण किया। तेंदवारी के पास बाँदा नरेश गुमान सिंह के सेनापति नौने अर्जुन सिंह से इनका युद्ध हुआ जिसमें हिम्मत बहादुर की हार हुई और यमुना तैर कर किसी प्रकार इन्होंने अपनी जान बचाई।

हिम्मत बहादुर ने दूसरी बार फिर नवाब की सहायता से बुन्देलखण्ड पर आक्रमण किया इस बार दतिया के राजा रामचन्द्र को हराकर चौथ वसूल की और मराठों के भी कुछ क्षेत्र दबा लिए। तदनन्तर सं० १८३२ में मराठों ने हिम्मत बहादुर और इनके गोसाइयों को कालपी के निकट हराया। तब हिम्मत बहादुर और इनके गोसाई सिन्धिया की सेना में भरती हो गए।

जब बुन्देलखण्ड में मराठों की सत्ता की अवहेलना बुन्देलों ने प्रारम्भ की, तब यहाँ के मराठों की सहायता के लिए अली बहादुर भेजे गए। बाजीराव पेशवा को महाराज छत्रसाल ने अपना तिहाई राज्य दे दिया था। पन्ना दरबार की वेश्या की पुत्री मस्तानी को बाजीराव बहुत

———

(१) बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त इतिहास, अध्याय २७, पैरा २

चाहते थे। मस्तानी के गर्भ से शमशेर बहादुर नामक पुत्र उन्हें उत्पन्न हुआ था। इन्हीं शमशेर बहादुर के पुत्र अली बहादुर थे। सं० १८४६ में यह पूना से बुन्देलखण्ड आए। उस समय हिम्मत बहादुर सिन्धिया की सेना में थे। अली बहादुर ने हिम्मत बहादुर को मिलाया और उन्हें अली बहादुर ने देश का कुछ भाग देने का वचन दिया तथा उन्हें को बाँदा का नवाब बनाने की प्रतिज्ञा की। एक बार फिर नौने अर्जुन सिंह और हिम्मत बहादुर का युद्ध अजयगढ़ और बनगाँव के बीच के मैदान में सं० १८४६, वैशाख वदी बुधवार को हुआ। इस युद्ध में नौने अर्जुन मारे गये और हिम्मत बहादुर तथा अली बहादुर की धाक जम गई। इस युद्ध का वर्णन पद्माकर ने 'हिम्मत बहादुर विरुदावली' में किया है।

दूसरे मराठा युद्ध (सं० १८६०-६३) में हिम्मत बहादुर अँगरेजों की ओर हो गए थे। इन्हीं की वीरता से बुन्देलखण्ड में अँगरेजों की विजय हुई थी। अँगरेजों ने इन्हें सिकन्दरा और विन्दकी के परगने अन्तर्वेद में और मौदहा छीन हमीरपुर और दोसा के परगने बुन्देलखण्ड में दिए। इन्हें महराज बहादुर की पदवी भी दी। सं० १८६१ में इनकी अत्यन्त वृद्धावस्था में मृत्यु हुई। इनके मरने पर इनका पुत्र नरेन्द्र गिरि उत्तराधिकारी हुआ। इसकी मृत्यु सं० १८९७ में हुई तब अँगरेजों ने उक्त जागीर जब्त कर ली और वंशजों को पेन्शन दे दी।[1]

हिम्मत बहादुर की कविता बलदेव कवि के 'सत्कवि गिरा विलास' में है। यह सङ्कलन संवत् १८०३ में प्रस्तुत किया गया था। अतः सरोज में दिया गया सं० १७६५ इनका जन्मकाल हो सकता है।

१०००।

(४२) हितराम कवि। इनकी सूदन कवि ने प्रशंसा की है।

सर्वेक्षण

हितराम जी का एक ग्रन्थ 'हरिभक्ति सिद्धान्त समुद्र या 'श्रीकृष्णश्रुति विरदावली[2]' नाम का मिला है। इसका रचना काल संवत् १७२२ वैशाख शुक्ल ३ है—

पुनर्वस सु नक्षत्र को चतुरथ चरण सु ताम
फते सिंह सु प्रसिद्ध जग जन्म नाम हितराम

---

(१) बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त इतिहास, अध्याय २७, ३०, ३१ (२) खोज रिपोर्ट १९२६। १२०।

२ २ ७ १
नयन नयन रिषि बुद्धि अब्द सुभ अति मङ्गल जन
पुनि पबित्र बैसाख सुक्ल पख तीज अखै तन
तहाँ प्रगट भयो ग्रन्थ कृपा श्री जदुवर की करि
पढै सुनै हिय धरै ताप कुल कोटिक उद्धरि

इस छन्द से सूचित होता है कि इनका संसार में प्रसिद्ध नाम फते सिंह था और जन्म का नाम हितराम था।

हितराम जी कछवाहा क्षत्रिय थे। इसी वंश में जगन्नाथ जी हुए हैं जो परम प्रसिद्ध भक्त थे और वृन्दावन में रहा करते थे। इन जगन्नाथ के पुत्र राम साहि नरेश जो अत्यन्त दाता, शूर और सुजान थे। इन्हीं राम साहि के पुत्र फते सिंह हुए।

कछवाहि तिहि कुल जानि धुर धर्म क्षत्री मानि
तिहि वंश श्री जगन्नाथमुनि रूप जिनकी नाथ
तिहि सुनि राम साहि नरेस जस विख्यात अति देस
तिनके फते सिंह कुमार निस दिन एक भक्ति विचार
पुनि इह रच्यो ग्रन्थ पवित्र जामे कृष्ण भक्ति चरित्र

फते सिंह जी हित हरिवंश सम्प्रदाय में दीक्षित थे। इन्होंने ग्रन्थ में अपने गुरु के कुल का भी वर्णन किया है। हित हरिवंश--उनके पुत्र वनचन्द्र—वनचन्द्र के पुत्र सुन्दर--सुन्दर के पुत्र दामोदर —और दामोदर के पुत्र कृपाल। यही हित कृपाल, फते सिंह के गुरु थे।

इहै जानि आयो सरन, गुन गायो नन्दलाल
भली बुरो तउ रावरो, कीजै कृपा कृपाल

हितराम जी अपने पितामह के समान वृन्दावन में रहा करते थे।

१००१।

(४३) हरिजन कवि, ललितपुर निवासी, सं० १६११ में उ। इन कवि ने महाराज ईश्वरी नारायण सिंह का शिवराज के नाम से रसिक प्रिया की टीका बनाई है।

सर्वेक्षण

महाराज काशी नरेश के दरबार में रहने वाले, ललितपुर झाँसी निवासी, हरिजन कवि प्रसिद्ध कवि सरदार बनारसी के पिता थे। सरदार कृत शृङ्गार संग्रह की पुष्पिका में इसका स्पष्ट उल्लेख हुआ है—

"स्वस्ति श्रीमन्महाराजाधिराज काशीराज श्रीमदीश्वरीप्रसाद नारायणस्याज्ञाभिगामी, ललितपुरनिवासी हरिजनकवीश्वरात्मज सरदाराख्यकवीश्वरेण विरचिते, तच्छिष्यं नारायणदास कवीश्वरेण शोधनं, शृङ्गारसंग्रह समाप्तः।"

हरिजन कवि का एक मात्र खोज में प्राप्त ग्रन्थ तुलसी चिन्तामणि[१] है। इसमें दोहा चौपाइयों में राम कथा है। इसकी रचना सं० १९०३ में हुई—

संवत दस नव सत त्रय धारू
श्रावन सुदि दुतिया भृगुवारू

रिपोर्ट में इन हरिजन को टीकमगढ़ का कायस्थ कहा गया है। विनोद (१९८२) में भी हरिजन कायस्थ टीकमगढ़ का उल्लेख है।

रसिक प्रिया की टीका सरदार की बनाई हुई है, सरदार के बाप हरिजन की बनाई नहीं। सरोज में प्रमाद से यह उल्लेख हो गया प्रतीत होता है।

१००२।

(४४) हरिचन्द कवि, वन्दीजन, चरखारी वाले। यह राजा छत्रसाल चरखारी वाले के यहाँ थे।

सर्वेक्षण

चरखारी राज्य की स्थापना के पश्चात् यहाँ पर छत्रसाल नाम का कोई राजा नहीं हुआ। सरोजकार का अभिप्राय पन्ना-नरेश प्रसिद्ध छत्रसाल से हैं। चरखारी के गोपाल कवि ने चरखारी नरेशों के दरबारी कवियों का उल्लेख एक छप्पय में किया है। इसके प्रथम चरण में ही हरिचन्द और उनके आश्रयदाता महाराज छत्रसाल का उल्लेख है—

"प्रथम पढ़िव हरिचन्द, भूप छतसाल निवासह"—सरोज, पृष्ठ ६६

---

(१) खोज रिपोर्ट १९०६।४८

यहाँ से सरोजकार ने इस कवि का विवरण लिया है।

छत्रसाल का राज्यकाल सं० १७२२-८८ है। यही इनके दरबारी कवि हरिचन्द का भी जीवनकाल होना चाहिए। विनोद (५१४) में इनका रचनाकाल सं० १७४० माना गया है।

———

१००३।

(४५) हुलासराम कवि। इन्होंने शालिहोत्र भाषा में बनाया है।

सर्वेक्षण

शालिहोत्र के रचयिता हुलासराम पाठक थे। इनके वैद्यक सम्बन्धी दो ग्रन्थ मिले हैं—(१) शालिहोत्र १९२६।१८३ ए,(२) वैद्य विलास १९२६।१८३ बी। प्रथम ग्रन्थ के कर्त्ता हुलास और द्वितीय के हुलास पाठक कहे गए हैं। पर दोनों अभिन्न हैं, क्योंकि दोनों ग्रन्थों में त्रिपुर सुन्दरी की वन्दना एक सी है—

(क) शालिहोत्र—

श्री अम्बा हुलास मुख बानी
त्रिपुर सुन्दरी आदि भवानी
प्रफुलित अरुण कमल तन जासू
अरुण किरण सम आस्य प्रकासू
अरुण बचन अभरण शृङ्गारा
अरुण सुमन सुन्दर उर हारा

(ख) वैद्य-विलास—

पुनि सेवे हुलास मुख बानी
त्रिपुर सुन्दरी आदि भवानी
रक्त वसन उर हार विराजै
पग नूपुर किङ्किनि कटि भ्राजै
नगन जटित कुंकुम कर मलया
कुमकुम कलित सुर्चाचत बलया
अरुन किरन सम अस्य प्रकासा
भृकुटी कुटिल मनोहर नासा

इस कवि के सम्बन्ध में कोई और सूचना सुलभ नहीं।

भाषाकाव्यसंग्रह में भी एक हुलासराम है। यह शाकद्वीपी ब्राह्मण थे। इनका निवास-स्थान रामनगर, तहसील फतेपुर, जिला बाराबङ्की था। इनके पिता का नाम प्रयागदत्त था। यह सं० १८४५ में उत्पन्न और सं० १९१२ में दिवङ्गत हुए। इनके बनाए ग्रन्थ बुद्धि प्रकाश, वैताल पञ्चविंशतिका, तथा लङ्काकाण्ड आदि हैं।[1] इनके दो ग्रन्थ खोज में मिले हैं—

(१) बुद्धि प्रकाश १९२३।१७० ए। इसमें रचनाकाल सूचक दोहा है—

अट्ठारह के अङ्क में भयो सृष्टि विस्तार
संवत विक्रम भूप को श्रावन पूरनमास

कवि की छाप जन हुलास, दास हुलास और हुलास है। यह ग्रन्थ रामनगर-नरेश गुरुबख्श सिंह के लिए लिखा गया। इसमें छन्द नायक-नायिका और राग का वर्णन है। पुष्पिका में इन्हें हुलास मिश्र कहा गया है।

(२) हुलास अष्टक, १९२३।१७० बी। यह हुलास मिश्र शालिहोत्र के रचयिता हुलास से भिन्न है अथवा अभिन्न, कुछ कहा नहीं जा सकता।

---

(१) भाषाकाव्य संग्रह, पृष्ठ १२७

उपसंहार

उपसंहार

तिथि-निर्णय

सरोज में कुल १००३ कवियों का विवरण है। इनमें से ६८७ कवियों के सन्-संवत् भी दिये गये हैं। इन संवतों के आगे उ० लिखा हुआ है। ग्रियर्सन ने इस उ० का अर्थ उत्पन्न किया है। भूमिका में मैंने उ० का अर्थ उपस्थित किया हैं। सर्वेक्षण में एक-एक कवि को लेकर विचार किया गया है और सरोज के सन्-संवतों की परीक्षा की गई है यथा, वह जन्मकाल है या उपस्थितिकाल है या अशुद्ध है, वह विक्रम संवत है या ईसवी-सन् है। परन्तु प्रत्येक तिथि के जाँचने के आधार नहीं मिल सके। लगभग ७० प्रतिशत तिथियों की जाँच सम्भव हो सकी है।

१. सरोज के जाँचे हुए संवत्

सरोज में दी हुई ६८७ तिथियों में से ४८२ तिथियों की जाँच की जा सकी है। इस जाँच के परिणाम अत्यन्त आकर्षक और भव्य निकले हैं। सामान्यतया समझा जाता रहा है कि सरोज के सभी संवत् विक्रमीय हैं और विक्रमी संवत् मान कर ही उनका उपयोग किया जाता रहा है। भूमिका में मैंने सङ्केत किया था कि सरोज में कुछ संवत् ईसवी-सन् भी प्रतीत होते हैं। संवतों के परीक्षण से यह बात सत्य सिद्ध हुई है। कुछ संवत् जन्मकाल भी सिद्ध हुए हैं। अधिकांश संवत् उपस्थितिकाल और कुछ अशुद्ध भी सिद्ध हुए है। इन तिथियों के आधार पर उन तिथियों के सम्बध में भी एक सामान्य धारणा बनाई जा सकती है।

(क) सरोज के संवत और ईसवी-सन्—सरोजकार का उद्देश्य सदैव-विक्रम संवत् देने का रहा है, ऐसा प्रतीत होता है। परन्तु शीघ्रता और अनवधानता तथा प्रमाद के कारण कुछ संवत् विक्रम के न होकर ईसवी-सन् हो गए हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि सरोज का प्रारूप प्रस्तुत करते समय सरोजकार को राजाओं महाराजाओं और मुगल बादशाहों के सन्-संवतों से बहुत सहायता

मिलीं । ये संवत् मुख्यतः इतिहास-ग्रन्थों से लिए गए, जहाँ ईसवी-सन् का एकछत्र साम्राज्य है। इतिहास ग्रन्थों से लिए जाने के कारण प्रारूप में ये सन् ज्यों के त्यों ले लिए गए,इस आशा के साथ कि अन्त में इन्हें विक्रम-संवत् में बदल दिया जायेगा,पर अन्त में कुछ सन् अनवधानता के कारण अपने प्रारूप वाले रूप ही में, बिना परिवर्तित हुए ही, चले आए, यद्यपि इनकी संख्या अधिक नहीं है। सर्वेक्षण के पश्चात् मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि कुल ६८७ संवतों में से ३० संवत् विक्रम-संवत् न होकर ईसवी-सन् हैं । इन सनों की सूची आगे है । इस सूची के अवलोकन से स्पष्ट हो जायगा कि इन ३१ में से २१ का सम्बन्ध तो केवल अकबर से है। अकबर का शासनकाल १५५६-१६०५ ईसवी है। २१ में से १६ कवियों का समय अकबर के इस शानसकाल के भीतर पड़ता है। दो का समय इससे कुछ बाद का दिया गया है। इन २१ कवियों में से केवल जमाल ऐसे एक कवि हैं जिनके सम्बन्ध में यह लेख नहीं है कि यह अकबरकालीन हैं, पर सम्भवतः सरोजकार को यह तथ्य ज्ञात था। अकबरी दरबार का केवल एक कवि जगन है, जिनका सम्वत् विक्रमीय है। इस कवि का नाम उस सवैये में आया है, जिसमें अकबरी दरबार के कवियों की नामसूची दी गई है। पर विवरण में इस तथ्य का कथन नहीं हुआ है कि यह कवि अकबरी दरबार से सम्बद्ध था। लक्ष्मी नारायण मैथिल खानखाना के आश्रित थे और खानखाना अकबर के प्रसिद्ध नव रत्नों में से थे, अतः अप्रत्यक्ष रूप से इन्हें भी अकबरी दरबार का कवि कहा जा सकता है। इनका भी संवत् ईसवी-सन् में है। आलम का संवत् अशुद्ध है, शेष सभी सन् उपस्थितिकाल हैं। ऐसी धारणा न होनी चाहिए कि सरोज के अधिक से अधिक संवतों को उपस्थितिकाल सिद्ध करने के लिए ऐसा किया जा रहा है। यह कोई आकस्मिकता नहीं है कि एक ही सम्राट् से सम्बन्धित एक दो नहीं इक्कीस संवत् ईसवी-सन् माने जाकर उपस्थितिकाल सिद्ध हो जायँ।

अकबरकालीन २१ कवि

१।१.	अकबर	१५८४
२।२१.	अमृत	१६०२
३।३७.	आसकरन दास	१६१५
४।६८.	करनेस	१६११
५।१३८.	खानखाना रहीम	१५८०
६।१४८.	गङ्ग	१५६५
७।२७३.	जैत	१६०१
८।२८०.	जमाल	१६०२
९।२९४.	जगदीश	१५८८

१०।३००.	जौध	१५६०	
११।३०८.	टोडर	१५८०	
१२।३२०.	तानसेन	१५८८	
१३।३८८.	नरहरि	१६००	
१४।४६०.	प्रसिद्ध	१५६०	
१५।४६५.	फैजी	१५८०	
१६।४६६.	फ़हीम	१५८०	
१७।४६७.	ब्रह्म, वीरबल	१५८५	
१८।६८०.	मनोहरदास कछवाहा	१५६२	
१६।७०४.	मान राय	१५८०	
२०।७१५.	मान सिंह आमेर नरेश	१५६२	
२१।८२५.	लक्ष्मीनारायण मैथिल	१५८०	

अन्य ६ कवि

२२।१६.	आलम	१७१२	कुतुबुद्दीन आलम या बहादुर शाह (शासनकाल १७०७–१२ई०) के तथाकथित दरबारी।
२३।२२.	आनन्दघन	१७१५	मुहम्मद शाह रङ्गीले (शासनकाल १७१६-४८ ई०) के दरबारी।
२४।३२.	अब्दुर्रहिमान	१७३८	मुअज्जम शाह या कुतुबुद्दीन शाह आलम बहादुर शाह (शासनकाल १७०७-१२ ई०) के आश्रित।
२५।७६.	कवीन्द्राचार्य सरस्वती	१६२२	शाहजहाँ शासनकाल (१६२८-५८ई०)
२६।२४१.	छत्रसाल	१६६०	१६४६-१७३१ ई० जीवनकाल।
२७।२६६.	जय सिंह सीसौदिया मेवाड़ नरेश	१६८१	इसी ईसवी-सन् में यह सिंहासनासीन हुए।
२८।७०६.	मदनकिशोर	१७०८	बहादुर शाह, (शासनकाल १७०७-१२, ई०) के आश्रित।
२६।७४१,	रघुनाथ राय	१६३५	अमर सिंह राठौर ने १६३४-५८ई० के बीच किसी समय शाहजहाँ के भरे दरबार में सलाबत खाँ की हत्या की थी।

३०।८५४	शिव सिंह सेंगर	१८७८	इसी ईसवी-सन् में शिवसिंह सरोज प्रकाशित हुआ।
३१।९५२	श्रीलाल गुजराती	१८५०	मातादीन के कवित्त रत्नाकर के अनुसार यह १८५२ ई० में आगरा नार्मल स्कूल में हेड-मास्टर हुए थे।
३२।६८४	महेश	१८६०	मातादीन के कवित्त रत्नाकर के अनुसार इनका देहावसान १८५३ में हुआ।

(ख) **सरोज के संवत् और ग्रन्थ-रचनाकाल**—सरोज में दिए गए कतिपय कवियों के संवत् उनके किसी न किसी ग्रन्थ के रचनाकाल हैं। यह तथ्य स्पष्ट सिद्ध करता है कि सरोजकार ने कवियों का रचनाकाल दिया है, न कि जन्मकाल। सरोज के ३९ संवत्, ग्रन्थरचनाकाल सिद्ध होते हैं। इनमें से २२ तो स्वयं सरोज से रचनाकाल सिद्ध है। २१ के तो रचनाकालसूचक छन्द सरोज में उद्धृत हैं, शिव सिंह सरोज का रचनाकाल और प्रकाशन काल १८७८ ई० है, यही समय शिव सिंह सेंगर का दिया गया है।

सरोज के सिद्ध ग्रन्थ रचनाकाल

संख्या	कवि	संवत्	ग्रन्थ
१।४८	इच्छाराम अवस्थी	१८८५	ब्रह्मविलास
२।६९	करन भट्ट	१७९४	साहित्यचन्द्रिका
३।७३	कालिदास त्रिवेदी	१७४९	बुध विनोद
४।७४	कवीन्द्र उदयनाथ	१८०४	विनोदचन्द्रोदय
५।१८१	गुरुदीन पाण्डे	१८९१	वाक् मनोहर
६।१८८	ग्वाल	१८७९	यमुना लहरी
७।२३७	चैतन चन्द	१६१६	अश्व विनोदी
८।२५२	छेदीराम	१८९४	कवि नेह
९।३१८	तुलसी, यदुराय के पुत्र	१७१२	कवि माला
१०।३३९	दयानाथ दुबे	१८८९	आनन्द रस

सं०	कवि	संवत्	ग्रन्थ
११।३५६	दीनदयाल गिरि	१९१२	अन्योक्ति कल्पद्रुम
१२।४३४	नाथ ५	१८२६	अलङ्कार दर्पण
१३।४५७	प्राणनाथ १ बैसवारे वाले	१८५१	चकाव्यह इतिहास
१४।५७७	बालनदास	१८५०	रमलसार
१५।६३०	मान ब्राह्मण ३ बैसवारा के	१८१८	कृष्णकल्लोल
१६।६६७	मेधा	१८६७	चित्र-भूषण
१७।७३८	रघुनाथ बनारसी	१८०२	काव्यकलाधर
१८।७५५	रसलीन	१७९८	रस-प्रबोध
१९।७७३	रूप साहि	१८१३	रूप-विलास
२०।८३८	शम्भुनाथ बन्दीजन	१७९८	राम-विलास
२१।८४०	शम्भुनाथ त्रिपाठी	१८०९	वैताल पचीसी
२२।८५४	शिव सिंह सेंगर	१८७८	शिवसिंह सरोज
२३।८६७	श्रीधर, सुब्बा सिंह	१८७४	विद्वन्मोदतरङ्गिणी
२४।८७६	सुन्दर, शृङ्गारी	१६८८	सुन्दरशृङ्गार
२५।९३१	सूरति मिश्र,	१७६६	अलङ्कारमाला
२६।९९८	हरिनाथ ब्राह्मण काशी	१८२६	अलङ्कारदर्पण
२७।	हृष्ठी	१२४७	राधासुधानिधि

इन २२ कवियों में से नाथ ५ और हरिनाथ ब्राह्मण काशी वाले एक ही हैं। गुरुदीन पाण्डे का रचनाकाल सरोज में १८९१ दिया गया है। सरोजकार ने अपनी समझ से वाकमनोहर का रचनाकाल ही दिया है। उसने रस से ९ और नभ से १ का अर्थ लिया है, पर रस ६ और नभ से ० का ही बोध सामान्यतया होता है। अतः इस ग्रन्थ का रचनाकाल सं० १८६० हैं, न कि १८९१।

अन्य सूत्रों से सिद्ध ग्रन्थ का रचनाकाल

संख्या	कवि	समय	ग्रन्थ	सूत्र
१।४२	आकूब खां	१७७५	रस भूषण	विनोद ६७३
२।७१	करन बन्दीजन, जोधपुर	१७८७	सूरजप्रकाश	खोज १९४१।२४
३।११०	काशिराज कवि	१८८९	चित्रचन्द्रिका	खोज १९०९।१४५

संख्या	कवि	समय	ग्रन्थ	सूत्र
४।११२	कृपाराम १ जयपुर	१७७२	समयबोध,	खोज १९०९।१५६, १९२६।२४५ बी
५।५०४	बलदेवदास जौहरी	१९०३	कृष्ण खण्ड,	खोज १९२३।३० ए, १९४७।२३
६।५०६	विक्रम, विजयबहादुर बुन्देला	१८८०	हरिभक्ति विलास,	खोज १९०३।७३
७।६०२	भगवतीदास ब्राह्मण	१६८८	नासकेतोपाख्यान,	खोज १९२३।४८ ए
८।६७६	मदनगोपाल १ सुकुल	१८७६	अर्जुन विलास,	खोज १९२३।२५०
९।७२४	रामनाथ प्रधान	१९०२	रामकलेवा	खोज, १९०६।१०७
१०।८११	लोने सिंह १ खीरी	१८९२	राम स्वर्गारोहण,	खोज १९२३।२४९
११।८३४	सुखदेव मिश्र	१७२८	पिङ्गलवृत्त विचार,	१९२०।१८७ ई
१२।८४१	शम्भुनाथ मिश्र, सातनपुरवा	१९०१	शिवपुराण	विनोद, १८०८
१३।९१३	सबल सिंह चौहान	१७२७	सभापर्व, द्रोणपर्व,	विनोद ३६०

(ग) सरोज के उपस्थितिकालसूचक संवत्—सरोज के संवतों की जाँच में उनके खोज में प्राप्त ग्रन्थों के रचनाकाल, उनके आश्रयदाता राजाओं के शासनकाल या उनके ग्रन्थों में वर्णित समसामयिक घटनाओं के काल से बड़ी सहायता मिली है। आगे ऐसे २४५ संवतों की सूची दी जा रही है, जिन्हें सर्वेक्षण में भली-भाँति उपस्थितिकाल सिद्ध किया जा चुका है। उपस्थितिकाल होने का प्रमाण भी अत्यन्त संक्षेप में दे दिया जा रहा है।

संख्या	कवि	संवत्	प्रमाण
१।३	अजबेस नवीन	१८९२	१८६८ बिहारी सतसई की टीका
२।५	अवधेश बुन्देलखण्डी	१९०१	१८८६-१९१७ चरखारी नरेश रतन सिंह का शासनकाल
३।६	अवधेश सूपा के	१८९५	,, ,,
४।८	औध	१८९६	१८६० जन्मकाल
५।१२	अम्बुज	१८७५	१८१०-९० पद्माकर का जीवनकाल, अतः १८७५ इनके पुत्र का रचनाकाल ही है।
६।१४	अहमद	१६७०	१६७८ कोकसार का रचनाकाल
७।१५	अनन्य	१७९०	जीवनकाल १७१०-९०

संख्या	कवि	संवत्	प्रमाण
८।१७	असकन्द गिरि	१९१६	१९०५ रसमोदक का रचनाकाल
९।२३	अभिमन्यु	१६८०	१६८३ इनके आश्रयदाता रहीम का मृत्युकाल
१०।२१	अनाथदास	१७१६	१७२६ विचारमाला का रचनाकाल
११।३४	अपर	१६२६	१६३२ स्वीकृत उपस्थितिकाल
१२।३५	अग्रदास	१५९५	" " "
१३।४३	अनवर खाँ	१७८०	१७७१ अनवरचन्द्रिका का रचनाकाल
१४।४९	ईश्वर कवि	१७३०	१७१५-६४ आश्रयदाता औरङ्गजेब का शासनकाल
१५।५३	ईन्द्रजीत त्रिपाठी	१७३९	" " "
१६।६३	केशवदास	१६२४	१६१२-७४ जीवन काल
१७।६५	केशव राय बाबू बघेलखण्डी	१७३९	१७५३ जैमुन की कथा का रचनाकाल
१८।६७	कुमारमणि भट्ट	१८०३	१७७६ रसिक रसाल का रचनाकाल
१९।७२	कुमारपाल महाराज अन्हलवाड़ा	१२२०	११९९-१२३० शासनकाल
२०।७७	किशोर	१८०१	१८०५ अलङ्कारनिधि का रचनाकाल
२१।७८	कादिर	१६३५	१६१२-४१ रसखानि का रचनाकाल
२२।७९	कृष्ण कवि १	१७४०	१७१५-६४ इनके आश्रयदाता औरङ्गजेब का शासनकाल
२३।८९	कमल नयन	१७८४	१७७१ अनवरचन्द्रिका का रचनाकाल
२४।९४	कवि दत्त	१८३६	१७९१ लालित्यलता का रचनाकाल १८०४ सज्जनविलास का रचनाकाल
२५।९६	काशीराम	१७१५	१७१५-६४ औरङ्गजेब का शासनकाल
२६।१०४	कलानिधि	१८०७	१७२९-१८०९ जीवनकाल
२७।१०५	कुलपति मिश्र	१७१४	१७२७ रसरहस्य का रचनाकाल
२८।१०६	कार बैग फ़कीर	१७५६	१७१७ रचनाकाल
२९।१०८	कृष्ण सिंह बिसेन, भिनगा	१९०९	१९०१ में अवध के नाजिम महमूदअली से इनका युद्ध हुआ था
३०।१११	कोविद उमापति	१९३०	१९२४ अयोध्यामाहात्म्य का रचनाकाल १९३० मृत्युकाल

संख्या	कवि	संवत्	प्रमाण
३१।११५	किशोर सूर	१७६१	१६३२ अग्रदास और उनके गुरु भाई का समय, १७२६ अग्रदास के शिष्य नाभादास का मृत्युकाल, अतः १७६१ कील्हदास के पोता शिष्य किशोर सूर का रचनाकाल
३२।११६	कुम्भनदास	१६०१	१५२५-१६४० जीवनकाल
३३।११८	कल्याणदास	१६०७	१६३२ इनके गुरु भाई अग्रदास का स्वीकृत समय
३४।१२१	कृष्णदास गोकुलस्थ	१६०१	१५५३-१६३६ जीवनकाल
३५।१२२	केशवदास, कश्मीरी	१६०८	१५८४ से पूर्व किसी समय चैतन्य महाप्रभु से शास्त्रार्थ में पराजित हुए थे
३६।१२४	कान्हरदास, ब्रजवासी	१६०८	१६५२ में इनके भण्डारे में नाभादास को गोस्वामी की उपाधि मिली
३७।१३५	खुमान चरखारी वाले	१८४०	१८३०-८० रचनाकाल
३८।१४७	खड्गसेन, कायस्थ	१६६०	१६४६ भक्तमाल में उल्लेख
३६-१५४	गङ्गाराम बुन्देलखण्डी	१८६४	१८४६ ज्ञानप्रदीप का रचनाकाल
४०।१५५	गदाधर भट्ट	१६१२	१८६०-१६५५ जीवनकाल
४१।१५८	गदाधर मिश्र ब्रजवासी	१५८०	१५४२-८४ इनके गुरु चैतन्यमहाप्रभु का जीवनकाल
४२।१५६	गिरिधारी,ब्राह्मण,बैसवाड़ा	१६०४	१६८४ में इनके प्रौढ़ पौत्र उपस्थित
४३।१६१	गिरिधर कवि	१८४४	१८३२-५४ लखनऊ के नवाब आसफुद्दौला का शासनकाल
४४।१६३	गिरिधर, बनारसी	१८६६	१८६०-१६१७ जीवनकाल
४५।१६५	गोपाल १, कायस्थ, रीवाँ	१६०१	१८८५ शृङ्गारपचीसी का रचनाकाल
४६।१६६	गोपाल २, चरखारी	१८८४	१८६१ शिखनख दर्पण का रचनाकाल
४७।१६७	गोपाल लाल, कवि ३	१८५२	१८३१ बोधप्रकाश और १८५३ सुदामाचरित्र का रचनाकाल
४८।१७०	गोपालदास, ब्रजवासी	१७३६	१७५५ रासपञ्चाध्यायी का रचनाकाल
४६।१७२	गोकुलनाथबन्दीजन, बनारसी	१८३४	१७६७-१८२७ इनके एक आश्रयदाता काशीनरेश बरिवण्ड सिंह का शासनकाल
५०।१७३	गोपीनाथ	१८५०	१८५२-६२ काशीनरेश उदितनारायण सिंह का शासनकाल

५१।१७६	गुरुगोविन्द सिंह	१७२८	१७२३-६५ जीवनकाल।
५२।१७९	गोविन्ददास ब्रजवासी	१६१५	१५६२-१६४२ जीवनकाल।
५३।१८०	गोविन्द कवि	१७९१	१७९७ कर्णाभरण का रचनाकाल।
५४।१८४	गुरुदत्त शुक्ल २	१८६४	१८५६ में इनके भाई देवकीनन्दन ने अवधूत-भूषण लिखा।
५५।१८५	गुमान मिश्र सांड़ी	१८०५	१८०३ नैषधचरित का अनुवादकाल।
५६।२०१	गुलाब सिंह पञ्जाबी	१८४६	१८३४ भावरसामृत और १८३५ मोक्ष वन्ध प्रकाश का रचनाकाल।
५७।२०२	गोवर्धन	१६८८	१७०७ कुंडलिया पद्‌मसिंह जोराका रचनाकाल।
५८।२०५	गुलाल सिंह	१७८०	१७५२ दफ्तरनामा का रचनाकाल।
५९।२०७	ज्ञानचन्द यती	१८७०	१८८० टॉड कृत राजस्थान का रचनाकाल।
६०।२१८	चन्द २	१७४९	१७६१ इनके आश्रय दाता पठान सुलतान का समय।
६१।२२१	चिन्तामणि त्रिपाठी	१७२९	१७५१ कविकुल कल्पतरु का रचनाकाल।
६२।२२४	चन्दन राय	१८३०	१८१०-६५ रचनाकाल।
	चतुर बिहारी ब्रजवासी	१६०५	गोसाईं बिट्ठलनाथ के शिष्य।
६३।२३१	चतुर्भुज दास	१६०१	१५८७-१६४२ जीवनकाल।
६४।२३५	चण्डीदत्त	१८९८	१९०७ द्विजदेव की शृङ्गारलतिका का रचना-काल।
६५।२४३	हेमकरन धनोली	१८७५	१८३५-१९१८ जीवनकाल।
६६।२४७	हेम	१७५५	१७४३ इनके अनुज और पद्‌माकर के पिता मोहनलाल भट्ट का जन्मकाल।
६७।२५१	छीत स्वामी	१६०१	१५७२-१६४२ जीवनकाल।
६८।२५४	हेम कवि २	१५८२	१५८७-९७ हुमायूँ का शासनकाल।
६९।२५६	जुगलकिशोर भट्ट	१७९५	१८०५ अलंकारनिधि का रचनाकाल।
७०।२६३	जानकीप्रसाद बनारसी	१८६०	१८७२ रामचन्द्रिका की टीका का रचनाकाल।
७१।२६५	जसवन्त सिंह तिरवा	१८५५	१८७१ मृत्युकाल।
७२।२६७	जवाहिर १ भाट	१८४५	१८२६ जवाहिर रत्नाकर का रचनाकाल।
७३।२६९	जैनुद्दीन अहमद	१७३६	१७२९ इनके आश्रित चिन्तामणि त्रिपाठी का रचनाकाल।

७४।२७०	जयदेव कंपिला वाले	१७७८	१७६० तक इनके काव्यगुरु सुखदेव मिश्र का जीवनकाल।
७५।२७५	जय कवि भाट, लखनऊ	१६०१	१६०४-१३ लखनऊ के नवाब वाजिदअलीशाह का शासनकाल।
७६।२७७	जगन कवि	१६५२	१६१३-६२ अकबर का शासनकाल।
७७।२७८	जनार्दन कवि	१७१८	१७४३ में इनके दूसरे पुत्र मोहनलालभट्ट का जन्म।
७८।२८१	जीवनाथ भाट	१८७२	१८३२-५४ लखनऊ के नवाब आसफुद्दौल का शासनकाल।
७९।२८८	जसोदा नन्दन	१८२८	१८२७ बरवे नायिकाभेद का रचनाकाल।
८०।२९०	जोइसी	१६५८	१७०० लछिराम ब्रजवासी का समय, १६५८ इनके मित्र मोहन के पितामह का समय।
८१।२९५	जय सिंह आमेर नरेश	१७५५	१७४५-१८०० जीवनकाल।
८२।२९७	जलील विलग्रामी	१७३९	१७१५-६४ औरङ्गजेब का शासनकाल।
८३।२९८	जमालुद्दीन	१६२५	१६१३-६२ अकबर का शासनकाल।
८४।३१६	गो० तुलसीदास	१६०१	१५८९-१६८० जीवनकाल।
८५।३२५	ताज कवि	१६५२	१६४२ के पहले विट्ठलनाथ की शिष्या हुई।
८६।३२७	तीर्थराज	१८००	१८०७ समर-सार का रचनाकाल।
८७।३३०	तोष	१७०५	१६९१ सुधानिधि का रचनाकाल।
८८।३३१	तोष निधि	१७९८	१७९४ रतिमञ्जरी का रचनाकाल।
८९।३३५	दयाराम त्रिपाठी	१७९९	१७७९ दयाविलास का रचनाकाल।
९०।३३८	दयानिधि वैसवारे के	१८११	१८०७ में इनके आश्रयदाता अचल सिंह के लिए तीर्थराज ने समरसार की रचना की थी।
९१।३४२	दत्त साढ़ि वाले	१८३६	१७९१ लालित्य लता और १८०४ सज्जन-विलास का रचनाकाल।
९२।३४३	दास, भिखारी	१७८०	१७९१ रस-सारांश का रचनाकाल।
९३।३४४	दास, वेनी माधव	१६५५	१६८७ मूल-गोसाईंचरित का रचनाकाल और १६९९ मृत्युकाल।
९४।३५८	द्विजदेव	१९३०	१९०७ शृङ्गारलतिका का रचनाकाल और १९३० मृत्युकाल।

९५।३५८	दुर्गा	१८६०	१८५३ के एक युद्ध का आँखों देखा वर्णन किया है।
९६।३५९	दूलह	१८०३	१८०४ में इनके बाप कवीन्द्र ने रसचन्द्रोदय की रचना इनके लिए की।
९७।३६४	देवकीनन्दन शुक्ल	१८७०	१८५६ अवधूतभूषण का रचनाकाल।
९८।३८२	धनीराम बनारसी	१८८८	१८८० काव्यप्रकाश का रचनाकाल।
९९।३८३	धीर	१८७२	१८७० 'कवि प्रिया का तिलक' का रचना काल।
१००।३८७	धौकल सिंह वैस	१८६०	१८६४ रमल प्रश्न का रचनाकाल।
१०२।४०३	नरवाहन	१६००	१५३०-१६०१ इनके गुरु हितहरिवंश का जीवनकाल।
१०२।४०६	नारायण भट्ट गोसाईं	१६२०	१६४१ भक्तमाल में उल्लेख।
१०३।४०१	निधान १ प्राचीन	१७०८	१६७४ जसवन्त विलास का रचना काल।
१०४।४११	निधान २ ब्राह्मण	१८०८	१८१२ शालिहोत्र और १८३२ वसन्तराज का रचनाकाल।
१०५।४१४	नित्राज ३, बुन्देलखण्डी	१८०१	१८१७ इनके आश्रयदाता भगवन्तराय खींची का मृत्युकाल।
१०६।४१९	नीलकण्ठ त्रिपाठी	१७३०	१६९८ अमरेश विलास का रचनाकाल।
१०७।४२२	नरिंद २, महाराजा पटियाला	१९१४	१९१९ मृत्युकाल।
१०८।४३३	नाथ ४	१८११	१८०३ मुहूर्त्त चिन्तामणि और १८०७ अलङ्कारदीपिका का रचनाकाल।
१०९।४३६	नाथ ६, ब्रजवासी	१६४१	१६४९ भक्तमाल में उल्लेख।
११०।४३९	नवल सिंह कायस्थ	१९०८	१८७३-१९२६ रचनाकाल।
	४४४ नारायण	१८०९	१८११-३२ अवध के नवाब शुजाउद्दौला का रचनाकाल।
१११।४४६	पद्माकर	१८३८	१८१० जन्मकाल, १८९० मृत्युकाल।
११२।४४९	प्रवीणराय पातुर	१६४०	१६५८ में केशव ने इनके लिए कवि-प्रिया की रचना की थी।
११३।४५५	प्रेमी यमन	१७९८	१७६३-७६ बहादुर शाह और फर्रुखसियर का शासनकाल।

११४।४५८	प्राणनाथ २, कौटा वाले	१७८१	१७६५ कल्कि-चरित का रचनाकाल।
११५।४५१	परमानन्द दास	१६०१	१५५०-१६४१ जीवनकाल।
११६।४६२	प्रधान कवि	१८७५	१८५७ जन्मकाल।
११७।४६३	पञ्चम प्राचीन, बुन्देलखण्डी	१७३५	१७२२-८८ छत्रसाल का शासनकाल।
११८।४६७	पुरुषोत्तम	१७३०	,, ,, ,,
११९।४६९	पण्डित प्रवीण, ठाकुरप्रसाद	१९२४	१९०७ द्विजदेव का रचनाकाल।
१२०।४७०	पतिराम	१७०१	१६१२-७४ इनके मित्र केशव का जीवन काल।
१२१।४७१	पृथ्वीराज	१६२४	१६०६-१६५७ जीवनकाल।
१२२।४७४	परशुराम २, ब्रजवासी	१६६०	१६७७ विप्रमती का रचनाकाल।
१२३।४८४	पराग बनारसी	१८८३	१८५२-६२ इनके आश्रयदाता काशी-नरेश महाराज उदित नारायण सिंह का शासनकाल।
			४६०।३३-७७० पुण्यकृत शिलालेख का रचनाकाल।
१२४।४८७	प्रेमनाथ	१८३५	१८३९ महाभारत का रचनाकाल।
१२५।४९३	फूलचन्द ब्राह्मण बैसवारे वाले	१९२८	१९३० अनिरुद्ध स्वयंवर का रचनाकाल।
१२६।४९८	बुद्धराव, हाड़ा बूँदी	१७५५	१७४२ जन्मकाल।
१२७।४९९	बलदेव बघेलखण्डी	१८०९	१८०३ सत्कविगिराविलास का रचनाकाल
१२८।५००	बलदेव चरखारी	१८९६	१९१७-३७ के बीच किसी समय चरखारी वापस आए।
१२९।५०१	बलदेव क्षत्रिय, अवध	१९११	१९०७ इनके काव्य शिष्य द्विजदेव की शृङ्गारलहरी का रचनाकाल।
१३०।५०५	विजय, विजयबहादुर बुन्देला	१८७८	१८३९-८६ शासनकाल।
१३१।५०८	बेनी बेतीवाले	१८४४	१८५१ अलङ्कारप्रकाश का रचनाकाल
१३२।५०९	बेनी प्रवीण	१८७६	१८७४ नवरस तरङ्ग का रचनाकाल।
१३३।५१२	वीर, वीरवर कायस्थ, दिल्ली	१७७७	१७७९ काव्यचन्द्रिका का रचनाकाल।
१३४।५१३	बलभद्र सनाढ्य	१६४२	१६१२-७४ इनके अनुज केशव का जीवन काल।
१३५।५१५	व्यास स्वामी हरीराम शुक्ल	१५९०	१५६७ जन्मकाल।
१३६।५१६	वल्लभ रसिक	१६८१	१६३२ में इनके गुरु स्वामी हरिदास का देहान्त।

१३७।५१६	विठ्ठल नाथ	१६२४	१५७२-१६४२ जीवनकाल ।
१३८।५२०	विपुल विठ्ठल	१५८०	१५३७ इनके भाञ्जे स्वामी हरिदास का जन्मकाल ।
१३९।५२५	वंशीधर मिश्र संडीला	१६७२	१६७२ मृत्युकाल ।
१४०।५३७	ब्रजवासी दास	१८१०	१८२७ ब्रजविलास का रचनाकाल ।
१४१।५४०	विजयाभिनन्दन	१७४०	१७२२-८८ इनके आश्रयदाता छत्रसाल का शासनकाल ।
१४२।५४३	बोधा	१८०४	१८०९-१५ पन्नानरेश खेतसिंह का शासनकाल ।
१४३।५४४	बोध बुन्देल खण्डी	१८५५	" "
१४४।५४५	बलभद्र कायस्थ पन्ना	१९०१	१६०६-२७ नृपति सिंह का शासनकाल
१४५।५४६	विश्वनाथ १	१९०१	१८७२ अलङ्कारादर्श का रचनाकाल ।
१४६।५४८	विश्वनाथ सिंह रीवाँ	१८९१	१८९२-१९११ शासनकाल ।
१४७।५५३	विहारी ३, बुन्देलखण्डी	१७८६	१८१५ हरदौल चरित्र का रचनाकाल ।
१४८।५५४	विहारीदास ब्रजवासी	१६७०	१६३२ इनके पिता गुरु स्वामी हरिदास का मृत्युकाल ।
१४९।५६५	बारन	१७४०	१७१२ रत्नकाकर का रचनाकाल ।
१५०।५६७	बाजीदत्त	१७०८	१६६० में इनके गुरु दादू की मृत्यु ।
१५१।५७०	बनवारी	१७२२	१६९०-१७०० रचनाकाल ।
१५२।५७६	बाजेस	१८३१	१८२०-६१ हिम्मतबहादुर का शौर्य-काल ।
१५३।८८१	बनमाली दास गोसाईं	१७१६	१७१५ दाराशिकोह का मृत्युकाल ।
५८३	वंशीधर बजपेयी जितना हो सकते	१९०१	१९०९ गुलिस्ताँ का पुस्तबाटिका नाम से अनुवाद
१५४।५८४	वंशीधर बनारसी	१९०१	१९०७ साहित्यतरङ्गिणी का रचना काल ।
१५५।५९५	बेनी दास	१८९२	१८९० में मारवाड़ में प्रबन्धलेखक थे ।
१५६।५९६	बादे राय	१८८२	१९१४ रामायण का रचनाकाल ।
१५७।५९७	भूषण	१७३८	१७०५ अलङ्कारप्रकाश, १७२३ छन्द हृदय प्रकाश, १७३० शिवराज भूषण का रचनाकाल ।

१५८।६०७	भोज कवि २, मिश्र	१७८१	१७६४-६७ इनके आश्रयदाता राव बुद्ध सिंह का शासनकाल।
१५९।६०८	भोज कवि ३, विहारी लाल	१९०१	१८८४ उपवन-विनोद का रचनाकाल।
१६०।६१०	भौन, बेंती वाले	१८८१	१८६१ रसरत्नाकर की प्राचीनतम प्रति का लिपिकाल।
१६१।६११	भावन, भवानीप्रसाद पाठक	१८९१	१८५१ शक्तिचिन्तामणि का रचनाकाल।
१६२।६१६	भवानी दास	१९०२	१९२० सूर्यमाहात्म्य का लिपिकाल।
१६३।६१७	भान दास चरखार	१८५५	१८३९ चरखारीनरेश खुमान सिंह का मृत्युकाल
६२५	भूमनारायण कामूपुर वाले	१८५९	१८११-३२ अवध के नवाब शुजाउद्दौल का रचनाकाल
१६४।६२७	भूधर २, असोथर वाले	१८०३	१८१७ भगवन्त राय खींची का मृत्युकाल
१६५।६३१	मोहन भट्ट १	१८०३	१७४३ जन्मकाल।
१६६।६३४	मुकुन्द लाल बनारसी	१८०३	१७९६ में इनके शिष्य रघुनाथ बनारसी ने रसिकमोहन रचा।
१६७।६३६	मुकुन्द प्राचीन	१७०५	१६८३ रहीम का मृत्युकाल।
१६८।६३७	माखन १	१८७०	१८६० बसंत मञ्जरी का लिपिकाल।
१६९।६३८	माखन लखेरा	१९११	१८९१ जन्मकाल।
१७०।६४२	मणिदेव बन्दीजन बनारसी	१८९६	१८८४ महाभारत का समाप्तिकाल।
१७१।६४३	मकरन्द	१८१४	१८२१ हंसाभरण का रचनाकाल।
१७२।६४५	मंचित	१७८५	१७८५ उप० खोजरिपोर्ट १९०६।७१
१७३।६५९	मलूक दास	१६८५	१६३१-१७३९ जीवनकाल।
१७४।६६९	मनभावन	१८३०	१८२०-५० इनके गुरु चंदनराय का रचनाकाल।
१७५।६७०	मनियार सिंह	१८६१	१८४८ महिम्न कवित्त और १८७३ सौन्दर्य लहरी का रचनाकाल।
१७६।६७२	मधुसूदन दास माथुर	१८३९	१८३२ रामाश्वमेध का रचनाकाल।
१७७।६७३	मनीराम मिश्र २	१८३९	१८२९ छन्द-छप्पनी का रचनाकाल।
१७८।६८२	मनोहर ३	१७८०	१७६९ में इनके शिष्य प्रियादास ने भक्तमाल की टीका लिखी।
१७९।६८३	माधवानन्द भारती	१९०२	१९२६ कैलाश मार्ग का रचनाकाल।

१८०।६८४	महेश		१८६० उपस्थिति काल, खोज रिपोर्ट १९४७।२९२
१८१।६८५	मदन मोहन	१६९२	१६१३-६२ अकबर का शासनकाल।
१८२।६८८	महाकवि	१७८०	१७५५ हजारा का रचनाकाल।
१८३।६९१	मल्ल	१८०३	१८१७ भगवंत राय खींची का मृत्युकाल।
१८४।६९२	मानिक चन्द	१६०८	१५९९-१६०६ में पुरुषोत्तम और बिट्ठलनाथ साथ-साथ अचार्य थे। उस समय यह विद्यमान थे।
१८५।६९५	मतिराम	१७३८	१६७४-१७७३ जीवनकाल।
१८६।६९६	मण्डन	१७१६	१६८३ में खानखाना की मृत्यु।
१८७।६९९	महानन्द	१९०१	१९१६ मृत्युकाल।
१८८।७०७	मीरा मदनायक	१८००	१७५६-१८०७ इनके समसामयिक रसलीन का जीवनकाल।
१८९।७१७	राम सिंह बुन्देलखण्डी	१८३४	१८२०-६१ हिम्मत बहादुर का शौर्य काल
१९०।७२०	रामसहाय बनारसी	१९०१	१८६०-८० रचनाकाल। १८७३ वृत्ततरङ्गिणी।
१९१।७२१	रामदीन त्रिपाठी	१९०१	१८७६ सत्यनारायण पूजन कथा भाषा का रचनाकाल।
१९२।७४५	रसखानि	१६३०	१६४२ में इनके गुरु विट्ठलनाथ की मृत्यु।
१९३।७४६	रसाल, अङ्गने लाल	१८८०	१८८६ बारह मासा का रचनाकाल।
१९४।७४९	रसिके शिरोमणि	१७१५	१६४७ जन्मकाल।
१९५।७६६	रतन श्रीनगर वाले	१७९८	१७४१-७३ गढ़वालनरेश फ़तेशाह का शासन-काल।
१९६।७६६	राव राना	१८९१	१८८६-१९१७ रतन सिंह का शासनकाल।
१९७।७७०	रनछोर	१७५०	१७३७ राजपट्टन का रचनाकाल।
१९८।७८२	रामशरण	१८३२	१८२०-६१ हिम्मत बहादुर का शौर्यकाल।
१९९।७८३	राम भट्ट फर्रुखाबादी	१८०३	१८००-०६ फर्रुखाबाद से नवाब खाँ का शासनकाल।
२००।७८९	रुद्रमणि ब्राह्मण	१८०३	१८०५ में ही इनके आश्रयदाता जुगलकिशोर भट्ट ने अलङ्कारनिधि की रचना की।
२०१।७९२	रस रूप	१७८८	१८११ तुलसी भूषण का रचना काल।

२०२।७९५	रसिक बिहारी	१७८०	१८२२ मृत्युकाल १७५६-१८२१ नागरीदास का जीवनकाल।
२०३।७९७	राना राज सिंह	१७३७	१७११-३८ शासनकाल।
२०४।७९९	रामप्रसाद अग्रवाल	१९०१	१९११ में इनके पुत्र तुलसी राम ने भक्तमाल उर्दू अनुवाद किया।
२०५।८००	लाल प्राचीन	१७३८	१७१५ जन्मकाल।
२०६।८०१	लाल २	१८४७	१८३३ रस मूल का रचनाकाल।
२०७।८०२	लाल, बिहारी लाल त्रिपाठी	१८८५	१८७२ विक्रम सतसई की टीका का रचनाकाल।
२०८।८०६	लाल सुकुंद	१७७४	१७९६ में इनके शिष्य रघुनाथ बनारसी ने रसिकमोहन की रचना की।
२०९।८२०	लोक नाथ	१७८०	१७६४-९७ राव बुद्ध सिंह का शासनकाल।
२१०।८३७	शम्भु नृप शम्भु	१७३८	१६७४-१७७३ इनके मित्र मतिराम का जीवन-काल।
२११।८३९	शम्भुनाथ मिश्र	१८०३	१८०७ अलङ्कारदीपिका का रचनाकाल।
२१२।८४६	शिवनाथ बुन्देलखण्डी	१७६०	१७८८-१८१५ जगत सिंह का शासनकाल।
२१३।८४७	शिवराम	१७८८	१७८८-१८२० रचनाकाल।
२१४।८५७	शिवदीन मिनगा	१९१५	१९०१ में मिनगा नरेश कृष्णदत्त सिंह और अवध के नाजिम के बीच हुए युद्ध का वर्णन।
२१५।८६३	श्री गोविंद	१७३०	१७३१ शिवाजी का राज्यारोहणकाल।
२१६।८६४	श्री भट्ट	१६०१	१६०८ इनके गुरु केशव कश्मीरी का समय।
२१७।८६६	श्रीधर प्राचीन	१७८९	१७६९ जंगनामा का रचनाकाल।
२१८।८७४	सन्त दास व्रजवासी	१६८०	१६४९ भक्तमाल में उल्लेख।
२१९।८७८	सखीसुख	१८०७	१७९९ में इनके पुत्र कवींद्र ने रसदीपक की रचना की।
२२०।८८२	सेख	१६८०	१६४०-८० इनके पति आलम का रचनाकाल।
२२१।८८३	सेवक असनी	१८९७	१८७२-१९३८ जीवनकाल।
२२२।८८५	शीतल त्रिपाठी टिकमापुर	१८९१	इनके पुत्र बिहारीलाल ने १८७२ में विक्रम-सतसई की टीका की।

संख्या	कवि	संवत्	प्रमाण
२२३।८८७	सुलतान पठान	१७६१	१७४९ इनके आश्रित चन्द कवि का समय
२२४।८९९	शिरोमणि	१७०३	१६८० नाममाला का रचनाकाल
२२५।९००	सिंह	१८३५	१८५३ छन्दश्रृङ्गार का रचनाकाल
२२६।९०९	सागर	१८५३	१८३२-५४ लखनऊ के नवाब आसफुद्दौला का शासनकाल
२२७।९१०	सुखलाल	१८५५	१८४४ सुखसागर का रचनाकाल
२२८।९२१	सामन्त	१७३८	१७१५-६४ औरङ्गजेब का शासनकाल
२२९।९२८	सूरदास	१६४०	१६४० मृत्युकाल
२३०।९२९	सूदन	१८१०	१८१२-२० इनके आश्रयदाता सूरजमल का शासनकाल
२३१।९३०	सेनापति	१६८०	१७०६ कवित्त रत्नाकर ऐसे प्रौढ़ ग्रन्थ का रचनाकाल
२३२।९३३	सदा शिव	१७३४	१७१७ राजरत्नाकर का रचनाकाल
२३३।९३५	सुखलाल	१८०३	१८०५ में इनके आश्रयदाता जुगलकिशोर भट्ट ने अलङ्कारनिधि की रचना की
२३४।९३६	सन्त जीव	१८०३	,, ,, ,, ,,
२३५।९४२	सोमनाथ सांड़ी	१८०३	१८०९ रचनाकाल, विनोद
२३६।९४४	समनेस कायस्थ	१८८१	१८४७ रसिकविलास और १८७९ पिङ्गलकाव्य-विभूषण का रचनाकाल
२३७।९४६	शिवदत्त ब्राह्मण	१९११	१९२६ उत्पलारण्य माहात्म्य का रचनाकाल
२३८।९५५	श्यामलाल	१८०४	१८१७ भगवन्त राय खींची का मृत्युकाल
२३९।९५८	सारङ्ग असोथर	१७९३	,, ,, ,, ,,
२४०।९६८	हरिकेश	१७६०	१७७६ के युद्ध का वर्णन किया है
२४१।९६९	हरिवंश मिश्र, विलग्रामी	१७२९	१७३९ इनके शिष्य जलील विलग्रामी का रचनाकाल
२४२।९७०	हित हरिवंश	१५५९	१५३०-१६०९ जीवनकाल
२४३।९७७	हौल राय	१६४०	गो० तुलसीदास के समसामयिक
२४४।९८८	हीरामणि	१६८०	१७०६ में इनके शिष्य सेनापति ने कवित्त रत्नाकर की रचना की

संख्या	कवि	संवत्	प्रमाण
२४५।९९२	हिमाचल राम	१९०४	१९१५ मृत्युकाल
२४६।१००१	हरिजन	१९११	१९०३ तुलसी चिन्तामणि का रचनाकाल

घ. **तर्कसिद्ध उपस्थितिकाल**—सरोज में कुछ कवि ऐसे भी हैं, जिनके संवतों की जाँच के लिए कोई वाह्य आधार तो नहीं मिलते, फिर भी तर्क के सहारे उनके संवत उपस्थितिकाल सिद्ध हो जाते हैं।

सरोज का प्रणयन १९३४-३५ में हुआ। इसमें किसी ऐसे कवि के सम्मिलित किए जाने की सम्भावना नहीं, जिसकी वय २५ वर्ष से कम हो। इससे कम वय वाला कवि अप्रसिद्ध ही बना रहेगा और बिना प्रख्यात हुए किसी काव्यसंग्रह में स्थान पा जाना समीचीन एवं सम्भव नहीं प्रतीत होता। सरोज में निम्नलिखित कवियों के संवत् १९१० या और बाद के हैं। यदि इन संवतों को जन्मकाल माना जाता है, तो इन कवियों की वय बहुत कम ठहरती है। अतः ये सभी संवत् जन्म-काल न होकर उपस्थितिकाल हैं।

१।२६	अलीमन	१९३३
२।४०	शङ्कर भाट	१९१०
३।८३	कुञ्ज लाल मऊरानी पुरे	१९१२
४।८७	कान्ह कवि कन्हई लाल	१९१४
५।९७	कामताप्रसाद	१९११
६।१३३	कामताप्रसाद ब्राह्मण लखपुरा	१९११
७।२३३	चैन सिंह खत्री, लखनऊ	१९१०
८।२६४	जनकेश भाट, मऊ	१९१२
९।२६८	जवाहिर २ भाट, बुन्देलखण्डी	१९१४
१०।३५७	दीनानाथ, बुन्देलखण्डी	१९११
११।४८६	पञ्चम, डलमऊ	१९२४
१२।६१५	भूमि देव	१९११
१३।६१९	मैसूर	१९११
१४।६९३	मानिकचन्द कायस्थ	१९३०
१५।७४३	रघुनाथ उपाध्याय, जौनपुर	१९२१
१६।७९३	राधे लाल, कायस्थ	१९११
१७।९३७	सुदर्शन सिंह	१९३०

इसी प्रकार कालिदास हजारा का रचनाकाल सं० १७५५ है। सरोज में कुछ ऐसे कवि भी सम्मिलित किए गए हैं, जो हजारा में थे और जिनका समय १७३५ के बाद का दिया गया है। हजारा के सङ्कलन काल में इन कवियों की वय २० वर्ष या उससे भी कम की होती है। कुछ का तो समय १७५५ के भी बाद का दिया गया है। तो क्या यह मान लिया जाय कि इनका जन्म हजारा के सङ्कलन के पश्चात् हुआ ? निश्चय ही ये सभी संवत् भी उपस्थितिकाल ही सिद्ध होते हैं।

१।८४ कुन्दन	१७५२
२।१७८ गोविन्द	१७५७
३।२४९ छैल	१७५५
४।५३५ ब्रजदास, प्राचीन	१७५५
५।५५२ विहारी, प्राचीन २	१७३८
६।६५५ मोतीराम	१७४०
७।६५६ मनसुख	१७४०
८।६५७ मिश्र	१७४०
९।६५८ मुरलीधर	१७४०
१०।६६० मीर रुस्तम	१७३५
११।६६१ मुहम्मद	१७३५
१२।६६२ मोरी माधव	१७३५
१३।८१९ लोथे	१७७०

इसी प्रकार कमच कवि की कविता सरोजकार को सं० १७१० के एक संग्रह में मिली थी। कमच कवि का समय सं० १७१० दिया गया है। इसे किसी भी प्रकार जन्मकाल नहीं माना जा सकता, यह उपस्थितिकाल ही है। विश्वनाथ अताई की रचना १८०३ में सङ्कलित बलदेव कवि के सत्कवि-गिराविलास में है और इनका समय सं० १७८४ दिया गया है। यदि यह जन्मकाल है तो उक्त ग्रन्थ के सङ्कलन के समय कवि की वय केवल १९ वर्ष की होगी। अतः यह भी उपस्थितिकाल ही है। इस प्रकार तर्क के सहारे ३२ कवियों के सरोज-दत्त संवत् उपस्थितिकाल सिद्ध होते हैं।

ङ. सरोज के संवत् और जन्मकाल—ग्रियर्सन ने उ० का अर्थ उत्पन्न किया और सरोज के सभी संवतों को या तो जन्मकाल स्वीकृत किया या फिर कतिपय कवियों के सम्बन्ध में

कुछ नए सूत्रों के सहारे नए संवत् दिए। तब से सरोज के संवतों को जन्मकाल मानने की अन्ध-परम्परा चल पड़ी। सरोजकार ने केवल गुरु नानक का जन्मसंवत् दिया है और विवरण में उसने यह उल्लेख कर दिया है। अन्य सभी संवत् उसने अपनी समझ से उपस्थितिकाल के ही दिए हैं। यह दूसरी बात है कि इनमें से कुछ अशुद्ध हो जाँय और कुछ जन्मकाल भी। पीछे जो सर्वेक्षण दिया गया है, उसके विश्लेषण से पता चलता है कि सरोज के प्रायः २५ संवत् जन्मकाल हैं। इसका यह अर्थ कदापि नहीं है कि ये संवत् वस्तुतः जन्मसंवत् हैं। इसका इतना ही अर्थ है कि इस संवत् के आस-पास प्रसङ्गप्राप्त कवि का जन्म किसी समय हुआ।

संख्या	कवि	संवत्	अन्य ज्ञातसंवत्
१।३०	अक्षर अनन्य	१७१०	सं० १७६४ तक अवश्य जीवित, १७६० के लगभग मृत्यु
२।३३	अमरदास	१७१२	१७५२ भक्तविरुदावली का रचनाकाल
३।६२	कवि राम १	१८६८	१९३५ में विद्यमान
४।१५२	गङ्गा पति	१७४४	१७७५ विज्ञानविलास का रचनाकाल
५।१८६	गुमान त्रिपाठी	१७८८	१८३८ कृष्णचन्द्रिका का रचनाकाल
६।१६२	गजराज उपाध्याय काशी	१८७४	१९०३ वृत्तहार पिङ्गल का रचनाकाल
७।२१४	घनराय	१६९२	१७४६-९२ इनके आश्रयदाता ओरछा नरेस का रचनाकाल
८।२५५	जगत सिंह विसेन	१७९८	१८२०-७७ रचनाकाल
९।३६३	देवीदास बुन्देलखण्डी	१७१२	१७४२ प्रेमरत्नाकर का रचनाकाल
१०।३६८	देवीदास वन्दीजन	१७५०	१७९४ सूमसागर का रगनाकाल
११।३८५	धीरज नरिन्द	१६१५	१६१२-७४ इनके आश्रित केशवदास का जीवनकाल
१२।३९१	नानक	१५२६	स्वयं सरोज में इसके जन्मकाल होने का उल्लेख
१३।४१३	नियाज अन्तर्वेदी	१७३९	१८०० रचनाकाल
१४।४१५	नरोत्तमबाड़ी सीतापुर वाले	१६०२	सुदामा चरित का रचनाकाल सं० १६४० के आस-पास होना चाहिए, क्योंकि इसी के लगभग कवित्त-सवैया का पूर्ण प्रचलन हुआ
१५।४२८	नन्ददास, अष्टछापी	१५८५	१५९० अष्टछाप परिचय के अनुसार जन्मकाल

संख्या	कवि	संवत्	अन्य ज्ञातसंवत्
१६।४५३	प्रेम सखी	१७९१	१८८० विनोद के अनुसार रचनाकाल
१७।४७८	पद्मनाभ	१५६०	१६३२ इनके गुरु भाई अग्रदास का सर्वस्वीकृत रचनाकाल
१८।६४६	मुबारक	१६४०	अन्य इतिहासकारों द्वारा स्वीकृत और पूर्ण रीति मग्नता भी इसका प्रमाण
१९।८४३	शिवकवि,अरसेला वन्दीजन	१७९६	१८५० रचनाकाल
२०।९०१	सङ्गम	१८४०	१९०० रचनाकाल
२१।९३६	सुवंश शुक्ल	१८३४	१८६१-७६ रचनाकाल
२२।९५९	हरिनाथ महापात्र	१६४४	भाषाकाव्यसंग्रह के अनुसार जन्मकाल
२३।९८९	हरदेव	१८३०	१८७३-७५ रघुनाथ राव का शासनकाल
२४।९९९	हिम्मत बहादुर	१७६५	१८२०-६१ शौर्यकाल

च. सरोज के अशुद्ध सिद्ध संवत्—सरोज के संवत् अधिकतर अनुमान पर आश्रित हैं, अतः इनमें से यदि अनेक अशुद्ध सिद्ध हो जायं, तो कोई आश्चर्यजनक बात नहीं। पीछे जो सर्वेक्षण किया जा चुका है, उसके विश्लेषण से सिद्ध होता है कि सरोज में दिए गए ६८७ संवतों में से ११३ अशुद्ध हैं। ये न तो जन्मकाल सिद्ध होते हैं और न तो उपस्थितकाल ही।

संख्या	कवि	संवत्	प्रमाण
१।२	अजबेश प्राचीन	१५७०	इस कवि का अस्तित्व सिद्ध नहीं होता, अतः मूलो नास्ति कुतो शाखा
२।१३	आजम	१८६६	१७८६ इनके शृङ्गारदर्पण का रचनाकाल
३।१६	आलम	१७१२	१६४०-८० रचनाकाल
४।२७	अनीस	१९११	१७९८ के पूर्व रचनाकाल
५।३६	अनन्यदास चकदेवा वाले	१२२५	इस कवि का अस्तित्व ही नहीं
६।३८	अमर सिंह	१६२१	१६७० जन्मकाल
७।३९	आनन्द	१७११	१६६० कोकसार का रचनाकाल
८।४७	अजीत सिंह राठौर	१७८७	१७३७-८१ जीवनकाल
९।५५	उदय सिंह माड़वार नरेश	१५१२	१५८४ ई० में उपस्थित, ग्रियर्सन और टॉड

संख्या	कवि	संवत्	प्रमाण
१०।६२	उनियारे के राजा	१८८०	१८४२ बलभद्र के नखशिख की टीका का काल
११।७०	कर्ण ब्राह्मण	१८५७	१७९४ साहित्यचन्द्रिका का रचनाकाल
१२।७५	कवीन्द्र, सखीसुख के पुत्र	१८५४	१७९९ रसदीप का रचनाकाल
१३।८०	कृष्णलाल	१८१४	१८७२ कृष्णविनोद का रचनाकाल
१४।८१	कृष्ण कवि २ जयपुरी	१६७५	१७८२ बिहारी सतसई की कवित्त बन्ध टीका का रचनाकाल
१५।८६	कान्ह प्राचीन	१८५२	१८०४ रसरङ्ग का रचनाकाल
१६।९८	कबीर	१६१०	१४५६-१५७५ जीवनकाल
१७।१००	कलीराम (कालीराम)	१८२६	१७३१ सुदामा चरित का रचनाकाल
१८।१०१	कल्याण	१७२६	१६६० के आस पास कविताकाल
१९।१०२	कमाल	१६३२	१५००-५० के आस-पास कविताकाल, १४५६ इनके पिता का जन्मकाल
२०।११७	कृष्णानन्द-व्यासदेव	१८०६	१८५१-१९४५ जीवनकाल
२१।१२३	केवलराम	१७६७	१६४९ के पूर्व, भक्तमाल में विवरण
२२।१२५	केदार वन्दीजन	१२८०	१२५० के पूर्व उपस्थित
२३।१३१	कुम्भकर्ण	१४७५	१४१९-६९ शासनकाल
२४।१३७	खुमान सिंह सिसौदिया	८१२	८७०-९०० खुमान द्वितीय का शासनकाल, खुमान रासो का रचनाकाल १७६७ और १७९० के बीच है
२५।१४२	खण्डन	१८८४	१७८१-१८१८ रचनाकाल
२६।१७१	गोपा या गोप	१५९०	१७९३-१८०९ इनके आश्रयदाता ओरछा नरेश पृथ्वी सिंह का शासनकाल
२७।१९९	गड्डु कवि	१७७०	१८६०-१९०० रचनाकाल
२८।२१२	घन आनन्द	१६१५	१८१७ मृत्युकाल
२९।२१७	चन्द वरदाई	१०९८	१२२५-४९ रचनाकाल
२३९	चन्द्रसखी	१६३८	१७१७ चन्द्रसखी के गुरु बालकृष्ण के गुरु हरीलाल का समय
३०।२३६	चरणदास	१५३७	१७६०-१८३८ जीवनकाल
३१।२५३	छत्र कवि	१६२५	१७५१-७६ रचनाकाल

संख्या	कवि	संवत्	प्रमाण
३२।२६०	जुगुल कवि	१७५५	१८२१ हितचौरासी की टीका का रचनाकाल
३३।२६६	जसवन्त कवि २	१७६२	१६८३-१७३७ जीवनकाल
३४।२८२	जीवन कवि	१८०३	१८७३ वरिवण्ड विनोद का रचनाकाल
२८६	जगनन्द	१६५८	१७८१ बल्लभ वंशावली का रचनाकाल
३५।३०४	जगजीवनदास चन्देल	१८४१	१७२७-१८१७ जीवनकाल
३६।३०५	जुल्फ़कार	१७८२	१८०३ कुण्डलिकावृत्त का रचनाकाल
३७।३०६	जगनिक	११२४	१२२५-५० रचनाकाल
३८।३२३	तत्ववेत्ता	१६८०	१५५० रचनाकाल
३६।३३३	दलपति राय वंशीधर	१८८५	१७६८ अलङ्कार रत्नाकर का रचनाकाल
३४१	दत्त	१७०३	१७३० जन्मकाल
४०।३४६	दामोदरदास व्रजवासी	१६००	१६८७-६२ रचनाकाल
४१।३६०	देव, महाकवि	१६६१	१७४६ भावविलास का रचनाकाल
४२।३७०	देवा राजपूतानावाले	१८५५	१६३२ रचनाकाल
४३।३८६	निपट निरञ्जन	१६५०	१७४० के आस-पास रचनाकाल
४४।३६८	नागरी दास	१६४८	१७५६-१८२१ जीवनकाल
४५।४०२	नाभादास	१५४०	१६४६ भक्तमाल का रचनाकाल और १७१६ मृत्युकाल
४६।४०४	नरसिया	१५६०	१६००-५३ जीवनकाल
४७।४१८	नीलकण्ठ मिश्र	१६४८	यह कवि सरोजकार की मिथ्या सृष्टि है
४८।४२०	नील सखी	१६०२	१८४० रचनाकाल
४६।४५०	नवलदास क्षत्रिय	१३१६	१८१७-३८ रचनाकाल
५०।४४१	नीलाधर	१७०५	यह कवि सरोजकार की मिथ्या सृष्टि है
५१।४४५	परसाद	१६००	१७६५ शृङ्गारसमुद्र का रचनाकाल
५२।४४८	परताप साहि वन्दीजन	१७६०	१८८२-६६ रचनाकाल
५३।४६५	पञ्चम नवीन वन्दीजन बुन्देलखण्डी	१६११	१८२२-३५ गुमान सिंह का शासनकाल
५४।४६६	प्रिया दास	१८१६	१७६६ भक्तमाल की टीका का रचनाकाल
५५।४६८	पहलाद	१७०१	१६१३-६२ अकबर का शासनकाल
५६।४७२	परवत	१६२४	१७१० रचनाकाल

संख्या	कवि	संवत्	प्रमाण
४७७	पुखी	१८०३	अकबरी दरबार के कवि हैं
५७।५०७	बेनी प्राचीन असनी	१६६०	१८१७ रसमय का रचनाकाल
५८।५११	वीर कवि दाऊ दादा मुण्डिला	१८७१	१८१८ प्रेमदीपिका का रचनाकाल
५९।५१४	व्यास जी कवि	१६८५	१५६७ जन्मकाल और १६६३-७५ के बीच किसी समय मृत्यु
६०।५१८	वल्लभाचार्य	१६०१	१५३५-८७ जीवनकाल
६१।५५१	विहारीलाल चौबे	१६०२	१६५२-१७२१ जीवनकाल
६२।५७२	बैताल	१७३४	१८३९-८६ चरखारीनरेश विक्रम का शासन काल
६३।५९२	विजय सिंह उदयपुर के राजा	१७८७	१८१०-४१ शासनकाल
६४।५९४	वार दरवेश	११४२	१२२५-५० रचनाकाल
६५।५९८	भगवन्त रसिक	१६०१	१७९५ जन्मकाल, १८३०-५० रचनाकाल
६६।६२१	भूपति, राजा गुरुदत्त सिंह, अमेठी	१६०३	१७८८ रसरत्न का रचनाकाल
६७।६२२	भृङ्ग	१७०८	यह कवि सरोजकार की मिथ्या सृष्टि है
६८।६२८	मानदास ब्रजवासी	१६८०	१८१७ कृष्णविलास और १८६३ रामकूट विस्तार का रचनाकाल
६९।६३५	मुकुन्द सिंह हाड़ा	१६३५	१७१५ रचनाकाल
७०।६४४	मकरन्द राय	१८८०	१८२१ हंसाभरण का रचनाकाल
७१।६६३	मदन किशोर	१८०७	१७६५ रचनाकाल
७२।७००	मीराबाई	१४७५	१५५५-१६०३ जीवनकाल
७३।७०८	मलिक मुहम्मद जायसी	१६८०	१५७७ पदमावत का रचनाकाल
७४।७१३	मूक जी राजपूतानावाले	१७५०	१८८६ रचनाकाल
७५।७१४	मान कवीश्वर	१७५६	१७१७ रचनाकाल
७६।७२७	रामकृष्ण चौबे कालिञ्जर	१८८६	१८१७-६० रचनाकाल
७७।७३३	रामदास बाबा	१७८८	१६१९ में अत्यन्त वृद्धावस्थ। में अकबरी दरबार में प्रवेश

संख्या	कवि	संवत्	प्रमाण
७८।७५०	रस रास	१७१५	१८२७ कवित्त-रत्नमालिका का रचनाकाल
७९।७५९	ऋषिराम	१९०१	१८३२-५४ लखनऊ के नवाब आसफुद्दौला का शासनकाल
८०।७६३	रतनेस	१७८८	१८७१ कान्ता भूषण का रनाचकाल
८१।७६४	रत्नकुँवरि बीबी	१८०८	१८४४ प्रेमरत्न का रचनाकाल
८२।७६५	रतन, ब्राह्मण बनारसी	१९०५	यह कवि सरोजकार की मिथ्या सृष्टि है
८३।७६७	रतन कवि ३	१७३८	१८२७ अलङ्कार दर्पण का रचनाकाल
८४।७७२	रूपनारायण	१७०५	१६४२ बीरबल की मृत्यु के समय रचनाकाल
८५।७८१	रङ्ग लाल	१७०५	१८१२-२५ भरतपुर नरेश सूरजमल और जवाहर सिंह का शासनकाल
८६।७८६	रामप्रसाद वन्दीजन	१८०३	१८९४-९९ मोहम्मद अली, नवाब लखनऊ का शासनकाल
८७।८०४	लाल, लल्लू जी लाल	१८९२	१८२०-८२ जीवनकाल
८८।८०८	लालनदास, लखनऊ	१६५२	१५८७ भागवत भाषा का रचनाकाल
८९।८१२	लीलाधर	१६१५	१६७७-९५ गजसिंह, जोधपुर नरेश का शासनकाल
९०।८३५	सुखदेव मिश्र, दौलतपुर	१८०३	१७२८-५५ रचनाकाल
९१।८३६	सुखदेव अन्तर्वेदी	१७९१	,, ,,
९२।८५३	शिव सिंह प्राचीन	१७८८	१८५०-१८७५ रचनाकाल
९३।८५५	शिवनाथ शुक्ल	१८७०	१८४० के पूर्व उपस्थित
९४।८६५	श्रीपति	१७००	१७७७ काव्य सरोज का रचनाकाल
९५।८६९	श्रीधर, राजपूताने वाले	१६८०	१४५७ रणमल्ल छन्द का रचनाकाल
९६।८७०	सन्तन, बिन्दकी	१८३४	१७२८-६० रचनाकाल
९७।८७१	सन्तन, जाजमऊ	१८३४	१७२८-६० रचनाकाल
९८।८७५	सन्त २, प्राचीन १७५९	१६८३	रहीम की मृत्यु के पूर्व
९९।८८९	सहजराम बनिया १	१८६१	१७८९ रघुवंशदीपक का रचनाकाल
१००।८९०	सहजराम सनाढ्य २	१९०५	,, ,, ,, ,,
१०१।८९३	श्यामशरण	१७५३	१८०० के लगभग रचनाकाल
१०२।९०२	सम्मन	१८३४	१७२० रचनाकाल
१०३।९०३	सविता दत्त	१८०३	१७३५ कृष्णविलास का रचनाकाल

संख्या	कवि	संवत्	प्रमाण
१०४।६१६	सोमनाथ	१८८०	१७६४-१८२० रचनाकाल
१०५।६२२	सेन नापित	१५६०	१४५७ के आस पास उपस्थित
१०६।६३२	सारङ्ग	१३५०	१४२०शारङ्गधर पद्धति का रचनाकाल
१०७।६५६	श्रीहठ	१७६०	१७१२ के पूर्व रचनाकाल
१०८।६५७	सिद्ध	१७८५	१७१२ के पूर्व उपस्थित
१०९।६६०	हरिदास कायस्थ, पन्ना	१६०१	१८६७ रस कौमुदी का रचनाकाल १९०० मृत्युकाल
११०।६६१	हरिदास, बाँदा	१८६१	१८११ ज्ञान सतसई का रचनाकाल
१११।६६२	हरिदास स्वामी	१६४०	१५३७-१६३२ जीवनकाल
११२।६६४	हरीराम	१७०८	१७९५ छन्द रत्नावली का रचनाकाल
११३।६७४	हठी कवि	१८८७	१८३७ राधासुधा शतक का रचनाकाल

२. सरोज के वे संवत् जिनकी जाँच न हो सकी

सरोज के ६८७ संवतों में से निम्नलिखित १९५ संवतों की जाँच सम्भव न हो सकी। बहुत सम्भव है भविष्य में शोध द्वारा और भी साधन सुलभ हो जाने पर इनमें से कुछ और की भी जाँच सम्भव हो सके। तब तक इतने ही से सन्तोष करना चाहिए। और जब तक अन्यथा न सिद्ध हो जाय तब तक इन संवतों को उपस्थितिकाल या रचनाकाल ही मानना चाहिए, क्योंकि सरोजकार ने इन्हें उपस्थितिकाल ही माना है।

१।७ अवध बकस १९०४
२।९ अयोध्याप्रसाद शुक्ल १९०२
३।११ अमरेश १६३५
४।१८ अनूपदास १८०१
५।१९ ओली राम १६२१
६।२० अभयराम वृन्दाबनी १६०२
७।२४ अनन्त कवि १६९२
८।२६ आदिल १७६२
९।२८ अनुनैन १८९६
१०।४१ अनूप १७९८
११।४४ आसिफ़ खाँ १७३८
१२।४५ आछे लाल भाट १८८९
१३।५० इन्दु १७६६
१४।५२ ईश १७९६
१५।५४ ईसुफ़ खाँ १७९१
१६।५६ उदयनाथ, काशी १७११
१७।५७ उदेश भाट बु० १८१५
१८।५८ ऊधोराम १६१०
१९।५९ ऊधो १८५३
२०।६० उमेद १८५३
२१।६५ केशवराय बाबू, बघेलखण्डी १७१९
२१।८२ कृष्ण कवि ३, १८८८

२२।८५ कमलेश कवि १८७०
२३।९० कविराज १८८१
२४।९१ कविराइ १८७५
२५।९५ काशीनाथ १७५२
२६।९० किंगर गोविन्द बु० १८९०
२७।१०३ कलानिधि १ प्राचीन १६७२
२८।१०७ केहरी कवि १६१०
२९।१३० कनक १७४०
३०।१४६ खेम व्रजबासी १६३०
३१।१४९ गङ्ग, गङ्गाप्रसाद सपोलीवाले १८९०
३२।१६२ गिरिंधर कविराय १७७०
३३।१६४ गोपाल कवि, प्राचीन १७१५
३४।१६९ गोपालशरण राजा १७४८
३५।१७४ गोकुल विहारी १६६०
३६।१७५ गोपनाथ १६७०
३७।१७७ गोविन्द अटल १६७०
३८।१८३ गुरुदत्त प्राचीन १८८७
३९।१८७ गुलाल १८७५
४०।१८९ ग्वाल प्राचीन १७१५
४१।१९० गुनदेब १८५२
४२।१९५ गुन सिन्धु बु० १८८२
४३।१९६ गोसाईं, राजपूताना १८८२
४४।२०३ गोधू १७५५
४५।२०४ गणेश जी मिश्र १६१५
४६।२११ घनश्याम शुक्ल, असनी १६३५
४७।२१३ घासीराम १६८०
४८।२१५ घाघ १७५३
४९।२२३ चूड़ामणि १८६१
५०।२२६ चतुर विहारी व्रजवासी १६०५
५१।२२७ चतुर सिंह राना १७०१
५२।२३८ चिरञ्जीव ब्राह्मण १८७०
५३।२३९ चन्दसखी व्रजवासी १६३८
५४।२५० छीत १७०५
५५।२७१ जयदेव २ १८१५
५६।२८३ जगदेव कवि १७९२
५७।२८७ जलालुद्दीन १६१५
५८।२८९ जगनन्द १६५८
५९।२९१ जीवन १६०८
६०।२९२ जगजीवन १७०५
६१।२९३ जदुनाथ १६८१
६२।३०९ टेर, मैनपुरी १८८८
६३।३११ ठाकुर १७००
६४।३१२ ठाकुरप्रसाद त्रिपाठी १८८२
६५।३२१ तारापति १७९०
६६।३२२ तारा कवि १८३६
६७।३२४ तेगपाणि १७०८
६८।३२६ तालिब शाह १७६८
६९।३३२ राजा दल सिंह बु० १७८१
७०।३४१ दत्त प्राचीन, कुसमड़ी १७०३
७१।३५१ द्विजचन्द १७५५
७२।३५२ दिलदार १६५०
७३।३६२ देवदत्त १७०५
७४।३६५ देवदत्त २ १७५२
७५।३६९ देवीराम १७५०
७६।३७१ दौलत १६५१
७७।३७७ दीनानाथ अध्वर्यु १८७६

७८।३८१ धन सिंह १७६१
७६।३६० निहाल निगोहाँ १८२०
८०।३६४ नोने १६०१
८१।३६५ नेसुक १६०४
८२।४०५ नव खान १७६२
८३।४०८ नारायणदास कवि ३. १६१५
८४।४१२ नियाज १ जुलाहा, बिलग्रामी १८०४
८५।४१६ नरोत्तम बु० १८५६
८६।४१७ नरोत्तम अन्तर्वेदी १८६६
८७।४२१ नरिन्द प्राचीन १७८८
८८।४२३ नन्दन १६२५
८६।४२५ नन्द लाल १, १६२१
६०।४२६ नन्द लाल २, १७७४
६१।४३१ नाथ २, १७३०
६२।४३२ नाथ ३, १८०३
६३।४४२ निधि १७५१
६४।४४३ निहाल प्राचीन १६३५
६५।४४४ नारायण वन्दीजन, काकूपुर १८०६
६६।४४७ पजनेस १८७२
६७।४५० प्रवीण कविराय १६६२
६८।४५१ परमेश प्राचीन १६६८
६६।४५२ परमेश २, १८६६
१००।४५४ परम महोबा १८७१
१०१।४५६ परमानन्द लल्ला पौराणिक १८६४
१०२।४७५ पुण्डरीक १७६६
१०३।४७६ पद्मेश १८०३
१०४।४७७ पुखी १८०३
१०५।४६० पुण्ड ७७०
१०६।४६४ फालका राव १६०१
१०७।५०२ बलदेव प्राचीन ४, १७०४
१०८।५१० बेनी प्रगट १८८०
१०६।५१७ वल्लभ कवि २, १६८६
११०।५३० ब्रजचन्द १७६०
१११।५३१ ब्रजनाथ १७८०
११२।५३६ ब्रजलाल १७०२
११३।५३८ ब्रजराज बु० १७७५
११४।५३६ ब्रजपति १६८०
११५।५४१ वंशरूप, बनारसी १६०१
११६।५५० विश्वनाथ प्राचीन १६५५
११७।५५५ बालकृष्ण त्रिपाठी १७८८
११८।५६८ बुधराम १७२२
११६।५६६ बलि जू १७२२
१२०।५७३ बैजू १७८०
१२१।५७८ वृन्दावनदास २, ब्रजवासी १६७०
१२२।५७६ विद्यादास ब्रजवासी १६५०
१२३।५८० बारक १६५५
१२४।५८३ वंशीधर बाजपेयी १६०१
१२५।५८५ वंशगोपाल जालबन १६०२
१२६।५६० विद्यानाथ १७३०
१२७।५६३ वरदे सीता कवि १२४६
१२८।६०५ भगवानदास मथुरा निवासी १५६०
१२६।६०६ भौज कवि प्राचीन १, १८७२
१३०।६०६ मोन प्राचीन १७६०
१३१।६१२ भीषम १६८१
१३२।६१४ भञ्जन १८३१
१३३।६१८ भूधर, काशी १७००

१३४।६२० भोला सिंह पन्ना १८९८
१३५।६२३ भरमी १७०८
१३६।६२४ भीषम १७०८
१३७।६२५ भूपनारायण वन्दीजन, काकूपुर १८५९
१३८।६३२ मोहन २, १८७५
१३९।६३३ मोहन ३, १७१५
१४०।६४१ मून, असोथर १८६०
१४१।६५१ मन निधि १८४३
१४२।६६७ मोतीलाल बाँसी १५९७
१४३।६७१ मधुसूदन १६८१
१४४।६७९ मदनमोहन चरखारी १८८०
१४५।६८७ माधवदास ब्राह्मण १५८०
१४६।६८८ महबूब १७६२
१४७।७०१ मनीराम मिश्र साढ़ि १८९६
१४८।७०३ मधुनाथ १७८०
१४९।७०५ मीतूदास १९०१
१५०।७०९ मलिन्द मिही लाल १९०२
१५१।७१८ राम जी कवि १, १६९२
१५२।७१९ रामदास कवि १८३९
१५३।७२२ रामदीन वन्दीजन, अलीगञ्ज १८९०
१५४।७३४ रघुराय बु० भाट १७९०
१५५।७३५ रघुराय २, १८३०
१५६।७४० रघुनाथ प्राचीन १७१०
१५७।७४४ रसराज १७८०
१५८।७५२ रस रङ्ग १९०१
१५९।७५३ रसिक लाल १८८०
१६०।७५६ रस लाल १७९३
१६१।७५७ रस नायक १८०३
१६२।७५८ ऋषि जू १८७२
१६३।७६१ रविनाथ १७९१
१६४।७६२ रविदत्त १७४२
१६५।७७४ राजाराम१ १६८०
१६६।७७५ राजाराम२ १७८८
१६७।७९० रुद्रमणि चौहान १७८०
१६८।७९४ रसधाम १८२५
१६९।८०५ लाल गिरिधर वैसवारे वाले १८०७
१७०।८०९ लाला पाठक रुकुमनगर वाले १८३१
१७१।८१० लोने वन्दीजन १ बु० १८७६
१७२।८१४ लक्ष्मण सिंह १८१०
१७३।८१५ लच्छू १८२८
१७४।८२१ लतीफ़ १८३४
१७५।८३० लालबिहारी १७३०
१७६।८४४ शिव कवि २, बन्दीजन विलग्रामी १७९५
१७७।८५० शिबलाल दुबे १८३९
१७८।८५६ शिवप्रकाश सिंह, डुमराँव १९०१
१७९।८६१ शङ्कर त्रिपाठी, बिसवाँ १८९१
१८०।८७९ सुखराम १९०१
१८१।८८० सुखदीन १९०१
१८२।८८१ सूखन १९०१
१८३।८८६ शीतल राय १८९४
१८४।८९१ श्यामदास १७५५
१८५।८९४ श्यामलाल १७५५
१८६।८९६ श्याम कवि १७०५
१८७।९०४ साधर कवि १८५५
१८८।९०५ सम्पति १८७०
१८९।९०६ सिरताज १८२५
१९०।९१५ शशि शेखर १७०५

१९१।९१८ सहीराम १७०८
१९२।९१९ सदानन्द १६८०
१९३।९२० सकल कवि १६९०
१९४।९२४ सुकवि १८५५
१९५।९३४ शिव प्राचीन १६३१
१९६।९५० सुखानन्द १८०३
१९७।९५१ सर्व सुखलाल १७९१
१९८।९५२ श्रीलाल, गुजराती १८५०
१९९।९६६ हिरदेश १९०१
२००।९६७ हरिहर १७९४
२०१।९८० हुसेन १७०८
२०२।९८१ हेम गोपाल १७८०
२०३।९८६ हरिजन १६९०
२०४।९८७ हर जू १७०५
२०५।९९१ हरीराम प्राचीन १६८०

३. सरोज के 'वि०' कवियों का विवरण

सरोज में कुल ५३ कवियों को वि० कहा गया है। वि० का अर्थ है सं० १९३५ में विद्यमान। इन कवियों में से २९ के सम्बन्ध में नए संवतों का भी परिज्ञान हुआ है जिनकी सूची निम्न है।

संख्या	कवि	नवीन ज्ञात संवत्
१।४	अयोध्याप्रसाद बाजपेयी	१८६०-१९४२ जीवनकाल
२।१०	आनन्द सिंह उपनाम दुर्गा सिंह	१९१७ पहलाद चरित का रचनाकाल
३।५१	ईश्वरीप्रसाद त्रिपाठी	१९१६ रामविलास का रचनाकाल
४।८८	कान्ह, कन्हैया बख्श बैस	१९०० जन्मकाल
५।१२०	कालीचरण बाजपेयी	१९०२ वृन्दावन प्रकरण का रचनाकाल
६।१९७	गणेश वन्दीजन, बनारसी	१८९६ हनुमत पचीसी का रचनाकाल
७।२००	गिरिधारी भाट, मऊरानीपुर	१८८६ राधा नख शिख का रचनाकाल १९१२ भावप्रकाश का रचनाकाल
८।२४२	छिति पाल, माधव सिंह अमेठी	१९१३ मनोजलतिका का रचनाकाल
९।२६१	जानकीप्रसाद पँवार	१९०८ राम नवरत्न का रचनाकाल
१०।३०७	जबरेश	१९४० में रीवाँ नरेश के यहाँ थे
११।३४९	द्विज कवि मन्नालाल, बनारसी	१९२३ रघुनाथशतक नामक संग्रह कासङ्कलनकाल
१२।४०७	नारायण राय वन्दीजन, बनारसी	१९२५ उद्धव-व्रजगमन चरित्र का रचनाकाल
१३।५०३	बलदेव अवस्थी	१८९७ जन्मकाल, १९२६-६२ रचनाकाल, १९७० मृत्युकाल

संख्या	कवि	नवीन ज्ञात संवत्
१४।५३३	व्रज, गोकुलप्रसाद	१८७७ जन्मकाल, १९६२ मृत्युकाल
१५।५६१	वन्दन पाठक, काशीवाले	१९०६ मानस शङ्कावली का रचनाकाल
१६।६४७	मातादीन शुक्ल अजगरावाले	१८९२-१९०३ रचनाकाल
१७।६६८	महेशदत्त ब्राह्मण	१८९७ जन्मकाल, १९६० मृत्युकाल
१८।७१८	मातादीन मिश्र	१९३० कवित्त-रत्नाकर का रचनाकाल
१९।७३७	रघुराज सिंह रीवाँ नरेश	१८८० जन्मकाल, १९११ सिंहासनारोहण काल, १९३६ मृत्युकाल
२०।७७६	राजा रणधीर सिंह	१८७८-१९५२ जीवनकाल
२१।८१६	लछिराम, हौलपुर	१९५१ कृष्ण विनोद का रचनाकाल
२२।८२२	लेखराज	१८८८ जन्मकाल, १९२६ गङ्गाभरण का रचनाकाल, १९४८ मृत्युकाल
२३।८४५	शिवप्रसाद सितारे हिन्द	१८८० जन्मकाल, १९५२ मृत्युकाल
२४।८५८	शिव प्रसन्न	१८८८ जन्मकाल
२५।८८४	सेवक बनारसी	१८७२ जन्मकाल, १९३८ मृत्युकाल
२६।९२३	सीताराम दास बनिया	१९०७ जन्मकाल
२७।९२७	सरदार बनारसी	१९०२-४० रचनाकाल, १९४० मृत्युकाल
२८।९७५	हनुमान बनारसी	१८९८ जन्मकाल, १९३६ मृत्युकाल
२९।९८४	हरिश्चन्द्र भारतेन्दु	१९०७ जन्मकाल, १९४२ मृत्युकाल

निम्नलिखित २४ कवियों के सम्बन्ध में कोई नवीन संवत् ज्ञात नहीं हुए—

१।६१	उमराव सिंह	१३।५८६	वृन्दावन ब्राह्मण
२।९३	कवि राम २	१४।६६४	मखजात, जालपाप्रसाद त्रिपाठी
३।१०९	कालिका	१५।६८१	मनोहर, भरतपुर
४।१५३	गङ्गादयाल दुबे	१६।७२६	रामनारायण, कायस्थ
५।१८२	गुरुदीन राय वन्दीजन	१७।७३९	रघुनाथ २, पं० शिवदीन रसूलाबादी
६।१९१	गुणाकर त्रिपाठी कान्था	१८।७४८	रसिया, नजीव खाँ
७।२४०	चौबा वन्दीजन	१९।७९१	राजा रणजीत सिंह जाङ्गरे
८।२८५	जगन्नाथ अवस्थी	२०।८६२	शङ्कर सिंह
९।३१४	ठाकुरप्रसाद त्रिपाठी, खीरी	२१।८७२	सन्त बकस, हौलपुर
१०।३२८	देवीदीन, वन्दीजन बिलग्रामी	२२।९४३	सुखराम
११।३८०	दयाल वन्दीजन	२३।९५४	समर सिंह
१२।५४७	विश्वनाथ टिकई वाले	२४।९९७	हजारीलाल त्रिवेदी

४. सरोज के तिथिहीन कवि और उनकी तिथियाँ

सरोज में कुल २६३ तिथिहीन कवि हैं। इनमें से १२४ के सम्बन्ध में नई तिथियाँ ज्ञात हुई हैं जिनकी सूची निम्न है—

संख्या	कवि	नवीन ज्ञात तिथियाँ
१।३१	अनन्य २	१७१०-९० जीवनकाल
२।११३	कृपाराम २, नरैनापुर	१८०८ गीता के भाष्य का अनुवादकाल और १८१५ भागवत दशमस्कन्ध का अनुवादकाल
३।१२७	कृपाराम ४	१७९८ हिततरङ्गिणी का रचनाकाल
४।१२८	कुञ्ज गोपी	१८३१ ऊषाचरित्र का रचनाकाल, १८३३ पत्तल का रचनाकाल
५।१३४	कृष्ण कवि प्राचीन	१७४० उपस्थितिकाल
६।१३६	खुमान	१८३६ अमर कोष भाषा का रचनाकाल
७।१४३	खैतल	१७४३ चित्तौड़ गजल का रचनाकाल
८।१५०	गङ्गाधर बु०	१८९९ जन्मकाल, १९७२ मृत्युकाल
९।१५१	गङ्गाधर २	१७३९ विक्रमविलास का रचनाकाल
१०।१६०	गिरिधारी २	१७०५ भक्ति माहात्म्य का रचनाकाल
११।१६८	गोपालराय	१८८५-१९०७ रचनाकाल
१२।१९३	गुलामराम	१८८८ मृत्युकाल
१३।१९४	गुलामी	,, ,,
१४।२०६	गज सिंह	१८०८-४४ रचनाकाल
१५।२०८	गोविन्दराम वन्दीजन, राजपूताना	१९०९ रचनाकाल
१६।२१०	गदाधर कवि	१८६० जन्म, १९५५ मृत्युकाल
१७।२७२	जैतराम	१७९४ योगप्रदीपिका का रचनाकाल, १७९५ सदाचारप्रकाश का रचनाकाल
१८।२७४	जयकृष्ण कवि	१७७६ रूपदीप पिङ्गल, १८१७ जय कृष्ण के कवित्त, १८२४ शिवगीता भाषार्थ, १८२५ शिव-माहात्म्य का रचनाकाल

संख्या	कवि	नवीन ज्ञात तिथियाँ
१९।२७९	जनार्दन भट्ट	१७३० व्यवहार निर्णय, १७३५ दुर्ग सिंह शृङ्गार, १७४९ वैद्यरत्न का रचनाकाल
२०।२८४	जगन्नाथ प्राचीन	१७७६ मोह मर्द राजा की कथा, १७७८ गुरु-माहात्म्य का रचनाकाल
२१।२८६	जगन्नाथदास	१७०० उपस्थितिकाल
२२।३०१	जगन्नाथ	१६१३-६२ अकबर का शासनकाल
२३।३०२	जगामग	" " "
२४।३०३	जुगुलदास कवि	१८२१ हितचौरासी की टीका का काल
२५।३१०	टहकन पञ्जाबी	१७२६ अश्वमेध भाषा का रचनाकाल
२६।३१७	तुलसी ओझा, जोधपुर वाले	१९२६ उपस्थितिकाल
२७।३१९	तुलसी ४	१६३१ ज्ञानदीपिका का रचनाकाल
२८।३३४	दयाराम १	१८७२ उपस्थितिकाल
२९।३३६	दयानिधि २	१८९१ से पूर्व
३०।३३७	दयानिधि ब्राह्मण ३, पटना	१९३६ उपस्थितिकाल
३१।३४०	दयावेद	१८१० से पूर्व
३२।३४७	दामोदर कवि २	१८८८-१९२३ रचनाकाल
३३।३५५	दिनेश	१८८३ रस-रहस्य का रचनाकाल
३४।३६१	देव, काष्ठजिह्वा स्वामी	१८९२-१९४६ काशी नरेश ईश्वरीनारायण सिंह का शासनकाल
३५।३६६	देवीदत्त	१८१२ बैतालपचीसी का रचनाकाल
३६।३७३	देवनाथ	१८४० शिवसगुन विलास का रचनाकाल
३७।३७४	देवमणि	१८२४ के पूर्व उपस्थित
३८।३७५	दास,व्रजवासी	१८१८ प्रबोध चन्द्रोदय का रचनाकाल
३९।३७६	दिलीप कवि	१८५९ रामायन की टीका का रचनाकाल
४०।३७९	देवी सिंह	१७२१ शृङ्गारशतक का रचनाकाल
।३८६	धोंधे दास	१६२८-४२ में विट्ठलनाथ से दीक्षा ली
४१।३९२	नेही	१७९८ के पूर्व

संख्या	कवि	नवीन ज्ञात तिथियाँ
४२।३९६	नायक	१८१० के पूर्व, (सूदन)
४३।४००	नवीन	१८९५ सुधासर और १९०७ नेहनिधान का रचनाकाल
४४।४०९	नारायण दास, वैष्णव	१८२९ छन्दसार का रचनाकाल
४५।४२७	नन्दराम	१७४४ नन्दरामपचीसी का रचनाकाल
४६।४६१	प्रधान केशव राय	१७५३ जैमुन की कथा
४६।४६४	पञ्चम कवि २, डलमऊ	१९२४ उपस्थितिकाल
४७।४८०	प्रेम कवि	१७४० प्रेममञ्जरी का रचनाकाल
४८।४८३	पुष्कर	१६७३ रसरत्न का रचनाकाल
४९।४८५	पहलाद, वन्दीजन, चरखारी	१८१५ के लगभग उपस्थित
५०।४८८	प्रेम पुरोहित	१८१२-६२ उपस्थितिकाल
५१।४९१	फैरन	१८९२-१९११ उपस्थितिकाल, महाराज विश्वनाथ सिंह, रीवाँ नरेश का शासनकाल
५२।५२२	बलि जू	१७२२ उपस्थितिकाल
५३।५२६	विष्णुदास	१५८०-१६४० रचनाकाल
५४।५२९	प्रवेश	१७६०-९० रचनाकाल
५५।५३४	व्रजवासीदास १	१८१६ प्रबोध-चन्द्रोदय का रचनाकाल
५६।५४२	वंशगोपाल, वन्दीजन	१९०२ उपस्थितिकाल
५७।५६०	बदन	१८०९ रसदीप का रचनाकाल
५८।५६६	वृन्द	१७००-८० जीवनकाल, १७६१ वृन्द सतसई का रचनाकाल
५९।५८२	बेनीमाधव भट्ट	१७९८ के पूर्व उपस्थित
६०।५८९	ब्रह्म, राजा बीरबल	१६४२ मृत्युकाल
६१।५९९	भगवन्त राय	१८१७ मृत्युकाल
६२।६००	भगवन्त कवि २	,, ,,
६३।६०३	भगवानदास निरञ्जनी	१७२८ अमृतधारा और १७५५ जैमिनी अश्वमेघ का रचनाकाल
६४।६०४	भगवान हितु रामराय	१६५० के लगभग उपस्थित
६५।६१३	भीषमदास	१६४० रचनाकाल

संख्या	कवि	नवीन ज्ञात तिथियाँ
६६।६२९	मान कवि १	१८३०-४० रचनाकाल
६७।६५२	मणिकण्ठ	१७८२ वैतालपचीसी का रचनाकाल
६८।६५४	मुरली	१८११ पिङ्गलपीयूष, १८१४ नलोपाख्यान, तथा १८१९ रस संग्रह का रचनाकाल
६९।६७७	मदनगोपाल २	१८७६ अर्जुनविलास का रचनाकाल
७०।६९४	मुनि लाल	१६४२ रामप्रकाश रचनाकाल
७१।७०२	मान चरखारी यह भी खुमान ही हैं।	१८३०-८० रचनाकाल
७२।७१०	मुसाहब राजा विजावर	१९०९ शृङ्गारकुण्डली का रचनाकाल
७३।७११	मनोहरदास निरञ्जनी	१७१६ ज्ञानमञ्जरी और १७१७ वेदान्तभाषा का रचनाकाल
७४।७२८	राम सखे	१८०४ नृत्य राघव मिलन का रचनाकाल
७५।७३१	रामराइ राठौर	१६४९ भक्तमाल में उल्लेख
७६।७३२	रामचरण	१८४१-८१ रचनाकाल
७७।७४२	रघुनाथदास महन्त	१८७५-१९२५ रचनाकाल
७८।७४७	रसिकदास व्रजवासी	१७४४-५१ राधावल्लभीय रसिकदास का रचनाकाल
७९।७५१	रसरूप, रामरूप नहीं	१८११ तुलसीभूषण का रचनाकाल
८०।७५४	रसपुञ्जदास	१७८१ प्रस्तार प्रभाकर का रचनाकाल
८१।७६०	ऋषिनाथ	१८३० अलङ्कारमणि मञ्जरी का रचनाकाल
८२।७६८	रतनपाल	१७४२ में इनके लिए देवीदास ने प्रेमरत्नाकर की रचना की
८३।७७१	रूप	१८३७ इनके नखशिख की प्राचीनतम प्रति का लिपिकाल
८४।७७७	रज्जब	१६२४ जन्म, १७४६ मृत्युकाल
८५।७८०	रायचन्द नागर	१८३१ गीतगोविन्दादर्श और १८३४ विचित्र-मालिका का रचनाकाल
८६।७८४	रामसेवक	१८५० उपस्थितिकाल
८७।७८५	रामदत्त	१८५५ उपस्थितिकाल
८८।७८७	रघुराम गुजराती	१७५७ सभासार नाटक का रचनाकाल

संख्या	कवि	नवीन ज्ञात तिथियाँ
८९।७८८	रामनाथ मिश्र	१९६४ में जीवित थे
९०।७९६	रावरतन राठौर	१७०७ उपस्थितिकाल, ग्रियर्सन
९१।७९८	रहीम	१६१३-८३ जीवनकाल
९२।८१३	लक्ष्मणदास	१८८६ के पूर्व, (विनोद)
९३।८१७	लछिराम २ व्रजवासी	१७०९ के पूर्व
९४।८२६	लक्ष्मण	१९००-७७ रचनाकाल
९५।८२८	लोकमणि	१८१० सूदन में उल्लेख
९६।८२९	लक्ष्मी	,, ,,
।८३१	वाहिद	१५६७ ई० जन्म सं० मृत्यु सं० १६६५ वि०
९७।८४८	शिवदास	१८०९ लोकोक्ति रसकौमुदी का रचनाकाल
९८।८५१	शिवराज	१८६६ रससागर का रचनाकाल
९९।८६८	श्रीधर मुरलीधर	१७६९ जङ्गनामा का रचनाकाल
१००।८७७	सुन्दरदास, सन्त	१६५३ जन्म, १७४६ मृत्युकाल
१०१।८९५	सबल श्याम	१६८८ जन्मकाल
१०२।९०७	सुमेर	१८१० सूदन में उल्लेख
१०३।९०८	सुमेर सिंह, साहबजादे	१९६३ तक जीवित
१०४।९११	सुजान	१८०० के आस-पास उपस्थिति
१०५।९१२	सबल सिंह	१७२७ सभा पर्व और द्रोणपर्व का रचनाकाल
१०६।९१४	शेखर कवि	१८५५ जन्म, १९३२ मृत्युकाल
१०७।९१७	शशिनाथ	१७९४-१८२० रचनाकाल
१०८।९२५	सगुणदास	१६०० के आस-पास उपस्थित
१०९।९३८	शङ्ख	१७१२ तुलसी की कवि-माला में उल्लेख
११०।९३९	साहब	,, ,, ,, ,,
१११।९४०	सुबुद्धि	,, ,, ,, ,,
११२।९४५	शत्रुजीत बुन्देला	१८२२ उपस्थितिकाल
११३।९४७	श्रीकर	१७१२ तुलसी की कविमाला में उल्लेख
११४।९४८	सनेही	१८१० से पूर्ब, (सूदन)
११५।९४९	सूरज	,, ,,
११६।९६३	हरिदेव बनिया वृन्दावनी	१८९२ छन्द पयोनिधि और १९१४ भूषणभक्ति-बिलास का रचनाकाल

संख्या	कवि	नवीन ज्ञात तिथियाँ
११७।६७१	हरि कवि	१७६६ जन्म, १८३५ मृत्युकाल
११८।६६५	हरिचरण दास	,, ,, ,,
११९।६७२	हरिवल्लभ	१७०१ गीता का टीकाकाल
१२०।६७६	हनुमन्त	१६०४-५६ इनके आश्रयदाता भानुप्रताप सिंह का शासनकाल
१२१।६८२	हेमनाथ	१८७५ के पूर्व उपस्थित
१२२।६६३	हीरालाल	१८३६ राधाशतक का रचनाकाल
१२३।१०००	हितराम	१७२२ हरिभक्तिसिद्धान्त-समुद्र का रचनाकाल
१२४।१००२	हरिचन्द	१७२२-८८ छत्रसाल का शासनकाल

निम्नलिखित १३० अ-तिथि कवियों की तिथियाँ अभी तक ज्ञात नहीं हो सकी हैं। सम्भव है और भी सामग्री सुलभ हो जाने पर भविष्य में इनमें से कुछ और की भी तिथियाँ ज्ञात हो सकें।

१।४६ अमर जी राजपूतानेवाले
२।६४ केशवदास २
३।६६ केशवराम
४।११६ कालीदीन कवि
५।१२६ कृपाराम ३
६।१२६ कृपाल
७।१३१ कल्याण सिंह भट्ट
८।१३६ खूबचन्द
६।१४० खान
१०।१४१ खान सुलतान
११।१४४ खुसाल पाठक
१२।१४५ खेम १ बु०
१३।१५६ गदाधर
१४।१५७ गदाधर राम
१५।१६८ गीध
१६।२०६ गोपाल सिंह व्रजवासी
१७।२१६ घासी भट्ट
१८।२१६ चन्द ३
१६।२२० चन्द ४
२०।२२२ चिन्तामणि २
२१।२२५ चौखे
२२।२२८ चतुर कवि
२३।२२६ चतुर बिहारी
२४।२३० चतुर्भुज
२५।२३२ चैन
२६।२३४ चैनराय
२७।२४४ हेमकरन अन्तर्वेदी
२८।२४५ छत्तन
२६।२४६ छत्रपति कवि
३०।२४८ छबीले व्रजवासी
३१।२५७ जुगुलकिशोर १
३२।२५८ जुगराज

३३।२५९ जुगुलप्रसाद चौबे
३४।२६२ जानकीप्रसाद २
३५।२७६ जय सिंह
३६।२९९ जगनैस कवि
३७।३१३ ठाकुर राम
३८।३१५ ढाखन
३९।३४५ दान
४०।३५० द्विजनन्द
४१।३५३ द्विजराम
४२।३५४ दिलाराम
४३।३६७ दैवी
४४।३८४ धुरन्धर
४५।३८६ धोंधेदास, व्रजवासी
४६।३९३ नैन
४७।३९७ नबी
४८।३९९ नरेश
४९।४०१ नवनिधि
५०।४२४ नन्द
५१।४२९ नन्दकिशोर कवि
५२।४३० नाथ १
५३।४३५ नाथ ६
५४।४३७ नवलकिशोर कवि
५५।४३८ नवल
५६।४६१ प्रधान केशव राय
५७।४७३ परशुराम
५८।४७९ पारस
५९।४८१ पुरान
६०।४८९ पूथ पूरनचन्द
६१।४९२ फूलचन्द कवि
६२।५२१ बीठल कवि ३
६३।५२३ बलरामदास व्रजवासी
६४।५२४ वंशीधर
६५।५२७ विष्णुदास २
६६।५२८ वंशीधर ३
६७।५३२ व्रजमोहन
६८।५५६ बालकृष्ण २
६९।५५७ बोधीराम
७०।५५८ बुद्धिसेन
७१।५५९ विन्दादत्त
७२।५६३ विश्वेश्वर
७३।५६४ विदुष
७४।५७१ विश्वम्भर
७५।५७४ बजरङ्ग
७६।५७५ बकसी
७७।५८७ बुध सिंह पञ्जाबी
७८।५८८ बाबू भट्ट
७९।५९१ बेन
८०।६०१ भगवान कवि
८१।६२६ भोलानाथ
८२।६३९ मनसा
८३।६४० मनसाराम
८४।६४८ मानिकदास, मथुरा
८५।६८९ मुरारिदास व्रजवासी
८६।६५० मन्य
८७।६५१ मननिधि
८८।६५३ मुरली
८९।६६५ महराज
९०।६६६ मुरलीधर २

९१।६७४ मनीराम १	१११।८३२ वजहन
९२।६७५ मनीराय	११२।८३३ वहाब
९३।६७८ मदनगोपाल चरखारी	११३।८४२ शम्भुप्रसाद
९४।६८६ मङ्गद	११४।८४९ शिवदत्त
९५।६८९ महताब	११५।८५२ शिवदीन
९६।६९० मीरन	११६।८५९ शङ्कर १
९७।७१६ राम कवि १, रामबरश	११७।८६० शङ्कर २
९८।७२३ रामलाल	११८।८७३ सन्त कवि १
९९।७२५ रामसिंह देव सूर्यवंशी	११९।८८८ सुलतान २
१००।७२९ रामकृष्ण २	१२०।९४१ सुन्दर वन्दीजन, असनी
१०१।७३० रामदया	१२१।९५० शम्भुनाथ मिश्र, गञ्ज, मुरादाबाद
१०२।७३६ रघुलाल	१२२।९६५ हरदयाल
१०३।७७८ राय कवि	१२३।९७३ हरिलाल
१०४।७७९ राय जू	१२४।९७८ हितनन्द
१०५।८०३ लाल ४	१२५।९७९ हरिभानु
१०६।८०७ लालचन्द	१२६।९८३ हेम कवि
१०७।८२३ लोकनाथ उपनाम बनारसीनाथ	१२७।९८५ हरि जीवन
१०८।८२४ ललित राम	१२८।९९० हरिलाल २
१०९।८२७ लाजव	१२९।९९६ हरिचन्द बरसानिया
११०।८३१ वाहिद	१३०।१००३ हुलास राम

सरोज के निम्नलिखित ९ अ-तिथि कवि सरोजकार की मिथ्या सृष्टि हैं। इनके अनस्तित्व पर आगे विचार किया गया है—

१।३२८ तीखी	६।८९२ श्याममनोहर
२।३३९ तेही	७।८९७ शोभ या शोभा
३।४८२ पखाने या परवीनै	८।८९८ सोभनाथ
४।५६२ वृन्दावन	९।९९४ हुलास
५।८१८ लक्ष्मणशरणदास	

११०

५. निष्कर्ष

संक्षेप में इन सारी बातों को यों रखा जा सकता है—

सरोज के कुल स-तिथि कवि ६८७

१. जाँच किए हुए कुल संवत् ४९२, ७०'६ प्रतिशत

क. उपस्थिति सिद्ध संवत्—

ईस्वी-सन् में उपस्थितिकाल	३१
ग्रन्थ रचनाकाल	३९ (शिवसिंह सरोज को छोड़कर)
प्रमाणों से सिद्ध उपस्थितिकाल	२५०
तर्क से सिद्ध उपस्थितिकाल	३२
योग	३५२ जँचे संवतों का ६२ प्रतिशत

ख. जन्मकाल सिद्ध संवत्	२४ जँचे संवतों का ५ प्रतिशत
ग. अशुद्ध सिद्ध संवत्	११ जँचे संवतों का २३ प्रतिशत

२. संवत् जिनकी जाँच नहीं हो सकी २०५, ३० प्रतिशत ।

सरोज के वि० कवि ५३, इनमें से २९ के नवीन संवत् ज्ञात हुए हैं, २४ के नहीं ।

सरोज के अ-तिथि कवि २६३, इनमें से १२४ के नवीन संवत् ज्ञात हुए हैं, ९ कवियों का अस्तित्व ही नहीं सिद्ध होता और १३० कवियों के सम्बन्ध में अभी तक कोई तिथि ज्ञात नहीं हो सकी हैं ।

---

(२) कवि निर्णय

(क) कवियों की मिथ्या सृष्टि और उनके कारण

जैसा कि भूमिका में कहा गया है, सरोज में अनेक कवियों की मिथ्या सृष्टि हो गई है । एक ही कवि का विवरण अनेक कवियों के रूप में बार-बार दिया गया है । ऐसे कवियों का विवरण दिया गया है, जिनका कभी भी अस्तित्व नहीं रहा । ऐसे भी अनेक कवि हैं, जिनके सम्बन्ध में निश्चयपूर्वक नहीं कहा जा सकता कि ये कवि कभी अवश्य ही थे । कवियों की इस मिथ्या सृष्टि के कतिपय कारण ये हैं—

(१) कभी-कभी कवि के निवासभेद से कविभेद स्वीकार कर लिया गया है। निश्चय ही यह अज्ञान के कारण है। उदाहरण के लिए एक सुखदेव मिश्र का नाम ले लेना पर्याप्त है। यह कवि एक से तीन हो गया है: एक बार ८३४ संख्या पर इन्हें कम्पिला का कहा गया है, दूसरी बार ८३५ संख्या पर दौलतपुर का और तीसरी बार संख्या ८३६ पर अन्तर्वेद का। यही दशा अववेश की है, जो संख्या ५ पर बुन्देलखण्डी कहे गए हैं और संख्या ६ पर सूपा के।

(२) कभा-कभी ऐसा हुआ है कि सरोजकार ने जिस आधार को पकड़ा, वही भ्रमपूर्ण था। कभी-कभी दूसरों का विश्वास करने के कारण भी लोग मारे जाते हैं। यही दशा सरोजकार की भी यत्र-तत्र हुई है। उदाहरण के लिए दिग्विजय भूषण में शशिनाथ और सोमनाथ का तथा कवि दत्त और दत्त कवि का भेद स्वीकृत है, अतः सरोज में भी सोमनाथ (६१६) और शशिनाथ (६१७) दो कवि हो गए हैं। इसी प्रकार कवि दत्त (६४) और दत्त कवि (३३६) भी दो विभिन्न कवि समझ लिए गए हैं। अनन्यदास चकदेवा वाले (३६) और रतन ब्राह्मण, बनारसी (७६५) के विवरण महेशदत्त के भाषाकाव्यसंग्रह की कृपा से मिथ्या रूप में भी आ गए हैं।

(३) कभी-कभी प्रतिलिपिकार की थोड़ी सी असावधानी मिथ्याकवियों की सृष्टि में सहायक सिद्ध हुई है। असावधानी से उसने 'म' का 'भ' कर दिया और सोमनाथ से भिन्न एक सोभनाथ (८६८) कवि की सृष्टि हो गई। इसी प्रकार 'न' का 'त' हो गया और नेही कवि से भिन्न एक तेही कवि (३२६) अस्तित्व में आ गए।

(४) कभी-कभी ऐसा भी हुआ है कि एक ही कवि भिन्न-भिन्न आधारों से लिया गया, अतः आधार-भेद से भिन्न-भिन्न समझ लिया गया। उदाहरण के लिए बीबी रतनकुँवरि, बनारसी (७६४) को लिया जाय। मूल 'प्रेमरत्न' नामक ग्रन्थ के आधार पर इनका विवरण दिया गया है। पर भाषाकाव्यसंग्रह के आधार पर इन्हें रतन ब्राह्मण, बनारसी (७६५) बना दिया गया हैं। लिङ्ग-भेद हो गया, जाति-भेद हो गया, और १०० वर्षों का अन्तर भी आ गया, पर दोनों एक ही ग्रन्थ और एक ही कविता के रचयिता बने हुए हैं।

(५) कभी-कभी कवि का विवरण उसके वास्तविक नाम और उपनाम दोनों से दे दिया गया है और कवि सहज ही एक से दो हो गया है। उदाहरण के लिए अयोध्याप्रसाद वाजपेयी औध (४) और औध (८) सविता दत्त (६०३) और रविदत्त (७६२) तथा अब्दुर्रहिमान (३२) आर प्रेमी यमन (४५५) के नाम युग्म प्रस्तुत किए जा सकते हैं।

(६) इसी प्रकार कभी-कभी कवि अपने पूरे नाम से एक बार आ गया है और अधूरे नाम से दूसरी बार, और एक ही कवि दो हो गया है। उदाहरण के लिए जुगल (२६०) और

जुगुलदास (३०३), अगर (३४) और अग्रदास (३५), अनूप (४१) और अनूपदास (१८), नारायण (४४४) और भूपनारायण (६२५), किशोर (७७) और जुगुलकिशोर (२५६) आदि के नाम युग्म देखे जा सकते हैं।

(७) कभी-कभी कवि छाप को ठीक से न पकड़ पाने के कारण मिथ्या कवि सृष्टि हो गई है। उदाहरण के लिए. सोभ (९७) और श्याममनोहर (८९२) आदि के नाम लिए जा सकते हैं।

(ख) एक से अनेक कवि

इन सब कारणों से एक कवि दो-या तीन कवियों के रूप में सरोज में वर्णित हुआ है। नीचे ऐसे ५९ कवियों की सूची प्रस्तुत की जा रही है, जिनका विवरण सरोज में १२४ कवियों के रूप में दिया गया है। इस प्रकार ६५ कवियों की मिथ्या सृष्टि हुई है।

(१) अजवेस रीवाँ वाले — १।२ अजवेस प्राचीन
२।३ अजवेस नवीन

(२) अवधेश — १।५ अवधेश बुन्देलखण्डी
२।६ अवधेश सूपा के

(३) अयोध्याप्रसाद वाजपेयी औध — १।४ अयोध्याप्रसाद वाजपेयी औध
२।८ औध

(४) अक्षर अनन्य — १।१५ अनन्य
२।३० अक्षर अनन्य
३।३१ अनन्य २
४।३६ अनन्यदास चकदेवा वाले

(५) आनन्द घन — १।२२ आनन्द घन
२।२१२ घन आनन्द

(६) अग्रदास — १।३४ अगर
२।३५ अग्रदास

(७) अनूपदास — १।१८ अनूपदास
२।४१ अनूप

(८) अब्दुर्रहिमान — १।३२ अब्दुर्रहिमान
२।४५५ प्रेमी यमन

(९) कर्ण	१।६९ करन भट्ट
	२।७० कर्ण ब्राह्मण
(१०) कालिदास त्रिवेदी	१।७३ कालिदास त्रिवेदी
	२।६८८ महाकवि
(११) किशोर	१।७७ किशोर
	२।२५६ जुगुलकिशोर भट्ट
(१२) कृष्ण कवि	१।७९ कृष्ण कवि १
	२।१३४ कृष्ण कवि प्राचीन
(१३) सन्तन कवि	१।९१ कविराइ
	२।८७१ सन्तन
(१४) रामनाथ कायस्थ	१।९२ कवि राम १
	२।९३ कवि राम २
(१५) कृपाराम जयपुर वाले	१।११२ कृपाराम, जयपुर १
	२।१२७ कृपाराम ४
(१६) खुमान चरखारी वाले	१।१३५ खुमान चरखारी
	२।१३६ खुमान
	३।६२९ मान कवि १
	४।७०२ मान कवि बन्दीजन चरखारी वाले
(१७) अब्दुर्रहीम खानखाना	१।१३८ खानखाना रहीम
	२।७९८ रहीम
(१८) गदाधर भट्ट	१।१५५ गदाधर भट्ट, पद्माकर के पौत्र
	२।२१० गदाधर कवि
(१९) गुरुदत्त	१।१८२ गुरुदत्त १ प्राचीन
	२।१८४ गुरुदत्त शुक्ल २
(२०) रामगुलाम द्विवेदी	१।१९३ गुलाम राम
	२।१९४ गुलामी
(२१) जुगुलदास	१।२६० जुगुल कवि
	२।३०३ जुगुलदास
(२२) जगन्नाथ मिश्र	१।२७७ जगन
	२।२९९ जगनेस

	३।२०१ जगन्नाथ
(२३) जमाल	१।२८० जमाल
	२।२६८ जमालुद्दीन
(२४) ब्रजवासी दास	१।३७५ दास ब्रजवासी
	२।५३४ ब्रजवासी दास १
	३।५३७ ब्रजवासी दास २
(२५) निवाज ब्राह्मण	१।४१३ निवाज २ अन्तर्वेदी
	२।४१४ निवाज ३ बुन्देलखण्डी
(२६) नरोत्तम	१।४१६ नरोत्तम बुन्देलखण्डी
	२।४१७ नरोत्तम अन्तर्वेदी
(२७) नीलकण्ठ त्रिपाठी	१।४१८ नीलकण्ठ मिश्र
	२।४१९ नीलकण्ठ त्रिपाठी
(२८) शम्भुनाथ मिश्र	१।४३३ नाथ ४
	२।८३९ शम्भुनाथ मिश्र
(२९) हरिनाथ गुजराती	१।४३४ नाथ ५
	२।९९८ हरिनाथ गुजराती
(३०) लीलाधर	१।४४१ नीलाधर
	२।८१२ लीलाधर
(३१) भूपनारायण बन्दीजन	१।४४४ नारायण बन्दीजन, काकूपुर
	२।६२५ भूपनारायण बन्दीजत, काकूपुर
(३२) रामनाथ प्रधान	१।४६२ प्रधान
	२।७२४ रामनाथ प्रधान
(३३) पञ्चम कवि डलमऊ	१।४६४ पञ्चम, कवि २, डलमऊ
	२।४८६ पञ्चम डलमऊ
(३४) ब्रह्म, राजा वीरबल	१।४६७ ब्रह्म कवि राजा बीरबल
	२।५८९ ब्रह्म राजा वीरवर
(३५) विक्रम साहि चरखारी नरेश	१।५०५ विजय, विजयबहादुर बुन्देला
	२।५०६ विक्रम, विजयबहादुर बुन्देला
(३६) हरीराम व्यास	१।५१४ व्यास जी कवि

	२।५१५ व्यास स्वामी हरीराम शुक्ल
(३७) बलि जू	१।५२२ बलि जू
	२।५६६ बलि जू
(३८) वंशगोपाल बन्दीजन	१।५४२ वंशगोपाल बन्दीजन
	२।५८५ वंशगोपाल जालवन
(३६) बौधा	१।५४३ बौधा
	२।५४४ बोध बुन्देलखण्डी
(४०) भगवन्त राय खींची	१।५६६ भगवन्त राय कवि
	२।६०० भगवन्त कवि
(४१) भीषम	१।६१२ भीषम
	२।६२४ भीषम
(४२) मनसाराम	१।६३६ मनसा
	२।६४० मनसाराम
(४३) मून	१।६४१ मून
	२।६६४ मुन्नीलाल
(४४) मदनकिशोर	१।६६३ मदनकिशोर
	२।७०६ मदनकिशोर
(४५) मदनगोपाल सुकुल	१।६७६ मदनगोपाल १
	२।६७७ मदनगोपाल २
(४६) रघुराय	१।७३४ रघुराय बुन्देलखण्डी भाट
	२।७३५ रघुराय २
(४७) रस रूप	१।७५१ सरोज तृ० सं० में रसरूप और सप्तम सं० में राम रूप
	२।७६२ रस रूप
(४८) सवितादत्त	१।७६२ रविदत्त
	२।६०३ सवितादत्त
(४६) रत्न कुंवरि	१।७६४ रत्न कुँवरि, बनारसी
	२।७६५ रतन ब्राह्मण, बनारसी

(५०) राय	१।७७८ राय कवि
	२।७७९ राय जू
(५१) लालमुकुन्द बनारसी	१।८०६ लाल मुकुन्द
	२।६३४ मुकुन्द लाल
(५२) सुखदेव मिश्र	१।८३४ सुखदेव मिश्र १ कम्पिला
	२।८३५ सुखदेव मिश्र २ दौलतपुर
	३।८३६ सुखदेव मिश्र ३ अन्तर्वेद
(५३) शम्भुनाथ	१।८३८ शम्भुनाथ बन्दीजन
	२।८३९ शम्भुनाथ मिश्र
(५४) श्रीधर मुरलीधर	१।८६६ श्रीधर प्राचीन
	२।८६८ श्रीधर मुरलीधर
(५५) सेवक बनारसी	१।८८३ सेवक असनी
	२।८८४ सेवक बनारसी
(५६) सहजराम	१।८८९ सहजराम धनिया १
	२।८९० सहजराम सनाढ्य २
(५७) सोभनाथ	१।९१६ सोभनाथ
	२।९१७ शशिनाथ
(५८) सबल सिंह चौहान	१।९१२ सबल सिंह
	२।९१३ सबल सिंह चौहान
(५९) हरिचरणदास	१।९७१ हरि कवि
	२।९९५ हरिचरण दास

(ग) सरोज के पूर्णरूपेण अस्तित्वहीन कवि

सरोज में १२ ऐसे कवि हैं जिनका प्रादुर्भाव कभी भी नहीं हुआ । ये कवि सरोजकार की विशुद्ध कपल्ना की उद्‌भावना हैं, जिनमें से अधिकांश कवि छाप की अशुद्ध पकड़ के कारण हैं ।

१।५९ ऊधो—'ऊधो' उद्धव के लिए प्रयुक्त है—

ऊधो जू कहत हमें करने कहा री बाम
हम तों करत काम श्याम की रटन के

२।३२८ तीखी—कवित्त में प्रयुक्त तीखी शब्द अनी का विशेषण है, तीक्ष्ण के अर्थ में आया है और उक्त कवित्त प्रियादास का है ।

३।३३९ तेही—लिपि-दोष के कारण न त में बदल गया है और नेही कवि के प्रतिविम्ब तेही की सृष्टि हो गई है ।

४।४८२ पखाने—सरोज के तृतीय संस्करण में पखाने पाठ है और सप्तम में पखाने को साफ कर परवीने में बदल दिया गया है । कवि न तो पखाने है और न परवीने । पखाने का अर्थ है उपाख्यान या लोकोक्ति । उदाहृत छन्द दिविजय भूषण से लिए गए हैं, जहाँ कवि का नाम पखाने दिया हुआ है । ये छन्द वस्तुतः राय शिवदास के लोकोक्ति रस कौमुदी नामक रस ग्रन्थ के हैं ।

५।५६२ वृन्दावन—कवित्त में 'वृन्दावन चन्द नख चन्द' पदावली प्रयुक्त हुई है । यहाँ वृन्दावन कवि छाप नहीं है, यह कृष्ण के अर्थ में प्रयुक्त 'वृन्दावन चन्द' का एक अंश मात्र है ।

६।६२२ भृङ्ग—भृङ्ग शब्द उद्धव के अर्थ में प्रयुक्त है । कविता गोस्वामी तुलसीदास की कवितावली की है ।

७।६७१ मधुसूदन—कविता में मधुसूदन शब्द कृष्ण के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है । सवैया परवत कवि का है ।

८।८१८ लक्ष्मणशरणदास—'दास शरण लक्ष्मण सुत भूप' पदावली से सरोजकार ने लक्ष्मणशरण दास नामक कवि की उद्भावना की है । यह पद छाप हीन है । यहाँ लक्ष्मणशरण से अभिप्राय वल्लभाचार्य के पिता लक्ष्मण भट्ट से है । इसमें भक्त ने कहा है कि यह दास लक्ष्मण सुत की शरण में है ।

९।८९२ श्याममनोहर—श्याममनोहर कृष्ण के लिए व्यवहृत हुआ है । सरोज में एक बड़े पद का एक बन्द मात्र उद्धृत किया गया है । प्रायः प्रत्येक बन्द में श्याममनोहर शब्द प्रयुक्त हुआ है । पद किसी हरिदास नागर का है । अन्तिम बन्द में छाप है ।

१०।८९७ शोभ या शोभा—सोभ शब्द विशेषण है, शोभा के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है । यह कवि छाप नहीं है । उद्धृत सवैये में कवि छाप कुमार है । यह छन्द कुमारमणि शास्त्री के रसिक रसाल ग्रन्थ का है ।

११।८९८ शोभनाथ—म का मत्था फूट जाने से यह कवि अस्तित्व में आया है । वास्तविक कवि सोमनाथ हैं ।

१२।९९४ हुलास—हुलास कवि छाप नहीं है । वह उल्लास के अर्थ में प्रयुक्त है । कवि प्रश्न कर रहा है—

"काहे हुलास संयोगिनि के हिय ?"

घ. संदिग्ध नाम वाले कवि

सरोज में कई कवि ऐसे हैं, जिनके नामों के सम्बन्ध में सहज ही सन्देह उठता है कि सरोज में दिए नाम कवि नाम हैं अथवा नहीं । नीचे ऐसे ६ कवियों का उल्लेख है —

१।७ अवध बकस कवि—इस कवि की कविता के उदाहरण में जो कवित्त दिया गया है, उसका कवि छाप वाला चरण यह है—

अवध बकस भूप कीरति है छन्द ऐसी
छाजत गिरा के मुख सुषमा अपार सी

कुछ पता नहीं अवध बकस कवि का नाम है अथवा भूप का ।

२।१४१ खान सुलतान—इस कवि की कविता का जो उदाहरण दिया गया है, उसका कवि छाप वाला चरण यह है—

दादुर दरोगा इन्द्रचाप इतभाम घटा
जाली बगजाल ठाढ़ौ खान सुलतान है

कुछ पता नहीं कवि का नाम खान है या खान सुलतान है । सुलतान रूपक का अङ्ग भी हो सकता है ।

३।१७४ गोकुल विहारी—इस कवि की कविता का कविछाप वाला चरण यह है—

कोमल कमल उत गोकुल विहारी लाल
जैसी कोऊ कुन्ज में फिरन कञ्ज नाल की

बहुत सम्भव है कि गोकुलविहारी लाल केवल कृष्ण के लिए प्रयुक्त हुआ हो । यदि यह कविछाप ही है, तो भी यह निश्चयपूर्वक नहीं कहा जा सकता कि कवि का नाम गोकुलविहारी है या गोकुलविहारी लाल है या गोकुल है या लाल है ।

४।१७७ गोविन्द अटल—इनका एक छप्पय उद्धृत है, जिसका अन्तिम चरण यह है—

"गोविन्द अटल कवि नन्द कहि, जौ कीजै सौ समय सिर"

यह निश्चयपूर्वक नहीं कहा जा सकता कि कवि का नाम गोविन्द अटल है अथवा कवि नन्द अथवा यह गोविन्द कवि किसी अटल कवि के नन्द (पुत्र) हैं ।

५।२२९ चतुर विहारी २—इस कवि का एक कवित्त उद्धृत है, जिसका प्रथम चरण यह है—

चतुर विहारी पै मिलन आई बाला साथ
माँगत है आंजु कछु हम पै दिवाइए

चतुर विहारी कृष्ण के अर्थ में प्रयुक्त प्रतीत होता है। चतुरविहारी का विशेषण भी हो सकता है। यदि यह कवि छाप ही है, तो भी यह कह सकना शक्य नहीं कि कवि का नाम चतुर विहारी है या केवल चतुर। चतुर गोपिका के लिए भी व्यवहृत हुआ हो, तो भी असम्भव नहीं।

६।३५७ दीनानाथ, कवि बुन्देलखण्डी—इनकी उदाहृत कविता का एक चरण यह है—

दीनबन्धु दीनानाथ एतै गुन लिए फिरौ
करम न यारी देत ताकौ मैं कहा करौ

यदि कवि का नाम दीनानाथ है, तो उसका नाम दीनबन्धु भी क्यों नहीं हो सकता। बहुत करके दीनानाथ शब्द परमात्मा के लिए ही प्रयुक्त हुआ है।

ये ६ नाम तो उदाहरणों के सहारे सन्दिग्ध सिद्ध होते हैं। इनके अतिरिक्त एक ही नाम के न जाने कितने कवि है जो अभिन्न हो सकते हैं, पर प्रमाणाभाव में कुछ कहना ठीक नहीं। नाथ १,२,३,६ तो निश्चित रूप से सन्दिग्ध अस्तित्व वाले कवि हैं और शिवनाथ, शम्भूनाथ, हरिनाथ आदि में समा जाने वाले हैं।

ङ. अनेक से एक कवि

सरोज में यही नहीं है कि एक कवि अनेक कवियों के रूप में प्रस्तुत किया गया है, यहाँ कुछ कवि ऐसे भी हैं जो अनेक को एक में समेटे हुए हैं, यद्यपि इनकी संख्या बहुत ही कम है। ऐसे कुछ उदाहरण यहाँ उपस्थित किए जा रहे हैं।

१।४०२ नाभादास—सरोज में माना गया है कि नाभादास और नारायणदास एक ही व्यक्ति के दो नाम हैं। सामान्यतया अभी तक यही स्वीकार भी किया जाता रहा है। इस मान्यता का आधार सम्भवतः सरोज ही है। पर सर्वेक्षण में हमने भलीभाँति दिखला दिया है कि यह मान्यता ठीक नहीं। मूल भक्तमाल के प्रस्तुतकर्ता नारायणदास हैं, जिन्होंने १०८ छप्पयों में भक्तों की माला गूँथी थी। यह नाभादास से ज्येष्ठ थे। नाभा ने बाद में भक्तमाल को पल्लवित किया। भक्तमाल का वर्तमान रूप इन्हीं का दिया हुआ है।

२।६६५ मतिराम—सरोज में भूषण त्रिपाठी के भाई मतिराम को ही छन्दसार का रचयिता माना गया है किन्तु यह बात ठीक नहीं। वस्तुतः दो मतिराम हुए हैं, जिनको सरोज में मिला दिया गया है। एक मतिराम तो प्रसिद्ध भूषण त्रिपाठी के भाई हैं। यह षटकुल के कश्यपगोत्रीय कान्य-

कुब्ज त्रिपाठी थे और तिकवापुर, जिला कानपुर के रहनेवाले थे। यह रसराज, ललित ललाम, सतसई के प्रसिद्ध रचयिता थे। दूसरे मतिराम दशकुल के वत्सगोत्रीय कान्यकुब्ज त्रिपाठी थे। यह वनपुर, जिला कानपुर के रहनेवाले थे। इनके पिता का नाम विश्वनाथ था। यह सरूप सिंह बुन्देला के आश्रित थे, जिसके लिए इन्होंने वृत्तकौमुदी या छन्दसार की रचना की। सम्भव है, यदि सरोज में दो मतिरामों का अस्तित्व स्वीकार किया गया होता तो आज दो मतिराम माने जाते होते।

३।७४७ रसिकदास—इस कवि को ब्रजवासी कहा गया है और इस कवि के उदाहरण में किसी गदाधर कवि की कविता उद्धत है। इस नाम के चार कवि मिलते हैं और सभी ब्रजवासी हैं। अब किससे इनका तादात्म्य स्थापित किया जाय? सरोजकार ने यदि थोड़ा-सा विवरण और दे दिया होता तो यह अनिश्चय न रह जाता। चार रसिकदास ये हैं—(१) रसिकदास राधावल्लभी सम्प्रदाय के, (२) रसिकदास हरिदासी सम्प्रदाय के, (३) रसिकदास वल्लभ सम्प्रदाय के गो० हरिराय जी तथा (४) रसिकदास वल्लभ से सम्प्रदाय के, गो० द्वारिकेश जी के पुत्र, गोपिका लङ्कार नाम भी प्रसिद्ध। सर्वेक्षण में इन पर और इनके ग्रन्थों पर पूरा विचार किया गया है।

इन तीन उदाहरणों के अतिरिक्त सरोज में ऐसे अनेक कवि हैं जो एक में दो को समेटे हुए हैं। परिचय एक कवि का है और उदाहरण उसी नाम के दूसरे कवि का। ऐसे कवियों का विवरण आगे अन्यत्र और अलग दिया गया है—

च. सरोज के नामहीन कवि

सरोज में कुछ ऐसे भी कवियों का विवरण है जिनका नाम ही नहीं दिया गया है। सर्वेक्षण के सिलसिले में इनके नाम अप्रत्याशित रूप से ज्ञात हो गए हैं। ऐसे कुछ कवियों की सूची निम्न है।

१।६२ उनियारे के राजा—सरोज के अनुसार उनियारे के राजा ने वलभद्र के नखशिख का अच्छा तिलक बनाया था। सरोजकार की किताब से उक्त राजा साहब का नाम जाता रहा था। सर्वेक्षण से ज्ञात हुआ है कि इन राजा साहब का नाम महासिंह था। साथ ही यह भी ज्ञात हुआ है कि वलभद्र-कृत नखशिख का तिलक इन राजा साहब ने नहीं बनाया था। इस तिलक के रचयिता इन राजा साहब के दरबारी कवि मनीराम द्विज थे।

२।७२ कुमारपाल महाराज अनहलवाले—इनके सम्बन्ध में लिखा है कि इन महाराज की

वंशावली ब्रह्मा से लेकर इन तक एक कवीश्वर ने बना कर उसका नाम कुमारपालचरित रखा। इस कवि का नाम हेमचन्द सूरि है, जो जैनों के एक प्रसिद्ध आचार्य हुए हैं। कुमारपाल-चरित को द्वाश्रय काव्य भी कहते हैं।

३।७१० मुसाहब राजा बिजावर—इस कवि को सर्वत्र इसी नाम से स्वीकार किया गया है। यह भी स्पष्ट नहीं था कि मुसाहब बिजावर के किसी राजा का नाम है या वहाँ के किसी राजा के मुसाहब का, अथवा मुसाहब केवल दरबारी के अर्थ में है। सर्वेक्षण से पता चला है कि बिजावर में मुसाहब नाम का कोई राजा नहीं हुआ। यहाँ के एक राजा भानुप्रताप सिंह के मुसाहब पं० लक्ष्मीप्रसाद ने उक्त राजा के एक दोहे पर शृङ्गारकुण्डली नामक ग्रन्थ सं० १९०९ में बनाया था।

४।७९२ राना राज सिंह—इनके सम्बन्ध में कथन है कि इन्होंने अपने नाम पर राजविलास नामक ग्रन्थ बनवाया। किससे बनवाया, इसका उल्लेख नहीं है। राजविलास के बनानेवाले का नाम सरोजकार को ज्ञात था। उसने इसके रचयिता मान कवीश्वर राजपूताने वाले का राजविलास के कर्ता रूप में ७१४ संख्या पर उल्लेख भी किया है। यह ग्रन्थ सभा से प्रकाशित भी हो चुका है।

५।९०० सिंह—स्पष्ट ही यह कवि का नाम नहीं है। सिंह छाप वाले इस कवि का नाम मह सिंह है। इन्होंने १८५३ में छन्दशृङ्गार नामक ग्रन्थ की रचना की थी।

सरोज में अभी और भी कुछ कवि हैं जिनके नामों का पता नहीं है। उदाहरण के लिए ६५७ संख्यक मिश्र कवि को लीजिए। मिश्र ब्राह्मणों की एक जाति का नाम है, किसी व्यक्ति का नाम नहीं। इसी प्रकार ४७ अजीत सिंह ने राजरूप का ख्यात नामक ग्रन्थ बनवाया। किन्तु किससे बनवाया, कुछ पता नहीं। २९६ जय सिंह सीसोदिया, उदयपुर नरेश ने जयदेवविलास और वहाँ के विजय सिंह ने विजयविलास नामक ग्रन्थ बनवाए किन्तु इन कवियों के नाम ज्ञात नहीं हो सके।

छ. सरोज की कवयित्रियाँ

सरोज में यद्यपि कई कवयित्रियों की भी रचनाएँ सङ्कलित हैं, पर सरोजकार को सब के स्त्री होने का पता न था। महाकवि केशव की शिष्या परम प्रवीण प्रवीणराय (४४९), भक्त-श्रेष्ठ गीतकारों में मूर्धन्य स्थान की अधिकारिणी मीराबाई (७००) और राजा शिवप्रसाद की पितामही रत्न कुँवरि बीबी (७६४) का उल्लेख सरोज में कवयित्रियों के रूप में हुआ है।

इनके अतिरिक्त (३२५) ताज, चन्दसखी (२३९), रसिक बिहारी (७९५), सेख (८८२), और सुजान (९११) का नामोल्लेख है, पर इनमें से किसी के भी सम्बन्ध में यह कथन नहीं है कि यह स्त्री थीं। चन्दसखी मीरा के ही समान राजस्थान की एक प्रसिद्ध गीतिकार हैं। इनके पदों का एक अच्छा सङ्कलन बनारस की पद्मावती शबनम जी ने किया है। ताज, सेख और सुजान मुसलमान कवयित्रियाँ हैं। ताज तो प्रसिद्ध मुगल बादशाह अकबर की बेगम थी। सेख, प्रसिद्ध स्वच्छन्दतावादी प्रेमी कवि आलम की प्रिया-पत्नी थीं। सुजान, घनानन्द की प्रिया मुहम्मद शाह रङ्गीले के दरबार की गायिका थीं। रसिक बिहारी का असल नाम बनी ठनी जी था। यह महाराज नागरीदास की उप-पत्नी थीं। यह सब की सब सरल काव्य करने वाली हुई हैं।

इन नामों के अतिरिक्त कुछ और भी स्त्रीवाचक नाम सरोज में हैं, पर ये नाम कवयित्रियों के नहीं हैं। ये सखी सम्प्रदाय के भक्त कवियों के नाम हैं, यथा—नीलसखी, (४२०) कुञ्ज गोपी (१२८), प्रेमसखी (४५३) आदि।

ज. सरोज में उल्लिखित कुछ अन्य कवि

सरोज में कुल १००३ कवियों का परिचय दिया गया है। किन्हीं किन्हीं कवियों के परिचय में उनसे सम्बन्धित कुछ अन्य कवियों का भी नामोल्लेख हो गया है। ऐसे कवियों की संख्या ३२ है जिनकी सूची निम्न है—

कवि		जिस कवि के विवरण में उल्लेख हुआ है उसका नाम
१. कवीन्द्र त्रिवेदी, गाँव वेंती, जिला रायबरैली		७४. उदयनाथ कवीन्द्र,
२. तीहर, गङ्गाप्रसाद के पुत्र		१९४. गङ्गाप्रसाद ब्राह्मण, सपौली जिला सीतापुर
३. मिही लाल ४. अम्बाप्रसाद	पद्माकर के पुत्र	१५५ गदाधर भट्ट
५. वंशीधर ६. चन्द्रधर ७. लक्ष्मीधर	मिही लाल के पुत्र, पद्माकर के पौत्र	१५५ गदाधर भट्ट
८. विद्याधर	अम्बाप्रसाद के पुत्र और पद्माकर के पौत्र	१५५ गदाधर भट्ट

कवि	जिस कवि के विवरण में उल्लेख हुआ है उसका नाम
९. हिम्मत सिंह १०. उमराव सिंह	२५२. छितिपाल, राजा माधव सिंह, अमेठी
११. जलाली दास १२. दूलम दास १३. देवी दास } निर्गुनिए	३०४ जगजीवनदास
१४. ठाकुर असनीवाले वन्दीजन १५. ठाकुर कायस्थ बुन्देलखण्डी	३११ ठाकुर प्राचीन
१६. अङ्गद जी १७. अमरदास १८. रामदास १९. हरिरामदास २०. तेगबहादुर } सिक्ख गुरु २१. त्रिलोचन २२. घना २३. रैदास २४. सेन २५. शेख फरीद २६. नामदेव २७. बलभद्र	३९१ गुरु नानक
२८. कील्ह २९. हठी नारायण	४७८ पद्मनाभ
३०. राम कवि	८४३ शिव कवि
३१. सुखराज सिंह	८५७ शिवदीन भिनगा वाले
३२. शालिक कवि	८६१ शङ्कर त्रिपाठी, बिसवाँ वाले के पुत्र

इनमें से सेन का विवरण सरोज में अलग से भी है।

सरोज में ८९३ कवियों की कविताएँ उदाहृत हैं। इनमें से ८३३ का परिचय भी दिया गया है। सुजान की कविता ७३० और ८३३ संख्याओं पर दो बार आ गई है। निम्नलिखित ५ कवियों का नाम जीवनचरित खण्ड में नहीं आ पाया है।

		उदाहरण संख्या
१	औसेरी बन्दीजन	२०
२	बलराम	,, ४७०
३	रामजी, कवि २	,, ६३६
४	लाल साहब, महाराज त्रिलोकीनाथ सिंह, द्विजदेव के भतीजे और उत्तराधिकारी, उपनाम भुवनेश	६९४
५	सीताराम त्रिपाठी, पटना वाले	७९८

झ. कवि नहीं, आश्रयदाता

सरोज में कहने के लिए तो १००३ कवियों के परिचय हैं, पर इनमें कुछ ऐसे भी हैं, जो वस्तुतः कवि नहीं हैं। ये कविता के प्रेमी सहृदय आश्रयदाता हैं। नीचे कुछ ऐसे उदार व्यक्तियों के नाम दिए जा रहे हैं—

१।३८ अमर सिंह राठौर, जोधपुर ।

२।४३ अनवर खाँ—विहारी सतसई की अनवरचन्द्रिका नाम्नी टीका बनाने वाले ।

३।७२ कुमार पाल अन्हलवाड़ा वाले—इनके यहाँ प्रसिद्ध हेमचन्द्र सूरि थे ।

४।१३७ खुमान सिंह राना चित्तौर—यह न तो कवि थे, न आश्रयदाता ही। बहुत बाद दलपत विजय ने खुमान रासो की रचना १८ वीं शती में की। यह कवि नवीं शती में इनका आश्रित नहीं था ।

५।२९६ जय सिंह सीसौदिया राना उदयपुर—इन्होंने जयदेवविलास नामक ग्रन्थ बनवाया था, स्वयं नहीं बनाया था ।

६।५९२ विजय सिंह उदयपुर के राना—इन्होंने विजयविलास नामक ग्रन्थ बनवाया था, स्वयं नहीं बनाया था ।

७।७१५ मान सिंह, महाराजा आमेर—यह स्वयं कवि नहीं थे। इन्होंने नरहरि महापात्र नारके पुत्र हथि का समादर एक लाख रुपये से किया था ।

८।७९७ राज सिंह, राना उदयपुर—मान कवीश्वर से इन्होंने राजविलास नामक ग्रन्थ बनवाया था ।

९।८८७ सुलतान पठान, नवाब सुलतान मोहम्मद खाँ—इनके दरबार में चन्द नाम के कवि थे, जिन्होंने विहारी सतसई पर कुण्डलियाँ लगाई हैं। इसी प्रकार वल्लभाचार्य और विट्ठलनाथ भी कवि नहीं थे, धर्माचार्य थे ।

एक बार जब सरोज में इन आश्रयदाताओं को स्थान मिल गया, तब पश्चात्कालीन इतिहासकारों ने अपने-अपने इतिहासग्रन्थ में इन्हें अन्धाधुन्ध स्थान दिया। इस तथ्य से भी सरोज का प्रभाव आँका जा सकता है ।

ञ. सरोज और मुसलमान कवि

हिन्दी-काव्यसाहित्य में प्रारम्भ में मुसलमानों ने कितना योग दिया था, इसका पता सरोजकार को था और उसने सरोज में इसीलिए मुसलमान कवियों को भी प्रचुर संख्या में स्थान दिया है। सरोज में निम्नलिखित ५७ मुसलमान कवियों का विवरण है—

१।१ अकबर, २।१३ आजम, ३।१४ अहमद, ४।१६ आलम, ५।२५ आदिल, ६।२६ अलीमन, ७।२७ अनीस, ८।३२ अब्दुर्रहिमान उपनाम प्रेमी यमन, ४५५, ९।४२ आकूब या आकूब खाँ, १०।४३ अनवर खाँ, ११।४४ आसिफ खाँ, १२।५४ ईसुफ खाँ, १३।९८ कबीर, १४।१०२ कमाल, १५।१०९ कारबेग फकीर, १६।१३८ खानखाना रहीम या ७९८ रहीम १७।१४० खान, १८।१४१ खान सुलतान, १९।२६९ जैनुद्दीन अहमद, २०।१८० जमाल या २९८ जमालुद्दीन, २१।२८७ जलालुद्दीन, २२।२९७ जलील विलग्रामी, २३।३०५ जुल्फकार, २४।३२० तानसेन, २५।३२५ ताज, २६।३२६ तालिब शाह, २७।३५२ दिलदार, २८।३९७ नबी, २९।४०५ नवखान, ३०।४१२ निवाज, जुलाहा, विलग्रामी, ३१।४९५ फैज़ी, ३२।४९६ फ़हीम, ३३।५६५ बारन, ३४।५६७ वाजीद, ३५।६४६ मुबारक, ३६।६६० मीर रुस्तम, ३७।६६१ महम्मद, ३८।६६२ मीरी माधव, ३९।६८९ महताब, ४०।६९० मीरन, ४१।६९८ महबूब, ४२।७०७ मीरा मधनायक, ४३।७०८ मलिक मोहम्मद जायसी, ४४।७४५ रसखनि, ४५।७४८ रसिया, नजीब खाँ, ४६।७५५ रसलीन, ४७।७५७ रसनायक तालिब अली, ४८।७७७ रज्जब, ४९।८२१ लतीफ़, ५०।८३१ वाहिद, ५१।८३२ वजहन, ५२।८३३ वहाब, ५३।८८२ सेख, ५४।८८७ सुलतान पठान, ५५।८८८ सुलतान, ५६।९११ सुजान, ५७।९८० हुसेन।

---

(३) तथ्य-निर्णय

सरोज में जिस प्रकार सन्-संवत सम्बन्धी अनेक अशुद्धियाँ हैं तथा कवियों के सम्बन्ध में अनेक भ्रान्तियाँ हैं, उसी प्रकार कवियों के जीवन के सम्बन्ध में भी उनकी सूचनाएँ अनेक स्थलों पर अशुद्ध हैं। किसी का जन्मस्थान भ्रमपूर्ण है, तो किसी की जाति उलट-पलट गई है। किसी का आश्रयदाता ठीक नहीं है, तो किसी के नाम पर किसी दूसरे के ग्रन्थ चढ़ गए हैं। किसी के पारस्परिक सम्बन्धों में गड़-बड़ी हो गई है, तो किसी का परिचय कुछ है तो उदाहरण कुछ और। जीवन एक कवि का हो गया है, तो उदाहरण किसी दूसरे का है।

उदाहरण के लिए श्रीपति को पयागपुर, जिला बहराइच का रहने वाला कहा गया है, जबकि उनके ग्रन्थ से सिद्ध है कि वह कालपी के रहने वाले थे। इसी प्रकार अनन्य दास या अक्षर अनन्य को चकदेवा, जिला गोंडा का रहने वाला कहा गया है जबकि यह सेनुहड़ा, रियासत दतिया के रहने वाले थे। प्रसिद्ध सन्त चरणदास को पण्डितपुर, जिला फैजाबाद का रहने वाला कहा गया है जबकि यह अलवर रियासत के अन्तर्गत दहरा के रहने वाले थे। यह जन्म स्थान सम्बन्धी तीनों अशुद्धियाँ भाषाकाव्य-संग्रह का अनुसरण करने के कारण हैं।

जाति सम्बन्धी भ्रान्तियाँ भी अनेक हैं। नृप शम्भु और शिवा जी महाराज को सुलङ्की कहा गया है जबकि ये लोग सोलङ्की क्षत्रिय नहीं थे, यह मराठे क्षत्रिय थे। चैतन्य महाप्रभु के प्रसिद्ध शिष्य दाक्षिणात्य ब्राह्मण गदाधर भट्ट को गदाधर मिश्र कहा गया है। दिल्लीवाले प्रसिद्ध सन्त चरणदास धूसर बनिया थे, जिन्हें पण्डित और ब्राह्मण बना दिया गया है। शाहजहाँ के भरे दरबार में सलामत खाँ का वध करने वाले अमर सिंह राठौर थे, पर इन्हें हाड़ा लिखा गया है।

आलम को मुअज्जम शाह, प्रसिद्ध नाम बहादुर शाह का दरबारी कवि कहा गया है, जबकि यह स्वच्छन्दतावादी कवि थे और किसी के बन्धन में बँधनेवाले नहीं थे। यह लाल पन्ना के प्रसिद्ध महाराज छत्रसाल के यहाँ थे। इन्हें छत्रसाल हाड़ा बूँदीवाले का आश्रित कहा गया है। पदमाकर के समकालीन प्रसिद्ध कवि परताप साहि को भी छत्रसाल का आश्रित बना दिया गया है, जिस कारण इस कवि को लेकर ग्रियर्सन में भ्रान्त ऊहापोह हुआ है। इसी प्रकार सेवक बनारसी को देवकीनन्दन सिंह का आश्रित कहा गया है। सेवक ठाकुर के पौत्र, धनीराम के पुत्र थे। ठाकुर, देवकीनन्दन सिंह के और धनीराम उनके पुत्र जानकी सिंह के तथा सेवक जानकी सिंह के भी पुत्र हरिशङ्कर सिंह के आश्रित थे। आश्रयदाताओं की इस भ्रान्ति के कारण अनेक गड़बड़ियाँ उत्पन्न हो सकती हैं। हिन्दी साहित्य में दो-दो आलमों की सृष्टि इसी का दुष्परिणाम है।

सरोज में कतिपय स्थलों पर एक कवि का ग्रन्थ दूसरे कवि के नाम पर चढ़ गया है। उदाहरण के लिए भाषा-भूषण जोधपुर वाले प्रसिद्ध जसवन्त सिंह की रचना है, पर यह तिरवा वाले जसवन्त सिंह की रचना स्वीकृत है। इस प्रसङ्ग को लेकर भी ग्रियर्सन को बहुत परेशान होना पड़ा है। सुधानिधि, सिङ्गरौर वाले तोष की रचना है, पर यह तोषनिधि के नाम पर चढ़ गयी है। इसी प्रकार की चिन्ता की एक बात बिहारी सतसई की लालचन्द्रिका, टीका को

लेकर भी हुई है। यह टीका प्रेमसागर के प्रसिद्ध रचयिता आगरेवाले लल्लू जी लाल की है, पर चढ़ा दी गई है लाल बनारसी के नाम पर।

इसी प्रकार सरोज में अनेक कवियों के सम्बन्ध में पारस्परिक सम्बन्धों की भूलें हुई हैं। मीरा के बहुत पूर्ववर्त्ती राना कुम्भकर्ण या कुम्भा को उनका पति कहा गया है, जब कि इनके पति का नाम भोज था। मणिदेव, गोकुलनाथ बनारसी के शिष्य थे, किन्तु इन्हें गोकुलनाथ के पुत्र गोपीनाथ का शिष्य कहा गया है। इसी प्रकार गोविन्ददास, व्रजवासी को नाभादास का शिष्य कहा गया है। उदाहृत कविता के सहारे यह गोविन्ददास अष्टछाप वाले गोविन्द स्वामी सिद्ध होते हैं, जो बिट्ठलनाथ जी के शिष्य थे। सरोज में शिवनाथ, देवकीनन्दन और गुरुदत्त को परस्पर भाई कहा गया है, जब कि शिवनाथ, देवकीनन्दन और गुरुदत्त इन दो भाइयों के पिता थे। ऐसी भूलों से कवियों के समय-निर्धारण में भयानक और भद्दी भूलों की सदैव सम्भावना बनी रहती है।

सरोज में अनेक ऐसे कवि भी हैं जिनके जीवन-परिचय और काव्य-उदाहरण में परस्पर सामञ्जस्य नहीं। वास्तविकता यह है कि परिचय तो एक कवि का दिया गया है पर उदाहरण उसी नाम के या उसी नाम से मिलते-जुलते किसी अन्य कवि की रचना का दिया गया है। ऐसा प्रायः उन कवियों के सम्बन्ध में हुआ है जिनका जीवन विवरण भक्तमाल से लिया गया है और उदाहरण रागकल्पद्रुम से। यदि सरोज का विश्वास किया जाय तो महाप्रभु वल्लभाचार्य और उनके पुत्र गो० विट्ठलनाथ कवि भी थे, क्योंकि सरोज में इनकी कविता के उदाहरण दिए गए हैं। पर यह यथार्थ नहीं है। उद्धृत उदाहरणों से स्वयं सिद्ध है। वल्लभाचार्य के नाम पर जो उद्धरण दिया गया है, वह इनका न होकर इनके पुत्र गो० विट्ठलनाथ के बल्लभ नामक किसी शिष्य का है। इसी प्रकार विट्लनाथ के नाम पर जो पद उदाहृत है, उसमें विट्ठलनाथ गिरिधरन की छाप है। इस छाप से विट्ठलनाथ की शिष्या गङ्गाबाई जी पद लिखा करती थीं। इस प्रकार के कतिपय अन्य उदाहरण आगे प्रस्तुत किए जा रहे हैं।

१।११८ कल्याणदास—परिचय कृष्णदास पय अहारी के शिष्य कल्याणदास का है और उदाहरण गो० गोकुलनाथ के शिष्य कल्याणदास का।

२।१७८ गोविन्द कवि—परिचय में कहा गया है कि इनकी कविता कालिदास के हजारे में है और इन्हें सं० १७५७ में उ० कहा गया है। पर उदाहरण में अलि रसिक गोविन्द का पद है, जिनका रचनाकाल सं० १८५०-१९०० है।

३।३९८ नागरीदास—इन्हें सं० १६४८ में उ० कहा गया है पर कविता प्रसिद्ध भक्त कवि कृष्णगढ़ नरेश सावन्त सिंह हरि सम्बन्ध नाम नागरीदास की है, जिनका जन्म सं० १७५६ में और देहावसान सं० १८२१ में हुआ।

४।४७८ पद्मनाभ—इन्हें कृष्णदास पय अहारी का शिष्य कहा गया है, पर उदाहृत पद महाप्रभु वल्लभाचार्य के इसी नाम के शिष्य का है।

५।६०५ भगवानदास मथुरा निवासी—सरोज में तो उल्लेख नहीं हैं पर भक्तमाल से सिद्ध है कि मथुरानिवासी भगवानदास खोजी और श्यामदास के अनुयायी थे। पर उदाहृत पद वल्लभ-सम्प्रदाय के भगवानदास ब्रजवासी का है। इस पद में वल्लभ, विट्ठल और उनके सातों पुत्रों का नाम-स्मरण है।

६।६८७ माधवदास ब्राह्मण—परिचय माधव जगन्नाथी का है, पर उदाहृत पद वल्लभ-सम्प्रदाय के अनुयायी माधवदास का है, जो विट्ठलनाथ के पुत्र गो० गोकुलनाथ के शिष्य थे।

७।७३१ रामराय राठौर—उदाहरण रामराय सारस्वत का है। इन्हीं रामराय सारस्वत के शिष्य वह भगवानदास थे जो अपनी छाप भगवान हितु रामराय रखा करते थे।

८।७४७ रसिकदास—इनके नाम पर किसी गदाधर का पद उदाहृत है।

९।९२२ सेन—परिचय तो रामानन्द जी के प्रसिद्ध शिष्य सेन नाई रीवाँ वाले का दिया गया है, पर उदाहृत कवित्त किसी रीतिकालीन कविन्द सेन की कृति है।

इसी प्रकार कुछ और भी उदाहरण बढ़ाए जा सकते हैं, पर इसकी कोई बहुत बड़ी आवश्यक्ता नहीं है।

सर्वेक्षण के पश्चात् इस प्रकार की अनेक भ्रान्तियाँ सरोज में मिली हैं जिनका निराकरण यथास्थान कर दिया गया है, सब को दुहराने की यहाँ कोई आवश्यक्ता नहीं। यह कुछ उदाहरण तो इसलिए एकत्र कर दिए गए हैं कि इस बात का अनुभव किया जाय कि सरोज-सर्वेक्षण द्वारा कितनी सफाई करनी पड़ी है। फिर भी यह नहीं कहा जा सकता कि सारी सफाई हो ही गई। सब की शक्ति और साधन सीमित है, इन्हीं के भीतर रहकर काम करना पड़ता है। स्वयं शिव सिंह के साधन अत्यन्त सीमित थे। इतना सब होते हुए भी जो कार्य वह कर गए, उसके लिए समस्त हिन्दी संसार उनका सदैव आभार स्वीकार करता रहेगा। मैंने जो यह सर्वेक्षण किया है, वह उनके प्रति अपनी कृतज्ञताज्ञापन के लिए, उनके काम को और आगे बढ़ाने के लिए, उनके ऋण से किञ्चित् उऋण होने के लिए, क्योंकि ऋषिऋण से मुक्त होने का यही एक उपाय हमारे आर्य मनीषियों ने हमें बताया है।

———

परिशिष्ट

परिशिष्ट

(१) सरोज के आधार पर हिन्दी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास

क. आदिकाल

सरोज में वर्णित हिन्दी का प्राचीनतम कवि पुण्ड है। जिसका उपस्थितिकाल सं० ७७० कहा गया है। इस कवि की रचना का कोई भी अंश आज तक उपलब्ध नहीं हो सका है और न तो इस कवि के सम्बन्ध में कोई अन्य प्रामाणिक सामग्री ही सुलभ हुई है। पर यह कवि अभी तक लिखे हुए सम्पूर्ण हिन्दी साहित्य के इतिहासों में सरोज की साक्षी के आधार पर प्रथम स्थान का अधिकारी होता आया है।

सरोज में नवीं शताब्दी का भी एक कवि वर्णित है, जिसने खुमान रासा नामक ग्रन्थ रचा था। सरोज की साक्षी पर यह कवि हिन्दी साहित्य के इतिहास में आदिकाल के अन्तर्गत प्रमुख-स्थान पाता आ रहा है। आज यह सिद्ध हो गया है कि यह ग्रन्थ सं० १७६७ और १७९० के बीच किसी समय दौलतविजय नामक एक जैन कवि द्वारा राजस्थान में रचा गया। पर लोग अभी तक पुरानी लीक पीटते जा रहे हैं।

काल-क्रम से सरोज के तीसरे कवि चन्द बरदाई हैं। यह पृथ्वीराज चौहान के मन्त्री, मित्र, सामन्त और दरबारी कवि थे। इन्होंने पृथ्वीराज रासो की रचना की है और यह हिन्दी के प्रथम बड़े कवि हैं। सरोज में इनका समय १०९८ दिया गया है, जो अशुद्ध है। इनका रचनाकाल सं० १२२५-५० है। सरोज में इनकी कविता का जो उदाहरण दिया गया है, उसका एक अंश निश्चित रूप से इनकी रचना नहीं है। एक तो इसकी भाषा पर्याप्त नवीनता लिए हुए है, दूसरे इसमें कवित्त जैसा बाद में प्रचलित छन्द प्रयुक्त हुआ है। इस ग्रन्थ का एक संस्करण सभा से पहले प्रकाशित हुआ था, पर अब भी इसके एक अधिक प्रामाणिक संस्करण की आवश्यकता बनी हुई है। इस ग्रन्थ में ऐतिहासिक दृष्टि से अनेक त्रुटियाँ भले हों पर चन्द के अस्तित्व से इनकार नहीं किया जा सकता। ग्रन्थ का साहित्यिक महत्त्व अत्यधिक है।

सरोज में १२ वीं शती के दो कवि कहे गए हैं—(१) जगनिक ११२४ में उ०, (२) बार दरबेरा ११४६ में उ०। इनमें से जगनिक का अस्तित्व स्वीकार किया जाता है। यह चन्द के समकालीन हैं और इनका भी संवत् अशुद्ध है। इनकी कोई लिखित रचना उपलब्ध नहीं। आल्हा इनकी रचना माना जाता है, पर गेय परम्परा के कारण यह अपना पूर्व स्वरूप कभी का खो चुका है। हिन्दी साहित्य के इतिहास में इस कवि का चन्द के साथ-साथ सादर स्मरण किया जा सकता है। बार दरबेरा का अस्तित्व सन्दिग्ध है।

सरोज में १३ वीं शती के के चार कवि हैं—(१) कुमारपाल १२२० में उ०,(२) केदार १२८० में उ०, (३) अनन्यदास चकदेवा वाले १२२५ में उ० तथा(४) बरबै सीता कवि १२४६ में उ०।

इनमें कुमारपाल कवि नहीं, आश्रयदाता हैं। इनके यहाँ प्रसिद्ध जैनाचार्य हेमचन्द्र सूरि थे, जिन्होंने कुमारपाल चरित नामक ग्रन्थ लिखा, जिसका उल्लेख सरोज में हुआ है। सरोजकार को कृति का पता था कर्त्ता का नहीं। हेमचन्द्र अपभ्रंश या पुरानी हिन्दी के कवि हैं। कुमारपाल चरित हिन्दी की रचना नहीं है. फिर भी व्याकरण में उदाहृत पुराने कवि की अपभ्रंश रचनाओं के कारण इन्हें हिन्दी साहित्य के इतिहास में स्थान दिया जा सकता है। सरोज में इस तथ्य का कहीं भी उल्लेख नहीं है। केदार का अस्तित्व स्वीकार किया जाता है, पर इस कवि की भी कविता का कोई उदाहरण सुलभ नहीं। सरोज में जिन्हें अनन्यदास चकदेवा का निवासी और सं० १२२५ में उ० कहा गया है वह वस्तुतः अक्षर अनन्य हैं, जिनका जीवनकाल सं० १७१०-६० है। फिर भी इस कवि का वर्णन आदिकाल में लोग करते गए हैं। वरबै सीता नाम का कोई राजा कन्नौज में कभी नहीं हुआ। न जाने कहाँ से सरोजकार ने यह मिथ्या सृष्टि कर ली है।

१४वीं शती के दो कवि सरोज में हैं—(१) सारङ्ग १३३० में उ० (२) नवलदास क्षत्रिय १३१६ में उ०। इनमें से सारङ्ग तो शारङ्गधर के नाम से प्रसिद्ध है। इन्होंने हमीर को नायक बनाकर कोई काव्य ग्रन्थ लिखा था पर आज वह भी अनुपलब्ध है। अनन्यदास के ही समान व्यर्थ के लिए नवलदास को २४वीं शती में खींच ले जाया गया है। भाषा-काव्यसंग्रह में प्रेस के भूतों की बदौलत १६१३ का उलट कर १३१६ हो गया और सम्पूर्ण सन्देहों के रहते हुए भी इस कवि को १३१६ में उपस्थित माना जाता रहा है। यह कवि १६वीं शती में हुआ और सतनामी सम्प्रदाय का था।

इस प्रकार आदिकाल में आने वाले सरोज के ११ कवियों में से एक मात्र चन्द महत्त्व के हैं। शेष या तो नाम शेष है या वह भी नहीं। इधर हिन्दी साहित्य के आदिकाल की परिपुष्ट करने वाली प्रचुर सामग्री सुलभ हुई है, जिनका उल्लेख भी सरोज में नहीं हुआ है। सरोज में

सिद्ध-साहित्य, नाथ-साहित्य, तथा जैन-साहित्य का सङ्केत तक नहीं है। इस में गुरु गोरखनाथ, वीसलदेव रासो के रचयिता नरपति नाल्ह, मैथिल-कोकिल विद्यापति और खड़ीबोली के प्रथम ज्ञात कवि अमीर खुसरो आदि नहीं समाविष्ट हो सके हैं। अतः हिन्दी साहित्य के इतिहास के आदिकाल के निर्माण में सरोज से कोई सहायता नहीं मिल सकती। सहायक होने के प्रतिकूल इसने इस काल के इतिहास को कूड़ा करकट से ही भरा है।

ख. भक्तिकाल

१. ज्ञानाश्रयी निर्गुणधारा

निर्गुनिए सन्तों की परम्परा कबीर से प्रारम्भ होती है। सरोज में कबीर और उनके पुत्र कमाल की चर्चा है। कबीर को सं० १६१० में उ० कहा गया है। इनका स्वीकृत समय सं० १४५६-१५७५ है। सेन कबीर के गुरुभाई थे जिनका समय सं० १५६० दिया गया है। गुरु नानक का समय १५२६-९६ ठीक-ठीक दिया गया है। सिक्ख गुरुओं में नानक के अतिरिक्त गुरु गोविन्द सिंह का भी विवरण है। दिल्ली के प्रसिद्ध सन्त चरणदास का समय १५३७ दिया गया है। इनका वास्तविक समय १७६०-१८३९ है। निपट निरञ्जन औरङ्गजेबकालीन हैं पर इनका समय १६५० दिया गया है। यह कम से कम १०० वर्ष पूर्व है। नरसी मेहता का समय सं० १५९० दिया गया है, जो ठीक है। 'अजगर करै न चाकरी पंछी करै न काम' वाले मलूकदास भी यहाँ वर्तमान हैं। तत्ववेत्ता राजस्थानी साधु हैं। अक्षर अनन्य का उल्लेख चार बार हुआ है। इनका जीवनकाल सं० १७१०-९० है। सरोज में यद्यपि दादू का विवरण नहीं है, पर उनके शिष्य सुन्दरदास, रज्जब, वाजिद और रसपुञ्जदास का विवरण है। निरञ्जनी सम्प्रदाय के भी दो कवि भगवानदास निरञ्जनी और मनोहरदास निरञ्जनी सरोज में सम्मिलित किए गए हैं। सतनामी सम्प्रदाय के प्रवर्तक जगजीवनदास और उनके शिष्य नवलदास तथा रामसेवक दास १९वीं शती के सन्त कवि हैं। इस प्रकार सरोज में लगभग २० निर्गुनिए सन्तों का समावेश हुआ है। रैदास, धना, धर्मदास, दादू, भीखा, दरिया बिहारी, दरिया राजस्थानी, धरणीदास, पलटूदास, गुलाल, दयाबाई, सहजोबाई, यारी तथा बुल्ला, आदि सन्तों का उल्लेख सरोज में नहीं हुआ है, फिर भी जो कुछ कवि इसमें समाविष्ट हो गए हैं, वही कम नहीं है।

२. प्रेमाश्रयी निर्गुणधारा

इस काव्यधारा में प्रेमाख्यान लिखनेवाले सूफ़ी कवियों की परिगणना होती है। इस धारा के केवल मलिक मोहम्मद जायसी का उल्लेख सरोज में हुआ है। इनके सम्बन्ध में सरोजकार को कोई जानकारी नहीं थी। यहाँ तक कि इनकी कविता का उदाहरण भी नहीं दिया गया है। इस धारा के अन्य कवि मंझन, कुतबन, उसमान तथा नूर मोहम्मद आदि से सरोजकार अनभिज्ञ थे। इन कवियों का उल्लेख ग्रियर्सन तक में नहीं हो सका है। हाँ, ग्रियर्सन

में जायसी को अत्यन्त महत्त्व दिया गया है, यहाँ तक कि इन पर अलग से एक विस्तृत अध्याय ही लिखा गया है। जायसी के प्रति शुक्ल जी का परम आकर्षण इसी का परिणाम प्रतीत होता है।

३. कृष्णाश्रयी सगुणधारा

सरोज में कृष्णाश्रयी सगुणधारा के कवियों का पर्याप्त संख्या में समावेश हुआ है। सूरदास, कुम्भनदास, परमानन्ददास, कृष्णदास अधिकारी, गोविन्द स्वामी, छीत स्वामी, चतुर्भुजदास और नन्ददास अष्टछाप के ये आठों कवि यहाँ है। यही नहीं, वल्लभ-सम्प्रदाय के संस्थापक महाप्रभु वल्लभाचार्य और उनके पुत्र विट्ठलनाथ को भी कवियों में घसीट लिया गया है। ये कवि नहीं थे, धर्माचार्य थे। यह अवश्य है कि इनके कारण ब्रजभाषा-काव्य को अत्यन्त प्रोत्साहन मिला।

मीराबाई, हित हरिवंश, स्वामी हरिदास, हरीराम व्यास, केशव कश्मीरी, श्रीभट्ट, विट्ठल विपुल, गदाधर भट्ट, कान्हरदास, रसखानि, सूरदास मदनमोहन, आसकरन दास, नागरीदास, ब्रजबासीदास, भगवत रसिक तथा हठी आदि प्रसिद्ध भक्त तो यहाँ हैं ही, इनके अतिरिक्त और भी अनेक अप्रसिद्ध पर सिद्ध कृष्ण-भक्त कवि और उनके काव्य के उदाहरण यहाँ सुलभ हैं। इनमें केवल राम, कुञ्ज गोपी, कल्याणदास, खेम, गोपालदास, चतुर बिहारी, चन्दसखी, छबीले, जुगुलदास, जगन्नाथदास, ताज, तानसेन, दामोदरदास, धोंधेदास, नील सखी, नरोत्तमदास, नरसी, परशुरामदास, पद्मनाभ, प्रियादास, ब्रजपति, वंशीधर, वृन्दावनदास, बलरामदास, विष्णुदास, विद्यादास, भगवानदास, भगवान हितुराम राय, भीषमदास, माधवदास, मानिकचन्द, मानिकदास, मुरारिदास, मनोहरदास, रसिकदास, रामराइ, रामदास, लक्ष्मणदास, कृष्णजीवन लछिराम, श्यामदास तथा सगुणदास आदि का नाम लिया जा सकता है।

इस विस्तृत सूची का यह अर्थ नहीं कि सभी कृष्णभक्त कवियों का समावेश सरोज में हो गया है। ऐसा सोचना भारी भ्रम को प्रश्रय देना होगा। ध्रुवदास, चाचा हित वृन्दावनदास, अलि रसिक गोविन्द, गङ्गाबाई आदि नाम यहाँ नहीं हैं।

भक्तमाल और रागकल्पद्रुम से इस कार्य में सरोजकार को विशेष लाभ प्रतीत होता है। भक्तमाल से कवि परिचय लिया गया है और रागकल्पद्रुम से उदाहरण। ऐसा करने से कभी-कभी ऐसा हो गया है कि परिचय तो एक कवि का है पर उदाहरण उसी नाम के किसी दूसरे कवि का। उपसंहार में ऐसे कवियों पर तथ्य निरूपण के अन्तर्गत विचार किया गया है।

४. रामाश्रयी सगुणधारा

अग्रदास का नाम रामाश्रयी सगुणधारा के कवियों में अग्रस्थानीय है। इन्होंने रामोपासक सखी-सम्प्रदाय की स्थापना की। सरोज में इनके उदाहृत पद में अग्र अली छाप है।

नाभादास इनके शिष्य थे। देवा और किशोर सूर इसी सम्प्रदाय के कवि हैं। गो० तुलसीदास रामोपासक कवियों में ही नहीं, सम्पूर्ण हिन्दी साहित्यकारों के मुकुटमणि हैं। उत्तरकालीन राम-भक्त कवियों में रामसखे और रामनाथ प्रधान का विवरण सरोज में है। इस धारा के कवि, तुलना में कृष्ण-भक्त कवियों की अपेक्षा संख्या में कम है। इसी अनुपात से सरोज में भी इनकी संख्या कम है।

ग. रीतिकाल

सरोज वस्तुतः रीतिकालीन कवियों और उनकी कविता का भण्डार है। इसमें रीतिकाल के प्रसिद्ध-अप्रसिद्ध सैकड़ों कवियों के विवरण और उनकी कविता के उदाहरण हैं। सरोज में रीतिग्रन्थ रचनेवाले ऐसे अनेक सुन्दर कवि हैं, जिनका उल्लेख अभी तक इतिहास-ग्रन्थ में नहीं हो सका है, पर कविवृत संग्रहों में उनका नाम अवश्य है। शुक्ल जी के इतिहास में वर्णित कोई रीति कवि ऐसा नहीं, जिसका विवरण सरोज में न हो। इसमें केशवदास, कुमारमणि भट्ट, कालिदास, कविन्द, किशोर, कुलपति, करन भट्ट, करनेश, कृष्णलाल भट्टकवि कलानिधि, गोकुलनाथ, गोविन्द कवि, ग्वाल, चिन्तामणि, चन्दन राय, जसवन्त सिंह, जगत सिंह बिसेन, तोष, दलपति राय वंशीधर, दत्त कवि, देव, दूलह, नवल सिंह कायस्थ, पजनेस, पद्माकर, प्रताप साहि, बेनी, बेनी प्रवीन, वलभद्र मिश्र, भूषण, भिखारीदास, मतिराम, मण्डन, रघुनाथ बनारसी, रामसहायदास बनारसी, रूप साहि, रसलीन, श्रीधर, मुरलीधर, श्रीपति, सुखदेव, सुन्दर, सोभनाथ, सूरति मिश्र आदि सभी प्रसिद्ध रीतिग्रन्थ रचनेवाले कवि समाविष्ट हैं। अप्रसिद्ध कवियों का नामोल्लेख मैंने जान-बूझ कर छोड़ दिया है।

यहाँ आचार्य केशव के सम्बन्ध में कुछ विशेष कहना है। सरोज में इनको सर्वप्रथम आचार्य कहा गया—"भाषाकाव्य का तो इनको भामह, मम्मट, भरत के समान प्रथम आचार्य समझना चाहिए, क्योंकि काव्य के दसौ अङ्ग पहले-पहल इन्होंने कवि-प्रिया ग्रन्थ में वर्णन किए। पीछे अनेक आचार्यों ने नाना ग्रन्थ भाषा में रचे।"

तभी से केशवदास हिन्दी के प्रथम आचार्य माने जाते रहे हैं। यद्यपि इनके आचार्यत्व पर अनेक आक्रमण हुए, पर सरोज का जादू कुछ ऐसा है कि इतना होते हुए भी केवश को आचार्य पद से कोई च्युत नहीं कर सका।

यहाँ केशव से पूर्ववर्ती कहे जाने वाले रीति-ग्रन्थों पर भी विचार कर लेना असमीचीन न होगा। कृपाराम कृत हिततरङ्गिणी हिन्दी का प्रथम रीतिग्रन्थ माना जाता है। इसका रचना

काल सं० १५६८ माना जाता है, पर सर्वेक्षण के अन्तर्गत मैंने यह सिद्ध किया है कि यह सं० १७६८ की रचना है। इसी प्रकार गोप कवि भी केशव के पूर्ववर्ती समझे जाते रहे हैं। कृपाराम का तो सरोज में कोई संवत् ही नहीं है, हाँ गोप के सम्बन्ध में जो भ्रान्ति फैली हुई है, उसका उत्तरदायित्व सरोज पर है। सरोज में गोप कवि का समय १५६० दिया गया है, पर यह भ्रामक है। गोप ओरछा नरेश पृथ्वी सिंह, शासनकाल (सं १७६३-१८०६,) के यहाँ थे, यहीं इन्होंने रामालङ्कार नामक ग्रन्थ सं० १८०० के आस-पास बनाया। अतः यह भी केशव के बहुत बाद के हैं। अकबरी दरबार के करनेश कवि ने कर्णाभरण, भूपभूषण और श्रुतिभूषण नामक ग्रन्थ लिखे थे, यह सरोज का कथन है। ये ग्रन्थ अभी तक नहीं मिले हैं। सरोज में करनेश का समय १६११ दिया गया है। सर्वेक्षण में सिद्ध किया गया है कि यह ईस्वी-सन् है, अतः इनका उपस्थित-काल सं० १६६८ हुआ। मेरा अनुमान है कि करनेश के ये तीनों तथाकवित्त ग्रन्थ कविप्रिया के रचनाकाल सं० १६५८ के बाद रचे गए और सम्भवतः कविप्रिया की सर्वप्रियता देखकर। जब तक ये ग्रन्थ मिल नहीं जाते, कुछ निश्चित निर्णय नहीं दिया जा सकता। केवल मोहनलाल मिश्र का एक ग्रन्थ श्रृङ्गार-सागर है जो सं० १६१६ में रचा गया था। इस प्रकार यह सहज ही कहा जा सकता है कि केशव के पूर्व रीतिसाहित्य नगण्य मात्रा ही में रचा गया था। श्रृङ्गार सागर १६१६ की भी रचना हो सकती है। पूर्ण प्रति देखने पर ही कुछ सुनिश्चित बात कही जा सकती है।

सरोज में रीति मुक्त श्रृङ्गारी रचना करने वाले कवि भी बहुत हैं, जिनमें सेनापति, गङ्ग, रहीम, विहारीलाल चौबे, ब्रह्म, अमरेश, जोइसी, मीरन, नरेश, नेवाज और मुबारक जैसे श्रेष्ठ कवि हैं।

रीतिकाल में स्वच्छन्द प्रेम की काव्य-धारा प्रवाहित करने वाले जो कवि रसखान, आलम, शेख, घनानन्द, सुजान, बोधा और ठाकुर आदि हुए हैं, इनमें से कोई भी सरोज में सम्मिलित होने से छूट नहीं गया है।

सरोजकार की दृष्टि श्रृङ्गार तक ही नहीं सीमित रह गई है, उसने सरोज में रहीम, गङ्ग, नरहरि, कृष्ण, कादिर, वृन्द, गिरिधर कविराय, टोडरमल, बैताल, भरमी आदि नीति के कवियों को भी सादर स्थान दिया है।

सरोजकार को मुक्तकों से ही नहीं, प्रबन्धकाव्यों से भी समान प्रेम है और उसने अनेक प्रबन्ध-काव्य लिखनेवाले कवियों का समावेश सरोज में किया है। गोकुलनाथ, गोपीनाथ एवं मणिदेव का महाभारत, सबल सिंह का महाभारत, व्रजवासीदास का ब्रज विलास, मधुसूदनदास का रामाश्वमेध, सहजराम का प्रह्लाद चरित, आदि सभी रीतिकालीन प्रबन्ध यहाँ हैं। भक्तिकाल के सुप्रसिद्ध प्रबन्ध रामचरितमानस, रामचन्द्रिका, पद्मावत और सुदामा चरित का उल्लेख तो यहाँ है ही। महाभारत, भागवत, शिवपुराण आदि के अनेक अनुवादों का विवरण सरोज में हुआ है।

सरोजकार ने साहित्य की दृष्टि अत्यन्त व्यापक रखी है। ज्योतिष, रमल, वैद्यक, शालिहोत्र, वेदान्त, इतिहास, पुराण, टीका, रस, अलङ्कार, छन्द, कोष, नीति, भँडौआ आदि सभी का ग्रहण इन्होंने साहित्य के अन्दर किया है।

सरोजकार ने हिन्दी के अन्तर्गत खड़ीबोली, व्रजी, अवधी, बुन्देली, राजस्थानी आदि सभी को समेट लिया है। संयोग से मैथिली का समावेश नहीं हो सका। हिन्दी साहित्य के अन्तर्गत इसे लाने का श्रेय ग्रियर्सन को है। इन्हीं लोगों के दिखाए पथ का अनुसरण हम लोग आज तक करते जा रहे हैं। कैसी सर्वग्राही दृष्टि सरोजकार को मिली थी!

घ. आधुनिक काल

सरोज में आधुनिककाल के केवल भारतेन्दु युग का समावेश सम्भव था। सरोजकार ने इस युग के दीनदयाल गिरि, गिरिवर बनारसी, हरिश्चन्द्र, रघुराज सिंह, सेवक, सरदार, हनुमान, द्विजदेव सुमेरसिंह साहबजादे, छितिपाल राजा माधव सिंह अमेठी, भुवनेश, मन्नालाल द्विज, तथा नारायणराय आदि प्रसिद्ध कवियों का विवरण एवं उदाहरण दिया है। अप्रसिद्ध कवि भी अनेक हैं। ये सभी कवि प्राचीन काव्यधारा में प्रवहमान थे। भारतेन्दु के नए काव्य और उनके गद्य साहित्य से सरोजकार अपरिचित ही था, अतः सरोज में प्राचीन काव्यधारा का अवसान तो देखा जा सकता है, पर नवीन काव्यधारा का आदि स्रोत यहाँ नहीं ढूँढ़ा जा सकता।

सरोज को आधार बनाकर केवल पद्य साहित्य का इतिहास प्रस्तुत किया जा सकता है। गद्य साहित्य का इतिहास इसके सहारे नहीं गढ़ा जा सकता। लल्लू जी लाल को इसमें बोलचाल की भाषा का आचार्य कहा गया है और इनके गद्य ग्रन्थ—प्रेमसागर और राजनीति का नामोल्लेख हुआ है। विवरण में यत्र-तत्र वार्तिक शब्द का प्रयोग गद्य के लिए हुआ है। राजा शिवप्रसाद सितारेहिन्द के गद्य ग्रन्थ इतिहास तिमिर नाशक का उल्लेख किया गया है, पर साथ ही खेद भी प्रकट किया गया है कि इनकी कोई कविता सरोजकार को नहीं मिली। सरोजकार को हरिश्चन्द्र ऐसे पारस-साहित्यकार के केवल सुन्दरीतिलक नामक संग्रह ग्रन्थ का पता था। सरोज में कवियों के जितने भी उदाहरण है, सभी पद्य के हैं, गद्य का एक भी उदाहरण ही नहीं दिया गया है। इसका कारण यह है कि सरोजकार वस्तुतः एक काव्यसंग्रह ही प्रस्तुत करने के ध्येय से अग्रसर हुए थे।

२—सहायक-ग्रन्थ सूची

क—प्राचीन काव्यसंग्रह

१. सुधासर—नवीन

२. रागकल्पद्रुम, द्वितीय संस्करण, तीन भाग—राग सागर कृष्णानन्द व्यास देव

३. शृङ्गार संग्रह—सरदार

४. दिग्विजय भूषण—लाला गोकुलप्रसाद व्रज

५. सुन्दरी तिलक—भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र

६. भाषाकाव्य संग्रह—महेश दत्त

७. कवित्त रत्नाकर, दो भाग—मातादीन मिश्र

ख—नवीन काव्यसंग्रह

१. कविता कौमुदी, प्रथम एवं द्वितीय भाग—रामनरेश त्रिपाठी

२. व्रजमाधुरी सार—वियोगी हरि

३. सिलेक्शन्स फ्राम हिन्दी लिटरेचर, ७ जिल्द—लाला सीताराम, बी० ए०

ग—कवियों के मूल ग्रन्थ

१. भक्तमाल, सटीक, मूललेखक नारायणदास और नाभादास, टीकाकार—प्रियादास और रूपकला जी, प्रकाशक, नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ

२. सुजान चरित—सूदन, सभा से प्रकाशित

३. जमाल दोहावली—स० महावीर सिंह

४. घन आनन्द ग्रन्थावली

५. भूषण

६. रसखानि

७. सुदामा चरित

८. केशव ग्रन्थावली

९. भिखारीदास, भाग १.

(४–९) स० विश्वनाथप्रसाद मिश्र

४. द फ़ोर्थ एनुअल रिपोर्ट ऑन द सर्च फ़ार हिन्दी मैनुस्क्रप्ट्स फ़ार द इयर १९०३
५. द फ़िफ़्थ " " " १९०४
६. द सिक्स्थ " " " १९०५
७. द फ़र्स्ट ट्राएनियल रिपोर्ट " " १९०६–०८
८. द सेकण्ड " " " १९०९–११
९. द थर्ड " " " १९१२–१४
१०. द टैन्थ रिपोर्ट " " " १९१७–१९
११. द इलेवेन्थ ट्राएनियल " " " १९२०–२२
१२. द ट्वेल्फ़्थ " " " १९२३–२५
१३. रिपोर्ट ऑन द सर्च फ़ार हिन्दी मैनुस्क्रप्ट्स इन द पञ्जाब " १९२२–२४
१४. " " डेलही प्राविंस फ़ार १९३१

हिन्दी में

१५. खोज में उपलब्ध हस्तलिखित हिन्दी ग्रन्थों का त्रयोदश त्रैवार्षिक विवरण १९२६–२८
१६. " " " चौदहवाँ " १९२९–३१
१७. " " " पन्द्रहवाँ " १९३२–३४
१८. " " " सोलहवाँ " १९३५–३७
१९. " ' " सत्रहवाँ " १९३८–४०

अप्रकाशित

२०. खोज में उपलब्ध हस्तलिखित हिन्दी ग्रन्थों का संक्षिप्त विवरण १९००–४९
२१. खोज में उपलब्ध हस्तलिखित हिन्दी ग्रन्थों का अठारहवाँ त्रैवार्षिक विवरण १९४१–४३
२२. खोज में उपलब्ध हस्तलिखित हिन्दी ग्रन्थों का उन्नीसवाँ त्रैवार्षिक विवरण १९४४–४६
२३. " " बीसवाँ " १९४७–४९

राजस्थान रिपोर्ट

२४. राजस्थान में हिन्दी के हस्तलिखित ग्रन्थों की खोज, प्रथम भाग
२५. " " " द्वितीय भाग
२६. " " " तृतीय भाग
२७. " " " चतुर्थ भाग

बिहार रिपोर्ट

२८. प्राचीन हस्तलिखित पोथियों का विवरण—दूसरा खण्ड

ङ. हिन्दी साहित्य के इतिहास ग्रन्थ

अंग्रेज़ी

१. द माडर्न वर्नाक्युलर लिटरेचर आफ़ नादर्न हिन्दुस्तान—ग्रियर्सन

हिन्दी

१. मिश्रबन्धु विनोद, तीन भाग—मिश्रबन्धु
२. हिन्दी साहित्य का इतिहास—प० रामचन्द्र शुक्ल
३. बुन्देल वैभव, भाग १, २—गौरीशंकर द्विवेदी
४. राजस्थानी भाषा और साहित्य—मोतीलाल मेनारिया
५. हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास—डॉ० रामकुमार वर्मा
६. हिन्दुई साहित्य का इतिहास—मूल लेखक-तासी, अनुवादक-डॉ० लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय
७. हिन्दी के मुसलमान कवि—गंगाप्रसाद अखौरी
८. हिन्दी भाषा और साहित्य का विकास—हरिऔध

च. इतिहास ग्रन्थ

अंग्रेज़ी

१. फ़र्स्ट टू नवाब्स ऑफ़ अवध—डॉ० आशीर्वादी लाल श्रीवास्तव

हिन्दी

१. भारतवर्ष का इतिहास—डॉ० ईश्वरीप्रसाद
२. बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त इतिहास—गोरेलाल तिवाड़ी। ना० प्र० पत्रिका, खण्ड १२ और खण्ड १३, सं० १८८८–८६

छ. आलोचनात्मक एवं अन्य ग्रन्थ

१. राधाकृष्णदास ग्रन्थावली भाग १—सं० श्यामसुन्दरदास
२. हिन्दी आलोचना : उद्भव और बिकास—डॉ० भगवत्स्वरूप शर्मा
३. अकबरी दरबार के हिन्दी कवि—डॉ० सरयूप्रसाद

४. अष्टछाप परिचय—प्रभुदयाल मीतल

५. केशवदास } चन्द्रवली पाण्डेय
६. विचार विमर्श }

७. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र } ब्रजरत्नदास
८. भारतेन्दु मण्डल }

९. हिन्दी काव्यशास्त्र का इतिहास—डॉ० भगीरथ मिश्र

१०. उत्तरी भारत की सन्त परम्परा—परशुराम चतुर्वेदी

११. देव और उनकी कविता—डॉ० नगेन्द्र

१२. भक्त कवि व्यास—वासुदेव गोस्वामी

१३. मकरन्द—डा० पीतम्बरदत्त बड़थ्वाल

१४. भूषण विमर्श—भगीरथप्रसाद दीक्षित

१५. सम्पूर्णानन्द अभिनन्दन ग्रन्थ—ना० प्र० सभा, काशी

१६. कन्हैयालाल पोदार अभिनन्दन ग्रन्थ

१७. राधावल्लभ सम्प्रदाय: सिद्धान्त और साहित्य— डॉ० विजयेन्द्र स्नातक

१८. रामभक्ति में रसिक सम्प्रदाय—डॉ० भगवतीप्रसाद सिंह

१९. हिन्दी साहित्य का आदिकाल—डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी

ज. पत्र-पत्रिकाएँ

१. माधुरी

१. वर्ष १, खण्ड २, अङ्क ४, अप्रैल १९२३—सुमनसञ्चय के अन्तर्गत **सूरति मिश्र का सरस रस** लेख

२. वर्ष २, खण्ड १, अङ्क ३, सितम्बर १९२३—**अयोध्याप्रसाद वाजपेयी औध** पर लेख

३. वही, अङ्क ६, दिसम्बर १९२३—**लाला गोकुलप्रसाद व्रज** पर रामनारायण मिश्र का लेख

४. वर्ष २, खण्ड २, अङ्क २, फरवरी १९२४—**महाकवि देव और भरतपुर राज्य**—मयाशङ्कर याज्ञिक

५. वही अङ्क ६, जून १९२४—**सम्मन का काल**—याज्ञिक त्रय।

६. वर्ष ३, खण्ड १, अङ्क ३, सितम्बर १९२४—**सूरित मिश्र का सरस रस**

७. वर्ष ४, खण्ड १, अङ्क ४ अक्टूबर १९२५—**कवि कलानिधि श्री कृष्णभट्ट**—देवर्षि भट्ट मनमोहन शर्मा

८. वर्ष ५, खण्ड १, अङ्क ६, जनवरी १९२७—सम्पादकीय के अन्तर्गत **एक अप्रकाशित ग्रन्थ**

९. वर्ष ५, खण्ड २, अङ्क १, फरवरी १९२७—**भरतपुर राज्य और** हिन्दी—**मयाशङ्कर याज्ञिक**

१०. वही, अङ्क ४, मई १९२७,—कवि चर्चा के अन्तर्गत—**सुकवि गणेश**।

११. वही, अङ्क ५, जून १९२७,—**गुजरात का हिन्दी साहित्य**

१२. वर्ष ६, खण्ड १, अङ्क १, अगस्त १९२७—कवि चर्चा के अन्तर्गत **देवीदास**—राम नरेश त्रिपाठी।

१३. वही, अङ्क ४, नवम्बर १९२७, —कवि चर्चा के अन्तर्गत—**तोयनिधि**।

१४. वही, अङ्क ५, दिसम्बर १९२७, कवि चर्चा के अन्तर्गत **मण्डन**

१५. वही, अङ्क ६, जनवरी १९२८—कवि चर्चा के अन्तर्गत **हिन्दी के कुछ कवियों के सम्बन्ध में टिप्पणियाँ**—कुबेरनाथ शुकुल।

१६. वर्ष ६, खण्ड २, अङ्क ४, मई १९२८—कविचर्चा के अन्तर्गत **कविवर गंगाधर जी व्यास का सत्योपाख्यान**।

१७. वही, अङ्क ५, जून १९२८,—कवि चर्चा के अन्तर्गत **हिन्दी के कुछ कवियों के सम्बन्ध में टिप्पणियाँ**।

१८. वर्ष ७, खण्ड १, अङ्क ५, दिसम्बर १९२८,—**कवि दिनेश**—शिवनन्दन सहाय

१९. वर्ष ७, खण्ड २, अङ्क १, फरवरी १९२९—दुलह

२०. वही, अङ्क ५, जून १९२९,—ससुरारि पचीसी : देवकीनन्दन शुक्ल कृत

२१. वर्ष १२, खण्ड २, अङ्क १, फरवरी १९३४,—महाकवि पद्माकर—भालचन्द्र कवीश्वर तेलङ्ग, बी० ए०, एल० टी०

२. नागरी प्रचारिणी पत्रिका

१. संवत १९७८, के अङ्क—पुरानी हिन्दी—चन्द्रधर शर्मा गुलेरी।

२. भाग ९, अङ्क १, २, सं० १९८५—विहारी सतसई सम्बन्धी साहित्य—रत्नाकर

३. भाग ९, अङ्क ४, माघ १९८५—चरखारी राज्य के कवि—कुँवर कन्हैया जू

४. भाग १२, अङ्क ३, कार्तिक १९८८, वर्ष १३, अङ्क १, ३, वैशाख और कार्तिक १९८९—बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त इतिहास—गोरेलाल तिवाड़ी

५. भाग १३, अङ्क ४, माघ १९८९,—खुमान कृत हनुमन्नखशिख

६. वर्ष ४४, अङ्क ४, माघ १९९६—खमान रासो का रचनाकाल और रचयिता—अगरचन्द नाहटा

७. वर्ष ५०, अङ्क १–२, सं० २००२—आलम और उनका समय—विश्वनाथप्रसाद मिश्र

८. वर्ष ५२, अङ्क १, सं० २००४—बोधा का वृत्त—विश्वनाथप्रसाद मिश्र

९. वर्ष ५२, अङ्क २, सं० २००४—कवीन्द्राचार्य सरस्वता बटेकृष्ण

१०. वर्ष ५७, अङ्क ४, सं० २००९—खुमाण रासो—मोतीलाल मेनारिया

११. वर्ष ५८, अङ्क ३, हीरक जयन्ती अङ्क सं० २०१०—नरवाहन और हित चौरासी—किशोरीलाल गुप्त

१२. वर्ष ६०, अङ्क १, संवत २०१२, रसखान का समय—ले० बटेकृष्ण

१३. वर्ष ६०, अङ्क २, सं० २०१२—महाकवि भूषण का समय—केप्टेन शूरवीर सिंह

१४. वर्ष ६१, अङ्क १, सं०२०१३—दयाराम सतसई

३. ब्रज भारती

१. वर्ष १२, अङ्क २–३, सं०२०११—(क) भट्ट नागेश दीक्षित और कवि सेनापति—जितेन्द्र भारतीय शास्त्री (ख) सेनापति का काव्य कल्पद्रुम—किशोरीलाल गुप्त

२. वर्ष १३, अङ्क १, सं० २०१२—ब्रजभाषा का उपेक्षित कवि कारवेग—गङ्गाप्रसाद कमठान

३. वर्ष १३, अङ्क २, सं० २०१२—(क) कवयित्री ताज रचित एक महत्वपूर्ण अज्ञात ग्रन्थ—अगरचन्द नाहटा । (ख) अकबरी दरबार के गायक बाबा रामदास और उनके पुत्र सूरदास—प्रभुदयाल मीतल । (ग) कम्पिल के कवि तोषनिधि—कृष्णदत्त बाजपेयी

४. मर्यादा

१. भाग ४, संख्या १, १९१२ ई०—शेखर—शिवाधार पाण्डेय

२. भाग १०, संख्या ३, १९१५ ई०

३. भाग, ११, संख्या ५, १९१६ ई०

५. हिन्दुस्तानी

१. अप्रेल-जून १९४३ ई०—शिव सिंह सरोज के सन्-संवत्—विश्वनाथप्रसाद मिश्र ।

६. हंस

१. वर्ष ६, अङ्क ८, मई १९३६ उर्दू में नाट्य कला—श्री अजहर अली फारूकी

७. हिन्दी अनुशीलन

१. १९५६ ई० का संयुक्ताङ्क—रामानन्द सम्प्रदाय के हिन्दी कवि—डॉ० बदरीनारायण श्रीवास्तव ।

२. अप्रैल-जून १९५७—चन्दसखी की जीवनी और रचनाओं की खोज—प्रभुदयाल मीतल

८. हरिऔध

१. प्रथमाङ्क अप्रैल १९५६—शिव सिंह सरोज के परवीने कवि—किशोरलाल गुप्त ।

९. भारतीय साहित्य

१. प्रमाङ्क जनवरी १९५६—चरणदासी सम्प्रदाय का अज्ञात हिन्दी साहित्य—मुनि कान्ति सागर ।

१०. संसार साप्ताहिक

काशी राज्य विशेषाङ्क दीपावली १९४९ ई०

११. आईना, उर्दू साप्ताहिक, दिल्ली

१. १९ सितम्बर १९५५ का अङ्क—औरङ्गजेब से गुस्ताखियाँ करने वाले सन्त कवि: हिन्दी, उर्दू के मुश्तरका शायर—सफीउद्दीन सिद्दीकी

१२. दैनिक आज

१. रविवार विशेषाङ्क—३१ मार्च १९५७, विन्ध्यप्रदेश में प्राप्त हिन्दी ग्रन्थों का विवरण—रघुनाथ शास्त्री

२. रविवार विशेषाङ्क—१४ जुलाई १९५७, काशी नागरी प्रचारिणी सभा ६४ वाँ वार्षिक खोज विवरण—रघुनाथ शास्त्री

१३. अंग्रेजी तारीख हिन्दी अङ्क

बर्ष १, अङ्क १२, जनवरी १९५७

३. कवि नामानुक्रमणिका और तुलनात्मक सारिणी

इस कवि नामानुक्रमणिका में केवल उन कवियों का नाम है, जिनका परिचय सरोज में दिया गया है। इससे निम्नाङ्कित प्रयोजन सिद्ध किए गए हैं :—

(१) सरोज में आए कबियों को ढूंढ़ निकालने में सुबिधा। कवि नाम के आगे संख्या स्तम्भ में उस कवि की संख्या दी गई है। इस संख्या पर कवि को तत्काल खोज निकाला जा सकता है। कवि संख्या पृष्ठ संख्या से अधिक उपयोगी है और स्थिर है।

(२) विलीन कविया के सम्बन्ध में जानकारी जो कवि किसी अन्य कवि में मिला दिए गए हैं, उनके नाम कोष्टक में दिए गए हैं और वे जिस कवि से अभिन्य सिद्ध हुए हैं, उस कवि की संख्या नाम के आगे लिख दी गई है।

(३) पूर्ण रूप से अनस्तित्व सिद्ध कवियों की जानकारी। जिन कवियों का अस्तित्व नहीं सिद्ध होता, उनका नाम कोष्टक में दिया गया है और नाम के आगे कोई संख्या नहीं दी गई है।

(४) सन्दिग्ध अस्तित्व वाले कवियों के सम्बन्ध में जानकारी। सन्दिग्ध अस्तित्व वाले कवियों के नाम के आगे प्रश्नवाचक चिह्न लगा दिया गया है।

(५) सरोज में उदाहृत कवियों के संख्या में जानकारी। कवि संख्या के आगे तिर्यक रेखा के अनन्तर जो संख्या दी गई है, उस संख्या पर सरोज में उस कवि की कविता उदाहृत है। यदि तिर्यक रेखा से अनन्तर कोई संख्या नहीं दी गई है, तो इसका अर्थ यह हुआ कि उस कवि की कविता सरोज में उदाहृत नहीं है।

(६) सरोज में दिए कवि—संवतों की सूचना और उनके सम्बन्ध में किए गए निर्णयों से अभिज्ञता। सरोज के सभी संवत विक्रमीय हैं। जो संवत इसवी सन् सिद्ध हुए हैं, उनके आगे ई० लिख दिया गया है। जिन संवतों की जाँच हुई है, उनके निर्णय सङ्केतों में संवतों के आगे दे दिए गए है और जिनकी जाँच नहीं हो सकी है, उनके आगे कोई सङ्केत नहीं दिया गया है।

(७) वि० और संवत हीन कवियों के नवीन ज्ञात संवतों की जानकारी। ये संवत कोष्टक में दिए गए हैं।

(८) सरोज और ग्रियर्सन की तुलना। ग्रियर्सन में संवत ईसवी सन का प्रयोग हुआ है। ग्रियर्सन स्तम्भ में पहले कबि संख्या तदन्तर उसका सन फिर सरोज के संवतों से सङ्केतों में तुलना। सरोज के वे कवि जो ग्रियर्सन में नहीं स्वीकृत हैं, उनके स्थान रिक्त है।

(६) सरोज और विनोद की तुलना। सारी प्रक्रिया ग्रियर्सन स्तम्भ के समान है। विनोद में सर्वत्र विक्रम संवत प्रयुक्त हुआ है।

इस अनुक्रमणिका और तुलनात्मकसारिणी में निम्नलिखित सङ्केत प्रयुक्त हैं:—

अ—अज्ञातकाल,
अ०—अशुद्ध
उप—उपस्थितिकाल
ग्र—ग्रन्थ रचनाकाल
ग्रि०—ग्रियर्सन
रा—राज्यकाल
वि०—विद्यमान्
ज—१. जन्मकाल २. सरोज में दिया सं० जन्म काल के रूप में स्वीकृत
जी—जीवनकाल
म—मृत्युकाल
र—रचनाकाल २ सरोज का सं० रचनाकाल के रूप में स्वीकृत
सं०— जन्मकाल या रचनाकाल

तुलनात्मक कवि नामानुक्रमणिका

		सरोज	ग्रियर्सन		विनोद
अ					
१ अम्बर भाट		४०।	१६१० उप	५५१।ज	२४३६।१६४० उप
२ अम्बुज		१२।१०	१८७५ उप	६५५।ज	१६५३।ज
३ अकबर		१।१	१५८४ ई० उप	१०४।१५५६-१६०५ ए	१३६।१५६६-१६६२ जी
४ अक्षर अनन्य		३०।३७	१७१० ज	२७७।ज	४३६।ज
५ (अगर)	३५	३४।१७	१६२६ उप	(४४।१५७५ उप)	१६१।ज
६ अग्रदास		३५।१६	१५६५ उप	४४।१५७५ उप	१४२।१६३२ र
७ (अजवैस प्राचीन)	३	२।३	१५७० अ०	२४।ज	६६।१६०० र
८ अजवैस नवीन		३।४	१८६२ उप	५३०।१८३० उप	१८३१।१
९ अजीत सिंह		४७।	१७८७ अ०	१६५।१६८१-१७२४ जी	२०२३।१८८६ ज, १६१० री ५५६।१७३७-८१ जी
१० अनन्त		२४।३०	१६६२	२५०।ज	४१६।ज
११ (अनन्य १)	३०	२५।१३	१७६० उष	४१८।ज	—

अ		सरोज	ग्रियर्सन		विनोद
१२ (अनन्य २)	३०	३१।२२	(१७१०–९० जी)	(४१८।ज)	—
१३ (अनन्यदास चकदेवा वाले)	३०	३६।३५	१२२५ अ०	५।११४८ ज	१२।२,१२७५ के पूर्व
१४ अनवर खाँ		४३।	१७८० उप	३९७।ज	६९८ शुभकरण।१७८५ र
१५ अनाथ दास		२९।३६	१७१६ उप	२८७।ज	५२०।ज
१६ अनीस		२७।३३	१९११ अ०	६८७।ज	१८१५।र
१७ अनुनैन		२८।३४	१८९६	६७३।ज	२१२३।१८८६ ज
१८ (अनूप)	१८	४१।	१७९८	—	(९५५)
१९ अनूपदास		१८।२४	१८०१	४३६।ज	९५५।ज
२० अब्दुर्रहिमान		३२।९	१७३८ ई० उप	१८२।ज	५५४।१७६३-६८ र
२१ अभयराम		२०।२६	१६०२	६४।ज	१३१।१९१ ज
२२ अभिमन्यु		२३।२९	१६८० उप	२२९।ज	३४४।१६७९ ज
२३ अमर जी राजपूताना वाले		४६।	—	७९९।अ	१२६४।१८८० के पूर्व
२४ अमरदास		३३।२	१७१२	२८१।ज	९०।१५७७ र
२५ अमर सिंह राठौर		३८।	१६२१ अ०	१९१।१६३४ उप	४१७।ज १६९०, र १७२०
२६ अमरेश		११।१९	१६३५	९०।ज	१८१।ज
२७ अमृत		२१।२७	१६०२ ई० उप	१२१।ज	१७०।१६४१ र
२८ अयोध्याप्रसाद वाजपेयी औध ११५		४।५	वि० (१८६०-१९४२ जी)	६९३।१८८३	२०८६।।१९५० र

	सरोज	ग्रियर्सन		विनोद
अ				
२९ अयोध्याप्रसाद शुक्ल	६।१५	१९०२	६२२।ज	१९९३
३० अलीमन	२६।३२	१९३३उप	७८४।१८६९ के पूर्व	२३०३।१९३३ र
३१ अवध बक्स ?	७।८	१९०४	६८५।ज	२००२।र
३२ अवधेश ब्राह्मण, चरखारी	५।६	१९०१ उप	५२०।१८४० उप	१९८५।र
३३ (अवधेश ब्राह्मण, सभा) ५	६।७	१८९५ उप	५४२।ज	१९८५।
३४ असकन्द गिरि	१७।२३	१९१६ उप	५२७ सं०	२०९८।र
३५ अहमद	१४।१२	१६७० उप	२२४।ज	३१८।ज १६६०
आ				
३६ आकूब कवि	४२।	१७७५ग्र	३९४।ज	६७३।र
३७ आछेलाल भाट	४५।	१८८९	६६७।ज	२०६३।ज
३८ आजम	१३।११	१८६६अ०	६४८।ज	१८२३।१८९०र
३९ आदिल	२५।३१	१७६२	३८१।१७०३ज	६९९।१७६०ज
४० आनन्द	३९।	१७११अ०	(३४७)	१२९।१६२२र ३९०।र
४१ आनन्दघन	२२।२८	१७१५ई०उप	३४७।१७२०उप १७३९म	६४१।१७७१-९६र १७९६म
४२ आनन्द सिंह उपनाम दुर्गा सिंह	१०।१८	वि०(१९१७ग्र)	७११।१८८३ वि०	२०९२।वि०
४३ आलम	१६।२१	१७१२ई०अ०	१८१।१७००ज	५४६।अकबर कालीन
४४ आसकरनदास	३७।३८	१६१५ई०उप	७१।१५५०उप	१०२।१६०६र

	सरोज	ग्रियर्सन		विनोद
आ				
४५ आसिफ़ खाँ	४४।	१७३८	२९९।ज	४९५।र
इ				
४६ इन्दु	५०।४०	१७६६	३९२।१७१९ज	१३४८ ।अ
४७ इन्द्रजीत त्रिपाठी	५३।४४	१७३९उप	१७६।ज	५२६।१७१९ज,१७४२र
४८ इच्छाराम अवस्थी	४८।४२	१८५५ग्र	४९७।उप	५९५।१७५५ र
ई				
४९ ईश	५२।४३	१७९६	४३०।ज	४१८।१७२०र
५० ईश्वर	४९।३९	१७३०उप	१७७।ज	६१७।ज
५१ ईश्वरीप्रसाद त्रिपाठी	५१।४१	वि० (१९१६ग्र)	७१२।१८८३ वि०	४३३।१७३०र
५२ ईसुफ़ कवि	५४।	१७९१	४२१।ज	९२०।ज
उ				
५३ उदयनाथ, वन्दीजन, काशी	५६।४५	१७११	२८०।ज	५०१।ज
५४ उदय सिंह महाराजा, मारवाड़	५५।	१५१२ग्र०	७६।१५८४उप	१७३।१६४२र
५५ उदेश भाट	५७।४६	१८१५	४५८।ज	१०४०।ज
५६ उनियारे के राजा	६२।	१८८०ग्र०	६६०।उप	—
५७ उमराव सिंह पंवार	६१।५०	वि०	७१३।१८८३ वि०	१०४१।१८४०र
५८ उमैद कवि	६०।४९	१८५३	४९४।ज	१२६६।ज

	सरोज	ग्रियर्सन		विनोद
ऊ				
५९ ऊधौ	५९।४८	१८५३	४९५।ज	१२२२।१८७५र
६० ऊधौराम	५८।४७	१६१०	७९।ज	१०९।र
ऋ				
६१ ऋषि जू	७५८।६१५	१८७२	६५४।ज	१९५६।ज
६२ ऋषिनाथ	७६०।६२०	(१८३०ग्र)	७९४।१८६९सै पूर्व	६४७।१७८०र १८३१ अलङ्कार मञ्जरी
६३ ऋषिराम मिश्र	७५९।६१९	१९०१ग्र०	५९३।सं०	२०३७।१९१०र
ओ				
६४ ओलीराम	१९।२५	१६२१	८३।ज	१८८।ज
औ				
६५ (औध) ४	८।१४	१८९६ उप	६७४।ज	२०८६ अयोध्याप्रसाद वाजपेयी
क				
६६ कनक	१३०।४	१७४०	३०१।ज	६२५।ज
६७ कबीर	९२।१०४	१६१०ग्र०	१३।१४०० उप	३५।१४७५र
६८ कमच	११४।१८	१७१०उप	२७८।१६५३ से पूर्व	३७९।ग्रि
६९ कमलनयन, बुन्देलखण्डी	८९।७३	१७८४उप	४१०।ज	८४१।ज
७० कमलेश	८५।७०	१८७०	६५०।ज	१९५७।ज

	सरोज	ग्रियर्सन		विनोद
क				
७१ कमाल	१०२।८२	१६३२ अ०	१६।१४५०उप	४१।ग्रि
७२ करन, बन्दीजन	७१।	१७८७ ग्र	३७०।उप	७०४।र
७३ करन भट्ट, पन्ना निवासी	६६।५७	१७९४ग्र	३४६।ज	९३९।ज
७४ करनैश, बन्दीजन, असनी	६८।६७	१६११ ई० उप	११५।ज	१४३।ज
७५ (कर्ण ब्राह्मण) ६९	७०।५६	१८५७ अ०	५०४।उप	१११०।१७५७र
७६ कलानिधि १ प्राचीन	१०३।८३	१६७२	२२८।ज	३२८।ज
७७ कलानिधि २	१०४।९५	१८०७ उप	४५२।ज	७४९।१७९१र
				८२०।१८०७र
				९१२।१८२० के पूर्व
				९६९।१७६९र
				१०१७।ज
७८ कल्याण	१०१।८१	१७१६ अ०	२९१।ज	५०१।१,१७४०र
७९ कल्याणदास	११८।७८	१६०७ उप	४८।१५७५उप	१५२।ग्रि
८० कल्याण सिंह भट्ट	१३२।	—	८००।अ	—
८१ (कविदत्त) ३४२	९४।८८	१८३६ उप	४७५।ज	७१५।१,१७९१ग्र ७४७।१
८२ कविराज, बन्दीजन	९०।७६	१८८१	६६१।ज	१२८०।र
८३ (कवि राम १) ९३	९२।७९	१८९८ ज	(७८५)	(२२७७।ज)

	सरोज	ग्रियर्सन	विनोद
क			
८४ कवि राम २ रामनाथ कायस्थ	९३।९०	वि० ७८५।१८६९ के पूर्व	२२७७।
८५ (कविराय) ८७।	९१।७७	१८७५ ६५६।ज	६०७।१८१८र
८६ कवीन्द्र, उदयनाथ	७४।६१	१८०४ग्र ३३४।१७२०उप १८०४ वि०ग्र	५५०।ग्र
८७ कवीन्द्र, सखीसुख के पुत्र	७५।	१८५४ ग्र० ४९६।ज	७६९।१७९९र
८८ कवीन्द्र, काशीवाले	७६।६२	१६२२ ई०उप १५१।१६५०उप	२८६।१६५०ज १६८७ ग्र
८९ कादिर	७८।५८	१६३५उप ८९।ज	१८०।ज
९० कान्ह कवि, कन्हई लाल २	८७।७१	१९१४उप ५५७।ज	२४३९।ज
९१ कान्ह, कन्हैया बख्श वैस	८८।७५	वि० (१९००ज) ७३२।१८८३ वि०	२२३६।१९००ज १९४०उप
९२ कान्ह कवि, प्राचीन १	८६।७२	१८५२ग्र० ४९१।ज	१२३७।ज
९३ कान्हरदास, व्रजवासी	१२४।१००	१६०८उप ५२।१६००उप	२०४।ग्रि
९४ कामताप्रसाद, असौथर	९७।१०२	१९११उप ६४४।ज	१३५९।ग्र
९५ कामताप्रसाद, ब्राह्मण, लखपूरा	१३३।१०३	१९११उप (६४४।ज)	—
९६ कारवेग फ़कीर	१०६।८५	१७५६उप ३१७।ज	३२९।१७००र
९७ कालिका	१०९।८९	वि० ७८०।१८६३ के पूर्व	१३६१।ग्र
९८ कालिदास त्रिवेदी	७३।६०	१७४९ग्र १५९।१७०० उप	४३१।र

	सरोज	ग्रियर्सन		विनोद
क				
९९ कालीचरण वाजपेयी	१२०।	वि०(१९०२ग्र)	८०१।ग्र	१९९४।१९०२र
१०० कालीदीन	११९।८०	—	८०२।ग्र	१३६३।अ
१०१ कालीराम (क्लीराम)	१००।१०६	१८२६अ०	४६४।ज	—
१०२ काशीनाथ	६५।७४	१७५२	१३९।१६००उप	२०५।ग्रि
१०३ काशीराज, बलवान सिंह	११०।९२	१८८९ग्र	५६३।१८००उप	१२४४।ग्र
१०४ काशीराम	६६।१०१	१७१५उप	१७५।ज	५०२।ज
१०५ किङ्कर गोविन्द	६९।१०५	१८१०	४५५।ज	१००८।ज
१०६ (किशोर, दिल्ली) २५६	७७।५९	१८०१उप	—	८७२।ज
१०७ किशोर सूर	११५।९९	१७६१उप	३८५।ज	७००।ज
१०८ कुञ्ज गोपी	१२८।	(१८३१ग्र)	८०३।अ	१३७८ग्र
१०९ कुञ्जलाल, मऊरानीपुर	८३।६८	१९१२उप	५५५।ज	२४४०।१९१८ज१९४०उप
११० कुन्दन	८४।६९	१७५२उप	३०८।उप	५५८।र
१११ कुम्भकर्ण	१३१।	१४७५अ०	२१।१४००उप १४६९म	२३।१४१९-६९रा
११२ कुम्भनदास, व्रजवासी	११६।६४	१६०१उप	३९।१५५०उप	५५।१६०६र
११३ कुमारपाल, अन्हलवाड़ा	७२।	१२२०उप	४।११५०उप	१३।१३००र
११४ कुमारमणि भट्ट	६७।५५	१८०३उप	४३७।ज	६४१।१ १७७६र
११५ कुलपति मिश्र	१०५।८५	१७१४उप	२८२।ज	४२८। १७२७र १६७७ज

सरोज		ग्रियर्सन		विनोद
क				
११६ कृपाराम, जयपुर	११२।६७	१७७२ग्र	३२८।१७२० उप	६७७।ग्रि
११७ कृपाराम २ ब्राह्मण, नरेनापुर	११३।६६	१८०८ग्र	७६७।१८७५ से पूर्व	८१५।१८०६र
		१८१५ ग्र		८६८।१,१८१५र
११८ कृपाराम३ माधव सुलोचना चम्पा वाले	१२६।	—	(७६७)	(८१५।)
११९ कृपाराम ४ हिततरङ्गिणी वाले ११२	१२७।	१७६८ग्र	(७६७)	६११।५६८र
१२० कृपाल	१२६।	—	८०५।ग्र	—
१२१ कृष्ण कवि औरङ्गजेब के आश्रित	७६।६३	१७४०उप	१८०।ग्र	—
१२२ कृष्ण कवि २, जयपुर वाले	८१।६६	१६७५अ०	३२७।१७२०उप	६५२।१७८५-६२र १६५८।
१२३ कृष्ण कवि ३, नीति वाले	८२।६५	१८८८	६६६।ज	—
१२४ (कृष्ण कवि प्राचीन)७६	१३४।	(१७४०उप)	—	—
१२५ कृष्णदास गोकुलस्थ	१२१।१०७	१६०१उप	३६।१५५०उप	५३।१६००र
१२६ कृष्ण लाल	८०।६३	१८१४अ०	४५६।ज	१२०६।१८७२र
१२७ कृष्ण सिंह विसैन	१०८।८७	१६०६ उप	६०५।ज	२३१७।ज
१२८ कृष्णानन्द व्यासदेव	११७।	१८०६ अ०	६३८।१८४३ उप	१७६३।ग्रि

	सरोज		ग्रियर्सन	विनोद
क				
१२९ केदार कवि, वन्दीजन	१२५।	१२८० अ०	३।११५० उप	१०।—
१३० केवलराम, ब्रजवासी	१२३।९१	१७६७ अ०	४५।१५७५ उप	१५३।ग्रि
१३१ केशवदास सनाढ्य मिश्र	६३।५१	१६२४ उप	१३४।१५८० उप	६६।१६१२ ज १६७४ म
१३२ केशवदास २	६४।५२	—	—	१३८६।अ
१३३ केशवदास, ब्रजबासी, कश्मीरी	१२२।१८	१६०८ उप	६३।१५४१ उप	९५ ग्रि
१३४ केशवराम कवि	६६।५४	—	८०४।अ	१३८४।अ
१३५ केशवराय बाबू, बघेलखण्डी	६५।५३	१७३९	३००।ज	५९३।१७५४ र
१३६ केहरी	१०७।८६	१६१०	७०।ज	१५९।ज
१३७ कोविद कवि उमापति त्रिपाठी	१११।९४	१९३० उप १९३१ म	६९१।१८७४ म	१९५५।१९०० र
ख				
१३८ खण्डन	१४२।१११	१८८४ अ०	५३६।ज	६९३।१७८२ र
१३९ खड्गसेन, कायस्थ, ग्वालियर	१४७।	१६६० उप	२२०।ज	३०२।ज
१४० खान	१४०।११५	—	७८१।१८६८ के पूर्व	२१४४।१९२५ के पूर्व
१४१ खानखाना रहीम	१३८।१०९	१५८० ई० उप	१०८।१५५६ ज	१४७।१६१० ज १६८४ म
१४२ खान सुलतान ?	१४१।११३	—	८०७।अ	—

	सरोज		ग्रियर्सन	विनोद
ख				
१४३ (खुमान कवि) १३५	१३६।	(१८३०-८० र)	(१७०१)	(११२९) ११२९।१८७० र
१४४ खुमान, वन्दीजन, चरखारी	१३५।११०	१८४० उप	१७०।१६८३ ज	२।८६६-९० र
१४५ खुमान सिंह राना, चित्तौर	१३७।	८१२ अ०	२।८३० उप	१३९१।अ
१४६ खुलाल पाठक	१४४	—	८०८।अ	१३९३।अ
१४७ खूबचन्द, माड़वारवासी	१३९।११२	—	८०९।अ	१३९४।अ
१४८ खेतल कवि	१४३।	(१७४३ ग्र)	८१०।अ	१९९।१६३० ज
१४९ खेम कवि १, बुन्देलखण्डी	१४५।११६	—	१०३ हेमडलमऊ।१५३० उप	१९८।ज
१५० खेम कवि २, ब्रजवासी	१४६।११४	१६३०	८७।ज	
ग				
१५१ गङ्ग कवि १	१४८।११७	१५९५ ई० उप	११९।ज	८०।१५९०-१६७० ८६। १२२।
१५२ गङ्ग कवि २, गङ्गाप्रसाद, ब्राह्मण, सपौली वाले	१४९।११८	१८९०	५९७।ज	२४४५।१९४० उप
१५३ गङ्गादयाल दूबे	१५३।१५८	वि०	७१९।१८८३	२४४३।१९४० उप
१५४ गङ्गाधर १, बुन्देलखण्डी	१५०।११९	(१८९९ ज) (१९७२ म)	—	१४२२।ज
१५५ गङ्गाधर २	१५१।१३२ (१७३९ ग्र)		८११।अ	—

		सरोज	ग्रियर्सन	विनोद
ग				
१५६ गङ्गापति	१५२।१५७	१७६४ ज	४८१।ज	६७५।१७७६र
१५७ गङ्गाराम बुन्देलखण्डी	१५४।१६३	१८९४ उप	५४० ज	२१३।ज
१५८ गजराज उपाध्याय, काशी	१६२।१५२	१८७४ज	५८५।ज	१९९८।ज
१५९ गज सिंह	२०६।	(१८०८-४४र)	८१२।ग्र	८३०।१८०८-४४र
१६० गड्डु	१९९।१४५	१७७०ग्र०	३८९।ज	६३६।र
१६१ गणेश जी मिश्र	२०४।	१६१५	८१।ज	१६३।ज
१६२ गणेश, बन्दीजन, बनारसी	१९७।१४१	वि० (१८९६ग्र)	५७३।१८८३ वि०	१८४५।१८९६र
१६३ गदाधर कबि	१५६।१२५	—	४६।१५७५उप	—
१६४ (गदाधर कवि) १५५	२१०।१२०	(१८६०ज) (१९५५म)	—	—
१६५ गदाधर भट्ट	१५५।१२०	१९१२उप	५१२।ज	२०७९।१८३६।२, १८९४र
१६६ गदाधरदास मिश्र, व्रजवासी	१५८।१६८	१५८०उप	२५।ज	१४२।१,१६३२र
१६७ गदाधर राम	१५७।१६०	—	—	—
१६८ गिरिधर कविराय	१६२।१२४	१७७०	३४५।ज	७३१।ज
१६९ गिरिधर कवि, होलपुर वाले	१६१।१२३	१८४४उप	४८३।सं	१०५४।र
१७० गिरिधर बनारसी, बाबू गोपालदास	१६३।१२६	१८९६उप	५८०।१८३२ज	१८०३।१९००र
१७१ गिरिधारी ब्राह्मण १, वैसवारा	१५६।१२१	१९०४उप	६२५।ज	१४०१।१ग्र

	सरोज		ग्रियर्सन	विनोद
ग				
१७२ गिरिधारी २	१६०।१२२	(१७०५ग्र)	—	—
१७३ गिरिधारी भाट, मऊरानीपुर	२००।	वि० (१८८६ग्र १९१२ग्र)	७३३।१८८३ वि०	२४४१।१९४०उप
१७४ गीध	१९८।१४४	—	८१३।अ	१४०३ग्र
१७५ गुणाकर त्रिपाठी, कान्धा	१९१।१६१	वि०	७२८।१८८३ वि०	२२४५।१९३०र
१७६ गुनदेव, बुन्देलखण्डी	१६०।१३०	१८५२	४९२।ज	६८३।१७५२ज
१७७ गुन सिंघ, बुन्देलखण्डी	१९५।१३९	१८८२	५३५।ज	२०३०।ज
१७८ गुमान मिश्र खाण्ड़ी	१८५।१२८	१८०५उप	३४६।१७४०उप	७३६।१८०१, १८१८, १८२०ग्र
१७९ गुमान कवि २	१८६।१३१	१७८८ ज	(३४६।१७४०उप)	१०३२।१८३८र
१८० गुरु गोविन्द सिंह	१७६।१४७	१७२८उप	१६६।१६६६ज १७५४ वि तपकाल	५४८।१७२३ज १७६५म
१८१ (गुरुदत्त कवि १ प्राचीन) **१८४**	१८३।१५०	१८८७	६६३।ज	—
१८२ गुरुदत्त कवि २, शुक्ल मकरन्दपुर	१८४।१५१	१८६४उप	६३१।ज	१२४७।१८६३र
१८३ गुरुदीन पाण्डे	१८१।१६४	१८९१ग्र	६३७।सं०	१११८।१८६०ग्र
१८४ गुरुदीन राय, बन्दीजन	१८२।१४६	वि०	७१४।वि० **१८८३**	२२४६।१९३०र
१८५ गुलाब सिंह, पञ्जाबी	२०१।	१८४६उप	४८६।ज	१०१०।१८३५र
१८६ गुलामराम कवि	१९३।१४८	(१८७४उप)	८१५।ग्र	—
१८७ (गुलामी) १९३	१९४।१४९	(१८७४उप)	८१६।ग्र	—

		सरोज	ग्रियर्सन		विनोद
ग					
१८८	गुलाल	१८७।१३३	१८७५	६५७।ज	१९५९।ज
१८९	गुलाल सिंह	२०५।	१७८०उप	३९८।ज	५५९।१७५२र
१९०	गोकुलनाथ, बन्दीजन, बनारसी	१७२।१४२	१८३४उप	५६४।१८२०उप	८८०।१८२८र
१९१	गोकुल विहारी ?	१७४।१६२	१६६०	२२१।ज	३१०।ज
१९२	गोधू	२०३।	१७५५	३१०।ज	५९७।र
१९३	गोप	१७१।१३७	१५९० अ०	२७।ज	११५। १२१।ज ६६३।२ ७५८।१७९७र
१९४	गोपनाथ	१७५।१५६	१६७०	२२५।ज	३१९।ज
१९५	गोपाल प्राचीन	१६४।१२७	१७१५	२०८।ज	४०२।र
१९६	गोपाल, कायस्थ, रीवां १	१६५।१३४	१९०१ उप	५३१।१८३० उप	१३०४।१८८७र
१९७	गोपाल २, वन्दीजन, चरखारी	१६६।१३५	१८८४ उप	५२२।१८४० उप	—
१९८	गोपाल राय	१६८।१५९	(१८८५-१९०७र)	८१८।ग्र	१९६३। १०९४।१८५३र १२८१।
१९९	गोपालदास, ब्रजवासी	१७०।१६७	१७३६ उप	२९७।ज	३३०।१७००र
२००	गोपाल लाल	१६७।१३६	१८५२ उप	४९३।ज	१२६७।ज
२०१	गोपालशरण राजा	१६९।१६५	१७४८	२१५।ज	६७०।ज

		सरोज	ग्रियर्सन	विनोद
ग				
२०२ गोपाल सिंह ब्रजवासी	२०९।	—	८१९।अ	१४१३।ग्र
२०३ गोपीनाथ, वन्दीजन, बनारसी	१७३।१४३	१८५० उप	५६५।१८२० उप	८८१।
२०४ गोवर्द्धन	२०२।	१६८८ उप	२४४।ज	३६५।१७०७र
२०५ गोविन्द जी कवि	१७८।१५५	१७५७ उप	३०५।१६९३र	११११रसिक गोविन्द१८५८र
२०६ गोविन्द कवि	१८०।१२९	१७९१ उप	—	७६५।१७९८
२०७ गोविन्द अटल ?	१७७।१५४	१६७०	२२३।ज	३३१।ज
२०८ गोविन्ददास, व्रजवासी	१७९।१६६	१६१५ उप	४३।१५६७ उप	१६४।ज
२०९ गोविन्द राय,वन्दीजन, राजपूताना	२०८।	(१६०९र)	८२२।ग्र	१०८।१६०९र
२१० गोसाईं	१९६।१४०	१८८२	८१७।ग्र	१४१७।ग्र
२११ ग्वाल, मथुरा १	१८८।१३८	१८७९ ग्र	५०७।१८१५ उप	१२३६।ग्र
२१२ ग्वाल प्राचीन २	१८९।१५३	१७१५	२८३।ज	५०३।ज
घ				
२१३ (घन ग्रानन्द) २२	२१२।१७०	१६१५ग्र०	—	—
२१४ घनराय	२१४।	१६९२ज	२४६।१६३३ज	४१९।ग्रि
२१५ घनश्याम शुक्ल	२११।१६९	१६३५	९२।ज	२२९।ज
२१६ घाघ	२१५।	१७५३	२१७।ज	६४८।ज
२१७ घासी भट्ट	२१६।	—	८२१।ग्र	१४२६।ग्र

	सरोज	ग्रियर्सन		विनोद
घ				
२१८ घासीराम	२१३।१७१	१६८०	२३०।ज	२५४।र
च				
२१९ चण्डी दत्त	२३५।१९२	१८९८ उप	६०३।ज	२१४८।ज
२२० चन्द १ बरदाई	२१७।१७२	१०९८ अ०	६।११९१ उप	८।१२२५-४९२ ११८३ज
२२१ चन्द २ सतसई के टीकाकार	२१८।१७५	१७४९ उप	२१३।ज	५४६।१७६१र
२२२ चन्द ३	२१९।१७४	—	—	५४६।१७६१र
२२३ चन्द ४	२२०।१७३	—	—	५४६।१७६१र
२२४ चन्दन राय	२२४।१८३	१८३० उप	३७४ उप	९६८।र
२२५ चन्द सखी	२२६।१८४	१६३८	९३।ज	१६१।र
२२६ चतुर कवि	२२८।१८६	—	(६५।)	—
२२७ चतुरविहारी १, ब्रजवासी	२२६।१७७	१६०५	६५।ज	१३४।ज
२२८ चतुरविहारी २ ?	२२९।१९०	—	(६५।)	—
२२९ चतुरसिंह राना	२२७।१८७	१७०१	२५७।ज	४६२।ज
२३० चतुर्भुज	२३०।१९१	—	(४०)	—
२३१ चतुर्भुजदास	२३१।१९४	१६०१ उप	४०।१५६७ उप	५६।१६२५र
२३२ चरणदास	२३६।१९३	१५३७ अ०	२३।ज	४५।र
२३३ चिन्तामणि १ त्रिपाठी	२३१।१८०	१७२९ उप	१४३।१६५० उप	२९२।१६६६ज

	सरोज		ग्रियर्सन	विनोद
च				
२३४ चिन्तामणि २	२२२।१८१	—	(१४३)	१४३३।अ
२३५ चिरञ्जीव, ब्राह्मण	२३८।१८५	१८७०	६०७।ज	१२०१।र
२३६ चूड़ामणि	२२३।१८२	१८६१	६४७।ज	२३४।१६६१र
२३७ चैतनचन्द्र	२३७।१८६	१६१३अ	७२।ज	१७१।ज
२३८ चैन	२३२।१७८	—	(६२७।)	१४३४।अ
२३९ चैनराय	२३४।१८८	—	—	६३५।१७६९र
२४० चैन सिंह, खत्री, लखनऊ	२३३।१७९	१९१० उप	६२७।ज	२०३२।र
२४१ चोखे	२२५।१७६	—	८२४।अ	१४३५।अ
२४२ चोवा कवि, हरिप्रसाद, वन्दीजन	२४०।१९५	वि०	—	२२४८।१९३० उप
छ				
२४३ छत्तन	२४५।१९६	—	८२५।अ	१४४१।अ
२४४ छत्र	२५३।	१६२५ अ०	७५।ज	५३४।१७५७अ
२४५ छत्रपति	२४६।१९८	—	(७५।)	१४४२।अ
२४६ छत्रसाल बुन्देला	२४१।१९७	१६९० ई० उप	१९७।१६५८ म	४३४।१७०६ज १७८८म
२४७ छबीले	२४८।२०२	—	७६३।१८४३से पूर्व	३३२।१७००र
२४८ छितिपाल, राजा माधव सिंह, अमेठी	२४२।१९९	वि०(१९१३अ)	६०४।वि०१८८३	२१०५।१,१९१६-२५ २४६८।

	सरोज	ग्रियर्सन		विनोद
छ				
२४९ छीत कवि	२५०।२०४	१७०५	(४१।)	४६३।ज
२५० छीत स्वामी	२५१।२०५	१६०१ उप	४१।१५६७ उप	५७।१६१३
२५१ छेदीराम	२५२।२०७	१८९४ग्र	६७२। उप	९८६।१८४९र
२५२ छेम कवि १	२४७।२००	१७५५ उप	३११।ज	१४४३।ग्र
२५३ छेम कवि २	२५४।२०८	१५८२ उप	१०३।१५३० उप	९१। ग्रि
२५४ छेम करन १ बाराबङ्की	२४३।२०६	१८७५ उप	३७३।१७११ ज	११३७।१, १८२८ ज
२५५ छैम करन २ अन्तरवेद	२४४।२०१	—	(३११)	१४४४।ग्र
२५६ छैल	२४९।२०३	१७५५ उप	३१२।ज	३३३।१७०० र
ज				
२५७ जगजीवन	२९२।२३८	१७०५	२६४।ज	३४६ र
२५८ जगजीवनदास चन्दैल	३०४।	१८४१ अ०	३२३।१७६१उप	८६५।ग्रि
२५९ जगत सिंह बिसैन	२५५।२०९	१७९८ ज	३४०।१७७० उप	८७९।१८२७ ग्र
२६० जगदीश	२९४।२४०	१५८८ ई० उप	११७।ज	१२३।ज
२६१ जगदेव	२८३।२३१	१७९२	४२७।ज	९१३।ज
२६२ (जगन) ३०१	२७७।२१२	१६५२ उप	९८।ज	२६४।ज
२६३ जगनन्द कवि वृन्दावन निवासी ११७	२८९।२३४	१६५८	२१८।ज	३०५।ज

	सरोज	ग्रियर्सन		विनोद
ज				
२६४ जगनिक	३०६।	११२४ ग्र०	७।११६१ उप	९।
२६५ (जगनेश) ३०१	२६६।	—	८२६।ग्र	१४४७।ग्र
२६६ जगन्नाथ कवि १ प्राचीन	२८४।२३२	(१७७६ग्र)	७६४।१८४३ के पूर्व	६७६।१७७६ र
२६७ जगन्नाथ २ अवस्थी	२८५।२३३ वि०	६०१।	वि० १८८३	२४४७।१९४० उप
२६८ जगन्नाथ	३०१।	(१६१३।६२ उप)	—	१४४८।ग्र
२६९ जगन्नाथदास	२८६।२४४	(१७००उप)	(७६४)	३२५।१७००र
२७० जगामन	३०२।	(१६१३-६२ उप)	१२३।१५७५ उप	१५५।१६३२। ग्रि
२७१ जदुनाथ	२९३।२३९	१६८१	२३८।ज	२०३३।१८८१ ज
२७२ जनकेश भाट	२६४।२१३	१९१२ उप	५५६।ज	२३३४।ज
२७३ जनार्दन	२७८।२१६	१७१८ उप	२८८।ज	५२७।ज
२७४ जनार्दन भट्ट	२७६।२४९	१७३० ग्र १७३५ ग्र १७४९ ग्र	८२७।ज	१९२५।१९०० के पूर्व
२७५ जवरेस	३०७।	वि०१९४०उप	७३४।वि० १८८३	२४४९।१९४० र
२७६ (जमाल) २९८	२८०।२२५	१६०२ ई०उप	(८५)	१२२।ज
२७७ जमालुद्दीन पिहानी	२९८।	१६२५ उप	८५।ज	१९२।ज
२७८ जय कवि, भाट—लखनऊ	२७५।२२९	१७७८ उप	५९८।१८४५ उप	१९८६।र

	सरोज	ग्रियर्सन		विनोद
ज				
२७९ जयकृष्ण कवि	२७४।२२४	(१७७६ग्र) (१८२५ग्र)	८३०।ग्र	६७८।१७७७-१८२५ र
२८०जगदेव कवि १ कम्पिलावासी	२७०।२१८	१७७८ उप	१६१।१७०० उप	६०९।१७५६ र
२८१ जगदेव २	२७१।२१९	१८१५	४५९।ज	११५४।१८३५ ज
२८२ जय सिंह	२७६।२४२	—	८३१।ग्र	—
२८३ जय सिंह कछवाहे	२९५।	१७५५ उप	३२५।१६९९-१७४३ रा	६०३।
२८४ जय सिंह सीसोदिया	२९६।	१६८१ई०उप	१८८।१६८१-१७००	४९७। ग्रि
२८५ जलालुद्दीन	३८७।२४१	१६१५	८२।ज	१६५ज
२८६ जलील, बिलग्रामी	२९७।२४६	१७३९उप	१७९।ज	६२४।१७३८ज
२८७ जवाहिर कवि१, बिलग्रामी	२६७।२१०	१८४५उप	४८५।ज	१०६०।र
२८८ जवाहिर कवि २, भाट	२६८।२११	१९१४उप	५५८।ज	२४५०।१९१५ज
२८९ जसन्त सिंह बघेले	२६५।२२६	१८५५उप	३७७।१७९७उप १८१४म	११०५।ज
२९० जसवन्त कवि २	२६६।२३७	१७९२ग्र०	७४७।१७१८ से पूर्व	२९५।१६८२ज १७३८म
२९१ जसौदानन्दन	२८८।२४७	१८२८उप	४६५।ज	११०६।ज
२९२ जानकीप्रसाद पंवार १	२६१।२२१	वि० (१९०८ग्र)	६९५।वि०१८८३	१८१२।१९०६ग्र

	सरोज	ग्रियसन		विनोद
ज				
२९३ जानकीप्रसाद २	२६२।२२२	—	(६९५)	—
२९४ जानकीप्रसाद, बनारसी ३	२६३।२२३	१८६०उप	५७७।१८१४उप	११३१।१८७२र
२९५ जीवन १	२८२।२२८	१८०३अ०	४३८।ज	९४५।ज
२९६ जीवन कवि २	२९१।२३६	१६०८	७७।ज	१५८।ज
२९७ जीवनाथ भाट	२८१।२२७	१८७२उप	५९४।ज	९५७।१८०३ज
२९८ जुगराज	२५८।२३०	—	७६५।१८४३ से पूर्व	१४६५।ज
२९९ (जुगलदास) २९०	३०३।	(१८२१अ)	(३१३।)	९२८।१,१८२१र १४६७।ज
३०० जुगुल कवि	२९०।२४३	१७५५अ०	३१३।ज	६८४।ज
३०१ जुगुलकिशोर कवि १	२५७।२१४	—	(३४८)	१४६६।ज
३०२ जुगुलकिशोर, भट्ट २	२५६।२१५	१७९५उप	३४८।१७७४०उप	८०६।१८०३र
३०३ जुगुलप्रसाद चौबे	२५९।२४८	—	८२९।अ	१४६७।१अ
३०४ जुलफ़कार कवि	३०५।	१७८२अ०	४०९।ज	१९९१।१,१९०३र
३०५ जैत	२७३।२४५	१७०१ई०उप	१२०।ज	१३५।ज
३०६ जैतराम	२७२।२२०	(१७९४अ)	(१२०)	७५५।१७९५र
३०७ जैनुद्दीन अहमद	२६६।२१७	१७३६उप	१४४।ज	४८७।र
३०८ जोइसी	२९०।२३५	१६५८उप	२१९।ज	२९०।१६८८र

	सरोज	ग्रियर्सन		विनोद
ज				
३०९ जोध	३००।	१५९०ई०उप	११८।ज	११६।ज
३१० ज्ञानचन्द यती, राजपूतानेवाले	२०७।	१८७०उप	६५१।ज	१०४५।१८१३ज, १८४०र
ट				
३११ टहकन	३१०।	(१७२६ग्र)	८३२।अ	४५२।१,१७२६र
३१२ टैर	३०९।	१८८८	६६५।ज	२११४।ज
३१३ टोडर	३०८।२५०	१५८०ई०उप	१०५।ज	७६।ज
ठ				
३१४ ठाकुर प्राचीन	३११।२५१	१७००	१७३।उप	—
३१५ ठाकुरप्रसाद त्रिपाठी १	३१२।२५२	१८८२	५७०।ज	२१४१।ज
३१६ ठाकुरप्रसाद त्रिवेदी	३१४।२५४	वि०	७१७।वि०१८८३	२४५३।१९४०उप
३१७ ठाकुर राम	३१३।२५३	—	८३३।अ	१४७४।अ
ढ				
३१८ ढासन	३१५।२५५	—	८३५।अ	१४७५।अ
त				
३१९ तत्ववेत्ता	३२३।२६२	१६८०अ०	२३१।ज	३८१।ज

	सरोज		ग्रियर्सन	विनोद
त				
३२० ताज	३२५।२७०	१६५२उप	६६।ज	२६७।१७००र
३२१ तानसेन	३२०।२६८	१५८८ई०उप	६०।१५६०उप	८१।ग्रि
३२२ तारा	३२२।२६१	१८३६	(४१६)	१४७६।ग्र
३२३ तारापति	३२१।२६०	१७६०	४१६।ज	६१४।ज
३२४ तालिब शाह	३२६।२७१	१७६८	(४३६।१७४६सं० सरोज ७५७	७७४।ज
३२५ (तीखी)	३२८।२६६	—	७४८।१७१८ से पूर्व	६६४।ग्रि
३२६ तीर्थराज	३२७।२६६	१८००उप	३६४।ज	७४१।१८०६ग्र
३२७ तुलसीदास गोस्वामी	३१६।२५६	१६०१उप १५८३ज १६८०म	१२८।१६००उप १६२४म	६५।१५८६ज१६८०म
३२८ तुलसी २ ओझा जोधपुर	३१७।२५७	(१६२६उप)	७८६।१८६६ के पूर्व	२२०५।१६२६ के पूर्व
३२६ तुलसी ३ कवि यदुराय के पुत्र	३१८।२५८	१७१२ग्र	१५३।उप	३३५।१७००र
३३० तुलसी ४	३१६।२५६	(१६३१ग्र)	—	—
३३१ तेगपाणि	३२४।२६३	१७०८	२७१।ज	४८३।ज
३३२ (तेही)	३२६।२६७	—	७४६।१७१८ से पूर्व	६६५।ग्रि
३३३ तोष	३३०।२६४	१७०५उप	२६५।ज	२६४।१,१६६१ग्र
३३४ तोषनिधि	३३१।२६५	१७६८उप	४३२।ज	६८४।१,१८३०ज १८५०र

	सरोज		ग्रियर्सन	विनोद
द				
३३५ दत्त प्रानीन, देवदत्त कुसमड़ा	३४१।	१८७०	२६१।१६४६ज	४६४।ग्रि
३३६ दत्त,देवदत्त साढ़,कानपुर	३४२।३०३	१८३६उप	५०८।१८१५उप	८७३।१८२७र
३३७ दयादेव	३४०।२७४	(१८१० से पूर्व)	८३६।अ	५७४।१७५४ से पूर्व
३३८ दयानाथ दुबे	३३६।३०४	१८८९ग्र	६६८।उप	१३२१।र
३३९ दयानिधि कवि, बैसवारे	३३८।२९२	१८११उप	३६५।ज	१०२१।ज
३४० दयानिधि ब्राह्मण, पटना के ३	३३७।२९४	(१९३६उप)	७८७।१८६६ से पूर्व	२३९३।१९३६र
३४१ दयानिधि २	३३६।२९३	(१८९१ से पूर्व)	(७८७)	१४८४।१ग्र
३४२ दयाराम कवि १	३३४।२८९	(१६७२उप)	(३८७)	(७५६)
३४३ दयाराम त्रिपाठी	३३५।२९१	१७६९उप	३८७।ज	७५६।ज
३४४ दयाल	३८०।३१०	वि०	७२०।वि०१८८३	—
३४५ दलपतिराय वंशीधर	३३३।२८२	१८८५ग्र०	६३५,६३६।सं०	७१६,७१७।१७९२ग्र
३४६ दल सिंह राजा	३३२।२७९	१७८१	४०७।ज	६९१।र
३४७ दान कवि	३४५।२८७	—	८३७।ग्र	—
३४८ दामोदर कवि	३४७।२७५	(१८८८-१९२३र)	(८४)	१३१७।१८८८र
३४९ दामोदरदास व्रजवासी	३४६।३०८	१६०० ग्र०	८४।१५६५ज	२८५।१६८७ग्र
३५० दास, बेनीमाधवदास पलका	३४४।२७७	१६५५ उप	१३०।१६००उप	२१२।१६२५ज १६६९म
३५१ दास, भिखारी दास	३४३।२८०	१७८० उप	३४४।ज	७१३।१७८५-१८०७र

		सरोज	ग्रियर्सन	विनोद
द				
३५२ (दास, ब्रजवासी) ५३७	३७५।	(१८१६ग्र)	(३६६)	—
३५३ दिनेश	३५५।२८८	(१८८३ग्र)	६३३।१८०७र	११७३।ग्रि
३५४ दिलदार	३५२।२७६	१६५०	६६।ज	२६०।ज
३५५ दिलाराम	३५४।२६०	—	७५०।१७१८ से पूर्व	६६७।ग्रि
३५६ दिलीप	३७६।	(१८५६ग्र)	८३८।ग्र	२०६६।१६१६र
३५७ दीनदयाल गिरि	३५६।२६७	१६१२ग्र	५८२।उप	१२४३।ग्र
३५८ दीनानाथ अध्वर्यु	३७७।	१८७६	६५८।ज	१६६६।ज
३५६ दीनानाथ बुन्देलखण्डी ?	३५७।२७८	१६२१ उप	५५२।ज	२०४४।र
३६० दील्ह	३७२।	१६०५	३२।ज	१००।र
३६१ दुर्गा	३५८।२८३	१८६०उप	६४६।ज	१२६३।ज
३६२ दूलह	३५६।३०१	१८०३उप	३५८उप	७३७।१७७७ज
३६३ देव महाकवि	३६०।३०२	१६६१अ०	१४०।ज	५३३।ज१७३० म १८२५
३६४ देव काष्ठीजिह्वा स्वामी	३६१।३००	(१८६२-१६४६उप	५६६।१८५०	१७६०।१८६७ग्र
३६५ देवकीनन्दन शुक्ल, मकरन्दपुर	३६४।२६६	१८७०उप	६३०।ज	६७६।१८०१ज १८५७ग्र
३६६ देवदत्त कवि	३६२।३०५	१७०५	(२६१।)	—

	सरोज	ग्रियर्सन		विनोद
द				
३६७ देवदत्त कवि २	३६५।३०६	१७५२	(२६१)	(४६४।१७०३ज)
३६८ देवनाथ	३७३।	(१८४०ग्र)	८३९।ग्र	९७११, १८३२र १४९७।ग्र
३६९ देवमणि	३७४।	(१८२४ से पूर्व	८४०।ग्र	१४९८।अ
३७० देवा कवि राजपूताना	३७०।२९८	१८८५ग्र०	४७।१५७५उप	१५६।ग्रि
३७१ देवी	३६७।२८५	—	८४१।ग्र	—
३७२ देवीदत्त	३६६।२८४	(१८१२ग्र)	८४२।ग्र	१५००।ग्र
३७३ देवीदास कवि बुन्देलखण्डी	३६३।२८१	१७१२ज १७४२ग्र	२१२।१६८५उप	५२१।ग्रि
३७४ देवीदास, वन्दीजन	३६८।२८६	१७५०ज	३०६।ज	६७१।ज
३७५ देवीदीन वन्दीजन, विलग्रामी	३७८।	वि०	७३०।वि०१८८३	२४५६।१९४०र
३७६ देवीराम	३६९।३०९	१७५०	३०७।ज	६८५।ज
३७७ देवी सिंह	३७९।	(१७२१ग्र)	८४३।ग्र	२३९९।१९३७- २०५५।१९१४ से पूर्व
३७८ दौलत	३७१।	१६५१	९७।ज	२७१।ज
३७९ द्विजकवि मन्नालाल, बनारसी	३४९।२७३	वि० (१९२३ग्र)	५८३।वि०१८८३	२२५९।१९३०र
३८० द्विजचन्द	३५१।३०७	१७५५	३१४।ज	६८६।ज

	सरोज	ग्रियर्सन		विनोद
द				
३८१ द्विजदेव	३४८।२७२	१९३०म, उप	५९९।१८५०उप	१७८३।१९०९र
			१८७३ म	१९३०म
३८२ द्विजनन्द	३५०।२९६	—	८४४।अ	१५०८।अ
३८३ द्विजराम	३५३।२९५	—	—	१५०९।अ
ध				
३८४ धन सिंह	३८१।३२१	१७९१	४२२।ज	८४४।ज
३८५ धनीराम, बनारसी	३८२।३१३	१८८८उप	५७८।ज	११३०।१८४०ज
३८६ धीर कवि	३८३।३१५	१८७२उप	४६१।१७६५उप	१२०३।१८७०र
३८७ धीरज नरिन्द	३८५।३१२	१६१५ज	१३६।१५८०	२००।१६३७ज
३८८ धुरन्धर	३८४।३१४	—	७८२।२८६८ से पूर्व	१९२८।१९०० से पूर्व
३८९ धौंधेदास, ब्रजवासी	३८६।३१७	—	७६६।१९०० से पूर्व	३३६।१७००र
३९० धवल सिंह	३८७।३१६	१८६०उप	५९१।ज	८१२।१७६०ज
न				
३९१ नन्द	४२४।३३७	—	(६९७)	१५२९।अ
३९२ नन्दकिशोर	४२९।३५४	—	(६९७)	१५३०।अ
३९३ नन्ददास	४२८।३७०	१५८५ज	४२।१५६७उप	५८।१६२३र

	सरोज	ग्रियर्सन		विनोद
न				
३९४ नन्दन	४२३।३३६	१६२५	८६।ज	१६५।ज
३९५ नन्दराम	४२७।३३९	(१७४४ग्र)	८४६।ग्र	५२५।१७४४र
३९६ नन्द लाल कवि १	४२५।३२८	१६११	८०।ज	१६८।ज
३९७ नन्द लाल कवि २	४२६।३३८	१७७४	३९०।ज	७७५।ज
३९८ नबी	३९७।३५६	—	८४८।ग्र	—
३९९ नर बाहन	४०३।३२७	१६००उप	५७।१५६०उप	६६१।ज १५३०
४०० नरसिया	४०४।३६६	१५९०ग्र०	२८।ज	१२४।ज १३६।१६३०र
४०१ नरहरि राय	३८८।३१८	१६००ई०उप	११३।१५५०उप	६९।१५६२ज १६६७म
४०२ नरिन्द १ प्राचीन	४२१।३६८	१७८८	४१४।ज	९१६।ज
४०३ नरिंद २ नरेंद्र सिंह, पटियाला	४२२।३६१	१९१४उप	६९०।उप १८६२म	२०६०।१९१४र
४०४ नरेश	३९९।३५८	—	७९१।१८६९ से पूर्व	२२०६।ग्रि
४०५ (नरोत्तम अन्तर्वेदी) ४१६	४१७।३६२	१८९६	६७५।ज	२११६।ज
४०६ नरोत्तम, बुन्देलखण्डी	४१६।३४७	१८५६	५०१।ज	१२७०।ज
४०७ नरोत्तमदास, ब्राह्मणवाड़ी	४१५।३४८	१६०२ज	३३।१५५३ज	७२।१५८२र
४०८ नवखान	४०५।३६९	१७९२	४२६।ज	९१७।ज
४०९ नवनिधि	४०१।३२४	—	७८९।१८६९ से पूर्व	२२०७।ग्रि

	सरोज	ग्रियर्सन		विनोद
न				
४१० नवल	४३८।३५२	—	(८४६)	—
४११ नवलकिशोर	४३७।३५१	—	८४६।अ	१५२१।अ
४१२ नवलदास क्षत्रिय	४४०।३६०	१३१६अ०	७६८।१८७५ से पूर्व	१४।र ६३६।१८२३से पूर्व
४१३ नवल सिंह कायस्थ	४३९।३५३	१९०८उप	५२६।१८४१ज	११३३।१८७३ १६२६र
४१४ नवीन	४००।३५६	(१८६५अ) (१९०७अ)	७६०।१८६६ से पूर्व	१७६५।१८६६अ
४१५ नागरीदास	३९८।३५७	१६४८अ०	९५।ज	६४६।१७५६ज १८२१म
४१६ नाथ १ ?	४३०।३४०	—	८५०।अ	—
४१७ नाथ २ ?	४३१।३४१	१७३०	१६२।१७००उप	६१०।१७५७-१८१७र
४१८ नाथ ३ ?	४३२।३४२	१८०३	४४०।ज	९५८।ज
४१९ (नाथ४) ८३९	४३३।३४३	१८११उप	(१६२)	—
४२० (नाथ ५ हरिनाथ गुजराती, काशी) ९९८	४३४।३४४	१८२अ	—	—
४२१ नाथ ६ ?	४३५।३४५	—	—	—

	सरोज	ग्रियर्सन		विनोद
न				
४२२ नाथ७, ब्रजवासी	४३६।३४६	१६४१उप	६८।ज	१३७।१६०५ज २३९।ज
४२३ नानक	३९१।३२३	१५२६ज १५६६म	२२।सरोजवत	४७।सरोजवत
४२४ नाभादास	४०२।३६५	१५४०अ०	५१।१६००उप	१७९।१७२१म
४२५ नायक	३९६।३५५	(१८१० से पूर्व)	७८३।१८६८ से पूव	५७७।१७५४ से पूर्व
४२६ नारायण भट्टगोसाई १	४०६।३२९	१६२०उप	६६।ज	१९४।ज १५२४।
४२७ नारायणराय, बन्दीजन, बनारसी २	४०७।३२१	वि० (१९२५ग्र)	५७२। वि० १८८३	२१५२।१९२५र २४५७।१९४०उप १६७।ज
४२८ नारायणदास, कवि ३	४०८।३६४	१६१५	—	९५३।१८२१र
४२९ नारायणदास, वैष्णव ४	४०९।३६७	(१८२९ग्र)	—	१०४३।ज
४३० (नारायण, बन्दीजन, काकूपुर) ६२५	४४४।	१८०९	४५४।ज	३२२।१६९८र
४३१ निधान १	४१०।३३३	१७०८उप	२५४।ज	८३१।र
४३२ निधान२	४११।३३४	१८०८ उप	३५०।उप	२०८।ग्रि
४३३ निधि	४४२।	१७५१	१३१।१६००उप	७०।१५९५र
४३४ निपट निरञ्जन	३८९।३३५	१६५०अ०	१२९।ज	

	सरोज	ग्रियर्सन		विनोद
न				
४३५ निहाल ब्राह्मण, निगोहां	३९०।३१९	१८२०	४६०।ज	१०७९।ज
४३६ निहाल प्राचीन	४४३।	१६३५	९१।ज	२३०।ज
४३७ निवाज १, जुलाहा, विलग्रमी	४१२।३२२	१८०४	४४८।ज	९४९।ज
४३८ निवाज ब्राह्मण अन्तर्वेद	४१३।३२५	१७३९ज	१९८।१६५०इप	४३९।१८०० से पूर्व
४३९ (निवाज ३ ब्राह्मण, बुन्देलखण्डी) ४१३	४१४।३२६	१८०१ उप	३४२।१७५०र	८२२।ग्रि
४४० (नीलकण्ठ मिश्र, अन्तर्वेद) ४१९	४१८।३६३	१६४८अ०	१३२।१६००उप	२०७।ग्रि
४४१ नीलकण्ठ त्रिपाठी	४१९।३५०	१७३०उप	१४८।१६५०उप	२९६।१६९८ग्र
४४२ नील सखी	४२०।३३०	१९०२ग्र०	५४८।ज	२२६०।ज
४४३ (नीलाधर) ८१२	४४१।	१७०५ग्र०	१३३।१६००उप	२१०।ग्रि
४४४ नैही	३९२।३३१	(१७९८ से पूर्व)	८५१।ग्र	१५२७।ग्र
४४५ नैन	३९३।३३२	—	८५२।ग्र	—
४४६ नैसुक	३९५।३४९	१९०४	५५०।ज	२२६१।ज
४४७ नोनै	३९४।३२०	१९०१	५४५।ज	२२६२।ज
प				
४४८ पञ्चम १ प्राचीन, बन्दीजन	४६३।४०१	१७३५उप	२०५।१६५०उप	३६८।१७०७र ७७०।१७९९र
४४९ (पञ्चम २, लखनऊ) ४८६	४६४।४०२	(१९२४उप)	—	—

	सरोज	ग्रियर्सन		विनोद
प				
४५० पंचम डलमऊ	४८६।४०२	१९२४उप	७०७।सं०	२१४३।र
४५१ पंचम ३ नवीन बन्दीजन	४६५।४०३	१९११अ०	५५३।ज	२४५८।ज
४५२ पण्डित प्राचीन, ठाकुर प्रसाद	४६९।३९८	१९२४उप	६००।१८५०उप	१८१४
४५३ पजनैस	४४७।३७४	१८७२	५१०।१८१६ज्ञ	१८०४।ज
४५४ पतिराम	४७०।३९६	१७०१उप	२५८।ज	४६५।ज
४५५ पद्मनाभ जी, ब्रजवासी	४७८।३९०	१५६०ज	५०।१५७५उप	१५७।ग्रि
४५६ पद्माकर	४४६।३७२	१८३८उप	५०६।१८१५उप	१२३३।१८१०ज १८९०म
४५७ पद्मेश	४७६।३८६	१८०३	४४१।ज	९६०ज
४५८ परताप साहि	४४८।३७३	१७६०अ०	१४६।१६३३उप	१२४१।१८५२-९२र
४५९ परवत	४७२।३८८	१९२४अ०	७४।उप	१३०।र
४६० (परवीने या पखाने)	४८२।३९४	—	८५३।अ	१५३२।अ
४६१ परम	४५४।३८२	१८७१	५३३।ज	१९९१।ज
४६२ परमानन्न लल्ला पौराणिक	४५६।३८४	१८९४	५४१।ज	२११७।ज
४६३ परमानन्ददास, ब्रजवासी	४५९।४०९	१६०१उप	३८।१५५० उप	५४।१६०२र
४६४ परमेश १ प्राचीन	४५१।३७५	१६६६	२२२।ज	३३७।ज
४६५ परमेश, बन्दीजन २	४५२।३७६	१८९६	६१६।ज	२१५३।ज

	सरोज	ग्रियर्सन		विनोद
प				
४६६ परशुराम १	४७३।३९५	—		—
४६७ परशुराम, व्रजवासी२	४७४।३७६	१६६०उप	५५।ज	३११।ज
४६८ परसाद	४५५।३७१	१६००अ०	१८३।१६२३ज	३८३।ग्रि
४६९ पराग, बनारसी	४८४।४१०	१८८३उप	५६७।१८२०उप	—
४७० पहलाद	४६८।३९७	१७०१अ०	२५९।ज	४६६।ज
४७१ पहलाद, बन्दीजन, चरखारी	४८५।	(१८१५उप)	५१३।१८१०उप	११८५।ग्रि
४७२ पारस	४७९।३९१	—	७९२।१८६६ से पूर्व	२२०८।१९२६र
४७३ पुण्ड (पुष्प)	४९०।	७७०	१।उप	१।र
४७४ पुण्डरीक	४७५।३७८	१७६९	३८८।ज	७७९।ज
४७५ पुरान	४८१।३९३	—	८५६।अ	१८७८।१८९७ से पूर्व
४७६ पुरुषोत्तम	४६७।४००	१७३०उप	१६५०।उप	११७।१६१५र
४७७ पुखी	४७७।३८७	१८०३अ०	४४२।ज	८७४।ज
४७८ पुष्कर	४८३।४०७	(१६७३अ)	८५७।अ	—
४७९ पूख पूरनचन्द	४८९।	—	८५८।अ	—
४८० पृथ्वीराज	४७१।३८९	१६२४उप	७३।उप	८२।१६१७र
४८१ (प्रधान कवि) ७२४	४६२।४०५	१८७५उप	(८५४)	१९७०।ज
४८२ प्रधान केशवराय	४६१।४०४	(१७५३र)	८५४।अ	१५५०।अ

	सरोज	ग्रियर्सन		विनोद
प				
४८३ प्रवीण कविराय	४५०।३८६	१६६२	२५१।ज	४२१।ज
४८४ प्रवीणराय	४४६।३८०	१६४०उप	१३७।१५८०उप	१७७।१६५०र
४८५ प्रसिद्ध	४६०।४०८	१५६०ई०उप	१२५।ज	१२५।ज
४८६ प्राणनाथ १ ब्राह्मण बैसवारे के	४५७।३८५	१८५१ग्र	४६०।१७६३उप	१०८०।ग्रि
४८७ प्राणनाथ २ कोटावाले	४५८।४०६	१७८१उप	४०८।ज	५०४।१७१४ज
४८८ प्रियादास	४६६।३६६	१८१६ग्र०	३१६।१७१२र	५५७।१७६६ग्र
४८९ प्रेम	४८०।३६२	(१७४०ग्र)	(३५१)	—
४९० प्रेमनाथ	४८७।	१८३५उप	३५१।१७७०उप	९४६।ग्रि
४९१ प्रेम पुरोहित	४८८।	(१८१२-६२उप)	—	—
४९२ प्रेम सखी	४५३।३७७	१७६१ज	४२३।ज	१२३६।१८८०र
४९३ (प्रेमी यमन) ३२	४५५।३८३	१७९८उप	४३३।ज	९७२।ज
फ				
४९४ फ़हीम	४९६।	१५८०ई०उप	१११।१५५०ज	१०४।१६०७र
४९५ फालकाराय, ग्वालियर	४९४।	१९०१	६७८।ज	२२६४।ज
४९६ फूलचन्द	४९२।४१२	—	—	—
४९७ फूलचन्द ब्राह्मण बैसवारे के	४९३।४१३	१९२८उप	७०८सं०	२२३०।१९२८।र
४९८ फेरन	४९१।४११	(१८९२-१९११उप)	८९०।ग्र	१५५७।ग्र, २०८२।१९२०

	सरोज	ग्रियर्सन		विनोद
फ				
४९९ फ़ैजी	४९५।	१५८० इ०उप	११०।१५४७ज	—
ब				
५०० बन्दन पाठक, काशी	५६१।४३१	वि० (१९०६ग्र)	५७६।वि०१८८३ै	२४६४।१९१५ज
५०१ बंशगोपाल जालौन	५८५।	१९०२	५४९।ज	१९७२।१९००र
५०२ (बंशगोपाल वंदीजन) ५८५	५४२।४२२	(१९०२उप)	(५४९)	—
५०३ बंशरूप, बनारसी	५४१।४२१	१९०२	५८६।ज	१९८८।र
५०४ बंशीधर १	५२४।४९५	—	(५७४)	—
५०५ बंशीधर मिश्र२, संडीले वाले	५२५।४७९	१६७२उप	८६४।अ	२५६।र
५०६ बंशीधर कवि३	५२८।४५१	—	(५७४)	—
५०७ बंशीधर कवि, बनारसी	५८४।	१९०१उप	५७४।ज	१९२८।र
५०८ बंशीधर बाजपेयी, चिन्ताखैरा	५८३।	१९०१	६१७।ज	१९८७।र
५०९ बक्सी	५७५।४७७	—	८६१।अ	१५८५।अ
५१० बजरङ्ग	५७!।४७५	—	८६२।अ	१५६०।अ
५११ बदन	५६०।४३०	(१८०९ग्र)	८६३।अ	८३४।१८०८र
५१२ बनमालीदास गोसाईं	५८१।	१७१६उप	२८६।ज	४०६।र
५१३ बनवारी	५७०।४६३	१७२२उप	१९२।१६३४उप	२९४।१९९०र
५१४ बरवै सीता कवि	५९३।	२२४९	—	—

		सरोज		ग्रियर्सन	विनोद
ब					
५१५ बलदेव १, बघेलखण्डी	४९९।४३८		१८०९उप	३५९।१७४६ग्र	१०१३।ज
५१६ बलदेव २, चरखारी	५००।४३९		१८९६उप	५४३।ज	१८४६।र
५१७ बलदेव क्षत्रिय ३, अवधवाले	५०१।४४८		१९११उप	६०२।१८५०उप	१८१३।ग्रि
५१८ बलदेव कवि, प्राचीन ४	५०२।४५८		१७०४	२६३।ज	४६७।ज
५१९ बलदेव अवस्थी ५, दासापुर	५०३।४८२	वि० (१८९७ज १९७०म)		७१५वि०१८८३	२०८८।१८९७ज
५२० बलदेवदास जौहरी	५०४।४८३		१९०३ग्र	६८४।ज	२०३६।१९१०र
५२१ बलभद्र, सनाढ्य १, ओरछा	५१३।४४५		१६४२उप	१३५।१५८०उप	१४५।१६००
५२२ बलभद्र, कायस्थ २, पन्ना	५४५।४४६		१९०१उप	५११।ज	२२२३।ज
५२३ बलराम दास, ब्रजवासी	५२३।४९३		—	७६८।१६०० से पूर्व	५३१।१७५०र
५२४ वलिराम	५२२।४६१		—	७५५।१७२३ से पूर्व	४४६।
५२५ बलिज्जु	५६९।४६१		१७२२	२८९।उप	(४४६)र
५२६ बल्लभ	५१७।४७६		१६८९	(२३९)	३००।१६८१र
					१५६६।१ अ
५२७ बल्लभ रसिक	५१६।४६५		१७८१उप	२३९।ज	३८४।अ
५२८ बल्लभाचार्य	५१८।४९१		१६०१अ०	३४।१४७८ज	४९।१५३५ज
				म १५८७ विक्रमी	१५८७म
५२९ बाजीदा	५६७।४५८		१७०८उप	२७२।उप	४८०।ज १५७२।अ

		सरोज	ग्रियर्सन	विनोद
ब				
५३० बावेश, बुन्देलखण्डी	५७६।४८४	१८३१उप	४६७।ज	९९१।र
५३१ बादेराय	५९६।४८७	१८८२उप	६१२।ज	१९०९।ज
५३२ बाबू भट्ट	५८८।	—	८६६।ग्र	१७५४।ग्र
५३३ बारक	५८०।	१६५५	१०१।ज	२७२।ज
५३४ बार दरवैग़ा	५९४।	११४२ग्र०	—	११।
५३५ बारन	५६५।४५२	१७४०उप	१५८।ज	४५२।२,१७२६र ३९९।१७१२र
५३६ बालकृष्ण त्रिपाठी १	५५५।४१५	१७८८	१३८।१६००उप	२११।ग्रि
५३७ बालकृष्ण कवि २	५५६।४१६	--	—	—
५३८ बालन दास	५७७।४८६	१८५०ग्र	४८८।उप	१०८१।ग्र
५३९ बिन्दादत्त	५५९।४२९	—	८६८।ग्र	१५९०।ग्र
५४० बिक्रम, राजा विजयबहादुर, बुन्देला)	५०६।४२०	१८८०ग्र	५१४।१७८५ज	१२६०।१८७८र
५४१ (बिजय, राजा विजयबहादुर, बुन्देला) ५०६	५०५।४१९	१८७८उप	(५१४)	११००।१८५५-१८८५र
५४२ बिजय सिंह, उदयपुर	५९२।	१७८७ग्र०	३७१।१७५३-८४रा	८४६।ग्रि
५४३ बिजयाभिनन्दन	५४०।४१८	१७४०उप	२०१।१६५०उप	७६०।१७९७र
५४४ बिट्ठलनाथ	५१९।४७१	१६२४उप	३५।१५५०उप	७१।१५७२ज १६४२भ

	सरोज	ग्रियसन		विनोद
५४५ बिदुष	५६४।४३३	—	८६७।अ	२६१।१६५०ज
५४६ बिधादास, ब्रजवासी	५७९।४९७	१६५०	६१।ज	२६१ज
५४७ बिद्यानाथ अन्तर्वेद	५९०।	१७३०	२९२।ज	१५८२।अ
५४८ बिपुल विट्ठल	५२०।४८८	१५८०उप	६२।१५६०उप	७९।ज
५४९ बिश्वनाथ कवि १	५४६।४४९	१९०१उप	(७२१)ज	—
५५० बिश्वनाथ, कवि २, टिकई	५४७।४५०	वि०	७२१।वि०१८८३	२४६१।१९४०र १५८४अ
५५१ विश्वनाथ सिंह, महाराजा रीवाँ	५४८।४६८	१८९१उप	५२९।१८१३-३४रा	१७८४।१,१८४६ज १८६१गद्दी १९११म
५५२ बिश्वनाथ अताई, बुं०	५४९।४८५	१७८४उप	४११।ज	६९७।र
५५३ बिश्वनाथ कवि, प्राचीन ५	५५०।४८०	१६५५	१०२।ज	२७३।ज
५५४ बिश्म्वभर	५७१।५६४	—	८६९।अ	१५८९।अ
५५५ बिश्वेश्वर	५६३।४३२		८७०।अ	१५८५।अ
५५६ बिष्णुदास १	५२६।४९४	(१६००-८०जी)	(७६९)	—
५५७ बिष्णुदास २	५२७।४६६	—	७६९।१८४३ से पूर्व	—
५५८ बिहारी प्राचीन १	५५२।४६०	१७३८उप	२९८।ज	४९६।र
५५९ बिहारी लाल चौबे	५५१।४१४	१६०२अ०	१९६।१६५०उप	३५१।१६६०ज १७२०म
५६० बिहारी ३, बुन्देलखण्डी	५५३।४७२	१८८६उप	४१३।ज	८४७।ज

	सरोज	ग्रियर्सन		विनोद
ब				
५६१ बिहारीदास ४, व्रजवासी	५५४।४८९	१६७०उप	२२६।ज	८८।१६३०र
५६२ बीर कवि दाऊ दादा, वाजपेयी	५११।४४०	१८७१ग्र०	५१६।१८२०उप	९१११२,१८१८ग्र
५६३ बीर, वीरवर, कायस्थ	५१२।४४१	१७७७उप	३९५।१७२२उप	६४५।१७७९ग्र
५६४ बीठल	५२१।४६६	(३५)		१५८१।ग्र
५६५ बुद्ध राव	४९८।४२७	१७५५उप	३३०।१७१०-४०उप	
५६६ बुद्धि सैन	५५८।४३६		८७१।अ	१५९२।ग्र
५६७ बुधराम	५६८।४५९	१७२२	२९०।उप	४४७।ज
५६८ बुध सिंह, पञ्जाबी	५८७।	—	८७२।अ	१९००।१८९७र
५६९ बृन्द	५६६।४५६	(१७००-८०जी)	८७९।ग्र	४४२।१७४२र
५७० (बृन्दावन कवि)	५६२।४२८	—	—	—
५७१ बृन्दावन, ब्राह्मण तेमरीता वाले	५८६।	वि०	७२२।वि०१८८३	२४६३।१९५३ग्र
५७२ बृन्दावन दास	५७८।४६६	१६७०	२२७।ज	२५०र
५७३ बैद्य	५७३।४७४	१७८०	३९१।ज	६८७।र
५७४ बेनी प्राचीन १, असनी	५०७।४३४	१६९०ग्र०	२४७।ज	२९३।र
५७५ बेनी २, वेती वाले	५०८।४३५	१८४४उप	४८४सं०	९८५।१८४९ग्र १८७४ग्र
५७६ बेनीदास कवि, मेवाड़	५९५।	१८९२उप	६७१।ज	१८३२।र
५७७ बेनी प्रवीन वाजपेयी	५०९।४३६	१८७६उप	६०८।ज	११०४।१८७८ग्र

	सरोज		ग्रियर्सन	विनोद
ब				
५७८ बेनी प्रगट, ब्राह्मण	५१०।४३७	१८८०उप	६५६।ज	१२७३।र
५७९ बेनीमाधव भट्ट	५८२।	(१७९८ से पूर्व)	८७४।अ	१५९५।अ
५८० बैताल	५७२।४७३	१७३४अ०	५१५।१८२०उप	५३९।ज
५८१ बैन कवि	५९१।	—	८७५।अ	१५९२।अ
५८२ (बौध कवि, बुन्देखण्डी) ५४३	५४४।४२४	१८५५उप	५००।ज	१५९९।अ
५८३ बौधा	५४३।४२३	१८०४उप	४४६।ज	८८७।१८३०-६०र
५८४ बौधीराम	५५७।४२५	—	८७६।अ	—
५८५ (व्यास जी) ५१५	५१४।४५४	१६८५अ०	२४२।ज	२८१।र
५८६ व्यास स्वामी, हरीराम शुक्ल	५१५।४९०	१५९०उप	५४।१५५५उप	७८।१६१५र
५८७ ब्रजलाला, गोकलप्रसाद	३३।४४७	वि० (१८७७अ, १९९२म)	६९४।वि०१८८३	२०९६।१८७७ज १९९२म
५८८ ब्रजचन्द	५३०।४४२	१७६०	३८२।ज	७०२।ज
५८९ ब्रजदास, प्राचीन	५३५।४५५	१७५५उप	३१५।ज	६००।र
५९० ब्रजनाथ	५३१।४४३	१७८०	४००।ज	८४८।ज
५९१ ब्रजपति	५३६।४९२	१६८०	२३२।ज	८४८।ज
५९२ ब्रजमोहन	५३२।४४४	—	८७७।अ	१३२४।अ
५९३ ब्रजराज बु०	५३८।४८१	१७७५	३९३।ज	७८१।ज
५९४ ब्रजलाल	५३६।४६२	१७०२	२६०।ज	३४२।र

	सरोज		ग्रियर्सन	विनोद
ब				
५९५ (ब्रजवासीदास) ५३७	५३४।४५३	(१८१६ग्र)	(३६९)	—
५९६ ब्रजवासीदास २, वृन्दावन निवासी	५३७।४७८	१८१०उप १८२७ग्र	३६९।ज,उप	८७८।१८१६ग्र १८२७ग्र
५९७ ब्रजेश, बु ं०	५२९।४१७	(१७६०-९०२)	८७८।ग्र	१६०५।ग्र
५९८ ब्रज	४९७।४६७	१५८५ ई० उप	१०६।ज	७७।ज,१६४०म
५९९ (ब्रह्म राजा बीरवर) ४९७	५८९।४६७	(१६४२म)	(१०६)	(७७)
भ				
६०० भञ्जन	६१४।५२२	१८३१	४६८।ज	११०९।१८३०ज
६०१'(भगवन्त) ५९९	६००।५५	(१८१७म)	(३३३)	—
६०२ भगवन्त राय	५९९।५१४	(१८१७म)	३३३।१७५०उप १७६०म	७४२।१८०६र १८१७ग्र
६०३ भगवत रसिक	५९८।५२४	१६०१ग्र०	६१।१५६०उप	१३३।१६२७र
६०४ भगवतीदास ब्राह्मण	६०२।५०३	१६८८ग्र	२४५।ज	४०९।१६९०म
६०५ भगवान कवि	६०१।५०१	—	(३३३)	—
६०६ भगवानदास निरञ्जनी	६०३।५०४	(१७२८ग्र १७५५ग्र	८८०।अ	४४७।१,१७२२ग्र
६०७ भगवानदास मथुरावासी	६०५।५२५	१५९०	२९।ज	११८।ज
६०८ भगवान हितु रामराय	६०४।५२०	(१६५०उप)	७७०।१८४३ से पूर्व	१४०।१६३१र
६०९ भरमी	६२३।५००	१७०८	२७३।ज	३५५।१७०८

	सरोज	ग्रियर्सन		विनोद
भ				
६१० भवानीदास	६१६।५१७	१९०२उप	६८३।ज	१९९५।र
६११ भानदास, बन्दीजन, चरखारी	६१७।५०८	१८५५उप	४०९।१८१५उप	१२१०।१८४५ज
६१२ भावन कवि, भवानीप्रसाद पाठक	६११।५१२	१८९१उप	६१८।१८४४ज	१८३१।र
६१३ भीषम	६१२।५०२	१६८१	२४०।ज	३५६।१७१०र
६१४ (भीषम) ६१२	६२४।५०२	१७०८	(२४०)	(३५६)
६१५ भीषमदास	६१३।५२१	(१६४०र)	(२४०)	—
६१६ भूधर १, काशी	६१८।५०९	१७००	२५६।ज	—
६१७ भूधर २,असौथर	६२७।५२६	१८०३उप	३३६।१७५०उप	७४४।१८०९र
६१८ भूपति राजा गुरुदत्त सिंह, अमेठी	६२१।४९८	१९०३अ०	३३२।१७२०उप	७१४।१७९१र
६१९ भूपनारायण, बन्दीजन, कोकपुर	६२५।५२३	१८५९	६४५।१८०१ज	१११२।ज
६२० भूमिदेव	६१५।५१६	१९११उप	६८८।ज	२०४५।र
६२१ भूषण त्रिपाठी	५९७।५१९	१७३८उप	१४५।१६६०उप	४२६।१६७०ज१७७२म
६२२ भूसुर	६१९।५१०	१९११उप	६८९।ज	२०४६।र
६२३ (भृंग)	६२२।४९९	१७०८अ०	२७४।ज	५०६।ज
६२४ भोज १	६०६।५०५	१८७२	६५३।ज	—
६२५ भोज मिश्र २	६०७।५०६	१७८१	३३१।१७२०उप	६७९।१७५०ज १७७७र

	सरोज	ग्रियर्सन		विनोद
भ				
६१० भवानीदास	६१६।५१७	१९०२उप	६८३।ज	१९९५।र
६११ भानदास, बन्दीजन, चरखारी	६१७।५०८	१८५५उप	४०९।१८१५उप	१२१०।१८४५ज
६१२ भावन कवि, भवानीप्रसाद पाठक	६११।५१२	१८९१उप	६१८।१८४४ज	१८३१।र
६१३ भीषम	६१२।५०२	१६८१	२४०।ज	३५६।१७१०र
६१४ (भीषम) ६१२	६२४।५०२	१७०८	(२४०)	(३५६)
६१५ भीषमदास	६१३।५२१	(१६४०र)	(२४०)	—
६१६ भूधर १, काशी	६१८।५०९	१७००	२५६।ज	—
६१७ भूधर २,असौथर	६२७।५२६	१८०३उप	३३६।१७५०उप	७४४।१८०९र
६१८ भूपति राजा गुरुदत्त सिंह, अमेठी	६२१।४९८	१९०३अ०	३३२।१७२०उप	७१४।१७९१र
६१९ भूपनारायण, बन्दीजन, कोकपुर	६२५।५२३	१८५९	६४५।१८०१ज	१११२।ज
६२० भूमिदेव	६१५।५१६	१९११उप	६८८।ज	२०४५।र
६२१ भूषण त्रिपाठी	५९७।५१९	१७३८उप	१४५।१६६०उप	४२६।१६७०ज१७७२म
६२२ भूसुर	६१९।५१०	१९११उप	६८९।ज	२०४६।र
६२३ (भृंग)	६२२।४९९	१७०८अ०	२७४।ज	५०६।ज
६२४ भोज १	६०६।५०५	१८७२	६५३।ज	—
६२५ भोज मिश्र २	६०७।५०६	१७८१	३३१।१७२०उप	६७९।१७५०ज १७७७र

	सरोज	ग्रियर्सन		विनोद
भ				
६२६ भोज कवि ३ विहारीलाल, बन्दीजन, चरखारी	६०८।५०७	१६०१उप	५१६।१८४०उप	१८६८।ग्रि ११४१।१८५७र
६२७ भोलानाथ, ब्राह्मण, कन्नौज	६२६।	—	८८३।ग्र	१६२२।ग्र
६२८ भोला सिंह पन्ना	६२०।५११	१८६८	५४४।१८३९ज	१८४७।१८६८र
६२९ भौन १ प्राचीन बुं०	६०९।५१८	१७६०	३८३।ज	—
६३० भौन २ वेंतीवाले	६१०।५१३	१८८१उप	६११।ज	९८७।१८२५ज
म				
६३१ मङ्गद	६८६।५३८		८८४।ग्र	१६५२।ग्र
६३२ मञ्चित	६४५।५६७	१७८५उप	४१२।ज	९७२।१८३६र
६३३ मण्डन	६६६।५४९	१७१६उप	१५४।ज	३५८।१६९०ज
६३४ मकरन्द	६४३।५६५	१८१४उप	४५७।ज	—
६३५ मकरन्दराय, बन्दीजन	६४४।५६६	१८८०ग्र०	६१०।ज	२०३८।ज
६३६ मखजात वाजपेयी, जालपा प्रसाद	६६४।५९०	वि०	—	२३८४।१९४५उप
६३७ मणिकण्ठ	६५२।५७६	(१७८२ग्र)	७७२।१८४३ से पूर्व	५८३।१७५४ से पूर्व
६३८ मणिदेव	६४२।५६४	१८६६उप	५६६।१८२०उप	८८२।१८२०म
६३९ मतिराम	६९५।५४८	१७३८उप	१४६।१६५०-८२उप	३५९।१६७४ज १७७३म

म	सरोज	ग्रियर्सन	विनोद
६४० (मदन किशोर) ७०१	६६३।५८९	१८०७अ० ४५०।ज	—
६४१ मदन किशोर	७०१।५८९	१७०८ई०उप ३८६।१७१०उप	६३३।ग्रि
६४२ मदनगोपाल शुक्ल, फ़तहाबादी १	६७६।५५४	१८७६ग्र ५९६।ज	१९७४।ज
६४३ (मदन गोपाल २) ६७६	६७७।५९४	(१८७६ग्र) —	
६४४ मदनगोपाल ३, चरखारी	६७८।५५५	— —	१६२४।ग्र
६४५ मदनमोहन १	६८५।५३७	१६९२उप २५३।	—
६४६ मदनमोहन २, चरखारी	६७९।	१८८० ५३७।ज	१०८२।१८२३
६४७ मधुनाथ	७०३।	१७८० ४०१।ज	८१३।ज
६४८ (मधुसूदन)	६७१।५४६	१६८१ २४१।ज	३५०।ज
६४९ मधुसूदनदास, माथुर	६७२।५४७	१८३९उप ४७६।ज	६७३।१८३२ग्र
६५० मन निधि	६५१।५७५	— ७७१।१८४३ से पूर्व	१६२६।ग्र
६५१ मनभावन, ब्राह्मण	६६९।५९८	१८३०उप ३७५।१७८०उप	८८५।ज
६५२ (मनसा) ६४०	६३९।५४३	— (८८५)	१३२७।ग्र
६५३ मनसाराम कवि	६४०।५४४	— ८८५।ग्र	—
६५४ मनसुख	६५६।५८०	१७४०उप ३०२।ज	६३७।ज
६५५ मनियार सिंह	६७०।५९९	१८६१उप ५८४।ज	६७७।१८४१ग्र
६५६ मनीराम १	६७४।५५८	— (६७६)	१०३८।१८४० से पूर्व १२०४।१८७०

	सरोज	ग्रियर्सन		विनोद
म				
६५७ मनीराम मिश्र, साढ़ि कानपुर	७०१।	१८९६	६७६।ज	२१२०।ज
६५८ मनीराम २ मिश्र, कन्नौज	६७३।५५९	१८३९उप	४७७।ज	८८४।१८२९ग्र
६५९ मनीराय	६७५।५६०	—	८८६।ग्र	—
६६० मनोहर कवि १, राय मनोहरदास कछवाहा	६८०।५६९	१५९२ई०उप	१०७।१५७७उप	८३१।६२०र
६६१ मनोहर.२, काशीराम, रिसालदार	६८१।५७०	वि०	—	—
६६२ मनोहर ३	६८२।५९३	१७८०उप	४०२।ज	६११।१७५७ग्र
६६३ मनोहरदास निरञ्जनी	७११।	(१७१६ग्र)	८८८।ग्र	३७०।१७०७ग्र
६६४ मन्य	६५०।५७४	—	८८७।अ	१६२८।अ
६६५ मलिक मोहम्मद जायसी	७०८।	१६८०अ०	३१।१५४०उप	६२।१५७५र
६६६ मलिन्द, मिहींलाल, वन्दीजन	७०९।५४१	१९०२	६२३।ज	२२७२।ज
६६७ मलूकदास	६५९।५८५	१६८५उप	२४३।ज	२८४।ज ६४०।१८३४
६६८ मल्ल	६९१।५५०	१८०३उप	३३७।१७५०उप	७४३।पि
६६९ महताब	६८९।५४२	—	८८९।ग्र	६८४।१८००र
६७० महबूब	६९८।५५७	१७६२	३८४।ज	६५८।१७६१ज़

	सरोज	ग्रियर्सन		विनोद
म				
६७१ महम्मद	६६१।५८७	१७३५उप	२९६।ज	६२०।ज
६७२ महराज	६६५।५९१	—	७९३।१८६९ से पूर्व	१२३४।१८७६ से पूर्व
६७३ (महाकवि) ७३	६८८।५४०	१७८०उप	४०३।उप	—
६७४ महानन्द वाजपेयी	६९९।५६२	१९०१उप	६१९।ज	२२६९।ज
६७५ महेश	६८४।५३६	१८६०उपई०	(६९६)ज	१२९४।ज
				२३६४।१९४१उप
६७६ महेशदत्त, ब्राह्मण. धनौली	६६८।५९७	वि० (१८९७ज)	६९६। वि०१८८३	२१५७।१८९७ज
		(१९६०ई०)		
६७७ माखन १	६३७।५३३	१८७०उप	(६७०)ज	११२०।१८६०र
				१९७५।ज
६७८ माखन २, लखेरा, पन्नावाले	६३८।५३४	१९११उप	६७०।१८३४ज	२१२१।१८९१ज
६७९ मातादीन मिश्र, सरायमीरा	७१२।	व०(१९३०ग्र)	६९८।वि०१८८३	२४६६।१९४०र
६८० मातादीन शुक्ल अजगरा	६४७।५७१	वि०(१८९२)	७३१।वि०१८८३	२३२२।१९३४उप
		१९०३र)		
६८१ माधवदास, ब्राह्मण	६८७।५३९	१५८०	२६।ज	१०१।ज
६८२ माधवानन्द भारती, काशी	६८३।५३५	१९०२उप	५८७।ज	२२७०।ज
६८३ (मान कवि १) १३५	६२९।५२७	(१८३०-८०र)	(५१७)	५८४।१७५४ से पूर्व

	सरोज	ग्रियर्सन		विनोद
म				
६८४ मान कवि ३,ब्राह्मण, वैसवारा के	६३०।५२८	१८१८ग्र	३७२।उप	६११।र
६८५ मान कवीश्वर, बन्दीजन, राजपूताना	७१४।	१७५६ग्र०	१८६।१६६०उप	४१०।ग्रि
६८६ (मान बन्दीजन, चरखारी,) १३५	७०२।	(१८३०-८०र)	५१७।१८२०उप	१२५३।१८७७र
६८७ मानदास २, ब्रजवासी	६२८।५५३	१६८०ग्र०	१७२।ज	३८५।ज
६८८ मानराय, बन्दीजन, असनी	७०४।	१५८०ई०उप	११६।ज	१११।ज
६८९ मान सिंह, महाराजा कछवाहा, जयपुर	७१५।	१५९२ई०उप	१०९।ज	२६२।ज
६९० मानिकचन्द	६९२।५५१	१६०८उप	७८।ज	१६९।ज
६९१ मानिकचन्द, कायस्थ	६९३।५६१	१९२०उप	७१०सं०	२२७१।१९३०उप
६९२ मानिकदास मथुरा	६४८।५७२	—	८९१।ग्र	१६३६।ग्र
६९३ मिश्र	६५७।५८१	१७४०उप	३०३।अ	६३८।ज
६९४ मीतूदास गौतम	७०५।	१९०१	६७९।ज	२२७३।ज
६९५ मीर रुस्तम	६६०।५८६	१७३५उप	२९४।ज	४८४।र
६९६ मीरन	६९०।५४५	—	८९२।ग्र	१६३६।१ग्र
६९७ मीराबाई	७००।५९६	१४७५ग्र०	२०।१४२०उप	६३।१५७३ज १६०३म
६९८ मीरा मदनायक	७०७।	१८००उप		११५८।१८६०र
६९९ मीरी माधव	६६२।५८८	१७३५उप	२९५।ज	४८५।र

	सरोज	ग्रियसन		विनोद
म				
७०० मुकुन्द प्राचीन	६३६।५८४	१७०५उप	२६६।ज	४६८।ज
७०१ मुकुन्द लाल बनारसी	६३४।५३१	१८०३उप	५६०सं०	६६१।ज
७०२ मुकुन्द सिंह हाड़ा, कोटा .	६३५।५३२	१६३५अ०	१२७।ज	२३२।ज
७०३ (मुनि लाल) ६४१	६६४।५५२	(१६४२अ)	८६३।अ	१६२६।अ
				१६०।१, १६३७र
७०४ मुबारक	६४६।५६८	१६४०ज	६४।ज	१८५।ज
७०५ मुरली	६५४।५७८	(१८११अ)	—	६६११,१८३०र
७०६ मुरलीधर १	६५८।५८२	१७४०उप	१५६सं०	६३६।ज
७०७ मुरलीधर २	६६६।५६२	—	—	—
७०८ मुरारिदास, ब्रजवासी	६४६।५७३	—	७७३।१८४३ से पूर्व	१६३४।ग्रि
७०९ मुसाहबराजा, बिजावर	७१०।	(१६०६अ)	८६४।अ	१६६८।अ
७१० मूक जी, बन्दीजन, राजपूताना	७१३।	१७५०अ०	६६२।१८२६उप	६७२।ज
७११ मून, ब्राह्मण, असोथर	६४१।५६३	१८६०	८६५।अ	१११५।र
७१२ मैधा	६६७।५५६	१८६७अ	६४६।उप	११८८।र
७१३ मोतीराम	६५५।५७६	१७४०उप	२१६।ज	५०७।र
७१४ मोतीलाल	६५३।५७७	—	—	—
७१५ मोतीलाल कवि, वांसी	६६७।५६५	१५६७	३०।१५३३ज	६२।१५६०र

	सरोज		ग्रियर्सन	विनोद
म				
७१६ मोहन भट्ट १	६३१।५२९	१८०३उप	५०२।१८००उप	५४५।१७४४ज
७१७ मोहन कवि २	६३२।५३०	१८७५	३२९।१७२०उप	(५०८)
७१८ मोहन कवि ३	६३३।५८३	१७१५	२८४।ज	५०८।ज
र				
७१९ रङ्ग लाल	१८१।६४०	१७०५अ०	३६८।१७५०ज	८२५।१८७०र
७२० रघुनाथ, १ बनारसी	७३८।६५६	१८०२ग्र	५५९।उप	७२३।१७९६ १८०७र
७२१ रघुनाथ २, शिवदीन, ब्राह्मण, रसूलावादी	७३९।६१७	वि०	७३६।वि० १८८३	२४७२।१९४०र
७२२ रघुनाथ प्राचीन	७४०।६३९	१७१०	२७९।ज	५०९।ज
७२३ रघुनाथ उपाध्याय, जौनपुर	७४३।६५०	१९२१उप	६८०।१८४४ग्र	२७२९।१९०१ज
७२४ रघुनाथदास महन्त, अयोध्या	७४२।६४७	(१८७५-१९२५ र)	६९२।१८८३उप	१८१८।१९११ग्र
७२५ रघुनाथ राय	७५१।६४३	१६३५ ई०उप	१९३।१६३४उप	३१३।ग्रि
७२६ रघुनाथ रीवां, नरेश	७३७।६२७	वि० १८८०ज १९११गद्दी १९३६म	५३२।वि०१८८३	१८०७।१८८०ज १९३६म

र	सरोज	ग्रियर्सन		विनोद
७२७ रघुराय १ कवि, बुन्देलखण्डी भाट	७३४।६१२	१७९०	४२०।ज	९०१।ज
७२८ (रघुराय कवि २) ७३४	७३५।६४४	१८३०	(४२०)	११५९।ज
७२९ रघुराम गुजराती	७८७।	(१७५७ग्र)	८९६।ग्र	३४१।१७०१र
७३० रघु लाल	७३६।६४९	—	८९७।अ	१६५९।ग्र
७३१ रज्जब	७७७।६४८	(१६२४ज १७४६म)	८९८।अ	३३९।१७००र
७३२ (रतन १, ब्राह्मण, बनारसी) ७६४	७६५।६४६	१९०५ग्र०	—	८१३।२,१८०५र
७३३ रतन २ श्रीनगर, बुन्देलखण्डी	७६६।६५२	१७९८उप	(१५५)	८७५।ज
७३४ रतन ३, पन्नावाले	७६७।६५३	१७३८ग्र०	१५५।ज	६२९।ज
७३५ रतनपाल	७६८।६५४	(१७४२उप)	८९९।ग्र	५२३।१७४२र
७३६ रतनेश बन्दीजन बुन्देलखण्डी	७६३।६२३	१७८८ग्र०	१९९।१६२०उप	२६७।१६७८उप
७३७ रत्न कुँवरि, बनारसी	७६४।६२४	१८०८ग्र०	३७६।१७७७ज	२३७८।१९४४ग्र
७३८ रन छोर	७७०।६२९	१७५०उप	१८९।१६८०उप	४९४।ग्रि
७३९ (रविदत्त) ९०३	७६२।६२२	१७४२	३०४।ज	६४०।ज
७४० रविनाथ, बुन्देलखण्डी	७६१।६२१	१७९१	४२५।ज	९२१।ज
७४१ रसखानि	७४५।६५७	१६३०उप	६७।ज	१५१।१६२५ज, १६८५म
७४२ रस धाम	७९४।	१८२५	४६२।ज	१०८३।ज
७४३ रसनायक तालिब अली विलग्रामी १२१	७५७।६२५	१८०३	४३९सं०	८०७।र

	सरोज	ग्रियर्सन		विनोद
र				
७४४ रसपुञ्जदास	७५४।६६३	(१७८१ग्र)	९०१।ग्र	७०६।१७८७र
७४५ रसरङ्ग	७५२।६५१	१९०१	६२०।ज	१७९६।१९००र, २२७६।ज
७४६ रसराज	७४४।६१३	१७८०	४०४।ज	८४९।१७८५ज, १८१०र
७४७ रस रास	७५०।६४१	१७१५ग्र०	२८५।उप	२२४।१६६० से पूर्व
७४८ (रसरूप) ७९२ (रामरूप)	७५१।६४२	(१८११ग्र)	—	——
७४९ रसरूप	७९२।६४२	१७८८उप	४१५।ज	८५०।१८१०र
७५० रसलाल बुन्देलखण्डी	७५६।६६५	१७९३	४२८।ज	६२१।१७७३ज, १७६०र
७५१ रसलीन	७५५।६६४	१७९८ग्र	७५४।१७२३ से पूर्व	७२१।र
७५२ रसाल, अङ्गने लाल, बन्दीजन	७४६।६३१	१८८०उप	६०९।ज	२०४०।ज
७५३ रसिकदास, ब्रजवासी	७४७।६३२	(१७४४-५१र)	७७४।१८४३ से पूर्व	३७३।१७०७।र
७५४ रसिक बिहारी	७९५।	१७८०उप	४०५।ज	८५१।ज
७५५ रसिक लाल	७५३।६६२	१८८०	५३४।ज	१९६५।२ अ
७५६ रसिक शिरोमणि	७४९।६३८	१७१५उप	२६७।१६४८ज	३४७।१७०५र
७५७ रसिया नजीब खाँ, पटियाला	७४८।६३३	वि०	७८८।१८६९ से पूर्व	२२१२।ग्रि
७५८ (रहीम) १३८	७९८।६६९	(१६१३-८३जी)	७५६।१७२३ से पूर्व	६८२।ग्रि
७५९ राजा रणजीत सिंह जाङ्गरे, ईसानगर	७९१।	वि०	७१६।वि० १८८३	२४७४।१९४०उप
७६० राजा रणधीर सिंह, शिरमौर सिंगरामऊ	७७६।६६१	वि० (१८७८-१९५२जी)	७३५।१८४०ग्र १८६०ग्र	२६८८।१८७७ज१९५२उप

	सरोज	ग्रियर्सन		विनोद
र				
७६१ राजाराम १	७७४।६३७	१६८०	२३३।ज	३८६।ज
७६२ राजाराम २	७७५।६६०	१७८८	३९६।१७२१ज	६२२।ज
७६३ राधेलाल, कायस्थ	७९३।	१९११उप	५५४।ज	२४७६।ज,१९४०उप
७६४ राना राजसिंह	७९७।	१७३७उप	१८५।१६५४-८०रा	—
७६५ राम कवि १ रामबख्श	७१६।६००	—	९०७।ग्र	१६७९।ग्र
७६६ रामकृष्ण चौबे, कालिञ्जर	७२७।६१६	१८८६अ०	५३८।ज	५८९।१७५४ से पूर्व
७६७ रामकृष्ण २	७२९।६४५	—	(५३८)	२१२३।ज, १८८६
७६८ रामचरण	७३२।६६६	(१८४१-८१२)	९०२।अ	१६७१।ग्र
७६९ राम जी कवि	७१८।६०२।६३६	१६९२	२५२।ज	४३२।१७०३ज
७७० रामदत्त	७८५।	(१८५५उप)	९०३।ग्र	१६७३।ग्र
७७१ रामदया	७३०।६५९	—	९०४।ग्र	१६७४।अ
७७२ रामदास	७१९।६०३	१८३९	४७८।ज	११७८।ज
७७३ रामदास बाबा	७३३।६६८	१७८८ग्र०	११२।१५५०उप	१०५।ग्रि
७७४ रामदीन त्रिपाठी, टिकमपुर	७२१।६०८	१९०१उप	५२४।१८४०उप	१९४१।ग्रि
७७५ रामदीन, बन्दीजन, अलीगञ्ज	७२२।६०७	१८९०	६६९।ज	२१२४।ज
७७६ रामनाथ प्रधान, अवध	७२४।६१०	१९०२ग्र	६२४।ज़	१२४५।१८५७ज
७७७ रामनाथ मिश्र, आजमगढ़	७८८।	(१९६४उप)	९०६।ग्र	२०५२।१९१२र

	सरोज	ग्रियर्सन		विनोद
र				
७७८ रामनारायण, कायस्थ	७२६।६१४	वि०	७३७।वि०१८८३	२४७७।१९४०उप
७७९ रामप्रसाद अग्रवाल, मीरापुर	७९९।६७०	१९०१उप	६३९सं०	२०४१।१९१०र
७८० रामप्रसाद, बन्दीजन, विलग्रामी	७८६।६०६	१८०३अ०	४४४।सं०	८०९।र
७८१ राम भट्ट, फर्रुखावादी	७८३।६०४	१८०३उप	४४५।ज	९६२।ज
७८२ रामराइ राठौर	७३१।६६७	(१६४९उप)	७७५।१८४३ से पूर्व	१९३९।ग्रि
७८३ रामलाल	७२३।६०९	—	९०८।अ	२०२११,१९०६ से पूर्व
७८४ रामशरण ब्राह्मण	७८२।	१८३२उप	३७९।१८००उप	११४३।ग्रि
७८५ रामसखे	७२८।६१८	(१८०४ग्र)	९०९।अ	८६०।१८१५र
७८६ रामसहाय कवि,कायस्थ, बनारसी	७२०।६०५	१९०१उप	५६८।१८२०उप	१२३५।१८७३र
७८७ राम सिंह, बुन्देलखण्डी	७१७।६०१	१८३४उप	३८०।१८००उप	११४४।ग्रि
७८८ राम सिंह देव सूर्यवंशी क्षत्रिय, खड़ासावाले	७२५।६११	—	९०५।अ	१६७७।अ
७८९ रामसेवक	७८४।	(१८५०उप)	९१०।अ	१६८८।अ २३०२।१९०८ज
७९० राय कवि	७७८।६२८	—	९१३।अ	—
७९१ रायचन्द नागर, गुजराती	७८०।६५८	(१८३१ग्र)	९१२।अ	३२६।१७००र
७९२ (राय जू) ७७८	७७९।६३०	—	(९१३।अ)	१६९२।अ
७९३ राव रतन राठौर. रतलाम	७९६।	(१७०७उप)	२०७।१६५०उप	३७६।ग्रि

	सरोज	ग्रियर्सन		विनोद
र				
७९४ राव राना, बन्दीजन, चरखारी	७६६।६२६	१८९१उप	५२१।१८४०उप	१९०२।ग्रि
७९५ रुद्रमणि चौहान	७९०।	१७८०	४०६।ज	८५२।ज
७९६ रुदमणि ब्राह्मण	७८९।	१८०३उप	३५२।१७४०उप	७६२।ग्रि
७९७ रूप	७७१।६३४	(१८३७ से पूर्व)	(२६८)	१६६६।ग्र
७९८ रूपनारायण कवि	७७२।६३५	१७०५ग्र०	२६८।ज	५१०।१७११ज, १७४०म
७९९ रूप साहि, कायस्थ	७७३।६५५	१८१३ग्र	५०३।१८००उप	८५८।र
ल				
८०० लक्ष्मण	८२६।	(१९००-०७र)	९१४।अ	१९७८।१९००र
८०१ लक्ष्मणदास	८१३।६८०	(१८८६ से पूर्व)	७७६।१८४३ से पूर्व	१८९६।१८८६ से पूर्व
८०२ (लक्ष्मणशरणदास)	८१८।६९३	—	७७७।१८४३ से पूर्व	१२७।१९२०र
८०३ लक्ष्मण सिंह	८१४।६८१	१८१०	९१५।ग्र	११६१।१८६०र
८०४ लक्ष्मी	८२९।	(१८१० से पूर्व)	९१६।ग्र	५९०।१७५४ से पूर्व
८०५ लक्ष्मीनारायण मैथिल	८२५।	१५८०ई० उप	१२४।१६००उप	२१४।ग्रि
८०६ लछिराम १, बन्दीजन, होलपुर	८१६।६८४	वि० (१९५१ग्र)	७२३ वि० १८८३	२२८१।१९३०र
८०७ लछिराम २, ब्रजवासी	८१७।६८७	(१७०९ से पूर्व)	—	१०८४।१८५०।१७९१
८०८ लच्छू	८१५।६८३	१८२८	४६६।ज	११०१।ज
८०९ लतीफ़	८२१।६९१	१८३४	४७०।ज	२३२७।१९३४ र

	सरोज		ग्रियर्सन	विनोद
ल				
८१० ललितराम	८२४।	—	९१७।अ	२५४३।१९४५र
८११ लाजब	८२७।	—	९१८।अ	१७१०।अ
८१२ लाल कवि, प्राचीन	८००।६७१	१७३८उप	२०२।१६५८उष	५५३।१७१५ज । १७६४अ
८१३ लाल कवि २, वन्दीजन, बनारसी	८०१।६७२	१८४७उप	५६१।१७७५उप	९९८ग्रि
८१४ लाल कवि ३, बिहारी लाल त्रिपाठी, टिकमापुर	८०२।६७३	१८८५उप	५२३।१८४०उप	१८९९।ग्रि
८१५ लाल कवि ४	८०३।६७४	—	९१९।अ	—
८१६ लाल कवि ५, लल्लू लाल गुजराती	८०४।६९०	१८९२अ०	६२९।१८०३उप	१११६।१८२०ज, १८८१उप
८१७ लाल गिरिधर, बैसवारेवाले	८०५।६७५	१८०७	४५१।ज	७९२।१८००र
८१८ लालचन्द	८०७।६७७	—	९२०।अ	—
८१९ लालनदास ब्राह्मण, डलमऊ	८०८।६८६	१६५२अ०	१००।ज	१७८।१६५२र
८२० (लालमुकुन्द कवि) ६३४	८०६।६७६	१७७४उप	३९१।ज	७९१।ज
८२१ लाल बिहारी	८३०।	१७३०	२९३।ज	६०२।ज
८२२ लाला पाठक, रुकुमनगर वाले	८०९।६९२	१८३१	४६९।ज	११६२।ज
८२३ लीलाधर	८१२।६८२	१६१५अ०	१९०।१६२०उप	२५१।१६७६र
८२४ लेखराज	८२२।६८५	वि० (१८८८ज १९४८म)	६९७।वि०१८८३	१८१९।१८८८ज १९४८म

		सरोज	ग्रियर्सन	विनोद
ल				
८२५ लोकनाथ	८२०।६८६	१७८०उप	७५३।१७२३ से पूर्व	५३६।१७६०र
८२६ लोकनाथ उपनाम बनारसीनाथ	८२३।	—	—	—
८२७ लोकमणि	८२८।	(१८१०से पूर्व)	९२१।अ	५९४।१७५४र
८२८ लौधे	८१९।६८८	१७७०उप	७५२।१७१८ से पूर्व	५११।१७१४ज
८२९ लौने, वन्दीजन बुन्दलखण्डी	८१०।६७९	१८७६	९२२।अ	१९८०।ज
८३० लौने सिंह वाछिल मितौली	८११।६७८	१८९२अ	९१४।ज	२१२७।ज
व				
८३१ वजहन	८३२।		९२३।अ	१५६१।अ
८३२ बहाव	८३३।	—	९२४।अ	१३२९।अ
८३३ वाहिद	८३१।६९५		९२५।अ	१५८०।अ
श				
८३४ शङ्कर १	८५९।७३६	—	(६१३)	—
८३५ शङ्कर २	८६०।७५२	—	—	—
८३६ शङ्कर ३ त्रिपाठी, विसवां	८६१।७५३	१८९१	६१३।ज	२२८३।१९३०र
८३७ शङ्कर सिंह ४, चंड़रा, सीतापुर	८६२।७५४	वि०	—	२२८४।१९३०र
८३८ शङ्ख	९३८।	(१७१२से पूर्व)	७४१।१६५५ से पूर्व	३९८।ग्रि

	सरोज		ग्रियर्सन	विनोद
श				
८३९ शम्भु १ राजा शम्भुनाथ	८३७।७२२	१७३८उप	१४७।१६५०उप	३५२।ग्रि
८४० शम्भुनाथ २, वन्दीजन	८३८।७२३	१७९८ग्र	३५७।१७५०उप	—
८४१ (शम्भुनाथ ३ मिश्र) ८३८	८३९।७२४	१८०३उप	३३८।१७५०उप	७४०।१८०६उप
८४२ शम्भुनाथ कवि ४ त्रिपाठी डांडियाखेरा वाले	८४०।७२५	१८०९ग्र	३६६।उप	८२६।र
८४३ शम्भुनाथ मिश्र ५, सातनपुरवा	८४१।७२६	१९०१ग्र	६२१।ज	१८०८।र
८४४ शम्भुनाथ मिश्र, गञ्ज मुरादाबाद	९५३।७२७	—	६२८।ग्र	११९१।१८६७र
८४५ शम्भुप्रसाद	८४२।७२८	—	९२९।अ	१७१।९ग्र
८४६ शत्रुजीत सिंह, बुन्देला	९४५।	(१८२२उप)	९२६।अ	९२३।१८२०र
८४७ (शशिनाथ) ९१६	९१७।७७६	(१७९४–१८२०र)	९३१।ग्र	—
८४८ शशि शेखर	९१५।७७७	१७०५	२५५।१६४२ज	४७०।ग्रि
८४९ शिरोमणि	८९९।७३५	१७०३उप	२६२।ज	२९८।१७००र
८५० शिव कवि, प्राचीन	९३४।	१६३१	८८।ज	—
८५१ शिव कवि १, अरसैला, वन्दीजन	८४३।७१२	१७९६ज	३३९।१७७०उप	७३४।१८००र
८५२ शिव कवि २, वन्दीजन विलग्रामी	८४४।७१३	१७९५	४३१।१७३९ज	९२४।१७९६ज

	सरोज	ग्रियर्सन		विनोद
श				
८५३ शिवद	८४९।७१८	—	(५८८)	—
८५४ शिवदत्त, ब्राह्मण, काशी	९४६।	१९११उप	५८८।ज	२४८१।ज,१९४०र
८५५ शिवदास	८४८।७१७	(१८०९अ)	७५८।१७५३ से पूर्व	८३७।ग्रि
८५६ शिवदीन	८५२।७२१	—	—	१७२२।अ
८५७ शिवदीन मिनगा	८५७।७७०	१९१५उप	६०६।ज	२०७४।र
८५८ शिवनाथ बुन्देलखण्डी	८४६।७१५	१७६०उप	१५२।१६६०उप	७६७।१७९८र
८५९ शिवनाथ शुक्ल, मकरन्दपुर	८५५।७६६	१८७०अ०	६३२।ज	१२८६।१८८२र
८६० शिवप्रसन्न शाकद्वीपी, ब्राह्मण	८५८।७८९	वि० (१८८८ज)	७२६।वि०१८८३	२४८२।१९४०उप
८६१ शिवप्रसाद सितारे हिन्द	८४५।७१४	वि० (१८८०ज१९५२म)	६९९।१८२३ज१८८७जीवित	१८१६।१८८०ज, १९५२म
८६२ शिवप्रकाश सिंह, डुमरांव	८५६।७६८	१९०१	६४३।ज	२१२८।१८९१ज
८६३ शिवराज	८५१।७२०	(१८६६अ)	९३२।अ	१७२३।अ
८६४ शिवराम	८४७।७१६	१७८८उप	४१६।ज	—
८६५ शिवलाल दुबे	८५०।७१९	१८३९	४७९।ज	११७९।ज
८६६ शिव सिंह, प्राचीन	८५३।७१०	१७८८अ०	४१७।ज	९२५।ज
८६७ शिवसिंह सेंगर	८५४।७११	१८७८ई०अ	५९५।ज	२१९९।१८९०ज, १९३५म
८६८ शीतल त्रिपाठी टिकमापुर	८८५।७५६	१८९१ उप	५२५।१८४०उप	१९०५।ग्रि
८६९ शीतलराय, वन्दीजन	८८६।७५७	१८९४	६१५।ज	१८३८।र

	सरोज		ग्रियर्सन	विनोद
श				
८७० शेखर	९१४।७७२	(१८५५ज१९३२म)	७९५।१८६९ से पूर्व	२२१५।ग्रि
८७१ (शोभनाथ)	८९८।७८४	—	९३७।ग्र	—
८७२ (शोभा)	८९७।७३४	—	९३६।ग्र	९१११३,१८१८र
८७३ श्याम	८९६।७३१	१७०५	२६९।ज	४७१।ज
८७४ श्यामदास	८९१।७९१	१७५५	३१६।ज	६८९।ज
८७५ (श्याममनोहर)	८९२।७९३	—	७७९।१८४३से पूर्व	१९४७।ग्रि
८७६ श्यामलाल	८९४।७८३	१७७५	(२९९)	४७२।ग्रि
८७७ श्यामलाल, कोड़ा जहानाबाद	९५५।७९७	१८०४उप	३४१।१७५०उप	८२७।ग्रि
८७८ श्यामशरण	८९३।७८७	१७५३अ०	३०९।ज	६९०।ज
८७९ श्रीकर	९४७।	(१७१२से पूर्व)	७४५।१६५५ से पूर्व	३९३।ग्रि
८८० श्री गोविन्द	८६३।७४०	१७३०उप	२११।सं०	४७३।र
८८१ (श्रीधर१ प्राचीन)८६८	८६६।७००	१७८९उप	—	९०२।ज
८८२ श्रीधर २ राजा सुब्बा सिंह	८६७।७०१	१८७४ग्र	५९०।उप	१२४२।१८५०ज, १८८४ग्र
८८३ श्रीधर मुरलीधर ३	८६८।७०२	(१७६९ग्र)	१५७ श्रीधर १६८३	५१२ श्रीधर।१७४०र
			१५६ मुरलीधर। सं०	५५१।१७३७ज
८८४ श्रीधर ४ राजपूताना वाले	८६९।७०६	१६८०अ०	१६६।ज	३८७।ज
८८५ श्रीपति	८६५।६९६	१७००अ०	१५०।ज	६४३।१७७७ग्र

	सरोज	ग्रियर्सन		विनोद
श				
८८६ श्री भट्ट	८६४।७९२	१६०१उप	५३।ज	८७।१६३०र
८८७ श्रीलाल गुजराती	९५२।७९६	१८५०ई०उप	४८९।ज	१२३२।ज
८८८ श्री हठ	९५६।	१७६०अ०	७४६।१६५५ से पूर्व	३९४।ग्रि
स				
८८९ सङ्गम	९०१।७३८	१८४०ज	४८०।ज	१२०५।ज
८९० सन्त १	८७३।७४७	—	—	—
८९१ सन्त २, प्राचीन	८७५।७८५	१७५९ग्र०	३१८।ज	—
८९२ सन्तन१, विंदकी	८७०।७२९	१८३४ग्र०	४७२।ज	५४४।१७३०ज
८९३ सन्तन २, जाजमऊ	८७१।७३३	१८३४अ०	४७३।ज	५४३।१७२८ज
८९४ सन्तदास, ब्रजवासी	८७४।६९९	१६८०उप	२३५।उप	२७६।र
८९५ सन्तवकस, वन्दीजन, हौलपुर	८७२।७३२	वि०	७२४।वि०१८८३	२४८७।१९४०उप
८९६ सम्पति	९०५।७५५	१८७०	६५२।ज	१९८१।ज
८९७ सकल	९२०।७८०	१६९०।	२४८।ज	४२४।ज
८९८ सखीसुख, ब्राह्मण	८७८।७४१	१८०७उप	४५३।ज	१०१८।ज
८९९ सगुणदास	९२५।७९४	(१६००उप)	७७८।१८४३ से पूर्व	१९४९।ग्रि
९०० सन्तजीव	९३६।	१८०३उप	३५३।१७४०उप	७६४ग्रि

	सरोज		ग्रियर्सन	विनोद
स				
९०१ सदानन्द	९१९।७७९	१६८०	२३४।ज	२८३।१६८५र
९०२ सदाशिव	९३३।	१७३४उप	१८७।१६६०उप	४१२।ग्रि
९०३ सनेही	९४८।	(१८१० से पूर्व)	७५७।१७५३ से पूर्व	८३८।ग्रि
९०४ सबल श्याम	८९५।७७४	(१६८८ ज)	९२७।ग्र	१३३०।अ १३७८।ग्र
९०५ (सबल सिंह) ९१३	९१२।७६६	(१७२७ग्र)	(२१०)	(३६०)
९०६ सबल सिंह चौहान	९१३।७९५	१७२७ग्र	२१०।ज	३६०।१७१८–८१ग्र
९०७ समनेश, कायस्थ, रीवां	९४४।	१८८१उप	५२८।१८१०उप	१०७०।१,१८४७र
९०८ सम्मन	९०२।७३९	१८३४ग्र०	४७१।ज	१११३।ज
९०९ समर सिंह क्षत्रिय	९५४,	वि०	७२५।वि०१८८३	—
९१० सरदार बनारसी	९२७।६९७	(वि०१९०२र, १९४०म)	५७१।वि०१८८३	९८०९।१९०२–४०र
९११ सर्वसुख लाल	९५१।	१७९१	४२४।ज	५९२।१७५४ से पूर्व
९१२ सवितादत्त बाबू	९०३।७४८	१८०३ग्र०	(३०४ रविदत्त १६८५ ज)	६६४।ज
९१३ सहजराम बनिया	८८९।७६३	१८६१ अ०	५९२।ज	७०९।१,१७८९ र
९१४ (सहजराम सनाढ्य) ८८९	८९०।७८६	१९०५ अ०	६८६ ज	२१८२।ज
९१५ सहीराम	९१२।७७८	१७०८	२७५।ज	४९६।ज
९१६ सागर	९०९।७६१	१८४३ उप	४८२।ज	११२८।ज
९१७ साधर	९०४।७४९	१८८५	४९८१७९८ ज	१२७७।ज

	सरोज	ग्रियर्सन		विनोद
स				
९१८ सामन्त	९२१।७८१	१७३८ उप	१७८।ज	४९८।र
९१९ सारङ्ग	९३२।	१३३० अ०	८।१३६३ उप	१८।१३५७ र
९२० सारङ्ग असोधर वाले	९५८।७९९	१७९३ उप	३४३।१७५० उप	८२८।ग्रि
९२१ साहब	९३९।	(१७१२ से पूर्व)	७४२।१६५५ से पूर्व	३९५।ग्रि
९२२ सीरताज बरसाने व	९०६।७५९	१८२५	४६३।ज	१०८६।ज
९२३ सिद्ध	९५७।	१७८५ अ०	७४३।१६५५ से पूर्व	३९६।ग्रि
९२४ सिंह	९००।७३७	१८३५ उप	४७४।ज	११६४।ज
९२५ सितारामदास बनिया	९२३।७८८	वि० (१९०७ ज)	७२७।वि० १८८३	२३३८।१९०७ ज
९२६ सुन्दर १, ग्वालियर	८७६।७५०	१६८८ ग्र	१४२।उप	२८८।र
९२७ सुन्दरदास २	८७७।७५१	(१६५३ ज १७४६ म)	१६४।१६२० उप	२५२।१६७७-१७४६।र
९२८ सुन्दर, वन्दीजन, असनी	९४१।	—	९३४।अ	१७५५।अ
९२९ सुकवि	९२४।७९०	१८८५	४९९।१७९८ज	१२७८।ज
९३० सुखदेव मिश्र १ कंपिल ।	८३४।७०९	१७२८ ग्र	१६०।१७००उप	४३०।र' १६९०ज
९३१ (सुखदेव मिश्र २ दौलतपुर)	८३५।७०८	१८०३ अ०	३५६।१७४० उप	(४३०)
८३४				

	सरोज	ग्रियर्सन		विनोद
स				
९३२ (सुदेखव कवि ३ अन्तरवेद) ८३४	८३६।७०७	१७९१ अ०	३३५।१७५० उप	(४३०)
९३३ सुखदीन	८८०।७४३	१९०१	६८१।ज	२२८८।ज
९३४ सुखलाल	९१०।७६५	१८५५ उप	—	—
९३५ सुखलाल	९३५।	१८०३ उप	३५४।१७४० उप	७६३।ग्रि
९३६ सुखराम	८७९।७४२	१९०१	(७२९) सं०	—
९३७ सुखराम	९४३।	वि०	७२९।वि० १८८३	२४८४।१९४० र
९३८ सुखानन्द	९५०।	१८०३	४४६।ज	९६६।ज
९३९ सुजान	९११।७४० ७६७	(१८०० उप)	९३३।अ	१७५२।अ
९४० सुदर्शन सिंह	९३७।८००	१९३० उप	७०९ सं०	२२८९।१९३० र
९४१ सुबुद्धि	९४०।	(१७१२ से पूर्व)	७४४।१६५५ से पूर्व	३९७।ग्रि
९४२ सुमेर	९०७।७६०	(१८१० से पूर्व)	—	८३९।१८१० से पूर्व
९४३ सुमेर सिंह साहबजादे	९०८।७७१	(१९६३ जीवित)	७५९।१७५३ से पूर्व	८३९।१८१० से पूर्व २४८५।१९४०र
९४४ सुलतान पठान, नवाब सुलतान मोहम्मद खाँ, राजगढ़, भोपाल	८८।७६२	१७६१ उप	२१४।ज	५४९।र
९४५ सुलतान २	८८८।७६४	—	९३५ अ	—

	सरोज	ग्रियर्सन		विनोद
स				
९४६ सुवंश शुक्ल	९२६।७५८	१८३४ ज	५८९।ज	११२२।१८६२ ग्र
९४७ सूखन	८८१।७४४	१९०१	६८२।ज	२२९०।ज
९४८ सूदन	९२९।७०३	१८१० उप	३६७।ज	८५५।र
९४९ सूरज	९४९।	(१७१२ से पूर्व)	७६०।१७५३ से पूर्व	८४०।ग्रि
९५० सूरति मिश्र	९३१।७०५	१७६६ ग्र	३२६।१७२० उप	५५५।१७४० ज, १७६६ ग्र
९५१ सूरदास	९२८।६९८	१६४० म,उप	३७।१५५० उप	५२।१५४० ज, १६२० म
९५२ सैख	८८२।७४५	१६८० उप	२३६।ज	५४७।१७७५ से पूर्व
९५३ सैन	९२२।७८२	१५६० अ०	१२।१४०० उप	२७।ग्रि ५१।र
९५४ सेनापति	९३०।७०४	१६८० उप	१६५।ज	२७८।१६४६ ज
९५५ सेवक १, बनारसी	८८४।७७३	वि० (१८७२ ज १९३८ म)	५७९। वि० १८८३	१८०५।१८७२ ज १९३८ म
९५६ (सेवक २, असनी) ८८४	८८३।७४६	१८९७ उप	६७७।उप	१९०६।र
९५७ सोमनाथ	९१६।७७५	१८८० अ०	—	७२०।१७९४ग्र
९५८ सोमनाथ ब्राह्मण, सांड़ी वाले	९४२।	१८०३ उप	४४३ ब्राह्मण नाथ।ज ४४७ सोमनाथ	८३६।१८०९ र
ह				
९५९ हजारी लाल त्रिवेदी	९९७।८१८	वि०	७१८। वि १८८३	२४८८।१९४० उप

सरोज		ग्रियर्सन		विनोद
ह				
९६० हठी	९७४।८१४	१८८७ अ०	६६४।ज	९८२।१८४७ ग्र
९६१ हनुमन्त	९७६।८१७	(१९०४-५६ उप)	९३८।अ	२२३१।१९०३ ज
९६२ हनुमान	९७५।८१५	वि० (१८९८ ज, १९३६)	७६६।१८६६ से पूर्व	२१८५।१८९८ ज, १९३६म
९६३ हरजू	९८७।८३१	१७०५	२७०।ज	७५३।१७९२ र
९६४ हरदयाल	९६५।८०५	—	९४१।अ	१७६८।अ
९६५ हरदेव	९८९।८२८	१८३० ज	५०५।१८०० उप	—
९६६ (हरि कवि) ९९५	९७१।८११	(१७६६ ज, १८३५ म)	७६१।१७५३ से पूर्व	८५३।१८१० र
९६७ हरिकेश	९६८।८१०	१७६० उप	२०३।१६५० उप	६६१।१७८८र
९६८ हरिचन्द वन्दीजन, चरखारी	१००२।	(१७२२-८८ उप)	२०४।१६५० उप	५१४।१७४० र
९६९ हरिचन्द बरसाने वाले	९९६।८३९		९४२।अ	१७७०।अ
९७० हरिचरणदास	९९५।८३८	(१७६६ ज, १८३५म)	९३९।अ	८५९।१७६६ ज, १८३५ ग्र
९७१ हरिजन	९८६।८३०	१६९०	२४९।ज	४२५।ज
९७२ हरिजन, ललितपुर	१००१।	१९११ उप	५७५।सं०१८५१	१९८२।१९०४ र
९७३ हरि जीवन	९८५।८२७	(१९३८ उप)	९४०।अ	१७७१।अ
९७४ हरिदास १, कायस्थ, पन्ना	९६०।८०१	१९०१ अ०	५४६।ज	१८४८।१८७६ ज १९००।म
९७५ हरिदास २, वन्दीजन, बांदा	९६१।८०२	१८९१ अ०	५३९।ज	२०७५।ज
९७६ हरिदास स्वामी, वृन्दावनी	९९२।८३७	१६४० अ०	५९।१५६० ज	६४।१६०७र

	सरोज	ग्रियर्सन		विनोद
ह				
९७७ हरिदेव बनिया	९६३।८०३	(१८९२-१९१४ र)	९४३।ग्र	११४८।१८३० र
९७८ हरिनाथ महापात्र	९५९।८०८	१६४४ ज	११४।उप	३१२।१६९० र
९७९ हरिनाथ गुजराती	९९८।	१८२६ ग्र	३५५।ज	८७७ ग्र
९८० हरि भानु	९७९।८२१	—	९४५।ग्र	१७७२।ग्र
९८१ हरिराम प्राचीन	९९१।८३३	१६८०	१४१।ज	(३७७) १७०८ र
९८२ हरि लाल १	९७३।८१३	—	(९४६)	—
९८३ हरि लाल २	९९०।८२९	—	९४६।ग्र	—
९८४ हरिवंश मिश्र, विलग्रामी	९६९।८११	१७२९ उप	२०९।१६६२ उप	४१५।१७१९ र
९८५ हरिवल्लभ	९७२।८१२	(१७०१ ग्र)	९४४।ग्र	२९८।१,१७०१ र
९८६ हरिश्चन्द्र	९८४।८२६	वि० (१९०७ ज	५८१।१८५० ज	२१६६।१९०७ ज
		१९४२ म)	१८८५ म	१९४१ म
९८७ हरिहर	९६७।८०९	१७९४	४२९।ज	९२६।ज
९८८ हरीराम	९६४।८०४	१७०८ ग्र०	(१४१) सं०	३७७।र
९८९ हित नन्द	९७८।८१९	—	९४७।ग्र	—
९९० हितराम	१०००।	(१७२२ ग्र)	७६२।१७५३ से पूर्व	७९९।१८०० र
९९१ हित हरिवंश	९७०।८२०	१५५९ उप	५६।१५६० उप	६०।१५३० ज, १६०९ म
९९२ हिमाचल राम	९९२।८६४	१९०४	६२६।ज	२२९४।ज

	सरोज	ग्रियर्सन		विनोद
ह				
९९३ हिम्मत बहादुर	९९९।	१७६५ ज	३७८।१८०० उप	८१०-१८०३-५७ र
९९४ हिरदेश वन्दीजन	९६६।८०६	१९०१	५४७।ज	२१६८।ज
९९५ हीरामणि	९८८।८३२	१६८० उप	२३७।ज	३४८।ज
९९६ हीरालाल	९९३।८३५	(१८३९ ग्र)	९४८।ग्र	१०३५।२,१८३९ र
९९७ (हुलास)	९९४।८३६	—	(९४९।ग्र)	—
९९८ हुलासराम	१००३।	—	९४९।ग्र	१२०५।१, १८७० र, १८४५ ज
				४७४।१७०८ ज
९९९ हुसैन	९८०।८२२	१७०८	२७६।ज	३७८।र
१००० हेम	९८३।८२५	—	९५०।ग्र	—
१००१ हेम गोपाल	९८१।८२५	१७८०	९५१।ग्र	८५४।ज
१००२ हेमनाथ	९८२।८२४	(१८७५ से पूर्व)	९५२।ग्र	१७९९।ग्र
१००३ होलराय	९७७।८१८ ग्र	१६४० उप	१२६।उप	१४६।र

४. पुनश्च

सरोज सर्वेक्षण जुलाई ५७ में उपाधि हेतु प्रस्तुत किया गया था और जनवरी ५९ में यह प्रकाशनार्थ हिन्दुस्तानी एकेडेमी को संशोधित करके दिया गया। अब दिसम्बर ६६ के अंत में प्रायः साढ़े सात वर्ष बाद ग्रन्थ छप पा रहा है। इन साढ़े सात वर्षों में अनेक कवियों के संबंध में नवीन सूचनाएँ मिली हैं और कालिदास हजारा के सम्बन्ध में विशेष शोध कार्य हुआ है। यद्यपि भूमिका में हजारा के सम्बन्ध में कोई विवेचन नहीं किया जा सका है, पर 'सर्वेक्षण' के थोड़े बहुत अंश जो मेरे पास प्रूफ-शोध के लिए आए, उनमें यथासम्भव हजारा सम्बन्धी शोध का लाभ उठा लिया गया है। शिवसिंह का खयाल है कि कालिदास ने संवत १७७५ के आस पास कालिदास हजारा नामक संग्रह प्रस्तुत किया था। इसी के आधार पर उन्होंने सैकड़ों कवियों का काल निर्णय किया है और अनेक 'प्राचीन' कवियों की सृष्टि कर ली है। पर मेरी शोध के अनुसार सं०१८७५ के आस-पास किसी ने एक संग्रह प्रस्तुत किया था, जिसे सरोजकार ने कालिदास का किया हुआ संग्रह मान लिया और उसका रचनाकाल सौ वर्ष पूर्व का समझ लिया। इस शोध से अनेक प्राचीन कवियों का अस्तित्व परवर्ती नवीन कवियों में समाविष्ट हो जाता है और अनेक कवियों की पूर्व काल रेखा १०० वर्ष इधर खिसक आती है। इस शोध का उपयोग समस्त सर्वेक्षण में नहीं हो सका है। आज जब ग्रन्थ प्रकाशन के लिए प्रस्तुत है, यह आवश्यक है कि इसको अद्यतन बना दिया जाय और जो भी नवीन सूचनाएँ सुलभ हो सकी हैं, उनका समावेश इस ग्रन्थ में कर दिया जाय।

जब मैंने सर्वेक्षण प्रारंभ किया, मेरे पास सरोज का अंतिम संस्करण था। यह संस्करण १९२६ ई० में हुआ था। इसका उप-सम्पादन रूपनारायण पाण्डेय ने नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ के लिए किया था। यह ग्रन्थ प्रारम्भ से ही उसी प्रेस से प्रकाशित होता आ रहा है। बाद में इसका तीसरा संस्करण भी मुझे मिल गया। यह संस्करण नवम्बर १८८३ ई० में हुआ था। इसकी एक प्रति प्रो० विश्वनाथप्रसाद मिश्र के पास एवं एक प्रति सभा में है। मैंने सर्वेक्षण में सप्तम संस्करण का ही उपयोग किया है। कवि परिचय वाले उद्धरण इसी से दिए गए हैं। जब मैं पी-एच० डी० की उपाधि लेने नवम्बर ५७ में आगरा गया, तब मथुरा में पं० कृष्णदत्त जी वाजपेयी के यहाँ से सरोज की एक खण्डित प्रति लाया, जो परीक्षण से द्वितीय संस्करण की प्रति ठहरी। लौटने पर काशी में ही सरोज का प्रथम संस्करण भी मिल गया। यह संस्करण अप्रैल १८७८ में हुआ था। द्वितीय संस्करण अप्रेल १८७८ और नवम्बर १८८३ के बीच किसी समय हुआ होगा। सरोज के चतुर्थ संस्करण की एक प्रति श्री गोवर्द्धन लाल उपाध्याय, काशी के

पास है, जो प्रायः पूर्णतया तृतीय संस्करण के मेल में है। सरोज के पञ्चम, एवं षष्ट संस्करण मेरे देखने में नहीं आए। प्राप्त सभी संस्करणों का उपयोग मैंने शिवसिंह सरोज के सम्पादन में किया है, जो हिंदी साहित्य सम्मेलन प्रयाग से प्रकाश्यमान है।

सर्वेक्षण जुलाई ५७ में ही प्रस्तुत हो गया था और इस पर १६ नवम्बर ५७ को ही डॉक्टरेट की उपाधि भी मिल गई थी; पर यह ग्रन्थ अब, १९६६ के अन्त में प्रकाशित हो रहा है। इस अन्तराय में मुझे और भी जो नवीन सामग्री मिली है, उसका सदुपयोग मैं इस पुनश्च में कर ले रहा हूँ अतः ग्रन्थ पूर्णता को ही प्राप्त हुआ है। मैं फ़ारसी की इस उक्ति में विश्वास रखता हूँ--"देर आयद दुरुस्त आयद"; हिन्दी की इस उक्ति में नहीं--"काता और ले दौड़ी"।

३ **अजबेस**--'असनी के हिन्दी कवि' में डॉ० विपिनबिहारी त्रिवेदी ने इस कवि पर अच्छा प्रकाश डाला है। इस ग्रन्थ के अनुसार अजबेस के बाप शिवनाथ का जीवन काल सं० १८१०-९४ वि० है। शिवनाथ का संबंध उदयपुर, रीवां और बलरामपुर दरबार से था। अजबेस का जन्म असनी में सं० १८४१ वि० में हुआ और निधन रीवां में १९२६ वि० में। यह रीवां दरबार में महाराज विश्वनाथ सिंह के यहाँ रहे। संवत १९०१ में यह रीवां के राजा के वकील होकर उदयपुर नरेश महाराणा स्वरूप सिंह के यहाँ गए, जहाँ इन्होंने 'स्वरूप विलास' नामक नर-काव्य रचा। इन्हीं के प्रयास से रीवां के तत्कालीन राजकुमार रघुराज सिंह का विवाह १९०८ वि० में महाराणा सरदार सिंह की सुपुत्री से संपन्न हुआ। उसी विवाह के अवसर पर उदयपुर के राजकवि 'प्रसाद' ने जब'बाढ़ी पातसाही प्रलै काल के जलद ज्योंही' प्रतीक वाला प्रशस्ति कबित्त पढ़ा, तब उसी के प्रत्युत्तर में अजबेश ने रीवां नरेश की प्रशस्ति में 'बाढ़ी बादशाही ज्योंही सलिल प्रलै के बढ़ैं' प्रतीकवाला कबित्त पढ़ा था।

रीवां-नरेश की ओर से यह सं० १९१७ से १९२२ वि० तक जोधपुर-नरेश के यहाँ भी रहे थे।

पृष्ठ १३० पर प्रमाद से शिवनाथ को अजबेस का पुत्र कह दिया गया है।

११. **अमरेस**--श्री वासुदेव गोस्वामी ने 'व्रज भारती' वर्ष १६ अंक १०-१२ में 'नीलसखी' पर एक लेख प्रकाशित कराया था, जिसका सार प्रभुदयाल मीतल ने 'चैतन्यमत और व्रज साहित्य में नीलसखी के वर्णन में सन्निविष्ट कर लिया है। मीतल जी के अनुसार नीलसखी जी का मूल नाम अमर जू था और वे अपनी प्रारंभिक रचनाओं में अमरेश छाप रखते थे। वे प्रसिद्ध भक्त कवि हरीराम व्यास के वंशज थे और बाद में वृन्दावन जाकर चैतन्य के गौड़ीय संप्रदाय में दीक्षित होकर नीलसखी नाम से सखी-भाव की उपासना करने लगे थे। इनका जन्म १९८१ वि० में बुन्देल

खंड के सतारी नामक गाँव में हुआ था। उक्त गाँव इनके पूर्वजों को सं० १७६४ में महाराज छत्रसाल द्वारा जागीर में प्राप्त हुआ था। अमरेश छाप से षट्ऋतु वर्णन सम्बन्धी इनके कबित्त मिलते हैं। नीलसखी नाम से इनकी पदावली मिलती है, जिसमें ११० पद हैं।

सरोज में दिया इनका समय सं० १६३५ अशुद्ध है। सं० १७८१ इनका जन्मकाल है, ऐसी स्थिति में १७७५ में किसी संग्रह में इनकी रचना का होना असम्भव है। हजारा १८७५ के आस-पास की रचना है, उसमें इनका सरोज में उद्धृत प्रथम कवित्त 'मानुस कहाइ' है।

२०. **अभयराम वृन्दावनी**--सं० १९९७ वि० में वृन्दावन से प्रकाशित 'निंबार्क माधुरी' में निंबार्क सम्प्रदाय के भक्त-कवियों की रचनाओं का संग्रह है। इसमें अभयराम वृन्दावनी भी हैं। इस ग्रन्थ के अनुसार अभयराम जी निंबार्क सम्प्रदाय के थे। यह जाति के गौरवा ठाकुर थे—उसी जाति के जिस जाति के अष्टछापी कुम्भनदास थे। इनका जन्म वृन्दावन में हुआ था। इनके प्रपौत्र नत्थी सिंह संवत १९९७ में विद्यमान् थे। अभयराम के पुत्र रूप सिंह, रूप सिंह के पुत्र बलवन्त सिंह, बलवन्त सिंह के पुत्र नत्थी सिंह। यह १९९७ से प्रायः डेढ़ सौ वर्ष पहले अर्थात संवत १८५० वि० के आस-पास उपस्थित थे। स्पष्ट ही सरोज का संवत भ्रष्ट है। इनके एक नवीन ग्रंथ की पांडुलिपि सभा में है।

५८. ऊधोराम, ५९. ऊधोकवि—ऊधोराम की कविता १८७५ के आस-पास संकलित हजारा में थी, अतः इनका समय १६१० ठीक नहीं'। यह १८७५ के पूर्व अवश्य थे। यह १८५३ में उपस्थित ऊधो से अभिन्न हो सकते हैं। ५९ संख्यक ऊधो का उदाहृत कबित्त भ्रमर गीत सम्बन्धी है। इसमें आया ऊधो कवि-छाप नहीं प्रतीत होता।

६३. **केशवदास**—महाकवि केशवदास की समस्त रचनाओं का प्रकाशन, पं० विश्वनाथ मिश्र द्वारा सम्पादित होकर, हिन्दुस्तानी एकेडेमी, इलाहाबाद से तीन भागों में हुआ है। प्रथम भाग में दो ग्रन्थ हैं—(१) रसिक प्रिया (२) कवि प्रिया। द्वितीय भाग में तीन ग्रन्थ हैं—(१) रामचन्द्र चंद्रिका, (२) छन्द माला (यह नवीन ज्ञात पिंगल ग्रन्थ है), (३) शिखनख (यह भी नवीन ज्ञात ग्रन्थ है और कवि प्रिया वाले नखशिख से भिन्न है)। तृतीय भाग में चार ग्रन्थ हैं—(१) रतन बावनी, (२) वीर चरित्र, (३) जहाँगीर जस चंद्रिका, (४) विज्ञान गीता।

७३. **कालिदास त्रिवेदी**—स्व० कृष्णविहारी मिश्र ने स्व-सम्पादित 'साहित्य-समालोचक' के भाग ३, संख्या ४ शिशिर (माघ-फाल्गुन) १९८४ वि० (१९२८ ई०) वाले अङ्क में कालिदास के वधू-विनोद' नामक ग्रन्थ को 'बार बधू विनोद' नाम से प्रकाशित किया था।

जिसे शिवसिंह ने कालिदास हजारा कहा है, वह वस्तुतः सं० १८७५ के आसपास का विरचित संग्रह है और कालिदास कृत नहीं है। इस सम्बन्ध में—'नागरी प्रचारिणी पत्रिका', वर्ष ६६, संवत

२०१८, अङ्क २-४ (मालवीय शती विशेषाङ्क) में प्रकाशित 'कालिदास हजारा' शीर्षक मेरा लेख पठनीय है।

७५. **कवीन्द्र**—खाजरिपोर्ट १९०४। २८ में वर्णित 'रसदीपक' भी कालिदास त्रिवेदी के पुत्र उदयनाथ कवीन्द्र का ही 'रस चन्द्रोदय' नामक ग्रन्थ है। यह सखीसुख के पुत्र कवीन्द्र का 'रस दीपक नहीं है। शुक्ल जी ने कवीन्द्र के ग्रन्थ का रचनाकाल सं० १७७७ दिया है, सरोज में १८०४ दिया गया है। और खोज रि० १९०४।२८ के अनुसार इसका रचनाकाल १७९९ है। अतः वास्तविक रचनाकाल अभी ऊहापोह का विषय है।

९२. **कवि राम**—एक 'राम कवि' 'संवत १८१५ से पूर्व हुए हैं। इनका एक ग्रन्थ 'जस कबित्त' है। इसमें इनकी लिखी किसी साबित खां तथा ग्रन्यों की प्रशस्तियाँ हैं। ग्रन्थ का प्रतिलिपिकाल (जो रचनाकाल भी हो सकता है) संवत १८१५ है। ग्रन्थ भरतपुर की पब्लिक लाइब्रेरी में है।

९९. **किंकर गोविन्द**—'देवी पूजि सरस्वती' वाला दोहा महाकविराय शृंगारी सुन्दर के 'सुन्दर शृंगार' का मंगलाचरण है।

१०३. **कलानिधि कवि**—(१) **प्राचीन** हजारा का रचनाकाल संवत १८७५ सिद्ध हो जाने से इस कवि का अस्तित्व १०४ संख्यक कलानिधि में विलीन हो जाता है।

११३. **कृपाराप**—रसिक प्रकाश भक्तमाल छप्पय ३४ के अनुसार कृपाराम गूदड़ रामदास गूदड़ के शिष्य हैं। यह कृपाराम बालकृष्ण के शिष्य हैं। अतः दोनों भिन्न कवि हैं।

११८. **कल्याणदास**—यह गो० विठ्ठलनाथ के पौत्र थे, उनके द्वितीय पुत्र गोविन्द राय जी के पुत्र थे, प्रसिद्ध गो० हरि राय (१६४७-१७७२ वि०) के पिता थे। इनका जन्मकाल १६२५ के आस-पास होना चाहिए।

१२१. **कृष्णदास**—अब कृष्णदास अधिकारी के समस्त पदों का संग्रह विद्या विभाग कांकरौली से सन् २०१९ वि० में 'कृष्णदास' नाम से प्रकाशित हो गया है। इसमें कुल ११३४ पद हैं।

१२२. **केशव कश्मीरी**—श्री भट्ट के गुरु इन केशव काश्मीरी ने व्रजभाषा में रचना नहीं की है। इनके नाम पर सरोजकार ने जो पद उद्धृत किया है, वह किसी दूसरे केशव का है। श्री भट्ट निम्बार्क सम्प्रदाय के प्रथम ब्रजभाषा कवि हैं, इसीलिए इनका 'युगल शतक' आदिवाणी भी कहलाता है। चैतन्य महाप्रभु नदिया में संवत् १५६२-६६ में रहे। इसी समय कभी चैतन्य एवं केशव कश्मीरी का शास्त्रार्थ हुआ रहा होगा।

१२४. **कान्हरदास**—सोभूराम जी हरिव्यास देवाचार्य के बारह प्रमुख शिष्यों में से प्रथम थे। यमुना तट पर पंजाब में बूड़िया नामक स्थान पर जगादारी के निकट इनकी गद्दी थी। कान्हरदास

या कर्णहर देव इन्हीं के शिष्य थे। कर्णहर देव का समय संवत् १७०० के आसपास है। अतः नाभा जी को गोसाईं की उपाधि सं० १७०० के आस-पास मिली रही होगी।

१२७. **कृपाराम**—कृपाराम जी की हिततरंगिनी का एक अच्छा संस्करण इधर काशी के श्री सुधाकर पाण्डेय ने सं० २०२० में सम्पादित करके विश्वभारती, नागपुर से प्रकाशित कराया है। इसमें इस ग्रन्थ का रचनाकाल **१५९८** ही स्वीकार किया गया है। पर 'बरनत कवि सिंगार रस, छंद बड़े बिस्तारि का कोई उत्तर इसकी भूमिका में नहीं है।

पंडित चन्द्रकांत बाली ने 'पंजाबप्रान्तीय हिन्दी साहित्य का इतिहास' में पृष्ठ २६५ पर इन कृपाराम को पंजाबी कहा है। प्रमाण कोई नहीं दिया है।

१३०. **कनक कवि**—तुलसी कवि के रस कल्लोल (रचनाकाल सं० १७११) में कनक कवि का एक सरस कबित्त उदाहृत है। अतः इनका रचनाकाल संवत् १७११ के पूर्व है। उक्त कबित्त का प्रतीक है—'सहचरि आई सो जनाई सैन अँखिअनि'।

१३५ **खुमान**—'लक्ष्मण शतक' का एक संस्करण लहरी बुक डिपो, काशी द्वारा १९२७ ई० में हुआ था। इसका संपादन अखौरी गंगाप्रसाद सिंह ने किया है। इसे कविवर समाधान रचित कहा गया है। छंदों में भी कवि छाप समाधान है। खुमान और समाधान की यह समस्या समाधान योग्य है।

१४८. **गंग**—श्री बटे कृष्ण सम्पादित 'गंग-कवित्त' का प्रकाशन संवत् २०१७ में हुआ। इसमें कुल ४४० कबित्त हैं। 'चन्द छंद बरनन की महिमा' को जाल सिद्ध किया गया है।

१६२. **गिरिधर कविराय**—पं० चन्द्रकांत वाली ने 'पंजाब प्रान्तीय हिन्दी साहित्य का इतिहास' (पृ० ३१५-१६) में गिरिधर कविराय को पंजाबी कहा है और इनका यह विवरण दिया है—

इनका पूरा नाम गोस्वामी गिरिधर कविराय है। इनके पिता गोस्वामी धर्मचन्द जी लाहौर के निवासी थे। इनका जन्म-काल जनश्रुति से संवत् १७३० वि० है और रचनाकाल संवत् १८००। इनकी रचनाएँ हिन्दी में तो हैं ही, इन्होंने पंजाबी में भी कुंडलियाँ लिखी हैं। भाई काहन सिंह ने अपने 'महान् कोश' में पृष्ठ १२२१ पर इन्हें पंजाबी सिद्ध किया है। इनका 'नलदमयंती' नामक एक 'प्रेमाख्यान भी है, जिसकी रचना इन्होंने संवत १७५१ में की—

> दस अवरसतलौं कहैं, संवत एक पचास।
> मघर मास रविवार में, तिथि षट हैं पंचास ।।

कुण्डलियों में प्रयुक्त 'साईं' गोसाईं का संक्षिप्त रूप हैं। यह निस्संतान थे। वैराग्य भाव से प्रेरित होकर यह आजीवन तीर्थयात्रा करते रहे। इनकी कुण्डलियाँ तीर्थयात्रा काल में ही लिखी गईं।

१७८. (**रसिक**) **गोबिन्द**—अब हजारा का समय संवत् १८७५ सिद्ध हो गया है। अतः हजारा में इन रसिक गोविन्द की रचना हो सकती है।

१८७. **गुमान मिश्र**--नैषध के अनुवादक गुमान मिश्र के आश्रयदाता महम्मदी जिला सीतापुर वाले अली अकबार खाँ का शासन काल संवत १८१४-२६ वि० है। अतः नैषध का अनुवाद काल १८२४ ही ठीक है। प्रकृति का अर्थ २४ ही करना चाहिए। स्वर्गीय डॉ० ब्रजकिशोर मिश्र ने अपने शोध-प्रबन्ध 'अवध के प्रमुख कवि' में पृष्ठ ४०–४२ पर इसका सम्यक विवेचन किया है और अली अकबर खाँ का यह कुर्सीनामा भी दिया है—
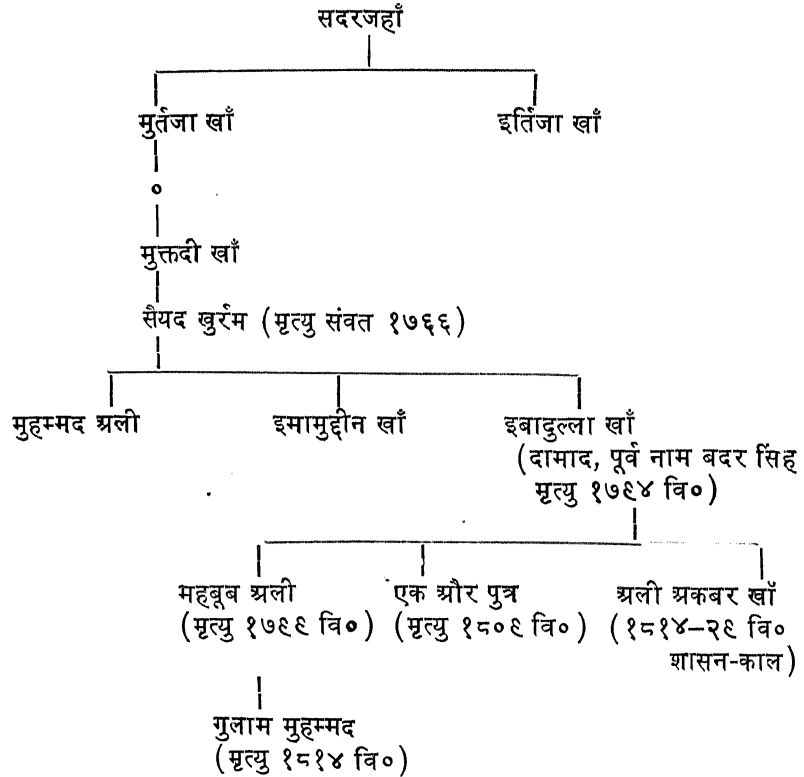
२०१ **गुलाब सिंह पंजाबी**—'पंजाब प्रांतीय हिंदी साहित्य का इतिहास' में पं० चन्द्रकांत बाली ने इनकी माता का नाम गौरी और पिता का नाम रायचंद दिया है।

गौरी जननी लोक में, राइया जनक महान ।
गुलाब सिंह सुत ताहि के, नाटक कीन बखान ।—प्रबोधचन्द्र नाटक

बाली जी के अनुसार इनके चार ग्रन्थ उपलब्ध हैं —

१. भाव रसामृत—यह वैराग्य शतक का अनुवाद है।

२. अध्यात्म रामायण—रचनाकाल १८३६ वि० ।

विविध छंदों में संस्कृत अध्यात्म रामायण के आधार पर लिखित ।

३. प्रबोधचन्द्र नाटक—संस्कृत के 'प्रबोध चन्द्रोदय' नाटक का अनुवाद ।

४. मोक्षपन्थ प्रकाश—संस्कृत के वेदांत ग्रन्थ । 'स्वराज्य सिद्धि' का अनुवाद ।

यह लड़कपन ही में विरक्त होकर घर से बाहर निकल गए और मानसिंह के शिष्य हो गए । इनके माता-पिता मानसिंह के पास इन्हें बुलाने के लिए गए और कुल-नाश की बात कही, तब उन्होंने कहा कि मैं अपने प्रत्येक ग्रन्थ में अपने माँ-बाप का नाम लिखकर उन्हें अमर कर दूँगा, घर लौटकर विवाह नहीं करूँगा । गुलाब सिंह ने अपनी बात निभाई भी । इनका जन्म संवत १७८९ के आसपास अनुमित है ।

२११. घनश्याम शुकल असनी वाले—घनश्याम जी फतूहाबाद (जिला फतेहपुर) के सुकुल थे और असनी में रहा करते थे। इनका जीवनकाल सं० १७३७-१८३५ वि० है। यह पहले रीवां-नरेश अजीत सिंह के यहाँ रहते थे । पर इन्होंने एक करचुली सरदार पर भँड़ौआ लिख दिया, फलतः इन्हें रीवां छोड़ना पड़ा । तब ये काशी नरेश महाराज चेतसिंह के दारबार में गए । संवत १८३२ वि० (१७७५ई०) में जब वारेन हेस्टिंग्ज महाराज चेतसिंह से ५० लाख रुपया जुरमाना वसूल करने काशी आया, तब शिवाला घाट वाले महल की खिड़की से निकलकर एक नाव पर बैठकर महाराज चेतसिंह चुनार की ओर निकल गए थे । इस नाव में जानेवाले लोगों में घनश्याम शुक्ल भी थे । यह कोरे कवि ही नहीं थे । उस अवसर पर इन्होंने भी तलवार के दो हाथ दिखाए थे । यह विस्तृत वर्णन डॉ० विपिनविहारी त्रिवेदी ने 'असनी के हिन्दी कवि' नामक अपने शोध-ग्रन्थ में पृष्ठ १४६-१५४ पर दिया है ।

विनोद में घनश्याम शुक्ल का जो दलेल खान वाला कबित्त उदाहृत है—'प्रबल पठान तू दलेलखान बलवान' मेरी समझ से वह अपपाठ युक्त है और इस कबित्त में औरगंजेब के किसी सेनापति दलेल खाँ की प्रशस्ति नहीं है—औरगंजेब के सेनापति का नाम दिलरे खाँ था, न कि दलेल खाँ । इस कबित्त का जो रूप डॉ० विपिनविहारी ने अपने ग्रन्थ के पृष्ठ १५२ पर दिया है, वही ठीक प्रतीत होता है । इसमें चेतसिंह के वारेन हेस्टिंग्ज के चंगुल से छूट निकलने का वर्णन है ।

हजारा में इन्हीं घनश्याम शुक्ल के कबित्त संकलित होने चाहिए, क्योंकि यह] १८७५ से पूर्ववर्ती हैं।

२२४. **चन्दन**—चन्दन कवि के सीत-बसंत कथा का एक बड़ा अंश एवं प्रज्ञा विलास का चतुर्थ विलास लाला सीताराम द्वारा 'हिन्दी सिलेक्शन्स, भाग ६, खण्ड २ में पृष्ठ १३१-६७ पर दिया गया है।

लाला जी ने चन्दन को लाला चन्दनराय कायस्थ बना दिया है। हो सकता है लाला जी ही ठीक हों।

२६६. **जसवन्त कवि** २—हजारा का रचनाकाल संवत् १८७५ है, अतः तिरवा वाले जसवंत सिंह (मृत्युकाल १८७१) की भी रचना हजारा में हो सकती है।

२८४. **जगन्नाथ १ प्राचीन**—मोहमर्दराज की कथा के कर्त्ता जन जगन्नाथ तुरसीदास के शिष्य थे, तुलसीदास के नहीं। तुरसीदास निरंजनी सम्प्रदाय के प्रसिद्ध सन्त हैं। यह द्वादश प्रसिद्ध निरंजनी महंतों में हैं और निरंजनी संप्रदाय के उद्धारक हरिदास निरंजनी के समसामयिक हैं।

२८६. **जगन्नाथ दास**—जगन्नाथ कविराय गोसाईं बिठ्ठलनाथ के दौहित्र थे। यह अकबर के समकालीन थे।

३१०. **टहकन कवि**—जैमिनीय अश्वमेध का रचनाकालसूचक दोहा यह है—

समंतसर दस सप्त सत, अधिक बरस षट बीस।
तिथत्रयोदस आषाढ़ बदि, बुध बासर सुभ दीस।।

टहकन का एक अन्य ग्रंथ 'अमर कोश' भी है, जिसकी एक मात्र ज्ञात पाण्डुलिपि पटियाला के पुरातत्व विभाग में है।

टहकन गुरु गोविन्द सिंह के दरबारी कवियों में प्रमुख थे।

—पं० चन्द्रकान्त बाली कृत 'पंजाब प्रांतीय हिन्दी साहित्य का इतिहास,' पृष्ठ २६२

३२३. **तत्ववेत्ता कवि**—तत्ववेत्ता का असल नाम टीकमदास था, इनका जीवनकाल संवत् १५७० से १६८० के आस-पास है। ब्रह्मचारी विहारीशरण ने इनका जीवन परिचय पर्याप्त विस्तार से निम्बार्क माधुरी 'नामक संग्रह ग्रंथ में दिया है।

३६०. **महाकवि देव**—प्रेम चन्द्रिका की रचना डौंड़ियाखेरा से राजा राव मर्दान सिंह के पुत्र उद्योत सिंह, जो बाद में पाटन, विहार (जिला उन्नाव) के राजा हुए, के लिए सं १७७० के आसपास हुई थी।

४१२, ४१३, ४१४, **निवाज**—तीनों निवाज वस्तुतः एक ही हैं। यह हैं निवाज तिवारी। इनका जन्म संवत १७३९ के आसपास एवं निधन सं० १८०४ के आसपास हुआ। नेवाज नाम से सरोजकार को भी भ्रमवश एक मुसलमान नेवाज विलग्रामी की कल्पना करनी पड़ी।

४२०. **नील सखी**—यह अमरेश हैं। देखिए यही ग्रंथकवि संख्या ११। सरोज में दिया इनका समय सं० १९०२ अशुद्ध है। इनका जीवनकाल सं० १७८१-१८५० वि० है।

४३८. **नवल कवि**—सूदन की प्रणम्य-कवि-सूची में नवल कवि का नाम है। अतः इनका उपस्थिति काल सं० १८१० के आसपास माना जा सकता है।

४५९. **परमानन्ददास**—अब परमानन्द सागर के दो संस्करण प्रकाशित हो गए हैं—

(१) परमानन्द सागर—सम्पादक डॉ० गोबर्द्धननाथ शुक्ल, प्रकाशक, भारत प्रकाशन मंदिर, अलीगढ़, १९५८ ई०; पद-संख्या ९३० (२) परमानंद सागर—सं० २०१६ वि०, विद्या विभाग, कांकरौली, पद संख्या १३८७।

४८३. **पुष्कर**—'रस रतन' का सम्पादन डॉ० शिवप्रसाद सिंह ने किया है, जो १९६३ ई० में नागरी प्रचारिणी सभा, काशी से प्रकाशित हुआ है। भूमिका सपरिश्रम लिखी गई है और विस्तृत एवं विद्वत्तापूर्ण है, परन्तु सम्पादन सन्तोषजनक नहीं हो सका है।

५१६. **वल्लभ रसिक**—'वाणीवल्लभ रसिक जी की' बाब कृष्णदास जी, कुसुम सरोवर गोवर्द्धन द्वारा सं० २००५ में प्रकाशित हो चुकी है। इसमें निम्नलिखित रचनाएँ हैं—

(१) वर्षोत्सव पद, (२) माझ, (३) दोहावली, (४) कवित्तावली, (५) सुरतोल्लास, (६) पद नित्य गान को, (७) बारह बाट अठारह पैंड़े।

इनकी रचना अनुप्रास एवं यमक से परिपूर्ण है।

५१८. **वल्लभाचार्य**—वल्लभाचार्य के प्रथम पुत्र गोपीनाथ जी का जन्म अरइल में नहीं,

अरइल से दो मील **पूर्व** की ओर स्थित देवरख नामक गाँव में हुआ था। यहीं वल्लभाचार्य की बैठक है। पुष्टिमार्ग में यह देवरख ही अरइल नाम से जाना जाता है। देवरख में तैलंग ब्राह्मणों की ही वस्ती मुख्य रूप से है, ये लोग अपने को अपने गाँव के नाम पर देवर्षि कहते हैं। इसी गाँव के रहनेवाले रीतिकाल के प्रसिद्ध कवि श्री कृष्ण भट्ट 'लाल' कवि कलानिधि थे। गत १ मार्च १९६६ को महाप्रभु की अरइल वाली बैठक की खोज करते-करते देवरख के दर्शन का सौभाग्य मुझे प्राप्त हो सका था। महाप्रभु के तृतीय पुत्र गो० विठ्ठलनाथ का जन्म चरणाट में हुआ था। यह चरणाट चरणाद्रि या चुनार है। यहाँ भी महाप्रभु की बैठक है। यहाँ भी मैं गत १० मार्च ६६ को पहुँच गया था।

रागसागरोद्भव में वल्लभ या श्रीवल्लभ छाप वाले जो पद हैं, वे गो० विठ्ठलनाथ जी के चतुर्थ पुत्र गो० गोकुलनाथ जी (सं० १६०८-९७ वि०) के हैं। गोकुलनाथ जी की छाप वल्लभ या श्री वल्लभ है। सरोज में वल्लभाचार्य जी के नाम पर दो पद उद्धृत हैं। इनमें से प्रथम 'बाती कपूर की जोति जगमगे' तो गो० गोकुलनाथ जी की रचना है। दूसरा पद (कवित्त) '—गायो न गोपाल..., गो० हरिराय जी का है। इसमें 'रसिक' छाप है—'रसिक कहाय अब लाज है न आवै तोहि'। 'गो० हरिराय जी के पद' में यह ६६३ संख्या पर संकलित है। हरिराय जी का जीवनकाल सं० १६४७-१७७२ वि० है। यह महाप्रभु वल्लभाचार्य की पाँचवीं पीढ़ी में हैं। १—वल्लभाचार्य, २—गो० विठ्ठलनाथ, ३—गो० गोविंदराय, ४—गो० कल्याणराय, ५—गो० हरिराम।

५१९. गो० विट्ठलनाथ—गो० विठ्ठलनाथ का जन्म चरणाट या चरणाद्रि या चुनार में हुआ था। इनकी शिष्या गंगाबाई 'विठ्ठल गिरिधरन' छाप से पद रचना करती थीं। गंगाबाई का जन्म सं० १६२८ के आसपास हुआ। इसने दीर्घ आयु पाई थी। सं० १७२६ वि० में जब औरंगजेब के उपद्रव से श्रीनाथ जी का विग्रह गोवर्द्धन से राजस्थान ले जाया गया, तब उस दल में गंगाबाई भी थी। अतः इसका देहावगमन १७२६ के पश्चात किसी समय हुआ।

५२४. बंशीधर—बंशीधर के गुरु 'श्री वल्लभ' थे। श्री वल्लभ गो० गोकुलनाथ जी की छाप है। गोकुलनाथ जी का समय सं १६०८-१६९७ वि० है। अतः बंशीधर जी का समय संवत् १६५० से १७०० माना जा सकता है।

५२५. बंशीधर मिश्र संडीलावाले—मैंने गोसाईं चरित की भूमिका में वताया है कि बंशीधर

का विवरण गोसाईं चरित के आधार पर भाषाकाव्य संग्रह में महेश दत्त जी ने संकलित किया है और इनका मृत्युकाल जो सं० १६७२ दिया है, वह भ्रष्ट है। बंशीधर जी का जन्म तुलसी के जावन के सान्ध्यकाल में हुआ और इनका देहावसान सं० १७५० के आसपास हुआ। गोसाईं तुलसीदास जी ने बंशीधर के बाप से अपने एक यात्रा काल में इनके जन्म लेने की भविष्य-वाणी की थी।

५३१. **ब्रजनाथ**—'घनानन्द कवित्त' के सम्पादक तथा 'रागमाला' के रचयिता ब्रजनाथ जी मथुरा वृन्दावनके गोसाईं थे और अंतिम दिनों में घनानन्द के संरक्षक से थे—श्री नवरत्न कपूर ने 'घनानन्दकौन थे' शीर्षक लेख में (ना० प्र० पत्रिका, संवत २०२२, वर्ष ७० अंक ३) इसतथ्य का प्रतिपादन (पृष्ठ ४४ पर) किया है।

५३३. **व्रज, लाला गोकुलप्रसाद**—ब्रज जी के 'दिग्विजय भूषण' का एक अच्छा संस्करण डॉ० भगवतीप्रसाद जी ने सम्पादित करके अवध साहित्य मन्दिर बलरामपुर से सं० २०१६ वि० में प्रकाशित कराया है। इस ग्रंथ के प्रारम्भ में ११२ पृष्ठों का एक परिचय भी लगा हुआ है, जिसमें दिग्विजय भूषण में संकलित १९५ कवियों का संक्षिप्त परिचय दिया गया है। इस परिचय को प्रस्तुत करने में डॉ० सिंह ने अप्रकाशित 'सरोज सर्वेक्षण' का सदुपयोग किया है, जिसका उल्लेख भी उन्होंने साभार स्वीकार किया है। मेरे द्वारा प्रस्तुत ब्रज जी के ग्रंथों के सम्बन्ध में जो त्रुटियाँ थी, उनका निराकरण डॉ० सिंह ने उक्त ग्रन्थ की भूमिका में यथास्थान कर दिया है। प्रकाशित होने के पूर्व सरोजसर्वेक्षण में डॉ० सिंह की शोध का लाभ उठा लिया गया है।

५३६. **व्रजलाल**—खुमान वंदीजन चरखारी वाले के पुत्र का भी नाम व्रजलाल है। खुमान का रचनाकालसं० १८३०-८० वि० है।

५३९. **व्रजपति भट्ट**—सरोज में जिन व्रजपति का वर्णन है, उन व्रजपति के २७ पद राग कल्पद्रुम में हैं। सरोज का उदाहरण रागकल्पद्रुम से ही लिया गया है। यह व्रजपति वल्लभ सम्प्रदाय के हैं और वल्लभाचार्य के वंशज हैं। इनकी वंशावली यह है—
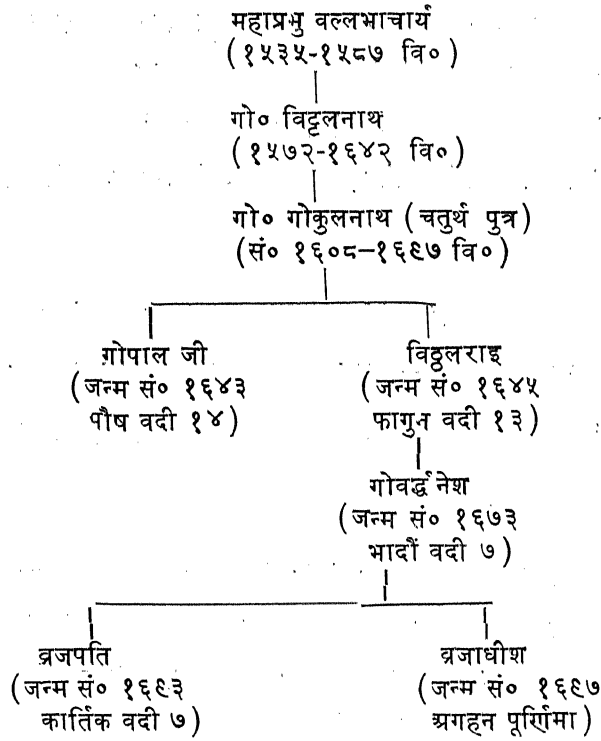
जगतानन्द ने 'वल्लभ वंशावली' में गो० गोकुलनाथ जी की तीन पीढ़ी के पाँच वंशजों का उल्लेख जन्मकाल सहित किया है। यहीं गोकुलनाथ जी की वंश परम्परा समाप्त हो जाती है। जगतानन्द व्रजपति के पिता श्री गोवर्द्धनेश जी के शिष्य थे। इसलिए उन्होंने अपनी गुरु परम्परा के सभी लोगों का जन्मकाल भी दे दिया है।

व्रजपति जी का रचनाकाल सं० १७२० स्वीकार किया जा सकता है। सरोज में दिया संवत् १६८० अशुद्ध है।

५७८. **वृन्दावनदास**—सरोज में जिन वृन्दावन का पद उदाहृत है, वे हैं निम्बार्क सम्प्रदाय के वृन्दावनदेवाचार्य। वृन्दावन जी हरिव्यासदेवाचार्य के शिष्य परशुरामदेवाचार्य द्वारा संस्थापित सलेमाबाद (अजमेर के पास) की निम्बार्क गद्दी के चौथे आचार्य थे—१. श्री परशुराम देवाचार्य, २. श्री हरिवंश देवाचार्य, ३. श्री नारायण देवाचार्य, ४. श्री वृन्दावन देवाचार्य। इनका आचार्य-काल सं० १७५४ १७९७ वि० है। इनका जन्म सं० १७०० के आसपास हुआ रहा होगा। यह गौड़ ब्राह्मण थे। महाकवि घनानन्द के दीक्षा गुरु यही थे। इनका एक ही ग्रन्थ प्रकाशित है—गीतामृत

गंगा, जो १४घाटों में विभक्त है। इसमें ५०० के लगभग अत्यन्त श्रेष्ठ पद हैं। गीतामृत गंगा वृन्दावन से प्रकाशित होने वाली निम्बार्क संप्रदाय की मासिकमुख पत्रिका सर्वेश्वर के एक विशेषांक रूप में प्रकाशित है (वर्ष १, अंक ३-६, माघ २००९ से श्रावण २०१० वि०)। सरोज में उदाहृत पद इसी ग्रन्थ के दूसरे घाट का पन्द्रहवाँ पद है, जिसे सरोजकार ने कृष्णानन्द व्यासदेव रामसागर कृतराग कल्पद्रुम से उद्धृत किया है।

५८७. **बुधसिंह पंजाबी**—बुधसिंह पंजाबी का विवरण पं० चंद्रकान्त बाला कृत 'पंजाब प्रान्तीय हिन्दी साहित्य का इतिहास' में पृष्ठ ३३८-३९ पर दिया गया है। इसके अनुसार इनका रचनाकाल सं० १८८०- १९१० वि० है। यह सिख हो जाने पर भी हिन्दू पौराणिकता का छाप से युक्त हैं। इन्होंने स्वांतः सुखाय रचना की। इनके ग्रन्थों के नाम हैं—(१) अद्भुत नाटक (२) माधवानल, (३) राधा मानम् (४) गुरु रत्नावली। अद्भुत नाटक में राजा अंबरीष की कथा है। पंजाब की गेय नाटक परंपरा में इसका चौथा स्थान है। इसमें नाटकीय विधान का पालन पूर्णरूप से नहीं हुआन। इनकी रचनाओं में साहित्य एवंभक्ति का का समन्वय है। यह हिन्दी, उर्दू, पंजाबी के एक समान कवि हैं। पंजाबा में इनकी रचनाएँ हैं - सीहरफियाँ, मांझा, बारामाँह।

५९८. **भगत रसिक**—टट्टी संस्थान वृंदावन से भगवतरसिक की समस्तरचनाओं का संकलन 'श्री भगवत रसिक देव जा की वाणी' नाम से प्रकाशित हुआ है। इसका चतुर्थ संस्करण सं० २० १७ वि० में हुआ। इसमें इनकी निम्नांकित कृतियाँ हैं—(१) अनन्य निश्चयात्म ग्रन्थ पूर्वार्द्ध, (२) नित्य विहार जुगत ध्यान, (३) अनन्य रसिकाभरण ग्रन्थ, (४) अनन्य निश्चयात्म ग्रन्थ उत्तरार्द्ध, (५) निर्विरोध मन रंजन ग्रन्थ (६) होरी धमार।

५९९. **भगवंतराय खींची**—सदानंद कवि ने भगवंत रायरासा नामक ग्रन्थ में उस युद्ध का वर्णन किया है, जो भगवंत राय और लखनऊ के नवाब सआदतअला खाँ के बीच लड़ा गया था। सदानंद के अनुसार उक्त युद्ध संवत १७९७ में हुआ और इसी युद्ध में भगवंतराय मारे गए—

"अप्सरि सुचारु चहुँ दिसि चमर चापु ढरत आनंद भयो
राजाधिराज भगवंत जू चढ़ि विमान सुर पुर गयो। १०३

दोहा

संवत सत्रह सत्तानवे कातिक मंगलवार
सित नौमी संग्राम भौ, विदित सकल संसार १०४

—खोज रि०१९२३।३६४ए

यह प्रति सावन वदी ८ सन १२५७ हिजरी (सं० १७९८ या १७४१ ई०) की लिखी हुई है।

६०४. **भगवान हित रामराय**—प्रमाद से डॉक्टर पीतांबर दत्त बड़थ्वाल ने 'योग प्रवाह' (पृष्ठ ४६४) में एवं श्री परशुराम चतुर्वेदी ने 'उत्तरी भारत की सन्त परंपरा' में (पृष्ठ ४६८) इसे भगवानदास निरंजनी की रचना समझ लिया है।

६०५. **जन भगवान**—दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता के अनुसार जन और भगवानदास दो भाई थे। इनके पदों में 'जन भगवान' छाप है। जन भगवान का तो सीधा अर्थ है। भगवान का जन (दास, सेवक, भक्त)। यह अर्थ करने पर एक ही व्यक्ति का बोध होता है, जो अधिक सुसंगत है।

जन भगवान गौरवा क्षत्रिय थे। ये बाल्यावस्था से ही गोसाईं विट्ठलनाथ के शिष्य हो गए थे। जन बड़े थे और भगवानदास छोटे। दोनों भाई गृहस्थ थे। इनका विवाह हुआ था। ये तन से गृहस्थ थे, मन से विरक्त। ये लोग दो तन एक मन थे। नित्य श्रीमद्भागवत की कथा सुना करते थे और तदनुसार कीर्तन रचा करते थे। उदर भरण के निमित्त भिक्षाटन करते थे। जिस गाँव में एक बार जाते, पुनः उसमें न जाते थे।

जन भगवान का रचनाकाल सं०१६४० के आसपास समझना चाहिए।

६२२. **मानदास**—खोज रिपोर्टों से ज्ञात, १८१७-६३ वि० में उपस्थित मानदास, १६८० में उपस्थित एवं भक्तमाल में वर्णित मानदास से निश्चित ही भिन्न हैं और दो मानदासों का अस्तित्व स्वीकार करना अनिवार्य है।

६४९. **मुरारिदास**—सरोज में इनका खण्डिता सम्बन्धी एक पद उद्धृत है। यह वल्लभ सम्प्रदास के कवि हैं और गो० विट्ठलनाथ के शिष्य हैं। इनका नाम रूप मुरारीदास था। यह खत्री

थे। पहले अकबर की चाकरी में थे। एक बार यह अकबर के साथ गोबर्द्धन की तलहटी में शिकार के लिए आए थे। यहीं इनको गो० विठ्ठलनाथ जा के दर्शन हुए और यह इनके शिष्य हो गए। इनकी कथा २५२ वैष्णवन की वार्ता में है। इनका जन्मकाल सं० १६०० के आसपास एवं रचनाकाल सं० १६४० के आसपास है।

६५६. **मनसुख** — इनकी रचना हजारा में थी अतः यह सं० १८७५ के पूर्व उपस्थित थे। सरोज में दिया संवत १७४० इनका जन्मकाल भी हो सकता है और रचनाकाल भी।

६५७. **मिश्र** — १७४० जन्मकाल भा हो सकता है, क्योंकि हजारा का समय सं० १८७५ है।

६५८. **मुरलीधर** — हजारा में मुरलीधर मिश्र की भी रचना हो सकती है।

६५२. **मनोहर कवि ३** — गौड़ीय सम्प्रदाय के मनोहर कवि की गुरु परम्परा का कुछ अंश छपने से छूट गया है। गुरु परम्परा यों है—

चैतन्य महाप्रभु
|
गोपाल भट्ट
|
श्री निवासाचार्य
|
रामचरण चक्रवर्ती
|
रामशरण चटराज
|
मनोहरदास

६९१. **मल्ल कवि**—एक टोडरमल्ल नामक कवि कम्पिला फर्रुखाबाद के रहनेवाले थे, जिन्होंने रस चन्द्रिका नामक रस ग्रन्थ लिखा था। इनकी भी छाप 'मल्ल' है। ग्रन्थ का मंगलाचरण देखिए—

"गण गणनायक सकल सुखदायक हैं,
सिद्धि के विधायक असंक अमरन हैं
गिरिजा के नन्दन अनन्दकर साधन के,
बन्दन करत मुनि ध्यान के धरन हैं

पूरन प्रकाश 'कवि मल्ल' आस करन को,
कीरति निवास सुख संपति करन हैं
दारिद हरन, मन मोद बितरन,
असरन के सरन, एक दंत के चरन हैं
——खोज रि० १९१७।१९४

९९५. मतिराम—स्व० कृष्णविहारी मिश्र एवं उनके पुत्र स्व० डॉ० व्रजकिशोर मिश्र द्वारा संपादित 'मतिराम' का प्रकाशन नागरी प्रचारिणी सभा काशी से सं० २०२१ वि० में हुआ है। इसमें रसराज, ललित ललाम, मतिराम सतसई एवं फूल मंजरी नामक ग्रन्थ प्रसिद्ध मतिराम की कृति मानकर संकलित हैं। मतिराम के नाम पर मिलने वाले शेष सभी ग्रन्थों को सम्भवतः दूसरे मतिराम की रचना माना गया है, इसीलिए इनको इस ग्रन्थावली में सम्मिलित नहीं किया गया है।

एक बार दूसरे मतिराम के भी ग्रन्थों का पूर्ण एवं सम्पादित संस्करण सामने आ जाने की आवश्यकता अभी बनी हुई है। इसमें भी चार ग्रन्थ होंगे——(१) साहित्य सार, (२) लक्षण शृंगार, (३) अलंकार पंचाशिका, (४) वृत्त कौमुदी या छन्दसार।

९९६. मंडन—मंडनकवि का नयन पचासा मुझे खोज में वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय के सरस्वती सदन में मिला है। इसकी ग्रन्थ संख्या ४५८८४ है। यह अत्यन्त सरस रचना है। यह सम्पादित रूप में नागरी प्रचारिणी पत्रिका में प्रकाशनार्थ दे दिया गया है। सरस्वती सदन का हस्तलेख प्रारम्भ में खंडित है। नयन पचासा यहाँ 'नेत्र पंचाशिका' नाम से प्रतिलिपित है। नेत्र पंचाशिका के पहले मंडन का कोई कबित्त ग्रन्थ है, जिसका पूर्वार्द्ध खण्डित है। उत्तरार्द्ध में ३२-४४ संख्यक कबित्त हैं।

७३१. रामराइ— भगवान हित रामराइ के गुरु सारस्वत रामराइ वल्लभ सप्रम्दाय के न होकर गौड़ाय सम्प्रदाय के थे। उन्होंने अपने पूर्वज जयदेव जी के गीत गोविंद का ब्रजभाषा में पद्यानुवाद किया है, जो कुसुम सरोवर गोवर्द्धन वाले बाबा कृष्णदास द्वारा प्रकाशित हो चुका है। इसका अनुवाद संवत १६२२ में हुआ था——

संवत सोलह सो बाईसा, ऋतु बंसत सरसाई
माधव मास राधिका माधव की जब लीला गाई

'गीत गोविंद भाषा' के अतिरिक्त इनकी एक अन्य रचना पदावली है, जिसे 'आदि वाणी' कहते हैं। इसमें कुल १०१ पद हैं। 'चैतन्य मत और ब्रज साहित्य' में प्रभुदयाल मीतल ने इनके जीवन और साहित्य पर अच्छा विचार किया है।

७४०. रघुनाथ प्राचीन—रघुनाथ प्राचीन के नाम पर सरोज में जो छंद उद्धृत है, उसी को शुक्ल जी ने अपने इतिहास में रघुनाथ वन्दीजन बनारसी के उदाहरण में दिया है।

७५४. रसपुंज—रसपुंज नामक दो कवि हैं—

(१) रसपुंजदास दादूपन्थी। इनके तीन ग्रंथ हैं—

(क) चमत्कार चंद्रोदय—इसका रचनाकाल संवत १८६६ वि० है।

(ख) प्रस्तार प्रभाकर—इसका रचनाकाल संवत १८७१ है।

(ग) वृत्त विनोद—इसका उल्लेख सरोज में है। 'राजस्थान का पिंगल साहित्य' में पृष्ठ २४९ पर इस पिंगल ग्रंथ का रचनाकाल संवत १८७८ दिया गया है।

यह रसपुंजदास जयपुर के थे और जयपुर नरेश प्रताप सिंह 'ब्रजनिधि' (सं० १८२१–१८६० वि०) के समय में थे।

दूसरे रसपुंज इनसे प्रायः १०० वर्ष पूर्ववर्ती हैं। यह जोधपुर निवासी थे और जोधपुर नरेश महाराज अभय सिंह (शासन काल सं० १७८१-१८०५ वि०) के आश्रित थे। 'कवित्त श्री माता जी, इन्हीं की रचना है। यह दुर्गा-स्तुति संबंधी ग्रंथ है।

विनोद (७०६) में दोनों रसपुंजों को मिला दिया गया है।

७६६. रतन कवि—रतन कवि कृत फतह प्रकाश कैप्टेन शूरवीर सिंह द्वारा संपादित होकर १९६१ ई० में भारत प्रकाशन मंदिर अलीगढ़ से प्रकाशित हो चुका है। संपादन अत्यन्त भ्रष्ट है। इसमें कुल २२२ छंद हैं। ग्रंथ के अंत में लगी पुष्पिका से ग्रंथकार का नाम क्षेमराम ज्ञात होता है, रतन कवि की छाप है। ग्रंथ में रतन ने पुराने कवियों के भी कुछ छंद उदाहरण में लिए हैं। प्रस्तावना के अनुसार फतह सिंह गढ़वाल के पँवार राजवंश के उँचासवें राजा थे। इनका शासनकाल १६९९ – १७४९ ई० (सं० १७५६–१८०६ वि०) है। प्रस्तावना में शूरवीर जी को रतन को भूषण का भाई सिद्ध करने का मोह हो गया है।

७७४,७७५.—राजाराम सरोज में ७७४।६३७ संख्यक राजाराम का यह कबित्त उद्धृत है—

"ठगी सी, न ठौर चित्त, ठोढ़ी गहे ठाढ़ी हुती,
ठौरही ठनकि परी ठाँइ दे ठनक सी
पंचबान कंचु में रोमंच रंच रंच भये,
कंचु ऐसी ह्वै गई जो कायाहू कनक सी
छनक मैं छीन भई छिगुनु तें 'राजाराम'
छबीली छरी सी परा छिति मैं छनक सी
बनक सी हनी पुनि, फनक सी खाई सुनि,
स्याम के सिधारिबे की तनक भनक सी"

और ७७५ सख्यक राजाराम का यह कवित्त उद्धृत है—

छाई छबि हीरन की, रबि जोति जीरन की,
'राजाराम' चीरन की चिलकारी अलकैं
अबला अहीरन की, पाली दधि छीरन की,
सोने से सरीरन की गारी दै दै बलकैं
पिचकारी नीरन की, मार सम तीरन की,
देव दान चीरन की माँगिबे को ललकैं
सौंहैं करैं बीरन की, उड़नि अबीरन की,
मुख लाली बीरन की, बीरन की झलकैं

मैंने सर्वेक्षण में दोनों राजारामों को स्वीकार किया है। पर दोनों के कबित्तों का तुलनात्मक अध्ययन करने पर लगता है कि ये एक ही कवि की रचना हैं। शिवसिंह को दोनों कबित्त दो विभिन्न सूत्रों से मिले थे, अतः उन्होंने एक ही कवि को दो मान लिया और दोनों को दो समय दे दिया। तुलसी कवि ने सं० १७११ वि० में 'रस कल्लोल' की रचना की थी। 'ठगी सी न ठौर चित' प्रतीक वाला कबित्त इस ग्रन्थ की छठीं कल्लोल का ३४वां छन्द है। स्पष्ट है 'रस कल्लोल' में उदाहृत राजाराम 'रस कल्लोल' का या तो समसामयिक है अथवा पूर्ववर्ती। ऐसी स्थिति में इस कवि का सरोज में दिया सम्वत् १६८० इसका रचनाकाल सहज ही स्वीकार किया जा सकता है। दूसरे राजाराम का जो समय १७८८ दिया गया है, वह ठाक नहीं। दोनों राजाराम अभिन्न हैं।

८०३ लाल कवि ४—यह लाल कवि प्रसिद्ध लल्लू जी 'लाल' कवि हा प्रतीत होते हैं। लल्लू जी ने हितोपदेश का जो गद्यानुवाद 'राजनीति' नाम से किया है, सरोजकार ने उसे भ्रम से चाणक्य राजनीति का उल्था समझ लिया है।

८०८ लालचदास—हरि चरित्र अथवा भागवत कथा में कुल ९६ अध्याय हैं। ४६वें अध्याय के प्रारम्भ में ये पंक्तियाँ हैं—

> असानंद दासन के दासा। प्रभु के चरन रेनु की आसा।।
> अरध प्रजंत कथा जब कहेऊ। संकट प्रान लालच तब भयऊ।।
> भगति करत प्रभु के मन लाए। सुरसरि निकट अर्धजल पाए।।
> उन्ह जन हरि की अस्तुति ठैऊ। क्रुस्न चरित भाषा रस कैऊ।।
> वोह जन प्रभु अस्तुति मन लीन्हा। चरित क्रिस्न भासा जो कीन्हा।।
> दसम स्कंधे भागवत होई। कंसव वध ले भाखउ सोई।
> एह बड़ सोच रहा जिउ आई। नहिँ बरनो सब गुन जदुराई।।
> मम बिनती सब संत के होई। कथा समत करी मैं सोई।।
> जेहि विधि जस गावो भगवाना। सुमिरत चरित गत भौ प्राना।।
> संमत षोड़स सै एकोत्तर गैऊ। क्रिस्न चरित हृदैं उपजैऊ।।
> हरि गुन लिखत आसानंद नाऊँ। करो कथा हरि के गुन गाऊँ।।
> काएथ जाति लोग सब जाना। तासु पिता प्रताप परधाना।।
> धरम मूरति गुन ग्यान विवेका। हृदै भगति क्रिस्न जिव टेका।।
> अरथिति ब्रीति ग्राम निज दाही। राय बरेली मंदिर ताही।।
> बिस्नु भगति हृदै मह आई। दसम स्कंध भागवत गाई।।

स्पष्ट है लालचदास ग्रंथ केवल ४५ अध्याय तक, कंस बध तक, लिख सके और दिवंगत हो गए। इस ग्रंथ को आशानंद ने सं० १६०१ बीतने पर पूर्ण किया। आशानंद कायस्थ थे। इनके पिता का नाम प्रताप था। यह रायबरेली जिले के दाही नामक गाँव के रहने वाले थे। आशानंद ने ग्रंथ में सर्वत्र लालच की ही छाप रखी है, अपनी नहीं। केवल पुष्पिका में लालच के साथ अपना भी उल्लेख कर दिया है।

लालचदास की मृत्यु सं० १६०१ के पहले ही हो गई थी। स्पष्ट है कि सरोज में दिया संवत १६५२ अशुद्ध है।

स्व० नलिनविलोचन शर्मा ने हरि चरित्र का सम्पादन प्रारम्भ किया था। सम्पादित अंश धीरे-धीरे कर 'साहित्य' में प्रकाशित होता जाता था। पर इसी बीच संपादन को अधूरा छोड़कर नलिन जी भी मूल ग्रंथकर्ता के समान दिवंगत हो गए। साहित्य में प्रकाशित अंश विहार राष्ट्र भाषा परिषद्, पटना द्वारा सं० २०२० में पुस्तक रूप में प्रकाशित कर दिया गया है। इसमें पाठान्तरों का बहुत बड़ा, पर अनावश्यक, जाल है। संपादन भी ठीक नहीं हुआ है।

लालच आशानंद के संबंध में साहित्य संदेश जून १९६२ (पृष्ठ ५७५-७६) पर एक लेख निकला है, उसी से ऊपर वाला उद्धरण दिया गया है और उसके अनुसार आशानंद जी दाही गाँव के रहने वाले थे। नलिन जी के अनुसार यह मूलतः हस्तिनापुर के रहने वाले थे। वहाँ से छोड़कर यह रायबरेली में आ बसे थे। इनका पाठ है—

हस्तिग्राम विरत सो आही
राए बरेली मंदिल ताही

साथ ही नलिन जी ने आनंद का रचनाकाल सं० १६७१ वि० माना है। इनके अनुसार रचनाकाल सूचक अंश यह है—

'खोडस सात एकोतर भएउ'

'सात' के स्थान पर सत होना चाहिए। मैं साहित्य संदेश वाला पाठ ही स्वीकार कर इनका रचनाकाल सं० १६०१ मानता हूँ।

८३४. **सुखदेव मिश्र**—सुखदेव मिश्र ने शृंगार लता की रचना मुरारमऊ के बैस राजा देवीसिंह के लिए की थी।

८५७. **शिवदीन कवि भिनगा**–शिवदीन कवि ने कृष्णदत्त रासा के अतिरिक्त एक और ग्रंथ कृष्णदत्त भूषण भी लिखा है, जो साहित्य शास्त्र संबंधी ग्रंथ है। इसमें साहित्य के सभी अंगों का विवेचन है। इसमें कुल १२ प्रकाश हैं। ग्रंथ का परिचम डॉ० आनंद प्रकाश दीक्षित ने 'कृष्णदत्त भूषण और उसका लेखक शीर्षक लेख में दिया है, जो राजस्थान यूनिवर्सिटी स्टडीज़ १९६५ में प्रकाशित हुआ है।

इस लेख में डॉ० दीक्षित ने प्रारम्भ में ही यह कहा है कि डॉ० किशोरी लाल गुप्त ने

'सरोज सर्वेक्षण' में एवं डॉ० भगवतीप्रसाद सिंह ने दिग्विजय भूषण की भूमिका में एवं हिंदी साहित्य कोश दूसरा भाग में कृष्णदत्त की रचना कर श्रेय लाला गोकुलप्रसाद व्रज को दे दिया है। यहाँ इतना ही कहना है कि एक ही नाम के अनेक कवि और अनेक काव्य होना असंभव नहीं, इस पर भी डॉ० दीक्षित को ध्यान देना चाहिए था। शिवदीन ने कृष्णदत्त भूषण की रचना की, जो साहित्यांग का ग्रंथ है। लाला गोकुलप्रसाद 'व्रज' ने भी कृष्णदत्त भूषण की रचना की। यह साहित्यांग का ग्रंथ नहीं है। इसमें नृप वंशावली, धर्म, नीति और वर्षा व्यवस्था आदि का वर्णन है। दोनों कवियों के आश्रयदाता भी अलग-अलग हैं। शिवदीन के आश्रयदाता भिनगा नरेश कृष्णदत्त सिंह हैं। व्रज के आश्रयदाता सिंहा चंदा (गोंडा) के राजा कृष्णदत्त राम पांडेय हैं। व्रज जी का ग्रंथ नागरी प्रचारिणी सभा काशी की खोज में मिल चुका है। देखिए—१९०४।७५ क,ख। इस ग्रंथ का रचनाकाल सं० १९३७ वि० है।

९१९. **सदानन्द**—भगवन्त राय रासा के रचयिता सदानन्द (सं० १७९७ वि०) भी हजारा (सं० १८७५ वि०) में संकलित हो सकते हैं।

९२२. **सेन कवि**—सरोज में सेन कवि के नाम पर जो 'जब ते गोपाल मधुवन को सिधारे आली' प्रतीक वाला कबित्त उदाहृत है, वह वस्तुतः शेख आलम का कबित्त है। इसमें 'सेन कहैं' जो छाप है, उसे 'सेख कहैं' होना चाहिए। 'आलम केलि' में यह कबित पृष्ठ ९६ पर २२९ संख्या पर संकलित है। यह रहस्य-भेद हो जाने पर अब रीतिकालीन शृंगारी सेन का अस्तित्व समाप्त हो जाता है और रामानन्द के शिष्य सेन नाई का अलग एवं अमल अस्तित्व निखर उठता है।—

९२८. **सूरदास**—जैसे-जैसे शोध होती जा रही है, केवल सूरसागर सूर की कृति के रूप में मान्य हो रहा है। सूरसारावली के इधर दो विशिष्ट संस्करण निकले हैं। एक तो डॉ० प्रेमनारायण टंडन का है, जो लखनऊ से प्रकाशित हुआ है। इसकी भूमिका में विद्वान लेखक ने इसे सूर की कृति नहीं स्वीकार किया है। दूसरा संस्करण प्रभुदयाल मीतल का है, जो मथुरा से सं० २०१४ में प्रकाशित हुआ है। इसमें इसे महाकवि सूर की हा रचना स्वीकार किया गया है। मीतल जी ने साहित्य लहरी का भी एक अच्छा सटीक संस्करण सं० २०१८ में मथुरा से प्रकाशित किया है। मीतल जी ने इसे महाकवि सूर की ही रचना के रूप में स्वीकार किया है।

डॉ० ब्रजेश्वर वर्मा ने सर्वप्रथम अपने शोध-प्रबंध 'सूरदास' में इन दोनों ग्रन्थों को सूर की रचना मानने से अस्वीकार किया था। साहित्य लहरी को अब चंद के वंशज सूर की रचना मानना चाहिए, सारस्वत ब्राह्मण एवं अष्टछापी सूर की रचना नहीं।

७५६. हरिनाथ महापात्र — डॉ० विपिन विहारी त्रिवेदी ने ,'असनी के हिन्दी कवि' में हरिनाथ महापात्र का जन्म काल सं०१६०४ एवं निधनकाल सं०१७०३ बताया है।

६६२ स्वामी हरिदास — स्वामी हरिदास जी की समस्त रचनाएँ श्री प्रभुदयाल मीतल ने 'स्वामी हरिदास जी जीवनी और वाणी' में सम्पादित एवं प्रकाशित की हैं। स्वामी जा के दो ग्रन्थ हैं—

१. सिद्धान्त के पद—कुल १८ पद

२. केलिमाल—कुल ११०पद

स्वामा हरिदास की कविता के उदाहरण में निम्नांकित दो रचनाएँ दी गई हैं—

१ जयति राधिका रमण (संस्कृत पद)

२ गायो न गोपाल (हिन्दी कबित्त)

शिवसिंह जी ने ये रचनाएँ रागकल्पद्रुम से संकलित की थीं। ये रागकल्पद्रुम द्वितीय संस्करण के पृष्ठ १००,१५० पर क्रमशः संकलित हैं। जैसा कि पहले कहा जा चुका है, ये प्रसिद्ध स्वामी हरिदास की रचनाएँ नहीं हैं। ये वार्ताओं के प्रणेता प्रसिद्ध गोस्वामी हरिराय (सं० १६४७-१७७२ वि०) की रचनाएँ हैं। देखिए प्रभुदयाल मीतल द्वारा सम्पादित 'गो० हरिराय जी के पद'—पद संख्या ६७३,६७४। गो० हरिराय जी अपनी संस्कृत रचनाओं में सर्वदा हरिराय ही छाप रखते थे।

६६३. हरिदेव बनिया वृन्दावनी — हरिदेव वृन्दावनवासी अग्रवाल वैश्य थे। इनका जन्म सं० १८६२ में हुआ था। यह जेठ सुदी ११ संवत १६१६ को दिवंगत हुए। इनके पिता रतिराम जी वृन्दावन में परचून की दूकान करते थे। हरिदेव जी ने वृन्दावन के गोस्वामी दयानिधि के यहाँ व्रज के प्रख्यात कवि ग्वाल के साथ काव्य की प्रारंभिक शिक्षा पाई थी। हरिदेव जी अच्छे कवि एवं काव्य मर्मज्ञ थे। यह चैतन्य संप्रदाय में दीक्षित थे। श्री प्रभु दयाल मीतल ने चैतन्य मत और व्रज साहित्य (पृष्ठ ३१५-१८) में इनका परिचय और इनकी कविताओं का अच्छा उदाहरण दिया है। उन्होंने इनके दो काव्य ग्रंथों 'रस चंद्रिका' (नायिका भेद) और 'छंद पयोनिधि' का परिचय प्रर्याप्त विस्तार से दिया है। उन्होंने इनके तीन और ग्रंथों का

उल्लेख किया है—(१) काव्य कुतूहल (अलंकार) (२) रामाश्वमेध; (३) वैद्य सुधानिधि।

९९४. **हरिरामदास निरंजनी** — 'छंद रत्नावली' के अतिरिक्त हरिरामदास के दो और ग्रंथ हैं—(१) परमार्थ सतसई, (२) हरिदास निरंजनी की परिचयी। परमार्थ सतसई विविध छंदों में रचित है। इसके एक हस्तलेख में ५३७ छंद हैं। और एक दूसरे हस्तलेख में साढ़े आठ सौ। छंद रत्नावली पहले प्रकाशित हो चुकी है। इनकी रचना के नमूने 'श्री महाराज हरिदास जी की वाणी सटिप्पणी व अपर निरंजनी महात्माओं की रचना के अंशांश' में अंशांश खंड के अन्तर्गत पृष्ठ१७१–१८६ पर देखे जा सकते हैं। उक्त ग्रंथ का संपादन संकलन मंगलदास स्वामी ने किया है, जो १९६२ ई० में निखिल भारतीय निरंजनी महासभा दादू महाविद्यालय मोता डूंगरी रोड, जयपुर से प्रकाशित हुआ है।

९८६. **हरिजन**—हजारा का रचनाकाल १८७५ सिद्ध हो जाने से इन हरिजन का अस्तित्व सरदार बनारसी के बाप ललितपुर निवासी हरिजन (यही ग्रंथ कवि संख्या १००१) में समाहित हो जाता है।

[उपसंहार-प्रकरण]—

१. **सरोज के संवत और ईसवी सन् (पृष्ठ ८३५-३८)**—एक और कवि का समय ईस्वी सन सिद्ध हो गया है। ये हैं ९५२ संख्यक श्री लाल गुजराती। इनका समय १८५० दिया गया है। इनका परिचय मातादीन मिश्र के कवित रत्नाकर के आधार पर सरोज में गृहीत है और मातादीन ने इनके सभी संवत ईस्वी सन् में दिये हैं। १८५२ ई० में ये आगरा नार्मल स्कूल के पहले हेडमास्टर हुए थे।

२. **पृष्ठ ८५३**—पृष्ठ ८५३ पर दिखाया गया है कि कुंदन आदि १३ कवियों का सरोज-दत्त संवत् १७३५-५५ वि० के बीच का है और इनकी रचनाएँ हजारा (रचनाकाल १७५५) में थी, अतः हजारा के रचनाकाल में इन कवियों की वय २० वर्ष से कम ही होगी, अतः इनके सरोज दत्त संवत उपस्थितिकाल ही हैं।

परन्तु अब सिद्ध हो गया है कि हजारा का रचनाकाल सं० १८७५ के आसपास है, ऐसी स्थिति में इन १३ कवियों के समय को तर्क से उपस्थितिकाल नहीं सिद्ध किया जा सकता।

३. **सरोज के संवत और जन्मकाल (पृष्ठ ८५३-५५)**—सरोज-दत्त एक और संवत जन्म काल सिद्ध हुआ है। यह संवत हित हरिवंश का है। सरोज में इनका दिया संवत १५५९

है। यही इनका जन्मकाल है।

४. **पृष्ठ ८६०-६४**—पहले सरोज के २०६ सन् संवतों की जाँच-पड़ताल नहीं हो सकी थी। अब इनमें से कुछ संवतों की और जाँच सम्भव हो गई है, जिसका परिणाम यह है।

संख्या	कवि	संवत	परिणाम
१।११	अमरेश	१६३५	अशुद्ध
२।२०	अभयराम वृंदावनी	१६०२	अशुद्ध
३।१०३	कलानिधि[१] प्राचीन	१६७२	अशुद्ध
४।१३०	कनक	१७४०	अशुद्ध
५।१६२	गिरिधर कविराय	१७७०	शुद्ध
६।२२१	घनश्याम शुक्ल	१६३५	अशुद्ध
७।२२६	चतुर बिहारी	१६०५	शुद्ध
८।२३६	चंद्रसखी	१६३८	अशुद्ध
९।२३८	चिरंजीव	१८१७ (प्र० सं०)	शुद्ध
		१८७० (स० सं०)	अशुद्ध
१०।२८६	जगनंद	१६५८	अशुद्ध
११।३११	ठाकुर	१७००	अशुद्ध
१२।४७७	पुखी	१८०३	अशुद्ध
१३।४६०	पुण्ड	७७०	शुद्ध
१४।५३१	ब्रजनाथ	१७८०	शुद्ध
१५।५३६	ब्रजपति	१६८०	शुद्ध
१६।५७८	वृंदावन दास ब्रजवासी	१६७०	अशुद्ध
१७।५८३	बंशीधर बाजपेयी	१६०१	शुद्ध
१८।६४१	मून असोथर वाले	१८६०	अशुद्ध
१९।७४०	रघुनाथ प्राचीन	१७१०	अशुद्ध
२०।७७४	राजाराम १	१६८०	शुद्ध
२१।७७५	राजाराम २	१७८८	अशुद्ध
२२।९५२	श्री लाल गुजराती	१८५० ईस्वी	शुद्ध
२३।९८६	हरिजन	१६६०	अशुद्ध
२४।९८७	हरजू	१७०५	अशुद्ध

इन नए जँचे संवतों की कुल संख्या २४ है। अतः अब जाँच के लिए केवल १८२ संवत और बच रहे। २४ नव परीक्षित संवतों में से ६ पहले ही जँच चुके हैं—

१।२२६ चतुर विहारी

२।४६० पुण्ड

३।५८३ वंशीधर बाजपेयी

इनको सरोज के 'उपस्थितिकाल सूचक संवत' के अंतर्गत ले लिया गया है, पर प्रमाद से ये कवि अपरीक्षित संवत वाले कवियों में भी पुनः सन्निविष्ट हो गए हैं। इन तीनों के संवत उपस्थितिकाल हैं।

इसी प्रकार निम्नांकित तीन कवियों के संवत 'सरोज के अशुद्ध सिद्ध संवत' प्रकरण में सन्निविष्ट हैं—

१।२३६ चन्द्रसखी

२।२८६ जगनन्द

३।४७७ पुखी

जाँच से इनके संवत अशुद्ध सिद्ध हुए हैं।

५. सरोज के तिथि हीन कवि और उनकी तिथियाँ—इस प्रकरण में कुल १३० कवि हैं। इनमें से ३८६ धोंधे दास और ८३१ वाहिद की तिथियाँ ज्ञात हुई हैं और इन्हें 'सरोज के तिथिहीन कवि और उनकी तिथियाँ में समाविष्ट कर लिया गया है; पर प्रमाद से ये उन तिथिहीन कवियों की सूची में पुनः सन्निविष्ट हो गए हैं, जिनकी तिथियाँ अभी तक नहीं मिली हैं।

६. एक से अनेक कवि (पृष्ठ ८७६–८०)—इस प्रकरण में ५६ कवियों की सूची दी गई है, जो सरोज में १२५ कवियों के रूप में स्वीकृत हैं। इधर कुछ और कवियों की भी एकता सिद्ध हुई है। ये हैं—

(१) श्री कृष्ण भट्ट कवि कलानिधि 'लाल'

१।१०३ कलानिधि प्राचीन १

२।१०४ कलाविधि २

(२) अमरेश कवि

१।११ अमरेश

२।४२० नालसखी

(३) नेवाज ब्राह्मण

१।४१२ निवाज कवि १ जुलाहा
२।४१३ निवाजा कवि २ ब्राह्मण
३।४१४ निवजा कवि ३ ब्राह्मण

(४) रघुनाथ

१।७३८ रघुनाथ बनारसी
२।७४० रघुनाथ प्रवीन

(५) राजाराम

१।७७४ राजाराम १
२।७७५ राजाराम २

(६) हरिजन

१।९८६ हरिजन
२।१००१ हरिजन

७. **सरोज की कवयित्रियाँ** (पृष्ठ ८८५-८६)—चन्दसखी (२३९) स्त्री नहीं हैं, पुरुष हैं। सेख का अस्तित्व अब आलम में पूर्वरूपेण मिल जाना चाहता है। सेख आलम की पत्नी नहीं हैं, स्वयं आलम हैं।

८. **हिन्दी साहित्य का आदिकाल**—पुण्ड चार नामों से मिलता है, पुण्ड, पुष्प, पुष्य, पुखी। कवि का वास्तविक नाम पूष है। इसने संवत ७७० वि० में एक रचना प्रस्तुत की थी, जो चित्तौर में मान सरवर तालाब की एक शिला पर उत्कीर्ण है। सम्भवतः यह लेख संस्कृत भाषा में है। सरोजकार ने इस कवि के सम्बन्ध में जो कुछ कहा है, प्रायः सभी भ्रामक है। इस सम्बन्ध में मैंने विशेष रूप से अपने एक लेख में विचार किया है। अब इस कवि को हिन्दी साहित्य के इतिहासों से हटा दिया जाना चाहिए।

शुद्धि-पत्र

['सरोज सर्वेक्षण' में छपाई की अनेक भूले हैं । इनमें से जिनकी शुद्धि अत्यावश्यक है. उनकी सूची नीचे दी जा रही है । पाठक शुद्ध करके इस शुद्धि-पत्र को फाड़ कर फेक दें । जो अशुद्धियाँ सामान्यतया सरलतापूर्वक शुद्ध की जा सकती हैं, उन्हें पाठकों के लिए छोड़ दिया गया है । व्यक्ति-वाचक संज्ञाओं, सन् संवतों एवं अन्य संख्याओं तथा छंदों में हुई अशुद्धियों को यहाँ विशेष रूप से संकलित कर दिया गया है ।]

पृष्ठ-पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ-पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१६/५	सरोजने	सरोज में	१२	काव्यभरण	काव्याभरण
पाद टि०	१६२३,२५२ए	१६२३/२५२ए	२७/१	जयवंत	जसवंत
२०/८	महाबीर	महा बीर	४	नाकिया	नायिका
२३	रन	रज	३४	अनयोक्ति	अन्योक्ति
२१/१७	पंडित	पंडित।	२८/१६	चक्राव्यूह	चकाव्यूह
३३	आयुर्वेदै	आयुर्वेद	२६/२०	भारतपुर	भरतपुर
२३/१०	कारण ही	कारण ही।	३०/१	वृहत्	वृत्त
२६	कीड़ियो	कौड़ियों	३१/२	द्विवेदी	द्विजदेव
२४/३	में हैं	के हैं	१३-१४	कोष्टक दोनों सुखदेव मिश्रों में लगना चाहिए।	
६	लाल	लाला			
२८	कल्पदुम	कल्पद्रुम	१८	देवनह	देवनहा
२६	आनल्स	अनल्स	३२	बनिया।ज	बनिया
पाद टि०	२२२	पृष्ठ २२	३२	पेतैंपुर	पैंतेपुर
२५/४,६	अक्षण	अक्षर	३४	गिंह	सिंह
२६/८	पद्ममावती	पद्मावती	३२/१-२,४-५	कोष्ट्क अनावश्यक है ।	

३२/१९	मतीराम	मनीराम	४७/२५	स्वतंत्र	स्वतंत्रता
३०	नारायाण	नारायण	२९	देओकी नंदन सुकुल	
३४/६	सकी	सकती			देओकी० नंदन० सुकुल
७	काल	काल ।	४८/३२	मेरा,	मेरा
२२	बात	बाद	४९/१७	नहीं	नहीं ।
३५	इस	इसमें	५०/२२	६५-८८६	६५ = ८८६
३५/२	१८३३	१८८३	५१/१५	७०-७२	७०,७२
३७५	कविता	कबित्त	५२ ९	२८७	३८७
७	नदर्न/	×	२६	६६८-६७२	६६८,६७२
३९/१८	गार्सा	गार्सां	३१	'सरोज दत्त संवत से पूर्व	
१९	ऐंदूइ	ऐंदूई		उपस्थित २७८—	
२२	गई है	गई है ।		इसको एक पंक्ति नीचे होना चाहिए ।	
२७	कवियों को	कवियों को	५३/१	नहीं	निश्चित नहीं
४०/२४	नदर्न हिंदुस्तान	हिंदुस्तान	४	संवतों	संवतों वाले कवियों
४१/१६	राम्बत्	संवत्	१३	१०७२	१००२
२६	ओर, से	ओर से'	२०	रघुनाथ	रघुराज
४२/१६	नदर्न	×	२१	ग्रियर्सन ने	ग्रियर्सन में
३१	अपनी	असनी	२२,/२६	द्वितीय	तृतीय
४३/२८,२९	नदर्न हिंदुस्तान	हिंदुस्तान	२३	रहा	रह
४४/८	सस्मत	समस्त	२४	गये हैं	गये हैं ।
१६	लिखने का	लिखने के	५४/१८	७३८	७३७
२५	प्रत्यक्षीकरण	प्रत्यक्षरीकरण	३१	१८५९३	१८५-९३
३२	निम्ना	निम्न	५५/३	६२२	६०२
४५/७	कृष्णानंद,	कृष्णानंद	४	४२	४३
४६/१८	इसकी	इनकी	१०	—४८२	= ४८२
३५	ग्रंथ के इस	इस ग्रंथ के	३४	७४१	६४१
४७/२०	नियमों	दो नियमों	५७/७	१५१	१४१
२४	साहियत्य	साहित्य	५८/३७	इनमें	इनमें से

६०/२	९४९	९४०	७४/१	की	को
६१/१३	१९	१८	२५	दुलह	दूलह
२९	सभा	सभा ने	३१	विजैन	विजै
६२/३	विनोद का	विनोद	३६	मतिराम	मतिराम
७	गया है	गया है।	७५/१५	सनेह	सनेही
११	मिलेगा	भी मिलेगा	७६/११	उधृत	उद्धृत
१८	नदर्न हिंदुस्तान	हिंदुस्तान	७७/१३	संपादक	संपादन
६५/२९	८५	८६	८१/३१	मतिराम	पतिराम
३१	कोलीराम	ओलीराम	८२/२३	द्वितीय···	किया है'—इस
६६/१०	मीरामाधव	मीरी माधव		वाक्य को	निकाल दें।
१४	पंक्ति के अंत में इतना और जोड़ लें-		१६	रतनाकर'	रतनाकर;
	(८६) मोहन कवि (३)		३२	पिठी	पीठि
६७/२४	बंगला	बँगला	८३/९	कहीं	कहीं कही
,,	सरोजाकार	सरोजकार	१६	बुँद	बुंद
,,	ग्रन्थों	ग्रन्थ	८४/२	प्यारी	प्यारो
६८/९	हितराम राय	हित रामराय	१७	रंगी	रँगी
१८	२०७	२००	३०	ह्वै, गई	ह्वै गई
२९	नायिक	नायिका	८५/१०	सौगुनी	सौगुनो
७०/२१-२२	राम सखी	×	२७	अंगिया	अँगिय
२७	भी	भी।	२९	सब	सन
७१/१५	दूहल	दूलह	८६/२	गोविन्द	गोविंद
२८	११	१२	८	दिसी	दिसि
३१	तुल्सी	तुलसी	८७/६	भाले	घाले
३२	रसिया (१०)	रासिया	२६	नति	नीति
३३	(१०)	(११)	८८/१	के	की
	(११)	(१२)	८९/१७	गंभीर	गँभीर
७३/२७	१७८०	१८०३	२१	सिँग।र	सिँगार
३०	मिश्र सुखदेव मिश्र	'मिश्र सुखदेव' के मिश्र	२४	छनकी	छनकौ

९०/१८	सोमनाथ।	सोमनाथ का।	१२	सर्वसार उपदेश	विचार माला
९१/४	अलग	अलग अलग कवि		सर्वसार उपदेश—एक पंक्ति में	
२	तृतीय	प्रथम, द्वितीय, तृतीय		विचारमाला—दूसरी पंक्ति में	
५६	संस्करण	संस्करणों	२३	शुखदेव	सुखदेव
९३/९	वाह्य	बाह्य	१०८/८	हिमाचलराव	हिमाचलराम
९६/३	निांत	प्रस्तुत	१२	नामक	नाम
९७२६	कधू	वधू	१४	नहीं है	नहीं
३२	नामक	नायक	१५	इनका	इनकी
९८/१८	इसका	इनका	२५	लिषंतम्	लिषतम्
२०	९ निधि	निधि[९]	३३	कवियों के	कवियों के साथ
२६	में दिया है।	दिया है।	१०९/७	भूमिका के	भूमिका में
९९/२२	रस[१]	रूप[१]	,,	संग्रह ग्रंथ	×
२४/२७	चक्राव्यूह	चकाव्यूह	१६	१८७२	१८७८
१०१/१४	रस साहि	रूप साहि	,,	१८७८	१८८३
१४	रस विलास	रूप विलास	१७	लिथो	लीथो
२२	में १७९८ उ०	१७९८ में उ०	११०/२६	निश्चित	निश्चय
२५	आई के	आइ के	३२	इ०	ई०
१०१४	सुदी	सुदि	१११/६	राममनोहर	राय मनोहर
१०	तृतीया	तृतिया	११३/१३	कवियों का	कवियों के
१०/३७	राजरूप का ख्यात	राजरूप का ख्यात	११६/२३	रामचन्द्रोदय	रसचन्द्रोदय
१०/४२	थे।२	थे।	२७	हुए है	हुए हैं
२०	बेंदी, वाले	बेंती वाले	३५	ऋतु,	ऋतु
३२	१८७०	१८९०	११७/२	मिली	मिलीं
१०५/५	कोयल	ओयल	६	छंद,	छंद
१०६/११	५७	६७	१८	है,इनके	है," "इनके
१८	छेल	छैल	२१	दाऊ, दादा	दाऊ दादा
३५	वाह्य	बाह्य	२२	मंडन,	मंडन
१०७/१	का सरोज में दिया हुआ	के सरोज में दिए हुए	११८/११	लिखा है	देखा है
			२०	उसी	उस

२२	१८९३	१८८३	१३९/१५	संबंध	हरि-संबंध
११९/३	ग्रंथ	ग्रंथों के	१४०/५	अंशपूर्णरूप	एक अंश
१०	कवियों के	कवियों	१६	१८१७	१८१३
११	गया है।	गया है,	१४१/२६	१९३२	१९३३
१९	माला	कविमाला	१४४/६	आदि	आदर
१२०/५	कवि की	कवि	१३	१९२६	१९०६
६	सो लिख्यातै	से लिख्यते	२८	१९०६	१९०९
१२२/५	बरेधा	बोधा	३५	१९२६कर बी	१९०६।२ बी
२४	दूत	दुत	१४५/२८	साजत	माजम
२५	का	के	३०	काको	ताको
१२३४,५	रिपोर्ट	रिपोर्टें	३०	मनसजदा	मनसबदा
५	रही	रहीं	१४६/५	फरके	×
७	१९४०	१९४३	१६	बिसदावली	बिरुदावली
१८	४६ की	४६ बी	२१	मास	पाख
१२४/७	नदर्न	×	१४८/२९	सीता	रीता
१६	टाँड	टाड	१४९/२	किशोरा	विहारा
२२	दयाशंकर	मयाशंकर	४	महती	महली
३२	लिखित	लिखित और	१५०/१	गणेश	महेश
१२८/११	मायाशंकर	मयाशंकर	२५	कीन्ह	कील्ह
१३०/६	पुत्र	पिता	१५१/३	अकोर सरोज"	अकोर"
१३५/२८	१३२०	१९२०	१५२/३	१९२४	१९३४
३३	विसमता	वैष्णवता	११	हुआ था	हुआ था[२]
१३६/४	१७१०	१७९०	१७	१९२६	१९२३
१३७/३	ई०	वि०	२१	इति	इहि
१३	पुस्तिकाएँ	पुष्पिकाएँ	१५४/१२	चारन	वारन
३२	१८२४	१८।२४	१५५/३३	सेहरी	सेहरो
१३८/९,१५	१७५०	१८७५	१५६/९	दवै ओस	द्वै बीस
३०	पूरवी	पूर्वी	१०	मिगनर	मिगसर

पृष्ठ/पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ/पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१५६/२८	से	में	१७६/१	कल्यापि	कस्यापि
१५७/२०	दिवि	बिबि	५	छाय	छाप
१५८/१६	१७६६	१७७६	२८	किशोर	किशोर,
पाद टि०	वही	यही	१७७/५	१७४०	१६४०
	८१	८४	१७९/२०	१९०६,	१९०६।
१६०/२८	१७५०	१८७५	१८०४	भांडर	भांडेर
१६१/१९	पवार	पवार,	३६	१७५०	१८७५
१६२/३५	स्टेट,	,स्टेट	१८१/९	भेद	नायिका भेद
१६३/५	नागेन्द्र	बलभद्र	१८२/३१	देवी विनय	देवी विनय[3]
१५	तज	तब	तीसरी पाद टिप्पणी जोड़िए (३) खोज रि० १९०६/२७७		
२२	की	को			
१६४/२५	१६५४	१६६४	१८३/	पाद टिप्पणी एक को हटा दीजिए	
१६५/अंतिम पंक्ति	केशवराय	केशवराम	१८५/२५	मैंने	मैन
१६७/१८	हराम	करत हराम	१८७९	काशीगति	काशीपति
२१	गुदा	गूदा	२२	१७९२	१७५२
२४	जोन	जौन	२९	लोकभाषा	लोक भाषा में
३१	रहना	रसना	३३	आलमगीर	आलमगीरी
			१८८/१५	१६६०	१६८०
३२	नथुनी	नथूनी	१८८/२४	काशीनाथ	काशीराम
१६८/१४	कंत कित	कंटकित	,, ३१	वंशमुख	वंश के सब
२१	पहिदिया	पहितिया	१८९/अंतिम पंक्ति	१५	९५
१६९/११	कविता	कर्ता	१९१/१४	दूसरे दूसरे	दूसरे
			१९२/२२	१७५०	१८७५
१७०/४	चदियो	चढ़ियो	१९३/३१	जम्म	जन्म
१७२/पाद टि०	१८	२८	१९४/११	राय	राव
१७३/१५	बुद्धू	बुद्ध	२०१/अंतिम पंक्ति	१९२६	१९२६/२४५ बी
२९	लाला में	लीलायें	२०५/२५	जमुनावती	जमुनावती
१७४/१२	सखी सुत	सखी सुख	३०	जिसमें	/१५५६ में
१७५/११	चांद्रिका	चंद्रिका	अंतिम पंक्ति	डॉ० बदरी	डॉ० बदरी नारायण श्रीवास्तव
१९	१६७	१६७९			

२०६/२७	उदय	उदयपुर	२३८/२५	को	को, को
२०७/३०	जिले,	जिले	२३९/८	नागारि	नागरी
२०९/१	भक्तमाल	का उल्लेख है।	२३	१९०६/२	१९०६/४२
		वह भक्तमाल	२४०/६	का अंतिम वर्ष	के अंतर्गत
२१०/३१	कृष्णदास हैं	कृष्ण-भक्त हैं	३४	किरिान	किरवान
२१३/३५	सात	में सात	,,	भुजावन	भुजान
२१४/७	बास	बरस	२४६/१	शज	वंशज
२१	(निरर्थक)	(निरर्थक	२४७/२९	(४)	४
२२	नहीं है।	नहीं है।)	२५०/५	गोविंद, अष्टम	गोविंद अटल
२१५/१५	कृपा	कृपाल	११	भूत	मूल
२६	से	में	२५१/१	वितास	विलार
२१६/२५	१८७६	१८७३	७	हैंनति	तिन्हैं
२१८/अंतिम पंक्ति	३८३	३४३	१०	तासु	रच्यौ तासु
२२०/१४	लखशिख	नखशिख	१२	लोक	लेखक
१५	गान	भाग	२५१/२४	थन्ग्र	ग्रंथ
२२२/३०	मयाशंकर	मयाशंकर याज्ञिक	२५	लरो	रोला
२२३/२५	राजन	राजा	२६	ड़छो	छोड़
२२४/२६	भूषणदास	भूषणदाम	३३	नामा	नाभा
२२५/२६	संस्करणों	संस्करणों	२५२/१	भारतपुर	भरतपुर
	में नहीं है।	में नहीं है।	११	गोद	गोविंद
२२७/१७	कालिका	मालिका	२५	कांरोकोली	कांकरोली
१९	भर	पर	२५३/८	कर्नभिनर	कर्नभिरन
२२९/१९	से	सरोज में	१७	चपित	पंचपति
२३१/२५	वत	तब	२५४/५	मैपैतेपुर	पैंतेपुर
२३२/२९	गुरु	गुरु काह	१७	गजात	गाजत
	काह	×	२४	मेंटी	भेंटी
२३३/७०	सुढ़ालिया	सुठालिया	२५५/७,१६	पर्व	पक्षी
२३५/२४	रसिकोत्रंस	रसिकोतंस	३३	कवि तानि	कवितानि

२५५/३३	सुमेभ्रन	सुमेरुन	२७४/२१	काध्य प्रकाश	काव्य प्रकाश
३४	जतदावन	जल-दानन	२७७/१६	खरा नोन	खारी नोन
,,	सिंधु न	सिंधुन	१७	ये तो	येतो
२५६।१	सुभती	सुभली	३२	दोह	दोहों
२	को	की	२७९/२६	आरंभ	आसपास
१०	ले	ते	२८०/२	इनकी...	(इनकी...
११	नैवध	नैषध		हैं।	सुंदर हैं।)
२६	तीजो	लीजो	११	इनकी	(इनकी कविताएँ
३०	कृते	करिते		सुंदर कविता है।	सुंदर हैं।)
३३	नमं	नभ०	२८१/५	गौरखा	गौरवा
२५९/२	दूसनि	दसमि	/११	कल्पद्रुम	राग कल्पद्रुम
५	षण	दूषण	२८२/२४	ि है क	है कि
७	इन ग्रंथों	इस ग्रंथ	३१	शिक्षा	दीक्षा
२६०/८	जयवंत	जसवंत	२८६/१४	बरतत	बरनत
१९	१३।	१३,	१७	गोपीनाथ	गोपानाथ
३५	१८५७	१८७५	२८७/१०	वैस	बैद्य
२६३/५	ज० सं०	सं०	२६	चंद्रलता	चंद्रलाल
२६५/१५	बेचन	बचन	२८८/२	खोचियों	खीचियों
२६७/१६	मालवां	मल्लावां	१८	बन	बनत
२६९/२३	अ्रष्टद	अष्टदश	३१	अब दुस्समद	अबदुस्समद
२७०/२८	१७५०	१८७५	३४	ग्राम	राम
२७२/६	११,४९	११४९	२९०/८	दूजा	दूजो
२७३/८	की	का	२९१/८	कविता	कवित्तों
२४	चक्षुर	चतुर	२९३/१४	हजारा…हैं।	(हजारा…हैं।)
२६	विवरण	विवरण में	२९५/३५	अहेर	अटन
३०	नाम दिया	दिया	२९६/१४	यह महा	महा
२७४।१	छछममा	छमछमा	२९७/५	चुनि बनि	गुन धुनि
२७४/२१	ग्रंथ	भारी ग्रंथ	५	रसखान	रसवान

२९७/१८	सुख	सुभ	३३०।३	उसका	पसका
२९८/६	अजवार	जनवार	१६	पुर	पुरी
३६	वह	बहु	२२	लुनौ	लुनी
३००/१	और	औ	३३४/७	५२३	३२३
३०३/२७	डलमरू	डलमऊ	२१	हजारा···हैं।	(इनके हजरा में
३०४/३१	इनका	इनकी			कवित्त हैं।)
३०५/२४,२५	नामा	नाभा	२६	,,	,,
३०६/२९	बोफ	बोध	३१	अतप	अलप
३०७/२५	का	को	,,	यामत	न्यामत
३०८/२३	७६०	१७६०	३३६/११	थे	थे[1]
३१०/३१	पर्वंगम	पवंगम	३३६/१५	तेहन	लहन
३१२/१९	इनके···चोखे हैं।	(इनके···चोखे हैं।)	२०	(निरर्थक)	(निरर्थक;
२७	कवि	कबित्त	,,	नहीं है।	नहीं है।)
३१३/६	इनके···चोखे हैं।	(इनके···चोखे हैं।)	,, — पाद टिप्पणी संख्या दो को हटा दें।		
३१५/२९,३०	बारिबंड	बरिबंड	३३७/२	निरर्थक	(निरर्थक
३१८/१०	१८५०	१८७५		नहीं है।	नहीं है।)
३१९/५	१८५०	१८७५	३३७/१४	तोषमणि[1]	तोजमणि[2]
२९	१७५०	१८७५	,, पाद टि० जोड़िए—(१) देखिए यही ग्रंथ		
३२०/६	इनके···में हैं।	(इनके···में हैं।)			कवि ३९२
८	१८५०	१८७५	,,	(१)	(२)
१७	इनके···में हैं।	(इनके···में हैं।)	३३८/७	१९१२,१८९,	१९१२।१८९,
२०	१७५०	१८७५	१९	सौ	औ
३२३/८	यह···थे।	(यह···थे।)	३३९/१२	दत्त	दल
१८	अकबर···थे	(अकबर···थे।)	३४०/३	कीन्ही	कीन्हो
३२४/१८	कोठवा	कोटवा	६	मुभ	सुभ
३२५।९	१२५	१०५	११	साहित्य	साहित्य[2]
१४	१९१२३	१९२३	३४१/पाद टि०	खोज	(२) खोज
३२६/१८	नाभ	नभ	३४३/२३	पितामह्	पितामह् का

३४५/१७	और	औ	३७१/११	राज	राजा
३४६/७	अरवत	अरवल	२६	नारिंद	नरिंद
३४६/१९	होय	हीय	३७७/१०	बैला बाटी	चेला चाटी
३६	का	नाम का	३०	में	मैं
३४८/	पाद टिप्पणी ३ को हटा दें।		३२	सरसा	सरसी
३४९/११; १२; २८	लाल कृपाल	लाल	३७९/१२	इन्हीने···की है।	(इन्होंने···की है।)
३५०/१३	पद्य	पद।			
३४	लाल कृपाल	लाल स्वामी	१६	गढ़	हाल गढ़
३५१/पाद टि० ४०		४०८	३८१/२०	संबंध	हरि-संबंध
३५५/१५	अयुक्ति	अत्युक्ति	३८२/२५	काम	फाग
१६	खर्गुसे	खर्गु लै	पाद टि०	भक्ति	×
३५७/पाद टि०	(१) माधुरी	(२) माधुरी	३८६/१	कालि	बालि
३५८/१५	सुभाग	सु बाग	३९०/३३	रोग···	राग···
३५९/पाद टि० ४१२		४१	३९२/५	नीमरावा	नीमराना
३६२/२८	अष्टयाम भारत	अष्टयाम	३९५/२३	सम	सुभ
३६६/२०	सबली	सखली	,,	खस	जस
३२	चंद्रिका है[५]	चंद्रिका[६] है	२५	दारि	वारि
,, पाद टि० पंक्ति२।४७	१९१७ ए	१९१७।४७ए	२६	सवाल	सबाब
पाद टि० जोड़िए	(६) खोज रि० १९०१।५७		२७	खरम	खुरम
३६७/३	१४८०	१८४०	२८	कल	फल
,,	ही है।३	ही है।	३९७/११	कर कसेर की	फरकसेर को
७	१७१२	१७५२	,,	मो हक	भो इक
३६७।पाद टिप्पणी १ को हटा दें।			२०	की	को
,,	(२)	(१)	२२	खान मुसले	खान या मुसले
,,	५०१	५०६	३९८/२३	रखयन	रखैयन
,,	(३)	(२)	३९९/१	तिस सहत	बिस महत
३६८/१५	को महिमा	की महिमा	१५	'ग्रंथ	भे ग्रंथ
३३	गतला	गलता	४००/५	इन्होंने···की है।	(इन्होंने···की है।)
३७०/२५	ब्रह्मोत्तरं	ब्रह्मोत्तर	४०१/१७	गौड़	गौड़ीय

४१६।२६	उतार	उतारे	४४७/१६	पुष्पी	पूषी
,,	की	को	२४	काल	भाषा
४१७/१०	नाने	नोने	३६	इनका···है।	(इनका···है।)
४२०/११	सिंगारही	सिंगार की	पाद टि०	हुॉड	टॉड
२६	श्रुति	श्रति	,,	हाँड	टॉड
४२१/ पाद	माया	मया	४४८/८	कालकाराव	फालकाराव
४२२/१०	बटकि	चटकि	,,	अनोवान	अनोवाम
३०	१७५०	१८७५	/११	म्बन्ध	संबंध
४२३/४	१७५०	१८७५	४५१/२५	बघेली	बघेल
४२५/१०,१६	चकव्यूह	चकाव्यूह	४५२/२२	बघेली खंडी	बघेलखंडी
४२६/२२	लखनऊ	डलमऊ	२३	छपामुखांभ्युदित	छपामुखाम्युदितं
४३०/१६	यह था	था	४५४/२१	था	किया था
१७	उल्लेख	यह उल्लेख	४५५/२२	बलदेल	वलदेव
४३२/१५,२५,२५	अनिन्दद्य	अनिन्य	४५७/३१	के	से
४३४/६	पहला	पहलाद	४६०/१४	हित०	हित
४३५/२८	राय सिंह	राम सिंह	पाद टि०	१६२१	१६२३
४४०/२	१५७०	१५६०	४६२/२५	हुआ और	हुआ
४४१/२१	इनके—हैं।	(इनके—हैं।)	४६६/अंतिम पंक्ति	नित	रचित
४४२/१८	इनके—हैं।	(इनके—हैं।)	४६७/२०	इनेंहने	इन्होंने
४४४/	पाद टिप्पणी जोड़िये—		४७२/१५	इनके...हैं।	(इनके···हैं।)
	(५) देखिए यही ग्रन्थ, पृष्ठ २४१		४७३/७	इनके···हैं।	(इनके···हैं।)
४४५/१२	मोम्हमदी	मोहम्मदी	४७४/६	छीया	छीपा
१७	मोहे	पांडे	२१	मरीज	सरोज
४४७/२,४	राम	राय	४७६/२१	दिग्विय	दिग्विजय
१४	Pushha	Pushha	२२	भूषण	भूषण,
१७	Puhha	Pushha	२७	सोह	सोहत
१८	Verseel	Versed	२८	प्रतत्यच्छ	प्रत्यच्छ
४४७/१६	कदण	करुग	४७८/२१	मेहनीन	मेहनौन

४८०/२६	त्अयन्त	अत्यन्त	५०१/२०	इनके···हैं।	(इनके···हैं।)
४८१/२१	निचत	निश्चित	५०३/३१	परिभाषा	परिमाण
४८२/६	में महेवा	मेंह हवा	५०४/२,३	इनके···हैं।	(इनके···हैं।)
४८३/२१	इनके···हैं।	(इनके···हैं।)	पादटि०	९९	१९
४८५/१०	पुका	पुष्पिका	पाद टि०(३) को हटा दें।		
१२	अलंकार एवं अलंकारादर्श दर्पण		५०५/पाद टि० बढ़ाइए-(१)खोजरि०१९२६/४३		
		अलंकारादर्श एवं अलंकारदर्पण	,,	(१)	(२)
४८६/५	की	को	,,	(२)	(३)
४८६/१८	टोकाए	टीकाएँ	,,	(३)	(४)
१९	ककीर	कबीर	,,	(४)	(५)
२७	विनय पत्रि	विनयपत्रिका की टीका	५०६/१७	राम	सम
४८७/११	लजी	शुक्ल जी	२४	ई०	वि०
,,	इतिहास	इतिहास में	२६	५८	५२
१४	'ग्रन्थ-शांति	ग्रन्थ 'शांति	पाद टि०	१०	१८
४९०/१८	अर्थ	अथ	५०८/२९	माँगै	भागे
४९१/२१	मार्तंड	मातंग	५१०/१०	बादीराय	लाला बादीराय
२४	भाम नगर	भाग नगर	१३	मक्ख	मक्खन
४९३/पाद टि०	पैरा १२	पैरा १, २	३१	ऐसे कवित्त, ऐसे शिवराज	
४९४/३	मिरजापुर	गिरजापुर			ऐसे-ऐसे कवित्त शिवराज के
४९६/१८	८३०	= ३०	५११/६	वंदी	बूंदी
२२	बड़ा	कड़ा	१३	राज	राजा
२९	से	सै	२७	मनिराम[3]	मनिराम
४९७/१३	गदे	दे	२८	है।[3]	है।[2]
४९८/७	वृन्दवन	वृन्दावन	३२	प्रकाश[4]	प्रकाश[3]
२९	१५६	२५६		पाद टि० ४ हटा दें।	
४९९/३२	१७५०	१८७५	५१२/१७	का	को
/पाद टि०(२)	राजस्थानी	(३)राजस्थानी	१९-२०	कवि···का पुत्रथा	×
५००/५	इनके···हैं।	(इनके···हैं।)	२६	दुर्गाधिराज	गढ़ा दुर्गाधिराज,

५१२।२६	लक्ष्मी,	लक्ष्मी	५३९/२१	१७५०	१८७५
२७	महाधिराजधीरा	महावीराधिवीर,	५४०/१८	क़तलोल	कल्लोल
		राजाधिराज	५४१/५	कविता	कबित्त
५१३/१४	कवि,	कवि	८	हथनाल	हथनालैं
३२	एक सौ	एक सी	९	तानि	तरनि
५१४/२०	अलंकार···गया है	×	१८	किया है	काल है
५१५/७	मूलनास्ति	मूलोनास्ति	२६	लिखा	लिखी
७	कुतो	कुतः	२९वीं पंक्ति के बाद छप्पय का चौथा चरण		
५१६/९	हित चरित्र और	×	छूट गया है—		
,,	के अंश हैं	का अंश है	कवि मुकुंद तहँ भरत खंड उप्परहि विसिक्खिय		
५१९/५	इनके···सुन्दर हैं।	(इनके···	३१	खग्य	खग्ग
		सुन्दर हैं।)		अग्य	अग्ग
१९	किया	लिया		अग्य	अग्ग
५२१/१४	१९३८, १० ए	१९३८/१० ए	५४२/१०	हम	हय
५२३/२९	भमवानदास	भगवानदास	२७	खेल व	खेल
५२७/पाद टि०	१९४७/७२	१९४७/२७२	५४४/२९	मन	मून
५२८/२१	निपटरंचक	निपट, रंचक	५४५/४	मन	मून
५३१/९	पद्पुराण	यह पद्म पुराण	१०	सुभनस्तु	सुभमस्तु
५३२/पाद टि०	६५	६५१	११	मूल	मून
५३३/१३	धव	अब	५४७/१९	देह	देइ
५३४/११	१७५०	१८७५	२२	अपनी	अपनौ
/२८	प्रमादत्वरा	प्रमाद त्वरा	५५०/१३	भांव	गांव
५३५/११	घोर	और	१६	ला	ता
३०	खोची	खीची	१७	प्रथा	पृथा
५३७/८	मान कवि,	मान कवि १,	१८	त्यीं	त्यों
५३८।पाद टि०	७९०	१९९०	५५३/१२	मूल्यौ	भूल्यौ
२९	अष्टादक्ष	अष्टादस	१५	खण्खित	खण्डित
५३९/५	सुचिमास	सुचि मास	२२	बे	थे

२४	रङ्गीले	मुहम्मद शाह रँगीले	२०	दिवज	द्विज
२५	यह	यही	२७	चरना	चना
५५४/१६	नितके	तिनके	पाद टि० (३)	हिंदी साहित्य का इतिहास	
२४	ह्मां	ह्यां			(१) यही ग्रंथ
५५५/२४	कीनी	कीनौ	५७६/१९	जगनाथ	जगन्नाथ
५५६/५	वस	वसु	२१	जगनाथी	जगन्नाथी
३२	१७५०	१८७५	५७७/२	वहै	ह्वै
५५८/२५	छ	×	५७८/३	।	:—
५५९/२४	१७५०	१८७५	१४	दूत	दुत
पाद टि०—भाषाकाव्यसंग्रह		देखिए यही ग्रंथ	५७९/२२	१८१७	१७९७
५६०/२	१७५०	१८७५	५८०/६	ललारे	लला रे
७	ततार	तत्तार	५८१/१५	कोटाबन्दी	कोटा बूँदी
१५	१७२०	१८७५	२०	यह	×
५६१/२९	है	ई	२१	के	×
५६२/१५	ग्राम	प्राग	५८२/१	१९,६ए,	१९६ए,
५६३/ पाद टि०	भाषाकाव्यसंग्रह	देखिए यही ग्रंथ	५८३/१३	दूवन	दुवन
५६४/३	रंध्र[6]	रंध्र[9]	५८४/१८	त्रुन्दर	सुन्दर
५६५/ पाद टि०	देखिए वही	यही	५८७/२१	उद्धत	उद्धृत
५६६/२६	संवार	सुंवार	५८८/२५	रचनाकाल	जन्मकाल
५७१/पाद टि०	भक्ती	यही	५९१/९	हरधोरपुर	हरधौरपुर
२६ चटराज के पहले जोड़ें—चक्रवर्ती;			५९३/२३	मुसाबह	मुसाहब
	रामचरण चक्रवर्ती के	रामशरण			
२६	यही	यह	५९४/१	शुद्ध	शुक्र
२६	रामचरण	रामशरण	८,९	पाई	पाइ
२७	राम शरण नाम से	×	११	अथं	अर्थ
५७२/पादटि०	खोज रिपोर्ट	यही ग्रंथ	५९५/१७	१९३ ईस्वी	२९३ई
५७३/१	भाग	मार्ग	५९६/२	सत्रह	सत्रहै
५७५/१४	विस्तारियो	विस्तार्यो	५९७/५	दो	दोनों
१५	उतारयो	उतार्यो	८	मित्र	मिश्र

१३	भोग	(भोग)	६२४ पाद टि०	खोज रिपोर्ट	यही ग्रन्थ
५९९/१४	कि	किए	पंक्ति १८ के पश्चात् पृष्ठ के मध्य में लिख लें--		
१७	भयान	मयदान		सर्वेक्षण	
२७	हिम्मन्त	हिम्मत	६२६/२५	उद्धत	उद्धृत
६००/८	१७५०	१८७५	६२७/९	रन	रज
६०१/६	उघोत	उदद्योत	२३	तारि	तोरि
६०३/८	उस्पन्न	उत्पन्न		फेरि	फोरि
२४	जी	जू	६२८/१३	बारहमास	बारहमासा
,,	राम सागरे	राम सागर	२६	हीना	महीना
६०४/१	प्राकश	प्रकाश	६२९/२०	धीरे-धीरे	धीरीधर
२०	भैजाकी	भै जाकी	६३१/२	धीरी-धराहि	धीरीधरहि
६०६/२१	मदेशदत्त	महेशदत्त	९	रुनौ	रु नौ
६०९/२५	एक मार्च	राम काव्य	१८,१९	की	कौ
६१०/१३	काशी	दक्षिण	६३२/१६	हरिवंश	हरिवंशं
६११/११	गलतां	गलता	,,	अध	अघ
६१२/२५	ही है	वीं है	,,	प्रसंस	प्रसंसं
२८	को केलि	की केलि	२०	थे।	के
६१४/१४	मुगल	युगल	६३३/१	आपने	आप
१९	मञ्जिरी	मञ्जरी	२४	लाउं	लाऊं
६१५/८	ई०	वि०	२६	ईश्वरी	ईश्वर
१५	मह	भइ	६३४/	पंक्ति २५ के प्रारम्भ में जोड़ें--	
१६	सन्त	सत		पुत्र थे। यह	
६१८/६	को	के		और बीच से 'पुत्र थे। यह' इसे	
६१८/१०	इनके···हैं।	(इनके···हैं।)		निकाल दें।	
६२०/७	अमासुर	अमा, सुर	६३६/१५	भीजन	भोजन
११	भक्तमाल	भक्तमाला	६३७/२,१२,२१	इनके···हैं।	(इनके···हैं।)
१४	१९००	१९१४	६३९/७	की नाम	को नाम
,,	१४	पक्ष	२३	नैर	नूर

६४०/२३	जदाज़	जदज़	पाद टि०५.	वही	खोज रि०
६४२/२	पट्ठी	पट्टी	६६०/७	गुन्जीली	गुंजौली
६४३/१३	इनके···हैं।	(इनके···हैं।)	१०	नग	नभ
१७	कसि	कवि	१०	शाल	शाक
६४४/८	ह्वै	ह्वै	६६१/१	राम	राय
१६	में०	में	६६२/१	चैततीज	चैत तीज
२८	कुछ	जो कुछ	१०	पस्यमगुर्जुर	पस्यम गुर्जुर
६४५/१४	माइ	माह	६६३/पाद टि०	खोज रिपोर्ट	यही ग्रंथ
२५	त्रय,	त्रय	६६४/२६	संबंध	हरि संबंध
६४६/१६	कपा	कृपा	६६५/पाद टि०	राधाकृष्ण दास, भाग १	यही ग्रंथ
६४८/५	उद्धत	उद्धृत	३०	भवन	भूषन
६५०/पाद टि०	बुंदेल वैभव	यही ग्रंथ	६६६/पादटि०	राधाकृष्ण दास ग्रंथावली	यही ग्रंथ
६५३/३७	१७५०	१८७५	६६८/१६	औधड़	औघड़
६५४/१७	भाव्यो	भाख्यो	पाद टि०	माधुरी,वंशीधर	यही ग्रंथ
२७	सिंगारामऊ	सिंगरामऊ	६७०/९	बिचारेलाल	बिचारे लाल
२९	कामुदी	कौमुदी	१७	लालन	लाल न
६५५/९	इसकी रचना सं० १९१२ में हुई— इस वाक्य को निकाल दें।		२३	बिहार	विहारी विहार
			६७१/१६	भूम	भूप
६५६।४	सागानेर	सांगानेर	१९	वंती	पंती
५	वाणी	वाणी और	६७२/२६	शनौ ग्रंथ	भयो ग्रंथ
१५	इनके···हैं।	(इनके···हैं।)	६७३/२२	मिर्जापुर	मिर्जा
२१	भाषा गीत गोविंद	(भाषा गीत गोविंद)	६७४/पाद टि०	नागरी प्रचारिणी पत्रिका	यही ग्रंथ
६५७/६	तज	तब	६७५/अंतिम पंक्ति	लालचददास	लालचदास
८	मुर्शिवाद	मुर्शिदाबाद	६७६/३	हरि चरित्र	हरि चरित्र[२]
११	अंत	अंतर	६७७/९	विश्व	विष्णु
११	मा···महिमा पुर	महिमा महत	१९	नबिगत	दिवंगत
६५९/	पाद टि०४ वही	यही ग्रंथ	६७८/१३	और	औ

६७९/२०	प्रतिलिपि	प्रतिलिपि काल	१८	सरस्वी	सरस्वती
६८०/१५	लक्ष्क्षण	लक्ष्मण	,,	ले	लेख
६८१/२	उद्धत	उद्धृत	६९४/१२	बैसा	बैस
५	इनके···हैं।	(इनके···हैं।)	१७	१९२२	१९२३
१८	बैल	वैल	६९५/४	सुन्वर	सुन्दर
६८२/८	की	का	६९६/९	राग	राम
१५	करयो	कऱ्यो	६९८/५,६	दी	डी
१८	कहयो	कह्यो	१२	चिन्ता मनयों	चिन्तामन्यो
६८३/७	इस पर	×	१९	ग	ई
१५	घ्यवहारु	व्यवहारु	६९९/१	दोहास रोज	दोहा सरोज
२०	विवि	विधि	७०/९	मय	भय
पाद टि०	खोजरिपोर्ट	यही ग्रंथ	१५	कुतुम	कुतुप
६८४/३	सागर	सार	पाद टि० १.	खोज रिपोर्ट	१९२३।३०१ जी यही ग्रंथ
१२	कवि तामसु	कविता यसु			
१५	सुगम	सुभग	२.	वही	यही ग्रंथ
२१	अय	अथ	३.	वही	यही ग्रंथ
२९	पायो	पावो	७०२।३०	पाटठ्य	पाठ्य
६८५/२०	इनके···हैं	(इनके···हैं।)	७०३।१९	को	की
६८६/११	१७५०	१८७५	७०४/२	सहस छतीस	सहस्र छत्तीस
६८७/१८	छवि	छाव			
६९०/२	शकत	शतक	१५	गवी	गची
पाद टि०	१९३२:१२९	१९३२।१२९	७०५/४	समि	ससि
६९१/११	सूदन···की है।	(सूदन···की है।)	१६	इनकी...है।	(इनकी...है।)
२६	रिपोर्ट	वि०	पाद टि० १.	खोज रिपोर्ट	१९१७।११६ यही ग्रंथ
६९२/१	कादीर	कादिर			
१२	इन्हीं के	इन्हीं के हैं	७०६/२	तुलति	तुलित
१७	सम्मुद्द	समुद	७	प्रवत	प्रवल
६९३/९	मित्र	मिश्र	१६	भे	मैं
११	संन्यासी	एक संन्यासी		माल	भाल

पृष्ठ/पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ/पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
७०७/१८	१७६६	१८६६	२०	वस	जस
२३	जम्ब	जम्बू	७२६/१	छंद	छंद का
पाद टि०२	१६०५	१६३५	पाद टि०	राजस्थानी भाषा	और साहित्य
७०८/४	भो	मो		यही ग्रंथ	कवि संख्या
१५	बस	बंस	७२६/१	खाना	खानखाना
७०६/६,१५	ये...हैं।	(ये...हैं।')	पादटि०	१६२६,	१६२६।
२६	३६६	३६७	,,	१६३१	द १६३१
७१०/४	दुषरा	दूषरा	७३०/८	सन्तों	संत
११	पड़ानन	षड़ानन	७३१/ अंतिम पंक्ति	सखोसुख	सखीसुख
,,	छहः	छह।	७३२/ पाद टि० १ को हटा दें।		
१६	जू	जु	७३३/२,८	इनके···हैं।	(इनके···हैं।)
२०	बरने	करन	७३६/१६	मोहम्म	मोहम्मद
२१	बा	या	७३७/४	उद्धत	उद्धृत
७११/४	दिव	द्वि	२३	कौन्हों	कीन्हों
७१२/६	हमने	हममें	७३८/१२	दाहनी	दाइनी
१५	सरोज	सरोज का	७३६/१६	मृत्य	मृत्यु
२६	पुत्र	पिता	७४०/११	श्यासदास	श्यामदास
७१३/२७	झपपट	झटपट	१३	२३	२,३
७१५/६	कला	भाषा	२३	इनके···हैं।	(इनके···हैं।)
१६	इनके···हैं।	(इनके···हैं।)	७४१/२५	वाटि	वादि
७१६/२१	कवि	कवि ने	७४२/पाद टि०	१६२१	१६२६
७१८/२०	१६	१६	७४३/१०	सरोज	खोज
७१६/पादटि०२,३	यही,	यही ग्रंथ	७४४/२३	अथ	अर्थ
७२०/६	प्रथम	प्रश्रय	७४४/पाद टि०	वही	यही ग्रन्थ
७२२/८	१६	१,६	७४५/२०	शोभनाथ	सोमनाथ
७२३/२४	वसु°	वसु॰	२४	गुने	गुन
७२४/६	वैसा	बैस	पाद टि०	सोभनाथ	सोमनाथ
१८	नावाब	नवाब	७४६/३	सोभनाथ	सोमनाथ

१८	पढ़	पढ़े	७७३/पाद टि०	सूर मिश्र	सूर
७४७/पाद टि०	१९२७	१९२०	७७४/१	सोभनाथ	सोमनाथ
पाद टि० ३	यही ग्रन्थ	खोज रि०	७	जगदास	जगदीस
७४८/२१	पारा	पाया	२०	व दनेस	वदनेस
७४९/पाद टि०	यही ग्रन्थ	खोज रि०	७७५/७	सरोज में	सरोज में दिया
७५०/१५	कृष्ण विलास	कृष्ण विलास[२]	८	३६७	(३६७)
	जोड़ेंपाद टिप्पणी (२)	खोज रि०	७७६/९	तरङ्ग	तरङ्गें
		१९२६।४३२	२०	की	कौ
७५२/२	इनकी···है ।	(इनकी—है ।)	२१	एक	एक काव्य ग्रन्थ
७५४/९	की	की की	२४	२७८	(२७८)
१८	जू	जु,	७७८/१५	बिरयान	किरपान
१९	बास	बीस	७८२/४	पूरी	परी
७५५/११	श्री	श्री	७८३/पाद टि०	९०	१९०१
७५७/५	निकाल दें—	खोज रिपोर्ट	७८५/७	१७५०	१८७५
		१९०६।११२	२६	मदाबल	भदावल
७५८/१८	१७५०	१८७५	पाद टि०	हिंदी साहिक	यही ग्रंथ
७६०/४	इन	इस		का इतिहास	
८	गया गया	गया	७८६/४	की	को
१२	लीलावती	लीलावली	१४	देखिये	देखिबे
७६१/१४	बत्तसि	बत्तीस	१८-९	यह कवि...थे ।	(यह कवि...थे ।)
७६२/१३	जानकारी	खास जानकारी	१४	कैथाल	कैथल
७६३/पाद टि०	सोमनाथ रत्नावली	यही ग्रन्थ		पाद टि० खोज रिपोर्ट	यही ग्रंथ
७६४/११	१७५०	१८७५	,,	यही ग्रंथ	खोजारि०
२४	रामनन्द	रामानन्द	७८७/१८	इनके...में हें ।	(इनके...में हैं ।)
७६६/१५	गृह	गृह	७८८/७	इनके...में हैं ।	(इनके...में हैं ।)
७६७/१३	११२६	१९२६	११	नामकमाला	नाममाला
२९	बखान को	बखान करै	१९	प्रभाद	प्रमाद
७७०/१	वे हैं	हैं, वे ए हैं	२३	सोभनाथ	सोमनाथ
७७१/१३	नदर्न	×	७८९/२,४	सोभनाथ	सोमनाथ

७८९/२,४	सोभनाथ	सोमनाथ	८००/११	देवचंद, अनन्य रसिक	×
१६	जया सिंह	जय सिंह		सहचरि शरण, वल्लभ रसिक	×
२६	सनेतस	समनेस	१६	निधि	निधुवन
७९०/७	सं०	सं० १८८१	२४	विललाव	बिलावल
१०	की रसराज	रसराज की	८०१/२१	घरणी	धरणी
७९१/२	मतिराम दीजौ	दीजौ मति राम	२३	भृत्यभुक्त	भृत्यभुक्तं
४	बनी	बनौ	२४	दुरुक्त	दुरुक्तं
८	आय	आया	२५	सवैदा	सर्वदा
७९२/२४	सूदन...है।	(सूदन...है।)	८०२/१७	दी हैं	दी हैं[3]
७९३/५	८७८	१८७८	१८	अवीहा	अनीहा
२४	निघान	निधान	२०	बुघवार	बुधवार
७९४/१२,१५	माँडेर	भांडेर	पाद टि० ४	वही	हरिदासवंशानुचरित्र
१७	काव्य	पाठ्य	८०३/२	के	में
१९	शास्त्रोपयोगी	शालोपयोगी	२३	रत्नावली	छंद रत्नावली
२५	पत्रमालिका	पत्रमालिका[3]	८०४/१०	हराराम	हरीराम
७९५/४	शम्भूनाथ	शम्भु नाथ	११	इसमे	इसमें
१७	१८१७	१७९७	१५	पिलङ्ग	पिङ्गल
पाद टि०	खोज रिपोर्ट	यही ग्रंथ	२०	हरिदयाल	हरदयाल
७९६/२-३	तुलसी...हैं।	(तुलसी...हैं।)	२३	शृंगार का नवरस	शृंगार नवरस
१५	पार्थ	पारथ	८०५/२	सत्यकवि	सत्कवि
१६	१८१७	१७९७	१४	सैनुहड़ा	सेनुहड़ा
पाद टि० १	खोज रिपोर्ट	यही ग्रंथ	२४	उवीश	उर्वीश
पाद टि० २	यहीं ग्रंथ	खोज रि०	८०६/१४	नीर	मीर
७९७/१६	यह—के आगे जोड़ लें		२४	हों	हौं
अपने बाप के मरने के समय २२ वर्ष के थे और सं०१७०३ में मरे। अन्यत्र उसी ग्रंथ में			पाद टि०	नागरी प्रचारिणीपत्रिका भाग ९, अंक ४	यही ग्रंथ
७९८/२२	सुभम्याभूतु	सुभंभूयातु			
२५	नौने	नोने	८०७/१७	रसिक माल	हित चरित्र
७९९/२२	नौने	नोने	८०८/२४	की की	की
पाद टि०	खोज रिपोर्ट	यही ग्रंथ	८०९/१५	बी	जी

२३	बड़ी	बड़ो	२५	के	में
पाद टि० २,३	यही ग्रंथ खोज रि०		८२२/२	जपै	जु पै
८१०/९	सत	सुत	१८	साहित्य	सांडिल्य
१०	की	को	८२३/५	व्यास्या	व्याख्या
८१२/१०	भो	भी	१६	न्नी	की
८१३/२४	पुप्ट	पुष्ट	२१	सत्र	सुत्र
८१४/७	हरिभान	हरिभानु	२२	सर्वेक्षण	×
७	भषण	भूषण	८२४/५	गाँवा	गांव
१९	१७५०	१८७५	१०	मास	भास
८१६/२०	१७५०	१८७५	२५	ताकै-मौत	ताके गोत
२३	इनके...हैं।	(इनके...हैं।)	२८	सम	सुभ
२५	१७५०	१८७५	८२५/२	बरने	बरन
८१७/४	विद्यनाम	विद्यमान	"	सहलास	सहुलास
६	आजन खां	आजम खां	८	शण्डिल्य	शाण्डिल्य
१५	बसै	बसे	"	बढ़या	बढ़ैया
१८	पढै	पढ़े	१०	और	ओर
८१८/९	इनके...में हैं।	(इनके...में हैं।)	१९	प्राचीन	×
११	दोहा	यह दोहा	८२७/११	उसने	उसमें
२२	हरिदेव	हरदेव	१६	सनाढ्या	सनाढ्य
८१९/१	११०६	१९०६	१९	नौने	नोने
१४	बिहार्रहि	बिहरहिं	८२८/४	उन्हें को	हिम्मत बहादुर ने अली बहादुर को
२३	९४४	१९४४			
२४	अंक	अंक	८२९।९	नरेश	नरेश हुए,
८२०/७	१९८०	१६८०	१२	नाथ	गाथ
१७	महेश	महेशदत्त			
८२१/११	इनके...हैं।	(इनके...है।)	२०	भली	भलो
२२	नहीं किया।—इसके नीचे सर्वेक्षण छपना चाहिए ' फिर अगली पंक्ति से आगे की सामग्री।		२४	उ	उ०
			२५	का शिवराज	काशिराज
			८३३/१५	कवयों	कवियों
			"	उनके	उसके

८३५/१६	पंक्ति के आगे इतना और जोड़		५	अपर	अगर
लें—जिनकी जांच नहीं हो सकी है।			१०	ईन्द्रजीत	इन्द्रजीत
८३६/१	मिलीं	मिली	२६	कार बैग	कारबेग
५	३०	३२	३०	१९३०	१९३१
६	आगे है;	आगे दी जा रही है।	८४२/३	१७२९	१७१९
७	३१	३२	८	१६३९	१६३६
८	शानसकल	शासनकाल	८४३/६	१८०३	१८२४
११	जिनका	जिसका	९	जीराका	जी री का
८३७/९	जौध	जोध	१६	क्रम संख्या में निम्न स्थान भरलें	
८३८/१२	३९	४०			६२ क।२२६
१३	२२	२७		प्रमाण में संवत लिखें	१५७२-१६४२
१३	२१	२६	२०	हेमकरन धनोली	छेमकरनधनौली
१६	के	से	२१	हेम	छेम
२०	वुध	वधू	२४	हेम	छेम
२२	पाण्डे	पांड़े	८४४/१	मित्र	मिश्र
२४	चैतन	चेतन	८	आसफुद्दौल	आसफुद्दौला
८३९ ८	चकाव्यह	चकाव्यूह	८४५/१०	१०२	१०१
१३	१८७८	१८७८ ई०		१५३०	१५५९
१८	२७।	२७। ९७४		१६०१	१६०९
,,	हृष्ठी	हठी	१२	१६४१	१६४९
,,	१२४७	१८४७	१३	४०१	४१०
१९	२२	२७	१७	१८१७	१७९७
२०	पाण्डे	पांड़े	२३	नाथ ६	नाथ ७
८४०/५	२३	३०	२५	४४४	११० क। ४४४
९	खोज,	,खोज	८४६/१	कौटा	कोटा
१२	विनोद,	,विनोद	२	४५१	४५९
१६	२४५	२५१		परमानन्दु	परमानन्द
८४१/४	२१	२९	११	९२	९२

१४	कालम १ में भरें—१२३क /४६०	
	कालम २ में भरें—पुंड	
४६०/३३		×
२४	बेती	बेंती
३०	१६३२···देहांत १५६२ के बाद किसी समय इनके पिता गदाधर भट्ट बृंदावन आए।	
८४७/१७	रत्नाकाकर	रत्नाकर
२३	५८३	१५३ क । ५८३
,,	जितना हो सकते	चिन्ताखेरा वाले
,,	पुस्तबाटिका	पुष्पबाटिका
२९-३०	१७०५ अलंकार प्रकाश	×
	१७२३ छंद हृदय प्रकाश	×
८४८/९	चरखार	चरखारी
११	६२५	१६३ क ।६२५
,,	मूमनारायण	भूपनारायण
,,	कामूपुर	काकूपुर
,,	सुजाउद्दौल	शुजाउद्दौला
१३	१८१७	१७९७
१९	लखैरा	लखेरा
८४९/३	१७५५ हजारा का	रचनाकाल
	१७४९ वधूविनोद का रचना काल	
४	१८१७	१७९७
२०	१७४१-७३	१७५६-१८०६
२५	खाँ	कायम खाँ
८५०/४	भक्तमाल	भक्तमाल का
१७	मिनगा	भिनगा

८५१/१२	कतित्त	कवित्त
२२	१८१७	१७९७
२७	१५३०	१५५९
२८	हौल	होल
८५२/९	प्रस्यात	प्रख्यात
१५	पुरे	पुर
२५	मैसूर	भूसुर
८५३/१०	प्राचीन २	प्राचीन १
१८	लोथे	लोधे
८५४/४	भी ।	भा हों ।
१५	वृर्त्त	वृत्त
२४	नियाज	निवाज
२५	नरोत्तमबाड़ी	नरोत्तम बाड़ी
८५५/१६	११३	११७
८५६/२७	२३९	२९का।२३९
८५७/५	२८९	३४का।२८९
११	३४१	३९का।३४१
८५८/२	४७७	५६का।४७७
५	मुरिडला	मरिडला
८५९/५	रनाचकाल	रचनाकाल
८६०/२९	२१।८२	२१का।८२
८६१/५	किंगर	किंकर
,,	१८९०	१८१०
२१	कुसमड़ी	कुसमड़ा
	१७०३	१८७०
८६२/७	नियाज	निवाज
२२	वरदे	बरवै
२४	मौज	भोज
२४	मोन	भौन

८६५/६	७१८	७१२	८७५/६	भ्रमपूरण	भ्रमपूर्ण
१०	१९५१	१९×१	२३	ग्रार	ग्रौर
१६	६२३	९२३	८७९/६	बौधा	बोधा
२८	शङ्ककर	शङ्कर	१४	भून	मून
८६६/२	१२४	१२७	८८०/१४	धनिया	बनिया
१३	खैतल	खेतल	१६,१९	सोभनाथ	सोमनाथ
८६७/१६	दयावेद	दयादेव	८८१/८	थे	ये
२४	१८१८	१८१६	८८२/२	सम्बन्थ	सम्बन्ध
२७	।३८६	४०का।३८६	१२	इतभाम घटा	इतमाम घटा
८६८/८	४६।	४६क	२३	जौ,सौ	जो,सो
१७	प्रवेश	ब्रजेश	२६	धिहारी	विहारी
२५	१८१७	१७९७	८८३/३	चतुर विहारी	चतुर विहारी
८६९/२	४०	८०	७	एतै	एते
	१६८१ बुद्धि बल कथा का रचना काल		८८४/७	उद्धत	उद्धृत
८७०/६	१७०९ के पूर्व		११	वल्लभ से	वल्लभ
			८८५/१	ब्रहा	ब्रह्मा
१०	।८३१	९६का।८३१	१६	महसिंह	महा सिंह
८७१/११	१३०	१२८	१९	राजरूप का ख्यात	राजरूपकाख्यात
८७१/२४	हेमकरन	छेमकरन			
८७२/४	जगनैस	जगनेस	८८६/८	सरल	सरस
११	दैवी	देवी	८८७/१६	घना	धना
१३	४५।३८६ धोधेदास ब्राजवासी	×	२८	८९३	८३९
			८८८/६	बनाने	बनवाने
१८	बेन	वैन	१६	नार के पुत्र	हथि के पुत्र हरिनाथ
८७३/७	रामबरश	रामबख्श			
२०	११०।८३१ वाहिद	×	२३	ग्रंथ	ग्रंथों
८७४/१३	११	११७	८८९/६	ग्राकूब खाँ	याकूब खाँ
८७५/६	कभा	कभी	८९०/१४	यह लाल	लाल

२७	गयी	गया
८९१/१७	उद्धृत	यह उद्धृत
१८-१९	वल्लभ नामक किसी शिष्य	पुत्र गोंकुल नाथ'वल्लभ
८९२/११	किसी रीतिकालीन कविन्द सेन	सेख
८९६/७	के के	के
१३	कवि	कवियों
२३	२४	१४
२८	आदिकाल की	आदिकाल को
२९	जिनका	जिसका
८९८/२५	लाभ	लाभ हुआ
८९९/१३	भट्टकवि	भट्ट कवि
१७	श्रीधर,	श्रीधर
१८	सोभनाथ	सोमनाथ
२५	केवश	केशव
९००/	अंतिम पंक्ति हुआ है	दिया हुआ है
९०१/११	गिरिवर	गिरिधर
१२	द्विजदेव	द्विजदेव,
२४	ही नहीं	नहीं
९०३/१६	कृष्णा बिहारी	कृष्ण बिहारी
२३	सरोज	खोज
९०५/५	नादर्न	×
९०६/१६	पौदार	पोद्दार
९०७/१०	तोयनिधि	तोषनिधि
१३	शुकुल	सुकुल
१९	दुलह	दूलह
९०९/३	किशोर लाल	किशोरी लाल

९१०/४	संस्था	संख्या
७	कविया	कवियों
८	अभिन्य	अभिन्न
१४	के	की
१५	उदाहत	उदाहृत
१९	इसवी	ईसवी
२५	तदन्तर	तदनन्तर
९११/११	सं०-	सं०-संदिग्ध

नामानुक्रमणिका का शुद्धि-पत्र

कवि संख्या	अशुद्ध	शुद्ध
३	ए	रा
७,८	अजबैस	अजबेस
	१९१० री	१९१० र
११	२५	१५
	उष	उप
२१	१६०२	१६०२अ०
	१९१	१५९१
२४	१७१२	१७१२ ज
२९	१९९३	१९९३।र
३३	सभा	सूपा
	१९८५।	(१९८५।)
५८	उमैद	उमेद
६२	मंजरी	मणि मंजरी
६६	१७४०	१७४०अ०
६७	९२	९८
७६	कलानिधि १ प्राचीन	(कलानिधि१ प्राचीन) १०४

१०१	क्लीराम	कलीराम	२३३	२३१	२२१
११६	कृपाराम	कृपाराम १	२३५	१८७०	१८७०,अ०
११८	चम्पा	चम्पू	२५०	१६१३	१६१३ र
११९	कृपाराम···वाले	(कृपाराम-वाले)	२५७	३४६ र	३४६।र
	१७९८ ग्र	(१७९८ग्र)	२६२	२६४	२६६
१२१	कृष्ण कवि	कृष्ण कवि १	२६७	'वि०' को तीसरे और '६०१।' को चौथे कालम में ले जायँ।	
	१८०।ग्र	१८०।ज			
१३१	सनाढ्य	सनाढ्य	२६६	(१७००उप)	(१६१३-६२उप)
१३३	९५ ग्रि	९५। ग्रि	२७०	जगामन	जगामग
१४५	र	रा	२७५	१९४० उप	(१९४० उप)
१४६	खुलाल	खुसाल	२७६	१२२	१३२
१४९	हेम	छेम	२८०,२८१	जगदेव	जयदेव
१५३	१८८३	१८८३ वि०	२८३	६०३।	६०३।ग्रि
१५४	१४२२।ज	१४२२।अ	२८४	१७००	१७०० रा
१६५	२०७९।	२०७९।,	२८५	३८७	२८७
१६८	१७७०	१७७० उप	२८९	जसन्त	जसवन्त
१७४	१४०३अ	१४०३।अ	२९८	ज	अ
१७५	कान्धा	काँथा	२९९	ज	अ
१७७	गुन सिंघ	गुनसिंधु	३०१	ज	अ
१७८	खाण्ड़ी	सांड़ी	३०२	१७७४०	१७४०
१८३	पाण्डे	पांड़े	३०५	१७०१	१६०१
२०९	८२२	८२०	३१०	यसी	यती
२१५	१६३५	१६३५अ०	३१४	१७००	१७०० अ०
२२२,२२३	५४९।१७६१र	(५४९।१७६१र)	३२४	७५७	७५७)
२२४	३७४ उप	३७४।उप	३३५	प्रानीन	प्राचीन
२२५	२२९	२३९	३५०	बेनीमाघवदास	बेनीमाधवदास
	१६३८	१६३८अ०		पलका	पसका
२२७	१६०५	१६०५ उप	३६४	काष्ठी	काष्ठ

३६४	उप	उप)	५३५	१७२६ र	१७२६ र;
३६६	पूर्व	पूर्व)	५४०	वुंदेला)	वुंदेला
३८१	१६३०म,उप	१६३० अ०	५४१	र	रा
३८८	२८६८	१८६८	५४४	भ	म
३६०	धवल	धौंकल			
३६८	३६७,	३६७।	५४६	विधादास	विद्यादास
४०३	नरेद्र	नरेन्द्र	५६०	१८८६	१७८६
	उप	उप,	५७१	तेमरीता	सेमरौता
४१३	१८७३ १६२६ र १८७३	१६२६	५७२	१६७०	१६७० अ०
			५७३	बैद्य	बेंचू
४२०	१८२ ग्र	१८२६ग्र	५७५	वेती	बेंती
४२४	१७२१	१७२०			
४३७	निावज	निवाज	५८२	बौध	बोध
४४२	नीलसखी	(नीलसखी)११		वुन्देखण्डी	बुन्देलखण्डी
४४६	लखनऊ	डलमऊ	५८३	बौधा	बोधा
४६२	परमानन्न	परमानन्द	५८४	बौधीराम	बोधीराम
४६८	४५५	४४५	५८७	ब्रजलाला, गोकल	ब्रज, लाला
४७६	पूख	पूथ		प्रसाद	गोकुल प्रसाद
४८३	३८६	३८१		३३	५३३
४६३	६७२	६७१	५६१	८४८।ज	२७४।र
४६७	१६२८।र	१६२८ र	६०१	५५	५१५
४६६	इ०	ई०		१८१७	१७६७
५०३	१६०२	१६०१	६०४	म	ज
५०८	१६०१	१६०१ उप	६०६	१७५५ ग्र	१७५५ ग्र)
५१०	५७!	५७४	६११	४०६	५०६
५१४	२२४६	१२४६	६१६	कोक	काकू
५१६	७१५	७१५।		११११२	११५२
५२१	१६००	१६०० ज	६२६	११४१	११४२
५२७	१७८१	१६८१	६२८	१८६	१८६६
५२६	४८०।ज	४८०।ज;			
५३०	बावेश	वाजेश	७४२	फतहाबादी	फतूहाबादी

६४६	१८२३	१८२३ ज	८०६	७२३	७२३।
६६०	८०१।६२० र	८३।१६२० र	८०७	१७०९ से पूर्व	१६८१ अ
६७५	उप इ०	उप		१८५०।१७९१	१८५० र
६७६	ई०	म	८१३	ग्रि	।ग्रि
६८०	८९२-	(१८९२-१९०३र)	८२८	लौधे	लोधे
	१९०३र		८२९	लौने	लोने
६८७	१६८० अ०	१६८०		बुन्दलखंडी	बुन्देलखंडी
६९३	अ	ज	८३०	लौने	लोने
७०६	१५६ सं०	१५६। सं०	८३३	तीसरे कालम में जोड़िए	(१५६७ज
७०७	भुरली धर	मुरली धर			१६६५म)
७०९	मुसाहबराजा,	मुसाहब राजा	८४२	डांडियाखेरा	डौंड़ियाखेरा
७१२	मैधा	मेधा	८४५	१७१।९ अ	१७१९। अ
७१९	१८१	७८१	८५३	शिवद	शिवदत्त
	१८७०	१८०७	८५७	मिनगा	भिनगा
७२०	१७९६-१८०७ र	१७९६-१८०७र	९२०	असोधर	असोथर
७२२	रघुनाथ प्राचीन	(रघुनाथ प्राचीन) ७३८	९२८	सीरताज	सिरताज
				व	वाले
			९३२	सुवदेख	सुखदेव
	१७१०	१७१० अ०	९३६	सं०	। सं०
७२३	अ	ज	९३९	७४०	७३०,
७२६	रघुनाथ रीव,	रघुराज रीवां	९४०	सं०	। सं०
७४१	१६२५	१६१५	९४४	८८	८८७
७६१	१६८०	१६८० उप	९५२	सैख	सेख
७६२	राजाराम २	(राजाराम२)७७४	९५३	सैन	सेन
	१७८८	१७८८अ०	९६२	१९३६	१९३६म
७७४	टिकमपुर	टिकमापुर	९६३	१७०५	१७०५अ०
७७९	सं०	।सं०	९७१	हरिजन	(हरिजन) १००१
७९६	रुद	रुद्र		१६९०	१६९० अ०
७९८	म	र	९७४	म	म